بسم الله الرحمن الرحيم

सहीह बुख़ारी

मय तर्जुमा व तफ़्सीर   जिल्द : पाँच

मुरत्तिब

अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष़ सैयदुल फ़ुक़हा हज़रत इमाम अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.)

उर्दू तर्जुमा व तशरीह

हज़रत मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)

हिन्दी तर्जुमा

सलीम ख़िलजी

प्रकाशक : शो'बा नश्रो इशाअ़त

जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

नाम किताब : सहीह बुख़ारी (हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीर)
मुरत्तिब (अरबी) : अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.)
उर्दू तर्जुमा व शरह : अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)
हिन्दी तर्जुमा व नज़रे-षानी : सलीम ख़िलजी
तस्हीह (Proof Checking) : जमशेद आलम सलफ़ी

कम्प्यूटराइज़ेशन, डिज़ाइनिंग एवं लेज़र टाइपसेटिंग : ख़लीज मीडिया, जोधपुर (राज.)
khaleejmedia78@yahoo.in # 91-98293-46786
हिन्दी टाइपिंग : मुहम्मद अकबर
ले-आउट व कवर डिज़ाइन : मुहम्मद निसार खिलजी, बिलाल ख़िलजी
मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव : फ़ैसल मोदी

ता'दाद पेज (जिल्द-5) : 608 पेज
प्रकाशन (प्रथम संस्करण) : सफ़र 1433 (दिसम्बर 2011)
ता'दाद (प्रथम संस्करण) : 2400
क़ीमत (जिल्द-5) : 450/-
प्रिण्टिंग : अनमोल प्रिण्ट्स, जोधपुर (0291-2742426)
प्रकाशक : जमीयत अहले हदीष़ जोधपुर (राज.)

मिलने के पते

मुहम्मदी एण्टरप्राइजेज़
तेलियों की मस्जिद के पीछे, सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर-1
(फ़ोन) : 99296-77000, 92521-83249,
93523-63678, 90241-30861

अल किताब इण्टरनेशल
जामिया नगर, नई दिल्ली-25
(फ़ोन) : 011-6986973
93125-08762

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान (रज़ि.) का बयान	191
हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के फ़ज़ाइल	192
हज़रत आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान	192

15 किताब मनाक़िबुल अन्सार

किताबुल मग़ाज़ी

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

16

17

17

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

तक़रीज़

अल्हम्दुलिल्लाह वस्सलातु वस्सलामु अला मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़ातिमुन्नबिय्यीन व सय्यिदुल मुर्सलीन व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन, अम्मा बअद!

क़ुर्आन मजीद के बाद सबसे सहीहतरीन किताब सहीह बुख़ारी शरीफ़ और सहीह मुस्लिम शरीफ़ हैं। इन्हें सहीहैन यानी दो सहीह किताबें कहते हैं। इनके बारे में उम्मत का इज्माअ है। इसमें किसी भी तरह की तन्क़ीस करने वालों को उलम-ए-उम्मत ने फ़ासिक़ क़रार दिया है। हक़ीक़त ये हे कि दीने इस्लाम जो अल्लाह तआला का आख़िरी और सबसे अफ़ज़ल और वाहिद मक़्बूल दीन है। वो क़ुर्आन करीम और प्यारे रसूल (ﷺ) के फ़र्मूदात और अफ़आल और आपकी मौजूदगी में हुई बातों और कामों को जिसे आपने बरक़रार रखा हो, उनके मजमूअे का नाम है।

इसलिए अइम्म-ए-किराम और मुहद्दिसीने-इज़ाम रहिमहुल्लाह ने इसकी हिफ़ाज़त और किताबत और तदवीन और नश्रो-इशाअत में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ कर दी और इसकी अहमियत के पेशेनज़र ही उन्होंने इस क़दर जाँफ़िशानी और मुहब्बत और क़ुर्बानी दी कि इसकी मिसाल नहीं मिलती। उन्होंने एक-एक हदीस की छानबीन की, इसमें ज़िन्दगी खपा दी और किसी भी ज़ईफ़ और झूठे और ग़फ़लत के शिकार रावी की रिवायत को क़ुबूल नहीं किया। इस सिलसिले में सबसे ज़्यादा मेहनत और बेदार मग़ज़ी और एहतियात से इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने काम लिया। इसलिए उम्मत ने इन दोनों किताबों, ख़ुसूसन सहीह बुख़ारी को हाथों हाथ लिया और इन्हें क़ुबूलियते आम्मा हासिल हुई। उस वक़्त के अइम्म-ए-हदीस ने सहीह बुख़ारी के मुअल्लिफ़ को अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस का ख़िताब दिया और उनकी किताब को अल्लाह तआला ने ऐसी क़ुबूलियते-आम्मा अता की कि क़ुर्आन के बाद सबसे ज़्यादा एहतिमाम के साथ इसे पढ़ा गया, शरहें लिखी गईं, इसके फ़वाइद और इसके मुता'ल्लिक़ हर हैसियत से एअतिनाअ किया गया और इसकी हर हैसियत से ख़िदमत की गई।

उलम-ए-अहले हदीस ने हर दौर में ख़ुसूसन इसे हर्ज़े जाँ बनाया और इसकी नश्रो-इशाअत से लेकर हर तरह की ख़िदमत और वफ़ा का हक़ अदा किया। अल्लाम दाऊद राज़ (रह.) साबिक़ नाज़िम मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने इसका उर्दू तर्जुमा किया और ज़रूरी व मुफ़ीद हवाशी सब्त फ़र्माई। मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द ने इसे शाए फ़र्माया है।

अब इसका हिन्दी तर्जुमा जमीअत अहले हदीस जोधपुर-राजस्थान शाए कर रही है। इसकी पाँचवीं जिल्द जो मनाक़िब व फ़ज़ाइले सहाबा और किताबुल मग़ाज़ी पर मुश्तमिल है, के लिए ये सुतूरे तक़रीज़ उनकी तलब पर लिखे जा रहे हैं। अल्लाह तआला हमारी इस सूबाई जमीअत के ज़िम्मेदारान और मेम्बरान और तमाम मुता'ल्लिक़ीन को जज़ा-ए-ख़ैर दे और जमइय्यत व जमाअत और क़ुर्आन व हदीस की मज़ीद ख़िदमत की तौफ़ीक़े अरज़ानी फ़र्माए, आमीन! और नबी-ए-आख़िरुज्जमाँ, अफ़ज़लुल बशर (ﷺ) की प्यारी व महबूब अहादीस पर अमलपैरा होने के साथ क़यामत के दिन आप (ﷺ) की शफ़ाअत नसीब फ़र्माए और पूरी दुनिया को इस रहमतुललिल आलमीन के फ़र्मूदात से मुस्तफ़ीद होने की तौफ़ीक़ अता करे, आमीन! व सल्लल्लाहु अला रसूलिहिल करीम!

असग़र अली इमाम महदी सलफ़ी,

नाज़िमे-उमूमी, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

तक़रीज़

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला अशरफ़िल अंबियाइ वल मुर्सलीन, अम्मा बअ़द!

शरीअ़ते इस्लामी की बुनियाद दो चीज़ों पर है, एक किताबुल्लाह और दूसरी सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) और दोनों की तशरीही हैषियत एक है। फ़र्माने रसूल (ﷺ) है, **मैं तुम्हारे लिए दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ। तुम जब तक उन्हें मज़बूती के साथ पकड़े रहोगे, गुमराह नहीं होगे। एक अल्लाह की किताब और दूसरी मेरी सुन्नत।**

इसी बिना पर सहाब-ए-किराम रिज़्वानुल्लाहिल अज्मईन से लेकर ताबेईन, अइम्मा-ए-दीन व मुहद्दिषीन ने ज़िन्दगी के हर मैदान में क़ुर्आन व सुन्नत को हाकिम व क़ाज़ी माना और ताहयात उसी पर अमल पैरा रहे और इन दोनों उसूलों की ख़िदमत में अपनी सारी ज़िन्दगी लगा दी। जिसके नतीजे में बेशुमार कुतुबे तफ़ासीर और अहादीष और उनसे मुता'ल्लिक़ उलूम व फ़ुनून के मजमूअ़े वजूद में आए कि जिसे देखकर दुनिया महवे-हैरत है कि दीन की इतनी बड़ी ख़िदमत मज़हबो-मिल्लत में नहीं हो पाई और जिस उसूल पर पाबन्द रह कर उन उमूर को अंजाम दिया गया। इनमें ख़ामी निकालना तो दूर की बात, अल्लाह ने अग़यार से भी इस दीन की ख़िदमत करवाई।

बहरहाल अल्लाह के बन्दों से ये मुहतरम काम जारी था, जारी है और जारी रहेगा, इंशाअल्लाह! इसी सिलसिले की एक कड़ी ये सहीह बुख़ारी का हिन्दी तर्जुमा है। ये लाइक़े तहसीन अमल, जिसकी ज़रूरत एक अ़र्से से महसूस की जा रही थी, जमीअ़त अहले हदीष जोधपुर-राजस्थान के हक़ में आया जिसका हर फ़र्द ने इस अम्र में अपना-अपना तआवुन पेश फ़र्माकर इस जलीलुल क़द्र काम को पायः-ए-तक़मील तक पहुँचाया। ख़ुसूसन तर्जुमा का काम, जो एक बड़ी ज़िम्मेदारी का काम होता है बिरादरम सलीम ख़िलजी हफ़िज़हुल्लाह के हाथों अंजाम पाया। अल्लाह तआला उन्हें और जमीअ़त के ज़िम्मेदारान, अराकीने जमीअ़त और इस कारे ख़ैर में जिसका भी जैसा तआवुन रहा हो, बेहतरीन सिला अता फ़र्माए और मज़ीद दीने हनीफ़ की ख़िदमत का मौक़ा अता करे, आमीन! तक़ब्बल या रब्बल आलमीन!

दुआगो,

मुहम्मद ख़ालिद जमील मक्की

मुम्बई

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

चौदहवां पारा

बाब 3 : ग़ार वालों का क़िस्सा

٥٣- بَابُ حَدِيْثُ الْغَارِ

तशरीह : पारा नम्बर 13 के ख़ात्मे पर अस्हाबे कहफ़ का वाक़िया बयान किया गया। इसलिये मुनासिब हुआ कि पारा नम्बर 14 को ग़ार वालों के ज़िक्र से शुरू किया जाए। कुछ उलमा ने आयते शरीफ़ा, **अम हसिब्त अन्न अस्हाबल्कहफ़ि वर्रक़ीमि कानू** (अल कहफ़ : 9) में रक़ीम वालों से ये लोग जिनका बयान इस हदीष़ में है ये मुराद लिये, वाक़िया बहुत ही अजीब है मगर **इन्नल्लाहा अला कुल्लि शैइन क़दीर** के तहत कुदरते इलाही से कुछ दूर भी नहीं है। मज़ीद तफ़्सील आगे आ रही है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **अकिबल्मुसन्निफ़ किस्सत अस्हाबल्कहफ़ि बिहदीष़िल्गारि इशारतन इला मा वरद अन्नहू क़द क़ील अन्नर्रक़ीमल्मज़्कूर फी कौलिही तआला अम हसब्ति अन्न अस्हाबल्कहफि वर्रक़ीमि हुवल्गारुल्लज़ी असाब फीहिष़्षलाष़तु मा असाबहुम व ज़ालिक फीमा अख़्रजहुल्बज़्ज़ार वत्तबरानी बिइस्नादिन हसनिन अनिन्नुअमानि ब्नि बशीर अन्नहू मअन्नबिय्यि (ﷺ) यज़्कुरुर्रक़ीम काल इन्तलक़ ष़लाषतुन फकानु फी कहफिन फवक़अल्जबलु अला बाबिल्कहफि फऔसद अलैहिम फज़करल्हदीष़** (फ़त्हुल्बारी) या'नी हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने अस्हाबे कहफ़ के बयान के बाद हदीषे ग़ार का ज़िक्र किया जिसमें आपने इशारा फ़र्माया कि आयते करीमा, **अम् हसिब्त अन्ना अस्हाबल कहफ़ि वर्रक़ीम** में रक़ीम वालों से वो ग़ार वाले मुराद हैं जो तीन थे और अचानक वो पहाड़ की चट्टान गिरने से उस मुसीबत में फंस गये थे जैसा कि बज़्ज़ार व तबरानी ने सनदे हसन के साथ नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत की है कि उन्होंने सुना रसूलुल्लाह (ﷺ) से आप रक़ीम वालों का ज़िक्र फ़र्मा रहे थे कि तीन साथी चले जा रहे थे। उन्होंने जब एक ग़ार में पनाह ली तो उन पर पहाड़ की एक चट्टान गिरी और उनको वहाँ बन्द होना पड़ा। फिर अल्लाह ने उनकी दुआओं को क़ुबूल किया और वहाँ से उनको नजात बख़्शी।

3465. हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, उन्हें उबैदुल्लाह बिन उमर ने, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, पिछले ज़माने में (बनी इस्राईल में से) तीन आदमी कहीं रास्ते में जा रहे थे कि अचानक बारिश ने उन्हें आ लिया। वो तीनों पहाड़ के एक कोह (ग़ार) में घुस गये (जब वो अंदर चले गये) तो ग़ार का मुँह बन्द हो गया। अब तीनों आपस में यूँ कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! हमें इस मुसीबत से अब तो सिर्फ़ सच्चाई ही नजात दिलाएगी। बेहतर ये है कि अब हर शख़्स अपने किसी ऐसे अमल को बयान करके दुआ करे

٣٤٦٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ خَلِيْلٍ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : ((بَيْنَمَا ثَلاَثَةُ نَفَرٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ يَمْشُوْنَ إِذْ أَصَابَهُمْ مَطَرٌ، فَأَوَوْا إِلَى غَارٍ فَانْطَبَقَ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ : إِنَّهُ وَاللهِ يَا هَؤُلاَءِ لاَ يُنْجِيْكُمْ إِلاَّ

जिसके बारे में उसे यक़ीन हो कि वो ख़ालिस़ अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के लिये किया था। चुनाँचे एक ने इस तरह दुआ की, ऐ अल्लाह! तुझको ख़ूब मा'लूम है कि मैंने एक मज़दूर रखा था जिसने एक फ़रक़ (तीन स़ाअ) चावल की मज़दूरी पर मेरा काम किया था लेकिन वो शख़्स़ (ग़ुस़्स़े में आकर) चला गया और अपने चावल छोड़ गया। फिर मैंने उस एक फ़रक़ चावल को लिया और उसकी काश्त की। उससे इतना कुछ हो गया कि मैंने पैदावार में से गाय–बैल ख़रीद लिये। उसके बहुत दिन बाद वही शख़्स़ मुझसे अपनी मज़दूरी मांगने आया। मैंने कहा कि ये गाय–बैल खड़े हैं, उनको ले जा। उसने कहा कि मेरा तो स़िर्फ़ एक फ़रक़ चावल तुम पर होना चाहिये था। मैंने उससे कहा कि ये सब गाय–बैल ले जा क्योंकि उसी एक फ़रक़ की आमदनी है। आख़िर वो गाय–बैल लेकर चला गया। पस ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है कि ये ईमानदारी मैंने सिर्फ़ तेरे डर से की थी तो तू ग़ार का मुँह खोल दे। चुनाँचे उसी वक़्त वो पत्थर कुछ हट गया। फिर दूसर ने इस तरह दुआ की, ऐ अल्लाह! तुझे ख़ूब मा'लूम है कि मेरे माँ–बाप जब बूढ़े हो गये तो मैं उनकी ख़िदमत में रोज़ाना रात में अपनी बकरियों का दूध लाकर पिलाया करता था। एक दिन इत्तिफ़ाक़ से मैं देर से आया तो वो सो चुके थे। इधर मेरे बीवी और बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे लेकिन मेरी आदत थी कि जब तक वालिदैन को दूध न पिला लूँ, बीवी–बच्चों को नहीं देता था। मुझे उन्हें बेदार करना भी पसन्द नहीं था और छोड़ना भी पसन्द न था (क्योंकि यही उनका शाम का खाना था और उसके न पीने की वजह से वो कमज़ोर हो जाते) पस मैं उनका वहीं इंतिज़ार करता रहा यहाँ तक कि सुबह हो गई। पस अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये काम तेरे डर की वजह से किया था तो तू हमारी मुश्किल दूर कर दे। उस वक़्त वो पत्थर कुछ और हट गया और अब आसमान नज़र आने लगा। फिर तीसरे शख़्स़ ने यूँ दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब थी। मैंने एक बार उससे सुहबत करनी चाही, उसने इंकार किया मगर उस शर्त पर तैयार हुई कि मैं उसे सौ अशरफ़ी लाकर दे दूँ। मैंने ये रक़म हासिल करने के लिये

الصِّدْقَ، فَلْيَدْعُ كُلُّ رَجُلٍ مِنْكُمْ بِمَا يَعْلَمُ أَنَّهُ قَدْ صَدَقَ فِيهِ. فَقَالَ وَاحِدٌ مِنْهُمْ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّهُ كَانَ لِي أَجِيرٌ عَمِلَ لِي عَلَى فَرَقٍ مِنْ أَرُزٍّ، فَذَهَبَ وَتَرَكَهُ، وَأَنِّي عَمَدْتُ إِلَى ذَلِكَ الْفَرَقِ فَزَرَعْتُهُ، فَصَارَ مِنْ أَمْرِهِ أَنِّي اشْتَرَيْتُ مِنْهُ بَقَرًا، وَأَنَّهُ أَتَانِي يَطْلُبُ أَجْرَهُ، فَقُلْتُ لَهُ : اعْمِدْ إِلَى تِلْكَ الْبَقَرِ فَسُقْهَا، فَقَالَ لِيْ: إِنَّمَا لِيْ عِنْدَكَ فَرَقٌ مِنْ أَرُزٍّ. فَقُلْتُ لَهُ : اعْمَدْ إِلَى تِلْكَ الْبَقَرِ، فَإِنَّهَا مِنْ ذَلِكَ الْفِرَقِ. فَسَاقَهَا. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ خَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا. فَانْسَاخَتْ عَنْهُمُ الصَّخْرَةُ. فَقَالَ الآخَرُ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ كَانَ لِي أَبَوَانِ شَيْخَانِ كَبِيرَانِ، فَكُنْتُ آتِيهِمَا كُلَّ لَيْلَةٍ بِلَبَنِ غَنَمٍ لِي، فَأَبْطَأْتُ عَلَيْهِمَا لَيْلَةً، فَجِئْتُ وَقَدْ رَقَدَا، وَأَهْلِي وَعِيَالِي يَتَضَاغَوْنَ مِنَ الْجُوعِ، فَكُنْتُ لاَ أَسْقِيهِمْ حَتَّى يَشْرَبَ أَبَوَايَ، فَكَرِهْتُ أَنْ أُوقِظَهُمَا، وَكَرِهْتُ أَنْ أَدَعَهُمَا فَيَسْتَكِنَّا لِشَرْبَتِهِمَا، فَلَمْ أَزَلْ أَنْتَظِرُ حَتَّى طَلَعَ الْفَجْرُ. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَن فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ خَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا. فَانْسَاخَتْ عَنْهُمُ الصَّخْرَةُ حَتَّى نَظَرُوا إِلَى السَّمَاءِ. فَقَالَ الآخَرُ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّهُ كَانَ لِي ابْنَةُ عَمٍّ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ، وَأَنِّي رَاوَدْتُهَا عَنْ نَفْسِهَا فَأَبَتْ إِلاَّ أَنْ آتِيَهَا

بِمِائَةِ دِيْنَارٍ، فَطَلَبْتُهَا حَتَّى قَدَرْتُ، فَأَتَيْتُهَا بِهَا فَدَفَعْتُهَا إِلَيْهَا، فَأَمْكَنَتْنِي مِنْ نَفْسِهَا، فَلَمَّا قَعَدْتُ بَيْنَ رِجْلَيْهَا فَقَالَتِ اتَّقِ اللهَ وَلاَ تَفُضَّ الْخَاتَمَ إِلاَّ بِحَقِّهِ فَقُمْتُ وَتَرَكْتُ الْمِائَةَ دِيْنَارٍ. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ خَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا، فَفَرَّجَ اللهُ عَنْهُمْ فَخَرَجُوا)).

[راجع: ٢٢١٥]

कोशिश की। आख़िर वो मुझे मिल गई तो मैं उसके पास आया और वो रक़म उसके ह़वाले कर दी। उसने मुझे अपने नफ़्स पर क़ुदरत दे दी। जब मैं उसके ऐन क़रीब बैठ चुका तो उसने कहा कि अल्लाह से डर और मुहर को बग़ैर ह़क़ के न तोड़। मैं (ये सुनते ही) खड़ा हो गया और सौ अशरफ़ी भी वापस नहीं ली। पस अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये अ़मल तेरे डर की वजह से किया था तो तू हमारी मुश्किल आसान कर दे। अल्लाह तआला ने उनकी मुश्किल दूर कर दी और वो तीनों बाहर निकल आए।

(राजेअ : 2215)

तश्रीह : इस ह़दीष़ के ज़ेल में ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह) फ़र्माते हैं, **व फीहि फ़ज़्लुल्इख़्लास़ि फिल्अमलि व फ़ज़्लु बिर्रिल्वालिदैनि व ख़िदमतिहा व ईष़ारिहिमा अलल्वलदि व तहम्मुलल्मशक़्क़ति लिअजलिहिमा व क़द इस्तश्कल तर्कुहू औलादहुस्सिग़ार यब्कून मिनल्जूइ तूल लैलतिहिमा मअ़ क़ुदरतिही अ़ला तस्कीनि जूइहिम फक़ील कान शर्उहुम तक़्दीमु नफ़्क़तिन गैरहुम व क़ील यहतमिलु अन्न बुकाअहुम लैस अनिल्जूइ क़द तक़द्दम मा यरूद्दुहू व क़ील लअल्लहुम कानू यत्लुबून ज़ियादत अ़ला सद्दिर्रमक़ि व हाज़ा औला व फीहि व फ़ज़्लुल्इफ़्फ़ति वल्इनकाफ़ि अनिल्हरामि मअ़ल्क़ुदरति व अन्न तर्कल्मअ़स़ियति यम्हू मुक़द्दमाति त़लबिहा व अन्नत्तौबत तजिबु मा क़ब्लहा व फीहि जवाज़ुल्इजाज़ति बित्तआमिल्मअलूमि बैनल्मुताजिरीन व फ़ज़्लु अदाइल्अमानति व इष़्बातिल्करामति लिस्सालिहीन** (फ़त्हुल्बारी) या'नी इस ह़दीष़ से अ़मल में इख़्लास़ की फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई और माँ–बाप के साथ नेक सुलूक की और ये कि माँ–बाप की रज़ाजूई के लिये हर मुम्किन मशक़्क़त को बर्दाश्त करना औलाद का फ़र्ज़ है। उस शख़्स़ ने अपने बच्चों को रोने दिया और उनको दूध नहीं पिलाया, उसकी कई वुजूहात बयान की गई हैं। कहा गया है कि उनकी शरीअ़त का हुक्म ही ये था कि ख़र्च में माँ–बाप को दूसरों पर मुक़द्दम रखा जाए। ये भी अन्देशा है कि उन बच्चों को दूध थोड़ा ही पिलाया गया इसलिये वो रोते रहे, और इस ह़दीष़ से पाकबाज़ी की भी फ़ज़ीलत ष़ाबित हो गई और ये भी मा'लूम हुआ कि तौबा करने से पहली ग़ल्तियाँ भी मुआफ़ हो जाती हैं और उससे ये भी जवाज़ निकला कि मज़दूर को त़आम की उजरत पर भी मज़दूर रखा जा सकता है और अमानत की अदायगी की भी फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई और स़ालिह़ीन की करामतों का भी इष़्बात हुआ कि अल्लाह पाक ने उन स़ालेह़ बन्दों की दुआओं के नतीज़े में उस पत्थर को चट्टान के मुँह से हटा दिया और ये लोग वहाँ से नजात पा गये। रह़िमहुमुल्लाह अज्मईन। नीज़ ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह) फ़र्माते हैं कि इमाम बुख़ारी (रह) ने वाक़िया अस्ह़ाबे कहफ़ के बाद ह़दीष़े ग़ार का ज़िक्र फ़र्माया जिसमें इशारा है कि आयते क़ुर्आनी **अम् ह़सिब्त अन्ना अस्ह़ाबल कहफ़ि वर्रक़ीम** (अल कहफ़ : 9) में रक़ीम से यही ग़ार वाले मुराद हैं जैसा कि त़बरानी और बज़्ज़ार ने सनदे ह़सन के साथ नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत किया है कि उन्होंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना। रक़ीम का बयान फ़र्माते हुए आपने उन तीनों शख़्स़ों का ज़िक्र फ़र्माया जो एक ग़ार में पनाह गुज़ीं हो गये थे और जिन पर पत्थर की चट्टान गिर गई थी और उसने ग़ार का मुँह बन्द कर दिया था। तीनों में मज़दूरी पर ज़राअ़त का काम कराने वाले का ज़िक्र है। इमाम अह़मद की रिवायत में उसका क़िस्स़ा यूँ मज़्कूर है कि मैंने कई मज़दूर उनकी मज़दूरी ठहराकर काम पर लगाए। एक शख़्स़ दोपहर को आया मैंने उसको आधी मज़दूरी पर रखा लेकिन उसने इतना काम किया जितना औरों ने सारे दिन में किया था। मैंने कहा कि मैं उसको भी सारे दिन की मज़दूरी दूँगा। इस पर पहले मज़दूरों में से एक शख़्स़ गुस्से में हुआ। मैंने कहा भाई! तुझे क्या मतलब है, तू अपनी मज़दूरी पूरी ले ले। उसने गुस्से में अपनी मज़दूरी भी नहीं ली और चल दिया। फिर आगे वो हुआ जो रिवायत में मज़्कूर है। क़स्तलानी (रह) ने कहा कि उन तीनों में अफ़ज़ल तीसरा शख़्स़ था। इमाम ग़ज़ाली (रह) ने कहा शह्वत आदमी पर बहुत ग़लबा करती है और जो शख़्स़ सब सामान होते हुए मह़ज़ अल्लाह के डर से बदकारी से बाज़ रह गया उसका दर्जा सिद्दीक़ीन

में होता है। अल्लाह पाक ने हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को सिद्दीक़ इसीलिये फ़र्माया कि उन्होंने ज़ुलैख़ा के शदीद इसरार पर भी बुरा काम करना मंज़ूर नहीं किया और दुनिया की सख़्त तकलीफ़ बर्दाश्त की। ऐसा शख़्स बमौजिब नस्से कुर्आनी जन्नती है जैसा कि इर्शाद है, **व अम्मा मन ख़ाफ़ मक़ाम रब्बिही व नहन्नफ़्स अनिल्हवा फइन्नल्जन्नत हियल्मावा** (अन् नाज़िआत : 40-41) या'नी जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डर गया और अपने नफ़्स को हराम ख़्वाहिशात से रोक लिया तो जन्नत उसका ठिकाना है। **जअल्नल्लाहु मिन्हुम आमीन.**

इस हदीष से ये भी मा'लूम हुआ कि वसीला के लिये आमाले सालिहा को पेश करना जाइज़ तरीक़ा है और दुआओं में बतौरे वसीला वफ़ातशुदा बुज़ुर्गों का नाम लेना ये दुरुस्त नहीं है। अगर दुरुस्त होता तो ये ग़ार वाले अपने अंबिया व औलिया के नामों से दुआ करते मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया बल्कि आमाले सालिहा का ही वसीला में पेश किया। इस वाक़िये से नसीहत हासिल करते हुए उन लोगों को जो अपनी दुआओं में अपने वलियों, पीरों और बुज़ुर्गों का वसीला ढूँढ़ते हैं, ग़ौर करना चाहिये कि वो ऐसा अमल कर रहे हैं जिसका कोई षुबूत किताबो-सुन्नत और बुज़ुर्गाने इस्लाम से नहीं है। आयते शरीफ़ा **याअय्युहल्लज़ीन अमानुत्तक़ुल्लाह वब्तग़ू इलैहिल्वसीलत** (अल माइदा : 35) में भी वसीला से मुराद आमाले सालिहा ही हैं।

बाब : 45

3466. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया कि एक औरत अपने बच्चे को दूध पिला रही थी कि एक सवार (नाम नामा'लूम) उधर से गुज़रा, वो उस वक़्त भी बच्चे को दूध पिला रही थी (सवार की शान देखकर) औरत ने दुआ की ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को उस वक़्त तक मौत न देना जब तक कि उस सवार जैसा न हो जाए। उसी वक़्त (बक़ुदरते इलाही) बच्चा बोल पड़ा, ऐ अल्लाह! मुझे उस जैसा न बनाना। और फिर वो दूध पीने लगा। उसके बाद एक (नाम नामा'लूम) औरत को उधर से ले जाया गया, उसे ले जाने वाले उसे घसीट रहे थे और उसका मज़ाक़ उड़ा रहे थे। माँ ने दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को इस औरत जैसा न करना, लेकिन बच्चे ने कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे उसी जैसा बना देना। फिर तो माँ ने पूछा, अरे ये क्या मामला है? उस बच्चे ने बताया कि सवार तो काफ़िर व ज़ालिम था और औरत के बारे में लोग कहते थे कि तू ज़िना कराती है तो वो जवाब देती हस्बियल्लाह (अल्लाह मेरे लिये काफ़ी है, वो मेरी पाकदामनी जानता है) लोग कहते कि तू चोरी करती है तो वो जवाब देती हस्बियल्लाह (अल्लाह मेरे लिये काफ़ी है और वो मेरी पाकदामनी जानता है)।

(राजेअ : 1206)

٤٥- بَابٌ

٣٤٦٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((بَيْنَا امْرَأَةٌ تُرْضِعُ ابْنَهَا إِذْ مَرَّ بِهَا رَاكِبٌ وَهِيَ تُرْضِعُهُ فَقَالَتْ : اللَّهُمَّ لاَ تُمِتْ ابْنِي حَتَّى يَكُونَ مِثْلَ هَذَا. فَقَالَ : اللَّهُمَّ لاَ تَجْعَلْنِي مِثْلَهُ. ثُمَّ رَجَعَ فِي الثَّدْيِ. وَمُرَّ بِامْرَأَةٍ تُجَرَّرُ وَيُلْعَبُ بِهَا، فَقَالَتْ : اللَّهُمَّ لاَ تَجْعَلِ ابْنِي مِثْلَهَا. فَقَالَ: اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِثْلَهَا. فَقَالَ : أَمَّا الرَّاكِبُ فَإِنَّهُ كَافِرٌ، وَأَمَّا الْمَرْأَةُ فَإِنَّهُمْ يَقُولُونَ لَهَا : تَزْنِي، وَتَقُولُ : حَسْبِيَ اللهُ. وَيَقُولُونَ : تَسْرِقُ، وَتَقُولُ: حَسْبِيَ اللهُ)).

[راجع: ١٢٠٦]

दूध पीते बच्चे का ये कलाम करना क़ुदरते इलाही के तहत हुआ। बच्चे ने उस ज़ालिम व काफ़िर सवार से इज़्हारे बेज़ारी और मोमिना व मज़लूम औरत से इज़्हारे हमदर्दी किया। उसमें हमारे लिये बहुत से दर्स पोशीदा हैं। उसमें दीनदार व मुत्तक़ी लोगों के लिये हिदायत है कि वो कभी भी दुनियादारों के ऐशो–आराम और उनकी तरक़्क़ियाते दुनयवी से अष़र न लें बल्कि समझें कि उन बद्दीनियों के लिये ये अल्लाह की तरफ़ से मुह्लत है। एक दिन मौत आएगी और ये सारा खेल ख़त्म हो जाएगा। इस्लाम बड़ी भारी दौलत है जो कभी भी ज़ाइल (नष्ट) न होगी।

3467. हमसे सईद बिन तलीद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे जरीर बिन हाज़िम ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने और उन्हें मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बयान फ़र्माया कि एक कुत्ता एक कुँए के चारों तरफ़ चक्कर काट रहा था जैसे प्यास की शिद्दत से उसकी जान निकल जाने वाली हो कि बनी इस्राईल की एक ज़ानिया औरत ने उसे देख लिया। उस औरत ने अपना मौज़ा उतारकर कुत्ते को पानी पिलाया और उसकी मग़्फ़िरत उसी अमल की वजह से हो गई। (राजेअ़ : 3321)

٣٤٦٧ - حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ تَلِيْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي جَرِيْرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيْرِيْنَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((بَيْنَمَا كَلْبٌ يُطِيْفُ بِرَكِيَّةٍ كَادَ يَقْتُلُهُ الْعَطَشُ إِذْ رَأَتْهُ بَغِيٌّ مِنْ بَغَايَا بَنِي إِسْرَائِيْلَ، فَنَزَعَتْ مُوقَهَا فَسَقَتْهُ، فَغُفِرَ لَهَا بِهِ)). [راجع: ٣٣٢١]

मा'लूम हुआ कि जानवर को भी पानी पिलाने में ष़वाब है। ये ख़ुलूस की बरकत थी कि एक नेकी से वो बदकार औरत बख़्श दी गई।

3468. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उन्होंने मुआ़विया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से सुना एक साल जब वो हज्ज के लिये गये हुए थे तो मिम्बरे नबवी पर खड़े होकर उन्होंने पेशानी के बालों का एक गुच्छा लिया जो उनके चौकीदार के हाथ मे था और फ़र्माया ऐ मदीना वालों ! तुम्हारे उ़लमा किधर गये मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आपने इस तरह (बाल जोड़ने की) मुमानअ़त फ़र्माई थी और फ़र्माया था कि बनी इस्राईल पर बर्बादी उस वक़्त आई जब (शरीअ़त के ख़िलाफ़) उनकी औरतों ने इस तरह बाल संवारने शुरू कर दिये थे।

(दीगर मक़ाम : 3488, 5932, 5938)

٣٤٦٨ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ : سَمِعَ مُعَاوِيَةَ بْنَ أَبِي سُفْيَانَ - عَامَ حَجَّ - عَلَى الْمِنْبَرِ، فَتَنَاوَلَ قُصَّةً مِنْ شَعْرٍ - كَانَتْ فِي يَدِي حَرَسِيٍّ - فَقَالَ : يَا أَهْلَ الْمَدِيْنَةِ، أَيْنَ عُلَمَاؤُكُمْ؟ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَنْهَى عَنْ مِثْلِ هَذِهِ وَيَقُولُ : ((إِنَّمَا هَلَكَتْ بَنُو إِسْرَائِيْلَ حِيْنَ اتَّخَذَ هَذِهِ نِسَاءُهُمْ)).

[أطرافه في : ٣٤٨٨، ٥٩٣٢، ٥٩٣٨].

तश्रीह : तुम्हारे उ़लमा किधर गये या'नी क्या तुमको मना करने वाले उ़लमा ख़त्म हो गये हैं। मा'लूम हुआ कि मुंकिरात पर लोगों को मना करना उ़लमा का फ़र्ज़ है। दूसरों के बाल अपने सर में जोड़ना मुराद है। दूसरी ह़दीष़ में ऐसी औरत पर ला'नत आई है। मुआ़विया (रज़ि.) का ये ख़ुत्बा 61 हिजरी के बारे में है। जब आप अपनी ख़िलाफ़त में आख़िरी हज्ज करने आए थे, अकष़र उ़लमा सहाबा इंतिक़ाल फ़र्मा चुके थे। ह़ज़रत अमीर ने जिहालत के ऐसे अफ़आ़ल को देखकर ये अफ़सोस

ज़ाहिर फ़र्माया। बनी इस्राईल की शरीअत में भी ये हराम था मगर उनकी औरतों ने उस गुनाह का इर्तिकाब किया और ऐसी ही हरकतों की वजह से बनी इस्राईल तबाह हो गये। मा'लूम हुआ कि मुहर्रमात के उमूमी इर्तिकाब से क़ौमें तबाह हो जाती हैं।

हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) कुरैशी और उमवी हैं। उनकी वालिदा का नाम हिन्द बिन उत्बा है। हज़रत मुआविया ख़ुद और उनके वालिद फ़तहे मक्का के दिन मुसलमान हुए। ये मुअल्लफ़तुल कुलूब में दाख़िल थे। बाद में आँहज़रत (ﷺ) के मुरासिलात लिखने की ख़िदमत उनको सौंपी गई। अपने भाई यज़ीद के बाद शाम के हाकिम मुक़र्रर हुए। हज़रत उमर (रज़ि.) के ज़माने से वफ़ात तक हाकिम ही रहे। ये कुल मुद्दत बीस साल है। हज़रत उमर (रज़ि.) के दौरे ख़िलाफ़त में तक़रीबन 4 साल और हज़रत उष्मान (रज़ि.) की पूरी मुद्दते ख़िलाफ़त और हज़रत अली (रज़ि.) की पूरी मुद्दते ख़िलाफ़त और उनके बेटे हज़रत हसन (रज़ि.) की मुद्दते ख़िलाफ़त ये कुल बीस साल हुए। उसके बाद हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.) ने 41 हिजरी में ख़िलाफ़त उनके सुपुर्द कर दी तो हुकूमत मुकम्मल तौर पर उनको हासिल हो गई और मुकम्मल बीस साल तक सल्तनत उनके हाथ में रही। बमुक़ामे दमिश्क़ रजब सन 60 हिजरी में 84 साल की उम्र में उनका इंतिक़ाल हो गया। आख़िर उम्र में लकवे की बीमारी हो गई थी। अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में फ़र्माया करते थे, काश मैं वादी-ए-ज़ीतुवा में कुरैश का एक आदमी होता और ये हुकूमत वग़ैरह कुछ न जानता। उनकी ज़िन्दगी में बहुत से सियासी इंक़िलाबात आते जाते रहे। इंतिक़ाल से पहले ही अपने बेटे यज़ीद को हुकूमत की बागडोर सौंपकर सुबुकदोश हो गये थे। मगर यज़ीद बाद में उनका कैसा जानशीन षाबित हुआ ये दुनिया-ए-इस्लाम जानती है, तफ़्सील की ज़रूरत नहीं। हज़रत मुआविया (रज़ि.) की वालिदा माजिदा हज़रत हिन्दा बिन्ते उत्बा बड़ी आक़िला ख़ातून थीं। फ़तहे मक्का के दिन दूसरी औरतों के साथ उन्होंने भी आँहज़रत (ﷺ) के दस्ते मुबारक पर इस्लाम की बेअत की तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करोगी और न चोरी करोगी तो हिन्दा ने अर्ज़ किया कि मेरे शौहर अबू सुफ़यान हाथ रोककर ख़र्च करते हैं जिससे तंगी लाहिक़ होती है तो आपने फ़र्माया कि तुम इस क़दर ले लो जो तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिये हस्बे दस्तूर काफ़ी हो। आपने फ़र्माया कि और ज़िना न करोगी, तो हिन्दा ने अर्ज़ किया कि क्या कोई शरीफ़ औरत ज़िनाकार हो सकती है? आपने फ़र्माया कि अपने बच्चों को क़त्ल न करोगी तो हिन्दा ने अर्ज़ किया कि आपने हमारे सब बच्चों को क़त्ल करा दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त के ज़माने में वफ़ात पाई। इसी रोज़ हज़रत अबू क़हाफ़ा (रज़ि.) अबूबक्र (रज़ि.) के वालिदे माजिद का इंतिक़ाल हुआ। रहिमहुमुल्लाह अज्मईन।

3469. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, गुज़िश्ता उम्मतों में मुहद्दष लोग हुआ करते थे और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा है तो वो उमर बिन ख़त्ताब हैं। (दीगर मक़ाम : 3689)

٣٤٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّهُ قَدْ كَانَ فِيمَا مَضَى قَبْلَكُمْ مِنَ الأُمَمِ مُحَدَّثُونَ، وَإِنَّهُ إِنْ كَانَ فِي أُمَّتِي هَذِهِ مِنْهُمْ فَإِنَّهُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ)). [طرفه في : ٣٦٨٩].

लफ़्ज़े मुहद्दष दाल के फ़तह के साथ है। अल्लाह की तरफ़ से उसके वली के दिल में एक बात डाल दी जाती है। हज़रत उमर (रज़ि.) को ये दर्जा कामिल तौर पर हासिल था। कई बातों में उन ही की राय के मुताबिक़ वह्य नाज़िल हुई। इसलिये आपको मुहद्दष कहा गया।

3470. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे

٣٤٧٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا

मुहम्मद बिन अबी अदी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अबू सिद्दीक़ नाजी बक्र बिन क़ैस ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बनी इस्राईल में एक शख़्स था (नाम नामा'लूम) जिसने निन्नावे नाहक़ ख़ून किये थे फिर वो (नादिम होकर) मसला पूछने निकला। वो एक दुर्वेश के पास आया और उससे पूछा, क्या उस गुनाह से तौबा क़ुबूल होने की कोई सूरत है? दुर्वेश ने जवाब दिया कि नहीं। ये सुनकर उसने उस दुर्वेश को भी क़त्ल कर दिया (और सौ ख़ून पूरे कर दिये) फिर वो (दूसरों से) पूछने लगा। आख़िर उसको एक दुर्वेश ने बताया कि फ़लाँ बस्ती में चला जा (वो आधे रास्ते भी नहीं पहुँचा था कि) उसकी मौत वाक़ेअ हो गई। मरते मरते उसने अपना सीना उस बस्ती की तरफ़ झुका दिया। आख़िर रहमत के फ़रिश्तों और अज़ाब के फ़रिश्तों में बाहम झगड़ा हो गया। (कि कौन इसे ले जाएगा) लेकिन अल्लाह तआला ने उस नसरह नामी बस्ती को (जहाँ वो तौबा के लिये जा रहा था) हुक्म दिया कि उसकी नअश से क़रीब हो जाए और दूसरी बस्ती को (जहाँ से वो निकला था) हुक्म दिया कि उसकी नअश से दूर हो जा। फिर अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से फ़र्माया कि अब दोनों का फ़ासला देखो और (जब नापा तो) उस बस्ती को (जहाँ वो तौबा के लिये जा रहा था) एक बालिश्त नअश से नज़दीक पाया इसलिये वो बख़्श दिया गया।

مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الصِّدِّيقِ النَّاجِيِّ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : ((كَانَ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ رَجُلٌ قَتَلَ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ إِنْسَانًا، ثُمَّ خَرَجَ يَسْأَلُ، فَأَتَى رَاهِبًا فَسَأَلَهُ فَقَالَ لَهُ : هَلْ مِنْ تَوبَةٍ؟ قَالَ : لاَ، فَقَتَلَهُ : فَجَعَلَ يَسْأَلُ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ ائْتِ قَرْيَةَ كَذَا وَكَذَا؟ فَأَدْرَكَهُ الْمَوتُ فَنَاءَ بِصَدْرِهِ نَحْوَهَا، فَاخْتَصَمَتْ فِيهِ مَلاَئِكَةُ الرَّحْمَةِ وَمَلاَئِكَةُ الْعَذَابِ، فَأَوحَى اللهُ إِلَى هَذِهِ أَنْ تَقَرَّبِي، وَأَوحَى إِلَى هَذِهِ أَنْ تَبَاعَدِي، وَقَالَ : قِيسُوا مَا بَيْنَهُمَا، فَوُجِدَ إِلَى هَذِهِ أَقْرَبَ بِشِبْرٍ، فَغُفِرَ لَهُ)).

जिस बस्ती की तरफ़ वो जा रहा था उसका नाम नसरह बताया गया है। वहाँ एक बड़ा दुर्वेश रहता था मगर वो क़ातिल उस बस्ती में पहुँचने से पहले रास्ते ही में इंतिक़ाल कर गया। सहीह मुस्लिम की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि रहमत के फ़रिश्तों ने कहा ये शख़्स तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रुजूअ होकर निकला था। अज़ाब के फ़रिश्तों ने कहा, उसने कोई नेकी नहीं की। इस हदीष से उन लोगों ने दलील ली है जो क़ातिल मोमिन की तौबा की क़ुबूलियत के क़ाइल हैं। जुम्हूर का यही क़ौल है। **क़ाल अयाज़ व फीहि अन्नत्तौबत तन्फ़उ मिनल्क़त्लि कमा तन्फ़उ मिन साइरिज़्ज़ुनूबि** (फ़त्हुल्बारी) या'नी क़त्ले नाहक़ से तौबा करना ऐसा ही नफ़ाबख़्श है जैसा कि और दूसरे गुनाहों से।

3471. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ पढ़ी फिर लोगों की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया एक शख़्स (बनी इस्राईल का) अपनी गाय हाँके

٣٤٧١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلاَةَ الصُّبْحِ ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ

فَقَالَ : ((بَيْنَا رَجُلٌ يَسُوقُ بَقَرَةً إِذْ رَكِبَهَا فَضَرَبَهَا، فَقَالَتْ: إِنَّا لَمْ نُخْلَقْ لِهَذَا، إِنَّمَا خُلِقْنَا لِلْحَرْثِ، فَقَالَ النَّاسُ: سُبْحَانَ اللهِ، بَقَرَةٌ تَكَلَّمُ؟ فَقَالَ: فَإِنِّي أُوْمِنُ بِهَذَا أَنَا وَأَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ.وَمَا هُمَا ثَمَّ. وَبَيْنَمَا رَجُلٌ فِي غَنَمِهِ إِذْ عَدَا الذِّئْبُ فَذَهَبَ مِنْهَا بِشَاةٍ، فَطَلَبَ حَتَّى كَأَنَّهُ اسْتَنْقَذَهَا مِنْهُ، فَقَالَ لَهُ الذِّئْبُ: هَذَا اسْتَنْقَذْتَهَا مِنِّي، فَمَنْ لَهَا يَوْمَ السَّبُعِ، يَوْمَ لاَ رَاعِيَ لَهَا غَيْرِي؟ فَقَالَ النَّاسُ: سُبْحَانَ اللهِ، ذِئْبٌ يَتَكَلَّمُ؟ قَالَ: فَإِنِّي أُوْمِنُ بِهَذَا أَنَا وَأَبُوبَكْرٍ وَعُمَرُ. وَمَا هُمَا ثَمَّ)). وَحَدَّثَنَا عَلِيٌّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مِسْعَرٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمِثْلِهِ.

[راجع: ٢٣٢٤]

लिये जा रहा था कि वो उस पर सवार हो गया और फिर उसे मारा। उस गाय ने (बक़ुदरते इलाही) कहा कि हम जानवर सवारी के लिये नहीं पैदा किये गये, हमारी पैदाइश तो खेती के लिये हुई है। लोगों ने कहा सुब्हानल्लाह! गाय बात करती है। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उस बात पर ईमान लाता हूँ और अबूबक्र और उमर (रज़ि.) भी। हालाँकि ये दोनों वहाँ मौजूद नहीं थे। उसी तरह एक शख़्स अपनी बकरियाँ चरा रहा था कि एक भेड़िया आया और रेवड़ में से एक बकरी उठाकर ले जाने लगा। रेवड़ वाला दौड़ा और उसने बकरी को भेड़िये से छुड़ा लिया। उस पर भेड़िया (बक़ुदरते इलाही) बोला, आज तो तुमने मुझसे उसे छुड़ा लिया लेकिन दरिन्दे वाले दिन में (क़ुर्बे क़यामत) उसे कौन बचाएगा जिस दिन मेरे सिवा और कोई उसका चरवाहा न होगा? लोगों ने कहा, सुब्हानल्लाह! भेड़िया बातें करता है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तो उस बात पर ईमान लाया और अबूबक्र व उमर (रज़ि.) भी। हालाँकि वो दोनों उस वक़्त वहाँ मौजूद न थे। इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा और हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने कहा, हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उन्होंने मिस्अर से, उन्होंने सअद बिन इब्राहीम से, उन्होंने अबू सलमा से रिवायत किया और उन्होने अबू हुरैरह (रज़ि.) से और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से यही हदीष़ बयान की।

(राजेअ : 2324)

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) को हज़राते शैख़ेन (रज़ि.) की क़ुव्वते ईमानी पर यक़ीन था। इसीलिये आपने उनको उस पर ईमान लाने में शरीक फ़र्माया। बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। उसने गाय को और भेड़िये को कलाम करने की ताक़त दे दी। इसमें दलील है कि जानवरों का इस्ते'माल उन ही कामों के लिये होना चाहिये जिनमें बतौर आदत वो इस्ते'माल किये जाते रहते हैं। (फ़त्हुल बारी)

٣٤٧٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((اشْتَرَى رَجُلٌ مِنْ رَجُلٍ عَقَارًا لَهُ، فَوَجَدَ الرَّجُلُ الَّذِي اشْتَرَى الْعَقَارَ فِي عَقَارِهِ جَرَّةً فِيْهَا ذَهَبٌ، فَقَالَ لَهُ الَّذِيْ اشْتَرَى الْعَقَارَ: خُذْ ذَهَبَكَ مِنِّي، إِنَّمَا

3472. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें हम्माम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, एक शख़्स ने दूसरे शख़्स से मकान ख़रीदा और मकान के ख़रीददार को उस मकान में एक घड़ा मिला जिसमें सोना था। जिससे वो मकान उसने ख़रीदा था उससे उसने कहा भाई घड़ा ले जा क्योंकि मैंने तुमसे घर ख़रीदा है सोना नहीं ख़रीदा था लेकिन पहले मालिक ने कहा कि मैंने घर को उन तमाम चीज़ों समेत तुम्हें बेच दिया था जो उसके अंदर मौजूद हों।

اشْتَرَيْتُ مِنْكَ الأَرْضَ. وَلَمْ أَبْتَعْ مِنْكَ الذَّهَبَ. وَقَالَ الَّذِي لَهُ الأَرْضُ: إِنَّمَا بِعْتُكَ الأَرْضَ وَمَا فِيهَا، فَتَحَاكَمَا إِلَى رَجُلٍ. فَقَالَ الَّذِي تَحَاكَمَا إِلَيْهِ : أَلَكُمَا وَلَدٌ؟ قَالَ أَحَدُهُمَا : لِيْ غُلاَمٌ، وَقَالَ الآخَرُ : لِي جَارِيَةٌ، قَالَ : أَنْكِحُوا الْغُلاَمَ الْجَارِيَةَ، وَأَنْفِقُوا عَلَى أَنْفُسِهِمَا مِنْهُ، وَتَصَدَّقَا)). [راجع: ٢٣٦٥]

ये दोनों एक तीसरे शख़्स के पास अपना मुक़द्दमा ले गये। फ़ैसला करने वाले ने उनसे पूछा क्या तुम्हारे कोई औलाद है? उस पर एक ने कहा कि मेरे एक लड़का है और दूसरे ने कहा कि मेरी एक लड़की है। फ़ैसला करने वाले ने उनसे कहा कि लड़के का लड़की से निकाह कर दो और सोना उन्हीं पर खर्च कर दो और ख़ैरात भी कर दो।

(राजेअ : 2365)

क़स्तलानी (रह) ने कहा कि शाफ़िइया का मज़हब ये है कि अगर कोई ज़मीन बेचे फिर उसमें से ख़ज़ाना निकले तो वो बायेअ ही का होगा जैसे घर बेचे उसमें कुछ अस्बाब हो तो वो बायेअ ही को मिलेगा मगर मुश्तरी शर्त कर ले तो दूसरी बात है।

٣٤٧٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ. وَعَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَسْأَلُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ: مَاذَا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي الطَّاعُونِ؟ فَقَالَ أُسَامَةُ؟ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الطَّاعُونُ رِجْسٌ أُرْسِلَ عَلَى طَائِفَةٍ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيْلَ - أَوْ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ - فَإِذَا سَمِعْتُمْ بِهِ بِأَرْضٍ فَلاَ تَقْدَمُوا عَلَيْهِ، وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلاَ تَخْرُجُوا فِرَارًا مِنْهُ)) قَالَ أَبُو النَّضْرِ: ((لاَ يُخْرِجُكُمْ إِلاَّ فِرَارًا مِنْهُ)).

[طرفاه في : ٥٧٢٨، ٦٩٧٤].

3473. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने ने कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर और उ़मर बिन उ़बैदुल्लाह के मौला अबुन् नज़्र ने, उनसे आ़मिर बिन सअ़द बिन अबी वक़्क़ास ने बयान किया और उन्होंने (आ़मिर ने) अपने वालिद (सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रजि) को उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से ये पूछते सुना था कि ताऊ़न के बारे में आपने आँह़ज़रत (ﷺ) से क्या सुना है? उन्होंने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ताऊ़न एक अ़ज़ाब है जो पहले बनी इस्राईल के एक गिरोह पर भेजा गया था या आपने ये फ़र्माया कि एक गुज़िश्ता उम्मत पर भेजा गया था। इसलिये जब किसी जगह के बारे में तुम सुनो (कि वहाँ ताऊ़न फैला हुआ है) तो वहाँ न जाओ लेकिन अगर किसी ऐसी जगह ये वबा फैल जाए जहाँ तुम पहले से मौजूद हो तो वहाँ से मत निकलो। अबुन नज़्र ने कहा या'नी भागने के सिवा और कोई ग़र्ज़ न हो तो मत निकलो।

(दीगर मक़ाम : 5728, 6974)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि तिजारत, सौदागरी, जिहाद या दूसरी ग़र्ज़ों के लिये ताऊ़नज़दा मक़ामात (प्लेग ग्रस्त जगहों) से निकलना जाइज़ है। ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि वो ताऊ़न के ज़माने में अपने बेटों को देहात में रवाना कर देते। ह़ज़रत अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) ने कहा जब ताऊ़न आए तो पहाड़ों की खाइयों, जंगलों, पहाड़ों की चोटियों में फैल जाओ, शायद उन स़ह़ाबा को ये ह़दीष़ न पहुँची होगी। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) शाम को जा रहे थे मा'लूम हुआ

कि वहाँ ताऊन है, वापस लौट आए। लोगों ने कहा आप अल्लाह की तक़्दीर से भागते हैं। ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि हम अल्लाह की तक़्दीर से अल्लाह की तक़्दीर ही की तरफ़ भागते रहे हैं। ताऊन में पहले शदीद बुख़ार होता है फिर बग़ल या गर्दन में गिल्टी निकलती है और आदमी मर जाता है। ताऊन की मौत शहादत है।

3474. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे दाऊद बिन अबी फ़ुरात ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन यअ़मर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से ताऊन के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि ये एक अज़ाब है, अल्लाह तआ़ला जिस पर चाहता है भेजता है लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसको मोमिनों के लिये रहमत बना दिया है। अगर किसी शख़्स की बस्ती में ताऊन फैल जाए और वो सब्र के साथ अल्लाह की रहमत से उम्मीद लगाए हुए वहीं ठहरा रहे कि होगा वही जो अल्लाह तआ़ला ने क़िस्मत में लिखा है तो उसे शहीद के बराबर ष़वाब मिलेगा।

(दीगर मक़ाम : 5734, 6619)

٣٤٧٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ : ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ الطَّاعُونِ، فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ عَذَابٌ يَبْعَثُهُ اللهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ، وَأَنَّ اللهَ جَعَلَهُ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِيْنَ، لَيْسَ مِنْ أَحَدٍ يَقَعُ الطَّاعُونُ فَيَمْكُثُ فِي بَلَدِهِ صَابِرًا مُحْتَسِبًا يَعْلَمُ أَنَّهُ لاَ يُصِيْبُهُ إِلاَّ مَا كَتَبَ اللهُ لَهُ إِلاَّ كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ شَهِيْدٍ)). [طرفاه في : ٥٧٣٤، ٦٦١٩].

3475. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने, और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि मख़्ज़ूमिया ख़ातून (फ़ातिमा बिन्ते अस्वद) जिसने (ग़ज़्व-ए-फ़तह के मौक़े पर) चोरी कर ली थी, उसके मामले ने क़ुरैश को फ़िक्र में डाल दिया। उन्होंने आपस में मश्वरा किया कि उस मामला पर आँह़ज़रत (ﷺ) से बातचीत कौन करे? आख़िर ये तै पाया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) आपको बहुत अ़ज़ीज़ हैं। उनके सिवा और कोई उसकी हिम्मत नहीं कर सकता। चुनाँचे उसामा (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से इस बारे में कुछ कहा तो आपने फ़र्माया। ऐ उसामा! क्या तू अल्लाह की हुदूद में से एक हद के बारे में मुझसे सिफ़ारिश करता है? फिर आप खड़े हुए और ख़ुत्बा दिया (जिसमें) आपने फ़र्माया। पिछली बहुत सी उम्मतें इसलिये हलाक हो गई कि जब उनका कोई शरीफ़ आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद क़ायम करते और अल्लाह की क़सम! अगर

٣٤٧٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّهُمْ شَأْنُ الْمَرْأَةِ الْمَخْزُومِيَّةِ الَّتِي سَرَقَتْ، فَقَالُوا: وَمَنْ يُكَلِّمُ فِيْهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ فَقَالُوا : وَمَنْ يَجْتَرِىءُ عَلَيْهِ إِلاَّ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ حِبُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَكَلَّمَهُ أُسَامَةُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَتَشْفَعُ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ؟)) ثُمَّ قَامَ فَاخْتَطَبَ، ثُمَّ قَالَ : ((إِنَّمَا أَهْلَكَ الَّذِيْنَ قَبْلَكُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ فِيْهِمُ الشَّرِيْفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ فِيْهِمُ الضَّعِيْفُ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ. وَايْمُ اللهِ! لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ ابْنَتَ

फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (ﷺ) भी चोरी करे तो मैं उसका भी हाथ काट डालूँ। (राजेअ : 2638)

مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعْتُ يَدَهَا)).
[راجع: ٢٦٤٨]

इस हदीष की शरह किताबुल हुदूद में आएगी। चोर का हाथ काट डालना शरीअते मूसवी में भी था। जो कोई उस सज़ा को वहशियाना बताए वो ख़ुद वहशी है और जो कोई मुसलमान होकर उस सज़ा को ख़िलाफ़े तहज़ीब कहे वो काफ़िर और इस्लाम के दायरे से ख़ारिज है। (वहीदी) हज़रत उसामा रसूलुल्लाह (ﷺ) के बड़े ही चहेते बच्चे थे क्योंकि उनके वालिद हज़रत ज़ैद बिन हारिषा की परवरिश रसूलुल्लाह (ﷺ) ने की थी। यहाँ तक कि कुछ लोग उनको रसूले करीम (ﷺ) का बेटा समझते और उसी तरह पुकारते मगर आयते करीमा **उदऊहुम लिआबाइहिम** (अल अहज़ाब : 5) ने उनको इस तरह पुकारने से मना कर दिया।

3476. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने बयान किया, कहा कि मैंने नज़्ज़ाल बिन सब्रह हिलाली से सुना और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने एक सहाबी (अ़म्र बिन आ़स) को क़ुर्आन मजीद की एक आयत पढ़ते सुना। वही आयत नबी अकरम (ﷺ) से उसके ख़िलाफ़ क़िरात के साथ में सुन चुका था, इसलिये मैं उन्हें साथ लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे ये वाक़िया बयान किया लेकिन मैंने आँहज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर उसकी वजह से नाराज़ी के आषार देखे। आपने फ़र्माया तुम दोनों अच्छा पढ़ते हो। आपस में इख़्तिलाफ़ न किया करो। तुमसे पहले लोग इसी क़िस्म के झगड़ों से तबाह हो गये। (राजेअ : 2410)

٣٤٧٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّزَّالَ بْنَ سَبْرَةَ الْهِلاَلِيَّ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلاً قَرَأَ آيَةً وَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ خِلاَفَهَا، فَجِئْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ الْكَرَاهِيَةَ وَقَالَ: ((كِلاَكُمَا مُحْسِنٌ، وَلاَ تَخْتَلِفُوا، فَإِنَّ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ اخْتَلَفُوا فَهَلَكُوا)).
[راجع: ٢٤١٠]

तश्रीह : या'नी क़ुर्आन मजीद में जो इख़्तिलाफ़े क़िरात है, उसमें हर आदमी को इख़्तियार है जो किरात चाहे वो पढ़े। इस अम्र में लड़ना झगड़ना मना है। ऐसे ही फ़ुरूई और क़यासी मसाइल में लड़ना झगड़ना मना है और ख़ामख़्वाह किसी को क़यासी मसाइल के लिये मजबूर करना कि वो सिर्फ़ हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह) या सिर्फ़ हज़रत इमाम शाफ़िई (रह) के इज्तिहाद पर चले ये नाहक़ का तहाकुम और जबर और ज़ुल्म है।

3477. हमसे उमर बिन हफ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे बाप हफ़्स़ बिन ग़याष ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे शक़ीक़ बिन सलमा ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा मैं गोया नबी करीम (ﷺ) को इस वक़्त देख रहा हूँ। आप बनी इस्राईल के एक नबी का वाक़िया बयान कर रहे थे कि उनकी क़ौम ने उन्हें मारा और ख़ून आलूद कर दिया। लेकिन वो नबी ख़ून स़ाफ़ करते जाते और ये दुआ़ करते कि, ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम की मग़फ़िरत फ़र्मा। ये लोग जानते नहीं हैं। (दीगर मक़ाम : 6929)

٣٤٧٧- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي شَقِيقٌ قَالَ عَبْدُ اللهِ : كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَحْكِي نَبِيًّا مِنَ الأَنْبِيَاءِ ضَرَبَهُ قَوْمُهُ فَأَدْمَوْهُ، وَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَيَقُولُ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لاَ يَعْلَمُونَ)). [طرفه في : ٦٩٢٩].

तश्रीह : कहते हैं कि ये हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) का वाक़िया है मगर उस सूरत में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) इस हदीष

को बनी इस्राईल के बाब में न लाते तो ज़ाहिर है कि ये बनी इस्राईल के किसी पैग़म्बर का ज़िक्र है। मुसलमानों को चाहिये कि इस हदीष़ से नसीहत लें, ख़ुसूसन आलिमों और मौलवियों को जो दीन की बातें बयान करने में डरते हैं। हालाँकि अल्लाह की राह में लोगों की तरफ़ से तकालीफ़ बर्दाश्त करना पैग़म्बरों की मीराष़ है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **व क़द ज़कर मुस्लिमुन बअ़द तख़रीजि हाज़ल्हदीषि हदीषु अन्नहू (ﷺ) क़ाल फ़ी क़िस्सति उहुद कैफ़ युफ़्लिहु क़ौमुन दमू वज्ह नबिय्यिहिम फअन्ज़लल्लाहु लैस लक मिनल अम्रि शैआ व मिन ष़म्म क़ालल्कुर्तुबी अन्नन्नबिय्य (ﷺ) अल्हाक़ी वल्मुहकी कमा सयाती व अम्मन्नववी फक़ाल हाज़न्नबिय्यु (ﷺ) अल्लज़ी जरा लहू मा हकाहुन्नबिय्यु (ﷺ) मिनल्मुतक़द्दिमीन व क़द जरा लिनबिय्यिना नहव ज़ालिक यौम उहुद** (फ़त्हुल्बारी) या'नी इमाम मुस्लिम (रह) ने इस हदीष़ की तख़रीज के बाद लिखा है कि उहुद के वाक़िये पर जबकि आपका चेहर-ए-मुबारक ख़ून आलूद हो गया था, आपने फ़र्माया था कि वो क़ौम कैसे फ़लाह पाएगी जिसने अपने नबी का चेहरा ख़ून आलूद कर दिया। अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई कि ऐ नबी! आपको इस बारे में मुख़्तार नहीं बनाया गया या'नी क़रीब है कि यही लोग हिदायत पा जाएँ (जैसा कि बाद में हुआ) उस जगह क़ुर्तुबी (रह.) ने कहा कि इस वाक़िये के हाकी और महकी ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) ही हैं। गोया आप अपने ही बारे में ये हिकायत नक़ल कर रहे हैं। इमाम नववी (रह) ने कहा कि आपने ये किसी गुज़िश्ता नबी ही की हिकायत नक़ल की है और हमारे नबी मुहतरम (ﷺ) के साथ भी जंगे उहुद में यही माजरा गुज़रा। बहरहाल इस हदीष़ से बहुत से ईमान अफ़रोज़ नतीजे निकलते हैं। मर्दाने राहे ख़ुदा का यही तरीक़ा है कि वो जानी दुश्मनों को भी दुआ-ए-ख़ैर ही से याद फ़र्माया करते हैं। सच है, **व मा युलक़्क़ाहा इल्लल्लज़ीन सबरू व मा युलक़्क़ाहा इल्ला हज़्ज़िन अज़ीम** (हामीम सज्दा : 35)

٣٤٧٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَبْدِ الْغَافِرِ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَنَّ رَجُلاً كَانَ قَبْلَكُمْ رَغَسَهُ اللهُ مَالاً، فَقَالَ لِبَنِيْهِ لَمَّا حُضِرَ: أَيَّ أَبٍ كُنْتُ لَكُمْ؟ قَالُوا: خَيْرَ أَبٍ. قَالَ: فَإِنِّي لَمْ أَعْمَلْ خَيْرًا قَطُّ، فَإِذَا مِتُّ فَأَحْرِقُونِي، ثُمَّ اسْحَقُونِي ثُمَّ ذَرُّونِي فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ. فَفَعَلُوا. فَجَمَعَهُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ فَقَالَ: مَا حَمَلَكَ؟ قَالَ: مَخَافَتُكَ. فَتَلَقَّاهُ بِرَحْمَتِهِ)). وَقَالَ مُعَاذٌ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عُقْبَةَ بْنَ عَبْدِ الْغَافِرِ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا سَعِيْدٍ الْخُدْرِيَّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).

[طرفاه في : ٦٤٨١، ٧٥٠٨].

3478. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे उ़क़्बा बिन अ़ब्दुल ग़ाफ़िर ने, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने कि गुज़िश्ता उम्मतों में एक आदमी को अल्लाह तआला ने ख़ूब दौलत दी थी। जब उसकी मौत का वक़्त आया तो उसने अपने बेटों से पूछा, मैं तुम्हारे हक़ में कैसा बाप ष़ाबित हुआ? बेटों ने कहा कि आप हमारे बेहतरीन बाप थे। उस शख़्स ने कहा लेकिन मैंने उम्र भर कोई नेक काम नहीं किया। इसलिये जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला देना, फिर मेरी हड्डियों को पीस डालना और (राख को) किसी सख़्त आँधी के दिन हवा में उड़ा देना। बेटों ने ऐसा ही किया। लेकिन अल्लाह पाक ने उसे जमा किया और पूछा कि तूने ऐसा क्यों किया? उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि परवरदिगार तेरे ही डर से। चुनाँचे अल्लाह तआला ने उसे अपने साये रहमत में जगह दी। इस हदीष़ को मुआ़ज़ अ़म्बरी ने बयान किया कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उन्होंने उ़क़्बा बिन अ़ब्दुल ग़ाफ़िर से सुना, उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (दीगर मक़ाम : 6481, 7508)

٣٤٧٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ

3479. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने,

उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने, उनसे रिब्ई बिन हिराश ने बयान किया कि उ़क़्बा बिन अम्र अबू मसऊ़द अंसारी ने हुज़ैफ़ह (रज़ि.) से कहा कि आपने नबी करीम (ﷺ) से जो ह़दीषें सुनी हैं वो आप हमसे क्यूँ बयान नहीं करते? हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को ये कहते सुना था कि एक शख़्स की मौत का वक़्त जब क़रीब हुआ और वो ज़िन्दगी से बिलकुल नाउम्मीद हो गया तो अपने घरवालों को वसिय्यत की कि जब मेरी मौत हो जाए तो पहले मेरे लिये बहुत सी लकड़ियाँ जमा करना और उससे आग जलाना। जब आग मेरे जिस्म को राख बना चुके और सिर्फ़ हड्डियाँ बाक़ी रह जाएँ तो हड्डियों को पीस लेना और किसी सख़्त गर्मी के दिन में या (यूँ फ़र्माया कि) सख़्त हवा के दिन मे मुझको हवा में उड़ा देना लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसे जमा किया और पूछा कि तूने ऐसा क्यूँ किया था? उसने कहा कि तेरे ही डर से। आख़िर अल्लाह तआ़ला ने उसको बख़्श दिया।

عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ قَالَ: قَالَ عُقْبَةُ لِحُذَيْفَةَ: أَلاَ تُحَدِّثُنَا مَا سَمِعْتَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((إِنَّ رَجُلاً حَضَرَهُ الْمَوْتُ لَمَّا أَيِسَ مِنَ الْحَيَاةِ أَوْصَى أَهْلَهُ : إِذَا مُتُّ فَاجْمَعُوا لِيْ حَطَبًا كَثِيرًا، ثُمَّ أَوْرُوا نَارًا، حَتَّى إِذَا أَكَلَتْ لَحْمِي وَخَلَصَتْ إِلَى عَظْمِي فَخُذُوهَا فَاطْحَنُوهَا فَذَرُّونِي فِي الْيَمِّ فِي يَوْمٍ حَارٍّ - أَوْ رَاحٍ - فَجَمَعَهُ اللهُ فَقَالَ: لِمَ فَعَلْتَ؟ قَالَ: مِنْ خَشْيَتِكَ. فَغَفَرَ لَهُ)).

उ़क़्बा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने भी आहज़रत (ﷺ) को फ़र्माते हुए ये ह़दीष़ सुनी है। हमसे मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया और कहा कि इस रिवायत में फ़ी यौमि राह है (सिवा शक के) उसके मा'नी भी किसी तेज़ हवा के दिन के हैं। (राजेअ़ : 3452)

قَالَ عُقْبَةُ : وَأَنَا سَمِعْتُهُ يَقُولُ. حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ وَقَالَ : ((فِي يَوْمٍ رَاحٍ)).

[راجع: ٣٤٥٢]

तश्रीह़ : कुछ रिवायतों मे उसको कफ़न चोर बतलाया गया। बहरहाल उसने अपने ख़्याले बातिल में उख़रवी अ़ज़ाबों से बचने का ये रास्ता सोचा था मगर अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। उसने उस राख के ज़र्रे ज़र्रे को जमा करके उसको ह़िसाब के लिये खड़ा कर दिया। ऐसे तवाहहुमाते बातिला सरासर फ़ित़रते इंसानी के ख़िलाफ़ हैं।

3480. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) अलैहित तहिय्यतु व तस्लीम ने फ़र्माया, एक शख़्स लोगों को क़र्ज़ दिया करता था, और अपने नौकरों को उसने ये कह रखा था कि जब तुम किसी मुफ़्लिस को पाओ (जो मेरा क़र्ज़दार हो) तो उसे मुआफ़ कर दिया करो। मुम्किन है अल्लाह तआ़ला भी हमें

٣٤٨٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((كَانَ الرَّجُلُ يُدَايِنُ النَّاسَ، فَكَانَ يَقُولُ لِفَتَاهُ : إِذَا أَتَيْتَ مُعْسِرًا

मुआफ़ कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया वो अल्लाह तआला से मिला तो अल्लाह ने उसे बख़्श दिया। (राजेअ : 2078)

فَتَجَاوَزْ عَنْهُ، لَعَلَّ اللهَ أَنْ يَتَجَاوَزَ عَنَّا. قَالَ: فَلَقِيَ اللهَ فَتَجَاوَزَ عَنْهُ)).

[راجع: ٢٠٧٨]

3481. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, एक शख़्स बहुत गुनाह किया करता था, जब उसकी मौत का वक़्त क़रीब आया तो अपने बेटों से उसने कहा कि जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला डालना फिर मेरी हड्डियों को पीसकर हवा में उड़ा देना। अल्लाह की क़सम! अगर मेरे रब ने मुझे पकड़ लिया तो मुझे इतना सख़्त अज़ाब देगा जो पहले किसी को भी उसने नहीं दिया होगा। जब वो मर गया तो (उसकी वसिय्यत के मुताबिक़) उसके साथ ऐसा ही किया गया। अल्लाह तआला ने ज़मीन को हुक्म फ़र्माया कि अगर एक ज़र्रा भी कहीं उसके जिस्म का तेरे पास है तो उसे जमा करके ला। ज़मीन हुक्म बजा लाई और वो बन्दा अब (अपने रब के सामने) खड़ा हुआ था। अल्लाह तआला ने पूछा, तूने ऐसा क्यूँ किया? उसने अर्ज़ किया कि ऐ रब! तेरे डर की वजह से। आख़िर अल्लाह तआला ने उसकी मग़्फ़िरत कर दी। अबू हुरैरह (रज़ि.) के सिवा दूसरे सहाबा ने इस हदीष में लफ़्ज़ ख़श्यतक के बदल मुख़ाफ़तुक कहा है (दोनों लफ़्ज़ों का मतलब एक ही है)।

(दीगर मक़ाम : 5706)

٣٤٨١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كَانَ رَجُلٌ يُسْرِفُ عَلَى نَفْسِهِ، فَلَمَّا حَضَرَهُ الْمَوْتُ قَالَ لِبَنِيهِ: إِذَا أَنَا مُتُّ فَأَحْرِقُونِي، ثُمَّ اطْحَنُونِي، ثُمَّ ذَرُّونِي فِي الرِّيحِ، فَوَ اللهِ لَئِنْ قَدَرَ اللهُ عَلَيَّ لَيُعَذِّبَنِّي عَذَابًا مَا عَذَّبَهُ أَحَدًا. فَلَمَّا مَاتَ فُعِلَ بِهِ ذَلِكَ، فَأَمَرَ اللهُ تَعَالَى الأَرْضَ فَقَالَ : اجْمَعِي مَا فِيكِ مِنْهُ، فَفَعَلَتْ، فَإِذَا هُوَ قَائِمٌ، قَالَ: مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ؟ قَالَ : مَخَافَتُكَ يَا رَبِّ حَمَلَتْنِي. فَغَفَرَ لَهُ)) وقَالَ غَيْرُهُ : ((خَشْيَتُكَ يَا رَبِّ)).

[طرفه في : ٥٧٠٦].

हाफ़िज़ साहब (रह) फ़र्माते हैं कि अल्फ़ाज़ लइन क़दरल्लाहु अलय्य उस शख़्स ने ख़ौफ़ व दहशत के ग़लबे की वजह से ये अल्फ़ाज़ ज़ुबान से निकाले जब कि वो हालते ग़फ़लत और निस्यान में था इसीलिये ये अल्फ़ाज़ उसके लिये क़ाबिले मुवाख़ज़ा नहीं हुए।

3482. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि (बनी इस्राईल की) एक औरत को एक बिल्ली की वजह से अज़ाब दिया गया था जिसे उसने क़ैद कर रखा था जिससे वो बिल्ली मर गई थी और उसकी सज़ा में वो औरत दोज़ख़ में गई। जब वो औरत बिल्ली को बाँधे हुए थी तो उसने उसे खाने के लिये कोई चीज़ न दी, न पीने के लिये और न उसने बिल्ली

٣٤٨٢- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((عُذِّبَتِ امْرَأَةٌ فِي هِرَّةٍ سَجَنَتْهَا حَتَّى مَاتَتْ فَدَخَلَتْ فِيهَا النَّارَ، لاَ هِيَ أَطْعَمَتْهَا وَلاَ سَقَتْهَا إِذْ

حَبَسَتْهَا وَلاَ هِيَ تَرَكَتْهَا تَأْكُلُ مِنْ خَشَاشِ الأَرْضِ)).

को छोड़ा ही कि वो ज़मीन के कीड़े—मकोड़े ही खा लेती।

कुछ देवबन्दी तराजिम में यहाँ घास—फूस का तर्जुमा किया गया है जो ग़ालिबन लफ़्ज़ ह़शाश ह़ायहत्ती का तर्जुमा है मगर मुशाहिदा ये है कि बिल्ली घास—फूस नहीं खाती। इसलिये यहाँ लफ़्ज़ ह़शाश भी स़ह़ीह़ नहीं, और ये तर्जुमा भी। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

٣٤٨٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ عَنْ زُهَيْرٍ حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ حَدَّثَنَا أَبُو مَسْعُودٍ عُقْبَةُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِمَّا أَدْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلاَمِ النُّبُوَّةِ : إِذَا لَمْ تَسْتَحْيِ فَافْعَلْ مَا شِئْتَ)).

[طرفاه في : ٣٤٨٤، ٦١٢٠].

3483. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे ज़ुहैर ने, कहा हमसे मंसूर ने बयान किया, उनसे रिब्ई बिन ह़िराश ने, कहा हमसे अबू मसऊ़द बिन उ़क़्बा बिन अ़म्र (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, लोगों ने अगले पैग़म्बरों के कलाम जो पाए उनमें ये भी है कि जब तुझमें ह़या न हो तो फिर जो जी चाहे कर।

(दीगर मक़ाम : 3474, 6120)

٣٤٨٤- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورٍ قَالَ: سَمِعْتُ رِبْعِيَّ بْنَ حِرَاشٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبُو مَسْعُودٍ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِمَّا أَدْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلاَمِ النُّبُوَّةِ: إِذَا لَمْ تَسْتَحْيِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ)).

[راجع: ٣٤٨٣]

3484. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा मैंने रिब्ई बिन ह़िराश से सुना, वो अबू मसऊ़द अंसारी (रज़ि.) से रिवायत करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगले पैग़म्बरों के कलाम में से लोगों ने जो पाया ये भी है कि जब तुझमे ह़या न हो फिर जो जी चाहे कर। (राजेअ़ : 3473)

तश्रीह : फ़ारसी में इसका तर्जुमा यूँ है। बेह़या बाश हर चे ख़्वाही कुन। मत़लब ये है कि जब ह़या शर्म ही न रही हो तो तमाम बुरे काम शौक़ से करता रह। आख़िर एक दिन ज़रूर अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होगा। इस ह़दीष़ की सनद में मंसूर के सिमाअ़ की रिब्ई से स़राह़त है। दूसरे इफ़्अ़ल की जगह इस्नअ़ है। लिहाज़ा तकरार बे फ़ायदा नहीं है।

٣٤٨٥- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا رَجُلٌ يَجُرُّ إِزَارَهُ مِنَ الْخُيَلاَءِ خُسِفَ بِهِ، فَهُوَ يَتَجَلْجَلُ فِي الأَرْضِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)). تَابَعَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ خَالِدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ.

[طرفه في : ٥٧٩٠].

3485. हमसे बिश्र बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने ख़बर दी और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक शख़्स तकब्बुर की वजह से अपना तहबन्द ज़मीन से घसीटता हुआ जा रहा था कि उसे ज़मीन में धंसा दिया और अब वो क़यामत तक यूँ ही ज़मीन में धंसता चला जाएगा। यूनुस के साथ इस ह़दीष़ को अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ालिद ने भी ज़ुहरी से रिवायत किया है।

(दीगर मक़ाम : 5790)

इस रिवायत में क़ारून मुराद है जिसके धंसाए जाने का ज़िक्र क़ुर्आन मजीद में भी है।

٣٤٨٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نَحْنُ الآخِرُونَ السَّابِقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، بَيْدَ كُلُّ أُمَّةٍ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِنَا وَأُوتِينَا مِنْ بَعْدِهِمْ. فَهَذَا الْيَوْمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ، فَغَدًا لِلْيَهُودِ، وَبَعْدَ غَدٍ لِلنَّصَارَى)). [راجع: ٢٣٨]

3486. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन ताऊस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हम (दुनिया में) तमाम उम्मतों के आख़िर में आए। लेकिन (क़यामत के दिन) तमाम उम्मतों से आगे होंगे। सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि उन्हें पहले किताब दी गई और हमें बाद में मिली और यही वो (जुम्आ का) दिन है जिस के बारे में लोगों ने इख़्तिलाफ़ किया। यहूदियों ने तो उसे उसके दूसरे दिन (हफ़्ता को) कर लिया और नसारा ने तीसरे दिन (इतवार को)।

(राजेअ : 238)

٣٤٨٧- ((عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ فِي كُلِّ سَبْعَةِ أَيَّامٍ يَوْمٌ يَغْسِلُ رَأْسَهُ وَجَسَدَهُ)). [راجع: ٨٩٧]

3487. पस हर मुसलमान को हफ़्ते में एक दिन (या'नी जुम्आ के दिन) तो अपने जिस्म और सर को धो लेना लाज़िम है।

(राजेअ : 897)

٣٤٨٨- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: ((قَدِمَ مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ الْمَدِينَةَ آخِرَ قَدْمَةٍ قَدِمَهَا فَخَطَبَنَا فَأَخْرَجَ كُبَّةً مِنْ شَعَرٍ فَقَالَ: مَا كُنْتُ أُرَى أَنَّ أَحَدًا يَفْعَلُ هَذَا غَيْرَ الْيَهُودِ، وَإِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمَّاهُ الزُّورَ. يَعْنِي الْوِصَالَ فِي الشَّعَرِ)). تَابَعَهُ غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ. [راجع: ٣٤٦٨]

3488. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अम्र बिन मुर्रह ने, कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, आपने बयान किया कि मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) ने मदीना के अपने आख़िरी सफ़र में हमें ख़िताब किया और (ख़ुत्बा के दौरान) आपने बालों का एक गुच्छा निकाला और फ़र्माया, मैं समझता हूँ कि यहूदियों के सिवा और कोई इस तरह न करता होगा और नबी करीम (ﷺ) ने इस तरह बाल संवारने का नाम अज़्ज़ूर (फ़रेब व झूठ) रखा है। आपकी मुराद, विस़ाल फ़िश्शअ़र से थी। या'नी बालों में जोड़ लगाने से थी (जैसे अकष़र औरतें मस्नूई बालों में जोड़ किया करती हैं) आदम के साथ इस ह़दीष़ को ग़ुन्दर ने भी शुअबा से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 3467)

औरत का ऐसे मस्नूई बालों से ज़ीनत (श्रंगार) करना मना है। इमाम बुख़ारी (रह) ने यहाँ पर किताबुल अंबिया को ख़त्म कर दिया जिसमें अह़ादीष़े मर्फ़ूआ और मुकर्ररात और तअ़लीक़ात वग़ैरह मिलकर सबकी ता'दाद दो सौ नौ (209) अह़ादीष़ हैं। अहले इल्म तफ़्सील के लिये फ़त्हुल बारी का मुतालआ़ करें।

हाफ़िज़ साहब (रह) फ़र्माते हैं अकषर नुस्ख़ों में बाबुल मनाक़िब है किताब का लफ़्ज़ नहीं है और यही सहीह मा'लूम होता है। ये अलग बाब नहीं बल्कि उसी किताबुल अंबिया में दाख़िल है जिसमें ख़ातिमुल अंबिया के हालात मज़्कूर हैं, जैसे पिछले बाबों में पिछले पैग़म्बरों के हालात मज़्कूर थे। फिर हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल अंबिया को ख़त्म करते हुए जनाब रसूले करीम (ﷺ) की ज़िन्दगी पर रोशनी डालने के लिये ये अब्वाब मुनअक़िद फ़र्माए जिसमें इब्तिदा से इंतिहा तक बहुत से कवाइफ़ का तज़्किरा हुआ है। मषलन पहले आपका नसब शरीफ़ ज़िक्र में आया और अन्साब के बारे में उमूर का ज़िक्र किया। फिर क़बाइल का ज़िक्र आया। फिर फ़ख़्र बिल अन्साब पर रोशनी डाली, फिर आँहज़रत (ﷺ) के शमाइल व फ़ज़ाइल को बयान किया गया फिर फ़ज़ाइले सहाबा का ज़िक्र हुआ। फिर हिजरत से पहले मक्की ज़िन्दगी के हालात, मुब्अषे इस्लाम सहाबा, हिजरते हब्शा, मेअराज और वफ़ूदुल अंसार, फिर मदीना के लिये हिजरत के वाक़ियात मज़्कूर हुए। फिर तर्तीब से मग़ाज़ी का ज़िक्र आया, फिर वफ़ाते नबवी का ज़िक्र हुआ। **फहाज़ा आखिरू** हाज़लल्बाबि व हुव मिन जुम्लति तराजिमिल्अम्बियाइ (ﷺ) (फ़त्हुल्बारी)

बाब 1 : अल्लाह तआला का सूरह हुजुरात में इर्शाद

ऐ लोगों! मैंने तुम सबको एक ही मर्द आदम और एक ही औरत हव्वा से पैदा किया है और तुमको मुख़्तलिफ़ क़ौमें और ख़ानदान बना दिया है ताकि तुम बतौरे रिश्तेदारी एक दूसरे को पहचान सको। बेशक तुम सबमें से अल्लाह के नज़दीक मुअज़्ज़ज़ वो है जो ज़्यादा परहेज़गार हो, और अल्लाह तआला का सूरह निसा में इर्शाद, और अल्लाह से डरो जिसका नाम लेकर तुम एक–दूसरे से मांगते हो और नाता तोड़ने से डरो। बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर निगराँ है, और जाहिलियत की तरह बाप-दादाओं पर फ़ख़्र करना मना है, उसका बयान शुऊब शअब की जमा है जिससे ऊपर का ख़ानदान मुराद है और क़बीला उससे उतरकर नीचे का या'नी उसकी शाख़ मुराद है।

١ - بَابُ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى :
﴿ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَى وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا، إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللهِ أَتْقَاكُمْ﴾ [الحجرات: ١٣]. وَقَوْلِهِ: ﴿ وَاتَّقُوا اللهَ الَّذِيْ تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ، إِنَّ اللهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا﴾ [النساء : ١].
وَمَا يُنْهَى عَنْ دَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ. الشُّعُوبُ النَّسَبُ الْبَعِيْدُ، وَالْقَبَائِلُ دُوْنَ ذَلِكَ.

ये त़बरानी ने निकाला मुजाहिद से मष़लन अंस़ार एक शुअ़ब है या क़ुरैश एक शुअ़ब है या रबीआ या मुज़र एक शुअ़ब है। हर एक में कई एक क़बीले हैं जैसे क़ुरैश मुज़र का एक क़बीला है। हिन्दुस्तानी इस्तिलाह़ में शुअ़ब पाल के मा'नी में है और क़बीला गोत (गौत्र) के मा'नी में है। यहाँ की अकष़र नौ मुस्लिम क़ौमों में गौत और पाल की भारतीय क़ौमी तंज़ीम के कुछ कुछ आष़ार अब तक मौजूद हैं। शिमाली हिन्द (दक्षिण भारत) के इलाक़ों में गौत और पाल की इस्तिलाह़ बहुत नुमायाँ हैं।

3489. हमसे ख़ालिद बिन यज़ीद अल्काहिली ने बयान किया, कहा हमसे अबूबक्र बिन अयाश ने बयान किया, उनसे अबू हुसैन (उ़ष्मान बिन आ़स़िम) ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आयत वजअलना कुम शुऊबवं व क़बाइल **के बारे में फ़र्माया कि शुऊब बड़े क़बीलों के मा'नी में है और क़बाइल से किसी बड़े क़बीले की शाखें मुराद हैं।**

٣٤٨٩- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ يَزِيْدَ الْكَاهِلِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ عَنْ أَبِي حُصَيْنٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ﴿وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا﴾ قَالَ: الشُّعُوبُ الْقَبَائِلُ الْعِظَامُ. وَالْقَبَائِلُ: الْبُطُونُ)).

3490. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मर्तबा पूछा गया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! सबसे ज़्यादा शरीफ़ कौन है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो सबसे परहेज़गार हो। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि हमारा सवाल उसके बारे में नहीं है। उस पर आपने फ़र्माया कि फिर (नसब की रू से) अल्लाह के नबी यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) सबसे ज़्यादा शरीफ़ थे। (राजेअ़ : 3349)

٣٤٩٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدُ بْنُ أَبِي سَعِيْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قِيْلَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ أَكْرَمُ النَّاسِ؟ قَالَ: ((أَتْقَاهُمْ)). قَالُوا: لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ. قَالَ : ((فَيُوسُفُ نَبِيُّ اللهِ)).
[راجع: ٣٣٤٩]

3491. हमसे क़ैस बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे कुलैब बिन वाइल ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने बयान किया जो नबी करीम (ﷺ) की ज़ेरे परवरिश रह चुकी थीं। कुलैब ने बयान किया कि मैंने ज़ैनब से पूछा कि क्या नबी करीम (ﷺ) का ता'ल्लुक़ क़बील-ए-मुज़र से था? उन्होंने कहा फिर किस क़बीले से था? यक़ीनन आँह़ज़रत (ﷺ) मुज़र की बनी नज़र बिन किनाना की औलाद में से थे। (दीगर मक़ाम : 3492)

٣٤٩١- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا كُلَيْبُ بْنُ وَائِلٍ قَالَ : حَدَّثَتْنِي رَبِيْبَةُ النَّبِيِّ ﷺ زَيْنَبُ ابْنَةُ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: قُلْتُ لَهَا: ((أَرَأَيْتِ النَّبِيَّ ﷺ أَكَانَ مِنْ مُضَرَ؟ قَالَتْ: فَمِمَّنْ كَانَ إِلاَّ مِنْ مُضَرَ؟ مِنْ بَنِي النَّضْرِ بْنِ كِنَانَةَ)).
[طرفه في : ٣٤٩٢].

और नज़र बिन किनाना एक शाख़ है मुज़र की, क्योंकि किनाना ख़ुज़ैमा का बेटा था और ख़ुज़ैमा मुदरका का और मुदरका इल्यास का और इल्यास मुज़र का बेटा था। इस त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) का नसबी ता'ल्लुक़ ख़ानदाने मुज़र से ष़ाबित हुआ। ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) की बेटी हैं। ये मुल्के ह़ब्शा में पैदा हुईं, बतौरे रबीबा आँह़ज़रत (ﷺ) के ज़ेरे तर्बियत रहने का शर्फ़ ह़ासिल किया। उनके शौहर का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन ज़म्आ है। अपने ज़माने की औरतों में सबसे

ज़्यादा फ़क़ीहा हैं। उनसे एक जमाअ़त ने ह़दीष़ की रिवायत की है।

3492. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वाह़िद ने, कहा हमसे कुलैब ने बयान किया और उनसे रबीब-ए-नबी करीम (ﷺ) ने, मेरा ख़्याल है कि उनसे मुराद ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) हैं, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने दुब्बा, हन्तुम, मुक़य्यिर और मुज़फ़्फ़त के इस्ते'माल से मना फ़र्माया था और मैंने उनसे पूछा था कि आप मुझे बताइये कि आँहज़रत (ﷺ) का ता'ल्लुक़ किस क़बीले से था? क्या वाक़ई आपका ता'ल्लुक़ मुज़र से था? उन्होंने कहा कि फिर और किससे हो सकता है यक़ीनन आपका ता'ल्लुक़ उसी क़बीले से था। आप नज़र बिन किनाना की औलाद में से थे।

٣٤٩٢- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا كُلَيْبٌ حَدَّثَتْنِي رَبِيبَةُ النَّبِيِّ ﷺ - وَأَظُنُّهَا زَيْنَبَ - قَالَتْ: نَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنِ الدُّبَّاءِ وَالْحَنْتَمِ وَالْمُقَيَّرِ وَالْمُزَفَّتِ. وَقُلْتُ لَهَا: أَخْبِرِيْنِي، النَّبِيُّ ﷺ مِمَّنْ كَانَ، مِنْ مُضَرَ كَانَ؟ قَالَتْ: فَمِمَّنْ كَانَ إِلاَّ مِنْ مُضَرَ، كَانَ مِنْ وَلَدِ النَّضْرِ بْنِ كِنَانَةَ)).

तश्रीह : दुब्बा कद्दू के तूम्बे, ह़न्तुम सब्ज़ लाखी बर्तन, नक़ीर लकड़ी का कुरेदा हुआ बर्तन और मुज़फ़्फ़त रोग़नी बर्तन, ये चारों शराब के बर्तन थे जिसमे अरब शराब बनाया और रखा करते थे। जब शराब की मुमानअ़त नाज़िल हुई तो उन बर्तनों के इस्ते'माल से भी उन लोगों को रोक दिया गया।

3493. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको जरीर ने ख़बर दी, उन्हें अ़म्मारा ने, उन्हें अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम इंसानों को कान की तरह पाओगे (भलाई और बुराई में) जो लोग जाहिलियत के ज़माने में बेहतर और अच्छी स़िफ़ात के मालिक थे वो इस्लाम लाने के बाद भी बेहतर और अच्छी स़िफ़ात वाले हैं बशर्ते वो दीन का इल्म भी ह़ास़िल करें और हुकूमत और सरदारी के लायक़ उसको पाओगे जो हुकूमत और सरदारी को बहुत नापसन्द करता हो। (दीगर मक़ाम : 3496, 3588)

٣٤٩٣- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ أَخْبَرَنَا جَرِيْرٌ عَنْ عُمَارَةَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((تَجِدُونَ النَّاسَ مَعَادِنَ: خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلاَمِ إِذَا فَقِهُوا، وَتَجِدُونَ خَيْرَ النَّاسِ فِي هَذَا الشَّأْنِ أَشَدَّهُمْ لَهُ كَرَاهِيَةً)).

[طرفاه في : ٣٤٩٦، ٣٥٨٨].

3494. और आदमियों में सबसे बुरा उसको पाओगे जो दोरुख़ा (दोग़ला) हो। उन लोगों में एक मुँह लेकर आए, दूसरों में दूसरा मुँह। (दीगर मक़ाम : 6057, 7179)

٣٤٩٤- ((وَتَجِدُونَ شَرَّ النَّاسِ ذَا الْوَجْهَيْنِ: الَّذِي يَأْتِي هَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ، وَيَأْتِي هَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ)).

[طرفاه في : ٦٠٥٨، ٧١٧٩].

3495. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने,

٣٤٩٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا الْمُغِيْرَةُ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ

उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उस (ख़िलाफ़त के) मामले में लोग क़ुरैश के ताबेअ हैं। आम मुसलमान क़ुरैशी मुसलमानों के ताबेअ हैं जिस तरह उनके आम कुफ़्फ़ार, क़ुरैशी कुफ़्फ़ार के ताबेअ रहते चले आए हैं।

أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ : ((النَّاسُ تَبَعٌ لِقُرَيْشٍ فِي هَذَا الشَّأْنِ مُسْلِمُهُمْ تَبَعٌ لِمُسْلِمِهِمْ، وَكَافِرُهُمْ تَبَعٌ لِكَافِرِهِمْ)).

3496. और इंसानों की मिषाल कान की तरह है। जो लोग जाहिलियत के दौर में शरीफ़ थे वो इस्लाम लाने के बाद भी शरीफ़ हैं जबकि उन्होंने दीन की समझ भी हासिल की हो तुम देखोगे कि बेहतरीन और लायक़ वही षाबित होंगे जो ख़िलाफ़त व इमारत के ओहदे को बहुत ज़्यादा नापसन्द करते रहे हों, यहाँ तक कि वो उसमें गिरफ़्तार हो जाएँ। (राजेअ : 3493)

٣٤٩٦- ((وَالنَّاسُ مَعَادِنُ: خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلاَمِ إِذَا فَقِهُوا، تَجِدُونَ مِنْ خَيْرِ النَّاسِ أَشَدَّ النَّاسِ كَرَاهِيَةً لِهَذَا الشَّأْنِ حَتَّى يَقَعَ فِيهِ)).
[راجع: ٣٤٩٣]

मा'लूम हुआ इस्लाम में शराफ़त की बुनियाद दीनी उलूम और उनमें फ़ुक़ाहत हासिल करना है जो मुसलमान आलिमे दीन और फ़क़ीह हों वही अल्लाह के नज़दीक शरीफ़ हैं। दीनी फ़ुक़ाहत से किताब व सुन्नत की फ़ुक़ाहत मुराद है। राय व क़यास की फ़ुक़ाहत महज़ इब्लीसी तरीक़-ए-कार है। औलादे आदम के लिये किताब व सुन्नत के होते हुए इब्लीसी तरीक़-ए-कार की ज़रूरत नहीं।

3497. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे अब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे ताऊस ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, इल्लल् मवद्दता फ़िल् क़ुर्बा के बारे में (ताऊस ने) बयान किया कि क़ुरैश की कोई शाख़ ऐसी नहीं थी जिसमें आँहज़रत (ﷺ) की क़राबत न रही हो और उसी वजह से ये आयत नाज़िल हुई थी कि मेरा मुतालबा सिर्फ़ ये है कि तुम लोग मेरी और क़राबतदारी का लिहाज़ करो।

(दीगर मक़ाम : 4818)

٣٤٩٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الْمَلِكِ عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿إِلاَّ الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَى﴾ قَالَ: فَقَالَ سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ: قُرْبَى مُحَمَّدٍ ﷺ، فَقَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَكُنْ بَطْنٌ مِنْ قُرَيْشٍ إِلاَّ وَلَهُ فِيهِ قَرَابَةٌ، فَنَزَلَتْ عَلَيْهِ، إِلاَّ أَنْ تَصِلُوا قَرَابَةً بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ)). [طرفه في : ٤٨١٨].

इस हदीष की मुनासबत बाब के तर्जुमा से मुश्किल है। शायद चूँकि इस हदीष में रिश्तेदारी का बयान है और रिश्तेदारी का पहचानना नसब के पहचानने पर मौक़ूफ़ है। इसलिये इमाम बुख़ारी (रह) ने इस बाब में ये हदीष बयान की। (वहीदी)

3498. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने और उनसे अबू मस्ऊद (रज़ि.) ने बयान किया और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि आपने फ़र्माया, इसी तरफ़ से फ़ित्ने उठेंगे या'नी मश्रिक़ से और बेवफ़ाई और सख़्त दिली उन लोगों में है जो ऊँटों और गायों की दुम के पास चलाते

٣٤٩٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((مِنْ هَا هُنَا جَاءَتِ الْفِتَنُ نَحْوَ الْمَشْرِقِ، وَالْجَفَاءُ وَغِلَظُ الْقُلُوبِ فِي الْفَدَّادِينَ

रहते हैं या'नी रबीआ और मुज़र के लोगों में।

(राजेअ : 3302)

أَهْلِ الْوَبَرِ عِنْدَ أُصُولِ أَذْنَابِ الإِبِلِ وَالْبَقَرِ فِي رَبِيعَةَ وَمُضَرَ)).

[راجع: ٣٣٠٢]

तश्रीह : रबीआ और मुज़र क़बीले के लोग बहुत मालदार और ज़राअत-पेशा (किसान) थे। ऐसे लोगों के दिल सख़्त और बेरहम होते हैं। इस ह़दीष़ और उसके बाद वाली ह़दीष़ की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से ये है कि इस ह़दीष़ में रबीआ और मुज़र की बुराई बयान की तो दूसरे क़बीले वालों की ता'रीफ़ निकली और बाद वाली ह़दीष़ में यमन वालों और बकरियों वालों की ता'रीफ़ है और ये बाब का तर्जुमा है (वह़ीदी)। फ़र्माने नबवी के मुताबिक़ आइन्दा ज़मानों में मश्रिक़ी मुमालिक से इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ जो भी फ़ित्ने उठे वो तफ़्सील तलब हैं जिन्होंने अपने दौर में इस्लाम को शदीद तरीन नुक़्सानात पहुँचाए। सदक़ रसूलुल्लाह (ﷺ)।

3499. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि फ़ख़्र और तकब्बुर उन चीख़ने और शोर मचाने वाले ऊँट वालों में है और बकरी चराने वालों मे नरमदिली और मलाइमत होती है और ईमान तो यमन में है और ह़िक्मत (ह़दीष़) भी यमनी है। अबू अ़ब्दुल्लाह या'नी इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि यमन का नाम यमन इसलिये हुआ कि ये का'बा के दाएँ जानिब है और शाम को शाम इसलिये कहते हैं कि ये का'बा के बाएँ जानिब है, अल मशामति बाएँ जानिब को कहते हैं। बाएँ हाथ को अश्शूमा कहते हैं और बाएँ जानिब को अल अशाम कहते हैं। (राजेअ : 3301)

٣٤٩٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((الْفَخْرُ وَالْخُيَلاَءُ فِي الْفَدَّادِيْنَ أَهْلِ الْوَبَرِ، وَالسَّكِيْنَةُ فِي أَهْلِ الْغَنَمِ، وَالإِيْمَانُ يَمَانٍ وَالْحِكْمَةُ يَمَانِيَةٌ)). قَالَ : أَبُو عَبْدِ اللهِ: سُمِّيَتِ الْيَمَنَ لأَنَّهَا عَنْ يَمِيْنِ الْكَعْبَةِ، وَالشَّامَ عَنْ يَسَارِ الْكَعْبَةِ، وَالْمَشْأَمَةَ الْمَيْسَرَةَ، وَالْيَدُ الْيُسْرَى : الشُّؤْمَى، وَالْجَانِبُ الأَيْسَرُ الأَشْأَمُ.

[راجع: ٣٣٠١]

जैसे सूरह बलद में है, **वल्लज़ीन कफ़रु बिआयातिना हुम अस्हाबुल्मश्अमति** (अल बलद : 19) या'नी जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे बाएँ जानिब वाले हैं। जिनको बाएँ हाथ में नामा-ए-आमाल मिलेगा। दौरे आख़िर मे यमन में उस्ताज़ुल असातिज़ा ह़ज़रत अ़ल्लामा इमाम शौकानी (रह.) पैदा हुए जिनके ज़रिये से फ़न्ने ह़दीष़ की वो ख़िदमात अल्लाह पाक ने अंजाम दिलाईं जो रहती दुनिया तक यादगारे ज़माना रहेंगी। नैलुल औत़ार आपकी मशहूरतरीन किताब है जो शरह़े ह़दीष़ में एक अ़ज़ीम दर्जा रखती है। ग़फ़रल्लाह लहू।

बाब 2 : क़ुरैश की फ़ज़ीलत का बयान

٢- بَابُ مَنَاقِبِ قُرَيْشٍ

तश्रीह : क़ुरैश नज़र बिन किनाना की औलाद को कहते हैं और कल्बी से मन्क़ूल है कि मक्का के रहने वाले अपने आपको क़ुरैश समझते और नज़र की औलाद को क़ुरैश न जानते। जब आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि नज़र बिन किनाना की औलाद भी क़ुरैश में है, अकष़र उ़लमा का यही क़ौल है। कहते हैं क़ुरैश एक दरियाई जानवर का

नाम है जो दरिया के दूसरे सब जानवरों को खा लेता है। ये उन सबका सरदार है। इसी तरह क़ुरैश भी अरब के सब क़बीलों के सरदार थे। इसलिये उनका नाम क़ुरैश हुआ। कुछ ने कहा कि जब क़ुसय ने ख़ुज़ाआ के लोगों को हरम से बाहर किया तो बाक़ी लोग सब उनके पास जमा हुए इसलिये उनका नाम क़ुरैश हुआ जो तक़रश से निकला है जिसके मा'नी जमा होने के हैं। क़ुरैश की वजहे तस्मिया से मुता'ल्लिक़ कुछ और भी अक़्वाल हैं जिनको अल्लामा इब्ने हजर (रह) ने फ़त्हुल बारी में बयान फ़र्माया है। मगर ज़्यादा मुस्तनद क़ौल वही है जो ऊपर मज़्कूर हुआ। दौरे हाज़िर में हिन्दुस्तान में क़ुरैश बिरादरी ने अपनी अज़ीम तन्ज़ीम के तहत मुसलमानाने हिन्द में एक बेहतरीन मुक़ाम पैदा कर लिया है। जुनूबी हिन्द में ये लोग काफ़ी ता'दाद में आबाद हैं। शिमाली हिन्द में भी कम नहीं हैं। उनके डील-डोल हुलिया वग़ैरह से क़ुरैशे अरब की याद ताज़ा हो जाती है। जहाँ तक तारीख़ी हक़ाइक़ का ता'ल्लुक़ है क़ुरैश के कुछ लोग शुरू ज़मान-ए-इस्लाम में इस्लामी क़ुव्वतों के साथ हिन्दुस्तान आए और यहीं उन लोगों ने अपना वतन बना लिया और बेशतर ने यहाँ के हालात के तहत हलाल चौपायों का तिजारती धंधा इख़्तियार कर लिया। नीज़ ऐसे ही हलाल जानवरों का ज़बीहा करके उनके गोश्त की तिजारत को अपना लिया इस्लामी नुक़्त-ए-नज़र से ये कोई मज़्मूम पेशा न था बल्कि मुसलमानाने हिन्द की एक शदीद ज़रूरत थी जिसे अल्लाह ने उन लोगों के हाथों अंजाम दिलाया और अल्हम्दु लिल्लाह आज तक ये लोग उसी ख़िदमत के साथ मुल्क में मिल्ली हैसियत से बेहतरीन इस्लामी ख़िदमात अंजाम दे रहे हैं। **अल्लाहुम्म ज़िद फज़िद आमीन**

2500. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया कि मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम बयान करते थे कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) तक ये बात पहुँची जब वो क़ुरैश की एक जमाअत में थे कि अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) ये हदीष बयान करते हैं कि अन्क़रीब (क़ुर्बे क़यामत में) बनी क़हतान से एक हुक्मरान उठेगा। ये सुनकर हज़रत मुआविया (रज़ि.) ग़ुस्से हो गये। फिर आप ख़ुत्बा देने उठे और अल्लाह तआला की उसकी शान के मुताबिक़ हम्दो षना के बाद फ़र्माया, लोगों! मुझे मा'लूम हुआ है कि कुछ लोग ऐसी अहादीष बयान करते हैं जो न तो क़ुर्आन मजीद में मौजूद हैं और न रसूलुल्लाह (ﷺ) से मन्क़ूल हैं। देखो! तुममें सबसे जाहिल यही लोग हैं। उनसे और उनके ख़्यालात से बचते रहो जिन ख़्यालात ने उनको गुमराह कर दिया है। मैंने नबी करीम (ﷺ) से ये सुना है कि ये ख़िलाफ़त क़ुरैश में रहेगी और जो भी उनके साथ दुश्मनी करेगा अल्लाह तआला उसको सर के बल औंधा कर देगा जब तक वो (क़ुरैश) दीन को क़ायम रखेंगे। (दीगर मक़ाम : 7139)

٣٥٠٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: كَانَ مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ يُحَدِّثُ أَنَّهُ بَلَغَ مُعَاوِيَةَ - وَهُوَ عِنْدَهُ فِي وَفْدٍ مِنْ قُرَيْشٍ - أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَيَكُونُ مَلِكٌ مِنْ قَحْطَانَ، فَغَضِبَ مُعَاوِيَةُ، فَقَامَ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّ رِجَالاً مِنْكُمْ يَتَحَدَّثُونَ أَحَادِيْثَ لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللهِ، وَلاَ تُؤْثَرُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَأُولَئِكَ جُهَّالُكُمْ، فَإِيَّاكُمْ وَالأَمَانِيَّ الَّتِي تُضِلُّ أَهْلَهَا، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ هَذَا الأَمْرَ فِي قُرَيْشٍ، لاَ يُعَادِيْهِمْ أَحَدٌ إِلاَّ كَبَّهُ اللهُ عَلَى وَجْهِهِ، مَا أَقَامُوا الدِّيْنَ)).

[طرفه في : ٧١٣٩].

तश्रीह : क़ुरैश जब दीन और शरीअ़त को छोड़ देंगे तो उनमें से ख़िलाफ़त भी जाती रहेगी। आपने जैसा फ़र्माया था वैसा ही हुआ। पाँच छः सौ बरस तक ख़िलाफ़त बनू उमय्या और बनू अब्बासिया में क़ायम रही जो क़ुरैशी थे। जब उन्होंने शरीअ़त पर चलना छोड़ दिया तो उनकी ख़िलाफ़त छिन गई और दूसरे लोग बादशाह बन गये। तबसे आज तक फिर क़ुरैश को ख़िलाफ़त और सरदारी नहीं मिली। अब्दुल्लाह बिन अम्र ने जो हदीष रिवायत की है वो उसके ख़िलाफ़ नहीं है। इस हदीष का मतलब

ये है कि क़यामत के क़रीब एक क़हतानी अरब का बादशाह होगा। अबू हुरैरह (रज़ि.) से भी ऐसा ही मरवी है। ज़ी मुख़्बिर हब्शी से भी मर्फ़ूअन मरवी है कि हुकूमत क़ुरैश से पहले हिमयर में थी और फिर उनमें चली जाएगी। उसको अहमद और तबरानी ने निकाला है। क़हतान यमन में एक मशहूर क़बीला है हज़रत मुआविया (रज़ि.) को मुहम्मद बिन जुबैर वाली हदीष़ का इल्म न था, इसलिये उन्हे शुब्हा हुआ और उन सख़्त लफ़्ज़ों मे उस पर नोटिस लिया मगर उनका ये नोटिस स़हीह़ न था क्योंकि ये ह़दीष़ स़हीह़ है और रसूलुल्लाह (ﷺ) से सनद स़ह़ीह़ के साथ ष़ाबित है जैसा कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने भी उसको रिवायत किया है।

3501. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे आसिम बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना और उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ये ख़िलाफ़त उस वक़्त तक क़ुरैश के हाथों में बाक़ी रहेगी जब तक कि उनमें दो आदमी भी बाक़ी रहें।

(दीगर मक़ाम : 7140)

٣٥٠١- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَزَالُ هَذَا الأَمْرُ فِي قُرَيْشٍ مَا بَقِيَ مِنْهُمْ اثْنَانِ)). [طرفه في : ٧١٤٠].

तश्रीह : इमाम नववी (रह) ने कहा है कि इस ह़दीष़ से स़ाफ़ निकलता है कि ख़िलाफ़त क़ुरैश से ख़ास़ है और क़यामत तक सिवा क़ुरैशी के ग़ैर क़ुरैशी से ख़िलाफ़त की बेअ़त करना दुरुस्त नहीं और स़ह़ाबा के ज़माने में इस पर इज्माअ़ हो चुका है और अगर किसी ज़माने में क़ुरैशी के सिवा और किसी क़ौम का शख़्स़ बादशाह बन बैठा है तो उसने क़ुरैशी ख़लीफ़ा से इजाज़त ली है और उसका नाइब बन कर रहा है। (वह़ीदी)

3502. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्ने मुसय्यिब ने और उनसे जुबैर बिन मुत्इम ने बयान किया कि मैं और उ़ष़्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) दोनों मिलकर आँह़ज़रत (ﷺ) के पास गये और हमने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! बनू मुत्तलिब को तो आपने अ़ता किया और हमें (बनी उमय्या को) नज़र अंदाज़ कर दिया हालाँकि आपके लिये हम और वो एक ही दर्जे के हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, (ये सहीह है) मगर बनी हाशिम और बनू मुत्तलिब एक ही हैं।

(राजेअ़ : 3140)

٣٥٠٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ: مَشَيْتُ أَنَا وَعُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ أَعْطَيْتَ بَنِي الْمُطَّلِبِ وَتَرَكْتَنَا، وَإِنَّمَا نَحْنُ وَهُمْ مِنْكَ بِمَنْزِلَةٍ وَاحِدَةٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّمَا بَنُو هَاشِمٍ وَبَنُو الْمُطَّلِبِ شَيْءٌ وَاحِدٌ)). [راجع: ٣١٤٠]

3503. और लैष़ ने बयान किया कि मुझसे अबुल अस्वद मुहम्मद ने बयान किया और उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) बनी ज़ुह्रा के चन्द लोगों के साथ ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के पास गये। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) बनी ज़ुह्रा के साथ बहुत अच्छी तरह पेश आती थीं क्योंकि उन लोगों की रसूलुल्लाह (ﷺ) से क़राबत थी। (दीगर मक़ाम : 3505,6073)

٣٥٠٣- وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي أَبُو الأَسْوَدِ مُحَمَّدٌ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ : ذَهَبَ عَبْدُ اللهِ بْنُ الزُّبَيْرِ مَعَ أُنَاسٍ مِنْ بَنِي زُهْرَةَ إِلَى عَائِشَةَ، وَكَانَ أَرَقَّ شَيْءٍ عَلَيْهِمْ، لِقَرَابَتِهِمْ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [طرفاه في: ٣٥٠٥، ٦٠٧٣].

बनू उमय्या और बनू मुत्तलिब दोनों एक ही क़बीला की दो शाख़ें हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) की वालिदा माजिदा आमना का ता'ल्लुक़ बनी ज़ुह्रा से है। आपका नसब नामा ये है। आमना बिन्ते वहब बिन अ़ब्दे मुनाफ़ बिन ज़ुह्रा बिन किलाब बिन मुर्रह।

3504. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया और उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने (दूसरी सनद) यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने कहा कि हमारे वालिद ने हमसे बयान किया और उनसे उनके वालिद ने, कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन हुर्मज़ अल अअ़रज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़ुरैश, अंसार, जुहैना, मुज़ैना, असलम, अश्जअ़ और ग़िफ़ार इन सब क़बीलों के लोग मेरे ख़ैर–ख़्वाह हैं और उनका भी अल्लाह और उसके रसूल के सिवा कोई हिमायती नहीं है। (दीगर मक़ाम : 3512)

٣٥٠٤– حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدٍ ح. قَالَ يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ: حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ الأَعْرَجُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قُرَيْشٌ وَالأَنْصَارُ وَجُهَيْنَةُ وَمُزَيْنَةُ وَأَسْلَمُ وَأَشْجَعُ وَغِفَارٌ مَوَالِيَّ، لَيْسَ لَهُمْ مَوْلًى دُونَ اللهِ وَرَسُولِهِ)).

[طرفه في : ٣٥١٢].

दूसरी सनदे मज़्कूरा से ये ह़दीष़ नहीं मिली अल्बत्ता मुस्लिम ने उसको रिवायत किया है यअ़क़ूब से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने स़ालेह़ से, उन्होंने अअ़रज से।

3505. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, कहा कि मुझसे अबुल अस्वद ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) के बाद अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से आइशा (रज़ि.) को सबसे ज़्यादा मुहब्बत थी। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की आदत थी कि अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से जो रिज़्क़ भी उनको मिलता वो उसे स़दक़ा कर दिया करती थीं। अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने (किसी से) कहा उम्मुल मोमिनीन को उससे रोकना चाहिये (जब ह़ज़रत आइशा रज़ि. को उनकी बात पहुँची) तो उन्होंने कहा, क्या अब मेरे हाथों को रोका जाएगा। अब अगर मैंने अ़ब्दुल्लाह से बात की तो मुझ पर नज़्र वाजिब है। अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने (ह़ज़रत आइशा रज़ि. को राज़ी करने के लिये) क़ुरैश के चन्द लोगों और ख़ास़ त़ौर से रसूलुल्लाह (ﷺ) के नानिहाली रिश्तेदारों (बनू ज़ुहरा) को उनकी ख़िदमत में मुआफ़ी की सिफ़ारिश के लिये भेजा लेकिन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) फिर भी न मानीं। उस पर बनू ज़ुहरा ने जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के मामूं होते थे और उनमें अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूष़ और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) भी थे, अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से कहा कि जब हम उनकी इजाज़त से वहाँ जा बैठें तो तुम एक ही दफ़ा आकर पर्दा में घुस जाओ। चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया।

٣٥٠٥– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو الأَسْوَدِ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: ((كَانَ عَبْدُ اللهِ بْنُ الزُّبَيْرِ أَحَبَّ الْبَشَرِ إِلَى عَائِشَةَ بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي بَكْرٍ، وَكَانَ أَبَرَّ النَّاسِ بِهَا، وَكَانَتْ لاَ تُمْسِكُ شَيْئًا مِمَّا جَاءَهَا مِنْ رِزْقِ اللهِ تَصَدَّقَتْ. فَقَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ: يَنْبَغِي أَنْ يُؤْخَذَ عَلَى يَدَيْهَا، فَقَالَتْ: أَيُؤْخَذُ عَلَى يَدَيَ؟ عَلَيَّ نَذْرٌ إِنْ كَلَّمْتُهُ. فَاسْتَشْفَعَ إِلَيْهَا بِرِجَالٍ مِنْ قُرَيْشٍ، وَبِأَخْوَالِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَاصَّةً، فَامْتَنَعَتْ فَقَالَ لَهُ الزُّهْرِيُّونَ أَخْوَالُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ– مِنْهُمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الأَسْوَدِ بْنُ عَبْدِ يَغُوثَ وَالْمِسْوَرُ بْنُ مَخْرَمَةَ– إِذَا اسْتَأْذَنَّا

فَاقْتَحِمِ الْحِجَابَ، فَفَعَلَ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهَا بِعَشْرِ رِقَابٍ، فَأَعْتَقَتْهُمْ، ثُمَّ لَمْ تَزَلْ تُعْتِقُهُمْ حَتَّى بَلَغَتْ أَرْبَعِينَ، وَقَالَتْ: وَدِدْتُ أَنِّي جَعَلْتُ —حِينَ حَلَفْتُ— عَمَلاً أَعْمَلُهُ فَأَفْرُغَ مِنْهُ)).

[راجع: ٣٥٠٣]

(जब हज़रत आइशा रज़ि. ख़ुश हो गईं तो) उन्होंने उनकी ख़िदमत में दस ग़ुलाम (आज़ाद कराने के लिये बतौरे कफ़्फ़ार-ए- क़सम) भेजे और उम्मुल मोमिनीन ने उन्हे आज़ाद कर दिया। फिर आप बराबर ग़ुलाम आज़ाद करती रहीं, यहाँ तक कि चालीस ग़ुलाम आज़ाद कर दिये फिर उन्होंने कहा काश मैंने जिस वक़्त क़सम खाई थी (मन्नत मानी थी) तो मैं कोई ख़ास बयान कर देती जिसको करके मैं फ़ारिग़ हो जाती। (राजेअ़ : 3503)

या'नी साफ़ यूँ नज़्र मानती कि एक ग़ुलाम आज़ाद करूँगी या इतने मिस्कीनों को खाना खिलाऊँगी तो दिल में तरद्दुद न रहता। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने मुब्हम मन्नत मानी और कोई तफ़्सील बयान नहीं की, इसलिये एहतियातन चालीस ग़ुलाम आज़ाद किये। उससे कुछ उलमा ने दलील ली है कि मज्हूल नज़्र दुरुस्त है मगर वो उसमें एक क़सम का कफ़्फ़ारा काफ़ी समझते हैं। ये अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.), हज़रत आइशा (रज़ि.) की बड़ी बहन हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) के बेटे हैं लेकिन उनकी ता'लीम व तर्बियत बचपन ही से उनकी सगी ख़ाला हज़रत आइशा (रज़ि.) ने की थी।

बाब 3 : क़ुर्आन का क़ुरैश की ज़ुबान में नाज़िल होना

٣- بَابُ نَزَلَ الْقُرْآنُ بِلِسَانِ قُرَيْشٍ

या'नी क़ुरैश जो अ़रबी मादरी तौर पर जिस मुहावरे और जिस लब व लहजा के साथ बोलते हैं उसी तर्ज़ पर क़ुर्आन शरीफ़ नाज़िल हुआ। ये इसलिये भी कि ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) अ़रबी क़ुरैशी हैं। लिहाज़ा ज़रूरी हुआ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर ख़ुद उनकी मादरी ज़बान में कलामे इलाही नाज़िल किया जाए ताकि पहले वो ख़ुद उसे बख़ूबी समझें फिर सारी दुनिया को अहसन तरीक़ पर समझा सकें। ऐसा ही हुआ जैसा कि हयाते नबवी को बतौर शहादत पेश किया जा सकता है।

٣٥٠٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسٍ: ((أَنَّ عُثْمَانَ دَعَا زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ وَعَبْدَ اللهِ بْنَ الزُّبَيْرِ وَسَعِيدَ بْنَ الْعَاصِ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْحَارِثِ بْنَ هِشَامٍ فَنَسَخُوهَا فِي الْمَصَاحِفِ، وَقَالَ عُثْمَانُ لِلرَّهْطِ الْقُرَشِيِّينَ الثَّلاَثَةِ: إِذَا اخْتَلَفْتُمْ أَنْتُمْ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ فِي شَيْءٍ مِنَ الْقُرْآنِ فَاكْتُبُوهُ بِلِسَانِ قُرَيْشٍ فَإِنَّمَا نَزَلَ بِلِسَانِهِمْ. فَفَعَلُوا ذَلِكَ)).

[طرفاه في : ٤٩٨٤، ٤٩٨٧].

3506. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने ज़ैद बिन षाबित, अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, सईद बिन आ़स और अ़ब्दुर्रहमान बिन हारिष बिन हिशाम (रज़ि.) को बुलाया (और उनको क़ुर्आन मजीद की किताबत पर मुक़र्रर फ़र्माया। चुनाँचे उन हज़रात ने) क़ुर्आन मजीद को कई मुस्हफ़ों मे नक़ल फ़र्माया और हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने (उन चारों में से) तीन क़ुरैशी सहाबा से फ़र्माया था कि जब आप लोगों का ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) से (जो मदीना मुनव्वरा के रहने वाले थे) क़ुर्आन के किसी मुक़ाम पर (उसके किसी मुहावरे में) इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उसको क़ुरैश के मुहावरे के मुताबिक़ लिखना क्योंकि क़ुर्आन शरीफ़ क़ुरैश के मुहावरे में नाज़िल हुआ है। उन्होंने ऐसा ही किया।

(दीगर मक़ाम : 4984, 4987)

तश्रीह : हुआ ये कि क़ुर्आन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में तमाम सहाबा के इत्तिफ़ाक़ से जमा हो चुका था, वही क़ुर्आन हज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में उनके पास रहा जो हज़रत उमर (रज़ि.) की वफ़ात के बाद उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के पास था। हज़रत उष्मान ने वही क़ुर्आन हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) से मंगवाकर उसकी नक़लें मज़्कूरा बाला लोगों से लिखवाईं और एक एक नक़ल इराक़, मिस्र, शाम और ईरान वग़ैरह मुल्कों में रवाना कर दीं। हज़रत उष्मान (रज़ि.) को जो जामेअ़े क़ुर्आन (क़ुर्आन को जमअ़ करने वाले) कहते हैं वो उसी वजह से कि उन्होंने क़ुर्आन की नक़लें साफ़ ख़ता से लिखवाकर मुल्कों में रवाना कीं, ये नहीं कि क़ुर्आन उनके वक़्त में जमा हुआ। क़ुर्आन आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में ही जमा हो चुका था जो कुछ मुतफ़र्रिक़ रह गया था वो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में सब एक जगह जमा कर दिया। यहाँ बाब का मक़्सद क़ुरैश की फ़ज़ीलत बयान करना है कि क़ुर्आन मजीद उनके मुहावरे के मुताबिक़ नाज़िल हुआ।

बाब 4 : यमन वालों का हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की औलाद में होना

٤- بَابُ نِسْبَةِ الْيَمَنِ إِلَى إِسْمَاعِيْلَ

مِنْهُمْ أَسْلَمُ بْنُ أَفْصَى بْنِ حَارِثَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ عَامِرٍ مِنْ خُزَاعَةَ.

क़बीला ख़ुज़ाअ़ा की शाख़ बनू असलम बिन अफ़्सा बिन हारिषा बिन अ़म्र बिन आमिर अहले यमन में से हैं।

٣٥٠٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا سَلَمَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى قَوْمٍ مِنْ أَسْلَمَ يَتَنَاضَلُونَ بِالسُّوْقِ فَقَالَ: ((ارْمُوا بَنِي إِسْمَاعِيْلَ، فَإِنَّ أَبَاكُمْ كَانَ رَامِيًا، وَأَنَا مَعَ بَنِي فُلاَنٍ - لأَحَدِ الْفَرِيْقَيْنِ - فَأَمْسَكُوا بِأَيْدِيْهِمْ. فَقَالَ: مَا لَهُمْ؟)) قَالُوا: وَكَيْفَ نَرْمِي وَأَنْتَ مَعَ بَنِي فُلاَنٍ؟ قَالَ: ((ارْمُوا، وَأَنَا مَعَكُمْ كُلِّكُمْ)). [راجع: ٢٨٩٩]

3507. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) क़बीला असलम के सहाबा की तरफ़ से गुज़रे जो बाज़ार में तीरंदाज़ी कर रहे थे तो आपने फ़र्माया ऐ औलादे इस्माईल! ख़ूब तीरंदाज़ी करो कि तुम्हारे बाबा हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) भी तीरंदाज़ थे और आपने फ़र्माया मैं फ़लाँ जमाअ़त के साथ हूँ। ये सुनकर दूसरी जमाअ़त वालों ने हाथ रोक लिये तो आपने दरयाफ़्त किया कि क्या बात हुई? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि जब आप दूसरे फ़रीक़ के साथ हो गये तो फिर हम कैसे तीरंदाज़ी करें ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम तीरंदाज़ी जारी रखो। मैं तुम सबके साथ हूँ। (राजेअ़ : 2899)

ये तीरंदाज़ी करने वाले बाशिन्दगाने यमन से थे। रसूले करीम (ﷺ) ने नसब के लिहाज से उन्हें हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की तरफ़ मन्सूब किया। इसी से बाब का मतलब षाबित हुआ कि अहले यमन औलादे इस्माईल (अलैहिस्सलाम) हैं। इस हदीष़ की रू से आजकल बन्दूक़ की निशानेबाज़ी और दूसरे जदीद अस्लहा का इस्ते'माल सीखना मुसलमानों के लिये उसी बशारत में दाख़िल है। मगर ये फ़साद और ग़ारतगरी और बग़ावत के लिये न हो। **इन्नल्लाह ला युहिब्बुल्मुफ़्सिदीन**

बाब : 5

٥- بَابٌ

٣٥٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنِ الْحُسَيْنِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يَعْمَرَ أَنَّ أَبَا

3508. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन वाक़िद ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने बयान किया, कहा मुझसे यह्या बिन यअ़मर ने बयान किया, उनसे अबुल अस्वद देली ने बयान किया

और उनसे अबू ज़र (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि जिस शख़्स ने भी जान बूझकर अपने बाप के सिवा किसी और को अपना बाप बनाया तो उसने कुफ़्र किया और जिस शख़्स ने भी अपना नसब किसी ऐसी क़ौम से मिलाया जिससे उसका कोई (नसबी) ता'ल्लुक़ नहीं है तो वो अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (दीगर मक़ाम : 6045)

الأَسْوَدِ الدِّيْلِيُّ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَيْسَ مِنْ رَجُلٍ ادَّعَى لِغَيْرِ أَبِيْهِ - وَهُوَ يَعْلَمُهُ - إِلاَّ كَفَرَ، وَمَنِ ادَّعَى قَوْمًا لَيْسَ لَهُ فِيهِمْ نَسَبٌ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ)).

[طرفه في : ٦٠٤٥].

मुराद वह शख़्स है जो ऐसा करना दुरुस्त समझे या ये बतौर तग़्लीज़ के है। या कुफ़्र से नाशुक्री मुराद है। वल्लाहु आलम।

3509. हमसे अली बिन अयाश ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल वाहिद बिन अ़ब्दुल्लाह नस़री ने बयान किया, कहा कि मैंने वाष़िला बिन अस्क़आ (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे बड़ा बोहतान और सख़्त झूठ ये है कि आदमी अपने बाप के सिवा किसी और को अपना बाप कहे या जो चीज़ उसने ख़्वाब में नहीं देखी, उसके देखने का दा'वा करे। या रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ ऐसी ह़दीष़ मन्सूब करे जो आपने न फ़र्माई हो।

٣٥٠٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَيَّاشٍ حَدَّثَنَا حَرِيْزٌ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ النَّصْرِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ وَاثِلَةَ بْنَ الأَسْقَعِ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ أَعْظَمِ الْفِرَى أَنْ يَدَّعِيَ الرَّجُلُ إِلَى غَيْرِ أَبِيْهِ، أَوْ يُرِيَ عَيْنَهُ مَا لَمْ تَرَ، أَوْ يَقُولُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ مَا لَمْ يَقُلْ)).

तश्रीह : झूठा ख़्वाब बयान करना बेदारी में झूठ बोलने से बढ़कर गुनाह है क्योंकि ख़्वाब नुबुव्वत के ह़िस्सों में से एक ह़िस्सा है। झूठा ख़्वाब बयान करने वाला गोया अल्लाह पर बोहतान लगाता है। यही ह़ाल झूठी ह़दीष़ बयान करने वाले का है, जो रसूलुल्लाह (ﷺ) पर इल्ज़ाम लगाता है। ऐसा शख़्स़ अगर तौबा न करे तो वो ज़िन्दा दोज़ख़ी है। आजकल बहुत से लोग शैख़, सय्यद, पठान फ़र्ज़ी त़ौर पर बन जाते हैं उनको इस इर्शादे नबवी पर ग़ौर करना चाहिये कि ये कितना बड़ा गुनाह है।

3510. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि क़बीला अ़ब्दुल क़ैस का वफ़्द रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आया और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारा ता'ल्लुक़ क़बीला रबीआ से है और हमारे और आपके दरम्यान (रास्ते में) कुफ़्फ़ारे मुज़र का क़बीला पड़ता है। इसलिये हम आपकी ख़िदमत अक़्दस में सिर्फ़ हुर्मत के महीनों में ही ह़ाज़िर हो सकते हैं। मुनासिब होता अगर आप हमें ऐसे अहकाम बतला देते जिन पर हम ख़ुद भी मज़बूती से क़ायम रहें और जो लोग हमारे पीछे रह गये हैं उन्हें भी बता दें। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें चार चीज़ों का हुक्म देता हूँ और चार

٣٥١٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنهُمَا يَقُولُ: قَدِمَ وَفْدُ عَبْدِ الْقَيْسِ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ هَذَا الْحَيَّ مِنْ رَبِيْعَةَ، قَدْ حَالَتْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ كُفَّارُ مُضَرَ، فَلَسْنَا نَخْلُصُ إِلَيْكَ إِلاَّ فِي كُلِّ شَهْرٍ حَرَامٍ، فَلَوْ أَمَرْتَنَا بِأَمْرٍ نَأْخُذُهُ عَنْكَ، وَنُبَلِّغُهُ مَنْ وَرَاءَنَا. قَالَ ﷺ: ((آمُرُكُمْ

चीज़ों से रोकता हूँ। अव्वल अल्लाह पर ईमान लाने का। या'नी उसकी गवाही देना कि अल्लाह तआला के सिवा और कोई मा'बूद नहीं और नमाज़ क़ायम करने का और ज़कात अदा करने का और इस बात का कि जो कुछ भी तुम्हें माले ग़नीमत मिले उसमें से पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह को (या'नी इमामे वक़्त के बैतुलमाल को) अदा करो और मैं तुम्हें दुब्बा, हन्तुम, नक़ीर और मुज़फ़्फ़त (के इस्ते'माल) से मना करता हूँ।

بِأَرْبَعٍ وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: الإِيْمَانِ بِاللهِ شَهَادَةِ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَإِقَامِ الصَّلاَةِ، وَإِيْتَاءِ الزَّكَاةِ، وَأَنْ تُؤَدُّوا إِلَى اللهِ خُمُسَ مَا غَنِمْتُمْ. وَأَنْهَاكُمْ عَنِ الدُّبَّاءِ، وَالْحَنْتَمِ، وَالنَّقِيْرِ، وَالْمُزَفَّتِ)). [راجع: ٥٣]

ये ह़दीष़ किताबुल ईमान में गुज़र चुकी है और इसी किताबुल मनाक़िब के शुरू में इस ह़दीष़ का कुछ ह़िस्सा और उसके अल्फ़ाज़ के मआनी व मत़ालिब भी आ चुके हैं । बाब की मुनासबत ये है कि आख़िर अरब के लोग या तो रबीआ की शाख़ हैं, या मुज़र की और ये दोनों ह़ज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की औलाद हैं। बाद में ये तमाम क़बीले मुसलमान हो गये थे।

5511. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप मिम्बर पर फ़र्मा रहे थे। आगाह हो जाओ इस त़रफ़ से फ़साद फूटेगा। आपने मश्रिक़ की त़रफ़ इशारा करके ये जुम्ला फ़र्माया, जिधर से शैत़ान का सींग तुलूअ होता है। (राजेअ : 3104)

٣٥١١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ: ((أَلاَ إِنَّ الْفِتْنَةَ هَا هُنَا - يُشِيْرُ إِلَى الْمَشْرِقِ - مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ)). [راجع: ٣١٠٤]

शैत़ान तुलूए आफ़ताब (सूर्योदय) के वक़्त अपना सर उस पर रख देता है ताकि सूरज के पुजारियों का सज्दा शैत़ान के लिये हो जाए। उ़लमा ने लिखा है, ये ह़दीष़ इशारा है तुर्कों के फ़साद का जो चंगेज़ ख़ाँ के ज़माने में हुआ। उन्होंने मुसलमानों को बहुत तबाह किया, बग़दाद को लूटा और ख़िलाफ़ते इस्लामी को बर्बाद कर दिया। (वह़ीदी)

बाब 6 : असलम, जुहैना, ग़िफ़ार और अश्जअ़ क़बीलों का बयान

٦- بَابُ ذِكْرِ أَسْلَمَ وَغِفَارَ وَمُزَيْنَةَ وَجُهَيْنَةَ وَأَشْجَعَ

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह) फ़र्माते हैं कि ये पाँचों क़बीले अ़रब में बड़े ज़ोरदार क़बीले थे और दूसरे क़बीलों से पहले यही इस्लाम लाए। इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको फ़ज़ीलत अ़ता फ़र्माई। ऐसे ज़ोरावर क़बीलों के इस्लाम क़ुबूल करने से अ़रब में इशाअ़त इस्लाम का दरवाज़ा खुल गया और दूसरे छोटे क़बीले ख़ुशी ख़ुशी इस्लाम क़ुबूल करते चले गये क्योंकि अ़वाम अपने बड़ों के क़दम-ब-क़दम चलने वाले होते हैं। सच है, **यदख़ुलून फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा** (अन् नस्र : 2)

3512. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन हुर्मुज़ अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़ुरैश, अंसार, जुहैना, मुज़ैना,

٣٥١٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَعْدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ

النَّبِيُّ ﷺ: ((قُرَيْشٌ وَالأَنْصَارُ وَجُهَيْنَةُ وَمُزَيْنَةُ وَأَسْلَمُ وَغِفَارُ وَأَشْجَعُ مَوَالِيَّ، لَيْسَ لَهُمْ مَوْلًى دُونَ اللهِ وَرَسُولِهِ)).
[راجع: ٣٥٠٤]

असलम, ग़िफ़ार और अश्जअ़ मेरे ख़ैरख़्वाह हैं और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के सिवा और कोई उनका हिमायती नहीं।
(राजेअ़ : 3504)

यहाँ ब-सिलसिल-ए-तज़्किरा क़बीला आपने कुरैश का ज़िक्र मुक़द्दम फ़र्माया। इससे भी कुरैश की बरतरी षाबित होती है।

٣٥١٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ غُرَيْرٍ الزُّهْرِيُّ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ صَالِحٍ حَدَّثَنَا نَافِعٌ أَنَّ عَبْدَ اللهِ أَخْبَرَهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ عَلَى الْمِنْبَرِ: ((غِفَارُ غَفَرَ اللهُ لَهَا، وَأَسْلَمُ سَالَمَهَا اللهُ، وَعُصَيَّةُ عَصَتِ اللهَ وَرَسُولَهُ)).

3513. हमसे मुहम्मद बिन ग़ुरैर ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया। उनसे उनके वालिद ने, उनसे स़ालेह ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मिम्बर पर फ़र्माया, क़बीला ग़िफ़ार की अल्लाह तआ़ला ने मग़्फ़िरत फ़र्मा दी और क़बीला असलम को अल्लाह तआ़ला ने सलामत रखा और क़बीला उ़स़य्या ने अल्लाह तआ़ला की और उसके रसूल की नाफ़र्मानी की।

क़बीला ग़िफ़ार वाले अ़हदे जाहिलियत में ह़ाजियों का माल चुराते, चोरी करते। इस्लाम लाने के बाद अल्लाह तआ़ला ने उनके गुनाहों को मुआ़फ़ कर दिया और क़बीला उ़स़य्या वाले वो लोग हैं जिन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से अ़हद करके ग़द्दारी की और बीरे मऊ़ना वालों को शहीद कर दिया। शुह्दा बीरे मऊ़ना के ह़ालात किसी दूसरे मुक़ाम पर तफ़्सील से मज़्कूर हो चुके हैं।

٣٥١٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَسْلَمُ سَالَمَهَا اللهُ، وَغِفَارُ غَفَرَ اللهُ لَهَا)).

3514. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल वह्हाब षक़फ़ी ने ख़बर दी, उन्हे अय्यूब ने, उन्हें मुहम्मद ने, उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने बयान किया कि क़बीला असलम को अल्लाह तआ़ला ने सलामत रखा और क़बीला ग़िफ़ार की अल्लाह तआ़ला ने मग़्फ़िरत फ़र्मा दी।

٣٥١٥- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنِي ابْنُ مَهْدِيٍّ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرَأَيْتُمْ أَنْ كَانَ جُهَيْنَةُ وَمُزَيْنَةُ وَأَسْلَمُ وَغِفَارُ خَيْرًا مِنْ بَنِي تَمِيمٍ وَبَنِي أَسَدٍ وَمِنْ بَنِي عَبْدِ اللهِ بْنِ

3515. हमसे क़बीस़ा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा और मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र ने और उनसे उनके वालिद अबूबक्र (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बताओ, क्या जुहैना, मुज़ैना, असलम और ग़िफ़ार के क़बीले बनी तमीम, बनी असद, बनी अ़ब्दुल्लाह बिन ग़त्फ़ान और

बनी आमिर बिन स़अ़स़अ़ा के मुक़ाबले में बेहतर हैं? एक शख़्स (अक़रअ़ा बिन ह़ाबिस) ने कहा कि वो तो तबाह व बर्बाद हुए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ ये चारो क़बीले बनू तमीम, बनू असद, बनू अ़ब्दुल्लाह बिन ग़त्फ़ान और बनू आमिर बिन स़अ़स़अ़ा के क़बीलों से बेहतर हैं। (दीगर मक़ाम : 3516, 6635)

غَطَفَانَ وَمِنْ بَنِي عَامِرِ بْنِ صَعْصَعَةَ؟)) فَقَالَ رَجُلٌ: خَابُوا وَخَسِرُوا. فَقَالَ: ((هُمْ خَيْرٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ وَمِنْ أَسَدٍ وَمِنْ بَنِي عَبْدِ اللهِ بْنِ غَطَفَانَ وَمِنْ بَنِي عَامِرِ بْنِ صَعْصَعَةَ)).[طرفاه في: ٣٥١٦، ٦٦٣٥].

जाहिलियत के ज़माने में जुहैना, मुज़ैना, असलम और ग़िफ़ार के क़बीले बनी तमीम, बनी असद, बनी अ़ब्दुल्लाह बिन ग़त्फ़ान और बनू आमिर बिन स़अ़स़अ़ा वग़ैरह क़बीलों से कम दर्जा के समझे जाते थे। फिर जब इस्लाम आया तो उन्होंने उसे क़ुबूल करने में पेशक़दमी की, इसलिये शर्फ़े फ़ज़ीलत में बनू तमीम वग़ैरह क़बीलों से ये लोग बढ़ गये।

3516. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अबी यअ़क़ूब ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र से सुना, उन्होंने अपने वालिद से कि अक़रअ़ा बिन ह़ाबिस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि आपसे उन लोगों ने बेअ़त की है कि जो हाजियों का सामान चुराया करते थे। या'नी असलम और ग़िफ़ार और मुज़ैना के लोग। मुहम्मद बिन अबी यअ़क़ूब ने कहा कि मैं समझता हूँ कि अ़ब्दुर्रह़मान ने जुहैना का भी ज़िक्र किया। शुअ़बा ने कहा कि ये शक मुहम्मद बिन अबी यअ़क़ूब को हुआ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया बतलाओ, असलम, ग़िफ़ार, मुज़ैना और मैं समझता हूँ जुहैना को भी कहा ये चारो क़बीले बनी तमीम, बनी आमिर और असद और ग़त्फ़ान से बेहतर नहीं है? क्या ये (मुवख़्ख़िरुज़्ज़िक्र) ख़राब और बर्बाद नहीं हुए? अक़रअ़ा ने कहा हाँ, आप (ﷺ) ने फ़र्माया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, ये उनसे बेहतर हैं। (राजेअ़ : 3515)

٣٥١٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي يَعْقُوبَ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ: أَنَّ الأَقْرَعَ بْنَ أَبِي حَابِسٍ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّمَا تَابَعَكَ سُرَّاقُ الْحَجِيجِ مِنْ أَسْلَمَ وَغِفَارٍ وَمُزَيْنَةَ - وَأَحْسِبُهُ وَجُهَيْنَةَ، ابْنُ يَعْقُوبَ شَكَّ - قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَرَأَيْتَ أَنْ كَانَ أَسْلَمُ وَغِفَارٌ وَمُزَيْنَةُ وَأَحْسِبُهُ وَجُهَيْنَةُ خَيْرًا مِنْ بَنِي تَمِيمٍ وَمِنْ بَنِي عَامِرٍ وَأَسَدٍ وَغَطَفَانَ خَابُوا وَخَسِرُوا؟ قَالَ: نَعَمْ. وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّهُمْ لَخَيْرٌ مِنْهُمْ)).[راجع: ٣٥١٥]

3517. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़बीला असलम, ग़िफ़ार, और मुज़ैना और जुहैना के कुछ लोग या उन्होंने बयान किया कि मुज़ैना के कुछ लोग या (बयान किया कि) जुहैना के कुछ लोग अल्लाह तआ़ला के नज़दीक या बयान किया कि क़यामत के दिन क़बीला असद, तमीम, हवाज़िन और ग़त्फ़ान से बेहतर होंगे।

٣٥١٦ م - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ عَنْ حَمَّادٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَ: أَسْلَمُ وَغِفَارُ وَشَيْءٌ مِنْ مُزَيْنَةَ وَجُهَيْنَةَ، أَوْ قَالَ: شَيْءٌ مِنْ جُهَيْنَةَ أَوْ مُزَيْنَةَ- خَيْرٌ عِنْدَ اللهِ - أَوْ قَالَ: يَوْمَ الْقِيَامَةِ - مِنْ أَسَدٍ وَتَمِيمٍ وَهَوَازِنَ وَغَطَفَانَ)).

बाब 7 : एक मर्दे क़हतानी का तज़्किरा

٧- بَابُ ذِكْرِ قَحْطَانَ

3518. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे ष़ौर बिन ज़ैद ने, उनसे अबुल ग़ैष़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक कि क़बीला क़हतान में एक ऐसा शख़्स पैदा नहीं होगा जो लोगों पर अपनी लाठी के ज़ोर से हुकूमत करेगा। (दीगर मक़ाम : 7117)

٣٥١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ رَجُلٌ مِنْ قَحْطَانَ يَسُوقُ النَّاسَ بِعَصَاهُ)).

[طرفه في : ٧١١٧].

उस क़हतानी शख़्स का नाम मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में बह्जाह मज़्कूर हुआ है। कहते हैं कि ये क़हतानी हज़रत इमाम मह्दी के बाद निकलेगा और उन्हीं के क़दम ब क़दम चलेगा जैसे कि अबू नुऐम ने फ़ितन में रिवायत किया है। (वहीदी)

कुछ नुस्ख़ों में ये बाब और बाद के चन्द अब्वाब ज़मज़म के क़िस्से के बाद बयान हुए हैं।

बाब 8 : जाहिलियत की सी बातें करना मना है

٨- بَابُ مَا يُنْهَى مِنْ دَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ

3518. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको मुख़लद बिन यज़ीद ने ख़बर दी, कहा हमें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़म्र बिन दीनार ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ जिहाद में शरीक थे। मुहाजिरीन बड़ी ता'दाद में आपके पास जमा हो गये। वजह ये हुई कि मुहाजिरीन में एक स़ाहब थे बड़े दिल्लगी करने वाले, उन्होंने एक अंस़ारी के सुरीन पर ज़र्ब लगाई। अंस़ारी बहुत सख़्त गुस़्सा हुआ। उसने अपनी बिरादरी वालों को मदद के लिये पुकारा और नौबत यहाँ तक पहुँची कि उन लोगों ने या'नी अंस़ारी ने कहा, ऐ क़बाइले अंस़ार! मदद को पहुँचो! और मुहाजिरीन ने कहा, ऐ मुहाजिरीन! मदद को पहुँचो! ये शोर सुनकर नबी करीम (ﷺ) (ख़ैमे से) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया क्या बात है? ये जाहिलियत की पुकार कैसी है? आपके सूरतेहाल दरयाफ़्त करने पर मुहाजिर स़हाबी के अंस़ारी स़हाबी को मार देने का वाक़िया बयान किया गया तो आपने फ़र्माया, ऐसी जाहिलियत की नापाक बातें छोड़ दो और अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल

٣٥١٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا مَخْلَدُ بْنُ يَزِيْدَ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِيْنَارٍ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَقَدْ ثَابَ مَعَهُ نَاسٌ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ حَتَّى كَثُرُوا، وَكَانَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ رَجُلٌ لَعَّابٌ فَكَسَعَ أَنْصَارِيًّا، فَغَضِبَ الأَنْصَارِيُّ غَضَبًا شَدِيْدًا حَتَّى تَدَاعَوا، وَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: يَا لِلأَنْصَارِ وَقَالَ الْمُهَاجِرِيُّ يَا لِلْمُهَاجِرِيْنَ فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا بَالُ دَعْوَى أَهْلِ الْجَاهِلِيَّةِ؟ ثُمَّ قَالَ: مَا شَأْنُهُمْ؟)) فَأُخْبِرَ بِكَسْعَةِ الْمُهَاجِرِيِّ الأَنْصَارِيَّ. قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((دَعُوهَا فَإِنَّهَا

(मुनाफ़िक़) ने कहा कि ये मुहाजिरीन अब हमारे ख़िलाफ़ अपनी क़ौम वालों को दुहाई देने लगे। मदीना पहुँचकर हम समझ लेंगे। इज़्ज़तदार, ज़लील को यक़ीनन निकाल बाहर कर देगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने क़त्ल करना चाहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम उस नापाक पलीद अब्दुल्लाह बिन उबइ को क़त्ल क्यूँ न कर दें? लेकिन आपने फ़र्माया ऐसा न होना चाहिये कि लोग कहें कि मुहम्मद (ﷺ) अपने लोगों को क़त्ल कर दिया करते हैं। (दीगर मक़ाम : 4905, 4907)

خَبِيثَةٌ)). وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ. أَقَدْ تَدَاعَوا عَلَيْنَا؟ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ. فَقَالَ عُمَرُ: أَلاَ نَقْتُلُ يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا الْخَبِيثَ؟ لِعَبْدِ اللهِ ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ يَتَحَدَّثُ النَّاسُ أَنَّهُ كَانَ يَقْتُلُ أَصْحَابَهُ)).

[طرفاه في : ٤٩٠٥، ٤٩٠٧].

तश्रीह : गो अब्दुल्लाह बिन उबई मर्दूद मुनाफ़िक़ था मगर ज़ाहिर में मुसलमानों में शरीक रहता। इसलिये आपको ये ख़्याल हुआ कि उसके क़त्ल से ज़ाहिर बीन लोग जो असल हक़ीक़त से वाक़िफ़ नहीं हैं ये कहने लगेंगे कि पैग़म्बर साहब अपने ही लोगों को क़त्ल कर रहे हैं और जब ये मशहूर हो जाएगा तो दूसरे लोग इस्लाम क़ुबूल करने में ताम्मुल करेंगे। इसी मुनाफ़िक़ और उसके हवारियों के बारे में क़ुर्आन पाक में सूरह मुनाफ़िक़ून नाज़िल हुई जिसमें उस मर्दूद का ये क़ौल भी मन्क़ूल है कि मदीना पहुँचकर इज़्ज़त वाला ज़लील लोगों (या'नी मक्का के मुहाजिर मुसलमानों) को निकाल देगा। अल्लाह तआला ने ख़ुद उसी को हलाक करके तबाह कर दिया और मुसलमान ब फ़ज़्लिही तआला फ़ातेहे मदीना क़रार पाए। इस वाक़िये से ये भी षाबित हुआ कि मस्लिहत अंदेशी भी हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है। इसीलिये कहा गया है। दरोग़ मस्लिहत आमेज़ ब अज़्रास्ती फ़ित्ना अंगेज़।

3519. हमसे ष़ाबित बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मुर्रह ने. उनसे मसरूक़ ने, और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से। और सुफ़यान ने ज़ुबैद से, उन्होंने इब्राहीम से, उन्होंने मसरूक़ से और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, वो शख़्स हममें से नहीं है जो (नोहा करते हुए) अपने रुख़्सार पीटे, गिरेबान फाड़ डाले और जाहिलियत की पुकार पुकारे। (राजेअ : 1294)

٣٥١٩- حَدَّثَنِي ثَابِتُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَعَنْ سُفْيَانَ عَنْ زُبَيْدٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيْسَ مِنَّا مَنْ ضَرَبَ الْخُدُودَ وَشَقَّ الْجُيُوبَ وَدَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ)). [راجع: ١٢٩٤]

अगर उन कामों को दुरुस्त जानकर करता है तो वो इस्लाम से ख़ारिज है वरना ये तग़लीज़ के तौर पर फ़र्माया कि वो मुसलमानों की रविश पर नहीं है।

बाब 9 : क़बीला ख़ुज़ाआ का बयान

٩- بَابُ قِصَّةِ خُزَاعَةَ

तश्रीह : ख़ुज़ाआ अरब का एक मशहूर क़बीला है। उनके न सब में इख़्तिलाफ़ है मगर उस पर इत्तिफ़ाक़ है कि वो अम्र बिन लुह्य की औलाद हैं। उनका चचा असलम था जो क़बील-ए-असलम का जद्दे आला है। इब्ने इस्हाक़ की रिवायत में यूँ है उसी ने बुतों को नसब किया। सायबा छुड़वाया, बहीरा और वसीला और हाम निकाला। कहते हैं कि ये अम्र बिन लुह्य शाम के मुल्क में गया। वहाँ के बुतपरस्तों से एक बुत मांग लाया और उसे का'बा में लाकर खड़ा किया, उसी का नाम सुहैल था और एक शख़्स असाफ़ नामी ने नायला नामी एक औरत से ख़ास का'बा में ज़िना किया। अल्लाह तआला ने

उनको संगसार कर दिया। अम्र बिन लुह्य्य ने उनको लाकर का'बा में खड़ा कर दिया। जो लोग का'बा का त़वाफ़ करते वो असाफ़ के बोसे से शुरू करते और नायला के बोसे पर ख़त्म करते, कुछ कहते हैं, एक शैतान जिन अबू षुमामा नामी अम्र बिन लुह्य्यी का रफ़ीक़ था, उसने अम्र बिन लुह्य्य से कहा कि जिद्दा में जाओ वहाँ से बुत उठा लाओ और लोगों से कहो कि वो उनकी पूजा किया करें, वो जिद्दा गया। वहाँ उन बुतों को पाया जो ह़ज़रत इदरीस (अलैहिस्सलाम) और ह़ज़रत नूह़ (अलैहिस्सलाम) के ज़माने में पूजे जाते थे या'नी वद्द और सुवाअ और यग़ूष और यऊक़ और नसर उनको मक्का उठा लाया। लोगों से कहा उनकी पूजा करो। इस त़रह़ अरब में बुतपरस्ती जारी हुई। अल्लाह की मार उस बेवक़ूफ़ पर। ख़ुद भी आफ़त में पड़ा और क़यामत तक हज़ारों लोगों को आफ़त में फंसाया। अगर आँह़ज़रत (ﷺ) की ज़ाते गिरामी अरब में ज़ुहूर न करती तो अरब भी अब तक बुतपरस्ती में गिरफ़्तार रहते। (वह़ीदी)

इस्लामी दौर में शुरू से अब तक ह़िजाज़े मुक़द्दस बुतपरस्ती से पाक रहा है। मगर कुछ अ़र्सा पहले ह़िजाज़ ख़ुसूसन ह़रमैन शरीफ़ैन में क़ुबूरे बुज़ुर्गान की परसतिश का सिलसिला जारी था वहाँ के बहुत से मुअल्लिम लोग ह़ाजियों को ज़ियारत के बहाने से मह़ज़ अपने मफाद के लिये क़ब्रों पर ले जाते और वहाँ नज़्र व न्याज़ का सिलसिला जारी होता। अल्ह़म्दुलिल्लाह आज सऊदी ह़ुकूमत ने ह़रमैन शरीफ़ैन को इस क़िस्म की तमाम शिर्किया ख़ुराफ़ात और बिदआत से पाक करके वहाँ ख़ालिस तौह़ीद की बुनियाद पर इस्लाम को इस्तिह़काम बख़्शा है। **अल्लाहुम्म अय्यदहू बिनस्रिकल्अज़ीज़ आमीन**

3520. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह़्या बिन आदम ने बयान किया, कहा हमको इस्राईल ने ख़बर दी, उन्हें अबू ह़ुसैन ने, उन्हें अबू स़ालेह़ ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अम्र बिन लुह्य्य बिन क़म्आ बिन ख़ुन्दफ़ क़बीला ख़ुज़ाआ का बाप था।

٣٥٢٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيْلُ عَنْ أَبِي حَصِيْنٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((عَمْرُو بْنُ لُحَيِّ بْنِ قَمَعَةَ بْنِ خِنْدِفَ أَبُو خُزَاعَةَ)).

3521. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, उन्होंने बयान किया कि बह़ीरा वो ऊँटनी जिसके दूध की मुमानअत होती थी, क्योंकि वो बुतों के लिये वक़्फ़ होती थी। इसलिये कोई भी शख़्स इसका दूध नहीं दुहता था और सायबा उसे कहते जिसको वो अपने मा'बूदों के लिये छोड़ देते और उन पर कोई बोझ न लादता और न कोई सवारी करता। उन्होंने कहा कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ब्यान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने अम्र बिन लुह्य्य ख़ुज़ाई को देखा कि जहन्नम में वो अपनी अंतड़ियाँ घसीट रहा था और यही अम्र वो पहला शख़्स है जिसने सायबा की रस्म निकाली। (दीगर मक़ाम : 4623)

٣٥٢١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: ((الْبَحِيْرَةُ الَّتِي يُمْنَعُ دَرُّهَا لِلطَّوَاغِيْتِ وَلاَ يَحْلُبُهَا أَحَدٌ مِنَ النَّاسِ. وَالسَّائِبَةُ الَّتِي كَانُوا يُسَيِّبُونَهَا لآلِهَتِهِمْ فَلاَ يُحْمَلُ عَلَيْهَا شَيْءٌ)). قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُ عَمْرَو بْنَ عَامِرِ بْنِ لُحَيٍّ الْخُزَاعِيَّ يَجُرُّ قُصْبَهُ فِي النَّارِ، وَكَانَ أَوَّلَ مَنْ سَيَّبَ السَّوَائِبَ)).

[طرفه في : ٤٦٢٣].

तश्रीह : जाहिल मुसलमानों मे ऐसी बुरी रस्में आज भी प्रचलित हैं कि अपने नामोनिहाद पीरों और मुर्शिदों के नाम पर जानवर छोड़ देते हैं जैसे ख़्वाजा के नाम का बकरा। बड़े पीर के नाम की देग। फिर उनके लिये ऐसे ही ख़ास़ रुसूम

प्रचलित हैं कि उनको फ़लाँ खाए और फ़लाँ न खाए। ये सब जिहालत और ज़लालत की बातें हैं। अल्लाह पाक ऐसे नामो–निहाद मुसलमानों को नेक समझ अ़ता करे कि वो कुफ़्फ़ार की इस तक़्लीद से बाज आएँ।

बाब 10 : हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) के इस्लाम लाने का बयान

١٠ - بَابُ إِسْلاَمِ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

3522. मुझसे अ़म्र बिन अ़ब्बास ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने, कहा हमसे मुषन्ना ने, उनसे अबू हम्ज़ा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब अबू ज़र (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) की नुबुव्वत के बारे में मा'लूम हुआ तो उन्होंने अपने भाई अनीस से कहा मक्का जाने के लिये सवारी तैयार कर और उस शख़्स के बारे में जो नबी होने का मुद्दई है और कहता है कि उसके पास आसमान से ख़बर आती है, मेरे लिये ख़बरें हासिल करके ला। उसकी बातों को ख़ुद ग़ौर से सुनना और फ़िर मेरे पास आना। उनके भाई वहाँ से चले और मक्का हाज़िर होकर आँहज़रत (ﷺ) की बातें ख़ुद सुनीं फिर वापस होकर उन्होंने अबू ज़र (रज़ि.) को बताया कि मैंने उन्हें ख़ुद देखा है, वो अच्छे अख़्लाक़ का लोगों को हुक्म करते हैं और मैंने उनसे जो कलाम सुना वो शे'र नहीं है। इस पर अबू ज़र (रज़ि.) ने कहा जिस मक़सद के लिये मैंने तुम्हें भेजा था मुझे उस पर पूरी तरह तशफ़्फ़ी नहीं हुई, आख़िर उन्होंने ख़ुद तौशा बाँधा, पानी से भरा हुआ एक पुराना मशकीज़ा साथ लिया और मक्का आए, मस्जिदुल हराम में हाज़िरी दी और यहाँ नबी करीम (ﷺ) को तलाश किया। अबू ज़र (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) को पहचानते नहीं थे और किसी से आप (ﷺ) के बारे में पूछना भी मुनासिब नहीं समझा, कुछ रात गुज़र गई कि वो लेटे हुए थे। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उनको इस हालत में देखा और समझ गये कि कोई मुसाफ़िर है, अ़ली (रज़ि.) ने उनसे कहा कि आप मेरे घर पर चलकर आराम कीजिए। अबू ज़र (रज़ि.) उनके पीछे-पीछे चले गये लेकिन किसी ने एक–दूसरे के बारे में बात नहीं की। जब सुबह हुई तो अबू ज़र (रज़ि.) ने अपना मशकीज़ा और तौशा उठाया और मस्जिदुल हराम में आ गए। ये दिन भी यूँ ही गुज़र गया और वो नबी करीम (ﷺ) को न देख सके। शाम हुई तो सोने की तैयारी करने लगे। अ़ली (रज़ि.) फिर वहाँ से गुज़रे और समझ

٣٥٢٢- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ مَهْدِيٍّ حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى عَنْ أَبِي جَمْرَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا بَلَغَ أَبَا ذَرٍّ مَبْعَثُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لأَخِيْهِ : ارْكَبْ إِلَى هَذَا الْوَادِي فَاعْلَمْ لِي عِلْمَ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ يَأْتِيهِ الْخَبَرُ مِنَ السَّمَاءِ، وَاسْمَعْ مِنْ قَوْلِهِ ثُمَّ ائْتِنِي. فَانْطَلَقَ الأَخُ حَتَّى قَدِمَهُ وَسَمِعَ مِنْ قَوْلِهِ، ثُمَّ رَجَعَ إِلَى أَبِي ذَرٍّ فَقَالَ لَهُ: رَأَيْتُهُ يَأْمُرُ بِمَكَارِمِ الأَخْلاَقِ، وَكَلاَماً مَا هُوَ بِالشِّعْرِ. فَقَالَ: مَا شَفَيْتَنِي مِمَّا أَرَدْتُ. فَتَزَوَّدَ وَحَمَلَ شَنَّةً لَهُ فِيْهَا مَاءٌ حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ، فَأَتَى الْمَسْجِدَ. فَالْتَمَسَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لاَ يَعْرِفُهُ، وَكَرِهَ أَنْ يَسْأَلَ عَنْهُ، حَتَّى أَدْرَكَهُ بَعْضُ اللَّيْلِ اضْطَجَعَ فَرَآهُ عَلِيٌّ، فَعَرَفَ أَنَّهُ غَرِيبٌ. فَلَمَّا رَآهُ تَبِعَهُ، فَلَمْ يَسْأَلْ وَاحِدٌ مِنْهُمَا صَاحِبَهُ عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أَصْبَحَ، ثُمَّ احْتَمَلَ قِرْبَتَهُ وَزَادَهُ إِلَى الْمَسْجِدِ، وَظَلَّ ذَلِكَ الْيَوْمَ، وَلاَ يَرَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَمْسَى. فَعَادَ إِلَى مَضْجَعِهِ، فَمَرَّ بِهِ عَلِيٌّ فَقَالَ: أَمَا نَالَ لِلرَّجُلِ أَنْ يَعْلَمَ مَنْزِلَهُ؟

فَأَقَامَهُ، فَذَهَبَ بِهِ مَعَهُ، لاَ يَسْأَلُ وَاحِدٌ مِنْهُمَا صَاحِبَهُ عَنْ شَيْءٍ، حَتَّى إِذَا كَانَ يَومُ الثَّالِثِ فَعَادَ عَلِي مِثْلِ ذَلِكَ، فَأَقَامَ مَعَهُ ثُمَّ قَالَ : أَلاَ تُحَدِّثُنِي مَا الَّذِيْ أَقْدَمَكَ؟ قَالَ : إِنْ أَعْطَيْتَنِي عَهْدًا وَمِيْثَاقًا لَتُرشِدَنِّي فَعَلْتُ. فَفَعَلَ، فَأَخْبَرَهُ، قَالَ: فَإِنَّهُ حَقٌّ، وَهُوَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَإِذَا أَصْبَحْتَ فَاتَّبِعْنِي، فَإِنِّي إِنْ رَأَيْتُ شَيْئاً أَخَافُ عَلَيْكَ قُمْتُ كَأَنِّي أُرِيْقُ الْمَاءَ، فَإِنْ مَضَيْتُ فَاتَّبِعْنِي حَتَّى تَدْخُلَ مَدْخَلِي، فَفَعَلَ، فَانْطَلَقَ يَقْفُوهُ، حَتَّى دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَدَخَلَ مَعَهُ فَسَمِعَ مِنْ قَولِهِ وَأَسْلَمَ مَكَانَهُ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ارْجِعْ إِلَى قَومِكَ فَأَخْبِرْهُمْ حَتَّى يَأْتِيَكَ أَمْرِي)). قَالَ: وَالَّذِيْ نَفْسِي بِيَدِهِ لأَصْرُخَنَّ بِهَا بَيْنَ ظَهْرَانَيْهِمْ. فَخَرَجَ حَتَّى أَتَى الْمَسْجِدَ، فَنَادَى بِأَعْلَى صَوتِهِ: أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ. ثُمَّ قَامَ الْقَومُ فَضَرَبُوهُ حَتَّى أَضْجَعُوهُ. وَأَتَى الْعَبَّاسُ فَأَكَبَّ عَلَيْهِ قَالَ : وَيْلَكُمْ، أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّهُ مِنْ غِفَارِ، وَأَنَّ طَرِيْقَ تِجَارِكُم إِلَى الشَّامِ؟ فَأَنْقَذَهُ مِنْهُمْ. ثُمَّ عَادَ مِنَ الْغَدِ لِمِثْلِهَا فَضَرَبُوهُ وَثَارُوا إِلَيْهِ، فَأَكَبَّ الْعَبَّاسُ عَلَيْهِ)).

[راجع: ٣٥٢٢]

गये कि अभी अपने ठिकाने जाने का वक़्त उस शख़्स पर नहीं आया, वो उन्हें वहाँ से फिर अपने साथ ले आए और आज भी किसी ने एक–दूसरे से बातचीत नहीं की, तीसरा दिन जब हुआ और अ़ली (रज़ि.) ने उनके साथ यही काम किया और अपने साथ ले गये तो उनसे पूछा क्या तुम मुझे बता सकते हो कि यहाँ आने का बाइ़ष़ क्या है? अबू ज़र (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम मुझसे पुख़्ता वा'दा कर लो कि मेरी रहनुमाई करोगे तो मैं तुमको सब कुछ बता दूँगा। अ़ली (रज़ि.) ने वा'दा कर लिया तो उन्होंने उन्हें अपने ख़्यालात की ख़बर दी। अ़ली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि बिला शुब्हा वो ह़क़ पर हैं और अल्लाह के सच्चे रसूल (ﷺ) हैं, अच्छा सुबह को तुम मेरे पीछे पीछे मेरे साथ चलना। अगर मैं (रास्ते में) कोई ऐसी बात देखूँ जिससे मुझे तुम्हारे बारे में कोई ख़तरा हो तो मैं खड़ा हो जाऊँगा। (किसी दीवार के क़रीब) गोया मुझे पैशाब करना है, उस वक़्त तुम मेरा इंतिज़ार न करना और जब मैं फिर चलने लगूँ तो मेरे पीछे आ जाना ताकि कोई समझ न सके कि ये दोनों साथ हैं और इस त़रह जिस घर में, मैं दाख़िल होऊँ तुम भी दाख़िल हो जाना। उन्होंने ऐसा ही किया और पीछे पीछे चले यहाँ तक कि अ़ली (रज़ि.) के साथ वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँच गये, आप (ﷺ) की बातें सुनीं और वहीं इस्लाम ले आए। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया अब अपनी क़ौम ग़िफ़ार में वापस जाओ और उन्हें मेरा ह़ाल बताओ ताकि जब हमारे ग़ल्बे का इल्म तुमको हो जाए (तो फिर हमारे पास आ जाना) अबू ज़र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मैं इन क़ुरैशियों के मज्मओ़ में पुकार कर कलिम-ए-तौह़ीद का ऐलान करूँगा। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) के यहाँ से वापस वो मस्जिद ह़राम मे आए और बुलन्द आवाज़ से कहा कि, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ये कि मुह़म्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। ये सुनते ही सारा मज्मअ़ा टूट पड़ा और इतना मारा कि ज़मीन पर लिटा दिया। इतने में अ़ब्बास (रज़ि.) आ गये और अबू ज़र (रज़ि.) के ऊपर अपने को डालकर क़ुरैश से कहा अफ़सोस! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि ये शख़्स क़बीला ग़िफ़ार स है और शाम जाने वाले तुम्हारे ताजिरों का रास्ता उधर ही से पड़ता

है। इस तरह से उनसे उनको बचा लिया। फिर अबू ज़र (रज़ि.) दूसरे दिन मस्जिदुल हराम में आए और अपने इस्लाम का इज़्हार किया। क़ौम बुरी तरह उन पर टूट पड़ी और मारने लगे। उस दिन भी अ़ब्बास (रज़ि.) उन पर औंधे पड़ गये। (राजेअ़ : 3522)

बाब 11 : ज़मज़म का वाक़िया

١١- بَابُ قِصَّةِ زَمْزَمَ

कुछ नुस्ख़ों में यूँ है, बाबु क़िस्सति इस्लामि अबी ज़र्रिल्गिफ़ारी और यही मुनासिब है क्योंकि सारी ह़दीष़ में उनके मुसलमान होने का क़िस्सा मज़्कूर है। चूँकि ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) मक्का में एक अ़र्सा तक सिर्फ़ ज़मज़म के पानी पर गुज़ारा करते रहे और उस मुबारक पानी ने उनको खाने व पीने दोनों का काम दिया। इस अहमियत के पेशेनज़र ज़मज़म के क़िस्से का बाब मुनअ़क़िद किया गया। दर ह़क़ीक़त ज़मज़म के पानी पर इस तरह गुज़ारा करना भी ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) की ज़िन्दगी का एक अहमतरीन वाक़िया है। कुछ रिवायात में है कि वे इस तरह मुसलसल ज़मज़म पीने से ख़ूब मोटे ताज़े हो गये थे। फ़िल वाक़ेअ़ अल्लाह तआ़ला ने उस मुक़द्दस पानी में यही ताष़ीर रखी है। राक़िमुल ह़ुरूफ़ (लेखक) ने अपने तीनों ह़ज्ज के मौक़ों पर बारहा उसका तजुर्बा किया है कि अ़ली अ़लस्सबाह (सुबह-सुबह) उस पानी को ताज़ा ब ताज़ा ख़ूब शिकमसैर होकर पिया और दिन भर तबीअ़त को सुकून और फ़रह़त ह़ासिल रही। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को ये मौक़ा नसीब करे। दौरे ह़ाज़िरा में हुकूमत सऊ़दिया ने चाहे ज़मज़म पर ऐसे ऐसे बेहतरीन इंतिज़ाम कर दिये हैं कि हर ह़ाजी मर्द हो या औरत जब जी चाहे आसानी से ताज़ा पानी पी सकता है। फ़िल वाक़ेअ़ ये हुकूमत ऐसी मिष़ाली हुकूमत है जिसके लिये जिस क़दर दुआएँ की जाएँ कम हैं। अल्लाह पाक इस सऊ़दी हुकूमत को मज़ीद इस्तिह़काम और तरक़्क़ी अ़ता फ़र्माए, आमीन!

3522. हमसे ज़ैद ने जो अख़्ज़म के बेटे हैं, बयान किया, कहा हमसे अबू क़ुतैबा सलम बिन क़ुतैबा ने बयान किया, उनसे मुष़न्ना बिन सईद क़ैस़र ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू जम्रह ने बयान किया, कहा कि हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि क्या मैं अबू ज़र (रज़ि.) के इस्लाम का वाक़िया नहीं सुनाऊँ? हमने अ़र्ज़ किया ज़रूर सुनाइये। उन्होंने बयान किया कि अबू ज़र (रज़ि.) ने बतलाया, मेरा ता'ल्लुक़ क़बील-ए-ग़िफ़ार से था, हमारे यहाँ ये ख़बर पहुँची थी कि मक्का में एक शख़्स़ पैदा हुए हैं जिनका दा'वा है कि वो नबी हैं (पहले तो) मैंने अपने भाई से कहा कि उस शख़्स़ के पास मक्का जा, उससे बातचीत कर और फिर उसके सारे हालात आकर मुझे बता। चुनाँचे मेरे भाई ख़िदमते नबवी में ह़ाज़िर हुए और आँह़ज़रत (ﷺ) से मुलाक़ात की और वापस आ गये। मैंने पूछा कि क्या ख़बर लाए? उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैंने ऐसे शख़्स़ को देखा है जो अच्छे कामों के लिये कहता है और बुरे कामों से मना करता है। मैंने कहा कि तुम्हारी बातों से तो मेरी तशफ़्फ़ी नहीं हुई। अब मैंने तौशा का थैला और

٣٥٢٢م- حَدَّثَنَا زَيْدٌ هُوَ ابْنُ أَخْزَمَ قَالَ أَبُو قُتَيْبَةَ سَلْمُ بْنُ قُتَيْبَةَ حَدَّثَنِي مُثَنَّى بْنُ سَعِيْدٍ الْقَصِيْرُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو جَمْرَةَ قَالَ: ((قَالَ لَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ: أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِإِسْلاَمِ أَبِي ذَرٍّ؟ قَالَ: قُلْنَا : بَلَى. قَالَ: قَالَ أَبُو ذَرٍّ: كُنْتُ رَجُلاً مِنْ غِفَارٍ، فَبَلَغَنَا أَنَّ رَجُلاً قَدْ خَرَجَ بِمَكَّةَ يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ، فَقُلْتُ لأَخِي : انْطَلِقْ إِلَى هَذَا الرَّجُلِ، كَلِّمْهُ وَأْتِنِي بِخَبَرِهِ. فَانْطَلَقَ فَلَقِيَهُ ثُمَّ رَجَعَ، فَقُلْتُ: مَا عِنْدَكَ؟ فَقَالَ: وَاللهِ لَقَدْ رَأَيْتُ رَجُلاً يَأْمُرُ بِالْخَيْرِ، وَيَنْهَى عَنِ الشَّرِّ. فَقُلْتُ لَهُ : لَمْ تَشْفِنِي مِنَ الْخَبَرِ، فَأَخَذْتُ جِرَابًا وَعَصًا. ثُمَّ أَقْبَلْتُ إِلَى مَكَّةَ

छड़ी उठाई और मक्का आ गया। वहाँ मैं किसी को पहचानता नहीं था और आपके बारे में किसी से पूछते हुए भी डर लगता था। मैं (सिर्फ़) ज़मज़म का पानी पी लिया करता था और मस्जिदे हराम में ठहरा हुआ था। उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा अ़ली (रज़ि.) मेरे सामने से गुज़रे और बोले मा'लूम होता है कि आप इस शहर में मुसाफिर हैं। उन्होंने बयान किया कि मैंने कहा जी हाँ। बयान किया कि तो फिर मेरे घर चलो। फिर वो मुझे अपने घर साथ ले गये। बयान किया कि मैं आपके साथ साथ गया। न उन्होंने कोई बात पूछी और न मैंने कुछ कहा। सुबह हुई तो मैं फिर मस्जिदे हराम में आ गया ताकि आँहज़रत (ﷺ) के बारे में किसी से पूछूँ लेकिन आपके बारे में कोई बताने वाला नहीं था। बयान किया कि फिर हज़रत अ़ली (रज़ि.) मेरे सामने से गुज़रे और बोले कि क्या अभी तक आप अपने ठिकाने को नहीं पा सके हैं? बयान किया, मैंने कहा कि नहीं। उन्होंने कहा कि अच्छा फिर मेरे साथ आइये। उन्होंने बयान किया कि फिर हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने पूछा, आपका मतलब क्या है। आप इस शहर में क्यूँ आए? उन्होंने बयान किया कि मैंने कहा, आप अगर ज़ाहिर न करें तो मैं आपको अपने मामले के बारे में बताऊँ। उन्होंने कहा कि मैं ऐसा ही करूँगा। तब मैंने उनसे कहा, हमें मा'लूम हुआ है कि यहाँ कोई शख़्स पैदा हुए हैं जो नुबुव्वत का दा'वा करते हैं। मैंने पहले अपने भाई को उनसे बात करने के लिये भेजा था लेकिन जब वो वापस हुए तो उन्होंने मुझे कोई तशफ़्फ़ी बख़्श ख़बरें नहीं दीं। इसलिये मैं इस इरादे से आया हूँ कि उनसे ख़ुद मुलाक़ात करूँ। अ़ली (रज़ि.) ने कहा कि आपने अच्छा रास्ता पाया कि मुझसे मिल गये, मैं उन्हीं के पास जा रहा हूँ। आप मेरे पीछे पीछे चलें, जहाँ मैं दाख़िल होऊँ आप भी दाख़िल हो जाएँ। अगर मैं किसी ऐसे आदमी को देखूँगा जिससे आपके बारे में मुझे ख़तरा होगा तो मैं किसी दीवार के पास खड़ा हो जाऊँगा, गोया कि मैं अपना जूता ठीक कर रहा हूँ, उस वक़्त आप आगे बढ़ जाएँ। चुनाँचे वो चले और मैं भी उनके पीछे हो लिया और आख़िर में वो एक मकान के अंदर गये और मैं भी उनके साथ नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में अंदर दाख़िल हो गया। मैंने आँहज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि इस्लाम के उसूल व

فَجَعَلْتُ لاَ أَعْرِفُهُ، وَأَكْرَهُ أَنْ أَسْأَلَ عَنْهُ، وَأَشْرَبُ مِنْ مَاءِ زَمْزَمَ وَأَكُونُ فِي الْمَسْجِدِ. قَالَ : فَمَرَّ بِي عَلِيٌّ فَقَالَ: كَأَنَّ الرَّجُلَ غَرِيبٌ؟ قَالَ: قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: فَانطَلِقْ إِلَى الْمَنْزِلِ. قَالَ: فَانطَلَقْتُ مَعَهُ لاَ يَسْأَلُنِي عَنْ شَيْءٍ وَلاَ أُخْبِرُهُ. فَلَمَّا أَصْبَحْتُ غَدَوْتُ إِلَى الْمَسْجِدِ لأَسْأَلَ عَنْهُ، وَلَيْسَ أَحَدٌ يُخْبِرُنِي عَنْهُ بِشَيْءٍ. قَالَ: فَمَرَّ بِي عَلِيٌّ فَقَالَ: أَمَا نَالَ لِلرَّجُلِ يَعْرِفُ مَنْزِلَهُ بَعْدَ؟ قَالَ: قُلْتُ: لاَ. قَالَ : انْطَلِقْ مَعِي، قَالَ : فَقَالَ: مَا أَمْرُكَ، وَمَا أَقْدَمَكَ هَذِهِ الْبَلْدَةَ؟ قَالَ: قُلْتُ لَهُ: إِنْ كَتَمْتَ عَلَيَّ أَخْبَرْتُكَ. قَالَ: فَإِنِّي أَفْعَلُ. قَالَ: قُلْتُ لَهُ : بَلَغَنَا أَنَّهُ قَدْ خَرَجَ هَا هُنَا رَجُلٌ يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ، فَأَرْسَلْتُ أَخِي لِيُكَلِّمَهُ، فَرَجَعَ وَلَمْ يَشْفِنِي مِنَ الْخَبَرِ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَلْقَاهُ. فَقَالَ لَهُ : أَمَا إِنَّكَ قَدْ رَشَدْتَ. هَذَا وَجْهِي إِلَيْهِ، فَاتَّبِعْنِي، أُدْخُلْ حَيْثُ أَدْخُلُ، فَإِنِّي إِنْ رَأَيْتُ أَحَدًا أَخَافُهُ عَلَيْكَ قُمْتُ إِلَى الْحَائِطِ كَأَنِّي أُصْلِحُ نَعْلِي، وَامْضِ أَنْتَ. فَمَضَى وَمَضَيْتُ مَعَهُ، حَتَّى دَخَلَ وَدَخَلْتُ مَعَهُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ لَهُ : اعْرِضْ عَلَيَّ الإِسْلاَمَ، فَعَرَضَهُ، فَأَسْلَمْتُ مَكَانِي. فَقَالَ لِي: ((يَا أَبَا ذَرَ. اكْتُمْ هَذَا الأَمْرَ، وَارْجِعْ إِلَى

بَلَدِكَ، فَإِذَا بَلَغَكَ ظُهُورُنَا فَأَقْبِلْ)). فَقُلْتُ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لأَصْرُخَنَّ بِهَا بَيْنَ أَظْهُرِهِمْ. فَجَاءَ إِلَى الْمَسْجِدِ وَقُرَيْشٌ فِيْهِ فَقَالَ : يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ، إِنِّي أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ فَقَالُوا: قُومُوا إِلَى هَذَا الصَّابِىءِ، فَقَامُوا: فَضُرِبْتُ لأَمُوتَ، فَأَدْرَكَنِي الْعَبَّاسُ فَأَكَبَّ عَلَيَّ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْهِمْ فَقَالَ : وَيْلَكُمْ، تَقْتُلُون رَجُلاً مِنْ غِفَارٍ، وَمَتْجَرُكُمْ وَمَمَرُّكُمْ عَلَى غِفَارٍ؟ فَأَقْلَعُوا عَنِّي. فَلَمَّا أَنْ أَصْبَحْتُ الْغَدَ رَجَعْتُ فَقُلْتُ مِثْلَ مَا قُلْتُ بِالأَمْسِ. فَقَالُوا: قُومُوا إِلَى هَذَا الصَّابِىءِ، فَصُنِعَ بِي مِثْلُ مَا صُنِعَ بِالأَمْسِ، وَأَدْرَكَنِي الْعَبَّاسُ فَأَكَبَّ عَلَيَّ وَقَالَ مِثْلَ مَقَالَتِهِ بِالأَمْسِ. قَالَ: فَكَانَ هَذَا أَوَّلَ إِسْلاَمِ أَبِي ذَرٍّ رَحِمَهُ اللهُ)).

[طرفه في : ٣٨٦١].

अरकान मुझे समझा दीजिए। आपने मेरे सामने उनकी वज़ाहत फ़र्मा दी और मैं मुसलमान हो गया। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अबू ज़र! इस मामले को अभी पोशीदा रखना और अपने शहर को चले जाना। फिर जब तुम्हें हमारे ग़लबा का हाल मा'लूम हो जाए तब यहाँ दोबारा आना। मैंने अर्ज़ किया उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मब्ऊ़ष किया है मैं तो उन सबके सामने इस्लाम के कलिमे का ऐलान करूँगा। चुनाँचे वो मस्जिदे हराम में आए। कुरैश के लोग वहाँ मौजूद थे और कहा, ऐ कुरैश की जमाअ़त! (सुनो) मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। (ﷺ) कुरैशियों ने कहा कि इस बद्दीन की ख़बर लो। चुनाँचे वो मेरी तरफ़ लपके और मुझे इतना मारा कि मैं मरने के क़रीब हो गया। इतने में ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) आ गये और मुझ पर गिरकर मुझे अपने जिस्म से छुपा लिया और कुरैशियों की तरफ़ मुतवज्जह हुए, अरे नादानों! क़बील-ए-ग़िफ़ार के आदमी को क़त्ल करते हो। ग़िफ़ार से तो तुम्हारी तिजारत भी है और तुम्हारे क़ाफ़िले भी उस तरफ़ से गुज़रते हैं। इस पर उन्होंने मुझे छोड़ दिया। फिर जब दूसरी सुबह हुई तो फिर मैं मस्जिदे हराम में आया और जो कुछ मैंने कल पुकारा था उसी को फिर दोहराया। कुरैशियों ने फिर कहा, पकड़ो इस बद्दीन को। जो कुछ उन्होंने मेरे साथ कल किया था वही आज भी किया। इत्तिफ़ाक़ से फिर अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) आ गये और मुझ पर गिरकर मुझे अपने जिस्म से उन्होंने छुपा लिया और जैसा उन्होंने कुरैशियों से कल कहा था वैसा ही आज भी कहा। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) के इस्लाम कुबूल करने की इब्तिदा इस तरह से हुई थी। (दीगर मक़ाम : 3861)

तश्रीह : कुरैश के लोग हर साल तिजारत और सौदागरी के लिये मुल्के शाम जाया करते थे और रास्ते में मक्का और मदीना के दरम्यान ग़िफ़ार की क़ौम पड़ती थी। ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने उनको डराया कि अगर तुम इसको मार डालोगे

तो सारी ग़िफ़ार क़ौम ख़िलाफ़ हो जाएगी और हमारी सौदागरी और आमद व रफ़्त में ख़लल हो जाएगा।

बाब 12 : अरब की क़ौम की जिहालत का बयान

١٢- باب جهل العرب

इस्लाम से पहले अहले अरब बहुत सी जिहालतों में मुब्तला थे, इसलिये उस दौर को जाहिलियत से ता'बीर किया गया है। यहाँ इस बाब के ज़ैल में उनकी कुछ ऐसी ही जिहालतों का ज़िक्र किया गया है।

3523. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़बीला असलम, ग़िफ़ार, और मुज़ैना और जुहैना के कुछ लोग या उन्होंने बयान किया कि मुज़ैना के कुछ लोग या (बयान किया कि) जुहैना के कुछ लोग अल्लाह तआला के नज़दीक या बयान किया कि क़यामत के दिन क़बीला असद, तमीम, हवाज़िन और ग़त्फ़ान से बेहतर होंगे।

٣٥٢٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَسْلَمُ وَغِفَارُ شَيْءٌ مِنْ مُزَيْنَةَ وَجُهَيْنَةَ - أَوْ قَالَ : شَيْءٌ مِنْ جُهَيْنَةَ أَوْ مُزَيْنَةَ خَيْرٌ عِنْدَ اللهِ أَوْ قَالَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ أَسَدٍ وَتَمِيمٍ وَهَوَازِنَ وَغَطَفَانَ.

कुछ नुस्ख़ों में ये ह़दीष़ और बाद की कुछ ह़दीष़ें बाब क़िस्स-ए-ज़मज़म से पहले मज़्कूर हुई हैं और वही स़ह़ीह़ मा'लूम होता है क्योंकि उन ह़दीष़ों का ता'ल्लुक़ इस क़िस्से से पहले ही की ह़दीष़ों के साथ है।

3524. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि अगर तुमको अरब की जिहालत मा'लूम करना अच्छा लगे तो सूरह अन्आम में एक सौ तीस आयतों के बाद ये आयतें पढ़ लो, यक़ीनन वो लोग तबाह हुए जिन्होंने अपनी औलाद को नादानी से मार डाला, से लेकर वो गुमराह हैं, राह पाने वाले नहीं तक।

٣٥٢٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((إِذَا سَرَّكَ أَنْ تَعْلَمَ جَهْلَ الْعَرَبِ فَاقْرَأْ مَا فَوْقَ الثَّلاَثِينَ وَمِائَةٍ فِي سُورَةِ الأَنْعَامِ: ﴿قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلاَدَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ - إِلَى قَوْلِهِ - قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ﴾.

तश्रीह : या'नी सूरह अन्आम में अरब की सारी जिहालतें मज़्कूर हैं, उनमें सबसे बड़ी जिहालत ये थी कि कमबख़्त अपनी बेटियों को अपने हाथों से क़त्ल करते, बुतपरस्ती और राहज़नी (डकैती) उनका रात दिन का शैवा था। औरतों पर बहुत सितम ढाते और मआज़ अल्लाह जानवरों की तरह समझते। ये सब बलाएँ अल्लाह पाक ने आँह़ज़रत (ﷺ) को भेजकर दूर कराईं। कुछ नुस्खों में यूँ है, **बाबु क़िस्स-ए-ज़मज़म व जहलुल अरब** मगर इस बाब में ज़मज़म का क़िस्सा बिलकुल मज़्कूर नहीं है, इसलिये स़ह़ीह़ यही है जो नुस्ख़ा यहाँ नक़ल किया गया है।

उसके अलावा ह़दीष़ नम्बर 3523 जो इससे पहले (3516) के तह़त गुज़र चुकी है, शैख़ फ़व्वाद वाले नुस्ख़े में दोबारा मौजूद है। जबकि हिन्दुस्तानी नुस्ख़ों में इस बाब के तह़त सिर्फ़ अबुन नोअमान रावी की ह़दीष़ मौजूद है।

बाब 13 : अपने मुसलमान या ग़ैर-मुस्लिम बाप

١٣- بَابُ مَنِ انْتَسَبَ إِلَى آبَائِهِ فِي

दादों की तरफ़ अपनी निस्बत करना

الإسلام والجاهلية

या'नी ये बयान करना कि मैं फ़लाँ की औलाद में से हूँ अगरचे वो आबा व अज्दाद ग़ैर-मुस्लिम ही क्यूँ न हों मगर ऐसा बयान करना जाइज़ है। ये इस्लाम की वो ज़बरदस्त अख़्लाक़ी ता'लीम है जिस पर मुसलमान फ़ख़्र कर सकते हैं। हिन्दुस्तान की बेशतर क़ौमें नव-मुस्लिम हैं। वो भी अपने ग़ैर-मुस्लिम आबाअ व अज्दाद का ज़िक्र करें तो शरअ़न उसमें कोई क़बाहत नहीं है बशर्ते कि ये ज़िक्र हुदूदे शरई के अंदर हो।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ الْكَرِيْمَ ابْنَ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللهِ)). وَقَالَ الْبَرَاءُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ)).

और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अलैहिस्सलाम) थे। और बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

आँहज़रत (ﷺ) ने अपने आपको अ़ब्दुल मुत्तलिब की तरफ़ मन्सूब किया इससे बाब का मतलब षाबित हुआ।

٣٥٢٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ [الشعراء: ٢١٤] جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُنَادِي: ((يَا بَنِي فِهْرٍ، يَا بَنِي عَدِيٍّ))، بِبُطُونِ قُرَيْشٍ)).

[راجع: ١٣٩٤]

3525. हमसे उ़मर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, कहा उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत उतरी, ऐ पैग़म्बर! अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ तो नबी (ﷺ) ने क़ुरैश के क़रीबी रिश्तेदारों को डराया, तो नबी (ﷺ) ने क़ुरैश के मुख़्तलिफ़ क़बीलों को बुलाया, ऐ बनी फ़हर! ऐ बनी अ़दी! जो क़ुरैश के ख़ानदान थे। (राजेअ : 1394)

٣٥٢٦- وَقَالَ لَنَا قَبِيْصَةُ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ حَبِيْبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْعُوهُمْ قَبَائِلَ قَبَائِلَ)).

[راجع: ١٣٩٤]

3526. (हज़रत इमाम बुख़ारी रह.) ने) कहा कि हमसे क़बीसा ने बयान किया, उन्हें सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें हबीब बिन अबी षाबित ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइये, उतरी तो आँहज़रत (ﷺ) ने अलग अलग क़बीलों को (दीने इस्लाम की) दा'वत दी। (राजेअ : 1394)

٣٥٢٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ أَخْبَرَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي

3527. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमको अबुज़्ज़िनाद ने ख़बर दी, उन्हें

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ اللهِ. يَا بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ اللهِ. يَا أُمَّ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ عَمَّةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ، اشْتَرِيَا أَنْفُسَكُمَا مِنَ اللهِ، لاَ أَمْلِكُ لَكُمَا مِنَ اللهِ شَيْئًا سَلاَنِي مِنْ مَالِي مَا شِئْتُمَا)). [راجع: ٢٧٥٣]

अऊरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम(ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अ़ब्दे मुनाफ़ के बेटों! अपनी जानों को अल्लाह से ख़रीद लो (या'नी नेक काम करके उन्हें अल्लाह तआला के अ़ज़ाब से बचा लो) ऐ अ़ब्दुल मुत्तलिब के बेटों! अपनी जानों को अल्लाह तआला से ख़रीद लो। ऐ ज़ुबैर बिन अ़व्वाम की वालिदा! रसूलुल्लाह (ﷺ) की फूफी, ऐ फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद! तुम दोनों अपनी जानों को अल्लाह से बचा लो। मैं तुम्हारे लिये अल्लाह की बारगाह में कुछ इख़्तियार नहीं रखता। तुम दोनों मेरे माल में जितना चाहो मांग सकती हो। (राजेअ : 2753)

तश्रीह : बाब की मुनासबत ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन ख़ानदानों को उनके पुराने आबा व अज्दाद ही के नामों से पुकारा, मा'लूम हुआ कि ऐसी निस्बत अल्लाह के नज़दीक मअ़यूब (बुरी) नहीं है जैसे यहाँ के बेशतर मुसलमान अपने पुराने ख़ानदानों ही के नाम से अपनी पहचान कराते हैं। दूसरी रिवायत में यूँ है ऐ आइशा! ऐ ह़फ़्सा! ऐ उम्मे सलमा! ऐ बनी हाशिम! अपनी अपनी जानों को दोज़ख़ से छुड़ाओ। मा'लूम हुआ कि अगर ईमान न हो तो पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) की रिश्तेदारी क़यामत में कुछ काम न आएगी। इस ह़दीष़ से इस शिर्किया शिफ़ाअ़त का बिलकुल रद्द हो गया जो कुछ नाम के मुसलमान अंबिया और औलिया की निस्बत ये ए'तिक़ाद रखते हैं कि जिसके दामन को चाहेंगे पकड़कर अपनी शिफ़ाअ़त कराके बख़्शवा लेंगे, ये अ़क़ीदा सरासर बात़िल है।

١٤- بَابُ ابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ، وَمَوْلَى الْقَوْمِ مِنْهُمْ

बाब 14 : किसी क़ौम का भांजा या आज़ाद किया हुआ ग़ुलाम भी उसी क़ौम में दाख़िल होता है

٣٥٢٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ الأَنْصَارَ فَقَالَ: ((هَلْ فِيكُمْ أَحَدٌ مِنْ غَيْرِكُمْ؟)) قَالُوا: لاَ إِلاَّ ابْنُ أُخْتٍ لَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ مِنْهُمْ)).

3528. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंस़ार को ख़ास़ तौर से एक मर्तबा बुलाया, फिर उनसे पूछा क्या तुम लोगों मे कोई ऐसा शख़्स भी रहता है जिसका ता'ल्लुक़ तुम्हारे क़बीले से न हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि स़िर्फ़ हमारा एक भांजा ऐसा है। आपने फ़र्माया कि भांजा भी उसी क़ौम में दाख़िल होता है।

तश्रीह : अंस़ार के इस बच्चे का नाम नोअ़मान बिन मुक़रिन था। इमाम अह़मद की रिवायत में उसकी स़राह़त है। बाब का तर्जुमा में मौला का ज़िक्र है लेकिन इमाम बुख़ारी मौला (आज़ादकर्दा ग़ुलाम) की कोई ह़दीष़ नहीं लाए। कुछ ने कहा उन्होंने मौला के बाब में कोई ह़दीष़ अपनी शर्त पर नहीं पाई होगी। हाफ़िज़ ने कहा ये स़ह़ीह़ नहीं है क्योंकि इमाम बुख़ारी (रह) ने फ़राइज़ में ये ह़दीष़ निकाली है कि किसी क़ौम का मौला भी उन ही में दाख़िल है और मुम्किन है कि इमाम बुख़ारी (रह) ने इस ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया हो जिसको बज़्ज़ार ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से निकाला है। उसमें मौला और ह़रीफ़ और भांजे तीनों मज़्कूर हैं। तैसीर में है कि ह़नीफ़ा ने उसी ह़दीष़ से दलील ली है कि जब अ़स़्बा और ज़ुल् फ़ुरूज़ न हों तो भांजा मामूँ का वारिष़ होगा।

बाब 15 : हब्शा के लोगों का बयान और उनसे नबी (ﷺ) का ये फ़र्मान कि ऐ बनी अरफ़िदह

١٥- بَابُ قِصَّةِ الْحَبَشِ، وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَا بَنِي أَرْفِدَةَ))

3529. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि अबूबक्र (रज़ि.) उनके यहाँ तशरीफ़ लाए तो वहाँ (अंस़ार की) दो लड़कियाँ दुफ़ बजाकर गा रही थीं। ये ह़ज्ज के अय्यामे मिना का वाक़िया है। नबी करीम (ﷺ) रूए मुबारक पर कपड़ा डाले हुए लेटे हुए थे। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उन्हें डांटा तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने चेहरा मुबारक से कपड़ा हटाकर फ़र्माया अबूबक्र! उन्हें छोड़ दो। ये ईद के दिन हैं, ये मिना में ठहरने के दिन थे।

(राजेअ : 454)

٣٥٢٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ دَخَلَ عَلَيْهَا جَارِيَتَانِ فِي أَيَّامِ مِنًى تُدَفِّفَانِ وَتَضْرِبَانِ، وَالنَّبِيُّ ﷺ مُتَغَشٍّ بِثَوْبِهِ، فَانْتَهَرَهُمَا أَبُو بَكْرٍ، فَكَشَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ وَجْهِهِ فَقَالَ : ((دَعْهُمَا يَا أَبَابَكْرٍ، فَإِنَّهَا أَيَّامُ عِيْدٍ. وَتِلْكَ الأَيَّامُ أَيَّامُ مِنًى)).

[راجع: ٤٥٤]

3530. और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने देखा कि नबी करीम (ﷺ) मुझको पर्दा में रखे हुए हैं और मैं ह़ब्शियों को देख रही थी जो नेज़ों का खेल मस्जिद में कर रहे थे। ह़ज़रत अबूबक्र(रज़ि.) ने उन्हें डांटा। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उन्हें छोड़ दो। बनी अरफ़िदह तुम बेफ़िक्र होकर खेलो। (राजेअ : 949)

٣٥٣٠- وَقَالَتْ عَائِشَةُ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَسْتُرُنِي وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَى الْحَبَشَةِ وَهُمْ يَلْعَبُونَ فِي الْمَسْجِدِ، فَزَجَرَهُمْ عُمَرُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((دَعْهُمْ، أَمْنًا بَنِي أَرْفِدَةَ)). يَعْنِي بِالأَمْنِ)).[راجع: ٩٤٩]

तश्रीह : ये ह़दीष़ इस बाब में मौस़ूलन मज़्कूर है। अरफ़िदह ह़ब्शियों के जद्दे आ़ला (पूर्वज) का नाम था। कहते हैं ह़ब्शी ह़ब्श बिन कोश बिन ह़ाम बिन नूह़ की औलाद में से हैं। एक ज़माने में ये सारे अरब पर ग़ालिब हो गये थे और उनके बादशाह अब्रहा ने का'बा को गिरा देना चाहा था। यहाँ ये खेल ह़ब्शियों का जंगी ता'लीम और मश्क़ (प्रेक्टिस) के त़ौर पर था। इससे इस रक़्स की इबाह़त पर दलील स़ह़ीह़ नहीं जो मह़ज़ लह्व व लअ़िब के त़ौर पर हो। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको बनू अरफ़िदह कहकर पुकारा यही मक़्सूदे बाब है।

बाब 16 : जो शख़्स़ ये चाहे कि उसके बाप दादा को कोई बुरा न कहे

١٦- بَابُ مَنْ أَحَبَّ أَنْ لاَ يُسَبَّ نَسَبُهُ

3531. मुझसे उ़ष़्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़स्सान बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से मुश्रिकीन (क़ुरैश) की हिज्व करने की इजाज़त चाही तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि

٣٥٣١- حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((اسْتَأْذَنَ حَسَّانُ النَّبِيَّ ﷺ فِي هِجَاءِ الْمُشْرِكِيْنَ،

قَالَ : كَيْفَ بِنَسَبِي؟ فَقَالَ: لأَسُلَّنَّكَ مِنْهُمْ كَمَا تُسَلُّ الشَّعْرَةُ مِنَ الْعَجِيْنِ)). وَعَنْ أَبِيْهِ قَالَ : ((ذَهَبْتُ أَسُبُّ حَسَّانَ عِنْدَ عَائِشَةَ فَقَالَتْ : لاَ تَسُبَّهُ، فَإِنَّهُ كَانَ يُنَافِحُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ)).

[طرفاه في: ٤١٤٥، ٦١٥٠].

फिर मैं भी तो उन ही के ख़ानदान से हूँ। इस पर हस्सान (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि मैं आपको (शे'र में) इस तरह साफ़ निकाल ले जाऊँगा जैसे आटे में से बाल निकाल लिया जाता है और (हिशाम ने) अपने वालिद से रिवायत किया कि उन्होंने कहा, हज़रत आइशा (रज़ि.) के यहाँ मैं हस्सान (रज़ि.) को बुरा कहने लगा तो उन्होंने फ़र्माया, उन्हें बुरा न कहो, वो नबी करीम (ﷺ) की तरफ़ से मुदाफ़िअत किया करते थे। (दीगर मक़ाम : 4145, 6150)

तश्रीह : हज़रत हस्सान (रज़ि.) एक मौक़े पर बहक गये थे। या'नी हज़रत आइशा(रज़ि.) पर तोहमत लगाने वालों के हम नवा हो गये थे बाद में ये ताईब हो गये मगर कुछ दिलों में ये वाक़िया याद रहा मगर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़ुद उनकी मदह (ता'रीफ़) की और उनको अच्छे लफ़्ज़ों से याद किया जैसा कि यहाँ मज़्कूर है। मुश्रिकीन जो आँहज़रत (ﷺ) की बुराइयाँ करते हज़रत हस्सान उनका जवाब देते और जवाब भी कैसा कि मुश्रिकीन के दिलों पर सांप लौटने लग जाता। हज़रत हस्सान (रज़ि.) के बहुत से क़सीदे मज़्कूर हुए हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने मुश्रिकीने कुरैश की बिला ज़रूरत हिज्व को पसन्द नहीं फ़र्माया, यही बाब का मक़सद है।

١٧- بَابُ مَا جَاءَ فِي أَسْمَاءِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ

बाब 17 : रसूलुल्लाह (ﷺ) के नामों का बयान

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ﴾ الآيَةَ وَقَوْلِهِ ﴿مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ، وَالَّذِيْنَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ﴾ [الفتح : ٢٩]. وَقَوْلِهِ: ﴿مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ﴾ [الصف : ٦]

और अल्लाह तआला का सूरह अहज़ाब में इर्शाद कि, मुहम्मद (ﷺ) तुममें से किसी मर्द के बाप नहीं हैं और अल्लाह तआला का सूरह फ़तह में इर्शाद कि, मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वो कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में इंतिहाई सख़्त होते हैं और सूरह सफ़्फ़ में अल्लाह तआला का इर्शाद है कि, मिम् बअ़दी इस्मुहू अहमद

तश्रीह : ये हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) का क़ौल है कि मेरे बाद आने वाले रसूल का नाम अहमद होगा। बाब का मतलब यूँ षाबित हुआ कि यहाँ आयतों में आपके नाम मुहम्मद और अहमद मज़्कूर हुए (ﷺ)। कुफ़्फ़ार से हर्बी काफ़िर जो बाज़ाब्ता इस्लाम और मुसलमानों के इस्तिहसाल (शोषण) के लिये जारेहाना हमलावर हों। मुराद है कि ऐसे लोगों के हमले का मुदाफ़िआना जवाब देना और सख़्ती के साथ फ़साद को मिटाकर अमन क़ायम करना ये सच्चे मुहम्मदियों की ख़ास अलामत है।

٣٥٣٢- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَعْنٌ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((لِي خَمْسَةُ أَسْمَاءٍ: أَنَا مُحَمَّدٌ،

3532. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा कि मुझसे मअ़न ने कहा, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम ने और उनसे उनके वालिद (जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे पाँच नाम हैं। मैं मुहम्मद, अहमद और माही हूँ (या'नी मिटाने वाला हूँ) कि अल्लाह तआला मेरे ज़रिये कुफ़्र को मिटाएगा

وَأَنَا أَحْمَدُ، وَأَنَا الْمَاحِي الَّذِيْ يَمْحُو اللهُ بِهِ الْكُفْرَ، وَأَنَا الْحَاشِرُ الَّذِي يُحشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمِي، وَأَنَا الْعَاقِبُ)).

[طرفه في : ٤٨٩٦].

और मैं हाशिर हूँ कि तमाम इंसानों का (क़यामत के दिन) मेरे बाद हश्र होगा और मैं आक़िब हूँ या'नी ख़ातिमुन् नबिय्यीन हूँ, मेरे बाद कोई नया पैग़म्बर दुनिया में नहीं आएगा। (दीगर मक़ाम : 4896)

इस हदीष़ से रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह है कि आप (ﷺ) के बाद कोई भी नुबुव्वत का दा'वा करे वो झूठा दज्जाल है।

٣٥٣٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ تَعْجَبُونَ كَيْفَ يَصْرِفُ اللهُ عَنِّي شَتْمَ قُرَيْشٍ وَلَعْنَهُمْ؟ يَشْتِمُونَ مُذَمَّمًا، وَيَلْعَنُونَ مُذَمَّمًا، وَأَنَا مُحَمَّدٌ)).

3533. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें ता'ज्जुब नहीं होता कि अल्लाह तआ़ला क़ुरैश की गालियों और ला'नत मलामत को किस तरह दूर करता है, मुझे वो मुज़म्मम कहकर बुरा कहते, उस पर ला'नत करते हैं। हालाँकि मैं तो मुहम्मद हूँ। (ﷺ)

तश्रीह : अ़रब के काफ़िर दुश्मनी से आपको मुहम्मद (ﷺ) नहीं कहते बल्कि उसकी ज़िद में मुज़म्मम नाम से आपको पुकारते या'नी मज़म्मत किया हुआ बुरा। आपने फ़र्माया कि मुज़म्मम मेरा नाम ही नहीं है। जो मुज़म्मम होगा उसी पर उनकी गालियाँ पड़ेंगीं। हाफ़िज़ (रह) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के और भी नाम वारिद हुए हैं जैसे रऊफ़, रहीम, बशीर, नज़ीर, मुबीन, दाई इलल्लाह, सिराज, मुनीर, मुज़क्किर, रहमत, नेअ़मत, हादी, शहीद, अमीन, मुज़्ज़म्मिल, मुद्दष्षिर, मुतवक्किल, मुख़्तार, मुस्तफ़ा, शफ़ीअ़, मुश्फ़िआ़, सादिक़, मस्दूक़ वग़ैरह वग़ैरह, कुछ ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के नाम भी अस्माउल हुस्ना की तरह निन्नावे तक पहुँचते हैं, अगर मज़ीद तलाश किये जाएँ तो सौ तक मिल सकेंगे (ﷺ)। मुबारक नाम मुहम्मद (ﷺ) के बारे में हाफ़िज़ (रह) फ़र्माते हैं, **अय अल्लज़ी हमिद मर्रतिन बअ़द मर्रतिन औ अल्लज़ी तकामलत फीहिल्ख़िसालुल्महमूदतु क़ाल अयाज़ कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) अहमद क़ब्ल अंय्यकून मुहम्मद कमा वक़अ फिल्वुजूदि लिअन्न तस्मियत अहमद वक़अत फिल्कुतुबिस्सालिफ़ति व तस्मिय्यतु मुहम्मद वक़अत फिल्कुर्आनिल्अ़ज़ीम व ज़ालिक अन्नहू हमिद रब्बहू क़ब्ल अय्युहम्मिदहुन्नासु व कज़ालिक फिल्आख़िरत्ति बिहम्दि रब्बिही फयश्फउहू फयहमिदुहुन्नासु व क़द खस्स बिसूरतिल्हम्दि व बिलवाइल्हम्दि व बिल्मक़ामिल्महमूदि व शरअ लहुल्हम्द बअ़दल्अक्लि वश्शुर्बि व बअ़ददुआइ व बअ़दल्कुदूमि मिनस्सफ़रि व सुम्मियत उम्मतुहू अल्हम्मादीन फजुमिअ़त लहू मआनिल्हम्दि व अन्वाउहू (ﷺ)।** (फ़त्हुल बारी)

बाब 18 : आँहज़रत (ﷺ) का ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना

١٨- بَابُ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ﷺ

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) पर अल्लाह तआ़ला ने सिलसिल-ए-नुबुव्वत ख़त्म कर दिया, अब क़यामत तक कोई और नबी नहीं हो सकता न ज़िल्ली हो सकता है न बरौज़ी, न हक़ीक़ी हो सकता है, न मजाज़ी। आप क़यामत तक के लिये आख़िरी नबी हैं जैसे सूरज निकलने के बाद किसी चराग़ की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती। आप ऐसे कामिल व मुकम्मल नबी हैं कि अब न किसी नई शरीअ़त और नये पैग़म्बर की ज़रूरत है और न अब क़ुर्आन के बाद किसी नई किताब की ज़रूरत है। ये वो अ़क़ीदा है जिस पर चौदह सौ बरस से पूरी उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है मगर सद अफ़सोस कि इस मुल्क में पंजाब में मिर्ज़ा क़ादयानी ने इस अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ अपनी नुबुव्वत का चर्चा किया और वह्य व इल्हाम के मुद्दई हुए और वो आयात व अहादीष़ जिनसे आँहज़रत (ﷺ) का ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना ष़ाबित होता है उनकी ऐसी ऐसी दूर अज़्कार तावीलाते फ़ासिदा कीं कि फ़िल् वाक़ेअ़

दजल का हक़ अदा कर दिया। उलमा-ए-इस्लाम बिल ख़ुसूसन हमारे उस्ताज़ मरहूम हज़रत मौलाना ष़नाउल्लाह साहब अमृतसरी ने उनके दा'वा-ए-नुबुव्वत की तर्दीद में बहुत सी फ़ाज़िलाना किताबें लिखी हैं। ऐसे मुद्दइयाने नुबुव्वत इन अहादीषे नबवी के मिस्दाक़ हैं जिनमें आपने ख़बर दी है कि मेरी उम्मत में कुछ ऐसे दज्जाल लोग पैदा होंगे जो नुबुव्वत का दा'वा करेंगे। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसे गुमराहकुन लोगों के ख़यालाते फ़ासिदा से महफ़ूज़ रखे आमीन।

3534. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे सुलैम ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन मीनाअ ने बयान किया और उनसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी और दूसरे अंबिया की मिष़ाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने कोई घर बनाया, उसे ख़ूब आरास्ता पैरास्ता करके मुकम्मल कर दिया। सिर्फ़ एक ईंट की जगह ख़ाली छोड़ दी। लोग उस घर में दाख़िल होते और ता'ज्जुब करते और कहते काश ये एक ईंट की जगह ख़ाली न रहती तो कैसा अच्छा मुकम्मल घर होता।

٣٥٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا سَلِيْمُ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مِيْنَاءَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَثَلِي وَمَثَلُ الأَنْبِيَاءِ كَرَجُلٍ بَنَى دَارًا فَأَكْمَلَهَا وَأَحْسَنَهَا، إِلاَّ مَوضِعَ لَبِنَةٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَدْخُلُونَهَا وَيَتَعَجَّبُونَ وَيَقُولُونَ: لَو لاَ مَوضِعُ اللَّبِنَةِ)).

मेरी नुबुव्वत ने उस कमी को पूरा कर दिया। अब मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा।

3535. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे अबू सालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी और मुझसे पहले की तमाम अंबिया की मिष़ाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने एक घर बनाया और उसमें हर तरह की ज़ीनत पैदा की लेकिन एक कोने में एक ईंट की जगह छूट गई। अब तमाम लोग आते हैं और मकान को चारों तरफ़ से घूमकर देखते हैं और ता'ज्जुब करते हैं लेकिन ये भी कहते जाते हैं कि यहाँ पर एक ईंट क्यूँ न रखी गई? तो मैं ही वो ईंट हूँ और मैं ख़ातिमुन्नबिय्यीन हूँ।

٣٥٣٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ مَثَلِي وَمَثَلَ الأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِي كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى بَيْتًا فَأَحْسَنَهُ وَأَجْمَلَهُ، إِلاَّ مَوضِعَ لَبِنَةٍ مِنْ زَاوِيَةٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوفُونَ بِهِ وَيَعْجَبُونَ لَهُ وَيَقُولُونَ : هَلاَّ وُضِعَتْ هَذِهِ اللَّبِنَةُ؟ قَالَ : فَأَنَا اللَّبِنَةُ، وَأَنَا خَاتِمُ النَّبِيِّيْنَ)).

बाब 19 : नबी अकरम (ﷺ) की वफ़ात का बयान

١٩- بَابُ وَفَاةِ النَّبِيِّ ﷺ

3536. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने 63 साल की उम्र में वफ़ात पाई और इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझसे सईद बिन मुसय्यिब ने इसी तरह बयान किया।

٣٥٣٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّيْنَ)). وَقَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ مِثْلَهُ.

(दीगर मक़ाम : 4466)

[طرفه في : ٤٤٦٦].

बाब 20 : रसूले करीम (ﷺ) की कुन्नियत का बयान

٢٠- بَابُ كُنْيَةِ النَّبِيِّ ﷺ

नाम के अलावा अपने लिये कोई बतौरे इशारा-किनाया नाम रखे तो उसको कुन्नियत कहते हैं । इशारे किनाए के नाम हर क़ौम में और हर ज़ुबान में रखे जाते हैं। अरब में ऐसा दस्तूर था। आँहज़रत (ﷺ) की मशहूर कुन्नियत अबुल क़ासिम है। अक्षर ये कुन्नियत औलाद की निस्बत से रखी जाती है। आपके भी एक फ़रज़न्द का नाम क़ासिम बतलाया गया है जिससे आप अबुल क़ासिम (ﷺ) कहलाए।

3537. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) बाज़ार मे थे कि एक साहब की आवाज़ आई, या अबुल क़ासिम! आप उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुए (मा'लूम हुआ कि उन्होंने किसी और को पुकारा है) इस पर आपने फ़र्माया, मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन मेरी कुन्नियत मत रखो। (राजेअ : 2120)

٣٥٣٧- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ فِي السُّوقِ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ، فَالْتَفَتَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((سَمُّوا بِاسْمِي، وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي)). [راجع: ٢١٢٠]

3538. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी उन्हें मंसूर ने, उन्हें सालिम बिन अबी अल जअद ने और उन्हें हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे नाम पर नाम रखा करो लेकिन मेरी कुन्नियत न रखा करो। (राजेअ : 3114)

٣٥٣٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((تَسَمَّوا بِاسْمِي، وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي)). [راجع: ٣١١٤]

3539. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने सीरीन ने बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन मेरी कुन्नियत न रखा करो। (राजेअ : 110)

٣٥٣٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ: ((سَمُّوا بِاسْمِي، وَلاَ تَكْتَنُوا بِكُنْيَتِي)). [راجع: ١١٠]

हाफ़िज़ (रह) ने कहा कुछ के नज़दीक ये मुत्लक़न मना है। कुछ ने कहा कि ये मुमानअत आप (ﷺ) की ज़िन्दगी तक थी। कुछ ने कहा जमा करना मना है या'नी मुहम्मद अबुल क़ासिम नाम रखना। क़ौले ष़ानी को तरजीह है।

बाब 21

٢١- بَابٌ

3540. मुझसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको फ़ज़ल बिन मूसा ने ख़बर दी, उन्हें जुऐद बिन अब्दुर्रहमान ने कि मैंने साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) को चौरानवे साल की उम्र में देखा

٣٥٤٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا الْفَضْلُ بْنُ مُوسَى عَنِ الْجُعَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: رَأَيْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ

ابْنَ أَرْبَعٍ وَتِسْعِيْنَ جَلْدًا مُعْتَدِلاً فَقَالَ: لَقَدْ عَلِمْتُ مَا مُتِّعْتُ بِهِ - سَمْعِي وَبَصَرِي - إِلاَّ بِدُعَاءِ رَسُولِ اللهِ ﷺ. إِنَّ خَالَتِي ذَهَبَتْ بِي إِلَيْهِ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ ابْنَ أُخْتِي شَاكٍ، فَادْعُ اللهَ لَهُ. قَالَ فَدَعَا لِي ﷺ)). [راجع: ١٩٠]

कि ख़ासे क़वी व तवाना थे। उन्होंने कहा कि मुझे यक़ीन है कि मेरे कानों और आँखों से जो मैं नफ़ा हासिल कर रहा हूँ वो सिर्फ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) की दुआ की बरकत है। मेरी ख़ाला मुझे एक मर्तबा आपकी ख़िदमत में ले गईं और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मेरा भांजा बीमार है, आप इसके लिये दुआ कर दें। उन्होंने बयान किया कि आपने मेरे लिये दुआ फ़र्माई। (राजेअ: 190)

हज़रत साइब बिन यज़ीद की ख़ाला ने हुज़ूर (ﷺ) के सामने बच्चे का नाम नहीं लिया बल्कि इब्ने उख़्ती कहकर पेश किया। तो षाबित हुआ कि किनाया की एक सूरत ये भी है यही इस अ़लैहदा बाब का मक़्सद है कि कुन्नियत बाप और बेटा दोनों तरह से इस्तेमाल की जा सकती है।

٢٢- بَابُ خَاتَمِ النُّبُوَّةِ

बाब 22 : मुह्रे नुबुव्वत का बयान (जो आपके दोनों कँधों के बीच में थी)

٣٥٤١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنِ الْجُعَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: سَمِعْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيْدَ قَالَ ((ذَهَبَتْ بِي خَالَتِي إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ ابْنَ أُخْتِي وَقِعَ، فَمَسَحَ رَأْسِي، وَدَعَا لِي بِالْبَرَكَةِ، وَتَوَضَّأَ فَشَرِبْتُ مِنْ وَضُوئِهِ، ثُمَّ قُمْتُ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَنَظَرْتُ إِلَى خَاتَمِ النُّبُوَّةِ بَيْنَ كَتِفَيْهِ الْحِجْلَةَ)). قَالَ ابْنُ عُبَيْدِ اللهِ: الْحُجْلَةُ مِنْ حُجَلِ الْفَرَسِ الَّذِي بَيْنَ عَيْنَيْهِ. قَالَ : إِبْرَاهِيْمُ بْنُ حَمْزَةَ: ((مِثْلَ زِرِّ الْحَجَلَةِ)). وَقَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ الصَّحِيْحُ الرَّاءُ قَبْلَ الزَّاءِ. [راجع: ١٩٠]

3541. हमसे मुहम्मद बिन उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे जुऐ़द बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उन्होंने साईब बिन यज़ीद (रज़ि.) से सुना कि मेरी ख़ाला मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मेरा भांजा बीमार हो गया है। इसपर आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे सर पर दस्ते मुबारक फेरा और मेरे लिये बरकत की दुआ की। उसके बाद आपने वुज़ू किया तो मैं ने आपके वुज़ू का पानी पिया, फिर आपकी पीठ की तरफ़ जाकर खड़ा हो गया और मैंने मुह्रे नुबुव्वत को आपके दोनों मूँढ़ों के बीच देखा। मुहम्मद बिन उ़बैदुल्लाह ने कहा कि हज्ला, हज्लिल फ़रस से मुश्तक़ है जो घोड़े की उस सफ़ेदी को कहते हैं जो उसकी दोनों आँखों के बीच में होती है। इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने कहा मिष्लुर्रज़ुल हिज्लति या'नी राय मह्मला पहले फिर ज़ाए मुअ़जमा। इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि सहीह ये है कि राय मह्मला पहले है। (राजेअ: 190)

तश्रीह : हाफ़िज़ साहब (रह) कहते हैं कि ये मुहर विलादत के वक़्त आपकी पीठ पर न थी जैसे कुछ ने गुमान किया है बल्कि शक़्क़े सद्र (सीना चाक किये जाने) के बाद फ़रिश्तों ने ये अ़लामत कर दी थी। ये मज़्मून अबू दाऊद तियालिसी और हारिष बिन उसामा ने अपनी मुस्नदों में और नईम ने दलाईलुन नुबुव्वत में और इमाम अहमद और बैहक़ी ने रिवायत किया है। मिष्लुर् रज़ुल हिज्लति का लफ़्ज़ अकष़र नुस्ख़ों में हदीष़ में नहीं है और सहीह ये है क्योंकि अगर हदीष़ में न होता तो मुहम्मद बिन उ़बैदुल्लाह इस लफ़्ज़ की तफ़्सीर क्यूँ बयान करते। और कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है जैसे हिज्ला का अण्डा और हिज्ला एक

परिन्दा है जो कबूतर से छोटा होता है। ज़रब तक़्दीम मुअजमा पर राए मह्मला या बतक़्दीम राय मह्मला बज़ाए मुअजमा या'नी रज़ दोनों तरह से मन्क़ूल है। रज़ से मुराद अण्डा है। इब्राहीम बिन हम्ज़ा की रिवायत को ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह) ने किताबुत तिब्ब में वारिद किया है। हाफ़िज़ ने कहा मुझको साइब बिन यज़ीद की ख़ाला का नाम मा'लूम नहीं हुआ। हाँ उनकी माँ का नाम अल्बा बिन्ते शुरैह था।

बाब 23 : नबी करीम (ﷺ) के हुलिया और अख़्लाक़े फ़ाज़िला का बयान

٢٣- بَابُ صِفَةِ النَّبِيِّ ﷺ

इस बाब के तहत इमाम बुख़ारी (रह) तक़रीबन 28 अहादीष़ लाए हैं जिनसे आप (ﷺ) के हुलिये मुबारक और आप (ﷺ) की सीरते तय्यिबा और अख़्लाक़े फ़ाज़िला पर रोशनी पड़ती है।

3542. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे उमर बिन सईद बिन अबी हुसैन ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे उक़्बा बिन हारिष़ ने कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अस्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर मस्जिद से बाहर निकले तो देखा कि हज़रत हसन बच्चों के साथ खेल रहे हैं। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उनको अपने कँधे पर बिठा लिया और फ़र्माया कि मेरे बाप तुम पर क़ुर्बान हों तुममें नबी करीम (ﷺ) की शबाहत है, अली की नहीं। ये सुनकर हज़रत अली (रज़ि.) हंस रहे थे (ख़ुश हो रहे थे)। (दीगर मक़ाम : 3750)

٣٥٤٢- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: ((صَلَّى أَبُوبَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ الْعَصْرَ ثُمَّ خَرَجَ يَمْشِي، فَرَأَى الْحَسَنَ يَلْعَبُ مَعَ الصِّبْيَانِ، فَحَمَلَهُ عَلَى عَاتِقِهِ وَقَالَ : بِأَبِي، شَبِيْهٌ بِالنَّبِيِّ، لاَ شَبِيْهٌ بِعَلِيٍّ، وَعَلِيٌّ يَضْحَكُ)). [طرفه في : ٣٧٥٠].

तश्रीह : हज़रत हसन (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के बहुत मुशाबह थे। हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायत में है कि हुसैन (रज़ि.) बहुत मुशाब थे उन दोनों में इख़्तिलाफ़ नहीं है। मुशाबिहत की वजहें मुख़्तलिफ़ होंगी। कुछ ने कहा कि हज़रत हसन निस्फ़ आला बदन में मुशाबह थे और हज़रत हुसैन निस्फ़ अस्फ़ल में। ग़र्ज़ ये कि दोनों भाई आँहज़रत (ﷺ) की पूरी तस्वीर थे। इस हदीष़ से राफ़ज़ियों का भी रद्द हुआ जो जनाब अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) का दुश्मन और मुख़ालिफ़ ख़्याल करते हैं क्योंकि ये क़िस्सा आपकी वफ़ात के बाद का है, कोई बेवक़ूफ़ भी ऐसा ख़्याल नहीं कर सकता। अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) जब तक ज़िन्दा रहे आँहज़रत (ﷺ) और आपकी आल व औलाद के ख़ैर ख़्वाह और जाँ निष़ार बनकर रहे। (रज़ि.)

3543. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुबैर ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया और उनसे अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को मैंने देखा था। हज़रत हसन (रज़ि.) में आपकी पूरी मुशाबिहत मौजूद थी। (दीगर मक़ाम : 3544)

٣٥٤٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَكَانَ الْحَسَنُ يُشْبِهُهُ)). [طرفه في: ٣٥٤٤].

3544. मुझसे अम्र बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने फ़ुज़ैल ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को देखा है,

٣٥٤٤- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ سَمِعْتُ أَبَا جُحَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ:

हसन बिन अ़ली (रज़ि.) में आपकी मुशाबिहत पूरी त़रह मौजूद थी। इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने कहा, मैंने अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) से अ़र्ज़ किया कि आप आँहज़रत (ﷺ) की सिफ़त बयान करें। उन्होंने कहा आप सफ़ेद रंग के थे, कुछ बाल सफ़ेद हो गये थे और आपने हमें तेरह ऊँटों के दिये जाने का हुक्म दिया था, लेकिन अभी हमने उन ऊँटों को अपने क़ब्ज़े में भी नहीं लिया था कि आपकी वफ़ात हो गई। (राजेअ़ : 3543)

((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَكَانَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ يُشْبِهُهُ. قُلْتُ لأَبِي جُحَيْفَةَ: صِفْهُ لِي. قَالَ: كَانَ أَبْيَضَ قَدْ شَمِطَ. وَأَمَرَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ بِثَلاَثَ عَشْرَةَ قَلُوصًا. قَالَ فَقُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ قَبْلَ أَنْ نَقْبِضَهَا)). [راجع: ٣٥٤٣]

3545. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे वहब ने, उनसे अबू जुहैफ़ा सिवाई (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को देखा, आपके निचले होंठ मुबारक के नीचे ठोढ़ी के कुछ बाल सफ़ेद थे।

٣٥٤٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنِ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيْلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ وَهَبٍ أَبِي جُحَيْفَةَ السُّوَائِيِّ قَالَ : ((رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَرَأَيْتُ بَيَاضًا مِنْ تَحْتِ شَفَتِهِ السُّفْلَى الْعَنْفَقَةَ)).

अन्फ़क़ा ठोढ़ी और निचले होंठ के दरमियानी हिस्से को कहते हैं।

3546. हमसे अ़साम बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हरीज़ बिन उ़ष्मान ने बयान किया और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) के स़हाबी अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) बूढ़े हो गये थे? उन्होंने कहा कि आपकी ठोढ़ी के चन्द बाल सफ़ेद हो गये थे।

٣٥٤٦- حَدَّثَنَا عِصَامُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا حَرِيْزُ بْنُ عُثْمَانَ أَنَّهُ: سَأَلَ عَبْدَ اللهِ بْنَ بُسْرٍ صَاحِبَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَرَأَيْتَ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ شَيْخًا؟ قَالَ: كَانَ فِي عَنْفَقَتِهِ شَعَرَاتٌ بِيْضٌ)).

तश्रीह : इन बयान की गई तमाम अह़ादीष़ में किसी न किसी वस्फ़े-नबवी का ज़िक्र हुआ है, इसीलिये इन अह़ादीष़ को इस बाब के ज़ेल में लाया गया है।

3547. मुझसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने, उनसे रबीआ बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया कि मैं ने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने नबी करीम (ﷺ) के औस़ाफ़े मुबारका बयान करते हुए बतलाया कि आप दरम्याना क़द थे, न बहुत लम्बे और न छोटे क़द वाले, रंग खिलता हुआ था (सुर्ख़ व सफ़ेद) न ख़ाली सफ़ेद थे और न बिलकुल गन्दुमी। आपके बाल न बिलकुल मुड़े हुए सख़्त क़िस्म के थे और न सीधे लटके हुए ही थे। नुज़ूले वह़्य के वक़्त आपकी उ़म्र चालीस साल थी। मक्का में आपने दस साल तक क़याम फ़र्माया और इस पूरे अ़र्से

٣٥٤٧- حَدَّثَنِي ابْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ عَنْ خَالِدٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ عَنْ رَبِيْعَةَ بْنَ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ بِسَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَصِفُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: كَانَ رَبْعَةً مِنَ الْقَوْمِ، لَيْسَ بِالطَّوِيْلِ وَلاَ بِالْقَصِيْرِ، أَزْهَرَ اللَّوْنِ، لَيْسَ بِأَبْيَضَ أَمْهَقَ وَلاَ آدَمَ، لَيْسَ بِجَعْدٍ قَطِطٍ وَلاَ سَبْطٍ رَجِلٍ. أُنْزِلَ عَلَيْهِ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِيْنَ، فَلَبِثَ

में आप पर वह्य नाज़िल होती रही और मदीना में भी आपका क़याम दस साल तक रहा। आपके सर और दाढ़ी के बीस बाल भी सफ़ेद नहीं हुए थे। रबीआ (रावी हदीष़) ने बयान किया कि फिर मैंने आप (ﷺ) का एक बाल देखा तो वो लाल था मैंने उसके बारे में पूछा तो मुझे बताया गया कि ये ख़ुश्बू लगाते लगाते लाल हो गया है। (दीगर मक़ाम : 3547, 5900)

بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِيْنَ يُنْزَلُ عَلَيْهِ، وَبِالْمَدِيْنَةِ عَشْرَ سِنِيْنَ، وَقُبِضَ وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ عِشْرُونَ شَعْرَةً بَيْضَاءَ. قَالَ رَبِيْعَةُ : فَرَأَيْتُ شَعْرًا مِنْ شَعْرِهِ فَإِذَا هُوَ أَحْمَرُ، فَسَأَلْتُ، فَقِيْلَ : أَحْمَرُ مِنَ الطِّيْبِ)).

[طرفاه في : ٣٥٤٨، ٥٩٠٠].

आँहज़रत (ﷺ) पर वह्य के शुरू होने के बाद तक़रीबन तीन साल ऐसे गुज़रे जिनमें आप पर वह्य का सिलसिला बन्द हो गया था, उसे फ़त्रा का ज़माना कहते हैं। रावी ने बीच के उन सालों को हज़फ़ कर दिया जिनमें सिलसिल-ए-वह्य के शुरू होने के बाद वह्य नहीं आई थी आपकी नुबुव्वत के बाद क़यामे मक्का की कुल मुद्दत तेरह साल है।

3548. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मालिक बिन अनस ने ख़बर दी, उन्हें रबीआ़ बिन अबी अ़ब्दुर्रहमान ने और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आपने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) न बहुत लम्बे थे और न छोटे क़द के, न बिलकुल सफ़ेद थे और न गन्दुमी रंग के, न आपके बाल बहुत ज़्यादा घुँघराले सख़्त थे और न बिलकुल सीधे लटके हुए। अल्लाह तआ़ला ने आपको चालीस साल की उम्र में नुबुव्वत दी और आपने मक्का में दस साल तक क़याम किया और मदीना में दस साल तक क़याम किया। जब अल्लाह तआ़ला ने आपको वफ़ात दी तो आपके सर और दाढ़ी के बीस बाल भी सफ़ेद न थे। (राजेअ़ : 3547)

٣٥٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ رَبِيْعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيْسَ بِالطَّوِيْلِ الْبَائِنِ وَلاَ بِالْقَصِيْرِ، وَلاَ بِالأَبْيَضِ الأَمْهَقِ وَلَيْسَ بِالآدَمِ، وَلَيْسَ بِالْجَعْدِ الْقَطَطِ وَلاَ بِالسَّبْطِ. بَعَثَهُ اللهُ عَلَى رَأْسِ أَرْبَعِيْنَ سَنَةً، فَأَقَامَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِيْنَ بِالْمَدِيْنَةِ عَشْرَ سِنِيْنَ فَتَوَفَّاهُ وَلَيْسَ فِي رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ عِشْرُونَ شَعْرَةً بَيْضَاءَ))

[راجع: ٣٥٤٧]

3549. हमसे अबू अ़ब्दुल्लाह अहमद बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हुस्न व जमाल में भी सबसे बढ़कर थे और अख़्लाक़ में भी सबसे बेहतर थे। आपका क़द न बहुत लम्बा था और न छोटा (बल्कि दरम्याना था)।

٣٥٤٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ سَعِيْدٍ أَبُو عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ يَقُولُ: ((كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَحْسَنَ النَّاسِ وَجْهًا، وَأَحْسَنَهُ خَلْقًا، لَيْسَ بِالطَّوِيْلِ الْبَائِنِ وَلاَ بِالْقَصِيْرِ)).

3550. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कभी ख़िज़ाब भी इस्ते'माल किया था? उन्होंने कहा कि आपने कभी ख़िज़ाब नहीं लगाया, सिर्फ़ आपकी दोनों कनपटियों पर (सर में) चन्द बाल सफ़ेद थे। (दीगर मक़ाम : 5894, 5895)

٣٥٥٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: ((سَأَلْتُ أَنَسًا: هَلْ خَضَبَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: لاَ، إِنَّمَا كَانَ شَيْءٌ فِي صُدْغَيْهِ)).

[طرفاه في: ٥٨٩٤، ٥٨٩٥].

मगर अबू रम्षा की रिवायत में जिसको हाकिम और अस्हाबे सुनन ने निकाला है, ये है कि आपके बालों पर मेहन्दी का ख़िज़ाब था। इब्ने उमर (रज़ि.) की रिवायत में है कि आप ज़र्द (पीला) ख़िज़ाब करते थे और अन्देशा है कि आपने मेहन्दी बत़रीक़ ख़ुश्बू लगाई हो, इसी त़रह़ ज़ा'फ़रान भी। उन लोगों ने उसको ख़िज़ाब समझा। ये भी अन्देशा है कि अनस (रज़ि.) ने ख़िज़ाब न देखा हो।

3551. हमसे ह़फ़्स बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दरम्याना क़द के थे। आपका सीना बहुत कुशादा और खुला हुआ था। आपके (सर के) बाल कानों की लौ तक लटकते रहते थे। मैंने आँहज़रत (ﷺ) को एक मर्तबा एक सुर्ख़ जोड़े में देखा। मैंने आपसे बढ़कर हसीन किसी को नहीं देखा था। यूसुफ़ बिन अबी इस्हाक़ ने अपने वालिद के वास्ते से, इला मन्किबयहि बयान किया (बजाय लफ़्ज़ शह़मता उज़ुनयहि के) या'नी आपके बाल मूँढ़ों तक पहुँचते थे। (दीगर मक़ाम : 5848, 5901)

٣٥٥١- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ مَرْبُوعًا بَعِيْدَ مَا بَيْنَ الْمَنْكِبَيْنِ، لَهُ شَعَرٌ يَبْلُغُ شَحْمَةَ أُذُنَيْهِ، رَأَيْتُهُ فِي حُلَّةٍ حَمْرَاءَ لَمْ أَرَ شَيْئًا قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهُ)). وَقَالَ يُوسُفُ بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِيْهِ ((إِلَى مَنْكِبَيْهِ)).

[طرفاه في : ٥٨٤٨، ٥٩٠١].

यूसुफ़ के त़रीक़ को ख़ुद मुअल्लिफ़ ने भी निकाला मगर मुख़्तसर तौर पर। उसमें बालों का ज़िक्र नहीं है। कुछ रिवायतों में आपके बाल कानों की लौ तक, कुछ रिवायतों में मूँढ़ों तक, कुछ रिवायतों मे उनके बीच तक मज़्कूर हैं। उनका इख़्तिलाफ़ यूँ दूर हो सकता है कि जिस वक़्त आप तैल डालते, कँघी करते तो बाल मूँढ़ों तक आ जाते, ख़ाली वक़्तों में कानों तक या दोनो के बीच में रहते।

3552. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि किसी ने बराअ (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलल्लाह (ﷺ) का चेहरा तलवार की त़रह़ (लम्बा पतला) था? उन्होंने कहा नहीं, चेहरा मुबारक चाँद की त़रह़ (गोल और ख़ूबसूरत) था।

٣٥٥٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: ((سُئِلَ الْبَرَاءُ: أَكَانَ وَجْهُ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَ السَّيْفِ؟ قَالَ : لاَ، بَلْ مِثْلَ الْقَمَرِ)).

गोल से ये ग़र्ज़ नहीं कि बिलकुल गोल था बल्कि क़द्रे गोलाई थी। अ़रब में ये हुस्न में दाख़िल है। उसके साथ आपके रुख़सार फूले न थे बल्कि साफ़ थे जैसे दूसरी रिवायत में है। दाढ़ी आपकी गोल और घनी हुई, क़रीब थी कि सीना ढ़ांप ले, बाल बहुत स्याह, आँखें सुरमगीं, उनमें लाल डोरा था। अल ग़र्ज़ आप हुस्ने मुजस्सम थे। (ﷺ)

3553. हमसे अबू अ़ली ह़सन बिन मंसूर ने बयान किया, कहा

٣٥٥٣- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مَنْصُورٍ أَبُو

हमसे ह़ज्जाज बिन मुह़म्मद अल अअ़वर ने मुस़ैस़ा (शहर में) बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने बयान किया कि मैंने अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दोपहर के वक़्त सफ़र के इरादे से निकले। बत़्हाअ नामी जगह पर पहुँचकर आपने वुज़ू किया और ज़ुह्र की नमाज़ दो रकअ़त (क़स्र) पढ़ी फिर अ़स्र की भी दो रकअ़त (क़स्र) पढ़ी। आपके सामने एक छोटा सा नेज़ा (बत़ौरे सुत्रह) गड़ा हुआ था। औ़न ने अपने वालिद से इस रिवायत में ये ज़्यादा किया है कि अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) ने कहा कि इस नेज़े के आगे से आने जाने वाले आ जा रहे थे। फिर स़ह़ाबा आपके पास और आपके मुबारक हाथों को थामकर अपने चेहरों पर फेरने लगे। अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने भी आपके दस्ते मुबारक को अपने चेहरे पर रखा। उस वक़्त वो बर्फ़ से भी ज़्यादा ठण्डा और मुश्क से भी ज़्यादा ख़ुश्बूदार था। (राजेअ़ : 187)

عَلِيٌّ حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ الأَعْوَرُ بِالْمُصَيِّصَةِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا جُحَيْفَةَ قَالَ: ((خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْهَاجِرَةِ إِلَى الْبَطْحَاءِ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ صَلَّى الظُّهْرَ رَكْعَتَيْنِ وَالْعَصْرَ رَكْعَتَيْنِ وَبَيْنَ يَدَيْهِ عَنَزَةٌ)). قَالَ: شُعْبَةُ: وَزَادَ فِيْهِ عَوْنٌ عَنْ أَبِيْهِ أَبِي جُحَيْفَةَ قَالَ: ((كَانَ يَمُرُّ مِنْ وَرَائِهَا الْمَرْأَةُ. وَقَامَ النَّاسُ فَجَعَلُوا يَأْخُذُونَ يَدَيْهِ فَيَمْسَحُونَ بِهِمَا وُجُوهَهُمْ، قَالَ: فَأَخَذْتُ بِيَدِهِ فَوَضَعْتُهَا عَلَى وَجْهِي، فَإِذَا هِيَ أَبْرَدُ مِنَ الثَّلْجِ وَأَطْيَبُ رَائِحَةً مِنَ الْمِسْكِ)).

[راجع: ١٨٧]

तश्रीह : एक रिवायत में है, आपने एक डोल पानी में कुल्ली करके वो पानी कुँऐं में डाल दिया तो कुँऐं में से मुश्क जैसी ख़ुश्बू आने लगी। उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने आपका पसीना जमा करके रखा, ख़ुश्बू में मिलाया तो वो दूसरी ख़ुश्बू से ज़्यादा मुअ़त्तर (सुगन्धित) था। अबू यअ़ला और बज़्ज़ार ने स़ह़ीह़ सनदों से निकाला कि आप जब मदीना के किसी रास्ते से गुज़रते तो वो महक जाता। एक ग़रीब औ़रत के पास ख़ुश्बू न थी। आपने शीशी में अपना थोड़ा सा पसीना उसे दे दिया तो उससे सारे मदीना वाले मुश्क की सी ख़ुश्बू पाते। उसके घर का नाम बैतुल मुत़य्यबीन पड़ गया था। (अबू यअ़ला, त़बरानी)

3554. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सबसे ज़्यादा सख़ी थे और रमज़ान में जब आप (ﷺ) से जिब्रईल (ﷺ) की मुलाक़ात होती तो आपकी सख़ावत और भी बढ़ जाया करती थी। जिब्रईल (ﷺ) रमज़ान की हर रात में आपसे मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाते और आपके साथ क़ुर्आन मजीद का दौर करते। उस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ैर व भलाई के मामले में तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़्यादा सख़ी हो जाते थे। (राजेअ़ : 6)

٣٥٥٤-- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَجْوَدَ النَّاسِ، وَأَجْوَدَ مَا يَكُونُ فِي رَمَضَانَ حِيْنَ يَلْقَاهُ جِبْرِيْلُ، وَكَانَ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ يَلْقَاهُ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْ رَمَضَانَ فَيُدَارِسُهُ الْقُرْآنَ، فَلَرَسُولُ اللهِ ﷺ أَجْوَدُ بِالْخَيْرِ مِنَ الرِّيْحِ الْمُرْسَلَةِ)). [راجع: ٦]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) के बेशुमार औसाफ़े हस्ना में से यहाँ आपकी सिफ़ते सख़ावत का ज़िक्र है। इस हदीष़ को इसीलिये इस बाब के तहत लाए। बाब और हदीष़ में यही मुताबक़त है।

3555. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें उर्वा ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके यहाँ बहुत ही ख़ुश ख़ुश दाख़िल हुए, ख़ुशी और मुसर्रत से पेशानी की लकीरें चमक रही थीं। फिर आपने फ़र्माया, आइशा! तुमने सुना नहीं मुदलिजी ने ज़ैद व उसामा के सिर्फ़ क़दम देखकर क्या बात कही? उसने कहा कि एक के पाँव दूसरे के पाँव से मिलते हुए नज़र आते हैं। (दीगर मक़ाम : 3731, 6770, 6771)

٣٥٥٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ: أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا مَسْرُورًا تَبْرُقُ أَسَارِيرُ وَجْهِهِ فَقَالَ: أَلَمْ تَسْمَعِي مَا قَالَ الْمُدْلِجِيُّ لِزَيْدٍ وَأُسَامَةَ - وَرَأَى أَقْدَامَهُمَا -: إِنَّ بَعْضَ هَذِهِ الأَقْدَامِ مِنْ بَعْضٍ)).

[أطرافه في : ٣٧٣١، ٦٧٧٠، ٦٧٧١].

तश्रीह : हुआ ये था कि ज़ैद गोरे थे और उसामा स्याह फ़ाम (सांवले)। कुछ मुनाफ़िक़ शुब्हा करते थे कि उसामा ज़ैद के बेटे नहीं हैं। एक बार बाप-बेटे चादर ओढ़े हुए सो रहे थे मगर पाँव खुले हुए थे। मुदलिजी ने जो अ़रब का बड़ा क़याफ़ा-शनास था, पाँव देखकर कहा ये पाँव एक–दूसरे से मिलते हैं या एक–दूसरे में से हैं। इमाम शाफ़िई ने इस हदीष़ से क़याफ़ा को स़ह़ीह़ समझा है। यहाँ इस हदीष़ के लाने से ये ष़ाबित करना मंज़ूर है कि आपकी पेशानी में लकीरें थीं। इस हदीष़ मे आपकी फ़रहत व मुसर्रत का ज़िक्र है जो आपके अख़्लाक़े फ़ाज़िला के बारे में है। इसीलिये हदीष़ को यहाँ लाए।

3556. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने बयान किया कि मैंने कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना। आप ग़ज़्व-ए-तबूक़ में अपने पीछे रह जाने का वाक़िया बयान कर रहे थे, उन्होंने बयान किया कि फिर मैंने (तौबा क़ुबूल होने के बाद) हाज़िर होकर रसूलुल्लाह (ﷺ) को सलाम किया तो चेहरा मुबारक ख़ुशी से चमक रहा था। जब भी हुज़ूर (ﷺ) किसी बात पर ख़ुश होते तो उनका चेहरा मुबारक चमक उठता, ऐसा मा'लूम होता जैसे चाँद का टुकड़ा हो और आपकी ख़ुशी को हम उसी से पहचान जाते थे। (राजेअ़ : 2757)

٣٥٥٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ كَعْبٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ كَعْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُ حِينَ تَخَلَّفَ عَنْ تَبُوكَ قَالَ: فَلَمَّا سَلَّمْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهُوَ يَبْرُقُ وَجْهُهُ مِنَ السُّرُورِ، وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا سُرَّ اسْتَنَارَ وَجْهُهُ حَتَّى كَأَنَّهُ قِطْعَةُ قَمَرٍ، وَكُنَّا نَعْرِفُ ذَلِكَ مِنْهُ)).

[راجع: ٢٧٥٧]

3557. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन अबी

٣٥٥٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَمْرٍو عَنْ

अम्र ने, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं (हज़रत आदम से लेकर) बराबर आदमियों के बेहतर क़र्नों में होता आया हूँ (या'नी शरीफ़ और पाकीज़ा नस्लों में) यहाँ तक कि वो क़र्न (ज़माना) आया जिसमें मैं पैदा हुआ।

سَعِيْدٍ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بُعِثْتُ مِنْ خَيْرِ قُرُونِ بَنِي آدَمَ قَرْنًا فَقَرْنًا حَتَّى كُنْتُ مِنَ الْقَرْنِ الَّذِيْ كُنْتُ مِنْهُ)).

तश्रीह : मतलब ये है कि आदम (अलैहिस्सलाम) के बाद आँहज़रत (ﷺ) के नसब के जितने भी सिलसिले हैं वो सब आदम (अलैहिस्सलाम) की औलाद में से बेहतरीन ख़ानदान गुज़रे हैं। आपके अज्दाद में हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं, फिर हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) हैं, जो अबुल अरब हैं। उसके बाद अरबों के जितने सिलसिले हैं। उन सब में आपका ख़ानदान सबसे ज़्यादा शरीफ़ और रफ़ीअ था। आपका ता'ल्लुक़ इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की औलाद की शाख़ बनी किनाना से, फिर क़ुरैश से, फिर बनी हाशिम से हैं। क़र्न की मुद्दत चालीस साल से एक सौ बीस साल तक बतलाई गई है कि ये एक क़र्न होता है। वल्लाहु आलम।

3558. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको उबैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (सर के आगे के बालों को पेशानी पर) पड़ा रहने देते थे और मुश्रिकीन की ये आदत थी कि वो आगे के सर के बाल दो हिस्सों में तक़्सीम कर लेते थे (पेशानी पर पड़ा नहीं रहने देते थे) और अहले किताब (यहूद व नसारा) सर के आगे के बाल पेशानी पर पड़ा रहने देते थे। आँहज़रत (ﷺ) उन मामलात में जिनके बारे में अल्लाह तआला का कोई हुक्म आपको न मिला होता, (उनमें) अहले किताब की मुवाफ़क़त पसन्द फ़र्माते (और हुक्म नाज़िल होने के बाद वह्य पर अमल करते थे) फिर हुज़ूर (ﷺ) भी सर में मांग निकालने लगे।
(दीगर मक़ाम : 3944, 5917)

٣٥٥٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَسْدِلُ شَعْرَهُ، وَكَانَ الْمُشْرِكُونَ يَفْرُقُونَ رُؤُوسَهُمْ فَكَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَسْدِلُونَ رُؤُوسَهُمْ، وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُحِبُّ مُوَافَقَةَ أَهْلِ الْكِتَابِ فِيمَا لَمْ يُؤْمَرْ فِيهِ بِشَيْءٍ، ثُمَّ فَرَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَأْسَهُ)).
[طرفاه في : ٣٩٤٤، ٥٩١٧].

और पेशानी पर लटकाना छोड़ दिया। शायद आपको हुक्म आ गया होगा।

3559. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बद ज़ुबान और लड़ने झगड़ने वाले नहीं थे, आप फ़र्माया करते थे कि तुममें सबसे बेहतर वो शख़्स है जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों (जो लोगों से कुशादा पेशानी से पेश आए)।

٣٥٥٩- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ فَاحِشًا وَلاَ مُتَفَحِّشًا، وَكَانَ يَقُولُ: ((إِنَّ مِنْ خِيَارِكُمْ أَحْسَنَكُمْ أَخْلاَقًا)).

[أطرافه في: ٣٧٥٩، ٦٠٢٩، ٦٠٣٥].

3560. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से जब भी दो चीज़ों में से किसी एक के इख़्तियार करने के लिये कहा गया तो आपने हमेशा उसी को इख़्तियार फ़र्माया जिसमें आपको ज़्यादा आसानी मा'लूम हुई बशर्ते कि उसमें कोई गुनाह न हो। क्योंकि अगर उसमें गुनाह का कोई अंदेशा भी होता तो आप उससे सबसे ज़्यादा दूर रहते और आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी ज़ात के लिये कभी किसी से बदला नहीं लिया। लेकिन अगर अल्लाह की हुर्मत को कोई तोड़ता तो आप उससे ज़रूर बदला लेते थे। (दीगर मक़ाम : 6126, 6876, 6853)

٣٥٦٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((مَا خُيِّرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلاَّ أَخَذَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا، فَإِنْ كَانَ إِثْمًا كَانَ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنْهُ، وَمَا انْتَقَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِنَفْسِهِ، إِلاَّ أَنْ تُنْتَهَكَ حُرْمَةُ اللهِ فَيَنْتَقِمَ للهِ بِهَا)).

[أطرافه في: ٦١٢٦، ٦٧٨٦، ٦٨٥٣].

तश्रीह : अ़ब्दुल्लाह बिन हन्ज़ल या उ़क़्बा बिन अबी मुईत या अबू राफ़ेअ़ यहूदी या कअ़ब बिन अशरफ़ को जो आपने क़त्ल करवाया वो भी अपनी ज़ात के लिये न था बल्कि उन लोगों ने अल्लाह के दीन में ख़लल डालना, लोगों को बहकाना और फ़ित्ना व फ़साद भड़काना अपना रात–दिन का खेल बना लिया था। इसलिये क़यामे अमन के वास्ते उन फ़साद पसन्दों को ख़त्म कराया गया। वरना ये बात रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह है कि अगर आप अपनी ज़ात के लिये बदला लेते तो उस यहूदन को ज़रूर क़त्ल कराते जिसने दा'वत देकर बकरी के गोश्त में ज़हर मिलाकर आपको क़त्ल करना चाहा था, या उस मुनाफ़िक़ को क़त्ल कराते जिसने माले ग़नीमत की तक़्सीम पर आपकी दयानत पर शक किया था मगर उन सबको मुआ़फ़ कर दिया गया। जान से प्यारे चचा हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) को बेदर्दी से क़त्ल करने वाला वह्शी बिन हर्ब जब आपके सामने आया तो आपको सख़्त तकलीफ़ होने के बावजूद न सिर्फ़ ये कि आपने उसे मुआ़फ़ी दी बल्कि उसका इस्लाम भी क़ुबूल किया और फ़तहे मक्का के दिन तो आपने जो कुछ किया उस पर आज तक दुनिया हैरान है।

3561. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि न तो नबी करीम (ﷺ) की हथेली से ज़्यादा नरम व नाज़ुक कोई हरीर व दीबाज मेरे हाथों ने कभी छुआ और न मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़ुश्बू या आपके पसीने से ज़्यादा बेहतर और पाकीज़ा कोई ख़ुश्बू या इत्र सूँघा। (राजेअ़ : 1191)

٣٥٦١- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَا مَسِسْتُ حَرِيْرًا وَلاَ دِيْبَاجًا أَلْيَنَ مِنْ كَفِّ النَّبِيِّ ﷺ، وَلاَ شَمِمْتُ رِيْحًا قَطُّ - أَوْ عَرْفًا قَطُّ - أَطْيَبَ مِنْ رِيْحِ - أَوْ عَرَقِ - النَّبِيِّ ﷺ)). [راجع: ١١٤١]

3562. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी उ़त्बा ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर्दा नशीन कुँवारी लड़कियों से भी

٣٥٦٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي عُتْبَةَ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَشَدَّ حَيَاءً مِنَ

ज़्यादा शर्मीले थे। (दीगर मक़ाम : 6102, 6119,)

الْعَذْرَاءِ فِي خِدْرِهَا)).
[طرفاه في : ٦١٠٢، ٦١١٩].

हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान और इब्ने मह्दी दोनों ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने इसी तरह बयान किया (उस ज़्यादती के साथ) कि जब आप किसी बात को बुरा समझते तो आपके चेहरे पर उसका अष़र ज़ाहिर हो जाता।

حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى وَابْنُ مَهْدِيٍّ قَالاَ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ مِثْلَهُ: ((وَإِذَا كَرِهَ شَيْئًا عُرِفَ فِي وَجْهِهِ)).

बज़्ज़ार की रिवायत में है कि आपका कभी किसी ने सतर नहीं देखा।

3563. मुझसे अ़ली बिन जअ़दि ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हे आ'मश ने, उन्हें अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ)ने कभी किसी खाने में ऐ़ब नहीं निकाला, अगर आपको मरग़ूब (पसन्द) होता तो खाते वरना छोड़ देते। (दीगर मक़ाम : 5409)

٣٥٦٣- حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَا عَابَ النَّبِيُّ ﷺ طَعَامًا قَطُّ، إِنِ اشْتَهَاهُ أَكَلَهُ، وَإِلاَّ تَرَكَهُ)). [طرفه في : ٥٤٠٩].

अल्लाह वालों की यही शान होती है, बरख़िलाफ़ उसके दुनिया परस्त, शिकम-परस्त (पेट-पुजारी) लोग खाना खाने बैठते हैं और हर लुक़्म में ऐ़ब निकालना शुरू कर देते हैं। अल्लाह पाक हर मुसलमान को उस्व-ए-रसूल पर अमल की तौफ़ीक़ बख़्शे। (आमीन)

3564. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे बक्र बिन मुज़र ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ़ ने, उनसे अअ़रज ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुहैना असदी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब सज्दा करते तो दोनों हाथ पेट से अलग रखते यहाँ तक कि आपकी बग़लें हम लोग देख लेते। इब्ने बुकैर ने बक्र से रिवायत की उसमें यूँ है, यहाँ तक कि आपकी बग़लों की सफ़ेदी दिखाई देती थी। (राजेअ़ : 390)

٣٥٦٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مُضَرَ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيْعَةَ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَالِكٍ ابْنِ بُحَيْنَةَ الأَسَدِيِّ قَالَ: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا سَجَدَ فَرَّجَ بَيْنَ يَدَيْهِ حَتَّى نَرَى إِبْطَيْهِ)). قَالَ: وَقَالَ ابْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا بَكْرٌ: ((بَيَاضَ إِبْطَيْهِ)). [راجع: ٣٩٠]

3565. हमसे अ़ब्दुल आला बिन हम्माद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद ने बयान किया उन्होंने क़तादा से, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दुआए इस्तिस्क़ा के सिवा और किसी दुआ में (ज़्यादा ऊँचे) हाथ नहीं उठाते थे। इस दुआ में आप इतने ऊँचे हाथ उठाते कि बग़ल मुबारक की सफ़ेदी दिखाई देती थीं।

٣٥٦٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُمْ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ لاَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي شَيْءٍ مِنْ دُعَائِهِ إِلاَّ فِي الاسْتِسْقَاءِ فَإِنَّهُ كَانَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ حَتَّى يُرَى بَيَاضُ إِبْطَيْهِ)).

(राजेअ : 1031) [راجع: ١٠٣١]

इस हदीष़ के लाने की ग़र्ज़ यहाँ ये है कि आपकी बग़लें बिलकुल सफ़ेद और स़ाफ़ थीं ।

3566. हमसे हसन बिन स़ब्बाह़ बज़्ज़ार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन साबिक़ ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग़्वल ने बयान किया, कहा कि मैंने औन बिन अबी जुहैफ़ा से सुना, वो अपने वालिद (अबू जुहैफ़ा रज़ि.) से नक़ल करते थे कि मैं सफ़र के इरादे से नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो आप अब्तह में (मुहस़्सब में) ख़ैमा के अंदर तशरीफ़ रखते थे। कड़ी दोपहर का वक़्त था, इतने में बिलाल (रज़ि.) ने बाहर निकलकर नमाज़ के लिये अज़ान दी और अंदर आ गये और ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) के वुज़ू का बचा हुआ पानी निकाला तो लोग उसे लेने के लिये टूट पड़े। फिर ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) ने एक नेज़ा निकाला और आँह़ज़रत (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए, गोया आपकी पिण्डलियों की चमक अब भी मेरी नज़रों के सामने है। बिलाल (रज़ि.) ने (सुतरा के लिये) नेज़ा गाड़ दिया। आपने ज़ुहर और अ़स्र की दो दो रकअ़त क़स्र नमाज़ पढ़ाई, गधे और औरतें आपके सामने से गुज़र रही थीं। (राजेअ़ : 187)

٣٥٦٦- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَوْنَ بْنَ أَبِي جُحَيْفَةَ ذَكَرَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((دُفِعْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ بِالأَبْطَحِ فِي قُبَّةٍ كَانَ بِالْهَاجِرَةِ، فَخَرَجَ بِلاَلٌ فَنَادَى بِالصَّلاَةِ، ثُمَّ دَخَلَ فَأَخْرَجَ فَضْلَ وَضُوءِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَوَقَعَ النَّاسُ عَلَيْهِ يَأْخُذُونَ مِنْهُ، ثُمَّ دَخَلَ فَأَخْرَجَ الْعَنَزَةَ، وَخَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى وَبِيصِ سَاقَيْهِ، فَرَكَزَ الْعَنَزَةَ ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ، وَالْعَصْرَ رَكْعَتَيْنِ، يَمُرُّ بَيْنَ يَدَيْهِ الْحِمَارُ وَالْمَرْأَةُ)). [راجع: ١٨٧]

बर्छी सुत्रा के त़ौर पर आपके आगे गाड़ दी गई थी। बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आपकी पिण्डलियाँ निहायत ख़ूबसूरत और चमकदार थीं।

3567. मुझसे हसन बिन स़ब्बाह़ बज़्ज़ार ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) इस क़द्र ठहर ठहरकर बातें करते कि अगर कोई शख़्स़ (आप ﷺ के अल्फ़ाज़) गिन लेना चाहता तो गिन सकता था। (दीगर मक़ाम : 3568)

٣٥٦٧- حَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ الصَّبَّاحِ الْبَزَّارُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يُحَدِّثُ حَدِيثًا لَوْ عَدَّهُ الْعَادُّ لأَحْصَاهُ)). [طرفه في : ٣٥٦٨].

3568. और लैष़ ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू फ़लाँ (ह़ज़रत अबू हुरैरह रज़ि.) पर तुम्हें ता'ज्जुब नहीं हुआ, वो आए और मेरे हुज्रे के एक कोने में बैठकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की अह़ादीष़ मुझे सुनाने के लिये बयान करने लगे। मैं उस वक़्त नमाज़ पढ़ रही थी। फिर वो मेरी नमाज़ ख़त्म होने से पहले ही उठकर चले

٣٥٦٨- وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّهُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ: ((أَلاَ يُعْجِبُكَ أَبُو فُلاَنٍ جَاءَ فَجَلَسَ إِلَى جَانِبِ حُجْرَتِي يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ يُسْمِعُنِي ذَلِكَ، وَكُنْتُ أُسَبِّحُ، فَقَامَ قَبْلَ

أَنْ أَقْضِيَ سُبْحَتِي، وَلَوْ أَدْرَكْتُهُ لَرَدَدْتُ عَلَيْهِ، إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمْ يَكُنْ يَسْرُدُ الْحَدِيْثَ كَسَرْدِكُمْ)). [راجع: ٣٥٦٧]

गये। अगर वो मुझे मिल जाते तो मै उनकी ख़बर लेती कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हारी तरह यूँ जल्दी जल्दी बातें नहीं किया करते थे। (राजेअ : 3567)

हज़रत आइशा (रज़ि.) ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की तेज़ बयानी और उज्लते लिसानी (जल्दी कहने) पर इंकार किया था और इशारा ये था कि आँहज़रत (ﷺ) की बातचीत बहुत आहिस्ता आहिस्ता हुआ करती थी कि सुनने वाला आपके अल्फ़ाज़ को गिन सकता था। गोया इसी तरह आहिस्ता आहिस्ता कलाम करना और क़ुर्आन व हदीष सुनाना चाहिये। लेकिन मज्मअ-ए-आम और ख़ुत्बा में ये क़ैद नहीं लगाई जा सकती क्योंकि सहीह अहादीष से षाबित है कि जब आँहज़रत (ﷺ) तौहीद का बयान करते या अज़ाबे इलाही से डराते तो आपकी आवाज़ बहुत बढ़ जाती और ग़ुस्सा ज़्यादा हो जाता वग़ैरह। यहाँ ये नतीजा निकालना कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की रिवायते हदीष पर ए'तिराज़ किया, ये बिलकुल बातिल है और **तौजीहुल्क़ौलि बिमा ला यर्ज़ा बिहिल्काइलु** मे दाख़िल है या'नी किसी के क़ौल की ऐसी ता'बीर करना जो ख़ुद कहने वाले के ज़हन में भी न हो।

٢٤- بَابُ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ تَنَامُ عَيْنُهُ وَلاَ يَنَامُ قَلْبُهُ

बाब 24 : नबी करीम (ﷺ) की आँखें ज़ाहिर में सोती थीं लेकिन दिल ग़ाफ़िल नहीं होता था

رَوَاهُ سَعِيدُ بْنُ مِيْنَاءَ عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

उसकी रिवायत सईद बिन मीनाअ ने जाबिर (रज़ि.) से की है और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

٣٥٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنِ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ سَعِيْدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا : كَيْفَ كَانَ صَلاَةُ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي رَمَضَانَ؟ قَالَتْ : مَا كَانَ يَزِيْدُ فِي رَمَضَانَ وَلاَ غَيْرِهِ عَلَى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً : يُصَلِّي أَرْبَعَ رَكْعَاتٍ فَلاَ تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ، ثُمَّ يُصَلِّي أَرْبَعًا فَلاَ تَسْأَلْ عَنْ حُسْنِهِنَّ وَطُولِهِنَّ، ثُمَّ يُصَلِّي ثَلاَثًا. فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ تَنَامُ قَبْلَ أَنْ تُوتِرَ؟ قَالَ: ((تَنَامُ عَيْنِي وَلاَ يَنَامُ قَلْبِي)). [راجع: ١١٤٧]

3569. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे सईद मक़्बरी ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उन्होंने आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रमज़ान शरीफ़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ (तहज्जुद या तरावीह) की क्या कैफ़ियत होती थी? उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) रमज़ान मुबारक या दूसरे किसी भी महीने में ग्यारह रकआत से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे (उन ही को तहज्जुद कहो या तरावीह) पहले आप चार रकअत पढ़ते, वो रकअतें कितनी लम्बी होती थीं, कितनी उसमें ख़ूबी होती थी उसके बारे में न पूछो। फिर आप चार रकआत पढ़ते। ये चारों भी कितनी लम्बी होतीं और उनमें कितनी ख़ूबी होती। उसके बारे में न पूछो। फिर आप तीन रकअत वित्र पढ़ते। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप वित्र पढ़ने से पहले क्यूँ सो जाते हैं? आपने फ़र्माया मेरी आँखें सोती हैं लेकिन मेरा दिल बेदार रहता है। (राजेअ : 1147)

तश्रीह : रमज़ान शरीफ़ में इसी नमाज़ को तरावीह के नाम से मौसूम किया गया और ग़ैर रमज़ान में ये नमाज़ तहज्जुद के नाम से मशहूर हुई। उनको अलग अलग क़रार देना सहीह नहीं है। आप रमज़ान हो या ग़ैर रमज़ान तरावीह या

तहज्जुद ग्यारह रकआत से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे जिनमें आठ रकअत नफ़्ल नमाज़ और तीन वित्र शामिल होते थे। उस स़ाफ़ और स़रीह़ ह़दीष़ के होते हुए आठ रकआत तरावीह़ को ख़िलाफ़े सुन्नत कहने वाले लोगों को अल्लाह नेक समझ अता फ़र्माए कि वो एक ष़ाबितशुदा सुन्नत के मुंकिरीन बनकर फ़साद बरपा करने से बाज़ रहें, आमीन! बाब और ह़दीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है।

3570. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई (अ़ब्दुल ह़मीद) ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे शरीक बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने, उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, वो मस्जिदे ह़राम से नबी करीम (ﷺ) की मेअ़राज का वाक़िया बयान कर रहे थे कि (मेअ़राज से पहले) तीन फ़रिश्ते आए। ये आप पर वह्य नाज़िल होने से भी पहले का वाक़िया है, उस वक़्त आप मस्जिदे ह़राम में (दो आदमियों ह़ज़रत ह़म्ज़ा और जा'फ़र बिन अबी त़ालिब के दरम्यान) सो रहे थे। एक फ़रिश्ते ने पूछा, वो कौन हैं? (जिनको ले जाने का हुक्म है) दूसरे ने कहा कि वो दरम्यान वाले हैं। वही सबसे बेहतर हैं, तीसरे ने कहा कि फिर जो सबसे बेहतरीन हैं उन्हें साथ ले चलो। उस रात स़िर्फ़ इतना ही वाक़िया होकर रह गया। फिर आपने उन्हें नहीं देखा लेकिन फ़रिश्ते एक और रात में आए। आप दिल की निगाह से देखते थे और आपकी आँखें सोती थीं पर दिल नहीं सोता था और तमाम अंबिया की यही कैफ़ियत होती है कि जब उनकी आँखें सोती हैं तो दिल उस वक़्त भी बेदार होता है। ग़र्ज़ कि फिर जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) ने आपको अपने साथ लिया और आसमान पर चढ़ा ले गए। (दीगर मक़ाम : 4969, 5610,6571, 5717)

٣٥٧٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ شَرِيكِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ: ((سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُنَا عَنْ لَيْلَةِ أُسْرِيَ بِالنَّبِيِّ ﷺ مِنْ مَسْجِدِ الْكَعْبَةِ: جَاءَهُ ثَلاَثَةُ نَفَرٍ قَبْلَ أَنْ يُوحَى إِلَيْهِ - وَهُوَ نَائِمٌ فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ- فَقَالَ أَوَّلُهُمْ - أَيُّهُمْ هُوَ؟ فَقَالَ أَوْسَطُهُمْ: هُوَ خَيْرُهُمْ. وَقَالَ آخِرُهُمْ: خُذُوا خَيْرَهُمْ فَكَانَتْ تِلْكَ. فَلَمْ يَرَهُمْ حَتَّى جَاؤُوا لَيْلَةً أُخْرَى فِيمَا يَرَى قَلْبُهُ، وَالنَّبِيُّ ﷺ نَائِمَةٌ عَيْنَاهُ وَلاَ يَنَامُ قَلْبُهُ، وَكَذَلِكَ الأَنْبِيَاءُ تَنَامُ أَعْيُنُهُمْ وَلاَ تَنَامُ قُلُوبُهُمْ. فَتَوَلاَّهُ جِبْرِيلُ، ثُمَّ عَرَجَ بِهِ إِلَى السَّمَاءِ)). [أطرافه في : ٤٩٦٤، ٥٦١٠، ٦٥٨١، ٥٧١٧].

तश्रीह : उसके बाद वही क़िस़्स़ा गुज़रा जो मेअ़राज वाली ह़दीष़ में ऊपर गुज़र चुका है। इस रिवायत से उन लोगों ने दलील ली है जो कहते हैं कि मेअ़राज सोते में हुआ था। मगर ये रिवायत शाज़ है, स़िर्फ़ शरीक ने ये रिवायत किया है कि आप उस वक़्त सो रहे थे। अ़ब्दुल ह़क़्क़ ने कहा कि शरीक की रिवायत मुंफ़रिद व मज्हूल है और अकष़र अहले ह़दीष़ का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि मेअ़राज बेदारी में हुआ था (वह़ीदी)। मुतर्जिम कहता है कि इस ह़दीष़ से मेअ़राजे जिस्मानी का इंकार ष़ाबित करना कजफ़हमी है। रिवायत के आख़िर में स़ाफ़ मौजूद है, लम अ़रजा बिही इलस्समाई या'नी जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) आपको जिस्मानी त़ौर से अपने साथ लेकर आसमान की त़रफ़ चढ़े। हाँ उस वाक़िया का आग़ाज़ ऐसे वक़्त में हुआ कि आप मस्जिदे ह़राम में सो रहे थे। बहरहाल मेअ़राजे जिस्मानी ह़क़ है जिसके क़ुर्आन व ह़दीष़ में बहुत से दलाइल हैं। उसका इंकार करना सूरज के वजूद का इंकार करना है जबकि वो निस्फ़ुन्नहार में चमक रहा हो।

बाब 25 : आँह़ज़रत (ﷺ) के मुअ़जज़ों या'नी नुबुव्वत की निशानियों का बयान

٢٥- بَابُ عَلاَمَاتِ النُّبُوَّةِ فِي الإِسْلاَمِ

तश्रीह : मुअजिज़ाते नबवी की बहुत तवील फ़ेहरिस्त है। उलमा ने उस उन्वान पर मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं। उस बाब के ज़ेल में इमाम बुख़ारी (रह) बहुत सी अहादीष लाए हैं और हर हदीष में कुछ न कुछ मुअजज़ाते नबवी का बयान है। कुछ ख़र्क़े आदात (आदात के विपरीत) हैं और कुछ पेशीनगोइयाँ हैं जो बाद के ज़मानों में हर्फ़ ब हर्फ़ ठीक षाबित होती चली आ रही हैं। मक़ामे रिसालत को समझने के लिये इस बाब का ग़ौरो ख़ौज़ के साथ मुतालआ करना ज़रूरी है।

3571. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे सलम बिन ज़ुरैर ने बयान किया, उन्होंने अबू रजाअ से सुना कि हमसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने बयान किया कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे, रात भर सब लोग चलते रहे जब सुबह का वक़्त क़रीब हुआ तो पड़ाव किया (चूँकि हम थके हुए थे) इसलिये सब लोग इतनी गहरी नींद सो गये कि सूरज पूरी तरह निकल आया। सबसे पहले अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) जागे। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) को, जब आप सोते होते तो जगाते नहीं थे। यहाँ तक कि आप ख़ुद ही जागते, फिर उमर (रज़ि.) भी जाग गये। आख़िर अबूबक्र (रज़ि.) आपके सरे मुबारक के क़रीब बैठ गये और बुलन्द आवाज़ से अल्लाहु अकबर कहने लगे। उससे आँहज़रत (ﷺ) भी जाग गये और वहाँ से कूच का हुक्म दे दिया। (फिर कुछ दूरी पर तशरीफ़ लाए) और यहाँ आप उतरे और हमें सुबह की नमाज़ पढ़ाई, एक शख़्स हमसे दूर कोने में बैठा रहा। उसने हमारे साथ नमाज़ नहीं पढ़ी। आँहज़रत जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आपने उससे फ़र्माया कि ऐ फ़लाँ! हमारे साथ नमाज़ पढ़ने से तुम्हें किस चीज़ ने रोका? उसने अर्ज़ किया कि मुझे ग़ुस्ल की हाजत हो गई है। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे हुक्म दिया कि पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो (फिर उसने भी तयम्मुम के बाद) नमाज़ पढ़ी। हज़रत इमरान (रज़ि.) कहते हैं कि फिर आँहुज़ूर (ﷺ) ने मुझे चन्द सवारों के साथ आगे भेज दिया। (ताकि पानी तलाश करें क्योंकि) हमें सख़्त प्यास लगी हुई थी। अब हम इसी हालत में चल रहे थे कि हमें एक औरत मिली जो दो मश्कों के दरम्यान (सवारी पर) अपने पाँव लटकाए हुए जा रही थी हमने उससे कहा कि पानी कहाँ मिलता है? उसने जवाब दिया कि यहाँ पानी नहीं है। हमने उससे पूछा कि तुम्हारे घर से पानी कितने फ़ासले पर है? उसने जवाब दिया कि एक दिन एक रात की दूरी है। हमने उससे कहा कि अच्छा तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में चलो। वो बोली रसूलुल्लाह (ﷺ) के क्या मा'नी हैं? इमरान (रज़ि.) कहते

٣٥٧١- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا سَلْمُ بْنُ زُرَيْرٍ سَمِعْتُ أَبَا رَجَاءٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ أَنَّهُمْ كَانُوا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَفِي مَسِيْرٍ فَأَدْلَجُوا لَيْلَتَهُمْ، حَتَّى إِذَا كَانَ وَجْهُ الصُّبْحِ عَرَّسُوا، فَغَلَبَتْهُمْ أَعْيُنُهُمْ حَتَّى ارْتَفَعَتِ الشَّمْسُ، فَكَانَ أَوَّلَ مَنِ اسْتَيْقَظَ مِنْ مَنَامِهِ أَبُو بَكْرٍ - وَكَانَ لاَ يُوقَظُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ مَنَامِهِ حَتَّى يَسْتَيْقِظَ - فَاسْتَيْقَظَ عُمَرُ، فَقَعَدَ أَبُوبَكْرٍ عِنْدَ رَأْسِهِ فَجَعَلَ يُكَبِّرُ وَيَرْفَعُ صَوْتَهُ حَتَّى اسْتَيْقَظَ النَّبِيُّصَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَزَلَ وَصَلَّى بِنَا الْغَدَاةَ، فَاعْتَزَلَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ لَمْ يُصَلِّ مَعَنَا، فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: ((يَا فُلاَنُ مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تُصَلِّيَ مَعَنَا؟)) قَالَ: أَصَابَتْنِي جَنَابَةٌ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَتَيَمَّمَ بِالصَّعِيْدِ ثُمَّ صَلَّى، وَجَعَلَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي رَكُوبٍ بَيْنَ يَدَيْهِ وَقَدْ عَطِشْنَا عَطَشًا شَدِيْدًا، فَبَيْنَمَا نَحْنُ نَسِيْرُ إِذَا نَحْنُ بِامْرَأَةٍ سَادِلَةٍ رِجْلَيْهَا بَيْنَ مَزَادَتَيْنِ، فَقُلْنَا لَهَا: أَيْنَ الْمَاءُ؟ فَقَالَتْ: إِنَّهُ لاَ مَاءَ. قُلْنَا: كَمْ

بَيْنَ أَهْلِكِ وَبَيْنَ الْمَاءِ؟ قَالَتْ: يَوْمٌ وَلَيْلَةٌ. فَقُلْنَا: انْطَلِقِيْ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قَالَتْ: وَمَا رَسُولُ اللهِ؟ فَلَمْ نُمَلِّكْهَا مِنْ أَمْرِهَا حَتَّى اسْتَقْبَلْنَا بِهَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَحَدَّثَتْهُ بِمِثْلِ الَّذِي حَدَّثَتْنَا، غَيْرَ أَنَّهَا حَدَّثَتْهُ أَنَّهَا مُؤْتِمَةٌ، فَأَمَرَ بِمَزَادَتَيْهَا فَمَسَحَ فِي الْعَزْلاَوَيْنِ، فَشَرِبْنَا عِطَاشًا أَرْبَعِيْنَ رَجُلاً حَتَّى رَوِيْنَا، فَمَلأْنَا كُلَّ قِرْبَةٍ مَعَنَا وَإِدَاوَةٍ غَيْرَ أَنَّهُ لَمْ نَسْقِ بَعِيْرًا، وَهِيَ تَكَادُ تَنِضُّ مِنَ الْمِلْءِ. ثُمَّ قَالَ : هَاتُوا مَا عِنْدَكُمْ، فَجُمِعَ لَهَا مِنَ الْكِسَرِ وَالتَّمْرِ حَتَّى أَتَتْ أَهْلَهَا فَقَالَتْ : لَقِيْتُ أَسْحَرَ النَّاسِ، أَوْ هُوَ نَبِيٌّ كَمَا زَعَمُوا؟. فَهَدَى اللهُ ذَاكَ الصِّرْمَ بِتِلْكَ الْمَرْأَةِ، فَأَسْلَمَتْ وَأَسْلَمُوا)).

[راجع: ٣٤٤]

हैं आख़िर हम उसे आँहुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में लाए। उसने आपसे भी वही कहा जो हमसे कह चुकी थी। हाँ इतना और कहा कि वो यतीम बच्चों की माँ है (इसलिये वाजिबुर्रहम है) आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से उसके दोनों मशकीज़ों को उतारा गया और आपने उनके दहानों पर दस्ते मुबारक फेरा। हम चालीस प्यासे आदमियों ने उसमे से ख़ूब सैराब होकर पिया और अपने तमाम मशकीज़े और बाल्टियाँ भी भर लीं सिर्फ़ हमने ऊँटों को पानी नहीं पिलाया, उसके बावजूद उसकी मश्कें पानी से इतनी भरी हुई थीं कि मा'लूम होता था अभी बह पड़ेंगी। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो कुछ तुम्हारे पास है (खाने की चीज़ों में से हो) मेरे पास लाओ। चुनाँचे उस औरत के सामने टुकड़े और खजूरें लाकर जमा कर दी गईं। फिर जब वो अपने क़बीले में आई तो अपने आदमियों से उसने कहा कि आज मैं सबसे बड़े जादूगर से मिलकर आई हूँ या फिर जैसा कि (उसके मानने वाले) लोग कहते हैं, वो वाक़ई नबी है। आख़िर अल्लाह तआला ने उसके क़बीले को उसी औरत की वजह से हिदायत दी। वो ख़ुद भी इस्लाम लाई और तमाम क़बीले वालों ने भी इस्लाम कुबूल कर लिया।

(राजेअ: 344)

तश्रीह: इस क़िस्से के बयान में इख़्तिलाफ़ है। मुस्लिम मे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से मरवी है कि ये वाक़िया ख़ैबर से निकलने के बाद पेश आया और अबू दाऊद में इब्ने मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि ये वाक़िया उस वक़्त हुआ जब रसूले करीम (ﷺ) हुदैबिया से लौटे थे और मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि ये तबूक़ के सफ़र का वाक़िया है और अबू दाऊद में एक रिवायत की रू से इस वाक़िये का ता'ल्लुक़ ग़ज़्व-ए-ज़ैशुल उमरा से मा'लूम होता है। एक जमाअते मुअर्रिख़ीन ने कहा है कि उस एक नौइयत का वाक़िया मुख़्तलिफ़ औक़ात में पेश आया है यही उन रिवायात में तत्बीक़ है (तौशीह).... यहाँ आपकी दुआ से पानी में बरकत हो गई। यही मुअजज़ा बाब से मुताबक़त की वजह है।

٣٥٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أُتِيَ النَّبِيُّ

3572. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी अरूबा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक बर्तन हाज़िर

किया गया (पानी का) आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त (मदीना के नज़दीक) मक़ामे ज़वरा में तशरीफ़ रखते थे। आपने उस बर्तन मे हाथ रखा तो उसमें से पानी आपकी उँगलियों के दरम्यान में से फूटने लगा और उसी पानी से पूरी जमाअ़त ने वुज़ू किया। क़तादा ने कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा, आप लोग कितनी ता'दाद में थे? उन्होंने फ़र्माया कि तीन सौ होंगे या तीन सौ के क़रीब होंगे।

(राजेअ़ : 169)

صلّى الله عليه وسلّم بإناء وهو بالزوراء، فوضع يده في الإناء فجعل الماء ينبع من بين أصابعه، فتوضأ القوم. قال قتادة قلت لأنس : كم كنتم؟ قال : ثلاثمائة، أو زهاء ثلاثمائة)).

[راجع: ١٦٩]

3573. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा, अ़स्र की नमाज़ का वक़्त हो गया था और लोग वुज़ू के पानी की तलाश कर रहे थे लेकिन पानी का कहीं पता नहीं था, फिर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में (बर्तन के अंदर) वुज़ू का पानी लाया गया आपने अपना हाथ उस बर्तन में रखा और लोगों से फ़र्माया कि इसी पानी से वुज़ू करें। मैंने देखा कि पानी आपकी उँगलियों के नीचे से उबल रहा था चुनाँचे लोगों ने वुज़ू किया और हर शख़्स ने वुज़ू कर लिया। (राजेअ़ : 169)

٣٥٧٣- حدثني عبد الله بن مسلمة عن مالك عن إسحاق بن عبد الله بن أبي طلحة عن أنس بن مالك أنه قال: ((رأيت رسول الله ﷺ وحانت صلاة العصر، فالتمس الوضوء فلم يجدوه، فأتي رسول الله ﷺ بوضوء فوضع رسول الله ﷺ يده في ذلك الإناء فأمر الناس أن يتوضؤوا منه، فرأيت الماء ينبع من تحت أصابعه، فتوضأ الناس حتى توضؤوا من عند آخرهم)).[راجع:١٦٩]

3574. हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मुबारक ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ज़म बिन मेह्रान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने इमाम ह़सन बस़री से सुना, उन्होंने कहा कि हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) किसी सफ़र में थे और आपके साथ कुछ स़हाबा किराम भी थे। चलते चलते नमाज़ का वक़्त हो गया तो वुज़ू के लिये कहीं पानी नहीं मिला। आख़िर जमाअ़त में से एक स़ाहब उठे और एक बड़े से (प्याले में थोड़ा सा पानी लेकर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए। नबी करीम (ﷺ) ने उसे लिया और उसके पानी से वुज़ू किया। फिर आपने अपना हाथ प्याले पर रखा और फ़र्माया कि आओ वुज़ू करो। पूरी जमाअ़त ने वुज़ू किया और तमाम आदाब व सुनन के साथ पूरी त़रह कर लिया। ता'दाद में सत्तर या अस्सी के लगभग थे।

٣٥٧٤- حدثنا عبد الرحمن بن مبارك حدثنا حزم قال: سمعت الحسن قال: حدثنا أنس بن مالك رضي الله عنه قال: ((خرج النبي ﷺ في بعض مخارجه ومعه ناس من أصحابه، فانطلقوا يسيرون، فحضرت الصلاة فلم يجدوا ماء يتوضؤون. فانطلق رجل من القوم فجاء بقدح من ماء يسير، فأخذه النبي ﷺ فتوضأ، ثم مد أصابعه الأربع على القدح، ثم قال : قوموا فتوضؤوا، فتوضأ القوم حتى بلغوا فيما يريدون من

الوَضُوءِ، وَكَانُوا سَبْعِينَ أَوْ نَحْوَهُ)).

[راجع: ١٦٩]

(राजेअ : 169)

٣٥٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ يَزِيدَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((حَضَرَتِ الصَّلاَةُ، فَقَامَ مَنْ كَانَ قَرِيبُ الدَّارِ مِنَ الْمَسْجِدِ يَتَوَضَّأُ، وَبَقِيَ قَوْمٌ. فَأُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِمِخْضَبٍ مِنْ حِجَارَةٍ فِيهِ مَاءٌ، فَوَضَعَ كَفَّهُ فَصَغُرَ الْمِخْضَبُ أَنْ يَبْسُطَ فِيهِ كَفَّهُ، فَضَمَّ أَصَابِعَهُ فَوَضَعَهَا فِي الْمِخْضَبِ، فَتَوَضَّأَ الْقَوْمُ كُلُّهُمْ جَمِيعًا. قُلْتُ: كَمْ كَانُوا: قَالَ : ثَمَانُونَ رَجُلاً)). [راجع: ١٦٩]

3575. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने यज़ीद बिन हारून से सुना, कहा कि मुझको हुमैद ने ख़बर दी और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नमाज़ का वक़्त हो चुका था। मस्जिदे नबवी से जिनके घर क़रीब थे उन्होंने तो वुज़ू कर लिया लेकिन बहुत से लोग बाक़ी रह गये। उसके बाद नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पत्थर की बनी हुई एक लगन लाई गई, उसमें पानी था। आपने अपना हाथ उस पर रखा लेकिन उसका मुँह इतना तंग कि आप उसके अंदर अपना हाथ फैलाकर नहीं रख सकते थे चुनाँचे आपने उँगलियाँ मिला लीं और लगन के अंदर हाथ को डाल दिया फिर (उसी पानी से) जितने लोग बाक़ी रह गये थे सबने वुज़ू किया। मैंने पूछा कि आप हज़रात की ता'दाद क्या थी? अनस (रज़ि.) ने बताया कि अस्सी आदमी थे। (राजेअ : 169)

ये चार हदीषें ह़ज़रत अनस (रज़ि.) की इमाम बुख़ारी (रह) ने बयान की हैं और हर एक में एक अलैहदा वाक़िया का ज़िक्र है। अब उनमें जमा करने और इख़्तिलाफ़ दूर करने के लिये तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं है (वहीदी)। चारों अहादीष़ में आपके मुअजज़ा का तज़्किरा है। इसीलिये इस बाब के ज़ेल उनको लाया गया।

٣٥٧٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((عَطِشَ النَّاسُ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ وَالنَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ يَدَيْهِ رِكْوَةٌ، فَتَوَضَّأَ فَجَهِشَ النَّاسُ نَحْوَهُ فَقَالَ: ((مَا لَكُمْ؟)) قَالُوا: لَيْسَ عِنْدَنَا مَاءٌ نَتَوَضَّأُ وَلاَ نَشْرَبُ إِلاَّ مَا بَيْنَ يَدَيْكَ. فَوَضَعَ يَدَهُ فِي الرِّكْوَةِ، فَجَعَلَ الْمَاءُ يَفُورُ بَيْنَ أَصَابِعِهِ كَأَمْثَالِ الْعُيُونِ. فَشَرِبْنَا وَتَوَضَّأْنَا. قُلْتُ : ((كَمْ كُنْتُمْ؟)) قَالَ: لَوْ كُنَّا مِائَةَ أَلْفٍ لَكَفَانَا، كُنَّا خَمْسَ عَشْرَةَ مِائَةً)).

3576. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे हुसैन ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अबी अल जअ़दि और उनसे ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि सुलह हुदेबिया के दिन लोगों को प्यास लगी हुई थी नबी करीम (ﷺ) के सामने एक छागल रखा हुआ था आपने उससे वुज़ू किया। इतने में लोग आपके पास गये आपने फ़र्माया क्या बात है? लोगों ने कहा कि जो पानी आपके सामने है, उस पानी के सिवा न तो हमारे पास वुज़ू के लिये कोई दूसरा पानी है और न पीने के लिये। आपने अपना हाथ छागल में रख दिया और पानी आपकी उँगलियों के दरम्यान मे से चश्मे की तरह फूटने लगा और हम सब लोगों ने उस पानी को पिया भी और उससे वुज़ू भी किया। मैंने पूछा आप लोग कितनी ता'दाद में थे? कहा कि अगर हम एक लाख भी होते तो वो पानी काफ़ी होता। वैसे हमारी ता'दाद उस वक़्त पन्द्रह सौ थी।

(दीगर मक़ाम : 4152, 4153, 4154, 4840, 5639)

[أطرافه في : ٤١٥٢، ٤١٥٣، ٤١٥٤، ٤٨٤٠، ٥٦٣٩].

क्योंकि आपकी उँगलियों से अल्लाह तआला ने चश्मा जारी कर दिया, फिर पानी की क्या कमी थी। ये आपका मुअजज़ा था। (ﷺ)

3577. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि सुलहे हुदैबिया के दिन हम चौदह सौ की ता'दाद में थे। हुदैबिया एक कुँए का नाम है हमने उससे इतना पानी खींचा कि उसमें एक क़तरा भी बाक़ी न रहा (जब रसूले करीम ﷺ) को उसकी ख़बर मा'लूम हुई तो आप तशरीफ़ लाए) और कुँए के किनारे बैठकर पानी की दुआ की और उस पानी से कुल्ली की और कुल्ली का पानी कुँए में डाल दिया। अभी थोड़ी देर भी नहीं हुई थी कुँआ फिर पानी से भर गया, हम भी उससे ख़ूब सैर हुए और हमारे ऊँट भी सैराब हो गये, या पानी पीकर लौटे। (दीगर मक़ाम : 4150, 4151)

٣٥٧٧- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيْلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: ((كُنَّا يَومَ الْحُدَيْبِيَةِ أَرْبَعَ عَشْرَةَ مِائَةً، وَالْحُدَيْبِيَةُ بِئْرٌ، فَنَزَحْنَاهَا حَتَّى لَمْ نَتْرُكْ فِيْهَا قَطْرَةً، فَجَلَسَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى شَفِيْرِ الْبِئْرِ، فَدَعَا بِمَاءٍ فَمَضْمَضَ وَمَجَّ فِي الْبِئْرِ، فَمَكَثْنَا غَيْرَ بَعِيْدٍ، ثُمَّ اسْتَقَيْنَا حَتَّى رَوِيْنَا وَرَوَتْ - أَوْ صَدَرَتْ - رَكَائِبُنَا)). [طرفاه في : ٤١٥٠، ٤١٥١].

रावी को शक है कि रवत रकाइबुना कहा या सदरत रकाबुना मफ़्हूम दोनों का एक ही है। ये भी आँहज़रत (ﷺ) का मुअजज़ा था, इसीलिये इस बाब के ज़ेल इसे ज़िक्र किया गया।

3578. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि अबू तलहा (रज़ि.) ने (मेरी वालिदा) उम्मे सुलैम (रज़ि.) से कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की आवाज़ सुनी तो आपकी आवाज़ में बहुत ज़ुअफ़ मा'लूम हुआ। मेरा ख़्याल है कि आप बहुत भूखे हैं क्या तुम्हारे पास कुछ खाना है? उन्होंने कहा जी हाँ। चुनाँचे उन्होंने जौ की चन्द रोटियाँ निकालीं फिर अपनी ओढ़नी निकाली और उसमें रोटियों को लपेटकर मेरे हाथ में छुपा दिया और उस ओढ़नी का दूसरा हिस्सा मेरे बदन पर बाँध दिया, उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में मुझे भेजा। मैं जो गया तो आप मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे, आपके साथ बहुत से सहाबा भी बैठे हुए थे। मैं आपके पास खड़ा हो गया तो आपने फ़र्माया क्या अबू तलहा ने तुम्हें भेजा है? मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ, आपने दरयाफ़्त

٣٥٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ ((قَالَ أَبُو طَلْحَةَ لأُمِّ سُلَيْمٍ: لَقَدْ سَمِعْتُ صَوتَ رَسُولِ اللهِ ﷺ ضَعِيْفًا أَعْرِفُ فِيْهِ الْجُوعَ، فَهَلْ عِنْدَكِ مِنْ شَيْءٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ. فَأَخْرَجَتْ أَقْرَاصًا مِنْ شَعِيْرٍ، ثُمَّ أَخْرَجَتْ خِمَارًا لَهَا فَلَفَّتِ الْخُبْزَ بِبَعْضِهِ، ثُمَّ دَسَّتْهُ تَحْتَ يَدِي وَلاَثَتْنِي بِبَعْضِهِ ثُمَّ أَرْسَلَتْنِي إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، قَالَ: فَذَهَبْتُ بِهِ فَوَجَدْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ وَمَعَهُ النَّاسُ، فَقُمْتُ عَلَيْهِمْ،

किया, कुछ खाना देकर? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ, जो सहाबा आपके साथ उस वक़्त मौजूद थे, उन सबसे आपने फ़र्माया कि चलो उठो। आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाने लगे और मैं आपके आगे आगे लपक रहा था और अबू तलहा (रज़ि.) के घर पहुँचकर मैंने उन्हें ख़बर दी। अबू तलहा (रज़ि.) बोले, उम्मे सुलैम! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तो बहुत से लोगों को साथ लाए हैं हमारे पास इतना खाना कहाँ है कि सबको खिलाया जा सके? उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़्यादा जानते हैं (हम फ़िक्र क्यूँकर करे?) ख़ैर अबू तलहा आगे बढ़कर आँहज़रत (ﷺ) से मिले। अब रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ वो भी चल रहे थे (घर पहुँचकर) आपने फ़र्माया, उम्मे सुलैम! तुम्हारे पास जो कुछ हो यहाँ लाओ। उम्मे सुलैम ने वही रोटी लाकर आपके सामने रख दी, फिर आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से रोटियों का चूरा कर दिया गया। उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने कुप्पी निचोड़कर उस पर कुछ घी डाल दिया और इस तरह सालन हो गया। आपने उसके बाद उस पर दुआ की जो कुछ भी अल्लाह तआला ने चाहा। फिर फ़र्माया दस आदमियों को बुला लाओ। उन्होंने ऐसा ही किया। उन सबने रोटी पेट भरकर खाई और जब ये लोग बाहर गये तो आपने फ़र्माया कि फिर दस आदमियों को बुला लो। चुनाँचे दस आदमियों को बुलाया गया, उन्होंने भी पेट भरकर खाया। जब ये लोग बाहर गये तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर दस ही आदमियों को अंदर बुला लो। उन्होंने ऐसा ही किया और उन्होंने भी पेट भरकर खाया। जब वो बाहर गये तो आपने फ़र्माया कि फिर दस आदमियों को दा'वत दे दो। इस तरह सब लोगों ने पेट भरकर खाना खाया। उन लोगों की ता'दाद सत्तर या अस्सी थी।

فَقَالَ لِيْ رَسُولُ اللهِ: ((آرْسَلَكَ أَبُو طَلْحَةَ؟)) فَقُلْتُ: نَعَمْ قَالَ: ((بِطَعَامٍ؟)) قُلْتُ : نَعَمْ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِمَنْ مَعَهُ: ((قُومُوا)). فَانْطَلَقَ وَانْطَلَقْتُ بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ حَتَّى جِئْتُ أَبَا طَلْحَةَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ: يَا أُمَّ سُلَيْمٍ قَدْ جَاءَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالنَّاسِ، وَلَيْسَ عِنْدَنَا مَا نُطْعِمُهُمْ. فَقَالَتْ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. فَانْطَلَقَ أَبُو طَلْحَةَ حَتَّى لَقِيَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأَقْبَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُو طَلْحَةَ مَعَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَلُمِّي يَا أُمَّ سُلَيْمٍ مَا عِنْدَكِ، فَأَتَتْ بِذَلِكَ الْخُبْزِ، فَأَمَرَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَفُتَّ، وَعَصَرَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ عُكَّةً فَأَدَمَتْهُ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِيْهِ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُولَ. ثُمَّ قَالَ: ((ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ))، فَأَذِنَ لَهُمْ، فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا ثُمَّ خَرَجُوا، ثُمَّ قَالَ: ((ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ))، فَأَذِنَ لَهُمْ، فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا ثُمَّ خَرَجُوا. ثُمَّ قَالَ: ((ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ))، فَأَذِنَ لَهُمْ، فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا ثُمَّ خَرَجُوا. ثُمَّ قَالَ: ((ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ))، فَأَكَلَ الْقَوْمُ كُلُّهُمْ حَتَّى شَبِعُوا، وَالْقَوْمُ سَبْعُونَ أَوْ ثَمَانُونَ رَجُلاً)).

आप (ﷺ) ने उस खाने में दुआ-ए-बरकत फ़र्माई। इतने लोगों के खा लेने के बाद भी खाना बच रहा। आँहज़रत (ﷺ) ने अबू तलहा और उम्मे सुलैम (रज़ि.) के साथ उनके घर में खाना खाया और जो बच रहा वो पड़ौसियों को भेज दिया।

3579. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे अबू अहमद ज़ुबैरी ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान

٣٥٧٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيْلُ

عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: ((كُنَّا نَعُدُّ الآيَاتِ بَرَكَةً، وَأَنْتُمْ تَعُدُّونَهَا تَخْوِيْفًا، كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي سَفَرٍ فَقَلَّ الْمَاءُ، فَقَالَ : ((اطْلُبُوا فَضْلَةً مِنْ مَاءٍ)). فَجَاؤُوا بِإِنَاءٍ فِيْهِ مَاءٌ قَلِيْلٌ، فَأَدْخَلَ يَدَهُ فِي الإِنَاءِ ثُمَّ قَالَ: ((حَيَّ عَلَى الطَّهُورِ الْمُبَارَكِ، وَالْبَرَكَةُ مِنَ اللهِ))، فَلَقَدْ رَأَيْتُ الْمَاءَ يَنْبُعُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلَقَدْ كُنَّا نَسْمَعُ تَسْبِيْحَ الطَّعَامِ وَهُوَ يُؤْكَلُ)).

किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मुअजज़ात को हम तो बाअिष़े बरकत समझते थे और तुम लोग उससे डरते हो। एक मर्तबा हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे और पानी तक़रीबन ख़त्म हो गया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो कुछ भी पानी बच गया हो उसे तलाश करो। चुनाँचे लोग एक बर्तन में थोड़ा सा पानी लाए। आपने अपना हाथ बर्तन में डाल दिया और फ़र्माया, बरकत वाला पानी लो और बरकत तो अल्लाह तआला ही की तरफ़ से होती है। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की उँगलियों के दरम्यान में से पानी फ़व्वारे की तरह फूट रहा था और हम तो आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में खाते वक़्त खाने की तस्बीह सुनते थे।

तश्रीह : ये रसूलुल्लाह (ﷺ) का मुअजज़ा था कि सहाब-ए-किराम अपने कानों से खाने वग़ैरह में से तस्बीह की आवाज़ सुन लेते थे। वरना हर चीज़ अल्लाह पाक की तस्बीह बयान करती है। जैसा कि फ़र्माया, **व इन मिन शैइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व ला किंल्ला तफ़्क़हून तस्बीहहुम** (बनी इस्राईल : 44) हर चीज़ अल्लाह की तस्बीह बयान करती है लेकिन तुम उनकी तस्बीह को समझ नहीं पाते। इमाम बैहक़ी (रह) ने दलाइल में निकाला है कि आपने सात कंकरियाँ लीं, उन्होंने आपके हाथ में तस्बीह कही उनकी आवाज़ सुनाई दी। फिर आपने उनको अबूबक्र (रज़ि.) के हाथों में रख दिया। फिर उमर (रज़ि.) के हाथ में फिर उष़्मान (रज़ि.) के हाथ में, हर एक के हाथ तस्बीह कही। हाफ़िज़ ने कहा शक़्क़े क़मर तो कुर्आन और सहीह अहादीष़ से ष़ाबित है और लकड़ी का रोना भी सहीह हदीष़ से और कंकरियों की तस्बीह सिर्फ़ एक तरीक़ से जो ज़ईफ़ है। बहरहाल ये रसूले करीम (ﷺ) के मुअजज़ात हैं जो जिस तरह ष़ाबित हैं इसी तरह उन पर ईमान लाना ज़रूरी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के क़ौल का मतलब ये है कि तुम हर निशानी और ख़र्क़ आदत को तख़्वीफ़ समझते हो, ये तुम्हारी ग़लती है। अल्लाह की कुछ निशानियाँ तख़्वीफ़ भी होती हैं जैसे ग्रहण वग़ैरह और कुछ निशानियाँ जैसे खाने पीने में बरकत ये तो इनायत और फ़ज़्ले इलाही है।

٣٥٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَامِرٌ قَالَ: حَدَّثَنِي جَابِرٌ: ((أَنَّ أَبَاهُ تُوُفِّيَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَقُلْتُ: إِنَّ أَبِي تَرَكَ عَلَيْهِ دَيْنًا، وَلَيْسَ عِنْدِي إِلاَّ مَا يُخْرِجُ نَخْلُهُ، وَلاَ يَبْلُغُ مَا يُخْرِجُ سِنِيْنَ مَا عَلَيْهِ، فَانْطَلِقْ مَعِي لِكَيْ لاَ يُفْحِشَ عَلَيَّ الْغُرَمَاءُ. فَمَشَى حَوْلَ بَيْدَرٍ مِنْ بَيَادِرِ التَّمْرِ فَدَعَا، ثُمَّ آخَرَ، ثُمَّ جَلَسَ عَلَيْهِ فَقَالَ : ((انْزِعُوهُ))، فَأَوْفَاهُمْ

3580. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, कहा कि मुझसे आमिर ने, कहा कि मुझसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके वालिद (अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम, जंगे उहुद में) शहीद हो गये थे और वो मक़रूज़ थे। मैं रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मेरे वालिद अपने ऊपर क़र्ज़ छोड़ गये। इधर मेरे पास सिवा उस पैदावार के जो खजूरों से होगी और कुछ नहीं है और उसकी पैदावार से तो बरसों में क़र्ज़ अदा नहीं हो सकता, इसलिये आप मेरे साथ तशरीफ़ ले चलिये ताकि क़र्ज़ख़्वाह आपको देखकर ज़्यादा मुँह न फाड़ें। आप तशरीफ़ लाए (लेकिन वो नहीं माने) तो आप खजूर के जो ढेर लगे हुए थे पहले उनमें से एक के चारों तरफ़ चले और

दुआ की। उसी तरह ढेर के भी। फिर आप उस पर बैठ गये और फ़र्माया कि ख़जूरें निकालकर उन्हें दो। चुनाँचे सारा क़र्ज़ अदा हो गया और जितनी खजूरें क़र्ज़ में दी थीं उतनी ही बच भी गईं। (राजेअ : 2127)

الَّذِي لَهُمْ، وَبَقِيَ مِثْلُ مَا أَعْطَاهُمْ)).
[راجع: ۲۱۲۷]

आपकी दुआ-ए-मुबारक से खजूरों में बरकत हो गई। बाब और ह़दीष़ में यही मुत़ाबक़त की वजह है।

3581. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अबू उ़ष्मान नह्दी ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि सुफ़्फ़ा वाले मुहताज और ग़रीब लोग थे और नबी करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया था कि जिसके घर में दो आदमियो का खाना हो तो वो एक तीसरे को भी अपने साथ लेता जाए और जिसके घर चार आदमियों का खाना हो वो पाँचवां आदमी अपने साथ लेता जाए या छठे को भी या आपने उसी त़रह कुछ फ़र्माया (रावी को पाँच और छः में शक है) ख़ैर तो अबूबक्र (रज़ि.) तीन अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को अपने साथ लाए और आँहज़रत (ﷺ) अपने दस अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को ले गये और घर में मैं था और मेरे माँ–बाप थे, अबू उ़ष्मान ने कहा मुझको याद नहीं अ़ब्दुर्रह़मान ने ये भी कहा, और मेरी औ़रत और ख़ादिम जो मेरे और अबूबक्र (रज़ि.) दोनों के घरों में काम करता था। लेकिन ख़ुद अबूबक्र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के साथ खाना खाया और इ़शा की नमाज़ तक वहाँ ठहरे रहे (मेहमानों को पहले ही भेज चुके थे) इसलिये उन्हें इतना ठहरना पड़ा कि आँहज़रत (ﷺ) ने खाना खा लिया। फिर अल्लाह तआ़ला को जितना मंज़ूर था इतना ह़िस्सा रात का जब गुज़र गया तो आप घर वापस आए, उनकी बीवी ने उनसे कहा। क्या बात हुई, आपको अपने मेहमान याद नहीं रहे? उन्होंने पूछा, क्या मेहमानों को अब तक खाना नहीं खिलाया? बीवी ने कहा कि मेहमानों ने आपके आने तक खाने से इंकार किया। उनके सामने खाना पेश किया गया था लेकिन वो नहीं माने। अ़ब्दुर्रह़मान कहते हैं कि मैं तो जल्दी से छुप गया (क्योंकि अबूबक्र ग़ुस्सा हो गये थे) आपने डांटा, ऐ पाजी! और बहुत बुरा भला कहा फिर (मेहमानों से) कहा चलो अब खाओ और ख़ुद क़सम खा ली कि मैं तो कभी न

٣٥٨١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيْهِ حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ أَصْحَابَ الصُّفَّةِ كَانُوا أُنَاسًا فُقَرَاءَ، وَأَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَرَّةً مَنْ كَانَ عِنْدَهُ طَعَامُ اثْنَيْنِ فَلْيَذْهَبْ بِثَالِثٍ، وَمَنْ كَانَ عِنْدَهُ طَعَامُ أَرْبَعَة فَلْيَذْهَبْ بِخَامِسٍ أَوْ سَادِسٍ. أَوْ كما قَالَ. وَإِنَّ أَبَا بَكْرٍ جَاءَ بِثَلاَثَةٍ، وَانْطَلَقَ النَّبِيُّ ﷺ بِعَشَرَةٍ، وَأَبُوبَكْرٍ ثَلاَثَة. قَالَ: فَهُوَ أَنَا وَأَبِي وَأُمِّي، وَلاَ أَدْرِي هَلْ قَالَ امْرَأَتِي وَخَادِمِي بَيْنَ بَيْتِنَا بَيْتِ أَبِي بَكْرٍ، وَأَنَا أَبَابَكْرٍ تَعَشَّى عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ لَبِثَ حَتَّى صَلَّى الْعِشَاءَ، ثُمَّ رَجَعَ فَلَبِثَ حَتَّى تَعَشَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ فَجَاءَ بَعْدَ مَا مَضَى مِنَ اللَّيْلِ مَا شَاءَ اللهُ. قَالَتْ لَهُ امْرَأَتُهُ مَا حَبَسَكَ عَنْ أَضْيَافِكَ - أَوْ ضَيْفِكَ -؟ قَالَ: أَوَعَشَّيْتِهِمْ؟ قَالَتْ: أَبَوا حَتَّى تَجِيءَ، قَدْ عَرَضُوا عَلَيْهِمْ فَغَلَبُوهُمْ. فَذَهَبْتُ فَاخْتَبَأْتُ. فَقَالَ: يَا غُنْثَرُ - فَجَدَّعَ وَسَبَّ - وَقَالَ: كُلُوا.

قَالَ: لاَ أَطْعَمُهُ أَبَدًا. قَالَ: وَايْمُ اللهِ مَا كُنَّا نَأْخُذُ مِنَ اللُّقْمَةِ إِلاَّ رَبَا مِنْ أَسْفَلِهَا أَكْثَرُ مِنْهَا، حَتَّى شَبِعُوا وَصَارَتْ أَكْثَرَ مِمَّا كَانَتْ قَبْلُ. فَنَظَرَ أَبُوبَكْرٍ فَإِذَا شَيْءٌ أَوْ أَكْثَرُ، فَقَالَ لاِمْرَأَتِهِ: يَا أُخْتَ بَنِي فِرَاسٍ. قَالَتْ: لاَ وَقُرَّةِ عَيْنِي، لَهِيَ الآنَ أَكْثَرُ مِمَّا قَبْلُ بِثَلاَثِ مَرَّاتٍ. فَأَكَلَ مِنْهَا أَبُوبَكْرٍ وَقَالَ: إِنَّمَا كَانَ الشَّيْطَانُ - يَعْنِي يَمِينَهُ - ثُمَّ أَكَلَ مِنْهَا لُقْمَةً، ثُمَّ حَمَلَهَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَصْبَحَتْ عِنْدَهُ. وَكَانَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمٍ عَهْدٌ، فَمَضَى الأَجَلُ فَفَرَّقَنَا اثْنَا عَشَرَ رَجُلاً مَعَ كُلِّ رَجُلٍ مِنْهُمْ أُنَاسٌ اللهُ أَعْلَمُ كَمْ مَعَ كُلِّ رَجُلٍ، غَيْرَ أَنَّهُ بَعَثَ مَعَهُمْ، قَالَ: أَكَلُوا مِنْهَا أَجْمَعُونَ، أَوْ كَمَا قَالَ.

[راجع: ٦٠٢]

खाऊँगा। अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! फिर हम जो लुक़्मा भी (इस खाने में से) उठाते तो जैसे नीचे से खाना और ज़्यादा हो जाता था (इतनी उसमें बरकत हुई) सब लोगों ने पेट भर कर खाया और खाना पहले से भी ज़्यादा बच रहा। अबूबक्र (रज़ि.) ने जो देखा तो खाना ज्यों का त्यों था या पहले से भी ज़्यादा। उस पर उन्होंने अपनी बीवी से कहा, ऐ बनी फ़रास की बहन! (देखो तो ये क्या मामला हुआ) उन्होंने कहा, कुछ भी नहीं। मेरी आँखों की ठण्डक की क़सम, खाना तो पहले से तीन गुना ज़्यादा मा'लूम होता है। फिर वो खाना अबूबक्र (रज़ि.) ने भी खाया और फ़र्माया कि ये मेरा क़सम खाना तो शैतान का अग़्वा था। एक लुक़्मा खाकर उसे आप आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ले गए वहाँ वो सुबह तक रखा रहा। इत्तिफ़ाक़ से एक काफ़िर क़ौम जिसका हम मुसलमानों से मुआहिदा था और मुआहिदे की मुद्दत ख़त्म हो चुकी थी, उनसे लड़ने के लिये फ़ौज जमा की गई। फिर हम बारह टुकड़ियाँ हो गये और हर आदमी के साथ कितने आदमी थे अल्लाह मा'लूम मगर इतना ज़रूर मा'लूम है कि आपने उन नक़ीबों को लश्कर वालों के साथ भेजा। ह़ासिल ये कि फौज वालों ने उसमें से खाया। या अ़ब्दुर्रहमान ने कुछ ऐसा ही कहा। (राजेअ़ : 602)

ह़ज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की उस बीवी को उम्मे रूमान कहा जाता था। उम्मे रूमान फ़रास बिन ग़नम बिन मालिक बिन किनाना की औलाद में से थीं। अरब के मुहावरा में जो कोई किसी क़बीले से होता है उसको उसका भाई कहते हैं। इस ह़दीष़ में भी आप (ﷺ) के एक अ़ज़ीम मुअजज़ा का ज़िक्र है। यही मुताबक़ते बाब है। इस ह़दीष़ के ज़ेल में मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम लिखते हैं। हुआ ये होगा कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने शाम को खाना आँह़ज़रत (ﷺ) के घर खा लिया होगा मगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने न खाया होगा। इशा के बाद आपने खाया होगा। इस ह़दीष़ के तर्जुमा में बहुत से इश्काल है और बड़ी मुश्किल से मा'नी जमते हैं वरना तकरार बेफ़ायदा लाज़िम आती है और मुम्किन है रावी ने अल्फ़ाज़ में ग़लती की हो। चुनाँचे मुस्लिम की रिवायत में दूसरे लफ़्ज़ तअ़शा के बदल ह़त्ता नअ़स है या'नी आँह़ज़रत (ﷺ) के पास इतना ठहरे कि आप ऊँघने लगे। क़ाज़ी अ़याज़ ने कहा यही ठीक है। कुछ रावियों ने **फतफर्रक्ना इष़्ना अशर रजुलन** नक़ल किया है जिसके मुताबिक़ यहाँ तर्जुमा किया गया और कुछ नुस्ख़ों में फ़फ़र्रक़्ना या'नी हमारी बारह टुकड़ियाँ हो गईं, हर टुकड़ी एक आदमी के तह़त में थी। कुछ नुस्ख़ों में यूँ है कि बारह आदमियों को मुसलमानों ने नक़ीब बनाया। कुछ में फ़क़रैना है। या'नी हमने बारह आदमियों की ज़ियाफ़त की। हर आदमी के साथ कितने आदमी थे ये अल्लाह ही को मा'लूम है। इस ह़दीष़ शरीफ़ में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की करामत मज़्कूर है मगर औलिया अल्लाह की करामत उनके पैग़म्बर का मुअजज़ा है क्योंकि पैग़म्बर ही की ताबेदारी की बरकत से उनको ये दर्जा मिला है, इसलिये बाब का मत़लब ह़ासिल हो गया। ये ह़दीष़ ऊपर गुज़र चुकी है। (वह़ीदी)

٣٥٨٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ

3582. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद ने बयान

किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने और हम्माद ने इस ह़दीष़ को यूनुस से भी रिवायत किया है। उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में एक साल क़हत पड़ा। आप जुम्आ की नमाज़ के लिये ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक शख़्स ने खड़े होकर कहा या रसूलल्लाह! घोड़े भूख से हलाक हो गये और बकरियाँ भी हलाक हो गईं। आप अल्लाह तआ़ला से दुआ़ कीजिए कि वो हम पर पानी बरसाए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने हाथ उठाए और दुआ़ की। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उस वक़्त आसमान शीशे की त़रह (बिलकुल स़ाफ़) था, इतने में हवा चली, उसने अब्र को उठाया फिर उस अब्र के बहुत से टुकड़े जमा हो गये और आसमान ने गोया अपने दहाने खोल दिये। हम जब मस्जिद से निकले तो घर पहुँचते पहुँचते पानी में डूब चुके थे। बारिश यूँ ही दूसरे जुम्आ तक बराबर होती रही। दूसरे जुम्आ को वही स़ाह़ब या कोई दूसरे फिर खड़े हुए और अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! मकानात गिर गये, दुआ़ कीजिए कि अल्लाह तआ़ला बारिश को रोक दे। आँह़ज़रत (ﷺ) मुस्कुराए और फ़र्माया। ऐ अल्लाह! अब हमारे चारों त़रफ़ बारिश बरसा (जहाँ उसकी ज़रूरत हो) हम पर न बरसा। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने जो नज़र उठाई तो देखा कि उसी वक़्त अब्र फटकर मदीना के इर्द–गिर्द सर पेच की तरह हो गया था। (राजेअ़ : 932)

عَبْدِ الْعَزِيْزِ عَنْ أَنَسٍ. وَعَنْ يُونُسَ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَصَابَ أَهْلَ الْمَدِيْنَةِ قَحْطٌ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ بَيْنَا هُوَ يَخْطُبُ يَومَ جُمُعَةٍ إِذْ قَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، هَلَكَتِ الْكُرَاعُ، وَهَلَكَتِ الشَّاءُ، فَادْعُ اللهَ يَسْقِيْنَا. فَمَدَّ يَدَيْهِ وَدَعَا. قَالَ أَنَسٌ: وَإِنَّ السَّمَاءَ كَمِثْلِ الزُّجَاجَةِ. فَهَاجَتْ رِيْحٌ أَنْشَأَتْ سَحَابًا، ثُمَّ اجْتَمَعَ، ثُمَّ أَرْسَلَتِ السَّمَاءُ عَزَالِيَهَا، فَخَرَجْنَا نَخُوضُ الْمَاءَ حَتَّى أَتَيْنَا مَنَازِلَنَا، فَلَمْ نَزَلْ نُمْطَرُ إِلَى الْجُمُعَةِ الأُخْرَى. فَقَالَ إِلَيْهِ ذَلِكَ الرَّجُلُ – أَوْ غَيْرُهُ – فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، تَهَدَّمَتِ الْبُيُوتُ، فَادْعُ اللهَ يَحْبِسْهُ. فَتَبَسَّمَ ثُمَّ قَالَ: ((حَوَالَيْنَا وَلاَ عَلَيْنَا)). فَنَظَرْتُ إِلَى السَّحَابِ تَتَصَدَّعُ حَوْلَ الْمَدِيْنَةِ كَأَنَّهُ إِكْلِيْلٌ)).

[راجع: ٩٣٢]

3583. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ग़स्सान यह़्या बिन कष़ीर ने बयान किया, उन्होंने हमसे अबू ह़फ़्स़ से जिनका नाम उ़मर बिन अ़लाअ है और जो अबू अ़म्र बिन अ़लाअ के भाई हैं, बयान किया, कहा कि मैंने नाफ़ेअ़ से सुना और उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) एक लकड़ी का सहारा लेकर ख़ुत्बा दिया करते थे, फिर जब मिम्बर बन गया तो आप ख़ुत्बा के लिये इस पर तशरीफ़ ले गये। इस पर उस लकड़ी ने बारीक आवाज़ से रोना शुरू कर दिया। आख़िर आप उसके क़रीब तशरीफ़ लाए और अपना हाथ उस पर फेरा। और अ़ब्दुल ह़मीद ने कहा कि हमें उ़ष़्मान बिन उ़मर ने ख़बर दी, उन्हें मुआ़ज़ बिन अ़लाअ ने ख़बर दी और उन्हें नाफ़ेअ़ ने इसी

٣٥٨٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ كَثِيْرٍ أَبُو غَسَّانَ حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ وَاسْمُهُ عُمَرُ بْنُ الْعَلاَءِ أَخُو أَبِي عَمْرِو بْنِ الْعَلاَءِ، قَالَ: سَمِعْتُ نَافِعًا عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ إِلَى جِذْعٍ، فَلَمَّا اتَّخَذَ الْمِنْبَرَ تَحَوَّلَ إِلَيْهِ، فَحَنَّ الْجِذْعُ، فَأَتَاهُ فَمَسَحَ يَدَهُ عَلَيْهِ)). وَقَالَ عَبْدُ الْحَمِيْدِ أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ

हदीष़ की और उसकी रिवायत अबू आ़सिम ने की, उनसे अबू रवाद ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से।

الْعَلاَءِ عَنْ نَافِعٍ بِهَذَا. وَرَوَاهُ أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ أَبِي رَوَّادٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तशरीह : हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) ने कहा कि मा'लूम नहीं ये अ़ब्दुल ह़मीद नामी रावी कौन हैं? मुज़ी ने कहा कि ये अ़ब्द बिन हुमैद हाफ़िज़ मशहूर हैं, मगर मैंने उनकी तफ़्सीर और मुस्नद दोनों में ये हदीष़ तलाश की तो मुझको नहीं मिली। अल्बत्ता दारमी ने उसको निकाला है उ़ष्मान बिन उ़मर से आख़िर तक इसी इस्नाद से। (वहीदी)

3584. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ऐमन ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, और उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से कि नबी करीम (ﷺ) जुम्आ के दिन ख़ुत्बा के लिये एक पेड़ (के तने) के पास खड़े होते, या (बयान किया कि) खजूर के पेड़ के पास। फिर एक अंसारी औ़रत ने या किसी सहाबी ने कहा, या रसूलल्लाह! क्यूँ न हम आपके लिये एक मिम्बर तैयार कर दें? आपने फ़र्माया, अगर तुम्हारा जी चाहे तो कर दो, चुनाँचे उन्होंने आपके लिये मिम्बर तैयार कर दिया। जब जुम्अ़े का दिन हुआ तो आप उस मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये। इस पर उस खजूर के तने से बच्चे की तरह रोने की आवाज़ आने लगी। आँहज़रत (ﷺ) मिम्बर से उतरे और उसे अपने गले से लगा लिया, जिस त़रह बच्चों को चुप करने के लिये लोरियाँ देते हैं, आँहज़रत (ﷺ) ने भी इसी त़रह उसे चुप कराया। फिर आपने फ़र्माया कि ये तना इसलिये रो रहा था कि वो अल्लाह के इस ज़िक्र को सुना करता था जो उसके क़रीब होता था। (राजेअ़ : 449)

٣٥٨٤- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُومُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ إِلَى شَجَرَةٍ أَوْ نَخْلَةٍ، فَقَالَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ - أَوْ رَجُلٌ - يَا رَسُولَ اللهِ أَلاَ نَجْعَلُ لَكَ مِنْبَرًا؟ قَالَ: إِنْ شِئْتُمْ. فَجَعَلُوا لَهُ مِنْبَرًا. فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ دُفِعَ إِلَى الْمِنْبَرِ، فَصَاحَتِ النَّخْلَةُ صِيَاحَ الصَّبِيِّ، ثُمَّ نَزَلَ النَّبِيُّ ﷺ فَضَمَّهُ إِلَيْهِ، تَئِنُّ أَنِينَ الصَّبِيِّ الَّذِي يُسَكَّنُ. قَالَ : كَانَتْ تَبْكِي عَلَى مَا كَانَتْ تَسْمَعُ مِنَ الذِّكْرِ عِنْدَهَا)). [راجع: ٤٤٩]

अब वो इससे महरूम हो गया इसलिये कि मैं उससे दूर हो गया।

3585. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उन्हें ह़फ़्स़ बिन उ़बैदुल्लाह बिन अनस बिन मालिक ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि मस्जिदे नबवी की छत खजूर के तनों पर बनाई गई थी। नबी करीम (ﷺ) जब ख़ुत्बा के लिये तशरीफ़ लाते तो आप उनमें से एक तने के पास खड़े हो जाते लेकिन जब आपके लिये मिम्बर बना दिया गया तो आप उस पर तशरीफ़ लाए। फिर हमने उस तने से इस त़रह की रोने की आवाज़

٣٥٨٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي حَفْصُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: ((كَانَ الْمَسْجِدُ مَسْقُوفًا عَلَى جُذُوعٍ مِنْ نَخْلٍ، فَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا خَطَبَ يَقُومُ إِلَى جِذْعٍ مِنْهَا، فَلَمَّا صُنِعَ لَهُ

الْـمِنْبَرُ وَكَانَ عَلَيْهِ فَسَمِعْنَا لِذَلِكَ الْـجِذْعِ صَوْتًا كَصَوْتِ الْعِشَارِ، حَتَّى جَاءَ النَّبِيُّ ﷺ فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَيْهَا، فَسَكَنَتْ)).

[راجع: ٤٤٩]

सुनी जैसी बवक़्ते विलादत ऊँटनी की आवाज़ होती है। आख़िर जब आँहज़रत (ﷺ) ने उसके क़रीब आकर उस पर हाथ रखा तो वो चुप हुआ। (राजेअ : 449)

तश्रीह : सहाबा ने ये आवाज़ सुनी। दूसरी रिवायत में है, आपने आकर उसको गले लगा लिया और वो लकड़ी ख़ामोश हो गई। आपने फ़र्माया अगर मैं ऐसा न करता तो वो क़यामत तक रोती रहती। इमाम हसन बसरी (रह) जब इस हदीष़ को बयान करते तो कहते मुसलमानों! एक लकड़ी आँहज़रत (ﷺ) से मिलने के शौक़ में रोई और तुम लकड़ी के बराबर भी आपसे मिलने का शौक़ नहीं रखते। दारमी की रिवायत में है कि आपने हुक्म दिया कि एक गड्ढा खोदा गया और वो लकड़ी उसमें दबा दी गई। अबू नुऐम की रिवायत में है आपने सहाबा से फ़र्माया तुमको उस लकड़ी के रोने पर ता'ज्जुब नहीं आता, वो आए, उसका रोना सुना, ख़ुद भी बहुत रोये। मुसलमानों! एक लकड़ी को आँहज़रत (ﷺ) से ऐसी मुहब्बत हो और हम लोग जो अशरफ़ुल मख़्लूक़ात हैं अपने पैग़म्बर से इतनी भी उल्फ़त न रखें, रोने का मुक़ाम है कि आपकी हदीष़ को छोड़कर अबू हनीफ़ा और शाफ़िई के क़ौल की तरफ़ दौड़ें, आपकी हदीष़ से तो हमको तसल्ली न हो और क़हिस्तानी और कैदानी जो नामा'लूम किस बाग़ की मूली थे उनके क़ौल से तशफ़्फ़ी हो जाए। **ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह**। फिर इस्लाम का दा'वा क्यूँ करते हो जब पैग़म्बरे इस्लाम की तुमको ज़रा भी मुहब्बत नहीं। (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम)

٣٥٨٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ. ح حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ يُحَدِّثُ عَنْ حُذَيْفَةَ: ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَيُّكُمْ يَحْفَظُ قَوْلَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْفِتْنَةِ؟ فَقَالَ حُذَيْفَةُ: أَنَا أَحْفَظُ كَمَا قَالَ: قَالَ: هَاتِ، إِنَّكَ لَجَرِيءٌ. قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ وَمَالِهِ وَجَارِهِ تُكَفِّرُهَا الصَّلاَةُ وَالصَّدَقَةُ وَالأَمْرُ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ)). قَالَ: لَيْسَتْ هَذِهِ، وَلَكِنِ الَّتِي تَمُوجُ كَمَوْجِ الْبَحْرِ، قَالَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ لاَ بَأْسَ عَلَيْكَ مِنْهَا، إِنَّ بَيْنَكَ وَبَيْنَهَا بَابًا مُغْلَقًا.

3586. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, (दूसरी सनद) कहा मुझसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने, उनसे शुअबा ने, उनसे सुलैमान ने, उन्होंने अबू वाइल से सुना, वो हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से बयान करते थे कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने पूछा, फ़ित्ना के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) की हदीष़ किस को याद है? हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बोले कि मुझे ज़्यादा याद है जिस तरह रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था। उमर (रज़ि.) ने कहा फिर बयान करो (माशाअल्लाह) तुम तो बहुत जरी हो। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इंसान की एक आज़माइश (फ़ित्ना) को उसके घर, माल और पड़ौस में होता है जिसका कफ़्फ़ारा, नमाज़, रोज़ा, सदक़ा और अम्र बिल मअरूफ़ और नहीं अनिल मुंकर जैसी नेकियाँ बन जाती हैं। उमर (रज़ि.) ने कहा कि मैं उसके बारे में नहीं पूछता, बल्कि मेरी मुराद उस फ़ित्ना से है जो समुन्दर की तरह (ठाठें मारता) होगा। उन्होंने कहा कि इस फ़ित्ने का आप पर कोई अष़र नहीं पड़ेगा। आपके और उस फ़ित्ने के दरम्यान बन्द दरवाज़ा है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने पूछा वो दरवाज़ा खोला जाएगा या तोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा नहीं, बल्कि तोड़ दिया जाएगा। हज़रत उमर ने उस पर फ़र्माया कि

قَالَ: يُفْتَحُ الْبَابُ أَوْ يُكْسَرُ؟ قَالَ : لاَ، بَلْ يُكْسَرُ، قَالَ: ذَلِكَ أَحْرَى أَنْ لاَ يُغْلَقَ. قُلْنَا: عَلِمَ الْبَابَ؟ قَالَ : نَعَمْ، كَمَا أَنْ دُونَ غَدٍ اللَّيْلَةَ. إِنِّي حَدَّثْتُهُ حَدِيْثًا لَيْسَ بِالأَغَالِيْطِ. فَهِبْنَا أَنْ نَسْأَلَهُ، وَأَمَرْنَا مَسْرُوْقًا فَسَأَلَهُ فَقَالَ: ((مَنِ الْبَابُ؟ قَالَ: عُمَرُ)).

[راجع: ٥٢٥]

फिर तो बन्द न हो सकेगा। हमने हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से पूछा, क्या ड़मर (रज़ि.) उस दरवाज़े के बारे में जानते थे? उन्होंने फ़र्माया कि उसी तरह जानते थे जैसे दिन के बाद रात के आने को हर शख़्स जानता है। मैंने ऐसी हदीष़ बयान की जो ग़लत नहीं थी। हमें हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से (दरवाज़े के बारे में) पूछते हुए डर मा'लूम हुआ। इसलिये हमने मसरूक़ से कहा जब उन्होंने पूछा कि वो दरवाज़ा (से मुराद) कौन स़ाहब हैं? तो उन्होंने बताया कि वो ख़ुद ड़मर (रज़ि.) ही हैं। (राजेअ़ : 525)

तशरीह : ये हदीष़ शरह के साथ ऊपर गुज़र चुकी है। इमाम बुख़ारी (रह) इस बाब में इसको इसलिये लाए हैं कि आँहज़रत (ﷺ) का एक मुअजज़ा है। इससे ये ष़ाबित हुआ है कि हज़रत ड़मर (रज़ि.) जब तक ज़िन्दा रहे कोई फ़ित्ना और फ़साद मुसलमानों में नहीं हुआ। उनकी वफ़ात के बाद फ़ित्नों का दरवाज़ा खुल गया तो आपकी पेशीनगोई पूरी हुई। ज़रकशी ने कहा कि हुज़ैफ़ा (रज़ि.) अगर उस दरवाज़े को हज़रत ड़ष्मान (रज़ि.) की ज़ात कहते तो दुरुस्त होता उनकी शहादत के बाद फ़ित्नों का दरवाज़ा खुल गया (बल्कि हज़रत ड़ष्मान रज़ि. की मज़्लूमाना शहादत भी फ़ित्नागरों के हाथों हुई)। राक़िम (लेखक) कहता है कि ये ज़रकशी की ख़ुशफ़हमी है। फ़ित्नों का दरवाज़ा तो हज़रत ड़ष्मान (रज़ि.) की ह़यात में खुल गया था फिर वो दरवाज़ा कैसे हो सकते हैं। हुज़ैफ़ा (रज़ि.) एक जलीलुल क़द्र सहाबी और आँहज़रत (ﷺ) के महरमे राज़ थे। उन्होंने जो अम्र क़रार दिया, ज़रकशी को इस पर ए'तिराज़ करना ज़ेबा नहीं था (वहीदी)। अहल व माल के फ़ित्ने से मुराद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल होना और दिल पर ग़फ़लत का पर्दा आना है।

٣٥٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا قَوْمًا نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ، وَحَتَّى تُقَاتِلُوا التُّرْكَ صِغَارَ الأَعْيُنِ حُمْرَ الْوُجُوهِ ذُلْفَ الأُنُوفِ كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ)).

[راجع: ٢٩٢٨]

3587. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत उस वक़्त तक नहीं क़ायम होगी जब तक तुम एक ऐसी क़ौम के साथ जंग न कर लो जिनके जूते बाल के हों और जब तक तुम तुर्कों से जंग न कर लो, जिनकी आँखें छोटी होंगी, चेहरे सुर्ख़ होंगे, नाक छोटी और चपटी होगी, चेहरे ऐसे होंगे जैसे तह ब तह ढाल होती है। (राजेअ़ : 2928)

٣٥٨٨- ((وَتَجِدُونَ مِنْ خَيْرِ النَّاسِ أَشَدَّهُمْ كَرَاهِيَةً لِهَذَا الأَمْرِ حَتَّى يَقَعَ فِيهِ. وَالنَّاسُ مَعَادِنُ : خِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الإِسْلاَمِ)). [راجع: ٣٤٩٣]

3588. और तुम हुकूमत के लिये सबसे ज़्यादा बेहतर शख़्स उसे पाओगे जो हुकूमत करने को बुरा जाने (या'नी उस मंस़ब को ख़ुद के लिये नापसन्द करे) यहाँ तक कि वो उसमें फंस जाए। लोगों की मिष़ाल कान की सी है जो जाहिलियत में शरीफ़ थे, वो इस्लाम लाने के बाद भी शरीफ़ हैं। (राजेअ़ : 3493)

3589. और तुम पर एक ऐसा दौर भी आने वाला है कि तुममें से कोई अपने सारे घर बार और माल व दौलत से बढ़कर मुझको देख लेना ज़्यादा पसन्द करेगा।

٣٥٨٩- ((وَلَيَأْتِيَنَّ عَلَى أَحَدِكُمْ زَمَانٌ لأَنْ يَرَانِي أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَهُ مِثْلُ أَهْلِهِ وَمَالِهِ)).

तश्रीह : इस ह़दीष़ में चार पेशीनगोइयाँ हैं, चारों पूरी हुईं। आँह़ज़रत (ﷺ) के आ़शिक़ सह़ाबा और ताबेईन में बल्कि उनके बाद वाले लोगों में भी हमारे ज़माने तक कुछ ऐसे गुज़रे हैं कि माल औलाद सबको आपके एक दीदार पर तसद्दुक़ (क़ुर्बान) कर दें। माल व दौलत क्या चीज़ है जान हज़ार जाने आप पर से तसद्दुक़ करना फ़ख़्र और सआ़दते दारैन समझते रहे हर दो आ़लम क़ीमत गुफ़्ता नरख़ बाला कुन कि अरज़ानी हुनूज़। (वह़ीदी)

3590. मुझसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने और उनसे हम्माम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि तुम ईरानियों के शहर ख़ूज़ और किरमान वालों से जंग न कर लोगे। चेहरे उनके सुर्ख़ होंगे। नाक चपटी होगी, आँखें छोटी होंगी और चेहरे ऐसे होंगे जैसे तह ब तह ढाल होती है और उनके जूते बालों वाले होंगे। यह्या के अ़लावा इस ह़दीष़ को औरों ने भी अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 2928)

٣٥٩٠- حَدَّثَنِي يَحْيَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا خُوزًا وَكِرْمَانَ مِنَ الأَعَاجِمِ، حُمْرَ الْوُجُوهِ فُطْسَ الأُنُوفِ صِغَارَ الأَعْيُنِ كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ، نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ)). تَابَعَهُ غَيْرُهُ عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ.

[راجع: ٢٩٢٨]

3591. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि इस्माईल ने बयान किया मुझको क़ैस ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हम अबू हुरैरह (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो उन्होंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुह़्बत में तीन साल रहा हूँ, अपनी पूरी उ़म्र में मुझे ह़दीष़ याद करने का इतना शौक़ कभी नहीं हुआ जितना उन तीन सालों में था। मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को फ़र्माते सुना, आपने अपने हाथ से यूँ इशारा करके फ़र्माया कि क़यामत के क़रीब तुम लोग (मुसलमान) एक ऐसी क़ौम से जंग करोगे जिनके जूते बालों के होंगे (मुराद यही ईरानी हैं) सुफ़यान ने एक मर्तबा व हुवा हाज़ल् बारिज़ के बजाय लफ़्ज़ वहुम अहलुल बारिज़ नक़ल किये (या'नी ईरानी, या कुर्दी, या दैलम वाले लोग मुराद हैं)। (राजेअ़ : 2928)

٣٥٩١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: قَالَ إِسْمَاعِيلُ أَخْبَرَنِي قَيْسٌ قَالَ: ((أَتَيْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَقَالَ: صَحِبْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلاَثَ سِنِيْنَ لَمْ أَكُنْ فِي سِنِيَّ أَحْرَصَ عَلَى أَنْ أَعِيَ الْحَدِيْثَ مِنِّي فِيْهِنَّ، سَمِعْتُهُ يَقُولُ - وَقَالَ هَكَذَا بِيَدِهِ- : ((بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نِعَالُهُمُ الشَّعَرُ، وَهُوَ هَذَا الْبَارِزُ)) وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً: وَهُمْ أَهْلُ الْبَارِزِ)).

[راجع: ٢٩٢٨]

3592. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, कहा मैंने हसन से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अ़म्र बिन तग़ुलिब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, क़यामत के क़रीब तुम एक ऐसी क़ौम से जंग करोगे जो बालों का जूता पहनते होंगे और एक ऐसी क़ौम से जंग करोगे जिनके चेहरे तह ब तह ढालों की तरह होंगे। (राजेअ़ : 2928)

٣٥٩٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا جَرِيْرُ بْنُ حَازِمٍ سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ تَغْلِبَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَ يَدَي السَّاعَةِ تُقَاتِلُونَ قَوْمًا يَنْتَعِلُونَ الشَّعَرَ، وَتُقَاتِلُونَ قَوْمًا كَأَنَّ وُجُوهَهُمُ الْمَجَانُّ الْمُطْرَقَةُ)). [راجع: ٢٩٢٧]

3593. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना था कि तुम यहूदियों से एक जंग करोगे और उसमें उन पर ग़ालिब आ जाओगे, उस वक़्त ये कैफ़ियत होगी कि (अगर कोई यहूदी जान बचाने के लिये किसी पहाड़ में भी छुप जाएगा तो) पत्थर बोलेगा कि ऐ मुसलमान! ये यहूदी मेरी आड़ में छुपा हुआ है, इसे क़त्ल कर दे। (राजेअ़ : 2529)

٣٥٩٣- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((تُقَاتِلُكُمُ الْيَهُودَ، فَتُسَلَّطُونَ عَلَيْهِمْ، يَقُولُ الْحَجَرُ: يَا مُسْلِمُ، هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَائِي فَاقْتُلْهُ)). [راجع: ٢٥٢٩]

तश्रीह : ये उस वक़्त होगा जब ईसा (अ़लैहिस्सलाम) उतरेंगे और यहूदी लोग दज्जाल के लश्करी होंगे। हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) बाब लद के पास दज्जाल को मारेंगे और उसके लश्कर वाले जा बजा मुसलमानों के हाथों क़त्ल होंगे।

3594. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि जिहाद के लिये फ़ौज जमा होगी, पूछा जाएगा कि फ़ौज में कोई ऐसे बुज़ुर्ग भी हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुह्बत पाई हो? मा'लूम होगा कि हाँ हैं तो उनके ज़रिये फ़तह की दुआ़ की जाएगी। फिर एक जिहाद होगा और पूछा जाएगा, क्या फ़ौज में कोई ऐसे बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के किसी सहाबी की सुह्बत उठाई हो? मा'लूम होगा कि हाँ हैं तो उनके ज़रिये फ़तह की दुआ़ मांगी जाएगी। फिर उनकी दुआ़ की बरकत से फ़तह होगी। (राजेअ़ : 2897)

٣٥٩٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ جَابِرٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَغْزُونَ، فَيُقَالُ: فِيكُمْ مَنْ صَحِبَ الرَّسُولَ ﷺ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ عَلَيْهِمْ. ثُمَّ يَغْزُونَ. فَيُقَالُ لَهُمْ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَحِبَ مَنْ صَحِبَ الرَّسُولَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ لَهُمْ)). [راجع: ٢٨٩٧]

3595. मुझसे मुहम्मद बिन हकम ने बयान किया, कहा हमको

٣٥٩٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْحَكَمِ

नज़र ने ख़बर दी, कहा हमको इस्राईल ने ख़बर दी, कहा हमको सअद ताई ने ख़बर दी, उन्हें महल बिन ख़लीफ़ा ने ख़बर दी, उनसे अदी बिन हातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक साहब आए और आँहज़रत (ﷺ) से फ़क़्रो–फ़ाक़ा की शिकायत की। फिर दूसरे साहब आए और रास्तों की बदअम्नी की शिकायत की। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अदी! तुमने मुक़ामे हीरा देखा है? (जो कूफ़ा के पास एक बस्ती है) मैंने अर्ज़ किया कि मैंने देखा तो नहीं, अल्बत्ता उसका नाम मैंने सुना है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर तुम्हारी ज़िन्दगी कुछ और लम्बी हुई तो तुम देखोगे कि होदज में एक औरत अकेली हीरा से सफ़र करेगी और (मक्का पहुँचकर) का'बा का तवाफ़ करेगी और अल्लाह के सिवा उसे किसी का भी डर न होगा। मैंने (हैरत से) अपने दिल में कहा, फिर क़बीला तै के उन डाकुओं का क्या होगा जिन्होंने शहरों को तबाह कर दिया, फ़साद की आग सुलगा रखी है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर तुम कुछ और दिनों तक ज़िन्दा रहे तो किसरा के ख़ज़ाने (तुम पर) खोले जाएँगे। मैं (हैरत में) बोल पड़ा किसरा बिन हुर्मुज़ (ईरान का बादशाह) आपने फ़र्माया, हाँ किसरा बिन हुर्मुज़! और अगर तुम कुछ दिनों तक और ज़िन्दा रहे तो ये भी देखोगे कि एक शख़्स अपने हाथ में सोना–चाँदी भरकर निकलेगा। उसे किसी ऐसे आदमी की तलाश होगी (जो उसकी ज़कात) क़ुबूल कर ले लेकिन उसे कोई ऐसा आदमी नहीं मिलेगा जो उसे क़ुबूल कर ले। अल्लाह तआला से मुलाक़ात करेगा कि दरम्यान में कोई तर्जुमान न होगा (बल्कि परवरदिगार उससे बिला वास्ता बातें करेगा) अल्लाह तआला उससे दरयाफ़्त करेगा। क्या मैंने तुम्हारे पास रसूल नहीं भेजे थे जिन्होंने तुम तक मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया हो? वो अर्ज़ करेगा, बेशक तू ने भेजा था। अल्लाह तआला दरयाफ़्त करेगा क्या मैंने माल और औलाद तुम्हें नहीं दी थी? क्या मैंने उनके ज़रिये तुम्हें फ़ज़ीलत नहीं दी थी? वो जवाब देगा बेशक तूने दिया था। फिर वो अपनी दाहिनी तरफ़ देखेगा तो सिवा जहन्नम के उसे और कुछ

أَخْبَرَنَا النَّضْرُ أَخْبَرَنَا إِسْرَائِيلُ أَخْبَرَنَا سَعْدٌ الطَّائِيُّ أَخْبَرَنَا مُحِلُّ بْنُ خَلِيفَةَ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ أَتَاهُ رَجُلٌ فَشَكَا إِلَيْهِ الْفَاقَةَ، ثُمَّ أَتَاهُ آخَرُ فَشَكَا إِلَيْهِ قَطْعَ السَّبِيلِ، فَقَالَ: ((يَا عَدِيُّ، هَلْ رَأَيْتَ الْحِيرَةَ؟)) قُلْتُ: لَمْ أَرَهَا، وَقَدْ أُنْبِئْتُ عَنْهَا. قَالَ: ((فَإِنْ طَالَتْ بِكَ حَيَاةٌ لَتَرَيَنَّ الظَّعِينَةَ تَرْتَحِلُ مِنَ الْحِيرَةِ حَتَّى تَطُوفَ بِالْكَعْبَةِ لاَ تَخَافُ أَحَدًا إِلاَّ اللهَ)) - قُلْتُ : فِيمَا بَيْنِي وَبَيْنَ نَفْسِي فَأَيْنَ دُعَّارُ طَيِّءٍ الَّذِينَ قَدْ سَعَّرُوا الْبِلاَدَ؟ - ((وَلَئِنْ طَالَتْ بِكَ حَيَاةٌ لَتُفْتَحَنَّ كُنُوزُ كِسْرَى)). قُلْتُ: كِسْرَى بْنُ هُرْمُزَ؟ قَالَ: كِسْرَى بْنِ هُرْمُزَ. وَلَئِنْ طَالَتْ بِكَ حَيَاةٌ لَتَرَيَنَّ الرَّجُلَ يُخْرِجُ مِلْءَ كَفِّهِ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ يَطْلُبُ مَنْ يَقْبَلُهُ مِنْهُ فَلاَ يَجِدُ أَحَدًا يَقْبَلُهُ مِنْهُ. وَلَيَلْقَيَنَّ اللهَ أَحَدُكُمْ يَوْمَ يَلْقَاهُ وَلَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ تَرْجُمَانٌ يُتَرْجِمُ لَهُ، فَيَقُولَنَّ لَهُ: أَلَمْ أَبْعَثْ إِلَيْكَ رَسُولاً فَيُبَلِّغَكَ. فَيَقُولُ: بَلَى. فَيَقُولُ: أَلَمْ أُعْطِكَ مَالاً وَأُفْضِلْ عَلَيْكَ؟ فَيَقُولُ : بَلَى. فَيَنْظُرُ عَنْ يَمِينِهِ فَلاَ يَرَى إِلاَّ جَهَنَّمَ، وَيَنْظُرُ عَنْ يَسَارِهِ فَلاَ يَرَى إِلاَّ جَهَنَّمَ)). قَالَ عَدِيٌّ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

يَقُولُ: ((اتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقَّةِ تَمْرَةٍ، فَمَنْ لَمْ يَجِدْ شِقَّةَ تَمْرَةٍ فَبِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ)). قَالَ عَدِيٌّ: فَرَأَيْتُ الظَّعِينَةَ تَرْتَحِلُ مِنَ الْحِيرَةِ حَتَّى تَطُوفَ بِالْكَعْبَةِ لاَ تَخَافُ إِلاَّ اللهَ، وَكُنْتُ فِيمَنِ افْتَتَحَ كُنُوزَ كِسْرَى بْنِ هُرْمُزَ، وَلَئِنْ طَالَتْ بِكُمْ حَيَاةٌ لَتَرَوُنَّ مَا قَالَ النَّبِيُّ أَبُو الْقَاسِمِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : يُخْرِجُ مِلْءَ كَفِّهِ)). حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ أَخْبَرَنَا سَعْدَانُ بْنُ بِشْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو مُجَاهِدٍ حَدَّثَنَا مُحِلُّ بْنُ خَلِيفَةَ سَمِعْتُ عَدِيًّا: ((كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).

[راجع: ١٤١٣]

नज़र न आएगा फिर वो बाईं तरफ़ देखेगा तो इधर भी जहन्नम के सिवा और कुछ नज़र नहीं आएगा। अदी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि जहन्नम से डरो, अगरचे खजूर के एक टुकड़े के ज़रिये हो। अगर किसी को खजूर का एक टुकड़ा भी मयस्सर न आ सके तो (किसी से) एक अच्छा कलिमा ही कह दे। हज़रत अदी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने होदज में बैठी हुई एक अकेली औरत को तो ख़ुद देख लिया कि हीरा से सफ़र के लिये निकली और (मक्का पहुँचकर) उसने का'बा का तवाफ़ किया और उसे अल्लाह के सिवा और किसी (डाकू वग़ैरह) का (रास्ते में) डर नहीं था और मुजाहिदीन की उस जमाअत में तो मैं ख़ुद शरीक था जिसने किसरा बिन हुर्मुज़ के ख़ज़ाने फ़तह किये। और अगर तुम लोग कुछ दिनों और ज़िन्दा रहे तो वो भी देख लोगे जो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक शख़्स अपने हाथ में (ज़कात का सोना-चाँदी) भरकर निकलेगा (लेकिन उसे लेने वाला कोई नहीं मिलेगा) मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम ने बयान किया, कहा हमको सअदान बिन बिश्र ने ख़बर दी, उनसे अबू मुजाहिद ने बयान किया, उनसे मुहिल बिन ख़लीफ़ा ने बयान किया और उन्होंने अदी (रज़ि.) से सुना कि मैं नबी करीम (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर था। फिर यही हदीष़ नक़ल की जो ऊपर गुज़र चुकी है।
(राजेअ: 1413)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) के ज़माने में माल व दौलत की फ़रावानी की पेशीनगोई भी पूरी हुई कि मुसलमानों को अल्लाह ने बहुत दौलतमन्द बना दिया था कि कोई ज़कात लेने वाला न था। हाफ़िज़ ने कहा कि हीरा अरब के उन बादशाहों का पाय-ए-तख़्त था जो ईरान के मातहत थे।

٣٥٩٦- حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ شُرَحْبِيلَ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ يَزِيدَ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ: ((عَنِ النَّبِيِّ ﷺ خَرَجَ يَوْمًا فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أُحُدٍ صَلاَتَهُ عَلَى الْمَيِّتِ، ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: إِنِّي فَرَطُكُمْ، وَأَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ. إِنِّي وَاللهِ لأَنْظُرُ إِلَى حَوْضِي الآنَ، وَإِنِّي قَدْ أُعْطِيتُ خَزَائِنَ مَفَاتِيحِ الأَرْضِ، وَإِنِّي

3596. मुझसे सईद बिन शुरहबील ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन हबीब ने, उनसे अबुल ख़ैर ने, उनसे उक़्बा बिन आमिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक दिन मदीना से बाहर निकले और शुह्दा-ए-उहुद पर नमाज़ पढ़ी जैसे मय्यत पर पढ़ते हैं उसके बाद आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, मैं (हौज़े कौष़र पर) तुमसे पहले पहुँचूंगा और क़यामत के दिन तुम्हारे लिये मीरे सामान बनूँगा, मैं तुम पर गवाही दूँगा और अल्लाह की क़सम! मैं अपने हौज़े कौष़र को इस वक़्त भी देख रहा हूँ। मुझे रूए ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियाँ दी गई हैं और क़सम अल्लाह की मुझे तुम्हारे बारे में ये डर नहीं कि तुम शिर्क

करने लगोगे मैं तो इससे डरता हूँ कि कहीं दुनियादारी में पड़कर एक-दूसरे से रश्क व हसद न करने लगो। (राजेअ : 1344)

وَاللهِ مَا أَخَافُ بَعْدِي أَنْ تُشْرِكُوا، وَلَكِنْ أَخَافُ أَنْ تَنَافَسُوا فِيهَا)).

[راجع:١٣٤٤]

तश्रीह : आपकी ये पेशीनगोई बिलकुल सच षाबित हुई, मुसलमानों को बड़ा ऊरूज हासिल हुआ। मगर ये आपस के रश्क और हसद से ख़राब हो गये। तारीख़ बतलाती है कि मुसलमानों को ख़ुद अपनों ही के हाथों जो तकलीफ़ें हुईं वो ग़ैरों के हाथों से नहीं हुईं। मुसलमानों के लिये ग़ैरों की रीशा दवानियों और बुरे मंसूबों में भी बेशतर ग़द्दार मुसलमानों का हाथ रहा है।

3597. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) एक मर्तबा मदीना के एक बुलन्द टीले पर चढ़े और फ़र्माया, जो कुछ मैं देख रहा हूँ क्या तुम्हें भी नज़र आ रहा है? मैं फ़ित्नों को देख रहा हूँ कि तुम्हारे घरों में वो इस तरह गिर रहे हैं जैसे बारिश की बून्दें गिरा करती हैं। (राजेअ : 1787)

٣٥٩٧- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ أُسَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَشْرَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أُطُمٍ مِنَ الآطَامِ فَقَالَ: ((هَلْ تَرَوْنَ مَا أَرَى؟ إِنِّي أَرَى الْفِتَنَ تَقَعُ خِلاَلَ بُيُوتِكُمْ مَوَاقِعَ الْقَطْرِ)).[راجع: ١٨٧٨]

हज़रत उष्मान (रज़ि.) की शहादत के बाद जो फ़ित्ने बरपा हुए उन पर ये इशारा है। उन फ़ित्नों ने ऐसा सर उठाया कि आज तक उनके तबाहकुन अष़रात बाक़ी हैं।

3598. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा कि मुझसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया, उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने बयान किया, उनसे उम्मे हबीबा बिन्ते अबी सुफ़यान (रज़ि.) ने बयान किया कि हमको ज़ैनब बिन्ते अबी जहश (रज़ि.) ने ख़बर दी कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) उनके घर तशरीफ़ लाए तो आप बहुत परेशान नज़र आ रहे थे और ये फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह तआला के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, अरब के लिये तबाही इस शर से आएगी जिसके वाक़ेअ होने का ज़माना क़रीब आ गया है, आज याजूज माजूज की दीवार में इतना शिगाफ़ पैदा हो गया है और आपने उँगलियों से हल्क़ा बनाकर उसकी वज़ाहत की। उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! हममें नेक लोग होंगे फिर भी हम हलाक कर दिये जाएँगे? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ जब ख़बाषतें बढ़ जाएँगी (तो ऐसा होगा) (राजेअ : 3346)

٣٥٩٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ حَدَّثَتْهُ أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ بِنْتَ أَبِي سُفْيَانَ حَدَّثَتْهَا عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا فَزِعًا يَقُولُ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ: فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هَذَا. وَحَلَّقَ بِإِصْبَعِهِ وَبِالَّتِي تَلِيهَا)). فَقَالَتْ زَيْنَبُ: فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَنَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ، إِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ)).

[راجع: ٣٣٤٦]

3599. और ज़ुहरी से रिवायत है। उनेस हिन्द बिन्तुल हारिष़ ने

٣٥٩٩- وَعَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَتْنِي هِنْدُ

بِنْتُ الْحَارِثِ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ قَالَتْ: اسْتَيْقَظَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((سُبْحَانَ اللهِ مَاذَا أُنْزِلَ مِنَ الْخَزَائِنِ، وَمَاذَا أُنْزِلَ مِنَ الْفِتَنِ)). [راجع: ١١٥]

बयान किया, उन्होंने कहा कि हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) बेदार हुए तो फ़र्माया, सुब्हानल्लाह! कैसे कैसे ख़ज़ाने उतरे हैं (जो मुसलमानों को मिलेंगे) और क्या क्या फ़ित्ने व फ़साद उतरे हैं। (राजेअ़ : 115)

जिनमें मुसलमान मुब्तला होंगे। फ़ुतूहाते इस्लामी और बाहमी झगड़े दोनों के लिये आपने पेशीनगोई फ़र्माई जो हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हुई।

٣٦٠٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ الْمَاجِشُونِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَعْصَعَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِي: إِنِّي أَرَاكَ تُحِبُّ الْغَنَمَ وَتَتَّخِذُهَا، فَأَصْلِحْهَا وَأَصْلِحْ رُعَامَهَا، فَإِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ تَكُونُ الْغَنَمُ فِيهِ خَيْرَ مَالِ الْمُسْلِمِ يَتْبَعُ بِهَا شَعَفَ الْجِبَالِ - أَوْ سَعَفَ الْجِبَالِ - فِي مَوَاقِعِ الْقَطْرِ، يَفِرُّ بِدِينِهِ مِنَ الْفِتَنِ)). [راجع: ١٩]

3600. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी सलमा बिन माजिशून ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी सअ़सआ ने, उनसे उनके वालिद ने कहा, उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं देख रहा हूँ कि तुम्हें बकरियों से बहुत मुहब्बत है और तुम उन्हें पालते हो तो तुम उनकी निगाहदाश्त अच्छी किया करो और उनकी नाक की सफ़ाई का भी ख़याल रखा करो क्योंकि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि लोगों पर ऐसा ज़माना गुज़रेगा कि मुसलमान का सबसे उम्दा माल उसकी बकरियाँ होंगी जिन्हें लेकर वो पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ जाएगा या (आपने शअ़फ़ल जिबाल के लफ़्ज़ फ़र्माए) वो बारिश गिरने की जगह में चला जाएगा। इस तरह वो अपने दीन को फ़ित्नों से बचाने के लिये भागता फिरेगा। (राजेअ : 19)

अहदे नुबुव्वत के बाद जो ख़ानगी फ़ित्ने मुसलमनों में पैदा हुए उनसे हुज़ूर (ﷺ) की पेशीनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह षाबित होती है।

٣٦٠١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ الأُوَيْسِيُّ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((سَتَكُونُ فِتَنٌ الْقَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ، وَالْقَائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْمَاشِي، وَالْمَاشِي فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي، وَمَنْ يُشْرِفْ لَهَا تَسْتَشْرِفْهُ، وَمَنْ وَجَدَ مَلْجَأً أَوْ مَعَاذًا فَلْيَعُذْ بِهِ)).[طرفاه في: ٧٠٨١، ٧٠٨٢].

3601. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवेसी ने बयान किया। उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे स़ालेह बिन कीसान ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्नुल मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, फ़ित्नों का दौर जब आएगा तो उसमें बैठने वाला खड़ा रहने वाले से बेहतर होगा। खड़ा रहने वाला चलने वाले से बेहतर होगा और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा जो उसमें झांकेगा फ़ित्ना उसे भी उचक लेगा और उस वक़्त जिसे जहाँ भी पनाह मिल जाए बस वहीं पनाह पकड़ ले ताकि अपने दीन को फ़ित्नों से बचा सके। (दीगर मक़ाम : 8071, 8072)

3 602. और इब्ने शिहाब से रिवायत है, उनसे अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन हारिष़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मुत़ीअ़ बिन अस्वद ने और उनसे नौफ़िल बिन मुआ़विया ने अबू हुरैरह (रज़ि.) की उसी ह़दीष़ की त़रह अल्बत्ता अबूबक्र (रावी ह़दीष़) ने इस रिवायत में इतना और ज़्यादा बयान किया कि नमाज़ों में एक नमाज़ ऐसी है कि जिससे वो छूट जाए गोया उसका घर बार सब बर्बाद हो गये। (और वो अ़स्र की नमाज़ है)

٣٦٠٢- وَعَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنُ مُطِيعِ بْنِ الأَسْوَدِ عَنْ نَوْفَلِ بْنِ مُعَاوِيَةَ مِثْلِ حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ هَذَا، إِلاَّ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ يَزِيدُ: ((مِنَ الصَّلاَةِ صَلاَةٌ مَنْ فَاتَتْهُ فَكَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلَهُ وَمَالَهُ)).

3603. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें ज़ैद बिन वहब ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे बाद तुम पर एक ऐसा ज़माना आएगा जिसमें तुम पर दूसरों को मुक़द्दम किया जाएगा और ऐसी बातें सामने आएँगी जिनको तुम बुरा समझोगे, लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! उस वक़्त हमें आप क्या हुक्म फ़र्माते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो हुक़ूक़ तुम पर दूसरों के वाजिब हों उन्हें अदा करते रहना और अपने हुक़ूक़ अल्लाह ही से मांगना। (या'नी स़ब्र करो और अपना ह़क़ लेने के लिये ख़लीफ़ा और ह़ाकिमे वक़्त से बग़ावत न करना)। (दीगर मक़ाम : 7052)

٣٦٠٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((سَتَكُونُ أَثَرَةٌ وَأُمُورٌ تُنْكِرُونَهَا. قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: تُؤَدُّونَ الْحَقَّ الَّذِي عَلَيْكُمْ، وَتَسْأَلُونَ اللهَ الَّذِي لَكُمْ)).

[طرفه في : ٧٠٥٢].

3604. मुझसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमसे अबू मअ़मर इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने, उनसे अबू ज़रआ़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, इस क़बील-ए-क़ुरैश के कुछ आदमी लोगों को हलाक व बर्बाद कर देंगे। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया, ऐसे वक़्त के लिये आप हमें क्या हुक्म देते हैं? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, काश! लोग उनसे बस अलग ही रहते। महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया कि हमसे अबू दाऊद त़ियालिसी ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें अबुत तियाह ने, उन्होंने अबू ज़रआ़ से सुना। (दीगर मक़ाम : 3605, 7057)

٣٦٠٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُهْلِكُ النَّاسَ هَذَا الْحَيُّ مِنْ قُرَيْشٍ. قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ : لَوْ أَنَّ النَّاسَ اعْتَزَلُوهُمْ)). قَالَ مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا وَأَبُو دَاوُدَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ سَمِعْتُ أَبَا زُرْعَةَ.[طرفاه في : ٣٦٠٥، ٧٠٥٨].

3605. मुझसे अह़मद बिन मुहम्मद मक्की ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन यह़्या बिन सईद उमवी ने बयान किया, उनसे उनके

٣٦٠٥- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْمَكِّيُّ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ

दादा ने बयान किया कि मैं मरवान बिन हकम और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के साथ था, उस वक़्त मैंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने सच्चों के सच्चे रसूले करीम (ﷺ) से सुना है, आप फ़र्मा रहे थे कि मेरी उम्मत की बर्बादी क़ुरैश के चन्द लड़कों के हाथों पर होगी। मरवान ने पूछा, नौजवान लड़कों के हाथ पर? इस पर अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम चाहो तो मैं उनके नाम भी ले दूँ कि वो बनी फ़लाँ और बनी फ़लाँ होंगे। (राजेअ : 3604)

الأَمْوِيُّ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: كُنْتُ مَعَ مَرْوَانَ وَأَبِي هُرَيْرَةَ فَسَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: سَمِعْتُ الصَّادِقَ الْمَصْدُوقَ يَقُولُ: ((هَلاَكُ أُمَّتِي عَلَى يَدَيْ غِلْمَةٍ مِنْ قُرَيْشٍ)). فَقَالَ مَرْوَانُ: غِلْمَةٌ؟ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : إِنْ شِئْتَ أَنْ أُسَمِّيَهُمْ، بَنِي فُلاَنٍ وَبَنِي فُلاَنٍ)). [راجع: ٣٦٠٤]

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) ने उनके नाम भी बतलाये होंगे तभी तो अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते थे कि 60 हिजरी से या अल्लाह! मुझको बचाए रखना और छोकरों की हुकूमत से बचाना। यही साल यज़ीद के बादशाह होने का है। अकषर नौजवान तजुर्बात से नहीं गुज़रने पाते, इसलिये बसा औक़ात सयादत व क़यादत में वो मुख़िब या'नी ख़राबियाँ पैदा करने वाले षाबित होते हैं। यही वजह है कि अकषर रसूलों को मुक़ामे रिसालत चालीस साल की उम्र के बाद ही दिया गया है।

3606. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने जाबिर ने, कहा कि मुझसे बुस्र बिन उबैदुल्लाह हज़री ने, कहा कि मुझसे अबू इदरीस ख़ौलानी ने बयान किया, उन्होंने हुजैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि दूसरे सहाबा किराम तो रसूलुल्लाह (ﷺ) से ख़ैर के बारे में सवाल किया करते थे लेकिन मैं शर के बारे में पूछता था इस डर से कि कहीं मैं उनमें न फंस जाऊँ। तो मैंने एक मर्तबा रसूले करीम (ﷺ) से सवाल किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम जाहिलियत और शर के ज़माने में थे। फिर अल्लाह तआला ने हमें ये ख़ैरो—बरकत (इस्लाम की) अता की, अब क्या इस ख़ैर के बाद फिर शर का कोई ज़माना आएगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। मैंने सवाल किया, और उस शर के बाद फिर ख़ैर का कोई ज़माना आएगा? आपने फ़र्माया कि हाँ, लेकिन उस ख़ैर पर कुछ धुँआ होगा। मैंने अर्ज़ किया वो धुँआ क्या होगा? आपने जवाब दिया कि ऐसे लोग पैदा होंगे जो मेरी सुन्नत और तरीक़े के अलावा दूसरे तरीक़े इख़्तियार करेंगे, उनमें कोई बात अच्छी होगी कोई बुरी। मैंने सवाल किया, क्या उस ख़ैर के बाद कोई शर का कोई ज़माना आएगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, जहन्नम के दरवाज़ों की तरफ़ बुलाने वाले पैदा होंगे, जो उनकी बात क़ुबूल करेगा उसे वो जहन्नम में फेंक देंगे। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह

٣٦٠٦- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا الْوَلِيْدُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ جَابِرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي بُسْرُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ الْحَضْرَمِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو إِدْرِيْسَ الْخَوْلاَنِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ حُذَيْفَةَ بْنَ الْيَمَانِ يَقُولُ: كَانَ النَّاسُ يَسْأَلُونَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْخَيْرِ، وَكُنْتُ أَسْأَلُهُ عَنِ الشَّرِّ مَخَافَةَ أَنْ يُدْرِكَنِي. فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّا كُنَّا فِي جَاهِلِيَّةٍ وَشَرٍّ، فَجَاءَنَا اللهُ بِهَذَا الْخَيْرِ، فَهَلْ بَعْدَ هَذَا الْخَيْرِ مِنْ شَرٍّ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). قُلْتُ: وَهَلْ بَعْدَ ذَلِكَ الشَّرِّ مِنْ خَيْرٍ؟ قَالَ : ((نَعَمْ وَفِيْهِ دَخَنٌ))، قُلْتُ: وَمَا دَخَنُهُ؟ قَالَ: ((قَومٌ يَهْدُونَ بِغَيْرِ هَدْيِي، تَعْرِفُ مِنْهُمْ وَتُنْكِرُ)). قُلْتُ : فَهَلْ بَعْدَ ذَلِكَ الْخَيْرِ مِنْ شَرٍّ؟ قَالَ: ((نَعَمْ دُعَاةٌ إِلَى أَبْوَابِ جَهَنَّمَ، مَنْ أَجَابَهُمْ إِلَيْهَا

قَذَفُوهُ فِيهَا)). قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ صِفْهُمْ لَنَا. فَقَالَ: ((هُمْ مِنْ جِلْدَتِنَا ، وَيَتَكَلَّمُونَ بِأَلْسِنَتِنَا)). قُلْتُ : فَمَا تَأْمُرُنِي إِنْ أَدْرَكَنِي ذَلِكَ؟ قَالَ: ((تَلْزَمُ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَإِمَامَهُمْ)). قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ جَمَاعَةٌ وَلاَ إِمَامٌ؟ قَالَ: ((فَاعْتَزِلْ تِلْكَ الْفِرَقَ كُلَّهَا، وَلَوْ أَنْ تَعَضَّ بِأَصْلِ شَجَرَةٍ حَتَّى يُدْرِكَكَ الْمَوْتُ وَأَنْتَ عَلَى ذَلِكَ)).

[طرفاه في: ٣٦٠٧، ٧٠٨٤].

(ﷺ)! उनके औसाफ़ भी बयान कर दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो लोग हमारी ही क़ौम व मज़हब के होंगे, हमारी ही ज़ुबान बोलेंगे। मैंने अर्ज़ किया, फिर अगर मैं उन लोगों का ज़माना पाऊँ तो मेरे लिये आपका हुक्म क्या है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुसलमानों की जमाअत और उनके इमाम के ताबेअ रहियो। मैंने अर्ज़ किया अगर मुसलमानों की कोई जमाअत न हो और न उनका कोई इमाम हो। आपने फ़र्माया कि फिर उन तमाम फ़िर्क़ों से अपने को अलग रखना, अगरचे तुझे उसके लिये किसी पेड़ की जड़ चबानी पड़े, यहाँ तक कि तेरी मौत आ जाए और तू उसी हालत पर हो (तो ये तेरे हक़ में उनकी सुहबत में रहने से बेहतर होगा)।
(दीगर मक़ाम : 3607, 7083)

٣٦٠٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنِي قَيْسٌ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ((تَعَلَّمَ أَصْحَابِي الْخَيْرَ، وَتَعَلَّمْتُ الشَّرَّ)). [راجع: ٣٦٠٦]

3607. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा मुझसे यह्या बिन सईद ने, उन्होंने इस्माईल से, कहा मुझसे क़ैस ने बयान किया, उनसे हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे साथियों ने (या'नी सहाबा रज़ि. ने) तो आँहज़रत (ﷺ) से भलाई के हालात सीखे और मैंने बुराई के हालात दरयाफ़्त किये। (राजेअ : 3606)

तश्रीह : हदीष में ऐसे लोगों का ज़िक्र आया है जो हदीषे नबवी पर नहीं चलेंगे। उनकी कोई बात अच्छी होगी कोई बुरी। इस पर हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ साहब लिखते हैं। ये ज़माना गुज़र चुका। मुसलमान नेक काम करते थे, नमाज़ पढ़ते थे मगर उसके साथ इत्तिबाअे सुन्नत का ख़्याल नहीं रखते थे, बहुत सी बिदअतों में गिरफ़्तार थे और सबसे बढ़कर बात ये है कि उन्होंने क़ुर्आन व हदीष को पीठ पीछे डाल दिया था। वो ये समझते थे कि अब क़ुर्आन व हदीष की हाजत नहीं रही, मुज्तहिदों ने सब छान डाला है और जो निकालना था वो निकाल लिया है। क़ुर्आन कभी तीजा या दहुम में बतौरे तबर्रुक पढ़ लेते, तरावीह में क़ुर्आन के लफ़्ज़ सुन लेते, हदीष भी कभी बतौरे तबर्रुक पढ़ लेते, अमल करने की निय्यत से नहीं पढ़ते, बाक़ी सारी उम्र हिदाया और शरह वक़ाया और कंज़ और क़ुदूरी और शरहे मवाहिब और शरहे अक़ाइद में सर्फ़ करते। अरे अल्लाह के बन्दों ! उन सब किताबों से क्या फ़ाइदा? क़ुर्आन और सहीह बुख़ारी अपने बच्चों को समझकर पढ़ाते तो ये दोनों किताबें तुमको काफ़ी थीं। इस हदीष में कुछ ओर लोगों की निशानदेही की गई है जो बज़ाहिर इस्लाम ही का नाम लेंगे मगर बातिन में दोज़ख़ के दाई होंगे। या'नी दिल में पक्के काफ़िर और मुल्हिद होंगे उनसे वो मग़्रिबज़दा लोग भी मुराद हो सकते हैं जो इस्लाम का नाम लेने के बावजूद मग़्रिबी तहज़ीब के दिलदादा हैं और इस्लाम पर हंसी उड़ाते हैं। इस्लाम को दक़ियानूसी मज़हब और क़ुर्आन को दक़ियानूसी किताब कहते हैं । दिन–रात मग़्रिबी तहज़ीब की ख़ूबियों के गीत गाते रहते हैं और सर से पैर तक अंग्रेज़ बनने को फ़ख़्र समझते हैं, उन ही की तरह खाते हैं और उनकी तरह खड़े पैशाब करते हैं। अल्ग़र्ज़ तहज़ीबे जदीद के ये दिलदादा जिन्होंने इस्लाम को क़त्अन छोड़ दिया है फिर भी इस्लाम का नाम लेते हैं ये सौ फ़ीसदी इस हदीष में वारिद वईदे शदीद के मिस्दाक़

हैं (शरह वहीदी)। इस हदीष़ में पेशीनगोई का एक ख़ास ता'ल्लुक़ ख़्वारिज से है जो हज़रत अली (रज़ि.) के ख़िलाफ़ बग़ावत का झण्डा बुलन्द करके खड़े हो गये थे और जो बज़ाहिर क़ुर्आन मजीद का नाम लेते और आयत, **इनिल हुक्मु इल्ला लिल्लाह** (अल अन्आम : 57) पढ़कर हज़रत अली (रज़ि.) की तक्फ़ीर करते थे। उन लोगों ने इस्लाम को शदीद नुक़्सान पहुँचाया और उन लोगों ने भी जो हज़रत अली (रज़ि.) की मुहब्बत में ग़ुलू करके ग़लततरीन अक़ाइद में मुब्तला हो गये।

3608. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा मुझे अबू सलमा ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक दो जमाअतें (मुसलमानों की) आपस में जंग न कर लें और दोनों का दा'वा एक होगा (कि वो हक़ पर हैं)।

(राजेअ : 85)

٣٦٠٨- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَقْتَتِلَ فِئَتَانِ دَعْوَاهُمَا وَاحِدَةٌ)).

[راجع: ٨٥]

तश्रीह : दोनों ये दा'वा करेंगे कि हम मुसलमान हैं और हक़ पर लड़ते हैं अगरचे नफ़्सुल अम्र में एक हक़ पर होगा और दूसरा नाहक़ पर। ये पेशीनगोई आपने उस लड़ाई की फ़र्माई जो हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत मुआविया (रज़ि.) में हुई। दोनों तरफ़ वाले मुसलमान थे और हक़ पर लड़ने का दा'वा करते थे।

और ख़ुद हज़रत अली (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि उन्होंने हज़रत मुआविया (रज़ि.) और उनके गिरोह के बारे में ख़ुद फ़र्माया कि वो हमारे भाई हैं जिन्होंने हम पर बग़ावत की, वो काफ़िर या फ़ासिक़ नहीं हैं (वहीदी)। उन वाक़ियात में आज के नामोनिहाद उलमा के लिये भी सबक़ है जो ज़रा ज़रा सी बातों पर आपस में तक़्फ़ीर व तफ़्सीक़ के गोले फेंकने लग जाते हैं। इस तरह उम्मत के शीराज़े को मुंतशिर करते हैं। अल्लाह पाक ऐसे मुद्दईयाने इल्म को फ़हम व फ़रासत अता करे कि वो वक़्त का मिज़ाज पहचानें और शीराज़-ए-मिल्लत को समेटने की कोशिश करें। अगर ऐसा न किया गया तो वो वक़्त आ रहा है कि उम्मत की तबाही के साथ ऐसे उम्मत के नामो-निहाद रहनुमा भी फ़ना के घाट उतार दिये जाएँगे और मिल्लत की बर्बादी का गुनाह उनके सरों पर होगा। आज 22 शव्वाल 1391 हिजरी को मस्जिद अहले हदीष़ हिरलापुर हरीहर में ये नोट क़लम के हवाले किया गया। **रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउल्अलीम आमीन!**

3609. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक दो जमाअतें आपस में जंग न कर लें। दोनों में बड़ी भारी जंग होगी, हालाँकि दोनों का दा'वा एक ही होगा और क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक तक़रीबन तीस झूठे दज्जाल पैदा न हो लें। उनमें हर एक का यही गुमान होगा कि वो अल्लाह का नबी है।

(राजेअ : 85)

٣٦٠٩- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَقْتَتِلَ فِئَتَانِ فَيَكُونُ بَيْنَهُمَا مَقْتَلَةٌ عَظِيمَةٌ، دَعْوَاهُمَا وَاحِدَةٌ. وَلاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يُبْعَثَ دَجَّالُونَ كَذَّابُونَ قَرِيبًا مِنْ ثَلاَثِينَ، كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ رَسُولُ اللهِ)).

[راجع: ٨٥]

उनमें से अकषर पैदा हो चुके हैं जिनका ज़िक्र तवारीख़े इस्लाम के सफ़्हात पर मौजूद है। एक साहब हिन्दुस्तान में भी पैदा हो चुके हैं जिन्होंने नुबुव्वत व रिसालत का दा'वा करके एक ख़ल्क़े कषीर को गुमराह कर डाला था। अल्लाहुम्महदिहिम दो जमाअतों का इशारा जंगे सिफ़्फ़ीन की तरफ़ है जो दो मुस्लिम जमाअतों ही के दरम्यान हुई थी जैसा कि अभी बयान हुआ है।

3610. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझको अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद थे और आप (जंगे हुनैन का माले ग़नीमत) तक़्सीम फ़र्मा रहे थे इतने में बनी तमीम का एक शख़्स ज़ुल् ख़ुवेसिर नामी आया और कहने लगा कि या रसूलल्लाह! इंसाफ़ से काम लीजिए। ये सुनकर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! अगर मैं ही इंसाफ़ न करूँगा तो दुनिया में फिर कौन इंसाफ़ करेगा। अगर मैं ज़ालिम हो जाऊँगा जब तो मेरी भी तबाही और बर्बादी हो जाए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया हुज़ूर! उसके बारे में मुझे इजाज़त दें मैं इसकी गर्दन मार दूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे छोड़ दो। उसके जोड़ के कुछ लोग पैदा होंगे कि तुम अपनी नमाज़ को उनकी नमाज़ के मुक़ाबले में (बज़ाहिर) हक़ीर समझोगे और तुम अपने रोज़ों को उनके रोज़ों के मुक़ाबिल नाचीज़ समझोगे। वो क़ुर्आन की तिलावत करेंगे लेकिन वो उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा। ये लोग दीन से इस तरह निकल जाएँगे जैसे ज़ोरदार तीर जानवर से पार हो जाता है। इस तीर के फल को अगर देखा जाए तो उसमें कोई चीज़ (ख़ून वग़ैरह) नज़र न आएगी फिर उसके पट्ठे को अगर देखा जाए तो छड़ में उसके फल के दाख़िल होने की जगह से ऊपर जो लगाया जाता है तो वहाँ भी कुछ न मिलेगा, उसके नज़ी (नज़ी तीर में लगाई जाने वाली लकड़ी को कहते हैं) को देखा जाए तो वहाँ भी कुछ निशान नहीं मिलेगा। इसी तरह अगर उसके पर को देखा जाए तो उसमें भी कुछ नहीं मिलेगा हालाँकि गंदगी और ख़ून से वो तीर गुज़रा है। उनकी अलामत एक काला शख़्स होगा। उसका एक बाज़ू औरत के पिस्तान की तरह (उठा हुआ) होगा या गोश्त के लोथड़े की तरह होगा और हरकत कर रहा होगा। ये लोग

٣٦١٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا سَعِيْدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- وَهُوَ يَقْسِمُ قَسْمًا - إِذْ أَتَاهُ ذُو الْخُوَيْصِرَةِ وَهُوَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَمِيْمٍ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ اعْدِلْ. فَقَالَ: ((وَيْلَكَ، وَمَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ أَعْدِلْ، قَدْ خِبْتُ وَخَسِرْتُ إِنْ لَمْ أَكُنْ أَعْدِلُ)). فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللهِ، ائْذَنْ لِي فِيْهِ فَأَضْرِبَ عُنُقَهُ، فَقَالَ : ((دَعْهُ فَإِنَّ لَهُ أَصْحَابًا يَحْقِرُ أَحَدُكُمْ صَلاَتَهُ مَعَ صَلاَتِهِمْ، وَصِيَامَهُ مَعَ صِيَامِهِمْ، يَقْرَؤُونَ الْقُرْآنَ لاَ يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ، يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّيْنِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَةِ، يُنْظَرُ إِلَى نَصْلِهِ فَلاَ يُوجَدُ فِيْهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى رِصَافِهِ فَمَا يُوجَدُ فِيْهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى نَضِيِّهِ - وَهُوَ قِدْحُهُ - فَلاَ يُوجَدُ فِيْهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى قُذَذِهِ فَلاَ يُوجَدُ فِيْهِ شَيْءٌ، قَدْ سَبَقَ الْفَرْثَ وَالدَّمَ، آيَتُهُمْ رَجُلٌ أَسْوَدُ إِحْدَى عَضُدَيْهِ مِثْلُ ثَدْيِ الْمَرْأَةِ، أَوْ مِثْلُ الْبَضْعَةِ تَدَرْدَرُ، وَيَخْرُجُونَ عَلَى حِيْنِ فُرْقَةٍ مِنَ النَّاسِ)). قَالَ أَبُو سَعِيْدٍ: فَأَشْهَدُ أَنِّي سَمِعْتُ هَذَا

मुसलमानों के बेहतरीन गिरोह से बग़ावत करेंगे। हज़रत अबू सईद (रज़ि.) ने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने ये हदीष़ रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थी और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने उनसे जंग की थी (या'नी ख़्वारिज़ से) उस वक़्त मैं भी हज़रत अली (रज़ि.) के साथ था और उन्होंने उस शख़्स को तलाश कराया (जिसे आँहज़रत ﷺ ने उस गिरोह की अलामत के तौर पर बतलाया था) आख़िर वो लाया गया। मैंने उसे देखा तो उसका पूरा हुलिया बिलकुल आँहज़रत (ﷺ) के बयान किये हुए औसाफ़ के मुताबिक़ था। (राजेअ : 3344)

الْحَدِيْثَ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَشْهَدُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ قَاتَلَهُمْ وَأَنَا مَعَهُ، فَأَمَرَ بِذَلِكَ الرَّجُلِ فَالْتُمِسَ بِهِ، حَتَّى نَظَرْتُ إِلَيْهِ عَلَى نَعْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِي نَعَتَهُ)).

[راجع: ٣٣٤٤]

तशरीह : या'नी जिस तरह एक तीर कमान से निकलने के बाद शिकार को छेदता हुआ गुज़र जाने पर भी बिलकुल साफ़ शफ्फ़ाफ़ नज़र आता है हालाँकि उससे शिकार ज़ख़्मी होकर ख़ाक व ख़ून मे तड़प रहा है। चूँकि निहायत तेज़ी के साथ उसने अपना फ़ासला तै किया है इसलिये ख़ून वग़ैरह का कोई अष़र उसके किसी हिस्से पर दिखाई नहीं देता। इसी तरह वो लोग भी दीन से बहुत दूर होंगे लेकिन बज़ाहिर बेदीनी के अष़रात उनमें कहीं नज़र न आएँगे। ये मर्दूद ख़ारजी थे जो हज़रत अली (रज़ि.) और मुसलमानों के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए थे। ज़ाहिर में अहले कूफ़ा की तरह बड़े नमाज़ी परहेज़गार, अदना अदना बात पर मुसलमानों को काफ़िर बनाना उनके बाईं हाथ का करतब था, हज़रत अली (रज़ि.) ने उन मर्दूदों को मारा, उनमें का एक ज़िन्दा न छोड़ा। मा'लूम हुआ कि क़ुर्आन को ज़ुबान से रटना, मतालिब व मआनी में ग़ौर न करना ये ख़ारजियों का शैवा है और आयाते क़ुरानिया का बेमहल इस्ते'माल करना भी बदतरीन हरकत है। अल्लाह की पनाह।

3611. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी उन्हें आ'मश ने, उन्हें ख़ैष़मा ने, उनसे सुवैद बिन ग़फ़्ला ने बयान किया कि हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा, जब तुमसे कोई बात रसूलुल्लाह (ﷺ) के हवाले से मैं बयान करूँ तो ये समझो कि मेरे लिये आसमान से गिर जाना उससे बेहतर है कि मैं आँहज़रत (ﷺ) पर कोई झूठ बाँधूं। अल्बत्ता जब मैं अपनी तरफ़ से कोई बात तुमसे कहूँ तो लड़ाई तो तदबीर और फ़रेब ही का नाम है (उसमे कोई बात बनाकर कहूँ तो मुम्किन है)। देखो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़र्माते थे कि आख़िर ज़माने में कुछ लोग ऐसे पैदा होंगे जो छोटे छोटे दांतों वाले, कम अक़्ल और बेवक़ूफ़ होंगे। बातें वो कहेंगे जो दुनिया की बेहतरीन बात होगी, लेकिन इस्लाम से इस तरह साफ़ निकल चुके होंगे जैसे तीर जानवर के पार निकल जाता है। उनका ईमान उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा, तुम उन्हें जहाँ भी पाओ क़त्ल करो। क्योंकि उनके क़त्ल से क़ातिल के लिये क़यामत के दिन ष़वाब मिलेगा।

٣٦١١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ خَيْثَمَةَ عَنْ سُوَيْدِ بْنِ غَفَلَةَ قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: إِذَا حَدَّثْتُكُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ فَلأَنْ أَخِرَّ مِنَ السَّمَاءِ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَكْذِبَ عَلَيْهِ. وَإِذَا حَدَّثْتُكُمْ فِيمَا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ فَإِنَّ الْحَرْبَ خَدْعَةٌ. سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يَأْتِي فِي آخِرِ الزَّمَانِ قَوْمٌ حُدَثَاءُ الأَسْنَانِ، سُفَهَاءُ الأَحْلاَمِ، يَقُولُونَ مِنْ خَيْرِ قَوْلِ الْبَرِيَّةِ. يَمْرُقُونَ مِنَ الإِسْلاَمِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ لاَ يُجَاوِزُ إِيْمَانُهُمْ حَنَاجِرَهُمْ فَأَيْنَمَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ. فَإِنَّ قَتْلَهُمْ أَجْرًا لِمَنْ قَتَلَهُمْ

(दीगर मक़ाम : 5057, 6930)

يومِ الْقِيَامَةِ)). [طرفاه في: ٥٠٥٧، ٦٩٣٠].

तश्रीह : कहेंगे क़ुर्आन पर चलो, क़ुर्आन की आयतें पढ़ेंगे, उनका मा'नी ग़लत़ करेंगे, उनसे ख़ारजी मर्दूद मुराद हैं। ये लोग जब निकले तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से कहते थे कि क़ुर्आन पर चलो, अल्लाह तआला फ़र्माता है **इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि** (अल अन्आम : 57) तुमने आदमियों को कैसे हकम मुक़र्रर किया है और उस बिना पर मुआविया और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) दोनों की तक्फ़ीर करते थे। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने फ़र्माया, **कलिमतु हक़्क़िन उरीद बिहल्बातिल** या'नी आयते क़ुर्आन तो बरह़क़ है मगर जो मतलब उन्होंने समझा है। वो ग़लत़ है। जितने गुमराह फ़िर्क़े हैं वो सब अपनी दानिस्त में क़ुर्आन से दलील लाते हैं मगर उनकी गुमराही उससे खुल जाती है कि क़ुर्आन की तफ़्सीर इस त़रह़ नहीं करते जो आँह़ज़रत (ﷺ) और सह़ाबा किराम से माषूर है जिन पर क़ुर्आन उतरा था और जो अहले ज़ुबान थे। ये कल के लौण्डे क़ुर्आन समझ गये और स़ह़ाबा और ताबेईन और ख़ुद पैग़म्बर स़ाह़ब जिन पर क़ुर्आन उतरा था उन्होंने नहीं समझा, ये भी कोई बात है। आजकल के अहले बिदअत का भी यही ह़ाल है जो आयाते क़ुर्आनी से अपने अ़क़ाइदे बात़िला के इष्बात के लिये दलाइल पेश करके आयाते क़ुर्आनी के मा'नी व मत़ालिब मस्ख़ करके रख देते हैं। (वह़ीदी)

3612. मुझसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, कहा हमसे क़ैस ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से शिकायत की। आप उस वक़्त अपनी एक चादर पर टेक दिये का'बा के साये में बैठे हुए थे। हमने आपकी ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि आप हमारे लिये मदद क्यूँ नहीं त़लब करते, हमारे लिये अल्लाह से दुआ क्यूँ नहीं मांगते (हम काफ़िरों की ईज़ादेही से तंग आ चुके हैं) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया (ईमान लाने की सज़ा में) तुमसे पहली उम्मतों के लोगों के लिये गड्ढा खोदा जाता और उन्हें उसमें डाल दिया जाता। फिर उनके सर पर आरा रखकर उनके दो टुकड़े कर दिये जाते फिर भी वो अपने दीन से न फिरते। लोहे के कँघे उनके गोश्त में धंसाकर उनकी हड्डियों और पुट्ठों पर फेरे जाते फिर भी वो अपना ईमान न छोड़ते। अल्लाह की क़सम कि ये अम्र (इस्लाम) भी कमाल को पहुँचेगा और एक ज़माना आएगा कि एक सवार मक़ामे स़नआ से ह़ज़रे मौत तक सफ़र करेगा (लेकिन रास्तों के पुरअमन होने की वजह से) उसे अल्लाह के सिवा और किसी का डर नहीं होगा। या स़िर्फ़ भेड़िये का डर होगा कि कहीं उसकी बकरियों को न खा जाए लेकिन तुम लोग जल्दी करते हो।

(दीगर मक़ाम : 3752, 6943)

٣٦١٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنِي يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا قَيْسٌ عَنْ خَبَّابِ بْنِ الأَرَتِّ قَالَ: شَكَوْنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ- وَهُوَ مُتَوَسِّدٌ بُرْدَةً لَهُ فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ - قُلْنَا لَهُ: أَلاَ تَسْتَنْصِرُ لَنَا، أَلاَ تَدْعُو اللهَ لَنَا؟ قَالَ: ((كَانَ الرَّجُلُ فِيمَنْ قَبْلَكُمْ يُحْفَرُ لَهُ فِي الأَرْضِ فَيُجْعَلُ فِيهِ، فَيُجَاءُ بِالْمِنْشَارِ فَيُوضَعُ عَلَى رَأْسِهِ فَيُشَقُّ بِاثْنَتَيْنِ، وَمَا يَصُدُّهُ ذَلِكَ عَنْ دِينِهِ، وَيُمْشَطُ بِأَمْشَاطِ الْحَدِيدِ مَا دُونَ لَحْمِهِ مِنْ عَظْمٍ أَوْ عَصَبٍ، وَمَا يَصُدُّهُ ذَلِكَ عَنْ دِينِهِ. وَاللهِ لَيُتِمَّنَّ هَذَا الأَمْرَ حَتَّى يَسِيرَ الرَّاكِبُ مِنْ صَنْعَاءَ إِلَى حَضْرَمَوْتَ لاَ يَخَافُ إِلاَّ اللهَ، أَوِ الذِّئْبَ عَلَى غَنَمِهِ، وَلَكِنَّكُمْ تَسْتَعْجِلُونَ)).

[طرفاه في : ٣٨٥٢، ٦٩٤٣].

आँह़ज़रत (ﷺ) की ये पेशीनगोई भी अपने वक़्त पर पूरी हो चुकी है और आज सऊ़दी दौर में भी ह़िजाज़ में जो अमन व अमान है वो भी इस पेशीनगोई का मिस्दाक़ क़रार दिया जा सकता है। अल्लाह तआ़ला उस हुकूमत को क़ायम व दायम रखे आमीन।

3613. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अज़्हर बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने बयान किया, उन्हें मूसा बिन अनस ने ख़बर दी और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) को एक दिन ष़ाबित बिन क़ैस (रज़ि.) नहीं मिले तो एक स़हाबी ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं आपके लिये उनकी ख़बर लाता हूँ। चुनाँचे वो उनके यहाँ आए तो देखा कि अपने घर में सर झुकाए बैठे हैं। उसने पूछा कि क्या हाल है? उन्होंने कहा कि बुरा हाल है। उनकी आ़दत थी कि नबी करीम (ﷺ) के सामने आँह़ज़रत (ﷺ) से भी ऊँची आवाज़ में बोला करते थे। उन्होंने कहा इसीलिये मेरा अ़मल ग़ारत हो गया और मैं दोज़ख़ियों में हो गया हूँ। वो स़हाबी आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) को ख़बर दी कि ष़ाबित (रज़ि.) यूँ कह रहे हैं। मूसा बिन अनस (रज़ि.) ने बयान किया, लेकिन दूसरी मर्तबा वही स़हाबी ष़ाबित (रज़ि.) के पास एक बड़ी ख़ुशख़बरी लेकर वापस हुए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया था कि ष़ाबित के पास जाओ और उससे कहो कि वो अहले जहन्नम में से नहीं हैं बल्कि वो अहले जन्नत में से हैं।
(दीगर मक़ाम : 4846)

٣٦١٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَزْهَرُ بْنُ سَعْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ قَالَ: أَنْبَأَنِي مُوسَى بْنُ أَنَسٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ افْتَقَدَ ثَابِتَ بْنَ قَيْسٍ، فَقَالَ رَجُلٌ : يَا رَسُولَ اللهِ أَنَا أَعْلَمُ لَكَ عِلْمَهُ. فَأَتَاهُ فَوَجَدَهُ جَالِسًا فِي بَيْتِهِ مُنَكِّسًا رَأْسَهُ، فَقَالَ : ((مَا شَأْنُكَ؟)) فَقَالَ : شَرٌّ، كَانَ يَرْفَعُ صَوْتَهُ فَوقَ صَوْتِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ. فَأَتَى الرَّجُلُ فَأَخْبَرَهُ أَنَّهُ قَالَ كَذَا وَكَذَا. فَقَالَ مُوسَى بْنُ أَنَسٍ: فَرَجَعَ الْمَرَّةَ الآخِرَةَ بِبِشَارَةٍ عَظِيمَةٍ، فَقَالَ: اذْهَبْ إِلَيْهِ فَقُلْ لَهُ: ((إِنَّكَ لَسْتَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَلَكِنْ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ)).
[طرفه في: ٤٨٤٦].

तश्रीह़ : ष़ाबित बिन क़ैस बिन शमास मशहूर स़हाबी हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) के सच्चे जाँनिष़ारों में से थे। कुछ अफ़राद की बुलन्द आवाज़ से बात करने की आ़दत होती है। ष़ाबित (रज़ि.) की ऐसी ही आदत थी। उसकी मुत़ाबक़त बाब के तर्जुमे से यूँ है कि जैसी आँह़ज़रत (ﷺ) ने ष़ाबित (रज़ि.) को बशारत दी वो सच्ची हुई। ष़ाबित (रज़ि.) जंगे यमामा में शहीद होकर दर्जे-ए-शहादत को पहुँचे। (रजियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु)

3614. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने और उन्होंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि एक स़हाबी (उसैद बिन हुज़ैर रज़ि.) ने (नमाज़ में) सूरह कहफ़ की तिलावत की, उसी घर में घोड़ा बँधा हुआ था, घोड़े ने उछलना कूदना शुरू कर दिया। (उसैद ने इधर ख़्याल न किया उसको अल्लाह के सुपुर्द किया) उसके बाद जब उन्होंने सलाम फेरा तो देखा कि बादल के एक टुकड़े ने उनके सारे घर पर साया कर रखा है। इस वाक़िया का बयान उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि क़ुर्आन पढ़ता ही रह क्योंकि ये सकीना है जो क़ुर्आन की वजह से नाज़िल हुई या (उसके बजाय रावी ने) तनज़्ज़लत लिल् क़ुर्आन के अल्फ़ाज़ कहे।

٣٦١٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَرَأَ رَجُلٌ الْكَهْفَ وَفِي الدَّارِ الدَّابَّةُ، فَجَعَلَتْ تَنْفِرُ، فَسَلَّمَ، فَإِذَا ضَبَابَةٌ أَوْ سَحَابَةٌ غَشِيَتْهُ، فَذَكَرَهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((اقْرَأْ فُلاَنُ، فَإِنَّهَا السَّكِينَةُ نَزَلَتْ لِلْقُرْآنِ، أَوْ تَنَزَّلَتْ لِلْقُرْآنِ)).

(दीगर मक़ाम : 4839, 5011) [طرفاه في: ٤٨٣٩، ٥٠١١]

दोनों का मफ़्हूम एक ही है। सकीना की तशरीह किताबुत् तफ़्सीर में आएगी इंशाअल्लाह।

3615. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे अहमद बिन यज़ीद बिन इब्राहीम अबुल हसन हिरानी ने, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया और उन्होंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबूबक्र (रजि) मेरे वालिद के पास उनके घर आए और उनसे एक पालान ख़रीदा, फिर उन्होंने मेरे वालिद से कहा कि अपने बेटे के ज़रिये उसे मेरे साथ भेज दो। हज़रत बराअ (रज़ि.) ने बयान किया चुनाँचे मैं उस कजावे को उठाकर आपके साथ चला और मेरे वालिद उसकी क़ीमत के रुपये पर ख़वाने लगे। मेरे वालिद ने उनसे पूछा ऐ अबूबक्र! मुझे वो वाक़िया सुनाओ जब तुमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ारे ष़ौर से हिजरत की थी तो आप दोनों ने वो वक़्त कैसे गुज़ारा था? उस पर उन्होंने बयान किया कि जी हाँ रात भर तो हम चलते रहे और दूसरे दिन सुबह को भी लेकिन जब दोपहर का वक़्त हुआ और रास्ता बिल्कुल सुनसान पड़ गया कि कोई भी आदमी गुज़रता हुआ दिखाई नहीं देता था तो हमें एक लम्बी चट्टान दिखाई दी, उसके साये में धूप नहीं थी। हम वहाँ उतर गये और मैंने ख़ुद नबी करीम (ﷺ) के लिये एक जगह अपने हाथ से ठीक कर दी और एक चादर वहाँ बिछा दी, फिर मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप यहाँ आराम फ़र्माएं मैं निगरानी करूँगा। आँहज़रत (ﷺ) सो गये और मैं चारों तरफ़ हालात देखने के लिये निकला। इत्तिफ़ाक़ से मुझे एक चरवाहा मिला। वो भी अपनी बकरियों के रेवड़ को उसी चट्टान के साये में लाना चाहता था जिसके तले मैंने वहाँ पड़ाव डाला था, वही उसका भी इरादा था, मैंने उससे पूछा कि तू किस क़बीले से है? उसने बताया कि मदीना या (रावी ने कहा कि) मक्का के फ़लाँ शख़्स से। मैंने उससे पूछा, क्या तेरी बकरियों से दूध मिल सकता है? उसने कहा कि हाँ। मैंने पूछा, क्या हमारे लिये तू दूध निकाल सकता है? उसने कहा

٣٦١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يَزِيْدَ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ أَبُو الْحَسَنِ الْحَرَّانِي حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ يَقُولُ: ((جَاءَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ إِلَى أَبِي فِي مَنْزِلِهِ فَاشْتَرَى مِنْهُ رَحْلاً، فَقَالَ لِعَازِبٍ: ابْعَثْ ابْنَكَ يَحْمِلْهُ مَعِي، قَالَ: فَحَمَلْتُهُ مَعَهُ، وَخَرَجَ أَبِي يَنْتَقِدُ ثَمَنَهُ، فَقَالَ لَهُ أَبِي: يَا أَبَا بَكْرٍ حَدِّثْنِي كَيْفَ صَنَعْتُمَا حِيْنَ سَرَيْتَ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: نَعَمْ، أَسْرَيْنَا لَيْلَتَنَا وَمِنَ الْغَدِ حَتَّى قَامَ قَائِمُ الظَّهِيْرَةِ، وَخَلاَ الطَّرِيْقُ لاَ يَمُرُّ فِيْهِ أَحَدٌ، فَرُفِعَتْ لَنَا صَخْرَةٌ طَوِيْلَةٌ لَهَا ظِلٌّ لَمْ تَأْتِ عَلَيْهِ الشَّمْسُ فَنَزَلْنَا عِنْدَهُ، وَسَوَّيْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَكَانًا بِيَدِي يَنَامُ عَلَيْهِ، وَبَسَطْتُ فِيْهِ فَرْوَةً وَقُلْتُ: نَمْ يَا رَسُولَ اللهِ وَأَنَا أَنْفُضُ لَكَ مَا حَوْلَكَ. فَنَامَ. وَخَرَجْتُ أَنْفُضُ مَا حَوْلَهُ. فَإِذَا أَنَا بِرَاعٍ مُقْبِلٍ بِغَنَمِهِ إِلَى الصَّخْرَةِ يُرِيْدُ مِنْهَا مِثْلَ الَّذِي أَرَدْنَا. فَقُلْتُ: لِمَنْ أَنْتَ يَا غُلاَمُ؟ فَقَالَ: لِرَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْمَدِيْنَةِ - أَوْ مَكَّةَ - قُلْتُ: أَفِي غَنَمِكَ لَبَنٌ؟ قَالَ: نَعَمْ. قُلْتُ: أَفَتَحْلِبُ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَأَخَذَ شَاةً،

فَقُلْتُ: انْفُضِ الضَّرْعَ مِنَ التُّرَابِ وَالشَّعَرِ وَالْقَذَى. قَالَ: فَرَأَيْتُ الْبَرَاءَ يَضْرِبُ إِحْدَى يَدَيْهِ عَلَى الأُخْرَى يَنْفُضُ. فَحَلَبَ فِي قَعْبٍ كُثْبَةً مِنْ لَبَنٍ، وَمَعِي إِدَاوَةٌ حَمَلْتُهَا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْتَوِي مِنْهَا يَشْرَبُ وَيَتَوَضَّأُ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَكَرِهْتُ أَنْ أُوقِظَهُ، فَوَافَقْتُهُ حِينَ اسْتَيْقَظَ، فَصَبَبْتُ مِنَ الْمَاءِ عَلَى اللَّبَنِ حَتَّى بَرَدَ أَسْفَلُهُ، فَقُلْتُ: اشْرَبْ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ فَشَرِبَ حَتَّى رَضِيتُ. ثُمَّ قَالَ: ((أَلَمْ يَأْنِ لِلرَّحِيلِ؟)) قُلْتُ: بَلَى.

قَالَ: فَارْتَحَلْنَا بَعْدَ مَا مَالَتِ الشَّمْسُ، وَاتَّبَعَنَا سُرَاقَةُ بْنُ مَالِكٍ، فَقُلْتُ: أُتِينَا يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَالَ: ((لاَ تَحْزَنْ، إِنَّ اللهَ مَعَنَا)). فَدَعَا عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَارْتَطَمَتْ بِهِ فَرَسُهُ إِلَى بَطْنِهَا - أُرَى فِي جَلَدٍ مِنَ الأَرْضِ، شَكَّ زُهَيْرٌ - فَقَالَ: إِنِّي أُرَاكُمَا قَدْ دَعَوْتُمَا عَلَيَّ، فَادْعُوَا اللهَ لِي، فَاللهُ لَكُمَا أَنْ أَرُدَّ عَنْكُمَا الطَّلَبَ. فَدَعَا لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَجَا. فَجَعَلَ لاَ يَلْقَى أَحَدًا إِلاَّ قَالَ: كَفَيْتُكُمْ مَا هُنَا، فَلاَ يَلْقَى أَحَدًا إِلاَّ رَدَّهُ، قَالَ: وَوَفَى لَنَا)).

[راجع: ٢٤٣٩]

कि हाँ, चुनाँचे वो एक बकरी पकड़ के लाया। मैंने उससे कहा कि पहले थन को मिट्टी, बाल और दूसरी गंदगियों से स़ाफ़ कर ले। अबू इस्ह़ाक़ रावी ने कहा कि मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) को देखा कि उन्होंने अपने एक हाथ को दूसरे पर मारकर थन को झाड़ने की सूरत बयान की। उसने लकड़ी के एक प्याले में दूध निकाला। मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) के लिये एक बर्तन अपने साथ रख लिया था, आप उससे पानी पिया करते थे और वुज़ू भी कर लेते। फिर मैं आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आया (आप सो रहे थे) मैं आपको जगाना पसन्द नहीं करता था लेकिन बाद में जब मैं आया तो आप बेदार हो चुके थे, मैंने पहले दूध के बर्तन पर पानी बहाया जब उसके नीचे का हिस़्स़ा ठण्डा हो गया तो मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! दूध पी लीजिए। उन्होंने बयान किया कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने दूध नोश फ़र्माया जिससे मुझे ख़ुशी ह़ासिल हुई। फिर आपने फ़र्माया कि अभी कूच करने का वक़्त नहीं आया? मैंने अ़र्ज़ किया कि आ गया है। उन्होंने कहा कि जब सूरज ढल गया तो हमने कूच किया। बाद में सुराक़ा बिन मालिक हमारा पीछा करता हुआ यहीं पहुँचा। मैंने कहा ह़ुज़ूर! अब तो ये हमारे क़रीब ही पहुँच गया है। आपने फ़र्माया कि ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है। आपने फिर उसके लिये बद्दुआ की और उसका घोड़ा उसे लिये हुए पेट तक ज़मीन में धंस गया। मेरा ख़याल है कि ज़मीन बड़ी सख़्त थी, ये शक (रावी ह़दीष़) ज़ुहैर को था। सुराक़ा ने कहा, मैं समझता हूँ कि आप लोगों ने मेरे लिये बद्दुआ की है, अगर अब आप लोग मेरे लिये (इस मुस़ीबत से नजात की) दुआ कर दें तो अल्लाह की क़सम मैं आप लोगों की तलाश में आने वाले तमाम लोगों को वापस कर दूँगा। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने फिर दुआ की तो वो नजात पा गया। फिर तो जो भी उसे रास्ते में मिलता उससे वो कहता था कि मैं बहुत तलाश कर चुका हूँ, क़त़ई त़ौर पर वो इधर नहीं हैं। इस त़रह़ जो भी मिलता उसे वो वापस अपने साथ ले जाता। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि उसने हमारे साथ जो वा'दा किया था उसे पूरा किया।

(राजेअ़ : 2439)

हिजरत के वाक़िये में आँहज़रत (ﷺ) से बहुत से मुअजज़ात का ज़ुहूर हुआ जिनकी तफ़्सीलात मुख़्तलिफ़ रिवायतों में नक़ल हुई हैं। यहाँ भी आपके कुछ मुअजज़ात का ज़िक्र है जिससे आपकी सदाक़त और हिक़ायत पर काफ़ी रोशनी पड़ती है। अहले बसीरत के लिये आपके रसूले बरहक़ होने में एक ज़र्रा बराबर भी शक व शुब्हा करने की गुंजाइश नहीं और दिल के अँधों के लिये ऐसे हज़ार निशानात भी नाकाफ़ी हैं।

3616. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुख़्तार ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) एक अअराबी की अयादत के लिये तशरीफ़ ले गये। आप जब भी किसी मरीज़ की अयादत के लिये तशरीफ़ ले जाते तो फ़र्माते कोई हर्ज नहीं, इंशा अल्लाह ये बुख़ार गुनाहों को धो देगा। आपने उस अअराबी से भी यही फ़र्माया कि, कोई हर्ज नहीं इंशाअल्लाह गुनाहों को धो देगा। उसने उस पर कहा। आप कहते हैं गुनाहों को धोने वाला है। हर्गिज़ नहीं। ये तो निहायत शदीद क़िस्म का बुख़ार है या (रावी ने) तषूर कहा (दोनों का मफ़्हूम एक ही है) कि बुख़ार एक बूढ़े खूसट पर जोश मार रहा है। जो क़ब्र की ज़ियारत कराए बग़ैर नहीं छोड़ेगा, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा तो फिर यूँ ही होगा। (दीगर मक़ाम : 5656, 5662, 7470)

٣٦١٦- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُخْتَارٍ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَى أَعْرَابِيٍّ يَعُودُهُ، قَالَ: وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ عَلَى مَرِيضٍ يَعُودُهُ قَالَ: ((لاَ بَأْسَ، طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ)). فَقَالَ لَهُ: ((لاَ بَأْسَ، طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ)). قَالَ: قُلْتُ: طَهُورٌ؟ كَلاَّ، بَلْ هِيَ حُمَّى تَفُورُ - أَوْ تَثُورُ - عَلَى شَيْخٍ كَبِيرٍ، تُزِيرُهُ الْقُبُورَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَنَعَمْ إِذًا)).

[أطرافه في : ٥٦٥٦، ٥٦٦٢، ٧٤٧٠].

तश्रीह : या'नी तू इस बीमारी से मर जाएगा। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने इस हदीष को लाकर उसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया जिसको तबरानी ने निकाला, उसमें ये है कि दूसरे रोज़ वो मर गया। जैसा आपने फ़र्माया था वैसा ही हुआ।

3617. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स पहले ईसाई था, फिर वो इस्लाम में दाख़िल हो गया था। उसने सूरह बक़रः और आले इमरान पढ़ ली थी और वो नबी करीम (ﷺ) का मशो बन गया लेकिन फिर वो शख़्स मुर्तद होकर ईसाई हो गया और कहने लगा कि मुहम्मद (ﷺ) के लिये जो कुछ मैंने लिख दिया है उसके सिवा उसे और कुछ भी मा'लूम नहीं। फिर अल्लाह तआला की हुक्म से उसकी मौत वाक़ेअ हो गई और उसके आदमियों ने उसे दफ़न कर दिया जब सुबह हुई तो उन्होंने देखा कि उसकी लाश क़ब्र से निकलकर ज़मीन के ऊपर पड़ी है। ईसाई लोगों ने कहा कि ये मुहम्मद (ﷺ) और उसके साथियों का काम है। चूँकि उनका दीन

٣٦١٧- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ رَجُلٌ نَصْرَانِيًّا فَأَسْلَمَ وَقَرَأَ الْبَقَرَةَ وَآلَ عِمْرَانَ، فَكَانَ يَكْتُبُ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَعَادَ نَصْرَانِيًّا، فَكَانَ يَقُولُ: مَا يَدْرِي مُحَمَّدٌ إِلاَّ مَا كَتَبْتُ لَهُ، فَأَمَاتَهُ اللهُ، فَدَفَنُوهُ، فَأَصْبَحَ وَقَدْ لَفَظَتْهُ الأَرْضُ، فَقَالُوا: هَذَا فِعْلُ مُحَمَّدٍ وَأَصْحَابِهِ لَمَّا هَرَبَ مِنْهُمْ نَبَشُوا عَنْ صَاحِبِنَا فَأَلْقَوْهُ. فَحَفَرُوا لَهُ فَأَعْمَقُوا، فَأَصْبَحَ وَقَدْ لَفَظَتْهُ

الأَرْضُ، فَقَالُوا: هَذَا فِعْلُ مُحَمَّدٍ وَأَصْحَابِهِ نَبَشُوا عَنْ صَاحِبِنَا لَمَّا هَرَبَ مِنْهُمْ فَأَلْقَوهُ، فَحَفَرُوا لَهُ وَأَعْمَقُوا لَهُ فِي الأَرْضِ مَا اسْتَطَاعُوا، فَأَصْبَحَ قَدْ لَفَظَتْهُ الأَرْضُ، فَعَلِمُوا أَنَّهُ لَيْسَ مِنَ النَّاسِ فَأَلْقَوهُ)).

उसने छोड़ दिया था इसलिये उन्होंने उसकी क़ब्र खोदी है और लाश को बाहर निकालकर फेंक दिया है। चुनाँचे दूसरी क़ब्र उन्होंने खोदी जो बहुत ज़्यादा गहरी थी। लेकिन जब सुबह हुई तो फिर लाश बाहर थी। इस मर्तबा भी उन्होंने यही कहा कि ये मुहम्मद (ﷺ) और उनके साथियों का काम है चूँकि उनका दीन उसने छोड़ दिया था इसलिये उसकी क़ब्र खोदकर उन्होंने लाश बाहर फेंक दी है। फिर उन्होंने क़ब्र खोदी और जितनी गहरी उनके बस में थी करके उसे उसके अंदर डाल दिया लेकिन सुबह हुई तो फिर लाश बाहर थी। अब उन्हें यक़ीन आया कि ये किसी इंसान का काम नहीं है। (बल्कि ये मय्यत अल्लाह के अज़ाब में गिरफ़्तार है) चुनाँचे उन्होंने उसे यूँ ही (ज़मीन पर) डाल दिया।

ये उसके इर्तिदाद की सज़ा थी और तौहीने रिसालत की कि ज़मीन ने उसके बदतरीन लाश को बहुक्मे अल्लाह बाहर फेंक दिया। आज भी रसूल (ﷺ) के गुस्ताख़ों को ऐसी ही सज़ा मिलती रहती हैं। **लौ कानू यअलमून**

٣٦١٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: وَأَخْبَرَنِي ابْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلاَ كِسْرَى بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرُ فَلاَ قَيْصَرَ بَعْدَهُ. وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَتُنْفِقُنَّ كُنُوزَهُمَا فِي سَبِيلِ اللهِ)). [راجع: ٣٠٢٧]

3618. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब किसरा (शाहे ईरान) हलाक हो जाएगा तो फिर कोई किसरा पैदा नहीं होगा और जब क़ैसर (शाहे रूम) हलाक हो जाएगा तो फिर कोई क़ैसर पैदा नहीं होगा और उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (ﷺ) की जान है तुम उनके ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में ज़रूर ख़र्च करोगे। (राजेअ : 3027)

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ने जो फ़र्माया था हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह़ षाबित हुआ जैसा कि तारीख़ शाहिद है। रिवायत में हज़रत इब्ने शिहाब से मुराद मशहूर ताबेई हज़रत इमाम ज़ुह्री मुराद हैं जो ज़ुह्रा बिन किलाब की नस्ल से हैं इसीलिये उनको ज़ुह्री कहा गया है। उनकी कुन्नियत अबूबक्र और नाम मुहम्मद है। अ़ब्दुल्लाह बिन शिहाब के बेटे हैं। कुछ मुंकिरीने ह़दीष़ तमन्ना अ़मादी जैसों ने उनके ज़ुह्रा बिन किलाब की नस्ल से होने का इंकार किया है जो सरासर ग़लत है, ये फ़िल् वाक़ेअ ज़ुह्री हैं। बड़े मुहद्दिष़ और फ़क़ीह, जलीलुलक़द्र ताबेई हैं, उ़लूमे शरीअ़त के इमाम हैं, उनके शागिर्दों में बड़े-बड़े अइम्म-ए-ह़दीष़ दाख़िल हैं। ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह) ने कहा कि मैं अपने दौर में उनसे बढ़कर कोई आ़लिम नहीं पाता हूँ। 124 हिजरी बमाहे रमज़ान इंतिक़ाल फ़र्माया। **रहमतुल्लाहि रहमतन वासिअ़ा आमीन!**

٣٦١٩- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ

3619. हमसे क़बीस़ा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने और उनसे हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया,

रफ़अहू क़ाल: ((إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلاَ كِسْرَى بَعْدَهُ وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرُ فَلاَ قَيْصَرَ بَعْدَهُ - وَذَكَرَ وَقَالَ:- لَتُنفِقُنَّ كُنُوزَهُمَا فِي سَبِيْلِ اللهِ)).

[راجع: ٣١٢١]

जब किसरा हलाक हुआ तो उसके बाद कोई किसरा पैदा नहीं होगा और जब क़ैसर हलाक हुआ तो कोई क़ैसर फिर पैदा नहीं होगा और रावी ने (पहली हदीष़ की तरह इस हदीष़ को भी बयान किया और) कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम उन दोनों के ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे। (राजेअ़ : 3121)

٣٦٢٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: قَالَ: ((قَدِمَ مُسَيْلَمَةُ الْكَذَّابُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَجَعَلَ يَقُولُ: إِنْ جَعَلَ لِيْ مُحَمَّدٌ الأَمْرَ مِنْ بَعْدِهِ تَبِعْتُهُ، وَقَدِمَهَا فِي بَشَرٍ كَثِيْرٍ مِنْ قَوْمِهِ، فَأَقْبَلَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ ثَابِتُ بْنُ قَيْسِ بْنِ شَمَّاسٍ - وَفِي - يَدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قِطْعَةُ جَرِيْدٍ - حَتَّى وَقَفَ عَلَى مُسَيْلِمَةَ فِي أَصْحَابِهِ فَقَالَ: لَوْ سَأَلْتَنِي هَذِهِ الْقِطْعَةَ مَا أَعْطَيْتُكَهَا، وَلَنْ تَعْدُوَ أَمْرَ اللهِ فِيْكَ، وَلَئِنْ أَدْبَرْتَ لَيَعْقِرَنَّكَ اللهُ، وَإِنِّي لأَرَاكَ الَّذِيْ أُرِيْتُ فِيْكَ مَا رَأَيْتُ)). [أطرافه في: ٤٣٧٣، ٤٣٧٨، ٧٠٣٣، ٧٢٦١].

3620. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबी हुसैन ने, उनसे नाफ़ेअ़ बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मुसैलमा कज़्ज़ाब मदीना में आया और ये कहने लगा कि अगर मुहम्मद (ﷺ) अम्र (या'नी ख़िलाफ़त) को अपने बाद मुझे सौंप दें तो मैं उनकी इत्तिबाअ़ के लिये तैयार हूँ। मुसैलमा अपने बहुत से मुरीदों को साथ लेकर मदीना आया था। रसूलुल्लाह (ﷺ) उसके पास (उसे समझाने के लिये) तशरीफ़ ले गये। आपके साथ ष़ाबित बिन क़ैस बिन शम्मास (रज़ि.) थे और आपके हाथ में खजूर की एक छड़ी थी। आप वहाँ ठहर गये जहाँ मुसैलमा कज़्ज़ाब अपने आदमियों के साथ मौजूद था तो आपने उससे फ़र्माया अगर तू मुझसे छड़ी भी मांगे तो मैं तुझे नहीं दे सकता (ख़िलाफ़त तो बड़ी चीज़ है) और परवरदिगार की मर्ज़ी को तू टाल नहीं सकता अगर तू इस्लाम से पीठ फेरेगा तो अल्लाह तुझको तबाह कर देगा। और मैं समझता हूँ कि तू वही है जो मुझे (ख़्वाब में) दिखाया गया था।

(दीगर मक़ाम : 4273, 7033,7261)

٣٦٢١- فَأَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ فِي يَدَيَّ سِوَارَيْنِ مِنْ ذَهَبٍ فَأَهَمَّنِي شَأْنُهُمَا، فَأُوحِيَ إِلَيَّ فِي الْمَنَامِ أَنِ انْفُخْهُمَا، فَنَفَخْتُهُمَا، فَطَارَا. فَأَوَّلْتُهُمَا كَذَّابَيْنِ يَخْرُجَانِ بَعْدِي. فَكَانَ أَحَدُهُمَا الْعَنْسِيَّ، وَالآخَرُ مُسَيْلِمَةَ الْكَذَّابَ صَاحِبَ

3621. (इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा कि) मुझे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था, मैं सोया हुआ था कि मैंने (ख़्वाब में) सोने के दो कंगन अपने हाथों मे देखे। मुझे उस ख़्वाब से बहुत फ़िक्र हुआ, फिर ख़्वाब में ही वह्य के ज़रिये मुझे बतलाया गया कि मैं उन पर फूँक मारूँ। चुनाँचे जब मैंने फूँक मारी तो वो दोनों उड़ गये, मैंने उससे ये ता'बीर ली कि मेरे बाद दो झूठे नबी होंगे। पस उनमें से एक तो अस्वद अ़नसी है और दूसरा यमामा का मुसैलमा कज़्ज़ाब था।

(दीगर मक़ाम : 4373, 4375, 4379, 7034, 7037)

الْيَمَامَةُ)). [أطرافه في: ٤٣٧٣، ٤٣٧٥، ٤٣٧٩، ٧٠٣٤، ٧٠٣٧].

अल्लाह ने दोनों को हलाक कर दिया। इस तरह आँहज़रत (ﷺ) ने जो फ़र्माया था वो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह साबित हुआ। ये भी आपकी नुबुव्वत की दलील है। यहाँ पर कुछ बुख़ारी शरीफ़ का तर्जुमा करने वालों ने यूँ तर्जुमा किया है कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मुसैलमा कज़्ज़ाब पैदा हुआ था, ये तर्जुमा सहीह नहीं है बल्कि उसका तर्जुमा मदीना में आना मुराद है जैसा कि आगे साफ़ मज़्कूर है।

٣٦٢٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ جَدِّهِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى أُرَاهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أُهَاجِرُ مِنْ مَكَّةَ إِلَى أَرْضٍ بِهَا نَخْلٌ، فَذَهَبَ وَهَلِي إِلَى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوْ هَجَرٌ، فَإِذَا هِيَ الْمَدِينَةُ يَثْرِبُ، وَرَأَيْتُ فِي رُؤْيَايَ هَذِهِ أَنِّي هَزَزْتُ سَيْفًا فَانْقَطَعَ صَدْرُهُ، فَإِذَا هُوَ مَا أُصِيبَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ أُحُدٍ، ثُمَّ هَزَزْتُهُ بِأُخْرَى فَعَادَ أَحْسَنَ مَا كَانَ، فَإِذَا هُوَ مَا جَاءَ اللهُ بِهِ مِنَ الْفَتْحِ وَاجْتِمَاعِ الْمُؤْمِنِينَ. وَرَأَيْتُ فِيهَا بَقَرًا وَاللهِ خَيْرٌ، فَإِذَا هُمُ الْمُؤْمِنُونَ يَوْمَ أُحُدٍ، وَإِذَا الْخَيْرُ مَا جَاءَ اللهُ بِهِ مِنَ الْخَيْرِ وَثَوَابِ الصِّدْقِ الَّذِي آتَانَا اللهُ بَعْدَ يَوْمِ بَدْرٍ)). [أطرافه في: ٣٩٨٧، ٤٠٨١، ٧٠٣٥، ٧٠٤١].

3622. मुझसे मुहम्मद बिन अला ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने, उनसे उनके दादा अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने। मैं समझता हूँ (ये इमाम बुख़ारी रह. का क़ौल है कि) मुहम्मद बिन अ़ला ने यूँ कहा कि ऐसी ज़मीन की तरफ़ हिजरत कर रहा हूँ जहाँ खजूर के बाग़ात हैं। इस पर मेरा ज़हन उधर गया कि ये मुक़ाम यमामा या हिज्र होगा, लेकिन वो यस्रिब, मदीना मुनव्वरा है और उसी ख़्वाब में मैंने देखा कि मैंने तलवार हिलाई तो वो बीच में से टूट गई, ये उस मुसीबत की तरफ़ इशारा था जो उहुद की लड़ाई में मुसलमानों को उठानी पड़ी थी। फिर मैंने दूसरी मर्तबा उसे हिलाया तो वो पहले से भी अच्छी सूरत में हो गई। ये उस वाक़िये की तरफ़ इशारा था कि अल्लाह तआला ने मक्का की फ़तह दी और मुसलमान सब इकट्ठे हो गये। मैंने उसी ख़्वाब में गाएं देखीं और अल्लाह तआला का जो काम है वो बेहतर है। उन गायों से उन मुसलमानों की तरफ़ इशारा था जो उहुद की लड़ाई में शहीद किये गये थे और ख़ैर व भलाई वो थी जो हमें अल्लाह तआला से सच्चाई का बदला बद्र की लड़ाई के बाद अ़ता फ़र्माया था।

(दीगर मक़ाम : 3987, 4071, 7035, 7041)

٣٦٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ عَنْ فِرَاسٍ عَنْ عَامِرٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((أَقْبَلَتْ فَاطِمَةُ تَمْشِي كَأَنَّ مِشْيَتَهَا مَشْيُ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَرْحَبًا يَا ابْنَتِي)).

3623. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया ने बयान किया, उनसे फ़िरास ने, उनसे आमिर ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) आईं, उनकी चाल में नबी करीम (ﷺ) की चाल से बड़ी मुशाबिहत थी। आपने फ़र्माया बेटी आओ मरहबा! उसके बाद आपने उन्हें अपनी दाईं तरफ़ या बाईं तरफ़ बिठाया, फिर

ثُمَّ أَجْلَسَهَا عَنْ يَمِيْنِهِ - أَوْ عَنْ شِمَالِهِ - ثُمَّ أَسَرَّ إِلَيْهَا حَدِيْثًا فَبَكَتْ، فَقُلْتُ لَهَا: لِمَ تَبْكِيْنَ؟ ثُمَّ أَسَرَّ إِلَيْهَا حَدِيْثًا فَضَحِكَتْ، فَقُلْتُ: مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ فَرَحًا أَقْرَبَ مِنْ حُزْنٍ، فَسَأَلْتُهَا عَمَّا قَالَ. فَقَالَتْ: مَا كُنْتُ لأُفْشِيَ سِرَّ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، حَتَّى قُبِضَ النَّبِيُّ ﷺ فَسَأَلْتُهَا)).

[أطرافه في: ٣٦٢٥، ٣٧١٥، ٤٤٣٣، ٦٢٨٥].

उनके कान में आपने चुपके से कोई बात कही तो वो रोने लगीं। मैंने उनसे कहा कि आप रोती क्यूँ हो? फिर दोबारा आँहज़रत (ﷺ) ने उनके कान में कुछ कहा तो वो हंस दीं। मैंने उनसे कहा आज ग़म के फ़ौरन बाद ही ख़ुशी की जो कैफ़ियत मैंने आपके चेहरे पर देखी वो पहले कभी नहीं देखी थी। फिर मैंने उनसे पूछा कि आँहज़रत (ﷺ) ने क्या फ़र्माया था? उन्होंने कहा कि जब तक रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़िन्दा हैं मैं आपके राज़ को किसी पर नहीं खोल सकती। चुनाँचे मैंने आपकी वफ़ात के बाद पूछा।

(दीगर मक़ाम : 3625, 3715, 4433, 6285)

٣٦٢٤- ((فَقَالَتْ : أَسَرَّ إِلَيَّ أَنَّ جِبْرِيْلَ كَانَ يُعَارِضُنِي الْقُرْآنَ كُلَّ سَنَةٍ مَرَّةً، وَإِنَّهُ عَارَضَنِي الْعَامَ مَرَّتَيْنِ وَلاَ أُرَاهُ إِلاَّ حَضَرَ أَجَلِي، وَإِنَّكِ أَوَّلُ أَهْلِ بَيْتِي لَحَاقًا بِي، فَبَكَيْتُ. فَقَالَ: أَمَا تَرْضَيْنَ أَنْ تَكُوْنِي سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ! أَوْ نِسَاءِ الْمُؤْمِنِيْنَ - فَضَحِكْتُ لِذَلِكَ)).

[أطرافه في: ٣٦٢٦، ٣٧١٦، ٤٤٣٤، ٦٢٨٦].

3624. तो उन्होंने बताया कि आपने मेरे कान में कहा था कि हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) हर साल क़ुर्आन मजीद का एक दौर किया करते थे लेकिन इस साल उन्होंने दो मर्तबा दौर किया है। मुझे यक़ीन है कि अब मेरी मौत क़रीब है और मेरे घराने में सबसे पहले मुझसे आ मिलने वाली तुम होगी। मैं (आपकी इस ख़बर पर) रोने लगी तो आपने फ़र्माया कि तुम उस पर राज़ी नहीं कि जन्नत की औरतों की सरदार बनोगी या (आपने फ़र्माया कि) मोमिना औरतों की, तो उस पर मैं हंसी थी।

(दीगर मक़ाम : 3626, 3716, 4434, 6286)

तश्रीह : दूसरी रिवायतों में यूँ है कि पहले आपने ये फ़र्माया कि मेरी वफ़ात नज़दीक है तो हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) रोने लगीं फिर ये फ़र्माया कि तुम सबसे पहले मुझसे मिलोगी तो वो हंसने लगीं। इस ह़दीष़ से हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत षाबित होती है। फ़िल् वाक़ेअ आप आँहज़रत (ﷺ) की लख़्ते जिगर, नूरे-नज़र हैं इसलिये हर फ़ज़ीलत की अव्वलीन हक़दार हैं।

٣٦٢٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((دَعَا النَّبِيُّ ﷺ فَاطِمَةَ ابْنَتَهُ فِي شَكْوَاهُ الَّذِيْ قُبِضَ فِيْهِ، فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَبَكَتْ، ثُمَّ دَعَاهَا فَسَارَّهَا فَضَحِكَتْ، قَالَتْ فَسَأَلْتُهَا عَنْ

3625. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने ज़माने मर्ज़ में अपनी साहबज़ादी फ़ातिमा (रज़ि.) को बुलाया और चुपके से फिर कोई बात फ़र्माई तो वो हंसीं। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) से उसके बारे में पूछा।

ذَلِكَ)). [راجع: ٣٦٢٣]

(राजेअ़ : 3623)

٣٦٢٦- ((فَقَالَتْ: سَارَّنِي النَّبِيُّ ﷺ فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ يُقْبَضُ فِي وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ فَبَكَيْتُ، ثُمَّ سَارَّنِي فَأَخْبَرَنِي أَنِّي أَوَّلُ أَهْلِ بَيْتِهِ أَتْبَعُهُ فَضَحِكْتُ)). [راجع: ٣٦٢٤]

3626. तो उन्होंने बताया कि पहली मर्तबा जब आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे आहिस्ता से बातचीत की थी तो उसमें आपने फ़र्माया था कि आपकी उस मर्ज़ में वफ़ात हो जाएगी जिसमें वाक़ई आपकी वफ़ात हुई, मैं उस पर रो पड़ी। फिर दोबारा आपने आहिस्ता से मुझसे जो बात कहीं उसमें आपने फ़र्माया कि आपके अहले बैत में, मैं सबसे पहले आपसे जा मिलूँगी। मैं उस पर हंसी थी।

(राजेअ़ : 3624)

जैसा आपने फ़र्माया था वैसा ही हुआ। वफ़ाते नबवी के छः माह बाद ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का विसाल हो गया और इस ह़दीष़ से ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत निकलती है।

٣٦٢٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُدْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ، فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ : إِنَّ لَنَا أَبْنَاءً مِثْلَهُ؛ فَقَالَ: إِنَّهُ مِنْ حَيْثُ تَعْلَمُ، فَسَأَلَ عُمَرُ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنْ هَذِهِ الآيَةِ: ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ فَقَالَ: أَجَلُ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَعْلَمَهُ إِيَّاهُ. فَقَالَ مَا أَعْلَمُ مِنْهَا إِلاَّ مَا تَعْلَمُ)). [أطرافه في: ٤٢٩٤، ٤٤٣٠، ٤٩٦٩، ٤٩٧٠].

3627. हमसे मुहम्मद बिन अ़रअ़रह ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबी बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने। उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) को अपने पास बिठाते थे। इस पर अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से शिकायत की कि उन जैसे तो हमारे लड़के भी हैं। लेकिन ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि ये महज़ उनके इ़ल्म की वजह से है। फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से आयत, इज़ा जाआ नस्रुल्लाहि वल फ़त्ह़ **के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि ये रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात थी जिसकी ख़बर अल्लाह तआ़ला ने आपको दी। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया जो तुमने समझा है मैं भी वही समझता हूँ।**

(दीगर मक़ाम : 4294, 4430, 4969, 4970)

बाब के तर्जुमे से मुताबक़त ज़ाहिर है क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ) को जो बात बतलाई गई थी कि आपकी वफ़ात क़रीब है वो पूरी हुई। अल्लाह जब चाहे किसी बन्दे को कुछ आगे की बातें बतला देता है मगर ये ग़ैबदानी नहीं है। अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को भी ग़ैबदाँ कहना कुफ़्र है जैसा कि उ़लमा-ए-अह़नाफ़ ने सराह़त के साथ लिखा है। ग़ैबदाँ सिर्फ़ अल्लाह है। अंबिया व औलिया सब अल्लाह के इ़ल्म के भी मुह़ताज हैं। बग़ैर अल्लाह के बतलाए वो कुछ भी बोल नहीं सकते।

٣٦٢٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سُلَيْمَانَ بْنِ حَنْظَلَةَ ابْنِ الْغَسِيلِ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ

3628. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन सुलैमान बिन ह़ंज़ला बिन ग़सील ने बयान किया, उनसे इ़क्रिमा ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मर्ज़ुल मौत में रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर

رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ بِمِلْحَفَةٍ قَدْ عَصَّبَ بِعِصَابَةٍ دَسْمَاءَ حَتَّى جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ النَّاسَ يَكْثُرُونَ وَيَقِلُّ الأَنْصَارُ، حَتَّى يَكُونُوا فِي النَّاسِ بِمَنْزِلَةِ الْمِلْحِ فِي الطَّعَامِ، فَمَنْ وَلِيَ مِنْكُمْ شَيْئًا يَضُرُّ فِيهِ قَوْمًا وَيَنْفَعُ فِيهِ آخَرِينَ فَلْيَقْبَلْ مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَيَتَجَاوَزْ عَنْ مُسِيئِهِمْ. فَكَانَ آخِرَ مَجْلِسٍ جَلَسَ فِيهِ النَّبِيُّ ﷺ)). [راجع: ٩٢٧]

तशरीफ़ लाए, आप एक चिकने कपड़े से सरे मुबारक पर पट्टी बाँधे हुए थे। आप मस्जिदे नबवी में मिम्बर पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए फिर जैसे होनी चाहिये अल्लाह तआला की हम्दो षना की, फिर फ़र्माया अम्मा बअ़द! (आने वाले दौर में) दूसरे लोगों की ता'दाद बहुत बढ़ जाएगी लेकिन अंसार कम होते जाएँगे और एक ज़माना आएगा कि दूसरों के मुक़ाबले मे उनकी ता'दाद इतनी कम हो जाएगी कि खाने में नमक होता है। पस अगर तुममें से कोई शख़्स कहीं का हाकिम बने और अपनी हुकूमत की वजह से वो किसी को नुक़्सान और नफ़ा भी पहुँचा सकता हो तो उसे चाहिये कि अंसार के नेक लोगों (की नेकियों) को क़ुबूल करे और जो बुरे हों उनसे दरगुज़र कर दिया करे। ये नबी करीम (ﷺ) की आख़िरी मज्लिसे वा'ज़ थी। (राजेअ : 927)

आपको मा'लूम था कि अंसार को ख़िलाफ़त नहीं मिलेगी इसलिये उनके हक़ में नेक सुलूक़ करने की वसिय्यत फ़र्माई। बाब से इस हदीष़ की मुताबक़त ज़ाहिर है।

٣٦٢٩- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ الْجُعْفِيُّ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَخْرَجَ النَّبِيُّ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ الْحَسَنَ فَصَعِدَ بِهِ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: ((ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ، وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ)). [راجع: ٢٧٠٤]

3629. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुसैन जुअफ़ी ने बयान किया, उनसे अबू मूसा ने, उनसे इमाम हसन बस़री ने और उनसे हज़रत अबूबक्र (रज़ि) ने कि नबी करीम (ﷺ) हसन (रज़ि.) को एक दिन साथ लेकर बाहर तशरीफ़ लाए और मिम्बर पर उनको लेकर चढ़ गये। फिर फ़र्माया, मेरा ये बेटा सय्यद है और उम्मीद है कि अल्लाह तआला इसके ज़रिये से मुसलमानों की दो जमाअ़तों में मिलाप करा देगा।

(राजेअ : 2704)

तश्रीह : आपकी ये पेशीनगोई पूरी हुई। हज़रत हसन (रज़ि.) ने वो काम किया कि हज़ारों मुसलमानों की जान बच गई, आपने हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) से लड़ना पसन्द न किया और ख़िलाफ़त उन ही को दे दी। हालाँकि सत्तर हज़ार आदमियों ने आपके साथ जान देने पर बेअ़त की थी, इस तरह से आँहज़रत (ﷺ) की ये पेशीनगोई सच षाबित हुई और यहाँ पर यही मक़्सदे बाब है।

٣٦٣٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

3630. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने किया नबी करीम (ﷺ) ने जा'फ़र बिन अबी तालिब और ज़ैद बिन

((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَعَى جَعْفَرًا وَزَيْدًا قَبْلَ أَنْ يَجِيءَ خَبَرُهُمْ، وَعَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ)).

[راجع: ١٢٤٦]

हारिषा (रज़ि.) की शहादत की ख़बर पहले ही स़हाबा को सुना दी थी। उस वक़्त आपकी आँखों से आंसू जारी थे।

(राजेअ़ : 1246)

तश्रीह : आपका रसूले बरहक़ होना इस तौर पर षाबित हुआ कि आपने वह्य के ज़रिये से एक दूर—दराज़ मुक़ाम पर होने वाला वाक़िया इत्तिलाअ़ आने से पहले ही बयान कर दिया। स़दक़ रसूलुल्लाह (ﷺ)। अगर अहले बिदअ़त के ख़्याल के मुताबिक़ आप आ़लिमुल ग़ैब होते तो सफ़रे जिहाद पर जाने से पहले ही उनको रोक देते और मौत से बचा लेते मगर आप ग़ैबदाँ नहीं थे। आयते शरीफ़ा, **लौ कुन्तु आलमुल्ग़ैब लअस्तक्षर्तु मिनल्ख़ैर** (अल आराफ़ : 188) का यही मतलब है। वह्ये इलाही से ख़बर देना ये अम्र दीगर है उसको ग़ैबदानी से ता'बीर करना उन लोगों का काम है जिनको फ़हम व फ़िरासत से एक ज़र्रा भी नस़ीब नहीं हुआ है। कुतुबे फ़ुक़हा में स़ाफ़ लिखा हुआ है कि जो आँहज़रत (ﷺ) को ग़ैबदाँ जानकर किसी अम्र पर गवाह बनाए तो उसकी ये हरकत उसे कुफ़्र तक पहुँचा देती है।

٣٦٣١- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَلْ لَكُمْ مِنْ أَنْمَاطٍ؟)) قُلْتُ: وَأَنَّى يَكُونُ لَنَا الأَنْمَاطُ قَالَ: ((أَمَا إِنَّهُ سَيَكُونُ لَكُمُ الأَنْمَاطُ. فَأَنَا أَقُولُ لَهَا - يَعْنِي امْرَأَتَهُ - أَخِّرِي عَنَّا أَنْمَاطَكِ، فَتَقُولُ: أَلَمْ يَقُلِ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّهَا سَتَكُونُ لَكُمُ الأَنْمَاطُ، فَأَدَعُهَا)).

[طرفه في : ٥١٦١].

3631. हमसे अ़म्र बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि (उनकी शादी के मौक़े पर) नबी करीम (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कि क्या तुम्हारे पास क़ालीन हैं? मैंने अ़र्ज़ किया, हमारे पास क़ालीन कहाँ? (हम ग़रीब लोग हैं) इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया याद रखो एक वक़्त ऐसा आएगा कि तुम्हारे पास उम्दह उम्दह क़ालीन होंगे। अब जब मैं उससे (अपनी बीवी से) कहता हूँ कि अपने क़ालीन हटा ले तो वो कहती है कि क्या नबी करीम (ﷺ) ने तुमसे नहीं फ़र्माया था कि एक वक़्त आएगा जब तुम्हारे पास क़ालीन होंगे, चुनाँचे मैं उन्हें वहीं रहने देता हूँ (और चुप हो जाता हूँ)। (दीगर मक़ाम : 5161)

इस रिवायत में नबी करीम (ﷺ) की एक पेशीनगोई का ज़िक्र है जो ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ स़ह़ीह़ षाबित हुई। ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़ुद इस स़दाक़त (सच्चाई) को देखा। ये अ़लामाते नुबुव्वत में से एक अहम अ़लामत है। यही ह़दीष और बाब में मुताबक़त की वजह है।

٣٦٣٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنِ مُوسَى حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((انْطَلَقَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ مُعْتَمِرًا، قَالَ: فَنَزَلَ عَلَى أُمَيَّةَ بْنَ خَلَفٍ أَبِي صَفْوَانَ،

3632. हमसे अह़मद बिन इस्ह़ाक़ ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने, उनसे अ़म्र बिन मैमून ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) उ़मरह की निय्यत से (मक्का) आए और अबू स़फ़्वान उमय्या बिन ख़लफ़ के यहाँ उतरे। उमय्या भी शाम जाते हुए (तिजारत वग़ैरह के लिये) जब मदीना से गुज़रता

وَكَانَ أُمَيَّةُ إِذَا انْطَلَقَ إِلَى الشَّامِ فَمَرَّ بِالْمَدِينَةِ نَزَلَ عَلَى سَعْدٍ، فَقَالَ أُمَيَّةُ لِسَعْدٍ: انْتَظِرْ حَتَّى إِذَا انْتَصَفَ النَّهَارُ وَغَفَلَ النَّاسُ انْطَلَقتَ فَطُفتَ؟ فَبَيْنَا سَعْدٌ يَطُوفُ إِذَا أَبُو جَهْلٍ، فَقَالَ: مَنْ هَذَا الَّذِي يَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ؟ فَقَالَ سَعْدٌ: أَنَا سَعْدٌ. فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ : تَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ آمِنًا وَقَدْ آوَيْتُمْ مُحَمَّدًا وَأَصْحَابَهُ. فَقَالَ: نَعَمْ. فَتَلاَحَيَا بَيْنَهُمَا. فَقَالَ أُمَيَّةُ لِسَعْدٍ: لاَ تَرْفَعْ صَوْتَكَ عَلَى أَبِي الْحَكَمِ، فَإِنَّهُ سَيِّدُ أَهْلِ الْوَادِي. ثُمَّ قَالَ سَعْدٌ: وَاللهِ لَئِنْ مَنَعْتَنِي أَنْ أَطُوفَ بِالْبَيْتِ لأَقْطَعَنَّ مَتْجَرَكَ بِالشَّامِ. قَالَ: فَجَعَلَ أُمَيَّةُ يَقُولُ لِسَعْدٍ : لاَ تَرْفَعْ صَوْتَكَ - وَجَعَلَ يُمْسِكُهُ - فَغَضِبَ سَعْدٌ فَقَالَ: دَعْنَا عَنْكَ، فَإِنِّي سَمِعْتُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَزْعُمُ أَنَّهُ قَاتِلُكَ. قَالَ : إِيَّايَ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: وَاللهِ مَا يَكْذِبُ مُحَمَّدٌ إِذَا حَدَّثَ. فَرَجَعَ إِلَى امْرَأَتِهِ فَقَالَ: أَمَا تَعْلَمِينَ مَا قَالَ لِي أَخِي الْيَثْرِبِيُّ؟ قَالَتْ: وَمَا قَالَ؟ قَالَ : زَعَمَ أَنَّهُ سَمِعَ مُحَمَّدًا أَنَّهُ قَاتِلِي. قَالَتْ: فَوَاللهِ مَا يَكْذِبُ مُحَمَّدٌ. قَالَ: فَلَمَّا خَرَجُوا إِلَى بَدْرٍ وَجَاءَ الصَّرِيخُ قَالَتْ لَهُ امْرَأَتُهُ: أَمَا ذَكَرْتَ مَا قَالَ لَكَ أَخُوكَ الْيَثْرِبِيُّ؟ قَالَ: فَأَرَادَ أَنْ لاَ يَخْرُجَ فَقَالَ لَهُ أَبُو جَهْلٍ: إِنَّكَ مِنْ أَشْرَافِ الْوَادِي، فَسِرْ يَوْمًا أَوْ يَوْمَيْنِ، فَسَارَ مَعَهُمْ، فَقَتَلَهُ اللهُ)).

तो हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) के यहाँ क़याम किया करता था। उमय्या ने हज़रत सअ़द (रज़ि.) से कहा, अभी ठहरो, जब दोपहर का वक़्त हो जाए और लोग ग़ाफ़िल हो जाएँ (तब तवाफ़ करना क्योंकि मक्का के मुश्रिक मुसलमानों के दुश्मन थे) सअ़द (रज़ि.) कहते हैं , चुनाँचे मैंने जाकर तवाफ़ शुरू कर दिया, हज़रत सअ़द (रज़ि.) अभी तवाफ़ कर ही रहे थे कि अबू जहल आ गया और कहने लगा, ये का'बा का तवाफ़ कौन कर रहा है? हज़रत सअ़द (रज़ि.) बोले कि मैं सअ़द हूँ। अबू जहल बोला, तुम का'बा का तवाफ़ ख़ूब अमन से कर रहे हो हालाँकि मुहम्मद (ﷺ) और उसके साथियों को पनाह दे रखी है। सअ़द (रज़ि.) ने कहा हाँ ठीक है। इस तरह दोनों में बात बढ़ गई। फिर उमय्या ने सअ़द (रज़ि.) से कहा, अबुल हकम (अबू जहल) के सामने ऊँची आवाज़ से न बोलो, वो इस वादी (मक्का) का सरदार है। इस पर सअ़द (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! अगर तुमने मुझे बैतुल्लाह के तवाफ़ से रोका तो मैं भी तुम्हारी शाम की तिजारत ख़ाक में मिला दूँगा (क्योंकि शाम जाने का सिर्फ़ एक ही रास्ता है जो मदीना से जाता है) बयान किया कि उमय्या बराबर सअ़द (रज़ि.) से यही कहता रहा कि अपनी आवाज़ ऊँची न करो और उन्हें (मुक़ाबले से) रोकता रहा। आख़िर सअ़द (रज़ि.) को उस पर गुस्सा आ गया और उन्होंने उमय्या से कहा। चल परे हट मैंने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) से तेरे बारे मे सुना है। आपने फ़र्माया था कि तुझको अबू जहल ही क़त्ल कराएगा। उमय्या ने पूछा, मुझे? सअ़द (रज़ि.) ने कहा हाँ तुझको। तब तो उमय्या कहने लगा, अल्लाह की क़सम मुहम्मद (ﷺ) जब कोई बात कहते हैं तो वो ग़लत नहीं होती फिर वो अपनी बीवी के पास आया और उससे कहा तुम्हें मा'लूम नहीं, मेरे यस्रिबी भाई ने मुझे क्या बात बताई है? उसने पूछा, उन्होंने क्या कहा? उमय्या ने बताया कि मुहम्मद (ﷺ) कह चुके हैं कि अबू जहल मुझको क़त्ल कराएगा। वो कहने लगी, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद (ﷺ) ग़लत बात ज़ुबान से नहीं निकालते। फिर ऐसा हुआ कि अहले मक्का बद्र की लड़ाई के लिये रवाना होने लगे और उमय्या को भी बुलाने वाला आया तो उमय्या से उसकी बीवी ने कहा, तुम्हें याद नहीं रहा तुम्हारा यस्रिबी भाई तुम्हें क्या ख़बर दे गया था। बयान किया कि उस याद-देहानी पर उमय्या ने चाहा कि इस जंग में शिर्कत न करे। लेकिन अबू जहल ने कहा, तुम वादी-

ए- मक्का के रईस हो। इसलिये कम अज़् कम एक या दो दिन के लिये ही तुम्हें चलना पड़ेगा। इस तरह वो उनके साथ जंग में शिर्कत के लिये निकला और अल्लाह तआला ने उसको क़त्ल करा दिया। (दीगर मक़ाम : 3950)

[طرفه في : ٣٩٥٠].

ये पेशीनगोई पूरी हुई। उमय्या जंगे बद्र में जाना नहीं चाहता था मगर अबू जहल ज़बरदस्ती पकड़कर ले गया, आख़िर मुसलमानों के हाथों मारा गया। अलामाते नुबुव्वत मे इस पेशीनगोई को भी अहम मुक़ाम हासिल है। पेशीनगोई की सदाक़त ज़ाहिर होकर रही। हदीष़ के लफ़्ज़ **अन्नहू कातलक** में ज़मीर का मरजअ अबू जहल है कि वो तुझको क़त्ल कराएगा। कुछ मुतर्जिम हज़रात ने इन्नहू की ज़मीर का मरजअ रसूले करीम (ﷺ) को क़रार दिया है लेकिन रिवायत के सियाक़ व सबाक़ और मुक़ाम व महल के लिहाज़ से हमारा तर्जुमा भी सहीह है। वल्लाहु आलम।

3633. हमसे अब्बास बिन वलीद नरसी ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैं ने अपने वालिद से सुना, उनसे अबू उष्मान ने बयान किया कि मुझे ये बात मा'लूम कराई गई कि हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) के पास आए और आपसे बातें करते रहे। उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) के पास उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) बैठी हुई थीं। जब हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) चले गये तो आँहज़रत (ﷺ) ने उम्मे सलमा (रज़ि.) से फ़र्माया, मा'लूम है ये कौन साहब थे? या ऐसे ही अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़र्माए। अबू उष्मान (रज़ि.) ने बयान किया कि उम्मे सलमा ने जवाब दिया कि ये दहिया कल्बी (रज़ि.) थे। उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया अल्लाह की क़सम! मैं समझे बैठी थी कि वो दहिया कल्बी (रज़ि.) हैं। आख़िर जब मैंने आँहज़रत (ﷺ) का ख़ुत्बा सुना जिसमें आप हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) (की आमद) की ख़बर दे रहे थे तो मैं समझी कि वो हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) ही थे। या ऐसे ही अल्फ़ाज़ कहे। बयान किया कि मैंने अबू उष्मान से पूछा कि आपने ये हदीष़ किससे सुनी? तो उन्होंने बताया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुनी है। (दीगर मक़ाम : 4970)

٣٦٣٣- حَدَّثَنَا عَبَّاسُ بْنُ الْوَلِيدِ النَّرْسِيُّ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ قَالَ: أُنْبِئْتُ أَنَّ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعِنْدَهُ أُمُّ سَلَمَةَ فَجَعَلَ يُحَدِّثُ ثُمَّ قَامَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لأُمِّ سَلَمَةَ : ((مَنْ هَذَا))- أَوْ كَمَا قَالَ - قَالَتْ : هَذَا دِحْيَةُ. قَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ. ايْمُ اللهِ مَا حَسِبْتُهُ إِلاَّ إِيَّاهُ، حَتَّى سَمِعْتُ خُطْبَةَ نَبِيِّ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُخْبِرُ عَنْ جِبْرِيلَ، أَوْ كَمَا قَالَ: قَالَ: فَقُلْتُ لأَبِي عُثْمَانَ: مِمَّنْ سَمِعْتَ هَذَا؟ قَالَ : مِنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ.

[طرفه في : ٤٩٨٠].

हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) का आप (ﷺ) की ख़िदमत में हज़रत दहिया कल्बी (रज़ि.) की सूरत में आना मशहूर है। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को ये ताक़त बख़्शी है कि वो जिस सूरत में चाहें आ सकते हैं। इस हदीष़ से आँहज़रत (ﷺ) का रसूले बरहक़ होना ष़ाबित हुआ।

3634. मुझसे अब्दुर्रहमान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन मुग़ीरह ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मूसा बिन उक़्बा ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह

٣٦٣٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ شَيْبَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ الْمُغِيرَةِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ

عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّاسَ مُجْتَمِعِينَ فِي صَعِيدٍ فَقَامَ أَبُوبَكْرٍ فَنَزَعَ ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ وَفِي بَعْضِ نَزْعِهِ ضَعْفٌ وَاللهُ يَغْفِرُ لَهُ، ثُمَّ أَخَذَهَا عُمَرُ فَاسْتَحَالَتْ بِيَدِهِ غَرْبًا. فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا فِي النَّاسِ يَفْرِي فَرِيَّهُ، حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطَنٍ)). وَقَالَ هَمَّامٌ: عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((فَنَزَعَ أَبُوبَكْرٍ ذَنُوبَيْنِ)).

[أطرافه في: ٣٦٧٦، ٣٦٨٢، ٧٠١٩، ٧٠٢٠].

(ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने (ख़्वाब में) देखा कि लोग एक मैदान में जमा हो रहे हैं। उनमें से हज़रत अबूबक्र (रज़ि) उठे और एक कुँए से उन्होंने एक या दो डोल पानी भरकर निकाला, पानी निकालने में उनमें कुछ कमज़ोरी मा'लूम होती थी और अल्लाह उनको बख़्शे। फिर वो डोल हज़रत उमर (रज़ि.) ने सम्भाला, उनके हाथ में जाते ही वो एक बड़ा डोल हो गया मैंने लोगों में उन जैसा शहज़ोर पहलवान और बहादुर इंसान उनकी तरह काम करने वाला नहीं देखा (उन्होंने इतने डोल खींचे) कि लोग अपने ऊँटों को भी पिला पिलाकर उनके ठिकानों में ले गये। और हम्माम ने बयान किया, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के वास्ते से बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने दो डोल खींचे।

(दीगर मक़ाम : 3676, 3682, 7019, 7020)

तश्रीह : इस हदीष की ता'बीर ख़िलाफ़त है, या'नी पहले हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को ख़िलाफ़त मिलेगी। वो हुकूमत तो करेंगे लेकिन उमर (रज़ि.) की सी क़ुव्वत व शौकत उनको हासिल न होगी। उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में मुसलमानों की शौकत व अज़्मत बहुत बढ़ जाएगी, आपने जैसा ख़्वाब देखा था वैसा ही ज़ाहिर हुआ। ये भी अलामाते नुबव्वत में से एक अहम निशान है जिनको देख और समझकर भी जो शख़्स आपके रसूले बरहक़ होने को न माने उससे बढ़कर बदनसीब कोई नहीं है। (ﷺ)

बाब 26 : अल्लाह तआला का सूरह बक़र: में ये इर्शाद कि अहले किताब इस रसूल को

٢٦- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ، وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ [البقرة : ١٤٦]

उस तरह पहचान रहे हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं और बेशक उनमें से एक फ़रीक़ के लोग हक़ को जानते हैं फिर भी वो उसे छुपाते हैं।

तौरात व इंजील में आँहज़रत (ﷺ) का ज़िक्रे ख़ैर खुले लफ़्ज़ों में मौजूद था जिसे अहले किताब पढ़ते और आप (ﷺ) को रसूले बरहक़ मानते थे मगर अल्लाह तआला ने उनको इस्लाम क़ुबूल करने से बाज़ रखा। बहरहाल आँहज़रत (ﷺ) का रसूले बरहक़ षाबित करना बाब का मक़्सद है।

٣٦٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ الْيَهُودَ جَاؤُوا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَذَكَرُوا لَهُ أَنَّ رَجُلاً مِنْهُمْ وَامْرَأَةً زَنَيَا. فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا تَجِدُونَ فِي التَّوْرَاةِ

3635. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक बिन अनस ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि यहूद, रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपको बताया कि उनके यहाँ एक मर्द और एक औरत ने ज़िना किया है। आपने उनसे फ़र्माया, रजम के बारे में तौरात में क्या हुक्म है? वो बोले ये कि हम उन्हें रुस्वा करें और उन्हें कोड़े लगाए जाएँ। इस पर अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने कहा कि तुम लोग झूठे हो। तौरात में रजम का हुक्म मौजूद है।

فِي شَأْنِ الرَّجْمِ؟)) فَقَالُوا: نَفْضَحُهُمْ وَيُجْلَدُونَ. فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ: كَذَبْتُمْ، إِنَّ فِيهَا الرَّجْمَ - فَأَتَوا بِالتَّوْرَاةِ فَنَشَرُوهَا، فَوَضَعَ أَحَدُهُمْ يَدَهُ عَلَى آيَةِ الرَّجْمِ، فَقَرَأَ مَا قَبْلَهَا وَمَا بَعْدَهَا. فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ: ارْفَعْ يَدَكَ، فَرَفَعَ يَدَهُ، فَإِذَا فِيهَا آيَةُ الرَّجْمِ، فَقَالُوا: صَدَقَ يَا مُحَمَّدُ، فِيهَا آيَةُ الرَّجْمِ. فَأَمَرَ بِهِمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَرُجِمَا. قَالَ عَبْدُ اللهِ: فَرَأَيْتُ الرَّجُلَ يَحْنَا عَلَى الْمَرْأَةِ يَقِيهَا الْحِجَارَةَ)). [راجع: ١٣٢٩]

तौरात लाओ। फिर यहूदी तौरात लाए और उसे खोला। लेकिन रजम के बारे में जो आयत थी उसे एक यहूदी ने अपने हाथ से छुपा लिया और उससे पहले और उसके बाद की इबारत पढ़ने लगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने कहा कि ज़रा अपना हाथ तो उठाओ जब उसने हाथ उठाया तो वहाँ आयते रजम मौजूद थी। अब वो सब कहने लगे कि ऐ मुहम्मद! अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने सच कहा। बेशक तौरात में रजम की आयत मौजूद है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से उन दोनों को रजम किया गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रजम के वक़्त देखा, यहूदी मर्द उस औरत पर झुका पड़ता था, उसको पत्थरों की मार से बचाता था। (राजेअ : 1329)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) यहूद के बहुत बड़े आलिम थे जिनको यहूदी बड़ी इज़्ज़त की निगाह से देखते थे मगर मुसलमान हो गये तो यहूदी उनको बुरा कहने लगे। इस्लाम में उनका बड़ा मुक़ाम है।

٢٨- بَابُ سُؤَالِ الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُرِيَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ آيَةً، فَأَرَاهُمُ انْشِقَاقَ الْقَمَرِ

बाब 28 : मुश्रिकीन का आँहज़रत (ﷺ) से कोई निशानी चाहना और आँहज़रत (ﷺ) का मुअजज़ा शक़्क़ुल क़मर दिखाना

तश्रीह : ये कितना बड़ा मुअजज़ा है कि किसी पैग़म्बर को ऐसा मुअजज़ा नहीं दिया गया। जुम्हूर उलमा का यही क़ौल है कि शक़्क़ुल क़मर आँहज़रत (ﷺ) का एक बड़ा मुअजज़ा था। गो इसका वक़ूअे क़यामत की भी निशानी था। जैसे हक़ तआला ने क़ुर्आन मजीद में फ़र्माया, **इक्तरबतिस्साअतु वन्शक़्क़ल्क़मर** (अल् क़मर : 1) जिन लोगों ने इन्शक़ाक़ का मा'नी ये रखा है या'नी क़यामत में चाँद फटेगा बाब की अहादीष़ से उनकी तर्दीद होती है। हज़रत शाह वलीउल्लाह (रह.) ने लिखा है कि काफ़िरों ने अल्लाह की क़ुदरत की निशानी मांगी थी जो ख़िलाफ़े आदत हो चूँकि चाँद के फटने का ज़माना आ पहुँचा था इसलिये आपने भी यही निशानी दिखलाई। चूँकि आप पहले से उसकी ख़बर दे चुके हैं इसलिये उसको मुअजज़ा कह सकते हैं । एक रिवायत में है कि चाँद फटकर दो टुकड़े हो गया बाक़ी बह्ष़ इंशाअल्लाह किताबुत् तफ़्सीर में आएगी। आजकल चाँद पर जाने वालों ने मुशाहिदा के बाद बताया कि चाँद की सतह पर एक जगह बहुत तवील व अमीक़ (गहरी) एक दरार है, मुबस्सिरीने हक़ का कहना है कि ये वही दरार है जो मुअजज़ा शक़्क़ुल क़मर की शक्ल में चाँद पर वाक़ेअ हुई है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

٣٦٣٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ

3636. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफ़यान बिन उयैना ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी नजीह ने, उन्हें मुजाहिद ने, उन्हें अबू मअमर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम

رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: انْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ شِقَّتَيْنِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اشْهَدُوا)). [أطرافه في: ٣٨٦٩، ٣٨٧٠، ٤٨٦٤، ٤٨٦٥].

(ﷺ) के ज़माने में चाँद के फटकर दो टुकड़े हो गये थे और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि लोगों इस पर गवाह रहना। (दीगर मक़ाम : 3869, 3870, 4864, 4865)

٣٦٣٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يُونُسُ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ح. وَقَالَ لِيْ خَلِيْفَةُ: حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ أَنَّهُ حَدَّثَهُمْ: ((أَنَّ أَهْلَ مَكَّةَ سَأَلُوا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ أَنْ يُرِيَهُمْ آيَةً، فَأَرَاهُمُ انْشِقَاقَ الْقَمَرِ)). [أطرافه في: ٣٨٦٨، ٤٨٦٧، ٤٨٦٨].

3637. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने (दूसरी रिवायत) इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मक्का वालों ने रसूले करीम (ﷺ) से कहा था कि उन्हें कोई मुअजज़ा दिखाएँ तो आपने शक़्क़ुल क़मर का मुअजज़ा या'नी चाँद का फट जाना उनको दिखाया। (दीगर मक़ाम : 3868, 4867, 4868)

٣٦٣٨- حَدَّثَنِي خَلَفُ بْنُ خَالِدٍ الْقُرَشِيُّ حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مُضَرَ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيْعَةَ عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ الْقَمَرَ انْشَقَّ فِي زَمَانِ النَّبِيِّ ﷺ)). [طرفاه في : ٣٨٧٠، ٤٨٦٦].

3638. मुझसे ख़लफ़ बिन ख़ालिद क़ुरशी ने बयान किया, कहा हमसे बक्र बिन मुज़र ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ ने बयान किया, उनसे इराक़ बिन मालिक ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में चाँद के दो टुकड़े हो गये थे। (दीगर मक़ाम : 3870, 4866)

कुफ़्फ़ारे मक्का का ख़्याल था कि ये या'नी मुहम्मद (ﷺ) अपने जादू के ज़ोर से ज़मीन पर अ़जायबात दिखला सकते हैं, आसमान पर उनका जादू न चल सकेगा। इसी ख़्याल की बिना पर उन्होंने मुअजज़ा शक़्क़ुल क़मर त़लब किया। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने उनको ये दिखला दिया।

٢٨- بَابٌ

बाब 28 :

इस बाब के तह़त मुख़्तलिफ़ अह़ादीष़ हैं जिनमें मुअजज़ाते नबवी के बारे में कोई न कोई वाक़िया किसी न किसी पहलू से मज़्कूर है।

٣٦٣٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا مُعَاذٌ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ قَتَادَةَ حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : ((أَنَّ رَجُلَيْنِ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ خَرَجَا مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ ﷺ فِي لَيْلَةٍ مُظْلِمَةٍ وَمَعَهُمَا مِثْلُ

3639. मुझसे मुह म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे मुआ़ज़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़जरत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की मज्लिस से दो स़ह़ाबी (उसैद बिन हुज़ैर रज़ि. और अ़ब्बाद बिन बिश्र रज़ि.) उठकर (अपने घर) वापस हुए। रात अंधेरी थी लेकिन दो चराग़ की त़रह की कोई चीज़

उनके आगे रोशनी करता जाता था। फिर जब वो दोनों (रास्ते में अलग अलग घर की तरफ जाने के लिए) जुदा हुए तो हर एक के साथ अलग अलग हो गई और इस तरह वो अपने घरवालों के पास पहुँच गए। (राजेअ: 465)

فَلَمَّا افْتَرَقَا صَارَ مَعَ كُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا وَاحِدٌ حَتَّى أَتَى أَهْلَهُ)). [راجع: ٤٦٥]

ये रसूले करीम (ﷺ) की दुआ थी कि अल्लाह तआला ने उनको रोशनी अता फ़र्माई। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ की रिवायत में है कि उनकी लाठी चराग़ की त़रह़ रोशन हो गई। कुछ फ़ाज़िलाने-इस्लाम ने बतलाया कि उनकी उँगलियाँ रोशन हो गई थीं इख़्तिलाफ़ देखने वालों की रूइय्यत का है। किसी ने समझा कि अ़सा (लाठी) चमक रही है और किसी ने जाना कि ये रोशनी उनकी उँगलियों में से फूट रही है। इससे औलिया अल्लाह की करामतों का बरहक़ होना ष़ाबित हुआ मगर झूठी करामतों का गढ़ना बदतरीन जुर्म है। जिसका इर्तिकाब आजकल के अहले बिद्अ़त करते रहते हैं जो बहुत से अफ़ीमचियों और शराबियों की करामतें बनाकर उनकी क़ब्रों को दरगाह बना लेते हैं, फिर उनकी पूजा—पाठ शुरू कर देते हैं। मौलाना रूम (रह.) ने सच कहा है

कारे शैत़ान मी कुनद नामम वली — गर वली ईं अस्त ला'नत बर वली

या'नी कितने लोग वली कहलाते हैं और काम शैत़ानों के करते हैं। ऐसे मक्कार आदमियों पर अल्लाह की ला'नत है।

3640. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अल् अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, कहा उनसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे क़ैस ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी उम्मत के कुछ लोग हमेशा ग़ालिब रहेंगे, यहाँ तक कि क़यामत या मौत आएगी उस वक़्त भी वो ग़ालिब ही होंगे। (दीगर मक़ाम : 7311, 7459)

٣٦٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا قَيْسٌ سَمِعْتُ الْمُغِيْرَةَ بْنَ شُعْبَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((لاَ يَزَالُ نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِيْنَ، حَتَّى يَأْتِيَهُمْ أَمْرُ اللهِ وَهُمْ ظَاهِرُوْنَ)).

[طرفاه في : ٧٣١١، ٧٤٥٩].

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ से अहले ह़दीष़ मुराद हैं। इमाम अह़मद बिन ह़ंबल (रह) फ़र्माते हैं कि अगर इससे अहले ह़दीष़ मुराद न हों तो मैं नहीं समझ सकता कि और कौन लोग मुराद हो सकते हैं।

3641. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, कहा कि मुझसे यज़ीद बिन जाबिर ने बयान किया, कहा कि मुझसे उ़मैर बिन हानी ने बयान किया और उन्होंने मुआ़विया बिन अबी सुफ़यान से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना था, आप फ़र्मा रहे थे कि मेरी उम्मत में हमेशा एक गिरोह ऐसा मौजूद रहेगा जो अल्लाह तआ़ला की शरीअ़त पर क़ायम रहेगा, उन्हें ज़लील करने की कोशिश करने वाले और इसी त़रह उनकी मुख़ालफ़त करने वाले उन्हें कोई नुक़्सान न पहुँचा सकेंगे यहाँ तक कि क़यामत आ जाएगी और वो इसी ह़ालत पर रहेंगे। उ़मैर ने बयान किया कि इस पर मालिक बिन यख़ामिर ने कहा कि मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) ने कहा था कि हमारे ज़माने में ये लोग शाम में हैं। अमीर मुआ़विया ने कहा कि देखो ये मालिक

٣٦٤١- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا الْوَلِيْدُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ جَابِرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَيْرُ بْنُ هَانِيءٍ أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ يَزَالُ مِنْ أُمَّتِي أُمَّةٌ قَائِمَةٌ بِأَمْرِ اللهِ لاَ يَضُرُّهُمْ مَنْ خَذَلَهُمْ وَلاَ مَنْ خَالَفَهُمْ، حَتَّى يَأْتِيَهُمْ أَمْرُ اللهِ وَهُمْ عَلَى ذَلِكَ)). قَالَ: عُمَيْرٌ: فَقَالَ مَالِكُ بْنُ يُخَامِرَ: قَالَ مُعَاذٌ: ((وَهُمْ بِالشَّامِ))، فَقَالَ مُعَاوِيَةُ: هَذَا مَالِكٌ يَزْعَمُ أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاذًا يَقُولُ: ((وَهُمْ بِالشَّامِ)).

बिन यख़ामिर यहाँ मौजूद हैं, जो कह रहे हैं कि उन्होंने मुआ़ज़ (रज़ि.) से सुना कि ये लोग शाम के मुल्क में हैं। (राजेअ़ : 71)

[راجع: ٧١]

तश्रीह : हज़रत मुआविया (रज़ि.) भी शाम में थे। उनका मत़लब ये था कि अहले शाम इस ह़दीष़ से मुराद हैं। मगर ये कोई ख़ुसूसियत नहीं है। मत़लब आँह़ज़रत (ﷺ) का ये है कि मेरी उम्मत के सब लोग एकदम गुमराह हो जाएँ ऐसा न होगा बल्कि एक गिरोह तब भी ज़रूर बिल ज़रूर ह़क़ पर क़ायम रहेगा और ये अहले ह़दीष़ का गिरोह है। इमाम अह़मद बिन ह़ंबल ने यही फ़र्माया है और भी बहुत से उ़लमा ने स़राह़त से लिखा है कि इस पेशीनगोई के मिस्दाक़ वो लोग हैं जिन्होंने क़ील व क़ाल और आरा-ए-रिजाल से हटकर सिर्फ़ ज़ाहिर नुसूस़ किताब व सुन्नत को अपना मदारे अ़मल क़रार दिया और स़ह़ाबा ताबेईन व मुह़द्दिष़ीन व अइम्म–ए– मुज्तहिदीन के त़र्ज़े अ़मल को अपनाया। ज़ाहिर है कि मज़्कूरा बुज़ुर्गाने इस्लाम मौजूदा तक़्लीदे जामिद के शिकार न थे न उनमें मसालिक के नामों पर मुख़्तलिफ़ गिरोह थे जैसा कि बाद में पैदा हुए कि का'बा शरीफ़ तक को चार मुस़ल्लों में तक़्सीम कर दिया गया। शुक्र है अल्लाह पाक का कि जमाअ़ते अहले ह़दीष़ की मेहनतों के नतीजे में आज मुसलमान फिर किताब व सुन्नत की त़रफ़ आ रहे हैं।

3642. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान बिन उ़ययना ने ख़बर दी, कहा हमसे शबीब बिन ग़रक़दह ने बयान किया कि मैंने अपने क़बीले के लोगों से सुना था, वो लोग उ़र्वा से नक़ल करते थे (जो अबुल जअ़दि के बेटे और स़ह़ाबी थे) कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें एक दीनार दिया कि वो उसकी एक बकरी ख़रीदकर ले आएँ। उन्होंने उस दीनार से दो बकरियाँ खरीदीं, फिर एक बकरी को एक दीनार में बेचकर दीनार भी वापस कर दिया और बकरी भी पेश कर दी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस पर उनकी तिजारत में बरकत की दुआ़ फ़र्माई। फिर तो उनका ये ह़ाल हुआ कि अगर मिट्टी भी ख़रीदते तो उसमें उन्हें नफ़ा हो जाता। सुफ़ियान ने कहा कि ह़सन बिन अ़म्मारा ने हमें ये ह़दीष़ पहुँचाई थी शबीब बिन ग़रक़दह से। ह़सन बिन अ़म्मारा ने कहा कि शबीब ने ये ह़दीष़ ख़ुद उ़र्वा (रज़ि.) से सुनी थी। चुनाँचे मैं शबीब की ख़िदमत में गया तो उन्होंने बताया कि मैंने ये ह़दीष़ ख़ुद उ़र्वा से सुनी थी, अल्बत्ता मैंने अपने क़बीले के लोगों को उनके ह़वाले से बयान करते सुना था।

٣٦٤٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا شَبِيْبُ بْنُ غَرْقَدَةَ قَالَ: سَمِعْتُ الْحَيَّ يَتَحَدَّثُونَ عَنْ عُرْوَةَ: ((أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْطَاهُ دِيْنَارًا يَشْتَرِي لَهُ بِهِ شَاةً، فَاشْتَرَى لَهُ بِهِ شَاتَيْنِ، فَبَاعَ إِحْدَاهُمَا بِدِيْنَارٍ، فَجَاءَ بِدِيْنَارٍ وَشَاةٍ، فَدَعَا لَهُ بِالْبَرَكَةِ فِي بَيْعِهِ، وَكَانَ لَوِ اشْتَرَى التُّرَابَ لَرَبِحَ فِيْهِ)). قَالَ سُفْيَانُ كَانَ الْحَسَنُ بْنُ عُمَارَةَ جَاءَنَا بِهَذَا الْحَدِيْثِ عَنْهُ قَالَ: سَمِعَهُ شَبِيْبٌ عَنْ عُرْوَةَ، فَأَتَيْتُهُ، فَقَالَ: إِنِّي لَمْ أَسْمَعْهُ مِنْ عُرْوَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ الْحَيَّ يُخْبِرُوْنَهُ عَنْهُ)).

3643. अल्बत्ता ये दूसरी ह़दीष़ ख़ुद मैंने उ़र्वा (रज़ि.) से सुनी है वो बयान करते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया ख़ैर और भलाई घोड़ों की पेशानी के साथ क़यामत तक के लिये बँधी हुई है। शबीब ने कहा कि मैंने ह़ज़रत उ़र्वा (रज़ि.) के घर में सत्तर घोड़े देखे। सुफ़यान ने कहा कि ह़ज़रत उ़र्वा (रज़ि.)

٣٦٤٣- وَلَكِنْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْخَيْرُ مَعْقُودٌ بِنَوَاصِي الْخَيْلِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ))، قَالَ: وَقَدْ رَأَيْتُ فِي دَارِهِ سَبْعِيْنَ فَرَسًا. قَالَ سُفْيَانُ:

ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के लिये बकरी ख़रीदी थी शायद वो क़ुर्बानी के लिये होगी। (राजेअ़ : 2850)

((يَشْتَرِي لَهُ شَاةً كَأَنَّهَا أُضْحِيَةٌ)). [راجع: ٢٨٥٠]

तश्रीह : यहाँ ये ए'तिराज़ हुआ है कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) को उर्वा की कौनसी हदीष मक़्सूद है, अगर घोड़ों की हदीष मक़्सूद है तो वो बेशक मौसूल है मगर उसको बाब से मुनासबत नहीं है और अगर बकरी वाली हदीष मक़्सूद है तो वो बाब के मुवाफ़िक़ है क्योंकि उसमें आँहज़रत (ﷺ) का एक मुअजज़ा या'नी दुआ का क़ुबूल होना मज़्कूर है मगर वो मौसूल नहीं है, शबीब के क़बीले वाले मज्हूल हैं। जवाब ये है कि क़बीले वाले मुतअ़द्दिद लोग थे, वो सब झूठ बोलें, ये नहीं हो सकता तो हदीष मौसूल और सहीह हो गई। घोड़ों वाली हदीष में एक पेशीनगोई है जो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह षाबित हो रही है, ये भी इस तरह बाब के बारे में है कि उसमें आपकी सदाक़त की दलील मौजूद है।

3644. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ़ ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, घोड़े की पेशानी के साथ ख़ैरो–बरकत बाँध दी गई है। (राजेअ़ : 2849)

٣٦٤٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الْخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)). [راجع: ٢٨٤٩]

इसमें भी पेशीनगोई है जो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह है और यही बाब का तर्जुमा है। आज जदीद अस्लहा की फ़रावानी के बावजूद भी फ़ौज में घोड़े की अहमियत है।

3645. हमसे क़ैस बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन हारिष ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने बयान किया और उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि घोड़े की पेशानी के साथ बरकत बाँध दी गई है। (राजेअ़ : 2851)

٣٦٤٥- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْخَيْلُ مَعْقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيْرُ)). [راجع: ٢٨٥١]

मुराद माले ग़नीमत है जो घोड़े सवार मुजाहिदीन को फ़तह के नतीजे में हासिल हुआ करता था। आज भी घोड़ा फ़ौजी ज़रूरियात के लिये बड़ी अहमियत रखता है।

3646. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अबू सालेह सिमान ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, घोड़े तीन आदमियों के लिये हैं। एक के लिये तो वो बाइ़षे षवाब हैं और एक के लिये वो मुआफ़ या'नी मुबाह हैं और एक के लिये वो वबाल हैं। जिसके लिये घोड़ा बाइ़षे षवाब है ये वो शख़्स है जो जिहाद के लिये उसे पा ले और चरागाह या बाग़ में उसकी रस्सी को (जिससे वो बँधा होता है)

٣٦٤٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((الْخَيْلُ لِثَلاَثَةٍ: لِرَجُلٍ أَجْرٌ، وَلِرَجُلٍ سِتْرٌ، وَعَلَى رَجُلٍ وِزْرٌ. فَأَمَّا الَّذِي لَهُ أَجْرٌ

فَرَجُلٌ رَبَطَهَا فِي سَبِيْلِ اللهِ، فَأَطَالَ لَهَا فِي مَرْجٍ أَوْ رَوْضَةٍ، وَمَا أَصَابَتْ فِي طِيَلِهَا مِنَ الْمَرْجِ أَوِ الرَّوْضَةِ كَانَتْ لَهُ حَسَنَات، وَلَوْ أَنَّهَا قَطَعَتْ طِيَلَهَا فَاسْتَنَّتْ شَرَفًا أَوْ شَرَفَيْنِ كَانَتْ أَرْوَاثُهَا حَسَنَاتٍ لَهُ، وَلَوْ أَنَّهَا مَرَّتْ بِنَهْرٍ فَشَرِبَتْ وَلَمْ يُرِدْ أَنْ يَسْقِيَهَا كَانَ ذَلِكَ لَهُ حَسَنَات. وَرَجُلٌ رَبَطَهَا تَغَنِّيًا وَتَسَتُّرًا وَتَعَفُّفًا وَلَمْ يَنْسَ حَقَّ اللهِ فِي رِقَابِهَا وَظُهُورِهَا، فَهِيَ لَهُ كَذَلِكَ سِتْرٌ. وَرَجُلٌ رَبَطَهَا فَخْرًا وَرِيَاءً وَنِوَاءً لأَهْلِ الإِسْلاَمِ فَهِيَ وِزْرٌ)). وَسُئِلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنِ الْحُمُرِ فَقَالَ: ((مَا أُنْزِلَ عَلَيَّ فِيْهَا إِلاَّ هَذِهِ الآيَةُ الْجَامِعَةُ الْفَاذَّةُ: ﴿فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا، يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ﴾. [الزلزلة: ٧-٨].
[راجع: ٢٣٧١]

ख़ूब दराज़ कर दे तो वो अपने इस तूल व अ़र्ज़ में जो कुछ भी चरता है वो बस उसके मालिक के लिये नेकियाँ बन जाती हैं और अगर कभी वो अपनी रस्सी तुड़ाकर दो चार क़दम दौड़ ले तो उसकी लीद भी मालिक के लिये बाइ़षे ष़वाब बन जाती है और कभी अगर वो किसी नहर से गुज़रते हुए उसमें से पानी पी ले अगरचे मालिक के दिल में उसे पहले से पानी पिलाने का ख़्याल भी न था, फिर भी घोड़े का पानी पीना उसके लिये ष़वाब बन जाता है। और एक वो आदमी जो घोड़े को लोगों के सामने अपनी ह़ाजत, पर्दापोशी और सवाल से बचे रहने की ग़र्ज़ से पा ले और अल्लाह तआ़ला का जो ह़क़ उसकी गर्दन और उसकी पीठ में है उसे भी वो फ़रामोश न करे तो ये घोड़ा उसके लिये एक त़रह़ का पर्दा होता है और एक शख़्स़ वो है जो घोड़े को फ़ख़्र और दिखावे और अहले इस्लाम की दुश्मनी में पा ले तो वो उसके लिये वबाले जान है और नबी करीम (ﷺ) से गधों के बारे में पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि इस जामेअ़ आयत के सिवा मुझ पर गधों के बारे में कुछ नाज़िल नहीं हुआ कि, जो शख़्स़ एक ज़र्रा के बराबर भी नेकी करेगा तो उसका भी वो बदला पाएगा और जो शख़्स़ एक ज़र्रा के बराबर भी बुराई करेगा तो वो उसका भी बदला पाएगा। (राजेअ़ : 2371)

तश्रीह : आज के दौर में घोड़ों की जगह लॉरियों और ट्रकों ने ले ली है जिनकी दुनिया के हर मैदान में ज़रूरत पड़ती है। जंगी मौक़ों पर हुकूमतें कितनी पब्लिक लॉरियों और ट्रकों को ह़ासिल कर लेती हैं और ऐसा करना हुकूमतों के लिये ज़रूरी हो जाता है। ह़दीष़ में मज़्कूरा तीन लोगों का इत़्लाक़ ऊपर बयान की गई तफ़्सील के मुताबिक़ आज लॉरी व ट्रक रखने वाले मुसलमानों पर भी हो सकता है कि कितनी गाड़ियाँ कुछ दफ़ा बेहतरीन मिल्ली मफ़ाद के लिये इस्ते'माल में आ जाती हैं। उनके मालिक मज़्कूरा अज्रो—ष़वाब के मुस्तह़िक़ होंगे। **व ज़ालिक फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय्यशाउ** घोड़ों की तफ़्सीलात आज भी क़ायम हैं।

٣٦٤٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدٍ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((صَبَّحَ رَسُولُ اللهِ ﷺ خَيْبَرَ بُكْرَةً وَقَدْ خَرَجُوا بِالْمَسَاحِي، فَلَمَّا رَأَوْهُ قَالُوا:

3647. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यय्ना ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़ितयानी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ख़ैबर में सुबह सवेरे ही पहुँच गये। ख़ैबर के यहूदी उस वक़्त अपने फावड़े लेकर (खेतों में काम करने के लिये) जा रहे थे कि उन्होंने आपको देखा और ये कहते हुए कि मुहम्मद लश्कर

लेकर आ गये, वो क़िला की तरफ़ भागे। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने अपने हाथ उठाकर फ़र्माया, अल्लाहु अकबर ख़ैबर तो बर्बाद हुआ कि जब हम किसी क़ौम के मैदान में (जंग के लिये) उतर जाते हैं तो फिर डराए हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है। (राजेअ : 371)

مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ، فَأَجْلَوْا إِلَى الْحِصْنِ يَسْعَوْنَ، فَرَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَيْهِ وَقَالَ: ((اللهُ أَكْبَرُ، خَرِبَتْ خَيْبَرُ، إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ)).

[راجع: ٣٧١]

इस हदीष़ की मुनासबत बाब से ये है आपने ख़ैबर फ़तह होने से पहले ही फ़र्मा दिया था कि ख़ैबर ख़राब हुआ और फिर यही ज़ुहूर में आया। ये जंगे ख़ैबर का वाक़िया है जिसकी तफ़्सीलात अपने मौक़े पर बयान होगी।

3648. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा मुझसे मुहम्मद बिन इस्माईल इब्ने अबिल फुदैक ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान इब्ने अबी ज़िब ने, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने आपसे बहुत सी अहादीष़ अब तक सुनी हैं लेकिन मैं उन्हें भूल जाता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि अपनी चादर फैलाओ, मैंने चादर फैला दी और आपने अपने हाथ से उसमें एक लप भरकर डाल दी और फ़र्माया कि उसे अपने बदन से लगा लो, चुनाँचे मैंने लगा लिया और उसके बाद कभी कोई हदीष़ नहीं भूला। (राजेअ : 118)

٣٦٤٨- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الْفُدَيْكِ عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي سَمِعْتُ مِنْكَ حَدِيثًا كَثِيرًا فَأَنْسَاهُ قَالَ ﷺ ((ابْسُطْ رِدَاءَكَ))، فَبَسَطْتُهُ، فَغَرَفَ بِيَدَيْهِ فِيهِ ثُمَّ قَالَ: ((ضُمَّهُ))، فَضَمَمْتُهُ، فَمَا نَسِيتُ حَدِيثًا بَعْدُ)).

[راجع: ١١٨]

तश्रीह : आपकी दुआ की बरकत से हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का हाफ़ज़ा तेज़ हो गया। चादर में आपने दुआओं के साथ बरकत को गोया लप भरकर डाल दिया। उस चादर को हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने अपने सीने से लगाकर बरकतों से अपने सीने को मअमूर कर लिया और पाँच हज़ार से भी ज़्यादा अहादीष़ के हाफ़िज़ क़रार पाये। तुफ़ है उन लोगों पर जो ऐसे जलीलुल क़द्र हाफ़िज़ुल हदीष़ सहाबिये रसूलुल्लाह (ﷺ) को हदीष़ फ़हमी में नाक़िस क़रार देकर ख़ुद अपनी हिमाक़त का इज़्हार करते हैं। ऐसे उलमा व फुक़हा को अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिये कि एक सहाबिये रसूल की तौहीन की सज़ा में गिरफ़्तार होकर कहीं वो **ख़सिरद्दुनिया वल्आख़िरति** के मिस्दाक़ न बन जाएँ। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का मक़ामे रिवायत और मुक़ामे दिरायत बहुत आला व अर्फ़ा है **व लित्तफ़्सीलि मक़ामुन आख़र**

अलामाते नुबुव्वत का बाब यहाँ ख़त्म हुआ, अब हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) अस्हाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) के फ़ज़ाइल का बयान शुरू फ़र्मा रहे हैं। जिस क़दर रिवायात मज़्कूर हुई हैं सब में किसी न किसी तरह से अलामते नुबुव्वत का षुबूत निकलता है और यही इमाम बुख़ारी का मंशा है।

62. किताब फ़ज़ाइले अस्हाबुन्नबी (ﷺ)

नबी-करीम (ﷺ) के सहाबा की फ़ज़ीलत

بسم الله الرحمن الرحيم

बाब 1 : नबी करीम (ﷺ) के सहाबियों की फ़ज़ीलत का बयान

١ - بَابُ فَضَائِلِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، وَمَنْ صَحِبَ النَّبِيَّ ﷺ أَوْ رَآهُ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ فَهُوَ فِي أَصْحَابِهِ

(इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि) जिस मुसलमान ने भी आँहज़रत (ﷺ) की सुहबत उठाई या आपका दीदार उसे नसीब हुआ हो वो आप (ﷺ) का सहाबी है।

तश्रीह : जुम्हूर उलमा का यही क़ौल है कि जिसने अपनी ज़िन्दगी में आँहज़रत (ﷺ) को एक बार भी देखा हो वो सहाबी है बशर्ते कि वो मुसलमान हो। बस आँहज़रत (ﷺ) को एक बार देख लेना ऐसा शर्फ़ है कि सारी उम्र का मुजाहिदा उसके बराबर नहीं हो सकता। कुछ ने कहा कि औलिया अल्लाह जिन सहाबा के मर्तबे को नहीं पहुँच सकते उनसे मुराद वो सहाबा हैं जो आपकी सुहबत में रहे और आपसे इस्तिफ़ादा किया और आपके साथ जिहाद किया, मगर ये क़ौल मरजूह है। हमारे पीर व मुर्शिद महबूब सुब्हानी हज़रत सय्यद जीलानी (रह) फ़र्माते हैं कि कोई वली अदना सहाबी के मर्तबे के बराबर नहीं पहुँच सकता है। (वहीदी)

3649. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया और उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, एक ज़माना आएगा कि अहले इस्लाम की जमाअतें जिहाद करेंगी तो उनसे पूछा जाएगा कि क्या तुम्हारे साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) के कोई सहाबी भी हैं? वो कहेंगे कि हाँ हैं। तब उनकी फ़तह होगी। फिर एक ऐसा ज़माना आएगा कि मुसलमानों की जमाअतें जिहाद करेंगी और उस मौक़े पर ये पूछा जाएगा कि क्या यहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबी की सुहबत उठाने वाले (ताबेई) भी मौजूद हैं?

٣٦٤٩ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيْدٍ الْخُدْرِيُّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ، فَيَقُولُونَ: فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ فَيَقُولُونَ لَهُمْ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ لَهُمْ. ثُمَّ يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ

جवाब होगा कि हाँ हैं और उनके ज़रिये फ़तह की दुआ मांगी जाएगी। उसके बाद एक ज़माना ऐसा आएगा कि मुसलमानों की जमाअतें जिहाद करेंगी और उस वक़्त सवाल उठेगा कि क्या यहाँ कोई बुज़ुर्ग ऐसे हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा के शागिर्दों में से किसी बुज़ुर्ग की सुहबत में रहे हो? जवाब होगा कि हाँ हैं तो उनके ज़रिये फ़तह की दुआ मांगी जाएगी फिर उनकी फ़तह होगी। (राजेअ : 2897)

أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ لَهُمْ. ثُمَّ يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ مَنْ صَاحَبَ أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ لَهُمْ)).

[راجع: ٢٨٩٧]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ने उन तीन ज़माने वालों की फ़ज़ीलत बयान की गोया वो ख़ैरुल कुरून ठहरे। इसीलिये उलमा ने बिदअत की ता'रीफ़ ये क़रार दी है कि दीन में जो काम नया निकाला जाए जिसका वजूद इन तीन ज़मानों में न हो। ऐसी हर बिदअत गुमराही है और जिन लोगों ने बिदअत की तक़्सीम की है और हस्ना और सय्या की तरफ़, उनकी मुराद बिदअत से बिदअते लग़्वी है। हमारे मुर्शिद शैख़ अहमद मुजद्दिद सरहिन्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि मैं तो किसी बिदअत में सिवाय ज़ुल्मत और तारीकी के मुत्लक़ नूर नहीं पाता। (वहीदी)

3650. मुझसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें अबू जम्रह ने, कहा मैंने ज़ह्दम बिन मुज़र्रब से सुना, कहा कि मैंने हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी उम्मत का सबसे बेहतरीन ज़माना मेरा ज़माना है। फिर उन लोगों का जो इस ज़माने के बाद आएँगे, फिर उन लोगों का जो उस ज़माने के बाद आएँगे। हज़रत इमरान (रज़ि.) कहते हैं कि मुझे याद नहीं कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपने दौर के बाद दो ज़मानों का ज़िक्र किया या तीन का। फिर आपने फ़र्माया कि तुम्हारे बाद एक ऐसी क़ौम पैदा होगी जो बग़ैर कहे गवाही देने के लिये तैयार हो जाया करेगी और उनमें ख़यानत और चोरी इतनी आम हो जाएगी कि उन पर किसी क़िस्म का भरोसा बाक़ी नहीं रहेगा, और नज़्रें मानेंगे लेकिन उन्हें पूरा नहीं करेंगे (हराम माल खा खाकर) उन पर मोटापा आम हो जाएगा। (राजेअ : 2651)

٣٦٥٠– حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا النَّضْرُ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ سَمِعْتُ زَهْدَمَ بْنَ مُضَرِّبٍ سَمِعْتُ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((خَيْرُ أُمَّتِي قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ)) قَالَ عِمْرَانُ : فَلاَ أَدْرِي أَذَكَرَ بَعْدَ قَرْنِهِ قَرْنَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا. ثُمَّ إِنَّ بَعْدَكُمْ قَوْمًا يَشْهَدُونَ وَلاَ يُسْتَشْهَدُونَ وَيَخُونُونَ وَلاَ يُؤْتَمَنُونَ، وَيَنْذُرُونَ وَلاَ يَفُونَ، وَيَظْهَرُ فِيهِمُ السِّمَنُ)).

[راجع: ٢٦٥١]

ख़ैरुल कुरून के बाद होने वाले दुनियादार नामो–निहाद मुसलमानों के बारे में ये पेशगोई है जो अख़्लाक़ और आमाल के ए'तिबार से बदतरीन क़िस्म के लोग होंगे। जैसा कि इर्शाद हुआ है कि झूठ और बद दयानती और दुनियासाज़ी उनका रात दिन का मश्ग़ला होगा। **अल्लाहुम्म ला तज्अल्ना मिन्हुम, आमीन।**

3651. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे उबैदा बिन क़ैस सलमानी ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि बेहतरीन

٣٦٥١– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبِيدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَالَ: ((خَيْرُ النَّاسِ قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ يَجِيءُ قَوْمٌ تَسْبِقُ شَهَادَةُ أَحَدِهِمْ يَمِيْنَهُ، وَيَمِيْنُهُ شَهَادَتَهُ)). قَالَ إِبْرَاهِيْمُ: وَكَانُوا يَضْرِبُونَنَا عَلَى الشَّهَادَةِ وَالْعَهْدِ وَنَحْنُ صِغَارٌ.

[راجع: ٢٦٥٢]

ज़माना मेरा ज़माना है। फिर उन लोगों का जो इस ज़माने के बाद आएँगे फिर उन लोगों का जो उसके बाद आएँगे। उसके बाद एक ऐसी क़ौम पैदा होगी कि गवाही देने से पहले क़सम उनकी ज़ुबान पर आ जाया करेगी और क़सम खाने से पहले गवाही उनकी ज़ुबान पर आ जाया करेगी। इब्राहीम ने बयान किया कि जब हम छोटे थे तो गवाही और अ़हद (के अल्फ़ाज़ ज़ुबान पर लाने) की वजह से हमारे बड़े बुज़ुर्ग हम को मारा करते थे। (राजेअ़ : 2652)

मत़लब ये है कि उनको ख़ुद अपने दिमाग़ पर और अपनी ज़ुबान पर क़ाबू ह़ासिल न होगा, झूठी गवाही देने और झूठी क़सम खाने में वो ऐसे बेबाक होंगे कि फ़िल् फ़ोर (अनायास) ही ये चीज़ें उनकी ज़ुबानों पर आ जाया करेंगी। बग़ौर देखा जाए तो आज आ़म अहले इस्लाम का ह़ाल यही है। इल्ला माशाअल्लाह।

٢- بَابُ مَنَاقِبِ الْمُهَاجِرِيْنَ وَفَضْلِهِمْ

बाब 2 : मुहाजिरीन के मनाक़िब और फ़ज़ाइल का बयान

مِنْهُمْ أَبُوبَكْرٍ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي قُحَافَةَ التَّيْمِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِيْنَ الَّذِيْنَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلاً مِنَ اللهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُوْنَ اللهَ وَرَسُوْلَهُ، أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ﴾ [الحشر:٨].

हज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़ह़ाफ़ा तैमी (रज़ि.) भी मुहाजिरीन में शामिल हैं और अल्लाह तआ़ला ने (सूरह ह़श्र) में उन मुहाजिरीन का ज़िक्र किया, उन मुफ़्लिस मुहाजिरों का ये (ख़ास़ तौर पर) ह़क़ है जो अपने घरों और अपने मालों से जुदा कर दिये गये हैं जो अल्लाह का फ़ज़्ल और रज़ामन्दी चाहते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की मदद करने को आए हैं, यही लोग सच्चे हैं।

وَقَالَ: ﴿إِلاَّ تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللهُ - إِلَى قَوْلِهِ - إِنَّ اللهَ مَعَنَا﴾ [التوبة : ٤٠]. قَالَتْ عَائِشَةُ وَأَبُو سَعِيْدٍ وَابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ : ((وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْغَارِ)).

और (सूरह तौबा में) अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, अगर तुम लोग उनकी (या'नी रसूल की) मदद न करोगे तो उनकी मदद तो ख़ुद अल्लाह कर चुका है, आख़िर आयत इन्नल्लाह मअ़ना तक। ह़ज़रत आ़इशा, अबू सईद ख़ुदरी और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के साथ (हिजरत के वक़्त) ग़ारे स़ौर में रहे थे।

वो मुसलमान जो कुफ़्फ़ारे मक्का के सताने पर अपना वत़न मक्का शरीफ़ छोड़कर मदीना जा बसे यही मुसलमान मुहाजिरीन कहलाए जाते हैं। लफ़्ज़े हिजरत इस्लाम के लिये तर्के वत़न करने को कहा गया है।

٣٦٥٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيْلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ:

3652. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने और उनसे ह़ज़रत

बराअ (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने (उनके वालिद) हज़रत आज़िब (रज़ि.) से एक पालान तेरह दिरहम में ख़रीदा। फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने आज़िब (रज़ि.) से कहा कि बराअ (अपने बेटे) से कहो कि वो मेरे घर ये पालान उठाकर पहुँचा दें इस पर हज़रत आज़िब (रज़ि.) ने कहा ये उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक आप वो वाक़िया बयान न करें कि आप और रसूलुल्लाह (ﷺ) (मक्का से हिजरत करने के लिये) किस तरह निकले थे, हालाँकि मुश्रिकीन आप दोनों को तलाश भी कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मक्का से निकलने के बाद हम रात भर चलते रहे और दिन में भी सफ़र जारी रखा। लेकिन जब दोपहर हो गई तो मैंने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई कि कहीं कोई साया नज़र आ जाए और हम उसमें कुछ आराम कर सकें। आख़िर एक चट्टान दिखाई दी और मैंने उसके पास पहुँच कर देखा कि साया है। फिर मैंने नबी करीम (ﷺ) के लिये एक फ़र्श वहाँ बिछा दिया और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप अब आराम फ़र्माएँ। चुनाँचे आप (ﷺ) लेट गये। फिर मैं चारों तरफ़ देखता हुआ निकला कि कहीं लोग हमारी तलाश में न आए हों। फिर मुझको बकरियों का एक चरवाहा दिखाई दिया जो अपनी बकरियाँ हाँकता हुआ उसी चट्टान की तरफ़ आ रहा था। वो भी हमारी तरह साये की तलाश में था। मैंने बढ़कर उससे पूछा कि लड़के तू किस का ग़ुलाम है। उसने कुरैश के एक शख़्स का नाम लिया तो मैंने उसे पहचान लिया। फिर मैंने उससे पूछा, क्या तुम्हारी बकरियों में दूध है। उसने कहा जी हाँ। मैंने कहा, क्या तुम दूध दुह सकते हो? उसने कहा कि हाँ। चुनाँचे मैंने उससे कहा और उसने अपने रेवड़ की एक बकरी बाँध दी। फिर मेरे कहने पर उसने उसके थन के ग़ुबार को झाड़ा। अब मैंने कहा कि अपना हाथ भी झाड़ ले। उसने यूँ अपना एक हाथ दूसरे पर मारा और मेरे लिये थोड़ा सा दूध दूहा। आँहज़रत (ﷺ) के लिये एक बर्तन मैंने पहले ही से साथ ले लिया था और उसके मुँह को कपड़े से बन्द कर दिया था (उसमें ठण्डा पानी था) फिर मैंने दूध पर वो पानी (ठण्डा करने के लिये) डाला इतना कि वो नीचे तक ठण्डा हो गया तो उसे आपकी ख़िदमत में लेकर

((اشْتَرَى أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مِنْ عَازِبٍ رَحْلاً بِثَلاَثَةَ عَشَرَ دِرْهَمًا، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ لِعَازِبٍ: مُرِ الْبَرَاءَ فَلْيَحْمِلْ إِلَيَّ رَحْلِي، فَقَالَ عَازِبٌ: لاَ، حَتَّى تُحَدِّثَنَا كَيْفَ صَنَعْتَ أَنْتَ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ خَرَجْتُمَا مِنْ مَكَّةَ وَالْمُشْرِكُونَ يَطْلُبُونَكُمْ. قَالَ: ارْتَحَلْنَا مِنْ مَكَّةَ فَأَحْيَيْنَا - أَوْ سَرَيْنَا - لَيْلَتَنَا وَيَوْمَنَا حَتَّى أَظْهَرْنَا وَقَامَ قَائِمُ الظَّهِيرَةِ، فَرَمَيْتُ بِبَصَرِي هَلْ أَرَى مِنْ ظِلٍّ فَآوِي إِلَيْهِ، فَإِذَا صَخْرَةٌ أَتَيْتُهَا، فَنَظَرْتُ بَقِيَّةَ ظِلٍّ لَهَا فَسَوَّيْتُهُ، ثُمَّ فَرَشْتُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فِيهِ، ثُمَّ قُلْتُ لَهُ: اضْطَجِعْ يَا نَبِيَّ اللهِ، فَاضْطَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ، ثُمَّ انْطَلَقْتُ أَنْظُرُ مَا حَوْلِي: هَلْ أَرَى مِنَ الطَّلَبِ أَحَدًا؟ فَإِذَا أَنَا بِرَاعِي غَنَمٍ يَسُوقُ غَنَمَهُ إِلَى الصَّخْرَةِ، يُرِيدُ مِنْهَا الَّذِي أَرَدْنَا، فَسَأَلْتُهُ فَقُلْتُ لَهُ: لِمَنْ أَنْتَ يَا غُلاَمُ؟ قَالَ لِرَجُلٍ مِنْ قُرَيْشٍ سَمَّاهُ فَعَرَفْتُهُ، فَقُلْتُ: هَلْ فِي غَنَمِكَ مِنْ لَبَنٍ؟ قَالَ: نَعَمْ. قُلْتُ: فَهَلْ أَنْتَ حَالِبٌ لَنَا؟ قَالَ: نَعَمْ. فَأَمَرْتُهُ فَاعْتَقَلَ شَاةً مِنْ غَنَمِهِ، ثُمَّ أَمَرْتُهُ أَنْ يَنْفُضَ ضَرْعَهَا مِنَ الْغُبَارِ، ثُمَّ أَمَرْتُهُ أَنْ يَنْفُضَ كَفَّيْهِ فَقَالَ هَكَذَا، ضَرَبَ إِحْدَى كَفَّيْهِ بِالأُخْرَى فَحَلَبَ لِي كُثْبَةً مِنْ لَبَنٍ، وَقَدْ جَعَلْتُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ إِدَاوَةً عَلَى فَمِهَا خِرْقَةٌ، فَصَبَبْتُ عَلَى اللَّبَنِ حَتَّى بَرَدَ أَسْفَلُهُ، فَانْطَلَقْتُ بِهِ إِلَى النَّبِيِّ

ﷺ فَوَافَقْتُهُ قَدِ اسْتَيْقَظَ، فَقُلْتُ: اشْرَبْ يَا رَسُولَ اللهِ، فَشَرِبَ حَتَّى رَضِيتُ. ثُمَّ قُلْتُ: قَدْ آنَ الرَّحِيلُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((بَلَى)). فَارْتَحَلْنَا وَالْقَوْمُ يَطْلُبُونَنَا، فَلَمْ يُدْرِكْنَا أَحَدٌ مِنْهُمْ غَيْرُ سُرَاقَةَ بْنِ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ عَلَى فَرَسٍ لَهُ، فَقُلْتُ: هَذَا الطَّلَبُ قَدْ لَحِقَنَا يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَالَ: ((لاَ تَحْزَنْ، إِنَّ اللهَ مَعَنَا)) ﴿تَوْبَة﴾

[راجع: ٢٤٣٩]

हाज़िर हुआ। आप भी बेदार हो चुके थे। मैंने अर्ज़ किया-दूध पी लीजिए। आपने इतना पिया कि मुझे ख़ुशी हासिल हो गई। फिर मैंने अर्ज़ किया कि अब कूच का वक़्त हो गया है या रसूलल्लाह! आपने फ़र्माया हाँ ठीक है, चलो। चुनाँचे हम आगे बढ़े और मक्का वाले हमारी तलाश में थे लेकिन सुराक़ा बिन मालिक बिन जअ़शम के सिवा हमको किसी ने नहीं पाया। वो अपने घोड़े पर सवार था। मैंने उसे देखते ही कहा कि या रसूलल्लाह! हमारा पीछा करने वाला दुश्मन हमारे क़रीब आ पहुँचा है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि फ़िक्र न करो। अल्लाह तआ़ला हमारे साथ है। (राजेअ : 2439)

वाक़िय-ए-हिजरत ह़याते नबवी का एक अहम वाक़िया है जिसमें आपके बहुत से मुअजिज़ात का ज़ुहूर हुआ यहाँ भी चन्द मुअजिज़ात का बयान हुआ है चुनाँचे बाब मुहाजिरीन के फ़ज़ाइल के बारे में है, इसलिये उसमें हिजरत के इब्तिदाई वाक़ियात को बयान किया गया है। यही बाब और ह़दीष़ का ता'ल्लुक़ है।

٣٦٥٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ عَنْ أَنَسٍ عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ ﷺ وَأَنَا فِي الْغَارِ: لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ نَظَرَ تَحْتَ قَدَمَيْهِ لأَبْصَرَنَا. فَقَالَ: ((مَا ظَنُّكَ يَا أَبَا بَكْرٍ بِاثْنَيْنِ اللهُ ثَالِثُهُمَا)).

[طرفاه في: ٣٩٢٢، ٤٦٦٣].

3653. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने, उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम ग़ारे ष़ौर में छुपे थे तो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि अगर मुश्रिकीन के किसी आदमी ने अपने क़दमों पर नज़र डाली तो वो ज़रूर हमको देख लेगा। उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अबूबक्र! उन दो का कोई क्या बिगाड़ सकता है जिनके साथ तीसरा अल्लाह तआ़ला है। (दीगर मक़ाम : 3922, 4663)

٣- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((سُدُّوا الأَبْوَابَ إِلاَّ بَابَ أَبِي بَكْرٍ))

قَالَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का हुक्म फ़र्माना कि ह़जरत अबूबक्र (रज़ि.) के दरवाज़े को छोड़कर (मस्जिदे नबवी की त़रफ़ के) तमाम दरवाज़े बन्द कर दो. ये ह़दीष़ ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है.

٣٦٥٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ أَبُو النَّضْرِ عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ عَنْ

3654. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आमिर ने बयान किया, उनसे फुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे सालिम अबुन् नज़्र ने बयान किया, उनसे

बुस्र बिन सईद ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे को दुनिया में और जो कुछ अल्लाह के पास आख़िरत में है उन दोनों में से किसी एक का इख़्तियार दिया तो उस बन्दे ने इख़्तियार कर लिया जो अल्लाह के पास था। उन्होंने बयान किया कि इस पर अबूबक्र (रज़ि.) रोने लगे। अबू सईद कहते हैं कि हमको उनके रोने पर हैरत हुई कि आँहज़रत (ﷺ) तो किसी बन्दे के बारे में ख़बर दे रहे हैं जिसे इख़्तियार दिया गया था। लेकिन बात ये थी कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) ही वो बन्दे थे जिन्हें इख़्तियार दिया गया था और (वाक़िअतन, वास्तव में) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) हममें सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। आँहज़रत (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया कि अपनी सुहबत और माल के ज़रिये मुझ पर अबूबक्र का सबसे ज़्यादा एहसान है और अगर मैं अपने रब के सिवा किसी को जानी दोस्त बना सकता तो अबूबक्र को बनाता, लेकिन इस्लाम का भाईचारा और इस्लाम की मुहब्बत उनसे काफ़ी है, देखो मस्जिद की तरफ़ तमाम दरवाज़े (जो सहाबा के घरों की तरफ़ खुलते थे) सब बन्द कर दिये जाएँ सिर्फ़ अबूबक्र (रज़ि.) का दरवाज़ा रहने दो। (राजेअ : 466)

أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ النَّاسَ وَقَالَ : ((إِنَّ اللهَ خَيَّرَ عَبْدًا بَيْنَ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ ذَلِكَ الْعَبْدُ مَا عِنْدَ اللهِ)). قَالَ فَبَكَى أَبُوبَكْرٍ، فَعَجِبْنَا لِبُكَائِهِ أَنْ يُخْبِرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ عَبْدٍ خُيِّرَ، فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ الْمُخَيَّرَ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ أَعْلَمَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ أَمَنِّ النَّاسِ عَلَيَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَالِهِ أَبَا بَكْرٍ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيْلاً غَيْرَ رَبِّي لاتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ، وَلَكِنْ أُخُوَّةُ الإِسْلاَمِ وَمَوَدَّتُهُ، لاَ يَبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ بَابٌ إِلاَّ سُدَّ، إِلاَّ بَابَ أَبِي بَكْرٍ)).

[راجع: ٤٦٦]

हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को एक मुम्ताज़ मुक़ाम अता फ़र्माया और आज तक मस्जिदे नबवी में ये तारीख़ी जगह महफ़ूज़ रखी गई है।

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की दूसरे सहाबा पर फ़ज़ीलत का बयान

٤- بَابُ فَضْلِ أَبِي بَكْرٍ بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ

3655. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने ही में जब हमें सहाबा के दरम्यान इंतिख़ाब के लिये कहा जाता तो सबमें अफ़ज़ल और बेहतर हम अबूबक्र (रज़ि.) को क़रार देते, फिर उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को फिर उ़ष्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) को।

(दीगर मक़ाम : 3697)

٣٦٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : ((كُنَّا نُخَيِّرُ بَيْنَ النَّاسِ فِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ فَنُخَيِّرُ أَبَا بَكْرٍ، ثُمَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ، ثُمَّ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ)).

[طرفه في : ٣٦٩٧].

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने मज़हबे जुम्हूर की तरफ़ इशारा किया है कि तमाम सहाबा मे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को फ़ज़ीलत हासिल है। अकषर सलफ़ का यही क़ौल है और ख़ल्फ़ में से भी अकषर ने यही कहा है।

कुछ मुहक़्क़िक़ीन ऐसा भी कहते हैं कि ख़ुलफ़-ए-अरबआ को बाहम एक दूसरे पर फ़ज़ीलत देने में कोई नस्से क़त्ई नहीं है, लिहाज़ा ये चारों ही अफ़ज़ल हैं। कुछ कहते हैं कि तमाम सहाबा में ये चारों अफ़ज़ल हैं और उनकी ख़िलाफ़त जिस तर्तीब के साथ मुनअक़िद हुई, उसी तर्तीब से वो हक़ और सहीह हैं और उनमें बाहम फ़ज़ीलत इसी तर्तीब से कही जा सकती है। बहरहाल जुम्हूर के मज़हब को तरजीह हासिल है।

बाब 5 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि अगर मैं किसी को जानी दोस्त बनाता तो अबूबक्र (रज़ि.) को बनाता

٥- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ : ((لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيْلاً))

ये अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से मरवी है।

قَالَهُ : أَبُو سَعِيْدٍ

इस बाब के ज़ेल में बहुत सी रिवायात दर्ज की गई हैं जिनसे किसी न किसी तरह से हज़रत सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की फ़ज़ीलत निकलती है। इस नुक्ते को समझ कर नीचे लिखी रिवायतों का मुतालआ करना निहायत ज़रूरी है।

3656. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर अपनी उम्मत के किसी फ़र्द को अपना जानी दोस्त बना सकता तो अबूबक्र को बनाता लेकिन वो मेरे दीनी भाई और मेरे दोस्त हैं। (राजेअ : 487)

٣٦٥٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا مِنْ أُمَّتِي خَلِيْلاً لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ، وَلَكِنْ أَخِي وَصَاحِبِي)). [راجع: ٤٦٧]

3657. हमसे मुअल्ला बिन असद और मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने (यही रिवायत) कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मैं किसी को जानी दोस्त बना सकता तो अबूबक्र (रज़ि.) को बनाता। लेकिन इस्लाम का भाईचारा क्या कम है? (राजेअ : 487)

٣٦٥٧- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ وَمُوسَى بْنُ قَالاَ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ أَيُّوبَ وَقَالَ: ((لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيْلاً لاَتَّخَذْتُهُ خَلِيْلاً، وَلَكِنْ أُخُوَّةُ الإِسْلاَمِ أَفْضَلُ)). [راجع: ٤٦٧]

हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उनसे अब्दुल वहहाब ने और उनसे अय्यूब ने ऐसी ही हदीष़ बयान की।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ عَنْ أَيُّوبَ.. مِثْلَهُ.

3658. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमको हम्माद बिन ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने बयान किया कि कूफ़ा वालों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) को दादा (की मीराष़ के सिलसिले में) सवाल लिखा तो आपने उन्हें जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था, अगर इस उम्मत में किसी को मैं अपना जानी दोस्त बना सकता तो अबूबक्र (रज़ि.) को बनाता। (वही) अबूबक्र (रज़ि.) ये फ़र्माते थे कि दादा बाप की तरह

٣٦٥٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ : كَتَبَ أَهْلُ الْكُوفَةِ إِلَى ابْنِ الزُّبَيْرِ فِي الْجَدِّ، فَقَالَ : أَمَّا الَّذِي قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا مِنْ هَذِهِ الأُمَّةِ خَلِيْلاً لاَتَّخَذْتُهُ،

لَنَزَلَهُ أَبًا، يَعْنِي أَبَا بَكْرٍ)).

है (या'नी जब मय्यत का बाप ज़िन्दा न हो तो बाप का हिस्सा दादा की तरफ़ लौट जाएगा या'नी बाप की जगह दादा वारिष़ होगा)।

٣٦٥٩- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالاَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((أَتَتِ امْرَأَةُ النَّبِيَّ ﷺ فَأَمَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ، قَالَتْ : أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ وَلَمْ أَجِدْكَ - كَأَنَّهَا تَقُوْلُ الْمَوْتَ - قَالَ ﷺ: ((إِنْ لَمْ تَجِدِيْنِي فَأْتِي أَبَابَكْرٍ)). [طرفاه في : ٧٢٢٠، ٧٣٦٠].

3659. हमसे हुमैदी और मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत़इम ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि एक औरत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आई तो आपने उनसे फ़र्माया कि फिर आइयो। उसने कहा, अगर मैं आऊँ और आपको न पाऊँ तो? गोया वो वफ़ात की तरफ़ इशारा कर रही थी। आपने फ़र्माया कि अगर तुम मुझे न पा सको तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास चली आना। (दीगर मक़ाम : 7220, 7360)

तश्रीह : इस ह़दीष़ से ये निकलता है कि आपको बज़रिये वह्य मा'लूम हो चुका था कि आपके बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आपके ख़लीफ़ा होंगे। त़बरानी ने अ़स्मा बिन मालिक से निकाला, हमने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपके बाद अपने मालों की ज़कात किसको दें? आपने फ़र्माया अबूबक्र (रज़ि.) को देना, उसकी सनद ज़ईफ़ है। मुअजम में सहल बिन अबी ख़ुषैमा से निकाला कि आपसे एक गंवार ने बेअ़त की और पूछा कि अगर आपकी वफ़ात हो जाए तो मैं किसके पास आऊँ? फ़र्माया, अबूबक्र के पास। उसने कहा अगर वो मर जाएँ तो फिर किसके पास? फ़र्माया ड़मर (रज़ि.) के पास। इन रिवायतों से शियाओं का रद्द होता है जो कहते हैं कि आँह़ज़रत (ﷺ) अपने बाद अ़ली (रज़ि.) को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर गये थे।

٣٦٦٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي الطَّيِّبِ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ مُجَالِدٍ حَدَّثَنَا بَيَانُ بْنُ بِشْرٍ عَنْ وَبَرَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ هَمَّامٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَمَّارًا يَقُوْلُ: ((رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَمَا مَعَهُ إِلاَّ خَمْسَةُ أَعْبُدٍ وَامْرَأَتَانِ وَأَبُو بَكْرٍ)). [طرفه في : ٣٨٥٧].

3660. हमसे अहमद बिन अबी त़य्यब ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी मुजालिद ने बयान किया, उनसे बयान बिन बिश्र ने कहा, उनसे वबरह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उनसे हम्माम ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अ़म्मार (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस वक़्त देखा है जब आपके साथ (इस्लाम लाने वालों में सिर्फ़) पाँच ग़ुलाम, दो औरतों और अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के सिवा और कोई न था। (दीगर मक़ाम : 3857)

ग़ुलाम ये थे बिलाल, ज़ैद बिन ह़ारिषा, आ़मिर बिन फ़ुहैरा, अबू फ़कीह और ड़बैद बिन ज़ैद ह़ब्शी, औरतें ह़ज़रत ख़दीजा और उम्मे ऐमन थीं या सुमय्या। ग़र्ज़ आज़ाद मर्दों में सबसे पहले ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ईमान लाए। बच्चों में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) औरतो में ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि.)।

٣٦٦١- حَدَّثَنِي هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَاقِدٍ عَنْ بُسْرِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ عَائِذِ اللهِ أَبِي إِدْرِيْسَ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ

3661. मुझसे हिशाम बिन अ़म्मार ने बयान किया, कहा हमसे स़दक़ा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन वाक़िदने बयान किया, उनसे बुस्र बिन ड़बैदुल्लाह ने, उनसे आइज़ुल्लाह अबू इदरीस ने और उनसे ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि ह़ज़रत अबूबक्र (रजि) अपने कपड़े का किनारा पकड़े हुए, घुटना खोले हुए आए

عليه وسلم. إذا أقبل أبو بكر آخذا بطرف ثوبه حتى أبدى عن ركبته، فقال النبي ﷺ: ((أما صاحبكم فقد غامر))، فسلم وقال: إني كان بيني وبين ابن الخطاب شيء، فأسرعت إليه ثم ندمت، فسألته أن يغفر لي فأبى علي، فأقبلت إليك. فقال: ((يغفر الله لك يا أبا بكر ((ثلاثا)). ثم إن عمر ندم، فأتى منزل أبي بكر فسأل: أثم أبو بكر؟ فقالوا: لا. فأتى إلى النبي ﷺ فسلم عليه، فجعل وجه النبي ﷺ يتمعر، حتى أشفق أبو بكر فجثا على ركبتيه فقال: يا رسول الله، والله أنا كنت أظلم (مرتين). فقال النبي صلى الله عليه وسلم: ((إن الله بعثني إليكم، فقلتم: كذبت، وقال أبو بكر: صدق، وواساني بنفسه وماله، فهل أنتم تاركوا لي صاحبي؟ (مرتين). فما أوذي بعدها)).

[طرفه في : ٤٦٤٠].

आँहज़रत (ﷺ) ने ये हालत देखकर फ़र्माया, मा'लूम होता है तुम्हारे दोस्त किसी से लड़कर आए हैं। फिर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने ह़ाज़िर होकर सलाम किया और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे और उ़मर बिन ख़त्ताब के दरम्यान कुछ तकरार हो गई थी और इस सिलसिले में मैंने जल्दी में उनको सख़्त लफ़्ज़ कह दिये लेकिन बाद में मुझे सख़्त नदामत हुई तो मैंने उनसे मुआफ़ी चाही, अब वे मुझे माफ़ करने के लिये तैयार नहीं हैं। इसीलिये मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ। आपने फ़र्माया ऐ अबूबक्र! तुम्हें अल्लाह माफ़ करे। तीन मर्तबा आपने ये जुम्ला इर्शाद फ़र्माया। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को भी नदामत हुई और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के घर पहुँचे और पूछा क्या अबूबक्र घर पर मौजूद हैं? मा'लूम हुआ कि नहीं, तो आप भी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और सलाम किया। आँह़ज़रत (ﷺ) का चेहरा मुबारक ग़ुस्से से बदल गया और अबूबक्र (रज़ि.) डर गये और घुटनों के बल बैठकर अ़र्ज़ करने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह की क़सम ज़्यादती मेरी ही तरफ़ से थी। दो मर्तबा ये जुम्ला कहा। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह ने मुझे तुम्हारी तरफ़ नबी बनाकर भेजा था और तुम लोगों ने मुझसे कहा था कि तुम झूठ बोलते हो लेकिन अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा था कि आप सच्चे हैं और अपनी जान व माल के ज़रिये उन्होंने मेरी मदद की थी, तो क्या तुम लोग मेरे दोस्त को सताना छोड़ते हो या नहीं? आपने दो बार यही फ़र्माया। आपके ये फ़र्माने के बाद फिर अबूबक्र (रज़ि.) को किसी ने नहीं सताया। (दीगर मक़ाम : 4640)

तश्रीह : अबू यअ़ला की रिवायत में है कि जब उ़मर (रज़ि.) रसूले करीम (ﷺ) के पास आए तो आपने मुँह फेर लिया। दूसरी तरफ़ से आए तो इधर से भी मुँह फेर लिया, सामने बैठे तो उधर से भी मुँह फेर लिया आख़िर उन्होंने सबब पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया अबूबक्र (रज़ि.) ने तुमसे मअ़ज़रत की और तुमने क़ुबूल न की। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह.) फ़र्माते हैं कि इस ह़दीष से अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की फ़ज़ीलत तमाम सह़ाबा पर निकली। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि उनका ख़िताब सिद्दीक़ आसमान से उतरा। इस ह़दीष से शिया ह़ज़रात को सबक़ लेना चाहिये। जब आप ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) पर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के लिये इतने ग़ुस्से हुए ह़ालाँकि पहले ज़्यादती अबूबक्र ही की थी मगर जब उन्होंने माफ़ी चाही तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को फ़ौरन माफ़ करना चाहिये था। फिर शिया ह़ज़रात किस मुँह से आँह़ज़रत (ﷺ) के यारे ग़ार को बुरा भला कहते हैं उन लोगों को अल्लाह से डरना चाहिये। देखा गया है कि ह़ज़रात शैख़ेन पर तबर्रा (बुराई) करने वालों का बुरा ह़श्र हुआ है।

٣٦٦٢- حدثنا معلى بن أسد حدثنا

3662. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे

अब्दुल अज़ीज़ बिन मुख़्तार ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, कहा हमसे अबू उ़ष्मान से बयान किया, कहा कि मुझसे हज़रत अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें ग़ज़्व-ए-ज़ातुस्सलासिल के लिये भेजा (अ़म्र रज़ि. ने बयान किया कि) फिर मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा कि सबसे ज़्यादा मुहब्बत आपको किससे है? आपने फ़र्माया कि आइशा (रज़ि.) से। मैंने पूछा, और मर्दों में? फ़र्माया कि उसके बाप से। मैंने पूछा, उसके बाद? फ़र्माया कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से। इस तरह आपने कई आदमियों के नाम लिये।
(दीगर मक़ाम : 4357)

عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ الْمُخْتَارِ قَالَ خَالِدٌ الْحَذَّاءِ حَدَّثَنَا عَنْ أَبِي عُثْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَهُ عَلَى جَيْشِ ذَاتِ السَّلاَسِلِ، فَأَتَيْتُهُ قُلْتُ: أَيُّ النَّاسِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ: ((عَائِشَةُ)). فَقُلْتُ مِنَ الرِّجَالِ؟ فَقَالَ: ((أَبُوهَا)). قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ((ثُمَّ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، فَعَدَّ رِجَالاً)). [طرفه في : ٤٣٥٨].

3663. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अबू सहल बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि एक चरवाहा अपनी बकरियाँ चरा रहा था कि भेड़िया आ गया और रेवड़ से एक बकरी उठा कर ले जाने लगा, चरवाहे ने उससे बकरी छुड़ानी चाही तो भेड़िया बोल पड़ा। दरिन्दों वाले दिन में इसकी रखवाली करने वाला कौन होगा जिस दिन मेरे सिवा और कोई चरवाहा न होगा। इसी तरह एक शख़्स बैल को उस पर सवार होकर लिये जा रहा था। बैल उसकी तरफ़ मुतवज्जा होकर कहने लगा कि मेरी पैदाइश उसके लिये नहीं हुई है, मैं तो खेती बाड़ी के कामों के लिये पैदा किया गया हूँ। वो शख़्स बोल पड़ा सुब्हानल्लाह! (जानवर और इंसानों की तरह बातें करे) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उन वाक़ियात पर ईमान लाता हूँ और अबूबक्र और उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी। (राजेअ़ : 2324)

٣٦٦٣– حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوفٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَمَا رَاعٍ فِي غَنَمِهِ عَدَا عَلَيْهِ الذِّئْبُ فَأَخَذَ شَاةً، فَطَلَبَهُ الرَّاعِي، فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ الذِّئْبُ فَقَالَ: مَنْ لَهَا يَوْمَ السَّبُعِ، يَوْمَ لَيْسَ لَهَا رَاعٍ غَيْرِي؟ وَبَيْنَمَا رَجُلٌ يَسُوقُ بَقَرَةً قَدْ حَمَلَ عَلَيْهَا، فَالْتَفَتَتْ إِلَيْهِ فَكَلَّمَتْهُ فَقَالَتْ: إِنِّي لَمْ أُخْلَقْ لِهَذَا، وَلَكِنِّي خُلِقْتُ لِلْحَرْثِ. قَالَ النَّاسُ: سُبْحَانَ اللهِ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: فَإِنِّي أُوْمِنُ بِذَلِكَ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا)).
[راجع: ٢٣٢٤]

तश्रीह : दरिन्दों के दिन से क़यामत का दिन मुराद है जबकि ख़ुद गडरिये अपनी बकरियों की रखवाली छोड़ देंगे सबको अपने नफ़्स की फ़िक्र लग जाएगी। ये ह़दीष़ ऊपर गुज़र चुकी है। उसमें इतना और ज़्यादा था कि अबूबक्र और उ़मर वहाँ मौजूद न थे। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने इस ह़दीष़ से ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की फ़ज़ीलत निकाली। आपने अपने बाद उनका नाम लिया, आपको उन पर पूरा भरोसा था और आप जानते थे कि वो दोनों इतने रासिख़ुल अ़क़ीदा हैं कि मेरी बात

को वो कभी रद्द नहीं कर सकते।

3664. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझको इब्नुल मुसय्यिब ने ख़बर दी और उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मैं सो रहा था कि ख़्वाब में मैंने अपने आपको एक कुँए पर देखा जिस पर डोल था। अल्लाह तआ़ला ने जितना चाहा मैंने उस डोल से पानी खींचा, फिर उसे इब्ने अबी क़ुहाफ़ा (हज़रत अबूबक्र रज़ि.) ने ले लिया और उन्होंने एक या दो डोल खींचे। उनके खींचने में कुछ कमज़ोरी सी मा'लूम हुई। अल्लाह उनकी इस कमज़ोरी को माफ़ फ़र्माए। फिर इस डोल ने एक बहुत बड़े डोल की सूरत इख़्तियार कर ली और उसे उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अपने हाथ में ले लिया। मैंने ऐसा शहज़ोर पहलवान आदमी नहीं देखा जो उमर (रज़ि.) की तरह डोल खींच सकता। उन्होंने इतना पानी निकाला कि लोगों ने अपने ऊँटों को हौज़ से सैराब कर लिया। (दीगर मक़ाम : 7021, 7022, 7475)

٣٦٦٤- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي ابْنُ الْمُسَيَّبِ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي عَلَى قَلِيبٍ عَلَيْهَا دَلْوٌ، فَنَزَعْتُ مِنْهَا مَا شَاءَ اللهُ. ثُمَّ أَخَذَهَا ابْنُ أَبِي قُحَافَةَ فَنَزَعَ بِهَا ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ، وَفِي نَزْعِهِ ضَعْفٌ، وَاللهُ يَغْفِرُ لَهُ ضَعْفَهُ. ثُمَّ اسْتَحَالَتْ غَرْبًا فَأَخَذَهَا ابْنُ الْخَطَّابِ، فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًا مِنَ النَّاسِ يَنْزِعُ نَزْعَ عُمَرَ، حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطَنٍ)).

[أطرافه في : ٧٠٢١، ٧٠٢٢، ٧٤٧٥].

तश्रीह : ये ख़िलाफ़ते इस्लामी को सम्भालने पर इशारा है। जैसा कि वफ़ाते नबवी के बाद हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने दो ढाई साल सम्भाला बाद में फ़ारूक़ी दौर शुरू हुआ और आपने ख़िलाफ़त का हक़ अदा कर दिया कि फ़ुतूहाते इस्लामी का सैलाब दूर दूर तक पहुँच गया और ख़िलाफ़त के हर हर शुअ़बे में तरक़्क़ियात के दरवाज़े खुल गये। आँहज़रत (ﷺ) को ख़्वाब में ये सारे हालात दिखलाए गये।

3665. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मूसा बिन उक़्बा ने ख़बर दी, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स अपना कपड़ा (पाजामा या तहबन्द वग़ैरह) तकब्बुर और ग़ुरूर की वजह से ज़मीन पर घसीटता चले तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसकी तरफ़ नज़रे रहमत से देखेगा भी नहीं। इस पर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि मेरे कपड़े का एक हिस्सा लटक जाया करता है। अल्बत्ता अगर मैं पूरी तरह ख़्याल रखूँ तो वो नहीं लटक सकेगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि आप तो ऐसा तकब्बुर के ख़्याल से नहीं करते (इसलिये आप इस हुक्म में दाख़िल नहीं हैं) मूसा ने कहा कि मैंने सालिम से पूछा, क्या हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने इस

٣٦٦٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ جَرَّ ثَوْبَهُ خُيَلاَءَ لَمْ يَنْظُرِ اللهُ إِلَيْهِ يَومَ الْقِيَامَةِ)). قَالَ أَبو بَكْرٍ: إِنَّ أَحَدَ شِقَّيْ ثَوبِي يَسْتَرخِي، إِلاَّ أَنْ أَتَعَاهَدَ ذَلِكَ مِنْهُ. فَقَالَ: رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّكَ لَسْتَ تَصْنَعُ ذَلِكَ خُيَلاَءَ)). قَالَ مُوسَى : فَقُلْتُ لِسَالِمٍ أَذَكَرَ عَبْدُ اللهِ: ((مَنْ جَرَّ إِزَارَهُ؟)) قَالَ:

لَمْ أَسْمَعْهُ ذَكَرَ إِلاَّ ((ثَوْبَهُ)).

[أطرافه في : ٥٧٨٣، ٥٧٩١، ٦٠٦٢].

हदीष़ में ये फ़र्माया था कि जो अपनी इज़ार घसीटते चले। तो उन्होंने कहा कि मैंने तो उनसे यही सुना कि जो कोई अपना कपड़ा लटकाए। (दीगर मक़ाम : 5783, 5791, 6062)

तशरीह : मा'लूम हुआ कि **इन्नमल्आमालु बिन्निय्यात**, अगर कोई अपनी इज़ार टख़ने से ऊँची भी रखे और मग़रूर हो तो उसकी तबाही यक़ीनी है। अगर बिला क़स्द और बिला निय्यते ग़ुरूर लटक जाए तो वो इस वईद में दाख़िल न होगा। ये हर कपड़े को शामिल है। इज़ार हो या पाजामा या कुर्ता की आस्तीन बहुत बड़ी बड़ी रखना, अगर ग़ुरूर की राह से ऐसा करे तो सख़्त गुनाह और ह़राम है। आज के दौर में अज़्राहे किब्र व ग़ुरूर कोट पतलून इस त़रह पहनने वाले इसी वईद में दाख़िल हैं।

٣٦٦٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ : ((مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ مِنْ شَيْءٍ مِنَ الأَشْيَاءِ فِي سَبِيْلِ اللهِ دُعِيَ مِنْ أَبْوَابِ - يَعْنِي الْجَنَّةِ - يَا عَبْدَ اللهِ هَذَا خَيْرٌ. فَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّلاَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّلاَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجِهَادِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الْجِهَادِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّدَقَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّدَقَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصِّيَامِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصِّيَامِ وَبَابِ الرَّيَّانِ)). فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَا عَلَى هَذَا الَّذِي يُدْعَى مِنْ تِلْكَ الأَبْوَابِ مِنْ ضَرُورَةٍ. وَقَالَ : هَلْ يُدْعَى مِنْهَا كُلِّهَا أَحَدٌ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ : ((نَعَمْ، وَأَرْجُوا أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ يَا أَبَا بَكْرٍ)).

[راجع: ١٨٩٧]

3666. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुऐ़ब ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे ह मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जिसने अल्लाह के रास्ते में किसी चीज़ का एक जोड़ा ख़र्च किया (मष़लन दो रुपये, दो कपड़े, दो घोड़े अल्लाह तआ़ला के रास्ते में दिये) तो उसे जन्नत के दरवाज़ों से बुलाया जाएगा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! इधर आ, ये दरवाज़ा बेहतर है पस जो शख़्स नमाज़ी होगा उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, जो शख़्स मुजाहिद होगा उसे जिहाद के दरवाज़े से बुलाया जाएगा। जो शख़्स अहले स़दक़ा में से होगा उसे स़दक़ा के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स रोज़ेदार होगा उसे स़ियाम और रय्यान (सैराबी) के दरवाज़े से बुलाया जाएगा। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया जिस शख़्स को इन तमाम ही दरवाज़ों से बुलाया जाएगा फिर तो उसे किसी क़िस्म का डर बाक़ी नहीं रहेगा और पूछा क्या कोई शख़्स ऐसा भी होगा जिसे उन तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाए या रसूलल्लाह! आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ और मुझे उम्मीद है तुम भी उन्हीं में से होंगे ऐ अबूबक्र!

(राजेअ : 1897)

٣٦٦٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ

3667. मुझसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन

عُرْوَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ مَاتَ وَأَبُو بَكْرٍ بِالسُّنْحِ - قَالَ إِسْمَاعِيْلُ : يَعْنِي بِالْعَالِيَةِ - فَقَامَ عُمَرُ يَقُولُ : وَاللهِ مَا مَاتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. قَالَتْ وَقَالَ عُمَرُ: وَاللهِ مَا كَانَ يَقَعُ فِي نَفْسِي إِلاَّ ذَاكَ، وَلَيَبْعَثَنَّهُ اللهُ فَلَيَقْطَعَنَّ أَيْدِيَ رِجَالٍ وَأَرْجُلَهُمْ. فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ فَكَشَفَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَبَّلَهُ فَقَالَ : بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، طِبْتَ حَيًّا وَمَيِّتًا، وَاللهِ الَّذِيْ نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ يُذِيْقُكَ اللهُ الْمَوْتَتَيْنِ أَبَدًا. ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ : أَيُّهَا الْحَالِفُ، عَلَى رِسْلِكَ، فَلَمَّا تَكَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ جَلَسَ عُمَرُ)). [راجع ١٢٤١]

उ़र्वा ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) की जब वफ़ात हुई तो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उस वक़्त मक़ामे सनह़ में थे। इस्माईल ने कहा या'नी अ़वाली के एक गाँव में। आपकी ख़बर सुनकर ह़ज़रत उ़मर उठकर ये कहने लगे कि अल्लाह की क़सम रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात नहीं हुई। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) कहा करते थे अल्लाह की क़सम! उस वक़्त मेरे दिल में यही ख़्याल आता था और मैं कहता था कि अल्लाह आपको ज़रूर इस बीमारी से अच्छा करके उठाएगा और आप उन लोगों के हाथ और पाँव काट देंगे (जो आपकी मौत की बातें करते हैं)। इतने में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) तशरीफ़ ले आए और अंदर जाकर आपकी नअ़शे मुबारक के ऊपर से कपड़ा उठाया और बोसा दिया और कहा, मेरे बाप और माँ आप पर फिदा हों, आप ज़िन्दगी में भी पाकीज़ा थे और वफ़ात के बाद भी और उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अल्लाह तआ़ला आप पर दो मर्तबा मौत हर्गिज़ त़ारी नहीं करेगा। उसके बाद आप बाहर आए और उ़मर (रज़ि.) से कहने लगे ऐ क़सम खाने वाले! ज़रा ताम्मुल कर। फिर जब ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने बातचीत शुरू की तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) खामोश होकर बैठ गये। (राजेअ़ : 1241)

٣٦٦٨- ((فَحَمِدَ اللهَ أَبُو بَكْرٍ وَأَثْنَى عَلَيْهِ وَقَالَ: أَلاَ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ فَإِنَّ اللهَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ وَقَالَ : ﴿إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ﴾ [الزمر: ٣٠]. وَقَالَ: ﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلاَّ رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ، أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ؟ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللهَ شَيْئًا، وَسَيَجْزِي اللهُ الشَّاكِرِيْنَ﴾ [آل عمران: ١٤٤]. قَالَ :

3668. ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने पहले अल्लाह की ह़म्दो—ष़ना बयान की। फिर फ़र्माया लोगों देखो अगर कोई मुहम्मद (ﷺ) को पूजता था (या'नी ये समझता था कि वो आदमी नहीं हैं, वो कभी नहीं मरेंगे) तो उसे मा'लूम होना चाहिये कि ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) की वफ़ात हो चुकी है और जो शख़्स अल्लाह की पूजा करता था तो अल्लाह हमेशा ज़िन्दा है उसे मौत कभी नहीं आएगी (फिर अबूबक्र रज़ि. ने सूरह ज़ुमर की ये आयत पढ़ी) ऐ नबी! तुम भी मरने वाले हो और वो भी मरेंगे। (अन् नज्म : 30) और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि मुह़म्मद (ﷺ) स़िर्फ़ एक रसूल हैं। इससे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं । पस क्या अगर वो वफ़ात पा जाएँ या उन्हें शहीद कर दिया जाए तो तुम इस्लाम से फिर जाओगे और जो शख़्स अपनी ऐड़ियों के बल फिर जाए तो वो अल्लाह को कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेगा और अल्लाह अ़न्क़रीब शुक्रगुज़ार बन्दों का बदला देने वाला है। (आले इमरान

:144) रावी ने बयान किया कि ये सुनकर लोग फूट फूटकर रोने लगे। रावी ने बयान किया कि अंसार सक़ीफ़ा बनी साइदा में सअद बिन उबादा (रज़ि.) के पास जमा हो गये और कहने लगे कि एक अमीर हममें से होगा और एक अमीर तुम (मुहाजिरीन) में से होगा। (दोनों मिलकर हुकूमत करेंगे) फिर अबूबक्र (रज़ि.), उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) और अबू उबैदा बिन जर्राह (रज़ि.) उनकी मज्लिस में पहुँचे। उमर (रज़ि.) ने बातचीत करनी चाही लेकिन हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उनसे ख़ामोश रहने के लिये कहा। उमर (रज़ि.) कहा करते थे कि अल्लाह की क़सम मैंने ऐसा सिर्फ़ इस वजह से किया था कि मैंने पहले ही से एक तक़रीर तैयार कर ली थी जो मुझे बहुत पसन्द आई थी, फिर भी मुझे डर था कि अबूबक्र (रज़ि.) की बराबरी उससे भी नहीं हो सकेगी। आख़िर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने इंतिहाई बलाग़त के साथ बात शुरू की। उन्होंने अपनी तक़रीर में फ़र्माया कि हम (क़ुरैश) उमरा हैं और तुम (जमाअते अंसार) वज़ीर हो। इस पर हज़रत हुबाब बिन मुंज़िर (रज़ि.) बोले कि नहीं अल्लाह की क़सम! हम ऐसा नहीं होने देंगे, एक अमीर हममें से होगा और एक अमीर तुममें से होगा। हज़रत अबूबक्र (रजि) ने फ़र्माया कि नहीं हम उमरा हैं तुम वुज़रा हो (वजह ये है कि) क़ुरैश के लोग सारे अरब में शरीफ़ ख़ानदान शुमार किये जाते हैं और उनका मुल्क (या'नी मक्का) अरब के बीच मे है तो अब तुमको इख़्तियार है या तो उमर (रज़ि.) से बेअत कर लो या अबू उबैदुल्लाह बिन जर्राह (रज़ि.) से। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, नहीं हम आपसे ही बेअत करेंगे, आप हमारे सरदार हैं, हममें सबसे बेहतर हैं और रसूले करीम (ﷺ) के नज़दीक आप हम सबसे ज़्यादा महबूब हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनका हाथ पकड़ लिया और उनके हाथ पर बेअत कर ली फिर सब लोगों ने बेअत की। इतने में किसी की आवाज़ आई कि सअद बिन उबादा (रज़ि.) को तुम लोगों ने मार डाला। उमर (रज़ि.) ने कहा, उन्हे अल्लाह ने मार डाला। (राजेअ : 1242)

فَنَشَجَ النَّاسُ يَبْكُونَ. قَالَ: وَاجْتَمَعَتِ الأَنْصَارُ إِلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فِي سَقِيْفَةِ بَنِي سَاعِدَةِ فَقَالُوا: مِنَّا أَمِيْرٌ وَمِنْكُمْ أَمِيْرٌ، فَذَهَبَ إِلَيْهِمْ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَأَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ، فَذَهَبَ عُمَرُ يَتَكَلَّمُ، فَأَسْكَتَهُ أَبُو بَكْرٍ، وَكَانَ عُمَرُ يَقُولُ : وَاللهِ مَا أَرَدْتُ بِذَلِكَ إِلاَّ أَنِّي قَدْ هَيَّأْتُ كَلاَمًا قَدْ أَعْجَبَنِي خَشِيْتُ أَنْ لاَ يَبْلُغَهُ أَبُوبَكْرٍ. ثُمَّ تَكَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ فَتَكَلَّمَ أَبْلَغَ النَّاسِ، فَقَالَ فِي كَلاَمِهِ: نَحْنُ الأُمَرَاءُ وَأَنْتُمُ الْوُزَرَاءُ. فَقَالَ حُبَابُ بْنُ الْمُنْذِرِ: لاَ وَاللهِ لاَ نَفْعَلُ، مِنَّا أَمِيْرٌ وَمِنْكُمْ أَمِيْرٌ. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: لاَ، وَلَكِنَّا الأُمَرَاءُ وَأَنْتُمُ الْوُزَرَاءُ. هُمْ أَوْسَطُ الْعَرَبِ دَارًا وَأَعْرَبُهُمْ أَحْسَابًا، فَبَايِعُوا عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ أَوْ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ. فَقَالَ عُمَرُ: بَلْ نُبَايِعُكَ أَنْتَ، فَأَنْتَ سَيِّدُنَا وَخَيْرُنَا وَأَحَبُّنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَأَخَذَ عُمَرُ بِيَدِهِ فَبَايَعَهُ وَبَايَعَهُ النَّاسُ. فَقَالَ قَائِلٌ: قَتَلْتُمْ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ، فَقَالَ: عُمَرُ: قَتَلَهُ اللهُ)).

[راجع: ١٢٤٢]

3669. और अब्दुल्लाह बिन सालिम ने ज़ुबेदी से नक़ल किया कि अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उन्हें क़ासिम ने ख़बर दी और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम

٣٦٦٩- وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَالِمٍ عَنِ الزُّبَيْدِيِّ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ : أَخْبَرَنِي الْقَاسِمُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

(ﷺ) की नज़र (वफ़ात से पहले) उठी और आपने फ़र्माया ऐ अल्लाह! मुझे रफ़ीक़े आला में (दाख़िल कर) आपने ये जुम्ला तीन मर्तबा फ़र्माया और पूरी हदीष बयान की। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत अबूबक्र और उमर (रज़ि.) दोनों ही के ख़ुत्बों से नफ़ा पहुँचा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने लोगों को धमकाया क्योंकि उनमे कुछ मुनाफ़िक़ीन भी थे। इसलिये अल्लाह तआला ने इस तरह (ग़लत अफ़वाहें फैलाने से) उनको बाज़ रखा। (राजेअ: 1241)

قَالَتْ: ((شَخَصَ بَصَرُ النَّبِيِّ ﷺ ثُمَّ قَالَ: فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى (ثَلاَثًا) وَقَصَّ الْحَدِيثَ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَمَا كَانَ مِنْ خُطْبَتِهِمَا مِنْ خُطْبَةٍ إِلاَّ نَفَعَ اللهُ بِهَا، لَقَدْ خَوَّفَ عُمَرُ النَّاسَ وَإِنَّ فِيهِمْ لَنِفَاقًا فَرَدَّهُمُ اللهُ بِذَلِكَ)). [راجع: ١٢٤١]

3670. और बाद में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने जो हक़ और हिदायत की बात थी वो लोगों को समझा दी और उनको बतला दिया जो उन पर लाज़िम था (या'नी इस्लाम पर क़ायम रहना) और वो ये आयत तिलावत करते हुए बाहर आए, मुहम्मद (ﷺ) एक रसूल हैं और उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं। अश्शाकिरीन तक। (राजेअ: 1242)

٣٦٧٠- ((ثُمَّ لَقَدْ بَصَّرَ أَبُو بَكْرٍ النَّاسَ الْهُدَى، وَعَرَّفَهُمُ الْحَقَّ الَّذِي عَلَيْهِمْ، وَخَرَجُوا بِهِ يَتْلُونَ: ﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلاَّ رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ - إِلَى - الشَّاكِرِينَ﴾. [راجع: ١٢٤٢]

तश्रीह : हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के इस अज़ीम ख़ुत्बा ने उम्मत के शीराज़े को मुंतशिर होने (बिखरने) से बचा लिया। अंसार ने जो दो अमीर मुक़र्रर करने की तज्वीज़ पेश की थी वो सहीह नहीं थी क्योंकि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रखी जा सकतीं। रिवायत में हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) के लिये हज़रत उमर (रज़ि.) की बद दुआ मज़्कूर है। वही दो अमीर मुक़र्रर करने की तज्वीज़ लेकर आए थे। अल्लाह न करे इस पर अमल होता तो नतीजा बहुत ही बुरा होता। कहते हैं कि हज़रत उबादा उसके बाद शाम के मुल्क को चले गये और वहीं आपका इंतिक़ाल हुआ। इस हदीष से नस्बे ख़लीफ़ा का वुजूब षाबित हुआ क्योंकि सहाबा किराम (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) की तज्हीज़ व तक्फ़ीन पर भी उसको मुक़द्दम रखा, सद अफ़सोस कि उम्मत ने जल्द ही इस फ़र्ज़ को फ़रामोश कर दिया। पहली ख़राबी ये पैदा हुई कि ख़िलाफ़त की जगह मलूकियत आ गई, फिर जब मुसलमानों ने क़तार आलम में क़दम रखा तो मुख़्तलिफ़ अक़्वामे आलम से उनका साबिक़ा पड़ा जिसे मुताष्षिर होकर वो इस फ़रीज़-ए-मिल्लत को भूल गए और इंतिशार का शिकार हो गये। आज तो दौर ही दूसरा है अगरचे अब भी मुसलमानों की काफ़ी हुकूमतें दुनिया में क़ायम हैं मगर ख़िलाफ़ते राशिदा की झलक से अकषर महरूम हैं। अल्लाह पाक इस पुरफ़ितन दौर में मुसलमानों को बाहमी इत्तिफ़ाक़ नसीब करे कि वो मुत्तहिदा तौर पर जमा होकर मिल्लते इस्लामिया की ख़िदमत कर सकें। आमीन।

3671. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान षौरी ने ख़बर दी, कहा हमसे जामेअ बिन अबी राशिद ने बयान किया, कहा हमसे अबू यअला ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन हनीफ़ा ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद (अली रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद सबसे अफ़ज़ल सहाबी कौन हैं? उन्होंने बतलाया कि अबूबक्र (रजि)। मैंने पूछा फिर कौन हैं? उन्होंने बतलाया कि उसके बाद उमर (रज़ि.) हैं। मुझे इसका अंदेशा हुआ कि अब (फिर मैंने पूछा कि उसके बाद? तो कह देंगे कि उष्मान (रज़ि.)। इसलिये मैंने ख़ुद कहा, उसके बाद आप हैं? ये सुनकर बोले कि मैं तो

٣٦٧١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ: حَدَّثَنَا جَامِعُ بْنُ أَبِي رَاشِدٍ: حَدَّثَنَا أَبُو يَعْلَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْحَنَفِيَّةِ قَالَ: قُلْتُ لأَبِي: أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: أَبُوبَكْرٍ، قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ عُمَرُ. وَ خَشِيتُ أَنْ يَقُولَ: عُثْمَانُ، قُلْتُ: ثُمَّ أَنْتَ؟ قَالَ: مَا أَنَا إِلاَّ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ.

सिर्फ़ आम मुसलमानों की जमाअत का एक शख़्स हूँ।

तश्रीह : हज़रत अली (रज़ि.) के इस क़ौल से उन लोगों ने दलील ली है जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) के बाद सबसे अफ़ज़ल कहते हैं फिर उनके बाद हज़रत उमर (रज़ि.) को जैसे जुम्हूर अहले सुन्नत का क़ौल है। अब्दुर्रज़्ज़ाक़ मुहद्दिष फ़र्माते हैं कि हज़रत अली (रज़ि.) ने ख़ुद शैख़ेन को अपने ऊपर फ़ज़ीलत दी है लिहाज़ा मैं भी फ़ज़ीलत देता हूँ वरना कभी फ़ज़ीलत न देता। दूसरी रिवायत में हज़रत अली (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि जो कोई मुझको शैख़ेन के ऊपर फ़ज़ीलत दे मैं उसको मुफ़्तरी की हद लगाऊँगा। इससे उन सुन्नी हज़रात को सबक़ लेना चाहिये जो हज़रत अली (रज़ि.) की तफ़्ज़ील के क़ाइल हैं जबकि ख़ुद हज़रत अली (रज़ि.) ही उनको मुफ़्तरी क़रार दे रहे हैं।

3672. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चले जब हम मुक़ामे बैदा या मुक़ामे ज़ातुल जैश पर पहुँचे तो मेरा एक हार टूटकर गिर गया। इसलिये हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसकी तलाश के लिये वहाँ ठहर गये और सहाबा भी आपके साथ ठहरे लेकिन न उस जगह पर पानी था और न उनके साथ पानी था। लोग हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आकर कहने लगे कि आप मुलाहिज़ा नहीं फ़र्माते, आइशा (रज़ि.) ने क्या किया, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को यहीं रोक लिया है। इतने सहाबा आपके साथ हैं, न तो यहाँ पानी है और न लोग अपने साथ लिये (पानी) हुए हैं। उसके बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अंदर आए। रसूलुल्लाह (ﷺ) उस वक़्त अपना सरे मुबारक मेरी रान पर रखे हुए सो रहे थे। वो कहने लगे, तुम्हारी वजह से आँहज़रत (ﷺ) को और सब लोगों को रुकना पड़ा। अब न यहाँ कहीं पानी है और न लोगों के साथ पानी है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझ पर गुस्सा किया और जो कुछ अल्लाह को मंज़ूर था उन्होंने कहा और अपने हाथ से मेरी कोख में कचूके लगाने लगे। मैं ज़रूर तड़प उठती मगर आँहज़रत (ﷺ) का सरे मुबारक मेरी रान पर था। आँहज़रत (ﷺ) सोते रहे। जब सुबह हुई तो पानी नहीं था और उसी मौक़े पर अल्लाह तआला ने तयम्मुम का हुक्म नाज़िल फ़र्माया और सबने तयम्मुम किया, इस पर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा कि ऐ आले अबूबक्र (रज़ि.) तुम्हारी कोई पहली

٣٦٧٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ - أَوْ بِذَاتِ الْجَيْشِ - انْقَطَعَ عِقْدٌ لِي، فَأَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الْتِمَاسِهِ، وَأَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَأَتَى النَّاسُ أَبَا بَكْرٍ فَقَالُوا: أَلاَ تَرَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ؟ أَقَامَتْ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِالنَّاسِ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِي قَدْ نَامَ، فَقَالَ: حَبَسْتِ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَالنَّاسَ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. قَالَتْ: فَعَاتَبَنِي وَقَالَ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُولَ، وَجَعَلَ يَطْعُنُنِي بِيَدِهِ فِي خَاصِرَتِي فَلاَ يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلاَّ مَكَانُ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى فَخِذِي، فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى أَصْبَحَ عَلَى غَيْرِ مَاءٍ، فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ التَّيَمُّمِ ﴿فَتَيَمَّمُوا﴾ [النساء : ٤٣]، فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ الْحُضَيْرِ

बरकत नहीं है। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हमने उस ऊँट को उठाया जिस पर मैं सवार थी तो हार उसी के नीचे हमें मिला। (राजेअ : 334)

: مَا هِيَ بِأَوَّلِ بَرَكَتِكُمْ يَا آلَ أَبِي بَكْرٍ. فَقَالَتْ عَائِشَةُ : فَبَعَثْنَا الْبَعِيْرَ الَّذِي كُنْتُ عَلَيْهِ فَوَجَدْنَا الْعِقْدَ تَحْتَهُ)).

[راجع: ٣٣٤]

तश्रीह : गुम होने वाला हार ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) का था, इसलिये ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) को और भी ज़्यादा फ़िक्र हुआ, बाद में अल्लाह तआ़ला ने उसे मिला दिया। ह़ज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) के क़ौल का मतलब ये है कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की औलाद की वजह से मुसलमानों को हमेशा फ़वाइद व बरकात मिलते रहे हैं। ये ह़दीष़ किताबुत तयम्मुम में भी मज़्कूर हो चुकी है। यहाँ पर उसके लाने से ये ग़र्ज़ है कि इस ह़दीष़ से ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के ख़ानदान की फ़ज़ीलत ष़ाबित होती है। उसैद (रज़ि.) ने कहा। **मा हिया बिअव्वलि बर्कतिकुम या आल अबीबक्र.**

3673. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा मैंने ज़क्वान से सुना और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे अस्ह़ाब को बुरा भला मत कहो। अगर कोई शख़्स उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना (अल्लाह की राह में) खर्च कर डाले तो उनके एक मुद अनाज के बराबर भी नहीं हो सकता और न उनके आधे मुद के बराबर। शुअ़बा के साथ इस ह़दीष़ को जरीर, अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद, अबू मुआ़विया और मुहाजिर ने भी आ'मश से रिवायत किया है।

٣٦٧٣- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ : سَمِعْتُ ذَكْوَانَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَسُبُّوا أَصْحَابِي، فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلاَ نَصِيْفَهُ)). تَابَعَهُ جَرِيْرٌ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ دَاوُدَ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ وَمُحَاضِرٌ عَنِ الأَعْمَشِ.

तश्रीह : इससे आम तौर पर स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) की फ़ज़ीलत ष़ाबित होती है ये वो बुज़ुर्गाने इस्लाम हैं। जिनको दीदारे रिसालत पनाह (ﷺ) नसीब हुआ। इसलिये उनकी अल्लाह के नज़दीक बड़ी अहमियत है। जरीर (रह.) की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने और मुह़ाज़िर की रिवायत को अबुल फ़तह़ ने अपने फ़वाइद में और अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद की रिवायत को मुसद्दद ने और अबू मुआविया की रिवायत को इमाम अह़मद ने वस़्ल किया है। ख़िदमते इस्लाम में स़ह़ाबा किराम रिज़्वानुल्लाह अ़न्हुम अज्मईन की माली कुर्बानियों को इसलिये फ़ज़ीलत ह़ासिल है कि उन्होंने ऐसे वक़्त में ख़र्च किया जब सख़्त ज़रूरत थी, काफ़िरों का ग़ल्बा था और मुसलमान मुह़ताज थे। मक़्सूद मुह़ाजिरीने अव्वलीन और अंस़ार की फ़ज़ीलत बयान करना है। उनमें अबूबक्र (रज़ि.) भी थे, लिहाज़ा बाब की मुत़ाबक़त ह़ासिल हो गई। ये ह़दीष़ आपने उस वक़्त फ़र्माई जब ख़ालिद बिन वलीद और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औफ़ (रज़ि.) में कुछ तकरार हुई। ख़ालिद ने अ़ब्दुर्रह़मान को कुछ सख़्त कहा आपने ख़ालिद (रज़ि.) को मुख़ात़ब करके ये फ़र्माया। कुछ ने कहा कि ये ख़ित़ाब उन लोगों की त़रफ़ है जो स़ह़ाबा के बाद पैदा होंगे। उनको मौजूदा फ़र्ज़ करके उनकी त़रफ़ ख़ित़ाब किया। मगर ये क़ौल स़ह़ीह़ नहीं है क्योंकि ख़ालिद (रज़ि.) की त़रफ़ ख़ित़ाब करके आपने ये ह़दीष़ फ़र्माई थी और ख़ालिद (रज़ि.) ख़ुद स़ह़ाबा मे से हैं।

3674. हमसे अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन मिस्कीन ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन ह़स्सान ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे शुरैक बिन अबी नम्रह ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया, कहा मुझको अबू मूसा अशअ़री

٣٦٧٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِيْنٍ أَبُو الْحَسَنِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ شَرِيْكِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ عَنْ

(रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने एक दिन अपने घर में वुज़ू किया और इस इरादे से निकले कि आज दिन भर रसूलुल्लाह (ﷺ) का साथ न छोड़ूँगा। उन्होंने बयान किया कि फिर वो मस्जिदे नबवी में ह़ाज़िर हुए और आँह़ज़रत (ﷺ) के बारे में पूछा तो वहाँ मौजूद लोगों ने बताया कि हुज़ूर (ﷺ) तो तशरीफ़ ले जा चुके हैं और आप उस त़रफ़ तशरीफ़ ले गये हैं। चुनाँचे मैं आपके बारे में पूछता हुआ आपके पीछे पीछे निकला और आख़िर मैंने देखा कि आप (क़ुबा के क़रीब) बीरे अरीस में दाख़िल हो रहे हैं। मैं दरवाज़े पर बैठ गया और उसका दरवाज़ा खजूर की शाखों से बना हुआ था। जब आप क़ज़ा-ए-ह़ाजत कर चुके और वुज़ू भी कर लिया तो मैं आपके पास गया। मैंने देखा कि आप बीरे अरीस (उस बाग़ के कुँए) की मुँडेर पर बैठे हुए हैं, अपनी पिण्डलियाँ आपने खोल रखी हैं और कुँए में पाँव लटकाए हुए हैं। मैंने आपको सलाम किया और फिर वापस आकर बाग़ के दरवाज़े पर बैठ गया। मैंने सोचा कि आज रसूलुल्लाह (ﷺ) का दरबान रहूँगा। फ़िर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए और दरवाज़ा खोलना चाहा तो मैंने पूछा कि कौन स़ाहब हैं? उन्होंने कहा कि अबूबक्र! मैंने कहा थोड़ी देर ठहर जाइये। फिर मैं आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि अबूबक्र (रज़ि.) दरवाज़े पर मौजूद हैं और अंदर आने की इजाज़त आपसे चाहते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और जन्नत की बशारत भी। मैं दरवाज़े पर आया और ह़ज़रत अबूबक्र (रजि) से कहा कि अंदर तशरीफ़ ले जाइये और रसूले करीम (ﷺ) ने आपको जन्नत की बशारत दी है। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अंदर दाख़िल हुए और उसी कुँए की मेंढ़ पर आँह़ज़रत (ﷺ) की दाहिनी त़रफ़ बैठ गये और अपने दोनों पाँव कुँए में लटका लिये, जिस त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) लटकाए हुए थे और अपनी पिण्डलियों को भी खोल लिया था। फिर मैं वापस आकर अपनी जगह पर बैठ गया। मैं आते वक़्त अपने भाई को वुज़ू करता हुआ छोड़ आया था। वो मेरे साथ आने वाले थे, मैंने अपने दिल में कहा, काश! अल्लाह तआ़ला फ़लाँ को ख़बर दे देता, उनकी मुराद अपने भाई से थी और उन्हें यहाँ पहुँचा देता। इतने में किसी

سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ قَالَ: ((أَخْبَرَنِي أَبُو مُوسَى الأَشْعَرِيُّ أَنَّهُ تَوَضَّأَ فِي بَيْتِهِ ثُمَّ خَرَجَ فَقُلْتُ: لأَلْزَمَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلأَكُونَنَّ مَعَهُ يَوْمِي هَذَا. فَجَاءَ الْمَسْجِدَ فَسَأَلَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: خَرَجَ وَوَجَّهَ هَا هُنَا، فَخَرَجْتُ عَلَى إِثْرِهِ أَسْأَلُ عَنْهُ حَتَّى دَخَلَ بِئْرَ أَرِيْسٍ، فَجَلَسْتُ عِنْدَ الْبَابِ- وَبَابُهَا مِنْ جَرِيْدٍ - حَتَّى قَضَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَاجَتَهُ فَتَوَضَّأَ، فَقُمْتُ إِلَيْهِ، فَإِذَا هُوَ جَالِسٌ عَلَى بِئْرِ أَرِيْسٍ وَتَوَسَّطَ قُفَّهَا وَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ وَدَلاَّهُمَا فِي الْبِئْرِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ ثُمَّ انْصَرَفْتُ فَجَلَسْتُ عِنْدَ الْبَابِ فَقُلْتُ: لأَكُونَنَّ بَوَّابَ رَسُولِ اللهِ ﷺ الْيَوْمَ، فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ فَدَفَعَ الْبَابَ، فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ: أَبُوبَكْرٍ. فَقُلْتُ: عَلَى رِسْلِكَ، ثُمَّ ذَهَبْتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا أَبُو بَكْرٍ يَسْتَأْذِنُ، فَقَالَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)). فَأَقْبَلْتُ حَتَّى قُلْتُ لأَبِي بَكْرٍ: ادْخُلْ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يُبَشِّرُكَ بِالْجَنَّةِ. فَدَخَلَ أَبُو بَكْرٍ فَجَلَسَ عَنْ يَمِيْنِ رَسُولِ اللهِ ﷺ مَعَهُ فِي الْقُفِّ وَدَلَّى رِجْلَيْهِ فِي الْبِئْرِ كَمَا صَنَعَ النَّبِيُّ ﷺ وَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ. ثُمَّ رَجَعْتُ فَجَلَسْتُ وَقَدْ تَرَكْتُ أَخِي يَتَوَضَّأُ وَيَلْحَقُنِي، فَقُلْتُ: إِنْ يُرِدِ اللهُ بِفُلاَنٍ خَيْرًا - يُرِيْدُ أَخَاهُ - يَأْتِ بِهِ. فَإِذَا

إِنسَانٌ يُحَرِّكُ الْبَابَ. فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ عُمَرُ ابْنُ الْخَطَّابِ، فَقُلْتُ عَلَى رِسْلِكَ ثُمَّ جِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقُلْتُ: هَذَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَسْتَأْذِنُ. فَقَالَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) فَجِئْتُ فَقُلْتُ: ادْخُلْ وَبَشَّرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْجَنَّةِ. فَدَخَلَ فَجَلَسَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي الْقُفِّ عَنْ يَسَارِهِ وَدَلَّى رِجْلَيْهِ فِي الْبِئْرِ. ثُمَّ رَجَعْتُ فَجَلَسْتُ فَقُلْتُ : إِنْ يُرِدِ اللهُ بِفُلاَنٍ خَيْرًا يَأْتِ بِهِ. فَجَاءَ إِنْسَانٌ يُحَرِّكُ الْبَابَ، فَقُلْتُ : مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ: عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ فَقُلْتُ: عَلَى رِسْلِكَ. فَجِئْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ عَلَى بَلْوَى تُصِيبُهُ))، فَجِئْتُهُ فَقُلْتُ لَهُ ادْخُلْ، وَبَشَّرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْجَنَّةِ عَلَى بَلْوَى تُصِيبُكَ. فَدَخَلَ فَوَجَدَ الْقُفَّ قَدْ مُلِئَ، فَجَلَسَ وِجَاهَهُ مِنَ الشِّقِّ الآخَرِ. قَالَ: شَرِيكٌ قَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ : فَأَوَّلْتُهَا قُبُورَهُمْ)).

[أطرافه في : ٣٦٩٣، ٣٦٩٥، ٦٢١٦، ٧٠٩٢، ٧٢٦٢].

साहब ने दरवाज़े पर दस्तक दी, मैंने पूछा कौन साहब हैं? कहा कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.)। मैंने कहा कि थोड़ी देर के लिये ठहर जाइए। चुनाँचे मैं आप (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सलाम के बाद अर्ज़ किया कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) दरवाज़े पर खड़े अंदर आने की इजाज़त चाहते हैं। आपने फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और जन्नत की बशारत भी पहुँचा दो। मैं वापस आया और कहा कि अंदर तशरीफ़ ले जाइए और आपको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जन्नत की बशारत दी है। वो भी दाख़िल हुए और आपके साथ उसी मेंढ़ पर बाईं तरफ़ बैठ गये और अपने पाँव कुँए में लटका लिये। मैं फिर दरवाज़े पर आकर बैठ गया और सोचता रहा कि काश अल्लाह तआला फ़लाँ (आपके भाई) के साथ ख़ैर चाहता और उन्हें यहाँ पहुँचा देता। इतने में एक और साहब आए और दरवाज़े पर दस्तक दी, मैंने पूछा, कौन साहब हैं? बोले कि उष्मान बिन अफ़्फ़ान। मैंने कहा थोड़ी देर के लिये रुक जाइए, मैं आपके पास आया और आपको उनकी ख़बर दी। आपने फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और एक मुसीबत पर जो उन्हें पहुँचेगी जन्नत की बशारत दे दो। मैं दरवाज़े पर आया और उनसे कहा कि अंदर तशरीफ़ ले जाइये। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने आपको जन्नत की बशारत दी है एक मुसीबत पर जो आपको पहुँचेगी। वो जब दाख़िल हुए तो देखा चबूतरे पर जगह नहीं है इसलिये वो दूसरी तरफ़ आँहज़रत (ﷺ) के सामने बैठ गये। शुरैक ने बयान किया कि सईद बिन मुसय्यिब ने कहा मैंने उससे उनकी क़ब्रों की तावील ली है (कि इसी तरह बनेंगी)।

(दीगर मक़ाम : 3639, 3690, 6216, 7092, 7262)

ये सईद बिन मुसय्यिब की कमाल दानाई थी हक़ीक़त मे ऐसा ही हुआ। हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर (रज़ि.) तो आँहज़रत (ﷺ) के पास दफ़न हुए और हज़रत उष्मान (रज़ि.) आपके सामने बक़ीअ ग़रक़द में। सईद का मतलब ये नहीं है कि अबूबक्र और उमर (रज़ि.) आपके दाएँ-बाँए दफ़न होंगे क्योंकि ऐसा नहीं है। हज़रत अबूबक्र (रजि) की क़ब्र आँहज़रत के बाईं तरफ़ है। आँहज़रत (ﷺ) की उन मुबारक निशानियों की बिना पर मुता'ल्लिक़ा तमाम हज़राते सहाब-ए-किराम (रज़ि.) का जन्नती होना यक़ीनी अम्र है। फिर भी उम्मत में एक ऐसा गिरोह मौजूद है जो हज़राते शैख़ेने किराम की तौहीन करता है। उस गिरोह से इस्लाम को जो नुक़्सान पहुँचा है वो तारीख़े माज़ी के औराक़ (अतीत के पन्नों) पर मुलाहिज़ा किया जा सकता है। हज़रत उष्मान ग़नी (रज़ि.) की बाबत आपने उनकी शहादत की तरफ़ इशारा फ़र्माया जो अल्लाह के यहाँ मुक़द्दर थी और वो वक़्त आया कि

ख़ुद इस्लाम के फ़रज़न्दों ने हज़रत उ़्रमान (रज़ि.) जैसे जलीलुल क़द्र ख़लीफ़-ए-राशिद के ख़िलाफ़ बग़ावत का झण्डा बुलन्द किया, आख़िर उनको शहीद करके दम लिया। 1390 हिजरी के हज्ज के मौक़े पर बक़ीअ़े ग़रक़द मदीना में जब हज़रत उ़्रमान की क़ब्र पर हाज़िर हुआ तो देर तक माज़ी के तसव्वुरात में खोया हुआ आपकी जलालते शान और मिल्लत के कुछ लोगों की ग़द्दारी पर सोचता रहा। अल्लाह पाक इन तमाम बुज़ुर्गों को हमारा सलाम पहुँचाए और क़यामत के दिन सबसे मुलाक़ात नसीब करे आमीन। मज़्कूरा अरीस मदीना के एक मशहूर बाग़ का नाम था। उस बाग़ के कुँए में आँहज़रत (ﷺ) की अंगूठी जो हज़रत उ़्रमान (रज़ि.) की उँगली में थी। गिर गई थी जो बहुत तलाश करने के बावजूद न मिल सकी। आजकल ये कुँआ मस्जिदे क़ुबा के पास खण्डहर की शक्ल में ख़ुश्क मौजूद है। उसी जगह ये बाग़ वाक़ेअ था।

3675. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे सईद ने, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ), अबूबक्र, उ़मर और उ़्रमान (रज़ि.) को साथ लेकर उहुद पहाड़ पर चढ़े तो उहुद कांप उठा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उहुद! क़रार पकड़कर कि तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।

(दीगर मक़ाम : 3686, 3699)

٣٦٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُمْ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَعِدَ أُحُدًا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ، فَرَجَفَ بِهِمْ، فَقَالَ: ((اثْبُتْ أُحُدُ، فَإِنَّ عَلَيْكَ نَبِيٌّ وَصِدِّيْقٌ وَشَهِيْدَانِ)).

[طرفاه في : ٣٦٨٦، ٣٦٩٩].

आँहज़रत (ﷺ) की ये मुअजिज़ाना पेशीनगोई थी जो अपने वक़्त पर पूरी हुई और हज़रत उ़मर और हज़रत उ़्रमान (रज़ि.) दोनों ने जामे शहादत नोश फ़र्माया। मक़्सूद इससे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की फ़ज़ीलत बयान करना है। उहुद पहाड़ का कांप उठना बरहक़ है जो रसूले करीम (ﷺ) के एक मुअजज़ा के तौर पर ज़ुहूर में आया। इससे ये भी ज़ाहिर है कि क़ुदरत की हर-हर मख़्लूक़ अपनी हद के अंदर शऊरे ज़िन्दगी रखती है। सच है **व इन मिन शैइन इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही** (बनी इस्राईल : 44)

3676. मुझसे अबू अ़ब्दुल्लाह अहमद बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, कहा हमसे स़ख़र ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं एक कुँएँ पर (ख़्वाब में) खड़ा उससे पानी खींच रहा था कि मेरे पास अबूबक्र और उ़मर (रज़ि.) भी पहुँच गये। फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने डोल ले लिया और एक या दो डोल खींचे। उनके खींचने में ज़ुअ़फ़ था और अल्लाह तआ़ला उनकी मग़्फ़िरत करेगा। फिर अबूबक्र (रज़ि.) के हाथ से डोल उ़मर (रज़ि.) ने ले लिया और उनके हाथ में पहुँचते ही वो एक बहुत बड़े डोल की शक्ल में हो गया। मैंने कोई हिम्मत वाला और बहादुर इंसान नहीं देखा जो इतनी हुस्ने तदबीर और मज़बूत क़ुव्वत के साथ काम करने का आ़दी हो। चुनाँचे उन्होंने इतना पानी खींचा कि लोगों ने ऊँटों को

٣٦٧٦- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيْدٍ أَبُو عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيْرٍ حَدَّثَنَا صَخْرٌ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((بَيْنَمَا أَنَا عَلَى بِئْرٍ أَنْزِعُ مِنْهَا جَاءَنِي أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، فَأَخَذَ أَبُو بَكْرٍ الدَّلْوَ فَنَزَعَ ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ، وَفِي نَزْعِهِ ضَعْفٌ، وَاللهُ يَغْفِرُ لَهُ. ثُمَّ أَخَذَهَا ابْنُ الْخَطَّابِ مِنْ يَدِ أَبِي بَكْرٍ فَاسْتَحَالَتْ فِي يَدِهِ غَرْبًا، فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا مِنَ النَّاسِ يَفْرِي فَرِيَّهُ، فَنَزَعَ حَتَّى

ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطَنٍ)). قَالَ وَهْبٌ: الْعَطَنُ مَبْرَكُ الإِبِلِ، يَقُولُ: حَتَّى رَوِيَتِ الإِبِلُ فَأَنَاخَتْ. [راجع: ٣٦٣٤]

पानी पिलाने की जगहें भर लीं। वहब ने बयान किया कि, अल अ़तन ऊँटों के बैठने की जगह को कहते हैं। अ़रब लोग बोलते हैं ऊँट सैराब हुए कि (वहीं) बैठ गये। (राजेअ़ : 3634)

ये ह़दीष़ पहले भी गुज़र चुकी है और ह़ज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) की ये नातवानी कोई ऐ़ब नहीं है जो उनके लिये ख़ल्क़ी थी। इस नातवानी के बावजूद डोल उन्होंने पहले सम्भाला, इसी से ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) पर उनकी फ़ौक़ियत ष़ाबित हुई।

٣٦٧٧- حَدَّثَنَا الْوَلِيْدُ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا عِيْسَى بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي الْحُسَيْنِ الْمَكِّيُّ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : ((إِنِّي لَوَاقِفٌ فِي قَوْمٍ فَدَعَوُا اللهَ لِعُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ - وَقَدْ وُضِعَ عَلَى سَرِيْرِهِ - إِذَا رَجُلٌ مِنْ خَلْفِي قَدْ وَضَعَ مِرْفَقَهُ عَلَى مَنْكِبِي يَقُولُ: رَحِمَكَ اللهُ، إِنْ كُنْتُ لأَرْجُو أَنْ يَجْعَلَكَ اللهُ مَعَ صَاحِبَيْكَ، لأَنِّي كَثِيْرًا مَا كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((كُنْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَفَعَلْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَانْطَلَقْتُ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ. فَإِنْ كُنْتُ لأَرْجُوا أَنْ يَجْعَلَكَ اللهُ مَعَهُمَا. فَالْتَفَتُّ فَإِذَا هُوَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ)).

[طرفه في : ٣٦٨٥].

3677. हमसे वलीद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे उ़मर बिन सईद बिन अबिल हुसैन मक्की ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उन लोगों के साथ खड़ा था जो उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के लिये दुआ़एँ कर रहे थे। उस वक़्त उनका जनाज़ा चारपाई पर रखा हुआ था, इतने में एक स़ाहब ने मेरे पीछे से आकर मेरे शानों पर अपनी कोहनियाँ रख दीं और (उ़मर रज़ि. को मुख़ात़ब करके) कहने लगे कि अल्लाह पाक आप पर रह़म करे। मुझे तो यही उम्मीद थी कि अल्लाह तआ़ला आपको आपके दोनों साथियों (रसूलुल्लाह ﷺ और अबूबक्र रज़ि.) के साथ (दफ़न) कराएगा। मैं अकष़र रसूलुल्लाह (ﷺ) को यूँ फ़र्माते सुना करता था कि मैं और अबूबक्र और उ़मर थे, मैंने और अबूबक्र और उ़मर ने ये काम किया, मैं और अबूबक्र और उ़मर गये। इसलिये मुझे यही उम्मीद थी कि अल्लाह तआ़ला आपको उन ही दोनों बुज़ुर्गों के साथ रखेगा। मैंने जो मुड़कर देखा तो वो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) थे। (दीगर मक़ाम : 3685)

तश्रीह : सुब्ह़ानल्लाह ये चारों ख़लीफ़ा एक दिल और एक जान थे और एक-दूसरे के ख़ैर-ख़्वाह और ष़ना ख़्वाँ थे और जिसने ये गुमान किया कि ये आपस में एक दूसरे के मुख़ालिफ़ और बदख़्वाह थे वो मर्द मर्दूद ख़ुद बद बात़िन और मुनाफ़िक़ है। अल्मर्उ यक़ीसु अ़ला नफ़्सिही का मिस्दाक़ है। सच है,

चे निस्बत खाक रा बआलमे पाक   **कुजा ईसा कुजा दज्जाल नापाक**

ह़ाफ़िज़ ने कहा कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) सिल का शिकार हुए, वाक़दी ने कहा कि उन्होंने सर्दी में ग़ुस्ल किया था, पन्द्रह दिन तक बुख़ार हुआ। कुछ ने कहा कि यहूदियों ने उनको ज़हर दे दिया था। 13 बमाहे जमादिल आख़िर उन्होंने इंतिक़ाल फ़र्माया, उनकी ख़िलाफ़त दो बरस तीन माह और चन्द दिन रही। आँह़ज़रत (ﷺ) की त़रह़ उनकी उ़म्र भी इंतिक़ाल के वक़्त 63 साल की थी। **रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू व ह़शरनल्लाह फ़ी ख़ुद्दामिही।**

3678. मुझसे मुहम्मद बिन यज़ीद कूफ़ी ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, उनसे औज़ाई ने, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम ने और उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से मुश्रिकीने मक्का की सबसे बड़ी ज़ालिमाना ह़रकत के बारे में पूछा जो उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ की थी तो उन्होंने बतलाया कि मैंने देखा कि उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आया। आप उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहे थे, उस बदबख़्त ने अपनी चादर आपकी गर्दने मुबारक में डालकर खींची जिससे आपका गला बड़ी सख़्ती के साथ फंस गया। इतने में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए और उस बदबख़्त को दूर किया और कहा क्या तुम एक ऐसे शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो जो ये कहता कि मेरा परवरदिगार अल्लाह तआ़ला है और वो तुम्हारे पास अपने परवरदिगार की त़रफ़ से खुली हुई दलीलें भी लेकर आया है।

(दीगर मक़ाम : 3856, 4815)

٣٦٧٨- حَدَّثَنِيْ مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيْدَ الْكُوفِيُّ حَدَّثَنَا الْوَلِيْدُ عَنِ الأَوْزَاعِيِّ عَنْ يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيْرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو عَنْ أَشَدِّ مَا صَنَعَ الْمُشْرِكُونَ بِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَ ((رَأَيْتُ عُقْبَةَ بْنَ أَبِي مُعَيْطٍ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ يُصَلِّي، فَوَضَعَ رِدَاءَهُ فِي عُنُقِهِ فَخَنَقَهُ بِهِ خَنْقًا شَدِيْدًا، فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ حَتَّى دَفَعَهُ عَنْهُ فَقَالَ : ﴿أَتَقْتُلُوْنَ رَجُلاً أَنْ يَقُوْلَ رَبِّيَ اللهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ﴾

[غافر: ٢٨].

[طرفاه في: ٣٨٥٦، ٤٨١٥].

इन तमाम अह़ादीष़ के नक़ल करने से ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के मनाक़िब बयान करना मक़्सूद है।

बाब 6 : ह़ज़रत अबू ह़फ़्स़ उ़मर बिन ख़त्ताब क़ुरशी अ़दवी (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

٦- بَابُ مَنَاقِبِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ أَبِي حَفْصٍ الْقُرَشِيِّ الْعَدَوِيِّ

तश्रीह : ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का नसबनामा ये है उ़मर बिन ख़त्ताब बिन नुफ़ैल बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन रबाह़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ बिन ज़र्राह़ बिन अ़दी बिन कअ़ब बिन लोय बिन ग़ालिब। तो वो कअ़ब में आँह़ज़रत (ﷺ) के नसब से मिल जाते हैं, उनका लक़ब फ़ारूक़ था जो आँह़ज़रत (ﷺ) ने दिया था, कुछ ने कहा ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) ये लक़ब लेकर आए थे। ग़र्ज़ अ़दालत और इल्म, सियासते मुदुन और ह़ुस्ने तदबीर और इंतिज़ामे मुल्की में अपना नज़ीर नहीं रखते थे। उनकी सीरते त़य्यिबा पर दुनिया की बेशतर ज़ुबानों मे तवील और मुख़्तस़र काफ़ी किताबें लिखी गई हैं। उनके मनाक़िब के बारे में यहाँ जो कुछ मज़्कूर है वो मुश्ते नमूना अज़ ख़रवारे है।

3679. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ माजिशून ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं (ख़्वाब में) जन्नत में दाख़िल हुआ तो वहाँ मैंने अबू त़लह़ा (रज़ि.) की बीवी रुमैस़ा को देखा और मैंने क़दमों की आवाज़ सुनी तो मैंने पूछा, ये कौन स़ाहब हैं? बताया गया कि ये

٣٦٧٩- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ الْمَاجِشُونِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((رَأَيْتُنِي دَخَلْتُ الْجَنَّةَ، فَإِذَا أَنَا بِالرُّمَيْصَاءِ امْرَأَةِ أَبِي طَلْحَةَ، وَ سَمِعْتُ خَشَفَةً فَقُلْتُ مَنْ

बिलाल (रज़ि.) हैं और मैंने एक महल देखा उसके सामने एक औरत थी, मैंने पूछा ये किसका महल है? तो बताया कि ये उमर (रज़ि.) का है। मेरे दिल में आया कि अंदर दाख़िल होकर उसे देखूँ, लेकिन मुझे उमर की ग़ैरत याद आई (और इसलिये अंदर दाख़िल नहीं हुआ) इस पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने रोते हुए कहा मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हों, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं आपसे ग़ैरत करूँगा। (दीगर मक़ाम : 5226, 7024)

هَذَا؟ فَقَالَ: هَذَا بِلاَلٌ. وَرَأَيْتُ قَصْرًا بِفَنَائِهِ جَارِيَةٌ فَقُلْتُ: لِمَنْ هَذَا؟ فَقَالَ لِعُمَرَ. فَأَرَدْتُ أَنْ أَدْخُلَهُ فَأَنْظُرَ إِلَيْهِ، فَذَكَرْتُ غَيْرَتَكَ. فَقَالَ عُمَرُ : بِأَبِي وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللهِ. أَعَلَيْكَ أَغَارُ؟)).
[طرفاه في : ٥٢٢٦، ٧٠٢٤].

मज़्कूरा ख़ातून रुमैसा नामी हज़रत अनस (रज़ि.) की वालिदा हैं। ये लफ़्ज़ रमस़ से है। रमस़ आँख के मैल को कहते हैं, उनकी आँखों में मैल रहता था, इसलिये वो इस लक़ब से मशहूर थीं।

3680. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको लैष ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं सोया हुआ था कि मैंने ख़्वाब में जन्नत देखी, मैंने देखा कि एक औरत एक महल के किनारे वुज़ू कर रही है। मैंने पूछा ये महल किसका है? तो फ़रिश्तों ने जवाब दिया कि उमर (रज़ि.) का। फिर मुझे उनकी ग़ैरत व हमिय्यत याद आई और मैं वहीं से लौट आया। इस पर हज़रत उमर (रज़ि.) रो दिये और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं आप पर ग़ैरत करूँगा? (राजेअ : 3242)

٣٦٨٠- حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِذْ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي فِي الْجَنَّةِ، فَإِذَا امْرَأَةٌ تَتَوَضَّأُ إِلَى جَانِبِ قَصْرٍ، فَقُلْتُ: لِمَنْ هَذَا الْقَصْرُ؟ قَالُوا : لِعُمَرَ، فَذَكَرْتُ غَيْرَتَهُ فَوَلَّيْتُ مُدْبِرًا. فَبَكَى عُمَرُ وَقَالَ: أَعَلَيْكَ أَغَارُ يَا رَسُولَ اللهِ؟)). [راجع: ٣٢٤٢]

3681. मुझसे अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन स़ल्त कूफ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा मुझको हम्ज़ा ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद (अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने ख़्वाब में दूध पिया, इतना कि मैं दूध की ताज़गी देखने लगा जो मेरे नाख़ुन या नाख़ुनों पर बह रही है। फिर मैंने प्याला उमर (रज़ि.) को दे दिया, स़हाबा ने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस ख़्वाब की ता'बीर क्या है? आपने फ़र्माया कि इसकी ता'बीर इल्म है।

(राजेअ : 82)

٣٦٨١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ أَبُو جَعْفَرٍ الْكُوفِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي حَمْزَةُ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ شَرِبْتُ - يَعْنِي اللَّبَنَ - حَتَّى أَنْظُرُ إِلَى الرِّيِّ يَجْرِي فِي ظُفُرِي - أَوْ فِي أَظْفَارِي - ثُمَّ نَاوَلْتُ عُمَرَ. قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: الْعِلْمَ)). [راجع: ٨٢]

3682. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन बिश्र ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबूबक्र बिन सालिम ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं एक कुँए से एक अच्छा बड़ा डोल खींच रहा हूँ, जिस पर चरख़ लकड़ी का लगा हुआ है। लकड़ी का चरख़। फिर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए और उन्होंने भी एक या दो डोल खींचे मगर कमज़ोरी के साथ और अल्लाह उनकी मग़्फ़िरत करे। फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) आए और उनके हाथ में वो डोल एक बहुत बड़े डोल की शक्ल इख़्तियार कर गया। मैंने उन जैसा मज़्बूत और बा अ़ज़्मत शख़्स नहीं देखा जो इतनी मज़बूती के साथ काम कर सकता हो। उन्होंने इतना खींचा कि लोग सैराब हो गये और अपने ऊँटों को पिलाकर उनके ठिकानों पर ले गये। इब्ने ज़ुबैर ने कहा कि अ़ब्क़रिय्यु का मा'नी उ़म्दह और ज़ुराबी और अ़ब्क़रिय्यु सरदार को भी कहते हैं (ह़दीष़ में अ़ब्क़रिय्यु से यही मुराद है) यह्या बिन ज़ियाद फ़रय ने कहा, ज़राबिय्य उन बिछौनों को कहते हैं जिनके हाशिये बारीक, फैले हुए बहुत कष़रत से होते हैं। (राजेअ : 3634)

٣٦٨٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنِ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((أُرِيْتُ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَنْزِعُ بِدَلْوِ بَكْرَةٍ عَلَى قَلِيْبٍ، فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ فَنَزَعَ ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ نَزْعًا ضَعِيْفًا وَاللهُ يَغْفِرُ لَهُ. ثُمَّ جَاءَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَاسْتَحَالَتْ غَرْبًا، فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا يَفْرِي فَرِيَّهُ، حَتَّى رَوِيَ النَّاسُ وَضَرَبُوا بِعَطَنٍ)). قَالَ ابْنُ جُبَيْرٍ: الْعَبْقَرِيُّ عِتَاقُ الزَّرَابِيِّ. وَقَالَ يَحْيَى: الزَّرَابِيُّ الطَّنَافِسُ لَهَا خَمْلٌ رَقِيْقٌ. مَبْثُوثَةٌ : كَثِيْرَةٌ.

[راجع: ٣٦٣٤]

ये तर्जुमा इस सूरत में है जब ह़दीष़ में लफ़्ज़ बकरह फ़तह़ बा और काफ़ हो या'नी वो गोल लकड़ी जिससे डोल लटका देते हैं, अगर बकरह सुकूने काफ़ हो तो तर्जुमा यूँ होगा, वो डोल जिससे जवान ऊँटनी को दूध पिलाते हैं।

3683. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिदने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझको अ़ब्दुल ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ ने ख़बर दी और उनसे उनके वालिद (ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रजि) ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ब्दुल ह़मीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद ने, उनसे मुहम्मद बिन सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अंदर आने की इजाज़त चाही। उस

٣٦٨٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْحَمِيْدِ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ سَعْدٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَاهُ قَالَ عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ عَبْدِ اللهِ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: اسْتَأْذَنَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عَلَى

वक़्त आपके पास क़ुरैश की चन्द औरतें (उम्महातुल मोमिनीन में से) बैठी बातें कर रही थीं और आपकी आवाज़ से भी बुलन्द आवाज़ के साथ आपसे नान नफ़्क़ा में ज़्यादती की दरख़्वास्त कर रही थीं, ज्यों ही हज़रत उमर (रज़ि.) ने इजाज़त चाही तो वो तमाम ख़ड़ी होकर पर्दे के पीछे जल्दी से भाग खड़ी हुईं। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) ने इजाज़त दी और वो दाख़िल हुए तो आँहज़रत (ﷺ) मुस्कुरा रहे थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला आपको हमेशा ख़ुश रखे। आपने फ़र्माया, मुझे उन औरतों पर हंसी आ रही है जो अभी मेरे पास बैठी हुई थीं लेकिन तुम्हारी आवाज़ सुनते ही सब पर्दे के पीछे भाग गईं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! डरना तो उन्हें आपसे चाहिये था। फिर उन्होंने (औरतों से) कहा ऐ अपनी जानों की दुश्मनों! तुम मुझसे तो डरती हो और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से नहीं डरतीं। औरतों ने कहा कि हाँ, आप ठीक कहते हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के मुक़ाबले में आप कहीं ज़्यादा सख़्त हैं। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ इब्ने ख़त्ताब! उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर कभी शैतान तुमको किसी रास्ते पर चलता देख लेता तो उसे छोड़कर वो किसी दूसरे रास्ते पर चल पड़ता। (राजेअ : 3294)

رَسُولِ اللهِ ﷺ وَعِنْدَهُ نِسْوَةٌ مِنْ قُرَيْشٍ يُكَلِّمْنَهُ وَيَسْتَكْثِرْنَهُ، عَالِيَةً أَصْوَاتُهُنَّ عَلَى صَوْتِهِ فَلَمَّا اسْتَأْذَنَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ قُمْنَ فَبَادَرْنَ الْحِجَابَ، فَأَذِنَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَدَخَلَ عُمَرُ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يَضْحَكُ، فَقَالَ عُمَرُ : أَضْحَكَ اللهُ سِنَّكَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((عَجِبْتُ مِنْ هَؤُلاَءِ اللاَّتِي كُنَّ عِنْدِي، فَلَمَّا سَمِعْنَ صَوْتَكَ ابْتَدَرْنَ الْحِجَابَ))، فَقَالَ عُمَرُ: فَأَنْتَ أَحَقُّ أَنْ يَهَبْنَ يَا رَسُولَ اللهِ. ثُمَّ قَالَ عُمَرُ: يَا عَدُوَّاتِ أَنْفُسِهِنَّ، أَتَهَبْنَنِي وَلاَ تَهَبْنَ رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ فَقُلْنَ : نَعَمْ، أَنْتَ أَفَظُّ وَأَغْلَظُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِيْهًا يَا ابْنَ الْخَطَّابِ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، مَا لَقِيَكَ الشَّيْطَانُ سَالِكًا فَجًا قَطُّ إِلاَّ سَلَكَ فَجًا غَيْرَ فَجِّكَ)). [راجع: ٣٢٩٤]

आपने दुआ फ़र्माई थी या अल्लाह! इस्लाम को उमर या फिर अबू जहल के इस्लाम से इज़्ज़त अता कर। अल्लाह ने हज़रत उमर (रज़ि.) के हक़ में आपकी दुआ क़ुबूल फ़र्माई। जिनके मुसलमान होने पर मुसलमान का'बा में ए'लानिया नमाज़ पढ़ने लगे और तब्लीग़े इस्लाम के लिये रास्ता खुल गया, उनके इस्लाम लाने का वाक़िया मशहूर है।

3584. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे क़ैस ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत उमर (रज़ि.) के इस्लाम लाने के बाद फिर हमें हमेशा इज़्ज़त हासिल रही। (दीगर मक़ाम : 3863)

٣٦٨٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا قَيْسٌ: قَالَ عَبْدُ اللهِ: ((مَا زِلْنَا أَعِزَّةً مُنْذُ أَسْلَمَ عُمَرُ)). [طرفه في : ٣٨٦٣].

3685. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमसे उमर बिन सईद ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) को कहते सुना कि जब उमर (रज़ि.) को (शहादत के बाद) उनके बिस्तर पर रखा

٣٦٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ سَعِيْدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ: وُضِعَ عُمَرُ

गया तो तमाम लोगों ने नअ़शे मुबारक को घेर लिया और उनके लिये (अल्लाह से) दुआ़ और मग़्फ़िरत तलब करने लगे। नअ़श अभी उठाई नहीं गई थी, मैं भी वहीं मौजूद था। उसी हालत में अचानक एक साहब ने मेरा शाना पकड़ लिया, मैंने देखा तो वो अ़ली (रज़ि.) थे। फिर उन्होंने उ़मर (रज़ि.) के लिये दुआ-ए-रहमत की और (उनकी नअ़श को मुख़ातब करके) कहा, आपने अपने बाद किसी भी शख़्स को नहीं छोड़ा कि जिसे देखकर मुझे ये तमन्ना होती कि उसके अ़मल जैसा अ़मल करते हुए मैं अल्लाह से जा मिलूँ और अल्लाह की क़सम! मुझे तो (पहले से) यक़ीन था कि अल्लाह तआ़ला आपको आपके दोनों साथियों के साथ ही रखेगा। मेरा ये यक़ीन इस वजह से था कि मैंने अकषर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ुबान से ये अल्फ़ाज़ सुने थे कि मैं अबूबक्र और उ़मर गये। मैं, अबूबक्र और उ़मर दाख़िल हुए। मैं, अबूबक्र और उ़मर बाहर आए। (राजेअ़ : 3677)

عَلَى سَرِيرِهِ، فَتَكَنَّفَهُ النَّاسُ يَدْعُونَ وَيُصَلُّونَ قَبْلَ أَنْ يُرْفَعَ - وَأَنَا فِيهِمْ - فَلَمْ يَرُعْنِي إِلاَّ رَجُلٌ آخِذٌ مَنْكِبِي، فَإِذَا عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ، فَتَرَحَّمَ عَلَى عُمَرَ وَقَالَ: مَا خَلَّفْتَ أَحَدًا أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ أَلْقَى اللهَ بِمِثْلِ عَمَلِهِ مِنْكَ. وَايْمُ اللهِ إِنْ كُنْتُ لأَظُنُّ أَنْ يَجْعَلَكَ اللهُ مَعَ صَاحِبَيْكَ، وَحَسِبْتُ أَنِّي كَثِيرًا أَسْمَعُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((ذَهَبْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَدَخَلْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ، وَخَرَجْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ)). [راجع: ٣٦٧٧]

3686. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं और मुझसे ख़लीफ़ा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सवाअ और कहमस बिन मिन्हाल ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) उहुद पहाड़ पर चढ़े तो आपके साथ अबूबक्र, उ़मर और उ़ष्मान (रज़ि.) भी थे। पहाड़ लरज़ने लगा तो आँहज़रत (ﷺ) ने अपने पाँव से उसे मारा और फ़र्माया, उहुद! ठहरा रह कि तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद ही तो हैं। (राजेअ़ : 3675)

٣٦٨٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ قَالَ. وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَوَاءٍ وَكَهْمَسُ بْنُ الْمِنْهَالِ قَالاَ: حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: صَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ أُحُدًا وَمَعَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ، فَرَجَفَ بِهِمْ، فَضَرَبَهُ بِرِجْلِهِ وَقَالَ: ((اثْبُتْ أُحُدُ، فَمَا عَلَيْكَ إِلاَّ نَبِيٌّ أَوْ صِدِّيقٌ أَوْ شَهِيدَانِ)).

[راجع: ٣٦٧٥]

ख़ुलफ़ा की फ़ज़ीलत में आँहज़रत (ﷺ) ने बतौरे पेशगी फ़र्माया। शहीदों से हज़रत उ़मर और उ़ष्मान (रज़ि.) मुराद हैं।

3687. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे उ़मर बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया और उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने मुझसे अपने वालिद हज़रत उ़मर

٣٦٨٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ هُوَ ابْنُ مُحَمَّدٍ أَنَّ زَيْدَ بْنَ أَسْلَمَ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((سَأَلَنِي ابْنُ عُمَرَ عَنْ بَعْضِ

(रज़ि.) के कुछ हालात पूछे, जो मैंने उन्हें बता दिये तो उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद मैंने किसी शख़्स को दीन में इतनी ज़्यादा कोशिश करने वाला और इतना ज़्यादा सख़ी नहीं देखा और ये ख़साइल हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) पर ख़त्म हो गये।

شَأْنِهِ - يَعْنِي عُمَرَ - فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ : مَا رَأَيْتُ أَحَدًا قَطُّ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْ حِيْنِ قُبِضَ كَانَ أَجَدَّ وَأَجْوَدَ حَتَّى انْتَهَى مِنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ)).

मुराद ये है कि अपने अहदे ख़िलाफ़त में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) बहुत बड़े दिलदार, बहुत बड़े सख़ी और इस्लाम के अज़ीम सुतून थे। मन्क़बत का जहाँ तक ता'ल्लुक़ है हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का मुक़ाम तमाम सहाबा से आला व अरफ़अ है।

3688. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक साहब (ज़ुल ख़ुवेसिर या अबू मूसा) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से क़यामत के बारे में पूछा कि क़यामत कब क़ायम होगी? इस पर आपने फ़र्माया, तुमने क़यामत के लिये तैयारी क्या की है? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कुछ भी नहीं, सिवा उसके कि मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तुम्हारा हश्र भी उन्हीं के साथ होगा जिनसे तुम्हें मुहब्बत है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें कभी इतनी ख़ुशी किसी बात से भी नहीं हुई जितनी आपकी ये हदीष़ सुनकर हुई कि तुम्हारा हश्र उन्हीं के साथ होगा जिनसे तुम्हें मुहब्बत है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि मैं भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से और हज़रत अबूबक्र व उमर (रज़ि.) से मुहब्बत रखता हूँ और उनसे अपनी इस मुहब्बत की वजह से उम्मीद रखता हूँ कि मेरा हश्र उन्हीं के साथ होगा, अगरचे मैं उन जैसे अमल न कर सका। (दीगर मक़ाम : 167, 6171, 7153)

٣٦٨٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ السَّاعَةِ فَقَالَ: مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ: ((وَمَاذَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟)) قَالَ: لاَ شَيْءَ، إِلاَّ أَنِّي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ : ((أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ)). قَالَ: أَنَسٌ: فَمَا فَرِحْنَا بِشَيْءٍ فَرِحْنَا بِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ. قَالَ أَنَسٌ: فَأَنَا أُحِبُّ النَّبِيَّ ﷺ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ، وَأَرْجُوا أَنْ أَكُونَ مَعَهُمْ بِحُبِّي إِيَّاهُمْ، وَإِنْ لَمْ أَعْمَلْ بِمِثْلِ أَعْمَالِهِمْ)).

[أطرافه في : ١٦٧، ٦١٧١، ٧١٥٣].

हज़रत अनस (रज़ि.) के साथ मुतर्जिम व नाशिर की भी यही दुआ है।

3689. हमसे यह्या बिन क़ज़अ़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे पहले उम्मतों में मुहद्दष़ हुआ करते थे, और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स है तो वो उमर हैं। ज़करिया बिन ज़ायदा ने अपनी रिवायत में सअ़द से ये बढ़ाया

٣٦٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيْمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الأُمَمِ نَاسٌ مُحَدَّثُونَ، فَإِنْ يَكُ فِي أُمَّتِي أَحَدٌ فَإِنَّهُ عُمَرُ)) زَادَ زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي

कि उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमसे पहले बनी इस्राईल की उम्मतों में कुछ लोग ऐसे हुआ करते थे कि नबी नहीं होते थे और उसके बावजूद फ़रिश्ते उनसे कलाम किया करते थे और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स हो सकता है तो वो हज़रत उमर हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने पढ़ा, मन नबिय्यि वला मुहद्दिष। (राजेअ : 3469)

زَائِدَةَ عَنْ سَعْدٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيْلَ رِجَالٌ يُكَلَّمُونَ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَكُونُوا أَنْبِيَاءَ، فَإِنْ يَكُنْ فِي أُمَّتِي مِنْهُمْ أَحَدٌ فَعُمَرُ)).
قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((مَنْ نَبِيٍّ وَلاَ مُحَدَّثٍ)). [راجع: ٣٤٦٩]

तश्रीह : मुहद्दष वो जिस पर अल्लाह की तरफ़ से इल्हाम हो और हक़ उसकी ज़ुबान पर जारी हो जाए या फ़रिश्ते इससे बात करें या वो जिसकी राय बिलकुल सहीह षाबित हो। मुहद्दष वो भी हो सकता है जो साहिबे कशफ़ हो जैसे हज़रत ईसा (रज़ि.) की उम्मत में हज़रत यूहन्ना हवारी गुज़रे हैं जिनके मकाशिफ़ात मशहूर हैं। यक़ीनन हज़रत उमर (रज़ि.) भी ऐसे ही लोगों में से हैं। रिवायत के आख़िर में मज़्कूर है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) सूरह हज्ज की इस आयत को यूँ पढ़ते थे, **वमा अर्सल्ना मिन क़ब्लिक मिन रसूलिन व ला नबिय्यिन व ला मुहद्दसुन** अल्ख़.

3690. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि हमने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक चरवाहा अपनी बकरियाँ चरा रहा था कि एक भेड़िये ने उसकी एक बकरी पकड़ ली। चरवाहे ने उसका पीछा किया और बकरी को उससे छुड़ा लिया। फिर भेड़िया उसकी तरफ़ मुतवजह होकर बोला। दरिन्दों के दिन उसकी हिफ़ाज़त करने वाला कौन होगा, जब मेरे सिवा उसका कोई चरवाहा न होगा। सहाबा (रज़ि.) इस पर बोल उठे सुब्हानल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उस वाक़िये पर ईमान लाया और अबूबक्र व उमर (रज़ि.) भी। हालाँकि वहाँ अबूबक्र व उमर (रज़ि.) मौजूद नहीं थे। (राजेअ : 2324)

٣٦٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالاَ: سَمِعْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَيْنَمَا رَاعٍ فِي غَنَمِهِ عَدَا الذِّئْبُ فَأَخَذَ مِنْهَا شَاةً، فَطَلَبَهَا حَتَّى اسْتَنْقَذَهَا، فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ الذِّئْبُ فَقَالَ لَهُ: مَنْ لَهَا يَوْمَ السَّبُعِ، لَيْسَ لَهَا رَاعٍ غَيْرِي؟ فَقَالَ النَّاسُ: سُبْحَانَ اللهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: فَإِنِّي أُوْمِنُ بِهِ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ. وَمَا ثَمَّ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ)). [راجع: ٢٣٢٤]

ये हदीष़ ऊपर गुज़र चुकी है। उसमें गाय का भी ज़िक्र था। इससे भी हज़राते शैख़ैन की फ़ज़ीलत षाबित हुई।

3691. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अक़ील बिन हनीफ़ ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मैंने ख़्वाब में देखा

٣٦٩١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو أُمَامَةَ بْنُ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ عَنْ

أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ النَّاسَ عُرِضُوا عَلَيَّ وَعَلَيْهِمْ قُمُصٌ، فَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ الثُّدِيَّ، وَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ دُونَ ذَلِكَ، وَعُرِضَ عَلَيَّ عُمَرُ وَعَلَيْهِ قَمِيصٌ اجْتَرَّهُ)). قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((الدِّينُ)). [راجع:٢٣]

कि कुछ लोग मेरे सामने पेश किये गये जो क़मीस़ पहने हुए थे। उनमें से कुछ की क़मीस़ सिर्फ़ सीने तक थी और कुछ की उससे भी छोटी और मेरे सामने उ़मर पेश किये गये तो वो इतनी बड़ी क़मीस़ पहने हुए थे कि चलते हुए घसीटती थी। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने उसकी ता'बीर क्या ली? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि दीन मुराद है। (राजेअ़ : 23)

मा'लूम हुआ कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का दीन व ईमान बहुत क़वी था, उससे उनकी फ़ज़ीलत ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) पर लाज़िम नहीं आती क्योंकि इस ह़दीष़ में उनका ज़िक्र नहीं है।

٣٦٩٢- حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ قَالَ: ((لَمَّا طُعِنَ عُمَرُ جَعَلَ يَأْلَمُ، فَقَالَ لَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ - وَكَأَنَّهُ يُجَزِّعُهُ-: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، وَلَئِنْ كَانَ ذَاكَ، لَقَدْ صَحِبْتَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَحْسَنْتَ صُحْبَتَهُ، ثُمَّ فَارَقْتَهُ وَهُوَ عَنْكَ رَاضٍ، ثُمَّ صَحِبْتَ أَبَا بَكْرٍ فَأَحْسَنْتَ صُحْبَتَهُ، ثُمَّ فَارَقْتَهُ وَهُوَ عَنْكَ رَاضٍ، ثُمَّ صَحِبْتَ صَحَبَتَهُمْ فَأَحْسَنْتَ صُحْبَتَهُمْ، وَلَئِنْ فَارَقْتَهُمْ لَتُفَارِقَنَّهُمْ وَهُمْ عَنْكَ رَاضُونَ. قَالَ: أَمَّا مَا ذَكَرْتَ مِنْ صُحْبَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَرِضَاهُ فَإِنَّمَا ذَاكَ مَنٌّ مِنَ اللهِ تَعَالَى مَنَّ بِهِ عَلَيَّ، وَأَمَّا مَا ذَكَرْتَ مِنْ صُحْبَةِ أَبِي بَكْرٍ وَرِضَاهُ فَإِنَّمَا ذَاكَ مَنٌّ مِنَ اللهِ جَلَّ ذِكْرُهُ مَنَّ بِهِ عَلَيَّ، وَأَمَّا مَا تَرَى مِنْ جَزَعِي فَهُوَ مِنْ أَجْلِكَ

3692. हमसे स़ुल्त बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे मिस्वर बिन मख़्रमा ने बयान किया कि जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ज़ख़्मी कर दिये गये तो आपने बड़ी बेचैनी का इज़्हार किया। उस मौक़े पर इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आपसे तसल्ली के त़ौर पर कहा कि या अमीरल मोमिनीन! आप इस दर्जा घबरा क्यूँ रहे हैं ? आप रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुह़बत में रहे और हुज़ूर (ﷺ) की सुह़बत का पूरा ह़क़ अदा किया और फिर जब आप आँह़ज़रत (ﷺ) से अलग हुए तो हुज़ूर (ﷺ) आपसे ख़ुश और राज़ी थे उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) की सुह़बत उठाई और उनकी सुह़बत का भी आपने पूरा ह़क़ अदा किया और जब अलग हुए तो वो भी आपसे ख़ुश थे। आख़िर में मुसलमानों की सुह़बत आपको ह़ासिल रही, उनकी सुह़बत का भी आपने पूरा ह़क़ अदा किया और अगर आप उनसे जुदा हुए तो इसमें कोई शक नहीं कि उन्हें भी आप अपने से ख़ुश और राज़ी ही छोड़ेंगे। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, इब्ने अ़ब्बास! तुमने जो रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुह़बत का और आँह़ज़रत (ﷺ) की रज़ा व ख़ुशी का ज़िक्र किया है तो यक़ीनन ये सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला का एक फ़ज़्ल और एह़सान है जो उसने मुझ पर किया है। इसी त़रह़ जो तुमने अबूबक्र (रज़ि.) की सुह़बत और उनकी ख़ुशी का ज़िक्र किया है तो ये भी अल्लाह तआ़ला का मुझ पर फ़ज़्ल व एह़सान था। लेकिन जो घबराहट और परेशानी मुझ पर तुम त़ारी देख रहे हो वो तुम्हारी वजह से और तुम्हारे

साथियों की फ़िक्र की वजह से है। और अल्लाह की क़सम! अगर मेरे पास ज़मीन भर सोना होता तो अल्लाह तआला के अ़ज़ाब का सामना करने से पहले उसका फ़िदया देकर उससे नजात की कोशिश करता। हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि मैं उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। फिर आख़िर तक यही ह़दीष़ बयान की।

وَأَجْلِ أَصْحَابِكَ. وَاللهِ لَوْ أَنَّ لِي طِلاَعَ الأَرْضِ ذَهَبًا لاَفْتَدَيْتُ بِهِ مِنْ عَذَابِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ قَبْلَ أَنْ أَرَاهُ)). قَالَ حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ ((دَخَلْتُ عَلَى عُمَرَ)) بِهَذَا.

तश्रीह : इब्ने अबी मुलैका के क़ौल को इस्माईली ने वस्ल किया, इस सनद के बयान करने से ये ग़र्ज़ है कि इब्ने अबी मुलैका ने अपने और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के दरम्यान कभी मिस्वर का ज़िक्र किया है जैसे अगली रिवायत में है कभी नहीं किया जैसे इस रिवायत में है। शायद ये ह़दीष़ उन्होंने मिस्वर के वास्ते से बयान नहीं की। यहाँ ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की बेक़रारी का ये दूसरा सबब बयान किया। या'नी एक तो तुम लोगों को फ़िक्र है दूसरे अपनी नजात की फ़िक्र। सुब्हानल्लाह! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ईमान। इतनी नेकियाँ होने पर और आँह़ज़रत (ﷺ) की क़तई बशारत रखने पर कि तुम बहिश्ती हो अल्लाह का डर उनके दिल में इस क़दर था क्योंकि अल्लाह करीम की ज़ात बेपरवाह और मुस्तग़्नी है। जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के से आ़दिल और मुन्सिफ़ और ह़क़ परस्त और शरअ़ के ताबेअ़ रहने वाले और स़ह़ाबी और ख़लीफ़तुर्रसूल को अल्लाह का इतना डर हो तो अफ़सोस हमारे ह़ाल पर कि सर से पैर तक गुनाहों में गिरफ़्तार हैं तो हमको कितना डर होना चाहिये। (वह़ीदी)

3693. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा कि मुझसे उ़ष़्मान बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू उ़ष़्मान नह्दी ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं मदीना के एक बाग़ (बीरे अरीस) में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ था कि एक स़ाह़ब ने आकर दरवाज़ा खुलवाया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनके लिये दरवाज़ा खोल दो और उन्हें जन्नत की बशारत दे दो। मैंने दरवाज़ा खोला तो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) थे। मैंने उन्हें नबी करीम (ﷺ) के फ़र्मान के मुत़ाबिक़ जन्नत की बशारत सुनाई तो उन्होंने इस पर अल्लाह की ह़म्द की। फिर एक और स़ाह़ब आए और दरवाज़ा खुलवाया। हुज़ूर (ﷺ) ने इस मौक़े पर भी यही फ़र्माया कि दरवाज़ा उनके लिये खोल दो और उन्हें जन्नत की बशारत सुना दो, मैंने दरवाज़ा खोला तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) थे। उन्हें भी जब हुज़ूर (ﷺ) के इर्शाद की ख़बर सुनाई तो उन्होंने भी अल्लाह की ह़म्दो-ष़ना बयान की। फिर एक तीसरे और स़ाह़ब ने दरवाज़ा खुलवाया। उनके लिये भी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि दरवाज़ा खोल दो और उन्हें जन्नत की बशारत सुना दो, उन मस़ाइब और आज़माइशों के बाद जिनसे उन्हें (दुनिया में) वास्त़ा पड़ेगा। वो ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) थे। जब मैंने उनको हुज़ूर

٣٦٩٣- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ النَّهْدِيُّ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ((كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَائِطٍ مِنْ حِيْطَانِ الْمَدِينَةِ، فَجَاءَ رَجُلٌ فَاسْتَفْتَحَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((افْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) فَفَتَحْتُ لَهُ، فَإِذَا هُوَ أَبُو بَكْرٍ فَبَشَّرْتُهُ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَحَمِدَ اللهَ. ثُمَّ جَاءَ رَجُلٌ فَاسْتَفْتَحَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((افْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) فَفَتَحْتُ لَهُ فَإِذَا هُوَ عُمَرُ فَأَخْبَرْتُهُ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَحَمِدَ اللهَ. ثُمَّ اسْتَفْتَحَ رَجُلٌ،

(ﷺ) के इर्शाद की इत्तिला दी तो आपने अल्लाह की हम्दो-षना के बाद में फ़र्माया कि अल्लाह तआला ही मदद करने वाला है। (ये हदीष पहले भी गुज़र चुकी है)। (राजेअ : 3674)

فَقَالَ لِيْ: ((افْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ عَلَى بَلْوَى تُصِيْبُهُ)) فَإِذَا هُوَ عُثْمَانُ، فَأَخْبَرْتُهُ بِمَا قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَحَمِدَ اللهَ، ثُمَّ قَالَ: اللهُ الْمُسْتَعَانُ). [راجع: ٣٦٧٤]

3694. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे हयवह बिन शुरैह ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे अबू अक़ील ज़ुहरा बिन मअबद ने बयान किया और उन्होंने अपने दादा हज़रत अब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़ि.) से सुना था, उन्होंने बयान किया कि हम एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) के साथ थे। आप उस वक़्त हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का हाथ अपने हाथ में लिये हुए थे।
(दीगर मक़ाम : 6264, 6632)

٣٦٩٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي حَيْوَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو عَقِيْلٍ زُهْرَةُ بْنُ مَعْبَدٍ أَنَّهُ سَمِعَ جَدَّهُ عَبْدَ اللهِ بْنَ هِشَامٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ. [طرفاه في: ٦٢٦٤، ٦٦٣٢].

पूरी हदीष आगे बाबुल अयमान वन् नुज़ूर में मज़्कूर होगी। इससे आपकी बहुत इनायत और मुहब्बत उमर (रज़ि.) पर मा'लूम होती है।

बाब 7 : हज़रत अबू अम्र व उष्मान बिन अफ़्फ़ान अल् क़ुरशी उमवी (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٧- بَابُ مَنَاقِبِ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ أَبِي عَمْرٍو الْقُرَشِيِّ ﷺ

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जो शख़्स बीरे रूमा (एक कुँआ) को ख़रीद कर सबके लिये आम कर दे उसके लिये जन्नत है। तो हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने उसे ख़रीदकर आम कर दिया था और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जो शख़्स जेशे उसरह (ग़ज़्व-ए-तबूक के लश्कर) को सामान से लैस करे उसके लिये जन्नत है तो हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने ऐसा किया था।

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ يَحْفِر بِئْرَ رُوْمَةَ فَلَهُ الْجَنَّةُ)). فَحَفَرَهَا عُثْمَانُ وَقَالَ: ((مَنْ جَهَّزَ جَيْشَ الْعُسْرَةِ فَلَهُ الْجَنَّةُ)). فَجَهَّزَهُ عُثْمَانُ.

तशरीह : हज़रत उष्मान (रज़ि.) का नसबनामा ये है, उष्मान बिन अफ़्फ़ान बिन अबुल आस़ बिन उमय्या बिन अब्दे शम्स बिन अब्दे मुनाफ़, अब्दे मुनाफ़ में वो आँहज़रत (ﷺ) के नसब से मिल जाते हैं। कुछ ने कहा कि उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह थी। अब्दुल्लाह उनके साहबज़ादे हज़रत रुक़य्या से थे जो छः बरस की उमर में फ़ौत हो गये थे। हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया उष्मान को आसमान वाले ज़िन्नूरैन कहते हैं। सिवा उनके किसी के पास नबी की दो बेटियाँ जमा नहीं हुई, आँहज़रत (ﷺ) उनको बहुत चाहते थे। फ़र्माया अगर मेरे पास तीसरी बेटी होती तो उसको भी मैं तुझसे ब्याह देता। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाह)

जैशे उस्रह वाली हदीष को ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह) ने किताबुल मग़ाज़ी में वस्ल किया है। हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने जंगे तबूक के लिये एक हज़ार अशरफ़ियाँ लाकर आँहज़रत (ﷺ) की गोद में डाल दी थीं। आप उनको गिनते जाते और फ़र्माते अब उष्मान (रज़ि.) को कुछ नुक़्सान होने वाला नहीं वो कैसे ही अमल करे? उस जंग में उन्होंने 950 ऊँट और पचास घोड़े भी दिये थे। सद अफ़सोस कि ऐसे बुज़ुर्गतरीन सहाबी की शान में आह! कुछ लोग तन्क़ीस़ की मुहिम चला रहे हैं जो ख़ुद उनकी अपनी तन्क़ीस़ है।

चश्म-ए-आफ़ताब रा चे कनाह गर न बीनद बरोज शपर-ए-चश्म

3695. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू उ़ष्मान ने और उनसे हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक बाग़ (बीरे अरीस) के अंदर तशरीफ़ ले गये और मुझसे फ़र्माया कि मैं दरवाज़ा पर पहरा देता रहूँ। फिर एक स़ाहब आए और इजाज़त चाही। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और जन्नत की ख़ुशख़बरी भी सुना दो। वो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) थे। फिर दूसरे एक और स़ाहब आए और इजाज़त चाही। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें भी इजाज़त दे दो और जन्नत की ख़ुशख़बरी सुना दो। वो हज़रत उ़मर (रज़ि.) थे। फिर तीसरे एक और स़ाहब आए और इजाज़त चाही। हुज़ूर थोड़ी देर के लिये ख़ामोश हो गये फिर फ़र्माया कि उन्हें भी इजाज़त दे दो और (दुनिया में) एक आज़माइश से गुज़रने के बाद जन्नत की बशारत भी सुना दो। वो उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) थे। (राजेअ़ : 3674)

٣٦٩٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ حَائِطًا وَأَمَرَنِي بِحِفْظِ بَابِ الْحَائِطِ، فَجَاءَ رَجُلٌ يَسْتَأْذِنُ فَقَالَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ))، فَإِذَا أَبُوبَكْرٍ. ثُمَّ جَاءَ آخَرُ يَسْتَأْذِنُ فَقَالَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ))، فَإِذَا عُمَرُ. ثُمَّ جَاءَ آخَرُ يَسْتَأْذِنُ، فَسَكَتَ هُنَيْهَةً ثُمَّ قَالَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ عَلَى بَلْوَى سَتُصِيبُهُ))، فَإِذَا عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ)).

[راجع: ٣٦٧٤]

हम्माद बिन सलमा ने बयान किया, हमसे आ़स़िम अहवल और अ़ली बिन हकम ने बयान किया, उन्होंने अबू उ़ष्मान से सुना और वो अबू मूसा से इसी त़रह बयान करते थे। लेकिन आ़स़िम ने अपनी इस रिवायत में ये ज़्यादा किया है कि नबी करीम (ﷺ) उस वक़्त एक ऐसी जगह बैठे हुए थे जिसके अंदर पानी था और आप अपने दोनों घुटने या एक घुटना खोले हुए थे लेकिन जब उ़ष्मान (रज़ि.) दाख़िल हुए तो आपने अपने घुटने को छुपा लिया था।

قَالَ حَمَّادُ وَحَدَّثَنَا عَاصِمُ الأَحْوَلُ وَعَلِيُّ بْنُ الْحَكَمِ سَمِعَا أَبَا عُثْمَانَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي مُوسَى بِنَحْوِهِ، وَزَادَ فِيهِ عَاصِمٌ ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ قَاعِدًا فِي مَكَانٍ فِيهِ مَاءٌ قَدْ انْكَشَفَ عَنْ رُكْبَتَيْهِ - أَوْ رُكْبَتِهِ - فَلَمَّا دَخَلَ عُثْمَانُ غَطَّاهَا)).

इस रिवायत को त़बरानी ने निकाला, लेकिन हम्माद बिन ज़ैद से न कि हम्माद बिन सलमा से। अल्बत्ता हम्माद बिन सलाम ने स़िर्फ़ अ़ली बिन हकम से रिवायत की है। उसको इब्ने अबी ख़ुष़ैमा ने तारीख़ में निकाला। आपने हज़रत उ़ष्मान की शर्म व ह़या का ख़्याल करके घुटना ढाँक लिया था। अगर वो सतर होता तो हज़रत अबूबक्र व उ़मर (रज़ि.) के सामने भी खुला न रखते।

3696. हमसे अहमद बिन शबीब बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने कि इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी बिन ख़यार ने ख़बर दी कि मिस्वर बिन मख़रमा और अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूष़ (रज़ि.) ने उनसे कहा कि तुम हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) से उनके भाई वलीद

٣٦٩٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ شَبِيبِ بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَدِيِّ بْنِ الْخِيَارِ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ

के मुक़द्दमा में (जिसे हज़रत उ़स्मान रज़ि. ने कूफ़ा का गवर्नर बनाया था) क्यूँ बातचीत नहीं करते, लोग उससे बहुत नाराज़ हैं। चुनाँचे मैं हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के पास गया और जब वो नमाज़ के लिये बाहर तशरीफ़ लाए तो मैंने अ़र्ज़ किया कि मुझे आपसे एक ज़रूरत है और वो है आपके साथ एक ख़ैर-ख़्वाही! इस पर उ़स्मान (रज़ि.) ने फ़र्माया, भले आदमी तुमसे (मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ) इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा। मैं समझता हूँ कि मअ़मर ने यूँ रिवायत किया, मैं तुमसे अल्लाह की पनाह चाहता हूँ। मैं वापस उन लोगों के पास आ गया। इतने में हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) का क़ासिद मुझको बुलाने के लिये आया, मैं जब उसके साथ हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने दरयाफ़्त किया कि तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही क्या थी? मैंने अ़र्ज़ किया, अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ने मुहम्मद (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा और उन पर किताब नाज़िल की आप भी उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की दा'वत को क़ुबूल किया था। आपने दो हिजरतें कीं, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की सुह्बत उठाई और आपके त़रीक़े और सुन्नत को देखा, लेकिन बात ये है कि लोग वलीद की बहुत शिकायतें कर रहे हैं। हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) ने इस पर पूछा, तुमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कुछ सुना है? मैंने अ़र्ज़ किया कि नहीं, लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) की अह़ादीष़ एक कुँवारी लड़की तक को उसके तमाम पर्दों के बावजूद जब पहुँच चुकी हैं तो मुझे क्यूँ न मा'लूम होतीं। इस पर हज़रत उ़स्मान ने फ़र्माया, अम्मा बअ़द! बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद (ﷺ) को हक़ के साथ भेजा और मैं अल्लाह और उसके रसूल की दा'वत को क़ुबूल करने वालों में ही था। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) जिस दा'वत को लेकर भेजे गये थे मैं उस पर पूरे त़ौर से ईमान लाया और जैसा कि तुमने कहा दो हिजरतें भी कीं, मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की सुह्बत में भी रहा हुआ हूँ और आपसे बेअ़त भी की है। पस अल्लाह की क़सम! मैंने कभी आप (ﷺ) के हुक्म से सरताबी नहीं की और न आप (ﷺ) के साथ कभी कोई धोखा किया, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने आपको वफ़ात दी। उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) के साथ भी मेरा यही मामला रहा। और हज़रत उ़मर (रज़ि.) के साथ भी यही मामला रहा। तो क्या जबकि मुझे उनका जानशीन बना दिया गया है तो मुझे वो हुक़ूक़ हासिल नहीं होंगे जो उन्हें थे? मैंने

الأسود بن عبد يغوث قالا: ما يمنعك
أن تكلم عثمان لأخيه الوليد فقد أكثر
الناس فيه؟ فقصدت لعثمان حين خرج
إلى الصلاة، قلت: إن لي إليك حاجة،
وهي نصيحة لك. قال: يا أيها المرء
منك - قال معمر: أراه قال: أعوذ
بالله منك - فانصرفت فرجعت إليهما،
إذ جاء رسول عثمان، فأتيته، فقال: ما
نصيحتك؟ فقلت: إن الله سبحانه بعث
محمدا صلى الله عليه وسلم بالحق،
وأنزل عليه الكتاب، وكنت ممن
استجاب لله ولرسوله صلى الله عليه
وسلم، فهاجرت الهجرتين، وصحبت
رسول الله صلى الله عليه وسلم ورأيت
هديه، وقد أكثر الناس في شأن الوليد.
قال: أدركت رسول الله صلى الله
عليه وسلم؟ قلت: لا، ولكن خلص
إلي من علمه ما يخلص إلى العذراء في
سترها. قال: أما بعد فإن الله بعث
محمدا صلى الله عليه وسلم بالحق،
فكنت ممن استجاب لله ولرسوله
صلى الله عليه وسلم، وآمنت بما بعث
به وهاجرت الهجرتين - كما قلت -
وصحبت رسول الله صلى الله عليه
وسلم وبايعته، فوالله ما عصيته ولا
غششته حتى توفاه الله، ثم أبو بكر
مثله، ثم عمر مثله، ثم استخلفت،

أَفَلَيْسَ لِي مِنَ الْحَقِّ مِثْلُ الَّذِي لَهُمْ ؟ قُلْتُ : بَلَى. قَالَ : فَمَا هَذِهِ الأَحَادِيْثُ الَّتِي تَبْلُغُنِي عَنْكُمْ؟ أَمَّا مَا ذَكَرْتَ مِنْ شَأْنِ الْوَلِيْدِ فَسَنَأْخُذُ فِيْهِ بِالْحَقِّ إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى. ثُمَّ دَعَا عَلِيًّا فَأَمَرَهُ أَنْ يَجْلِدَهُ، فَجَلَدَهُ ثَمَانِيْنَ)).

[طرفه في : ٣٨٧٢].

अ़र्ज़ किया कि क्यूँ नहीं, आपने फ़र्माया कि फिर उन बातों के लिये क्या जवाज़ रह जाता है जो तुम लोगों की तरफ़ से मुझे पहुँचती रहती हैं लेकिन तुमने जो वलीद के हालात का ज़िक्र किया है, इंशाअल्लाह हम उसकी सज़ा जो वाजिबी है उसको देंगे। फिर हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) ने हज़रत अ़ली (रज़ि.) को बुलाया और उनसे फ़र्माया कि वलीद को हद लगाएँ। चुनाँचे उन्होंने वलीद को अस्सी कोड़े हद के लगाए। (दीगर मक़ाम : 3872)

तश्रीह : वलीद हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) का रज़ाई भाई था। हुआ ये था कि सअ़द बिन अबी वक़्क़ास को जो अ़शर–ए–मुबश्शरह में थे हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) ने कूफ़ा का हाकिम मुक़र्रर किया था। उनमें और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) में कुछ तकरार हुई तो हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) ने वलीद को वहाँ का हाकिम मुक़र्रर कर दिया और सअ़द (रज़ि.) को मअ़ज़ूल कर दिया। वलीद ने बड़ी बे ए'अतिदालियाँ शुरू कीं। शराबख़ोरी, ज़ुल्म–ज़्यादती की। लोग हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) से नाराज़ हुए कि सअ़द जैसे जलीलुल क़द्र सहाबी को मअ़ज़ूल करके हाकिम किसको बनाया? वलीद को, जिसकी फ़ज़ीलत कुछ भी न थी और उसका बाप उ़क़्बा बिन अबी मुईत मल्ऊ़न था जिसने आँहज़रत (ﷺ) का गला घोंटा था। आप पर नमाज़ में ओझड़ी डाली थी। ख़ैर अगर वलीद कोई बुरा काम न करता तो बाप के आमाल से बेटे को ग़र्ज़ न थी मगर वमौजिब **अल्वलदु सिर्रून लिअबीहि** वलीद ने भी हाथ–पाँव पेट से निकाले। (वहीदी)

٣٦٩٧– حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ: حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ قَتَادَةَ: أَنَّ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُمْ قَالَ: صَعِدَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُحُدًا وَمَعَهُ أَبُوبَكْرٍ وَ عُمَرُ وَ عُثْمَانُ فَرَجَفَ فَقَالَ: ((اسْكُنْ أُحُدُ – أَظُنُّهُ ضَرَبَهُ بِرِجْلِهِ – فَلَيْسَ عَلَيْكَ إِلاَّ نَبِيٌّ وَصِدِّيْقٌ وَ شَهِيْدَانِ)). [راجع: ٣٦٧٥]

3697. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सईद ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब उहुद पहाड़ पर चढ़े और आपके साथ अबूबक्र, उ़मर और उ़स्मान (रज़ि.) भी थे तो पहाड़ कांपने लगा। आपने उस पर फ़र्माया उहुद ठहर जा। मेरा ख़्याल है कि हुज़ूर ने उसे अपने पाँव से मारा भी था कि तुझ पर नबी, एक सिद्दीक़ और दो शुहदा ही तो हैं।

(राजेअ : 3675)

٣٦٩٨– حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ بَزِيْعٍ حَدَّثَنَا شَاذَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ الْمَاجِشُوْنُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنَّا فِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ لاَ نَعْدِلُ بِأَبِي بَكْرٍ أَحَدًا، ثُمَّ عُمَرَ ثُمَّ عُثْمَانَ، ثُمَّ نَتْرُكُ

3698. मुझसे मुहम्मद बिन हातिम बिन बज़ीअ़ ने बयान किया, कहा हमसे शाज़ान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी सलमा माजिशून ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के अ़हद में हम हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के बराबर किसी को नहीं क़रार देते थे। फिर हज़रत उ़मर (रज़ि.) को फिर हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) को। उसके बाद हुज़ूरे

أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ لاَ نُفَاضِلُ بَيْنَهُمْ)).
تَابَعَهُ عَبْدُ اللهِ الصَّالِحِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ.
[راجع: ٣١٣٠، ٣٦٥٥]

अकरम (ﷺ) के सहाबा पर हम कोई बहष नहीं करते थे और किसी को एक–दूसरे पर फ़ज़ीलत नहीं देते थे। इस ह़दीष़ को अ़ब्दुल्लाह बिन स़ालेह ने भी अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ से रिवायत किया है। इसको इस्माईली ने वस्ल किया है। (राजेअ़ : 3130, 3655)

٣٦٩٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ هُوَ ابْنُ مَوْهَبٍ قَالَ: ((جَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ مِصْرَ وَحَجَّ الْبَيْتَ، فَرَأَى قَوْمًا جُلُوسًا فَقَالَ: مَنْ هَؤُلاَءِ الْقَوْمُ؟ قَالَ: هَؤُلاَءِ قُرَيْشٌ. قَالَ: فَمَنِ الشَّيْخُ فِيهِمْ؟ قَالُوا: عَبْدُ اللهِ بْنِ عُمَرَ. قَالَ: يَا ابْنَ عُمَرَ إِنِّي سَائِلُكَ عَنْ شَيْءٍ فَحَدِّثْنِي عَنْهُ: هَلْ تَعْلَمُ أَنَّ عُثْمَانَ فَرَّ يَوْمَ أُحُدٍ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَقَالَ: تَعْلَمُ أَنَّهُ تَغَيَّبَ عَنْ بَدْرٍ وَلَمْ يَشْهَدْ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ تَعْلَمُ أَنَّهُ تَغَيَّبَ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَلَمْ يَشْهَدْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: اللهُ أَكْبَرُ. قَالَ ابْنُ عُمَرَ: تَعَالَ أُبَيِّنْ لَكَ. أَمَّا فِرَارُهُ يَوْمَ أُحُدٍ فَأَشْهَدُ أَنَّ اللهَ عَفَا عَنْهُ وَغَفَرَ لَهُ. وَأَمَّا تَغَيُّبُهُ عَنْ بَدْرٍ فَإِنَّهُ كَانَ تَحْتَهُ بِنْتُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَتْ مَرِيضَةً، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّ لَكَ أَجْرَ رَجُلٍ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا وَسَهْمَهُ)). وَأَمَّا تَغَيُّبُهُ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَلَوْ كَانَ أَحَدٌ أَعَزَّ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ عُثْمَانَ لَبَعَثَهُ مَكَانَهُ، فَبَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُثْمَانَ، وَكَانَتْ بَيْعَةُ الرِّضْوَانِ بَعْدَ مَا ذَهَبَ عُثْمَانُ إِلَى مَكَّةَ، فَقَالَ رَسُولُ

3699. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने, कहा हमसे उ़ष्मान बिन मौहब ने बयान किया कि मिस्र वालों में से एक नाम नामा'लूम आदमी आया और ह़ज्जे बैतुल्लाह किया, फिर कुछ लोगों को बैठे हुए देखा तो उसने पूछा कि ये कौन लोग हैं? किसी ने कहा कि ये क़ुरैशी हैं। उसने पूछा कि उनमें बुज़ुर्ग कौन स़ाहब हैं? लोगों ने बताया कि ये अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर हैं। उसने पूछा, ऐ इब्ने उ़मर! मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ। उम्मीद है कि आप मुझे बताएँगे। क्या आपको मा'लूम है कि उ़ष्मान (रज़ि.) ने उहुद की लड़ाई से राहे फ़रार इख़्तियार की थी? इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि हाँ ऐसा हुआ था। फिर उन्होंने पूछा, क्या आपको मा'लूम है कि वो बद्र की लड़ाई में शरीक नहीं हुए थे? जवाब दिया कि हाँ ऐसा हुआ था। उसने पूछा क्या आपको मा'लूम है कि वो बेअ़ते रिज़्वान में भी शरीक नहीं थे। जवाब दिया कि हाँ ये भी स़हीह़ है। ये सुनकर उसकी ज़ुबान से निकला अल्लाह अकबर! तो इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि क़रीब आ जाओ, अब मैं तुम्हें इन वाक़ियात की तफ़्सील समझाऊँगा। उहुद की लड़ाई से फ़रार के बारे में गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मुआ़फ़ कर दिया है। बद्र की लड़ाई में शरीक न होने की वजह ये है कि उनके निकाह़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) की स़ाहबज़ादी थीं और उस वक़्त वो बीमार थीं और ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तुम्हें (मरीज़ा के पास ठहरने का) उतना ही अज्रो–ष़वाब मिलेगा जितना उस शख़्स़ को जो बद्र की लड़ाई में शरीक होगा और उसी के मुत़ाबिक़ माले ग़नीमत से हिस्सा भी मिलेगा और बेअ़ते रिज़्वान में शरीक न होने की वजह ये है कि उस मौक़े पर वादी-ए-मक्का में कोई भी शख़्स़ (मुसलमानों में से) उ़ष्मान (रज़ि.) से ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाला और बा अष़र होता तो ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसी को उनकी जगह वहाँ भेजते। यही वजह हुई थी कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें (क़ुरैश से बातें करने के लिये) मक्का भेज दिया था और जब बेअ़ते रिज़्वान हो रही थी तो उ़ष्मान

(रज़ि.) मक्का जा चुके थे, उस मौक़े पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अपने दाहिने हाथ को उठाकर फ़र्माया था कि ये उ़स्मान का हाथ है और फिर उसे अपने दूसरे हाथ पर हाथ रखकर फ़र्माया था कि ये बेअ़त उ़स्मान की तरफ़ से है। उसके बाद इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने सवाल करने वाले शख़्स से फ़र्माया कि जा, इन बातों को हमेशा याद रखना।

اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ الْيُمْنَى: ((هَذِهِ يَدُ عُثْمَانَ)). فَضَرَبَ بِهَا عَلَى يَدِهِ فَقَالَ: ((هَذِهِ لِعُثْمَانَ)). فَقَالَ لَهُ ابْنُ عُمَرَ: اذْهَبْ بِهَا الآنَ مَعَكَ.

हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सईद ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब उहुद पहाड़ पर चढ़े और आपके साथ अबूबक्र, उ़मर और उ़स्मान (रज़ि.) भी थे तो पहाड़ कांपने लगा। आपने उस पर फ़र्माया उहुद ठहर जा। मेरा ख़्याल है कि हुज़ूर ने उसे अपने पाँव से मारा भी था कि तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद ही तो हैं।

حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُمْ قَالَ: صَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ أُحُدًا وَمَعَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ، فَرَجَفَ، فَقَالَ: ((اسْكُنْ أُحُدُ - أَظُنُّهُ ضَرَبَهُ بِرِجْلِهِ - فَلَيْسَ عَلَيْكَ إِلاَّ نَبِيٌّ وَصِدِّيقٌ وَشَهِيدَانِ)).

बाब 8 : ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) से बेअ़त का क़िस्सा और आपकी ख़िलाफ़त पर सहाबा का इत्तिफ़ाक़ करना और इस बाब में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की शहादत का बयान.

٨- بَابُ قِصَّةِ الْبَيْعَةِ، وَالاتِّفَاقِ عَلَى عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ

وَفِيهِ مَقْتَلُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

3700. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे हुसैन ने, उनसे अ़म्र बिन मैमून ने बयान किया, कि मैंने ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को ज़ख़्मी होने से चन्द दिन पहले मदीना में देखा कि वो हुज़ैफ़ा बिन यमान और उ़स्मान बिन ह़नीफ़ (रज़ि.) के साथ खड़े थे और उनसे ये फ़र्मा रहे थे कि (इराक़ की अराज़ी के लिये, जिसका इंतिज़ाम ख़िलाफ़त की जानिब से उनके सुपुर्द किया गया था) तुम लोगों ने क्या किया है? क्या तुम लोगों को ये अंदेशा तो नहीं है कि तुमने ज़मीन का इतना मह़सूल (लगान) लगा दिया है जिसकी गुंजाइश न हो। उन लोगों ने जवाब दिया कि हमने उन पर ख़िराज का उतना ही भार डाला है जिसे अदा करने की ज़मीन में ताक़त है, उसमें कोई ज़्यादती नहीं की गई है। उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि देखो फिर समझ लो कि तुमने ऐसी जमा तो नहीं लगाई है जो ज़मीन की ताक़त से बाहर हो।

٣٧٠٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ قَالَ: ((رَأَيْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَبْلَ أَنْ يُصَابَ بِأَيَّامٍ بِالْمَدِينَةِ وَقَفَ عَلَى حُذَيْفَةَ بْنَ الْيَمَانِ وَعُثْمَانَ بْنِ حُنَيْفٍ قَالَ: كَيْفَ فَعَلْتُمَا؟ أَتَخَافَانِ أَنْ تَكُونَا قَدْ حَمَّلْتُمَا الأَرْضَ مَا لاَ تُطِيقُ؟ قَالاَ : حَمَّلْنَاهَا أَمْرًا هِيَ لَهُ مُطِيقَةٌ، مَا فِيهَا كَبِيرُ فَضْلٍ. قَالَ: انْظُرَا أَنْ تَكُونَا حَمَّلْتُمَا الأَرْضَ مَا لاَ تُطِيقُ. قَالَ: قَالاَ: لاَ. فَقَالَ عُمَرُ: لَئِنْ

रावी ने बयान किया कि उन दोनों ने कहा कि ऐसा नहीं होने पाएगा। उसके बाद उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अगर अल्लाह तआला ने मुझे ज़िन्दा रखा तो मैं इराक़ की बेवा औरतों के लिये इतना कर दूँगा कि फिर मेरे बाद किसी की मुहताज नहीं रहेंगी। रावी अम्र बिन मैमून ने बयान किया कि अभी इस बातचीत पर चौथा दिन ही आया था कि उमर (रज़ि.) ज़ख़्मी कर दिये गये। अम्र बिन मैमून ने बयान किया कि जिस सुबह को आप ज़ख़्मी किये गये, मैं (फ़ज्र की नमाज़ के इंतिज़ार में) सफ़ के अंदर खड़ा था और मेरे और उनके दरम्यान अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के सिवा और कोई नहीं था हज़रत उमर की आदत थी कि जब सफ़ से गुज़रते तो फ़र्माते जाते कि सफ़ें सीधी कर लो और जब देखते कि सफ़ों में कोई ख़लल नहीं रह गया है तब आगे (मुसल्ले पर) बढ़ते और तक्बीर कहते। आप (फ़ज्र की नमाज़ की) पहली रकअत में अमूमन सूरह यूसुफ़ या सूरह नह्ल या इतनी ही लम्बी कोई सूरत पढ़ते यहाँ तक कि लोग जमा हो जाते। उस दिन अभी आपने तक्बीर ही कही थी कि मैंने सुना, आप फ़र्मा रहे हैं कि मुझे क़त्ल कर दिया या कुत्ते ने काट लिया। अबू लू लू ने आपको ज़ख़्मी कर दिया था। उसके बाद वो बदबख़्त अपना दो धारीदार ख़ंजर लिये दौड़ने लगा और दाएँ और बाएँ जिधर भी फिरता तो लोगों को ज़ख़्मी करता जाता। इस तरह उसने तेरह आदमियों को ज़ख़्मी कर दिया, जिनमें सात हज़रात ने शहादत पाई। मुसलमानों में से एक साहब (हत्तान नामी) ने ये सूरतहाल देखी तो उन्होंने उस पर अपनी चादर डाल दी। उस बदबख़्त को जब यक़ीन हो गया कि अब पकड़ लिया जाएगा तो उसने ख़ुद अपना भी गला काट लिया। फिर उमर (रज़ि.) ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) का हाथ पकड़कर उन्हें आगे बढ़ा दिया (अम्र बिन मैमून ने बयान किया कि) जो लोग उमर (रज़ि.) के क़रीब थे, उन्होंने भी वो सूरतहाल देखी जो मैं देख रहा था लेकिन जो लोग मस्जिद के किनारे पर थे (पीछे की सफ़ों में) तो उन्हें कुछ मा'लूम नहीं हो सका। अल्बत्ता चूँकि उमर (रज़ि.) की क़िरात (नमाज़ में) उन्होंने नहीं सुनी तो सुब्हानल्लाह! सुब्हानल्लाह! कहते रहे। आख़िर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने लोगों को बहुत हल्की नमाज़ पढ़ाई। फिर जब लोग वापस होने लगे तो उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, इब्ने अब्बास (रज़ि.)! देखो मुझे किसने ज़ख़्मी किया

سَلَّمَنِي اللَّهُ لأَدَعَنَّ أَرَامِلَ أَهْلِ الْعِرَاقِ لاَ يَحْتَجْنَ إِلَى رَجُلٍ بَعْدِي أَبَدًا. قَالَ: فَمَا أَتَتْ عَلَيْهِ إِلاَّ أَرْبَعَةٌ حَتَّى أُصِيبَ. قَالَ: إِنِّي لَقَائِمٌ مَا بَيْنِي وَبَيْنَهُ إِلاَّ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ غَدَاةَ أُصِيبَ - وَكَانَ إِذَا مَرَّ بَيْنَ الصَّفَّيْنِ قَالَ: اسْتَوُوا، حَتَّى إِذَا لَمْ يَرَ فِيهِمْ خَلَلاً تَقَدَّمَ فَكَبَّرَ، وَرُبَّمَا قَرَأَ سُورَةَ يُوسُفَ أَوِ النَّحْلَ أَوْ نَحْوَ ذَلِكَ فِي الرَّكْعَةِ الأُولَى حَتَّى يَجْتَمِعَ النَّاسُ فَمَا هُوَ إِلاَّ أَنْ كَبَّرَ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: قَتَلَنِي - أَوْ أَكَلَنِي - الْكَلْبُ، حِينَ طَعَنَهُ، فَطَارَ الْعِلْجُ بِسِكِّينٍ ذَاتِ طَرَفَيْنِ، لاَ يَمُرُّ عَلَى أَحَدٍ يَمِينًا وَلاَ شِمَالاً إِلاَّ طَعَنَهُ، حَتَّى طَعَنَ ثَلاَثَةَ عَشَرَ رَجُلاً مَاتَ مِنْهُمْ سَبْعَةٌ. فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ طَرَحَ عَلَيْهِ بُرْنُسًا، فَلَمَّا ظَنَّ الْعِلْجُ أَنَّهُ مَأْخُوذٌ نَحَرَ نَفْسَهُ. وَتَنَاوَلَ عُمَرُ يَدَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ فَقَدَّمَهُ، فَمَنْ يَلِي عُمَرَ فَقَدْ رَأَى الَّذِي أَرَى، وَأَمَّا نَوَاحِي الْمَسْجِدِ فَإِنَّهُمْ لاَ يَدْرُونَ غَيْرَ أَنَّهُمْ قَدْ فَقَدُوا صَوْتَ عُمَرَ وَهُمْ يَقُولُونَ: سُبْحَانَ اللَّهِ. فَصَلَّى بِهِمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ صَلاَةً خَفِيفَةً، فَلَمَّا انْصَرَفُوا قَالَ: يَا ابْنَ عَبَّاسٍ، انْظُرْ مَنْ قَتَلَنِي. فَجَالَ سَاعَةً، ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: غُلاَمُ الْمُغِيرَةِ. قَالَ: الصَّنَعُ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَاتَلَهُ اللَّهُ، لَقَدْ أَمَرْتُ بِهِ مَعْرُوفًا، الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَجْعَلْ

يقتلني بيد رجل يدعي الإسلام، قد كنت أنت وأبوك تحبان أن تكثر العلوج بالمدينة، وكان العباس أكثرهم رقيقا. فقال: إن شئت فعلت - أي إن شئت قتلنا. قال: كذبت، بعد ما تكلموا بلسانكم، وصلوا قبلتكم، وحجوا حجكم؟ فاحتمل إلى بيته، فانطلقنا معه، وكان الناس لم تصبهم مصيبة قبل يومئذ: فقائل يقول: لا بأس، وقائل يقول: أخاف عليه. فأتي بنبيذ فشربه، فخرج من جوفه. ثم أتي بلبن فشربه، فخرج من جرحه، فعلموا أنه ميت، فدخلنا عليه، وجاء الناس يثنون عليه. وجاء رجل شاب فقال: أبشر يا أمير المؤمنين ببشرى الله لك، من صحبة رسول الله صلى الله عليه وسلم، وقدم في الإسلام ما قد علمت، ثم وليت فعدلت، ثم شهادة. قال: وددت أن ذلك كفاف لا علي ولا لي. فلما أدبر إذا إزاره يمس الأرض، قال: ردوا علي الغلام. قال: ابن أخي، ارفع ثوبك، فإنه أبقى لثوبك وأتقى لربك. يا عبد الله بن عمر انظر ماذا علي من الدين. فحسبوه فوجدوه ستة وثمانين ألفا أو نحوه. قال: إن وفى له مال آل عمر فأده من أموالهم، وإلا فسل في بني عدي بن كعب، فإن لم تف أموالهم فسل في

है? इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने थोड़ी देर घूम--फिरकर देखा और आकर फ़र्माया कि मुग़ीरह (रज़ि.) के ग़ुलाम (अबू लल) ने आपको ज़ख़्मी किया है। उ़मर (रज़ि.) ने दरयाफ़्त किया, वही जो कारीगर है? जवाब दिया कि जी हाँ। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, अल्लाह उसे बर्बाद करे मैंने तो उसे अच्छी बात कही थी (जिसका उसने ये बदला दिया) अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसने मेरी मौत किसी ऐसे शख़्स के हाथों नहीं मुक़द्दर की जो इस्लाम का मुद्दई हो। तुम और तुम्हारे वालिद (अ़ब्बास रज़ि.) उसके बहुत ही ख़्वाहिशमन्द थे कि अ़जमी ग़ुलाम मदीना में ज़्यादा से ज़्यादा लाए जाएँ। यूँ भी उनकेपास ग़ुलाम बहुत थे। इस पर इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, अगर आप फ़र्माएं तो हम भी कर गुज़रें, मक़्सद ये था कि अगर आप चाहें तो हम (मदीना में मुक़ीम अ़जमी ग़ुलामों को) क़त्ल कर डालें। उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, ये इंतिहाई ग़लत़ फ़िक्र है। ख़ुसूसन जबकि तुम्हारी ज़ुबान में वो बातचीत करते हैं, तुम्हारे क़िब्ला की त़रफ़ रुख़ करके नमाज़ अदा करते हैं और तुम्हारी त़रह ह़ज्ज करते हैं। फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को उनके घर उठाकर लाया गया और हम आपके साथ साथ आए। ऐसा मा'लूम होता था जैसे लोगों पर कभी इससे पहले इतनी बड़ी मुसीबत आई ही नहीं थी। कुछ तो ये कहते थे कि कुछ नहीं होगा (अच्छे हो जाएँगे) और कुछ कहते थे कि आपकी जिन्दगी ख़त़र में है। उसके बाद खजूर का पानी लाया गया और आपने उसे पिया तो वो आपके पेट से बाहर निकल आया। फिर दूध लाया गया, उसे भी ज्यों ही आपने पिया ज़ख़्म के रास्ते वो भी बाहर निकल आया। अब लोगों को यक़ीन हो गया कि आपकी शहादत यक़ीनी है। फिर हम अंदर आ गये और लोग आपकी ता'रीफ़ बयान करने लगे। इतने में एक नौजवान अंदर आया और कहने लगा या अमीरल मोमिनीन! आपको ख़ुशख़बरी हो अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत उठाई। इब्तिदा में इस्लाम लाने का शर्फ़ ह़ासिल किया जो आपको मा'लूम है। फिर आप ख़लीफ़ा बनाए गए और आपने पूरे इंसाफ़ के साथ हुकूमत की फिर शहादत पाई। उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैं तो इस पर भी ख़ुश था कि इन बातों की वजह से बराबर पर मेरा मामला ख़त्म हो जाता, न सवाब होता और न अ़ज़ाब। जब वो नौजवान जाने लगा तो उसका तहबन्द (इज़ार) लटक रहा था। उ़मर (रज़ि.)

ने फ़र्माया उस लड़के को मेरे पास वापस बुला लाओ (जब वो आए तो) फ़र्माया, मेरे भतीजे! ये अपना कपड़ा ऊपर उठाये रखो कि उससे तुम्हारा कपड़ा भी ज़्यादा दिना चलेगा और तुम्हारे रब से तक़्वा का भी बाइ़ष है। ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर! देखो मुझ पर कितना क़र्ज़ है? जब लोगों ने आप पर क़र्ज़ का शुमार किया तो तक़रीबन छियासी हज़ार निकला। उ़मर (रज़ि.) ने उस पर फ़र्माया कि अगर ये क़र्ज़ आले उ़मर (रज़ि.) के माल से अदा हो सके तो उन्हीं के माल से इसको अदा करना, वरना फिर बनी अ़दी बिन कअ़ब से कहना, अगर उनके माल के बाद भी अदायगी न हो सके तो क़ुरैश से कहना, उनके सिवा किसी से इमदाद न त़लब करना और मेरी त़रफ़ से इस क़र्ज़ को अदा कर देना। अच्छा अब उम्मुल मोमिनीन आ़इशा (रज़ि.) के यहाँ जाओ और उनस अ़र्ज़ करो कि उ़मर (रज़ि.) ने आपकी ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ किया है। अमीरुल मोमिनीन (मेरे नाम के साथ) न कहना क्योंकि अब मैं मुसलमानों का अमीर नहीं रहा हूँ। तो उनसे अ़र्ज करना कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने अपने दोनों साथिया के साथ दफ़न होने की इजाज़त चाही है। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने (आ़इशा रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर) सलाम किया और इजाज़त लेकर अंदर दाख़िल हुए, देखा कि आप बैठी रो रही हैं, फिर कहा कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने आपको सलाम कहा है और अपने दोनों साथियों के साथ दफ़न होने की इजाज़त चाही है। आ़इशा (रज़ि.) ने कहा, मैंने उस जगह को अपने लिये मुंतख़ब कर रखा था लेकिन आज मैं उन्हें अपने पर तरजीह दूँगी। फिर जब इब्ने उ़मर (रज़ि.) वापस आए तो लोगो ने बताया कि अ़ब्दुल्लाह आ गए तो उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुझे उठाओ। एक स़ाहब ने सहारा देकर आपको उठाया। आपने दरयाफ़्त किया! क्या ख़बर लाए? कहा कि जो आपकी तमन्ना थी या अमीरल मोमिनीन! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया अल्हम्दुलिल्लाह, इससे अहम चीज़ अब मेरे लिये कोई नहीं रह गई थी। लेकिन जब मेरी वफ़ात हो चुके और मुझे उठाकर (दफ़न के लिये) ले चलो तो फिर मेरा सलाम उनसे कहना और अ़र्ज़ करना कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने आपसे इजाज़त चाही है। अगर वो मेरे लिये इजाज़त दे दें तब तो वहाँ दफ़न करना और अगर इजाज़त न दें तो मुसलमानों के

قُرَيْشٍ وَلاَ تَعْدُهُمْ إِلَى غَيْرِهِمْ، فَأَدِّ عَنِّي هَذَا الْمَالَ. انْطَلِقْ إِلَى عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ فَقُلْ: يَقْرَأُ عَلَيْكِ عُمَرُ السَّلاَمَ – وَلاَ تَقُلْ أَمِيرُ الْمُؤْمِنِينَ، فَإِنِّي لَسْتُ الْيَوْمَ لِلْمُؤْمِنِينَ أَمِيرًا – وَقُلْ: يَسْتَأْذِنُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ أَنْ يُدْفَنَ مَعَ صَاحِبَيْهِ. فَسَلَّمَ وَاسْتَأْذَنَ، ثُمَّ دَخَلَ عَلَيْهَا فَوَجَدَهَا قَاعِدَةً تَبْكِي فَقَالَ: يَقْرَأُ عَلَيْكِ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ السَّلاَمَ وَيَسْتَأْذِنُ أَنْ يُدْفَنَ مَعَ صَاحِبَيْهِ. فَقَالَتْ: كُنْتُ أُرِيدُهُ لِنَفْسِي، وَلأُوثِرَنَّهُ بِهِ الْيَوْمَ عَلَى نَفْسِي. فَلَمَّا أَقْبَلَ قِيلَ: هَذَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ قَدْ جَاءَ. قَالَ: ارْفَعُونِي. فَأَسْنَدَهُ رَجُلٌ إِلَيْهِ فَقَالَ: مَا لَدَيْكَ؟ قَالَ: الَّذِي تُحِبُّ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَذِنَتْ. قَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ، مَا كَانَ مِنْ شَيْءٍ أَهَمَّ إِلَيَّ مِنْ ذَلِكَ، فَإِذَا أَنَا قَضَيْتُ فَاحْمِلُونِي، ثُمَّ سَلِّمْ فَقُلْ: يَسْتَأْذِنُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ. فَإِنْ أَذِنَتْ لِي فَأَدْخِلُونِي، وَإِنْ رَدَّتْنِي رُدُّونِي إِلَى مَقَابِرِ الْمُسْلِمِينَ. وَجَاءَتْ أُمُّ الْمُؤْمِنِينَ حَفْصَةُ وَالنِّسَاءُ تَسِيرُ مَعَهَا، فَلَمَّا رَأَيْنَاهَا قُمْنَا، فَوَلَجَتْ عَلَيْهِ فَبَكَتْ عِنْدَهُ سَاعَةً، وَاسْتَأْذَنَ الرِّجَالُ، فَوَلَجَتْ دَاخِلاً لَهُمْ، فَسَمِعْنَا بُكَاءَهَا مِنَ الدَّاخِلِ. فَقَالُوا: أَوْصِ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، اسْتَخْلِفْ. قَالَ: مَا أَجِدُ أَحَقَّ بِهَذَا الأَمْرِ مِنْ هَؤُلاَءِ النَّفَرِ – أَوِ الرَّهْطِ

क़ब्रिस्तान में दफ़न करना। उसके बाद उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा (रज़ि.) आईं, उनके साथ कुछ दूसरी ख़वातीन भी थीं। जब हमने उन्हें देखा तो उठ गये। आप उमर (रज़ि.) के क़रीब आईं और वहाँ थोड़ी देर तक आंसू बहाती रहीं। फिर जब मर्दों ने अंदर आने की इजाज़त चाही तो वो मकान के अंदरूनी हिस्से में चली गईं और हमने उनके रोने की आवाज़ सुनी फिर लोगों ने अर्ज़ किया अमीरुल मोमिनीन! ख़िलाफ़त के लिये कोई वसिय्यत कर दीजिए। फ़र्माया कि ख़िलाफ़त का मैं उन हज़रात से ज़्यादा और किसी को मुस्तहिक़ नहीं पाता कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी वफ़ात तक जिनसे राज़ी और ख़ुश थे फिर आपने अली, उ़स्मान, ज़ुबैर, तलहा, सअ़द और अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ का नाम लिया और ये भी फ़र्माया कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर को भी सिर्फ़ मश्वर की हद तक शरीक रखना लेकिन ख़िलाफ़त से उन्हें कोई सरोकार नहीं रहेगा, जैसे आपने इब्ने उ़मर (रज़ि.) की तस्कीन के लिये ये फ़र्माया हो। फिर अगर ख़िलाफ़त सअ़द को मिल जाए तो वो उसके अहल हैं और अगर वो न हो सकें तो जो शख़्स भी ख़लीफ़ा हो वो अपने ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में उनका तआवुन हासिल करता रहे क्योंकि मैंने उनको (कूफ़ा की गवर्नरी से) नाअहली या किसी ख़यानत की वजह से मअ़ज़ूल नहीं किया है और उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, मैं अपने बाद होने वाले ख़लीफ़ा को मुहाजिरीन अव्वलीन के बारे में वसिय्यत करता हूँ कि वो उनके हुक़ूक़ पहचाने और उनके एहतिराम को मल्हूज़ रखे और मैं अपने बाद होने वाले ख़लीफ़ा को वसिय्यत करता हूँ कि वो अंसार के साथ बेहतर मामला करे जो दारुल हिजरत और दारुल ईमान (मदीना मुनव्वरा) में (रसूलुल्लाह ﷺ की तशरीफ़ आवरी से पहले से) मुक़ीम हैं। (ख़लीफ़ा को चाहिये) कि वो उनके नेकों को नवाज़े और उनके बुरों को मुआ़फ़ कर दिया करे और मैं होने वाले ख़लीफ़ा को वसिय्यत करता हूँ कि शहरी आबादी के साथ भी अच्छा मामला रखे कि ये लोग इस्लाम की मदद, माल जमा करने का ज़रिया और (इस्लाम के) दुश्मनों के लिये एक मुसीबत हैं और ये कि उनसे वही वसूल किया जाए जो उनके पास फ़ाज़िल हो और उनकी ख़ुशी से लिया जाए और मैं होने वाले ख़लीफ़ा को बदवियों के साथ भी अच्छा सलूक करने की वसिय्यत करता हूँ कि वो

– الَّذِينَ تُوُفِّي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ عَنْهُمْ رَاضٍ: فَسَمَّى عَلِيًّا وَعُثْمَانَ وَالزُّبَيْرَ وَطَلْحَةَ وَسَعْدًا وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ، وَقَالَ: يَشْهَدُكُمْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، وَلَيْسَ لَهُ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ – كَهَيْئَةِ التَّعْزِيَةِ لَهُ – فَإِنْ أَصَابَتِ الإِمْرَةُ سَعْدًا فَهُوَ ذَاكَ، وَإِلاَّ فَلْيَسْتَعِنْ بِهِ أَيُّكُمْ مَا أُمِّرَ بِهِ، فَإِنِّي لَمْ أَعْزِلْهُ عَنْ عَجْزٍ وَلاَ خِيَانَةٍ. وَقَالَ: أُوصِي الْخَلِيفَةَ مِنْ بَعْدِي بِالْمُهَاجِرِينَ الأَوَّلِينَ، أَنْ يَعْرِفَ لَهُمْ حَقَّهُمْ، وَيَحْفَظَ لَهُمْ حُرْمَتَهُمْ. وَأُوصِيهِ بِالأَنْصَارِ خَيْرًا، الَّذِينَ تَبَوَّأُوا الدَّارَ وَالإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ، أَنْ يُقْبَلَ مِنْ مُحْسِنِهِمْ، وَأَنْ يُعْفَى عَنْ مُسِيئِهِمْ. وَأُوصِيهِ بِأَهْلِ الأَمْصَارِ خَيْرًا، فَإِنَّهُمْ رِدْءُ الإِسْلاَمِ، وَجُبَاةُ الْمَالِ وَغَيْظُ الْعَدُوِّ، وَأَنْ لاَ يُؤْخَذَ مِنْهُمْ إِلاَّ فَضْلُهُمْ عَنْ رِضَاهُمْ. وَأُوصِيهِ بِالأَعْرَابِ خَيْرًا، فَإِنَّهُمْ أَصْلُ الْعَرَبِ، وَمَادَّةُ الإِسْلاَمِ، أَنْ يُؤْخَذَ مِنْ حَوَاشِي أَمْوَالِهِمْ، وَتُرَدَّ عَلَى فُقَرَائِهِمْ. وَأُوصِيهِ بِذِمَّةِ اللَّهِ وَذِمَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنْ يُوفَى لَهُمْ بِعَهْدِهِمْ، وَأَنْ يُقَاتَلَ مَنْ وَرَائَهُمْ، وَلاَ يُكَلَّفُوا إِلاَّ طَاقَتَهُمْ. فَلَمَّا قُبِضَ خَرَجْنَا بِهِ فَانْطَلَقْنَا نَمْشِي فَسَلَّمَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ قَالَ: يَسْتَأْذِنُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ. قَالَتْ: أَدْخِلُوهُ، فَأُدْخِلَ، فَوُضِعَ هُنَالِكَ مَعَ

صَاحِبَيْهِ. فَلَمَّا فُرِغَ مِنْ دَفْنِهِ اجْتَمَعَ هَؤُلاَءِ الرَّهْطِ، فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: اجْعَلُوا أَمْرَكُمْ إِلَى ثَلاَثَةٍ مِنْكُمْ. فَقَالَ الزُّبَيْرُ: قَدْ جَعَلْتُ أَمْرِي إِلَى عَلِيٍّ. فَقَالَ طَلْحَةُ: قَدْ جَعَلْتُ أَمْرِي إِلَى عُثْمَانَ، وَقَالَ سَعْدٌ: قَدْ جَعَلْتُ أَمْرِي إِلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ. فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: أَيُّكُمَا تَبَرَّأَ مِنْ هَذَا الأَمْرِ فَنَجْعَلُهُ إِلَيْهِ، وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَالإِسْلاَمُ لَيَنْظُرَنَّ أَفْضَلَهُمْ فِي نَفْسِهِ؟ فَأُسْكِتَ الشَّيْخَانِ. فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: أَفَتَجْعَلُونَهُ إِلَيَّ وَاللَّهِ عَلَيَّ أَنْ لاَ آلُو عَنْ أَفْضَلِكُمْ؟ قَالاَ : نَعَمْ. فَأَخَذَ بِيَدِ أَحَدِهِمَا فَقَالَ: لَكَ قَرَابَةٌ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْقَدَمُ فِي الإِسْلاَمِ مَا قَدْ عَلِمْتَ، فَاللَّهُ عَلَيْكَ لَئِنْ أَمَّرْتُكَ لَتَعْدِلَنَّ، وَلَئِنْ أَمَّرْتُ عُثْمَانَ لَتَسْمَعَنَّ وَلَتُطِيعَنَّ. ثُمَّ خَلاَ بِالآخَرِ فَقَالَ: مِثْلَ ذَلِكَ. فَلَمَّا أَخَذَ الْمِيثَاقَ قَالَ: ارْفَعْ يَدَكَ يَا عُثْمَانُ، فَبَايَعَهُ، وَبَايَعَ لَهُ عَلِيٌّ، وَوَلَجَ أَهْلُ الدَّارِ فَبَايَعُوهُ)).

[راجع: ١٣٩٢]

असल अरब हैं और इस्लाम की जड़ हैं और ये कि उनसे उनका बचा–खुचा माल वसूल किया जाए और उन्हीं के मुहताजों में बांट दिया जाए और मैं होने वाले ख़लीफ़ा को अल्लाह और उसके रसूल के अहद की निगाहदाश्त की (जो इस्लामी हुकूमत के तहत ग़ैर–मुस्लिमों से किया है) वसिय्यत करता हूँ कि उनसे किये गये अहद को पूरा किया जाए, उनकी हिफ़ाज़त के लिये जंग की जाए और उनकी हैसियत से ज़्यादा उन पर बोझ न डाला जाए। जब उमर (रज़ि.) की वफ़ात हो गई तो हम वहाँ से उनको लेकर (आइशा रज़ि.) के हुज्रे की तरफ़ आए। अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने सलाम किया और अर्ज़ किया कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने इजाज़त चाही है। उम्मुल मोमिनीन ने कहा इन्हें यहाँ दफ़न किया जाए। चुनाँचे वो वहीं दफ़न हुए। फिर जब लोग दफ़न से फ़ारिग़ हो चुके तो वो जमाअत (जिनके नाम उमर रज़ि. ने वफ़ात से पहले बताए थे) जमा हुई अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने कहा, तुम्हें अपना मामला अपने ही में से तीन आदमियों के सुपुर्द कर देना चाहिये इस पर ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा कि मने अपना मामला अली (रज़ि.) के सुपुर्द किया। तलहा (रज़ि.) ने कहा कि मैं अपना मामला उष्मान (रज़ि.) के सुपुर्द करता हूँ। और सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने कहा मैंने अपना मामला अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के सुपुर्द कर दिया। उसके बाद अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने (उष्मान और अली रज़ि. को मुख़ातब करके) कहा कि आप दोनों हज़रात में से जो भी ख़िलाफ़त से अपनी बरात ज़ाहिर करे हम उसी को ख़िलाफ़त देंगे और अल्लाह उसका निगराँ व निगाहबान होगा और इस्लाम के हुक़ूक़ की ज़िम्मेदारी उस पर लाज़िम होगी, हर शख़्स को ग़ौर करना चाहिये कि उसके ख़्याल में कौन अफ़ज़ल है, उस पर ये दोनों हज़रात इस इंतिख़ाब की ज़िम्मेदारी मुझ पर डालते हैं। अल्लाह की क़सम कि मैं आप हज़रात में से उसी को मुंतख़ब करूँगा जो सब में अफ़ज़ल होगा। उन दोनों हज़रात ने कहा कि जी हाँ। फिर आपने उन दोनों में से एक का हाथ पकड़ा और फ़र्माया कि आपकी क़राबत रसूलुल्लाह (ﷺ) से है और इब्तिदा में इस्लाम लाने का शर्फ़ भी, जैसा कि आपको ख़ुद ही मा'लूम है। पस अल्लाह आपका निगराँ है कि अगर मैं आपको ख़लीफ़ा बना दूँ तो क्या आप अदल व इंसाफ़ से काम लेंगे और

अगर उ़स्मान (रज़ि.) को ख़लीफ़ा बना दूँ तो क्या आप उनके अह़काम को सुनेंगे और उनकी इताअ़त करेंगे? उसके बाद दूसरे साह़ब को तन्हाई में ले गये और उनसे भी यही कहा और जब उनसे वा'दा ले लिया तो फ़र्माया, ऐ उ़स्मान! अपना हाथ बढ़ाइये। चुनाँचे उन्होंने उनसे बेअ़त की और अ़ली (रज़ि.) ने भी उनसे बेअ़त की। फिर अहले मदीना आए और सबने बेअ़त की। (राजेअ़ : 1392)

तशरीह : ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की शहादत का वाक़िया बहुत ही दिल दहलाने वाला है। ह़ज़रत मुग़ीरह (रज़ि.) के अ़जमी ग़ुलाम अबू लूलू नामी मर्दूद ने तीन ज़र्ब उस ज़हरीले खंजर के लगाए जिसको उसने तैयार किया था। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने हाथ से इशारा किया और फ़र्माया उस कुत्ते को पकड़ लो उसने मुझे मार डाला। हुआ ये था कि मर्दूद बड़ा कारीगर था, लोहार भी था, नक़्क़ाश भी और बढ़ई भी। मुग़ीरह ने उस पर सौ दिरहम माहाना जिज़्या के मुक़र्रर किये थे। उसने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से शिकायत की कि मेरा जिज़्या बहुत भारी है उसमें कुछ तख़फ़ीफ़ की जाए। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि जब तू इतना हुनर जानता है तो हर महीने सौ दिरहम तुझ पर ज़्यादा नहीं है। उस पर इस मर्दूद को ग़ुस्सा आया। एक बार ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को रास्ते में मिला, ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने पूछा, मैंने सुना है कि तू हवा की चक्की बना सकता है। उसने कहा, मैं तुम्हारे लिए एक ऐसी चक्की बनाऊँगा जिसका लोग हमेशा ज़िक्र करते रहेंगे। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ये सुनकर अपने साथियों से कहा कि उस ग़ुलाम ने मुझको डराया। चन्द ही रातों के बाद उस मर्दूद ने ये किया। मुस्लिम ने मअ़दान से निकाला कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने शहादत से पहले ख़ुत्बा सुनाया, फ़र्माया कि एक मुर्ग़ ने मुझको तीन चोंचें मारीं ख़्वाब में और मैं समझता हूँ मेरी मौत आ पहुँची चुनाँचे ज़ख़्मी होने के कई दिनों बाद आपका इंतिक़ाल हो गया और ह़ज़रत सुहैब (रज़ि.) ने उन पर नमाज़ पढ़ाई। क़ब्र में कहते हैं अबूबक्र (रज़ि.) का सर आँह़ज़रत (ﷺ) के काँधे के बराबर है और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का सर अबूबक्र (रज़ि.) के काँधे के बराबर है। कुछ ने कहा कि अबूबक्र (रज़ि.) की क़ब्र आँह़ज़रत (ﷺ) के सर के मुक़ाबिल है और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की क़ब्र आपके पाँव के बराबर। बहरहाल तीनों साह़ब ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के हुज्रे में मदफ़ून हैं जिनकी क़ब्रों का मक़ाम अब तक बाहमी तौर पर मह़फ़ूज़ है और क़यामत तक इंशाअल्लाह मह़फ़ूज़ रहेगा। बाक़ी स़ह़ाबा और अहले बैत और अज़्वाजे मुतह्हरात बक़ीअ़ में मदफ़ून हैं। मगर बक़ीअ़ में कई बार तूफ़ान और बारिश और वाक़ियात की वजह से क़ब्रों के निशान मिट गये। अंदाज़े से कुछ लोगों ने गुम्बद वग़ैरह बना दिये थे। उनके मुक़ामात यक़ीनी तौर से मह़फ़ूज़ नहीं हैं। इतना तो यक़ीन है कि ये सब बुज़ुर्ग बक़ीअ़ मुबारक में हैं। रहे नाम अल्लाह का। उन फ़र्ज़ी गुम्बदों को सऊ़दी हुकूमत ने ख़त्म कर दिया है। **अय्यदल्लाहु बिनस्रिहिल्अ़ज़ीज़**

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ख़िलाफ़त का मसला तै करने के लिये जो जमाअ़त नामज़द फ़र्माई उसमें अपने साह़बज़ादे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को सिर्फ़ बतौरे मुशाहिद ह़ाज़िर रहने के लिये कहा। या'नी अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) के लिये इतना भी जो कहा कि वो मश्वरा वग़ैरह मे तुम्हारे साथ शरीक रहेगा, ये भी उनको तसल्ली देने के लिये, वो अपने वालिद के सख़्त रंज में थे। इतना फ़र्माकर गोया कुछ उनके आंसू पोंछ दिये। त़बरी और इब्ने सअ़द वग़ैरह ने रिवायत किया, एक शख़्स ने कहा अ़ब्दुल्लाह को ख़लीफ़ा कर दीजिए। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा अल्लाह तुझको तबाह करे। मैं ह़क़ तआ़ला को क्या मुँह दिखाऊँगा? सुब्ह़ानल्लाह! पाक नफ़्सी और इंस़ाफ़ की ह़द हो गई। ऐसे लायक़ और फ़ाज़िल बेटे का वो भी मरते वक़्त ज़रा भी ख़्याल न किया और जब तक ज़िन्दा रहे अ़ब्दुल्लाह को उसामा बिन ज़ैद से भी कम मआ़श देते रहे। स़ह़ाबा ने सिफ़ारिश भी की कि अ़ब्दुल्लाह उसामा से कम नहीं हैं जिन लड़ाइयों में उसामा आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ शरीक हुए हैं अ़ब्दुल्लाह भी शरीक हुए हैं। फ़र्माया कि उसामा के बाप को आँह़ज़रत (ﷺ) अ़ब्दुल्लाह के बाप से ज़्यादा चाहते थे तो मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) की मुह़ब्बत को अपनी मुह़ब्बत पर मुक़द्दम रखा। अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की सारी ख़िलाफ़त मे कमी मआ़श की कमी और कस़रत अहलो-अयाल से परेशान ही रहे मगर एक गाँव की तह़सीलदार या हुकूमत उनको न दी। आख़िर परेशान होकर सूबा यमन के ह़ाकिम के पास गये। उनसे अपनी तकलीफ़ का ह़ाल बयान किया। उन्होंने बयान

किया कि तुम जानते हो जैसे तुम्हारे वालिद सख़्त आदमी हैं, मैं बैतुल माल से तो एक पैसा भी तुमको नहीं दे सकता। अल्बत्ता कुछ रुपया मदीना रवाना करना है। तुम ऐसा करो उसका कपड़ा यहाँ ख़रीद लो और मदीना पहुँचकर माल बेचकर असल रुपया अपने वालिद के पास दाख़िल कर दो और नफ़ा तुम ले लो तो अ़ब्दुल्लाह ने उसी को ग़नीमत समझा। जब मदीना आए, ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को ख़बर पहुँची तो फ़र्माया असल और नफ़ा दोनों बैतुल माल में दाख़िल करो। ये माल तुम्हारा या तुम्हारे बाप का न था। स़ह़ाबा ने बहुत सिफ़ारिश की कि आख़िर ये इतनी दूर से आए हैं और पैसा अपनी ह़िफ़ाज़त में लाए हैं, उनको कुछ उजरत मिलना चाहिये और हम सब राज़ी हैं कि आधा नफ़ा दिया जाए। उस वक़्त ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि ख़ैर तुम्हारी मर्ज़ी में तो यूँ ही इंस़ाफ़ समझता हूँ कि कुल नफ़ा बैतुलमाल में दाख़िल कर दिया जाए। अफ़सोस सद अफ़सोस जो शिया ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को बुरा कहते हैं। अगर ज़रा अपने गिरेबान में मुँह डालें तो समझ लें कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की एक एक बात ऐसी है जो उनकी फ़ज़ीलत और इंस़ाफ़-पसन्दी और ह़क़ शनासी की काफ़ी और रोशन दलील है। **व मंल्लम यज्अलिल्लाहु लहू नुरन फमा लहू मिन नूर** (खुलासा वहीदी)

बाब 9 : ह़ज़रत अबुल ह़सन अ़ली बिन अबू त़ालिब अल क़ुरशी अल हाशमी (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٩- بَابُ مَنَاقِبُ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ الْقُرَشِيِّ الْهَاشِمِيِّ أَبِي الْحَسَنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से कि तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी वफ़ात तक उनसे राज़ी थे.

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَلِيٍّ: ((أَنْتَ مِنِّي وَأَنَا مِنْكَ)) وَقَالَ عُمَرُ: تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ عَنْهُ رَاضٍ.

तश्रीह : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रत अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) चौथे ख़लीफ़-ए-राशिद हैं। आपकी कुन्नियत अबुल ह़सन और अबू तुराब है। आठ साल की उ़म्र में इस्लाम क़ुबूल किया और ग़ज़्व-ए-तबूक़ के सिवा तमाम ग़ज़्वात में शरीक हुए। ये गन्दुमी रंग वाले, बड़ी रोशन, ख़ूबसूरत आँखों वाले थे। त़वीलुल क़ामत न थे। दाढ़ी बहुत भरी हुई थी। आख़िर में सर और दाढ़ी दोनों के बाल सफ़ेद हो गये थे। ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की शहादत के दिन जुम्आ को 18 ज़िल्हिज्ज 35 हिजरी में ताजे ख़िलाफ़त उनके सर पर रखा गया और 18 रमज़ान 40 हिजरी में जुम्आ के दिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुलज्जम मुरादी ने आपके सर पर तलवार से ह़मला किया जिसके तीन दिन बाद आपका इंतिक़ाल हो गया। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलयहि राजिऊ़न।** आपके दोनो स़ाह़बज़ादों ह़ज़रत ह़सन और ह़ज़रत हुसैन और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) ने आपको ग़ुस्ल दिया। ह़सन (रज़ि.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। सुबह़ के वक़्त आपको दफ़न किया गया। आपकी उ़म्र 63 साल की थी। मुद्दते ख़िलाफ़त चार साल, नौ माह और कुछ दिन है।

बाब के उ़न्वान में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के बारे में ह़दीष़ **अन्त मिन्नी व अना मिन्क** मज़्कूर है। या'नी तुम मुझसे और मैं तुमसे हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) जब जंगे तबूक़ में जाने लगे तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को मदीना में छोड़ गये उनको रंज हुआ, कहने लगे आप मुझको औरतों और बच्चों के साथ छोड़े जाते हैं, उस वक़्त आप (ﷺ) ने ये ह़दीष़ फ़र्माई या'नी जैसे ह़ज़रत मूसा (रज़ि.) कोहे तूर को जाते हुए ह़ज़रत हारून (अ़लैहिस्सलाम) को अपना जानशीन कर गये थे, ऐसा ही मैं तुमको अपना क़ायम मुक़ाम करके जाता हूँ। इससे ये मत़लब नहीं है कि मेरे बाद मुत्तस़लन तुम ही मेरे ख़लीफ़ा होगे क्योंकि ह़ज़रत हारून (अ़लैहिस्सलाम) ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की ह़यात में गुज़र गये थे। दूसरी रिवायत में इतना और ज़्यादा है, स़िर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि मेरे बाद कोई नबी न होगा।

3701. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जंगे ख़ैबर के मौक़े पर बयान फ़र्माया कि कल मैं एक ऐसे शख़्स़ को इस्लामी अ़लम (झण्डा) दूँगा जिसके हाथ पर अल्लाह तआ़ला

٣٧٠١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ غَدًا رَجُلاً يَفْتَحُ

फ़तह इनायत फ़र्माएगा। रावी ने बयान किया कि रात को लोग ये सोचते रहे कि देखिए अलम किसे मिलता है। जब सुबह हुई तो आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में सब हज़रात (जो सरकर्दा थे) हाज़िर हुए। सबको उम्मीद थी कि अलम उन्हें ही मिलेगा। लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया, अली बिन अबी तालिब कहाँ हैं? लोगों ने बताया कि उनकी आँखों में दर्द है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उनके यहाँ किसी को भेजकर बुलवा लो। जब वो आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी आँख में अपना थूक लगाया और उनके लिये दुआ की। इससे उन्हें ऐसी शिफ़ा हासिल हुई जैसे कोई मर्ज़ पहले था ही नहीं। चुनाँचे आपने अलम उन्हीं को इनायत फ़र्माया। हज़रत अली (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं उनसे इतना लडूँगा कि वो हमारे जैसे हो जाएँ (या'नी मुसलमान बन जाएँ) आपने फ़र्माया, अभी यूँ ही चलते रहो। जब उनके मैदान में उतरो तो पहले उन्हें इस्लाम की दा'वत दो और उन्हें बताओ कि अल्लाह के उन पर क्या हुक़ूक़ वाजिब हैं। अल्लाह की क़सम अगर तुम्हारे ज़रिये अल्लाह तआला एक शख़्स को भी हिदायत दे दे तो वो तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊँटों (की दौलत) से बेहतर है। (राजेअ: 2942)

اللهُ عَلَى يَدَيْهِ)). قَالَ فَبَاتَ النَّاسُ يَدُوكُونَ لَيْلَتَهُمْ أَيُّهُمْ يُعْطَاهَا. فَلَمَّا أَصْبَحَ النَّاسُ غَدَوْا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ كُلُّهُمْ يَرْجُو أَنَّهُ يُعْطَاهَا، فَقَالَ: ((أَيْنَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ؟)) فَقَالُوا: يَشْتَكِي عَيْنَيْهِ يَا رَسُولَ اللهِ. قَالَ: ((فَأَرْسِلُوا إِلَيْهِ فَأْتُونِي بِهِ)). فَلَمَّا جَاءَ بَصَقَ فِي عَيْنَيْهِ وَدَعَا لَهُ، فَبَرَأَ حَتَّى كَأَنْ لَمْ يَكُنْ بِهِ وَجَعٌ، فَأَعْطَاهُ الرَّايَةَ، فَقَالَ عَلِيٌّ: يَا رَسُولَ اللهِ أُقَاتِلُهُمْ حَتَّى يَكُونُوا مِثْلَنَا. فَقَالَ: ((انْفُذْ عَلَى رِسْلِكَ حَتَّى تَنْزِلَ بِسَاحَتِهِمْ، ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الإِسْلاَمِ، وَأَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ مِنْ حَقِّ اللهِ فِيهِ، فَوَ اللهِ لأَنْ يَهْدِيَ اللهُ بِكَ رَجُلاً وَاحِدًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ يَكُونَ حُمْرُ النَّعَمِ)). [راجع: ٢٩٤٢]

आँहज़रत (ﷺ) का मक़सद ये था कि जहाँ तक मुम्किन हो लड़ाई की नौबत न आने पाए। इस्लाम लड़ाई करने का हामी नहीं है। इस्लाम अमन चाहता है। उसकी जंग सिर्फ़ मुदाफ़िआना (रक्षात्मक) है।

3702. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे हातिम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया, कि हज़रत अली (रज़ि.) ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) के साथ आँख दुखने की वजह से नहीं आ सके थे। फिर उन्होंने सोचा, मैं हुज़ूर (ﷺ) के साथ ग़ज़्वा में शरीक न हो सकूँ! चुनाँचे घर से निकले और आपके लश्कर से जा मिले। जब उस रात की शाम आई जिसकी सुबह को अल्लाह तआला ने फ़तह इनायत फ़र्माई थी तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कल मैं एक ऐसे शख़्स को अलम दूँगा, या (आप ﷺ ने यूँ फ़र्माया कि कल) एक ऐसा शख़्स अलम को लेगा जिससे अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को मुहब्बत है या आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया कि जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआला उसके हाथ पर फ़तह इनायत फ़र्माएगा। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत

٣٧٠٢ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ قَالَ : كَانَ عَلِيٌّ قَدْ تَخَلَّفَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي خَيْبَرَ وَكَانَ بِهِ رَمَدٌ فَقَالَ : أَنَا أَتَخَلَّفُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَخَرَجَ عَلِيٌّ فَلَحِقَ بِالنَّبِيِّ ﷺ. فَلَمَّا كَانَ مَسَاءُ اللَّيْلَةِ الَّتِي فَتَحَهَا فِي صَبَاحِهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ - أَوْ لَيَأْخُذَنَّ الرَّايَةَ - غَدًا رَجُلاً يُحِبُّهُ اللهُ وَرَسُولُهُ)) - أَوْ قَالَ: ((يُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ - يَفْتَحُ اللهُ

अली (रज़ि.) आ गये हालाँकि उनके आने की हमें उम्मीद नहीं थी। लोगों ने बताया कि ये हैं अली (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) ने अलम इन्हीं को दे दिया, और अल्लाह तआला ने उनके हाथ पर ख़ैबर फ़तह करा दिया। (राजेअ: 2975)

عَلَيْهِ))، فَإِذَا نَحْنُ بِعَلِيٍّ وَمَا نَرْجُوهُ، فَقَالُوا : هَذَا عَلِيٌّ، فَأَعْطَاهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ الرَّايَةَ فَفَتَحَ اللهُ عَلَيْهِ.[راجع: ٢٩٧٥]

हज़रत अली (रज़ि.) से बेअ़ते ख़िलाफ़त ज़िलहिज्ज 35 हिजरी में हुई थी जिसे जुम्हूर मुसलमानों ने तस्लीम किया।

3703. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने कि एक शख़्स हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) के यहाँ आया और कहा कि ये फ़लाँ शख़्स, उसका इशारा अमीरे मदीना (मरवान बिन हकम) की तरफ़ था, बरसरे मिम्बर हज़रत अ़ली (रज़ि.) को बुरा भला कहता है। अबू हाज़िम ने बयान किया कि हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने पूछा क्या कहता है? उसने बताया कि उन्हें अबू तुराब कहता है। इस पर हज़रत सहल हंसने लगे और फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! ये नाम तो उनका रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रखा था और ख़ुद हज़रत अ़ली (रज़ि.) को इस नाम से ज़्यादा अपने लिये और कोई नाम पसन्द नहीं था। ये सुनकर मैंने इस हदीष़ के जानने के लिये हज़रत सहल (रज़ि.) से ख़्वाहिश ज़ाहिर की और अ़र्ज़ किया ऐ अबू अ़ब्बास! ये वाक़िया किस तरह से है? उन्होंने बयान किया कि एक मर्तबा हज़रत अ़ली (रज़ि.) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के यहाँ आए और फिर बाहर आकर मस्जिद में लेटे रहे। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने (फ़ातिमा रज़ि. से) दरयाफ़्त किया, तुम्हारे चचा के बेटे कहाँ हैं? उन्होंने बताया कि मस्जिद में हैं। आप मस्जिद में तशरीफ़ लाए, देखा तो उनकी चादर पीठ से नीचे गिर गई है और उनकी कमर पर अच्छी तरह से ख़ाक लग चुकी है। आप मिट्टी उनकी कमर से साफ़ फ़र्माने लगे और बोले, उठो ऐ अबू तुराब! उठो (दो मर्तबा आपने फ़र्माया)। (राजेअ: 441)

٣٧٠٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ ((أَنَّ رَجُلاً جَاءَ إِلَى سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ فَقَالَ: ((هَذَا فُلاَنٌ - لأَمِيرِ الْمَدِينَةِ - يَدْعُو عَلِيًّا عِنْدَ الْمِنْبَرِ. قَالَ فَيَقُولُ مَاذَا؟ قَالَ : يَقُولُ لَهُ أَبُو تُرَابٍ، فَضَحِكَ. قَالَ: وَاللهِ مَا سَمَّاهُ إِلاَّ النَّبِيُّ ﷺ، وَمَا كَانَ لَهُ اسْمٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْهُ، فَاسْتَطْعَمْتُ الْحَدِيثَ سَهْلاً وَقُلْتُ: يَا أَبَا عَبَّاسٍ كَيْفَ؟ قَالَ: دَخَلَ عَلِيٌّ عَلَى فَاطِمَةَ، ثُمَّ خَرَجَ فَاضْطَجَعَ فِي الْمَسْجِدِ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيْنَ ابْنُ عَمِّكِ؟ قَالَتْ : فِي الْمَسْجِدِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِ فَوَجَدَ رِدَاءَهُ قَدْ سَقَطَ عَنْ ظَهْرِهِ وَخَلَصَ التُّرَابُ إِلَى ظَهْرِهِ. فَجَعَلَ يَمْسَحُ التُّرَابَ عَنْ ظَهْرِهِ فَيَقُولُ: ((اجْلِسْ أَبَا تُرَابٍ)). مَرَّتَيْنِ. [راجع: ٤٤١]

3704. हमसे मुहम्मद बिन राफ़ेअ़ ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन ने, उनसे ज़ायदा ने, उनसे अबू हुसैन ने, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने बयान किया कि एक शख़्स अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में आया और हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के बारे में पूछा।

٣٧٠٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ عَنْ زَائِدَةَ عَنْ أَبِي حَصِينٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ قَالَ: ((جَاءَ رَجُلٌ إِلَى ابْنِ عُمَرَ فَسَأَلَهُ عَنْ عُثْمَانَ، فَذَكَرَ عَنْ

مَحَاسِنِ عَمَلِهِ، قَالَ: لَعَلَّ ذَاكَ يَسُوؤُكَ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَأَرْغَمَ اللهُ بِأَنْفِكَ. ثُمَّ سَأَلَهُ عَنْ عَلِيٍّ، فَذَكَرَ مَحَاسِنَ عَمَلِهِ قَالَ: هُوَ ذَاكَ، بَيْتُهُ أَوْسَطُ بُيُوتِ النَّبِيِّ ﷺ. ثُمَّ قَالَ: لَعَلَّ ذَاكَ يَسُوؤُكَ؟ قَالَ: أَجَلْ. قَالَ: فَأَرْغَمَ اللهُ بِأَنْفِكَ، انْطَلِقْ فَاجْهَدْ عَلَيَّ جَهْدَكَ)).

[راجع: ٣١٣٠]

इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने उनके महासिन का ज़िक्र किया। फिर कहा कि शायद ये बातें तुम्हें बुरी लगी होंगी। उसने कहा जी हाँ, ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा अल्लाह तेरी नाक ख़ाक आलूद करे। फिर उसने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के बारे में पूछा, उन्होंने उनके भी महासिन ज़िक्र किये और कहा कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) का घराना नबी करीम (ﷺ) के ख़ानदान का निहायत उ़म्दा घराना है। फिर कहा कि शायद ये बातें भी तुम्हें बुरी लगी होंगी। उसने कहा कि जी हाँ। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बोले अल्लाह तेरी नाक ख़ाक आलूदा करे, जा और मेरा जो बिगाड़ना चाहे बिगाड़ लेना कुछ कमी न करना। (राजेअ़ : 3130)

पूछने वाला नाफ़ेअ़ नामी ख़ारजी था जो ह़ज़रत उ़ष्मान और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) दोनों को बुरा समझता था। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की ख़ानदानी शराफ़त का भी ज़िक्र किया मगर ख़ारजियों ने सब कुछ भुलाकर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया और ज़लालत व गुमराही का शिकार हुए।

٣٧٠٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي لَيْلَى قَالَ: حَدَّثَنَا عَلِيٌّ أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ شَكَتْ مَا تَلْقَى مِنْ أَثَرِ الرَّحَى، فَأُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ سَبْيٌ، فَانْطَلَقَتْ، فَلَمْ تَجِدْهُ، فَوَجَدَتْ عَائِشَةَ فَأَخْبَرَتْهَا. فَلَمَّا جَاءَ النَّبِيُّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ عَائِشَةُ بِمَجِيءِ فَاطِمَةَ، فَجَاءَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْنَا - وَقَدْ أَخَذْنَا مَضَاجِعَنَا، فَذَهَبْتُ لأَقُومَ فَقَالَ: ((عَلَى مَكَانِكُمَا)). فَقَعَدَ بَيْنَنَا حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمَيْهِ عَلَى صَدْرِي، وَقَالَ: ((أَلاَ أُعَلِّمُكُمَا خَيْرًا مِمَّا سَأَلْتُمَانِي؟ إِذَا أَخَذْتُمَا مَضَاجِعَكُمَا تُكَبِّرَانِ أَرْبَعًا وَثَلاَثِينَ، وَتُسَبِّحَانِ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، وَتَحْمَدَانِ ثَلاَثًا وَثَلاَثِينَ، فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمَا مِنْ خَادِمٍ)).

[راجع: ٣١١٣]

3705. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उन्होंने इब्ने अबी लैला से सुना, कहा हमसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) ने (नबी करीम ﷺ से) चक्की पीसने की तकलीफ़ की शिकायत की। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) के पास कुछ क़ैदी आए तो ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) आपके पास आईं लेकिन मौजूद नहीं थे, ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से उनकी मुलाक़ात हो सकी तो उनसे उसके बारे में उन्होंने बात की जब ह़ुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने आप (ﷺ) को ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) के आने की ख़बर दी। उस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ख़ुद हमारे घर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त हम अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे। मैंने चाहा कि खड़ा हो जाऊँ ले किन आपने फ़र्माया कि यूँ ही लेटे रहो। उसके बाद आप हम दोनों के दरम्यान बैठ गये और मैंने आपके क़दमों की ठण्डक अपने सीने में मह़सूस की। फिर आपने फ़र्माया कि तुम लोगों ने मुझसे जो त़लब किया है क्या मैं तुम्हें उससे अच्छी बात न बताऊँ। जब तुम सोने के लिये बिस्तर पर लेटो तो 34 मर्तबा अल्लाहु अकबर, 33 मर्तबा सुब्ह़ानल्लाह और 33 मर्तबा अल्ह़म्दुलिल्लाह पढ़ लिया करो। ये अ़मल तुम्हारे लिये किसी ख़ादिम से बेहतर है।

(राजेअ़ : 3113)

तश्रीह : इमाम इब्ने तैमिया (रह) फ़र्माते हैं कि जो शख़्स सोते वक़्त इस ह़दीष़ पर अमल करेगा वो अपने अंदर थकन महसूस नहीं करेगा।

3706. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सअ़द ने, उन्होंने इब्राहीम बिन सअ़द से सुना, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से फ़र्माया कि क्या तुम उस पर ख़ुश नहीं हो कि तुम मेरे लिये ऐसे हो जैसे ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) के लिए ह़ज़रत हारून (अ़लैहि.) थे।
(दीगर मक़ाम : 4416)

٣٧٠٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدٍ قَالَ : سَمِعْتُ إِبْرَاهِيْمَ بْنَ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَلِيٍّ: ((أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى؟)).
[طرفه في : ٤٤١٦].

या'नी ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और ह़ज़रत हारून (अ़लैहि.) का जैसा नसबी रिश्ता है ऐसा ही मेरा और तुम्हारा है।

3707. हमसे अ़ली बिन जअ़द ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी उन्हें अय्यूब ने, उन्हें इब्ने सीरीन ने, उन्हें उ़बैदह ने कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने इराक़ वालों से कहा कि जिस त़रह तुम पहले फ़ैसला किया करते थे अब भी किया करो क्योंकि मैं इख़ितलाफ़ को बुरा जानता हूँ। उसी वक़्त तक कि सब लोग जमा हो जाएँ या मैं भी अपने साथियों (अबूबक्र व उ़मर रज़ि.) की त़रह दुनिया से चला जाऊँ। इब्ने सीरीन (रह) कहा करते थे कि आ़म लोग (रवाफ़िज़) जो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से रिवायात (शैख़ैन की मुख़ालफ़त में) बयान करते हैं वो क़त्अ़न झूठी हैं।

٣٧٠٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ سِيْرِيْنَ عَنْ عُبَيْدَةَ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((اقْضُوا كَمَا كُنْتُمْ تَقْضُونَ، فَإِنِّي أَكْرَهُ الاخْتِلاَفَ، حَتَّى يَكُونَ لِلنَّاسِ جَمَاعَةٌ، أَوْ أَمُوتَ كَمَا مَاتَ أَصْحَابِي)). فَكَانَ ابْنُ سِيْرِيْنَ يَرَى أَنَّ عَامَّةَ مَا يُرْوَى عَنْ عَلِيٍّ الْكَذِبُ.

तश्रीह : लफ़्ज़ राफ़्ज़ी, रफ़्ज़ से मुश्तक़ है। मुह़क़्क़िक़ीन कहते हैं कि उन शियाओं का नाम राफ़्ज़ी इसलिये हुआ कि **लिअन्नहुम रफ़ज़ू ज़ैदब्न अलिय्यिब्निल्हुसैनि ब्नि अलिय्यिब्नि अबी तालिब बिअ़दमि तबर्रूइही मिन अबी बक्र व उ़मर** वाक़िया ये हुआ था कि ह़ज़रत ज़ैद बिन अ़ली बिन हुसैन (रज़ि.) कूफ़ा तशरीफ़ लाए और लोगों को तब्लीग़ की। बहुत से लोगों ने उनसे बेअ़त की मगर एक जमाअ़त ने कहा कि जब तक आप अबूबक्र व उ़मर को बुरा न कहेंगे, हम आपसे बेअ़त न करेंगे। ह़ज़रत ज़ैद ने उनकी इस बात को मानने से इंकार कर दिया और वो अम्रे ह़क़ पर क़ायम रहे। उस वक़्त उस जमाअ़त ने ये नारा बुलन्द किया **नह़नु नरफ़ुज़ुक** हम तुमको छोड़ते हैं। उस वक़्त से ये गिरोह राफ़्ज़ी के नाम से मौसूम हुआ। ह़ज़रत पीर जीलानी (रह) ने इस गिरोह की सख़्त मज़म्मत की है। इस गिरोह के मुक़ाबिला पर ख़ारजी हैं जिन्होंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) पर ख़ुरूज किया और मिम्बर पर उनकी बुराई शुरू की। दोनों फ़रीक़ गुमराह हैं। ए'तिदाल का रास्ता अहले सुन्नत का है जो सब स़ह़ाबा (रज़ि.) की इ़ज़्ज़त करते हैं और किसी के ख़िलाफ़ लब कुशाई नहीं करते। उनकी लग़्ज़िशों को अल्लाह के ह़वाले करते हैं। **तिलक उम्मतुन क़द ख़लत लहा मा कसबत व लकुम मा कसब्तु व ला तुस्अलून अम्मा कानू यअमलून**

रिवायत में मज़्कूर बुज़ुर्ग उ़बैदा (रज़ि.) इराक़ के क़ाज़ी थे। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का क़ौल ये था कि उम्मे वलद की बेअ़ दुरुस्त नहीं है। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) का ख़्याल था कि उम्मे वलद की बेअ़ दुरुस्त है। उ़बैदा ने ये अ़र्ज़ किया कि अबूबक्र व उ़मर (रज़ि.) के ज़माने से तो हम उम्मे वलद की बेअ़ की नाजवाज़ी का फ़त्वा देते रहे हैं। अब आप (रज़ि.) का क्या हुक्म है उस वक़्त ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने ये फ़र्माया कि अब भी वही फ़ैसला करो।

बाब 10 : हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब हाशमी (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

١٠- بَابُ مَنَاقِبِ جَعْفَرِ بْنِ أَبِي طَالِبِ الْهَاشِمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया था कि तुम सूरत और सीरत में मुझसे ज़्यादा मुशाबेह हो।

وَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَشْبَهْتَ خَلْقِي وَخُلُقِي))

तश्रीह : हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) हज़रत अली (रज़ि.) से दस साल बड़े थे। उनका लक़ब ज़ुल जनाहैन है। इस्लाम क़ुबूल करते हुए उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के बाईं तरफ़ खड़े होकर नमाज़ अदा की थी। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जैसे तुमने मेरे साथ मिलकर नमाज़ पढ़ी है अल्लाह पाक तुमको जन्नत में दो बाज़ू अता फ़र्माएगा और तुम जन्नत में उड़ते फिरोगे। ब उम्र 41 साल जंगे मौता 8 हिजरी में जामे शहादत नोश फ़र्माया। उनकी छाती में तलवारों और नेज़ों के 90 ज़ख़्म पाए गए थे।

3708. हमसे अहमद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन दीनार अबू अ़ब्दुल्लाह जुहनी ने बयान किया। उनसे इब्ने अबी ज़िब ने, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि लोग कहते हैं कि अबू हुरैरह (रज़ि.) बहुत अहादीष़ बयान करता है। हालाँकि पेट भरने के बाद मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हर वक़्त रहता था, मैं ख़मीरी रोटी न खाता और न उम्दा लिबास पहनता था (या'नी मेरा वक़्त इल्म के सिवा किसी दूसरी चीज़ के हासिल करने में न जाता) और न मेरी ख़िदमत के लिये कोई फ़लाँ या फ़लानी थी बल्कि मैं भूख की शिद्दत की वजह से अपने पेट से पत्थर बाँध लिया करता। कुछ वक़्त मैं किसी को कोई आयत इसलिये पढ़कर उसका मतलब पूछता था कि वो अपने घर ले जाकर मुझे खाना खिला दे, हालाँकि मुझे इस आयत का मतलब मा'लूम होता था। मिस्कीनों के साथ सबसे बेहतर सुलूक करने वाले हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) थे। हमें अपने घर ले जाते और जो कुछ भी घर में मौजूद होता वो हमको खिलाते। कुछ औक़ात तो ऐसा होता कि सिर्फ़ शहद या घी की कुप्पी ही निकालकर लाते और उसे हम फाड़कर उसमें जो कुछ होता उसे ही चाट लेते।

(दीगर मक़ाम : 5432)

٣٧٠٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ دِينَارٍ أَبُو عَبْدِ اللهِ الْجُهَنِيُّ عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّ النَّاسَ كَانُوا يَقُولُونَ: أَكْثَرَ أَبُوهُرَيْرَةَ، وَإِنِّي كُنْتُ أَلْزَمُ رَسُولَ اللهِ ﷺ بِشِبَعِ بَطْنِي حَتَّى لاَ آكُلُ الْخَمِيرَ وَلاَ أَلْبَسُ الْحَبِيرَ وَلاَ يَخْدُمُنِي فُلاَنٌ وَلاَ فُلاَنَةُ، وَكُنْتُ أُلْصِقُ بَطْنِي بِالْحَصْبَاءِ مِنَ الْجُوعِ، وَإِنْ كُنْتُ لأَسْتَقْرِىءُ الرَّجُلَ الآيَةَ هِيَ مَعِيَ كَيْ يَنْقَلِبَ بِي فَيُطْعِمَنِي. وَكَانَ أَخْيَرَ النَّاسِ لِلْمِسْكِينِ جَعْفَرُ بْنُ أَبِي طَالِبٍ كَانَ يَنْقَلِبُ بِنَا فَيُطْعِمُنَا مَا كَانَ فِي بَيْتِهِ، حَتَّى إِنْ كَانَ لَيُخْرِجُ إِلَيْنَا الْعُكَّةَ الَّتِي لَيْسَ فِيهَا شَيْءٌ، فَنَشُقُّهَا فَنَلْعَقُ مَا فِيهَا)). [طرفه في : ٥٤٣٢].

3709. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उन्हें शअ़बी ने ख़बर दी कि जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) हज़रत जा'फ़र (रज़ि.)

٣٧٠٩- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ ((أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ

के साहबज़ादे को सलाम करते तो यूँ कहा करते अस्सलामु अलैयका या इब्ने ज़िल् जनाहैन। ऐ दो परों वाले बुज़ुर्ग के साहबज़ादे तुम पर सलाम हो। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा हदीष़ में जो जनाहैन का लफ़्ज़ है इससे मुराद गोशे हैं (दो कोने)। (दीगर मक़ाम : 4264)

اللهُ عَنْهُمَا كَانَ إِذَا سَلَّمَ عَلَى ابْنِ جَعْفَرٍ قَالَ: السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ ذِي الْجَنَاحَيْنِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: يقال كن في جناحي كن في ناحيتي كل جانبين جناحان. [طرفه في : ٤٢٦٤].

उनके वालिद हज़रत जा'फ़र बिन अबी त़ालिब जंगे मौता में शहीद हुए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने उनको जन्नत में देखा उनके जिस्म पर दो बाज़ू लगे हुए हैं। वो फ़रिश्तों के साथ उड़ते फिरते हैं। इसीलिये उनको जा'फ़र त़य्यार कहा गया।

बाब 11 : ह़ज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

١١ - بَابُ ذِكْرُ الْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

तश्रीह : ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) से दो तीन बरस बड़े थे और आपके ह़क़ीक़ी चचा थे। कहते हैं कि मदीना में एक बार सख़्त क़ह़त़ हुआ। कअ़ब बिन मालिक (रह) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कहा कि बनी इस्राईल पर जब क़ह़त़ पड़ा था वो उनके पैग़म्बरों की औलाद का वसीला लिया करते, अल्लाह तआ़ला पानी बरसाता, ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कहा हमारे यहाँ भी अ़ब्बास (रज़ि.) मौजूद हैं वो हमारे पैग़म्बर (ﷺ) के चचा हैं। चचा बाप की त़रह होता है। फिर उनके पास गये और उनको साथ लेकर मिम्बर पर आकर दुआ की। अल्लाह ने ख़ूब पानी बरसाया। बावजूद उसके कि ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) को इतनी फ़ज़ीलत ह़ासिल थी मगर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अहले शूरा या'नी अरकाने मज्लिस में जिनमें मुहाजिरीन अव्वलीन शरीक थे उनको दाख़िल नहीं किया क्योंकि वो फ़तहे मक्का तक मुसलमान नहीं हुए थे, उसके बाद मुसलमान हुए।

3710. हमसे ह़सन बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उनसे अबू अ़ब्दुल्लाह बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उनसे षुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अनस ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) क़ह़त़ के ज़माने में ह़ज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) को आगे बढ़ाकर बारिश की दुआ़ कराते थे और कहते कि ऐ अल्लाह! पहले हम अपने नबी (ﷺ) से बारिश की दुआ़ करते थे और तू हमें सैराबी अ़त़ा करता था और अब हम अपने नबी के चचा के ज़रिये बारिश की दुआ़ करते हैं। इसलिये हमें सैराबी अ़त़ा फ़र्मा। रावी ने बयान किया कि उसके बाद ख़ूब बारिश हुई।

(राजेअ़ : 1010)

٣٧١٠ - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ حَدَّثَنِي أَبِي عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُثَنَّى عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ كَانَ إِذَا قَحَطُوا اسْتَسْقَى بِالْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّا كُنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا ﷺ فَتَسْقِينَا، وَإِنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّنَا فَاسْقِنَا، قَالَ: فَيُسْقَوْنَ)).

[راجع: ١٠١٠]

तश्रीह : ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) रसूले करीम (ﷺ) के मुह़तरम चचा हैं। उ़मर में आपसे दो साल बड़े थे। उनकी माँ नमर बिन्ते क़ासित़ वो ख़ातून हैं जिन्होंने सबसे पहले ख़ाना का'बा को ग़िलाफ़ से मुज़य्यन किया। ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) क़ुरैश के बड़े सरदारों में से थे। मुजाहिद (रह.) का बयान है कि उन्होंने अपनी मौत के वक़्त सत्तर ग़ुलाम आज़ाद किये। बरोज़े जुम्आ 12 रजब 32 हिजरी में 88 साल की उ़म्र में वफ़ात पाई।

बाब 12 : हज़रत रसूले करीम (ﷺ) के रिश्तेदारों के फ़ज़ाइल और हज़रत फ़ातिमा बिन्तुन्नबी (ﷺ) के फ़ज़ाइल का बयान और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि फ़ातिमा (रज़ि.) जन्नत की औरतों की सरदार हैं

١٢- بَابُ مَنَاقِبِ قَرَابَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَمَنْقَبَةِ فَاطِمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا بِنْتِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَاطِمَةُ سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ))

आपकी वालिदा माजिदा हज़रत ख़दीजतुल कुबरा (रज़ि.) हैं। रमज़ान 2 हिजरी में उनका निकाह हज़रत अली (रज़ि.) से हुआ। ज़िलहिज्ज में रुख़्सती अमल में आई। हज़रत हसन व हुसैन (रज़ि.) आप ही के बत़्ने मुबारक से पैदा हुए। 28 साल की उम्र में आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के छः माह बाद आपने इंतिक़ाल फ़र्माया, रजियल्लाहु अन्हुमा व अरज़ाहा।

हाफ़िज़ (रह) ने कहा कि बाब का मतलब इसी फ़िक़्रे (क़राबत) से निकलता है और यहाँ क़राबत वालों से अब्दुल मुत्तलिब की औलाद मुराद है। मर्द हों या औरतें जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को देखा या आपकी सुह्बत में रहे जैसे हज़रत अली (रज़ि.) और उनकी औलाद, हज़रत हसन (रज़ि.), हज़रत हुसैन (रज़ि.) हज़रत मुहसिन (रज़ि.), हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.), उनकी साहबज़ादी उम्मे कुल्षुम (रज़ि.) जो हज़रत उमर (रज़ि.) की बीवी थीं। हज़रत जा'फ़र और उनकी औलाद अब्दुल्लाह और औन और मुहम्मद। कहते हैं एक बेटा और भी था अहमद। अक़ील और उनकी औलाद मुस्लिम बिन अक़ील, उम्मे हानी; हज़रत अली की बहन उनकी औलाद। हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब उनकी औलाद यअ़ला, उम्दह,उमामा। अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब उनके बेटे फ़ज़्ल, अब्दुल्लाह, क़ुष़म, उबैदुल्लाह, हारिष़, सईद, अब्दुर्रहमान, कष़ीर, औन। तमाम उनकी बेटियाँ उम्मे हबीबा, आमना, सफ़िया। अबू सुफ़यान बिन हारिष़ बिन अब्दुल मुत्तलिब, उनकी औलाद जा'फ़र, नौफ़िल, उनके बेटे मुग़ीरह, हारिष़। अब्दुल मुत्तलिब की बेटियाँ ष़क़ीला, उमैमा, अरवा, सफ़िया ये सब लोग और उनकीऔलाद क़यामत तक आँहज़रत (ﷺ) की क़राबत वालों में दाख़िल हैं (वहीदी)

3711. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा हमसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के यहाँ अपना आदमी भेजकर नबी करीम (ﷺ) से मिलने वाली मीराष़ का मुतालबा किया जो अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) को फ़ै की सूरत में दी थी। या'नी आपका मुतालबा मदीना की उस जायदाद के बारे में था जिसकी आमदनी से आँहज़रत (ﷺ) मसारिफ़े ख़ैर में ख़र्च करते थे और इसी तरह फ़दक की जायदाद और ख़ैबर के ख़ुमुस का भी मुतालबा किया। (राजेअ : 3092)

٣٧١١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ أَرْسَلَتْ إِلَى أَبِي بَكْرٍ تَسْأَلُهُ مِيْرَاثَهَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ فِيْمَا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ تَطْلُبُ صَدَقَةَ النَّبِيِّ ﷺ الَّتِي بِالْمَدِيْنَةِ وَفَدَكٍ، وَمَا بَقِيَ مِنْ خُمُسِ خَيْبَرَ)). [راجع: ٣٠٩٢]

3712. हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) ख़ुद फ़र्मा गए हैं कि हमारी मीराष़ नहीं होती। हम (अंबिया) जो कुछ छोड़ जाते हैं वो सदक़ा होता है और ये कि आले मुहम्मद के अख़राजात

٣٧١٢- فَقَالَ أَبُوبَكْرٍ: ((إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ نُورَثُ، مَا تَرَكْنَا فَهُوَ صَدَقَةٌ، إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ مِنْ هَذَا

उसी माल में से पूरे किये जाएँ मगर उन्हें ये हक़ नहीं होगा कि खाने के अलावा और कुछ तसर्रुफ़ करें और मैं, अल्लाह की क़सम हुज़ूर के सदक़े जो आपके ज़माने में हुआ करते थे उनमें कोई रद्दोबदल नहीं करूँगा बल्कि वही निज़ाम जारी रखूँगा जैसे हुज़ूर (ﷺ) ने क़ायम फ़र्माया था। फिर हज़रत अली (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आए और कहने लगे, ऐ अबूबक्र (रज़ि.)! हम आपकी फ़ज़ीलत व मर्तबे का इक़रार करते हैं। उसके बाद उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) से अपनी क़राबत का और अपने हक़ का ज़िक्र किया। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है आँहज़रत (ﷺ) की क़राबत वालों से सुलूक करना मुझको अपनी क़राबत वालों के साथ सुलूक करने से ज़्यादा पसन्द है। (राजेअ : 3093)

الْمَالُ - يَعْنِي مَالَ اللهِ - لَيْسَ لَهُمْ أَنْ يَزِيدُوا عَلَى الْمَأْكَلِ)). وَإِنِّي وَاللهِ لاَ أُغَيِّرُ شَيْئًا مِنْ صَدَقَةِ النَّبِيِّ ﷺ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهَا فِي عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، وَلأَعْمَلَنَّ فِيهَا بِمَا عَمِلَ فِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ. فَتَشَهَّدَ عَلِيٌّ ثُمَّ قَالَ : إِنَّا قَدْ عَرَفْنَا يَا أَبَا بَكْرٍ فَضِيلَتَكَ - وَذَكَرَ قَرَابَتَهُمْ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَحَقَّهُمْ - فَتَكَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَقَرَابَةُ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ أَصِلَ مِنْ قَرَابَتِي)).

[راجع: ٣٠٩٣]

3713. मुझे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वह्हाब ने ख़बर दी, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे वाक़िद ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद से सुना। वो हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से बयान करते थे, वो अबूबक्र (रज़ि.) से कि उन्होंने कहा, आँहज़रत (ﷺ) का ख़्याल आपके अहले बैत में रखो। (दीगर मक़ाम : 3751)

٣٧١٣- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ وَاقِدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَ : ((ارْقُبُوا مُحَمَّدًا ﷺ فِي أَهْلِ بَيْتِهِ)).

[طرفه في : ٣٧٥١].

या'नी उनसे मुहब्बत व एहतिराम से पेश आओ और उनका ध्यान रखो।

3714. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उययना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने उनसे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, फ़ातिमा (रज़ि.) मेरे जिस्म का टुकड़ा है। इसलिये जिसने उसे नाहक़ नाराज़ किया, उसने मुझे नाराज़ किया।

٣٧١٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((فَاطِمَةُ بَضْعَةٌ مِنِّي، فَمَنْ أَغْضَبَهَا أَغْضَبَنِي)).

3715. हमसे यह्या बिन क़ुज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उर्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपनी साहबज़ादी फ़ातिमा (रज़ि.) को अपने उस मर्ज़ के मौक़े पर बुलाया जिसमें आपकी वफ़ात हुई, फिर आहिस्ता से

٣٧١٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((دَعَا النَّبِيُّ ﷺ فَاطِمَةَ ابْنَتَهُ فِي شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ

كُنَّا، فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَبَكَتْ، ثُمَّ دَعَاهَا فَسَارَّهَا فَضَحِكَتْ. قَالَتْ: فَسَأَلْتُهَا عَنْ ذَلِكَ)). [راجع: ٣٦٢٣]

कोई बात कही तो वो रोने लगीं फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें बुलाया और आहिस्ता से कोई बात कही तो वो हंसने लगीं। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने उनसे उसके बारे में पूछा। (राजेअ़ : 3623)

٣٧١٦- ((فَقَالَتْ: سَارَّنِي النَّبِيُّ ﷺ فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ يُقْبَضُ فِي وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ فَبَكَيْتُ، ثُمَّ سَارَّنِي فَأَخْبَرَنِي أَنِّي أَوَّلُ أَهْلِ بَيْتِهِ أَتْبَعُهُ فَضَحِكْتُ)). [راجع: ٣٦٢٤]

3716. तो उन्होंने बताया कि पहले मुझसे हुज़ूर (ﷺ) ने आहिस्ता से ये फ़र्माया था कि हुज़ूर (ﷺ) अपनी इसी बीमारी में वफ़ात पा जाएँगे, मैं उस पर रोने लगी। फिर मुझसे हुज़ूर (ﷺ) ने आहिस्ता से फ़र्माया कि आप (ﷺ) के अहले बैत में सबसे पहले मैं आपसे जा मिलूँगी। इस पर मैं हंसी थी। (राजेअ़ : 3624)

तश्रीह : जैसा आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था वैसा ही हुआ कि आपकी वफ़ात के तक़रीबन छः माह बाद हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा (रज़ि.) का इंतिक़ाल हो गया। आँहज़रत (ﷺ) ने ये ख़बर वह्ये इलाही के ज़रिये से दी थी क्योंकि आप आलिमुल ग़ैब नहीं थे। हाँ अल्लाह पाक की तरफ़ से जो मा'लूम हो जाता वो फ़र्माते और फिर वो हर्फ़ ब हर्फ़ पूरा हो जाता। आलिमुल ग़ैब उसको कहते हैं जो ख़ुद ब ख़ुद बग़ैर किसी के बतलाए ग़ैब की ख़बरें पेश कर सके। ये इल्मे ग़ैब सिर्फ़ अल्लाह तआला को हासिल है और कोई नबी या वली ग़ैबदाँ नहीं हैं। क़ुर्आन पाक में अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) की ज़ुबानी ऐलान करा दिया है कि कह दो मैं ग़ैब जानने वाला नहीं हूँ। अगर आप ग़ैबदाँ होते तो जंगे उहुद का अ़ज़ीम हादसा पेश न आता।

١٣- بَابُ مَنَاقِبِ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

बाब 13 : हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ((هُوَ حَوَارِيُّ النَّبِيِّ ﷺ)). وَسُمِّيَ الْحَوَارِيُّونَ لِبَيَاضِ ثِيَابِهِمْ.

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि वो नबी करीम (ﷺ) के हवारी थे और उन्हें। (हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के हवारीन को) उनके सफ़ेद कपड़ों की वजह से कहते हैं (कुछ लोगों ने उनको धोबी बतलाया है)

आपकी कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह क़ुरैशी है। उनकी वालिदा हज़रत स़फ़िया (रज़ि.) अ़ब्दुल मुत्तलिब की बेटी और हुज़ूर (ﷺ) की फूफी हैं। सोलह साल की उ़म्र में इस्लाम लाए। उनके चचा ने धुएँ में उनका दम घोंट दिया ताकि ये इस्लाम छोड़ दें। मगर ये ष़ाबित क़दम रहे। अ़शर-ए-मुबश्शरह में से हैं। तमाम ग़ज़्वात में शरीक रहे। लम्बे क़द और गोरे रंग के थे। एक ज़ालिम अ़म्र बिन जरमूज़ नामी ने बस़रा की सरज़मीन पर 36 हिजरी में बउ़म्र 64 साल उनको शहीद कर दिया। वादी-ए-सबाअ़ में दफ़न हुए, फिर उनको बस़रा में मुंतक़िल किया गया। (रजियल्लाह)

٣٧١٧- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَرْوَانُ بْنُ الْحَكَمِ قَالَ ((أَصَابَ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ رُعَافٌ شَدِيدٌ سَنَةَ الرُّعَافِ حَتَّى حَبَسَهُ عَنِ الْحَجِّ وَأَوْصَى، فَدَخَلَ عَلَيْهِ رَجُلٌ

3717. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ली बिन मिस्हर ने, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मुझे मरवान बिन हकम ने ख़बर दी कि जिस साल नक्सीर फूटने की बीमारी फूट पड़ी थी उस साल उ़ष्मान (रज़ि.) की इतनी सख़्त नक्सीर फूटी कि आप हज्ज के लिये भी न जा सके और (ज़िन्दगी से मायूस होकर) वसिय्यत भी कर दी, फिर उनकी ख़िदमत में क़ुरैश के एक स़ाहब गये और कहा कि

مِنْ قُرَيْشٍ قَالَ : اسْتَخْلِفْ. قَالَ: وَقَالُوهُ؟ قَالَ : نَعَمْ. قَالَ : وَمَنْ؟ فَسَكَتَ. فَدَخَلَ عَلَيْهِ رَجُلٌ آخَرُ - أَحْسِبُهُ الْحَارِثَ - فَقَالَ: اسْتَخْلِفْ. فَقَالَ عُثْمَانُ : وَقَالُوا؟ فَقَالَ : نَعَمْ. قَالَ : وَمَنْ هُوَ؟ فَسَكَتَ. قَالَ : فَلَعَلَّهُمْ قَالُوا الزُّبَيْرَ؟ قَالَ: نَعَمْ. أَمَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّهُ لَخَيْرُهُمْ مَا عَلِمْتُ، وَإِنْ كَانَ لأَحَبَّهُمْ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).

[طرفه في : ٣٧١٨].

आप किसी को अपना ख़लीफ़ा बना दें । उ़स्मान (रज़ि.) ने दरयाफ्त फ़र्माया, क्या ये सबकी ख़्वाहिश है उन्होंने कहा जी हाँ। आपने पूछा कि किसे बनाऊँ? इस पर वो ख़ामोश हो गये। उसके बाद एक–दूसरे स़ाहब गये। मेरा ख़याल है कि वो हारिष़ थे। उन्होंने भी यही कहा कि आप किसी को ख़लीफ़ा बना दें। आपने उनसे भी पूछा, लोगों की राय किसके लिये है? इस पर वो भी ख़ामोश हो गये। तो आपने ख़ुद फ़र्माया, ग़ालिबन ज़ुबैर की त़रफ़ लोगों का रुज्हान है? उन्होंने कहा जी हाँ। फिर आपने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है मेरे इल्म के मुत़ाबिक़ भी वो उनमें सबसे बेहतर हैं और बिला शुब्हा वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की नज़रों में भी उनमें सबसे ज़्यादा मह़बूब थे।

(दीगर मक़ाम : 3718)

ये ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) की राय थी कि वो ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को अपने ख़लीफ़ा नामज़द कर दें मगर इल्मे इलाही में ये मुक़ाम ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के लिये मख़्सूस़ था। इसीलिये तक़्दीर के तह़त चौथे ख़लीफ़-ए-राशिद ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) क़रार पाए। इसी तर्तीब के साथ ये चारों खुलफ़-ए-राशिदीन कहलाते हैं और इसी तर्तीब से उनसे उन सबकी ख़िलाफ़त बरह़क़ है।

٣٧١٨- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ أَخْبَرَنِي أَبِي سَمِعْتُ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ ((كُنْتُ عِنْدَ عُثْمَانَ أَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: اسْتَخْلِفْ. قَالَ: وَقِيْلَ ذَاكَ؟ قَالَ : نَعَمْ، الزُّبَيْرُ. قَالَ : أَمَا وَاللهِ إِنَّكُمْ لَتَعْلَمُونَ أَنَّهُ خَيْرُكُمْ. ثَلاَثًا)).

[راجع: ٣٧١٧]

3718. मुझसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी कि मैंने मरवान से सुना कि मैं उ़स्मान (रज़ि.) की ख़िदमत में मौजूद था कि इतने में एक स़ाह़ब आए और कहा कि किसी को आप अपना ख़लीफ़ा बना दीजिए। आपने दरयाफ़्त फ़र्माया, क्या उसकी ख़्वाहिश की जा रही है? उन्होंने बताया कि जी हाँ ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) की त़रफ़ लोगों का रुज्हान है। आपने उस पर फ़र्माया ठीक है। तुमको भी मा'लूम है कि वो तुममें बेहतर हैं। आपने तीन मर्तबा ये बात दोहराई। (राजेअ़ : 3717)

٣٧١٩- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ هُوَ ابْنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ مُحَمَّدِ عَنْ مُحَمَّدِ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ : ((إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا، وَإِنَّ حَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ بْنُ

3719. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया जो अबू सलमा के स़ाहबज़ादे थे, उनसे मुह़म्मद ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर नबी के ह़वारी होते हैं और मेरे ह़वारी ज़ुबैर बिन अ़व्वाम (रजियल्लाहु अ़न्हु) हैं।

(राजेअ़ : 2846)

الْعَوَّامِ)). [راجع: ٢٨٤٦]

हवारी कुर्आन मजीद में हज़रत ईसा (अलैहि.) के फ़िदाइयों को कहा गया है। यूँ तो तमाम सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाह अज्मईन ही आँहज़रत (ﷺ) के फ़िदाई थे मगर कुछ ख़ुसूसियात की बिना पर आपने ये लक़ब हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को अता फ़र्माया।

3720. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन उर्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे अहज़ाब के मौक़े पर मुझे और अम्र बिन अबी सलमा (रज़ि.) को औरतों में छोड़ दिया गया था (क्योंकि ये दोनों हज़रात बच्चे थे) मैंने अचानक देखा कि हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) (आपके वालिद) अपने घोड़े पर सवार बनी क़ुरैज़ा (यहूदियों के एक क़बीले की) तरफ़ आ जा रहे हैं। दो या तीन बार ऐसा हुआ। फिर जब वहाँ से वापस आया तो मैंने अर्ज़ किया, अब्बाजान! मैंने आपको कई बार आते—जाते देखा। उन्होंने कहा, बेटे! क्या वाक़ई तुमने भी देखा था? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ। उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि कौन है जो बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ जाकर उनकी (नक़ल व हरकत के बारे में) ख़बर मेरे पास ला सके। उस पर मैं वहाँ गया और जब मैं (ख़बर लेकर) वापस आया तो आँहज़रत (ﷺ) ने (फ़र्ते मुसर्रत में) अपने वालिदैन का एक साथ ज़िक्र किया कर के फ़र्माया कि, मेरे माँ—बाप तुम पर फ़िदा हों।

٣٧٢٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَنْبَأَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنْتُ يَوْمَ الأَحْزَابِ جُعِلْتُ أَنَا وَعُمَرُ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ فِي النِّسَاءِ، فَنَظَرْتُ فَإِذَا أَنَا بِالزُّبَيْرِ عَلَى فَرَسِهِ يَخْتَلِفُ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا. فَلَمَّا رَجَعْتُ قُلْتُ : يَا أَبَتِ رَأَيْتُكَ تَخْتَلِفُ، قَالَ: أَوَ هَلْ رَأَيْتَنِي يَا بُنَيَّ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنْ يَأْتِ بَنِي قُرَيْظَةَ فَيَأْتِيْنِي بِخَبَرِهِمْ؟)) فَانْطَلَقْتُ، فَلَمَّا رَجَعْتُ جَمَعَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَوَيْهِ فَقَالَ : ((فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي)).

3721. हमसे अली बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन उर्वा ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद ने कि जंगे यरमूक के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) के सहाबा ने हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ि.) से कहा आप हमला क्यूँ नहीं करते ताकि हम भी आपके साथ हमला करें। चुनाँचे उन्होंने उन पर (रोमियों पर) हमला किया। उस मौक़े पर उन्होंने (रोमियों ने) आपके दो गहरे ज़ख़्म शाने पर लगाए। दरम्यान में वो ज़ख़्म था जो बद्र के मौक़े पर आपको लगा था। उर्वा ने कहा कि ज़ख़्म इतने गहरे थे कि अच्छे हो जाने के बाद) मैं बचपन में उन ज़ख़्मों के अंदर अपनी उँगलियाँ डालकर खेला करता था। (दीगर मक़ाम : 3973, 3975)

٣٧٢١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ ((أَنَّ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ قَالُوا لِلزُّبَيْرِ يَوْمَ وَقْعَةِ الْيَرْمُوكِ: أَلاَ تَشُدُّ فَنَشُدَّ مَعَكَ؟ فَحَمَلَ عَلَيْهِمْ فَضَرَبُوهُ ضَرْبَتَيْنِ عَلَى عَاتِقِهِ بَيْنَهُمَا ضَرْبَةٌ ضُرِبَهَا يَوْمَ بَدْرٍ. قَالَ عُرْوَةُ: فَكُنْتُ أُدْخِلُ أَصَابِعِي فِي تِلْكَ الضَّرَبَاتِ أَلْعَبُ وَأَنَا صَغِيْرٌ)).

[طرفاه في : ٣٩٧٣، ٣٩٧٥].

बाब 14 : हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह (रज़ि.) का

١٤- بَابُ ذِكْرِ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ

तज़्किरा और हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनके बारे में कहा कि नबी करीम (ﷺ) अपनी वफ़ात तक उनसे राज़ी थे

وَقَالَ عُمَرُ : تُوُفِّي النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ عَنْهُ رَاضٍ

उनकी कुन्नियत अबू मुहम्मद कुरैशी है। अशर-ए-मुबश्शरह में से हैं। ग़ज़्व-ए-उहुद में उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक की हिफ़ाज़त के लिये अपने हाथों को बतौरे ढाल पेश कर दिया। हाथों पर 75 ज़ख़्म आए। उँगलियाँ सुन्न हो गईं मगर आँहज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-अनवर की हिफ़ाज़त के लिये डटे रहे। हज़रत तलहा (रज़ि.) हसीन चेहरा गन्दुमी, बहुत ज़्यादा बालों वाले थे। जंगे जमल में बउम्र 64 साल शहीद हुए। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु।

उनका नसब ये था तलहा बिन उबैदुल्लाह बिन उष्मान बिन कअ़ब बिन मुर्रह। कअ़ब में आँहज़रत (ﷺ) के साथ मिल जाते हैं। जंगे जमल मे शरीक हुए। हज़रत अली (रज़ि.) ने बावजूद ये कि तलहा उनके मुख़ालिफ़ लश्कर या'नी हज़रत आइशा (रज़ि.) के साथ शरीक थे, जब उनकी शहादत की ख़बर सुनी तो इतना रोये कि आपकी दाढ़ी तर हो गई। मरवान ने उनको तीर से शहीद किया। (वहीदी)

3722,23. मुझसे मुहम्मद बिन अबीबक्र मुक़द्दमी ने बयान किया, उनसे मुअ़तमिर ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू उष्मान (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ उन जंगों में जिनमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुद शरीक हुए थे (उहुद की जंग में) तलहा (रज़ि.) और सअ़द (रज़ि.) के सिवा और कोई बाक़ी नहीं रहा था। (दीगर मक़ाम : 4060, 4061)

٣٧٢٢، ٣٧٢٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ قَالَ: ((لَمْ يَبْقَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي بَعْضِ تِلْكَ الأَيَّامِ الَّتِي قَاتَلَ فِيهِنَّ رَسُولُ اللهِ غَيْرُ طَلْحَةَ وَسَعْدٍ، عَنْ حَدِيثِهِمَا)).

[طرفه في : ٤٠٦٠].[طرفه في : ٤٠٦١].

3724. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने कि मैंने हज़रत तलहा (रज़ि.) का वो हाथ देखा है जिससे उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की (जंगे उहुद में) हिफ़ाज़त की थी कि वो बिलकुल बेकार हो चुका था।
(दीगर मक़ाम : 4063)

٣٧٢٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي خَالِدٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: ((رَأَيْتُ يَدَ طَلْحَةَ الَّتِي وَقَى بِهَا النَّبِيَّ ﷺ قَدْ شَلَّتْ)).

[طرفه في : ٤٠٦٣].

बाब 15 : हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास अज़् ज़ुहरी (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

١٥- بَابُ مَنَاقِبِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ الزُّهْرِيِّ

बनू ज़ुहरा नबी करीम (ﷺ) के मामूँ होते थे। इनका असल नाम सअ़द बिन अबी मालिक है।

وَبَنُو زُهْرَةَ أَخْوَالُ النَّبِيِّ ﷺ، وَهُوَ سَعْدُ بْنُ مَالِكٍ

तश्रीह : ये अशर-ए-मुबश्शरह में से हैं। कुरैशी ज़ुहरी हैं। सत्तरह साल की उम्र में इस्लाम लाए। अल्लाह तआ़ला के रास्ते में सबसे पहले तीरंदाज़ी करने वाले थे। मुस्तजाबुद्दअ़वात मशहूर थे। हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने इनको कूफ़ा का गवर्नर बनाया था। हुज़ूर (ﷺ) ने **इर्मि फ़िदाक उम्मी व उमी** तीरंदाज़ी करो तुम पर मेरे माँ—बाप फ़िदा हों, उनके लिये फ़र्माया

था। सत्तर साल की उम्र में 55 हिजरी में वफ़ात पाई। मदीना में दफ़न किये गये। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु। इनका नसबनामा ये है सअ़द बिन अबी वक़्क़ास बिन वुहैब बिन अ़ब्दे मुनाफ़ बिन ज़ुह्रा बिन किलाब बिन मुर्रह, ये किलाब पर आँहज़रत (ﷺ) से मिल जाते हैं और वुहैब हज़रत आमना आँहज़रत (ﷺ) की वालिदा माजिदा के चचा थे।

3725. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा कि मैंने यह्या से सुना, कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, कहा कि मैंने हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) सेसुना, वो बयान करते थे कि जंगे उहुद के मौक़े पर मेरे लिये नबी करीम (ﷺ) ने अपने वालिदैन को एक साथ जमा करके यूँ फ़र्माया कि मेरे माँ–बाप तुम पर फ़िदा हों।

(दीगर मक़ाम : 4055, 4056, 4057)

٣٧٢٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدًا يَقُولُ: ((جَمَعَ لِي النَّبِيُّ ﷺ أَبَوَيْهِ يَوْمَ أُحُدٍ)).

[أطرافه في: ٤٠٥٥، ٤٠٥٦، ٤٠٥٧].

3726. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हाशिम बिन हाशिम ने बयान किया, उनसे आमिर बिन सअ़द ने और उनसे उनके वालिद (सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे ख़ूब याद है। मैंने एक ज़माने में मुसलमानों का तीसरा हिस्सा अपने तईं देखा। इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा इस्लाम के तीसरे हिस्से से मुराद है कि रसूले करीम (ﷺ) के साथ सिर्फ़ तीन मुसलमान थे जिनमें तीसरा मुसलमान मैं था। (दीगर मक़ाम : 3727, 3858,)

٣٧٢٦- حَدَّثَنَا مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمٍ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((لَقَدْ رَأَيْتُنِي وَأَنَا ثُلُثُ الإِسْلاَمِ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ ثُلُثُ الإِسْلاَمِ يَقُولُ أَنَا ثَالِثُ ثَلاَثَةٍ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفاه في : ٣٧٢٧، ٣٨٥٨].

3727. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको इब्ने अबी ज़ायदा ने ख़बर दी, कहा हमसे हाशिम बिन हाशिम बिन उ़त्बा बिन अबी वक़्क़ास ने बयान किया, कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, कहा कि मैंने हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास से सुना। उन्होंने कहा कि जिस दिन मैं इस्लाम लाया, उसी दिन दूसरे (सबसे पहले इस्लाम में दाख़िल होने वाले हज़राते सहाबा) भी इस्लाम में दाख़िल हुए हैं। और मैं सात दिन तक उसी तौर पर रहा कि मैं इस्लाम का तीसरा फ़र्द था। इब्ने अबी ज़ायदा के साथ इस हदीष को अबू उसामा ने भी रिवायत किया।

(राजेअ़ : 3726)

٣٧٢٧- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يَقُولُ: سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ يَقُولُ : ((مَا أَسْلَمَ أَحَدٌ إِلاَّ فِي الْيَومِ الَّذِيْ أَسْلَمْتُ فِيْهِ، وَلَقَدْ مَكَثْتُ سَبْعَةَ أَيَّامٍ وَإِنِّي لَثُلُثُ الإِسْلاَمِ)). تَابَعَهُ أَبُو أُسَامَةَ.

[راجع: ٣٧٢٦].

तश्रीह : इस पर ये ए'तिराज़ हुआ है कि अबूबक्र (रज़ि.) और हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) और कई आदमी सअ़द से पहले इस्लाम लाए थे। कुछ ने कहा कि सअ़द ने अपने इल्म की रू से कहा मगर सहीह नहीं क्योंकि इब्ने अ़ब्दुल बर्र (रह) ने सअ़द से नक़ल किया कि मैं उन्नीस साल की उम्र में इस्लाम लाया, अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के हाथ पर। उस वक़्त मैं सातवाँ मुसलमान था। कुछ ने कहा सहीह इस हदीष की यूँ है, **मा अस्लम अहदुन फिल्यौमि अल्लज़ी अस्लमतु फीहि** या'नी जिस दिन मैं मुसलमान हुआ उस दिन कोई मुसलमान नहीं हुआ। हाफ़िज़ ने कहा इब्ने मुन्दह ने कहा मअ़रिफ़त में इस हदीष को यूँ ही नक़ल किया है इस सूरत में कोई इश्काल न रहेगा। (वहीदी)

3728. हमसे हाशिम ने बयान किया, कहा हमसे अम्र बिन औन ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने बयान किया कि मैंने सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि अरब में सबसे पहले अल्लाह के रास्ते में, मैंने तीरंदाज़ी की थी। (इब्तिद-ए-इस्लाम में) हम नबी करीम (ﷺ) के साथ इस तरह ग़ज़्वात में शिर्कत करते थे कि हमारे साथ पेड़ के पत्तों के सिवा खाने के लिये भी कुछ न होता था। उससे हमें ऊँट और बकरियों की तरह अजाबत होती थी। या'नी मिली हुई नहीं होती थी। लेकिन अब बनी असद का ये हाल है कि इस्लामी अह़काम पर अमल में मेरे अंदर ऐब निकालते हैं (चह ख़ोश) ऐसा हो तो मैं बिलकुल महरूम और बे नसीब ही रहा और मेरे सब काम बर्बाद हो गये। हुआ ये था कि बनी असद ने ह़ज़रत उमर (रज़ि.) से सअद (रज़ि.) की चुग़ली की थी, ये कहा था कि वो अच्छी तरह नमाज़ भी नहीं पढ़ते।

٣٧٢٨- حَدَّثَنَا هَاشِمٌ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((إِنِّي لأَوَّلُ الْعَرَبِ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيْلِ اللهِ، وَكُنَّا نَغْزُو مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا لَنَا طَعَامٌ إِلاَّ وَرَقُ الشَّجَرِ، حَتَّى إِنَّ أَحَدَنَا لَيَضَعُ كَمَا يَضَعُ الْبَعِيْرُ أَوِ الشَّاةُ مَا لَهُ خِلْطٌ، ثُمَّ أَصْبَحَتْ بَنُو أَسَدٍ تُعَزِّرُنِي عَلَى الإِسْلاَمِ لَقَدْ خِبْتُ إِذًا وَضَلَّ عَمَلِيْ. وَكَانُوا وَشَوا بِهِ إِلَى عُمَرَ قَالُوا: لاَ يُحْسِنُ يُصَلِّي)).

बाब 16 : नबी करीम (ﷺ) के दामादों का बयान अबुल आस़ बिन रबीअ भी उन ही में से हैं

١٦- بَابُ ذِكْرِ أَصْهَارِ النَّبِيِّ ﷺ. مِنْهُمْ أَبُو الْعَاصِ بْنِ الرَّبِيْعِ

3729. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा मुझसे अली बिन हुसैन ने बयान किया और उनसे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने बयान किया कि अली (रज़ि.) ने अबू जहल की लड़की को (जो मुसलमान थीं) पैग़ामे निकाह दिया। उसकी ख़बर जब ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) को हुई तो वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं और अर्ज़ किया कि आपकी क़ौम का ख़याल है कि आपको अपनी बेटियों की ख़ातिर (जब उन्हें कोई तकलीफ़ दे) किसी पर ग़ुस्सा नहीं आता। अब देखिए ये अली अबू जहल की बेटी से निकाह करना चाहते हैं। इस पर आँहुज़ूर (ﷺ) ने सह़ाबा को ख़िताब फ़र्माया। मैंने आपको ख़ुत्बा पढ़ते सुना, फिर आपने फ़र्माया, अम्मा बअद! मैंने अबुल आस़ बिन रबीअ से (ज़ैनब रज़ि. की, आपकी सबसे बड़ी बेटी) शादी की तो उन्होंने जो बात भी कही उसमें वो सच्चे उतरे और बिला शुब्हा फ़ातिमा भी मेरे

٣٧٢٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ قَالَ: ((إِنَّ عَلِيًّا خَطَبَ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ، فَسَمِعَتْ بِذَلِكَ فَاطِمَةُ، فَأَتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَزْعُمُ قَوْمُكَ أَنَّكَ لاَ تَغْضَبُ لِبَنَاتِكَ، وَهَذَا عَلِيٌّ نَاكِحٌ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ. فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَسَمِعْتُهُ حِيْنَ تَشَهَّدَ يَقُولُ: ((أَمَّا بَعْدُ أَنْكَحْتُ أَبَا الْعَاصِ بْنَ الرَّبِيْعِ فَحَدَّثَنِي وَصَدَقَنِي، وَإِنَّ فَاطِمَةَ بَضْعَةٌ مِنِّي، وَإِنِّي أَكْرَهُ أَنْ يَسُوءَهَا. وَاللهِ لاَ تَجْتَمِعُ بِنْتُ

(जिस्म का) एक टुकड़ा है और मुझे ये पसन्द नहीं कि कोई भी उसे तकलीफ़ दे। अल्लाह की क़सम, रसूलुल्लाह (ﷺ) की बेटी और अल्लाह तआला के एक दुश्मन की बेटी एक शख़्स के पास जमा नहीं हो सकतीं। चुनाँचे अली (रज़ि.) ने उस शादी का इरादा तर्क कर दिया। मुहम्मद बिन अम्र बिन हल्हला ने इब्ने शिहाब से ये इज़ाफ़ा किया है। उन्होंने अली बिन हुसैन से और उन्होंने मिस्वर (रज़ि.) से बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने बनी अब्दे शम्स के अपने एक दामाद का ज़िक्र किया और हुक़ूक़े दामादी की अदायगी की ता'रीफ़ फ़र्माई। फिर फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे जो बात भी कही सच्ची कही और जो वा'दा भी किया पूरा कर दिखाया।

رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِنْتُ عَدُوِّ اللهِ عِنْدَ رَجُلٍ وَاحِدٍ)). فَتَرَكَ عَلِيٌّ الْخِطْبَةَ)).
وَزَادَ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ حَلْحَلَةَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ مِسْوَرٍ ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَذَكَرَ صِهْرًا لَهُ مِنْ بَنِي عَبْدِ شَمْسٍ فَأَثْنَى عَلَيْهِ فِي مُصَاهَرَتِهِ إِيَّاهُ فَأَحْسَنَ، قَالَ: حَدَّثَنِي فَصَدَقَنِي، وَوَعَدَنِي فَوَفَى لِي)).

तश्रीह : हज़रत अबुल आस मुक़्सम बिन अर् रबीअ हैं। आँहज़रत (ﷺ) की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) उनके निकाह में थीं। बद्र के दिन इस्लाम क़ुबूल करके मदीना की तरफ़ हिजरत की। आँहज़रत (ﷺ) से सच्ची मुहब्बत रखते थे। जंगे यमामा में जामे शहादत नोश फ़र्माया। उनकी फ़ज़ीलत के लिये ये काफ़ी है कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी वफ़ादारी की ता'रीफ़ फ़र्माई। जब हज़रत अबुल आस (रज़ि.) का ये हाल है तो फिर अली (रज़ि.) से तअज्जुब है कि वो अपना वा'दा क्यूँ पूरा न करें! हुआ ये था कि अबुल आस (रज़ि.) ने हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) से निकाह होते वक़्त ये शर्त कर ली थी कि उनके रहने तक मैं दूसरी बीवी न करूंगा। इस शर्त को अबुल आस ने पूरा किया। शायद हज़रत अली (रज़ि.) ने भी यही शर्त की हो लेकिन जुवैरिया को पयाम देते वक़्त वो भूल गये थे। जब आँहज़रत (ﷺ) ने इताब (गुस्से) का ये ख़ुत्बा पढ़ा तो उनको अपनी शर्त याद आ गई और वो इस इरादे से बाज़ आए। कुछ ने कहा कि हज़रत अली (रज़ि.) से ऐसी कोई शर्त नहीं हुई थी लेकिन हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) बड़े रंजों में गिरफ़्तार थीं। वालिदा गुज़र गईं, तीनों बहनें गुज़र गईं, अकेली बाक़ी रह गई थीं। अब सौकन आने से वो परेशान होकर अंदेशा था कि उनकी जान को नुक़्सान पहुँचे। इसलिये आपने हज़रत अली (रज़ि.) पर इताब (गुस्सा) फ़र्माया था। (वहीदी)

बाब 17 : रसूले करीम (ﷺ) के गुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिषा के फ़ज़ाइल का बयान और हज़रत बराअ (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत ज़ैद बिन हारिषा से फ़र्माया था, तुम हमारे भाई और हमारे मौला हो.

١٧ - بَابُ مَنَاقِبِ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ مَوْلَى النَّبِيِّ ﷺ
وَقَالَ الْبَرَاءُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَنْتَ أَخُونَا وَمَوْلاَنَا))

तश्रीह : हज़रत ज़ैद बिन हारिषा की कुन्नियत अबू उसामा है। उनकी वालिदा सुअदा बिन्ते षअलबा हैं जो बनी मअन में से थीं आठ साल की उम्र में हज़रत ज़ैद को डाकुओं ने अग़वा करके मक्का में चार सौ दिरहम में बेच डाला। ख़रीदने वाले हकीम बिन हिज़ाम बिन ख़ुवैलिद थे जिन्होंने उनको ख़रीदकर अपनी फूफी हज़रत ख़दीजतुल कुबरा को दे दिया। आँहज़रत (ﷺ) से शादी के बाद हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने उनको रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये हिबा कर दिया। इब्तिदा में उनको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपना मुँह बोला बेटा बना लिया था और उनका निकाह अपनी आज़ादकर्दा लौण्डी उम्मे ऐमन से कर दिया था जिनसे उसामा (रज़ि.) पैदा हुए। उसके बाद ज़ैनब बिन्ते जहश से उनका निकाह हुआ। आयते क़ुर्आनी, **फ़लम्मा क़ज़ा ज़ैदुन मिन्हा वतरा** (अल अहज़ाब : 37) में इन्ही का नाम मज़्कूर है। ग़ज़्व-ए-मौता में बउम्र 55 साल 8 हिजरी में अमीरे लश्कर की हैषियत से शहीद कर दिये गये।

3730. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक फ़ौज भेजी और उसका अमीर उसामा बिन ज़ैद को बनाया। उनके अमीर बनाए जाने पर कुछ लोगों ने ए'तिराज़ किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर आज तुम इसके अमीर बनाए जाने पर ए'तिराज़ कर रहे हो तो इससे पहले इसके बाप के अमीर बनाए जाने पर भी तुमने ए'तिराज़ किया था और अल्लाह की क़सम वो (ज़ैद रज़ि.) इमारत के मुस्तहिक़ थे और मुझे सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ थे। और ये (उसामा रज़ि.) अब उनके बाद मुझे सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ हैं।

(दीगर मक़ाम : 4250, 4467, 4469, 6621, 7187)

٣٧٣٠- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ بَعْثًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ، فَطَعَنَ بَعْضُ النَّاسِ فِي إِمَارَتِهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ تَطْعَنُوا فِي إِمَارَتِهِ فَقَدْ كُنْتُمْ تَطْعَنُونَ فِي إِمَارَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلُ. وَايْمُ اللهِ إِنْ كَانَ لَخَلِيقًا لِلإِمَارَةِ، وَإِنْ كَانَ لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ، وَإِنَّ هَذَا لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ بَعْدَهُ)).

[أطرافه في : ٤٢٥٠، ٤٤٦٧، ٤٤٦٩، ٦٦٢٧، ٧١٨٧].

ये लश्कर आँहज़रत (ﷺ) ने मर्ज़ुल मौत में तैयार किया था और हुक्म फ़र्माया था कि फ़ौरन ही रवाना हो जाए मगर बाद में जल्दी आपकी वफ़ात हो गई। लश्कर मदीना के क़रीब ही से वापस लौट आया। फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में इसको तैयार करके रवाना किया।

3731. हमसे यह्या बिन क़ज़्आ़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक क़याफ़ा शनास मेरे यहाँ आया। नबी करीम (ﷺ) उस वक़्त वहीं तशरीफ़ रखते थे और उसामा बिन ज़ैद और ज़ैद बिन हारिषा (एक चादर में) लिपटे हुए थे (मुँह और जिस्म का सारा हिस्सा क़दमों के सिवा छुपा हुआ था) इस क़याफ़ा शनास ने कहा कि ये पाँव कुछ, कुछ से निकले हुए मा'लूम होते हैं (या'नी बाप बेटे के हैं) क़याफ़ा शनास ने फिर बताया कि हुज़ूर (ﷺ) उसके इस अंदाज़े पर बहुत ख़ुश हुए और फिर आप (ﷺ) ने आइशा (रज़ि.) से भी ये वाक़िया बयान किया। (राजेअ़ : 3555)

٣٧٣١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((دَخَلَ عَلَيَّ قَائِفٌ وَالنَّبِيُّ ﷺ شَاهِدٌ. وَأُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ وَزَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ مُضْطَجِعَانِ فَقَالَ: إِنَّ هَذِهِ الأَقْدَامَ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ، قَالَ فَسُرَّ بِذَلِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَعْجَبَهُ، فَأَخْبَرَ بِهِ عَائِشَةَ)).

[راجع: ٣٥٥٥]

बाब की मुताबक़त इस तरह से है कि आपको हज़रत ज़ैद (रज़ि.) से बहुत मुहब्बत थी। जब ही तो क़याफ़ा-शनास की इस बात से आप ख़ुश हुए। मुनाफ़िक़ ये ताना दिया करते थे कि उसामा का रंग काला है, वो ज़ैद के बेटे नहीं हैं।

बाब 18 : हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) का बयान

١٨- بَابُ ذِكْرِ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ

तश्रीह : उसामा, ज़ैद बिन ह़ारिष़ा क़ज़ाई के बेटे हैं। बाप और बेटे दोनों रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़ासुल ख़ास मह़बूब थे। उनकी वालिदा उम्मे ऐमन हैं। जिनकी गोद में रसूले करीम (ﷺ) की परवरिश हुई। ये हुज़ूर (ﷺ) के वालिदे माजिद ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह की लौण्डी थीं जिनको बाद में आँह़ज़रत (ﷺ) ने आज़ाद कर दिया था। वफ़ाते नबवी के वक़्त ह़ज़रत उसामा (रज़ि.) की उ़म्र बीस साल की थी। वादीयुल क़ुरा में बाद शहादते उ़ष़्मान (रज़ि.) उनकी वफ़ात हुई। रज़ियल्लाह अ़न्हु व अरज़ाहु।

३७٣٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّهُمْ شَأْنُ الْمَخْزُومِيَّةِ فَقَالُوا: مَنْ يَجْتَرِىءُ عَلَيْهِ إِلاَّ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ حِبُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ)).

[راجع: ٢٦٤٨]

3732. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़र्वा ने, और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि क़ुरैश मख़्ज़ूमिया औरत के मामले की वजह से बहुत रंजीदा थे। उन्होंने ये फ़ैसला आपस में किया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के सिवा, जो रसूलुल्लाह (ﷺ) को इंतिहाई अ़ज़ीज़ हैं, (उस औरत की सिफ़ारिश के लिये) और कौन जुर्अत कर सकता है। (राजेअ़ : 2638)

٣٧٣٣- وَحَدَّثَنَا عَلِيٌّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: ذَهَبْتُ أَسْأَلُ الزُّهْرِيَّ عَنْ حَدِيْثِ الْمَخْزُومِيَّةِ فَصَاحَ بِي، قُلْتُ لِسُفْيَانَ: فَلَمْ تَحْمِلْهُ عَنْ أَحَدٍ؟ قَالَ وَجَدْتُهُ فِي كِتَابٍ كَانَ كَتَبَهُ أَيُّوبُ بْنُ مُوسَى عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((أَنَّ امْرَأَةً مِنْ بَنِي مَخْزُومٍ سَرَقَتْ، فَقَالُوا: مَنْ يُكَلِّمُ فِيْهَا النَّبِيَّ ﷺ؟ فَلَمْ يَجْتَرِىءْ أَحَدٌ أَنْ يُكَلِّمَهُ فَكَلَّمَهُ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ، فَقَالَ: ((إِنَّ بَنِي إِسْرَائِيْلَ كَانَ إِذَا سَرَقَ فِيْهِمُ الشَّرِيْفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ فِيْهِمُ الضَّعِيْفُ قَطَعُوهُ. لَوْ كَانَتْ فَاطِمَةُ لَقَطَعْتُ يَدَهَا)).

[راجع: ٢٦٤٨]

3733. (दूसरी सनद) और हमसे अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने ज़ुह्री से मख़्ज़ूमिया की ह़दीष़ पूछी तो मुझ पर बहुत ग़ुस्सा हो गये। मैंने उस पर सुफ़यान से कहा तो फिर आप किसी और ज़रिये से इस ह़दीष़ की रिवायत नहीं करते? उन्होंने बयान किया कि अय्यूब बिन मूसा की लिखी हुई एक किताब में, मैंने ये ह़दीष़ देखी। वो ज़ुह्री से रिवायत करते थे, वो उ़र्वा से, वो ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से कि बनी मख़्ज़ूम की एक औरत ने चोरी कर ली थी। क़ुरैश ने (अपनी मजलिस में) सोचा कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में उस औरत की सिफ़ारिश के लिये कौन जा सकता है? कोई उसकी जुअत नहीं कर सकता। आख़िर ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने सिफ़ारिश की तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल में ये दस्तूर हो गया था कि जब कोई शरीफ़ आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर आदमी चोरी करता तो उसका हाथ काटते। अगर आज फ़ातिमा (रज़ि.) ने चोरी की होती तो मैं उसका भी हाथ काटता। (राजेअ़ : 2638)

ह़ज़रत उसामा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत के लिये यही काफ़ी है कि आम तौर पर क़ुरैश ने उनको दरबारे नबवी में सिफ़ारिश करने का अहल पाया। (रज़ि.)

٣٧٣٤- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَبَّادٍ يَحْيَى بْنُ عَبَّادٍ حَدَّثَنَا

3734. मुझसे ह़सन बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उ़बादा यह़्या बिन अ़ब्बाद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे माजिशून ने बयान किया, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने

الْمَاجِشُونُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: نَظَرَ ابْنُ عُمَرَ يَوْمًا - وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ - إِلَى رَجُلٍ يَسْحَبُ ثِيَابَهُ فِي نَاحِيَةٍ مِنَ الْمَسْجِدِ فَقَالَ: انْظُرْ مَنْ هَذَا؟ لَيْتَ هَذَا عِنْدِي. قَالَ لَهُ إِنْسَانٌ: أَمَا تَعْرِفُ هَذَا يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ؟ هَذَا مُحَمَّدُ بْنُ أُسَامَةَ. فَطَأْطَأَ ابْنُ عُمَرَ رَأْسَهُ وَنَقَرَ بِيَدَيْهِ فِي الأَرْضِ، ثُمَّ قَالَ: لَوْ رَآهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَحَبَّهُ)).

ख़बर दी कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने एक दिन एक शख़्स को मस्जिद में देखा कि अपना कपड़ा एक कोने में फैला रहे थे। उन्होंने कहा देखो ये कौन साहब हैं, काश! ये मेरे क़रीब होते। एक शख़्स ने कहा ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान! क्या आप उन्हें नहीं पहचानते? ये मुहम्मद बिन उसामा (रज़ि.) हैं। इब्ने दीनार ने बयान किया कि ये सुनते ही ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने अपना सर झुका लिया और अपने हाथों से ज़मीन कुरेदने लगे फिर बोले अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) उन्हें देखते तो यक़ीनन आप (ﷺ) उनसे मुहब्बत फ़र्माते।

٣٧٣٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ : سَمِعْتُ أَبِي حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا حَدَّثَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَأْخُذُهُ وَالْحَسَنَ فَيَقُولُ : ((اللَّهُمَّ أَحِبَّهُمَا فَإِنِّي أُحِبُّهُمَا)).

[طرفاه في : ٣٧٤٧، ٦٠٠٣].

3735. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने बाप से सुना, कहा हमसे अबू उ़स्मान ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) उन्हें और ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) को पकड़ लेते और फ़र्माते ऐ अल्लाह! तू उन्हें अपना महबूब बना कि मैं इनसे मुहब्बत करता हूँ।

(दीगर मक़ाम : 3747, 6003)

٣٧٣٦- وَقَالَ نُعَيْمٌ عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي مَوْلًى لأُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ أَنَّ الْحَجَّاجَ بْنَ أَيْمَنَ ابْنِ أُمِّ أَيْمَنَ - وَكَانَ أَيْمَنُ ابْنُ أُمِّ أَيْمَنَ أَخَا أُسَامَةَ لأُمِّهِ - وَهُوَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ، فَرَآهُ ابْنُ عُمَرَ لَمْ يُتِمَّ رُكُوعَهُ وَلاَ سُجُودَهُ فَقَالَ : أَعِدْ)). [طرفه في : ٣٧٣٧].

3736. और नईम ने इब्नुल मुबारक से बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के एक मौला (ह़रमला) ने ख़बर दी कि ह़ज्जाज बिन ऐमन बिन उम्मे ऐमन को अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने देखा कि (नमाज़ में) उन्होंने रुकूअ़ और सज्दा पूरी त़रह नहीं अदा किया। (ऐमन इब्ने उम्मे ऐमन, उसामा (रज़ि.) की माँ की त़रफ़ से भाई थे। ऐमन (रज़ि.) क़बीला अंसार के एक फ़र्द थे) तो इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने उनसे कहा कि (नमाज़) दोबारा पढ़ लो। (दीगर मक़ाम : 3737)

٣٧٣٧- قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : وَحَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ نَمِرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي حَرْمَلَةُ مَوْلَى أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ أَنَّهُ

3737. अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी रह) ने बयान किया और मुझसे सुलैमान बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन नमिर ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के मौला हरमला ने बयान किया कि वो अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की

ख़िदमत में हाज़िर थे कि हज्जाज बिन ऐमन (मस्जिद के) अंदर आए न उन्होंने रुकूअ पूरी तरह अदा किया था और न सज्दा। इब्ने उमर (रज़ि.) ने उनसे फ़र्माया कि नमाज़ दोबारा पढ़ लो, फिर जब वो जाने लगे तो उन्होंने मुझसे पूछा कि ये कौन हैं? मैंने अर्ज़ किया हज्जाज बिन ऐमन इब्ने उम्मे ऐमन हैं। इस पर आपने कहा अगर उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) देखते तो बहुत अज़ीज़ रखते। फिर आपने हुज़ूर (ﷺ) की उसामा (रज़ि.) और उम्मे ऐमन (रज़ि.) की तमाम औलाद से मुहब्बत का ज़िक्र किया। इमाम बुख़ारी (रह) ने बयान किया और मुझसे मेरे कुछ असातिज़ा ने बयान किया और उनसे सुलैमान ने कि उम्मे ऐमन (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) को गोद लिया था। (राजेअ : 3736)

بَيْنَمَا هُوَ مَعَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ إِذْ دَخَلَ الْحَجَّاجُ بْنُ أَيْمَنَ، فَلَمْ يُتِمَّ رُكُوعَهُ وَلاَ سُجُودَهُ فَقَالَ: أَعِدْ. فَلَمَّا وَلَّى قَالَ لِي ابْنُ عُمَرَ: مَنْ هَذَا؟ قُلْتُ: الْحَجَّاجُ بْنُ أَيْمَنَ ابْنِ أُمِّ أَيْمَنَ. فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: لَوْ رَأَى هَذَا رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَحَبَّهُ. فَذَكَرَ حُبَّهُ وَمَا وَلَدَتْهُ أُمُّ أَيْمَنَ)). قَالَ: وَحَدَّثَنِي بَعْضُ أَصْحَابِي عَنْ سُلَيْمَانَ ((وَكَانَتْ حَاضِنَةَ النَّبِيِّ ﷺ)). [راجع: ٣٧٣٦]

तश्रीह : ऐमन के बाप या'नी उम्मे ऐमन के पहले शौहर का नाम उबैद बिन उमर हब्शी था। ऐमन जंगे हुनैन में शहीद हो चुके थे। उन ही उम्मे ऐमन (रज़ि.) के बेटे हज़रत उसामा (रज़ि.) हैं।

बाब 19 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

١٩- بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

तश्रीह : इल्म और ज़ुहद व तक़्वा में ये यक्ता-ए-रोज़गार थे। अपनी हयाते तय्यिबा में एक हज़ार से भी ज़ायदा गुलामों को आज़ाद कराया। 73 हिजरी में 84 या 86 साल की उम्र में उनकी शहादत हुई। हज्जाज ने अपने अंदरूनी कपट की बिना पर ज़हर में बुझे हुए एक नेज़े से शहीद करा दिया। रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु। उनकी कुन्नियत अबू अब्दुर्रहमान थी।

3738. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सालिम ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब मौजूद थे तो जब भी कोई शख़्स कोई ख़्वाब देखता, हुज़ूर (ﷺ) से उसे बयान करता, मेरे दिल में भी ये तमन्ना पैदा हो गई कि मैं भी कोई ख़्वाब देखूँ और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से बयान करूँ। मैं उन दिनों कुँवारा था और नौ उम्र भी था, मैं आप (ﷺ) के ज़माने में मस्जिद में सोया करता था तो मैंने ख़्वाब में दो फ़रिश्तों को देखा कि मुझे पकड़कर दोज़ख़ की तरफ़ ले गये। मैंने देखा कि वो बलदार कुँए की तरह पेच दर पेच थी। कुँए ही की तरह उसके भी दो किनारे थे और उसके अंदर कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें मैं पहचानता था, मैं उसे देखते ही कहने लगा, दोज़ख़ से मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ, दोज़ख़ से मैं अल्लाह की पनाह चाहता

٣٧٣٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ الرَّجُلُ فِي حَيَاةِ النَّبِيِّ ﷺ إِذَا رَأَى رُؤْيَا قَصَّهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَتَمَنَّيْتُ أَنْ أَرَى رُؤْيَا أَقُصُّهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، وَكُنْتُ غُلاَمًا أَعْزَبَ، وَكُنْتُ أَنَامُ فِي الْمَسْجِدِ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، فَرَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّ مَلَكَيْنِ أَخَذَانِي فَذَهَبَا بِي إِلَى النَّارِ، فَإِذَا هِيَ مَطْوِيَّةٌ كَطَيِّ الْبِئْرِ، وَإِذَا لَهُمَا قَرْنَانِ كَقَرْنَي الْبِئْرِ، وَإِذَا

हूँ। उसके बाद मुझसे एक—दूसरे फ़रिश्ते की मुलाक़ात हुई, उसने मुझसे कहा कि डर न खा। मैंने अपना ये ख़्वाब हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) से बयान किया। (राजेअ : 440)

فِيْهَا نَاسٌ قَدْ عَرَفْتُهُمْ. فَجَعَلْتُ أَقُولُ: أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ النَّارِ، أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ النَّارِ. فَلَقِيْتُ أَوْ فَلَقِيَهُ مَلَكٌ آخَرُ فَقَالَ لِي: لَنْ تُرَاعَ. فَقَصَصْتُهَا عَلَى حَفْصَةَ)).

[راجع: ٤٤٠]

3739. हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से मेरा ख़्वाब बयान किया तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अ़ब्दुल्लाह बहुत अच्छा लड़का है। काश! रात में वो तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करता। सालिम ने बयान किया कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह उसके बाद रात में बहुत कम सोया करते थे। (राजेअ : 1122)

٣٧٣٩- ((فَقَصَّتْهَا حَفْصَةُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: نِعْمَ الرَّجُلُ عَبْدُ اللهِ، لَوْ كَانَ يُصَلِّي بِاللَّيْلِ)). قَالَ سَالِمٌ: فَكَانَ عَبْدُ اللهِ لاَ يَنَامُ مِنَ اللَّيْلِ إِلاَّ قَلِيْلاً)).

[راجع: ١١٢٢]

3740,41. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सालिम ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने अपनी बहन हफ़्सा (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया था, अ़ब्दुल्लाह सालेह (नेक) आदमी है। (राजेअ : 440, 1122)

٣٧٤٠، ٣٧٤١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنْ أُخْتِهِ حَفْصَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا: ((إِنَّ عَبْدَ اللهِ رَجُلٌ صَالِحٌ)).

[راجع: ٤٤٠، ١١٢٢]

बाब 20 : हज़रत अ़म्मार और हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٢٠- بَابُ مَنَاقِبِ عَمَّارٍ وَحُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

तश्रीह : हज़रत अ़म्मार बिन यासिर अ़नसी हैं। बनू मख़्ज़ूम के आज़ादकर्दा और हलीफ़ थे। उनके मुफ़स्सल हालात पीछे बयान हो चुके हैं। जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथ थे। 37 हिजरी में बउम्र 93 साल वहीं शहीद हुए। रज़ियल्लाहु व अरज़ाहु। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़ास राज़दारों में हैं। शहरे मदयन में उनकी वफ़ात हुई। उनकी वफ़ात का वाक़िया हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की शहादत के चालीस रात बाद 35 हिजरी में पेश आया।

3742. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने बयान किया कि मैं जब शाम आया तो मैंने दो रकअ़त नमाज़ पढ़कर ये दुआ की, कि ऐ अल्लाह! मुझे कोई नेक साथी अ़ता फ़र्मा। फिर मैं एक क़ौम के पास आया और उनकी मज्लिस में बैठ गया, थोड़ी ही देर बाद एक बुज़ुर्ग आए

٣٧٤٢- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيْلُ عَنِ الْمُغِيْرَةِ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: ((قَدِمْتُ الشَّامَ، فَصَلَّيْتُ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ قُلْتُ: اللَّهُمَّ يَسِّرْ لِي جَلِيْسًا صَالِحًا. فَأَتَيْتُ قَوْمًا فَجَلَسْتُ إِلَيْهِمْ، فَإِذَا

और मेरे पास बैठ गये। मैंने पूछा ये कौन बुज़ुर्ग हैं? लोगों ने बताया कि ये हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) हैं। इस पर मैंने अर्ज़ किया कि मैंने अल्लाह तआला से दुआ की थी कि कोई नेक साथी मुझे अता फ़र्मा। तो अल्लाह तआला ने आपको मुझे इनायत फ़र्माया। उन्होंने दरयाफ़्त किया, तुम्हारा वतन कहाँ है? मैंने अर्ज़ किया कूफ़ा है। उन्होंने कहा क्या तुम्हारे यहाँ इब्ने उम्मे अब्द, साहिबुल नअलन, साहब विसादा, व मुतह्हरा (या'नी अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.) नहीं हैं? क्या तुम्हारे यहाँ वो नहीं हैं जिन्हें अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) की ज़ुबानी शैतान से पनाह दे चुका है कि वो उन्हें कभी ग़लत रास्ते पर नहीं ले जा सकता। (मुराद अम्मार रज़ि. से थी) क्या तुममें वो नहीं हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के बताए हुए बहुत से भेदों के हामिल हैं जिन्हें उनके सिवा और कोई नहीं जानता। (या'नी हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि. उसके बाद उन्होंने दरयाफ़्त फ़र्माया अब्दुल्लाह (रज़ि.) आयत वल्लैलि इज़ा यग़्शा की तिलावत किस तरह करते हैं? मैंने उन्हें पढ़कर सुनाई कि, वल्लैलि इज़ा यग़्शा वन्नहारि इज़ा तजल्ला वमा ख़लकज़् ज़कर वल् उन्षा इस पर उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुद अपनी ज़ुबाने मुबारक से मुझे भी इसी तरह याद कराया था। (राजेअ : 2387)

شَيْخٌ قَدْ جَاءَ حَتَّى جَلَسَ إِلَى جَنْبِي، قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: أَبُو الدَّرْدَاءِ. فَقُلْتُ: إِنِّي دَعَوْتُ اللهَ أَنْ يُيَسِّرَ لِي جَلِيْسًا صَالِحًا، فَيَسَّرَكَ لِي. قَالَ: مِمَّنْ أَنْتَ؟ قُلْتُ مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ. قَالَ أَوَلَيْسَ عِنْدَكُمْ ابْنُ أُمِّ عَبْدٍ صَاحِبُ النَّعْلَيْنِ وَالْوِسَادِ وَالْمِطْهَرَةِ؟ أَفِيكُمُ الَّذِي أَجَارَهُ اللهُ مِنَ الشَّيْطَانِ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ؟ أَوَ لَيْسَ فِيكُمْ صَاحِبُ سِرِّ النَّبِيِّ ﷺ الَّذِي لاَ يَعْلَمُ أَحَدٌ غَيْرُهُ؟ ثُمَّ قَالَ : كَيْفَ يَقْرَأُ عَبْدُ اللهِ: ﴿وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى﴾ فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ: ﴿وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى وَ مَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالأُنْثَى﴾ قَالَ: وَاللهِ لَقَدْ أَقْرَأَنِيهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ فِيهِ إِلَى فِيَّ)).

[راجع: ٢٣٨٧]

मशहूर रिवायत व मा खलक़ज़्ज़कर वल्उन्षा - वज़्ज़कर वल्उन्षा ही है। कहते हैं कि पहले ये आयत यूँ उतरी थी, वज़् ज़कर वल उन्षा फिर वमा ख़लक़ का लफ़्ज़ उसमें ज़्यादा हुआ लेकिन अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) और अबू दर्दा (रज़ि.) को इसकी ख़बर न हुई वो पहली क़िरात ही पढ़ते रहे।

3743. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह ने बयान किया, उनसे इब्राहीम ने बयान किया कि अल्क़मा (रज़ि.) शाम में तशरीफ़ ले गये और मस्जिद में जाकर ये दुआ की, ऐ अल्लाह! मुझे एक नेक साथी अता फ़र्मा, चुनाँचे आपको हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) की सुहबत नसीब हुई। हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने दरयाफ़्त किया, तुम्हारा ता'ल्लुक़ कहाँ से है? अर्ज़ किया कि कूफ़ा से। इस पर उन्होंने कहा, क्या तुम्हारे यहाँ नबी करीम (ﷺ) के राज़दार नहीं हैं कि जिन्हें उनके सिवा और कोई नहीं जानता।

٣٧٤٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُغِيْرَةَ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ: ((ذَهَبَ عَلْقَمَةُ إِلَى الشَّامِ، فَلَمَّا دَخَلَ الْمَسْجِدَ قَالَ: اللَّهُمَّ يَسِّرْ لِي جَلِيْسًا صَالِحًا. فَجَلَسَ إِلَى أَبِي الدَّرْدَاءِ، فَقَالَ: أَبُو الدَّرْدَاءِ: مِمَّنْ أَنْتَ؟ قَالَ: مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ. قَالَ: أَلَيْسَ فِيكُمْ - أَوْ مِنْكُمْ - صَاحِبُ السِّرِّ الَّذِي لاَ يَعْلَمُهُ غَيْرُهُ؟ يَعْنِي

(उनकी मुराद हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ि.) से थी) उन्होंने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया जी हाँ मौजूद हैं। फिर उन्होंने कहा क्या तुममें वो शख़्स नहीं हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने नबी की ज़ुबानी शैतान से अपनी पनाह दी थी। उनकी मुराद अम्मार (रज़ि.) से थी। मैंने अर्ज़ किया कि जी हाँ वो भी मौजूद हैं। उसके बाद उन्होंने दरयाफ़्त किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) आयत वल्लैलि इज़ा यग़्शा वन्नहारि इज़ा तजल्ला की क़िरात किस तरह करते थे? मैंने कहा कि वो (मा ख़लक़ के हज़फ़ के साथ) वज़् ज़कर वल उन्सा पढ़ा करते थे। इस पर उन्होंने कहा कि ये शाम वाले हमेशा इस कोशिश में रहे कि इस आयत की तिलावत को जिस तरह मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था, इससे मुझे हटा दें।

(राजेअ : 2387)

حُذَيْفَةَ. قَالَ: قُلْتُ بَلَى. قَالَ: أَلَيْسَ فِيكُمْ - أَوْ مِنْكُمْ - الَّذِيْ أَجَارَهُ اللهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ ﷺ؟ يَعْنِي مِنَ الشَّيْطَانِ، يَعْنِي عَمَّارًا، قُلْتُ : بَلَى. قَالَ: أَلَيْسَ فِيكُمْ - أَوْ مِنْكُمْ - صَاحِبُ السِّوَاكِ، وَالْوِسَادِ وَالسِّرَارِ؟ قَالَ: بَلَى. قَالَ: كَيْفَ كَانَ عَبْدُ اللهِ يَقْرَأُ: ﴿وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى﴾؟ قُلْتُ: ﴿وَ الذَّكَرِ وَالأُنْثَى﴾. قَالَ : مَا زَالَ بِي هَؤُلاَءِ حَتَّى كَادُوا يَسْتَنْزِلُونَنِي عَنْ شَيْءٍ سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ)).[راجع: ٢٣٨٧]

बाब 21 : हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٢١- بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ الْجَرَّاحِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

तशरीह : हज़रत अबू उबैदह आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जर्राह फ़हरी क़ुरैशी हैं। अशर-ए-मुबश्शरह में से हैं। इस उम्मत के अमीन उनका लक़ब है। हब्शा की तरफ़ दो मर्तबा हिजरत की। ग़ज़्व-ए-उहुद में आँहज़रत (ﷺ) के चेहरा मुबारक में फ़ौलादी टोप की जो दो कड़ियाँ घुस गई थीं, जिनकी वजह से हुज़ूर (ﷺ) के दो दांत भी शहीद हो गये, उन कड़ियों को चेहर-ए-मुबारक से उन ही बुज़ुर्ग ने खींचा था। क़द के लम्बे, ख़ूबसूरत चेहरा वाले, हल्की दाढ़ी वाले थे। अम्वास के ताऊन में 18 हिजरी में बउम्र 58 साल शहीद हुए। नमाज़े जनाज़ा हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) ने पढ़ाई थी।

3744. हमसे अम्र बिन अली ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, हर उम्मत में अमीन होते हैं और इस उम्मत के अमीन अबू उबैदा बिन जर्राह हैं। (रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाह)

(दीगर मक़ाम : 4382, 7255)

٣٧٤٤- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينًا، وَإِنَّ أَمِينَنَا أَيَّتُهَا الأُمَّةُ أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ)).

[طرفاه في : ٤٣٨٢، ٧٢٥٥].

3745. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे सिलह ने और उनसे हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अहले नजरान से फ़र्माया, मैं तुम्हारे यहाँ एक अमीन को

٣٧٤٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ صِلَةَ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ

भेजूँगा जो हक़ीक़ी मा'नों में अमीन होगा। ये सुनकर तमाम सहाबा किराम (रज़ि.) को शौक़ हुआ लेकिन आप (ﷺ) ने हज़रत अबू उबैदह (रज़ि.) को भेजा।

(दीगर मक़ाम : 4380, 4381, 7354)

لأَهْلِ نَجْرَانَ: ((لأَبْعَثَنَّ - عَلَيْكُمْ، - أَمِيْنًا حَقَّ أَمِيْنٍ)). فَأَشْرَفَ أَصْحَابُهُ، فَبَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ.

[أطرافه في : ٤٣٨٠، ٤٣٨١، ٧٣٥٤].

बाब 21 : हज़रत मुस्अब बिन उमैर (रज़ि.) का बयान

بَابُ ذِكْرِ مُصْعَبِ بْنِ عُمَيْرٍ

तश्रीह : ये क़ुरैशी अदवी बुज़ुर्ग सहाबा में से हैं। इस्लाम से पहले बड़े बाँकपन से रहा करते थे। उम्दातरीन लिबास ज़ैब तन किया करते। इस्लाम लाने के बाद दुनिया से बेनियाज़ हो गये। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको पहले ही मुबल्लिग़ बनाकर मदीना भेज दिया था। जब वहाँ इस्लाम की इशाअत हो गई तो हुज़ूर (ﷺ) की इजाज़त से उन्होंने मदीना में जुम्आ क़ायम कर लिया। जंगे उहुद में बउम्र 40 साल शहादत पाई। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) को अपनी शराइत के मुताबिक़ कोई हदीष़ इस बाब के तहत लाने को न मिली होगी। इसलिये ख़ाली बाब मुनअक़िद करके हज़रत मुस्अब बिन उमैर (रज़ि.) के फ़ज़ाइल की तरफ़ इशारा कर दिया कि उनके भी फ़ज़ाइल मुसल्लम हैं जैसा कि दूसरी अहादीष़ मौजूद हैं।

बाब 22 : हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٢٢ - بَابُ مَنَاقِبِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

और नाफ़ेअ बिन जुबैर ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत हसन (रज़ि.) को गले से लगाया।

قَالَ نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ((عَانَقَ النَّبِيُّ ﷺ الْحَسَنَ))

हज़रत हसन (रज़ि.) की कुन्नियत अबू मुहम्मद पैदाईश माहे रमज़ान 3 हिजरी में हुई। और वफ़ात 50 हिजरी में हुई। हज़रत हुसैन (रज़ि.) की विलादत शाबान 4 हिजरी में हुई और शहादत 61 हिजरी में हुई। उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह थी।

3746. हमसे सदक़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उययना ने बयान किया, कहा हमसे अबू मूसा ने बयान किया, उनसे हसन ने, उन्होंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ फ़र्मा थे और हज़रत हसन (रज़ि.) आप (ﷺ) के पहलू में थे। आप (ﷺ) कभी लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होते और फिर हसन (रज़ि.) की तरफ़ और फ़र्माते, मेरा ये बेटा सरदार है और उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसके ज़रिये मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह कराएगा। (राजेअ : 2804)

٣٧٤٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى عَنِ الْحَسَنِ سَمِعَ أَبَا بَكْرَةَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ وَالْحَسَنُ إِلَى جَنْبِهِ، يَنْظُرُ إِلَى النَّاسِ مَرَّةً وَإِلَيْهِ مَرَّةً وَيَقُولُ: ((ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ، وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ)). [راجع: ٢٧٠٤]

तश्रीह : हज़रत हसन (रज़ि.) के बारे में पेशीनगोई हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में पूरी हुई जबकि हज़रत हसन (रज़ि.) और हज़रत मुआविया (रज़ि.) की सुलह से जंग का एक बड़ा ख़तरा टल गया। अल्लाह वालों की यही निशानी होती है कि वो ख़ुद नुक़्सान बर्दाश्त कर लेते हैं मगर फ़ित्ना फ़साद नहीं चाहते।

3747. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअतमिर

٣٧٤٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ

ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अबू उ़ष्मान ने बयान किया और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उन्हें और ह़सन (रज़ि.) को पकड़कर ये दुआ़ करते थे कि ऐ अल्लाह! मुझे इनसे मुह़ब्बत है तू भी इनसे मुह़ब्बत रख। अव कमा क़ाल। (राजेअ़ : 3735)

قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَأْخُذُهُ وَالْحَسَنَ وَيَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُمَا فَأَحِبَّهُمَا. أَوْ كَمَا قَالَ)). [راجع: ٣٧٣٥]

3748. मुझसे मुह़म्मद बिन हुसैन बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे हुसैन बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि जब ह़ज़रत हुसैन (रज़ि.) का सरे मुबारक उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास लाया गया और एक त़श्त में रख दिया गया तो वो बदबख़्त उस पर लकड़ी से मारने लगा और आपके हुस्न और ख़ूबसूरती के बारे में भी कुछ कहा (कि मैंने इससे ज़्यादा ख़ूबसूरत चेहरा नहीं देखा) इस पर ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि ह़ज़रत हुसैन (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से सबसे ज़्यादा मुशाब थे। उन्होंने वस्मा का ख़िज़ाब इस्ते'माल कर रखा था।

٣٧٤٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أُتِيَ عُبَيْدُ اللهِ بْنِ زِيَادٍ بِرَأْسِ الْحُسَيْنِ فَجُعِلَ فِي طَسْتٍ فَجَعَلَ يَنْكُتُ وَقَالَ فِي حُسْنِهِ شَيْئًا، فَقَالَ أَنَسٌ: كَانَ أَشْبَهَهُمْ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَانَ مَخْضُوبًا بِالْوَسْمَةِ)).

3749. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़दी ने ख़बर दी, कहा कि मैंने बरा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) आपके काँधे मुबारक पर थे और आप (ﷺ) ये फ़र्मा रहे थे कि ऐ अल्लाह! मुझे इससे मुह़ब्बत है तू भी इससे मुह़ब्बत रख।

٣٧٤٩- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ الْمِنْهَالِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيٌّ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَالْحَسَنُ عَلَى عَاتِقِهِ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ! إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ)).

3750. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि मुझे उ़मर बिन सईद बिन अबी हुसैन ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे उ़क़्बा बिन ह़ारिष़ ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को देखा कि आप (रज़ि.) ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) को उठाए हुए हैं और फ़र्मा रहे हैं, मेरे बाप इन पर फ़िदा हों। ये नबी करीम (ﷺ) से मुशाबेह हैं, अ़ली से नहीं और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) वहीं मुस्कुरा रहे थे। (राजेअ़ : 3542)

٣٧٥٠- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: ((رَأَيْتُ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَحَمَلَ الْحَسَنَ وَهُوَ يَقُولُ: بِأَبِي شَبِيهٌ بِالنَّبِيِّ، وَلَيْسَ شَبِيهٌ بِعَلِيٍّ. وَعَلِيٌّ يَضْحَكُ)). [راجع: ٣٥٤٢]

3751. मुझसे यह़्या बिन मुईन और स़दक़ा ने बयान किया,

٣٧٥١- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ وَصَدَقَةُ

कहा कि हमें मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें वाक़िद बिन मुहम्मद ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नबी करीम (ﷺ) (की ख़ुशनूदी) आप (ﷺ) के अहले बैत के साथ (मुहब्बत व ख़िदमत के ज़रिये) तलाश करो।

(राजेअ : 3713)

قالا: أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ وَاقِدِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((قَالَ أَبُوبَكْرٍ: ارْقُبُوا مُحَمَّدًا ﷺ فِي أَهْلِ بَيْتِهِ)).

[راجع: ٣٧١٣]

3752. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें ज़ुहरी ने और उन्हें हज़रत अनस (रज़ि.) ने, और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया कि हमें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत हसन बिन अ़ली (रज़ि.) से ज़्यादा और कोई शख़्स नबी करीम (ﷺ) से ज़्यादा मुशाबेह नहीं था।

٣٧٥٢- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَنَسٍ. وَقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي أَنَسٌ قَالَ: ((لَمْ يَكُنْ أَحَدٌ أَشْبَهَ بِالنَّبِيِّ ﷺ مِنَ الْحَسَنِ بن عَلِيٍّ)).

अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ की रिवायत को इमाम अहमद और अ़ब्द बिन हुमैद ने रिवायत किया है। इस सनद के बयान करने से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) की ग़र्ज़ ये है कि ज़ुहरी (रह) का सिमाअ हज़रत अनस (रज़ि.) से षाबित हो जाए।

3753. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अबी यअक़ूब ने, उन्होंने इब्ने अबी नुअम से सुना और उन्होंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना और किसी ने उनसे मुहरिम के बारे में पूछा था, शुअबा ने बयान किया कि मेरे ख़याल में ये पूछा था कि अगर कोई शख़्स (एहराम की हालत में) मक्खी मार दे तो उसे क्या कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा? इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, इराक़ के लोग मक्खी के बारे में सवाल करते हैं जबकि यही लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के नवासे को क़त्ल कर चुके हैं, जिनके बारे में हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि ये दोनों (नवासे हसन व हुसैन रज़ि.) दुनिया में मेरे दो फूल हैं।

(दीगर मक़ाम : 5994)

٣٧٥٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي يَعْقُوبَ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي نُعْمٍ سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ وَسَأَلَهُ عَنِ الْمُحْرِمِ - قَالَ شُعْبَةُ أَحْسِبُهُ يَقْتُلُ الذُّبَابَ - فَقَالَ: أَهْلُ الْعِرَاقِ يَسْأَلُونَ عَنِ الذُّبَابِ! وَقَدْ قَتَلُوا ابْنَ ابْنَةِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((هُمَا رَيْحَانَتَايَ مِنَ الدُّنْيَا)).

[طرفه في : ٥٩٩٤].

गुलज़ारे रिसालत के इन दोनों फूलों के मनाक़िब बयान करने के लिये दफ़ातिर की ज़रूरत है। अहादीषे मज़्कूरा से इनके मनाक़िब का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। मसला पूछने वाला एक कूफ़ी था जिन्होंने हज़रत हुसैन (रज़ि.) को शहीद किया था। इसी दिन से ये मिषाल हो गई **अल कूफ़ी ला यूफ़ी** या'नी कूफ़ा वाले वफ़ादार नहीं होते।

बाब 23 : हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के मौला

٢٣- بَابُ مَنَاقِبِ بِلاَلِ بْنِ رَبَاحٍ

हज़रत बिलाल बिन रिबाह (रज़ि.) के फ़ज़ाइल

مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जन्नत में अपने आगे मैंने तुम्हारे क़दमों की चाप सुनी थी।

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((سَمِعْتُ دَفَّ نَعْلَيْكَ بَيْنَ يَدَيَّ فِي الْجَنَّةِ))

तश्रीह : रसूले करीम (ﷺ) के मशहूर मुअज़्ज़िन हैं जिनके हालात बड़ी तफ़्सील चाहते हैं। इस्लाम लाने पर अहले मक्का ने उनको बहुत ही सताया था। ख़ुद उमय्या बिन ख़लफ़ अपने हाथ से उनको इंतिहाई अज़िय्यत देता था। अल्लाह की शान कि जंगे बद्र में ये मल्ऊन हज़रत बिलाल (रज़ि.) ही की तलवार से दाख़िले जहन्नम हुआ। अस्लन ये हब्शी थे 20 हिजरी मे दमिश्क़ मे उनका इंतिक़ाल हुआ। रज़ियल्लाह अन्हु अरज़ाहु।

3754. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने कहा हमको जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत उमर (रज़ि.) कहा करते थे कि अबूबक्र (रज़ि.) हमारे सरदार हैं और हमारे सरदार को उन्होंने आज़ाद किया है। उनकी मुराद हज़रत बिलाल हब्शी (रज़ि.) से थी।

٣٧٥٤ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ أَخْبَرَنَا جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ عُمَرُ يَقُولُ: أَبُو بَكْرٍ سَيِّدُنَا، وَأَعْتَقَ سَيِّدَنَا. يَعْنِي بِلاَلاً)).

3755. हमसे इब्ने नुमैर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन उबैद ने कहा, हमसे इस्माईल ने बयान किया, और उनसे क़ैस ने कि हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से कहा, अगर आपने मुझे अपने लिये ख़रीदा है तो फिर अपने पास ही रखिए और अगर अल्लाह के लिये ख़रीदा है तो फिर मुझे आज़ाद कर दीजिए और अल्लाह के रास्ते में अमल करने दीजिए।

٣٧٥٥ - حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ قَيْسٍ ((أَنَّ بِلاَلاً قَالَ لأَبِي بَكْرٍ: إِنْ كُنْتَ اشْتَرَيْتَنِي لِنَفْسِكَ فَأَمْسِكْنِي، وَإِنْ كُنْتَ إِنَّمَا اشْتَرَيْتَنِي لِلَّهِ فَدَعْنِي وَعَمَلَ اللهِ)).

तश्रीह : हुआ ये था कि बिलाल (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद सब्र न हो सका, हर वक़्त अज़ान में आप (ﷺ) का नाम आता, आपकी याद से क़ब्रे शरीफ़ को देखकर ज़ख़्म ताज़ा होता। इसलिये बिलाल (रज़ि.) मदीना मुनव्वरा से चले गऐ, छः महीने के बाद आए तो आँहज़रत (ﷺ) को ख़्वाब में देखा, फ़र्माते हैं, बिलाल! क्या ज़ुल्म है, तूने हमको छोड़ दिया। बिलाल ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का हाल पूछा, मा'लूम हुआ कि इंतिक़ाल पा गईं। हज़रत हसन (रज़ि.) और हज़रत हुसैन (रज़ि.) को बुलाकर गले लगाया, ख़ूब रोये। लोगों ने हसन (रज़ि.) से कहा आप कहो तो बिलाल अज़ान देंगे। उन्होंने फ़र्माइश की, बिलाल (रज़ि.) अज़ान के लिये खड़े हुए जब **अश्हदुअन्न मुहम्मद रसूलुल्लाह** पर पहुँचे तो रोते रोते बेहोश होकर गिरे, लोग भी रोने लगे। नबी अकरम (ﷺ) की याद से एक कोहराम मच गया। **अल्लाहुम्म सल्लि अलैहि व बारिक व सल्लिम** हमारे पीर व मुर्शिद शैख़ अहमद मुजद्दिद (रह) फ़र्माते हैं, बिलाल (रज़ि.) हब्शी थे। अज़ान में अश्हदु के बदल अस्हद कहते शीन को सीन कहते मगर उनका अस्हद हम लोगों के हज़ार बार अश्हद पर फ़ज़ीलत रखता था। वो आशिक़े रसूल थे हम गुनाहगार, या अल्लाह! बिलाल (रज़ि.) के कफ़्श बरदारों ही में हमको रख ले आमीन या रब्बल आलमीन (वहीदी)

बाब 24 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर

٢٤ - بَابُ ذِكْرِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

ये हिजरत से तीन साल पहले पैदा हुए थे, बड़े आलिम, तफ़्सीरुल क़ुर्आन में माहिर, उलूमे ज़ाहिरी और बातिनी में बेनज़ीर थे

68 हिजरी में ताईफ़ में इंतिक़ाल हुआ। मुहम्मद बिन हनीफ़ा ने उन पर नमाज़ पढ़ाई।

3756. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे इक्रिमा ने कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा, मुझे नबी करीम (ﷺ) ने सीने से लगाया और फ़र्माया ऐ अल्लाह! इसे हिक्मत का इल्म अता फ़र्मा। (राजेअ : 75)

٣٧٥٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ خَالِدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ضَمَّنِي النَّبِيُّ ﷺ إِلَى صَدْرِهِ وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ عَلِّمْهُ الْحِكْمَةَ)).[راجع: ٧٥]

आँहज़रत (ﷺ) की दुआ की बरकत थी कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) उलूमे कुर्आन में सब पर फ़ौक़ियत ले गए।

बाब 25 : हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٢٥- بَابُ مَنَاقِبِ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيْدِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

ये बड़े बहादुर थे। इनका नसबनामा रसूले करीम (ﷺ) के साथ मुर्रह बिन कअब में मिल जाता है। चालीस साल से कुछ ज़ाइद उम्र पाकर 21 हिजरी में शहरे हिम्स में इंतिक़ाल हुआ।

3757. हमसे अहमद बिन वाक़िद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने किसी इत्तिला के पहुँचने से पहले ज़ैद, जा'फ़र और इब्ने रवाहा (रज़ि.) की शहादत की ख़बर सहाबा को सुना दी थी, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब इस्लामी अलम को ज़ैद (रज़ि.) लिये हुए हैं और वो शहीद कर दिये गये। अब जा'फ़र (रज़ि.) ने अलम उठा लिया और वो भी शहीद कर दिये गये। अब इब्ने रवाहा (रज़ि.) ने अलम उठा लिया और वो भी शहीद कर दिये गये। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की आँखों से आंसू जारी थे फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, और आख़िर अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार (हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि.) ने अलम उठा लिया और अल्लाह तआला ने उनके हाथ पर मुसलमानों को फ़तह इनायत फ़र्माई। (राजेअ : 1246)

٣٧٥٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ وَاقِدٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَعَى زَيْدًا وَجَعْفَرًا وَابْنَ رَوَاحَةَ لِلنَّاسِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَهُمْ خَبَرُهُمْ فَقَالَ: ((أَخَذَ الرَّايَةَ زَيْدٌ فَأُصِيْبَ، ثُمَّ أَخَذَ جَعْفَرٌ فَأُصِيْبَ، ثُمَّ أَخَذَ ابْنُ رَوَاحَةَ فَأُصِيْبَ - وَعَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ- حَتَّى أَخَذَهَا سَيْفٌ مِنْ سُيُوفِ اللهِ - حَتَّى فَتَحَ اللهُ عَلَيْهِمْ)).

[راجع: ١٢٤٦]

बाब 26 : हज़रत अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के मौला सालिम (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٢٦- بَابُ مَنَاقِبِ سَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

3758. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अम्र बिन मुर्रह ने, उनसे इब्राहीम ने और उनसे मसरूक़ ने कि अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) के यहाँ अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का ज़िक्र हुआ, तो उन्होंने कहा

٣٧٥٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: ذُكِرَ عَبْدُ اللهِ عِنْدَ عَبْدِ اللهِ

मैं उनसे हमेशा मुहब्बत रखूँगा क्योंकि मैंने रसूले करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना है कि चार लोगों से क़ुर्आन सीखो, अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.), आँह़ज़रत (ﷺ) ने इब्तिदा अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से ही की और अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के मौला सालिम, उबई बिन कअ़ब और मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि मुझे पूरी त़रह याद नहीं कि हुज़ूर (ﷺ) ने पहले उबई बिन कअ़ब का ज़िक्र किया या मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) का। (दीगर मक़ाम : 3760, 3806, 3808, 4999)

بْنِ عَمْرٍو فَقَالَ : ذَاكَ رَجُلٌ لاَ أَزَالُ أُحِبُّهُ بَعْدَ مَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((اسْتَقْرِئُوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ: مِنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ فَبَدَأَ بِهِ، وَسَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ، وَأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ. قَالَ: لاَ أَدْرِي، بَدَأَ بِأُبَيٍّ أَوْ بِمُعَاذٍ)).

[أطرافه في : ٣٧٦٠، ٣٨٠٦، ٣٨٠٨، ٤٩٩٩].

ह़ज़रत सालिम (रज़ि.) अस़ल में फ़ारसी थे और ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) की बीवी के गुलाम थे, बड़े फ़ाज़िल और क़ुर्आन के क़ारी थे।

बाब 27 : ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٢٧- بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

ये बनी हुज़ैल में से थे। आँह़ज़रत (ﷺ) के ख़ादिमे ख़ास़, सफ़र और ह़ज़र में हर जगह आप (ﷺ) की ख़िदमत करते, पस्त क़द और नह़ीफ़ थे। इ़ल्म के लिहाज़ से बहुत बड़े आ़लिम, ज़ाहिद और फ़क़ीह थे। साठ साल से ज़ाइद उ़म्र पाकर 32 हिजरी में इंतिक़ाल किया। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु

3759. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने बयान किया, कहा मैंने अबू वाइल से सुना, कहा कि मैंने मसरूक़ से सुना, उन्होंने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक पर कोई बुरा कलिमा नहीं आता था और न आप (ﷺ) की ज़ात से ये मुम्किन था और आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि तुममें सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ मुझे वो शख़्स है जिसके आदात व अख़्लाक़ सबसे उ़म्दह हों। (राजेअ़ : 3559)

٣٧٥٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ قَالَ سَمِعْتُ مَسْرُوقًا قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمْ يَكُنْ فَاحِشًا وَلاَ مُتَفَحِّشًا. وَقَالَ: ((إِنَّ مِنْ أَحَبِّكُمْ إِلَيَّ أَحْسَنَكُمْ أَخْلاَقًا)).

[راجع: ٣٥٥٩]

3760. और आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुर्आन मजीद चार आदमियों से सीखो, अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.), अबू हुज़ैफ़ा के मौला सालिम, उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) और मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.)। (राजेअ़ : 3758)

٣٧٦٠- وَقَالَ: ((اسْتَقْرِئُوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ: مِنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ، وَسَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ، وَأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ، وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ)). [راجع: ٣٧٥٨]

3761. हमसे मूसा ने बयान किया, उनसे अबू अ़वाना ने, उनसे मुग़ीरह ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने कि मैं शाम पहुँचा तो सबसे पहले मैंने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और ये दुआ़ की कि ऐ

٣٧٦١- حَدَّثَنَا مُوسَى عَنْ أَبِي عَوَانَةَ عَنْ مُغِيرَةَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ ((دَخَلْتُ الشَّامَ فَصَلَّيْتُ رَكْعَتَيْنِ فَقُلْتُ:

अल्लाह! मुझे किसी (नेक) साथी की सुहबत से फ़ैज़याबी की तौफ़ीक़ अता कर। चुनाँचे मैंने देखा कि एक बुज़ुर्ग आ रहे हैं। जब वो क़रीब आ गये तो मैंने सोचा कि शायद मेरी दुआ क़ुबूल हो गई है। उन्होंने दरयाफ़्त किया, आपका वतन कहाँ है? मैंने अर्ज़ किया कि मैं कूफ़ा का रहने वाला हूँ, इस पर उन्होंने फ़र्माया, क्या तुम्हारे यहाँ साहिबे नअलैन, साहिबे विसादा व मुतह्हरा (अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.) नहीं है? क्या तुम्हारे यहाँ वो सहाबी नहीं हैं जिन्हें शैतान से (अल्लाह की) पनाह मिल चुकी है। (या'नी अम्मार बिन यासिर रज़ि.) क्या तुम्हारे यहाँ सरबस्ता राज़ों के जानने वाले नहीं हैं कि जिन्हें उनके सिवा और कोई नहीं जानता (फिर पूछा) इब्ने उम्मे अब्द (अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.) आयत वल् लैलि की क़िरात किस तरह करते हैं? मैंने अर्ज़ किया कि वल् लैलि इज़ा यग़शा वन् नहारि इज़ा तजल्ला वज़् ज़करा वल उन्षा आपने फ़र्माया कि मुझे भी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुद अपनी ज़ुबाने मुबारक से इसी तरह सिखाया था। लेकिन अब शाम वाले मुझे इस तरह क़िरात करने से हटाना चाहते हैं।

اللَّهُمَّ يَسِّرْ لِي جَلِيسًا. فَرَأَيْتُ شَيْخًا مُقْبِلاً، فَلَمَّا دَنَا قُلْتُ: أَرْجُو أَنْ يَكُونَ اسْتَجَابَ اللهُ. قَالَ: مِنْ أَيْنَ أَنْتَ؟ قُلْتُ مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ. قَالَ: أَفَلَمْ يَكُنْ فِيكُمْ صَاحِبُ النَّعْلَيْنِ وَالْوِسَادِ الْمِطْهَرَةِ؟ أَوَ لَمْ يَكُنْ فِيكُمُ الَّذِي أُجِيرَ مِنَ الشَّيْطَانِ؟ أَوَ لَمْ يَكُنْ فِيكُمْ صَاحِبُ السِّرِّ الَّذِي لاَ يَعْلَمُهُ غَيْرُهُ؟ كَيْفَ قَرَأَ ابْنُ أُمِّ عَبْدٍ ﴿وَاللَّيْلِ﴾ فَقَرَأْتُ : ﴿وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى، وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى، وَالذَّكَرِ وَالأُنْثَى﴾ قَالَ: أَقْرَأَنِيهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاهُ إِلَى فِيَّ، فَمَا زَالَ هَؤُلاَءِ حَتَّى كَادُوا يَرُدُّونِي)).

3762. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद ने बयान किया कि हमने हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) से पूछा कि सहाबा में नबी करीम (ﷺ) से आदात व अख़्लाक़ और तौर व तरीक़ पर सबसे ज़्यादा क़रीब कौनसे सहाबी थे? ताकि हम उनसे सीखें। उन्होंने कहा कि अख़्लाक़, तौर व तरीक़ और सीरत व आदत में इब्ने उम्मे अब्द से ज़्यादा आँहज़रत (ﷺ) से क़रीब और किसी को मैं नहीं समझता। (दीगर मक़ाम : 6097)

٣٧٦٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: ((سَأَلْنَا حُذَيْفَةَ عَنْ رَجُلٍ قَرِيبِ السَّمْتِ وَالْهَدْيِ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ حَتَّى نَأْخُذَ عَنْهُ، فَقَالَ: مَا أَعْرِفُ أَحَدًا أَقْرَبَ سَمْتًا وَهَدْيًا وَدَلاًّ بِالنَّبِيِّ ﷺ مِنِ ابْنِ أُمِّ عَبْدٍ)). [طرفه في : ٦٠٩٧].

इब्ने उम्मे अब्द से मुराद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) हैं।

3763. मुझसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, कहा कि मुझसे अस्वद बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं और मेरे भाई यमन से (मदीना तय्यिबा) हाज़िर हुए और एक

٣٧٦٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي الأَسْوَدُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا مُوسَى الأَشْعَرِيَّ يَقُولُ: ((قَدِمْتُ أَنَا وَأَخِي مِنَ

ज़माने तक यहाँ क़याम किया। हम उस पूरे अर्से में यही समझते रहे कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के घराने ही के एक फ़र्द हैं, क्योंकि हुज़ूर (ﷺ) के घर में अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) और उनकी वालिदा का (बकषरत) आना जाना हम ख़ुद देखा करते थे। (दीगर मक़ाम : 4384)

الْيَمَنِ، فَمَكَثْنَا حِينًا مَا نَرَى إِلاَّ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ ﷺ، لِمَا نَرَى مِنْ دُخُولِهِ وَدُخُولِ أُمِّهِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ)). [طرفه في: ٤٣٨٤].

बाब 28 : हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़यान (रज़ि.) का बयान

٢٨- بَابُ ذِكْرِ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ

(बड़ों की लग़्ज़िश) हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम की ख़िदमात सुनहरी हर्फ़ों से लिखने के क़ाबिल हैं मगर कोई इंसान भूल–चूक से मा'सूम नहीं है। सिर्फ़ अंबिया (अलैहिस्सलाम) की ज़ात है कि जिनकी हिफ़ाज़त अल्लाह पाक ख़ुद करता है। हज़रत मुआविया (रज़ि.) के ज़िक्र के सिलसिले में मौलाना मरहूम के क़लम से एक नामुनासिब बयान निकल गया है। अल्फ़ाज़ ये हैं, मुतर्जिम कहता है, सहाबियत का अदब हमको इससे मानेअ है कि हम मुआविया (रज़ि.) के बारे में कुछ कहें लेकिन सच्ची बात ये है कि उनके दिल में आँहज़रत (ﷺ) के अहले बैत की मुहब्बत न थी। मुख़्तसरन

दिलों का जानने वाला सिर्फ़ बारी तआला है। हज़रत मुआविया (रज़ि.) के हक़ में मरहूम का ये लिखना मुनासिब न था। ख़ुद ही सहाबियत के अदब का ए'तिराफ़ भी है और ख़ुद ही उनके ज़मीर पर हमला भी, **इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन**। अल्लाह तआला मरहूम की लग़्ज़िश को मुआफ़ करे और हश्र के मैदान में सबको आयते करीमा **व नज़अना मा फी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन** (अल आराफ़ : 43) का मिस्दाक़ बनाए आमीन। हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) के बेटे हैं और हज़रत अबू सुफ़यान रसूले करीम (ﷺ) के चचा होते हैं बउम्र 82 साल 60 हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) ने शहरे दमिश्क़ में वफ़ात पाई। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु।

3764. कहा हमसे हसन बिन बशीर ने बयान किया, उनसे उष्मान बिन अस्वद ने और उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने इशा के बाद वित्र की नमाज़ सिर्फ़ एक रकअत पढ़ी। वहीं हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के मौला (कुरैब) भी मौजूद थे। जब वो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो (हज़रत अमीर मुआविया रज़ि.) की एक रकअत वित्र का ज़िक्र किया) उस पर उन्होंने कहा, कोई हर्ज नहीं है। उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत उठाई है। (दीगर मक़ाम : 3765)

٣٧٦٤- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ بِشْرٍ حَدَّثَنَا الْمُعَافَى عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الأَسْوَدِ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: ((أَوْتَرَ مُعَاوِيَةُ بَعْدَ الْعِشَاءِ بِرَكْعَةٍ وَعِنْدَهُ مَوْلًى لاِبْنِ عَبَّاسٍ، فَأَتَى ابْنَ عَبَّاسٍ، فَقَالَ: دَعْهُ فَإِنَّهُ صَحِبَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)). [طرفه في : ٣٧٦٥].

यक़ीनन उनके पास हुज़ूर (ﷺ) के क़ौल व फ़ेअल से कोई दलील होगी।

3765. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ बिन उमर ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से कहा गया कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बारे में आप (रज़ि.) क्या फ़र्माते हैं। उन्होंने वित्र की नमाज़ एक रकअत पढ़ी है? उन्होंने कहा कि वो ख़ुद फ़क़ीह हैं। (राजेअ : 3764)

٣٧٦٥- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ قِيْلَ لاِبْنِ عَبَّاسٍ: هَلْ لَكَ فِي أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ مُعَاوِيَةَ فَإِنَّهُ مَا أَوْتَرَ إِلاَّ بِوَاحِدَةٍ، قَالَ: ((إِنَّهُ فَقِيهٌ)). [راجع: ٣٧٦٤]

एक रकअत वित्र ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) से षाबित है। ग़ालिबन इसी हदीष पर हज़रत मुआविया (रज़ि.) का अमल था। जमाअते अहले हदीष का आज भी अकषर इसी हदीष पर अमल है। यूँ तो 3–5–7 रकआत वित्र भी जाइज़ हैं मगर वित्र आख़िरी एक रकअत ही का नाम है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के जवाब से ज़ाहिर होता है कि वो हज़रत मुआविया (रज़ि.) को फ़क़ीह जानते थे और उनके अमले शरई को हुज्जत मानते थे। इससे भी हज़रत मुआविया (रज़ि.) की मनाक़िबत षाबित होती है और यही बाब के तर्जुमे से मुताबक़त है।

3766. मुझसे अम्र बिन अब्बास ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने बयान किया, उन्होंने हुम्रान बिन अबान से सुना कि मुआविया (रज़ि.) ने कहा कि तुम लोग एक ख़ास नमाज़ पढ़ते हो। हम लोग नबी करीम (ﷺ) की सुहबत में रहे और हमने कभी आप (ﷺ) को इस वक़्त नमाज़ पढ़ते नहीं देखा बल्कि आपने तो इससे मना किया था। हज़रत मुआविया (रज़ि.) की मुराद अस्र के बाद दो रकअत नमाज़ से थी। (जिसे उस ज़माने में कुछ लोग पढ़ते थे)। (राजेअ : 587)

٣٧٦٦ – حَدَّثَنِيْ عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ قَالَ : سَمِعْتُ حُمْرَانَ بْنَ أَبَانَ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((إِنَّكُمْ لَتُصَلُّونَ صَلاَةً لَقَدْ صَحِبْنَا النَّبِيَّ ﷺ فَمَا رَأَيْنَاهُ يُصَلِّيْهَا، وَلَقَدْ نَهَى عَنْهُمَا، يَعْنِي الرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعَصْرِ)). [راجع: ٥٨٧]

बाब 29 : हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान और नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि फ़ातिमा जन्नत की औरतों की सरदार हैं

٢٩ – بَابُ مَنَاقِبِ فَاطِمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَاطِمَةُ سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ))

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) की सबसे छोटी साहबज़ादी और आप (ﷺ) को निहायत अज़ीज़ थीं। उनका निकाह हज़रत अली (रज़ि.) से 2 हिजरी में हुआ। हसन (रज़ि.), हुसैन (रज़ि.) और मुहसिन (रज़ि.) तीन लड़के और तीन लड़कियाँ ज़ैनब, उम्मे कुलषुम और रुक़य्या पैदा हुईं। आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के छः महीने या आठ महीने बाद उनका इंतिक़ाल हुआ। चौबीस, उनत्तीस या तीस साल की उम्र पाई अला इख़्तिलाफ़िल अक़्वाल। रज़ियल्लाहु (वहीदी)

3767. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उयैना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़ातिमा (रज़ि.) मेरे जिस्म का टुकड़ा है जिसने उसे नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया।

٣٧٦٧ – حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِيْنَارٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((فَاطِمَةُ بَضْعَةٌ مِنِّي، فَمَنْ أَغْضَبَهَا أَغْضَبَنِي)).

इस हदीष को इमाम बुख़ारी (रह) ने बाब अलामतुन नुबुव्वत में दूसरी सनद से वस्ल किया है। हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) ने लिखा है कि ये हदीष क़वी दलील है इस बात पर कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) अपने ज़माने वाली और अपने बाद वाली सब औरतों से अफ़ज़ल हैं।

बाब 30 : हज़रत आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

٣٠ – بَابُ فَضْلِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

उनकी कुन्नियत उम्मे अब्दुल्लाह थी। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की साहबज़ादी हैं और रसूले करीम (ﷺ) की ख़ास (प्यारी

बीवी हैं। बड़ी ही आ़लिमा, फ़ाज़िला, मुज्तहिदा और फ़सीहुल बयान थीं। ख़िलाफ़ते मुआ़विया तक ज़िन्दा रहीं। 58 हिजरी में वफ़ात पाई। रमज़ानुल मुबारक की 27 तारीख़ को ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। रज़ियल्लाहु अ़न्हा व अरज़ाहा।

3768. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि. ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक दिन फ़र्माया, ऐ आइशा! ये जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) तशरीफ़ रखते हैं और तुम्हें सलाम कहते हैं। मैंने उस पर जवाब दिया व अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाह व बरकातुहु, आप (ﷺ) वो चीज़ मुलाहिज़ा फ़र्माते हैं जो मुझको नज़र नहीं आती।

(राजेअ़ : 3217)

٣٧٦٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: إِنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمًا: ((يَا عَائِشُ هَذَا جِبْرِيلُ يُقْرِئُكِ السَّلاَمَ. فَقُلْتُ: وَعَلَيْهِ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، تَرَى مَا لاَ أَرَى. تُرِيدُ رَسُولَ اللهِ ﷺ)).

[راجع: ٣٢١٧]

3769. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा (इमाम बुख़ारी रह ने) और हमसे अ़म्र ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें अ़म्र बिन मुर्रह ने और उन्हें ह़ज़रत अबू मूसा अश़अ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मर्दों में तो बहुत से कामिल पैदा हुए लेकिन औ़रतों में मरयम बिन्ते इमरान, फ़िरऔ़न की बीवी आसिया के सिवा और कोई कामिल पैदा नहीं हुई और आइशा की फ़ज़ीलत औ़रतों पर ऐसी है जैसे ष़रीद की फ़ज़ीलत बक़िया तमाम खानों पर है।

(राजेअ़ : 3411)

٣٧٦٩- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: ح وحَدَّثَنَا عَمْرٌو أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ عَنْ مُرَّةَ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَمَلَ مِنَ الرِّجَالِ كَثِيْرٌ، وَلَمْ يَكْمُلْ مِنَ النِّسَاءِ إِلاَّ مَرْيَمُ بِنْتِ عِمْرَانَ وَآسِيَةُ امْرَأَةُ فِرْعَوْنَ. وَفَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيْدِ على سَائِرِ الطَّعَامِ)).

[راجع: ٣٤١١]

3770. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से ये फ़र्माते सुना है कि आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत औ़रतों पर ऐसी है जैसे ष़रीद की फ़ज़ीलत और तमाम खानों पर है।

٣٧٧٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ : ((فَضْلُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضْلِ الثَّرِيْدِ عَلَى الطَّعَامِ)).

3771. मुह़म्मद बिन बश्शार (रज़ि.) ने मुझसे बयान किया,

٣٧٧١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا

कहा हमसे अब्दुल वह्हाब बिन अब्दुल मजीद ने बयान किया, हमसे इब्ने औन ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने कि ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) बीमार पड़ीं तो ह़ज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) अयादत के लिये आए और अ़र्ज़ किया, उम्मुल मोमिनीन! आप तो सच्चे जाने वाले के पास जा रही हैं या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र के पास। (आलमे बरज़ख़ में उनसे मुलाक़ात मुराद थी)। (दीगर मक़ाम : 4753, 4454)

عَبْدُ الْوَهَّابِ بْنِ عَبْدِ الْمَجِيْدِ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ ((أَنَّ عَائِشَةَ اشْتَكَتْ، فَجَاءَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَقَالَ : يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِيْنَ. تَقْدَمِيْنَ عَلَى فَرَطِ صِدْقٍ. عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَعَلَى أَبِي بَكْرٍ)).

[طرفاه في : ٤٧٥٣، ٤٤٥٤].

3772. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने और उन्होंने अबू वाईल से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब अ़ली (रज़ि.) ने अ़म्मार और ह़सन (रज़ि.) को कूफ़ा भेजा था ताकि लोगों को अपनी मदद के लिये तैयार करें तो अ़म्मार (रज़ि.) ने उनसे ख़िताब करते हुए फ़र्माया था, मुझे भी ख़ूब मा'लूम है कि आइशा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ोजा हैं इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी, लेकिन अल्लाह तआ़ला तुम्हें आज़माना चाहता है कि देखे तुम अ़ली (रज़ि.) का इत्तिबाअ़ करते हो (जो बरह़क़ ख़लीफ़ा हैं) या आइशा (रज़ि.) की। (दीगर मक़ाम : 7100, 7101)

٣٧٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ قَالَ: ((لَمَّا بَعَثَ عَلِيٌّ عَمَّارًا وَالْحَسَنَ إِلَى الْكُوفَةِ لِيَسْتَنْصِرَهُمْ، خَطَبَ عَمَّارٌ فَقَالَ: إِنِّي لأَعْلَمُ أَنَّهَا زَوْجَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، وَلَكِنَّ اللهَ ابْتَلاَكُمْ لِتَتَّبِعُوْهُ أَوْ إِيَّاهَا)).

[طرفاه في : ٧١٠٠، ٧١٠١].

तश्रीह : ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) लोगों के भड़काने में आ गईं और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से इस बात पर लड़ने को मुस्तइद हो गईं कि वो ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के क़ातिलों से क़िसास़ नहीं लेते। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ये कहते थे कि पहले सब लोगों को एक हो जाने दो, फिर अच्छी त़रह पूछताछ करके जिस पर क़त्ल ष़ाबित होगा उससे क़िसास़ लिया जाएगा। अल्लाह के हुक्म से ये आयत मुराद है, **व क़र्ना फ़ी बुयूतिकुन्ना** (अल अह़ज़ाब : 33) जो ख़ास़ आँह़ज़रत (ﷺ) की बीवियों के लिये उतरी है। यहाँ तक उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत उम्मे सलमा फ़र्माती थीं मैं तो ऊँट पर सवार होकर ह़रकत करने वाली नहीं जब तक आँह़ज़रत (ﷺ) से न मिल जाऊँ या'नी मरने तक अपने घर में रहूँगी। ह़ाफ़िज़ ने कहा, ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) और ह़ज़रत त़लह़ा (रज़ि.) और ज़ुबैर (रज़ि.) ये सब ह़ज़रात मुज्तहिद थे। उनका मत़लब ये था कि मुसलमानों में आपस के अंदर इत्तिफ़ाक़ करा देना ज़रूरी है और ये उस वक़्त तक मुम्किन न था जब तक कि ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के क़ातिलीन से क़िसास़ न लिया जाता। (वह़ीदी)

3773. हमसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि (नबी करीम (ﷺ) के साथ एक ग़ज़्वा में जाने के लिये) आपने (अपनी बहन) अस्मा (रज़ि.) से एक हार आ़रियतन ले लिया था, इत्तिफ़ाक़ से वो रास्ते में कहीं गुम हो गया। हुज़ूर (ﷺ) ने उसे तलाश करने के लिये चन्द स़ह़ाबा को भेजा। इस दौरान उनमें नमाज़ का वक़्त हो गया तो उन ह़ज़रात ने बग़ैर वुज़ू के नमाज़ पढ़ ली फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप (ﷺ) से स़ूरतेह़ाल के बारे में अ़र्ज़

٣٧٧٣- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ ((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا اسْتَعَارَتْ مِنْ أَسْمَاءَ قِلاَدَةً فَهَلَكَتْ. فَأَرْسَلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِهِ فِي طَلَبِهَا، فَأَدْرَكَتْهُمُ الصَّلاَةُ. فَصَلُّوا بِغَيْرِ وُضُوْءٍ. فَلَمَّا أَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ شَكَوْا ذَلِكَ إِلَيْهِ،

किया, उसके बाद तयम्मुम की आयत नाज़िल हुई। इस पर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा, तुम्हें अल्लाह तआला जज़ाए ख़ैर दे। अल्लाह की क़सम तुम पर जब भी कोई मरहला आया तो अल्लाह तआला ने उससे निकलने की सबील तुम्हारे लिये पैदा कर दी और तमाम मुसलमानों के लिये भी उसमें बरकत पैदा फ़र्माई। (राजेअ : 334)

فَنَزَلَتْ آيَةُ التَّيَمُّمِ، فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ جَزَاكِ اللهُ خَيْرًا، فَوَاللهِ مَا نَزَلَ بِكِ أَمْرٌ قَطُّ إِلاَّ جَعَلَ اللهُ لَكِ مِنْهُ مَخْرَجًا، وَجَعَلَ لِلْمُسْلِمِينَ فِيهِ بَرَكَةً)).

[راجع: ٣٣٤]

3774. मुझसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने कि रसूले करीम (ﷺ) अपने मर्ज़ुल वफ़ात में भी अज़्वाजे मुतह्हरात की बारी की पाबन्दी फ़र्माते रहे अल्बत्ता ये दरयाफ़्त फ़र्माते रहे कि कल मुझे किस के यहाँ ठहरना है? क्योंकि आप (ﷺ) हज़रत आइशा (रज़ि.) की बारी के ख़्वाहाँ थे। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मेरे यहाँ क़याम का दिन आया तो आप (ﷺ) को सुकून हुआ। (राजेअ : 890)

٣٧٧٤- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمَّا كَانَ فِي مَرَضِهِ جَعَلَ يَدُورُ فِي نِسَائِهِ وَيَقُولُ: ((أَيْنَ أَنَا غَدًا؟)) حِرْصًا عَلَى بَيْتِ عَائِشَةَ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَلَمَّا كَانَ يَوْمِي سَكَنَ)).

[راجع: ٨٩٠]

तश्रीह : अब आपने ये पूछना छोड़ दिया कि कल मैं कहाँ रहूँगा। हाफ़िज़ ने सुबुकी से नक़ल किया कि हमारे नज़दीक पहले हज़रत फ़ातिमा अफ़ज़ल हैं फिर ख़दीजा, फिर आइशा (रज़ि.)। इमाम इब्ने तैमिया (रह) ने ख़दीजा (रज़ि.) और आइशा (रज़ि.) में तवक़्क़ुफ़ किया है। इमाम इब्ने क़य्यिम ने कहा, अगर फ़ज़ीलत से मुराद कषरते षवाब है तब तो अल्लाह ही बेहतर जानता है। अगर इल्म मुराद है तो हज़रत आइशा (रज़ि.) अफ़ज़ल हैं। अगर ख़ानदानी शराफ़त मुराद है तो हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) अफ़ज़ल हैं।

3775. हमसे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने कहा, हमसे हिशाम ने, उन्होंने अपने वालिद (उर्वा) से, उन्होंने कहा कि लोग आँहज़रत (ﷺ) को तोहफ़े भेजने में हज़रत आइशा (रज़ि.) की बारी का इंतिज़ार किया करते थे। हज़रत आइशा (रज़ि.) कहती हैं कि मेरी सौकनें सब उम्मे सलमा (रज़ि.) के पास गईं और उनसे कहा, अल्लाह की क़सम लोग जान–बूझकर अपने तोहफ़े उस दिन भेजते हैं जिस दिन हज़रत आइशा (रज़ि.) की बारी होती है। हम भी हज़रत आइशा (रज़ि.) की तरह अपने लिये फ़ायदा चाहती हैं। इसलिये तुम आँहज़रत (ﷺ) से कहो कि आप (ﷺ) लोगों को फ़र्मा दें कि मैं जिस भी बीवी के पास होऊँ जिसकी भी बारी हो उसी घर में तोहफ़े भेज दिया करो। उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ये बात आँहज़रत (ﷺ) के सामने बयान की, आप (ﷺ) ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। उन्होंने दोबारा अर्ज़ किया जब भी जवाब न दिया। फिर तीसरी बार अर्ज़

٣٧٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((كَانَ النَّاسُ يَتَحَرَّوْنَ بِهَدَايَاهُمْ يَوْمَ عَائِشَةَ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَاجْتَمَعَ صَوَاحِبِي إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ فَقُلْنَ: يَا أُمَّ سَلَمَةَ، وَاللهِ إِنَّ النَّاسَ يَتَحَرَّوْنَ بِهَدَايَاهُمْ يَوْمَ عَائِشَةَ، وَإِنَّا نُرِيْدُ الْخَيْرَ كَمَا تُرِيْدُهُ عَائِشَةُ، فَمُرِي رَسُولَ اللهِ ﷺ أَنْ يَأْمُرَ النَّاسَ أَنْ يُهْدُوا إِلَيْهِ حَيْثُمَا كَانَ، أَوْ حَيْثُمَا دَارَ. قَالَتْ: فَذَكَرَتْ ذَلِكَ أُمُّ سَلَمَةَ لِلنَّبِيِّ ﷺ، قَالَتْ فَأَعْرَضَ عَنِّي فَلَمَّا

किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ उम्मे सलमा (रज़ि.)! आइशा (रज़ि.) के बारे में मुझको न सताओ। अल्लाह की क़सम! तुममें से किसी बीवी के लिहाफ़ में (जो मैं ओढ़ता हूँ सोते वक़्त) मुझ पर वह्य नाज़िल नहीं होती हाँ (आइशा का मुक़ाम ये है) उनके लिहाफ़ में वह्य नाज़िल होती है। (राजेअ : 2574)

عَادَ إِلَيَّ ذَكَرْتُ لَهُ ذَلِكَ، فَأَعْرَضَ عَنِّي فَلَمَّا كَانَ فِي الثَّالِثَةِ ذَكَرْتُ لَهُ فَقَالَ: ((يَا أُمَّ سَلَمَةَ، لاَ تُؤْذِينِي فِي عَائِشَةَ، فَإِنَّهُ وَاللهِ مَا نَزَلَ عَلَيَّ الْوَحْيُ وَأَنَا فِي لِحَافِ امْرَأَةٍ مِنْكُنَّ غَيْرِهَا)). [راجع: ٢٥٧٤]

तशरीह : हाफ़िज़ ने कहा कि इससे आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत ख़दीजा (रज़ि.) पर लाज़िम नहीं आती बल्कि उन बीवियों पर फ़ज़ीलत निकलती है जो आइशा (रज़ि.) के ज़माने में मौजूद थीं और उनके कपड़ों मे वह्य नाज़िल होने की वजह ये मुम्किन है कि उनके वालिदे माजिद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के ख़ास साथी थे। अल्लाह तआला ने उनकी साहबज़ादी को भी ये बरकत दी। ये वजह भी हो सकती है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) की ख़ास प्यारी बीवी थीं या ये वजह हो कि वो कपड़ों को बहुत साफ़ रखती होंगी। अल ग़र्ज़ **ज़ालिक फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय्यशाउ** दूसरी हदीष में है कि फिर उन बीवियों ने हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) से सिफ़ारिश कराई। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि बेटी अगर तू मुझको चाहती है तो आइशा (रज़ि.) से मुहब्बत कर। उन्होंने कहा कि अब मैं इस बारे मे कोई दख़ल न दूँगी। क़स्तलानी (रह) और किरमानी ने कहा है कि अहादीष की गिनती की रू से इस मक़ाम पर सहीह बुख़ारी (रह) का निस्फ़े अव्वल पूरा हो जाता है। गो पारों के लिहाज़ से पन्द्रहवें पारे पर निस्फ़े अव्वल पूरा होता है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पन्द्रहवां पारा

बाब 1 : अंसार रिज़्वानुल्लाहे अलैहिम की फ़ज़ीलत का बयान

١ – بَابُ مَنَاقِبِ الأَنْصَارِ

﴿وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالإِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلاَ يَجِدُوْنَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوْتُوا﴾ [الحشر: ٩]

अल्लाह ने फ़र्माया जो लोग पहले ही एक घर में (या'नी मदीना में) जम गए ईमान को भी जमा दिया जो मुसलमान उनके पास हिजरत करके जाते हैं उससे मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरीन को (माले ग़नीमत में से) जो हाथ आए उससे उनका दिल नहीं कुढ़ता बल्कि और ख़ुश होते हैं।

अल्हम्दुलिल्लाह आज 6 ज़ीक़अदा 1391 हिजरी को मस्जिद अहले ह़दीष़ दरियाव में पारा नम्बर 15 की तस्वीद का काम शुरू कर रहा हूँ अल्लाह पाक क़लम को लग़्ज़िश से बचाए और फ़हमे ह़दीष़ के लिये दिल व दिमाग़ में रोशनी अ़ता फ़र्माए। मस्जिद अहले ह़दीष़ दरियाव में फ़न्ने ह़दीष़ व तफ़्सीर से बेशतर कुतुब का बेहतरीन ज़ख़ीरा महफ़ूज़ है। अल्लाह पाक उन बुज़ुर्गों को ष़वाबे अ़ज़ीम बख़्शे जिन्होने इस पाकीज़ा ज़ख़ीरे को यहाँ जमा फ़र्माया। मौजूदा अकाबिर जमाअ़ते दरियाव को भी अल्लाह पाक जज़ा-ए-ख़ैर दे जो इस ज़ख़ीरे की ह़िफ़ाज़त कमा ह़क़्क़हु फ़र्माते रहते हैं।

तशरीह़ : लफ़्ज़े अंसार नासिर की जमा है जिसके मा'नी मददगार के हैं, मदीना के क़बीले औस और ख़ज़रज जब मुसलमान हुए और नुसरते इस्लाम के लिये आँह़ज़रत (ﷺ) से अ़हद किया तो अल्लाह पाक ने अपने रसूले पाक

(ﷺ) की ज़ुबान फ़ैज़े तर्जुमान पर लफ़्ज़ अंसार से उनको मौसूम किया। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **हुव इस्मु इस्लामी सम्मा बिहिन्नबिय्यु (ﷺ) अल्औस वल्ख़ज़्रज व हुलफ़ाअहुम कमा फी हदीषि अनसिन वल्औसु युन्सबून इला औस वल्ख़ज़्रजु युन्सबून इलल्ख़ज़्रजि ब्नि हारिषत व हुमा इब्न कैलत व हुव इस्मु उम्मिहिम व अबूहुम हुव हारिषतुब्नु अम्रिब्नि आमिरिन अल्लज़ी यज्तमिउ इलैहि अन्साबुल्अज़्द** (फ़त्हुल्बारी) या'नी अंसार इस्लामी नाम है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने औस व ख़ज़रज और उनके हलीफ़ क़बीलों का ये नाम रखा जैसा कि हदीषे अनस (रज़ि.) में मज़्कूर है औस क़बीला अपने दादा औस बिन हारिषा की तरफ़ मन्सूब है और ख़ज़रज, ख़ज़रज बिन हारिषा की तरफ़ जो दोनों भाई एक औरत क़ीला नामी के बेटे हैं उनके बाप का नाम हारिषा बिन अम्र बिन आमिर है जिस पर क़बीला अज़्द की जुम्ला शाख़ों के नसब नामे जाकर मिल जाते हैं।

3776. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे महदी बिन मैमून ने, कहा हमसे ग़ीलान बिन जरीर ने बयान किया, मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा बतलाइये (अंसार) अपना नाम आप लोगों ने ख़ुद रख लिया था या आप लोगों का ये नाम अल्लाह तआला ने रखा? उन्होंने कहा नहीं बल्कि हमारा ये नाम अल्लाह तआला ने रखा है, ग़ीलान की रिवायत है कि हम अनस (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर होते तो आप हमसे अंसार की फ़ज़ीलतें और ग़ज़्वात में उनके मुजाहिदाना वाक़ियात बयान किया करते फिर मेरी तरफ़ या क़बीला अज़्द के एक शख़्स की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहते, तुम्हारी क़ौम (अंसार) ने फ़लाँ दिन फ़लाँ दिन फ़लाँ फ़लाँ काम अंजाम दिये। (दीगर मक़ाम : 3844)

٣٧٧٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ حَدَّثَنَا غَيْلاَنُ بْنُ جَرِيرٍ قَالَ: قُلْتُ لأَنَسٍ: أَرَأَيْتَ اسْمَ الأَنْصَارِ كُنْتُمْ تُسَمَّوْنَ بِهِ، أَمْ سَمَّاكُمُ اللهُ؟ قَالَ : بَلْ سَمَّانَا اللهُ. كُنَّا نَدْخُلُ عَلَى أَنَسٍ فَيُحَدِّثُنَا مَنَاقِبَ الأَنْصَارِ وَمَشَاهِدَهُمْ، وَيُقْبِلُ عَلَيَّ أَوْ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الأَزْدِ فَيَقُولُ: فَعَلَ قَوْمُكَ يَوْمَ كَذَا وَكَذَا كَذَا وَكَذَا)). [طرفه في : ٣٨٤٤].

तफ़्सील में शक रावी की तरफ़ से है। इन दो जुम्लों मे से ग़ीलान ने कौनसा जुम्ला कहा था ख़ुद अपना नाम लिया था या बतौरे किनाया, क़बीला अज़्द के एक शख़्स का जुम्ला इस्ते'माल किया था दरहक़ीक़त दोनों से मुराद ख़ुद उनकी अपनी ज़ात है वही क़बीला अज़्द के एक फ़र्द थे।

3777. मुझसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बुआष की जंग को (जो इस्लाम से पहले औस व ख़ज़रज मे हुई थी) अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) के मफ़ाद में पहले ही मुक़द्दम कर रखा था चुनाँचे जब आप (ﷺ) मदीना में तशरीफ़ लाए तो ये क़बीले आपस की फूट का शिकार थे और उनके सरदार कुछ क़त्ल किये जा चुके थे, कुछ ज़ख़्मी थे तो अल्लाह तआला ने उस जंग को आप (ﷺ) से पहले इसलिये मुक़द्दम किया था ताकि वो आप (ﷺ) के तशरीफ़ लाते ही मुसलमान हो जाएँ। (दीगर मक़ाम : 3846, 3930)

٣٧٧٧- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((كَانَ يَوْمُ بُعَاثَ يَوْمًا قَدَّمَهُ اللهُ لِرَسُولِهِ ﷺ، فَقَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَقَدْ افْتَرَقَ مَلَؤُهُمْ، وَقُتِلَتْ سَرَوَاتُهُمْ وَجُرِحُوا. فَقَدَّمَهُ اللهُ لِرَسُولِهِ فِي دُخُولِهِمْ فِي الإِسْلاَمِ)). [طرفاه في : ٣٨٤٦، ٣٩٣٠].

तश्रीह : बुआष या बुग़ाष मदीना से दो मील पर एक मुक़ाम है वहाँ अंसार के दो क़बीलों औस व ख़ज़रज में बड़ी सख़्त लड़ाई हुई थी। औस के रईस हुज़ैर थे, उसैद के वालिद और ख़ज़रज के रईस अम्र बिन नोअमान बियाज़ी थे। ये

दोनों उसमें मारे गये थे। पहले ख़ज़रज को फ़तह हुई थी फिर हुज़ैर ने औस वालों को मज़्बूत किया तो औस की फ़तह हुई ये हादसा आँहज़रत (ﷺ) के हिजरत के वाक़िये के चार पाँच साल पहले हो चुका था। आँहज़रत (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी पर ये क़बीले मुसलमान हो गये और उख़ुव्वते इस्लामी से पहले तमाम वाक़ियात को भूल गये आयते करीमा, **फअस्बहतुम बिनिअ़मतिही इख़्वाना** (आले इमरान : 103) में इसी तरफ़ इशारा है।

3778. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि फ़तहे मक्का के दिन जब आँहज़रत (ﷺ) ने क़ुरैश को (ग़ज़्व-ए-हुनैन की) ग़नीमत का सारा माल दे दिया तो कुछ नौजवान अंसारियों ने कहा (अल्लाह की क़सम) ये तो अजीब बात है अभी हमारी तलवारों से क़ुरैश का ख़ून टपक रहा है और हमारा हासिल किया हुआ माले ग़नीमत सिर्फ़ उन्हें दिया जा रहा है। उसकी ख़बर जब आँहज़रत (ﷺ) को मिली तो आप (ﷺ) ने अंसार को बुलाया, अनस (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो ख़बर मुझे मिली है क्या वो सहीह है? अंसार लोग झूठ नहीं बोलते थे उन्होंने अ़र्ज़ कर दिया कि आप (ﷺ) को सहीह ख़बर मिली है। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम इससे ख़ुश और राज़ी नहीं हो कि जब सब लोग ग़नीमत का माल लेकर अपने घरों को वापस होंगे तो तुम लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) को साथ लिये अपने घरों को जाओगे? अंसार जिस नाले या घाटी में चलेंगे तो मैं भी उसी नाले या घाटी में चलूँगा। (राजेअ़ : 3146)

٣٧٧٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَتِ الأَنْصَارُ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ - وَأَعْطَى قُرَيْشًا - : وَاللهِ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْعَجَبُ، إِنَّ سُيُوفَنَا تَقْطُرُ مِنْ دِمَاءِ قُرَيْشٍ، وَغَنَائِمُنَا تُرَدُّ عَلَيْهِمْ. فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ فَدَعَا الأَنْصَارَ، قَالَ فَقَالَ: ((مَا الَّذِي بَلَغَنِي عَنْكُمْ؟)) - وَكَانُوا لاَ يَكْذِبُونَ - فَقَالُوا : هُوَ الَّذِي بَلَغَكَ. قَالَ ((أَوَ لاَ تَرْضَوْنَ أَنْ يَرْجِعَ النَّاسُ بِالْغَنَائِمِ إِلَى بُيُوتِهِمْ، وَتَرْجِعُونَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى بُيُوتِكُمْ؟ وَلَوْ سَلَكَتِ الأَنْصَارُ وَادِيًا أَوْ شِعْبًا لَسَلَكْتُ وَادِيَ الأَنْصَارِ أَوْ شِعْبَهُمْ)). [راجع: ٣١٤٦]

दूसरी रिवायत में है कि अंसार ने मअ़ज़रत की कि कुछ नौजवान कम अ़क़्ल लोगों ने ऐसी बातें कह दी हैं। आप (ﷺ) का इर्शाद सुनकर अंसार ने बिल इत्तिफ़ाक़ कहा कि हम इस फ़ज़ीलत पर सब ख़ुश हैं। नाला या घाटी का मतलब ये कि सफ़र और हज़र मौत और ज़िन्दगी में हर हाल में तुम्हारे साथ हूँ। क्या ये शर्फ़ अंसार को काफ़ी नहीं है?

बाब 2 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि, अगर मैंने मक्का से हिजरत न की होती मैं भी अंसार का एक आदमी होता,

٢- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ لاَ الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الأَنْصَارِ))

ये क़ौल अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन कअ़ब बिन आ़सिम ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है।

قَالَهُ عَبْدُ اللهِ بْنِ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

3779. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद

٣٧٧٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ

بِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، أَوْ قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ: ((لَوْ أَنَّ الأَنْصَارَ سَلَكُوا وَادِيًا أَوْ شِعْبًا لَسَلَكْتُ فِي وَادِي الأَنْصَارِ، وَلَوْلاَ الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الأَنْصَارِ)). فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: مَا ظَلَمَ - بِأَبِي وَأُمِّي - آوَوْهُ وَنَصَرُوهُ. أَوْ كَلِمَةً أُخْرَى)). [طرفه في : ٧٣٤٤].

बिन ज़ियाद ने, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने या (यूँ बयान किया कि) अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया, अंसार जिस नाले या घाटी में चलें तो मैं भी उन्हीं के नाले में चलूँगा, और अगर मैं हिजरत न करता तो मैं अंसार का एक फ़र्द होना पसन्द करता। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा आप (ﷺ) पर मेरे माँ–बाप क़ुर्बान हों आप (ﷺ) ने ये कोई भी बात नहीं फ़र्माई आप (ﷺ) को अंसार ने अपने यहाँ ठहराया और आप (ﷺ) की मदद की थी या ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने (उसके हम मा'नी) और कोई दूसरा कलिमा कहा। (दीगर मक़ाम : 7344)

मा'लूम हुआ कि अंसार का दर्जा बहुत बड़ा है कि रसूले करीम (ﷺ) ने उस गिरोह में होने की तमन्ना ज़ाहिर फ़र्माई। अंसार की अल्लाह के नज़दीक क़ुबूलियत का ये खुला हुआ षुबूत है कि इस्लाम और क़ुर्आन के साथ उनका नाम क़यामत तक ख़ैर के साथ ज़िन्दा है। आज भी अंसार भाई जहाँ भी हैं दीनी ख़िदमात में बढ़ चढ़कर ह़िस्सा ले रहे हैं।

٣- بَابُ إِخَاءِ النَّبِيِّ ﷺ بَيْنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالأَنْصَارِ

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का अंसार और मुहाजिरीन के दरम्यान भाईचारा क़ायम करना

तश्रीह़ : जब मुहाजिरीन अपने वत़न मक्का को छोड़कर मदीना आए तो बहुत परेशान होने लगे। घर बार, अम्वाल व अक़ारिब के छूटने का ग़म था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस मौक़े पर डेढ़-डेढ़ सौ अंसार और मुहाजिरीन में भाईचारा क़ायम करा दिया जिसकी वजह से मुहाजिर और अंसारी दोनों आपस में एक–दूसरे को सगे भाई से ज़्यादा समझने लगे यही वाक़िया मुवाख़ात है जिसकी नज़ीर क़ौमों की तारीख़ में मिलनी नामुमकिन है।

٣٧٨٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: ((لَمَّا قَدِمُوا الْمَدِيْنَةَ آخَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بَيْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ وَسَعْدِ بْنِ الرَّبِيْعِ. قَالَ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ إِنِّي أَكْثَرُ الأَنْصَارِ مَالاً، فَاقْسِمْ مَالِي نِصْفَيْنِ. وَلِيَ امْرَأَتَانِ، فَانْظُرْ أَعْجَبَهُمَا إِلَيْكَ فَسَمِّهَا لِيْ أُطَلِّقْهَا، فَإِذَا انْقَضَتْ عِدَّتُهَا فَتَزَوَّجْهَا. قَالَ : بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ، أَيْنَ سُوقُكُمْ؟ فَدَلُّوهُ عَلَى سُوقِ بَنِي قَيْنُقَاعٍ، فَمَا انْقَلَبَ

3780. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उनके दादा ने कि जब मुहाजिर लोग मदीना में आए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और सअ़द बिन रबीअ़ा के दरम्यान भाईचारा करा दिया। सअ़द (रज़ि.) ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) से कहा कि मैं अंसार में सबसे ज़्यादा दौलतमन्द हूँ इसलिये आप मेरा आधा माल ले लें और मेरी बीवियाँ हैं, आप उन्हें देख लें जो आपको पसन्द हो उसके बारे में मुझे बताएँ मैं उसे त़लाक़ दे दूँगा, इद्दत पूरी होने के बाद आप उससे निकाह कर लें। इस पर अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह तुम्हारे अहल और माल में बरकत अ़ता फ़र्माए। तुम्हारा बाज़ार किधर है? चुनाँचे मैंने बनी क़ैनक़ाअ़ का बाज़ार उन्हें बता दिया, जब वहाँ से कुछ तिजारत करके लौटे तो उनके साथ कुछ पनीर और घी था फिर वो इसी त़रह रोज़ाना सुबह़ सवेरे बाज़ार

إلاَّ وَمَعَهُ فَضْلٌ مِنْ أَقِطٍ وسَمن. ثُمَّ تَابَعَ الْغُدُوَّ. ثُمَّ جَاءَ يَوْمًا وَبِهِ أَثَرُ صُفْرَةٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَهْيَم؟)) قَالَ: تَزَوَّجْتُ. قَالَ: ((كَمْ سُقْتَ إِلَيْهَا)). قَالَ : نَوَاةً مِنْ ذَهَبٍ - أَوْ وَزْنَ نَوَاةٍ مِنْ ذَهَبٍ - شَكَّ إِبْرَاهِيمُ)).

[راجع: ٢٠٤٨]

में चले जाते और तिजारत करते आख़िर एक दिन ख़िदमते नबवी में आए तो उनके जिस्म पर (ख़ुश्बू की) ज़र्दी का निशान था आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये क्या है उन्होंने बताया कि मैंने शादी कर ली है आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, महर कितना अदा किया है? अ़र्ज़ किया कि सोने की एक गुठली या (ये कहा कि) एक गुठली के पाँच दिरहम वज़न के बराबर सोना अदा किया है। ये शक इब्राहीम रावी को हुआ। (राजेअ़ : 2048)

٣٧٨١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: قَدِمَ عَلَيْنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ وَآخَى رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَهُ وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيْعِ - وَكَانَ كَثِيْرَ الْمَالِ - فَقَالَ سَعْدٌ: قَدْ عَلِمَتِ الأَنْصَارُ أَنِّي مِنْ أَكْثَرِهَا مَالاً، سَأَقْسِمُ مَالِي بَيْنِي وَبَيْنَكَ شَطْرَيْنِ، وَلِيَ امْرَأَتَان فَانْظُرْ أَعْجَبَهُمَا إِلَيْكَ فَأُطَلِّقُهَا حَتَّى إِذَا حَلَّتْ تَزَوَّجْتَهَا. فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ. فَلَمْ يَرْجِعْ يَوْمَئِذٍ حَتَّى أَفْضَلَ شَيْئًا مِنْ سَمْنٍ وَأَقِطٍ، فَلَمْ يَلْبَثْ إِلاَّ يَسِيْرًا حَتَّى جاء رسول الله ﷺ وعَلَيْهِ وَضَرٌ مِنْ صُفْرَةٍ. فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَهْيَم؟)) قَالَ: تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً مِنَ الأَنْصَارِ. فَقَالَ: ((مَا سُقْتَ فِيْهَا؟)) قَالَ : وَزْنَ نَوَاةٍ مِنْ ذَهَبٍ - أَوْ نَوَاةً مِنْ ذَهَبٍ - فَقَالَ: ((أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)).

[راجع: ٢٠٤٩]

3781. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि जब अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) (मक्का से हिजरत करके मदीना आए तो) रसूले करीम (ﷺ) ने उनके और सअ़द बिन रबीअ़ (रज़ि.) के दरम्यान भाईचारा करा दिया, ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) बहुत दौलतमन्द थे उन्होंने अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) से कहा, अंसार को मा'लूम है कि मैं उनमें सबसे ज़्यादा मालदार हूँ इसलिये मैं अपना आधा आधा माल अपने और आपके दरम्यान बांट देना चाहता हूँ और मेरे घर में दो बीवियाँ हैं जो आपको पसन्द हो मैं उसे त़लाक़ दे दूँगा उसकी इद्दत गुज़र जाने पर आप उससे निकाह कर लें। ह़ज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने कहा अल्लाह तुम्हारे अहल व माल में बरकत अ़ता करे। (मुझको अपना बाज़ार दिखला दो) फिर वो बाज़ार से उस वक़्त तक वापस नहीं आए जब तक कुछ घी और पनीर बत़ौर नफ़ा बचा नहीं लिया। थोड़े ही दिनों के बाद जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में वो ह़ाज़िर हुए तो जिस्म पर ज़र्दी का निशान था। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा ये क्या है? बोले कि मैंनें एक अंसारी ख़ातून से निकाह़ कर लिया है। आप (ﷺ) ने पूछा महर क्या दिया है? बोले एक गुठली सोना या (ये कहा कि) सोने की एक गुठली दी है। उसके बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा अब वलीमा कर ख़्वाह एक बकरी ही से हो। (राजेअ़ : 2049)

तशरीह : मुज्तहिदे मुत्लक़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने इस ह़दीष़ को बहुत से मुक़ामात पर नक़ल फ़र्माकर इससे बहुत से मसाइल को निकाला है जो आपके मुज्तहिदे मुत्लक़ होने की दलील है। जो ह़ज़रात ऐसे जलीलुल क़द्र इमाम को महज़ नाक़िल कहकर आपकी दिरायत का इंकार करते हैं उनको अपनी इस ह़रकत पर नादिम होना चाहिये कि वो चाँद पर थूकने की कोशिश कर रहे हैं, **हदाहुमुल्लाहु इला सिरातिम्मुस्तक़ीम आमीन** यहाँ ह़ज़रत इमाम का मक़सद इस ह़दीष़ के लाने से वाक़िया मुवाख़ात को बयान करना है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और ह़ज़रत सअ़द बिन रबीअ़ को आपस में भाई भाई बना दिया रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन।

3782. हमसे अबू हम्माम सुल्त बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा कि मैंने मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रह़मान से सुना, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि अंसार ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ) खजूर के बाग़ात हमारे और मुहाजिरीन के दरम्यान तक़्सीम फ़र्मा दें। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं ऐसा नहीं करूँगा इस पर अंसार ने (मुहाजिरीन से) कहा फिर आप (ﷺ) ऐसा कर लें कि काम हमारी त़रफ़ से आप अंजाम दिया करें और खजूरों में आप हमारे साथी हो जाएँ, मुहाजिरीन ने कहा हमने आप लोगों की ये बात सुनी और हम ऐसा ही करेंगे। (राजेअ़ : 2325)

٣٧٨٢- حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَبُو هَمَّامٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْمُغِيْرَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَالَتِ الأَنْصَارُ: اقْسِمْ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمُ النَّخْلَ. قَالَ: لاَ. قَالَ: تَكْفُونَنَا الْمَؤُونَةَ وَتُشْرِكُونَا فِي الثَّمَرِ. قَالُوا: سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا)). [راجع: ٢٣٢٥]

या'नी उसमें मुज़ायक़ा नहीं बाग़ तुम्हारे ही रहें हम उनमें मेह़नत करेंगे उसकी उजरत मे आधा फल ले लेंगे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अंसार और मुहाजिरीन में बाग़ों की तक़्सीम मंज़ूर नहीं फ़र्माई, क्योंकि आप (ﷺ) को वह्ये इलाही से मा'लूम हो गया था कि आइन्दा फ़ुतूह़ात बहुत होंगी बहुत सी जायदादें मुसलमानों के हाथ आएँगी फिर अंसार को मौरूषी जायदाद क्यूँ तक़्सीम कराई जाए। सदक़ रसूलुल्लाह (ﷺ)।

बाब 4 : अंसार से मुह़ब्बत रखने का बयान

٤- بَابُ حُبُّ الأَنْصَارِ

3783. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, मुझे अ़दी बिन ष़ाबित ने ख़बर दी, कहा कि मैंने ह़ज़रत बराअ (रज़ि.) से सुना वो कहते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना यूँ बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अंसार से सिर्फ़ मोमिन ही मुह़ब्बत रखेगा और उनसे सिर्फ़ मुनाफ़िक़ ही बुग़्ज़ रखेगा। पस जो शख़्स उनसे मुह़ब्बत रखे उससे अल्लाह मुह़ब्बत रखेगा और जो उनसे बुग़्ज़ रखेगा उससे अल्लाह तआ़ला बुग़्ज़ रखेगा (मा'लूम हुआ कि अंसार की मुह़ब्बत निशाने ईमान है और उनसे दुश्मनी रखना बेईमान लोगों का काम है)।

٣٧٨٣- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ - أَوْ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ -: ((الأَنْصَارُ لاَ يُحِبُّهُمْ إِلاَّ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يُبْغِضُهُمْ إِلاَّ مُنَافِقٌ. فَمَنْ أَحَبَّهُمْ أَحَبَّهُ اللهُ، وَمَنْ أَبْغَضَهُمْ أَبْغَضَهُ اللهُ)).

3784. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन

٣٧٨٤- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ

جُبَيْرٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((آيَةُ الإِيْمَانِ حُبُّ الأَنْصَارِ، وَآيَةُ النِّفَاقِ بُغْضُ الأَنْصَارِ)).

[راجع: ١٧]

जुबैर ने कहा और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ईमान की निशानी अंसार से मुहब्बत रखना है और निफ़ाक़ की निशानी अंसार से बुग़्ज़ रखना है।

(राजेअ : 17)

अंसार इस्लाम के अव्वलीन मददगार हैं इस लिहाज़ से उनका बड़ा दर्जा है पस जो अंसार से मुहब्बत रखेगा उसने इस्लाम की मुहब्बत से नूरे ईमान हासिल कर लिया और जिसने ऐसे बन्दगाने इलाही से बुग़्ज़ रखा उसने इस्लाम से बुग़्ज़ रखा इसलिये कि ऐसी बुरी ख़सलत निफ़ाक़ की अलामत है।

٥ - بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلأَنْصَارِ: أَنْتُمْ أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ

बाब 203 : अंसार से नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि तुम लोग मुझे सब लोगों से ज़्यादा महबूब हो

٣٧٨٥- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((رَأَى النَّبِيُّ ﷺ النِّسَاءَ وَالصِّبْيَانَ مُقْبِلِيْنَ - قَالَ: حَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ مِنْ عُرْسٍ - فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ مُمْثِلاً فَقَالَ: اللَّهُمَّ أَنْتُمْ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ. قَالَهَا ثَلاَثَ مِرَارٍ)). [طرفه في : ٥١٨٠].

3785. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) ने (अंसार की) औरतों और बच्चों को मेरे गुमान के मुताबिक़ किसी शादी से वापस आते हुए देखा तो आप खड़े हो गये और फ़र्माया अल्लाह (गवाह है) तुम लोग मुझे सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो, तीन बार आप (ﷺ) ने ऐसा ही फ़र्माया। (दीगर मक़ाम : 5180)

٣٧٨٦- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ كَثِيْرٍ حَدَّثَنَا بَهْزُ بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي هِشَامُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَمَعَهَا صَبِيٌّ لَهَا، فَكَلَّمَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((وَالَّذِيْ نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنَّكُمْ أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ. مَرَّتَيْنِ)).

[طرفاه في : ٥٢٣٤، ٦٦٤٥].

3786. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमसे बहज़ बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझे हिशाम बिन ज़ैद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा कि अंसार की एक औरत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं, उनके साथ एक उनका बच्चा भी था। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे कलाम किया फिर फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम लोग मुझे सबसे ज़्यादा महबूब हो दो मर्तबा आपने ये जुम्ला फ़र्माया।

(दीगर मक़ाम : 5234, 6645)

तश्रीह : इमाम नववी (रह) फ़र्माते हैं, हाज़िहिल्मर्अतु अम्मा महरिमुन लहू कउम्मि सुलैम व उख़्तिहा व अम्मलमुरादु बिल्ख़ल्वति अन्नहा सअल्तहू सुवालन ख़फ़िय्यन बिहज्रिही नासुंवलम तकुन ख़ल्वतुन मुत्लक़तुन व हियल ख़ल्वतु अल्मन्ही अ़न्हा (नववी) ये आप (ﷺ) से ख़ल्वत में बात करने वाली औरत

ऐसी थी जिसके लिये आप (ﷺ) महरम थे उम्मे सुलैम या उसकी बहन या ख़ल्वत से मुराद ये है कि उसने लोगों की मौजूदगी में आप (ﷺ) से एक बात निहायत आहिस्तगी से की और जिस ख़ल्वत की मुमानअत है वो मुराद नहीं है। मुस्लिम की रिवायत में फ़ख़लाबिहा का लफ़्ज़ है जिसकी वजह से वज़ाहत करना ज़रूरी हुआ।

बाब 6 : अंसार के ताबेदार लोगों की फ़ज़ीलत का बयान

٦- بَابُ إِتْبَاعِ الأَنْصَارِ

इससे उनके हलीफ़ और लौण्डी-गुलाम, हाली-मवाली मुराद हैं।

3787. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उन्होंने अबू हम्ज़ा से सुना, और उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से कि अंसार ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! हर नबी के ताबेदार लोग होते हैं और हमने आप (ﷺ) की ताबेदारी की है। आप (ﷺ) अल्लाह से दुआ फ़र्माएँ कि अल्लाह हमारे ताबेदारों को भी हममें शरीक कर दे। तो आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी दुआ फ़र्माई। फिर मैंने इस हदीष का ज़िक्र अ़ब्दुर्रहमान इब्ने अबी लैला के सामने किया तो उन्होंने कहा कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने भी ये हदीष बयान की थी।

(दीगर मक़ाम : 3788)

٣٧٨٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرٍو سَمِعْتُ أَبَا حَمْزَةَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ ((قَالَتِ الأَنْصَارُ: يَا رَسُولَ اللهِ، لِكُلِّ نَبِيٍّ أَتْبَاعٌ، وَإِنَّا قَدِ اتَّبَعْنَاكَ، فَادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَ أَتْبَاعَنَا مِنَّا. فَدَعَا بِهِ. فَنَمَيْتُ ذَلِكَ إِلَى ابْنِ أَبِي لَيْلَى، فَقَالَ : قَدْ زَعَمَ ذَلِكَ زَيْدٌ)).

[طرفه في : ٣٧٨٨].

3788. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, कहा हमसे अ़म्र बिन मुर्रह ने कि मैंने अंसार के एक आदमी अबू हम्ज़ा से सुना कि अंसार ने अ़र्ज़ किया हर क़ौम के ताबेदार (हाली-मवाली) होते हैं। हम तो आप (ﷺ) के ताबेदार बने आप (ﷺ) दुआ फ़र्माएँ कि अल्लाह तआ़ला हमारे ताबेदारों को भी हममें शरीक कर दे। पस नबी करीम (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई, ऐ अल्लाह! उन ताबेदारों को भी उन्हीं में से कर दे। अ़म्र ने बयान किया कि फिर मैंने इस हदीष का तज़्किरा अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी लैला से किया तो उन्होंने (तअ़ज्जुब के तौर पर) कहा ज़ैद ने ऐसा कहा? शुअ़बा ने कहा कि मेरा ख़याल है कि ये ज़ैद। ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) हैं (न और कोई ज़ैद जैसे ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) वग़ैरह जैसे इब्ने अबी लैला ने गुमान किया) (राजेअ़ : 3787)

٣٧٨٨- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ سَمِعْتُ أَبَا حَمْزَةَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ : قَالَتِ الأَنْصَارُ: إِنَّ لِكُلِّ قَوْمٍ أَتْبَاعًا، وَإِنَّا قَدِ اتَّبَعْنَاكَ، فَادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَ أَتْبَاعَنَا مِنَّا. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((اللَّهُمَّ اجْعَلْ أَتْبَاعَهُمْ مِنْهُمْ)). قَالَ عَمْرٌو: فَذَكَرْتُهُ لابْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: قَدْ زَعَمَ ذَاكَ زَيْدٌ. قَالَ شُعْبَةُ: أَظُنُّهُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ)).

[راجع: ٣٧٨٧]

हाफ़िज़ ने कहा शुअ़बा का गुमान सहीह है अबू नुऐम ने मुस्तख़रज में इसको अ़ली बिन जअ़दि के तरीक़ से ज़ैद बिन अरक़म से यक़ीनी तौर पर निकाला है।

बाब अंसार के घरानों की फ़ज़ीलत का बयान

٧ - بَابُ فَضْلِ دُورِ الأَنْصَارِ

3789. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे

٣٧٨٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا

غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خَيْرُ دُورِ الأَنْصَارِ بَنُو النَّجَّارِ، ثُمَّ بَنُو عَبْدِ الأَشْهَلِ، ثُمَّ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ، ثُمَّ بَنُو سَاعِدَةَ. وَفِي كُلِّ دُورِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ)). فَقَالَ سَعْدٌ : مَا أَرَى النَّبِيَّ ﷺ إِلاَّ قَدْ فَضَّلَ عَلَيْنَا. فَقِيلَ: قَدْ فَضَّلَكُمْ عَلَى كَثِيرٍ. وَقَالَ عَبْدُ الصَّمَدِ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ أَبُو أُسَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا وَقَالَ : ((سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ)).

[أطرافه في : ٣٧٩٠، ٣٨٠٨، ٦٠٥٣].

ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मैंने क़तादा से सुना, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू उसैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बनू नज्जार का घराना अंसार में से सबसे बेहतर घराना है, फिर बनू अब्दुल अश्हल का, फिर बनू अल हारिष़ बिन ख़ज़रज अकबर और औस दोनों हारिष़ा के बेटे थे और अंसार का हर घराना उम्दा ही है। सअद बिन उबादा (रज़ि.) ने कहा कि मेरा ख़याल है नबी करीम (ﷺ) ने अंसार के कई क़बीलों को हम पर फ़ज़ीलत दी है। उनसे किसी ने कहा तुझको भी तो बहुत से क़बीलों पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़ज़ीलत दी है और अब्दुस् समद ने कहा कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना और उनसे अबू उसैद ने नबी करीम (ﷺ) से यही हदीष़ बयान की। इस रिवायत में सअद के बाप का नाम उबादा मज़्कूर है।

(दीगर मक़ाम : 3790, 3808, 6053)

जिन्होंने ये कहा था कि आँहज़रत (ﷺ) ने औरों को हम पर फ़ज़ीलत दी। जब सअद बिन उबादा ने ये कहा तो उनके भतीजे सहल ने उनसे कहा कि तुम आँहज़रत (ﷺ) पर ए'तिराज़ करते हो, आप (ﷺ) ख़ूब जानते हैं। (कि कौन किससे अफ़ज़ल है?)

बनू नज्जार क़बील-ए-ख़ज़रज से हैं। उनके दादा तैमुल्लाह बिन ष़अलबा बिन अम्र ख़ज़रजी ने एक आदमी पर हमला करके उसे काट दिया था। इस पर उनका लक़ब बनू नज्जार हो गया। (फ़त्हुल बारी) हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं **बनुन्नज्जार हुम इख़वानु जद्दि रसूलिल्लाहि (ﷺ) लिअन्न वालिदत अब्दिल्मुत्तलिब मिन्हुम व अलैहिम नज़ल लम्मा क़दिमल्मदीनत फलहुम मज़ीदुन अला ग़ैरिहिम व कान अनस मिन्हुम फलहू मज़ीदु इनायति तहफ़्फ़ुज़ि फ़ज़ाइलिहिम** (फ़त्हुल्बारी) या'नी बनू नज्जार नबी करीम (ﷺ) के मामू होते हैं इसलिये कि अब्दुल मुत्तलिब आप (ﷺ) के दादा मुहतरम की वालिदा बनू नज्जार की बेटी थीं इसलिये जनाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) जब मदीना तशरीफ़ लाए तो पहले बनू नज्जार ही के मेहमान हुए, इसलिये उनके लिये मज़ीद फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई। हज़रत अनस (रज़ि.) भी उसी ख़ानदान से थे। इसीलिये उन पर इनायाते नबवी ज़्यादा थीं।

इस रिवायत में यहाँ कुछ इज्माल है जिसे मुस्लिम की रिवायत ने खोल दिया है जो ये है **हद्दष़ना यहयब्नु यह्या अत्तमीमी अनल्मुग़ीरतुब्नु अब्दिर्रह्मान अन अबिज़्ज़नाद क़ाल शहिद अबू सल्मत तसमिअ अबा सैद अल्अन्सारी यश्हदु अन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) क़ाल दुरूल्अन्सारि बनुन्नज्जार षुम्म बनू अब्दिल्अश्हल षुम्म बनुल्हारिषि बिन ख़ज़रज षुम्म बनू साइदत वी दूरिल्अन्सारि ख़ैरन क़ाल अबू सलमत क़ाल अबू उसैद अताहुम अना अला रसूलिल्लाहि (ﷺ) लौ कुन्तु काज़िबन लबदअतु क़ौमी बनी साइदत व बलग ज़ालिक सअदुब्नु उबादा फवजद फ़ी नफ़्सिही व क़ाल ख़ल्फ़ुना फकुन्ना आख़र अल्अर्बअ असजू इला हिमारी अता रसूलल्लाहि (ﷺ) फकल्लमहू इब्न अख़ी सहल फक़ाल अ तज़्हबु लितरुद्द अला रसूलिल्लाहि (ﷺ) व रसुलुल्लाहि (ﷺ) आलमु औ लैस हस्बुक अन्तकून राबिउ अर्बइन फ़रजअ व क़ाल अल्लाहु व रसूलुहू आलमू व अमर बिहिमारिही फहल्ल अन्हु** (सहीह मुस्लिम जिल्द 2, पेज 305) ख़ुलासा ये कि जब हज़रत सअद बिन उबादा ने ये सुना कि रसूले करीम (ﷺ) ने हमारे क़बीला का ज़िक्र चौथे दर्जे पर फ़र्माया है तो ये ग़ुस्सा होकर आप (ﷺ) की ख़िदमत शरीफ़ में अपने गधे पर सवार होकर जाने

लगे मगर उनके भतीजे सहल ने उनसे कहा कि आप रसूले करीम (ﷺ) के फ़र्मान की तर्दीद करने जा रहे हैं हालाँकि रसूले करीम (ﷺ) बहुत ज़्यादा जानने वाले हैं। क्या आपके शर्फ़ के लिये ये काफ़ी नहीं कि रसूले करीम (ﷺ) ने चौथे दर्जे पर बतौर शर्फ़ आपके क़बीले का नाम लेकर ज़िक्र फ़र्माया। जबकि बहुत से और क़बाईले-अंसार के लिये आपने सिर्फ़ इज्मालन ज़िक्रे ख़ैर फ़र्मा दिया है ये सुनकर हज़रत सअ़द बिन उ़बादा ने अपने ख़्याल से रुजूअ़ किया और कहने लगे हाँ बेशक अल्लाह व रसूल ही ज़्यादा जानते हैं, फ़ौरन अपनी सवारी से ज़ीन को उतारकर रख दिया।

3790. हमसे सअ़द बिन हफ़्स़ तल्ही ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या ने कि अबू सलमा ने बयान किया कि मुझे हज़रत अबू उसैद (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि अंसार में सबसे बेहतर या अंसार के घरानों में से सबसे बेहतर बनू नज्जार, बनू अ़ब्दिल अश्हल, बनू हारिष़ और बनू साएदा के घराने हैं।

(राजेअ़ : 3789)

٣٧٩٠- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ الطَّلْحِيُّ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى قَالَ أَبُو سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا أَبُو أُسَيْدٍ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: خَيْرُ الأَنْصَارِ - أَوْ قَالَ: ((خَيْرُ دُوْرِ الأَنْصَارِ - بَنُو النَّجَّارِ، وَبَنُو عَبْدِ الأَشْهَلِ، وَبَنُو الْحَارِثِ، وَبَنُو سَاعِدَةَ)).

[راجع: ٣٧٨٩]

3791. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अ़म्र बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अ़ब्बास बिन सहल ने और उनसे अबू हुमैद साअ़दी ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अंसार का सबसे बेहतरीन घराना बनू नज्जार का घराना है फिर अ़ब्दुल अश्हल का, फिर बनी हारिष़ का, फिर बनी साएदा का और अंसार के तमाम घरानों में ख़ैर है। फिर हमारी मुलाक़ात सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) से हुई तो वो अबू उसैद (रज़ि.) से कहने लगे, अबू उसैद तुमको मा'लूम नहीं आँहज़रत (ﷺ) ने अंसार के बेहतरीन घरानों की ता'रीफ़ की और हमें (बनू साएदा) को सबसे आख़ीर में रखा आख़िर सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अंसार के सबसे बेहतरीन ख़ानदानों का बयान हुआ और हम सबसे आख़ीर में कर दिये गये आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम्हारे लिये ये काफ़ी नहीं कि तुम्हारा ख़ानदान भी बेहतरीन ख़ानदान है।

(राजेअ़ : 1481)

٣٧٩١- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ عَبَّاسِ بْنِ سَهْلٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ خَيْرَ دُوْرِ الأَنْصَارِ دَارُ بَنِي النَّجَّارِ، ثُمَّ عَبْدِ الأَشْهَلِ، ثُمَّ دَارُ بَنِي الْحَارِثِ، ثُمَّ بَنِي سَاعِدَةَ، وَفِي كُلِّ دُوْرِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ)). فَلَحِقْنَا سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ، فَقَالَ أَبُو أُسَيْدٍ: أَلَمْ تَرَ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ خَيَّرَ الأَنْصَارَ فَجَعَلَنَا أَخِيرًا؟ فَأَدْرَكَ سَعْدٌ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((يَا رَسُولَ اللهِ خُيِّرَ دُوْرُ الأَنْصَارِ فَجُعِلْنَا آخِرًا. فَقَالَ : ((أَوَلَيْسَ بِحَسْبِكُمْ أَنْ تَكُونُوا مِنَ الْخِيَارِ؟)).

[راجع: ١٤٨١]

आख़िर में रहे तो क्या और अव्वल मे रहे तो क्या बहरहाल तुम्हारा ख़ानदान भी बेहतरीन ख़ानदान है उस पर तुमको ख़ुश होना चाहिये। एक रिवायत में है कि इस बारे में हज़रत सअ़द बिन उ़बादा ने आँहज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ करना चाहा था मगर वो अपने भतीजे के कहने पर रुक गये और अपने ख़्याल से रुजूअ़ कर लिया, यहाँ आँहज़रत (ﷺ) से मिलना और इस ख़्याल का ज़ाहिर करना मज़्कूर है दोनों में तत्बीक़ ये हो सकती है कि उस वक़्त वो इस ख़्याल से रुक गये होंगे। बाद में जब मुलाक़ात हुई होगी तो आप (ﷺ) से दरयाफ़्त कर लिया होगा।

बाब 8 : नबी करीम (ﷺ) का अंसार से ये फ़र्माना कि तुम स़ब्र से काम लेना यहाँ तक कि तुम मुझसे हौज़ पर मुलाक़ात करो. ये क़ौल ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है.

٨- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلأَنْصَارِ: ((اصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الْحَوْضِ)) قَالَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

3792. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने कहा कि मैंने क़तादा से सुना, उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से और उन्होंने ह़ज़रत उसैद बिन ह़ुज़ैर (रज़ि.) से कि एक अंसारी स़हाबी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! फ़लाँ शख़्स़ की त़रह मुझे भी आप (ﷺ) ह़ाकिम बना दें। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे बाद (दुनियावी मुआ़मलात में) तुम पर दूसरों को तरजीह़ दी जाएगी इसलिये स़ब्र से काम लेना, यहाँ तक कि मुझसे हौज़ पर आ मिलो।

(दीगर मक़ाम : 7057)

٣٧٩٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ: أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَلاَ تَسْتَعْمِلُنِي كَمَا اسْتَعْمَلْتَ فُلاَنًا؟ قَالَ: ((سَتَلْقَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً. فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الْحَوْضِ)).

[طرفه في : ٧٠٥٧].

ह़ाफ़िज़ ने कहा कि ये अ़र्ज़ करने वाले ख़ुद उसैद बिन ह़ुज़ैर थे और जिनको हुकूमत मिली थी वो अ़म्र बिन आ़स़ थे।

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ स़ाहब फ़र्माते हैं, **व हुव मिन रिवायति स़हाबी अ़न स़हाबी ज़ाद मुस्लिम व क़द रवाहु यह़्या इब्नु सईदव हिशामुब्नु ज़ैद अ़न अनस बिदूनि ज़िक्रि उसैद बिन ह़ुज़ैर लाकिन इख़्तिस़ारिल्क़िस़्स़तिल्लती हाहुना व ज़क्र कुल्लुम्मिन्हुमा क़िस्सतन उख़रा गैर हाज़िही फहदीषु यहयब्नि सईदिन तक़द्दम फिल्जिज़्यति व हदीषु हिशामिन याती फिल्मग़ाज़ी व वक़अ लिहाजल्हदीषि क़िस़्स़तुन उख़रा मिन वज्हिन आख़र फअख़्रजश्शफिइय्यु मिन रवायति मुहम्मदिनब्नि इब्राहीम अत्तमीमी अ़न अबी उसैदिब्नि ह़ुज़ैरिन त़लब मिनन्नबिय्यि (ﷺ) लिअहलि बैतैनि मिनल्अन्स़ारि फअमर लक बैतुन बिवसक़िन मिन तमरिन व शतरिम्मिन शईरिन फक़ाल उसैद या रसूलल्लाहि जज़ाकल्लाहु अ़न्ना ख़ैरन फक़ाल व अन्तुम फजज़ाकुमुल्लाहु ख़ैरन या मअशरल्अन्स़ारि व इन्नकुम लाइक़तु स़ब्रिन व इन्नकुम सतल्क़ून बअ़दी अष़रतन** (फ़त्हुल बारी) या'नी ये रिवायत स़हाबी (ह़ज़रत अनस) की स़हाबी (ह़ज़रत उसैद) से है और मुस्लिम ने ज़्यादा किया कि इस रिवायत को यह़्या बिन सईद और हिशाम बिन ज़ैद ने अनस से रिवायत किया है उसमें उसैद का ज़िक्र नहीं है लेकिन क़िस़्स़ा इख़्तिस़ार से मज़्कूर है और उन दोनों ने उसके सिवा दूसरा क़िस़्स़ा ज़िक्र किया है। यह़्या बिन सईद वाली ह़दीष़ बाबुल जिज़्या में मज़्कूर हो चुकी है और हिशाम की ह़दीष़ मग़ाज़ी में आएगी और इस ह़दीष़ के बारे में दूसरे त़रीक़ से एक और वाक़िया ज़िक्र हुआ है जिसे इमाम शाफ़ई ने मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी की रिवायत अबू उसैद बिन ह़ुज़ैर से नक़ल किया है कि अबू उसैद ने दो घरानों के लिये अंस़ार में से आँह़ज़रत (ﷺ) से इम्दाद त़लब की। आँह़ज़रत (ﷺ) ने हर घराना के लिए एक वस्क़ खजूर और कुछ जो बत़ौरे इम्दाद देने का हुक्म फ़र्माया। इस पर उसैद ने आप (ﷺ) का शुक्रिया अदा करते हुए जज़ाकल्लाह कहा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने जवाब में फ़र्माया कि ऐ अंस़ारियों! अल्लाह तुमको भी जज़ाए ख़ैर दे। मेरे बाद तुम लोग तल्ख़ियाँ चखोगे और देखोगे कि दूसरों को तुम पर तरजीह़ दी जाएगी। पस उस वक़्त तुम स़ब्र से काम लेना, यहाँ तक कि मुझसे हौज़े कौष़र पर आकर मुलाक़ात करो।

3793. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे

٣٧٩٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامٍ قَالَ: سَمِعْتُ

أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِلأَنْصَارِ: ((إِنَّكُمْ سَتَلْقَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً، فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي، وَمَوْعِدُكُمُ الْحَوْضُ)). [راجع: ٣١٤٦]

हिशाम ने कहा कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार से कहा, मेरे बाद तुम देखोगे कि तुम पर दूसरों को फ़ौक़ियत दी जाएगी। पस तुम सब्र करना यहाँ तक कि मुझसे आ मिलो और मेरी तुमसे मुलाक़ात हौज़ पर होगी। (राजेअ : 3146)

٣٧٩٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حِيْنَ خَرَجَ مَعَهُ إِلَى الْوَلِيْدِ قَالَ: ((دَعَا النَّبِيُّ ﷺ الأَنْصَارَ إِلَى أَنْ يُقْطِعَ لَهُمُ الْبَحْرَيْنِ، فَقَالُوا: لاَ، إِلاَّ أَنْ تُقْطِعَ لإِخْوَانِنَا مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ مِثْلَهَا)). قَالَ: ((إِمَّا لاَ فَاصْبِرُوْا حَتَّى تَلْقَوْنِي، فَإِنَّهُ سَيُصِيْبُكُمْ بَعْدِي أَثَرَةٌ)). [راجع: ٢٣٧٦]

3794. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना... जब वो अनस (रज़ि.) के साथ ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के यहाँ जाने के लिये निकले .... कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार को बुलाया ताकि बहरैन का मुल्क बतौरे जागीर उन्हें अ़ता फ़र्मा दें। अंसार ने कहा जब तक आप (ﷺ) हमारे भाई मुहाजिरीन को भी उसी जैसी जागीर न अ़ता फ़र्माएँ हम इसे क़ुबूल नहीं करेंगे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया देखो जब आज तुम क़ुबूल नहीं करते हो तो फिर मेरे बाद भी सब्र करना यहाँ तक कि मुझसे आ मिलो, क्योंकि मेरे बाद क़रीब ही तुम्हारी ह़क़तल्फ़ी होने वाली है। (राजेअ : 2376)

या'नी दूसरे ग़ैर मुस्तह़िक़ लोग ओहदों पर मुक़र्रर होंगे और तुमको महरूम कर दिया जाएगा, बनी उमय्या के ज़माने में ऐसा ही हुआ और रसूले करीम (ﷺ) की पेशीनगोई ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ स़ह़ीह़ स़ाबित हुई, मगर अंसार ने फ़िल वाक़ेअ़ सब्र से काम लेकर वसिय्यते नबवी पर पूरा अ़मल किया रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु। ये उस वक़्त की बात है जब हज़रत अनस (रज़ि.) को अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने सताया था और वो बसरा से दमिश्क़ जाकर वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के यहाँ अपनी शिकायात लेकर पहुँचे थे। आख़िर वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक (ह़ाकिमे वक़्त) ने उनका ह़क़ दिलाया। (फ़त्हुल बारी)

٩ - بَابُ دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَصْلِحِ الأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ))

बाब 9 : नबी करीम (ﷺ) का दुआ़ करना कि (ऐ अल्लाह!) अंसार और मुहाजिरीन पर अपना करम फ़र्मा

٣٧٩٥- حَدَّثَنَا آدَمُ ابْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُو إِيَاسٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ عَيْشَ إِلاَّ عَيْشُ الآخِرَةِ، فَأَصْلِحِ الأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ)). [راجع: ٢٨٣٤]
وَعَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ. وَقَالَ: ((فَاغْفِرْ لِلأَنْصَارِ)).

3795. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अबू अयास ने बयान किया उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (ख़न्दक़ खोदते वक़्त) फ़र्माया ह़क़ीक़ी ज़िन्दगी तो सिर्फ़ आख़िरत की ज़िन्दगी है। पस ऐ अल्लाह! अंसार और मुहाजिरीन पर अपना करम फ़र्मा और क़तादा से रिवायत है उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) से इसी त़रह, और उन्हों ने बयान किया उसमें यूँ है पस अंसार की मग़्फ़िरत फ़र्मा दे।

3796. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हुमैद तवील ने, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अंसार ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर (ख़न्दक़ खोदते हुए) ये शे'र पढ़ते थे हम वो हैं जिन्होंने हज़रत (ﷺ) से जिहाद पर बेअत की है, जब तक हमारी जान में जान है। आँहज़रत (ﷺ) ने (जब ये सुना तो) उसके जवाब में यूँ फ़र्माया, ऐ अल्लाह! आख़िरत की ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी हक़ीक़ी ज़िन्दगी नहीं है, पस अंसार और मुहाजिरीन पर अपना फ़ज़्ल व करम फ़र्मा।

(राजेअ: 2834)

٣٧٩٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُمَيْدٍ الطَّوِيلِ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتِ الأَنْصَارُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ تَقُولُ:

نَحْنُ الَّذِيْنَ بَايَعُوا مُحَمَّدَا
عَلَى الْجِهَادِ مَا حَيِيْنَا أَبَدَا

فَأَجَابَهُمْ: ((اللَّهُمَّ لاَ عَيْشَ إِلاَّ عَيْشُ الآخِرَةِ، فَأَكْرِمِ الأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةَ)).

[راجع: ٢٨٣٤]

3797. मुझसे मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत सहल (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हम ख़न्दक़ खोद रहे थे और अपने कँधों पर मिट्टी उठा रहे थे। उस वक़्त आप (ﷺ) ने ये दुआ की, ऐ अल्लाह! आख़िरत की ज़िन्दगी के सिवा और कोई ज़िन्दगी हक़ीक़ी ज़िन्दगी नहीं। पस अंसार और मुहाजिरीन की तू मग़्फ़िरत फ़र्मा।

٣٧٩٧- حَدَّثَنِيْ مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ سَهْلٍ قَالَ: ((جَاءَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ وَنَحْنُ نَحْفِرُ الْخَنْدَقَ وَنَنْقُلُ التُّرَابَ عَلَى أَكْتَادِنَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اللَّهُمَّ لاَ عَيْشَ إِلاَّ عَيْشُ الآخِرَةِ، فَاغْفِرْ لِلْمُهَاجِرِيْنَ وَالأَنْصَارِ)).

ये जंगे अहज़ाब का वाक़िया है जिसमें मुसलमानों ने कुफ़्फ़ारे अरब के लश्करों की जो ता'दाद में बहुत थे, अंदरूनी शहर से मुदाफ़िअत (रक्षा) की थी और शहर की हिफ़ाज़त के लिये शहर के चारों ओर ख़न्दक़ खोदी गई थी। इसीलिये इसे जंगे ख़न्दक़ भी कहा गया है। तफ़्सीली बयान आगे आएगा। उसमें अंसार और मुहाजिरीन की फ़ज़ीलत है और यही तर्जुमतुल बाब है।

बाब 10 : उस आयत की तफ़्सीर में, और अपने नफ़्सों पर वो दूसरों को मुक़द्दम रखते हैं, अगरचे ख़ुद वो फ़ाक़ा ही में मुब्तला हों

١٠- بَابُ ﴿وَيُؤْثِرُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ﴾ [الحشر: ٩]

3798. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन दाऊद ने बयान किया, उनसे फ़ुज़ैल बिन ग़ज़्वान ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक साहब (ख़ुद अबू हुरैरह रज़ि.) ही मुराद हैं) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में भूखे हाज़िर हुए। आप (ﷺ) ने उन्हें अज़्वाजे मुतह्हरात के यहाँ भेजा। (ताकि उनको खाना खिला दें) अज़्वाज ने कहला भेजा कि हमारे पास पानी के सिवा कुछ भी नहीं है। इस पर आँहज़रत

٣٧٩٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دَاوُدَ عَنْ فُضَيْلِ بْنِ غَزْوَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلاً أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَبَعَثَ إِلَى نِسَائِهِ، فَقُلْنَ: مَا مَعَنَا إِلاَّ الْمَاءُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

(ﷺ) ने फ़र्माया इनकी कौन मेहमानी करेगा? एक अंसारी सहाबी बोले मैं करूँगा। चुनाँचे वो उनको अपने घर ले गये और अपनी बीवी से कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के मेहमान की ख़ातिर तवाज़ोअ कर, बीवी ने कहा कि घर में बच्चों के खाने के सिवा और कोई चीज़ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि जो कुछ भी है उसे निकाल दो और चराग़ जला लो और बच्चे अगर खाना मांगते हैं तो उन्हें सुला दो। बीवी ने खाना निकाल दिया और चराग़ जला दिया और अपने बच्चों को (भूखा) सुला दिया। फिर वो दिखा तो ये रही थीं कि चराग़ दुरुस्त कर रही हूँ लेकिन उन्होंने उसे बुझा दिया। उसके बाद दोनों मियाँ—बीवी मेहमान पर ज़ाहिर करने लगे कि गोया वो भी उनके साथ खा रहे हैं। लेकिन उन दोनों ने (अपने बच्चों समेत रात) फ़ाक़ा से गुज़ार दी, सुबह के वक़्त जब वो सहाबी आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया तुम दोनों मियाँ—बीवी के नेक अमल पर रात को अल्लाह तआला हंस पड़ा या (ये फ़र्माया कि उसे) पसन्द किया। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई, और वो (अंसार) तरजीह देते हैं अपने नफ़्सों के ऊपर (दूसरे ग़रीब सहाबा को) अगरचे वो ख़ुद भी फ़ाक़ा ही में हों और जो अपनी तबीअत के बुख़्ल से महफ़ूज़ रखा गया, सो ऐसे ही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।

(दीगर मक़ाम : 4889)

وَسَلَّمَ: ((مَنْ يَضُمُّ - أَوْ يُضِيفُ - هَذَا؟)) فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ: أَنَا. فَانْطَلَقَ بِهِ إِلَى امْرَأَتِهِ فَقَالَ: أَكْرِمِي ضَيْفَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَتْ: مَا عِنْدَنَا إِلاَّ قُوتُ صِبْيَانِي. فَقَالَ: هَيِّئِي طَعَامَكِ، وَأَصْبِحِي سِرَاجَكِ، وَنَوِّمِي صِبْيَانَكِ إِذَا أَرَادُوا عَشَاءً. فَهَيَّأَتْ طَعَامَهَا، وَأَصْبَحَتْ سِرَاجَهَا، وَنَوَّمَتْ صِبْيَانَهَا، ثُمَّ قَامَتْ كَأَنَّهَا تُصْلِحُ سِرَاجَهَا فَأَطْفَأَتْهُ، فَجَعَلاَ يُرِيَانِهِ أَنَّهُمَا يَأْكُلاَنِ، فَبَاتَا طَاوِيَيْنِ. فَلَمَّا أَصْبَحَ غَدَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ضَحِكَ اللهُ اللَّيْلَةَ - أَوْ عَجِبَ - مِنْ فَعَالِكُمَا. فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿وَيُؤْثِرُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ، وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ﴾.

[طرفه في : ٤٨٨٩].

मज्मूई तौर पर अंसार की फ़ज़ीलत षाबित हुई। हदीष और बाब में यही मुताबक़त है।

बाब 11 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि, अंसार के नेक लोगों की नेकियों को क़ुबूल करो और उनके ग़लतकारों से दरगुज़र करो

١١- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((اقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ، وَتَجَاوَزُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ))

3799. मुझसे अबू अली मुहम्मद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दान के भाई शाज़ान ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे बाप ने बयान किया, हमें शुअ़बा बिन हज्जाज ने ख़बर दी, उनसे हिशाम बिन ज़ैद ने बयान किया कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र और हज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) अंसार की एक मज्लिस से गुज़रे। देखा कि तमाम अहले मज्लिस रो रहे हैं। पूछा आप लोग क्यूँ रो

٣٧٩٩- حَدَّثَنِي مَحْمُودُ بْنُ يَحْيَى أَبُو عَلِيٍّ حَدَّثَنَا شَاذَانُ أَخُو عَبْدَانَ حَدَّثَنَا أَبِي أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ بْنُ الْحَجَّاجِ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: مَرَّ أَبُوبَكْرٍ وَالْعَبَّاسُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

بِمَجْلِسٍ مِنْ مَجَالِسِ الأَنْصَارِ وَهُمْ يَبْكُونَ، فَقَالَ: مَا يُبْكِيكُمْ؟ قَالُوا : ذَكَرْنَا مَجْلِسَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَّا. فَدَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ بِذَلِكَ، قَالَ فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ وَقَدْ عَصَبَ عَلَى رَأْسِهِ حَاشِيَةَ بُرْدٍ، قَالَ فَصَعِدَ الْمِنْبَرَ، وَلَمْ يَصْعَدْهُ بَعْدَ ذَلِكَ الْيَوْمِ، فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((أُوصِيكُمْ بِالأَنْصَارِ، فَإِنَّهُمْ كَرِشِي وَعَيْبَتِي، وَقَدْ قَضَوُا الَّذِي عَلَيْهِمْ وَبَقِيَ الَّذِي لَهُمْ، فَاقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ، وَتَجَاوَزُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ)).

[طرفه في : ٣٨٠١].

रहे हैं ? मज्लिस वालों ने कहा कि अभी हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की मज्लिस को याद कर रहे थे जिसमें हम बैठा करते थे (ये आँहज़रत (ﷺ) के मर्ज़ुल वफ़ात का वाक़िया है) उसके बाद ये आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) को वाक़िया की ख़बर दी। बयान किया कि उस पर आँहज़रत (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए, सरे मुबारक पर कपड़े की पट्टी बँधी हुई थी। रावी ने बयान किया कि फिर आप (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और उसके बाद फिर कभी मिम्बर पर आप (ﷺ) तशरीफ़ न ला सके। आपने अल्लाह की हम्दो–स़ना के बाद फ़र्माया मैं तुम्हें अंसार के बारे में वस़िय्यत करता हूँ कि वो मेरे जिस्म व जान हैं उन्होंने अपनी तमाम जिम्मेदारियाँ पूरी की हैं लेकिन उसका बदला जो उन्हें मिलना चाहिये था, वो मिलना अभी बाक़ी है। इसलिये तुम लोग भी उनके नेक लोगों की नेकियों की क़द्र करना और उनके ख़ताकारों से दरगुज़र करते रहना। (दीगर मक़ाम : 3801)

٣٨٠٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يَعْقُوبَ حَدَّثَنَا ابْنُ الْغَسِيلِ سَمِعْتُ عِكْرِمَةَ يَقُولُ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَعَلَيْهِ مِلْحَفَةٌ مُتَعَطِّفًا بِهَا عَلَى مَنْكِبَيْهِ، وَعَلَيْهِ عِصَابَةٌ دَسْمَاءُ، حَتَّى جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ أَيُّهَا النَّاسُ فَإِنَّ النَّاسَ يَكْثُرُونَ وَيَقِلُّ الأَنْصَارُ حَتَّى يَكُونُوا كَالْمِلْحِ فِي الطَّعَامِ، فَمَنْ وَلِيَ مِنْكُمْ أَمْرًا يَضُرُّ أَحَدًا أَوْ يَنْفَعُهُ فَلْيَقْبَلْ مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَيَتَجَاوَزْ عَنْ مُسِيئِهِمْ)). [راجع: ٩٢٧]

3800. हमसे अह़मद बिन यअ़क़ूब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने ग़ुसैल ने बयान किया, उन्होंने कहा मैंने इक्रिमा से सुना, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए आप (ﷺ) अपने दोनों शानों पर चादर ओढ़े हुए थे और (सरे मुबारक पर) एक स्याह पट्टी (बँधी हुई थी) आप (ﷺ) मिम्बर पर बैठ गये और अल्लाह तआ़ला की हम्दो–स़ना के बाद फ़र्माया, अम्मा बअ़द ऐ लोगों ! दूसरों की तो बहुत क़षरत हो जाएगी लेकिन अंस़ार कम हो जाएँगे और वो ऐसे हो जाएँगे जैसे खाने में नमक होता है। पस तुममें से जो शख़्स भी किसी ऐसे महकमे में ह़ाकिम हो जिसके ज़रिये किसी को नुक़्सान व नफ़ा पहुँचा सकता हो तो उसे अंस़ार के नेकोकारों की भलाई करनी चाहिये और उनके ख़ताकारों से दरगुज़र करना चाहिये।

(राजेअ़ : 927)

٣٨٠١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ

3801. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि

मैंने क़तादा से सुना और उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अंसार मेरे जिस्मो–जान हैं। एक दौर आएगा कि दूसरे लोग तो बहुत हो जाएँगे, लेकिन अंसार कम रह जाएँगे। इसलिये उनके नेकोकारों की क़द्र किया करना, और ख़ताकारों से दरगुज़र किया करना।

(राजेअ : 3799)

أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الأَنْصَارُ كَرِشِي وَعَيْبَتِي، وَالنَّاسُ سَيَكْثُرُونَ وَيَقِلُّونَ، فَاقْبَلُوا مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَتَجَاوَزُوا عَنْ مُسِيئِهِمْ)).

[راجع: ٣٧٩٩]

तश्रीह : यहाँ तक हज़रत इमाम ने अंसार के फ़ज़ाइल बयान फ़र्माए और आयात व अहादीष़ की रोशनी में वाज़ेह करके बतलाया कि अंसार की मुहब्बत जुज़्वे ईमान है। इस्लाम पर उन लोगों के बहुत से एहसानात हैं। ये वो ख़ुशनसीब मुसलमान हैं जिन लोगों ने रसूले करीम (ﷺ) की मदीना मे मेज़बानी का शर्फ़ हासिल किया और ये वो लोग हैं कि उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से जो अहदे वफ़ा बाँधा था उसे पूरा कर दिखाया। पस उनके लिये दुआ-ए-ख़ैर करना क़यामत तक हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है। जो लोग अंसारी कहलाते हैं जो आम तौर पर कपड़ा बुनने का बेहतरीन कारोबार करते हैं, जहाँ तक उनके नसबनामों का ता'ल्लुक़ है, ये फ़िल् हक़ीक़त अंसारे नबविया ही के ख़ानदानों से ता'ल्लुक़ रखते हैं, अल्हम्दुलिल्लाह आज भी ये हज़रात नुसरते इस्लाम में बहुत आगे आगे नज़र आते हैं, **कष्षरल्लाहु सवादहुम आमीन** अब आगे उनके कुछ अफ़रादे ख़ुसूसी के मनाक़िब शुरू होते हैं।

बाब 12 : हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

١٢- بَابُ مَنَاقِبِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

आप अबुन नोअ़मान बिन इम्रुल क़ैस बिन अ़ब्दुल अश्हल हैं और क़बीला औस के आप बड़े सरदार हैं जैसा कि हज़रत सअ़द बिन उ़बादा ख़ज़रज के बड़े हैं।

3802. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा मुझसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने कहा कि मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास हदिया में एक रेशमी हुल्ला आया तो सहाबा उसे छूने लगे और और उसकी नर्मी और नज़ाकत पर तअ़ज्जुब करने लगे। आप (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया तुम्हें इसकी नर्मी पर तअ़ज्जुब है सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) के रूमाल (जन्नत में) इससे कहीं बेहतर हैं या (आप ﷺ ने फ़र्माया कि) उससे कहीं ज़्यादा नर्म व नाज़ुक हैं। इस हदीष़ की रिवायत क़तादा और ज़ुह्री ने भी की है, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 3249)

٣٨٠٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((أُهْدِيَتْ لِلنَّبِيِّ حُلَّةُ حَرِيرٍ، فَجَعَلَ أَصْحَابُهُ يَمَسُّونَهَا وَيَعْجَبُونَ مِنْ لِينِهَا، فَقَالَ: ((أَتَعْجَبُونَ مِنْ لِينِ هَذِهِ؟ لَمَنَادِيلُ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ خَيْرٌ مِنْهَا، أَوْ أَلْيَنُ)). رَوَاهُ قَتَادَةُ وَالزُّهْرِيُّ سَمِعَا أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٣٢٤٩]

3803. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना के दामाद फ़ज़्ल बिन मसादिर ने बयान किया, कहा हमसे

٣٨٠٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا فَضْلُ بْنُ مُسَاوِرٍ خَتَنُ أَبِي عَوَانَةَ

حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي سُفْيَانَ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : ((اهْتَزَّ الْعَرْشُ لِمَوْتِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ)) وَعَنِ الأَعْمَشِ حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ فَقَالَ رَجُلٌ لِجَابِرٍ: فَإِنَّ الْبَرَاءَ يَقُولُ اهْتَزَّ السَّرِيرُ فَقَالَ: إِنَّهُ كَانَ بَيْنَ هَذَيْنِ الْحَيَّيْنِ ضَغَائِنُ، سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((اهْتَزَّ عَرْشُ الرَّحْمَنِ لِمَوْتِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ)).

आ'मश ने, उनसे अबू सुफ़यान ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) की मौत पर अर्श हिल गया और आ'मश से रिवायत है, उनसे अबू स़ालेह ने बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इसी त़रह रिवायत किया। एक स़ाहब ने जाबिर (रज़ि.) से कहा कि बराअ (रज़ि.) तो इस त़रह बयान करते हैं कि चारपाई जिस पर मुआज़ (रज़ि.) की नअ़श रखी हुई थी, हिल गई थी। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कहा उन दोनों क़बीलों (औस और ख़ज़रज) के बीच (ज़मान-ए-जाहिलियत में) दुश्मनी थी। मैंने ख़ुद नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना है कि सअ़द बिन मुआज़ (रज़ि.) की मौत पर अ़र्शे रहमान हिल गया था।

रिवायत में उस अ़दावत और दुश्मनी की त़रफ़ इशारा है जो अंस़ार के दो क़बीलों, औस व ख़ज़रज के दरम्यान ज़माना जाहिलियत में थी लेकिन इस्लाम के बाद उसके अष़रात कुछ भी बाक़ी नहीं रह गये थे। ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) क़बीला औस के सरदार थे और ह़ज़रत बराअ का ता'ल्लुक़ ख़ज़रज से था। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) का मक़्स़द ये है कि इस पुरानी दुश्मनी की वजह से उन्होंने पूरी त़रह ह़दीष़ नहीं बयान की। बहरह़ाल अ़र्शे रह़मान और सरीर दोनों के हिलने के बारे में ह़दीष़ आई हैं और दोनों सूरतों की मुह़द्दिष़ीन ने ये तशरीह़ की है कि उसमें ह़ज़रत सअ़द बिन मुआज़ (रज़ि.) की मौत को एक अ़ज़ीम ह़ादष़ा बताया गया है आप (रज़ि.) के मर्तबा को घटाना किसी के भी सामने नहीं है।

٣٨٠٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : أَنَّ أُنَاسًا نَزَلُوا عَلَى حُكْمِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ فَجَاءَ عَلَى حِمَارٍ، فَلَمَّا بَلَغَ قَرِيبًا مِنَ الْمَسْجِدِ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((قُومُوا إِلَى خَيْرِكُمْ - أَوْ سَيِّدِكُمْ - فَقَالَ: يَا سَعْدُ، إِنَّ هَؤُلاَءِ نَزَلُوا عَلَى حُكْمِكَ)) قَالَ: فَإِنِّي أَحْكُمُ فِيهِمْ أَنْ تُقْتَلَ مُقَاتِلَتُهُمْ، وَتُسْبَى ذَرَارِيُّهُمْ. قَالَ: ((حَكَمْتَ بِحُكْمِ اللهِ، أَوْ بِحُكْمِ الْمَلِكِ)).

3804. हमसे मुह़म्मद बिन अ़रअ़रह़ ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू उमामा बिन सहल बिन ह़नीफ़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक क़ौम (यहूद बनी क़ुरैज़ा) ने सअ़द बिन मुआज़ (रज़ि.) को ष़ालिष़ मानकर हथियार डाल दिये तो उन्हें बुलाने के लिये आदमी भेजा गया और वो गधे पर सवार होकर आए। जब इस जगह के क़रीब पहुँचे जिसे (नबी करीम ﷺ ने अय्यामे जंग में) नमाज़ पढ़ने के लिये मुंतख़ब किया हुआ था तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने स़ह़ाबा से फ़र्माया कि अपने सबसे बेहतर शख़्स के लिये या (आपने ये फ़र्माया) अपने सरदार को लेने के लिये खड़े हो जाओ। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ सअ़द! उन्होंने तुमको ष़ालिष़ मानकर हथियार डाल दिये हैं। ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) ने कहा फिर मेरा फ़ैस़ला ये है कि उनके जो लोग जंग करने वाले हैं उन्हें ख़त्म कर दिया जाए और उनकी औरतों, बच्चों को जंगी क़ैदी बना लिया जाए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुमने अल्लाह के फ़ैस़ले के मुत़ाबिक़ फ़ैस़ला किया या (आप (ﷺ) ने ये फ़र्माया कि) फ़रिश्ते के हुक्म के मुत़ाबिक़ फ़ैस़ला किया है।

(राजेअ : 4043)

[راجع: ٤٠٤٣]

इससे हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) की फ़ज़ीलत षाबित हुई। उनका ता'ल्लुक़ अंसार से था, बड़े दानिशमन्द थे, यहूदी क़बीले बनू क़ुरैज़ा ने उनको षालिष (मध्यस्थ) तस्लीम किया मगर ये इत्मीनान न दिलाया कि वो अपनी जंगजू फ़ित्रत को बदलकर अमनपसन्दी इख़्तियार करेंगे और फ़साद और साज़िश के क़रीब न जाएँगे और बग़ावत से बाज़ रहेंगे, मुसलमानों के साथ ग़द्दारी नहीं करेंगे। इन हालात का जाइज़ा लेकर हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) ने वही फ़ैसला दिया जो क़यामे अमन के लिये मुनासिबे हाल था, आँहज़रत (ﷺ) ने भी उनके फ़ैसले की तहसीन फ़र्माई।

बाब 13 : उसैद बिन हुज़ैर और अब्बाद बिन बिश्र (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

١٣- بَابُ مَنْقَبَةِ أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ وَعَبَّادِ بْنِ بِشْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

तश्रीह : उसैद बिन हुज़ैर बिन सिमाक बिन अतीक अशहली खज़रजी हैं जो जंगे उहुद में आँहज़रत (ﷺ) के साथ षाबित रहे 20 हिजरी में उनका इंतिक़ाल हुआ।

3805. हमसे अली बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे हब्बान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उन्हें क़तादा ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की मजलिस से उठकर दो सहाबी एक तारीक रात में (अपने घर की तरफ़) जाने लगे तो एक ग़ैबी नूर उनके आगे आगे चल रहा था, फिर जब वो जुदा हुए तो उनके साथ साथ वो नूर भी अलग अलग हो गया और मअमर ने षाबित से बयान किया और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) और एक दूसरे अंसारी सहाबी (के साथ ये करामत पेश आई थी) और हम्माद ने बयान किया, उन्हें षाबित ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि उसैद बिन हुज़ैर और अब्बाद बिन बिश्र (रज़ि.) के साथ ये करामत पेश आई थी। य नबी करीम (ﷺ) के हवाले से नक़ल किया है। (राजेअ : 465)

٣٨٠٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا حَبَّانُ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ أَخْبَرَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَجُلَيْنِ خَرَجَا مِنْ عِنْدِ النَّبِيِّ ﷺ فِي لَيْلَةٍ مُظْلِمَةٍ، وَإِذَا نُورٌ بَيْنَ أَيْدِيهِمَا حَتَّى تَفَرَّقَا فَتَفَرَّقَ النُّورُ مَعَهُمَا)). وَقَالَ مَعْمَرٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ ((أَنَّ أُسَيْدَ بْنَ حُضَيْرٍ وَرَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ)). وَقَالَ حَمَّادٌ أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ عَنْ أَنَسٍ: ((كَانَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ وَعَبَّادُ بْنُ بِشْرٍ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ)).

[راجع: ٤٦٥]

बाब 14 : मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

١٤- بَابُ مَنَاقِبِ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

ये उन सत्तर बुज़ुर्गों में से हैं जो बेअ़ते उक़्बा में शरीक हुए थे। अहदे नबवी मे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से उनका भाइ चारा क़ायम किया गया था।

3806. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अम्र ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम

٣٨٠٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو

رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ ((اسْتَقْرِئُوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ: مِنِ ابْنِ مَسْعُودٍ، وَسَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ، وَأُبَيِّ بْنُ كَعْبٍ، وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ)).

[راجع: ٣٧٥٨]

(ﷺ) से सुना आप (ﷺ) ने फ़र्माया कुर्आन चार (हज़रात सहाबा) अब्दुल्लाह बिन मसऊद, अबू हुज़ैफ़ह के ग़ुलाम सालिम और उबई बिन कअब और मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) से सीखो।

(राजेअ : 3758)

आँहज़रत (ﷺ) के अहदे मुबारक में ये हज़रात कुर्आन मजीद के माहिरीने ख़ुसूसी शुमार किये जाते थे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनको असातिज़ा कुर्आन मजीद की हैषियत से नामज़द फ़र्माया। ये जितना बड़ा शर्फ़ है उसे अहले ईमान ही जान सकते हैं।

١٥- بَابُ مَنْقَبَةِ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

बाब 15 : हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का बयान

وَقَالَتْ عَائِشَةُ: ((وَكَانَ قَبْلَ ذَلِكَ رَجُلاً صَالِحًا))

हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि वो (वाक़िय-ए-इफ़्क से) पहले ही मर्दे सालेह थे

तश्रीह : ज़करत आयशतु फीहि मा दार बैन सअदिब्नि उबादा व उसैद बिन हुज़ैर रजियल्लाहु अन्हुमा मिनल्मक़ालति फअशारत आयशतु इला अन्न सअदन कान क़ब्ल तिल्कल्मक़ालति रजुलन सालिहन व ला यल्ज़िमु मिन्हु अंय्यकून खरज मिन हाज़िहिस्सिफति (फ़त्हुल्बारी) या'नी हज़रत आइशा (रज़ि.) का ये ज़िक्र हज़रत सअद बिन उबादा और उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) के दरम्यान एक बाहमी मक़ाला से मुता'ल्लिक़ है जिसमे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ये इशारा फ़र्माया है कि इस क़ौल या'नी हादष-ए- इफ़्क से पहले ये सालेह आदमी थे इससे ये लाज़िम नहीं आता कि बाद में वो इस सिफ़त से महरूम हो गये।

٣٨٠٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ أَبُو أُسَيْدٍ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((خَيْرُ دُوْرِ الأَنْصَارِ بَنِي النَّجَّارِ، ثُمَّ بَنُو عَبْدِ الأَشْهَلِ، ثُمَّ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ، ثُمَّ بَنُو سَاعِدَةِ، وَفِي كُلِّ دُوْرِ الأَنْصَارِ خَيْرٌ)). فَقَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَكَانَ ذَا قَدَمٍ فِي الإِسْلاَمِ -: أَرَى رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ فَضَّلَ عَلَيْنَا. فَقِيْلَ لَهُ : قَدْ فَضَّلَكُمْ عَلَى نَاسٍ كَثِيْرٍ. [راجع: ٣٧٨٩]

3807. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुस्समद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया कि हमसे क़तादा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि हज़रत उसैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अंसार का बेहतरीन घराना बनू नज्जार का घराना है, फिर बनू अब्दुल अशहल का। फिर बनू अब्दुल हारिष का, फिर बनू साअदा का और ख़ैर अंसार के तमाम घरानों में है, हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ि.) ने कहा और वो इस्लाम कुबूल करने में बड़ी क़दामत रखते थे कि मेरा ख़याल है, आँहज़रत (ﷺ) ने हम पर दूसरों को फ़ज़ीलत दे दी है। उनसे कहा गया कि आँहज़रत (ﷺ) ने तुमको भी तो बहुत से लोगों पर फ़ज़ीलत दी है। (ए'तिराज़ की क्या क्या बात है?)

(राजेअ : 3789)

उल्टा तर्जुमा : बड़े अफ़सोस के साथ क़ारेईने किराम की ख़बर के लिये लिख रहा हूँ कि मौजूदा तराजिमे बुख़ारी शरीफ़ में बहुत

ज़्यादा लापरवाही से काम लिया जा रहा है जो बुख़ारी शरीफ़ जैसी अहम किताब का तर्जुमा करने वाले के मुनासिब नहीं है, यहाँ ह़दीष़ के आख़िरी अल्फ़ाज़ ये हैं **फ़क़ील लहू क़द फ़ज़्ज़लकुम अ़ला नासिन कष़ीरिन** इनका तर्जुमा किताब तफ़्हीमुल बुख़ारी देवबन्दी में यूँ किया गया है, आपसे कहा गया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने आप पर बहुत से क़बाईल को फ़ज़ीलत दी है, ख़ुद उ़लमाए किराम ही ग़ौर फ़र्मा सकेंगे कि ये तर्जुमा कहाँ तक स़ह़ीह़ है।

बाब 16 : उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

١٦- بَابُ مَنَاقِبِ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

ये अंसारी ख़ज़रजी हैं जो बेअ़ते उ़क़्बा में शरीक और बद्र में भी थे, 30 हिजरी में उनका विसाल हुआ रज़ियल्लाहु।

3808. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) की मज्लिस में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) का ज़िक्र आया तो उन्होंने कहा कि उस वक़्त से उनकी मुह़ब्बत मेरे दिल में बहुत बैठ गई जब से मैंने रसूले करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि क़ुर्आन चार आदमियों से सीखो। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से, आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हीं के नाम से इब्तिदा की, और अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) के ग़ुलाम सालिम से, मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) से और उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) से। (राजेअ़ : 3758)

٣٨٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: ذُكِرَ عَبْدُ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ عِنْدَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو فَقَالَ: ذَاكَ رَجُلٌ لاَ أَزَالُ أُحِبُّهُ، سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((خُذُوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ، مِنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ - فَبَدَأَ بِهِ - وَسَالِمٍ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ، وَمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، وَأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ)). [راجع: ٣٧٥٨]

3809. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा कि मैंने शुअ़बा से सुना, उन्होंने क़तादा से सुना और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) से फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुमको सूरह लम यकुनिल्लज़ीना कफ़रू **सुनाऊँ, ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) बोले क्या अल्लाह तआ़ला ने मेरा नाम लिया है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, इस पर ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) फ़र्ते मुसर्रत से रोने लगे।** (दीगर मक़ाम : 4959, 4970, 4961)

٣٨٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ قَالَ: سَمِعْتُ شُعْبَةَ سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأُبَيٍّ: ((إِنَّ اللهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ: ﴿لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا﴾ قَالَ: وَسَمَّانِي؟ قَالَ : نَعَمْ. فَبَكَى)).

[أطرافه في: ٤٩٥٩، ٤٩٧٠، ٤٩٦١].

बाब 17 : ह़ज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

١٧- بَابُ مَنَاقِبِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ

मशहूर कातिबे वह्य हैं। इनका इंतिक़ाल 45 हिजरी में हुआ।

3810. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि

٣٨١٠- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((جَمَعَ الْقُرْآنَ عَلَى عَهْدِ

नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में चार आदमी जिन सबका ता'ल्लुक़ क़बील-ए-अंसार से था क़ुर्आन मजीद जमा करने वाले थे, उबई बिन कअ़ब, मुआज़ बिन जबल, अबू ज़ैद और ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.), मैंने पूछा, अबू ज़ैद कौन हैं? उन्होंने फ़र्माया कि वो मेरे एक चचा हैं। (दीगर मक़ाम : 3996, 5003, 5004)

رَسُولِ اللهِ ﷺ أَرْبَعَةٌ كُلُّهُمْ مِنَ الأَنْصَارِ: أُبَيٌّ وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ وَأَبُو زَيْدٍ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ. قُلْتُ لأَنَسٍ: مَنْ أَبُو زَيْدٍ؟ قَالَ: أَحَدُ عُمُومَتِي)).

[أطرافه في : ٣٩٩٦، ٥٠٠٣، ٥٠٠٤].

हज़रत ज़ैद बिन षाबित कातिबे वह्य से मशहूर हैं और बड़ा शर्फ़ है जो आपको ह़ासिल है।

बाब 18 : ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

١٨- بَابُ مَنَاقِبِ أَبِي طَلْحَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

ह़ज़रत अबू त़लह़ा ज़ैद बिन सहल बिन अस्वद अंसारी ख़ज़रजी हैं उम्मे अनस (रज़ि.) के शौहर हैं। ग़ालिबन 31 हिजरी में उनका इंतिक़ाल हुआ।

3811. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उहुद की लड़ाई के मौक़ा पर जब स़ह़ाबा नबी करीम (ﷺ) के क़रीब से इधर उधर चलने लगे तो अबू त़लह़ा (रज़ि.) उस वक़्त अपनी एक ढाल से आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़िफ़ाज़त कर रहे थे ह़ज़रत अबू त़लह़ा बड़े तीर अंदाज़ थे और ख़ूब खींचकर तीर चलाया करते थे। चुनाँचे उस दिन दो या तीन कमानें उन्होंने तोड़ दी थीं। उस वक़्त अगर कोई मुसलमान तरकश लिये हुए गुज़रता तो आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माते कि उसके तीर अबू त़लह़ा को दे दो। आँह़जरत (ﷺ) ह़ालात मा'लूम करने के लिये उचककर देखने लगते तो अबू त़लह़ा (रज़ि.) अ़र्ज़ करते या नबियल्लाह! आप पर मेरे माँ—बाप क़ुर्बान हों। उचककर मुलाह़िज़ा न फ़र्माएँ, कहीं कोई तीर आप (ﷺ) को न लग जाए। मेरा सीना आँह़ज़रत (ﷺ) के सीने की ढाल बना रहा और मैंने आ़इशा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) और उम्मे सुलैम (अबू त़लह़ा की बीवी) को देखा कि अपना इज़ार उठाए हुए (ग़ाज़ियों की मदद में) बड़ी तेज़ी के साथ मशग़ूल थीं (इस ख़िदमत में उनको इन्हिमाक व इस्तिग़राक़ की वजह से कपड़ों तक का होश न था यहाँ तक कि) मैं उनकी पिण्डलियों के ज़ेवर देख सकता था। इंतिहाई जल्दी के साथ मशकीज़े अपनी पीठों पर लिये जाती थीं और मुसलमानों को पिलाकर वापस आती थीं और फिर उन्हें भरकर

٣٨١١- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : ((لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ انْهَزَمَ النَّاسُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، وَأَبُو طَلْحَةَ بَيْنَ يَدَي النَّبِيِّ ﷺ مُجَوِّبٌ بِهِ عَلَيْهِ بِحَجَفَةٍ لَهُ، وَكَانَ أَبُو طَلْحَةَ رَجُلاً رَامِيًا شَدِيدَ الْقِدِّ يَكْسِرُ يَوْمَئِذٍ قَوْسَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا، وَكَانَ الرَّجُلُ يَمُرُّ مَعَهُ الْجُعْبَةُ مِنَ النَّبْلِ، فَيَقُولُ: انْشُرْهَا لأَبِي طَلْحَةَ، فَأَشْرَفَ النَّبِيُّ ﷺ يَنْظُرُ إِلَى الْقَوْمِ، فَيَقُولُ أَبُو طَلْحَةَ: يَا نَبِيَّ اللهِ، بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، لاَ تُشْرِفْ يُصِيبُكَ سَهْمٌ مِنْ سِهَامِ الْقَوْمِ، نَحْرِي دُونَ نَحْرِكَ. وَلَقَدْ رَأَيْتُ عَائِشَةَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ وَأُمَّ سُلَيْمٍ وَإِنَّهُمَا لَمُشَمِّرَتَانِ أَرَى خَدَمَ سُوقِهِمَا تُنْقِزَانِ الْقِرَبَ عَلَى مُتُونِهِمَا، تُفْرِغَانِهِ فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ، ثُمَّ تَرْجِعَانِ فَتَمْلآنِهَا، ثُمَّ تَجِيْئَانِ فَتُفْرِغَانِهَا فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ. وَلَقَدْ وَقَعَ السَّيْفُ مِنْ يَدِ أَبِي طَلْحَةَ إِمَّا مَرَّتَيْنِ

ले जातीं और उनका पानी मुसलमानों को पिलातीं और अबू तलहा के हाथ से उस दिन दो या तीन मर्तबा तलवार छूट छूटकर गिर पड़ी थी।(राजेअ : 2880)

وَإِمَّا ثَلاَثًا)).

[راجع: ۲۸۸۰]

ये हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) मशहूर अंसारी मुजाहिद हैं जिन्होंने जंगे उहुद में इस पामर्दी के साथ आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत का हक़ अदा किया कि क़यामत तक के लिये उनकी ये ख़िदमत तारीख़े इस्लाम में फ़ख़्रिया याद रखी जाएगी। इस हदीष़ से ये भी मा'लूम हुआ कि जंग व जिहाद के मौक़े पर मस्तूरात की ख़िदमात बड़ी अहमियत रखती हैं, ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करना और खाने पानी के लिये मुजाहिदीन की ख़बर लेना ये ख़्वातीन इस्लाम के मुजाहिदाना कारनामे औराक़े तारीख़ (इतिहास के पन्नों) पर सुनहरी हर्फ़ों से लिखे जाएँगे। मगर ख़्वातीने इस्लाम पूरे हिजाब शरई के साथ ये ख़िदमात अंजाम दिया करती थीं।

बाब 19 : हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

١٩ - بَابُ مَنَاقِبِ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

ये बनू क़ेनक़ाअ में से हैं, आले यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) से उनका ता'ल्लुक़ है। जाहिलियत में उनका नाम हुसैन था। इस्लाम के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने उनका नाम अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) रख दिया 43 हिजरी में उनका इंतिक़ाल हुआ।

3812. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने इमाम मालिक से सुना, वो उ़मर बिन उ़बैदुल्लाह के मौला अबू नज़्र से बयान करते थे, वो आमिर बिन सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ से और उनसे उनके वालिद (हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ रजि) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) के सिवा और किसी के बारे में ये नहीं सुना कि वो अहले जन्नत में से हैं, बयान किया कि आयत, व शहिदा शाहिदुम् मिम् बनी इस्राईल (अल अहक़ाफ़ : 10) उन्हीं के बारे में नाज़िल हुई थी (रावी हदीष़ अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने) बयान किया कि आयत के नुज़ूल के बारे में मालिक का क़ौल है या हदीष़ में इसी तरह था।

٣٨١٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ سَمِعْتُ مَالِكًا يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ لأَحَدٍ يَمْشِي عَلَى الأَرْضِ: إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، إِلاَّ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ. قَالَ : وَفِيْهِ نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيْلَ﴾ الآيَةَ)). قَالَ: لاَ أَدْرِيْ مَالِكٌ الآيَةَ أَوْ فِي الْحَدِيْثِ.

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम मशहूर यहूदी आ़लिम थे जो रसूले करीम (ﷺ) की मदीना में तशरीफ़ आवरी पर आप (ﷺ) की अ़लामाते नुबुव्वत देखकर मुसलमान हो गये थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये जन्नत की बशारत पेश फ़र्माई। और आयते कुर्आनी **व शहिद शाहिदुम्मिम बनी इस्राईल** (अल अहक़ाफ़ : 10) में अल्लाह ने उनका ज़िक्रे ख़ैर फ़र्माया दूसरी हदीष़ में भी उनकी मनक़बत मौजूद है।

3813. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अज़्हर सिमान ने बयान किया, उनसे अबू अ़वाना ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे क़ैस बिन अ़ब्बाद ने बयान किया कि मैं मस्जिदे नबवी में बैठा हुआ था कि एक बुज़ुर्ग मस्जिद में दाख़िल हुए जिनके चेहरे पर ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के आष़ार ज़ाहिर थे लोगों

٣٨١٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَزْهَرُ السَّمَّانُ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ قَالَ : ((كُنْتُ جَالِسًا فِي مَسْجِدِ الْمَدِيْنَةِ، فَدَخَلَ رَجُلٌ

ने कहा कि ये बुज़ुर्ग जन्नती लोगों में हैं, फिर उन्होंने दो रकअ़त नमाज़ मुख़्तसर तरीक़े पर पढ़ी और बाहर निकल गये। मैं भी उनके पीछे हो लिया और अ़र्ज़ किया कि जब आप मस्जिद में दाख़िल हुए थे तो लोगों ने कहा कि ये बुज़ुर्ग जन्नत वालों में से हैं। इस पर उन्होंने कहा अल्लाह की क़सम! किसी के लिये ऐसी बात ज़ुबान से निकालना मुनासिब नहीं है जिसे वो न जानता हो और मैं तुम्हें बताऊँगा कि ऐसा क्यूँ है। नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में मैंने एक ख़्वाब देखा और आँहज़रत (ﷺ) से उसे बयान किया। मैंने ख़्वाब ये देखा था कि जैसे मैं एक बाग़ में हूँ, फिर उन्होंने उसकी वुस्अ़त और उसके सब्ज़ा ज़ारों का ज़िक्र किया उस बाग़ के बीच में एक लोहे का खम्बा है जिसका निचला हिस्सा ज़मीन में है और ऊपर का आसमान पर और उसकी चोटी पर एक घना पेड़ है। (अल उ़र्वा) मुझसे कहा गया कि इस पर चढ़ जाओ मैंने कहा कि मुझ में तो इतनी त़ाक़त नहीं है इतने में एक ख़ादिम आया और पीछे से मेरे कपड़े उसने उठाए तो मैं चढ़ गया और जब मैं उसकी चोटी पर पहुँच गया तो मैंने उस घने पेड़ को पकड़ लिया। मुझसे कहा गया कि उस पेड़ को पूरी मज़्बूती के साथ पकड़ ले। अभी मैं उसे अपने हाथ से पकड़े हुए था कि मेरी नींद खुल गई। ये ख़्वाब जब मैंने आँहज़रत (ﷺ) से बयान किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो बाग़ तुमने देखा है, वो तो इस्लाम है और उसमें सुतून इस्लाम का सुतून है और उ़र्वा (घना पेड़) उ़र्वतुल वुस्क़ा है इसलिये तुम इस्लाम पर मरते दम तक क़ायम रहोगे। ये बुज़ुर्ग ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) थे और मुझसे ख़लीफ़ा ने बयान किया उनसे मुआ़ज़ ने बयान किया उनसे इब्ने औ़न ने बयान किया उनसे मुहम्मद ने उनसे क़ैस बिन उ़बाद ने बयान किया अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) से उन्होंने मिन्सफ़ (ख़ादिम) के बजाय वसीफ़ का लफ़्ज़ ज़िक्र किया। (दीगर मक़ाम : 7010, 7014)

عَلى وَجْهِهِ أَثَرُ الْخُشُوعِ، فَقَالُوا : هَذَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ تَجَوَّزَ فِيْهِمَا، ثُمَّ خَرَجَ وَتَبِعْتُهُ فَقُلْتُ : إِنَّكَ حِيْنَ دَخَلْتَ الْمَسْجِدَ قَالُوا: هَذَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ قَالَ : وَاللهِ مَا يَنْبَغِي لأَحَدٍ أَنْ يَقُولَ مَا لاَ يَعْلَمِ. وَسَأُحَدِّثُكَ لِمَ ذَاكَ. رَأَيْتُ رُؤْيَا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَصَصْتُهَا عَلَيْهِ، وَرَأَيْتُ كَأَنِّي فِي رَوْضَةٍ - ذَكَرَ مِنْ سَعَتِهَا وَخُضْرَتِهَا. وَسَطِهَا عَمُودٌ مِنْ حَدِيْدٍ أَسْفَلُهُ فِي الأَرْضِ وَأَعْلاَهُ فِي السَّمَاءِ، فِي أَعْلاَهُ عُرْوَةٌ، فَقِيْلَ لِي: ارْقَهْ. قُلْتُ: لاَ أَسْتَطِيْعُ. فَأَتَانِي مِنْصَفٌ فَرَفَعَ ثِيَابِي مِنْ خَلْفِي فَرَقِيْتُ حَتَّى كُنْتُ فِي أَعْلاَهَا، فَأَخَذْتُ بِالْعُرْوَةِ، فَقِيْلَ لَهُ اسْتَمْسِكْ. فَاسْتَيْقَظْتُ وَإِنَّهَا لَفِي يَدِيْ. فَقَصَصْتُهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((تِلْكَ الرَّوْضَةُ الإِسْلاَمِ، وَذَلِكَ الْعَمُودُ عَمُودُ الإِسْلاَمِ، وَتِلْكَ الْعُرْوَةُ الْوُثْقَى، فَأَنْتَ عَلَى الإِسْلاَمِ حَتَّى تَمُوتَ)). وَذَاكَ الرَّجُلُ عَبْدُ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ)). وَقَالَ لِيْ خَلِيْفَةُ حَدَّثَنَا مُعَاذٌ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ عُبَادٍ عَنِ ابْنِ سَلاَمٍ قَالَ : ((وَصِيْفٌ)) مَكَانَ ((مِنْصَفٌ)).

[طرفاه في: ٧٠١٠، ٧٠١٤].

3814. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे सईद बिन अबी बुर्दा ने और उनसे उनके वालिद

٣٨١٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيْهِ

قَالَ: ((أَتَيْتُ الْمَدِينَةَ فَلَقِيتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ سَلاَمٍ فَقَالَ: أَلاَ تَجِيءُ فَأُطْعِمَكَ سَوِيقًا وَتَمْرًا وَتَدْخُلَ فِي بَيْتٍ؟ ثُمَّ قَالَ : إِنَّكَ بِأَرْضٍ الرِّبَا بِهَا فَاشٍ، إِذَا كَانَ لَكَ عَلَى رَجُلٍ حَقٌّ فَأَهْدَى إِلَيْكَ حِمْلَ تِبْنٍ أَوْ حِمْلَ شَعِيرٍ أَوْ حِمْلَ قَتٍّ فَلاَ تَأْخُذْهُ فَإِنَّهُ رِبًا)) وَلَمْ يَذْكُرِ النَّضْرُ وَأَبُو دَاوُدَ وَوَهْبٌ عَنْ شُعْبَةَ الْبَيْتَ. [طرفه في : ٧٣٤٣].

ने कि मैं मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुआ तो मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) से मुलाक़ात की, उन्होंने कहा, आओ तुम्हें मैं सत्तू और खजूर खिलाऊँगा और तुम एक (बाअ़ज़्मत) मकान में दाख़िल होगे (कि रसूलुल्लाह ﷺ भी उसमें तशरीफ़ ले गये थे) फिर आप (रज़ि.) ने फ़र्माया तुम्हारा क़याम एक ऐसे मुल्क में है जहाँ सूदी मामलात बहुत आ़म हैं अगर तुम्हारा किसी शख़्स पर कोई हक़ हो और फिर वो तुम्हें एक तिनके या जौ के एक दाने या एक घास के बराबर भी हदिया दे तू उसे क़ुबूल न करना क्योंकि वो भी सूद है। नज़्र अबू दाऊद और वहब ने (अपनी रिवायतों में) अल्बैत (घर) का ज़िक्र नहीं किया। (दीगर मक़ाम : 7343)

٢٠- بَابُ تَزْوِيجِ النَّبِيِّ ﷺ خَدِيجَةَ وَفَضْلِهَا رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

बाब 20 : हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) की शादी और उनकी फ़ज़ीलत का बयान

तश्रीह : हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) बिन्ते खुवेलिद बिन असद बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा आँहज़रत (ﷺ) से निकाह के वक़्त उनकी उ़म्र 40 साल की थी और आप (ﷺ) की उ़म्र 25 साल की थी रसूल (ﷺ) के लिये उनसे औलाद भी हुई। हिजरत से 4–5 साल पहले उनका इंतिक़ाल हुआ। आँहज़रत (ﷺ) को आपकी जुदाई से सख़्त रंज हुआ था (रज़ि.)।

٣٨١٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ. حَدَّثَنِي صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنِ جَعْفَرٍ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَيْرُ نِسَائِهَا مَرْيَمُ، وَخَيْرُ نِسَائِهَا خَدِيجَةُ)).

[راجع: ٣٤٣٢]

3815. मुझसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको ख़बर दी अ़ब्दह ने, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत अ़ली (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप (ﷺ) ने फ़र्माया, (दूसरी सनद) और मुझसे सदक़ा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दह ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र से सुना उन्होंने हज़रत अ़ली (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (अपने ज़माने में) हज़रत मरयम (अलैहि.) सबसे अफ़ज़ल औरत थीं और (इस उम्मत में) हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) सबसे अफ़ज़ल औरत हैं।

(राजेअ़ : 3432)

٣٨١٦- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: كَتَبَ إِلَيَّ هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((مَا غِرْتُ عَلَى امْرَأَةٍ لِلنَّبِيِّ ﷺ مَا غِرْتُ عَلَى

3816. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, कहा कि हिशाम ने मेरे पास अपने वालिद (उ़र्वा) से लिखकर भेजा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा नबी करीम (ﷺ) की किसी बीवी के मामले में, मैंने उतनी ग़ैरत महसूस नहीं की जितनी हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के मामले में, मैं महसूस करती

थी, वो मेरे निकाह से पहले ही वफ़ात पा चुकी थीं लेकिन आँहज़रत (ﷺ) की ज़ुबान से मैं उनका ज़िक्र सुनती रहती थी, और अल्लाह तआला ने आँहज़रत (ﷺ) को हुक्म दिया था कि उन्हें (जन्नत में) मोती के महल की ख़ुशख़बरी सुना दें, आँहज़रत (ﷺ) अगर कभी बकरी ज़िबह करते तो उनसे मेल मुहब्बत रखने वाली ख़्वातीन को उसमें से इतना हदिया भेजते जो उनके लिये काफ़ी हो जाता। (दीगर मक़ाम : 3817, 3818, 2559,2004, 7484)

خَدِيْجَةَ، هَلَكَتْ قَبْلَ أَنْ يَتَزَوَّجَنِي، لِمَا كُنْتُ أَسْمَعُهُ يَذْكُرُهَا، وَأَمَرَهُ اللهُ أَنْ يُبَشِّرَهَا بِبَيْتٍ مِنْ قَصَبٍ. وَإِنْ كَانَ لَيَذْبَحُ الشَّاةَ فَيُهْدِي فِي خَلاَئِلِهَا مِنْهَا مَا يَسَعُهُنَّ)). [أطرافه في : ٣٨١٧، ٣٨١٨، ٢٥٥٩، ٢٠٠٤، ٧٤٨٤].

3817. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के मामले में जितनी ग़ैरत मैं महसूस करती थी उतनी किसी औ़रत के मामले में नहीं की क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) उनका ज़िक्र अकषर किया करते थे। उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) से मेरा निकाह उनकी वफ़ात के तीन साल बाद हुआ था और अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हुक्म दिया था या जिब्रईल (अलैहि) के ज़रिये ये पैग़ाम पहुँचाया था कि आँहज़रत (ﷺ) उन्हें जन्नत में मोतियों के महल की ख़ुशख़बरी दे दें। (राजेअ़ : 3816)

٣٨١٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((مَا غِرْتُ عَلَى امْرَأَةٍ مَا غِرْتُ عَلَى خَدِيْجَةَ مِنْ كَثْرَةِ ذِكْرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِيَّاهَا. قَالَتْ: وَتَزَوَّجَنِي بَعْدَهَا بِثَلاَثِ سِنِيْنَ، وَأَمَرَهُ رَبُّهُ عَزَّوَجَلَّ- أَوْ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ - أَنْ يُبَشِّرَهَا بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ)). [راجع: ٣٨١٦]

3818. मुझसे उ़मर बिन मुहम्मद बिन हसन ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे हफ़्स ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) की तमाम बीवियों में जितनी ग़ैरत मुझे हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से आती थी उतनी किसी और से नहीं आती थी, हालाँकि उन्हें मैंने देखा भी नहीं था। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) उनका ज़िक्र बकषरत किया करते थे और अगर कभी कोई बकरी ज़िबह करते तो उसके टुकड़े करके हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की मिलने वालियों को भेजते थे मैंने अकषर हुज़ूर (ﷺ) से कहा जैसे दुनिया में हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के सिवा कोई औ़रत है ही नहीं! इस पर आप (ﷺ) फ़र्माते कि वो ऐसी थीं और ऐसी थीं और उनसे मेरे औलाद है।

(राजेअ़ : 3816)

٣٨١٨- حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ الْحَسَنِ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا حَفْصٌ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا غِرْتُ عَلَى أَحَدٍ مِنْ نِسَاءِ النَّبِيِّ ﷺ مَا غِرْتُ عَلَى خَدِيْجَةَ وَمَا رَأَيْتُهَا، وَلَكِنْ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُكْثِرُ ذِكْرَهَا، وَرُبَّمَا ذَبَحَ الشَّاةَ ثُمَّ يُقَطِّعُهَا أَعْضَاءً ثُمَّ يَبْعَثُهَا فِي صَدَائِقِ خَدِيْجَةَ. فَرُبَّمَا قُلْتُ لَهُ: كَأَنَّهُ لَمْ يَكُنْ فِي الدُّنْيَا امْرَأَةٌ إِلاَّ خَدِيْجَةُ؟ فَيَقُولُ: ((إِنَّهَا كَانَتْ وَكَانَتْ، وَكَانَ لِي مِنْهَا وَلَدٌ)). [راجع: ٣٨١٦]

इससे मा'लूम हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) की निगाहों में हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा (रज़ि.) का दर्जा बहुत ज़्यादा था,

फ़िल वाक़ेअ वो इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम (ﷺ) की अव्वलीन मुहसिना थीं उनके एहसानात का बदला उनको अल्लाह ही देने वाला है (रज़ि.) व अरज़ाहु (आमीन)

3819. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा से पूछा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) को बशारत दी थी? उन्होंने फ़र्माया कि हाँ जन्नत में मोतियों के एक महल की बशारत दी थी, जहाँ न कोई शोरो—गुल होगा और न थकन होगी। (राजेअ: 1792)

٣٨١٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ قَالَ : قُلْتُ : لِعَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا بَشَّرَ النَّبِيُّ ﷺ خَدِيْجَةَ؟ قَالَ : نَعَمْ، بِبَيْتٍ مِنْ قَصَبٍ، لاَ صَخَبَ فِيْهِ وَلاَ نَصَبَ)).[راجع: ١٧٩٢]

3820. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे उमारा ने, उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़िब्रईल (अलैहिस्सलाम) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! ख़दीजा (रज़ि.) आपके पास एक बर्तन लिये आ रही हैं जिसमें सालन या (फ़र्माया) खाना (या फ़र्माया) पीने की चीज़ है। जब वो आपके पास आयें तो उनके रब की जानिब से उन्हें सलाम पहुँचाना और मेरी तरफ़ से भी! और उन्हें जन्नत में मोतियों के एक महल की बशारत दे दीजिएगा। जहाँ न शोर व हंगामा होगा और न तकलीफ़ व थकन होगी।

٣٨٢٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ عُمَارَةَ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَتَى جِبْرِيْلُ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، هَذِهِ خَدِيْجَةُ قَدْ أَتَتْ مَعَهَا إِنَاءٌ فِيْهِ إِدَامٌ أَوْ طَعَامٌ أَوْ شَرَابٌ، فَإِذَا هِيَ أَتَتْكَ فَاقْرَأْ عَلَيْهَا السَّلاَمَ مِنْ رَبِّهَا وَمِنِّي، وَبَشِّرْهَا بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ، لاَ صَخَبَ فِيْهِ وَلاَ نَصَبَ)).

3821. और इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, उन्हें अली बिन मुस्हिर ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ख़दीजा (रज़ि.) की बहन हाला बिन्ते ख़ुवेलिद (रज़ि.) ने एक बार आँहज़रत (ﷺ) से अंदर आने की इजाज़त चाही तो आप (ﷺ) को हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की इजाज़त लेने की अदा याद आ गई, आप (ﷺ) चौंक उठे और फ़र्माया, अल्लाह! ये तो हाला हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मुझे उस पर बड़ी ग़ैरत आई। मैंने कहा आप (ﷺ) क़ुरैश की किस बूढ़ी का ज़िक्र किया करते हैं जिसके मसूड़ों पर भी दांतों के टूट जाने की वजह से (सिर्फ़ सुर्ख़ी बाक़ी रह गई थी) और जिसे मरे हुए भी एक ज़माना गुज़र चुका है। अल्लाह तआला ने आपको उससे बेहतर बीवी दे दी है।

٣٨٢١- وَقَالَ إِسْمَاعِيْلُ بْنُ خَلِيْلٍ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((اسْتَأْذَنَتْ هَالَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ - أُخْتُ خَدِيْجَةَ - عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَعَرَفَ اسْتِئْذَانَ خَدِيْجَةَ، فَارْتَاعَ لِذَلِكَ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ هَالَةَ)). قَالَتْ : فَغِرْتُ فَقُلْتُ: مَا تَذْكُرُ مِنْ عَجُوزٍ مِنْ عَجَائِزِ قُرَيْشٍ حَمْرَاءِ الشِّدْقَيْنِ هَلَكَتْ فِي الدَّهْرِ، قَدْ أَبْدَلَكَ اللهُ خَيْرًا مِنْهَا)).

मुस्नद अहमद की एक रिवायत में है कि नबी करीम (ﷺ) आइशा (रज़ि.) की उस बात पर इस क़दर नाराज़ हो गये कि चेहरा मुबारक ग़ुस्से से लाल हो गया और फ़र्माया, उससे बेहतर और क्या चीज़ मुझे मिली है? हज़रत आइशा (रज़ि.) खड़ी हो गईं

और अल्लाह के हुज़ूर तौबा की और फिर कभी इस तरह की बातचीत आँहज़रत (ﷺ) के सामने नहीं की। औरतों की ये फ़ितरत है कि वो अपनी सौकन से ज़रूर रक़ाबत रखती हैं हज़रत हाजरा व हज़रत सारा (अलैहिमस्सलाम) के हालात भी इस पर शाहिद हैं फिर अज़्वाजे मुतह्हरात भी बनाते हव्वा थीं लिहाज़ा ये महल्ले तअज्जुब नहीं है। अल्लाह पाक उनकी कमज़ोरियों को मुआफ़ करने वाला है।

बाब 21 : जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) का बयान

٢١- بَابُ ذِكْرُ جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْبَجَلِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

3822. हमसे इस्हाक़ वास्ती ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे बयान ने कि मैंने क़ैस से सुना, उन्होंने बयान किया कि हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया, जबसे मैं इस्लाम में दाख़िल हुआ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे (घर के अंदर आने से) नहीं रोका (जब भी मैंने इजाज़त चाही) और जब भी आप (ﷺ) मुझे देखते तो मुस्कुराते। (राजेअ : 3035)

٣٨٢٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ بَيَانٍ عَنْ قَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((قَالَ جَرِيْرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: مَا حَجَبَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ مُنْذُ أَسْلَمْتُ، وَلاَ رَآنِي إِلاَّ ضَحِكَ)).

[راجع: ٣٠٣٥]

3823. और क़ैस से रिवायत है कि हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया ज़मान-ए-जाहिलियत में ज़ुल ख़लसा नामी एक बुतकदा था उसे अल का'बतुल यमानिया या अल का'बतुश शामिया भी कहते थे। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया, ज़िलख़ल्सा के वजूद से मैं जिस अज़िय्यत में मुब्तला हूँ क्या तुम मुझे उससे नजात दिला सकते हो? उन्होंने बयान किया कि फिर क़बीला अहमस के डेढ़ सौ सवारों को मैं लेकर चला, उन्होंने बयान किया और हमने बुतकदे को ढहा दिया और उसमें जो थे उनको क़त्ल कर दिया। फिर हम आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप (ﷺ) को ख़बर दी तो आप (ﷺ) ने हमारे लिये और क़बीला अहमस के लिये दुआ फ़र्माई।
(राजेअ : 3020)

٣٨٢٣- وَعَنْ قَيْسٍ عَنْ جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كَانَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ بَيْتٌ يُقَالُ لَهُ ذُو الْخَلَصَةِ وَ كَانَ يُقَالُ لَهُ الْكَعْبَةُ الْيَمَانِيَةُ أَوِ الْكَعْبَةُ الشَّامِيَّةُ. فَقَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَلْ أَنْتَ مُرِيْحِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟)) قَالَ: فَنَفَرْتُ إِلَيْهِ فِي خَمْسِيْنَ ومائة فَارِسٍ مِنْ أَحْمَسَ، قَالَ: ((فَكَسَرْنَاهُ، وقَتَلْنَا مَنْ وَجَدْنَا عِنْدَهُ، فَأَتَيْنَاهُ فَأَخْبَرْنَاهُ، فَدَعَا لَنَا وَلأَحْمَسَ)).

[راجع: ٣٠٢٠]

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) बहुत ही बड़े बहादुर इंसान थे दिल में तौहीद का जज़्बा था कि रसूले करीम (ﷺ) की मंशा पाकर ज़िल ख़ल्सा नामी बुतकदे को क़बीला अहमस के डेढ़ सौ सवारों के साथ मिस्मार कर दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने उन मुजाहिदीन के लिये बहुत बहुत दुआ-ए-ख़ैरो बरकत फ़र्माई। ये बुतकदा मुआनिदीने इस्लाम ने अपना मर्कज़ बना रखा था। इसलिये उसका ख़त्म करना ज़रूरी हुआ।

बाब 22 : हुज़ैफ़ा बिन यमान अब्सी (रज़ि.) का बयान

٢٢- بَابُ ذِكْرِ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ الْعَبْسِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

3824. मुझसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमसे

٣٨٢٤- حَدَّثَنِي إِسْمَاعِيْلُ بْنُ خَلِيْلٍ

حدثنا سلمة بن رجاء عن هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة رضي الله عنها قالت: ((لما كان يوم أحد هزم المشركون هزيمة بينة، فصاح إبليس: أي عباد الله أخراكم. فرجعت أولاهم على أخراهم، فاجتلدت أخراهم. فنظر حذيفة فإذا هو بأبيه، أي عباد الله، أبي أبي. فقالت: فو الله ما احتجزوا حتى قتلوه. فقال حذيفة: غفر الله لكم. قال أبي: فو الله ما زالت في حذيفة منها بقية خير حتى لقي الله عز وجل)).

[راجع: ٣٢٩٠]

सलमा बिन रजाअ ने, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उहुद की लड़ाई में जब मुश्रिकीन हार चुके तो इब्लीस ने चलाकर कहा ऐ अल्लाह के बन्दों! पीछे वालों को (क़त्ल करो) चुनाँचे आगे के मुसलमान पीछे वालों पर पिल पड़े और उन्हें क़त्ल करना शुरू कर दिया। हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने जो देखा तो उनके वालिद (यमान रज़ि.) भी वहीं मौजूद थे उन्होंने पुकार कर कहा ऐ अल्लाह के बन्दों! ये तो मेरे वालिद हैं, मेरे वालिद! आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया अल्लाह की क़सम! उस वक़्त तक लोग वहाँ से नहीं हटे जब तक उन्हें क़त्ल न कर लिया। हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने सिर्फ़ इतना कहा अल्लाह तुम्हारी मग़्फ़िरत करे। (हिशाम ने बयान किया कि) अल्लाह की क़सम! हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बराबर ये दुआइया कलिमा कहते रहे (कि अल्लाह उनके वालिद पर हमला करने वालों को बख्शे जो कि महज़ ग़लत फ़हमी की वजह से ये हरकत कर बैठे) ये दुआ वो मरते दम तक करते रहे। (राजेअ़ : 3290)

इससे उनके सब्र व इस्तिक़लाल और फ़हम व फ़िरासत का पता चलता है। ग़लतफ़हमी में इंसान क्या से क्या कर बैठता है। इसलिये अल्लाह का इर्शाद है कि हर सुनी सुनाई ख़बर का यक़ीन न कर लिया करो जब तक उसकी तहक़ीक़ न कर लो।

٢٣- باب ذكر هند بنت عتبة بن ربيعة رضي الله عنها

बाब 23 : हिन्द बिन्ते उ़त्बा बिन रबीआ़ (रज़ि.) का बयान

٣٨٢٥- وقال عبدان أخبرنا عبد الله أخبرنا يونس عن الزهري حدثني عروة أن عائشة رضي الله عنها قالت : جاءت هند بنت عتبة فقالت : يا رسول الله، ما كان على ظهر الأرض من أهل خباء أحب إلي أن يذلوا من أهل خبائك، ثم ما أصبح اليوم على ظهر الأرض أهل خباء أحب إلي أن يعزوا من أهل خبائك. قال: ((وأيضا والذي نفسي بيده)). قالت: يا رسول الله، إن أبا سفيان رجل مسيك، فهل علي حرج أن

3825. और अ़ब्दान ने बयान किया, उन्हें अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उनसे उ़र्वा ने बयान किया कि हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया, हज़रत हिन्द बिन्त उ़त्बा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में (इस्लाम लाने के बाद) हाज़िर हुईं और कहने लगीं या रसूलल्लाह (ﷺ)! रूए ज़मीन पर किसी घराने की ज़िल्लत आप (ﷺ) के घराने की ज़िल्लत से ज़्यादा मेरे लिये ख़ुशी का बाइ़ष नहीं थी लेकिन आज किसी घराने की इ़ज़्ज़त रूए ज़मीन पर आप (ﷺ) के घराने की इ़ज़्ज़त से ज़्यादा मेरे लिये ख़ुशी की वजह नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उसमें अभी और तरक़्क़ी होगी उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। फिर हिन्द ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! अबू सुफ़यान बहुत बख़ील हैं तो क्या इसमें कुछ हर्ज है अगर मैं उनके माल में से (उनकी इजाज़त के बग़ैर) बाल-बच्चों को खिला दिया और पिला दिया करूँ? आप

أَطْعِمَ مِنَ الَّذِي لَهُ عِيَالَنَا؟ قَالَ : ((لاَ أُرَاهُ إِلاَّ بِالْمَعْرُوفِ)). [راجع: ٢٢١١]

(ﷺ) ने फ़र्माया हाँ लेकिन मैं समझता हूँ कि ये दस्तूर के मुताबिक़ होना चाहिये। (राजेअ : 2211)

हज़रत हिन्द अबू सुफ़यान (रज़ि.) की बीवी और हज़रत मुआविया (रज़ि.) की वालिदा जो फ़तहे मक्का के बाद इस्लाम लाई हैं। अबू सुफ़यान (रज़ि.) भी इसी ज़माने में इस्लाम लाए थे, बहुत जरी और पुख़्ताकार औरत थी उनके बारे में बहुत से वाक़ियात कुतुबे तवारीख़ (इतिहास की किताबों) में मौजूद हैं जो उनकी शान व अ़ज़्मत पर दलील हैं।

٢٤- بَابُ حَدِيْثِ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ

बाब 24 : हज़रत ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल का बयान

तश्रीह : ये बुज़ुर्ग सहाबी अ़हदे इस्लाम से पहले ही तौहीद के अलमबरदार थे। उनके वाक़िया में उन क़ब्रपरस्तों के लिये इबरत है जो बकरा, मुर्ग़ाबी, मीना बुज़ुर्गों के मज़ारों की भेंट करते हैं। हज़रत मदार व सालार के नाम के बकरे ज़िबह करते हैं। उनको सोचना चाहिये कि उनका ये फ़ेअ़ल इस्लाम से किस क़दर दूर है **हदाहुमुल्लाहु इला सिरातिम्मुस्तक़ीम आमीन**

٣٨٢٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَقِيَ زَيْدَ بْنَ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ بِأَسْفَلِ بَلْدَحٍ قَبْلَ أَنْ يَنْزِلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ الْوَحْيُ، فَقُدِّمَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ سُفْرَةٌ، فَأَبَى أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا. ثُمَّ قَالَ زَيْدٌ: إِنِّي لَسْتُ آكُلُ مِمَّا تَذْبَحُونَ عَلَى أَنْصَابِكُمْ، وَلاَ آكُلُ إِلاَّ مَا ذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ. وَأَنَّ زَيْدَ بْنَ عَمْرٍو كَانَ يَعِيْبُ عَلَى قُرَيْشٍ ذَبَائِحَهُمْ وَيَقُولُ: الشَّاةُ خَلَقَهَا اللهُ، وَأَنْزَلَ لَهَا مِنَ السَّمَاءِ الْمَاءَ، وَأَنْبَتَ لَهَا مِنَ الأَرْضِ، ثُمَّ تَذْبَحُونَهَا عَلَى غَيْرِ اسْمِ اللهِ، إِنْكَارًا لِذَلِكَ وَإِعْظَامًا لَهُ)).

3826. मुझसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) से (वादी) बलदह के नशीबी इलाक़ा में मुलाक़ात हुई। ये क़िस्सा नुज़ूले वह्य से पहले का है। फिर आँहज़रत (ﷺ) के सामने एक दस्तरख़्वान बिछाया गया तो ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल ने खाने से इंकार कर दिया और जिन लोगों ने दस्तरख़्वान बिछाया था उनसे कहा कि अपने बुतों के नाम पर जो तुम ज़बीहा करते हो मैं उसे नहीं खाता मैं तो बस वही ज़बीहा खाया करता हूँ जिस पर सिर्फ़ अल्लाह का नाम लिया गया हो। ज़ैद बिन अ़म्र क़ुरैश पर उनके ज़बीहे के बारे में ऐ़ब बयान किया करते और कहते थे कि बकरी को पैदा तो क्या है अल्लाह तआ़ला ने, उसी ने उसके लिये आसमान से पानी बरसाया है, उसी ने उसके लिये ज़मीन से घास उगाई, फिर तुम लोग अल्लाह के सिवा दूसरे (बुतों के) नामों पर उसे ज़िबह करते हो। ज़ैद ने ये कलिमात उनके उन कामों पर ए'तिराज़ और उनके उस अ़मल को बहुत बड़ी ग़लती क़रार देते हुए कहे थे।

٣٨٢٧- قَالَ مُوسَى: حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ - وَلاَ أَعْلَمُهُ إِلاَّ تَحَدَّثَ بِهِ عَنِ

3827. मूसा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और मुझे यक़ीन है कि उन्होंने ये इब्ने उमर (रज़ि.)

से बयान किया था कि ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल शाम गये। दीने (ख़ालिस) की तलाश में निकले। वहाँ वो एक यहूदी आलिम से मिले तो उन्होंने उनके दीन के बारे में पूछा और कहा मुम्किन है मैं तुम्हारा दीन इख़्तियार कर लूँ, इसलिये तुम मुझे अपने दीन के बारे में बताओ। यहूदी आलिम ने कहा कि हमारे दीन में तुम उस वक़्त तक दाख़िल नहीं हो सकते जब तक तुम अल्लाह के ग़ज़ब के एक हिस्से के लिये तैयार न हो जाओ। इस पर ज़ैद (रज़ि.) ने कहा कि वाह मैं अल्लाह के ग़ज़ब ही से भागकर आया हूँ, फिर अल्लाह के ग़ज़ब को मैं अपने ऊपर कभी न लूँगा और न मुझको उसे उठाने की ताक़त है! क्या तुम मुझे किसी और दूसरे दीन का कुछ पता बता सकते हो? उस आलिम ने कहा मैं नहीं जानता (कोई दीन सच्चा हो तो दीने हनीफ़ हो) ज़ैद (रज़ि.) ने पूछा दीने हनीफ़ क्या है? उस आलिम ने कहा कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का दीन जो न यहूदी थे और न नसरानी और वो अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करते थे। ज़ैद वहाँ से चले आए और एक नसरानी पादरी से मिले। उनसे भी अपना ख़्याल बयान किया उसने भी यही कहा कि तुम हमारे दीन में आओगे तो अल्लाह तआला की ला'नत में से एक हिस्सा लोगे। ज़ैद (रज़ि.) ने कहा मैं अल्लाह की ला'नत से ही बचने के लिये तो ये सब कुछ कर रहा हूँ। अल्लाह की ला'नत उठाने की मुझमें ताक़त नहीं और न मैं उसका ग़ज़ब किस तरह उठा सकता हूँ! क्या तुम मेरे लिये उसके सिवा कोई और दीन बतला सकते हो। पादरी ने कहा कि मेरी नज़र में हो तो सिर्फ़ एक दीने हनीफ़ सच्चा दीन है ज़ैद ने पूछा दीने हनीफ़ क्या है? कहा कि वो दीने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) है जो न यहूदी थे और न नसरानी और अल्लाह के सिवा वो किसी की पूजा नहीं करते थे। ज़ैद ने जब दीने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में उनकी ये राय सुनी तो वहाँ से रवाना हो गये और उस सरज़मीन से बाहर निकलकर अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाए और ये दुआ की, ऐ अल्लाह! मैं गवाही देता हूँ कि मैं दीने इब्राहीम पर हूँ।

ابْنِ عُمَرَ - أَنَّ زَيْدَ بْنَ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ خَرَجَ إِلَى الشَّامِ يَسْأَلُ عَنِ الدِّيْنِ وَيَتْبَعُهُ، فَلَقِيَ عَالِمًا مِنَ الْيَهُوْدِ فَسَأَلَهُ عَنْ دِيْنِهِمْ فَقَالَ: إِنِّي لَعَلِّيْ أَنْ أَدِيْنَ دِيْنَكُمْ فَأَخْبِرْنِي. فَقَالَ: لاَ تَكُوْنُ عَلَى دِيْنِنَا حَتَّى تَأْخُذَ بِنَصِيْبِكَ مِنْ غَضَبِ اللهِ. قَالَ زَيْدٌ: مَا أَفِرُّ إِلاَّ مِنْ غَضَبِ اللهِ، وَلاَ أَحْمِلُ مِنْ غَضَبِ اللهِ شَيْئًا أَبَدًا وَأَنَا أَسْتَطِيْعُهُ؟ فَهَلْ تَدُلُّنِي عَلَى غَيْرِهِ؟ قَالَ: مَا أَعْلَمُهُ إِلاَّ أَنْ يَكُوْنَ حَنِيْفًا. قَالَ زَيْدٌ: وَمَا الْحَنِيْفُ؟ قَالَ: دِيْنُ إِبْرَاهِيْمَ، لَمْ يَكُنْ يَهُوْدِيًّا وَلاَ نَصْرَانِيًّا وَلاَ يَعْبُدُ إِلاَّ اللهَ. فَخَرَجَ زَيْدٌ فَلَقِيَ عَالِمًا مِنَ النَّصَارَى، فَذَكَرَ مِثْلَهُ فَقَالَ: لَنْ تَكُوْنَ عَلَى دِيْنِنَا حَتَّى تَأْخُذَ بِنَصِيْبِكَ مِنْ لَعْنَةِ اللهِ. قَالَ: مَا أَفِرُّ إِلاَّ مِنْ لَعْنَةِ اللهِ، وَلاَ أَحْمِلُ مِنْ لَعْنَةِ اللهِ وَلاَ مِنْ غَضَبِهِ شَيْئًا أَبَدًا، وَأَنَا أَسْتَطِيْعُ؟ فَهَلْ تَدُلُّنِي عَلَى غَيْرِهِ؟ قَالَ: مَا أَعْلَمُهُ إِلاَّ أَنْ يَكُوْنَ حَنِيْفًا. قَالَ: وَمَا الْحَنِيْفُ؟ قَالَ: دِيْنُ إِبْرَاهِيْمَ، لَمْ يَكُنْ يَهُوْدِيًّا وَلاَ نَصْرَانِيًّا وَلاَ يَعْبُدُ إِلاَّ اللهَ. فَلَمَّا رَأَى زَيْدٌ قَوْلَهُمْ فِي إِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ خَرَجَ، فَلَمَّا بَرَزَ رَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَشْهَدُ أَنِّي عَلَى دِيْنِ إِبْرَاهِيْمَ)).

3828. और लैष बिन सअद ने कहा कि मुझे हिशाम ने लिखा, अपने वालिद (उर्वा बिन ज़ुबैर) से और उन्होंने कहा कि हमसे

٣٨٢٨- وَقَالَ اللَّيْثُ: كَتَبَ إِلَيَّ هِشَامٌ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ

हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल को का'बा से अपनी पीठ लगाए हुए खड़े होकर ये सुना, ऐ क़ुरैश के लोगों ! अल्लाह की क़सम! मेरे सिवा और कोई तुम्हारे यहाँ दीने इब्राहीम पर नहीं है और ज़ैद बेटियों को ज़िन्दा नहीं गाड़ते थे और ऐसे शख़्स से जो अपनी बेटी को मार डालना चाहता कहते उसकी जान न ले उसके तमाम अख़राजात का ज़िम्मे मैं लेता हूँ। चुनाँचे लड़की को अपनी परवरिश में रख लेते जब वो बड़ी हो जाती तो उसके बाप से कहते अब अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी लड़की को तुम्हारे हवाले कर सकता हूँ और अगर तुम्हारी मर्ज़ी हो तो मैं उसके सब काम पूरे कर दूँगा।

الله عنهما قالت: ((رَأَيْتُ زَيْدَ بْنَ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ قَائِمًا مُسْنِدًا ظَهْرَهُ إِلَى الْكَعْبَةِ يَقُولُ: يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ، وَاللهِ مَا مِنْكُمْ عَلَى دِيْنِ إِبْرَاهِيْمَ غَيْرِيْ. وَكَانَ يُحْيِي الْمَوْؤُدَةَ، يَقُولُ لِلرَّجُلِ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَقْتُلَ ابْنَتَهُ: لاَ تَقْتُلْهَا، أَنَا أَكْفِيْكَهَا مُؤْنَتَهَا، فَيَأْخُذُهَا، فَإِذَا تَرَعْرَعَتْ قَالَ لأَبِيْهَا: إِنْ شِئْتَ دَفَعْتُهَا إِلَيْكَ، وَإِنْ شِئْتَ كَفَيْتُكَ مُؤْنَتَهَا)).

तशरीह : बज़्ज़ार और तबरानी ने यूँ रिवायत किया है कि ज़ैद और वरक़ा दोनों दीने ह़क़ की तलाश में शाम के मुल्क को गये। वरक़ा तो वहाँ जाकर ईसाई हो गया और ज़ैद को ये दीन पसन्द नहीं आया। फिर वो मूसि़ल में आए वहाँ एक पादरी से मिले जिसने दीने नसरानी उन पर पेश किया लेकिन ज़ैद ने न माना। इसी रिवायत में ये है कि सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से ज़ैद का ह़ाल पूछा आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह ने उसको बख़्श दिया और उस पर रह़म किया और वो दीने इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) पर फ़ौत हुआ। ज़ैद का नसबनामा ये है ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन बाह़ बिन अ़ब्दुल्लाह अल्ख़ ये बुज़ुर्ग बिअ़षते नबवी से पहले ही इंतिक़ाल कर गये थे उनके स़ाह़बज़ादे सईद नामी ने इस्लाम क़ुबूल किया जो अ़शर–ए–मुबश्शरह में से हैं। रिवायत में मुश्रिकीने मक्का का अंसाब पर ज़बीह़ा का ज़िक्र आया है। वो पत्थर मुराद हैं जो का'बा के आसपास लगे हुए थे और उन पर मुश्रिकीन अपने बुतों के नाम पर ज़िब्ह़ किया करते थे। आँह़ज़रत (ﷺ) के दस्तरख़्वान पर ह़ाज़िरी देने से ज़ैद ने इसलिये इंकार किया कि उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) को भी क़ुरैश का एक फ़र्द समझकर गुमान कर लिया कि शायद दस्तरख़्वान पर थानों का ज़बीह़ा पकाया गया हो और वो ग़ैरुल्लाह के मज़्बूह़ा जानवर का गोश्त नहीं खाया करते थे, जहाँ तक ह़क़ीक़त का ता'ल्लुक़ है रसूले करीम (ﷺ) पैदाइश के दिन ही से मा'सूम थे और ये नामुम्किन था कि आप (ﷺ) नुबुव्वत से पहले क़ुरैश के अफ़आले शिर्किया में शरीक होते हों। लिहाज़ा ज़ैद का गुमान आँह़ज़रत (ﷺ) के बारे में स़ह़ीह़ न था। फ़ाकही ने आ़मिर बिन रबीआ़ से निकाला, मुझसे ज़ैद ने ये कहा कि मैंने अपनी क़ौम के बरख़िलाफ़ इस्माईल और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के दीन की पैरवी की है और मैं उस पैग़म्बर का मुंतज़िर हूँ जो आले इस्माईल में पैदा होगा लेकिन उम्मीद नहीं कि मैं उसका ज़माना पाऊँ मगर मैं इस पर ईमान लाया उसकी तस्दीक़ करता हूँ उसके बरह़क़ पैग़म्बर होने की गवाही देता हूँ अगर तू ज़िन्दा रहे और उस रसूल को पाये तो मेरा सलाम पहुँचा दीजियो। आ़मिर (रज़ि.) कहते हैं कि जब मैं मुसलमान हुआ तो मैंने उनका सलाम आँह़ज़रत (ﷺ) को पहुँचाया आप (ﷺ) ने जवाब में वअ़लैहिस्सलाम फ़र्माया और फ़र्माया मैंने उसको बहिश्त में कपड़ा घसीटते हुए देखा है। ज़ैद मरहूम ने अ़रबों में लड़कियों को ज़िन्दा दर गोर कर देने की रस्म की भी मुख़ालफ़त की जैसा कि रिवायत के आख़िर में दर्ज है।

बाब 25 : क़ुरैश ने जो का'बा की मरम्मत की थी उसका बयान

٢٥– بَابُ بُنْيَانِ الْكَعْبَةِ

3829. मुझसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़म्र बिन दीनार ने ख़बर दी, उन्होंने ह़ज़रत जाबिर

٣٨٢٩– حَدَّثَنِي مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ دِيْنَارٍ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ

बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब का'बा की ता'मीर हो रही थी तो नबी करीम (ﷺ) और ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) उसके लिये पत्थर ढो रहे थे ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से कहा अपना तहबन्द गर्दन पर रख लो इस त़रह पत्थर की (ख़राश लगने से) बच जाओगे आप (ﷺ) ने जब ऐसा किया आप (ﷺ) ज़मीन पर गिर पड़े और आप (ﷺ) की नज़र आसमान पर गड़ गई जब होश हुआ तो आप (ﷺ) ने चचा से फ़र्माया मेरा तहबन्द लाओ फिर उन्होंने आपका तहबन्द ख़ूब मज़बूत़ बाँध दिया। (राजेअ़ : 364)

عبد الله رضي الله عنهما قال: لما بنيت الكعبة ذهب النبي ﷺ وعباس ينقلان الحجارة، فقال عباس للنبي ﷺ: اجعل إزارك على رقبتك يقلك من الحجارة، فخر إلى الأرض، وطمحت عيناه إلى السماء، ثم أفاق فقال: ((إزاري إزاري، فشد عليه إزاره)).
[راجع: ٣٦٤]

3830. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार और उ़बैदुल्लाह बिन अबी ज़ैद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में बैतुल्लाह के गिर्द अह़ात़ा की दीवार न थी लोग का'बा के गिर्द नमाज़ पढ़ते थे फिर जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का दौर आया तो उन्होंने उसके गिर्द दीवार बनवाई। उ़बैदुल्लाह ने बयान किया कि ये दीवारें भी नीची थीं अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने उनको बुलन्द किया।

٣٨٣٠- حدثنا أبو النعمان حدثنا حماد بن زيد عن عمرو بن دينار وعبيد الله بن أبي يزيد قالا: ((لم يكن على عهد النبي ﷺ حول البيت حائط، كانوا يصلون حول البيت، حتى كان عمر فبنى حوله حائطا. قال عبيد الله: جدره قصير، فبناه ابن الزبير)).

तशरीह : ह़ाफ़िज़ ने कहा का'बा शरीफ़ दस मर्तबा ता'मीर किया गया है, पहले फ़रिश्तों ने बनाया, फिर आदम (अलैहिस्सलाम) ने, फिर उनकी औलाद ने, फिर ह़ज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने, फिर अ़मालिक़ा ने, फिर जुरहुम ने, फिर क़ुसई बिन किलाब ने, फिर क़ुरैश ने, फिर अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने, फिर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने, अब तक ह़ज्जाज ही की बिना पर है। आज की सऊ़दी हुकूमत ने मस्जिदुल ह़राम की तौसीअ़ व ता'मीर में बेशबहा ख़िदमात अंजाम दी हैं। अल्लाह पाक उन ख़िदमात को क़ुबूल फ़र्माए आमीन।

बाब 26 : जाहिलियत के ज़माने का बयान

٢٦- باب أيام الجاهلية

या'नी वो ज़माना जो आँह़ज़रत (ﷺ) की पैदाइश से पहले आपकी नुबुव्वत तक गुज़रा है। और अ़हदे जाहिलियत उस ज़माने को भी कहते हैं जो आपके नबी होने से पहले गुज़रा है।

3831. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त़्त़ान ने बयान किया कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आशूरा का रोज़ा क़ुरैश लोग ज़मान-ए-जाहिलियत में रखते थे और नबी करीम (ﷺ) ने भी उसे बाक़ी रखा था। जब आप (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) ने ख़ुद भी उस दिन रोज़ा रखा और स़ह़ाबा (रज़ि.) को भी रखने का हुक्म दिया लेकिन जब रमज़ान का रोज़ा 2 हिजरी में फ़र्ज़ हुआ तो उसके बाद आप

٣٨٣١- حدثنا مسدد حدثنا يحيى قال هشام حدثني أبي عن عائشة رضي الله عنها قالت: ((كان عاشوراء يوما تصومه قريش في الجاهلية، وكان النبي ﷺ يصومه، فلما قدم المدينة صامه وأمر بصيامه، فلما نزل رمضان كان من شاء

صَامَهُ، وَمَنْ شَاءَ لاَ يَصُومُهُ)).

[راجع: ١٥٩٢]

(ﷺ) ने हुक्म दिया कि जिसका जी चाहे आशूरा का रोज़ा रखे और जो न चाहे न रखे। (राजेअ़ : 1592)

٣٨٣٢- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانُوا يَرَوْنَ أَنَّ الْعُمْرَةَ فِي أَشْهُرِ الْحَجِّ مِنَ الْفُجُورِ فِي الأَرْضِ، وَكَانُوا يُسَمُّونَ الْمُحَرَّمَ صَفَرًا وَيَقُولُونَ: إِذَا بَرَأَ الدَّبَرْ، وَعَفَا الأَثَرْ، حَلَّتِ الْعُمْرَةُ لِمَنِ اعْتَمَرْ. قَالَ: فَقَدِمَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابُهُ رَابِعَةً مُهِلِّيْنَ بِالْحَجِّ، أَمَرَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَجْعَلُوهَا عُمْرَةً، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، أَيُّ الْحِلِّ؟ قَالَ: ((الْحِلُّ كُلُّهُ)).

[راجع: ١٠٨٥]

3832. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन त़ाऊस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़मान-ए-जाहिलियत में लोग ह़ज्ज के महीनों में उ़मरह करना बहुत बड़ा गुनाह ख़याल करते थे। वो मुहर्रम को स़फ़र कहते। उनके यहाँ ये मष़ल थी कि ऊँट की पीठ का ज़ख़्म जब अच्छा होने लगे और (ह़ाजियों के) निशानाते क़दम मिट चुकें तो अब उ़मरह करने वालों का उ़मरह जाइज़ हुआ। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने अस़्ह़ाब के साथ ज़िल्हिज्ज की चौथी तारीख़ को ह़ज्ज का एह़राम बाँधे हुए (मक्का) तशरीफ़ लाए तो आपने स़ह़ाबा को हुक्म दिया कि अपने ह़ज्ज को उ़मरह कर डालें (त़वाफ़ और सई करके एह़राम खोल दें) स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! (उस उ़मरह और ह़ज्ज के दौरान में) क्या चीज़ें ह़लाल होंगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तमाम चीज़ें! जो एह़राम की न होने की ह़ालत में ह़लाल थीं वो सब ह़लाल हो जाएंगी। (राजेअ़ : 1075)

٣٨٣٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: كَانَ عَمْرٌو يَقُولُ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: ((جَاءَ سَيْلٌ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَكَسَا مَا بَيْنَ الْجَبَلَيْنِ. قَالَ سُفْيَانُ وَيَقُولُ: إِنَّ هَذَا الْحَدِيْثَ لَهُ شَأْنٌ)).

3833. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, कहा कि अ़म्र बिन दीनार बयान करते थे कि हमसे सईद बिन मुसय्यिब ने अपने वालिद से बयान किया, उन्होंने सईद के दादा ह़ज़्न से बयान किया कि ज़माना जाहिलियत में एक मर्तबा सैलाब आया कि (मक्का की) दोनों पहाड़ियों के दरम्यान पानी ही पानी हो गया सुफ़यान ने बयान किया कि बयान करते थे कि इस ह़दीष़ का एक बहुत बड़ा क़िस़्स़ा है।

तशरीह़ : ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर ने कहा, मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया कि का'बा में सैलाब उस पहाड़ की त़रफ़ से आया करता था जो बुलन्द जानिब में वाक़ेअ़ है उनको डर हुआ कहीं पानी का'बा के अन्दर न घुस जाए इसलिये उन्होंने इमारत को ख़ूब मज़बूत करना चाहा और पहले जिसने का'बा ऊँचा किया और उसमें से कुछ गिराया वो वलीद बिन मुग़ीरह था। फिर का'बा के बनने का वो क़िस़्स़ा नक़ल किया जो आँह़ज़रत (ﷺ) की नुबुव्वत से पहले हुआ और इमाम शाफ़िई ने किताबुल उम्माल में अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से नक़ल किया। जब वो का'बा बना रहे थे। कअ़ब ने उनसे कहा ख़ूब मज़बूत बनाओ क्योंकि हम किताबों में ये पाते हैं कि आख़िर ज़माने में सैलाब बहुत आएँगे तो क़िस़्से से मुराद यही है कि वो इस सैलाब को देखकर जिसके बराबर कभी नहीं आया था ये समझ गये कि आख़िर ज़माने के सैलाबों में ये पहला सैलाब है।

3834. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे बयान ने, उनसे अबू बिश्र ने और उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) क़बीला अह़मस की एक औरत से मिले उनका नाम ज़ैनब बिन्ते मुहाजिर था, आप (रज़ि.) ने देखा कि वो बात ही नहीं करतीं दरयाफ़्त फ़र्माया क्या बात है ये बात क्यूँ नहीं करतीं? लोगों ने बताया कि मुकम्मल ख़ामोशी के साथ ह़ज्ज करने की मन्नत मानी है। अबूबक्र (रज़ि.) ने उनसे फ़र्माया, बात करो इस त़रह़ ह़ज्ज करना तो जाहिलियत की रस्म है। चुनाँचे उसने बात की और पूछा आप कौन हैं? ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि मैं मुहाजिरीन का एक आदमी हूँ। उन्होंने पूछा कि मुहाजिरीन के किस क़बीले से हैं? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि क़ुरैश से, उन्होंने पूछा क़ुरैश के किस ख़ानदान से? ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उस पर फ़र्माया तुम बहुत पूछने वाली औरत हो, मैं अबूबक्र (रज़ि.) हूँ। उसके बाद उन्होंने पूछा जाहिलियत के बाद अल्लाह तआ़ला ने जो हमें ये दीने ह़क़ अ़ता फ़र्माया उस पर तुम्हारा क़याम उस वक़्त तक रहेगा जब तक तुम्हारे इमाम ह़ाकिम सीधे रहेंगे। उस ख़ातून ने पूछा इमाम से क्या मुराद है आपने फ़र्माया क्या तुम्हारी क़ौम में सरदार और अशराफ़ लोग नहीं हैं जो अगर लोगों को कोई हुक्म दें तो वो उसकी इताअ़त करें? उसने कहा कि क्यूँ नहीं हैं। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि इमाम से यही मुराद हैं।

٣٨٣٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ بَيَانٍ أَبِي بِشْرٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: ((دَخَلَ أَبُو بَكْرٍ عَلَى امْرَأَةٍ مِنْ أَحْمَسَ يُقَالُ لَهَا زَيْنَبُ، فَرَآهَا لاَ تَكَلَّمُ، فَقَالَ: مَا لَهَا لاَ تَكَلَّمُ؟ قَالُوا: حَجَّتْ مُصْمِتَةً. قَالَ لَهَا: تَكَلَّمِي، فَإِنَّ هَذَا لاَ يَحِلُّ، هَذَا مِنْ عَمَلِ الْجَاهِلِيَّةِ. فَتَكَلَّمَتْ فَقَالَتْ: مَنْ أَنْتَ؟ قَالَ: امْرُؤٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ، قَالَتْ: أَيُّ الْمُهَاجِرِينَ؟ قَالَ: مِنْ قُرَيْشٍ. قَالَتْ: مِنْ أَيِّ قُرَيْشٍ أَنْتَ؟ قَالَ: إِنَّكِ لَسَؤُولٌ، أَنَا أَبُوبَكْرٍ. قَالَتْ: مَا بَقَاؤُنَا عَلَى هَذَا الأَمْرِ الصَّالِحِ الَّذِي جَاءَ اللهُ بِهِ بَعْدَ الْجَاهِلِيَّةِ؟ قَالَ: بَقَاؤُكُمْ عَلَيْهِ مَا اسْتَقَامَتْ بِكُمْ أَئِمَّتُكُمْ. قَالَتْ: وَمَا الأَئِمَّةُ؟ قَالَ: أَمَا كَانَ بِقَوْمِكِ رُؤُوسٌ وَأَشْرَافٌ يَأْمُرُونَهُمْ فَيُطِيعُونَهُمْ؟ قَالَتْ: بَلَى. قَالَ: فَهُمْ أُولَئِكَ عَلَى النَّاسِ)).

तश्रीह़ : इस्माईली की रिवायत में यूँ है उस औरत ने कहा हममें और हमारी क़ौम में जाहिलियत के ज़माने में कुछ फ़साद हुआ था तो मैंने क़सम खाई थी कि अगर अल्लाह ने मुझको उससे बचा दिया तो मैं जब तक ह़ज्ज न कर लूँगी किसी से बात नहीं करूँगी। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा इस्लाम उन बातों को मिटा देता है तुम बात करो। ह़ाफ़िज़ ने कहा कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के इस क़ौल से ये निकला कि ऐसी ग़लत़ क़सम का तोड़ देना मुस्तह़ब है। ह़दीष़ अबू इस्राईल भी ऐसी है जिसने पैदल चलकर ह़ज्ज करने की मन्नत मानी थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसको सवारी पर चलने का हुक्म फ़र्माया और उस मन्नत को तुड़वा दिया।

3835. मुझसे फ़र्वा बिन अबी अल् मग़रा ने बयान किया, कहा हमको अ़ली बिन मुस्हिर ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक काली औरत जो किसी अ़रब की बांदी थीं, इस्लाम लाईं

٣٨٣٥- حَدَّثَنِي فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ:

((أَسْلَمَتِ امْرَأَةٌ سَوْدَاءُ لِبَعْضِ الْعَرَبِ، وَكَانَ لَهَا حِفْشٌ فِي الْمَسْجِدِ، قَالَتْ فَكَانَتْ تَأْتِيْنَا فَتَحَدَّثُ عِنْدَنَا، فَإِذَا فَرَغَتْ مِنْ حَدِيْثِهَا قَالَتْ:

وَيَوْمُ الْوِشَاحِ مِنْ تَعَاجِيْبِ رَبِّنَا
أَلاَ إِنَّهُ مِنْ بَلْدَةِ الْكُفْرِ نَجَّانِيْ

فَلَمَّا أَكْثَرَتْ قَالَتْ لَهَا عَائِشَةُ : وَمَا يَوْمُ الْوِشَاحِ؟ قَالَتْ: خَرَجَتْ جُوَيْرِيَةٌ لِبَعْضِ أَهْلِي وَعَلَيْهَا وِشَاحٌ مِنْ أَدَمٍ، فَسَقَطَ مِنْهَا، فَانْحَطَّتْ عَلَيْهِ الْحُدَيَّا وَهِيَ تَحْسِبُهُ لَحْمًا، فَأَخَذَتْ. فَاتَّهَمُوْنِي بِهِ، فَعَذَّبُوْنِي، حَتَّى بَلَغَ مِنْ أَمْرِهِمْ أَنَّهُمْ طَلَبُوا فِي قُبُلِي، فَبَيْنَا هُمْ حَوْلِيْ وَأَنَا فِي كَرْبِي إِذْ أَقْبَلَتِ الْحُدَيَّا حَتَّى وَازَتْ بِرُؤُوْسِنَا، ثُمَّ أَلْقَتْهُ فَأَخَذُوْهُ، فَقُلْتُ لَهُمْ، هَذَا الَّذِيْ اتَّهَمْتُمُوْنِيْ بِهِ وَأَنَا مِنْهُ بَرِيْئَةٌ)).

[راجع: ٤٣٩]

और मस्जिद में उनके रहने के लिये एक कोठरी थी। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि वो हमारे यहाँ आया करती और बातें किया करती थीं, लेकिन जब बातों से फ़ारिग़ हो जातीं तो वो ये श'र पढ़ती, और हार वाला दिन भी हमारे रब के अजाइबे क़ुदरत में से है, कि उसी ने (बफ़ज़्लिही) कुफ़्र के शहर से मुझे छुड़ाया। उसने जब कई मर्तबा ये श'र पढ़ा तो आइशा (रज़ि.) ने उससे दरयाफ़्त किया कि हार वाले दिन का क़िस्सा क्या है? उसने बयान किया कि मेरे मालिकों के घराने की एक लड़की (जो नई दुल्हन थी) लाल चमड़े का एक हार बाँधे हुए थी। वो बाहर निकली तो इत्तिफ़ाक़ से वो गिर गया। एक चील की उस पर नज़र पड़ी और वो गोश्त समझकर उठा कर ले गई। लोगों ने मुझे उसके लिये चोरी की तोहमत लगाई और मुझे सज़ा देनी शुरू कीं। यहाँ तक कि मेरी शर्मगाह की भी तलाशी ली। ख़ैर वो अभी मेरे चारों तरफ़ जमा ही थ और मैं अपनी मुसीबत में मुब्तला थी कि चील आई और हमारे सरों के बिलकुल ऊपर उड़ने लगी। फिर उसने वही हार नीचे गिरा दिया। लोगों ने उसे उठा लिया तो मैंने उनसे कहा इसी के लिये तुम लोग मुझ पर बोहतान लगा रहे थे ह़ालाँकि मैं बेगुनाह थी।

(राजेअ़ : 439)

तश्रीह : रिवायत में लफ़्ज़े ह़िफ़्श ह़ के कसरा के साथ है जो छोटे तंग घर पर बोला जाता है **व वज्हु दुख़ूलिहा हाहुना मिन जिहतिन मा कान अ़लैहि अहलुल्जाहिलिय्यति मिनल्जफ़ा फ़िल्फ़िअ़लि वल्क़ौलि** (फ़त्हुल्बारी) या'नी इस ह़दीष़ को यहाँ लाने से ज़मान-ए-जाहिलियत के मज़ालिम (अत्याचारों) का दिखलाना है, जो अहले जाहिलियत अपनी ज़बानों और अपने कामों से ग़रीबों पर ढाया करते थे।

٣٨٣٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِيْنَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَلاَ مَنْ كَانَ حَالِفًا فَلاَ يَحْلِفُ إِلاَّ بِاللهِ، فَكَانَتْ قُرَيْشٌ تَحْلِفُ بِآبَائِهَا فَقَالَ: لاَ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ)).[راجع: ٢٦٧٩]

3836. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ! अगर किसी को क़सम खानी ही हो तो अल्लाह के सिवा किसी की क़सम न खाए। क़ुरैश अपने बाप दादा की क़सम खाया करते थे इसलिये आप (ﷺ) ने उन्हें फ़र्माया कि अपने बाप दादा के नाम की क़सम न खाया करो। (राजेअ़ : 2679)

٣٨٣٧- حَدَّثَنِيْ يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ:

3837. मुझसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे

حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْقَاسِمِ حَدَّثَهُ أَنَّ الْقَاسِمَ كَانَ يَمْشِي بَيْنَ يَدَيِ الْجَنَازَةِ وَلاَ يَقُومُ لَهَا، وَيُخْبِرُ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُومُونَ لَهَا يَقُولُونَ إِذَا رَأَوْهَا: كُنْتِ فِي أَهْلِكِ مَا أَنْتِ مَرَّتَيْنِ)).

अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया कि मुझे अम्र बिन हारिष ने ख़बर दी, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया कि क़ासिम बिन मुहम्मद उनके वालिद जनाज़े के आगे आगे चला करते थे और जनाज़े को देखकर खड़े नहीं होते थे। हज़रत आइशा (रज़ि.) के हवाले से वो बयान करते थे कि ज़मान-ए-जाहिलियत में लोग जनाज़ा के लिये खड़े हो जाया करते थे और उसे देखकर कहते थे कि, ऐ मरने वाले जिस तरह अपनी ज़िन्दगी में तू अपने घरवालों के साथ था अब वैसा ही किसी परिन्दे के भेस में है।

तश्रीह : या'नी जाहिलियत वाले दोबारा जन्म के क़ाइल थे वो कहते थे आदमी की रूह मरते ही किसी परिन्दे के भेस में चली जाती है। अगर अच्छा आदमी था तो अच्छे परिन्दे की शक्ल ले लेती है जैसे कबूतर वग़ैरह और अगर बुरा आदमी था तो बुरे की मष़लन उल्लू, कव्वा वग़ैरह। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया कि तू अपने घर वालों में तो अच्छा शरीफ़ आदमी था अब बतला किस जन्म में है। कुछ ने तर्जुमा यूँ किया है तू अपने घरवालों में था लेकिन दो बार तू उनमें नहीं रह सकता यानी हश्र होने वाला नहीं जैसे मुश्रिकों का एतिक़ाद था कि एक ही ज़िन्दगी है, दुनिया की ज़िन्दगी और वो आख़िरत के क़ाइल न थे। **क़ौलुहू कुन्त फ़ी अहलिक मा अन्त मर्रतैनि अय यक़ूलून ज़ालिक मर्रतैनि व मा मौसूलतुन व बअज़ुस्सिलति महज़ूफ़ुन वत्तक्दीरू अनत फ़ी अहलिकल्लज़ी कुनत फीहि अय अल्लज़ी अन्त फीहि अल्आन कुन्त फिल्हयाति मिष्लुहू लिअन्नहुम कानू ला यूमिनून बिल्बअषि व लाकिन कानू यअ़तकिदून रूह इज़ा खरजत तत़ीरू त़ैरन फइ कान मिन अहलिलख़ैरि कान रूहुह मिन सालिहित्तैरि व इल्ला बिल्अक्सि** मज़मून का ख़ुलासा वही है जो ऊपर गुज़र चुका है।

٣٨٣٨- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ الْعَبَّاسِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ قَالَ: ((قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: إِنَّ الْمُشْرِكِينَ كَانُوا لاَ يُفِيضُونَ مِنْ جَمْعٍ حَتَّى تَشْرِقَ الشَّمْسُ عَلَى ثَبِيرٍ، فَخَالَفَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ فَأَفَاضَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ)).

[راجع: ١٦٨٤]

3838. मुझसे अम्र बिन अब्बास ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे अम्र बिन मैमून ने बयान किया कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा जब तक धूप ष़बीर पहाड़ी पर न जाती क़ुरैश (हज्ज में) मुज़दलिफ़ा से नहीं निकला करते थे। नबी करीम (ﷺ) ने उनकी मुख़ालफ़त की और सूरज निकलने से पहले आप (ﷺ) ने वहाँ से कूच किया।

(राजेअ़ : 1673)

٣٨٣٩- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: قُلْتُ لأَبِي أُسَامَةَ: حَدَّثَكُمْ يَحْيَى بْنُ الْمُهَلَّبِ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ عِكْرِمَةَ ﴿وَكَأْسًا دِهَاقًا﴾ قَالَ: مُتَتَابِعَةً.

3839. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू उसामा से पूछा, क्या तुम लोगों से यह्या बिन महल्लब ने ये हदीष़ बयान की थी कि उनसे हुसैन ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने (क़ुर्आन मजीद की आयत में) वकासन दिहाक़ा के बारे में फ़र्माया कि (मा'नी हैं) भरा हुआ प्याला जिसका मुसलसल दौर चले।

٣٨٤٠- قَالَ: ((وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ:

3840. इक्रिमा ने बयान किया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन

अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद से सुना, वो कहते थे कि ज़माना जाहिलियत में (ये लफ़्ज़ इस्ते'माल करते थे) अस्क़िना कासन दिहाक़ा या'नी हमको भरपूर जामे शराब पिलाते रहो।

سَمِعْتُ يَقُولُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ: اسْقِنَا كَأْسًا دِهَاقًا)).

3841. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक ने, उनसे अबू सलमा ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे सच्ची बात जो कोई शायर कह सकता था वो लुबैद शायर ने कही, हाँ अल्लाह के सिवा हर चीज़ बातिल है, और उमय्या बिन अबी सल्त (जाहिलियत का एक शायर) मुसलमान होने के क़रीब था।
(दीगर मक़ाम : 6147, 6479)

٣٨٤١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَصْدَقُ كَلِمَةٍ قَالَهَا الشَّاعِرُ كَلِمَةُ لَبِيْدٍ : أَلاَ كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلاَ اللهَ بَاطِلٌ. وَكَادَ أُمَيَّةُ بْنُ أَبِي الصَّلْتِ أَنْ يُسْلِمَ)). [طرفاه في: ٦١٤٨، ٦٤٨٩].

तश्रीह : बातिल से यहाँ मुराद फ़ना होना है या बिल फ़ेअल मअदूम जैसे सूफ़िया कहते हैं कि ख़ारिज में सिवाय अल्लाह के फ़िलहक़ीक़त कुछ मौजूद नहीं है और ये जो वजूद नज़र आता है ये वजूद मौहूम है जो एक न एक दिन फ़ानी (ख़त्म होने वाला) है। सहीह मुस्लिम में शुरैद से रिवायत है आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे उमय्या बिन अबी सल्त के शे'र सुनाओ। मैंने आप (ﷺ) को सौ बैतों के क़रीब सुनाए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ये तो अपने शे'रों में मुसलमान होने के क़रीब था। उमय्या जाहिलियत के ज़माने में इबादत किया करता था, आख़िरत का क़ाइल था। कुछ ने कहा नसरानी हो गया था उसके शे'रों में अकष़र तौहीद के मज़ामीन है लुबैद का पूरा शे'र है :–

अला कुल्लु शैइन मा खलल्लाहि बातिलु — व कुल्लु नईमिन ला महालत ज़ाइलु
जो अल्लाह के मासिवा है वो फ़ना हो जाएगा — एक दिन जो देश है मिट जाएगा।

लुबैद का ज़िक्र किरमानी में है, अश्शाइरू अस्सहाबी मिन फुहूलि शुआराइल्जाहिलिय्यति फअस्लम व लम यकुल शिअरन बअदु। या'नी लुबेद जाहिलियत का माना हुआ शाइर था जो बाद में मुसलमान हो गया फिर उसने शे'र कहना बिलकुल छोड़ दिया।

3842. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे भाई ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का एक गुलाम था जो रोज़ाना उन्हें कुछ कमाई दिया करता था और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उसे अपनी ज़रूरियात में इस्ते'माल किया करते थे। एक दिन वो गुलाम कोई चीज़ लाया और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने भी उसमें से खा लिया। फिर गुलाम ने कहा आप (रज़ि.) को मा'लूम है ये कैसी कमाई से है? आप (रज़ि.) ने दरयाफ़्त फ़र्माया कैसी कमाई से है? उसने कहा मैंने जाहिलियत

٣٨٤٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((كَانَ لأَبِي بَكْرٍ غُلاَمٌ يُخْرِجُ لَهُ الْخَرَاجَ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يَأْكُلُ مِنْ خَرَاجِهِ، فَجَاءَ يَوْمًا بِشَيْءٍ فَأَكَلَ مِنْهُ أَبُو بَكْرٍ، فَقَالَ لَهُ الْغُلاَمُ : تَدْرِي مَا هَذَا؟

में एक शख़्स के लिये कहानत की थी हालाँकि मुझे कहानत नहीं आती थी, मैंने उसे सिर्फ़ धोखा दिया था लेकिन इत्तिफ़ाक़ से वो मुझे मिल गया और उसने उसकी उज्रत में मुझको ये चीज़ दी थी, आप खा भी चुके हैं। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने ये सुनते ही अपना हाथ मुँह में डाला और पेट की तमाम चीज़ें क़ै करके निकाल डालीं।

فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ وَمَا هُوَ؟ قَالَ : كُنْتُ تَكَهَّنْتُ لإِنْسَانٍ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، وَمَا أُحْسِنُ الْكِهَانَةَ، إِلاَّ أَنِّي خَدَعْتُهُ فَلَقِيَنِي فَأَعْطَانِي بِذَلِكَ، فَهَذَا الَّذِي أَكَلْتَ مِنْهُ. فَأَدْخَلَ أَبُو بَكْرٍ يَدَهُ فَقَاءَ كُلَّ شَيْءٍ فِي بَطْنِهِ)).

3843. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने कहा, मुझको नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़माना जाहिलियत के लोग हब्लुल हब्लति तक क़ीमत की अदायगी के वा'दे पर, ऊँट का गोश्त उधार बेचा करते थे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हब्लुल हब्ला का मतलब ये है कि कोई हामिला ऊँटनी अपना बच्चा जने फिर वो नवजात बच्चा (बढ़कर) हामला हो, नबी करीम (ﷺ) ने इस तरह की ख़रीद व फ़रोख़्त मम्नूअ क़रार दे दी थी। (राजेअ : 2143)

٣٨٤٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كَانَ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ يَتَبَايَعُونَ لُحُومَ الْجَزُورِ إِلَى حَبَلِ الْحَبَلَةِ. قَالَ: وَحَبَلُ الْحَبَلَةِ أَنْ تُنْتَجَ النَّاقَةُ مَا فِي بَطْنِهَا، ثُمَّ تَحْمِلَ الَّتِي نُتِجَتْ. فَنَهَاهُمُ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ ذَلِكَ)).
[راجع: ٢١٤٣]

3844. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मह्दी ने बयान किया उन्होंने कहा कि ग़ीलान बिन जरीर ने बयान किया कि हम अनस बिन मालिक (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर होते थे। वो हमसे अंसार के बारे में बयान फ़र्माया करते थे और मुझसे फ़र्माते कि तुम्हारी क़ौम ने फ़लाँ मौक़े पर ये कारनामा अंजाम दिया, फ़लाँ मौक़े पर ये कारनामा अंजाम दिया। (राजेअ : 3776)

٣٨٤٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا مَهْدِيٌّ قَالَ: غَيْلاَنُ بْنُ جَرِيرٍ ((كُنَّا نَأْتِي أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ فَيُحَدِّثُنَا عَنِ الأَنْصَارِ، وَكَانَ يَقُولُ لِي: فَعَلَ قَوْمُكَ كَذَا وَكَذَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا، فَعَلَ قَوْمُكَ كَذَا وَكَذَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا)). [راجع: ٣٧٧٦]

तश्रीह : इन तमाम रिवायतों में किसी न किसी पहलू से ज़मान-ए-जाहिलियत के हालात पर रोशनी पड़ती है, हज़रत मुज्तहिदे मुत्लक़ इमाम बुख़ारी (रह) चूँकि अहदे जाहिलियत का बयान फ़र्मा रहे हैं, इसीलिये इन तमाम अहादीष़ को यहाँ लाए। ये हालात बेशतर मआशी (कारोबारी), इक़्तिस़ादी (आर्थिक), सियासी (राजनीतिक), अख़्लाक़ी, मज़हबी कवाइफ़ के बारे में हैं जिनमें बुरे और अच्छे हर क़िस्म के हालात का तज़्किरा हुआ है इस्लाम ने अहदे जाहिलियत की बुराइयों को मिटाया और जो ख़ूबियाँ थीं उनको अपना लिया। इसलिये कि वो सारी ख़ूबियाँ हज़रत इब्राहीम और इस्माईल (अलैहि.) की हिदायात से ली गई थीं। इसलिये इस्लाम ने उनको बाक़ी रखा, बाक़ी उम्मते इस्लाम को उनके लिये रग़बत दिलाई ऐसा ही एक क़सामत का मामला है जो अहदे जाहिलियत में प्रचलित था और इस्लाम ने उसे बाक़ी रखा वो आगे मज़्कूर हो रहा है।

बाब 28 : ज़मान-ए-जाहिलियत की क़सामत का बयान

٢٧- بَابُ الْقَسَامَةِ فِي الْجَاهِلِيَّةِ

तश्रीह : किसी मुहल्ले या बस्ती में कोई आदमी मक़्तूल (मृतक) मिले मगर किसी भी ज़रिये से उसके क़ातिल का पता न मिल सके तो इस सूरत में मुहल्ला के पचास आदमियों का इंतिख़ाब करके उनसे क़सम ली जाएगी कि उनके महल्ले वालों का उस क़ातिल से कोई ता'ल्लुक़ नहीं है, उसी को लफ़्ज़े क़सामा से ता'बीर किया गया है। मक्का शरीफ़ में इस्लाम

से पहले भी ये दस्तूर था जिसे इस्लाम ने क़ायम रखा। मक्का वाले ये क़सम का'बा शरीफ़ के पास लिया करते थे। क़ाल फ़िल्लम्आत अल्क़िसामतु हिय इस्मु बिमअनल्क़समि व क़ील मस्दरून युक़ालु अक़्सम युक्सिमु क़सामतन व क़द युत्लक़ु अलल्जमाअतिल्लज़ीन यक्सिमून व फ़िश्शरइ इबारतुन अन अयमानिन युक़्समु बिहा औलियाउद्दमि अला इस्तिहक़ाक़ि दमि साहिबिहिम औ युक़्समून बिहा अहलुल्महल्लतिल्मुत्तहमून अला नफ़ियिल्क़त्लि अन्हुम अल्ख़ व क़ाल कानतिल्क़ासिमतु फ़िल्जाहिलिय्यति फ़अक़र्रहा रसूलुल्लाहि (ﷺ) अला मा कानत फ़िल्जाहिलिय्यति इन्तिहा मुख़्तसरन

3845. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे क़त़न अबुल हष़ीम ने कहा, हमसे अबू यज़ीद मदनी ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, जाहिलियत में सबसे पहला क़सामा हमारे ही क़बील बनी हाशिम में हुआ था, बनू हाशिम के एक शख़्स़ अ़म्र बिन अ़ल्क़मा को क़ुरैश के किसी दूसरे ख़ानदान के एक शख़्स़ (ख़ुदाश बिन अ़ब्दुल्लाह आ़मरी) ने नौकरी पर रखा, अब ये हाशमी नौकर अपने स़ाहब के साथ उसके ऊँट लेकर शाम की त़रफ़ चला, वहाँ कहीं उस नौकर के पास से एक दूसरा हाशमी शख़्स़ गुज़रा, उसकी बोरी का बंधन टूट गया था। उसने अपने नौकर भाई से इल्तिजा की मेरी मदद कर ऊँट बाँधने की एक रस्सी दे दे, मैं उससे अपना थैला बाँध् अगर रस्सी न होगी तो वो भाग थोड़े जाएगा। उसने एक रस्सी उसे दे दी और उसने अपनी बोरी का मुँह उससे बाँध लिया (और चला गया)। फिर जब उन नौकर और स़ाहब ने एक मंज़िल पर पड़ाव किया तो तमाम ऊँट बाँधे गये लेकिन एक ऊँट खुला रहा। जिस स़ाहब ने हाशमी को नौकरी पर अपने साथ रखा था उसने पूछा सब ऊँट तो बाँधे, ये ऊँट क्यूँ नहीं बाँधा गया क्या बात है? नौकर ने कहा उसकी रस्सी मौजूद नहीं है। स़ाहब ने पूछा कहाँ है उसकी रस्सी? और ग़ुस़्स़ में आकर एक लकड़ी उस पर फेंक मारी उसकी मौत आ पहुँची। उसके (मरने से पहले) वहाँ से एक यमनी शख़्स़ गुज़र रहा था। हाशमी नौकर ने पूछा क्या ह़ज्ज के लिये हर साल तुम मक्का जाते हो? उसने कहा अभी तो इरादा नहीं है लेकिन मैं कभी जाता रहता हूँ। उस नौकर ने कहा जब भी तुम मक्का पहुँचो क्या मेरा एक पैग़ाम पहुँचा दोगे? उसने कहा हाँ पहुँचा दूँगा। उस नौकर ने कहा कि जब भी तुम ह़ज्ज के लिये जाओ तो पुकारना ऐ क़ुरैश के लोगों! जब वो तुम्हारे पास जमा

٣٨٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا قَطَنٌ أَبُو الْهَيْثَمِ حَدَّثَنَا أَبُو يَزِيْدَ الْمَدَنِيُّ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((إِنَّ أَوَّلَ قَسَامَةٍ كَانَتْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ لَفِيْنَا بَنِي هَاشِمٍ: كَانَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي هَاشِمٍ اسْتَأْجَرَهُ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ مِنْ فَخِذٍ أُخْرَى، فَانْطَلَقَ مَعَهُ فِي إِبِلِهِ، فَمَرَّ رَجُلٌ بِهِ مِنْ بَنِي هَاشِمٍ قَدِ انْقَطَعَتْ عُرْوَةُ جُوَالِقِهِ فَقَالَ: أَغِثْنِي بِعِقَالٍ أَشُدُّ بِهِ عُرْوَةَ جُوَالِقِي لاَ تَنْفِرِ الإِبِلُ، فَأَعْطَاهُ عِقَالاً فَشَدَّ بِهِ عُرْوَةَ جُوَالِقِهِ. فَلَمَّا نَزَلُوا عُقِلَتِ الإِبِلُ إِلاَّ بَعِيْرًا وَاحِدًا، فَقَالَ الَّذِي اسْتَأْجَرَهُ: مَا شَأْنُ هَذَا الْبَعِيْرِ لَمْ يُعْقَلْ مِنْ بَيْنِ الإِبِلِ؟ قَالَ: لَيْسَ لَهُ عِقَالٌ. قَالَ: فَأَيْنَ عِقَالُهُ؟ قَالَ: فَحَذَفَهُ بِعَصًا كَانَ فِيْهَا أَجَلُهُ. فَمَرَّ بِهِ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ، فَقَالَ: أَتَشْهَدُ الْمَوْسِمَ؟ قَالَ: مَا أَشْهَدُ وَرُبَّمَا شَهِدْتُهُ. قَالَ: هَلْ أَنْتَ مُبْلِغٌ عَنِّي رِسَالَةً مَرَّةً مِنَ الدَّهْرِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ فَكُنْتَ: إِذَا أَنْتَ شَهِدْتَ الْمَوْسِمَ فَنَادِ يَا آلَ قُرَيْشٍ،

हो जाएँ तो पुकारना ऐ बनी हाशिम! जब वो तुम्हारे पास आ जाएँ तो उनसे अबू तालिब पूछना और उन्हें बतलाना कि फ़लाँ शख़्स ने मुझे एक रस्सी के लिये क़त्ल कर दिया। इस वसिय्यत के बाद वो नौकर मर गया, फिर जब उसका साहब मक्का आया तो अबू तालिब के यहाँ भी गया। जनाब अबू तालिब ने दरयाफ़्त किया हमारे क़बीला के जिस शख़्स को तुम अपने साथ नौकरी के लिये ले गये थे उसका क्या हुआ? उसने कहा कि वो बीमार हो गया था मैंने ख़िदमत करने में कोई कसर नहीं उठा रखी (लेकिन वो मर गया तो) मैंने उसे दफ़न कर दिया। अबू तालिब ने कहा कि उसके लिये तुम्हारी तरफ़ से यही होना चाहिये था। एक मुद्दत के बाद वही यमनी शख़्स जिसे हाशमी नौकर ने पैग़ाम पहुँचान की वसिय्यत की थी, मौसमे हज्ज में आया और आवाज़ दी ऐ कुरैश के लोगों! लोगों ने बता दिया कि यहाँ हैं कुरैश! उसने आवाज़ दी, ऐ बनी हाशिम! लोगों ने बताया कि बनी हाशिम ये हैं। उसने पूछा अबू तालिब कहाँ हैं? लोगों ने बता दिया तो उसने कहा कि फ़लाँ शख़्स ने मुझे एक पैग़ाम पहुँचाने के लिये कहा था कि फ़लाँ शख़्स ने उसे एक रस्सी की वजह से क़त्ल कर दिया है। अब जनाब अबू तालिब उस साहब के यहाँ आए और कहा कि इन तीन चीज़ों में से कोई चीज़ पसन्द कर लो अगर तुम चाहो तो सौ ऊँट दियत में दे दो क्योंकि तुमने हमारे क़बीले के आदमी को क़त्ल किया है और अगर चाहो तो तुम्हारी क़ौम के पचास आदमी इसकी क़सम खा लें कि तुमने उसे क़त्ल नहीं किया। अगर तुम उस पर तैयार नहीं तो हम तुम्हें उसके बदले में क़त्ल कर देंगे। वो शख़्स अपनी क़ौम के पास आया तो वो उसके लिये तैयार हो गये कि हम क़सम खा लेंगे। फिर बनू हाशिम की एक औरत अबू तालिब के पास आई जो उसी क़बीले के एक शख़्स से ब्याही हुई थी और अपने उस शाहर से उसके बच्चा भी था। उसने कहा ऐ अबू तालिब! आप मेहरबानी करें और मेरे इस लड़के को उन पचास आदमियों में मुआफ़ कर दें और जहाँ क़समें ली जाती हैं (या'नी रुक्न और मक़ामे इब्राहीम के दरम्यान) उससे वहाँ क़सम न लें। हज़रत अबू तालिब ने उसे मुआफ़ कर दिया। उसके बाद उनमे का एक और शख़्स आया और कहा ऐ अबू तालिब! आपने सौ ऊँटों की जगह पचास आदमियों से क़सम तलब की है, इस तरह हर

فَإِذَا أَجَابُوكَ فَنَادِ يَا آلَ بَنِي هَاشِمٍ، فَإِنْ أَجَابُوكَ فَاسْأَلْ عَنْ أَبِي طَالِبٍ فَأَخْبِرْهُ أَنَّ فُلاَنًا قَتَلَنِي فِي عِقَالٍ. وَمَاتَ الْمُسْتَأْجَرُ. فَلَمَّا قَدِمَ الَّذِي اسْتَأْجَرَهُ أَتَاهُ أَبُو طَالِبٍ فَقَالَ: مَا فَعَلَ صَاحِبُنَا؟ قَالَ مَرِضَ فَأَحْسَنْتُ الْقِيَامَ عَلَيْهِ، فَوَلِيتُ دَفْنَهُ. قَالَ: قَدْ كَانَ أَهْلَ ذَاكَ مِنْكَ. فَمَكَثَ حِينًا ثُمَّ إِنَّ الرَّجُلَ الَّذِي أَوْصَى إِلَيْهِ أَنْ يُبْلِغَ عَنْهُ وَافَى الْمَوْسِمَ فَقَالَ: يَا آلَ قُرَيْشٍ، قَالُوا: هَذِهِ قُرَيْشٌ. قَالَ: يَا آلَ بَنِي هَاشِمٍ، قَالُوا: هَذِهِ بَنُو هَاشِمٍ. قَالَ: أَيْنَ أَبُو طَالِبٍ؟ قَالُوا هَذَا أَبُو طَالِبٍ. قَالَ: أَمَرَنِي فُلاَنٌ أَنْ أُبْلِغَكَ رِسَالَةً أَنَّ فُلاَنًا قَتَلَهُ فِي عِقَالٍ. فَأَتَاهُ أَبُو طَالِبٍ فَقَالَ لَهُ : اخْتَرْ مِنَّا إِحْدَى ثَلاَثٍ : إِنْ شِئْتَ أَنْ تُؤَدِّيَ مِائَةً مِنَ الإِبِلِ فَإِنَّكَ قَتَلْتَ صَاحِبَنَا، وَإِنْ شِئْتَ حَلَفَ خَمْسُونَ مِنْ قَوْمِكَ إِنَّكَ لَمْ تَقْتُلْهُ، فَإِنْ أَبَيْتَ قَتَلْنَاكَ بِهِ. فَأَتَى قَوْمَهُ فَقَالُوا نَحْلِفُ. فَأَتَتْهُ امْرَأَةٌ مِنْ بَنِي هَاشِمٍ كَانَتْ تَحْتَ رَجُلٍ مِنْهُمْ قَدْ وَلَدَتْ لَهُ فَقَالَتْ: يَا أَبَا طَالِبٍ أُحِبُّ أَنْ تُجِيزَ ابْنِي هَذَا بِرَجُلٍ مِنَ الْخَمْسِينَ وَلاَ تُصْبِرْ يَمِينَهُ حَيْثُ تُصْبَرُ الأَيْمَانُ، فَفَعَلَ. فَأَتَاهُ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَالَ: يَا أَبَا طَالِبٍ أَرَدْتَ خَمْسِينَ رَجُلاً أَنْ

शख़्स पर दो ऊँट पड़ते हैं। ये ऊँट मेरी तरफ़ से आप कुबूल कर लें और मुझे उस मुक़ाम पर क़सम के लिये मजबूर न करें जहाँ क़सम ली जाती है। हज़रत अबू तालिब ने उसे भी मंज़ूर कर लिया। उसके बाद बक़िया अड़तालीस जो आदमी आए और उन्होंने क़सम खा ली, इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अभी इस वाक़िये को पूरा साल भी नहीं गुज़रा था कि उन अड़तालीस आदमियों में से एक भी ऐसा नहीं रहा जो आँख हिलाता।

يَحْلِفُوا مَكَانَ مِائَةٍ مِنَ الإِبِلِ، يُصِيبُ كُلَّ رَجُلٍ بَعِيرَانِ، هَذَانِ بَعِيرَانِ فَاقْبَلْهُمَا عَنِّي وَلاَ تَصْبِرْ يَمِينِي حَيْثُ تُصْبَرُ الأَيْمَانُ، فَقَبِلَهُمَا. وَجَاءَ ثَمَانِيَةٌ وَأَرْبَعُونَ فَحَلَفُوا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَوَ الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا حَالَ الْحَوْلُ وَمِنَ الثَّمَانِيَةِ وَأَرْبَعِينَ عَيْنٌ تَطْرِفُ)).

तश्रीह : या'नी कोई ज़िन्दा न रहा, सब मर गये। झूठी क़सम खाने की ये सज़ा उनको मिली और वो भी का'बा के पास मआ़ज़अल्लाह। वो दूसरी रिवायत में है कि उन सबकी ज़मीन जायदाद हज़रत तय्यब को मिली जिसकी माँ के कहने से अबू तालिब ने उसको क़सम मुआफ़ कर दी थी, गो इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) उस वक़्त पैदा भी नहीं हुए थे मगर उन्होंने ये वाक़िया मोतबर लोगों से सुना जब ही उस पर क़सम खाई। फ़ाकही ने इब्ने अबी नुजैह के तरीक़ से निकाला कुछ लोगों ने ख़ान-ए-का'बा के पास एक क़सामत में झूठी क़समें खाईं। फिर एक पहाड़ के तले जाकर ठहरे एक पत्थर उन पर गिरा जिससे दबकर सब मर गये। झूठी क़समें खाना फिर कुछ लोगों का उन क़समों के लिये कुर्आन पाक और मस्जिदों को इस्ते'माल करना बेहद ख़तरनाक है। कितने लोग आज भी ऐसे देखे गये कि उन्होंने ये हरकत की और नतीजे में वो तबाह व बर्बाद हो गये। लिहाज़ा किसी भी मुसलमान को ऐसी झूठी क़सम खाने से क़त्अन परहेज़ करना लाज़िम है।

3846. मुझसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम से, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बुआ़ष की लड़ाई अल्लाह तआ़ला ने (मस्लिहत की वजह से) रसूलुल्लाह (ﷺ) से पहले बर्पा करा दी थी, आँहज़रत (ﷺ) जब मदीना तशरीफ़ लाए तो यहाँ अंसार की जमाअ़त में फूट पड़ी हुई थी। उनके सरदार मारे जा चुके थे या ज़ख़्मी हो चुके थे, अल्लाह तआ़ला ने उस लड़ाई को इसलिये पहले बरपा किया था कि अंसार इस्लाम में दाख़िल हो जाएँ। (राजेअ़ : 3777)

٣٨٤٦- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((كَانَ يَوْمُ بُعَاثٍ يَوْمًا قَدَّمَهُ اللهُ لِرَسُولِهِ ﷺ، فَقَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَقَدِ افْتَرَقَ مَلَأُهُمْ، وَقُتِلَتْ سَرَوَاتُهُمْ وَجُرِّحُوا، قَدَّمَهُ اللهُ لِرَسُولِهِ ﷺ فِي دُخُولِهِمْ فِي الإِسْلاَمِ)).

[راجع:٣٧٧٧]

3847. और अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उन्हें अ़म्र ने ख़बर दी, उन्हें बुकैर बिन अश्बह ने और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) के मौला कुरैब ने उनसे बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बताया सफ़ा और मरवा के दरम्यान नाले के अंदर ज़ोर से दौड़ना सुन्नत नहीं यहाँ जाहिलियत के दौर में लोग

٣٨٤٧- وَقَالَ ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنَا عَمْرٌو عَنْ بُكَيْرِ بْنِ الأَشَجِّ أَنَّ كُرَيْبًا مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ حَدَّثَهُ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ: ((لَيْسَ السَّعْيُ بِبَطْنِ الْوَادِي بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ

سُنَّةٌ، إِنَّمَا كَانَ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ يَسْعَوْنَهَا وَيَقُولُونَ : لاَ نُجِيزُ الْبَطْحَاءَ إِلاَّ شَدًّا)).

तेज़ी के साथ दौड़ा करते थे और कहते थे कि हम तो इस पथरीली जगह से दौड़ ही कर पार होंगे।

तश्रीह : बुआ़ष़ बा के पेश के साथ मदीना के क़रीब एक जगह का नाम है जहाँ रसूले करीम (ﷺ) की हिजरते मदीना से पाँच साल पहले औस और ख़ज़रज क़बीलों में सख़्त लड़ाई हुई थी जिसमें उनके बहुत से नामी गिरामी लोग मारे गये **क़ालल्क़स्तलानी फइन कुल्त अस्सअयु रुक्नुम्मिन अर्कानिल्हज्जि व हुव तरीक़तु रसूलिल्लाहि (ﷺ) व सुन्नतुहू फकैफ़ क़ाल लैस बिसुन्नतिन कुल्तु अल्मुरादु मिनस्सअयि हाहुना मअ़नाहू अल्लगवी** यहाँ सई-ए-लुग़वी (कोशिश के रूप में) मुराद है, सई-ए-मस्नूना (हज्ज की एक सुन्नत) मुराद नहीं है।

٣٨٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ أَخْبَرَنَا مُطَرِّفٌ سَمِعْتُ أَبَا السَّفَرِ يَقُولُ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ، اسْمَعُوا مِنِّي مَا أَقُولُ لَكُمْ، وَأَسْمِعُونِي مَا تَقُولُونَ، وَلاَ تَذْهَبُوا فَتَقُولُوا : قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: مَنْ طَافَ بِالْبَيْتِ فَلْيَطُفْ مِنْ وَرَاءِ الْحِجْرِ. وَلاَ تَقُولُوا الْحَطِيمِ، فَإِنَّ الرَّجُلَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ كَانَ يَحْلِفُ فَيُلْقِي سَوْطَهُ أَوْ نَعْلَهُ أَوْ قَوْسَهُ)).

3848. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जअ़फ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुतर्रिफ़ ने ख़बर दी, कहा मैंने अबुस्सफ़र से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा ऐ लोगों! मेरी बातें सुनो कि मैं तुमसे बयान करता हूँ और (जो कुछ तुमने समझा है) वो मुझे सुनाओ। ऐसा न हो कि तुम लोग यहाँ से उठकर (बग़ैर समझे) चले जाओ और फिर कहने लगो कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने यूँ कहा और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने यूँ कहा। जो शख़्स भी बैतुल्लाह का तवाफ़ करे तो वो ह़तीम के पीछे से तवाफ़ करे और हिज्र को ह़तीम न कहा करो ये जाहिलियत का नाम है उस वक़्त लोगों में जब कोई किसी बात की क़सम खाता तो अपना कोड़ा, जूता या कमान वहाँ फेंक देता।

इसलिये इसको ह़तीम कहते या'नी खा जाने वाला हज़म कर जाने वाला क्योंकि वो उनकी चीज़ों को हज़म कर जाता, वहाँ पड़े पड़े वो चीज़ें गल–सड़ जातीं या कोई उनको उठा ले जाता। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ह़तीम की उसी मुनासबत के पेशेनज़र उसे ह़तीम कहने से मना किया था लेकिन आम अहले इस्लाम बग़ैर किसी नकीर के इसे अब भी ह़तीम ही कहते चले आ रहे हैं और ये का'बा ही की ज़मीन है जिसे क़ुरैश ने सरमाया (माल) की कमी की वजह से छोड़ दिया था।

٣٨٤٩- حَدَّثَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ قَالَ: ((رَأَيْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ قِرْدَةً اجْتَمَعَ عَلَيْهَا قِرَدَةٌ قَدْ زَنَتْ فَرَجَمُوهَا، فَرَجَمْتُهَا مَعَهُمْ)).

3849. हमसे नईम बिन ह़म्माद ने बयान किया, कहा हमसे हुशीम ने बयान किया, उनसे ह़ुसैन ने, उनसे अ़म्र बिन मैमून ने बयान किया कि मैंने ज़मान-ए-जाहिलियत में एक बन्दरिया देखी उसके चारों तरफ़ बहुत से बन्दर जमा हो गये थे, उस बन्दरिया ने ज़िना कराया था इसलिये सभों ने मिलकर उसे रजम किया और उनके साथ मैं भी पत्थर मारने में शरीक हुआ।

तश्रीह : पूरी रिवायत इस्माईल ने यूँ निकाली अ़म्र बिन मैमून कहते हैं कि मैं यमन में था अपने लोगों की बकरियों में एक ऊँची जगह पर मैंने देखा एक बन्दर बन्दरिया को लेकर आया और उसका हाथ अपने सर के नीचे रखकर सो गया

इतने में एक छोटा बन्दर आया और बन्दरिया को इशारा किया उसने आहिस्ता से अपना हाथ बन्दर के सर के नीचे से खींच लिया और छोटे बन्दर के साथ चली गई उसने उससे सुहबत की मैं देख रहा था फिर बन्दरिया लौटी और आहिस्ता से फिर अपना हाथ पहले बन्दर के सर के नीचे डालने लगी लेकिन वो जाग गया और एक चीख़ मारी तो सब बन्दर जमा हो गये। ये उस बन्दरिया की तरफ़ इशारा करता और चीख़ता जाता था। आख़िर दूसरे बन्दर इधर उधर गये और उसे छोटे बन्दर को पकड़ लाए। मैं उसे पहचानता था फिर उन्होंने उनके लिये गड्ढा खोदा और दोनों को संगसार कर डाला तो मैंने ये रजम का अमल जानवरों में भी देखा।

३८५٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((خِلاَلٌ مِنْ خِلاَلِ الْجَاهِلِيَّةِ: الطَّعْنُ فِي الأَنْسَابِ، وَالنِّيَاحَةُ - وَنَسِيَ الثَّالِثَةَ - قَالَ سُفْيَانُ: وَيَقُولُونَ إِنَّهَا الإِسْتِسْقَاءُ بِالأَنْوَاءِ)).

3850. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने और उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जाहिलियत की आदतों में से ये आदतें हैं नसब के मामले में तअ़ना मारना और मय्यत पर नौह़ा करना, तीसरी आदत के बारे में (उ़बैदुल्लाह रावी) भूल गये थे और सुफ़यान ने बयान किया कि लोग कहते हैं कि वो तीसरी बात सितारों को बारिश की इल्लत समझना है।

२٨- بَابُ مَبْعَثِ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 28 : नबी करीम (ﷺ) की बेअ़ष़त का बयान

مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ هَاشِمِ بْنِ عَبْدِ مَنَافِ بْنِ قُصَيِّ بْنِ كِلاَبِ بْنِ مُرَّةَ بْنَ كَعْبِ بْنِ لُؤَيِّ بْنِ غَالِبِ بْنِ فِهْرِ بْنَ مَالِكِ بْنِ النَّضْرِ بْنِ كِنَانَةَ بْنِ خُزَيْمَةَ بْنِ مُدْرِكَةَ بْنِ إِلْيَاسَ بْنِ مُضَرَ بْنِ نِزَارِ بْنِ مَعَدِّ بْنِ عَدْنَانَ.

आपका नाम मुबारक है मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मुनाफ़ बिन क़ुसई बिन किलाब बिन मुर्रह बिन कअ़ब बिन लुवी बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़र बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मदरका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन मअ़द बिन अ़दनान।

यहीं तक आप (ﷺ) ने अपना नसब बयान फ़र्माया है, अ़दनान के बाद रिवायतों में इख़्तिलाफ़ है ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने तारीख़ में आप (ﷺ) का नसब ह़ज़रत इब्राहीम तक बयान फ़र्माया है।

३८٥١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ حَدَّثَنَا النَّضْرُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أُنْزِلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِينَ، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ سَنَةً، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ، فَهَاجَرَ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَمَكَثَ بِهَا عَشْرَ سِنِينَ، ثُمَّ تُوُفِّيَ ﷺ)).

3851. हमसे अह़मद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़र ने बयान किया, कहा उनसे हिशाम ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की चालीस साल की उ़म्र हुई तो आप (ﷺ) पर वह्य नाज़िल हुई, उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) तेरह साल मक्का मुकर्रमा में रहे फिर आप (ﷺ) को हिजरत का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) मदीना मुनव्वरा हिजरत करके चले गये, वहाँ दस साल रहे फिर आपने वफ़ात फ़र्माई (ﷺ) इस हिसाब से कुल उ़म्र शरीफ़ आपकी 63 साल होती है और ये सहीह है।

(दीगर मक़ाम : 3901, 3903, 4465, 4975)

[أطرافه في: ٣٩٠١، ٣٩٠٣، ٤٤٦٥، ٤٩٧٥].

बाब 29 : नबी करीम (ﷺ) और सहाबा किराम (रज़ि.) ने मक्का में मुश्रिकीन के हाथों जिन मुश्किलात का सामना किया उनका बयान

٢٩- بَابُ مَا لَقِيَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ بِمَكَّةَ

3852. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयय‌ना ने बयान किया, कहा हमसे बयान बिन बिश्र और इस्माईल बिन अबू ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि हमने क़ैस बिन अबी हाज़िम से सुना वो बयान करते थे कि मैंने ख़ब्बाब बिन अरत से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) का'बा के साये तले तकलीफ़ें उठा रहे थे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआ़ला से आप (ﷺ) दुआ क्यों नहीं करते? इस पर आप (ﷺ) सीधे बैठ गये। चेहर-ए-मुबारक ग़ुस्से से लाल हो गया और फ़र्माया तुमसे पहले ऐसे लोग गुज़र चुके हैं कि लोहे के कँघों को उनके गोश्त और पट्ठों से गुज़ारकर उनकी हड्डियों तक पहुँचा दिया गया और ये मामला भी उन्हें उनके दीन से न फेर सका, किसी के सर पर आरा रखकर उसके दो टुकड़े कर दिये गये और ये भी उन्हें उनके दीन से न फेर सका। इस दीन इस्लाम को तो अल्लाह तआ़ला ख़ुद ही एक दिन तमाम व कमाल तक पहुँचाएगा कि एक सवार सन्आ से हज़रे मौत तक (तंहा) जाएगा और (रास्ते में) उसे अल्लाह के सिवा और किसी का डर न होगा। बयान ने अपनी रिवायत में ये ज़्यादा किया कि, सिवाय भेड़िये के कि उससे अपनी बकरियों के मामले में उसे डर होगा। (राजेअ : 3612)

٣٨٥٢- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا بَيَانٌ وَإِسْمَاعِيْلُ قَالاَ: سَمِعْنَا قَيْسًا يَقُوْلُ: سَمِعْتُ خَبَّابًا يَقُوْلُ: ((أَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ مُتَوَسِّدٌ بُرْدَةً وَهُوَ فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ - وَقَدْ لَقِيْنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ شِدَّةً - فَقُلْتُ: أَلاَ تَدْعُو اللهَ. فَقَعَدَ وَهُوَ مُحْمَرٌّ وَجْهُهُ فَقَالَ: ((لَقَدْ كَانَ مَنْ قَبْلَكُمْ لَيُمْشَطُ بِمِشَاطِ الْحَدِيْدِ، مَا دُوْنَ عِظَامِهِ مِنْ لَحْمٍ أَوْ عَصَبٍ، مَا يَصْرِفُهُ ذَلِكَ عَنْ دِيْنِهِ، وَيُوضَعُ الْمِنْشَارُ عَلَى مَفْرِقِ رَأْسِهِ فَيُشَقُّ بِاثْنَيْنِ، مَا يَصْرِفُهُ ذَلِكَ عَنْ دِيْنِهِ. وَلَيُتِمَّنَّ اللهُ هَذَا الأَمْرَ حَتَّى يَسِيْرَ الرَّاكِبُ مِنْ صَنْعَاءَ إِلَى حَضْرَمَوْتَ مَا يَخَافُ إِلاَّ اللهَ)). زَادَ بَيَانٌ ((وَالذِّئْبَ عَلَى غَنَمِهِ)).

[راجع: ٣٦١٢]

हज़रे मौत शिमाली (उत्तर) में एक मुल्क है उसमें और सन्आ (यमन) में पन्द्रह दिन पैदल चलने वालों का रास्ता है। इससे आम अमन-चैन मुराद है जो बाद में सारे मुल्के अरब में इस्लाम के ग़लबे के बाद हुआ और आज सऊदी अरब के दौर में ये अमन सारे मुल्क में हासिल है अल्लाह पाक इस हुकूमत को क़ायम दायम रखे। आमीन।

3853. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अस्वद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने सूरह नज्म पढ़ी और सज्दा किया उस वक़्त आप (ﷺ) के साथ तमाम

٣٨٥٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَرَأَ النَّبِيُّ

लोगों ने सज्दा किया सिर्फ़ एक शख़्स को मैंने देखा कि अपने हाथ में उसने कंकरियाँ उठाकर उस पर अपना सर रख दिया और कहने लगा कि मेरे लिये बस इतना ही काफ़ी है। मैंने फिर उसे देखा कि कुफ़्र की हालत में वो क़त्ल किया गया। (राजेअ : 1067)

ﷺ النَّجْمَ فَسَجَدَ، فَمَا بَقِيَ أَحَدٌ إِلاَّ سَجَدَ، إِلاَّ رَجُلٌ رَأَيْتُهُ أَخَذَ كَفًّا مِنْ حَصًا فَرَفَعَهُ، فَسَجَدَ عَلَيْهِ وَقَالَ : هَذَا يَكْفِيْنِي. فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ بَعْدُ قُتِلَ كَافِرًا.[راجع:١٠٦٧]

तश्रीह : ये शख़्स उमय्या बिन ख़लफ़ था। इस ह़दीष़ की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से मुश्किल है, कुछ ने कहा जब उमय्या बिन ख़लफ़ ने सज्दा तक न किया तो मुसलमानों को रंज गुज़रा गोया उनको तकलीफ़ दी यही बाब का तर्जुमा है कुछ ने कहा मुसलमानों को तकलीफ़ यूँ हुई कि मुश्रिकीन के भी सज्दे में शरीक होने से वो ये समझे कि ये मुश्रिक मुसलमान हो गये हैं और जो मुसलमान उनकी तकलीफ़ देने से ह़ब्श की निय्यत से निकल चुके थे वो आपस लौट आए। बाद में मा'लूम हुआ कि वो मुसलमान नहीं हुए हैं तो दोबारा वो मुसलमान ह़ब्श की हिजरत के लिये निकल गये।

3854. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अ़म्र बिन मैमून ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (नमाज़ पढ़ते हुए) सज्दे की ह़ालत में थे, क़ुरैश के कुछ लोग वहीं इर्द गिर्द मौजूद थे इतने में उ़क़्बा बिन अबी मुईत ऊँट की ओझड़ी बच्चादानी लाया और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की पीठ मुबारक पर उसे डाल दिया। उसकी वजह से आप (ﷺ) ने अपना सर नहीं उठाया फिर फ़ातिमा (रज़ि.) आईं और गंदगी को पीठ मुबारक से हटाया और जिसने ऐसा किया था उसे बद् दुआ़ दी। हुज़ूर (ﷺ) ने भी उनके ह़क़ में बद् दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! क़ुरैश की उस जमाअ़त को पकड़ ले। अबू जहल बिन हिशाम, उ़त्बा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़ और उमय्या बिन ख़लफ़ या (उमय्या के बजाय आपने बद् दुआ़) उबय बिन ख़लफ़ (के ह़क़ में फ़र्माई) शुब्हा ह़दीष़ के रावी शुअ़बा को था। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि फिर मैंने देखा कि बद्र की लड़ाई में ये सब लोग क़त्ल कर दिये गये और एक कुँए में उन्हें डाल दिया गया था सिवा उमय्या या उबय के कि उसका हर एक जोड़ अलग हो गया था इसलिये कुँए में नहीं डाला जा सका। (राजेअ : 240)

٣٨٥٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ سَاجِدٌ وَحَوْلَهُ نَاسٌ مِنْ قُرَيْشٍ جَاءَ عُقْبَةُ بْنُ أَبِي مُعَيْطٍ بِسَلَى جَزُورٍ فَقَذَفَهُ عَلَى ظَهْرِ النَّبِيِّ ﷺ، فَلَمْ يَرْفَعْ رَأْسَهُ، فَجَاءَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ فَأَخَذَتْهُ مِنْ ظَهْرِهِ وَدَعَتْ عَلَى مَنْ صَنَعَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ عَلَيْكَ الْمَلأَ مِنْ قُرَيْشٍ: أَبَا جَهْلِ بْنَ هِشَامٍ وَعُتْبَةَ بْنَ رَبِيْعَةَ وَشَيْبَةَ بْنَ رَبِيْعَةَ وَأُمَيَّةَ بْنَ خَلَفٍ - أَوْ أُبَيَّ بْنَ خَلَفٍ))، شُعْبَةُ الشَّاكُّ - فَرَأَيْتُهُمْ قُتِلُوا يَوْمَ بَدْرٍ، فَأُلْقُوا فِي بِئْرٍ، غَيْرَ أُمَيَّةَ أَوْ أُبَيٍّ تَقَطَّعَتْ أَوْصَالُهُ فَلَمْ يُلْقَ فِي الْبِئْرِ)).[راجع: ٢٤٠]

जंगे बद्र में तमाम कुफ़्फ़ार हलाक हो गये और जो कुछ उन्होंने किया उसकी सज़ा पाई।

3855. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, कहा मुझसे सईद बिन जुबैर

٣٨٥٥- حَدَّثَنِيْ عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُورٍ حَدَّثَنِي سَعِيْدُ بْنُ

جُبَيْرٍ - أَوْ قَالَ: حَدَّثَنِي الْحَكَمُ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ - قَالَ: ((أَمَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبْزَى قَالَ: سَلِ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنْ هَاتَيْنِ الآيَتَيْنِ مَا أَمْرُهُمَا؟ [الأنعام: ١٥١، الإسراء: ٣٣]: ﴿وَلاَ تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ﴾، [النساء : ٩٣]. ﴿وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا﴾ فَسَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ، فَقَالَ : لَمَّا أُنْزِلَتِ الَّتِي فِي الفرقان [٦٨] قَالَ مُشْرِكُو أَهْلِ مَكَّةَ: فَقَدْ قَتَلْنَا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ، وَدَعَوْنَا مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ، وَقَدْ أَتَيْنَا الْفَوَاحِشَ، فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿إِلاَّ مَنْ تَابَ وَآمَنَ﴾ [الفرقان: ٧٠] الآية، فَهَذِهِ لأُولَئِكَ، وَأَمَّا الَّتِي فِي النساء [٩٣] الرَّجُلُ إِذَا عَرَفَ الإِسْلاَمَ وَشَرَائِعَهُ ثُمَّ قَتَلَ فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ، فَذَكَرْتُهُ لِمُجَاهِدٍ فَقَالَ : إِلاَّ مَنْ نَدِمَ)).

[أطرافه في : ٤٥٩٠، ٤٧٦٢، ٤٧٦٣، ٤٧٦٤، ٤٧٦٥، ٤٧٦٦].

ने बयान किया या (मंसूर ने) इस त़रह़ बयान किया कि मुझसे ह़कम ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अब्ज़ा (रज़ि.) ने कहा कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से उन दोनों आयतों के बारे में पूछा कि उनमें मुत़ाबक़त किस त़रह़ पैदा की जाए। एक आयत, वला तक़्तुलुन नफ़्सल् लती ह़र्रमल्लाहु और दूसरी आयत, व मंय्यक़्तुलु मोमिना मुतअ़म्मिदन् है इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मैंने पूछा तो उन्होंने बतलाया कि जब सूरह फ़ुर्क़ान की आयत नाज़िल हुई तो मुश्रिकीने मक्का ने कहा हमने तो उन जानों का भी ख़ून किया है जिनके क़त्ल को अल्लाह तआ़ला ने ह़राम क़रार दिया था हम अल्लाह के सिवा दूसरे मा'बूदों की इबादत भी करते रहे हैं और बदकारियों का भी हमने इर्तिकाब किया है। इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयत नाज़िल फ़र्माई कि इल्ला मन ताबा व आम-न (वो लोग इस हुक्म से अलग हैं जो तौबा कर लें और ईमान लाएँ) तो ये आयत उनके ह़क़ में नहीं है लेकिन सूरह निसा की आयत उस शख़्स के बाब में है जो इस्लाम और इस्लाम की निशानियों के हुक्मों को जानकर भी किसी को क़त्ल करे तो उसकी सज़ा जहन्नम है। मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) के उस इर्शाद का ज़िक्र मुजाहिद से किया तो उन्हों ने कहा कि वो लोग इस हुक्म से अलग हैं जो तौबा कर लें।

(दीगर मक़ाम : 4590, 4762, 4763, 4764, 4765, 4766)

तश्रीह : सूरह फ़ुर्क़ान की आयत से ये निकलता है कि जो कोई ख़ून करे लेकिन फिर तौबा करे और नेक आमाल बजा लाए तो अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल करेगा और सूरह निसा की आयत में ये है कि जो कोई जान-बूझकर किसी मुसलमान को क़त्ल करे तो उसको ज़रूर सज़ा मिलेगी हमेशा दोज़ख़ में रहेगा अल्लाह का ग़ज़ब और गुस्सा उस पर नाज़िल होगा। इस सूरत में दोनों आयतों के मज़्मून में तख़ालुफ़ (टकराव) हुआ तो अ़ब्दुर्रह़मान बिन अब्ज़ा (रज़ि.) ने यही अम्र ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से मा'लूम कराया जो यहाँ मज़्कूर है, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) का मत़लब ये था कि सूरह फ़ुर्क़ान की आयत उन लोगों के बारे में है जो कुफ़्र की ह़ालत में नाह़क़ ख़ून करें फिर तौबा करें और मुसलमान हो जाएँ तो इस्लाम की वजह से कुफ़्र के नाह़क़ ख़ून का उनसे मुवाख़ज़ा न होगा और सूरह निसा की आयत उस शख़्स के ह़क़ में है जो मुसलमान होकर दूसरे मुसलमान को जान-बूझकर नाह़क़ मार डाले ऐसे शख़्स की सज़ा जहन्नम है उसकी तौबा क़ुबूल न होगी तो दोनों आयतों में कुछ तख़ालुफ़ न हुआ और ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब के तर्जुमे से यूँ है कि उससे ये निकलता है कि मुश्रिकों ने मुसलमानों को नाह़क़ मारा था, उनको सताया था।

٣٨٥٦- حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيْدُ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنِي الأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ

3856. हमसे अ़याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा मुझसे औज़ाई ने बयान

किया, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी ने बयान किया कि मुझसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) से पूछा मुझे मुश्रिकीन के सबसे सख़्त ज़ुल्म के बारे में बताओ जो मुश्रिकीन ने नबी करीम (ﷺ) के साथ किया था। उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ह़तीम में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उ़क़्बा बिन मुईत़ आया और ज़ालिम अपना कपड़ा हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की गर्दने मुबारक में फंसाकर ज़ोर से आप (ﷺ) का गला घोंटने लगा इतने में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आ गये और उन्होंने उस बदबख़्त का कँधा पकड़कर आँह़ज़रत (ﷺ) के पास से हटा दिया और कहा क्या तुम लोग एक शख़्स को सिर्फ़ इसलिये मार डालना चाहते हो कि वो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है अल आयति अ़याश बिन वलीद के साथ इस रिवायत की मुताबअ़त इब्ने इस्ह़ाक़ ने की (और बयान किया कि) मुझसे यह्या बिन उ़र्वा ने बयान किया और उनसे उ़र्वा ने कि मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) से पूछा और अ़ब्दह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने कि ह़ज़रत अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) से कहा गया और मुहम्मद बिन अ़म्र ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने, उसमें यूँ है कि मुझसे ह़ज़रत अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने बयान किया। (राजेअ़ : 3678)

أَبِي كَثِيرٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ قَالَ: سَأَلْتُ ابْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قُلْتُ: أَخْبِرْنِي بِأَشَدِّ شَيْءٍ صَنَعَهُ الْمُشْرِكُونَ بِالنَّبِيِّ ﷺ. قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي فِي حِجْرِ الْكَعْبَةِ، إِذْ أَقْبَلَ عُقْبَةُ بْنُ أَبِي مُعَيْطٍ فَوَضَعَ ثَوْبَهُ فِي عُنُقِهِ فَخَنَقَهُ خَنْقًا شَدِيدًا، فَأَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ حَتَّى أَخَذَ بِمَنْكِبِهِ وَدَفَعَهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ﴿أَتَقْتُلُونَ رَجُلاً أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللهُ﴾ الآيَةَ [غافر : ٢٨]. تَابَعَهُ ابْنُ إِسْحَاقَ. حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ عُرْوَةَ عَنْ عُرْوَةَ : قُلْتُ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، وَقَالَ عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ : قِيلَ لِعَمْرِو بْنِ الْعَاصِ. وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ : حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ الْعَاصِ)).

[راجع: ٣٦٧٨]

क़ौले मुहम्मद बिन अ़म्र को ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने **ख़ल्क़े अफ़आलुल इबाद** में वस्ल किया है। ह़ाफ़िज़ ने कहा एक रिवायत में यूँ है कि मुश्रिकीन ने आँह़ज़रत (ﷺ) को ऐसा मारा कि आप बेहोश हो गये तब ह़ज़रत अबूबक्र खड़े हुए और कहने लगे क्या तुम ऐसे शख़्स को मारे डालते हो जो कहता है कि मेरा रब सिर्फ़ अल्लाह है।

बाब 30 : ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) के इस्लाम क़ुबूल करने का बयान

٣٠- بَابُ إِسْلاَمِ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

तश्रीह : आपका नाम अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) है। उ़ष़्मान अबू क़ह़ाफ़ा के बेटे हैं। सातवीं पुश्त पर उनका नसब रसूले करीम (ﷺ) से मिल जाता है। आपको अ़तीक़ से भी मौसूम किया गया है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि ये दोज़ख़ की आग से क़त़ई त़ौर पर आज़ाद हो चुके हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ हर ग़ज़्वे में हर मौक़े पर शरीक रहे। आप (रज़ि.) आख़िर उ़म्र में मेहन्दी का ख़िज़ाब लगाया करते थे।

3857. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन ह़म्माद आमली ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन मुईन ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन मुजालिद ने बयान किया, उनसे बयान ने, उनसे

٣٨٥٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ حَمَّادٍ الآمُلِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ مُجَالِدٍ عَنْ بَيَانٍ عَنْ وَبَرَةَ

वबरह ने और उनसे हम्माम बिन हारिष़ ने बयान किया कि अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) ने कहा मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस हालत में भी देखा है जब आँहज़रत (ﷺ) के साथ पाँच ग़ुलाम, दो औरतों और अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) के सिवा और कोई (मुसलमान) नहीं था। (राजेअ : 3660)

عَنْ هَمَامِ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: قَالَ عَمَّارُ بْنُ يَاسِرٍ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَمَا مَعَهُ إِلاَّ خَمْسَةُ أَعْبُدٍ وَامْرَأَتَانِ وَأَبُوبَكْرٍ)). [راجع: ٣٦٦٠]

तश्रीह : हज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) वाक़िया अस्हाबुल फ़ील से दो साल पहले मक्का में पैदा हुए और जमादिल आख़िर 13 हिजरी में 63 साल की उम्र में इंतिक़ाल फ़र्माया। मुद्दते ख़िलाफ़त दो साल चार माह है। पाँच ग़ुलाम हज़रत बिलाल, हज़रत ज़ैद, हज़रत आमिर और अबू फ़क़ीहा और उबैद थे और दो औरतें हज़रत ख़दीजा और हज़रत उम्मे ऐमन या सुमय्या (रज़ि.)। हज़रत अबूबक्र को स़िद्दीक़ इसलिये कहा गया कि उन्होंने जाहिलियत के ज़माने में भी न कभी झूठ बोला न कभी बुतपरस्ती की। क़ाज़ी अबुल हुसैन ने अपनी सनद से रिवायत किया है कि उनके बाप अबू क़ुहाफ़ा एक रोज़ उनको बुतख़ाने (मन्दिर) में ले गये और कहने लगे कि बुत को सज्दा कर लो। वो कहकर चले गये। हज़रत अबूबक्र (रजि) फ़र्माते हैं कि मैं एक बुत के पास गया और उससे मैंने कहा कि मैं भूखा हूँ मुझको खाना दें। उसने कुछ जवाब न दिया। फिर मैंने कहा कि मैं नंगा हूँ, मुझको कपड़ा पहना दे। उस बुत ने फिर भी कुछ जवाब न दिया। आख़िर मैंने एक पत्थर उठाया और कहा कि अगर तू ख़ुदा है तो अपने आपको मेरे हाथ से बचा। ये कहकर मैंने वो पत्थर उस पर मारा और मैं वहीं सो गया। इतने में मेरे बाप आ गए और कहने लगे बेटा ये क्या करते हो? मैंने कहा जो कुछ देख रहे हो। वो मुझको मेरी वालिदा के पास लाए और उनसे सारा हाल बयान किया। उन्होंने कहा कि मेरे बेटे से कुछ मत बोल अल्लाह तआला ने उसकी वजह से मुझसे बात की जब ये पेट में था और मुझको दर्द होने लगा तो मैंने एक हातिफ़ से सुना कि ऐ अल्लाह की बन्दी ख़ुश हो जा। तुझको एक आज़ाद लड़का मिलेगा जिसका नाम आसमान में स़िद्दीक़ है वो हज़रत मुहम्मद (ﷺ) का स़ाहिब और रफ़ीक़ होगा।

बाब 31 : हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) के इस्लाम क़ुबूल करने का बयान

٣١- بَابُ إِسْلاَمِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

तश्रीह : हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) की कुन्नियत अबू इस्हाक़ है। वालिद अबू वक़्क़ास़ का नाम मालिक बिन वुहैब है, अशर-ए-मुबश्शरा में से हैं। सत्रह साल की उम्र में इस्लाम क़ुबूल किया। तमाम ग़ज़्वात में आँहज़रत (ﷺ) के साथ रहे। बड़े ही मुस्तजाबुद्दअवात थे। आँहज़रत (ﷺ) ने इस मक़्स़द के लिये उनके हक़ में ख़ास़ दुआ फ़र्माई थी। तीरंदाज़ी में बड़े ही माहिर थे। मुक़ामे अतीक़ में जो मदीना से क़रीब था अपने घर में वफ़ात पाई। जनाज़े को लोग काँधों पर रखकर मदीना तय्यिबा लाए और नमाज़े जनाज़ा मरवान बिन हकम ने पढ़ाई जो उन दिनों मदीना के हाकिम थे। बक़ीअे-ग़रक़द में दफ़न हुए, वफ़ात का साल 55 हिजरी है रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु आमीन।

3858. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम मरवज़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू उसामा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे हाशिम बिन हाशिम ने बयान किया, कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, कहा कि मैंने अबू इस्हाक़ सअद बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जिस दिन मैं इस्लाम लाया हूँ दूसरे लोग भी उसी दिन इस्लाम लाए और इस्लाम में दाख़िल होने वाले तीसरे आदमी की हैष़ियत से मुझ

٣٨٥٨- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا هَاشِمٌ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيْدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ يَقُولُ: ((مَا أَسْلَمَ أَحَدٌ إِلاَّ فِي الْيَومِ الَّذِيْ أَسْلَمْتُ فِيْهِ، وَلَقَدْ مَكَثْتُ سَبْعَةَ أَيَّامٍ وَإِنِّي لَثُلُثُ

पर सात दिन गुज़रे। (राजेअ : 3726)

الإِسْلاَمِ)). [راجع: ٣٧٢٦]

सअद ने ये अपने इल्म की रू से कहा वरना उनसे पहले ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) और ह़ज़रत ख़दीजा और अबूबक्र और ज़ैद (रज़ि.) इस्लाम ला चुके थे और शायद ये लोग सब एक ही दिन इस्लाम लाए हों ये शुरू दिन में और सअ़द आख़िर दिन में। रज़ियल्लाह अ़न्हुम अज्मईन।

बाब 32 : जिन्नों का बयान

٣٢- بَابُ ذِكْرِ الْجِنِّ

और अल्लाह ने सूरह जिन्न में फ़र्माया, ऐ नबी! आप कह दीजिए मेरी तरफ़ वह्य की गई है कि जिन्नों की एक जमाअ़त ने क़ुर्आन को कान लगाकर सुना।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِنَ الْجِنِّ﴾

लफ़्ज़े जिन्न **फ़लम्मा जन्ना अ़लैहिल लैलि** से मुश्तक़ है या'नी रात ने जब उन पर अंधेरी फैलाई। जिन्न एक आग से बनी मख़्लूक़ है जो भौतिक आँखों से छुपी हुई है। उसमें नेक और बद हर क़िस्म के होते हैं। इन्सानों को ये नज़र नहीं आते। इसीलिये लफ़्ज़े जिन्न से मौसूम हुए। क़ुर्आन मजीद में सूरह जिन्न उसी क़ौम के नेक जिन्नों से मुता'ल्लिक़ है जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक से क़ुर्आन शरीफ़ सुना और इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। जिन्नात इंसानी शक्ल में भी ज़ाहिर हो सकते हैं।

3859. मुझसे उ़बैदुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अ़र ने बयान किया, उनसे मअ़न बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने मसरूक़ से पूछा कि जिस रात में जिन्नों ने क़ुर्आन मजीद सुना था उसकी ख़बर नबी करीम (ﷺ) को किसने दी थी? मसरूक़ ने कहा कि मुझसे तुम्हारे वालिद ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) को जिन्नों की ख़बर एक बबूल के पेड़ ने दी थी।

٣٨٥٩- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ عَنْ مَعْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: ((سَأَلْتُ مَسْرُوقًا: مَنْ آذَنَ النَّبِيَّ ﷺ بِالْجِنِّ لَيْلَةَ اسْتَمَعُوا الْقُرْآنَ؟ فَقَالَ: حَدَّثَنِي أَبُوكَ - يَعْنِي عَبْدَ اللهِ - أَنَّهُ آذَنَتْ بِهِمْ شَجَرَةٌ)).

3860. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़म्र बिन यह्या बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे मेरे दादा ने ख़बर दी और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के वज़ू और क़ज़ाए ह़ाजत के लिये (पानी का) एक बर्तन लिये हुए आप (ﷺ) के पीछे पीछे चल रहे थे कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया ये कौन साहब हैं ? बताया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) है आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस्तिंजे के लिये चन्द पत्थर तलाश कर ला और हाँ हड्डी और लीद न लाना। फिर मैं पत्थर लेकर ह़ाज़िर हुआ। मैं उन्हें अपने कपड़े में रखे हुए था और लाकर आप (ﷺ) के क़रीब उसे रख दिया और वहाँ से वापस चला आया। आप (ﷺ) जब क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ हो गये तो मैं फिर आप (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि हड्डी और

٣٨٦٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَدِّي عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أَنَّهُ كَانَ يَحْمِلُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِدَاوَةً بِوَضُوئِهِ وَحَاجَتِهِ. فَبَيْنَمَا هُوَ يَتْبَعُهُ بِهَا فَقَالَ: ((مَنْ هَذَا؟)) فَقَالَ: أَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ. قَالَ: ((ابْغِنِي أَحْجَارًا أَسْتَنْفِضْ بِهَا، وَلاَ تَأْتِنِي بِعَظْمٍ وَلاَ بِرَوْثَةٍ)). فَأَتَيْتُهُ بِأَحْجَارٍ أَحْمِلُهَا فِي طَرَفِ ثَوْبِي حَتَّى وَضَعْتُهَا إِلَى جَنْبِهِ، ثُمَّ انْصَرَفْتُ، حَتَّى إِذَا فَرَغَ

مَشَيْتُ مَعَهُ فَقُلْتُ: مَا بَالُ الْعَظْمِ وَالرَّوْثَةِ؟ قَالَ: ((هُمَا مِنْ طَعَامِ الْجِنِّ، وَإِنَّهُ أَتَانِي وَفْدُ جِنِّ نَصِيبِيْنَ - وَنِعْمَ الْجِنُّ - فَسَأَلُونِي الزَّادَ، فَدَعَوْتُ اللهَ لَهُمْ أَنْ لاَ يَمُرُّوا بِعَظْمٍ وَلاَ بِرَوْثَةٍ إِلاَّ وَجَدُوا عَلَيْهَا طُعْمًا)). [راجع: ١٥٥]

गोबर में क्या बात है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसलिये कि वो जिन्नों की ख़ूराक हैं। मेरे पास नसीबीन के जिन्नों का एक वफ़्द आया था और क्या ही अच्छे वो जिन्न थे। तो उन्होंने मुझसे तौशा (खाना) मांगा मैंने उनके लिये अल्लाह से ये दुआ की कि जब भी हड्डी या गोबर पर उनकी नज़र पड़े तो उनके लिये उस चीज़ से खाना मिले।

(राजेअ : 155)

तश्रीह : या'नी बकुदरते इलाही हड्डी और गोबर पर उनकी और उनके जानवरों की ख़ूराक पैदा हो जाए। कहते हैं आँहज़रत (ﷺ) के पास जिन्नात कई बार हाज़िर हुए। एक बार बतने नख़्ला में जहाँ आप क़ुर्आन पढ़ रहे थे। ये सात जिन्न थे, दूसरी बार हिजून में, तीसरी बार बक़ीअ़ में। उन रातों में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) आपके साथ थे। आपने ज़मीन पर उनके बैठने के लिये लकीर खींच दी थी। चौथी बार मदीना के बाहर उसमें ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ि.) मौजूद थे। पाँचवीं बार एक सफ़र में जिसमें बिलाल बिन हारिष़ आप (ﷺ) के साथ थे। जिन्नों का वजूद क़ुर्आन व हदीष़ से षाबित है जो लोग जिन्नात का इंकार करते हैं वो मुसलमान कहलाने के बावजूद क़ुर्आन व हदीष़ का इंकार करते हैं। ऐसे लोगों को अपने ईमान की ख़ैर मनानी चाहिये।

٣٣- بَابُ إِسْلاَمِ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

बाब 33 : हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) के इस्लाम क़ुबूल करने का वाक़िया

٣٨٦١- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ مَهْدِيٍّ حَدَّثَنَا الْمُثَنَّى عَنْ أَبِي جَمْرَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا بَلَغَ أَبَا ذَرٍّ مَبْعَثُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لأَخِيْهِ : ارْكَبْ إِلَى هَذَا الْوَادِي فَاعْلَمْ لِي عِلْمَ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ يَأْتِيْهِ الْخَبَرُ مِنَ السَّمَاءِ، وَاسْمَعْ مِنْ قَوْلِهِ ثُمَّ ائْتِنِي. فَانْطَلَقَ الأَخُ حَتَّى قَدِمَهُ وَسَمِعَ مِنْ قَوْلِهِ، ثُمَّ رَجَعَ إِلَى أَبِي ذَرٍّ فَقَالَ لَهُ: رَأَيْتُهُ يَأْمُرُ بِمَكَارِمِ الأَخْلاَقِ، وَكَلاَمًا مَا هُوَ بِالشِّعْرِ. فَقَالَ: مَا شَفَيْتَنِي مِمَّا أَرَدْتُ. فَتَزَوَّدَ وَحَمَلَ شَنَّةً لَهُ فِيْهَا مَاءٌ حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ،

3861. मुझसे अ़म्र बिन अ़ास ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने, कहा हमसे मुष़न्ना ने, उनसे अबू जम्रह ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब अबू ज़र (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) की नुबुव्वत के बारे में मा'लूम हुआ तो उन्होने अपने भाई अनीस से कहा कि मक्का जाने के लिये सवारी तैयार कर और उस शख़्स के बारे में जो नबी होने का मुद्दई है और कहता है कि उसके पास आसमान से ख़बर आती है, मेरे लिये ख़बरें हासिल करके ला। उसकी बातों को ख़ुद ग़ौर से सुनना और फिर मेरे पास आना। उनके भाई वहाँ से चले और मक्का हाज़िर होकर आँहज़रत (ﷺ) की बातें ख़ुद सुनीं फिर वापस होकर उन्होंने अबू ज़र (रज़ि.) को बताया कि मैंने उन्हें ख़ुद देखा है, वो अच्छे अख़्लाक़ का लोगों को हुक्म देते हैं और मैंने उनसे जो कलाम सुना वो शे'र नहीं है। इस पर अबू ज़र (रज़ि.) ने कहा जिस मक़्सद के लिये मैंने तुम्हें भेजा था मुझे उस पर पूरी तरह तशफ़्फ़ी नहीं हुई, आख़िर उन्होंने ख़ुद तौशा बाँधा, पानी से भरा हुआ एक पुराना मशकीज़ा साथ लिया और मक्का आए, मस्जिदे हराम में हाज़िरी

فَأَتَى الْمَسْجِدَ. فَالْتَمَسَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلاَ يَعْرِفُهُ، وَكَرِهَ أَنْ يَسْأَلَ عَنْهُ، حَتَّى أَدْرَكَهُ بَعْضُ اللَّيْلِ اضْطَجَعَ فَرَآهُ عَلِيٌّ، فَعَرَفَ أَنَّهُ غَرِيبٌ، فَلَمَّا رَآهُ تَبِعَهُ، فَلَمْ يَسْأَلْ وَاحِدٌ مِنْهُمَا صَاحِبَهُ عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أَصْبَحَ، ثُمَّ احْتَمَلَ قُرْبَتَهُ وَزَادَهُ إِلَى الْمَسْجِدِ، وَظَلَّ ذَلِكَ الْيَوْمَ، وَلاَ يَرَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَمْسَى فَعَادَ إِلَى مَضْجَعِهِ، فَمَرَّ بِهِ عَلِيٌّ فَقَالَ: أَمَا نَالَ لِلرَّجُلِ أَنْ يَعْلَمَ مَنْزِلَهُ؟ فَأَقَامَهُ، فَذَهَبَ بِهِ مَعَهُ، لاَ يَسْأَلُ وَاحِدٌ مِنْهُمَا صَاحِبَهُ عَنْ شَيْءٍ، حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمُ الثَّالِثِ فَعَادَ عَلِيٌّ مِثْلِ ذَلِكَ، فَأَقَامَ مَعَهُ ثُمَّ قَالَ : أَلاَ تُحَدِّثُنِي مَا الَّذِي أَقْدَمَكَ؟ قَالَ : إِنْ أَعْطَيْتَنِي عَهْدًا وَمِيثَاقًا لَتُرْشِدَنِّي فَعَلْتُ. فَفَعَلَ، فَأَخْبَرَهُ، قَالَ: فَإِنَّهُ حَقٌّ، وَهُوَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَإِذَا أَصْبَحْتَ فَاتَّبِعْنِي، فَإِنِّي إِنْ رَأَيْتُ شَيْئًا أَخَافُ عَلَيْكَ قُمْتُ كَأَنِّي أُرِيقُ الْمَاءَ، فَإِنْ مَضَيْتُ فَاتَّبِعْنِي حَتَّى تَدْخُلَ مَدْخَلِي، فَفَعَلَ، فَانْطَلَقَ يَقْفُوهُ، حَتَّى دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَدَخَلَ مَعَهُ فَسَمِعَ مِنْ قَوْلِهِ وَأَسْلَمَ مَكَانَهُ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ارْجِعْ إِلَى قَوْمِكَ فَأَخْبِرْهُمْ حَتَّى يَأْتِيَكَ أَمْرِي)). قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لأَصْرُخَنَّ بِهَا بَيْنَ ظَهْرَانَيْهِمْ. فَخَرَجَ

दी और यहाँ नबी करीम (ﷺ) को तलाश किया। अबू ज़र (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) को पहचानते नहीं थे और किसी से आप (ﷺ) के बारे में पूछना भी मुनासिब नहीं समझा, कुछ रात गुज़र गई कि वो लेटे हुए थे। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उनको इस हालत में देखा और समझ गये कि कोई मुसाफिर है, अ़ली (रज़ि.) ने उनसे कहा कि आप मेरे घर पर चलकर आराम कीजिए। अबूज़र (रज़ि.) उनके पीछे पीछे चले गये लेकिन किसी ने एक–दूसरे के बारे में बात नहीं की। जब सुबह हुई तो अबू ज़र (रज़ि.) ने अपना मशकीज़ा और तौशा उठाया और मस्जिदुल हराम में आ गये। ये दिन भी यूँ ही गुज़र गया और वो नबी करीम (ﷺ) को न देख सके। शाम हुई तो सोने की तैयारी करने लगे। अ़ली (रज़ि.) फिर वहाँ से गुज़रे और समझ गये कि अभी अपने ठिकाने जाने का वक़्त उस शख़्स पर नहीं आया, वो उन्हें वहाँ से फिर अपने साथ ले आए और आज भी किसी ने एक–दूसरे से बातचीत नहीं की, तीसरा दिन जब हुआ और अ़ली (रज़ि.) ने उनके साथ यही काम किया और अपने साथ ले गये तो उनसे पूछा क्या तुम मुझे बता सकते हो कि यहाँ आने का बाइ़ष़ क्या है? अबू ज़र (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम मुझसे पुख़्ता वा'दा कर लो कि मेरी रहनुमाई करोगे तो मैं तुमको सब कुछ बता दूँगा। अ़ली (रज़ि.) ने वा'दा कर लिया तो उन्होंने उन्हें अपने ख़्यालात की ख़बर दी। अ़ली (रज़ि.) ने फ़र्माया कि बिला शुब्हा वो ह़क़ पर हैं और अल्लाह के सच्चे रसूल (रज़ि.) हैं अच्छा सुबह को तुम मेरे पीछे पीछे मेरे साथ चलना। अगर मैं (रास्ते में) कोई ऐसी बात देखूँ जिससे मुझे तुम्हारे बारे में कोई ख़त़रा हो तो मैं खड़ा हो जाऊँगा। (किसी दीवार के क़रीब) गोया मुझे पेशाब करना है, उस वक़्त तुम मेरा इंतिज़ार न करना और जब मैं फिर चलने लगूँ तो मेरे पीछे आ जाना ताकि कोई समझ न सके कि ये दोनों साथ हैं और इस त़रह जिस घर में, मैं दाख़िल होऊँ, तुम भी दाख़िल हो जाना। उन्होंने ऐसा ही किया और पीछे–पीछे चले यहाँ तक कि अ़ली (रज़ि.) के साथ वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँच गये, आपकी बातें सुनीं और वहीं इस्लाम ले आए। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया अब अपनी क़ौम ग़िफ़ार में वापस जाओ और उन्हें मेरा हाल बताओ यहाँ तक कि जब हमारे ग़लबा का इल्म तुमको हो जाए (तो फिर हमारे पास आ जाना) अबू ज़र (रज़ि.)

ने अर्ज़ किया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मैं उन क़ुरैशियों के मज्मओ में पुकारकर कलिम–ए–तौहीद का ऐलान करूँगा। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) के यहाँ से वापस वो मस्जिदे हराम में आए और बुलन्द आवाज़ से कहा कि, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ये कि मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। ये सुनते ही सारा मज्मआ टूट पड़ा और इतना मारा कि ज़मीन पर लिटा दिया। इतने में अब्बास (रज़ि.) आ गये और अबू ज़र (रज़ि.) के ऊपर अपने को डालकर क़ुरैश से कहा अफ़सोस! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि ये शख़्स क़बील-ग़िफ़ार से है और शाम जाने वाले तुम्हारे ताजिरों का रास्ता उधर ही से पड़ता है। इस तरह से उनसे उनको बचाया। फिर अबू ज़र (रज़ि.) दूसरे दिन मस्जिदुल हराम में आए और अपने इस्लाम का इज़्हार किया। क़ौम बुरी तरह उन पर टूट पड़ी और मारने लगे। उस दिन भी अब्बास (रज़ि.) उन पर औंधे पड़ गये।

(राजेअ : 3522)

حَتَّى أَتَى الْمَسْجِدَ، فَنَادَى بِأَعْلَى صَوْتِهِ: أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ. ثُمَّ قَامَ الْقَوْمُ فَضَرَبُوهُ حَتَّى أَضْجَعُوهُ. وَأَتَى الْعَبَّاسُ فَأَكَبَّ عَلَيْهِ قَالَ: وَيْلَكُمْ، أَلَسْتُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّهُ مِنْ غِفَارٍ، وَأَنَّ طَرِيقَ تِجَارِكُمْ إِلَى الشَّامِ؟ فَأَنْقَذَهُ مِنْهُمْ. ثُمَّ عَادَ مِنَ الْغَدِ لِمِثْلِهَا فَضَرَبُوهُ وَثَارُوا إِلَيْهِ، فَأَكَبَّ الْعَبَّاسُ عَلَيْهِ)).

[راجع: ٣٥٢٢]

तश्रीह : हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) बुलन्द मर्तबा तारिकुद्दुनिया मुहाजिरीन किराम में से हैं। उनका नाम जुन्दब हैं। मक्का शरीफ़ में शुरू इस्लाम लाने वालों में उनका पाँचवाँ नम्बर है। फिर ये अपनी क़ौम में चले गये थे और मुद्दत तक वहाँ रहे, ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़ा पर ख़िदमते नबवी में मदीना तय्यिबा हाज़िर हुए थे और फिर मुक़ामे ज़ब्दा में क़याम किया और 32 हिजरी में ख़िलाफ़ते उ़स्मानी में उनका ज़ब्दह ही में इंतिक़ाल हुआ ये हुज़ूर (ﷺ) की बअ़्सत से पहले भी इ़बादत करते थे।

बाब 34 : सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) का इस्लाम क़ुबूल करना

٣٤- بَابُ إِسْلاَمِ سَعِيْدِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

ये हज़रत उ़मर (रज़ि.) के चचाज़ाद भाई और बहनोई थे, उनके वालिद ज़ैद जाहिलियत के ज़माने में दीने हनीफ़ के तालिब और मिल्लते इब्राहीमी पर थे, सिर्फ़ अल्लाह को पूजते थे, शिर्क नहीं करते थे और का'बा की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे। इसी ए'तिक़ाद पर उनका इंतिक़ाल हुआ। उनका वाक़िया पीछे गुज़र चुका है।

3862. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने बयान किया कि मैंने कूफ़ा की मस्जिद में सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) से सुना, वो कहा रहे थे कि एक वक़्त था जब हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने इस्लाम लाने से पहले मुझे इस वजह से बाँध

٣٨٦٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيْلَ عَنْ قَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيْدَ بْنَ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ فِي مَسْجِدِ الْكُوفَةِ يَقُولُ: وَاللهِ لَقَدْ

رَأَيْتُنِي وَإِنَّ عُمَرَ لَمُوثِقِيْ عَلَى الإِسْلاَمِ قَبْلَ أَنْ يُسْلِمَ عُمَرُ، وَلَوْ أَنَّ أَحَدًا ارْفَضَّ لِلَّذِي صَنَعْتُمْ بِعُثْمَانَ لَكَانَ.

[طرفاه في : ٣٨٦٧، ٦٩٤٢].

रखा था कि मैं ने इस्लाम क्यूँ क़ुबूल किया लेकिन तुम लोगों ने ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के साथ जो कुछ किया है उसकी वजह से अगर उहुद पहाड़ भी अपनी जगह से सरक जाए तो उसे ऐसा करना ही चाहिये। (दीगर मक़ाम : 3867, 6942)

तशरीह : ह़ज़रत सय्यदना उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) की शहादत तारीख़े इस्लाम का एक बहुत बड़ा अलमिया (दुर्भाग्यपूर्ण घटना) है। ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद इस पर अफ़सोस का इज़्हार कर रहे हैं और फ़र्मा रहे हैं कि कुफ़्र के ज़माने में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने मुझको इस्लाम क़ुबूल करने की वजह से बाँध रखा था। एक ज़माना आज है कि ख़ुद मुसलमान ही ह़ज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) जैसे जलीलुल क़द्र बुज़ुर्ग के ख़ूने नाह़क़ में अपने हाथ रंग रहे हैं। फ़िलवाक़ेअ ये ह़ादष़ा ऐसा ही है कि उस पर उहुद पहाड़ को अपनी जगह से सरक जाना चाहिये। ह़ज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) के ख़िलाफ़ बग़ावत का झण्डा बुलन्द करने वालों में ज़्यादा ता'दाद ऐसे लोगों की थी जो नाम के मुसलमान और पर्दे के पीछे वो मुनाफ़िक़ थे जो मुसलमानों का शीराज़ा मुंतशिर करना चाहते थे। इस ग़र्ज़ से कुछ बहानों का सहारा लेकर उन लोगों ने बग़ावत का झण्डा बुलन्द किया। कुछ सीधे साधे दूसरे मुसलमानों को भी बहका कर अपने साथ मिला लिया। आख़िर उन लोगों ने ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) को शहीद करके मुसलमानों में फ़ित्ना-फ़सादों का एक ऐसा दरवाज़ा खोल दिया जो आज तक बन्द नहीं हो रहा है और न बन्द होने की सरदस्ते उम्मीद है। तफ़्सीलात के लिये दफ़ातिर की ज़रूरत है मगर इतना ज़रूर याद रखना चाहिये कि सय्यदना उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) अल्लाह व रसूलुल्लाह (ﷺ) के सच्चे फ़िदाई, मक़्बूले बारगाह थे। उनके ख़ूने नाह़क़ में हाथ रंगने वाले हर मज़म्मत के मुस्तह़िक़ हैं और क़यामत तक उनको मुसलमानों की बेश्तर तादाद बुराई के साथ याद करती रहेगी, चूँकि ह़दीष़ में ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद का ज़िक्र है, इसी मुनासिबत से इस ह़दीष़ को इस बाब के तह़त नक़ल किया गया। ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद ही के निकाह़ में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की बहन थीं जिनका नाम फ़ातिमा है। उन ही की वजह से ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने इस्लाम क़ुबूल किया। इस ज़माने में कुछ लोग ह़ज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) की कमियाँ तलाश करके उम्मत को परेशान कर रहे हैं ह़ालाँकि ये ह़क़ीक़त है कि ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) मा'सूम नहीं थे अगर उनसे ख़िलाफ़त के ज़माने में कुछ कमज़ोरियाँ सरज़द हो गईं हों तो उनको अल्लाह के ह़वाले करना चाहिये न कि उनको उछालकर न सिर्फ़ ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) से बल्कि जमाअ़ते स़ह़ाबा से मुसलमानों को बद-ज़न्न करना ये कोई नेक काम नहीं है।

٣٥- بَابُ إِسْلاَمِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

बाब 35 : ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के इस्लाम लाने का वाक़िया

٣٨٦٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((مَا زِلْنَا أَعِزَّةً مُنْذُ أَسْلَمَ عُمَرُ)). [راجع: ٣٦٨٤]

3863. मुझसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बरी, उन्हें इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उन्हें क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के इस्लाम लाने के बाद हम लोग हमेशा इ़ज़्ज़त से रहे। (राजेअ़ : 3684)

٣٨٦٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ

3864. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे उ़मर बिन

مُحَمَّدٌ قَالَ: فَأَخْبَرَنِي جَدِّي زَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ((بَيْنَمَا هُوَ فِي الدَّارِ خَائِفًا إِذْ جَاءَهُ الْعَاصُ بْنُ وَائِلٍ السَّهْمِيُّ أَبُو عَمْرٍو وَعَلَيْهِ حُلَّةُ حِبَرَةٍ وَقَمِيصٌ مَكْفُوفٌ بِحَرِيرٍ - وَهُوَ مِنْ بَنِي سَهْمٍ وَهُمْ حُلَفَاؤُنَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ - فَقَالَ لَهُ: مَا بَالُكَ؟ قَالَ: زَعَمَ قَوْمُكَ أَنَّهُمْ سَيَقْتُلُونَنِي إِنْ أَسْلَمْتُ. قَالَ: لاَ سَبِيلَ إِلَيْكَ. بَعْدَ أَنْ قَالَهَا أَمِنْتُ. فَخَرَجَ الْعَاصُ فَلَقِيَ النَّاسَ قَدْ سَالَ بِهِمُ الْوَادِي، فَقَالَ: أَيْنَ تُرِيدُونَ؟ فَقَالُوا: نُرِيدُ هَذَا ابْنَ الْخَطَّابِ الَّذِي صَبَا. قَالَ: لاَ سَبِيلَ إِلَيْهِ. فَكَرَّ النَّاسُ)). [طرفه في : ٣٨٦٥].

मुहम्मद ने बयान किया, कहा मुझको मेरे दादा ज़ैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) (इस्लाम लाने के बाद कुरैश से) डरे हुए घर में बैठे हुए थे कि अबू अ़म्र बिन आ़स़ बिन वाईल सहमी अंदर आया, एक धारीदार चादर और रेशमी कुर्ता पहने हुए था, आ़स़ ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कहा क्या बात है? उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि तुम्हारी क़ौम बनू सहम वाले कहते हैं अगर मैं मुसलमान हुआ तो वो मुझको मार डालेंगे। आ़स़ ने कहा, तुम्हें कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता, जब आ़स़ ने ये कलिमा कह दिया तो उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि फिर मैं भी अपने को अमान में समझता हूँ। उसके बाद आ़स़ बाहर निकला तो देखा कि मैदान लोगों से भर गया है। आ़स़ ने पूछा किधर का रुख़ है? लोगों ने कहा हम इब्ने ख़त्ताब की ख़बर लेने जाते हैं जो बे दीन हो गया है। आ़स़ ने कहा उसे कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता, ये सुनते ही लोग लौट गए। (दीगर मक़ाम : 3865)

तश्रीह : ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की कुन्नियत अबू ह़फ़्स़ा है अ़दवी और कुरैशी हैं। नुबुव्वत के पाँचवें या छठे साल इस्लाम लाए और उनके इस्लाम क़ुबूल करने के दिन से इस्लाम नुमायाँ होना शुरू हुआ। इसी वजह से उनका लक़ब फ़ारूक़ हो गया, आप गोरे रंग के थे सुर्ख़ी ग़ालिब थी, क़द के लम्बे थे। तमाम ग़ज़्वाते नबवी में शरीक हुए। ह़ज़रत स़िद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के बाद दस साल छः माह ख़लीफ़ा रहे। मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) के गुलाम अबू लूलू ने मदीना में बुध के दिन नमाज़े फ़ज्र में 26 ज़िलह़िज्ज 24 हिजरी को खंजर से आप (रज़ि.) पर ह़मला किया। आप यकुम मुह़र्रमुल ह़राम 25 हिजरी को चार दिन बीमार रहकर वासिले बह़क़ हुए। 63 साल की उ़म्र पाई। नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रत सुहैब रूमी ने पढ़ाई और हुजर-ए-नबवी में जगह मिली। (रज़ि.)। अ़म्र बिन आ़स़ बिन वाईल सहमी कुरैशी हैं बक़ौल कुछ 8 हिजरी में ह़ज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) और उ़स्मान बिन त़लह़ा (रज़ि.) के साथ मुसलमान हुए। उनको आँह़ज़रत (ﷺ) ने ओमान का ह़ाकिम बना दिया था। वफ़ाते नबवी तक ये ओमान के ह़ाकिम रहे। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में उन ही के हाथ पर मिस्र फ़तह़ हुआ। मिस्र ही में 43 हिजरी में बउ़म्र नब्बे साल वफ़ात पाई (रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु आमीन)।

٣٨٦٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ سَمِعْتُهُ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((لَمَّا أَسْلَمَ عُمَرُ، اجْتَمَعَ النَّاسُ عِنْدَ دَارِهِ وَقَالُوا: صَبَا عُمَرُ - وَأَنَا غُلاَمٌ فَوقَ ظَهْرِ بَيْتِي - فَجَاءَ رَجُلٌ عَلَيْهِ قَبَاءٌ مِنْ دِيبَاجٍ فَقَالَ: قَدْ صَبَا عُمَرُ، فَمَا ذَاكَ؟ فَأَنَا

3865. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़म्र बिन दीनार से सुना, उन्होंने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा जब उ़मर (रज़ि.) इस्लाम लाए तो लोग उनके घर के पास जमा हो गये और कहने लगे कि उ़मर बेदीन हो गया है, मैं उन दिनों बच्चा था और उस वक़्त अपने घर की छत पर चढ़ा हुआ था। अचानक एक शख़्स़ आया जो रेशम की क़बा पहने हुए था, उस शख़्स़ ने लोगों से कहा ठीक है उ़मर (रज़ि.) बेदीन हो गया

لَهُ جَارٌ. قَالَ: فَرَأَيْتُ النَّاسَ تَصَدَّعُوا عَنْهُ. فَقُلْتُ مَنْ هَذَا الرَّجُلُ؟ قَالَ: الْعَاصُ بْنُ وَائِلٍ)). [راجع: ٣٨٦٤]

लेकिन ये मज्मआ कैसा है? देखो मैं उमर को पनाह दे चुका हूँ। इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया मैंने देखा कि उसकी ये बात सुनते ही लोग अलग अलग हो गये। मैंने पूछा ये कौन साहब हैं? उमर (रज़ि.) ने कहा कि ये आस बिन वाईल हैं। (राजेअ : 3864)

٣٨٦٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ أَنَّ سَالِمًا حَدَّثَهُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: ((مَا سَمِعْتُ عُمَرَ لِشَيْءٍ قَطُّ يَقُولُ إِنِّي لأَظُنُّهُ كَذَا إِلاَّ كَانَ كَمَا يَظُنُّ. بَيْنَمَا عُمَرُ جَالِسٌ إِذْ مَرَّ بِهِ رَجُلٌ جَمِيلٌ فَقَالَ عُمَرُ: لَقَدْ أَخْطَأَ ظَنِّي، أَوْ إِنَّ هَذَا عَلَى دِينِهِ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، أَوْ لَقَدْ كَانَ كَاهِنَهُمْ، عَلَيَّ الرَّجُلَ. فَدُعِيَ لَهُ، فَقَالَ لَهُ ذَلِكَ. فَقَالَ: مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ اسْتُقْبِلَ بِهِ رَجُلٌ مُسْلِمٌ. قَالَ: فَإِنِّي أَعْزِمُ عَلَيْكَ إِلاَّ مَا أَخْبَرْتَنِي. قَالَ: كُنْتُ كَاهِنَهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ. قَالَ: فَمَا أَعْجَبُ مَا جَاءَتْكَ بِهِ جِنِّيَّتُكَ؟ قَالَ: بَيْنَمَا أَنَا يَوْمًا فِي السُّوقِ، جَاءَتْنِي أَعْرِفُ فِيهَا الْفَزَعَ فَقَالَ: أَلَمْ تَرَ الْجِنَّ وَإِبْلاَسَهَا، وَيَأْسَهَا مِنْ بَعْدِ إِنْكَاسِهَا، وَلُحُوقَهَا بِالْقِلاَصِ وَأَحْلاَسِهَا. قَالَ عُمَرُ: صَدَقَ، بَيْنَمَا أَنَا عِنْدَ آلِهَتِهِمْ، إِذْ جَاءَ رَجُلٌ بِعِجْلٍ فَذَبَحَهُ، فَصَرَخَ بِهِ صَارِخٌ لَمْ أَسْمَعْ صَارِخًا قَطُّ أَشَدَّ صَوْتًا مِنْهُ يَقُولُ: يَا جَلِيحْ، أَمْرٌ نَجِيحْ، رَجُلٌ فَصِيحْ، يَقُولُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ. فَوَثَبَ الْقَوْمُ. قُلْتُ لاَ أَبْرَحُ حَتَّى أَعْلَمَ مَا وَرَاءَ هَذَا. ثُمَّ نَادَى: يَا جَلِيحْ، أَمْرٌ نَجِيحْ، رَجُلٌ فَصِيحْ،

3866. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे अम्र बिन मुहम्मद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे सालिम ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब भी हज़रत उमर (रज़ि.) ने किसी चीज़ के बारे में कहा कि मेरा ख़याल है कि ये इस तरह है तो वो उसी तरह हुई जैसा वो उसके बारे में अपना ख़याल ज़ाहिर करते थे। एक दिन वो बैठे हुए थे कि एक ख़ूबसूरत शख़्स वहाँ से गुज़रा। उन्होंने कहा या तो मेरा गुमान ग़लत है या ये शख़्स अपने जाहिलियत के दीन पर अब भी क़ायम है या ये ज़माना जाहिलियत में अपनी क़ौम का काहिन रहा है। उस शख़्स को मेरे पास बुलाओ। वो शख़्स बुलाया गया तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसके सामने भी यही बात दुहराई। इस पर उसने कहा मैंने तो आज के दिन का सा मामला कभी नहीं देखा जो किसी मुसलमान को पेश आया हो। उमर (रज़ि.) ने कहा लेकिन मैं तुम्हारे लिये ज़रूरी क़रार देता हूँ कि तुम मुझे इस सिलसिले में बताओ। उसने इक़रार किया कि ज़मान-ए-जाहिलियत में मैं अपनी क़ौम का काहिन था। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा ग़ैब की जो ख़बरें तुम्हारी जिन्नियाँ तुम्हारे पास लाती थी, उसकी सबसे हैरतअंगेज़ कोई बात सुनाओ? शख़्से मज़्कूर ने कहा कि एक दिन में बाज़ार में था कि जिन्नियाँ मेरे पास आई। मैंने देखा कि वो घबराई हुई है, फिर उसने कहा जिन्नों के बारे में तुम्हें मा'लूम नहीं। जब से उन्हें आसमानी ख़बरों से रोक दिया गया है वो किस दर्जे डरे हुए हैं, मायूस हो रहे हैं और ऊँटनियों के पालान की कमलियों से मिल गये हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि तुमने सच कहा। एक मर्तबा मैं भी उन दिनों बुतों के क़रीब सोया हुआ था। एक शख़्स एक बछड़ा लाया और बुत पर उसे ज़िबह कर दिया उसके अंदर से इस क़दर ज़ोर की आवाज़ निकली कि मैंने ऐसी शदीद चीख़ कभी नहीं सुनी थी। उसने कहा ऐ दुश्मन! एक बात बतलाता हूँ जिससे मुराद मिल जाए एक फ़सीह ख़ुशबयान शख़्स यूँ कहता है ला इलाहा इल्लल्लाह ये सुनते ही तमाम लोग (जो वहाँ मौजूद थे)

चौंक पड़े (चल दिये) मैंने कहा मैं तो नहीं जाने का, देखो उसके बाद क्या होता है। फिर यही आवाज़ आई अरे दुश्मन तुझको एक बात बतलाता हूँ जिससे मुराद बर आए एक फ़सीह़ शख़्स यूँ कह रहा है ला इलाहा इल्लल्लाह। उस वक़्त मैं खड़ा हुआ और अभी कुछ देर नहीं गुज़री थी कि लोग कहने लगे ये (ह़ज़रत मुह़म्मद ﷺ) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं।

يَقُولُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ. فَقُمْتُ، فَمَا نَشِبْنَا أَنْ قِيلَ: هَذَا نَبِيٌّ)).

तश्रीह : ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने क़याफ़ा और फ़िरासत की बिना पर उस गुज़रने वाले से कहा कि तू मुसलमान है, या काफ़िर, या काहिन है। अबू अ़म्र ने कहा ये शख़्स जाहिलियत के ज़माने में कहानत किया करता था, ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने एक दिन मज़ाक़ के तौर पर उससे फ़र्माया ऐ सुवाद! तेरी कहानत अब कहाँ गई? इस पर वो ग़ुस्सा हुआ कहने लगा उ़मर! हम जिस ह़ाल में पहले थे या'नी जाहिलियत व कुफ़्र पर वो कहानत से बदतर था और तुम मुझको ऐसी बात पर मलामत करते हो जिससे मैं तौबा कर चुका हूँ और मुझको उम्मीद है कि अल्लाह ने उसको बख़्श दिया होगा। (वह़ीदी)

इससे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की कमाले दानाई ष़ाबित हुई और यही इस ह़दीष़ को यहाँ लाने का मक़्सद है। पुकारने वाला कोई फ़रिश्ता था जो आँह़ज़रत (ﷺ) के मब्ऊ़ष़ होने की बशारत दे रहा था।

3867. मुझसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे क़ैस ने, कहा कि मैंने सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने मुसलमानों को मुख़ात़ब करके कहा एक वक़्त था कि उ़मर (रज़ि.) जब इस्लाम में दाख़िल नहीं हुए थे तो मुझे और अपनी बहन को इसलिये बाँध रखा था कि हम इस्लाम क्यूँ लाए, और आज तुमने जो कुछ ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) के साथ बर्ताव किया है, अगर इस पर उहुद पहाड़ भी अपनी जगह से सरक जाए तो उसे ऐसा ही करना चाहिये। (राजेअ़ : 3862)

٣٨٦٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا قَيْسٌ قَالَ سَمِعْتُ سَعِيْدَ بْنَ زَيْدٍ يَقُولُ لِلْقَوْمِ: لَوْ رَأَيْتُنِي مُوثِقِي عُمَرُ عَلَى الإِسْلاَمِ أَنَا وَأُخْتُهُ، وَمَا أَسْلَمَ، وَلَوْ أَنَّ أُحُدًا انْقَضَّ لِمَا صَنَعْتُمْ بِعُثْمَانَ لَكَانَ مَحْقُوقًا أَنْ يَنْقَضَّ)). [راجع: ٣٨٦٢]

ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) की ज़ुबानी यहाँ भी ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ज़िक्र है, बाब और ह़दीष़ में यही मुत़ाबक़त है। ह़ज़रत सईद, सय्यदना ह़ज़रत उ़ष़्मान ग़नी की शहादत पर इज़्हारे अफसोस कर रहे हैं और बतला रहे हैं कि ये ह़ादष़ा ऐसा ज़बरदस्त है कि उसका अष़र अगर उहुद पहाड़ भी कुबूल करे तो बजा है, **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊ़न।** शहादते ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) वाक़ई बहुत बड़ा ह़ादष़ा है जिससे इस्लाम में दरार पड़ना शुरू हुआ।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के इस्लाम लाने का वाक़िया :

सियर की किताबों में तफ़्सील के साथ मज़्कूर है। ख़ुलासा ये है कि अबू जहल ने ये कहा कि जो कोई मुह़म्मद (ﷺ) का सर लाए मैं उसको सौ ऊँट इन्आ़म दूँगा। उ़मर (रज़ि.) तलवार लटकाकर चले। रास्ते में किसी ने कहा मुह़म्मद (ﷺ) को बाद में मारना अपने बहनोई सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) और बहन से तू समझ लो, वो दोनों मुसलमान हो गये हैं। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपनी बहन के घर पहुँचकर बहनोई और बहन दोनों की मश्कें कसीं, ख़ूब मारा-पीटा, आख़िरकार शर्मिन्दा हुए। अपनी बहन

से कहने लगे ज़रा मुझको वो कलाम तो सुनाओ जो तुम मियाँ-बीवी मेरे आने के वक़्त पढ़ रहे थे। उन्होंने कहा कि तुम बे वुज़ू हो, वुज़ू करो। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने वुज़ू किया और मुस्ह़फ़ खोलकर पढ़ने लगे। उसका अष़र ये हुआ कि ज़ुबान से ये कलिम-ए- पाक निकल पड़ा, **अश्हदुअंल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदर्रसुलुल्लाह** फिर आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आए। आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, ऐ उ़मर! मुसलमान हो जा। उन्होंने सच्चे दिल से कलिमा पढ़ा सारे मुसलमानों ने ख़ुशी से तक्बीर कही (वह़ीदी)। ह़ज़रत इक़बाल ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के इस्लाम क़ुबूल करने को यूँ बयान किया है।

नमी दानी कि सोज़े क़िरात तू — दिगर गूँ कर्द तक़्दीर उ़मर रा

या'नी क़ुर्आने पाक की क़िरात के सोज़ ने जो उनकी बहन फ़ातिमा (रज़ि.) के लह़्न से ज़ाहिर हो रहा था, ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की क़िस्मत को बदल दिया और वो इस्लाम क़ुबूल करने पर आमादा हो गये। अफ़सोस आज वो क़ुर्आन पाक है क़िरात करने वाले बकष़रत मौजूद हैं मगर वो सोज़ मफ़्क़ूद है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के बहनोई का नाम सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल है, ये आपके चचाज़ाद भाई भी होते थे। तफ़्सील पीछे गुज़र चुकी है।

बाब 36 : चाँद के फट जाने का बयान

٣٦- بَابُ انْشِقَاقِ الْقَمَرِ

शक़्क़ुल क़मर का बयान पहले भी गुज़र चुका है कि ये आँह़ज़रत (ﷺ) का एक बहुत बड़ा मुअजिज़ा था गो ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने ये वाक़िया ख़ुद नहीं देखा, दूसरे स़ह़ाबी से सुना मगर स़ह़ाबी की मुर्सल बिल इत्तिफ़ाक़ मक़्बूल है।

3867. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उन्होने कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी अ़रूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि कुफ़्फ़ारे मक्का ने रसूले करीम (ﷺ) से किसी निशानी का मुत़ालबा किया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने चाँद के दो टुकड़े करके दिखा दिये। यहाँ तक कि उन्होंने हिरा पहाड़ को उन दोनों टुकड़ों के बीच में देखा।

(राजेअ़ : 3637)

٣٨٦٨- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : ((أَنَّ أَهْلَ مَكَّةَ سَأَلُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ أَنْ يُرِيَهُمْ آيَةً، فَأَرَاهُمُ الْقَمَرَ شِقَّتَيْنِ، حَتَّى رَأَوْا حِرَاءَ بَيْنَهُمَا)). [راجع: ٣٦٣٧]

3869. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा मुह़म्मद बिन मैमून ने, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अबू मअ़मर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि जिस वक़्त चाँद के दो टुकड़े हुए तो हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मिना के मैदान में मौजूद थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि लोगों! गवाह रहना, और चाँद का एक टुकड़ा दूसरे से अलग होकर पहाड़ की तरफ़ चला गया था और अबुज़्ज़ुहा ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि शक़्क़ुल क़मर का मुअ़जज़ा मक्का में पेश आया था। इब्राहीम नख़ई के साथ इसकी मुताबअ़त मुह़म्मद बिन मुस्लिम ने की है, उनसे

٣٨٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: انْشَقَّ الْقَمَرُ وَنَحْنُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِمِنًى فَقَالَ ((اشْهَدُوا))، وَذَهَبَتْ فِرْقَةٌ نَحْوَ الْجَبَلِ. وَقَالَ أَبُو الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ: ((انْشَقَّ بِمَكَّةَ)). وَتَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيْحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ

अबू नुजैह ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अबू मअ़मर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने। (राजेअ़: 3636)

أَبِي مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ. [راجع: ٣٦٣٦]

3870. हमसे उ़ष्मान बिन स़ालेह़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे बक्र बिन मुज़र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे जा'फ़र बिन रबीआ़ ने बयान किया, उनसे इराक बिन मालिक ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में बिला शक व शुब्हा चाँद फट गया था। (राजेअ़ : 3636, 3637)

٣٨٧٠- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مُضَرَ قَالَ: حَدَّثَنِي جَعْفَرُ بْنُ رَبِيْعَةَ، عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ الْقَمَرَ انْشَقَّ عَلَى زَمَانِ رَسُولِ اللهِ ﷺ)). [راجع: ٣٦٣٦، ٣٦٣٨]

3871. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम नख़ई ने बयान किया, उनसे अबू मअ़मर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि चाँद फट गया था।

٣٨٧١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((انْشَقَّ الْقَمَرُ)).

तश्रीह़ : इससे उन लोगों का रद्द होता है जो कहते हैं **इक़्तरबतिस्साअ़तु वन्शक़्क़ल्क़मर** (अल क़मर : 1) में इन्शक़्क़ मा'नी यन्शक़्क़ के हैं या'नी चाँद फटेगा अब ये ए'तिराज़ कि अगर चाँद फटा होता तो अहले रसद और हियात और दुनिया के मुहन्दिस इस वाक़िये को नक़ल करते क्योंकि अ़जीब वाक़िया था, वाही है इसलिये कि ये फटना एक लह़ज़ा के लिये था मा'लूम नहीं कि और मुल्क वालों को नज़र भी आया या नहीं अन्देशा है कि वो सोते हों या अपने कामों में मशग़ूल हों और बड़ी दलील इस वाक़िया की स़िह़त की ये है कि अगर चाँद न फटा होता तो जब क़ुर्आन में ये उतरा, इन्शक़्क़ल क़मर तो काफ़िर और मुख़ालिफ़ीने इस्लाम सब तक्ज़ीब शुरू कर देते वो तो ह़क़ बातों में क़ुर्आन की मुख़ालफ़त किया करते थे चे एक वाक़िया न हुआ होता और क़ुर्आन में उसका होना बयान किया जाता तो किस क़दर ए'तिराज़ और तक्ज़ीब की बौछार कर देते। (वह़ीदी)

क़ुर्आन मजीद और अह़ादीषे स़ह़ीह़ा में चाँद के फट जाने का वाक़िया स़राह़त के साथ मौजूद है। एक मोमिन मुसलमान के लिये उनसे ज़्यादा और किसी दलील की ज़रूरत नहीं है यूँ तारीख़ में ऐसे भी मुख़्तलिफ़ मुमालिक के लोगों का ज़िक्र मौजूद है, जिन्होंने उसको देखा और वो तह़क़ीक़े ह़क़ करने पर मुसलमान हो गये। दूसरे मुक़ाम पर इसकी तफ़्स़ील आएगी।

बाब 37 : मुसलमानों का ह़ब्शा की त़रफ़ हिजरत करने का बयान

٣٧- بَابُ هِجْرَةِ الْحَبَشَةِ

और ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे तुम्हारी हिजरत की जगह (ख़्वाब में) दिखाई गई है, वहाँ खजूरों के बाग़ बहुत हैं वो जगह दो पथरीले मैदानों के दरम्यान है। चुनाँचे जिन्होंने हिजरत कर ली थी वो मदीना हिजरत

وَقَالَتْ عَائِشَةُ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أُرِيْتُ دَارَ هِجْرَتِكُمْ ذَاتَ نَخْلٍ بَيْنَ لاَبَتَيْنِ)). فَهَاجَرَ مَنْ هَاجَرَ قِبَلَ الْمَدِيْنَةِ، وَرَجَعَ عَامَّةُ مَنْ كَانَ هَاجَرَ بِأَرْضِ الْحَبَشَةِ إِلَى الْمَدِيْنَةِ. فِيْهِ عَنْ أَبِي مُوسَى وَأَسْمَاءَ عَنِ

करके चले गये बल्कि जो मुसलमान हब्शा हिजरत कर गये थे वो भी मदीना वापस चले आए इस बारे में अबू मूसा और अस्मा बिन्ते उमैस की रिवायात नबी करीम (ﷺ) से मरवी हैं।

النَّبِيِّ ﷺ.

जब मक्का के काफ़िरों ने मुसलमानों को बेहद सताना शुरू कर दिया और मुसलमानों में मुक़ाबले की ताक़त न रही तो आँहज़रत (ﷺ) ने मुसलमानों को मुल्के हब्शा की तरफ़ हिजरत करने की इजाज़त दे दी और हुक्म दिया कि तुम इस्लाम का ग़लबा होने तक वहाँ रहो ये हिजरत दो बार हुई पहले हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने अपनी बीवी हज़रत रुक़य्या (रज़ि.) को लेकर हिजरत की। (इन तीनों हदीषों को ख़ुद इमाम बुख़ारी रह. ने वस्ल किया है) हज़रत आइशा (रज़ि.) की हदीष को **बाबुल्हिज्रति इलल्मदीनति** में और अबू मूसा (रज़ि.) की हदीष को इसी बाब में और हज़रत अस्मा (रज़ि.) की हदीष को ग़ज़्व-ए-हुनैन में।

3872. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जअ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कहा कि हमसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी बिन ख़ियार ने ख़बर दी, उन्हें मिस्वर बिन मख़रमा और अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूष ने कि उन दोनों ने उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी बिन ख़ियार से कहा तुम अपने मामू (अमीरुल मोमिनीन) उ़ष्मान (रज़ि.) से उनके भाई वलीद बिन उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ के बाब में बातचीत क्यूँ नहीं करते, (हुआ ये था कि लोगों ने इस पर बहुत ए'तिराज़ किया था जो हज़रत उ़ष्मान ने वलीद के साथ किया था) उ़बैदुल्लाह ने बयान किया जब हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) नमाज़ पढ़ने निकले तो मैं उनके रास्ते में खड़ा हो गया और अ़र्ज़ किया कि मुझे आपसे एक ज़रूरत है, आपको एक ख़ैरख़्वाहाना मश्वरा देना है। इस पर उन्होंने कहा कि भले आदमी! तुमसे तो मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ। ये सुनकर मैं वहाँ से वापस चला आया। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद में मिस्वर बिन मख़रमा और इब्ने अ़ब्दे यग़ूष की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उ़ष्मान (रज़ि.) से जो कुछ मैंने कहा था और उन्होंने उसका जवाब मुझे जो दिया था, सब मैंने बयान कर दिया। उन लोगों ने कहा तुमने अपना हक़ अदा कर दिया। अभी मैं उस मज्लिस में बैठा था कि उ़ष्मान (रज़ि.) का आदमी मेरे पास (बुलाने के लिये) आया। उन लोगों ने मुझसे कहा तुम्हें अल्लाह तआ़ला ने इम्तिहान में डाला है। आख़िर मैं वहाँ चला और हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने पूछा तुम अभी जिस ख़ैरख़्वाही का ज़िक्र कर रहे थे वो क्या थी? उन्होंने बयान किया कि फिर मैंने कहा अल्लाह गवाह है फिर मैंने कहा अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद (ﷺ) को मब्ऊ़ष फ़र्माया और उन पर अपनी

٣٨٧٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنَا عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ ((أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَدِيِّ بْنِ الْخِيَارِ أَخْبَرَهُ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَسْوَدِ بْنِ عَبْدِ يَغُوثَ قَالاَ لَهُ: مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تُكَلِّمَ خَالَكَ عُثْمَانَ فِي أَخِيْهِ الْوَلِيْدِ بْنِ عُقْبَةَ، وَكَانَ أَكْثَرَ النَّاسُ فِيْمَا فَعَلَ بِهِ. قَالَ عُبَيْدُ اللهِ: فَانْتَصَبْتُ لِعُثْمَانَ حِيْنَ خَرَجَ إِلَى الصَّلاَةِ فَقُلْتُ لَهُ: إِنَّ لِيْ إِلَيْكَ حَاجَةً، وَهِيَ نَصِيْحَةٌ. فَقَالَ: أَيُّهَا الْمَرْءُ، أَعُوذُ بِاللهِ مِنْكَ. فَانْصَرَفْتُ. فَلَمَّا قَضَيْتُ الصَّلاَةَ جَلَسْتُ إِلَى الْمِسْوَرِ وَإِلَى ابْنِ عَبْدِ يَغُوثَ فَحَدَّثْتُهُمَا بِمَا قُلْتُ لِعُثْمَانَ وَقَالَ لِي. فَقَالاَ: قَدْ قَضَيْتَ الَّذِيْ كَانَ عَلَيْكَ. فَبَيْنَمَا أَنَا جَالِسٌ مَعَهُمَا إِذْ جَاءَنِي رَسُولُ عُثْمَانَ، فَقَالاَ لِي: قَدْ ابْتَلاَكَ اللهُ. فَانْطَلَقْتُ حَتَّى دَخَلْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: مَا نَصِيْحَتُكَ الَّتِيْ ذَكَرْتَ

किताब नाज़िल फ़र्माई, आप उन लोगों में से थे जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) की दा'वत पर लब्बैक कहा था। आप हुज़ूर (ﷺ) पर ईमान लाए दो हिजरतें कीं (एक ह़ब्शा को और दूसरी मदीना को) आप रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत से फ़ैज़याब हैं और आँहज़रत (ﷺ) के त़रीक़ों को देखा है। बात ये है कि वलीद बिन उ़क़्बा के बारे में लोगों में अब बहुत चर्चा होने लगा है। इसलिये आपके लिये ज़रूरी है कि उस पर (शराबनोशी की) हद क़ायम करें। उ़स्मान (रज़ि.) ने फ़र्माया मेरे भतीजे या मेरे भांजे क्या तुमने भी रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा है? मैंने अ़र्ज़ किया कि नहीं। लेकिन आँहुज़ूर (ﷺ) के दीन की बातें इस त़रह मैंने ह़ासिल की थीं जो एक कुँवारी लड़की को भी अपने पर्दे में मा'लूम हो चुकी हैं। उन्होंने बयान किया कि ये सुनकर फिर उ़स्मान (रज़ि.) ने भी अल्लाह का गवाह करके फ़र्माया बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला ने मुह़म्मद (ﷺ) को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स किया और आप (ﷺ) पर अपनी किताब नाज़िल की थी और ये भी वाक़िया है कि मैं उन लोगों में था जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की दा'वत पर (इब्तिदा ही में) लब्बैक कहा था। आँहज़रत (ﷺ) जो शरीअ़त लेकर आए थे मैं उस पर ईमान लाया और जैसा कि तुमने कहा मैंने दो हिजरतें कीं, मैं आँहज़रत (ﷺ) की सुहबत से फ़ैज़याब हुआ और आप (ﷺ) से बेअ़त भी की। अल्लाह की क़सम! कि मैंने आप (ﷺ) की नाफ़र्मानी नहीं की और न कभी ख़यानत की। आख़िर अल्लाह तआ़ला ने आप (ﷺ) को वफ़ात दे दी और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़लीफ़ा मुंतख़ब हुए। अल्लाह की क़सम! कि मैंने उनकी भी कभी नाफ़र्मानी नहीं की और न उनके किसी मामले में कोई ख़यानत की। उनके बाद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ख़लीफ़ा हुए मैंने उनकी भी कभी नाफ़र्मानी नहीं की और न कभी ख़यानत की। उसके बाद मैं ख़लीफ़ा हुआ। क्या अब मेरा तुम लोगों पर वही ह़क़ नहीं है जो उनका मुझ पर था? उ़बैदुल्लाह ने अ़र्ज़ किया यक़ीनन आपका ह़क़ है। फिर उन्होंने कहा फिर उन बातों की क्या ह़क़ीक़त है जो तुम लोगों की त़रफ़ से पहुँच रही हैं? जहाँ तक तुमने वलीद बिन उ़क़्बा के बारे में ज़िक्र किया है तो हम इंशाअल्लाह उस मामले में उसकी गिरफ़्त ह़क़ के साथ करेंगे। रावी ने बयान किया कि आख़िर (गवाही गुज़रने के बाद) वलीद बिन उ़क़्बा के चालीस

آنِفًا؟ قَالَ: فَتَشَهَّدْتُ ثُمَّ قُلْتُ: إِنَّ اللهَ بَعَثَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الْكِتَابَ، وَكُنْتَ مِمَّنِ اسْتَجَابَ لِلهِ وَرَسُولِهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَآمَنْتَ بِهِ، وَهَاجَرْتَ الْهِجْرَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ، وَصَحِبْتَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَأَيْتَ هَدْيَهُ. وَقَدْ أَكْثَرَ النَّاسُ فِي شَأْنِ الْوَلِيدِ بْنِ عُقْبَةَ، فَحَقٌّ عَلَيْكَ أَنْ تُقِيمَ عَلَيْهِ الْحَدَّ. فَقَالَ لِي: يَا ابْنَ أَخِي، أَدْرَكْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: قُلْتُ: لاَ، وَلَكِنْ قَدْ خَلَصَ إِلَيَّ مِنْ عِلْمِهِ مَا خَلَصَ إِلَى الْعَذْرَاءِ فِي سِتْرِهَا.

قَالَ: فَتَشَهَّدَ عُثْمَانُ فَقَالَ: إِنَّ اللهَ قَدْ بَعَثَ مُحَمَّدًا ﷺ بِالْحَقِّ، وَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الْكِتَابَ، وَكُنْتُ مِمَّنِ اسْتَجَابَ لِلهِ وَرَسُولِهِ ﷺ، وَآمَنْتُ بِمَا بُعِثَ بِهِ مُحَمَّدٌ ﷺ، وَهَاجَرْتُ الْهِجْرَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ - كَمَا قُلْتَ - وَصَحِبْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَبَايَعْتُهُ. وَاللهِ مَا عَصَيْتُهُ، وَلاَ غَشَشْتُهُ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللهُ. ثُمَّ اسْتَخْلَفَ اللهُ أَبَا بَكْرٍ، فَوَاللهِ مَا عَصَيْتُهُ وَلاَ غَشَشْتُهُ، ثُمَّ اسْتُخْلِفَ عُمَرُ، فَوَاللهِ مَا عَصَيْتُهُ وَلاَ غَشَشْتُهُ. ثُمَّ اسْتُخْلِفْتُ، أَفَلَيْسَ لِي عَلَيْكُمْ مِثْلُ الَّذِي كَانَ لَهُمْ عَلَيَّ؟ قَالَ: بَلَى. قَالَ: فَمَا هَذِهِ الأَحَادِيثُ الَّتِي تَبْلُغُنِي عَنْكُمْ؟

कोड़े लगवाए गये और हज़रत अली (रज़ि.) को हुक्म दिया कि कोड़े लगाएँ, हज़रत अली (रज़ि.) ही ने उसको कोड़े मारे थे। इस हदीष़ को यूनुस और ज़ुह्री के भतीजे ने भी ज़ुह्री से रिवायत किया उसमें उ़ष्मान (रज़ि.) का क़ौल इस त़रह बयान किया, क्या तुम लोगों पर मेरा वही ह़क़ नहीं है जो उन लोगों का तुम पर था।

(राजेअ़ : 3696)

فَأَمَّا مَا ذَكَرْتَ مِنْ شَأْنِ الْوَلِيْدِ بْنِ عُقْبَةَ فَسَنَأْخُذُ فِيْهِ إِنْ شَاءَ اللهُ بِالْحَقِّ. قَالَ : فَجَلَدَ الْوَلِيْدَ أَرْبَعِيْنَ جَلْدَةً، وَأَمَرَ عَلِيًّا أَنْ يَجْلِدَهُ، وَكَانَ هُوَ يَجْلِدُهُ)).

وَقَالَ يُونُسُ وَابْنُ أَخِي الزُّهْرِيِّ عَنِ الزُّهْرِيِّ: ((أَفَلَيْسَ لِي عَلَيْكُمْ مِنَ الْحَقِّ مِثْلُ الَّذِي كَانَ لَهُمْ)).

[راجع: ٣٦٩٦]

तश्रीह : हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) ने हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) को कूफ़ा की हुकूमत से मअ़ज़ूल करके वलीद को उनकी जगह मुक़र्रर किया था वलीद ने वहाँ कई नाइन्साफ़ियाँ कीं। शराब के नशे में नमाज़ पढ़ाने खड़े हो गये। हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने उसको सज़ा देने में देर की। लोगों को ये नागवार हुआ तो उन्होंने उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी से जो हज़रत उ़ष्मान के भांजे और आपके मुक़र्रब थे इस मुक़द्दमे में हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) से बातचीत करने के लिये कहा। हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) शुरू में ये समझे कि शायद उ़बैदुल्लाह कोई ख़िदमत या रुपये का त़लबगार हो और मुझसे वो न दिया जाए तो वो नाराज़ हो और मुफ़्त में ख़राबी फैले। बाद में जब हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने वाक़िये को समझा तो उ़बैदुल्लाह को बुलाकर बातचीत की जो रिवायत में मज़्कूर है। उ़बैदुल्लाह ने हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) को बतलाया कि मैं महज़ आपकी ख़ैर-ख़्वाही में ये बातें कह रहा हूँ बाद में हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने वलीद को हज़रत अ़ली (रज़ि.) के हाथों से शराब की ह़द में कोड़े लगवाए जैसा कि ज़िक्र हो चुका है।

बाब का मत़लब हिजरते ह़ब्शा के ज़िक्र से निकलता है गो ह़ब्श के मुल्क की त़रफ़ दोबारा हिजरत हुई थी जैसे इमाम अहमद और इब्ने इस्ह़ाक़ वग़ैरह ने निकाला इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से कि पहले आँह़ज़रत (ﷺ) ने हम लोगों को जो अस्सी आदमियों के क़रीब थे नज्जाशी के मुल्क में भेज दिया फिर उनको ये ख़बर मिली कि मुश्रिकों ने सूरह नज्म में आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ सज्दा किया और वो मुसलमान हो गये। ये ख़बर सुनकर वो मक्का लौट आए वहाँ पहले से भी ज़्यादा मुश्रिकों से तकलीफ़ उठाने लगे आख़िर दोबारा हिजरत की उस वक़्त 83 मर्द और 18 औरतें थीं मगर हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने दोबारा ये हिजरत नहीं की इसलिये पहली दो हिजरतों से ह़ब्श और मदीना की हिजरत मुराद है। ह़ालाँकि मदीना की हिजरत दूसरी हिजरत थी मगर दोनों को तग़्लीबन अव्वलीन कह दिया जैसे शम्सैन क़मरैन कहते हैं। तीसरी अल् क़ारी के मुवल्लिफ़ ने ग़लत़ी की जो कहा हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने ह़ब्श को हिजरत नहीं की थी हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) तो सबसे पहले अपनी बीवी हज़रत रुक़य्या (रज़ि.) को लेकर ह़ब्शा की त़रफ़ निकले थे और शायद ये त़बअ़ (प्रकाशन) की ग़लत़ी हो। मुवल्लिफ़ की इबारत यूँ हो कि हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने दोबारा हिजरत नहीं की थी। (वह़ीदी)

दूसरी रिवायत में अस्सी कोड़ों का ज़िक्र है ये उसके ख़िलाफ़ नहीं है क्योंकि जब अस्सी कोड़े पड़े तो चालीस बत़रीक़े औला पड़ गये या उस कोड़े के दोहरे होंगे तो चालीस मारों के बस अस्सी कोड़े हो गये। वलीद की शराबनोशी की शहादत देने वाले ह़म्रान और स़अ़ब थे। यूनुस की रिवायत को ख़ुद हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने मनाक़िबे उ़ष्मान (रज़ि.) में वस़्ल किया है और ज़ुह्री के भतीजे की रिवायत को इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने तम्हीद में वस़्ल किया।

3873. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त़्त़ान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन

٣٨٧٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي

उर्वा ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद (उर्वा बिन ज़ुबैर) ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उम्मे हबीबा (रज़ि.) और उम्मे सलमा (रज़ि.) ने एक गिरजे का ज़िक्र किया जिसे उन्होंने हब्शा में देखा था उसके अंदर तस्वीरें थीं। उन्होंने उसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया जब उनमें कोई नेक मर्द होता और उसकी वफ़ात हो जाती तो उसकी क़ब्र को वो लोग मस्जिद बनाते और फिर उसमें उसकी तस्वीरें रखते। ये लोग क़यामत के दिन अल्लाह तआला की बारगाह में बदतरीन मख़्लूक़ होंगे।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ أُمَّ حَبِيْبَةَ وَأُمَّ سَلَمَةَ ذَكَرَتَا كَنِيْسَةً رَأَيْنَهَا بِالْحَبَشَةِ فِيْهَا تَصَاوِيْرُ، فَذَكَرَتَا لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: ((إِنَّ أُولَئِكَ إِذَا كَانَ فِيْهِمُ الرَّجُلُ الصَّالِحُ فَمَاتَ بَنَوا عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا، وَصَوَّرُوا فِيْهِ تِلْكَ الصُّوَرَ، أُولَئِكَ شِرَارُ الْخَلْقِ، عِنْدَ اللهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

ये हदीष़ बाबुल जनाइज़ में गुज़र चुकी है यहाँ इमाम बुख़ारी (रह) इसको इसलिये लाए कि उसमें हब्श की हिजरत का ज़िक्र है।

3874. हमसे हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्हाक़ बिन सईद सईदी ने बयान किया। उनसे उनके वालिद सईद बिन अम्र बिन सईद बिन आस़ ने, उनसे उम्मे ख़ालिद बिन्ते ख़ालिद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं जब हब्शा से आई तो बहुत कम उम्र थी। मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक धारीदार चादर इनायत की और फिर आप (ﷺ) ने उसकी धारियों पर अपना हाथ फेरकर फ़र्माया सनाह सनाह। हुमैदी ने बयान किया कि सनाह सनाह हब्शी ज़ुबान का लफ़्ज़ है या'नी अच्छा अच्छा।

(राजेअ : 3071)

٣٨٧٤- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سَعِيْدٍ السَّعِيْدِيُّ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أُمِّ خَالِدٍ بِنْتِ خَالِدٍ قَالَتْ: ((قَدِمْتُ مِنْ أَرْضِ الْحَبَشَةِ وَأَنَا جُوَيْرِيَةٌ، فَكَسَانِي رَسُولُ اللهِ ﷺ خَمِيْصَةً لَهَا أَعْلاَمٌ، فَجَعَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَمْسَحُ الأَعْلاَمَ بِيَدِهِ وَيَقُولُ: ((سَنَاه سَنَاه)). قَالَ الْحُمَيْدِي: يَعْنِي حَسَنٌ حَسَنٌ)).

[راجع: ٣٠٧١]

3875. हमसे यह्या बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे अब्दुल्लाह ने बयान किया कि (इब्तिदा-ए-इस्लाम में) नबी करीम (ﷺ) नमाज़ पढ़ते होते और हम आपको सलाम करते तो आप (ﷺ) नमाज़ ही में जवाब इनायत फ़र्माते थे। लेकिन जब हम नज्जाशी के मुल्क हब्शा से वापस (मदीना) आए और हमने (नमाज़ पढ़ते में) आप (ﷺ) को सलाम किया तो आप (ﷺ) ने जवाब नहीं दिया। नमाज़ के बाद हमने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम पहले आप (ﷺ) को सलाम करते थे तो आप (ﷺ) नमाज़ ही में जवाब इनायत फ़र्माया करते थे? आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया हाँ नमाज़ में आदमी

٣٨٧٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يُصَلِّي فَيَرُدُّ عَلَيْنَا، فَلَمَّا رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِ النَّجَاشِيِّ سَلَّمْنَا عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْنَا. فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّا كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَيْكَ فَتَرُدُّ عَلَيْنَا. قَالَ: إِنَّ فِي الصَّلاَةِ شُغْلاً. فَقُلْتُ لإِبْرَاهِيْمَ: كَيْفَ

को दूसरा शुग़्ल होता है। सुलैमान आ'मश ने बयान किया कि मैंने इब्राहीम नख़ई से पूछा ऐसे मौक़ा पर आप किया करते हैं? उन्होंने कहा कि मैं दिल में जवाब दे देता हूँ। (राजेअ : 1199)

تَصْنَعُ أَنْتَ؟ قَالَ: أَرُدُّ فِي نَفْسِي))

[راجع: ١١٩٩]

ये हदीष किताबुस्सलात में गुज़र चुकी है, इस बाब में उसे हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) इसलिये लाए कि उसमें हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के हब्शा से लौटने का बयान है।

3876. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) की हिजरते मदीना की इत्तिलाअ मिली तो हम यमन में थे। फिर हम कश्ती पर सवार हुए लेकिन इत्तिफ़ाक़ से हवा ने हमारी कश्ती का रुख़ नज्जाशी के मुल्क हब्श की तरफ़ कर दिया। हमारी मुलाक़ात वहाँ जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) से हुई (जो हिजरत करके वहाँ मौजूद थे) हम उन्हीं के साथ वहाँ ठहरे रहे, फिर मदीना का रुख़ किया और आँहज़रत (ﷺ) से उस वक़्त मुलाक़ात हुई जब आप ख़ैबर फ़तह कर चुके थे, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमने ऐ कश्ती वालों! दो हिजरतें की हैं। (राजेअ : 3136)

٣٨٧٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بَلَغَنَا مَخْرَجُ النَّبِيِّ ﷺ وَنَحْنُ بِالْيَمَنِ، فَرَكِبْنَا سَفِينَةً، فَأَلْقَتْنَا سَفِينَتُنَا إِلَى النَّجَاشِيِّ بِالْحَبَشَةِ، فَوَافَقْنَا جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، فَأَقَمْنَا مَعَهُ حَتَّى قَدِمْنَا، فَوَافَقْنَا النَّبِيَّ ﷺ حِينَ افْتَتَحَ خَيْبَرَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((لَكُمْ أَنْتُمْ يَا أَهْلَ السَّفِينَةِ هِجْرَتَانِ)).

[راجع: ٣١٣٦]

एक मक्का से हब्श को दूसरी हब्श से मदीना को। मुस्लिम की रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने ख़ैबर के माले ग़नीमत में से उन लोगों को हिस्सा नहीं दिलाया था जो इस लड़ाई में शरीक न थे मगर हमारी कश्ती वालों को हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब के साथ हिस्सा दिला दिया।

बाब 38 : हब्श के बादशाह नज्जाशी की वफ़ात का बयान

٣٨- بَابُ مَوتِ النَّجَاشِيِّ

3877. हमसे अबू रबीआ सुलैमान बिन दाऊद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अता बिन अबी रिबाह ने और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि जिस दिन नज्जाशी (हब्शा के बादशाह) की वफ़ात हुई तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, आज एक नेक मर्द इस दुनिया से चला गया, उठो और अपने भाई अस्हमा की नमाज़े जनाज़ा पढ़ लो। (राजेअ : 1317)

٣٨٧٧- حَدَّثَنَا أَبُو الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ حِينَ مَاتَ النَّجَاشِيُّ : ((مَاتَ الْيَوْمَ رَجُلٌ صَالِحٌ، فَقُومُوا فَصَلُّوا عَلَى أَخِيكُمْ أَصْحَمَةَ)).

[راجع: ١٣١٧]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि नज्जाशी मुसलमान हो गया था। जैसा कि दूसरी रिवायत में मज़्कूर है मगर इमाम बुख़ारी (रह) अपनी शर्त पर न होने की वजह से उस रिवायत को यहाँ नहीं लाए और ये बाब जो क़ायम किया और इसमें जो हदीष बयान की उससे भी उसका इस्लाम लाना षाबित हुआ। इस हदीष से नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना पढ़ना भी षाबित हुआ। जो लोग नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना के इंकारी हैं उनके पास मना की कोई सरीह सहीह हदीष मौजूद नहीं है। अस्हमा उसका लक़ब था असल नाम अतिया था।

3878. हमसे अ़ब्दुल आला बिन ह़म्माद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सईद बिन अबी अ़रूबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने नज्जाशी के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी थी और हम स़फ़ बाँधकर आप (ﷺ) के पीछे खड़े हुए। मैं दूसरी या तीसरी स़फ़ में था। (राजेअ़ : 1317)

٣٨٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ أَنَّ عَطَاءً حَدَّثَهُمْ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ صَلَّى عَلَى النَّجَاشِيِّ، فَصَفَّنَا وَرَاءَهُ، فَكُنْتُ فِي الصَّفِّ الثَّانِي أَوِ الثَّالِثِ. [راجع: ١٣١٧]

3879. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उनसे सुलैम बिन ह़य्यान ने, कहा हमसे सईद बिन मीनाअ ने बयान किया, उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अस़्हमा नज्जाशी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और चार बार आप (ﷺ) ने नमाज़ में तक्बीर कही। यज़ीद बिन हारून के साथ इस ह़दीष़ को अ़ब्दुस़्स़मद बिन अ़ब्दुल वारिष़ ने भी (सुलैम बिन ह़य्यान) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 1317)

٣٨٧٩- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ هَارُونَ عَنْ سَلِيْمِ بْنِ حَيَّانَ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مِيْنَاءَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى عَلَى أَصْحَمَةَ النَّجَاشِيِّ فَكَبَّرَ عَلَيْهِ أَرْبَعًا)). تَابَعَهُ عَبْدُ الصَّمَدِ.

[راجع: ١٣١٧]

3880. हमसे ज़ुबैर बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद (इब्राहीम बिन सअ़द) ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन कीसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान और सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ब्शा के बादशाह नज्जाशी की मौत की ख़बर उसी दिन दे दी थी जिस दिन उनका इंतिक़ाल हुआ था और आप (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अपने भाई की मग़्फ़िरत के लिये दुआ़ करो। (राजेअ़ : 1245)

٣٨٨٠- حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَابْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَعَى لَهُمُ النَّجَاشِيَّ صَاحِبَ الْحَبَشَةِ فِي الْيَوْمِ الَّذِيْ مَاتَ فِيْهِ، وَقَالَ: ((اسْتَغْفِرُوا لأَخِيْكُمْ)). [راجع: ١٢٤٥]

3881. और स़ालेह़ से रिवायत है कि इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने (नमाज़े जनाज़ा के लिये) ईदगाह में स़ह़ाबा (रज़ि.) को स़फ़बस्ता खड़ा किया और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी आप (ﷺ) ने चार मर्तबा तक्बीर कही थी।

٣٨٨١- وَعَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُمْ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ صَفَّ بِهِمْ فِي الْمُصَلَّى فَصَلَّى عَلَيْهِ وَكَبَّرَ أَرْبَعًا)).

(राजेअ़ : 1245) [راجع: ١٢٤٥]

इन तमाम अहादीष़ में किसी न किसी त़रह ह़ब्शा का ज़िक्र है इसीलिये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) इन अह़ादीष़ को यहाँ लाए। इन तमाम अहादीष़ से नज्जाशी का नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना पढ़ा जाना भी ष़ाबित होते है अगरचे कुछ ह़ज़रात ने यहाँ मुख़्तलिफ़ तावीलें की हैं मगर उनमें कोई वज़न नहीं है स़ह़ीह़ वही है जो ज़ाहिर रिवायात के मन्क़ूला अल्फ़ाज़ से ष़ाबित होता है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

बाब 39 : नबी करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ मुश्रिकीन का अ़हद व पैमान करना

٣٩- بَابُ تَقَاسُمِ الْمُشْرِكِيْنَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

तश्रीह : हुआ ये कि जब क़ुरैश ने देखा कि आप (ﷺ) के अस्ह़ाब अमन की जगह या'नी मुल्के ह़ब्श पहुँच गये और इधर उ़मर (रज़ि.) ने इस्लाम क़ुबूल किया चारों त़रफ़ इस्लाम फैलने लगा तो अ़दावत व ह़सद के जोश में उन्होंने एक इक़रारनामा तैयार किया जिसका मज़्मून ये था कि बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब से निकाह़, ख़रीद व फरोख़्त कोई मामला उस वक़्त तक न करें जब तक वो आँह़ज़रत (ﷺ) को हमारे ह़वाले न कर दें। ये इक़रारनामा लिखकर का'बा के अंदर लटकाया गया। एक मुद्दत के बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने जो बनी हाशिम के साथ एक दूसरी घाटी में रहते थे और जहाँ पर बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब को सख़्त तक्लीफ़ें हो रही थीं अबू त़ालिब अपने चचा से फ़र्माया कि उस इक़रारनामे को दीमक चाट गई स़िर्फ़ अल्लाह का नाम उसमें बाक़ी है। अबू त़ालिब ने क़ुरैश के कुफ्फ़ारों से कहा मेरा भतीजा ये कहता है कि तुम का'बा के अंदर उस इक़रारनामे को देखो अगर उसका बयाँ सच है तो हम मरने तक कभी इसको ह़वाले नहीं करने के और अगर उसका बयान झूठ निकले तो हम इसको तुम्हारे ह़वाले कर देंगे। तुम मारो या ज़िन्दा रखो जो चाहो करो। काफ़िरों ने का'बा खोला और उस इक़रार नामे को देखा तो वाक़ई सारे हुरूफ़ को दीमक चाट गई थी स़िर्फ़ अल्लाह का नाम बाक़ी था। उस वक़्त क्या कहने लगे अबू त़ालिब तुम्हारा भतीजा जादूगर है। कहते हैं जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने अबू त़ालिब को ये क़िस़्स़ा सुनाया तो उन्होंने पूछा तुमको कहाँ से मा'लूम हुआ। क्या तुमको अल्लाह ने ख़बर दी आपने फ़र्माया हाँ। (वह़ीदी)

7 नबवी में ये ह़ादष़ा पेश आया था तीन साल तक ये तर्के मवालात क़ायम रहा, उसके बाद अल्लाह ने अपने रसूले करीम (ﷺ) को उससे नजात बख़्शी जिसकी मुख़्तस़र कैफ़ियत ऊपर मज़्कूर हुई है।

3882. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब जंगे हुनैन का क़स्द किया तो फ़र्माया इंशाअल्लाह कल हमारा क़याम ख़ैफ़ बनी किनाना में होगा जहाँ मुश्रिकीन ने काफ़िर रहने के लिये अ़हदो—पैमान किया था।

(राजेअ़ : 1579)

٣٨٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ حِيْنَ أَرَادَ حُنَيْنًا: ((مَنْزِلُنَا غَدًا - إِنْ شَاءَ اللهُ - بَنِي كِنَانَةَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ)). [راجع: ١٥٨٩]

बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि मुश्रिकीन ने ख़ैफ़ बनी किनाना में कुफ़्र पर पुख़्तगी का अ़हद किया था जिसे अल्लाह ने बाद में टुकड़े-टुकड़े करा दिया और उनकी नस्लें इस्लाम में दाख़िल हो गईं।

बाब 40 : अबू त़ालिब का वाक़िया

٤٠- بَابُ قِصَّةِ أَبِي طَالِبٍ

ये आँहज़रत (ﷺ) के सगे चचा थे। आप (ﷺ) के वालिद माजिद अब्दुल्लाह के हक़ीक़ी भाई। ये जब तक ज़िन्दा रहे आप (ﷺ) की पूरी हिमायत और हिफ़ाज़त करते रहे मगर क़ौमी पासदारी की वजह से इस्लाम क़ुबूल करना नसीब नहीं हुआ।

3883. हमसे मुसद्दद ने बयान किया। कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन उमैर ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन हारिष़ ने बयान किया, उनसे हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा आप (ﷺ) अपने चचा (अबू तालिब) के क्या काम आए कि वो आप (ﷺ) की हिमायत किया करते थे और आप (ﷺ) के लिये गुस्सा होते थे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया (इसी वजह से) वो सिर्फ़ टख़नों तक जहन्नम में हैं अगर मैं उनकी सिफ़ारिश न करता तो वो दोज़ख़ की तह में बिलकुल नीचे होते। (दीगर मक़ाम : 6208, 6572)

٣٨٨٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: مَا أَغْنَيْتَ عَنْ عَمِّكَ، فَوَ اللهِ كَانَ يَحُوطُكَ وَيَغْضَبُ لَكَ، قَالَ: ((هُوَ فِي ضَحْضَاحٍ مِنْ نَارٍ، وَلَوْ لاَ أَنَا لَكَانَ فِي الدَّرْكِ الأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ)).

[طرفاه في : ٦٢٠٨، ٦٥٧٢].

3884. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें उनके वालिद मुसय्यिब बिन हज़्न सहाबी (रज़ि.) ने कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो नबी करीम (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ ले गये उस वक़्त वहाँ अबू जहल भी बैठा हुआ था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, चचा! कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह एक मर्तबा कह दीजिए, अल्लाह की बारगाह में (आपकी बख़्शिश के लिये) एक यही दलील मेरे हाथ आ जाएगी, इस पर अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या ने कहा, ऐ अबू तालिब! क्या अ़ब्दुल मुत्तलिब के दीन से तुम फिर जाओगे! ये दोनों उन ही पर ज़ोर देते रहे और आख़िरी कलिमा जो उनकी ज़ुबान से निकला, वो ये था कि मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब के दीन पर क़ायम हूँ। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उनके लिये उस वक़्त तक दुआए मग़्फ़िरत करता रहूँगा जब तक मुझे इससे मना न कर दिया जाएगा। चुनाँचे (सूरह बरात में) ये आयत नाज़िल हुई, नबी के लिये और मुसलमानों के लिये मुनासिब नहीं कि मुश्रिकीन के लिये दुआ-ए-मग़्फ़िरत करें ख़्वाह उनके नाते वाले ही क्यूँ न हों जबकि उनके सामने ये बात वाज़ेह हो गई कि वो दोज़ख़ी हैं, और सूरह क़सस में ये आयत नाज़िल हुई, बेशक जिसे आप चाहे हिदायत नहीं कर सकते।

٣٨٨٤- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ أَبَا طَالِبٍ لَمَّا حَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ دَخَلَ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ- وَعِنْدَهُ أَبُو جَهْلٍ - فَقَالَ: ((أَيْ عَمِّ، قُلْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ كَلِمَةً أُحَاجُّ لَكَ بِهَا عِنْدَ اللهِ)). فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ: يَا أَبَا طَالِبٍ، تَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ؟ فَلَمْ يَزَالاَ يُكَلِّمَانِهِ حَتَّى قَالَ آخِرَ شَيْءٍ كَلَّمَهُمْ بِهِ: عَلَى مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ، مَا لَمْ أُنْهَ عَنْهُ)). فَنَزَلَتْ: ﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَى مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ﴾ [التوبة: ١١٣]، ونزلت: ﴿إِنَّكَ لاَ

(राजेअ़ : 1360)

تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ﴾ [القصص : ٥٦].

[راجع: ١٣٦٠]

3885. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने इल्हाद ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) की मज्लिस में आप (ﷺ) के चचा का ज़िक्र हो रहा था तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया शायद क़यामत के दिन उन्हें मेरी शफ़ाअ़त काम आ जाए और उन्हें सिर्फ़ टख़नों तक जहन्नम में रखा जाए जिससे उनका दिमाग़ खौलेगा।

٣٨٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنَا ابْنُ الْهَادِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ - وَذُكِرَ عِنْدَهُ عَمُّهُ فَقَالَ: ((لَعَلَّهُ تَنْفَعُهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُجْعَلُ فِي ضَحْضَاحٍ مِنَ النَّارِ يَبْلُغُ كَعْبَيْهِ يَغْلِي مِنْهُ دِمَاغُهُ)). حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ

रिवायत में अबू त़ालिब का ज़िक्र है यही बाब से मुनासबत की वजह है।

हमसे इब्राहीम बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबू ह़ाज़िम और दरावर्दी ने बयान किया यज़ीद से इसी मज़्कूरा ह़दीष़ की त़रह, अल्बत्ता इस रिवायत में ये भी है कि अबू त़ालिब के दिमाग़ का भेजा उससे खौलेगा। (दीगर मक़ाम : 6564)

حَمْزَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ وَالدَّرَاوَرْدِيُّ عَنْ يَزِيْدَ بِهَذَا وَقَالَ: تَغْلِي مِنْهُ أُمُّ دِمَاغِهِ.

[طرفه في : ٦٥٦٤].

बाब 41 : बैतुल मक़्दिस तक जाने का क़िस्सा

٤١- بَابُ حَدِيْثِ الإِسْرَاءِ، وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلاً مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الأَقْصَى﴾

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया, पाक ज़ात है वो जो अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गया।

3886. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कि मुझसे कहा अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने कि मैंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया था कि जब क़ुरैश ने (मेअ़राज के वाक़िये के सिलसिले में) मुझको झुठलाया था तो मैं ह़त़ीम में खड़ा हो गया और अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिये बैतुल मक़्दिस को रोशन कर दिया और मैंने उसे देखकर क़ुरैश से उसके पते और निशान बयान करना शुरू कर दिये।

(दीगर मक़ाम : 4710)

٣٨٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِالرَّحْمَنِ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَمَّا كَذَّبَنِي قُرَيْشٌ قُمْتُ فِي الْحِجْرِ تَجَلَّى اللهُ لِي بَيْتَ الْمَقْدِسِ، فَطَفِقْتُ أُخْبِرُهُمْ عَنْ آيَاتِهِ، وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَيْهِ)).

[طرفه في : ٤٧١٠].

तश्रीह : मेअ़राज की रात को आप (ﷺ) उम्मे हानी के घर में थे, तो मस्जिदे हराम से हरम की ज़मीन मुराद है। आप (ﷺ) का मेअ़राज मक्का से बैतुल मक़्दिस तक तो क़त्ई है। जो क़ुर्आन पाक से षाबित है इसका मुंकिर क़ुर्आन का मुंकिर है और क़ुर्आन का मुंकिर काफ़िर है और बैतुल मक़्दिस से आसमानों तक जाना सहीह हदीष से षाबित है इसका मुंकिर गुमराह और बिदअ़ती है। हाफ़िज़ ने कहा अकषर उ़लम-ए-सलफ़ और अहले हदीष का ये क़ौल है कि ये मेअ़राज जिस्म और रूह दोनों के साथ बेदारी में हुआ। यही अम्रे हक़ है। बैहक़ी की रिवायत में यूँ है कि आप (ﷺ) ने जब मेअ़राज का क़िस्सा बयान किया तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने इंकार किया और अबूबक्र (रज़ि.) के पास आए उन्होंने आप (ﷺ) की तस्दीक़ कर दी उस दिन से उनका लक़ब सिद्दीक़ (रज़ि.) हो गया। बज़्ज़ार ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है कि बैतुल मक़्दिस की मस्जिद लाई गई और अ़क़ील के घर के पास रख दी गई। मैं उसको देखता जाता और उसकी सिफ़त बयान करता जाता था। कुछ ने कहा कि इसरा और मेअ़राज दोनों अलग अलग रातों में हुए हैं क्योंकि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने दोनों को अलग अलग बाबों में बयान किया है मगर ख़ुद हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने किताबुस्सलात में ये बाब बाँधा है कि लैलतुल इसरा मे नमाज़ किस तरह फ़र्ज़ हुई। मा'लूम हुआ कि इसरा और मेअ़राज एक ही रात में हुए हैं।

बाब 42 : मेअ़राज का बयान

٤٢ - بَابُ الْمِعْرَاجِ

तश्रीह : लफ़्ज़े मेअ़राज अ़रज यअ़रुजु से है जिसके मा'नी चढ़ने के हैं यहाँ आँहज़रत (ﷺ) का आसमानों की तरफ़ चढ़ना मुराद है। ये मुअजिज़ा 27 रजब 10 नबवी में पेश आया जबकि अल्लाह पाक ने रातों रात अपने बन्दे को मस्जिदे हराम से बैतुल मक़्दिस और बैतुल मक़्दिस से आसमानों की सैर कराई जैसा कि तफ़्सील के साथ यहाँ हदीष में वाक़ियात मौजूद हैं। सहीह यही है कि इसरा और मेअ़राज दोनों हालते बेदारी में जिस्म और रूह दोनों के साथ हुए और ये ऐसा अहम और मुस्तनद वाक़िया है जिसे 28 सहाबियों ने रिवायत किया है और आँहज़रत (ﷺ) का ये वो मुअजिज़ा है जो आप (ﷺ) की सारे अंबिया पर फ़ौक़ियत षाबित करता है।

3887. हमसे हदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे हज़रत मालिक बिन सअ़सअ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उनसे शबे मेअ़राज का वाक़िया बयान किया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं हतीम में लटा हुआ था। कुछ दफ़ा क़तादा ने हतीम के बजाय हिज्र बयान किया कि मेरे पास एक साहब (जिब्रईल अ़लैहि.) आए और मेरा सीना चाक किया, क़तादा ने बयान किया कि मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि यहाँ से यहाँ तक। मैंने जारूद से सुना जो मेरे क़रीब ही बैठे थे। पूछा कि हज़रत अनस (रज़ि.) की इस लफ़्ज़ से क्या मुराद थी? तो उन्होंने कहा कि हलक़ से नाफ़ तक चाक किया, (क़तादा ने बयान किया कि) मैंने हज़रत अनस से सुना, उन्होंने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) के सीने के ऊपर से नाफ़ तक चाक किया, फिर मेरा दिल निकाला और एक सोने का तश्त लाया गया जो ईमान से भरा

٣٨٨٧- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا هَمَّامُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ مَالِكِ بْنِ صَعْصَعَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ نَبِيَّ اللهِ حَدَّثَهُمْ عَنْ لَيْلَةِ أُسْرِيَ بِهِ قَالَ: ((بَيْنَمَا أَنَا فِي الْحَطِيْمِ - وَرُبَّمَا قَالَ فِي الْحِجْرِ - مُضْطَجِعًا، إِذْ أَتَانِي آتٍ فَقَدَّ - قَالَ: وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: فَشَقَّ - مَا بَيْنَ هَذِهِ إِلَى هَذِهِ)). فَقُلْتُ لِلْجَارُودِ وَهُوَ إِلَى جَنْبِي: مَا يَعْنِي بِهِ؟ قَالَ: مِنْ ثُغْرَةِ نَحْرِهِ إِلَى شِعْرَتِهِ - وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ مِنْ قَصِّهِ إِلَى شِعْرَتِهِ - ((فَاسْتَخْرَجَ قَلْبِي، ثُمَّ أُتِيْتُ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ مَمْلُوءَةٍ إِيْمَانًا، فَغُسِلَ قَلْبِي، ثُمَّ

हुआ था, उससे मेरा दिल धोया गया और पहले की त़रह़ रख दिया गया। उसके बाद एक जानवर लाया गया जो घोड़े से छोटा और गधे से बड़ा था और सफ़ेद! जारूद ने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा अबू ह़म्ज़ा! क्या वो बुर्राक़ था? आपने फ़र्माया कि हाँ। उसका हर क़दम उसके मुंतहा-ए-नज़र पर पड़ता था (आँह़ज़रत ﷺ ने फ़र्माया कि) मुझे उस पर सवार किया गया और जिब्रईल मुझे लेकर चले आसमाने दुनिया पर पहुँचे तो दरवाज़ा खुलवाया, पूछा गया कौन स़ाह़ब हैं? उन्होंने बताया कि जिब्रईल (अ़लैहि.), पूछा गया और आपके साथ कौन स़ाह़ब है? आपने बताया कि मुह़म्मद (ﷺ) पूछा गया, क्या उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ। इस पर आवाज़ आई उन्हें ख़ुश आमदीद! क्या ही मुबारक आने वाले हैं वो, और दरवाज़ा खोल दिया। जब मैं अंदर गया तो मैंने वहाँ आदम (अ़लैहि.) को देखा, जिब्रईल (अ़लैहि.) ने फ़र्माया ये आपके जद्दे अमजद आदम (अ़लैहि.) हैं, उन्ह सलाम कीजिए। मैंने उनको सलाम किया और उन्होंने जवाब दिया और फ़र्माया ख़ुश आमदीद नेक बेटे और नेक नबी! जिब्रईल (अ़लैहि.) ऊपर चढ़े और दूसरे आसमान पर आए वहाँ भी दरवाज़ा खुलवाया, आवाज़ आई कौन स़ाह़ब आए हैं? बताया कि ज़िब्रईल (अ़लैहि.), पूछा गया क्या आपके साथ और कोई स़ाह़ब भी हैं? कहा मुह़म्मद (ﷺ), पूछा गया क्या आपको उन्हें बुलाने के लिये भेजा गया था? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ, फिर आवाज़ आई, उन्हे ख़ुश आमदीद। क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो। फिर दरवाज़ा खुला और मैं अंदर गया तो वहाँ यह्या और ईसा (अ़लैहि.) मौजूद थे। ये दोनों ख़ालाज़ाद भाई हैं। जिब्रईल (अ़लैहि.) ने फ़र्माया ये ईसा और यह्या (अ़लैहि.) हैं, इन्हें सलाम कीजिए मैंने सलाम किया और उन ह़ज़रात ने मरे सलाम का जवाब दिया और फ़र्माया ख़ुश आमदीद नेक नबी और नेक भाई! यहाँ से जिब्रइल (अ़लैहि.) मुझे तीसरे आसमान की त़रफ़ लेकर चढ़े और दरवाज़ा खुलवाया। पूछा गया कौन स़ाह़ब आए हैं? जवाब दिया कि जिब्रइल (अ़लैहि.)। पूछा गया और आपके साथ कौन स़ाह़ब आए हैं? जवाब दिया कि मुह़म्मद (ﷺ) पूछा गया क्या उन्हें लाने के लिये आपको भेजा गया था?

حُشِيَ، ثُمَّ أُتِيتُ بِدَابَّةٍ دُونَ الْبَغْلِ وَفَوقَ الْحِمَارِ أَبْيَضَ)) - فَقَالَ لَهُ الْجَارُودُ : هُوَ الْبُرَاقُ يَا أَبَا حَمْزَةَ؟ قَالَ أَنَسٌ : نَعَمْ - يَضَعُ خَطْوَهُ عِنْدَ أَقْصَى طَرْفِهِ، فَحُمِلْتُ عَلَيْهِ، فَانْطَلَقَ بِي جِبْرِيلُ حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الدُّنْيَا فَاسْتَفْتَحَ، فَقِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ : مَرْحَبًا بِهِ، فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَفَتَحَ. فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا فِيهَا آدَمُ، فَقَالَ: هَذَا أَبُوكَ آدَمُ، فَسَلِّمْ عَلَيْهِ. فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ السَّلاَمَ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالاِبْنِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الثَّانِيَةَ فَاسْتَفْتَحَ. قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ، فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَفَتَحَ. فَلَمَّا خَلَصْتُ إِذَا يَحْيَى وَعِيسَى وَهُمَا ابْنَا الْخَالَةِ. قَالَ: هَذَا يَحْيَى وَعِيسَى فَسَلِّمْ عَلَيْهِمَا، فَسَلَّمْتُ، فَرَدَّا، ثُمَّ قَالاَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ بِي إِلَى السَّمَاءِ الثَّالِثَةِ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ، قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرْسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَفُتِحَ، فَلَمَّا خَلَصْتُ إِذَا يُوسُفُ، قَالَ: هَذَا

जवाब दिया कि हाँ। इस पर आवाज़ आई उन्हें खुश आमदीद। क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो, दरवाज़ा खुला और जब मैं अंदर दाख़िला हुआ तो वहाँ यूसुफ़ (अलैहि.) मौजूद थे। जिब्रइल (अलैहि.) ने फ़र्माया ये यूसुफ़ (अलैहि.) हैं इन्हें सलाम कीजिए। मैंने सलाम किया तो उन्होंने जवाब दिया और फ़र्माया खुश आमदीद नेक नबी और नेक भाई! फिर जिब्रइल (अलैहि.) मुझे लेकर ऊपर चढ़े और चौथे आसमान पर पहुँचे दरवाज़ा खुलवाया तो पूछा गया कौन साहब हैं? बताया कि जिब्रईल (अलैहि.)! पूछा गया और आपके साथ कौन है? कहा कि मुहम्मद (ﷺ) पूछा क्या इन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? जवाब दिया कि हाँ कहा कि उन्हें ख़ुश आमदीद क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो! अब दरवाज़ा खुला जब मैं वहाँ पहुँचा तो जिब्रईल (अलैहि.) ने फ़र्माया ये इदरीस (अलैहि.) हैं इन्हें सलाम कीजिए, मैंने उन्हें सलाम किया और उन्होंने जवाब दिया और फ़र्माया खुश आमदीद पाक भाई और नेक नबी। फिर मुझे लेकर पाँचवें आसमान पर आए और दरवाज़ा खुलवाया पूछा गया कौन साहब हैं? जवाब दिया कि जिब्रईल (अलैहि.), पूछा गया आपके साथ कौन साहब आए हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ), पूछा गया कि इन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? जवाब दिया कि हाँ अब आवाज़ आई खुश आमदीद! क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो, यहाँ तक मैं हारून (अलैहि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो जिब्रईल (अलैहि.) ने बताया कि आप हारून (अलैहि.) हैं, इन्हें सलाम कीजिए, मैंने उन्हें सलाम किया उन्होंने जवाब के बाद फ़र्माया ख़ुश आमदीद नेक नबी और नेक भाई! यहाँ से लेकर मुझे आगे बढ़े और छठे आसमान पर पहुँचे और दरवाज़ा खुलवाया। पूछा गया कौन साहब आए हैं? बताया कि जिब्रईल (अलैहि.), आपके साथ कोई दूसरे साहब भी आए हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ) पूछा गया क्या उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? जवाब दिया कि हाँ। फिर कहा उन्हें ख़ुश आमदीद क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो। मैं जब वहाँ मूसा (अलैहि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो जिब्रईल (अलैहि.) ने फ़र्माया कि ये मूसा (अलैहि.) हैं इन्हें सलाम कीजिए, मैंने सलाम किया और उन्होंने जवाब के बाद फ़र्माया, ख़ुश आमदीद नेक नबी

يُوسُفُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ النَّبِيِّ وَالصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الرَّابِعَةَ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ : مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ : مُحَمَّدٌ. قِيلَ : وَقَدْ أُرسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ : نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيْءُ جَاءَ. فَفُتِحَ. فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا إِدْرِيسُ، قَالَ : هَذَا إِدْرِيسُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ الْخَامِسَةَ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ : وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ : مُحَمَّدٌ ﷺ. قِيلَ : قَدْ أُرسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قِيلَ: مَرْحَبًا بِهِ فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا هَارُونُ. قَالَ : هَذَا هَارُونُ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ : مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ صَعِدَ بِي حَتَّى أَتَى السَّمَاءَ السَّادِسَةَ فَاسْتَفْتَحَ، قِيلَ : مَنْ هَذَا؟ قَالَ : جِبْرِيلُ. قِيلَ: مَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ أُرسِلَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: مَرْحَبًا بِهِ، فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا مُوسَى، قَالَ: هَذَا مُوسَى فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِالأَخِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. فَلَمَّا تَجَاوَزْتُ بَكَى. قِيلَ لَهُ : مَا يُبْكِيكَ؟ قَالَ: أَبْكِي

और नेक भाई! जब मैं आगे बढ़ा तो वो रोने लगे किसी ने पूछा कि आप क्यों रो रहे हैं? तो उन्होंने फ़र्माया कि मैं इस पर रो रहा हूँ कि ये लड़का मेरे बाद नबी बनाकर भेजा गया लेकिन जन्नत में इसकी उम्मत के लोग मेरी उम्मत से ज़्यादा होंगे। फिर जिब्राईल (अलैहि.) मुझे लेकर सातवें आसमान की तरफ़ गये और दरवाज़ा खुलवाया। पूछा गया कौन साहब आए हैं? जवाब दिया कि जिब्राईल (अलैहि.)। पूछा गया और आपके साथ कौन साहब आए हैं? जवाब दिया कि जिब्राईल (अलैहि.)। पूछा आपके साथ कौन साहब हैं? जवाब दिया कि मुहम्मद (ﷺ) पूछा गया क्या उन्हें बुलाने के लिये आपको भेजा गया था? जवाब दिया कि हाँ। कहा कि उन्हें ख़ुश आमदीद, क्या ही अच्छे आने वाले हैं वो, मैं जब अंदर गया तो इब्राहीम (अलैहि.) तशरीफ़ रखते थे। जिब्राइल (अलैहि.) ने फ़र्माया कि ये आपके जद्दे अमजद हैं, उन्हें सलाम कीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उनको सलाम किया तो उन्होंने जवाब दिया और फ़र्माया खुश आमदीद नेक नबी और नेक बेटे! फिर सिदरतुल मुन्तहा को मेरे सामने कर दिया गया, मैंने देखा कि उसके फल मुक़ाम हिज्र के मटकों की तरह (बड़े बड़े) थे और उसके पत्ते हाथिया के कान की तरह थे। जिब्राईल (अलैहि.) ने फ़र्माया कि ये सिदरतुल मुन्तहा है। वहाँ मैंने चार नहरें देखीं दो बातिनी और दो ज़ाहिरी। मैंने पूछा ऐ जिब्राईल (अलैहि.)!ये क्या हैं? उन्होंने बताया कि जो दो बातिनी नहरें हैं वो जन्नत से ता'ल्लुक़ रखती हैं और दो ज़ाहिरी नहरें नील और फ़रात हैं। फिर मेरे सामने बैतुल मअ़मूर को लाया गया, वहाँ मेरे सामने एक गिलास मे शराब एक में दूध और एक में शहद लाया गया। मैंने दूध का गिलास ले लिया तो जिब्राईल (अलैहि.) ने फ़र्माया यही फ़ित़रत है और आप इस पर क़ायम हैं और आपकी उम्मत भी! फिर मुझ पर रोज़ाना पचास नमाज़ें फ़र्ज़ की गईं मैं वापस हुआ और मूसा (अलैहि.) के पास से गुज़रा तो उन्होंने पूछा किस चीज़ का आप (ﷺ) को हुक्म हुआ? मैंने कहा कि रोज़ाना पचास वक़्त की नमाज़ों का, मूसा (अलैहि.) ने फ़र्माया लेकिन आपकी उम्मत में इतनी ताक़त नहीं है। इससे पहले मेरा वास्ता लोगों से पड़ चुका है और बनी इस्राईल का मुझे तल्ख़ तजुर्बा है। इसलिये आप अपने रब के हुज़ूर में दोबारा जाइये और अपनी उम्मत पर

لأنَّ غُلَامًا بُعِثَ بَعْدِي يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِهِ أَكْثَرُ مِمَّنْ يَدْخُلُهَا مِنْ أُمَّتِي. ثُمَّ صَعِدَ بِي إِلَى السَّمَاءِ السَّابِعَةِ، فَاسْتَفْتَحَ جِبْرِيلُ، قِيلَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ. قِيلَ: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ. قِيلَ: وَقَدْ بُعِثَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: مَرْحَبًا بِهِ، فَنِعْمَ الْمَجِيءُ جَاءَ. فَلَمَّا خَلَصْتُ فَإِذَا إِبْرَاهِيمُ، قَالَ: هَذَا أَبُوكَ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ. قَالَ سَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَرَدَّ السَّلَامَ، قَالَ : مَرْحَبًا بِالِابْنِ الصَّالِحِ وَالنَّبِيِّ الصَّالِحِ. ثُمَّ رُفِعَتْ لِي سِدْرَةُ الْمُنْتَهَى، فَإِذَا نَبْقُهَا مِثْلُ قِلَالِ هَجَرٍ، وَإِذَا وَرَقُهَا مِثْلُ آذَانِ الْفِيلَةِ. قَالَ: هَذِهِ سِدْرَةُ الْمُنْتَهَى، وَعَذَا أَرْبَعَةُ أَنْهَارٍ: نَهْرَانِ بَاطِنَانِ، وَنَهْرَانِ ظَاهِرَانِ. فَقُلْتُ: مَا هَذَانِ يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ : أَمَّا الْبَاطِنَانِ فَنَهْرَانِ فِي الْجَنَّةِ، وَأَمَّا الظَّاهِرَانِ فَالنِّيلُ وَالْفُرَاتُ. ثُمَّ رُفِعَ لِي الْبَيْتُ الْمَعْمُورُ. ثُمَّ أُتِيتُ بِإِنَاءٍ مِنْ خَمْرٍ وَإِنَاءٍ مِنْ لَبَنٍ وَإِنَاءٍ مِنْ عَسَلٍ، فَأَخَذْتُ اللَّبَنَ، فَقَالَ: هِيَ الْفِطْرَةُ أَنْتَ عَلَيْهَا وَأُمَّتُكَ. ثُمَّ فُرِضَتْ عَلَيَّ الصَّلَوَاتُ خَمْسِينَ صَلَاةً كُلَّ يَوْمٍ، فَرَجَعْتُ فَمَرَرْتُ عَلَى مُوسَى، فَقَالَ: بِمَا أُمِرْتَ؟ قَالَ: أُمِرْتُ بِخَمْسِينَ صَلَاةً كُلَّ يَوْمٍ. قَالَ: إِنَّ أُمَّتَكَ لَا تَسْتَطِيعُ خَمْسِينَ صَلَاةً كُلَّ يَوْمٍ، وَإِنِّي وَاللَّهِ قَدْ جَرَّبْتُ النَّاسَ قَبْلَكَ، وَعَالَجْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَشَدَّ الْمُعَالَجَةِ، فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ

तख़्फ़ीफ़ के लिये अ़र्ज़ कीजिए। चुनाँचे मैं अल्लाह तआ़ला के दरबार में दोबारा हाज़िर हुआ और तख़्फ़ीफ़ के लिये अ़र्ज़ की तो दस वक़्त की नमाज़ें कम कर दी गईं। फिर मै जब वापसी में मूसा (अ़लैहि.) के पास से गुज़रा तो उन्होंने फिर वही सवाल किया मैं दोबारा बारगाहे रब्बे तआ़ला में हाज़िर हुआ और इस मर्तबा भी दस वक़्त की नमाज़ कम हुईं। फिर मैं मूसा (अ़लैहि.) के पास से गुज़रा तो उन्होंने वही मुतालबा किया, मैंने इस मर्तबा भी बारगाहे रब्बे तआ़ला में हाज़िर होकर दस वक़्त की नमाज़ें कम कराईं। मूसा (अ़लैहि.) के पास से फिर गुज़रा और इस मर्तबा भी उन्होंने अपनी राय का इज़्हार किया फिर बारगाहे इलाही में हाज़िर हुआ तो मुझे दस वक़्त की नमाज़ों का हुक्म हुआ मैं वापस होने लगा तो आपने फिर वही कहा अब बारगाहे इलाही में हाज़िर हुआ तो रोज़ाना सिर्फ़ पाँच वक़्त की नमाज़ों का हुक्म बाक़ी रहा। मूसा (अ़लैहि.) के पास आया तो आपने दरयाफ़्त फ़र्माया अब क्या हुक्म हुआ? मैंने हज़रत मूसा (अ़लैहि.) को बताया कि रोज़ाना पाँच वक़्त की नमाज़ों का हुक्म हुआ है। फ़र्माया कि आपकी उम्मत इसकी भी ताक़त नहीं रखती मेरा वास्ता आपसे पहले लोगों का हो चुका है और बनी इस्राईल का मुझे तल्ख तजुर्बा है। अपने रब के दरबार में फिर हाज़िर होकर तख़्फ़ीफ़ के लिये अ़र्ज़ कीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया रब्बे तआ़ला से मैं बहुत सवाल कर चुका और अब मुझे शर्म आती है। अब मैं बस उसी पर राज़ी हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर जब मैं वहाँ से गुज़रने लगा तो निदा आई, मैंने अपना फ़रीज़ा जारी कर दिया और अपने बन्दों पर तख़्फ़ीफ़ कर चुका। (राजेअ़ : 3207)

فَاسْأَلْهُ التَّخْفِيْفَ لأُمَّتِكَ، فَرَجَعْتُ، فَوَضَعَ عَنِّي عَشْرًا، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ. فَرَجَعْتُ فَوَضَعَ عَنِّي عَشْرًا، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ. فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ فَرَجَعْتُ فَوَضَعَ عَنِّيْ عَشْرًا فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ فَرَجَعْتُ فَوَضَعَ عَنِّيْ عَشْرًا فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ مِثْلَهُ فَرَجَعْتُ فَأُمِرْتُ بِعَشْرِ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ فَرَجَعْتُ فَقَالَ مِثْلَهُ. فَرَجَعْتُ فَأُمِرْتُ بِخَمْسِ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ، فَرَجَعْتُ إِلَى مُوسَى فَقَالَ: بِمَا أُمِرْتَ؟ قُلْتُ: أُمِرْتُ بِخَمْسِ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ. قَالَ: إِنَّ أُمَّتَكَ لاَ تَسْتَطِيْعُ خَمْسَ صَلَوَاتٍ كُلَّ يَوْمٍ وَإِنِّي قَدْ جَرَّبْتُ النَّاسَ قَبْلَكَ وَعَالَجْتُ بَنِي إِسْرَائِيْلَ أَشَدَّ الْمُعَالَجَةِ، فَارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ التَّخْفِيْفَ لأُمَّتِكَ. قَالَ: سَأَلْتُ رَبِّي حَتَّى اسْتَحْيَيْتُ، وَلَكِنْ أَرْضَى وَأُسَلِّمُ. قَالَ: فَلَمَّا جَاوَزْتُ نَادَانِي مُنَادٍ: أَمْضَيْتُ فَرِيْضَتِي، وَخَفَّفْتُ عَنْ عِبَادِيْ)).

[راجع: ٣٢٠٧]

तश्रीह : रिवायत में लफ़्ज़ बुर्राक़ ज़म्मा बा के साथ है और बरक़ से मुश्तक़ है जो बिजली के मा'नों में है वो एक ख़च्चर या घोड़े की शक्ल का जानवर है जो आँहज़रत (ﷺ) की सवारी के लिये लाया गया था जिसकी रफ़्तार बिजली से भी तेज़ थी, इसीलिये उसे बुर्राक़ कहा गया। हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि.) पहले आपको बैतुल मक़्दिस में ले गये, **व रबतहुल्बुर्राक़ु बिल्हल्क़तिल्लती युर्बुतु बिहल्अम्बियाउ बिबाबिल्मस्जिदि तौशीख** या'नी वहाँ बुर्राक़ को उस मस्जिद के दरवाज़े पर उस हल्क़ा से बाँधा जिससे पहले अंबिया अपनी सवारियों को बाँधा करते थे फिर वहाँ दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी उसके बाद आसमानों का सफ़र शुरू हुआ।

रिवायत में हज़रत मूसा (अ़लैहि.) के रोने का ज़िक्र है, ये रोना महज़ अपनी उम्मत के लिये रहमत के तौर पर था **क़ालल्उलमाउ लम यकुन बुकाउ मूसा हसदन मआ़ज़ल्लाह फइन्नल्हसद फी ज़ालिकल्आलमि मन्ज़ूउन मिन अहादिल्मूमिनीन फकैफ़ बिमनिस्तफ़ाहुल्लाहु तआ़ला तौशीह** या'नी उलमा ने कहा उनका रोना मआ़ज़ अल्लाह हसद

की बिना पर नहीं था आलमे आख़िरत में हसद का माद्दा तो हर मा'मूली मोमिन के दिल से भी दूर कर दिया जाएगा लिहाज़ा ये कैसे मुम्किन है कि हज़रत मूसा (अलैहि.) जैसा बरगुज़ीदा नबी हसद कर सके। हज़रत मूसा (अलैहि.) ने आँहज़रत (ﷺ) को लफ़्ज़े गुलाम से ता'बीर किया जो आप (ﷺ) की ता'ज़ीम के तौर पर था **व क़द युत्लकुल्गुलामु व युरादु बिहित्तरिय्युशबाबु** या'नी कभी लफ़्ज़े गुलाम का इत्लाक़ ताक़तवर नौजवान मर्द पर भी किया जाता है और यहाँ यही मुराद है (लम्आत)। हज़रत शैख़ मुल्ला अली क़ारी (रह) ने फ़र्माया कि **हाज़त्तर्तीबु अल्लज़ी वक़अ फ़ी हाज़ल्हदीषि हुव अस्सह्हुरिवायति व अर्जहुहा** या'नी अंबिया किराम की मुलाक़ात जिस तर्तीब के साथ इस रिवायत में मज़्कूर हुई है यही ज़्यादा सहीह है और इसी को तरजीह हासिल है। तर्तीब को मुकर्रर शाऐक़ीने हदीष याद फ़र्मा लें कि पहले आसमान पर हज़रत आदम (अलैहि.) से मुलाक़ात हुई, दूसरे आसमान पर हज़रत यह्या और ईसा (अलैहि.) से, तीसरे आसमान पर हज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) से मुलाक़ात हुई, चौथे आसमान पर इदरीस (अलैहि.) से, पाँचवें पर हज़रत हारून (अलैहि.) से और छठे पर हज़रत मूसा (अलैहि.) से, सातवें पर हज़रत इब्राहीम (अलैहि.) से शर्फ़े मुलाक़ात हासिल हुआ।

रिवायत में लफ़्ज़े सिरदतुल मुन्तहा मज़्कूर हुआ है। लफ़्ज़े सिदरत बेरी के पेड़ को कहते हैं, **व सुम्मियत बिहा लिअन्न इल्मल्मलाइकति यन्तही इलैहा व लम यताजवज़्हा अहदुन इल्ला रसूलुल्लाहि (ﷺ) व हुकिय अन अब्दिल्लाहि इब्नि मस्ऊदिन रज़ि. अन्नहा सुम्मियत बिज़ालिक लिकौनि यन्तही इलैहा मा यहबितु मिन फौक़िहा व मा यस्अदु मिन तहतिहा** (मिर्क़ात)। या'नी उसका ये नाम इसलिये हुआ कि फ़रिश्तों की मा'लूमात उस पर ख़त्म हो जाती हैं और उस जगह से आगे किसी का गुज़र नहीं हो सका है ये शर्फ़ सिर्फ़ सय्यदना मुहम्मदुर्रसूलल्लाह (ﷺ) को हासिल हुआ कि आप उससे भी आगे गुज़र गये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से मरवी है कि उसका ये नाम इसलिये रखा गया कि ऊपर से नीचे आने वाली और नीचे से ऊपर जाने वाली हर चीज़ इंतिहा यहाँ ख़त्म हो जाती है।

रिवायत में लफ़्ज़े बैतुल मअमूर आया है, जो का'बा मुकर्रमा के मुक़ाबिल सातवें आसमान पर आसमान वालों का क़िब्ला है और जैसी ज़मीन पर का'बा शरीफ़ की हुर्मत है। ऐसे ही आसमानों पर बैतुल मअमूर की हुर्मत है। लफ़्ज़े फ़ितरत से मुराद इस्लाम और उस पर इस्तिक़ामत है। आप (ﷺ) के सामने नहरों का ज़िक्र आया, **व फ़ी शर्हि मुस्लिम क़ाल इब्नु मुक़ातिल अल्बातिनानि हुवस्सल्सबील वल्कौषर वज़्ज़ाहिर अन्नन्नील वल्फरात यख़रूजानि मिन अस्लिहा षुम्म यसीरानि हैषु अरादल्लाहु तआला षुम्म यख़रूजानि मिनल्अर्ज़ि व यसीरानि फ़ीहा व हाज़ा ला यम्नउहू शरउन व ला अक़्लुन व हुव ज़ाहिरुल्हदीष फवजबल्मसीरु इलैहि मिर्क़ात** या'नी दो बातिनी नहरों से मुराद सलसबील और कौषर हैं और दो ज़ाहिरी नहरों से मुराद नील और फ़रात हैं जो उसकी जड़ से निकलती हैं फिर अल्लाह तआला जहाँ चाहता है वहाँ वहाँ वो फैलती हैं फिर वो नील व फ़रात ज़मीन पर ज़ाहिर होकर चलती हैं। ये न अक़्ल के ख़िलाफ़ है न शरअ के और हदीष का ज़ाहिर मफ़्हूम भी यही है जिसको तस्लीम करना ज़रूरी है। नमाज़ के बारे में आँहज़रत (ﷺ) की बमश्वरा हज़रत मूसा (अलैहि.) बार बार मुराजिअत तख़्फ़ीफ़ के लिये थी। अल्लाह पाक ने शुरू में पचास वक़्त की नमाज़ों का हुक्म फ़र्माया, मगर इस बार बार दरख़्वास्त करने पर अल्लाह ने रहम फ़र्माकर सिर्फ़ पाँच वक़्त की नमाज़ों को रखा मगर षवाब के लिये वही पचास का हुक्म क़ायम रहा इसलिये कि उम्मते मुहम्मदिया की ख़ुसूसियात में से है कि उसको एक नेकी का दस गुना षवाब मिलता है।

वाक़िया मेअराज के बहुत से असरार व हुक्म हैं जिनको हुज्जतुल हिन्द शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी (रह) ने अपनी मशहूर किताब हुज्जतिल्लाहिल बालिग़ा में बड़ी तफ़्सील के साथ बयान किया है। अहले इल्म को उनका मुतालआ ज़रूरी है इस मुख़्तसर मे उस तत्वील की गुंजाइश नहीं है। अल्लाह पाक क़यामत के दिन मुझ हक़ीर फ़क़ीर, सर से पैर तक गुनाहगार ख़ादिम मुतर्जिम को और तमाम क़द्रदाने कलामे हबीब पाक (ﷺ) को अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़र्माकर अपने हबीब (ﷺ) के लेवा-ए-हम्द के नीचे जमा फ़र्माए आमीन या रब्बल आलमीन।

3888. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.)

٣٨٨٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عَمْرٌو عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا فِي قَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلاَّ فِتْنَةً لِلنَّاسِ﴾ [الإسراء: ٦٠]. قَالَ: هِيَ رُؤْيَا عَيْنٍ أُرِيَهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ إِلَى بَيْتِ الْمَقْدِسِ. قَالَ: ((وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ قَالَ هِيَ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ)).
[طرفاه في : ٤٧١٦، ٦٦١٣].

ने अल्लाह तआला के इर्शाद, वमा जअल्नर्रूयल्लती अरयनाका इल्ला फ़ित्नतल लिन्नास (और जो रूइया मैंने आप ﷺ को दिखाया उससे मक़्सद सिर्फ़ लोगों का इम्तिहान था) फ़र्माया कि इसमे रूइया से आँख से देखना ही मुराद है। जो रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस मेअ़राज की रात में दिखाया गया था जिसमें आप (ﷺ) को बैतुल मक़्दिस तक ले जाया गया था और क़ुर्आन मजीद में अश्शजरतुल मल्ऊना का ज़िक्र आया है वो थूहर का पेड़ है। (दीगर मक़ाम : 4716, 6613)

ये पेड़ दोज़ख़ में पैदा होगा अगरचे दुनियावी थूहर की तरह होगा मगर ज़हर और तल्ख़ी में इस क़दर ख़तरनाक होगा जो अहले दोज़ख़ के पेट और आंतों को फाड़ देगा, गले में फंस जाएगा। उसके पत्ते अजगर सांपों के फनों की तरह होंगे। यही मल्ऊन पेड़ है जिसका ज़िक्र क़ुर्आन मजीद में आया है।

٤٣- بَابُ وُفُودِ الأَنْصَارِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِمَكَّةَ، وَبَيْعَةِ الْعَقَبَةِ

बाब 43 : मक्का में नबी करीम (ﷺ) के पास अंसार के वफ़ूद का आना और बेअ़ते उ़क़्बा का बयान

٣٨٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ ح. وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا عَنْبَسَةُ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ كَعْبٍ - وَكَانَ قَائِدَ كَعْبٍ حِينَ عَمِيَ - قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُ حِينَ تَخَلَّفَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ بِطُولِهِ، قَالَ ابْنُ بُكَيْرٍ فِي حَدِيثِهِ ((وَلَقَدْ شَهِدْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لَيْلَةَ الْعَقَبَةِ حِينَ تَوَاثَقْنَا عَلَى الإِسْلاَمِ، وَمَا أُحِبُّ أَنَّ لِي بِهَا مَشْهَدَ بَدْرٍ، وَإِنْ كَانَتْ بَدْرٌ أَذْكَرَ فِي النَّاسِ مِنْهَا)). [راجع: ٢٧٥٧]

3889. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने (दूसरी सनद), इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्बसा बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने ख़बर दी और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने जब वो नाबीना हो गये तो वो चलते फिरते वक़्त उनको पकड़कर ले चलते थे, उन्होंने बयान किया कि मैंने कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि वो ग़ज़्व-ए-तबूक़ में शरीक न होने का त़वील वाक़िया बयान करते थे इब्ने बुकैर ने अपनी रिवायत में बयान किया कि ह़ज़रत कअ़ब ने कहा कि मैं नबी करीम (ﷺ) के पास अ़क़बा की रात में हाज़िर था जब हमने इस्लाम पर क़ायम रहने का पुख़्ता अ़हद किया था, मेरे नज़दीक (लैलतुल अ़क़बा की बेअ़त) बद्र की लड़ाई में ह़ाज़री से भी ज़्यादा पसन्द है अगरचे लोगों में बद्र का चर्चा इससे ज़्यादा है। (राजेअ़ : 2757)

तश्रीह : जंगे बद्र अव्वल जंग है जो मुसलमानों ने काफ़िरों से की उसमें काफ़िरों के बड़े बड़े सरदार लोग क़त्ल हुए। लैलतुल अक़बा का ज़िक्र ऊपर हो चुका है। ये वो रात थी जिसमें अंसार ने आँहज़रत (ﷺ) की रिफ़ाक़त (साथ देने का) का क़तई अहद किया था और आप (ﷺ) ने अंसार के बारह नक़ीब मुक़र्रर किये थे। ये एक तारीख़ी रात थी जिसमें कुव्वते इस्लाम की बुनियाद क़ायम हुई और आँहज़रत (ﷺ) को दिली सकून हासिल हुआ इसीलिये कअ़ब (रज़ि.) ने उसमें शरीक होना जंगे बद्र में शरीक होने से भी बेहतर समझा।

हदीष़ में अ़क़बा का ज़िक्र है। अ़क़बा घाटी को कहते हैं, ये घाटी मुक़ामुल हिरा और मिना के बीच फैले ऊँचे पहाड़ों के बीच थी, इसी जगह मदीना के बारह लोगों ने 12वीं नुबुव्वत में रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िरी का शर्फ़ हासिल किया और मुसलमान हुए, यह पहली बेअ़ते अ़क़बा कहलाती है। उन लोगों की ता'लीम के लिये आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत मुसअ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) को उनके साथ मदीना भेज दिया था जो बड़े ही अमीर घराने के लाडले बेटे थे। मगर इस्लाम कुबूल करने के बाद उन्हों ने दुनियावी ऐ़शो–आराम सब भुला दिया, मदीना में उन्होंने बड़ी कामयाबी हासिल की। ये वहाँ असअ़द बिन ज़ुरारह के घर ठहरे थे। अगले साल 13 नुबुव्वत में 73 मर्द और दो औरतें यष़्रिब से चलकर मक्का आए और उसी घाटी में उनको दरबारे रिसालत में शर्फ़े बारयाबी हासिल हुआ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनको अपने नूरानी वा'ज़ से मुनव्वर फ़र्माया और उन लोगों ने आँहज़रत (ﷺ) से मदीना तशरीफ़ लाने की दरख़्वास्त की। आप (ﷺ) ने उस दरख़्वास्त को कुबूल फ़र्माया जिसे सुनकर ये सब बेहद ख़ुश हुए और आप (ﷺ) के दस्ते मुबारक पर बेअ़त की। बरा बिन मअ़रूर (रज़ि.) पहले बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने उस रात सबसे पहले बेअ़त की थी, यही दूसरी बेअ़ते उ़क़्बा कहलाती है। उन हज़रात में से आँहज़रत (ﷺ) ने बारह अश्ख़ास को नक़ीब मुक़र्रर फ़र्माया जिस तरह हज़रत ईसा बिन मरयम (अलैहिस्सलाम) ने अपने लिये बारह नक़ीब मुक़र्रर किये थे आँहज़रत (ﷺ) के बारह नक़ीबों के अस्म-ए-गिरामी ये हैं :–

1. अस्अ़द बिन ज़ुरारह 2. राफ़ेअ़ बिन मालिक 3. उ़बादा बिन स़ामित 4. सअ़द बिन रबीअ़ा 5. मुंज़िर बिन अ़म्र 6. अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा 7. बराअ बिन मअ़रूर 8. अ़म्र बिन हराम 9. सअ़द बिन उ़बादा, इन सबका ता'ल्लुक़ क़बीला ख़ज़रज से था 10. उसैद बिन हुज़ैर 11. सअ़द बिन ख़ैष़मा 12. अबुल हशीम बिन तैहान ये तीनों क़बीला औस से थे, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन। या अल्लाह क़यामत के दिन इन सब बुज़ुर्गों के साथ हम गुनाहगारों का भी हश्र फ़र्माइयो आमीन।

3890. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि अ़म्र बिन दीनार कहा करते थे कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना उन्होंने बयान किया कि मेरे दो मामूं मुझे भी बेअ़ते अ़क़बा में साथ ले गये थे। अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि इब्ने उ़ययना ने बयान किया, उनसे से एक हज़रत बराअ बिन मअ़रूर (रज़ि.) थे। (दीगर मक़ाम : 3891)

٣٨٩٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: كَانَ عَمْرٌو يَقُولُ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: ((شَهِدَ بِي خَالاَيَ الْعَقَبَةَ)) قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: ((أَحَدُهُمَا الْبَرَاءُ بْنُ مَعْرُورٍ)). [طرفه في: ٣٨٩١].

जो सब अंसार से पहले मुसलमान हुए और सबसे पहले आँहज़रत (ﷺ) से बेअ़त की।

3891. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उनसे अ़ता ने बयान किया कि हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कहा मैं, मेरे वालिद और मेरे दो मामूं तीनों बेअ़ते अ़क़बा करने वालों में शरीक थे। (राजेअ़ : 3890)

٣٨٩١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ عَطَاءٌ قَالَ جَابِرٌ: ((أَنَا وَأَبِي وَخَالاَيَ مِنْ أَصْحَابِ الْعَقَبَةِ)). [راجع: ٣٨٩٠]

क़स्तलानी (रह) ने कहा कि जाबिर की माँ का नाम नसबा था उनका भाई ष़अलबा और अम्र थे। बराअ जाबिर के मामू न थे लेकिन उनकी माँ के अ़ज़ीज़ों में से थे और अ़रब के लोग माँ के सब अ़ज़ीज़ों को लफ़्ज़े ख़ाल (माम) से याद करते हैं।

٣٨٩٢- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو إِدْرِيسَ عَائِذُ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ((أَنَّ عُبَادَةَ بْنَ صَامِتٍ - مِنَ الَّذِينَ شَهِدُوا بَدْرًا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَمِنْ أَصْحَابِهِ لَيْلَةَ الْعَقَبَةِ - أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: وَحَوْلَهُ عِصَابَةٌ مِنْ أَصْحَابِهِ: ((تَعَالَوْا بَايِعُونِي عَلَى أَنْ لاَ تُشْرِكُوا بِاللهِ شَيْئًا، وَلاَ تَسْرِقُوا، وَلاَ تَزْنُوا، وَلاَ تَقْتُلُوا أَوْلاَدَكُمْ وَلاَ تَأْتُونَ بِبُهْتَانٍ تَفْتَرُونَهُ بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ، وَلاَ تَعْصُونِي فِي مَعْرُوفٍ. فَمَنْ وَفَى مِنْكُمْ فَأَجْرُهُ عَلَى اللهِ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَعُوقِبَ بِهِ فِي الدُّنْيَا فَهُوَ لَهُ كَفَّارَةٌ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَسَتَرَهُ اللهُ فَأَمْرُهُ إِلَى اللهِ، إِنْ شَاءَ عَاقَبَهُ، وَإِنْ شَاءَ عَفَا عَنْهُ))، قَالَ: فَبَايَعْنَاهُ عَلَى ذَلِكَ)). [راجع: ١٨]

3892. मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे हमारे भतीजे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उनके चचा ने बयान किया और उन्होंने कहा कि हमें अबू इदरीस आइज़ुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि हज़रत उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) उन स़हाबा में से थे जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ बद्र की लड़ाई में शिर्कत की थी और अ़क़बा की रात आँहज़रत (ﷺ) से अ़हद किया था, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उस वक़्त आपके पास स़हाबा की एक जमाअ़त थी, कि आओ मुझसे इस बात का अ़हद करो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराओगे, चोरी न करोगे, ज़िना न करोगे, अपनी औलाद को क़त्ल न करोगे, अपनी त़रफ़ से गढ़कर किसी पर तोहमत न लगाओगे और अच्छी बातों में मेरी नाफ़र्मानी न करोगे, पस जो शख़्स अपने इस अ़हद पर क़ायम रहेगा उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है और जिस शख़्स ने इसमें कमी की और अल्लाह तआ़ला ने उसे छुपा रहने दिया तो उसका मामला अल्लाह के इख़्तियार में है, चाहे तो उस पर सज़ा दे और चाहे तो माफ़ कर दे। हज़रत उ़बादा (रज़ि.) ने बयान किया चुनाँचे मैंने आँहज़रत (ﷺ) से उन उमूर पर बेअ़त की। (राजेअ़ : 18)

٣٨٩٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنِ الصُّنَابِحِيِّ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ : ((إِنِّي مِنَ النُّقَبَاءِ الَّذِينَ بَايَعُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَقَالَ: بَايَعْنَاهُ عَلَى

3893. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सईद ने, उनसे यज़ीद बिन अबी ह़बीब ने, उनसे अबुल ख़ैर मर्ष़द बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान सुनाबिही ने और उनसे उ़बाद बिन स़ामित (रज़ि.) ने बयान किया, मैं उन नक़ीबों से था जिन्होंने (अ़क़बा की रात में) रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी। आपने बयान किया कि हमने आँहज़रत (ﷺ) से इसका अ़हद किया था कि हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं करेंगे,

चोरी नहीं करेंगे, ज़िना नहीं करेंगे, किसी ऐसे शख़्स को क़त्ल नहीं करेंगे जिसका क़त्ल अल्लाह तआला ने हराम क़रार दिया है, लूट मार नहीं करेंगे और न अल्लाह की नाफ़र्मानी करेंगे। जन्नत के बदले में, अगर हम अपने इस अहद में पूरे उतरे। लेकिन अगर हमने उसमें कुछ ख़िलाफ़ किया तो उसका फ़ैसला अल्लाह पर है।
(राजेअ : 18)

أَنْ لاَ نُشْرِكَ بِاللهِ شَيْئًا، وَلاَ نَسْرِقَ، وَلاَ نَزْنِيَ، وَلاَ نَقْتُلَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ، وَلاَ نَنْتَهِبَ، وَلاَ نَقْضِيَ بِالْجَنَّةِ إِنْ فَعَلْنَا ذَلِكَ، فَإِنْ غَشِيْنَا مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا كَانَ قَضَاءُ ذَلِكَ إِلَى اللهِ».
[راجع: ١٨]

बाब 44 : हज़रत आइशा (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) का निकाह करना और आप (ﷺ) का मदीना में तशरीफ़ लाना और हज़रत आयशा (रज़ि.) की रुख़्सती का बयान

٤٤- بَابُ تَزْوِيجِ النَّبِيِّ ﷺ عَائِشَةَ، وَقُدُومِهِ الْمَدِينَةَ، وَبِنَائِهِ بِهَا

तश्रीह : हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की साहबज़ादी हैं। माँ का नाम उम्मे रूम्मान बिन्ते आमिर बिन उवैमिर है, हिजरत से तीन साल पहले 10 नबवी में आँहज़रत (ﷺ) से उनका अक़्द हुआ। शव्वाल 2 हिजरी में मदीना तय्यिबा में रुख़्सती अमल में आई, आप (ﷺ) की वफ़ात के वक़्त उनकी उम्र 18 साल की थी, बड़ी ज़बरदस्त आलिमा फ़ाज़िला थीं। 58 हिजरी या 57 हिजरी में रमज़ान 17 बुधवार की रात में वफ़ात पाई हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रात में बक़ीअ़े ग़रक़द में दफ़न की गईं। इस्लामी तारीख़ में इस ख़ातूने आज़म को बड़ी अहमियत हासिल है रज़ियल्लाहु अन्हा व अरज़ाहु।

3894. मुझसे फ़रवा बिन अबी अल् मुग़रा ने बयान किया, कहा हमसे अली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से मेरा निकाह जब हुआ तो मेरी उम्र छः साल की थी, फिर हम मदीना (हिजरत करके) आए और बनी हारिष बिन ख़ज़रज के यहाँ क़याम किया। यहाँ आकर मुझे बुख़ार हो गया और उसकी वजह से मेरे बाल झड़ने लगे। फिर मूँढों तक ख़ूब बाल हो गये फिर एक दिन मेरी वालिदा उम्मे रूम्मान (रज़ि.) आईं, उस वक़्त मैं अपनी चन्द सहेलियों के साथ झूला झूल रही थी उन्होंने मुझे पुकारा तो मैं हाज़िर हो गई। मुझे कुछ मा'लूम नहीं था कि मेरे साथ उनका क्या इरादा है। आख़िर उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर घर के दरवाज़े के पास खड़ा कर दिया और मेरा सांस फूला जा रहा था। थोड़ी देर में जब मुझे कुछ सुकून हुआ तो उन्होंने थोड़ा सा पानी लेकर मेरे मुँह और सर पर फेरा। फिर घर के अंदर मुझे ले गईं। वहाँ अंसार की चन्द औरतें मौजूद थीं, जिन्होंने मुझे देखकर दुआ दी कि ख़ैरो—बरकत और अच्छा नसीब लेकर आई हो, मेरी माँ ने मुझे उन्हें सौंप दिया और उन्होंने मेरी आराइश

٣٨٩٤- حَدَّثَنِي فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((تَزَوَّجَنِي النَّبِيُّ ﷺ وَأَنَا بِنْتُ سِتِّ سِنِينَ فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ فَنَزَلْنَا فِي بَنِي الْحَارِثِ بْنِ خَزْرَجٍ، فَوُعِكْتُ فَتَمَزَّقَ شَعَرِي، فَوَفَى جُمَيْمَةً، فَأَتَتْنِي أُمِّي أُمُّ رُومَانَ - وَإِنِّي لَفِي أُرْجُوحَةٍ وَمَعِي صَوَاحِبُ لِي - فَصَرَخَتْ بِي فَأَتَيْتُهَا، لاَ أَدْرِي مَا تُرِيدُ بِي، فَأَخَذَتْ بِيَدِي حَتَّى أَوْقَفَتْنِي عَلَى بَابِ الدَّارِ، وَإِنِّي لأُنْهِجُ حَتَّى سَكَنَ بَعْضُ نَفَسِي. ثُمَّ أَخَذَتْ شَيْئًا مِنْ مَاءٍ فَمَسَحَتْ بِهِ وَجْهِي وَرَأْسِي، ثُمَّ أَدْخَلَتْنِي الدَّارَ،

فَإِذَا نِسْوَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ فِي الْبَيْتِ، فَقُلْنَ: عَلَى الْخَيْرِ وَالْبَرَكَةِ، وَعَلَى خَيْرِ طَائِرٍ. فَأَسْلَمَتْنِي إِلَيْهِنَّ، فَأَصْلَحْنَ مِنْ شَأْنِي، فَلَمْ يَرُعْنِي إِلاَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ ضُحًى فَأَسْلَمَتْنِي إِلَيْهِ، وَأَنَا يَوْمَئِذٍ بِنْتُ تِسْعِ سِنِينَ)). [أطرافه في: ٣٨٩٦، ٥١٣٣، ٥١٣٤، ٥١٥٦، ٥١٥٨، ٥١٦٠].

की। उसके बाद दिन चढ़े अचानक रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए और हुज़ूर (ﷺ) ने ख़ुद मुझे सलाम किया मेरी उम्र उस वक़्त नौ साल थी।

(दीगर मक़ाम : 3896, 5133, 5134, 5156, 5160)

तश्रीह : हिजाज़ चूँकि गर्म मुल्क है इसलिये वहाँ क़ुदरती तौर पर लड़के और लड़कियाँ बहुत कम उम्र में बालिग़ हो जाती हैं। इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) की रुख़्सती के वक़्त सिर्फ़ नौ साल की उम्र तअज्जुब ख़ेज़ नहीं है। इमाम अहमद की रिवायत में यूँ है कि मैं घर के अंदर गई तो देखा कि आँहज़रत (ﷺ) एक चारपाई पर बैठे हुए हैं आप (ﷺ) के पास अंसार के कई मर्द और औरतें हैं उन औरतों ने मुझको आँहज़रत (ﷺ) की गोद में बिठा दिया और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये आप (ﷺ) की बीवी हैं, अल्लाह मुबारक करे। फिर वो सब मकान से चली गईं। ये मिलाप शव्वाल 2 हिजरी में हुआ।

٣٨٩٥- حَدَّثَنَا مُعَلًّى حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهَا : أُرِيتُكِ فِي الْمَنَامِ مَرَّتَيْنِ، أَرَى أَنَّكِ فِي سَرَقَةٍ مِنْ حَرِيْرٍ، وَيُقَالُ هَذِهِ امْرَأَتُكَ فَاكْشِفْ، فَإِذَا هِيَ أَنْتِ، فَأَقُولُ: إِنْ يَكُ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللهِ يُمْضِهِ)). [أطرافه في: ٥٠٧٨، ٥١٢٥، ٧٠١١، ٧٠١٢].

3895. हमसे मुअल्ला बिन उसैद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम मुझे दो मर्तबा ख़्वाब में दिखाई गई हो। मैंने देखा कि तुम एक रेशमी कपड़े में लिपटी हुई हो और कहा जा रहा है कि ये आप (ﷺ) की बीवी हैं, उनका चेहरा खोलिये। मैंने चेहरा खोलकर देखा तो तुम थीं, मैंने सोचा कि अगर ये ख़्वाब अल्लाह तआला की जानिब से है तो वो ख़ुद इसको पूरा कर देगा।

(दीगर मक़ाम : 5078, 5125, 7011, 7012)

٣٨٩٦- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((تُوُفِّيَتْ خَدِيْجَةُ قَبْلَ مَخْرَجِ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى الْمَدِيْنَةِ بِثَلاَثِ سِنِيْنَ، فَلَبِثَ سَنَتَيْنِ أَوْ قَرِيْبًا مِنْ ذَلِكَ، وَنَكَحَ عَائِشَةَ وَهِيَ بِنْتُ سِتِّ سِنِيْنَ، ثُمَّ بَنَى بِهَا وَهِيَ بِنْتُ تِسْعِ سِنِيْنَ)). [راجع: ٣٨٩٤]

3896. मुझसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद (उर्वा बिन ज़ुबैर) ने बयान किया कि हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की वफ़ात नबी करीम (ﷺ) की मदीना हिजरत से तीन साल पहले हो गई थी। आँहज़रत (ﷺ) ने आप (ﷺ) की वफ़ात के तक़रीबन दो साल बाद हज़रत आयशा (रज़ि.) से निकाह किया उस वक़्त उनकी उम्र छः साल थी जब रुख़्सती हुई तो वो नौ साल की थीं। (राजेअ : 3894)

बाब 45 : नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के अस्हाबे किराम का मदीना की तरफ़ हिजरत करना

٤٥- بَابُ هِجْرَةِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ

हज़रात अब्दुल्लाह बिन ज़ैद और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि अगर हिजरत की फ़ज़ीलत न होती तो मैं अंसार का एक आदमी बनकर रहना पसन्द करता और हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि मैंने ख़्वाब देखा कि मैं मक्का से एक ऐसी ज़मीन की तरफ़ हिजरत करके जा रहा हूँ कि जहाँ खजूर के बाग़ात बकष़रत हैं, मेरा ज़हन उससे यमामा या हजर की तरफ़ गया, लेकिन ये ज़मीन शहरे यष़्रिब की थी।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَيْدٍ وَأَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ لاَ الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الأَنْصَارِ)). وقال أبو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أُهَاجِرُ مِنْ مَكَّةَ إِلَى أَرْضٍ بِهَا نَخْلٌ، فَذَهَبَ وَهَلِي إِلَى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوْ هَجَرٌ، فَإِذَا هِيَ الْمَدِينَةُ يَثْرِبُ)).

3897. हमसे (अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर) हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अअ़मश ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू वाईल शक़ीक़ बिन सलमा से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम ख़ब्बाब बिन अरम (रज़ि.) की अ़यादत के लिये गए तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) के साथ हमने स़िर्फ़ अल्लाह की ख़ुशनूदी हास़िल करने के लिये हिजरत की थी, अल्लाह तआ़ला हमें उसका अज्र देगा। फिर हमारे बहुत से साथी इस दुनिया से उठ गये और उन्होंने (दुनिया में) अपने आमाल का फल नहीं देखा। उन्हीं में हज़रत मुस़अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) उहुद की लड़ाई में शहीद किये गये थे और स़िर्फ़ एक धारीदार चादर छोड़ी थी। (कफ़न देते वक़्त) जब हम उनकी चादर से उनका सर ढांकते तो पाँव खुल जाते और पाँव ढाँकते तो सर खुल जाता। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया कि उनका सर ढाँक दें और पाँव पर इज़्ख़र घास डाल दें। (ताकि छुप जाए) और हममें ऐसे भी हैं कि (इस दुनिया में भी) उनके आ़माल का मेवा पक गया, पस वो उसको चुन रहे हैं।

(राजेअ़ : 1286)

٣٨٩٧- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ يَقُولُ: ((عُدْنَا خَبَّابًا فَقَالَ: هَاجَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُرِيْدُ وَجْهَ اللهِ، فَوَقَعَ أَجْرُنَا عَلَى اللهِ، فَمِنَّا مَنْ مَضَى لَمْ يَأْخُذْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا مِنْهُمْ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ، قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ نَمِرَةً، فَكُنَّا إِذَا غَطَّيْنَا بِهَا رَأْسَهُ بَدَتْ رِجْلاَهُ، وَإِذَا غَطَّيْنَا رِجْلَيْهِ بَدَا رَأْسُهُ، فَأَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نُغَطِّي رَأْسَهُ وَنَجْعَلَ عَلَى رِجْلَيْهِ شَيْئًا مِنْ إِذْخِرٍ. وَمِنَّا مَنْ أَيْنَعَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ فَهُوَ يَهْدِبُهَا)).

[راجع: ١٢٧٦]

मतलब ये है कि कुछ लोग तो ग़नीमत और दुनिया का माल व अस्बाब मिलने से पहले गुज़र चुके हैं और कुछ ज़िन्दा रहे, उनका मेवा ख़ूब फला फूला या'नी दीन के साथ उन्होंने इस्लामी तरक़्क़ी व कुशादगी का दौर भी देखा और वो आराम व राहत की ज़िन्दगी भी पा गये। सच है इन्ना मअ़ल उ़स्रि युस्रा बेशक तंगी के बाद आसानी होती है।

3898. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे

٣٨٩٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ

ابْنُ زَيْدٍ عَنْ يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَقَّاصٍ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَرَاهُ يَقُولُ: ((الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا، أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا، فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ، وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ ﷺ)). [راجع: ١]

हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा बिन अबी वक़्क़ास ने, बयान किया कि मैंने ह़ज़रत उमर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि आमाल निय्यत पर मौक़ूफ़ हैं । पस जिसका मक़्सदे हिजरत दुनिया कमाना हो वो अपने मक़्सद को ह़ासिल कर सकेगा या मक़्सदे हिजरत किसी औरत से शादी करना हो तो वो भी अपने मक़्सद तक पहुँच जाएगा, लेकिन जिनका हिजरत से मक़्सद अल्लाह और उसके रसूल की रज़ामन्दी होगी तो उसी की हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिये समझी जाएगी। (राजेअ : 1)

ह़दीष़ में हिजरत का ज़िक्र है, इसलिये यहाँ लाई गई।

٣٨٩٩- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ يَزِيدَ الدِّمَشْقِيُّ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو عَمْرٍو الأَوْزَاعِيُّ عَنْ عَبْدَةَ بْنِ أَبِي لُبَابَةَ عَنْ مُجَاهِدِ بْنِ جَبْرٍ الْمَكِّيِّ ((أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَ يَقُولُ: لاَ هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَتْحِ)). [أطرافه في : ٤٣٠٩، ٤٣١٠، ٤٣١١].

3899. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन यज़ीद दमिश्क़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू अम्र औज़ाई ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दह बिन अबी लुबाबा ने बयान किया, उनसे मुजाहिद बिन जबर मक्की ने बयान किया कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) कहा करते थे कि फ़तहे मक्का के बाद (मक्का से मदीना की तरफ़) हिजरत बाक़ी न रही।

(दीगर मक़ाम : 4309, 4310, 4311)

तश्रीह : या'नी हिजरत की वो फ़ज़ीलत बाक़ी नहीं रही जो मक्का फ़तह होने से पहले थी, कुछ ने कहा इसका मत़लब ये है कि आँह़ज़रत (ﷺ) की त़रफ़ हिजरत नहीं रही उसका ये मत़लब नहीं है कि हिजरत का मशरूअ होना जाता रहा क्योंकि दारुल कुफ़्र से दारुल इस्लाम को हिजरत वाजिब है जब दीन में ख़लल पड़ने का डर हो। ये हुक्म क़यामत तक बाक़ी है और इस्माईली की रिवायत में इब्ने उ़मर (रज़ि.) से इसकी स़राह़त मौजूद है।

ह़ाफ़िज़ ने कहा ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के क़ौल से ये निकलता है कि हिजरत उस मुल्क से वाजिब है जहाँ पर अल्लाह की इ़बादत आज़ादी के साथ न हो सके वरना वाजिब नहीं। मावर्दी ने कहा अगर मुसलमान दारुल ह़रब में अपना दीन ज़ाहिर कर सकता है तो उसका हुक्म दारुल इस्लाम का सा होगा और वहाँ ठहरना हिजरत करने से अफ़ज़ल होगा क्योंकि वहाँ ठहरने से ये उम्मीद है कि दूसरे लोग भी इस्लाम में दाख़िल हों। (वह़ीदी)

٣٩٠٠- حَدَّثَنِي الأَوْزَاعِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ قَالَ: زُرْتُ عَائِشَةَ مَعَ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ اللَّيْثِيِّ، فَسَأَلْنَاهَا عَنِ الْهِجْرَةِ الْيَوْمَ فَقَالَتْ: كَانَ الْمُؤْمِنُونَ يَفِرُّ أَحَدُهُمْ بِدِينِهِ

3900. मुझसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन अबी रिबाह ने बयान किया कि उ़बैद बिन उ़मैर लैष़ी के साथ मैं ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और हमने उनसे फ़तहे मक्का के बाद हिजरत के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि एक वक़्त था जब मुसलमान अपने दीन की ह़िफ़ाज़त के लिये

अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ अहद करके आता था, उस ख़तरे की वजह से कि कहीं वो फ़ित्ना में न पड़ जाए लेकिन अब अल्लाह तआला ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया है और आज (सर ज़मीने अरब में) इंसान जहाँ भी चाहे अपने रब की इबादत कर सकता है, अल्बत्ता जिहाद और जिहाद की निय्यत का ष़वाब बाक़ी है। (राजेअ : 3080)

إِلَى اللهِ تَعَالَى إِلَى رَسُولِهِ ﷺ مَخَافَةَ أَنْ يُفْتَنَ عَلَيْهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَقَدْ أَظْهَرَ اللهُ الإِسْلاَمَ، وَالْيَوْمَ يَعْبُدُ رَبَّهُ حَيْثُ شَاءَ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ)).

[راجع: ٣٠٨٠]

3901. मुझसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा कि हिशाम ने बयान किया कि उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) ने कहा कि ऐ अल्लाह! तू जानता है कि उससे ज़्यादा मुझे और कोई चीज़ पसन्दीदा नहीं कि तेरे रास्ते में, मैं उस क़ौम से जिहाद करूँ जिसने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया और उन्हें (उनके वतन मक्का से) निकाला, ऐ अल्लाह! लेकिन ऐसा मा'लूम होता है कि तूने हमारे और उनके बीच लड़ाई का सिलसिला ख़त्म कर दिया है। और अबान बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि (ये अल्फ़ाज़ सअद रज़ि. फ़र्माते थे) मिन क़ौमिन कज़्ज़बू नबिय्यका व अख़रजूहू मिन क़ुरैश या'नी जिन्होंने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया, बाहर निकाल दिया। इससे क़ुरैश के काफ़िर मुराद हैं।

(राजेअ : 463)

٣٩٠١- حَدَّثَنِي زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ: هِشَامٌ: فَأَخْبَرَنِي أَبِي ((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ سَعْدًا قَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ أُجَاهِدَهُمْ فِيْكَ مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا رَسُولَكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَخْرَجُوهُ، اللَّهُمَّ فَإِنِّي أَظُنُّ أَنَّكَ قَدْ وَضَعْتَ الْحَرْبَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ)).

وَقَالَ أَبَانُ بْنُ يَزِيْدَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيْهِ أَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ: ((مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا نَبِيَّكَ وَأَخْرَجُوهُ مِنْ قُرَيْشٍ)).

[راجع: ٤٦٣]

ह़ज़रत सअद को ये गुमान हुआ कि जंगे अह़ज़ाब में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की पूरी त़ाक़त लग चुकी है और आख़िर में वो भाग निकले तो अब क़ुरैश में लड़ने की त़ाक़त नहीं रही। शायद अब हममें और उनमें जंग न हो।

3902. हमसे मत़र बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह़ ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को चालीस साल की उ़म्र में रसूल बनाया गया था। फिर आप (ﷺ) पर मक्का मुकर्रमा में तेरह साल तक वह़्य आती रही उसके बाद आप (ﷺ) को हिजरत का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) ने हिजरत की ह़ालत में दस साल गुज़ारे, (मदीना में) जब आप (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप (ﷺ) की उ़म्र 63 साल की थी।

٣٩٠٢- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا رَوْحٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بُعِثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَرْبَعِيْنَ سَنَةً، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ سَنَةً يُوحَى إِلَيْهِ، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ فَهَاجَرَ عَشْرَ سِنِيْنَ، وَمَاتَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّيْنَ)).

3903. मुझसे मत़र बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह़

٣٩٠٣- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا

बिन उबादा ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया बिन इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नुबुव्वत के बाद मक्का में 13 साल क़याम किया और जब आप (ﷺ) की वफ़ात हुईतो आप (ﷺ) की उम्र 63 साल की थी।

رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((مَكَثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ، وَتُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ)).

3904. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मालिक ने बयान किया, उनसे उमर बिन उबैदुल्लाह के मौला अबुन् नज़्र ने, उनसे उबैद या'नी इब्ने हुनैन ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर बैठे, फिर फ़र्माया अपने एक नेक बन्दे को अल्लाह तआ़ला ने इख़्तियार दिया कि दुनिया की नेअ़मतों में से जो वो चाहे उसे अपने लिये पसन्द कर ले या जो अल्लाह तआ़ला के यहाँ है (आख़िरत में) उसे पसन्द कर ले। उस बन्दे ने अल्लाह तआ़ला के यहाँ मिलने वाली चीज़ को पसन्द कर लिया। इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) रोने लगे और अ़र्ज़ किया हमारे माँ—बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हों। (हज़रत अबू सईद रज़ि. कहते हैं) हमें हज़रत अबूबक्र (रजि) के उस रोने पर हैरत हुई, कुछ लोगों ने कहा उन बुज़ुर्ग को देखिये, हुज़ूर (ﷺ) तो एक बन्दे के बारे में ख़बर दे रहे हैं जिसे अल्लाह तआ़ला ने दुनिया की नेअ़मतों और जो अल्लाह के पास है उसमें से किसी के पसन्द करने का इख़्तियार दिया था और ये कह रहे हैं कि हमारे माँ—बाप आप हुज़ूर पर फ़िदा हों। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ही को उन दो चीज़ों में से एक का इख़्तियार दिया गया और हज़रत अबूबक्र (रजि) हममें सबसे ज़्यादा इस बात से वाक़िफ़ थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि लोगों में सबसे ज़्यादा अपनी सुहबत और माल के ज़रिये मुझ पर सिर्फ़ एक अबूबक्र (रज़ि.) हैं अगर मैंने अपनी उम्मत में से किसी को ख़लील बना सकता तो अबूबक्र को बनाता अल्बत्ता इस्लामी रिश्ते उनके साथ काफ़ी है। मस्जिद में कोई दरवाज़ा खुला हुआ बाक़ी न रखा जाए सिवाए अबूबक्र (रज़ि.) के घर की तरफ़ खुलने वाले दरवाज़े के।

(राजेअ़ : 466)

٣٩٠٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ عُبَيْدٍ - يَعْنِي ابْنَ حُنَيْنٍ - عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ : إِنَّ عَبْدًا خَيَّرَهُ اللهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا مَا شَاءَ وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ مَا عِنْدَهُ. فَبَكَى أَبُو بَكْرٍ وَقَالَ: فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا. فَعَجِبْنَا لَهُ. وَقَالَ النَّاسُ: انْظُرُوا إِلَى هَذَا الشَّيْخِ، يُخْبِرُ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ عَبْدٍ خَيَّرَهُ اللهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، وَهُوَ يَقُولُ: فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا، فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ الْمُخَيَّرُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ هُوَ أَعْلَمَنَا بِهِ. وَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ أَمَنِّ النَّاسِ عَلَيَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَا لِهِ أَبَابَكْرٍ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً مِنْ أُمَّتِي لاَتَّخَذْتُ أَبَابَكْرٍ، إِلاَّ خُلَّةَ الإِسْلاَمِ، لاَ تُبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ خَوْخَةٌ إِلاَّ خَوْخَةَ أَبِي بَكْرٍ)).

[راجع: ٤٦٦]

तश्रीह : हुआ ये था कि मुसलमानों ने जो मस्जिदे नबवी के आसपास रहते थे अपने अपने घरों में एक एक खिड़की मस्जिद की तरफ़ खोल ली थी ताकि जल्दी से मस्जिद की तरफ़ चले जाएँ या जब चाहें आँहज़रत (ﷺ) की ज़ियारत अपने

घर ही से कर लें। आप (ﷺ) ने हुक्म दिया ये खिड़कियाँ सब बन्द कर दी जाएँ, सिर्फ़ अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की खिड़की क़ायम रहे। कुछ ने ये ह़दीष़ ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़त और मुतलक फ़ज़ीलत की दलील ठहराई है।

٣٩٠٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: ((لَمْ أَعْقِلْ أَبَوَيَّ قَطُّ إِلاَّ وَهُمَا يَدِينَانِ الدِّينَ، وَلَمْ يَمُرَّ عَلَيْنَا يَوْمٌ إِلاَّ يَأْتِينَا رَسُولُ اللهِ ﷺ طَرَفَيِ النَّهَارِ: بُكْرَةً وَعَشِيَّةً. فَلَمَّا ابْتُلِيَ الْمُسْلِمُونَ، خَرَجَ أَبُو بَكْرٍ مُهَاجِرًا نَحْوَ أَرْضِ الْحَبَشَةِ حَتَّى بَلَغَ بَرْكَ الْغِمَادِ لَقِيَهُ ابْنُ الدَّغِنَةِ - وَهُوَ سَيِّدُ الْقَارَةِ - فَقَالَ: أَيْنَ تُرِيدُ يَا أَبَا بَكْرٍ؟ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَخْرَجَنِي قَوْمِي فَأُرِيدُ أَنْ أَسِيحَ فِي الأَرْضِ وَأَعْبُدَ رَبِّي، قَالَ ابْنُ الدَّغِنَةِ: فَإِنَّ مِثْلَكَ يَا أَبَا بَكْرٍ لاَ يَخْرُجُ وَلاَ يُخْرَجُ، إِنَّكَ تَكْسِبُ الْمَعْدُومَ، وَتَصِلُ الرَّحِمَ، وَتَحْمِلُ الْكَلَّ، وَتَقْرِي الضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ. فَأَنَا لَكَ جَارٌ. ارْجِعْ وَاعْبُدْ رَبَّكَ بِبَلَدِكَ، فَرَجَعَ وَارْتَحَلَ مَعَهُ ابْنُ الدَّغِنَةِ، فَطَافَ ابْنُ الدَّغِنَةِ عَشِيَّةً فِي أَشْرَافِ قُرَيْشٍ فَقَالَ لَهُمْ : إِنَّ أَبَا بَكْرٍ لاَ يَخْرُجُ مِثْلُهُ وَلاَ يُخْرَجُ، أَتُخْرِجُونَ رَجُلاً يَكْسِبُ الْمَعْدُومَ، وَيَصِلُ الرَّحِمَ، وَيَحْمِلُ الْكَلَّ وَيَقْرِي الضَّيْفَ، وَيُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ؟ فَلَمْ تُكَذِّبْ قُرَيْشٌ بِجِوَارِ ابْنِ

3905. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने कि इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आ़यशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मैंने होश सम्भाला तो मैंने अपने माँ–बाप को दीने इस्लाम ही पर पाया और कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता था जिसमें रसूले करीम (ﷺ) हमारे घर सुबह्‌ व शाम दोनों वक़्त तशरीफ़ न लाते हों, फिर जब (मक्का में) मुसलमानों को सताया जाने लगा तो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ह़ब्शा की हिजरत का इरादा करके निकले। जब आप मक़ामे बरकुल ग़िमाद पर पहुँचे तो आप (रज़ि.) की मुलाक़ात इब्नुद् दग़ना से हुई जो क़बीला क़ारा का सरदार था। उसने पूछा अबूबक्र (रज़ि.)! कहाँ का इरादा है? उन्होंने कहा कि मेरी क़ौम ने मुझे निकाल दिया है अब मैंने इरादा कर लिया है कि मुल्क की सयाहत करूँ (और आज़ादी के साथ) अपने रब की इबादत करूँगा। इब्नुद्दग़िना ने कहा लेकिन अबूबक्र! तुम जैसे इंसान को अपने वतन से न ख़ुद निकलना चाहिये और न उसे निकाला जाना चाहिये। तुम मुह़ताजों की मदद करते हो, स़िलारहमी करते हो। बेकसों का बोझ उठाते हो, मेहमान नवाज़ी करते हो और ह़क़ पर क़ायम रहने की वजह से किसी पर आने वाली मुसीबतों में उसकी मदद करते हो, मैं तुम्हें पनाह देता हूँ वापस चलो और अपने शहर ही में अपने रब की इबादत करो। चुनाँचे वो वापस आ गये और इब्नुद्दग़िना भी आपके साथ वापस आया। उसके बाद इब्नुद्दग़िना क़ुरैश के तमाम सरदारों के यहाँ शाम के वक़्त गया और सबसे उसने कहा कि अबूबक्र (रज़ि.) जैसे शख़्स को न ख़ुद निकलना चाहिये और न उसे निकाला जाना चाहिये, क्या तुम ऐसे शख़्स को निकाल दोगे जो मुह़ताजों की इमदाद करता है, स़िलारहमी करता है, बेकसों का बोझ उठाता है, मेहमान नवाज़ी करता है और ह़क़ की वजह से किसी पर आने वाली मुसीबतों में उसकी मदद करता है? क़ुरैश ने इब्नुद्दग़िना की पनाह से इंकार नहीं किया सिर्फ़ इतना

कहा कि अबूबक्र (रज़ि.) से कह दो, कि अपने रब की इबादत अपने घर से अंदर ही किया करें, वहीं नमाज़ पढ़ें और जो जी चाहे वहीं पढ़ें, अपनी इबादात से हमें तकलीफ़ न पहुँचाएँ, उसका इज़्हार न करें क्योंकि हमें उसका डर है कि कहीं हमारी औरतें और बच्चे इस फ़ित्ने में न मुब्तला हो जाएँ ये बातें इब्नुद्दग़िना ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से भी आकर कह दीं कुछ दिनों तक तो आप इस पर क़ायम रहे और अपने घर के अंदर ही अपने रब की इबादत करते रहे, न नमाज़ बर सरे आम पढ़ते और न अपने घर के सिवा किसी और जगह तिलावते क़ुर्आन करते थे। लेकिन फिर उन्होंने कुछ सोचा और अपने घर के सामने नमाज़ पढ़ने के लिये एक जगह बनाई जहाँ आपने नमाज़ पढ़नी शुरू की और तिलावते क़ुर्आन भी वहीं करने लगे, नतीजा ये हुआ कि वहाँ मुश्रिकीन की औरतों और बच्चों का मज्मआ होने लगा। वो सब हैरत और पसन्दीदगी के साथ देखते रहा करते थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) बड़े नरम दिल इंसान थे। जब क़ुर्आन मजीद की तिलावत करते तो आंसुओं को रोक न सकते थे। इस सूरते हाल से मुश्रिकीने क़ुरैश के सरदार घबरा गये और उन्होंने इब्नुद्दग़िना को बुला भेजा, जब इब्नुद्दग़िना गया तो उन्होंने उससे कहा कि हमने अबूबक्र के लिये तुम्हारी पनाह इस शर्त के साथ तस्लीम की थी कि अपने रब की इबादत वो अपने घर के अंदर किया करें लेकिन उन्होंने शर्त की ख़िलाफ़वर्ज़ी की है और अपने घर के सामने नमाज़ पढ़ने के लिये एक जगह बनाकर बर सरे आम नमाज़ पढ़ने और तिलावते क़ुर्आन करने लगे हैं। हमे उसका डर है कि कहीं हमारी औरतें और बच्चे फ़ित्ने में न मुब्तला हो जाएँ इसलिये तुम उन्हें रोक दो। अगर उन्हें ये शर्त मंज़ूर हो कि अपने रब की इबादत सिर्फ़ अपने घर के अंदर ही किया करें तो वो ऐसा कर सकते हैं लेकिन अगर वो इज़्हार ही करें तो उनसे कहो कि तुम्हारी पनाह वापस दे दें, क्योंकि हमें ये पसन्द नहीं है कि तुम्हारी दी हुई पनाह में हम दख़लअंदाज़ी करें। लेकिन अबूबक्र (रजि) के उस इज़्हार को भी हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर इब्नुद्दग़िना अबूबक्र (रज़ि.) के यहाँ आया और कहा कि जिस शर्त के साथ मैंने आपके साथ अहद किया था वो आपको मा'लूम

الدَّغِنَةِ، وَقَالُوا لابْنِ الدَّغِنَةِ : مُرْ أَبَا بَكْرٍ فَلْيَعْبُدْ رَبَّهُ فِي دَارِهِ، فَلْيُصَلِّ فِيهَا وَلْيَقْرَأْ مَا شَاءَ، وَلاَ يُؤْذِينَا بِذَلِكَ وَلاَ يَسْتَعْلِنْ بِهِ، فَإِنَّا نَخْشَى أَنْ يَفْتِنَ نِسَاءَنَا وَأَبْنَاءَنَا. فَقَالَ ذَلِكَ ابْنُ الدَّغِنَةِ لأَبِي بَكْرٍ، فَلَبِثَ أَبُو بَكْرٍ بِذَلِكَ يَعْبُدُ رَبَّهُ فِيْ دَارِهِ وَ لاَ يَسْتَعْلِنُ بِصَلاَتِهِ وَلاَ يَقْرَأُ فِيْ غَيْرِ دَارِهِ ثُمَّ بَدَا لأَبِيْ بَكْرٍ فَابْتَنَى مَسْجِدًا بِفِنَاءِ دَارِهِ وَكَانَ يُصَلِّي فِيهِ وَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ فَيَنْقَذِفُ عَلَيْهِ نِسَاءُ الْمُشْرِكِينَ أَبْنَاؤُهُمْ وَهُمْ يَعْجَبُونَ مِنْهُ وَيَنْظُرُونَ إِلَيْهِ. وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ رَجُلاً بَكَّاءً لاَ يَمْلِكُ عَيْنَيْهِ إِذَا قَرَأَ الْقُرْآنَ، فَأَفْزَعَ ذَلِكَ أَشْرَافَ قُرَيْشٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ، فَأَرْسَلُوا إِلَى ابْنِ الدَّغِنَةِ، فَقَدِمَ عَلَيْهِمْ، فَقَالُوا: إِنَّا كُنَّا أَجَرْنَا أَبَا بَكْرٍ بِجِوَارِكَ عَلَى أَنْ يَعْبُدَ رَبَّهُ فِي دَارِهِ، فَقَدْ جَاوَزَ ذَلِكَ فَابْتَنَى مَسْجِدًا بِفِنَاءِ دَارِهِ فَأَعْلَنَ بِالصَّلاَةِ وَالْقِرَاءَةِ فِيهِ، وَإِنَّا قَدْ خَشِينَا أَنْ يَفْتِنَ نِسَاءَنَا وَأَبْنَاءَنَا، فَانْهَهُ؛ فَإِنْ أَحَبَّ أَنْ يَقْتَصِرَ عَلَى أَنْ يَعْبُدَ رَبَّهُ فِي دَارِهِ فَعَلَ، وَإِنْ أَبَى إِلاَّ أَنْ يُعْلِنَ بِذَلِكَ فَسَلْهُ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْكَ ذِمَّتَكَ، فَإِنَّا قَدْ كَرِهْنَا أَنْ نُخْفِرَكَ، وَلَسْنَا مُقِرِّينَ لأَبِي بَكْرٍ الإِسْتِعْلاَنَ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَأَتَى ابْنُ الدَّغِنَةِ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ: قَدْ عَلِمْتَ الَّذِي عَاقَدْتُ لَكَ عَلَيْهِ، فَإِمَّا أَنْ تَقْتَصِرَ عَلَى ذَلِكَ وَإِمَّا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيَّ ذِمَّتِي، فَإِنِّي لاَ

है, अब या आप इस शर्त पर क़ायम रहिए या फिर मेरे अहद को वापस कीजिए क्योंकि ये मुझे गवारा नहीं कि अरब के कानों तक ये बात पहुँचे कि मैंने एक शख़्स को पनाह दी थी लेकिन उसमें (क़ुरैश की तरफ़ से) दख़लअंदाज़ी की गई। इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा मैं तुम्हारी पनाह वापस करता हूँ और अपने रब अज़्ज़ व जल्ल की पनाह पर राज़ी और ख़ुश हूँ। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उन दिनों मक्का मे तशरीफ़ रखते थे। आप (ﷺ) ने मुसलमानों से फ़र्माया कि तुम्हारी हिजरत की जगह मुझे ख़्वाब में दिखाई गई है वहाँ खजूर के बाग़ात हैं और दो पथरीले मैदानों के दरम्यान वाक़ेअ है, चुनाँचे जिन्हें हिजरत करना था उन्होंने मदीना की तरफ़ हिजरत की और जो लोग सर ज़मीने हब्शा हिजरत करके चले गये थे वो भी मदीना चले आए, हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने भी मदीना हिजरत की तैयारी शुरू कर दी लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि कुछ दिनों के लिये ठहरो। मुझे तवक़्क़ोअ है कि हिजरत की इजाज़त मुझे भी मिल जाएगी। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया क्या वाक़ई आप (ﷺ) को भी उसकी तवक़्क़ोअ है, मेरे बाप आय पर फ़िदा हों। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) की रिफ़ाक़ते सफ़र के ख़्याल से अपना इरादा मुल्तवी कर दिया और दो ऊँटनियों को जो उनके पास थीं, कीकर के पत्ते खिलाकर तैयार करने लगे चार महीने तक। इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उर्वा ने कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, एक दिन हम अबूबक्र (रज़ि.) के घर बैठे हुए थे भरी दोपहर थी कि किसी ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से कहा रसूलुल्लाह (ﷺ) सर पर रूमाल डाले तशरीफ़ ला रहे हैं, हुज़ूर (ﷺ) का मा'मूल हमारे यहाँ उस वक़्त आने का नहीं था। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) बोले हुज़ूर पर मेरे माँ बाप फ़िदा हों। ऐसे वक़्त में आप (ﷺ) किसी ख़ास वजह से ही तशरीफ़ लाए होंगे, उन्होंने बयान किया कि फिर हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ लाए और अंदर आने की इजाज़त चाही, अबूबक्र (रज़ि.) ने आप (ﷺ) को इजाज़त दी तो आप (ﷺ) अंदर दाख़िल हुए फिर हुज़ूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, इस वक़्त यहाँ से थोड़ी देर के लिये सबको उठा दो। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया यहाँ उस वक़्त तो सब घर के ही आदमी हैं, मेरे बाप

أُحِبُّ أَنْ تَسْمَعَ الْعَرَبُ أَنِّي أُخْفِرْتُ فِي رَجُلٍ عَقَدْتُ لَهُ. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَإِنِّي أَرُدُّ إِلَيْكَ جِوَارَكَ، وَأَرْضَى بِجِوَارِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ. وَالنَّبِيُّ ﷺ يَوْمَئِذٍ بِمَكَّةَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِلْمُسْلِمِينَ: ((إِنِّي أُرِيتُ دَارَ هِجْرَتِكُمْ ذَاتَ نَخْلٍ بَيْنَ لاَبَتَيْنِ، وَهُمَا الْحَرَّتَانِ)). فَهَاجَرَ مَنْ هَاجَرَ قِبَلَ الْمَدِينَةِ، وَرَجَعَ عَامَّةُ مَنْ كَانَ هَاجَرَ بِأَرْضِ الْحَبَشَةِ إِلَى الْمَدِينَةِ، وَتَجَهَّزَ أَبُو بَكْرٍ قِبَلَ الْمَدِينَةِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((عَلَى رِسْلِكَ، فَإِنِّي أَرْجُو أَنْ يُؤْذَنَ لِي)). فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَهَلْ تَرْجُو ذَلِكَ بِأَبِي أَنْتَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)). فَحَبَسَ أَبُو بَكْرٍ نَفْسَهُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ لِيَصْحَبَهُ وَعَلَفَ رَاحِلَتَيْنِ كَانَتَا عِنْدَهُ وَرَقَ السَّمُرِ - وَهُوَ الْخَبَطُ - أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ قَالَ عُرْوَةُ: قَالَتْ عَائِشَةُ: فَبَيْنَمَا نَحْنُ يَوْمًا جُلُوسٌ فِي بَيْتِ أَبِي بَكْرٍ فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ قَالَ قَائِلٌ لأَبِي بَكْرٍ هَذَا رَسُولُ اللهِ ﷺ مُتَقَنِّعًا - فِي سَاعَةٍ لَمْ يَكُنْ يَأْتِينَا فِيهَا - فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: فِدَاءٌ لَهُ أَبِي وَأُمِّي، وَاللهِ مَا جَاءَ بِهِ فِي هَذِهِ السَّاعَةِ إِلاَّ أَمْرٌ. قَالَتْ: فَجَاءَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَاسْتَأْذَنَ، فَأُذِنَ لَهُ، فَدَخَلَ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَبِي بَكْرٍ: أَخْرِجْ مَنْ عِنْدَكَ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّمَا هُمْ أَهْلُكَ بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: فَإِنِّي قَدْ أُذِنَ لِي فِي الْخُرُوجِ.

आप (ﷺ) पर फ़िदा हों, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हुज़ूर (ﷺ) ने उसके बाद फ़र्माया कि मुझे हिजरत की इजाज़त दे दी गई है। अबूबक्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ की मेरे बाप आप पर फिदा हों या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मुझे रिफ़ाक़ते सफ़र का शर्फ़ हासिल हो सकेगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे बाप आप पर फ़िदा हों उन दोनों में से एक ऊँटनी आप (ﷺ) ले लीजिए! हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन क़ीमत से, हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हमने जल्दी जल्दी उनके लिये तैयारियाँ शुरू कर दीं और कुछ तौशा एक थैले में रख दिया। अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि) ने अपने पटके के टुकड़े करके थैले का मुँह उससे बाँध दिया और इसी वजह से उनका नाम ज़ातुन्नताक़ैन (दो पटके वाली) पड़ गया आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) ने जबले ष़ौर के ग़ार में पड़ाव किया और तीन रातें वहीं गुज़ारीं अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र (रज़ि.) रात वहीं जाकर गुज़ारा करते थे, ये नौजवान बहुत समझदार थे और बेहद ज़हीन थे। स़हर के वक़्त वहाँ से निकल आते और सुबह सवेरे ही मक्का पहुँच जाते जैसे वहीं रात गुज़री हो। फिर जो कुछ यहाँ सुनते और जिसके ज़रिये उन हज़रात के ख़िलाफ़ कार्रवाई के लिये कोई तदबीर की जाती तो उसे महफ़ूज़ रखते और जब अंधेरा छा जाता तो तमाम इत्तिलाआ़त यहाँ आकर पहुँचाते। अबूबक्र (रज़ि.) के गुलाम आ़मिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) आप दोनों के लिये क़रीब ही दूध देने वाली बकरी चराया करते थे और जब कुछ रात गुज़र जाती तो उसे ग़ार में लाते थे। आप उसी पर रात गुज़ारते उस दूध को गरम लोहे के ज़रिये ग़र्म कर लिया जाता था। सुबह मुँह अंधेरे ही आ़मिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) ग़ार से निकल आते थे उन तीन रातों में रोज़ाना का उनका यही दस्तूर था। हज़रत अबूबक्र (रज़ि) ने बनी अद्दैल जो बनी अ़ब्द बिन अ़दी की शाख़ थी, के एक शख़्स को रास्ता बताने के लिये उजरत पर अपने साथ रखा था। ये शख़्स रास्तों का बड़ा माहिर था। आले आ़स बिन वाईल सहमी का ये हलीफ़ भी था और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के दीन पर क़ायम था। उन बुज़ुर्गों ने उस पर ए'तिमाद किया और अपने दोनों ऊँट उसके हवाले कर दिये। क़रार

فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: الصَّحَابَةُ بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ. قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((نَعَمْ)) قَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَخُذْ بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ إِحْدَى رَاحِلَتَيَّ هَاتَيْنِ. قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بِالثَّمَنِ))، قَالَتْ عَائِشَةُ: فَجَهَّزْنَاهُمَا أَحَثَّ الْجِهَازِ، وَصَنَعْنَا لَهُمَا سُفْرَةً فِي جِرَابٍ، فَقَطَعَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ أَبِي بَكْرٍ قِطْعَةً مِنْ نِطَاقِهَا فَرَبَطَتْ بِهِ عَلَى فَمِ الْجِرَابِ، فَبِذَلِكَ سُمِّيَتْ ذَاتَ النِّطَاقِ. قَالَتْ: ثُمَّ لَحِقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ بِغَارٍ فِي جَبَلِ ثَوْرٍ، فَكَمَنَا فِيهِ ثَلاَثَ لَيَالٍ. يَبِيتُ عِنْدَهُمَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ وَهُوَ غُلاَمٌ شَابٌّ ثَقِفٌ لَقِنٌ، فَيُدْلِجُ مِنْ عِنْدِهِمَا بِسَحَرٍ، فَيُصْبِحُ مَعَ قُرَيْشٍ بِمَكَّةَ كَبَائِتٍ، فَلاَ يَسْمَعُ أَمْرًا يُكْتَادَانِ بِهِ إِلاَّ وَعَاهُ حَتَّى يَأْتِيَهُمَا بِخَبَرِ ذَلِكَ حِينَ يَخْتَلِطُ الظَّلاَمُ، وَيَرْعَى عَلَيْهِمَا عَامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ مِنْحَةً مِنْ غَنَمٍ فَيُرِيحُهَا عَلَيْهِمَا حِينَ تَذْهَبُ سَاعَةٌ مِنَ الْعِشَاءِ فَيَبِيتَانِ فِي رِسْلٍ - وَهُوَ لَبَنُ مِنْحَتِهِمَا وَرَضِيفِهِمَا - حَتَّى يَنْعِقَ بِهَا عَامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ بِغَلَسٍ، يَفْعَلُ ذَلِكَ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْ تِلْكَ اللَّيَالِي الثَّلاَثِ. وَاسْتَأْجَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُوبَكْرٍ رَجُلاً مِنْ بَنِي الدِّيْلِ، وَهُوَ مِنْ بَنِي عَبْدِ بْنِ عَدِيٍّ هَادِيًا خِرِّيتًا - وَالْخِرِّيتُ الْمَاهِرُ بِالْهِدَايَةِ - قَدْ غَمَسَ حِلْفًا فِي آلِ الْعَاصِ بْنِ وَائِلٍ

السَّهْمِيَّ، وَهُوَ عَلَى دِيْنِ كُفَّارِ قُرَيْشٍ، فَأَمِنَاهُ، فَدَفَعَاهُ إِلَيْهِ رَاحِلَتَيْهِمَا، وَوَاعَدَاهُ غَارَ ثَوْرٍ بَعْدَ ثَلاَثِ لَيَالٍ بِرَاحِلَتَيْهِمَا صُبْحَ ثَلاَثٍ، وَانْطَلَقَ مَعَهُمَا عَامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ وَالدَّلِيْلُ، فَأَخَذَ بِهِمْ طَرِيْقَ السَّوَاحِلِ)).

[راجع: ٤٧٦]

ये पाया था कि तीन रातें गुज़ारकर ये शख़्स ग़ारे षौर में उनसे मुलाक़ात करे। चुनाँचे तीसरी रात की सुबह को वो दोनों ऊँट ले कर (आ गया) अब आमिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) और ये रास्ता बताने वाला उन हज़रात को साथ लेकर रवाना हुऐ साहिल के रास्ते से होते हुए। (राजेअ़ : 476)

٣٩٠٦– قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ مَالِكٍ الْمُدْلِجِيُّ – وَهُوَ ابْنُ أَخِي سُرَاقَةَ بْنِ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ – أَنَّ أَبَاهُ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ سُرَاقَةَ بْنَ جُعْشُمٍ يَقُولُ: ((جَاءَنَا رُسُلُ كُفَّارِ قُرَيْشٍ يَجْعَلُونَ فِي رَسُولِ اللهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ دِيَةَ كُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مَنْ قَتَلَهُ أَوْ أَسَرَهُ. فَبَيْنَمَا أَنَا جَالِسٌ فِي مَجْلِسٍ مِنْ مَجَالِسِ قَوْمِي بَنِي مُدْلِجٍ أَقْبَلَ رَجُلٌ مِنْهُمْ حَتَّى قَامَ عَلَيْنَا وَنَحْنُ جُلُوسٌ فَقَالَ: يَا سُرَاقَةُ، إِنِّي قَدْ رَأَيْتُ آنِفًا أَسْوِدَةً بِالسَّاحِلِ أُرَاهَا مُحَمَّدًا وَأَصْحَابَهُ. قَالَ سُرَاقَةُ: فَعَرَفْتُ أَنَّهُمْ هُمْ. فَقُلْتُ لَهُ: لَيْسُوا بِهِمْ، وَلَكِنَّكَ رَأَيْتَ فُلاَنًا وَفُلاَنًا انْطَلَقُوا بِأَعْيُنِنَا. ثُمَّ لَبِثْتُ فِي الْمَجْلِسِ سَاعَةً، ثُمَّ قُمْتُ فَدَخَلْتُ فَأَمَرْتُ جَارِيَتِي أَنْ تَخْرُجَ بِفَرَسِي – وَهِيَ مِنْ وَرَاءِ أَكَمَةٍ – فَتَحْبِسَهَا عَلَيَّ، وَأَخَذْتُ رُمْحِي فَخَرَجْتُ بِهِ مِنْ ظَهْرِ الْبَيْتِ فَخَطَطْتُ بِزُجِّهِ الأَرْضَ، وَخَفَضْتُ عَالِيَهُ، حَتَّى أَتَيْتُ فَرَسِي فَرَكِبْتُهَا، فَرَفَعْتُهَا تُقَرِّبُ بِي، حَتَّى دَنَوْتُ مِنْهُمْ، فَعَثَرَتْ بِي

3906. इब्ने शिहाब ने बयान किया और मुझे अ़ब्दुर्रहमान बिन मालिक मुदलिजी ने ख़बर दी, वो सुराक़ा बिन मालिक बिन जअ़शम के भतीजे हैं कि उनके वालिद ने उन्हें ख़बर दी और उन्होंने सुराक़ा बिन जअ़शम (रज़ि.) को ये कहते सुना कि हमारे पास कुफ़्फ़ारे कुरैश के क़ासिद आए और ये पेशकश की कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को अगर कोई शख़्स क़त्ल कर दे या क़ैद कर लाए तो उसे हर एक के बदले में एक सौ ऊँट दिये जाएँगे। मैं अपनी क़ौम बनी मुदलिज की एक मज्लिस में बैठा हुआ था कि उनका एक आदमी सामने आया और हमारे क़रीब खड़ा हो गया। हम अभी बैठे हुए थे। उसने कहा सुराक़ा! साहिल पर मैं अभी चन्द साये देखकर आ रहा हूँ। मेरा ख़्याल है कि वो मुहम्मद और उनके साथी ही हैं। सुराक़ा (रज़ि.) ने कहा मैं समझ गया उसका ख़्याल सहीह है लेकिन मैंने उससे कहा कि वो लोग नहीं हैं मैंने फ़लाँ फलाँ आदमी को देखा है हमारे सामने से उसी तरफ़ गये हैं। उसके बाद मैं मज्लिस में थोड़ी देर और बैठा रहा और फिर उठते ही घर गया और अपनी लौण्डी से कहा कि मेरे घोड़े को लेकर टीले के पीछे चली जाए और वहीं मेरा इंतिज़ार करे, उसके बाद मैंने अपना नेज़ा उठाया और घर की पुश्त की तरफ़ से बाहर निकल आया मैं नेज़े की नोक से ज़मीन पर लकीर खींचता हुआ चला गया और ऊपर के हिस्से को छुपाए हुए था। (सुराक़ा ये सब कुछ इसलिये कर रहा था कि किसी को ख़बर न हो वरना वो भी मेरे इन्आ़म में शरीक हो जाएगा)। मैं घोड़े के पास आकर उस पर सवार हुआ और हवा की रफ़्तार के साथ उसे ले चला, जितनी जल्दी के साथ भी मेरे लिये मुम्किन था, आख़िर मैंने उनको पा ही

लिया। उसी वक़्त घोड़े ने ठोकर खाई और मुझे ज़मीन पर गिरा दिया। लेकिन मैं खड़ा हो गया और अपना हाथ तरकश की तरफ़ बढ़ाया उसमें से तीर निकालकर मैंने फ़ाल निकाली कि आया मैं उन्हें नुक़्सान पहुँचा सकता हूँ या नहीं। फ़ाल (अब भी) वो निकली जिसे मैं पसन्द नहीं करता था। लेकिन मैं दोबारा अपने घोड़े पर सवार हो गया और तीरों के फ़ाल की परवाह नहीं की। फिर मेरा घोड़ा मुझे तेज़ी के साथ दौड़ाए लिये जा रहा था। आख़िर जब मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की क़िरात सुनी, आँहज़रत (ﷺ) मेरी तरफ़ कोई तवज्जह नहीं कर रहे थे लेकिन हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) बार बार मुड़कर देखते थे, तो मेरे घोड़े के आगे के दोनो पैर ज़मीन में धंस गये जब वो टख़नों तक धंस गया तो मैं उसके ऊपर गिर पड़ा और उसे उठने के लिये डांटा मैंने उसे उठाने की कोशिश की लेकिन वो अपने पैर ज़मीन से नहीं निकाल सका। बड़ी मुश्किल से जब उसने पूरी तरह खड़े होने की कोशिश की तो उसके आगे के पैर से मुंतशिर सा गुबार उठकर धुंए की तरह आसमान की तरफ़ चढ़ने लगा। मैंने तीरों से फ़ाल निकाली लेकिन इस मर्तबा भी वही फ़ाल आई जिसे मैं पसन्द नहीं करता था। उस वक़्त मैंने आँहज़रत (ﷺ) को अमान के लिये पुकारा। मेरी आवाज़ पर वो लोग खड़े हो गये और मैं अपने घोड़े पर सवार होकर उनके पास आया। उन तक बुरे इरादे के साथ पहुँचने से जिस तरह मुझे रोक दिया गया था, उसी से मुझे यक़ीन हो गया था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की दा'वत ग़ालिब आकर रहेगी। इसलिये मैंने हुज़ूर (ﷺ) से कहा कि आप (ﷺ) की क़ौम ने आप (ﷺ) के मारने के लिये सौ ऊँटों के इन्आम का ऐलान किया है। फिर मैंने आप (ﷺ) को क़ुरैश के इरादों की ख़बर दी। मैंने उन हज़रात की ख़िदमत में कुछ तौशा और सामान पेश किया लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने उसे क़ुबूल न किया मुझसे किसी और चीज़ का भी मुतालबा नहीं किया सिर्फ़ इतना कहा कि हमारे बारे में राज़दारी से काम लेना लेकिन मैंने अर्ज़ किया कि आप (ﷺ) मेरे लिये एक अमन की तहरीर लिख दीजिए। हुज़ूर (ﷺ) ने आमिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) को हुक्म दिया और उन्होंने चमड़े के एक रुक़्आ पर तहरीरे अमन लिख दी। उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ)

فَرَسِي، فَخَرَرْتُ عَنْهَا، فَقُمْتُ فَأَهْوَيْتُ يَدِي إِلَى كِنَانَتِي فَاسْتَخْرَجْتُ مِنْهَا الأَزْلاَمَ، فَاسْتَقْسَمْتُ بِهَا: أَضُرُّهُمْ أَمْ لاَ؟ فَخَرَجَ الَّذِي أَكْرَهُ، فَرَكِبْتُ فَرَسِي - وَعَصَيْتُ الأَزْلاَمَ - تُقَرِّبُ بِي، حَتَّى إِذَا سَمِعْتُ قِرَاءَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهُوَ لاَ يَلْتَفِتُ، وَأَبُو بَكْرٍ يُكْثِرُ الاِلْتِفَاتَ، سَاخَتْ يَدَا فَرَسِي فِي الأَرْضِ حَتَّى بَلَغَتَا الرُّكْبَتَيْنِ. فَخَرَرْتُ عَنْهَا، ثُمَّ زَجَرْتُهَا، فَنَهَضَتْ فَلَمْ تَكَدْ تُخْرِجُ يَدَيْهَا، فَلَمَّا اسْتَوَتْ قَائِمَةً إِذَا لأَثَرِ يَدَيْهَا عُثَانٌ سَاطِعٌ فِي السَّمَاءِ مِثْلُ الدُّخَانِ، فَاسْتَقْسَمْتُ بِالأَزْلاَمِ فَخَرَجَ الَّذِي أَكْرَهُ. فناديتهم بالأمان، فوقفوا، فركبتُ فرسي حتى جئتهم. ووقعَ فِي نفسي حين لَقِيتُ مَا لَقِيتُ مِنَ الْحَبْسِ عَنْهُمْ أَنْ سَيَظْهَرُ أَمْرُ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقُلْتُ لَهُ: إِنَّ قَوْمَكَ قَدْ جَعَلُوا فِيكَ الدِّيَةَ. وَأَخْبَرْتُهُمْ أَخْبَارَ مَا يُرِيدُ النَّاسُ بِهِمْ، وَعَرَضْتُ عَلَيْهِمُ الزَّادَ وَالْمَتَاعَ، فَلَمْ يَرْزَآنِي، وَلَمْ يَسْأَلاَنِي إِلاَّ أَنْ قَالَ: أَخْفِ عَنَّا. فَسَأَلْتُهُ أَنْ يَكْتُبَ لِي كِتَابَ أَمْنٍ، فَأَمَرَ عَامِرَ بْنَ فُهَيْرَةَ فَكَتَبَ فِي رُقْعَةٍ مِنْ أَدِيمٍ، ثُمَّ مَضَى رَسُولُ اللهِ ﷺ)). قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَقِيَ الزُّبَيْرَ فِي رَكْبٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ كَانُوا تِجَارًا قَافِلِينَ مِنَ الشَّامِ، فَكَسَا الزُّبَيْرُ رَسُولَ اللهِ

ﷺ وَأَبَا بَكْرٍ ثِيَابَ بَيَاضٍ. وَسَمِعَ الْمُسْلِمُونَ بِالْمَدِينَةِ مَخْرَجَ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْ مَكَّةَ، فَكَانُوا يَغْدُونَ كُلَّ غَدَاةٍ إِلَى الْحَرَّةِ فَيَنْتَظِرُونَهُ، حَتَّى يَرُدَّهُمْ حَرُّ الظَّهِيرَةِ، فَانْقَلَبُوا يَوْمًا بَعْدَمَا أَطَالُوا انْتِظَارَهُمْ، فَلَمَّا أَوَوْا إِلَى بُيُوتِهِمْ أَوْفَى رَجُلٌ مِنْ يَهُودَ عَلَى أُطُمٍ مِنْ آطَامِهِمْ لأَمْرٍ يَنْظُرُ إِلَيْهِ، فَبَصُرَ بِرَسُولِ اللهِ وَأَصْحَابِهِ مُبَيَّضِينَ يَزُولُ بِهِمُ السَّرَابُ، فَلَمْ يَمْلِكِ الْيَهُودِيُّ أَنْ قَالَ بِأَعْلَى صَوْتِهِ: يَا مَعَاشِرَ الْعَرَبِ، هَذَا جَدُّكُمُ الَّذِينَ تَنْتَظِرُونَ. فَثَارَ الْمُسْلِمُونَ إِلَى السِّلاَحِ، فَتَلَقَّوْا رَسُولَ اللهِ ﷺ بِظَهْرِ الْحَرَّةِ، فَعَدَلَ بِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ حَتَّى نَزَلَ بِهِمْ فِي بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ، وَذَلِكَ يَوْمَ الاثْنَيْنِ مِنْ شَهْرِ رَبِيعٍ الأَوَّلِ، فَقَامَ أَبُو بَكْرٍ لِلنَّاسِ وَجَلَسَ رَسُولُ اللهِ ﷺ صَامِتًا فَطَفِقَ مَنْ جَاءَ مِنَ الأَنْصَارِ - مِمَّنْ لَمْ يَرَ رَسُولَ اللهِ ﷺ- يُحَيِّي أَبَا بَكْرٍ، حَتَّى أَصَابَتِ الشَّمْسُ رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَأَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ حَتَّى ظَلَّلَ عَلَيْهِ بِرِدَائِهِ، فَعَرَفَ النَّاسُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عِنْدَ ذَلِكَ، فَلَبِثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي بَنِي عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ بِضْعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً، وَأُسِّسَ الْمَسْجِدُ الَّذِي أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَى، وَصَلَّى فِيهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ. ثُمَّ رَكِبَ رَاحِلَتَهُ، فَسَارَ يَمْشِي مَعَهُ النَّاسُ، حَتَّى بَرَكَتْ عِنْدَ مَسْجِدِ

आगे बढ़े। इब्ने शिहाब ने बयान किया और उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुलाक़ात ज़ुबैर (रज़ि.) से हुई जो मुसलमानों के एक तिजारती क़ाफ़िले के साथ शाम से वापस आ रहे थे। ज़ुबैर (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िदमत में सफ़ेद पोशाक पेश की। इधर मदीना में भी मुसलमानों को हुज़ूर (ﷺ) की मक्का से हिजरत की खबर हो चुकी थी और ये लोग रोज़ाना सुबह को मुक़ामे हर्रह तक आते और इंतिज़ार करते रहते लेकिन दोपहरी की गर्मी की वजह से (दोपहर को) उन्हें वापस जाना पड़ता था एक दिन जब बहुत त़वील इंतिज़ार के बाद सब लोग वापस आ गये और अपने घर पहुँच गये तो एक यहूदी अपने एक महल पर कुछ देखने चढ़ा। उसने आँहज़रत (ﷺ) और आप (ﷺ) के साथियों को देखा सफ़ेद सफ़ेद चले आ रहे हैं। (या तेज़ी से जल्दी जल्दी आ रहे हैं) जितना आप (ﷺ) नज़दीक हो रहे थे, उतनी ही दूर से पानी की त़रह रेती का चमकना कम होता जाता था। यहूदी बेइख़्तियार चिल्ला उठा कि ऐ अ़रब के लोगों! तुम्हारे ये बुज़ुर्ग सरदार आ गये जिनका तुम्हें इंतिज़ार था। मुसलमान हथियार लेकर दौड़ पड़े और हुज़ूर (ﷺ) का मक़ामे हर्रह पर इस्तिक़बाल किया। आप (ﷺ) ने उनके साथ दाहिनी त़रफ़ का रास्ता इख़्तियार किया और बनी अ़म्र बिन औ़फ़ के मुहल्ले में क़याम किया। ये रबीउ़ल अव्वल का महीना और पीर का दिन था। अबूबक्र (रज़ि.) लोगों से मिलने के लिये खड़े हो गये और रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ामोश बैठे रहे। अंस़ार के जिन लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उससे पहले नहीं देखा था, वो अबूबक्र (रज़ि.) ही को सलाम कर रहे थे। लेकिन जब हुज़ूर अकरम (ﷺ) पर धूप पड़ने लगी तो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपनी चादर से आँहज़रत (ﷺ) पर साया किया। उस वक़्त सब लोगों ने रसूलल्लाह (ﷺ) को पहचान लिया। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने बनी अ़म्र बिन औ़फ़ में तक़रीबन दस रातों तक क़याम किया और वो मस्जिद (क़ुबा) जिसकी बुनियाद तक़्वा पर क़ायम है वो उसी दौरान में ता'मीर हुई और आप (ﷺ) ने उसमें नमाज़ पढ़ी फिर (जुम्आ़ के दिन) आँहज़रत (ﷺ) अपनी ऊँटनी पर सवार हुए और

الرَّسُولِ ﷺ بِالْمَدِينَةِ، وَهُوَ يُصَلِّي فِيهِ يَوْمَئِذٍ رِجَالٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ، وَكَانَ مِرْبَدًا لِلتَّمْرِ لِسُهَيْلٍ وَسَهْلٍ غُلاَمَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي حَجْرِ أَسْعَدَ بْنِ زُرَارَةَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ بَرَكَتْ بِهِ رَاحِلَتُهُ: ((هَذَا إِنْ شَاءَ اللهُ الْمَنْزِلُ)). ثُمَّ دَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ الْغُلاَمَيْنِ فَسَاوَمَهُمَا بِالْمِرْبَدِ لِيَتَّخِذَهُ مَسْجِدًا، فَقَالاَ : بَلْ نَهَبُهُ لَكَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَأَبَى رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يَقْبَلَهُ مِنْهُمَا هِبَةً حَتَّى ابْتَاعَهُ مِنْهُمَا، ثُمَّ بَنَاهُ مَسْجِدًا، وَطَفِقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَنْقُلُ مَعَهُمُ اللَّبِنَ فِي بُنْيَانِهِ وَيَقُولُ : هُوَ يَنْقُلُ اللَّبِنَ.

هَذَا الْحِمَالُ لاَ حِمَالَ خَيْبَرْ
هَذَا أَبَرُّ رَبَّنَا وَأَطْهَرْ

وَيَقُولُ :

اللَّهُمَّ إِنَّ الأَجْرَ أَجْرُ الآخِرَهْ
فَارْحَمِ الأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَهْ

فَتَمَثَّلَ بِشِعْرِ رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ لَمْ يُسَمَّ لِي. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ : وَلَمْ يَبْلُغْنَا - فِي الأَحَادِيثِ - أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ تَمَثَّلَ بِبَيْتِ شِعْرٍ تَامٍّ غَيْرِ هَذِهِ الأَبْيَاتِ.

सहाबा भी आप (ﷺ) के साथ पैदल रवाना हुए। आख़िर आप (ﷺ) की सवारी मदीना मुनव्वरा में उस मुक़ाम पर आकर बैठ गई जहाँ अब मस्जिदे नबवी है। इस मुक़ाम पर चन्द मुसलमान उन दिनों नमाज़ अदा किया करते थे। ये जगह सुहैल और सहल (रज़ि.) दो यतीम बच्चों की थी और खजूर का यहाँ खलियान लगता था। ये दोनों बच्चे हज़रत अस्अद बिन ज़ुरारह (रज़ि.) की परवरिश में थे जब आप (ﷺ) की ऊँटनी वहाँ बैठ गई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया इंशाअल्लाह यही हमारे क़याम की जगह होगी। उसके बाद आप (ﷺ) ने दोनों यतीम बच्चों को बुलाया और उनसे इस जगह का मामला करना चाहा ताकि वहाँ मस्जिद ता'मीर की जा सके। दोनों बच्चों ने कहा कि नहीं या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम ये जगह आप (ﷺ) को मुफ़्त दे देंगे, लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने मुफ़्त तौर पर कुबूल करने से मना कर दिया। ज़मीन की क़ीमत अदा करके ले ली और वहीं मस्जिद ता'मीर की। उसकी ता'मीर के वक़्त ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) भी सहाबा (रज़ि.) के साथ ईंटों के ढोने में शरीक थे। ईंट ढोते वक़्त आप (ﷺ) फ़र्माते जाते थे कि ये बोझ ख़ैबर के बोझ नहीं हैं बल्कि उसका अज्र व षवाब अल्लाह के यहाँ बाक़ी रहने वाला है और इसमें बहुत तहारत और पाकी है। और आँहज़रत (ﷺ) दुआ फ़र्माते थे कि ऐ अल्लाह! अज्र तो बस आख़िरत ही का है पस, तू अंसार और मुहाजिरीन पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा, इस तरह आप (ﷺ) ने एक मुसलमान शायर का शे'र पढ़ा जिनका नाम मुझे मा'लूम नहीं, इब्ने शिहाब ने बयान कियाकि अहादीष से हमें ये अब तक मा'लूम नहीं हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) ने उस शे'र के सिवा किसी भी शायर के पूरे शे'र को किसी मौक़े पर पढ़ा हो।

तश्रीह : हिजरत का वाक़िआ और तफ़्सील के साथ मौक़ा ब मौक़ा कई जगह बयान में आया है। तारीख़े इस्लाम में इसकी बड़ी अहमियत है, 27 सफ़र 13 नुबुव्वत जुमेरात 12 सितम्बर 621 ईस्वी की तारीख थी कि रसूले करीम (ﷺ) हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को साथ लेकर शहरे मक्का से निकले मक्का से चार पाँच मील की दूरी पर कोहे षौर है जिसकी चढ़ाई सर तोड़ है। आप (ﷺ) बसद्दे मुशक़्क़त पहाड़ के ऊपर जाकर एक ग़ार में क़याम पज़ीर हुए।

अल्हम्दुलिल्लाह 1970 ईस्वी के हज्जे मुबारक के मौक़े पर मैं भी उस ग़ार तक जाकर वहाँ थोड़ी देर तारीख़े हिजरत को याद कर चुका हूँ। नबी अकरम (ﷺ) का तीन दिन वहाँ क़याम रहा चौथी रात में वहाँ से दोनों बुज़ुर्ग आज़िमे मदीना हुए। आमिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) और अब्दुल्लाह बिन अरीक़त (रज़ि.) को भी मुआविनीने सफ़र की हैषियत से साथ ले गये। मदीना

की जानिब यकुम रबीउल अव्वल रोज़ दो शंबा 622 ईस्वी को रवानगी हुई। मक्का वालों ने आप दोनों की गिरफ़्तारी के लिये चारों तरफ़ से जासूस दौड़ा दिये थे। जिनमें एक सुराक़ा बिन जअशम (रज़ि.) भी थे जो अपनी घोड़ी पर सवार मस्लहे राबिग़ से कुछ आगे आँहज़रत (ﷺ) के क़रीब पहुँच गया था मगर आप (ﷺ) की बद्दुआ से घोड़ी के पैर ज़मीन में धंस गये और सुराक़ा समझ गया कि एक सच्चे रसूल (ﷺ) पर हमला आसान नहीं है, जिसके साथ अल्लाह की मदद है। आख़िर वो अमन का तलबगार हुआ और तहरीरी तौर पर उसे अमान दे दी गई। ग़ार से निकलकर पहले ही दिन आप (ﷺ) का गुज़र उम्मे मअबद के ख़ैमा पर हुआ था जो क़ौमे ख़ुज़ाआ से थी और सरे राह मुसाफ़िरों की ख़िदमत के लिये मशहूर थी। अल इस्तिआब में है कि जब सुराक़ा वापस होने लगा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया सुराक़ा उस वक़्त तेरी क्या शान होगी जब किसरा के शाही कंगन तेरे हाथों में पहनाए जाएँगे। सुराक़ा (रज़ि.) उहुद के बाद मुसलमान हुए और ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में मदयन फ़तह हुआ और किसरा का ताज और ज़ेवरात दरबारे ख़िलाफ़त में आए तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने सुराक़ा (रज़ि.) को बुलाकर उसके हाथों में किसरा के कंगन पहना दिये और ज़ुबान से फ़र्माया अल्लाहु अकबर अल्लाह की बड़ी शान है कि किसरा के कंगन सुराक़ा (रज़ि.) अअराबी के हाथों में पहना दिये। ख़ैमा उम्मे मअबद परआँहज़रत (ﷺ) ने आराम फ़र्माया। वहाँ से रवाना होने पर रास्ता में बुरैदा असलमी मिला जो आप (ﷺ) की तलाश में निकला था मगर आप (ﷺ) से हम कलाम होने पर अपने सत्तर साथियों के साथ मुसलमान हो गया। नेज़ रास्ते ही में ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ि.) भी मिले जो शाम से आ रहे थे और मुसलमानों का तिजारत पेशा गिरोह भी उनके साथ था उन्होंने नबी करीम (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र (रजि) के लिये सफ़ेद लिबास पेश किये।

8 रबीउल अव्वल रोज़ दो शंबा 13 नबवी मुताबिक़ 23 सितम्बर 622 ईस्वी को आप (ﷺ) क़ुबा में पहुँच गये। पंच शंबा तक यहाँ क़याम किया और उस दौरान में मस्जिदे क़ुबा की भी बुनियाद रखी, उसी जगह शेरे ख़ुदा हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि.) भी यहाँ पहुँच गये। 12 रबीउल अव्वल 1 हिजरी मुताबिक़ 27 सितम्बर 622 ईस्वी बरोज़ जुम्आ आप (ﷺ) क़ुबा से रवाना हुए जुम्अे का वक़्त बनू सालिम के घरों में हो गया। यहाँ आप (ﷺ) ने सौ आदमियों के साथ जुम्आ पढ़ा और इस्लाम में पहला जुम्आ था। उसके बाद आप (ﷺ) यस्रिब की जुनूबी जानिब से शहर में दाख़िल हुए और आज ही से शहर का नाम मदीनतुन् नबी हो गया।

आमिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) जो आप (ﷺ) के साथ में था, ये हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) का ग़ुलाम था। हज़रत अस्मा (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की साहबज़ादी हैं उन्होंने तौशा एक चमड़े के थैले में रखा और उसका मुँह बाँधने के लिये अपने कमरबन्द के दो टुकड़े कर दिये और उससे थैले का मुँह बाँधा उस रोज़ से उस ख़ातून का लक़ब **ज़ातुन्नताक़तैन** हो गया। अब्दुल्लाह बिन अरीक़त रास्ता का माहिर था और आस बिन वाईल सहमी के ख़ानदान का हलीफ़ था। जिसने अरबी क़ायदे के मुताबिक़ एक प्याले में हाथ डुबोकर उसके साथ हलफ़ की थी, ऐसे प्याले में कोई रंग या ख़ून भरा जाता था। सुराक़ा बिन मालिक (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने पांसे लिये और फ़ाल खोली कि मुझको आँहज़रत (ﷺ) का पीछा करना चाहिये या नहीं मगर फ़ाल मेरे ख़िलाफ़ निकली कि मैं उनका कुछ नुक़्सान न कर सकूँगा। अरब तीरों पर फ़ाल खोला करते थे। एक पर काम करना लिखते दूसरे पर न करना लिखते, फिर तीर निकालने में जो भी तीर निकलता उसके मुताबिक़ अमल करते। सुराक़ा (रज़ि.) ने परवान-ए-अमन हासिल करके अपने तरकश में रख लिया था। रिवायत में लफ़्ज़े यज़ूलु बिहिमिस्सराब के अल्फ़ाज़ हैं। सराब वो रेती जो धूप में पानी की तरह चमकती है। हाफ़िज़ ने कहा कुछ ने इसका मतलब यूँ कहा है कि आँख में उनके आने की हरकत मा'लूम हो रही थी लेकिन नज़दीक आ चुके थे। ये यहूदी का ज़िक्र है जिसने अपने महल के ऊपर से सफ़र में आए हुए नबी करीम (ﷺ) को देखकर अहले मदीना को बशारत दी थी कि तुम्हारे बुज़ुर्ग सरदार आ गये हैं। शुरू में मदीना वाले रसूले करीम (ﷺ) को न पहचान सके इसलिये हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आप (ﷺ) पर कपड़े का साया करने खड़े हो गये। अबूबक्र (रज़ि.) बूढ़े सफ़ेद रेश थे और आँहज़रत (ﷺ) की मुबारक दाढ़ी स्याह थी। लिहाज़ा लोगों ने अबूबक्र (रज़ि.) ही को पैग़म्बर समझा अबूबक्र (रज़ि.) को जल्दी सफ़ेदी आ गई थी वरना उम्र में वो आँहज़रत (ﷺ) से दो ढाई साल छोटे थे। आख़िरे हदीष में ज़िक्र है कि मस्जिदे नबवी की ता'मीर के वक़्त आप (ﷺ) ने एक रजज़ पढ़ा जिसमें ख़ैबर के बोझ का ज़िक्र है। ख़ैबर से लोग खजूर अंगूर वग़ैरह लादकर लाया करते थे आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़ैबर का बोझ इस बोझ के मुक़ाबले पर जो मुसलमान ता'मीरे मस्जिदे नबवी के लिये पत्थर और गारे की शक्ल मे उठा रहे थे कुछ भी

नहीं है वो दुनिया में खा पी डालते हैं और बोझ तो ऐसा है जिसका स़वाब हमेशा क़ायम रहेगा। जिस मुसलमान का शे'र आँहज़रत (ﷺ) ने पढ़ा था वो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) था, ह़दीषे हिजरत के बारे में ये चन्द वज़ाहती नोट लिखे गये हैं वरना तफ़्सीलात बहुत कुछ हैं।

3907. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद और फ़ातिमा बिन्ते मुंज़िर ने और उनसे अस्मा (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) मदीना हिजरत करके जाने लगे तो मैंने आप दोनों के लिये नाश्ता तैयार किया। मैंने अपने वालिद (ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि मेरे पटके के सिवा और कोई चीज़ इस वक़्त मेरे पास ऐसी नहीं जिससे मैं इस नाश्ते को बाँध दूँ। इस पर उन्होंने कहा कि फिर इसके दो टुकड़े कर लो। चुनाँचे मैंने ऐसा ही किया और उस वक़्त से मेरा नाम ज़ातुन्नताक़ैन (दो पटकों वाली) हो गया और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अस्मा को ज़ातुन निताक़ कहा। (राजेअ़ : 2979)

٣٩٠٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنِ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيْهِ وَفَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((صَنَعْتُ سُفْرَةً لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي بَكْرٍ حِيْنَ أَرَادَ الْمَدِيْنَةَ، فَقُلْتُ لأَبِي: مَا أَجِدُ شَيْئًا أَرْبِطُهُ إِلاَّ نِطَاقِي، قَالَ: فَشُقِّيْهِ، فَفَعَلْتُ، فَسُمِّيْتُ ذَاتَ النِّطَاقَيْنِ)). وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ((أَسْمَاءُ ذَاتُ النِّطَاقِ)).

[راجع: ٢٩٧٩]

तश्रीह : ये ह़ज़रत अबूबक्र (रजि) की साह़बज़ादी हैं इनको ज़ातुन्नताक़ैन कहा जाता है क्योंकि उन्होंने हिजरत की रात में अपने पटके को फाड़कर दो ह़िस्से किये थे एक ह़िस्सा में तौशादान बाँधा और दूसरे को मशकीज़े पर बाँध दिया था। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से दस साल बड़ी थीं उन ही के फ़रज़न्द ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) को ह़ज्जाज ज़ालिम ने क़त्ल कराया था, उस ह़ादषे के कुछ दिन बाद एक सौ साल की उ़म्र पाकर ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) ने 73 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया रज़ियल्लाहु अ़न्हा व अरज़ाहा आमीन।

3908. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक ने, कहा मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया जब नबी करीम (ﷺ) मदीना के लिये रवाना हुए तो सुराक़ा बिन मालिक बिन जअ़शम ने आप (ﷺ) का पीछा किया आँहज़रत (ﷺ) ने उसके लिये बद दुआ की तो उसका घोड़ा ज़मीन में धंस गया, उसने अ़र्ज़ किया कि मेरे लिये अल्लाह से दुआ कीजिए (कि इस मुसीबत से नजात दे) मैं आप (ﷺ) का कोई नुक़्सान नहीं करूँगा, आप (ﷺ) ने उसके लिये दुआ की। (उसका घोड़ा ज़मीन से निकल आया) रसूलुल्लाह (ﷺ) को एक मर्तबा रास्ते में प्यास मा'लूम हुई इतने में एक चरवाहा गुज़रा। अबूबक्र (रजि) ने बयान किया कि फिर मैंने एक प्याला लिया और उसमें (रेवड़ की एक बकरी) का थोड़ा सा दूध दुहा, वो दूध मैंने आप (ﷺ) की ख़िदमत में लाकर पेश किया जिसे आप (ﷺ) ने नोश

٣٩٠٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا أَقْبَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْمَدِيْنَةِ تَبِعَهُ سُرَاقَةُ بْنُ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ، فَدَعَا عَلَيْهِ النَّبِيُّ فَسَاخَتْ بِهِ فَرَسُهُ قَالَ: ادْعُ اللهَ لِيْ وَلاَ أَضُرُّكَ، فَدَعَا لَهُ، قَالَ فَعَطِشَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَرَّ بِرَاعٍ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ : فَأَخَذْتُ قَدَحًا فَحَلَبْتُ فِيْهِ كُثْبَةً مِنْ لَبَنٍ، فَأَتَيْتُهُ فَشَرِبَ حَتَّى رَضِيْتُ)).

[راجع: ٢٤٣٩]

फ़र्माया कि मुझे ख़ुशी हासिल हुई। (राजेअ : 2439)

हज़रत सुराक़ा बिन मालिक (रज़ि.) बड़े ऊँचे दर्जे के शायर थे उस मौक़े पर भी उन्होंने एक क़सीदा पेश किया था 24 हिजरी में उनकी वफ़ात हुई।

3909. मुझसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) उनके पेट में थे, उन्हीं दिनों जब हमल की मुद्दत भी पूरी हो चुकी थी, मैं मदीना के लिये रवाना हुई यहाँ पहुँचकर मैंने क़ुबा में पड़ाव किया और यहीं अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) पैदा हुए। फिर मैं उन्हें लेकर रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आप (ﷺ) की गोद में उसे रख दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने एक खजूर तलब की और उसे चबाकर आप (ﷺ) ने अब्दुल्लाह (रज़ि.) के मुँह में उसे रख दिया। चुनाँचे सबसे पहली चीज़ जो अब्दुल्लाह (रज़ि.) के पेट में दाख़िल हुई वो हुज़ूर अकरम (ﷺ) का मुबारक लुआब था। उसके बाद आप (ﷺ) ने उनके लिये दुआ फ़र्माई और अल्लाह से उनके लिये बरकत तलब की। अब्दुल्लाह (रज़ि.) सबसे पहला बच्चा हैं जिनकी पैदाइश हिजरत के बाद हुई। ज़करिया के साथ इस रिवायत की मुताबअत ख़ालिद बिन मुख़्लद ने की है। उनसे अली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अस्मा (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होने को निकलीं थीं तो वो हामिला थीं। (दीगर मक़ाम : 5469)

٣٩٠٩- حَدَّثَنِي زَكَرِيَّاءُ بْنُ يَحْيَى عَنْ أَبِي أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا حَمَلَتْ بِعَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، قَالَتْ: فَخَرَجْتُ وَأَنَا مُتِمٌّ، فَأَتَيْتُ الْمَدِيْنَةَ، فَنَزَلْتُ بِقُبَاءَ فَوَلَدْتُهُ بِقُبَاءَ، ثُمَّ أَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَضَعْتُهُ فِي حَجْرِهِ، ثُمَّ دَعَا بِتَمْرَةٍ فَمَضَغَهَا ثُمَّ تَفَلَ فِي فِيْهِ، فَكَانَ أَوَّلَ شَيْءٍ دَخَلَ جَوْفَهُ رِيْقُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ حَنَّكَهُ بِتَمْرَةٍ، ثُمَّ دَعَا لَهُ وَبَرَّكَ عَلَيْهِ، وَكَانَ أَوَّلَ مَوْلُودٍ وُلِدَ فِي الإِسْلاَمِ)). تَابَعَهُ خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَسْمَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ((أَنَّهَا هَاجَرَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهِيَ حُبْلَى)).

[طرفه في : ٥٤٦٩].

हज़रत अस्मा (रज़ि.) हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) की साहबज़ादी हैं, जिनके बतन से हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) पैदा हुए जिनका तारीख़े इस्लाम में बहुत बड़ा मुक़ाम है।

3910. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि सबसे पहला बच्चा जो इस्लाम में (हिजरत के बाद) पैदा हुआ, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) हैं, उन्हें लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने एक खजूर लेकर उसे चबाया फिर उसको उनके मुँह में डाल दिया। इसलिये सबसे पहली चीज़ जो उनके पेट में गई वो आँहज़रत

٣٩١٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ أَبِي أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((أَوَّلُ مَوْلُودٍ وُلِدَ فِي الإِسْلاَمِ عَبْدُ اللهِ بْنُ الزُّبَيْرِ: أَتَوا بِهِ النَّبِيَّ ﷺ، فَأَخَذَ النَّبِيُّ ﷺ تَمْرَةً فَلاَكَهَا، ثُمَّ أَدْخَلَهَا فِي فِيْهِ، فَأَوَّلُ مَا دَخَلَ بَطْنَهُ رِيْقُ

(ﷺ) का लुआबे मुबारक था। النبيّ ﷺ)).

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत के लिये यही काफ़ी है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर असद क़ुरैशी हैं, मदीना में मुहाजिरीन में ये सबसे पहला बच्चा हैं जो 1 हिजरी में पैदा हुए, ख़ुद उनके नानाजान हज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने उनके कान में अज़ान पढ़ी। ये बिलकुल साफ़ चेहरे वाले थे एक भी बाल मुँह पर नहीं था न दाढ़ी थी। बड़े रोज़े रखने वाले और बहुत नवाफ़िल पढ़ने वाले थे, मोटे ताज़े बड़े क़वी और बा रुअ़ब शख़्सियत के मालिक थे। हक़ बात मानने वाले, स़िलारह़मी करने वाले और बहुत सी ख़ूबियों के मालिक थे। उनकी वालिदा हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की बेटी थीं। उनके नाना हज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) थे उनकी दादी हज़रत सफ़िया (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की फूफी थीं, उनकी ख़ाला हज़रत आइशा (रज़ि.) थीं आठ साल की उम्र में उनको शर्फ़े बेअ़त ह़ासिल हुआ। हज्जाज बिन यूसुफ़ ज़ालिम ने इनको बड़ी बेरहमी के साथ मक्का में क़त्ल किया। मंगल के दिन 17 जमादिष़्ष़ानी 73 हिजरी को उनको सूली पर लटकाया उनकी शहादत के बाद हज्जाज बिन यूसुफ़ अ़ज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हुआ जब भी नींद आती फ़ौरन चौंककर खड़ा हो जाता और कहता अ़ब्दुल्लाह मुझसे इंतिक़ाम लेने मेरे सर पर खड़ा हुआ है। इस तरह बिलबिला कर कुछ दिनों बाद ये ज़ालिम भी ख़त्म हो गया। 64 हिजरी में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) के हाथ पर अहले ह़िजाज़ यमन, इराक़ और ख़ुरासान के मुसलमानों की बड़ी ता'दाद ने बेअ़ते ख़िलाफ़त की थी। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने आठ हज्ज भी किये थे। आज उस दौर के ज़ालिम व मज़्लूम लोगों की दास्तानें बाक़ी रह गई हैं। काश! आज के ज़ालिमीन उनसे इबरत ह़ासिल करें और आयते क़ुर्आनिया के फ़लसफ़े को समझने पर तवज्जह दें, **फक़ुतिअ दाबिरुल्क़ौमिल्लज़ीन ज़लमू वल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल्आलमीन.** (अल अन्आम : 45)

३९११- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَقْبَلَ نَبِيُّ اللهِ إِلَى الْمَدِينَةِ وَهُوَ مُرْدِفٌ أَبَا بَكْرٍ، وَأَبُوبَكْرٍ شَيْخٌ يُعْرَفُ وَنَبِيُّ اللهِ شَابٌّ لاَ يُعْرَفُ. قَالَ: فَيَلْقَى الرَّجُلُ أَبَا بَكْرٍ فَيَقُولُ : يَا أَبَا بَكْرٍ مَنْ هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْكَ؟ فَيَقُولُ: هَذَا الرَّجُلُ يَهْدِينِي السَّبِيلَ، قَالَ: فَيَحْسِبُ الْحَاسِبُ أَنَّهُ إِنَّمَا يَعْنِي الطَّرِيقَ، وَإِنَّمَا يَعْنِي سَبِيلَ الْخَيْرِ. فَالْتَفَتَ أَبُو بَكْرٍ فَإِذَا هُوَ بِفَارِسٍ قَدْ لَحِقَهُمْ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، هَذَا فَارِسٌ قَدْ لَحِقَ بِنَا، فَالْتَفَتَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اصْرَعْهُ))، فَصَرَعَهُ

3911. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुस्समद ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे बाप अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) जब मदीना तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) आप (ﷺ) की सवारी पर पीछे बैठे हुए थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) बूढ़े हो गये थे और उनको लोग पहचानते भी थे लेकिन हुज़ूर अकरम (ﷺ) अभी जवान मा'लूम होते थे और आप (ﷺ) को लोग आ़म तौर से पहचानते भी न था। बयान किया कि अगर रास्ते में कोई मिलता और पूछता कि ऐ अबूबक्र! ये तुम्हारे साथ कौन स़ाहब हैं? तो आप जवाब देते कि ये मेरे हादी हैं, मुझे रास्ता बताते हैं पूछने वाला ये समझता कि मदीना का रास्ता बतलाने वाला है और अबूबक्र (रज़ि.) का मतलब इस कलाम से ये था कि आप (ﷺ) दीन व ईमान का रास्ता बतलाते हैं। एक मर्तबा हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) पीछे मुड़े तो एक सवार नज़र आया जो उनके क़रीब आ चुका था। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! ये सवार आ गया और अब हमारे क़रीब ही पहुँचने वाला है नबी करीम (ﷺ) ने भी उसे मुड़कर देखा और दुआ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! इसे गिरा दे चुनाँचे घोड़ी ने उसे गिरा

दिया। फिर जब वो हिनहिनाती हुई उठी तो सवार (सराक़ा) ने कहा ऐ अल्लाह के नबी! आप जो चाहें मुझे हुक्म दें। हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया अपनी जगह खड़ा रह और देख किसी को हमारी तरफ़ आने न देना। रावी ने बयान किया कि वही शख़्स जो सुबह आप (ﷺ) के ख़िलाफ़ था शाम जब हुई तो आप (ﷺ) का वो हथियार था दुश्मन को आप (ﷺ) से रोकने लगा। उसके बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) (मदीना पहुँचकर) हर्रा के क़रीब उतरे और अंसार को बुला भेजा। अकाबिरे अंसार हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और दोनों को सलाम किया और अर्ज़ किया आप (ﷺ) सवार हो जाएँ आप (ﷺ) की हिफ़ाज़त और फ़र्माबरदारी की जाएगी, चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) सवार हो गये और हथियार बन्द अंसार ने आप दोनों को हल्क़े में ले लिया। इतने में मदीना में भी सबको मा'लूम हो गया कि हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ ला चुके हैं सब लोग आपको देखने के लिये बुलन्दी पर चढ़ गये और कहने लगे कि अल्लाह के नबी आ गये। अल्लाह के नबी आ गये। आँहज़रत (ﷺ) मदीना की तरफ़ चलते रहे और (मदीना पहुँचकर) हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) के घर के पास सवारी से उतर गये। अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) (एक यहूदी आलिम ने) अपने घर वालों से हुज़ूर (ﷺ) का ज़िक्र सुना, वो उस वक़्त अपने एक खजूर के बाग़ में थे और खजूर जमा कर रहे थे उन्होंने (सुनते ही) बड़ी जल्दी के साथ जो कुछ खजूर जमा कर चुके थे उसे रख देना चाहा लेकिन जब आप (ﷺ) की ख़िदमत में वो हाज़िर हुए तो जमाशुदा खजूरें उनके साथ ही थीं उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की बातें सुनीं और अपने घर वापस चले आए। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमारे (ननिहाली) अक़ारिब में किसी का घर यहाँ से ज़्यादा क़रीब है? अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि मेरा ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! ये मेरा घर है और ये इसका दरवाज़ा है फ़र्माया (अच्छा तो जाओ) दोपहर का आराम करने की जगह हमारे लिये दुरुस्त करो हम दोपहर को वहीं आराम करेंगे। अबू अय्यूब (रज़ि.) ने अर्ज़ किया फिर आप (ﷺ) दोनों तशरीफ़ ले चलें, अल्लाह मुबारक करे। हुज़ूर (ﷺ) अभी उनके घर में दाख़िल हुए थे कि अब्दुल्लाह बिन सलाम भी आ गये और कहा कि, मैं गवाही देता हूँ कि आप (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और ये कि आप

الْفَرَسِ، ثُمَّ قَامَتْ تُحَمْحِمُ، فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ مُرْنِي بِمَ شِئْتَ. قَالَ: ((فَقِفْ مَكَانَكَ، لاَ تَتْرُكَنَّ أَحَدًا يَلْحَقُ بِنَا)). قَالَ: فَكَانَ أَوَّلَ النَّهَارِ جَاهِدًا عَلَى نَبِيِّ اللهِ، وَكَانَ آخِرَ النَّهَارِ مَسْلَحَةً لَهُ. فَنَزَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَانِبَ الْحَرَّةِ، ثُمَّ بَعَثَ إِلَى الأَنْصَارِ فَجَاؤُوا إِلَى نَبِيِّ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي بَكْرٍ فَسَلَّمُوا عَلَيْهِمَا وَقَالُوا: ارْكَبَا آمِنَيْنِ مُطَاعَيْنِ. فَرَكِبَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبُو بَكْرٍ وَحَفُّوا دُونَهُمَا بِالسِّلاَحِ، فَقِيْلَ فِي الْمَدِيْنَةِ: جَاءَ نَبِيُّ اللهِ، جَاءَ نَبِيُّ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَشْرَفُوا يَنْظُرُوْنَ وَ يَقُوْلُوْنَ جَاءَ نَبِيُّ اللهِ جَاءَ نَبِيُّ اللهِ فَأَقْبَلَ يَسِيْرُ حَتَّى نَزَلَ جَانِبَ دَارِ أَبِي أَيُّوبَ فَإِنَّهُ لَيُحَدِّثُ أَهْلَهُ إِذْ سَمِعَ بِهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ وَهُوَ فِي نَخْلٍ لأَهْلِهِ يَخْتَرِفُ لَهُمْ، فَعَجِلَ أَنْ يَضَعَ الَّذِيْ يَخْتَرِفُ لَهُمْ فِيْهَا، فَجَاءَ وَهِيَ مَعَهُ، فَسَمِعَ مِنْ نَبِيِّ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى أَهْلِهِ، فَقَالَ نَبِيُّ اللهِ ﷺ: ((أَيُّ بُيُوتِ أَهْلِنَا أَقْرَبُ؟)). قَالَ أَبُو أَيُّوب: أَنَا يَا نَبِيَّ اللهِ، هَذِهِ دَارِي وَهَذَا بَابِي. قَالَ: ((فَانْطَلِقْ فَهَيِّءْ لَنَا مَقِيلاً. قَالَ: قُومَا عَلَى بَرَكَةِ اللهِ)). فَلَمَّا جَاءَ نَبِيُّ اللهِ جَاءَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ، وَأَنَّكَ جِئْتَ

بِحَقٍّ، وَقَدْ عَلِمَتْ يَهُودُ أَنِّي سَيِّدُهُمْ وَابْنُ سَيِّدِهِمْ وَأَعْلَمُهُمْ وَابْنُ وَأَعْلَمِهِمْ، فَادْعُهُمْ فَاسْأَلْهُمْ عَنِّي قَبْلَ أَنْ يَعْلَمُوا أَنِّي قَدْ أَسْلَمْتُ، فَإِنَّهُمْ إِنْ يَعْلَمُوا أَنِّي قَدْ أَسْلَمْتُ قَالُوا فِيَّ مَا لَيْسَ فِيَّ. فَأَرْسَلَ نَبِيُّ اللهِ ﷺ فَأَقْبَلُوا فَدَخَلُوا عَلَيْهِ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَا مَعْشَرَ الْيَهُودِ، وَيْلَكُمْ اتَّقُوا اللهَ، فَوَ اللهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ إِنَّكُمْ لَتَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللهِ حَقًّا، وَأَنِّي جِئْتُكُمْ بِحَقٍّ، فَأَسْلِمُوا)). قَالُوا: مَا نَعْلَمُهُ - قَالُوا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَهَا ثَلاَثَ مِرَارٍ - قَالَ: ((فَأَيُّ رَجُلٍ فِيكُمْ عَبْدُ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ؟)) قَالُوا: ذَاكَ سَيِّدُنَا، وَابْنُ سَيِّدِنَا، وَأَعْلَمُنَا وَابْنُ أَعْلَمِنَا.
قَالَ: ((أَفَرَأَيْتُمْ إِنْ أَسْلَمَ؟)) قَالُوا: حَاشَا للهِ مَا كَانَ لِيُسْلِمَ. قَالَ: أَفَرَأَيْتُمْ إِنْ أَسْلَمَ؟)) قَالُوا: حَاشَا للهِ مَا كَانَ لِيُسْلِمَ. قَالَ: ((أَفَرَأَيْتُمْ إِنْ أَسْلَمَ؟)) قَالُوا: حَاشَا للهِ مَا كَانَ لِيُسْلِمَ. قَالَ: ((يَا ابْنَ سَلاَمٍ اخْرُجْ عَلَيْهِمْ)). فَخَرَجَ، فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ الْيَهُودِ، اتَّقُوا اللهَ، فَوَ اللهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ إِنَّكُمْ لَتَعْلَمُونَ أَنَّهُ رَسُولُ اللهِ، وَأَنَّهُ جَاءَ بِحَقٍّ. فَقَالُوا: كَذَبْتَ، فَأَخْرَجَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)).
[راجع: ٣٣٢٩]

(ﷺ) हक़ के साथ मब्ऊ़ष हुए हैं। और यहूदी मेरे बारे में अच्छी त़रह जानते हैं कि मैं उनका सरदार हूँ और उनके सरदार का बेटा हूँ और उनमें सबसे ज़्यादा जानने वाला हूँ और उनके सबसे बड़े आ़लिम का बेटा हूँ। इसलिये आप (ﷺ) इससे पहले कि मेरा इस्लाम लाने का ख़्याल उन्हें मा'लूम हो, बुलाइये और उनसे मेरे बारे में पूछिये, क्योंकि उन्हें अगर मा'लूम हो गया कि मैं इस्लाम ला चुका हूँ तो मेरे बारे में ग़लत़ बातें कहनी शुरू कर देंगे। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें बुला भेजा और जब वो आप (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि ऐ यहूदियों! अफ़सोस तुम पर, अल्लाह से डरो, उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुम लोग ख़ूब जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूले बरहक़ हूँ और ये भी कि मैं तुम्हारे पास ह़क़ लेकर आया हूँ, फिर अब इस्लाम में दाख़िल हो जाओ, उन्होंने कहा कि हमें मा'लूम नहीं है, नबी करीम (ﷺ) ने उनसे और उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से इस त़रह तीन मर्तबा कहा। फिर आपने फ़र्माया। अच्छा अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम तुममें कौन स़ाह़ब हैं? उन्होंने कहा हमारे सरदार और हमारे सरदार के बेटे, हममें सबसे ज़्यादा जानने वाले और हमारे सबसे बड़े आ़लिम के बेटे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अगर वो इस्लाम ले आएँ, फिर तुम्हारा क्या ख़्याल होगा। कहने लगे अल्लाह उनकी ह़िफ़ाज़त करे, वो इस्लाम क्यूँ लाने लगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इब्ने सलाम! अब इनके सामने आ जाओ। अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) बाहर आ गये और कहा ऐ गिरोहे यहूद! अल्लाह से डरो उस अल्लाह की क़सम! जिसके सिवा और कोई मा'बूद नहीं तुम्हें ख़ूब मा'लूम है कि आप (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और ये कि आप (ﷺ) ह़क़ के साथ मब्ऊ़ष हुए हैं। यहूदियों ने कहा तुम झूठे हो। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे बाहर चले जाने के लिये फ़र्माया। (राजेअ़ : 3329)

नोट :— ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) अबूबक्र (रज़ि.) से दो साल कई महीने उ़म्र में बड़े थे लेकिन उस वक़्त तक आपके बाल काले

थे, इसलिये मा'लूम होता था कि आप (ﷺ) नौजवान हैं, लेकिन अबूबक्र (रज़ि.) की दाढ़ी के बाल काफ़ी सफ़ेद हो चुके थे। रावी ने इसकी ता'बीर बयान की है अबूबक्र (रज़ि.) चूँकि ताजिर थे अकष़र अ़रब के चारों ओर का सफ़र करते रहते थे इसलिये लोग आप (रज़ि.) को पहचानते थे।

तश्रीह : ह़दीष़े मज़्कूरा में हिजरत के वाक़िये के बारे में चन्द उमूर बयान किये गये हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने 27 स़फ़र 13 हिजरी नबवी रोज़ पंज शंबा मुत़ाबिक़ 12 सितम्बर 622 ईस्वी में मक्कतुल मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा के लिये सफ़र शुरू फ़र्माया मक्का से चन्द मील दूरी पर कोहे ष़ोर है। इब्तिदा में आप (ﷺ) ने अपने सफ़र में क़याम के लिये उसी पहाड़ के एक ग़ार को मुंतख़ब फ़र्माया जहाँ तीन रातों तक आप (ﷺ) ने क़याम किया। उसके बाद यकुम रबीउ़ल अव्वल रोज़ दो शंबा मुत़ाबिक़ 16 सितम्बर 622 ईस्वी में आप मदीना मुनव्वरा के लिये रवाना हुए रास्ते में बहुत से मुवाफ़िक़ और नामुवाफ़िक़ ह़ालात पेश आए मगर आप बफ़ज़्लिही तआ़ला एक हफ़्ता के सफ़र के बाद ख़ैरियत व आ़फ़ियत के साथ 8 रबीउ़ल अव्वल 13 नबवी रोज़ दो शंबा मुत़ाबिक़ 23 सितम्बर 622 ईस्वी मदीना से जुड़ी एक बस्ती क़ुबा नामी में पहुँच गये और पंज शंबा तक यहाँ आराम फ़र्माया। उस दौरान में आप (ﷺ) ने यहाँ मस्जिदे क़ुबा की बुनियाद डाली 12 रबीउ़ल अव्वल 1 हिजरी जुम्आ के दिन आप (ﷺ) क़ुबा से रवाना होकर बनू सालिम के घरों तक पहुँचे थे कि जुम्आ का वक़्त हो गया और आप (ﷺ) ने यहाँ सौ मुसलमानों के साथ जुम्आ अदा किया, जो इस्लाम में पहला जुम्आ था, जुम्अे से फ़ारिग़ होकर आप (ﷺ) यष़्रिब के जुनूबी जानिब से शहर में दाख़िल हुए और आज शहरे यष़्रिब मदीनतुन् नबी के नाम से मौसूम हो गया।

आँह़ज़रत (ﷺ) ने यहूद से जो कुछ फ़र्माया वो उन पेशीनगोइयों की बिना पर था जो तौरात में मौजूद थीं। चुनाँचे ह़ब्क़ूक़ नबी की किताब बाब 3 दर्स 3 में लिखा हुआ था कि अल्लाह जुनूब से और वो जो क़ुदूस है कोहे फ़ाराँ से आया उसकी शौकत से आसमान छुप गया और ज़मीन उसकी ह़म्द से मअ़मूर हुई, यहाँ मदीना के दाख़िले पर ये इशारे हैं। किताब बसोया 42 बाब 11 में है कि सिल्अ़ के बाशिन्दे एक गीत गाएँगे। ये गीत आँह़ज़रत (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी पर गाया गया। मदीना का नाम पहले अंबिया की किताबों में सिल्अ़ है। जंगे ख़ंदक़ में मुसलमानों ने जिस जगह ख़ंदक़ खोदी थी वहाँ एक पहाड़ी का नाम जबले सिल्अ़ा मदीना वालों की ज़ुबान पर आम मुरव्वज था। इन ही पेशीनगोइयों की बिना पर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। तिर्मिज़ी की रिवायत के मुत़ाबिक़ अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने रसूले करीम (ﷺ) का कलामे पाक आप (ﷺ) के लफ़्ज़ों में सुना था जिसके सुनते ही वो इस्लाम के शैदाई बन गये। **याअय्युहन्नासु अफ़्शुस्सलाम व अत़्इमुत्तआ़म व सिलुल्अर्हाम व स़ल्लू बिल्लैलि वन्नासु नियाम तदख़ुलुल्जन्नत बिसलाम** या'नी ऐ लोगों! अमन व सलामती फैलाओ और खाना खिलाओ और स़िलारह़मी करो और रात में जब लोग सोये हुए हों उठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ो। उन अ़मलों के नतीजे में तुम जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओगे। अव्वलीन मेज़बान रसूले करीम (ﷺ) ह़ज़रत अबू अय्यूब अंस़ारी (रज़ि.) बड़े ही ख़ुशनसीब हैं जिनको सबसे पहले ये शर्फ़ ह़ासिल हुआ। उ़म्र में ह़ज़रत रसूले करीम (ﷺ) से ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) दो साल छोटे थे मगर उन पर बुढ़ापा ग़ालिब आ गया था। बाल सफ़ेद हो गये थे। वो अकष़र अत़राफ़े अ़रब में बसिलसिला तिजारत सफ़र भी किया करते थे, इसलिये लोग उनसे ज़्यादा वाक़िफ़ थे। अबू अय्यूब अंस़ारी (रज़ि.) बनू नज्जार में से थे। आँह़ज़रत (ﷺ) के दादा की माँ उसी ख़ानदान से थीं इसीलिये ये क़बीला आप (ﷺ) का ननिहाल क़रार पाया। ह़ज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) का नाम ख़ालिद बिन ज़ैद बिन कुलैब अंस़ारी (रज़ि.) क़ुस्तुन्तुनिया में जिहाद कर रहे थे तो उनके साथ निकले और बीमार हो गये। जब बीमारी ने ज़ोर पकड़ा तो अपने साथियों को वस़िय्यत फ़र्माई कि जब मेरा इंतिक़ाल हो जाए तो मेरे जनाज़े को उठा लेना फिर जब तुम दुश्मन के सामने स़फ़ बस्ता हो जाओ तो मुझे अपने क़दमों के नीचे दफ़न कर देना। लोगों ने ऐसा ही किया। आपकी क़ब्र क़ुस्तुन्तुनिया की चार दीवारी के क़रीब है जो आज तक मशहूर है।

3912. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा कि मुझे

٣٩١٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي

उबैदुल्लाह बिन उमर ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने या'नी इब्ने उमर (रज़ि.) से और उनसे उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने फ़र्माया आपने तमाम मुहाजिरीने अव्वलीन का वज़ीफ़ा (अपने अहदे ख़िलाफ़त में) चार चार हज़ार चार चार क़िस्तों में मुक़र्रर कर दिया था, लेकिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का वज़ीफ़ा चार क़िस्तों में साढ़े तीन हज़ार था इस पर उनसे पूछा गया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) भी मुहाजिरीन में से हैं। फिर आप (रज़ि.) उन्हें चार हज़ार से कम क्यूँ देते हो? तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि उन्हें उनके वालिदैन हिजरत करके यहाँ लाए थे। इसलिये वो उन मुहाजिरीन के बराबर नहीं हो सकते जिन्होंने ख़ुद हिजरत की थी।

عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ - يَعْنِي عَنِ ابْنِ عُمَرَ - عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((كَانَ فَرَضَ لِلْمُهَاجِرِيْنَ الأَوَّلِيْنَ أَرْبَعَةَ آلاَفٍ فِي أَرْبَعَةٍ، وَفَرَضَ لاِبْنِ عُمَرَ ثَلاَثَةَ آلاَفٍ وَخَمْسَمِائَةٍ. فَقِيْلَ لَهُ: هُوَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ، فَلِمَ نَقَصْتَهُ مِنْ أَرْبَعَةِ آلاَفٍ؟ قَالَ: إِنَّمَا هَاجَرَ بِهِ أَبَوَاهُ. يَقُوْلُ: لَيْسَ هُوَ كَمَنْ هَاجَرَ بِنَفْسِهِ)).

मुहाजिरीने अव्वलीन वो सहाबा जिन्होंने दोनों क़िब्लों की तरफ़ नमाज़ पढ़ी हो, जंगे बद्र में शरीक हुए। इससे हज़रत उमर (रज़ि.) का इंसाफ़ भी ज़ाहिर होता है कि ख़ास अपने बेटे का लिहाज़ किये बग़ैर इंसाफ़ को मद्दे नज़र रखा। एक रिवायत में यूँ है कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के लिये चार हज़ार मुक़र्रर किया तो सहाबा ने पूछा कि भला आपने अब्दुल्लाह (रज़ि.) को मुहाजिरीने अव्वलीन से तो कम रखा मगर उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से क्यूँ कम न किया? उसामा (रज़ि.) तो अब्दुल्लाह (रज़ि.) से बढ़कर किसी जंग में शरीक नहीं हुए। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा हाँ ये सहीह है मगर उसामा (रज़ि.) के बाप को आँहज़रत (ﷺ) अब्दुल्लाह (रज़ि.) के बाप से ज़्यादा चाहते थे। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) की मुहब्बत को मेरी मुहब्बत पर कुछ तरजीह होनी चाहिये।

3913. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें अबू वाइल शक़ीक़ बिन सलमा ने और उनसे ख़ब्बाब (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हिजरत की थी। (दूसरी सनद)

(राजेअ: 3913)

٣٩١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيْرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ خَبَّابٍ قَالَ: ((هَاجَرْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ.)) ح. [راجع: ٣٩١٣]

3914. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा उनसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उन्होंने शक़ीक़ बिन सलमा से सुना, कहा कि हमसे ख़ब्बाब (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हिजरत की तो हमारा मक़्सद सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा थी और अल्लाह तआला हमें उसका अज्र भी ज़रूर देगा। पस हममें से कुछ तो पहले ही इस दुनिया से उठ गये। और यहाँ अपना कोई बदला उन्होंने नहीं पाया। मुस्अब बिन उमर (रज़ि.) भी उन्हीं में से हैं। उहुद की लड़ाई में उन्होंने शहादत पाई। और उनके कफ़न के लिये हमारे पास एक कम्बल के सिवा और कुछ नहीं था। और वो भी ऐसा कि उससे हम उनका सर छुपाते तो उनके पाँव खुल जाते। और अगर पाँव छुपाते तो सर खुला रह जाता। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने

٣٩١٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ شَقِيْقَ بْنَ سَلَمَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا خَبَّابٌ قَالَ: ((هَاجَرْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ نَبْتَغِي وَجْهَ اللهِ وَوَجَبَ أَجْرُنَا عَلَى اللهِ، فَمِنَّا مَنْ مَضَى لَمْ يَأْكُلْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا، مِنْهُمْ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ: قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ فَلَمْ نَجِدْ شَيْئًا نُكَفِّنُهُ فِيْهِ إِلاَّ نَمِرَةً كُنَّا إِذَا غَطَّيْنَا بِهَا رَأْسَهُ خَرَجَتْ رِجْلاَهُ، فَإِذَا غَطَّيْنَا رِجْلَيْهِ خَرَجَ رَأْسُهُ،

فَأَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ نُغَطِّيَ رَأْسَهُ بِهَا، وَنَجْعَلَ عَلَى رِجْلَيْهِ مِنْ إِذْخِرٍ. وَمِنَّا مَنْ أَيْنَعَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ فَهُوَ يَهْدِبُهَا)).

[راجع: ٣٩١٤]

हुक्म दिया कि उनका सर छुपा दिया जाए और पाँव को इज़्ख़र घास से छुपा दिया जाए। और हममें कुछ वो हैं जिन्होंने अपने अमल का फल इस दुनिया में पुख़्ता कर लिया। और अब वो उसको ख़ूब चुन रहे हैं। (राजेअ : 3914)

٣٩١٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بِشْرٍ حَدَّثَنَا رَوْحٌ حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو بُرْدَةَ بْنُ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيُّ قَالَ: قَالَ لِيْ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ: هَلْ تَدْرِيْ مَا قَالَ أَبِي لأَبِيْكَ؟ قَالَ: قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَإِنَّ أَبِي قَالَ لأَبِيْكَ: يَا أَبَا مُوسَى، هَلْ يَسُرُّكَ إِسْلاَمُنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهِجْرَتُنَا مَعَهُ وَجِهَادُنَا مَعَهُ وَعَمَلُنَا كُلُّهُ مَعَهُ بَرَدَ لَنَا، وَأَنَّ كُلَّ عَمَلٍ عَمِلْنَاهُ بَعْدَهُ نَجَوْنَا مِنْهُ كَفَافًا رَأْسًا بِرَأْسٍ؟ فَقَالَ أَبِي: لاَ وَاللهِ، قَدْ جَاهَدْنَا بَعْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصَلَّيْنَا وَصُمْنَا وَعَمِلْنَا خَيْرًا كَثِيْرًا وَأَسْلَمَ عَلَى أَيْدِيْنَا بَشَرٌ كَثِيْرٌ، وَإِنَّا لَنَرْجُو ذَلِكَ. فَقَالَ أَبِي: لَكِنِّي أَنَا وَالَّذِي نَفْسُ عُمَرَ بِيَدِهِ لَوَدِدْتُ أَنَّ ذَلِكَ بَرَدَ لَنَا وَأَنَّ كُلَّ شَيْءٍ عَمِلْنَاهُ بَعْدُ نَجَوْنَا مِنْهُ كَفَافًا رَأْسًا بِرَأْسٍ. فَقُلْتُ: إِنَّ أَبَاكَ وَاللهِ خَيْرٌ مِنْ أَبِي)).

3915. हमसे यह्या बिन बिश्र ने बयान किया, कहा हमसे रौह ने बयान किया, उनसे औफ़ ने बयान किया, उनसे मुआविया बिन क़ुर्रह ने बयान किया कि मुझसे अबू बुर्दा बिन मूसा अशअरी ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया। क्या तुमको मा'लूम है, मेरे वालिद उमर (रज़ि.) ने तुम्हारे वालिद अबू मूसा (रज़ि.) को क्या जवाब दिया था। ऐ अबू मूसा! क्या तुम इस पर राज़ी हो कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हमारा इस्लाम, आपके साथ हमारी हिजरत, आपके साथ हमारा जिहाद, हमारे तमाम अमल जो हमने आपकी ज़िन्दगी में किये हैं उनके बदले में हम अपने उन आमाल से नजात पा जाएँ जो हमने आपके बाद किये हैं गो वो नेक भी हों बस बराबरी पर मामला ख़त्म हो जाए। इस पर आपके वालिद ने मेरे वालिद से कहा अल्लाह की क़सम! मैं इस पर राज़ी नहीं हूँ हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद भी जिहाद किया, नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे और बहुत से आमाले ख़ैर किये और हमारे साथ तक मेरा सवाल है तो उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मेरी ख़्वाहिश है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ज़िन्दगी में किये हुए हमारे आमाल महफ़ूज़ रहे हों और जितने आमाल हमने आप (ﷺ) के बाद किये हैं उन सबसे उसके बदले में हम नजात पा जाएँ और बराबर पर मामला ख़त्म हो जाए। अबू बुर्दा कहते हैं उस पर मैंने कहा अल्लाह की क़सम आपके वालिद (हज़रत उमर रजि) मेरे वालिद (अबू मूसा रजि) से बेहतर थे।

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) का ये क़ौल कि न उनका षवाब मिले और न उनकी वजह से अज़ाब हो ये आपकी बेइंतिहा अल्लाहतर्सी और एहतियात थी। उनका मतलब ये था कि आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद जो आमाले ख़ैर हमने किये हैं उन पर हमको पूरा भरोसा नहीं कि वो बारगाहे इलाही में कुबूल हुए या नहीं हमारी निय्यत उनमें ख़ालिस थी या नहीं तो हम इसी को ग़नीमत समझते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) के साथ जो आमाल हमने किये हैं उनका तो षवाब हमको मिल जाए नजात के लिये वही आमाल काफ़ी हैं और आपके बाद जो आमाल हैं उनमें हमको कोई मुवाख़िज़ा न हो षवाब न सही ये भी ग़नीमत है कि अज़ाब न हो। क्योंकि डर का मक़ाम रजाअ के मुक़ाम से आला है मतलब ये है कि हज़रत उमर (रज़ि.) इस बाब में अबू मूसा (रज़ि.) से अफ़ज़ल थे वरना हज़रत उमर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत मुत्लक़न अबू मूसा (रज़ि.) पर तो बिल इत्तिफ़ाक़ षाबित है।

हाफ़िज़ ने कहा कभी मफ़ज़ूल को भी एक ख़ास मुक़द्दमा में फ़ाज़िल पर अफ़ज़लियत होती है और इसी से अफ़ज़लियते मुत्लक़ा लाज़िम नहीं आती और हज़रत उमर (रज़ि.) का ये फ़र्माना कसरे नफ़्स और तवाज़ोअ और ख़ौफ़े इलाही से था वरना उनका एक एक अमल और एक एक अदल और इंसाफ़ हमारे तमाम उम्र के नेक आमाल से कहीं ज़्यादा है। हक़ीक़त तो ये है अगर कोई मुन्सिफ़ आदमी गो वो किसी मज़हब का हो हज़रत उमर (रज़ि.) की सवानेह उमरी पर नज़र डाले तो उसको बिला शुब्हा ये मा'लूम हो जाएगा कि मादर गीती ने ऐसा फ़रज़न्द बहुत ही कम जना है। और मुसलमानों में तो आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद आज तक कोई ऐसा मुदब्बिर, मुंतज़िम, आदिल, हक़परस्त, अल्लाह वाला, रइयत परवर हाकिम पैदा ही नहीं हुआ। मा'लूम नहीं राफ़िज़ियों की अक़्ल कहाँ तशरीफ़ ले गई है कि वो ऐसे जोहर नफ़ीस को जिसकी ज़ात से इस्लाम और मुसलमानों का शर्फ़ है, मत्ऊन करते हैं। अल्लाह समझे उसका ख़मियाज़ा मरते ही उनको मा'लूम हो जाएगा। (वहीदी)

٣٩١٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ – أَوْ بَلَغَنِي عَنْهُ – حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا إِذَا قِيلَ لَهُ هَاجَرَ قَبْلَ أَبِيهِ يَغْضَبُ. قَالَ: وَقَدِمْتُ أَنَا وَعُمَرُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَوَجَدْنَاهُ قَائِلاً فَرَجَعْنَا إِلَى الْمَنْزِلِ، فَأَرْسَلَنِي عُمَرُ وَقَالَ: اذْهَبْ فَانْظُرْ هَلِ اسْتَيْقَظَ؟ فَأَتَيْتُهُ فَدَخَلْتُ عَلَيْهِ فَبَايَعْتُهُ، ثُمَّ انْطَلَقْتُ إِلَى عُمَرَ فَأَخْبَرْتُهُ أَنَّهُ قَدِ اسْتَيْقَظَ، فَانْطَلَقْنَا إِلَيْهِ نُهَرْوِلُ هَرْوَلَةً حَتَّى دَخَلَ عَلَيْهِ فَبَايَعَهُ، ثُمَّ بَايَعْتُهُ)).

[طرفاه في : ٤١٨٦، ٤١٨٧].

3916. मुझसे मुहम्मद बिन सबाह ने ख़ुद बयान किया या उनसे किसी और ने नक़ल करके बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अलिया ने, उनसे आसिम अहवल ने, उनसे अबू उष्मान ने बयान किया और उन्होंने कहा कि इब्ने उमर (रज़ि.) से मैंने सुना कि जब उनसे कहा जाता कि तुमने अपने वालिद से पहले हिजरत की तो वो गुस्सा हो जाया करते थे। उन्होंने बयान किया कि मैं उमर (रज़ि.) के साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उस वक़्त आप (ﷺ) आराम फ़र्मा रहे थे, इसलिये हम घर वापस आ गये, फिर उमर (रज़ि.) ने मुझे आप (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा और फ़र्माया कि जाकर देख आओ हुज़ूर (ﷺ) अभी बेदार हुए या नहीं चुनाँचे मैं आया (आँहज़रत ﷺ बेदार हो चुके थे) इसलिये अंदर चला गया और आप (ﷺ) के हाथ पर बेअत की फिर मैं उमर (रज़ि.) के पास आया और आपको हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के बेदार होने की ख़बर दी। उसके बाद हम आप (ﷺ) की ख़िदमत में दौड़ते हुए हाज़िर हुए उमर (रज़ि.) भी अंदर गये और आप (ﷺ) से बेअत की और मैंने भी (दोबारा) बेअत की। (दीगर मक़ाम : 4186, 4187)

गोया अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने लोगों की इस ग़लत गोई का सबब बयान कर दिया कि असल हक़ीक़त ये थी। इस पर कुछ ने ये समझा कि मैंने अपने वालिद से पहले हिजरत की, ये बिलकुल ग़लत है।

3917. हमसे अहमद बिन उ़ष्मान ने बयान किया, कहा कि उनसे शुरैह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने, उनस उनके वालिद यूसुफ़ बिन इस्हाक़ ने, उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने बयान किया कि मैंने बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से ह़दीष़ सुनी वो बयान करते थे कि अबूबक्र (रज़ि.) ने आ़ज़िब (रज़ि.) से एक पालान ख़रीदा और मैं उनके साथ उठाकर पहुचान आया था, उन्होंने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) से आ़ज़िब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सफ़र हिजरत का ह़ाल पूछा तो उन्होंने बयान किया कि चूँकि हमारी निगरानी हो रही थी (या'नी कुफ़्फ़ार हमारी ताक में थे) इसलिये हम (ग़ार से) रात के वक़्त बाहर आए और पूरी रात और दिन भर बहुत तेज़ी के साथ चलते रहे, जब दोपहर हुई तो हमें एक चट्टान दिखाई दी। हम उसके क़रीब पहुँचे तो उसकी आड़ में थोड़ा सा साया भी मौजूद था, अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हुज़ूर (ﷺ) के लिये एक चमड़ा बिछा दिया जो मेरे साथ था आप उस पर लेट गये, और मैं आस-पास की रेत झाड़ने लगा। इत्तिफ़ाक़ से एक चरवाहा नज़र आया जो अपनी बकरियों के थोड़े से रेवड़ के साथ उसी चट्टान की त़रफ़ आ रहा था उसका भी मक़्सद उस चट्टान से वही था जिसके लिये हम यहाँ आए थे (या'नी साया ह़ासिल करना) मैंने उससे पूछा लड़के तू किसका ग़ुलाम है? उसने बताया कि फ़लाँ का हूँ। मैंने उससे पूछा क्या तुम अपनी बकरियों से कुछ दूध निकाल सकते हो? उसने कहा कि हाँ फिर वो अपने रेवड़ से एक बकरी लाया तो मैंने उससे कहा कि पहले उसका थन झाड़ लो। उन्होंने बयान किया कि फिर उसने कुछ दूध दहा। मेरे साथ पानी का एक छागल था। उसके मुँह पर कपड़ा बँधा हुआ था। ये पानी मैंने हुज़ूर (ﷺ) के लिये साथ ले रखा था। वो पानी मैंने उस दूध पर इतना डाला कि वो नीचे तक ठण्डा हो गया तो मैं उसे हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में लेकर ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया दूध नोश फ़र्माइये या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (ﷺ) ने उसे नोश फ़र्माया जिससे मुझे बहुत ख़ुशी ह़ासिल हुई। उसके बाद हमने फिर कूच शुरू किया और ढूँढ़ने वाले लोग हमारी तलाश में थे।

٣٩١٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ حَدَّثَنَا شُرَيْحُ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: ((سَمِعْتُ الْبَرَاءَ يُحَدِّثُ قَالَ: ابْتَاعَ أَبُو بَكْرٍ مِنْ عَازِبٍ رَحْلاً)) فَحَمَلْتُهُ مَعَهُ. قَالَ: فَسَأَلَهُ عَازِبٌ مِنْ مَسِيْرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، قَالَ: أُخِذَ عَلَيْنَا بِالرَّصَدِ، فَخَرَجْنَا لَيْلاً، فَأَحْثَثْنَا لَيْلَتَنَا وَيَوْمَنَا حَتَّى قَامَ قَائِمُ الظَّهِيْرَةِ، ثُمَّ رُفِعَتْ لَنَا صَخْرَةٌ، فَأَتَيْنَاهَا وَلَهَا شَيْءٌ مِنْ ظِلٍّ. قَالَ: فَفَرَشْتُ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرْوَةً مَعِي، ثُمَّ اضْطَجَعَ عَلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَانْطَلَقْتُ أَنْفُضُ حَوْلَهُ، فَإِذَا أَنَا بِرَاعٍ قَدْ أَقْبَلَ فِي غُنَيْمَةٍ يُرِيْدُ مِنَ الصَّخْرَةِ مِثْلَ الَّذِي أَرَدْنَا، فَسَأَلْتُهُ : لِمَنْ أَنْتَ يَا غُلاَمُ؟ فَقَالَ: أَنَا لِفُلاَنٍ. فَقُلْتُ لَهُ: هَلْ فِي غَنَمِكَ مِنْ لَبَنٍ؟ قَالَ: نَعَمْ. قُلْتُ لَهُ : هَلْ أَنْتَ حَالِبٌ؟ قَالَ : نَعَمْ. فَأَخَذَ شَاةً مِنْ غَنَمِهِ، فَقُلْتُ لَهُ: انْفُضِ الضَّرْعَ. قَالَ: فَحَلَبَ كُثْبَةً مِنْ لَبَنٍ، وَمَعِيَ إِدَاوَةٌ مِنْ مَاءٍ عَلَيْهَا خِرْقَةٌ قَدْ رَوَّأْتُهَا لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَصَبَبْتُ عَلَى اللَّبَنِ حَتَّى بَرَدَ أَسْفَلُهُ، ثُمَّ أَتَيْتُ بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: اشْرَبْ يَا رَسُولَ اللهِ. فَشَرِبَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى رَضِيْتُ. ثُمَّ ارْتَحَلْنَا وَالطَّلَبُ فِي إِثْرِنَا)).

(राजेअ़ : 2439) [راجع: ٢٤٣٩]

3918. बराअ ने बयान किया कि जब मैं अबूबक्र (रजि) के साथ उनके घर में दाख़िल हुआ था तो आपकी साहबज़ादी आइशा (रज़ि.) लेटी हुई थीं उन्हें बुख़ार आ रहा था मैंने उनके वालिद को देखा कि उन्होंने उनके रुख़सार पर बोसा दिया और दरयाफ़्त किया बेटी! तबीअत कैसी है?

٣٩١٨- قَالَ الْبَرَاءُ : فَدَخَلْتُ مَعَ أَبِي بَكْرٍ عَلَى أَهْلِهِ، فَإِذَا عَائِشَةُ ابْنَتُهُ مُضْطَجِعَةٌ قَدْ أَصَابَتْهَا حُمَّى، فَرَأَيْتُ أَبَاهَا يُقَبِّلُ خَدَّهَا وَقَالَ: ((كَيْفَ أَنْتِ يَا بُنَيَّةُ)).

तशरीह : हज़रत सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के फ़ज़ाईल व मनाक़िब में ये बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है कि सफ़रे हिजरत में आपने रसूले करीम (ﷺ) का फ़िदाकाराना साथ दिया और आप (ﷺ) की मुम्किन ख़िदमत अंजाम दी। जिसके सिलह में क़यामत तक के लिये आपको आँहज़रत (ﷺ) का यारे ग़ार कहा गया है, हक़ीक़त ये कि आप (रज़ि.) को तमाम सहाबा (रज़ि.) पर ऐसी फ़ौक़ियत हासिल है जैसी चाँद को आसमान के तमाम सितारों पर हासिल है। वो नामो-निहाद मुसलमान बड़े ही बदबख़्त हैं जो ऐसे सच्चे, पुख़्ता मोमिन, मुसलमान सहाबी-ए-रसूल को बुरा कहते हैं और तबर्राबाज़ी से अपनी ज़ुबानों को गन्दी करते है। जब तक इस दुनिया में इस्लाम ज़िन्दा है हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) का नाम नामी इस्लाम के साथ ज़िन्दा रहेगा। अल्लाह ने आपकी आला ख़िदमात का ये सिला आप (रज़ि.) को बख्शा कि क़यामत तक के लिये आप रसूले करीम (ﷺ) के पहलू में गुम्बदे ख़ज़रा में आराम फ़र्मा रहे हैं। अल्लाह पाक हमारी तरफ़ से उनकी पाक रूह पर बेशुमार सलाम और रहमतें नाज़िल फ़र्माए और क़यामत के दिन अपने हबीब के साथ आपके तमाम फ़िदाइयों की मुलाक़ात नसीब करे आमीन या रब्बल आलमीन।

3919. हमसे सुलैमान बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन हिम्यर ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन अबी अब्ला ने बयान किया, उनसे उक़्बा बिन वसाज ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) के ख़ादिम अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हुज़ूर अकरम (ﷺ) (मदीना मुनव्वरा) तशरीफ़ लाए तो अबूबक्र (रज़ि.) के सिवा और कोई आप (ﷺ) के अस्हाब में ऐसा नहीं था जिसके बाल सफ़ेद हो रहे हों, इसलिये आपने मेहन्दी और वस्मा का ख़िज़ाब इस्ते'माल किया था। (दीगर मक़ाम : 3920)

٣٩١٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حِمْيَرَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ أَبِي عَبْلَةَ أَنَّ عُقْبَةَ بْنَ وَسَّاجٍ حَدَّثَهُ عَنْ أَنَسٍ خَادِمِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ وَلَيْسَ فِي أَصْحَابِهِ أَشْمَطُ غَيْرُ أَبِي بَكْرٍ، فَغَلَفَهَا بِالْحِنَاءِ وَالْكَتَمِ)).

[طرفه في : ٣٩٢٠].

3920. और दुहैम ने बयान किया, उनसे वलीद ने बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, कहा मुझसे अबू उबैद ने बयान किया, उनसे उक़्बा बिन वसाज ने उन्होंने कहा कि मुझसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) के अस्हाब में सबसे ज़्यादा उम्र अबूबक्र (रज़ि.) की थी इसलिये उन्होंने मेहन्दी और वस्मा का ख़िज़ाब इस्ते'माल किया। उससे आपके बालों का रंग लाली लिये हुए काला हो गया था। (राजेअ़ : 3919)

٣٩٢٠- وَقَالَ دُحَيْمٌ : حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنِي أَبُو عُبَيْدٍ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ وَسَّاجٍ حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ فَكَانَ أَسَنَّ أَصْحَابِهِ أَبُو بَكْرٍ فَغَلَفَهَا بِالْحِنَاءِ وَالْكَتَمِ حَتَّى قَنَا لَوْنُهَا)).

[راجع: ٣٩١٩]

हदीष़ में लफ़्ज़ कतम है कतम में इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने कहा कि वस्मा को कहते हैं कुछ ने कहा वो आस की तरह का एक पत्ता

होता है उसका पेड़ सख़्त पत्थरों में उगता है इसकी शाख़ें बारीक धागों की त़रह़ लटकी होती हैं।

3921. हमसे अस्बग़ बिन फ़ुर्ज ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने क़बीला बनू कल्ब की एक औ़रत उम्मे बक्र नामी से शादी कर ली थी। फिर जब उन्होंने हिजरत की तो उसे त़लाक़ दे आए। उस औ़रत से फिर उसके चचाज़ाद भाई (अबूबक्र शद्दाद बिन अस्वद) ने शादी कर ली थी, ये शख़्स शायर था और उसी ने ये मशहूर मर्षिया कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के बारे में कहा था, मक़ामे बद्र के कुओं को मैं क्या कहूँ कि उन्होंने हमें पेड़ शीज़ा के बड़े बड़े प्यालों से मह़रूम कर दिया जो कभी ऊँट के कोहान के गोश्त से भी बेहतर हुआ करते थे, मैं बद्र के कुओं को क्या कहूँ! उन्होंने हमें गाने वाली लौण्डियों और अच्छे शराबियों से मह़रूम कर दिया उम्मे बक्र तो मुझे सलामती की दुआ देती रही लेकिन मेरी क़ौम की बर्बादी के बाद मेरे लिये सलामती कहाँ है ये रसूल हमें दोबारा ज़िन्दगी की ख़बरें बयान करता है। कहीं उल्लू बन जाने के बाद फिर ज़िन्दगी किस त़रह़ मुम्किन है।

٣٩٢١- حَدَّثَنَا أَصْبَغُ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ: ((أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ تَزَوَّجَ امْرَأَةً مِنْ كَلْبٍ يُقَالُ لَهَا أُمُّ بَكْرٍ، فَلَمَّا هَاجَرَ أَبُو بَكْرٍ طَلَّقَهَا فَتَزَوَّجَهَا ابْنُ عَمِّهَا هَذَا الشَّاعِرُ الَّذِي قَالَ هَذِهِ الْقَصِيدَةَ رَثَى كُفَّارَ قُرَيْشٍ:

وَمَاذَا بِالْقَلِيبِ قَلِيبِ بَدْرٍ
مِنَ الشِّيزَى تُزَيَّنُ بِالسَّنَامِ
وَمَاذَا بِالْقَلِيبِ قَلِيبِ بَدْرٍ
مِنَ الْقَيْنَاتِ وَالشَّرْبِ الْكِرَامِ
تُحَيِّي بِالسَّلاَمَةِ أُمُّ بَكْرٍ
وَهَلْ لِي بَعْدَ قَوْمِي مِنْ سَلاَمِ
يُحَدِّثُنَا الرَّسُولُ بِأَنْ سَنَحْيَا
وَكَيْفَ حَيَاةُ أَصْدَاءٍ وَهَامِ

जाहिलियत में अ़रब के लोग ये समझते थे कि मुर्दे की खोपड़ी से रूह़ निकलकर उल्लू के क़ालिब में जन्म लेती है और दोस्तों को आवाज़ देती फिरती है।

तश्रीह़ : अबूबक्र शद्दाद बिन अस्वद ब हालते कुफ़्र बद्र के मक़्तूलीने कुफ़्फ़ार मक्का का मर्षिया कह रहा है, जिसका मत़लब ये कि वो लोग बद्र के कुएँ में मरे पड़े हैं जो लोगों के सामने ऊँट के कोहान का गोश्त जो अ़रबों के नज़दीक निहायत लज़ीज़ होता है पेड़ शीज़ा की लकड़ी के प्यालों में भर भरकर रखा करते थे। शीज़ा एक पेड़ जिसकी लकड़ी के प्याले बनाते हैं यहाँ मुराद वो लोग हैं जो उन प्यालों का इस्ते'माल करते हैं। या'नी बड़े अमीर, सरमायादार लोग, जो रात दिन शराबख़ोरी और नाच गाने बजाने वालियो की सुह़बत में रहा करते थे। मर्षिया में मज़्कूरा उम्मे बक्र, उसकी बीवी है जो पहले ह़ज़रत स़िद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के निकाह़ में थी। आख़िरी शे'र का मत़लब ये है कि अ़रब के लोग जाहिलियत में समझते थे कि मरने के बाद इंसान की रूह़ उल्लू के जिस्म में जन्म लेती है और उल्लुओं को पुकारती फिरती है। शायर की मुराद ये है कि मरने के बाद दोबारा इंसानी क़ालिब में ज़िन्दा होने के बारे में पैग़म्बर का कहना ग़लत़ है, ह़श्र नश्र कुछ नहीं है और रूहें उल्लू बनकर दोबारा आदमी के क़ालिब में क्यूँकर आ सकती हैं। काफ़िरों का ये क़दीमी अ़क़ीदा फ़ासिद है जिसकी तर्दीद से सारा क़ुर्आन मजीद भरा हुआ है। इस मर्षिये का मन्ज़ूम तर्जुमा मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम के लफ़्ज़ों में ये है।

गढ़े में बद्र के क्या है अरे ओ सुनने वाले — पड़े हैं ऊँट के कोहान के उम्दह़ प्याले
गढ़े में बद्र के क्या है अरे ओ सुनने वाले — शराबी हैं वहाँ गाना बजाना सुनने वाले
सलामत रह जो कहती है मुझे ये उम्मे बक्र — कहाँ है सलामत जब मरे सब क़ौम वाले

ये पैग़म्बर हमें कहता है तुम मरकर जियोगे   कहीं उल्लू भी फिर इंसान हुए आवाज़ वाले

शायर मज़्कूर के बारे में मन्क़ूल है कि वो मुसलमान हो गया था बाद में मुर्तद हो गया। लफ़्ज़े हामा तख़्फ़ीफ़े मीम के साथ है अरब जाहिलियत का ए'तिक़ाद था कि मक़्तूले जंगी (मारे गये योद्धा) का क़िसास़ न लिया जाए तो उसकी रूह उल्लू के जिस्म में जन्म लेकर अपनी क़ब्र पर रोज़ाना आकर ये कहती है कि मेरे क़ातिल का ख़ून मुझको पिलाओ जब उसका क़िसास़ ले लिया तो वो उड़ जाती है। (वहीदी)

3922. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ार में था। मैंने जो सर उठाया तो क़ौम के चन्द लोगों के क़दम (बाहर) नज़र आए। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! अगर उनमें से किसी ने नीचे झुककर देख लिया तो वो हमें ज़रूर देख लेगा। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अबूबक्र! ख़ामोश रहो हम ऐसे दो हैं कि जिनका तीसरा अल्लाह है।

(राजेअ़ : 3635)

٣٩٢٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْغَارِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَإِذَا أَنَا بِأَقْدَامِ الْقَوْمِ، فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ لَوْ أَنَّ بَعْضَهُمْ طَأْطَأَ بَصَرَهُ رَآنَا. قَالَ: ((اسْكُتْ يَا أَبَا بَكْرٍ، اثْنَانِ اللهُ ثَالِثُهُمَا)).

[راجع: ٣٦٥٣]

जब अल्लाह किसी के साथ हो तो उसको क्या ग़म है सारी दुनिया उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। अल्लाह के साथ होने से उसकी नुस़रत व हिफ़ाज़त मुराद है जबकि वो अपनी ज़ाते वाला सिफ़ात से अर्श पर मुस्तवी है रसूले करीम (ﷺ) ने जो कुछ फ़र्माया था दुनिया ने देख लिया कि वो किस तरह हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह ष़ाबित हुआ और सारे कुफ़्फ़ारे अरब मिलकर भी इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम (ﷺ) पर ग़ालिब न आ सके।

3923. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम दमिश्क़ी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, (दूसरी सनद) और मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया कि हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा मुझसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ता बिन यज़ीद लैष़ी ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कहा कि एक आराबी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) से हिजरत का हाल पूछने लगा आप (ﷺ) ने फ़र्माया तुझ पर अफ़सोस! हिजरत तो बहुत मुश्किल काम है। तुम्हारे पास कुछ ऊँट भी हैं ? उन्होंने कहा जी हाँ हैं। फ़र्माया कि तुम उसकी ज़कात भी अदा करते हो उन्होंने अ़र्ज़ क्या जी हाँ अदा करता हूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऊँटनियों का दूध दूसरे (मुहताजों) को भी दूहने के लिये दे दिया करते हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐसा भी करता हूँ आपने फ़र्माया, उन्हें घाट पर ले जाकर (मुहताजों के लिये) दहते हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया ऐसा भी करता हूँ। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने

٣٩٢٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ ح. وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ: حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ اللَّيْثِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَسَأَلَهُ عَنِ الْهِجْرَةِ، فَقَالَ: ((وَيْحَكَ، إِنَّ الْهِجْرَةَ شَأْنُهَا شَدِيدٌ، فَهَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَتُعْطِي صَدَقَتَهَا؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَهَلْ تَمْنَحُ مِنْهَا؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَتَحْلُبُهَا يَوْمَ

फ़र्माया कि फिर तुम सात समुन्दर पार अमल करो, अल्लाह तआला किसी अमल का भी षवाब कम नहीं करेगा।

وَرُوُدِهَا؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَاعْمَلْ مِنْ وَرَاءِ الْبِحَارِ، فَإِنَّ اللهَ لَنْ يَتِرَكَ مِنْ عَمَلِكَ شَيْئًا)).

ये ह़दीष़ किताबुज़्ज़कात में गुज़र चुकी है इसमें हिजरत का ज़िक्र है यही ह़दीष़ और बाब में मुताबक़त है।

बाब 46 : नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के स़हाबा किराम का मदीना में आना

٤٦- بَابُ مَقْدَمِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ الْمَدِينَةَ

आँह़ज़रत (ﷺ) पीर के दिन बारह रबीउ़ल अव्वल को मदीना मुनव्वरा में तशरीफ़ लाए और अकष़र स़ह़ाबा आप (ﷺ) से पहले मदीना में आ चुके थे।

3924. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि हमें अबू इस्ह़ाक ने ख़बर दी, उन्होंने बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने यूँ बयान किया कि सबसे पहले (हिजरत करके) हमारे यहाँ मुस्‌अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) और इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) आए फिर अ़म्मार बिन यासिर (रज़ि.) और बिलाल (रज़ि.) आए।

٣٩٢٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ : أَنْبَأَنَا أَبُو إِسْحَاقَ سَمِعَ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((أَوَّلُ مَنْ قَدِمَ عَلَيْنَا مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ وَابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ. ثُمَّ قَدِمَ عَمَّارُ بْنُ يَاسِرٍ وَبِلاَلٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ)).

रसूले करीम (ﷺ) ने मुस्‌अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) को हिजरत का हुक्म फ़र्माया और मदीना में मुअ़ल्लिम और मुबल्लिग़ का मन्सब उनके ह़वाले किया।

3925. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया और उन्होंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि सबसे पहले हमारे यहाँ मुस्‌अ़ब बिन उ़मर (रज़ि.) और इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) (नाबीना) आए। ये दोनों (मदीना के) मुसलमानों को क़ुर्आन पढ़ाना सिखाते थे। उसके बाद बिलाल, सअ़द और अ़म्मार बिन यासिर (रज़ि.) आए। फिर उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के बीस स़ह़ाबा को साथ लेकर आए और नबी करीम (ﷺ) (ह़ज़रत अबूबक्र रज़ि.) और आ़मिर बिन फ़ुहैरा को साथ लेकर) तशरीफ़ लाए, मदीना के लोगों को जितनी ख़ुशी और मुसर्रत हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी से हुई मैंने कभी उन्हें किसी बात पर इस क़दर ख़ुश नहीं देखा। लौण्डिया भी (ख़ुशी में) कहने लगीं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) आ गये हुज़ूरे अकरम (ﷺ) जब तशरीफ़ लाए तो उससे पहले मैं मुफ़स़्स़ल की

٣٩٢٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أَوَّلُ مَنْ قَدِمَ عَلَيْنَا مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ وَابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ وَكَانُوا يُقْرِئَانِ النَّاسَ، فَقَدِمَ بِلاَلٌ وَسَعْدٌ وَعَمَّارُ بْنُ يَاسِرٍ. ثُمَّ قَدِمَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فِي عِشْرِيْنَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَمَا رَأَيْتُ أَهْلَ الْمَدِينَةِ فَرِحُوا بِشَيْءٍ فَرَحَهُمْ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ حَتَّى جَعَلَ الإِمَاءُ يَقُلْنَ: قَدِمَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،

दूसरी कई सूरतों के साथ सब्बिहिस्मा रब्बिकल आला भी सीख चुका था।

لَمَا قَدِمَ حَتَّى قَرَأْتُ ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الأَعْلَى﴾ فِي سُوَرٍ مِنَ الْمُفَصَّلِ)).

तश्रीह : हाकिम की रिवायत में अनस (रज़ि.) से यूँ है जब आप (ﷺ) मदीना के क़रीब पहुँचे तो बनी नज्जार की लड़कियाँ दफ़ गाती बजाती निकलीं वो कह रही थीं **नहनु जवारुम्मिम बनी नज्जार या हब्बज़ा मुहम्मदमिन जारि** दूसरी रिवायत में यूँ है कि अंसार की लड़कियाँ गाती बजाती आप (ﷺ) की तशरीफ़ आवरी की ख़ुशी में निकलीं। वो कह रही थीं।

तलअल्बद्रु अलैना मिन प़नयातिल्वदाइ वजबश्शुक्रू अलैना मा दआ लिल्लाहि दाइ

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, **इन्नल्लाह युहिब्बुकुन्न** या'नी तुम जान लो कि अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करता है। क़स्तलानी (रह) ने उन बीस सहाबा के अस्मा गिरामी भी पेश किये हैं जो आँहज़रत (ﷺ) से पहले हिजरत करके मदीना पहुँच चुके थे। मुफ़स्सलात की सूरतें वो हैं जो सूरह हुजुरात से शुरू होती हैं।

3926. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उर्वा ने, उन्हें उनके वालिद उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो अबूबक्र और बिलाल (रज़ि.) को बुख़ार चढ़ आया, मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया वालिद साहब! आपकी तबीअत कैसी है? उन्होंने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को जब बुख़ार चढ़ा तो ये शे'र पढ़ने लगे।

(तर्जुमा) हर शख़्स अपने घरवालों के साथ सुबह करता है और मौत तो जूती के तस्मे से भी ज़्यादा क़रीब है, और बिलाल (रज़ि.) के बुख़ार में जब कुछ तख़्फ़ीफ़ होती तो ज़ोर ज़ोर से रोते और ये शे'र पढ़ते,

काश मुझे ये मा'लूम हो जाता कि कभी मैं एक रात भी वादी मक्का में गुज़ार सकूँगा,

जबकि मेरे आसपास (ख़ुश्बूदार घास) इज़्ख़र और ऊँची होंगी,

और क्या शामा और तफ़ील की पहाड़ियाँ एक नज़र देख सकूँगा, आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और आपको इसकी ख़बर दी तो आपने दुआ की, ऐ अल्लाह! मदीना की मुहब्बत हमारे दिल में इतनी पैदा कर जितनी मक्का की थी बल्कि उससे भी ज़्यादा, यहाँ की आबो–हवा को सेहत बख़्श बना। हमारे लिये यहाँ के साअ और

٣٩٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِيْنَةَ وُعِكَ أَبُو بَكْرٍ وَبِلاَلٌ. قَالَتْ: فَدَخَلْتُ عَلَيْهِمَا فَقُلْتُ: يَا أَبَتِ كَيْفَ تَجِدُكَ؟ وَيَا بِلاَلُ كَيْفَ تَجِدُكَ؟ قَالَتْ: فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ إِذَا أَخَذَتْهُ الْحُمَّى يَقُولُ:

كُلُّ امْرِىءٍ مُصَبَّحٌ فِي أَهْلِهِ
وَالْمَوْتُ أَدْنَى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ

وَكَانَ بِلاَلٌ إِذَا أَقْلَعَ عَنْهُ الْحُمَّى يَرْفَعُ عَقِيْرَتَهُ وَيَقُولُ:

أَلاَ لَيْتَ شِعْرِي هَلْ أَبِيْتَنَّ لَيْلَةً
بِوَادٍ وَحَوْلِي إِذْخِرٌ وَجَلِيْلُ
وَهَلْ أَرِدَنْ يَوْمًا مِيَاهَ مِجَنَّةٍ
وَهَلْ يَبْدُوَنْ لِي شَامَةٌ وَطَفِيْلُ

قَالَتْ عَائِشَةُ: فَجِئْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْمَدِيْنَةَ كَحُبِّنَا مَكَّةَ أَوْ أَشَدَّ، وَصَحِّحْهَا،

मुद्द (अनाज नापने के पैमाने) में बरकत इनायत फ़र्मा और यहाँ के बुख़ार को मक़ामे जुह्फ़ा में भेज दे।

(राजेअ़ : 1889)

وَبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِهَا وَمُدِّهَا، وَانْقُلْ حُمَّاهَا فَاجْعَلْهَا بِالْجُحْفَةِ)).

[راجع: ١٨٨٩]

जुह्फ़ा अब मिस्र वालों का मीक़ात है। उस वक़्त वहाँ यहूदी रहा करते थे। इमाम क़स्तलानी (रह) ने कहा कि इस ह़दीष़ से ये निकला कि काफ़िरों के लिये जो इस्लाम और मुसलमानों के हर वक़्त जान के दुश्मन बने रहते हों उनकी हलाकत के लिये बद् दुआ करना जाइज़ है, अमन पसन्द काफ़िरों का यहाँ ज़िक्र नहीं है, मक़ामे जुह्फ़ा अपनी ख़राब आबो हवा के लिये अब भी मशहूर है जो यक़ीनन आँह़ज़रत (ﷺ) की बद दुआ का अष़र है।

ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम ने उन शायरों का मन्ज़ूम तर्जुमा किया है।

ख़ैरियत से अपने घर में सुबह़ करता है बशर	**मौत उसकी जूती के तस्मे से है नज़दीक तर**
काश मैं मक्का की वादी में रहूँ फिर एक रात	**सब त़रफ़ मेरे आगे हों वाँ जलील इज़्ख़र नबात**
काश फिर देखूँ मैं शामा काश फिर देखूँ त़फ़ील	**और पियूँ पानी मजिन्ना के जो हैं आबे ह़यात**

शामा और त़फ़ील मक्का की पहाड़ियों के नाम हैं। रोने में जो आवाज़ निकलती है उसे अ़क़ीरा कहते हैं।

3927. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा मुझसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी ने ख़बर दी कि मैं उ़ष़्मान की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ (दूसरी सनद) और बिश्र बिन शुऐ़ब ने बयान किया कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, कहा मुझसे उ़र्वा बिन ज़ुबेर ने बयान किया और उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी बिन ख़यार ने ख़बर दी कि मैं उ़ष़्मान (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो उन्होंने ह़म्दो शहादत पढ़ने के बाद फ़र्माया, अम्माबअ़द! कोई शक व शुब्हा नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने मुह़म्मद (ﷺ) को ह़क़ के साथ मबऊ़ष़ किया, मैं भी उन लोगों में था जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की दा'वत पर (इब्तिदा ही में) लब्बैक कहा और मैं उन तमाम चीज़ों पर ईमान लाया जिन्ह लेकर आँह़ज़रत (ﷺ) मबऊ़ष़ हुए थे, फिर मैंने दो हिजरत की और ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) की दामादी का शर्फ़ मुझे ह़ासिल हुआ और ह़ुज़ूर (ﷺ) से मैंने बेअ़त की अल्लाह की क़सम! कि मैंने आपकी न कभी नाफ़र्मानी की और न कभी आपसे धोखाबाज़ी की, यहाँ तक कि आपका इंतिक़ाल हो गया। शुऐ़ब के साथ इस रिवायत की मुत्ताबअ़त इस्हाक़ कल्बी ने भी की है, उनसे ज़ुह्री ने इस ह़दीष़ को इसो त़रह़ बयान किया। (राजेअ़ : 3696)

٣٩٢٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنِ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنِ عَدِيٍّ أَخْبَرَهُ ((دَخَلْتُ عَلَى عُثْمَانَ)) ح. وَقَالَ بِشْرُ بْنُ شُعَيْبٍ حَدَّثَنِي أَبِي عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَدِيٍّ بْنِ الْخِيَارِ أَخْبَرَهُ قَالَ: ((دَخَلْتُ عَلَى عُثْمَانَ، فَتَشَهَّدَ ثُمَّ قَالَ: أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ اللهَ بَعَثَ مُحَمَّدًا بِالْحَقِّ، وَكُنْتُ مِمَّنِ اسْتَجَابَ للهِ وَلِرَسُولِهِ وَآمَنَ بِمَا بُعِثَ بِهِ مُحَمَّدٌ ﷺ، ثُمَّ هَاجَرْتُ هِجْرَتَيْنِ، وَكُنْتُ صِهْرَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَبَايَعْتُهُ، فَوَ اللهِ مَا عَصَيْتُهُ وَلاَ غَشَشْتُهُ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللهُ تَعَالَى)). تَابَعَهُ إِسْحَاقُ الْكَلْبِيُّ ((حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ)) مِثْلَهُ.

[راجع: ٣٦٩٦]

3928. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) मिना में अपने ख़ैमा की त़रफ़ वापस आ रहे थे, ये उ़मर (रज़ि.) के आख़िरी ह़ज्ज का वाक़िया है तो उनकी मुझसे मुलाक़ात हो गई। उन्होंने कहा कि (उ़मर (रज़ि.) ह़ाजियों को ख़िताब करने वाले थे इसलिये) मैंने अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! मौसमे ह़ज्ज में मा'मूली सूझ बूझ रखने वाले सब त़रह के लोग जमा होते हैं और शोरो—गुल बहुत होता है इसलिये मेरा ख़्याल है कि आप अपना इरादा मौक़ूफ़ कर दें और मदीना पहुँचकर (ख़िताब फ़र्माएँ) क्योंकि वो हिजरत और सुन्नत का घर है और वहाँ समझदार मुअ़ज़्ज़ज़ और स़ाहिबे अ़क़्ल लोग रहते हैं। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि तुम ठीक कहते हो, मदीना पहुँचते ही सबसे पहली फ़ुर्सत में लोगों को ख़िताब करने के लिये ज़रूर खड़ा होऊँगा। (राजेअ़ : 2462)

٣٩٢٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ ح. وَأَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ رَجَعَ إِلَى أَهْلِهِ وَهُوَ بِمِنًى فِي آخِرِ حَجَّةٍ حَجَّهَا عُمَرُ، فَوَجَدَنِي فَقَالَ: عَبْدُ الرَّحْمَنِ. فَقُلْتُ يَا أَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ إِنَّ الْمَوْسِمَ يَجْمَعُ رَعَاعَ النَّاسِ، وَإِنِّي أَرَى أَنْ تُمْهِلَ حَتَّى تَقْدَمَ الْمَدِيْنَةَ، فَإِنَّهَا دَارُ الْهِجْرَةِ وَالسُّنَّةِ، وَتَخْلُصَ لأَهْلِ الْفِقْهِ وَأَشْرَافِ النَّاسِ وَذَوِي رَأْيِهِمْ. قَالَ عُمَرُ: لأَقُومَنَّ فِي أَوَّلِ مَقَامٍ أَقُومُهُ بِالْمَدِيْنَةِ)). [راجع: ٢٤٦٢]

तश्रीह : इस वाक़िया का पसे मंज़र ये है कि किसी नादान ने मिना में ऐन मौसमे ह़ज्ज में ये कहा था कि अगर उ़मर मर जाएँ तो मैं फ़लाँ शख़्स से बेअ़त करूँगा। अबूबक्र (रज़ि.) से लोगों ने बिन सोचे समझे बेअ़त कर ली थी। ये बात ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) तक पहुँच गई जिस पर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को ग़ुस्सा आ गया और उस शख़्स को बुलाकर तम्बीह का ख़्याल हुआ मगर ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ने ये सलाह दी कि ये मौसमे ह़ज्ज है हर क़िस्म के दाना व नादान लोग यहाँ जमा हैं, यहाँ ये मुनासिब न होगा मदीना शरीफ़ पहुँचकर आप जो चाहें करें। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान का ये मश्वरा क़ुबूल फ़र्मा लिया।

3929. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्हें इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन ष़ाबित ने कि (उनकी वालिदा उम्मे उ़लाअ रज़ि. एक अंसारी ख़ातून जिन्होंने नबी करीम ﷺ से बेअ़त की थी) ने उन्हें ख़बर दी कि जब अंसार ने मुहाजिरीन की मेज़बानी के लिये क़ुर्आ डाला तो उ़ष्मान बिन मज़ऊ़न उनके घराने के ह़िस्से में आए थे। उम्मे उ़लाअ (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर उ़ष्मान (रज़ि.) हमारे यहाँ बीमार पड़ गये। मैंने उनकी पूरी त़रह तीमारदारी

٣٩٢٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ أُمَّ الْعَلاَءِ - امْرَأَةً مِنْ نِسَائِهِمْ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ - أَخْبَرَتْهُ أَنَّ عُثْمَانَ بْنِ مَظْعُونٍ طَارَ لَهُمْ فِي السُّكْنَى حِيْنَ اقْتَرَعَتِ الأَنْصَارُ عَلَى

سُكْنَى الْمُهَاجِرِيْنَ. قَالَتْ أُمُّ الْعَلاَءِ: فَاشْتَكَى عُثْمَانُ عِنْدَنَا، فَمَرَّضْنَاهُ حَتَّى تُوُفِّيَ، وَجَعَلْنَاهُ فِي أَثْوَابِهِ. فَدَخَلَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ، فَقُلْتُ: رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ. شَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يُدْرِيْكِ أَنَّ اللهَ أَكْرَمَهُ؟)) قَالَتْ: قُلْتُ: لاَ أَدْرِي، بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللهِ. فَمَنْ؟ قَالَ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ وَاللهِ الْيَقِيْنُ، وَاللهِ إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَمَا أَدْرِي وَاللهِ - وَأَنَا رَسُولُ اللهِ - مَا يُفْعَلُ بِيْ)). قَالَتْ: فَوَاللهِ لاَ أُزَكِّيْ بَعْدَهُ أَحَدًا. قَالَتْ: فَأَحْزَنَنِي ذَلِكَ، فَنِمْتُ. فَرَأَيْتُ لِعُثْمَانَ بْنِ مَظْعُونٍ عَيْنًا تَجْرِيْ. فَجِئْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: ((ذَلِكَ عَمَلُهُ)).

[راجع: ١٢٤٣]

की लेकिन वो न बच सके। हमने उन्हें उनके कपड़ों में लपेट दिया था। इतने में नबी करीम (ﷺ) भी तशरीफ़ ले आए तो मैंने कहा अबू साइब! (उ़ष्मान रज़ि. की कुन्नियत) तुम पर अल्लाह की रहमतें हों, मेरी तुम्हारे बारे में गवाही है कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें अपने इकराम से नवाज़ा है। ये सुनकर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हें ये कैसे मा'लूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपने इकराम से नवाज़ा है? मैंने अ़र्ज़ किया मुझे तो इस सिलसिले में कुछ ख़बर नहीं है, मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों या रसूलल्लाह (ﷺ)! लेकिन और किसे नवाज़ेगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसमें तो वाकई कोई शक व शुब्हा नहीं कि एक यक़ीनी अम्र (मौत) उनको आ चुकी है, अल्लाह की क़सम! कि मैं भी उनके लिये अल्लाह तआ़ला से ख़ैर—ख़्वाही की उम्मीद रखता हूँ लेकिन मैं ह़ालाँकि अल्लाह का रसूल हूँ ख़ुद अपने बारे में नहीं जान सकता कि मेरे साथ क्या मामला होगा। उम्मे अ़लाअ (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया फिर अल्लाह की क़सम! इसके बाद मैं अब किसी के बारे में उसकी पाकी नहीं करूँगी। उन्होंने बयान किया कि इस वाक़िया पर मुझे बड़ा रंज हुआ। फिर मैं सो गई तो मैंने ख़्वाब में देखा कि उ़ष्मान बिन मज़ऊन के लिये एक बहता हुआ चश्मा है। मैं आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और आपसे अपना ख़्वाब बयान किया तो आपने फ़र्माया कि ये उनका अ़मल था। (राजेअ़ : 1243)

तश्रीह : एक रिवायत में यूँ है मैं ये नहीं जानता कि उ़ष्मान (रज़ि.) का ह़ाल क्या होना है। इस रिवायत पर तो कोई अंदेशा नहीं लेकिन मह़फ़ूज़ यही रिवायत है कि मैं नही जानता कि मेरा ह़ाल क्या होना है जैसे क़ुर्आन शरीफ़ में है। **व मा अदरी मा युफ़्अलु बी व ला बिकुम** (अल अहक़ाफ़ : 9) कहते हैं ये आयत और ह़दीष़ उस ज़मान की है जब तक ये आयत नहीं उतरी थी **लियग़फ़िरहु लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़म्बिक वमा तअख़्ख़र** (अल फ़त्ह : 2) और आपको क़त्अ़न ये नहीं बतलाया गया था कि आप सब अगले पिछले लोगों से अफ़ज़ल हैं। मैं कहता हूँ कि ये तौजीह उ़म्दा नहीं। अस़ल ये है कि ह़क़ तआ़ला की बारगाह अ़जब मुस्तग़ना बारगाह है आदमी कैसे ही दर्जे पर पहुँच जाए मगर उसके इस्तिग़्ना और किब्रियाई से बेडर नहीं हो सकता। वो एक ऐसा शहशाह है जो चाहे वो कर डाले, रत्ती बराबर उसको किसी का अंदेशा नहीं। ह़ज़रत शैख़ शर्फ़ुद्दीन यह़्या मुनीरी अपने मकातीब में फ़र्माते हैं वो ऐसा मुस्तग़ना और बे परवाह है कि अगर चाहे तो सब पैग़म्बरों और नेक बन्दों को दम भर में दोज़ख़ी बना दे और सारे बदकार और कुफ़्फ़ार को बहिश्त मे ले जावे, कोई दम नहीं मार सकता। आख़िर ह़दीष़ में ज़िक्र है कि उनका नेक अ़मल चश्मा की सूरत में उनके लिये ज़ाहिर हुआ। दूसरी ह़दीष़ से मा'लूम होता है कि आमाले स़ालिह़ा ख़ूबसूरत आदमी की शक्ल में और बुरे अ़मल बदसूरत आदमी की शक्ल में ज़ाहिर होते हैं, दोनों ह़दीष़ बरह़क़ हैं और उनमें नेकों और बदों के मर्तबे आमाल के मुत़ाबिक़ कैफ़ियात बयान की गई हैं जो मज़्कूरा सूरतों में सामने आती हैं। बाक़ी अस़ल ह़क़ीक़त आख़िरत ही में हर इंसान पर मुंकशिफ़ होगी। जो अल्लाह

और रसूल ने बतला दिया उस पर ईमान लाना चाहिये।

3930. हमसे उबैदुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बुआष़ की लड़ाई को (अंसार के क़बाईल ओस व ख़ज़रज के दरम्यान) अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के मदीना में आने से पहले ही बरपा करा दिया था चुनाँचे जब आप मदीना में तशरीफ़ लाए तो अंसार में फूट पड़ी हुई थी और उनके सरदार क़त्ल हो चुके थे। उसमें अल्लाह की ये हिक्मत मा'लूम होती है कि अंसार इस्लाम कुबूल कर लें। (राजेअ : 3777)

٣٩٣٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : ((كَانَ يَوْمُ بُعَاثٍ يَوْمًا قَدَّمَهُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ لِرَسُوْلِهِ ﷺ، فَقَدِمَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الْمَدِيْنَةَ وَقَدِ افْتَرَقَ مَلأُهُمْ، وَقُتِلَتْ سَرَاتُهُمْ فِي دُخُوْلِهِمْ فِي الإِسْلاَمِ)).[راجع: ٣٧٧٧]

क्योंकि ग़रीब लोग रह गये थे सरदार और अमीर मारे जा चुके थे अगर ये सब ज़िन्दा होते तो शायद ग़ुरूर की वजह से मुसलमान न होते और दूसरों को भी इस्लाम से रोकते। बुआष़ एक जगह का नाम था जहाँ ये लड़ाई हुई।

3931. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि हज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) उनके यहाँ आए तो नबी करीम (ﷺ) भी वहीं तशरीफ़ रखते थे ईदुल फ़ित्र या ईदुल अज़्हा का दिन था, दो लड़कियाँ यौमे बुआष़ के बारे में वो अशआर पढ़ रही थीं जो अंसार के शुअरा ने अपने फ़ख़्र में कहे थे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा ये शैतानी गाने बाजे! (आँहज़रत ﷺ के घर में) दो मर्तबा उन्होंने ये जुम्ला दोहराया, लेकिन आपने फ़र्माया अबूबक्र! उन्हें छोड़ दो। हर क़ौम की ईद होती है और हमारी ईद आज का ये दिन है। (राजेअ : 454, 949)

٣٩٣١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ دَخَلَ عَلَيْهَا وَالنَّبِيُّ ﷺ عِنْدَهَا يَوْمَ فِطْرٍ - أَوْ أَضْحَى - وَعِنْدَهَا قَيْنَتَانِ تُغَنِّيَانِ بِمَا تَقَاذَفَتِ الأَنْصَارُ يَوْمَ بُعَاثٍ. فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: مِزْمَارُ الشَّيْطَانِ - مَرَّتَيْنِ - فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((دَعْهُمَا يَا أَبَا بَكْرٍ، إِنَّ لِكُلِّ قَوْمٍ عِيْدًا، وَإِنَّ عِيْدَنَا هَذَا الْيَوْمُ)).
[راجع: ٤٥٤، ٩٤٩]

तशरीह : इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब से मुश्किल है, इसमें हिजरत का ज़िक्र नहीं है मगर शायद ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने उसको अगली ह़दीष़ की मुनासबत से ज़िक्र किया जिसमें जंगे बुआष़ का ज़िक्र है (वह़ीदी)। क़स्तलानी में है **व मुताबक़तु हाज़ल्हदीष़ि लित्तर्जुमति क़ालल्ऐनी (रहि.) मिन हैषु अन्नहू मुताबिकुन लिल्हदीषिस्साबिक़ फ़ी ज़िक्रि यौमि बुआष़िन वल्मुताबिकु लिल्मुताबिकि मुताबिकुन क़ाल व लम अर अहदन ज़ुकिर लहू मुताबक़तन कज़ा क़ाल फल्यतअम्मल** ख़ुलासा वही है जो मज़्कूर हुआ।

3932. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, (दूसरी सनद) और हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने

٣٩٣٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ ح، وَحَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُوْرٍ

بَيانَ किया, कहा हमको अ़ब्दुस्समद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अपने वालिद अ़ब्दुल वारिष़ से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अबुत तियाह यज़ीद बिन हुमैद ज़ब्ई ने बयान किया, कहा कि मुझसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो मदीना के बुलन्द जानिब क़ुबा के एक मुहल्ला में आपने (सबसे पहले) क़याम किया जिसे बनी अ़म्र बिन औ़फ़ का मुहल्ला कहा जाता था। रावी ने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने वहाँ चौदह रात क़याम किया फिर आपने क़बीला बनी नज्जार के लोगों को बुला भेजा। उन्होंने बयान किया कि अंसारी बनी अन्नज्जार आपकी ख़िदमत में तलवारें लटकाए हुए हाज़िर हुए। रावी ने बयान किया गोया इस वक़्त भी वो मंज़र मेरी नज़रों के सामने है कि आँहज़रत (ﷺ) अपनी सवारी पर सवार हैं। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) उसी सवारी पर आपके पीछे सवार हैं और बनी नज्जार के अंसार आपके चारों तरफ़ हल्क़ा (घेरा) बनाए हुए हथियारबंद पैदल चले जा रहे हैं। आख़िर आप हज़रत अबू अय्यूब अंसारी के घर के क़रीब उतर गये। रावी ने बयान किया कि अभी तक जहाँ भी नमाज़ का वक़्त हो जाता वहीं आप नमाज़ पढ़ लेते थे। बकरियों के रेवड़ जहाँ रात को बाँधे जाते वहाँ भी नमाज़ पढ़ ली जाती थी। बयान किया कि फिर हुज़ूर (ﷺ) ने मस्जिद की ता'मीर का हुक्म फ़र्माया। आपने उसके लिये क़बीला बनी नज्जार के लोगों को बुला भेजा। वो हाज़िर हुए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ बनू नज्जार! अपने इस बाग़ की क़ीमत तै कर लो। उन्होंने अ़र्ज़ किया नहीं अल्लाह की क़सम हम उसकी क़ीमत अल्लाह के सिवा और किसी से नहीं ले सकते। रावी ने बयान किया कि इस बाग़ में वो चीज़ें थीं जो मैं तुमसे बयान करूँगा। उसमें मुश्रिकीन की क़ब्रें थीं, कुछ उसमें खण्डहर था और खजूरों के चन्द पेड़ भी थे। आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से मुश्रिकीन की क़ब्रें उखाड़ दी गईं, जहाँ खण्डहर था उसे बराबर किया गया और खजूरों के पेड़ काट दिये गये। रावी ने बयान किया कि खजूर के तने मस्जिद के क़िब्ला की तरफ़ एक क़तार में बतौर दीवार रख दिये गये दरवाज़े में (चौखट की जगह) पत्थर रख दिये, हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि सहाबा

أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ: حَدَّثَنَا أَبُو التَّيَّاحِ يَزِيْدُ بْنُ حُمَيْدٍ الضُّبَعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِيْنَةَ نَزَلَ فِي عُلْوِ الْمَدِيْنَةِ، فِي حَيٍّ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو عَمْرِو بْنِ عَوْفٍ، قَالَ: فَأَقَامَ فِيْهِمْ أَرْبَعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً، ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَى مَلأِ بَنِي النَّجَّارِ، قَالَ: فَجَاؤُوا مُتَقَلِّدِيْ سُيُوفِهِمْ. قَالَ : وَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى رَاحِلَتِهِ وَأَبُوبَكْرٍ رِدْفَهُ وَمَلأُ بَنُ النَّجَّارِ حَوْلَهُ حَتَّى أَلْقَى بِفِنَاءِ أَبِي أَيُّوبَ، قَالَ: فَكَانَ يُصَلِّي حَيْثُ أَدْرَكَتْهُ الصَّلاَةُ وَيُصَلِّي فِي مَرَابِضِ الْغَنَمِ. قَالَ : ثُمَّ إِنَّهُ أَمَرَ بِبِنَاءِ الْمَسْجِدِ، فَأَرْسَلَ إِلَى مَلأِ بَنِي النَّجَّارِ، فَجَاؤُوا. فَقَالَ : ((يَا بَنِي النَّجَّارِ ثَامِنُونِي حَائِطَكُم هَذَا))، فَقَالُوا: لاَ وَاللهِ لاَ نَطْلُبُ ثَمَنَهُ إِلاَّ إِلَى اللهِ. قَالَ: ((فَكَانَ فِيْهِ مَا أَقُولُ لَكُمْ : كَانَتْ فِيْهِ قُبُورُ الْمُشْرِكِيْنَ، وَكَانَتْ بِهِ خِرَبٌ، وَكَانَ فِيْهِ نَخْلٌ. فَأَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِقُبُورِ الْمُشْرِكِيْنَ فَنُبِشَتْ، وَبِالْخِرَبِ فَسُوِّيَتْ، وَبِالنَّخْلِ فَقُطِعَ، قَالَ فَصَفُّوا النَّخْلَ قِبْلَةَ الْمَسْجِدِ، قَالَ وَجَعَلُوا عِضَادَتَيْهِ حِجَارَةً. قَالَ: جَعَلُوا يَنْقُلُونَ ذَاكَ الصَّخْرَ وَهُمْ يَرْتَجِزُونَ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ مَعَهُمْ يَقُولُونَ:

اللَّهُمَّ إِنَّهُ لَاخَيْرَ إِلاَّ خَيْرَ الآخِرَةْ
فَانْصُرِ الأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَةْ

जब पत्थर ढो रहे थे तो शे'र पढ़ते जाते थे आँहज़रत (ﷺ) भी उनके साथ ख़ुद पत्थर ढोते और शे'र पढ़ते। सहाबा ये शे'र पढ़ते कि ऐ अल्लाह! आख़िरत ही की ख़ैर, ख़ैर है, पस तू अंसार और मुहाजिरीन की मदद फ़र्मा।

इस हदीष़ के तर्जुमा में हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने अल्फ़ाज़ **व युसल्ली फ़ी मराबिज़िल ग़नम** का तर्जुमा छोड़ दिया है ग़ालिबन मरहूम का ये सह्व (भूल) है। इस हदीष़ में भी हिजरत का ज़िक्र है, यही बाब से मुनासबत की वजह है।

٤٧- بَابُ إِقَامَةِ الْمُهَاجِرِ بِمَكَّةَ، بَعْدَ قَضَاءِ نُسُكِهِ

बाब 47 : हज्ज की अदायगी के बाद मुहाजिर का मक्का में क़याम करना कैसा है

तश्रीह : हाफ़िज़ ने कहा बाब का मतलब ये कि जिसने फ़तहे मक्का से पहले हिजरत की उसको मक्का में फिर रहना हराम था। मगर हज्ज या उमरह के लिये वहाँ ठहर सकता था, उसके बाद तीन दिन से ज़्यादा ठहरना दुरुस्त न था। अब जो लोग दूसरे मक़ाम से ब सबब फ़ित्ने वग़ैरह के हिजरत करें तो अल्लाह के वास्ते उन्होंने किसी मुल्क को छोड़ा हो तो फिर वहाँ लौटना दुरुस्त नहीं अगर किसी फ़ित्ने की वजह से छोड़ा हो और उस फ़ित्ने का डर न रहा हो तो फिर वहाँ लौटना और रहना दुरुस्त है। (वहीदी)

٣٩٣٣- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ حُمَيْدٍ الزُّهْرِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ يَسْأَلُ السَّائِبَ ابْنَ أُخْتِ النَّمِرِ: مَا سَمِعْتَ فِي سُكْنَى مَكَّةَ؟ قَالَ: سَمِعْتُ الْعَلاَءَ بْنَ الْحَضْرَمِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ثَلاَثٌ لِلْمُهَاجِرِ بَعْدَ الصَّدَرِ)).

3933. मुझसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन हुमैद ज़ुहरी ने बयान किया, उन्होंने ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से सुना, वो नम्र के भान्जे साईब बिन यज़ीद से दरयाफ़्त कर रहे थे कि तुमने मक्का में (मुहाजिर के) ठहरने के मसला में क्या सुना है? उन्होंने बयान किया मैंने हज़रत अलाअ बिन हज़रमी (रज़ि.) से सुना। वो बयान करते थे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मुहाजिर को (हज्ज में) तवाफ़े विदाअ के बाद तीन दिन ठहरने की इजाज़त है।

मुहाजिर से मुराद वो मुसलमान जो मक्का से मदीना चले गये थे। हज्ज पर आने के लिये फ़तहे मक्का से पहले उनके लिये ये वक़्ती हुक्म था कि वो हज्ज के बाद मक्का शरीफ़ में तीन रोज़ क़याम करके मदीना वापस हो जाएँ। फ़तहे मक्का के बाद ये सवाल ख़त्म हो गया, तफ़्सील के लिये फ़त्हुल बारी देखिए।

٤٨- بَابُ مَتَى أَرَّخُوا التَّارِيخَ

बाब 48 : इस्लामी तारीख़ कब से शुरू हुई?

तश्रीह : **फ़ित्तौशीहि क़ाल बअज़ुहुम मुनासबतु जअलित्तारीखि क़ब्लल्हिज्रति अन्नल्क़ज़ाया अल्लती कान युम्किनु मिन्हा अर्बअतुन मौलिदुहू व मब्अषुहू व हिज्रतुहू व वफ़ातुहू फ़लम युवर्रख़ मिनल्उलियैनि लिअन्न कुल्लम्मिन्हुमा ला यख़्लू अन नज़ाइन फी तअईनि सनतिही व ला मिनल्वफ़ाति लिमा युक़िड़ मिल्असफ़ि अलैहि फल्हस्रू फिल्हिज्रति व जुइल अव्वलतुस्सनति मुहर्रमुन दून रबीइन लिअन्नहू मुन्सरिफ़ुन्नासि मिनल्हज्जि इन्तिहा** या'नी बक़ौल कुछ तारीख़ हिजरत के लिये चार अहम मामलात मद्दे नज़र हो सकते थे आपकी पैदाइश और आपकी बअ़षत और हिजरत और वफ़ात इब्तिदा की दो चीज़ों में तारीख़ तअ़ईन का इख़्तिलाफ़ मुम्किन था, इसलिये उनको छोड़ दिया गया। वफ़ात को इसलिये नहीं लिया कि उससे हमेशा आपकी वफ़ात पर तासिफ़ ज़ाहिर होता। पस वाक़िया हिजरत से तारीख़

का तअय्युन मुनासिब हुआ हिजरत का सन मुहर्रम में मुक़र्रर किया गया था, इसीलिये मुहर्रम उसका पहला महीना क़रार पाया। ख़िलाफ़त फ़ारूक़ी के 17 हिजरी में तारीख़ का मसला सामने आया जिस पर अकाबिर सहाबा (रज़ि.) ने हिजरत से उसको मुक़र्रर करने का मश्वरा दिया जिस पर सबका इत्तिफ़ाक़ हो गया। अकाबिरे सहाबा ने आयते करीमा **लमस्जिदुन उस्सिस अलत्तक़्वा मिन अव्वलि यौमिन** (अत् तौबा : 108) से हिजरत की तारीख़ निकाली कि यही वो दिन ह जिनमें इस्लाम की तरक़्क़ी का दौर शुरू हुआ और अमन से मुसलमानों को तब्लीग़े इस्लाम का मौक़ा मिला और मस्जिद क़ुबा की बुनियाद रखी गई। मिन अव्वल्लि यौम से इस्लामी तारीख़ का अव्वल दिन यकम मुहर्रम सन हिजरी क़रार पाया।

3934. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अम्बी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबू हाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद सलमा बिन दीनार ने, उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि तारीख़ का शुमार नबी करीम (ﷺ) की नुबुव्वत के साल से हुआ और न आपकी वफ़ात के साल से बल्कि उसका शुमार मदीना की हिजरत के साल से हुआ।

٣٩٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنِ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: ((مَا عَدُّوا مِنْ مَبْعَثِ النَّبِيِّ ﷺ وَلاَ مِنْ وَفَاتِهِ، مَا عَدُّوا إِلاَّ مِنْ مَقْدَمِهِ الْمَدِينَةَ)).

तश्रीह : इब्ने जोज़ी ने कहा जब दुनिया में आबादी ज़्यादा हो गई तो हज़रत आदम के वक़्त से तारीख़ का शुमार होने लगा अब आदम से लेकर तूफ़ाने नूह तक एक तारीख़ है और तूफ़ाने नूह से हज़रत इब्राहीम (अलैहि.) के आग में डाले जाने तक दूसरी और उस वक़्त से हज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) तक तीसरी। वहाँ से हज़रत मूसा (अलैहि.) की मिस्र से रवाना होने तक चौथी। वहाँ से हज़रत दाऊद तक पाँचवीं। वहाँ से हज़रत सुलैमान (अलैहि.) तक छठी और वहाँ से हज़रत ईसा (अलैहि.) तक सातवीं है और मुसलमानों की तारीख़ आँहज़रत (ﷺ) की हिजरत से शुरू होती है गो हिजरत रबीउ़ल अव्वल में हुई थी मगर साल का आग़ाज़ मुहर्रम से रखा। यहूदी बैतुल मक़्दिस की वीरानी से और नसारा हज़रत मसीह (अलैहि.) के उठ जाने से तारीख़ का हिसाब करते हैं।

3935. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे मअमर ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (पहले) नमाज़ सिर्फ़ दो रकअत फ़र्ज़ हुई थी फिर नबी करीम (ﷺ) ने हिजरत की तो वो फ़र्ज़ रकआत चार रकआत हो गईं अल्बत्ता सफ़र की हालत में नमाज़ अपनी हालत में बाक़ी रखी गई। इस रिवायत की मुताबअत अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने मअमर से की है। (राजेअ : 350)

٣٩٣٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: ((فُرِضَتِ الصَّلاَةُ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ هَاجَرَ النَّبِيُّ ﷺ فَفُرِضَتْ أَرْبَعًا وَتُرِكَتْ صَلاَةُ السَّفَرِ عَلَى الأُوْلَى)). تَابَعَهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ. [راجع: ٣٥٠]

रिवायत में हिजरत का ज़िक्र है बाब से यही मुनासबत की वजह है।

बाब 49 : नबी करीम (ﷺ) की दुआ कि ऐ अल्लाह! मेरे अस्हाब की हिजरत क़ायम रख और जो मुहाजिर मक्का में इंतिक़ाल कर गये, उनके लिये आपका इज़्हारे रंज करना

٤٩- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ أَمْضِ لأَصْحَابِي هِجْرَتَهُمْ)) وَمَرْثِيَتُهُ لِمَنْ مَاتَ بِمَكَّةَ

3936. हमसे यह्या बिन क़ुज़आ ने बयान किया, कहा हमसे

٣٩٣٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا

इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे आ़मिर बिन सअ़द बिन मालिक ने और उनसे उनके वालिद हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हज्जतुल विदाअ़ 10 हिजरी के मौक़े पर मेरी मिज़ाज पुर्सी के लिये तशरीफ़ लाए। इस मर्ज़ में मेरे बचने की कोई उम्मीद नहीं रही थी। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मर्ज़ की शिद्दत आप (ﷺ) ख़ुद मुलाहिज़ा फ़र्मा रहे हैं, मेरे पास माल बहुत है और स़िर्फ़ मेरी एक लड़की वारिष़ है तो क्या मैं अपने दो तिहाई माल का स़दक़ा कर दूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने अ़र्ज़ किया फिर आधे का कर दूँ? फ़र्माया कि सअ़द! बस एक तिहाई का कर दो, ये भी बहुत है। अगर अपनी औलाद को मालदार छोड़कर जाए तो ये उससे बेहतर है कि उन्हें मुहताज छोड़े औ[illegible] वो लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें। अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन सअ़द ने कि, तुम अपनी औलाद को छोड़कर जो कुछ भी ख़र्च करोगे और उससे अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी मक़्स़ूद होगी तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें इसका ष़वाब देगा, अल्लाह तुम्हें उस लुक़्मे पर भी ष़वाब देगा जो तुम अपनी बीवी के मुँह में डालो। मैंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं अपने साथियों से पीछे मक्का में रह जाऊँगा । आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम पीछे नहीं रहोगे और तुम जो भी अ़मल करोगे और उससे मक़्स़ूद अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी होगी तो तुम्हारा मर्तबा उसकी वजह से बुलन्द होता रहेगा और शायद तुम अभी बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहोगे तुमसे बहुत से लोगों (मुसलमानों) को नफ़ा पहुँचेगा और बहुतों को (ग़ैर मुस्लिमों को) नुक़्सान होगा। ऐ अल्लाह! मेरे स़हाबा की हिजरत पूरी कर दे और उन्हें उलटे पाँव वापस न कर (कि वो हिजरत को छोड़कर अपने घरों को वापस आ जाएँ) अल्बत्ता सअ़द बिन ख़ौला नुक़्स़ान में पड़ गये और अहमद बिन यूनुस और मूसा बिन इस्माईल ने इस ह़दीष़ को इब्राहीम बिन सअ़द से रिवायत किया उसमें (अपनी औलाद ज़ुर्रियत को छोड़ो, के बजाय) तुम वारिष़ों को छोड़ो ये अल्फ़ाज़ मरवी हैं।

إِبْرَاهِيْمُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ : عَادَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ مِنْ مَرَضٍ أَشْفَيْتُ مِنْهُ عَلَى الْمَوْتِ. فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، بَلَغَ بِي مِنَ الْوَجَعِ مَا تَرَى، وَأَنَا ذُوْ مَالٍ، وَلاَ يَرِثُنِي إِلاَّ ابْنَةٌ لِيْ وَاحِدَةٌ، أَفَأَتَصَدَّقُ بِثُلُثَي مَالِي؟ قَالَ: ((لاَ)). قَالَ: فَأَتَصَدَّقُ بِشَطْرِهِ؟ قَالَ: ((الثُّلُثُ، يَا سَعْدُ وَالثُّلُثُ كَثِيْرٌ، إِنَّكَ أَنْ تَذَرَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَن تَذَرَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُوْنَ النَّاسَ - قَالَ أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ: أَنْ تَذَرَ ذُرِّيَّتَكَ - وَلَسْتَ بِنَافِقٍ نَفَقَةً تَبْتَغِي بِهَا وَجْهَ اللهِ إِلاَّ آجَرَكَ بِهَا، حَتَّى اللُّقْمَةَ تَجْعَلُهَا فِي فِيْ امْرَأَتِكَ)). قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أُخَلَّفُ بَعْدَ أَصْحَابِي؟ قَالَ: ((إِنَّكَ لَنْ تُخَلَّفَ فَتَعْمَلَ عَمَلاً تَبْتَغِي بِهِ وَجْهَ اللهِ إِلاَّ ازْدَدْتَ بِهِ دَرَجَةً وَرِفْعَةً. وَلَعَلَّكَ تُخَلَّفُ حَتَّى يَنْتَفِعَ بِكَ أَقْوَامٌ وَيُضَرَّ بِكَ آخَرُوْنَ. اللَّهُمَّ أَمْضِ لأَصْحَابِي هِجْرَتَهُمْ، وَلاَ تَرُدَّهُمْ عَلَى أَعْقَابِهِمْ. لَكِنِ الْبَائِسُ سَعْدُ بْنُ خَوْلَةَ. يَرْثِي لَهُ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تُوُفِّيَ بِمَكَّةَ)). وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ وَمُوسَى عَنْ إِبْرَاهِيْمَ: ((أَنْ تَذَرَ وَرَثَتَكَ)).

तश्रीह : हज्जतुल विदाअ में हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) बीमार हो गये और बीमारी शिद्दत पकड़ गई तो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से ज़िन्दगी से मायूस होकर अपने तर्के के बारे में मसाइल मा'लूम किये। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको मसाइल समझाए और साथ ही तसल्ली दिलाई कि अभी तुम अर्सा तक ज़िन्दा रहोगे और ऐसा ही हुआ कि हज़रत सअद (रज़ि.) बाद में चालीस साल ज़िन्दा रहे, इराक़ फ़तह किया और बहुत से लोग उनके हाथ पर मुसलमान हुए, उनके बहुत से लड़के भी पैदा हुए। हदीष पर ग़ौर करने से वाज़ेह होता है कि इस्लाम मुसलमानों को तंगदस्त मुफ़्लिस बनने की बजाय ज़्यादा से ज़्यादा हलाल तौर पर कमाकर दौलतमन्द बनने की ता'लीम देता है और रग़्बत दिलाता है कि वो अपने अहल व अयाल को ग़ुर्बत तंगदस्ती की हालत में छोड़कर इंतिक़ाल न करें या'नी पहले से ही मेहनत व मशक़्क़त करके ग़रीबी का मुक़ाबला करें। ज़रूर ऐसी तरक़्क़ी करें कि मरने के बाद उनकी औलाद तंगदस्ती, मुहताजगी, ग़रीबी की शिकार न हो। इसीलिये हज़रत इमाम सईद बिन मुसय्यिब मशहूर मुहद्दिष फ़र्माते हैं, **ला ख़ैर फी मन ला युरीदु जम्अल्मालि मिनहल्लिही यकुफ़्फ़ु बिही वज्हहू अनिन्नासि व यसिलु बिही रहिमहू व युअती मिन्हु हक़्क़हू** ऐसे शख़्स में कोई ख़ूबी नहीं है जो हलाल तरीक़े से माल जमा न करे जिसके ज़रिये लोगों से अपनी आबरू की हिफ़ाज़त करे और ख़ुवेश व अक़ारिब की ख़बरगीरी करे और उसका हक़ अदा करे। हज़रत इमाम सबीई का क़ौल है, **कानू यरौनस्सिअत औनन अलद्दीनि** बुज़ुर्गाने दीन ख़ुशहाली को दीन के लिये मददगार ख़्याल करते थे। इमाम सुफ़यान ष़ौरी (रह) फ़र्माते हैं, **अल्मालु फी ज़मानिना हाज़ा सलाहुल्मूमिनीन**, माल हमारे ज़माने में मोमिन का हथियार है (अज़ मिन्हाजुल क़ासिदीन पेज नं. 199) क़ुर्आन मजीद में ज़कात का बार-बार ज़िक्र ही ये चाहता है कि हर मुसलमान मालदार हो जो सालाना ज़्यादा से ज़्यादा ज़कात अदा कर सके। हाँ माल अगर हराम तरीक़े से जमा किया जाए या इंसान को इस्लाम और ईमान से ग़ाफ़िल कर दे तो ऐसा माल अल्लाह की तरफ़ से मौजिबे ला'नत है। **वफ़्फ़क़नल्लाहु लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा आमीन** (आमीन)

बाब 50 : नबी करीम (ﷺ) ने अपने सहाबा के दरम्यान किस तरह भाईचारा क़ायम कराया था

٥٠- بَابُ كَيْفَ آخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ أَصْحَابِهِ؟

उसका बयान और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जब हम मदीना हिजरत करके आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे और सअद बिन रबीआ अंसारी (रज़ि.) के दरम्यान भाईचारा कराया था। हज़रत अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) (वहब बिन अब्दुल्लाह) ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत सलमान फ़ारसी और अबू दर्दा के दरम्यान भाईचारा कराया था।

وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ : ((آخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنِي وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ لَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ)). وَقَالَ أَبُو جُحَيْفَةَ: ((آخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ سَلْمَانَ وَأَبِي الدَّرْدَاءِ)).

तश्रीह : कहते हैं भाई भाई बनाना दो बार हुआ था एक बार मक्का में मुहाजिरीन में उस दफ़ा अबूबक्र, उमर को और हम्ज़ा, ज़ैद बिन हारिषा को और उष्मान, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को और ज़ुबैर, इब्ने मसऊद को और उबैदह, बिलाल को और मुस्अब बिन उमेर, सअद बिन अबी वक़्क़ास और अबू उबैदा, सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा को और सईद बिन ज़ैद, तलहा (रज़ि.) को आपने भाई भाई बना दिया था। हज़रत अली (रज़ि.) शिकायत करने आए तो आपने उनको अपना भाई बनाया दूसरी बार मदीना में हुआ मुहाजिरीन और अंसार में। (वहीदी)

इब्तिदा में मवाख़ात तर्का में मीराष तक पहुँच गई थी या'नी ऐसे मुँह बोले भाइयों को मरने वाले भाई के तर्के में हिस्सा दिया जाने लगा था मगर बद्र के वाक़िये के बाद आयते करीमा **व उलुल्अर्हामि बअज़ुहुम औला बअज़िन** नाज़िल हुई जिससे तर्का में हिस्सा सिर्फ़ हक़ीक़ी वारिषों के लिये मख़सूस हो गया। मदीना में मवाख़ात हिजरत के पाँच माह बाद कराई गई थी।

3937. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बेकुन्दी ने बयान किया, उनसे

٣٩٣٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ

सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे हुमैद त़वील ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) हिजरत करके आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनका भाईचारा सअ़द बिन रबीअ़ अंसारी (रज़ि.) के साथ कराया था सअ़द (रज़ि.) ने उनसे कहा कि उनके अहल व माल में से आधा वो क़ुबूल कर लें लेकिन अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह तआ़ला आपके अहल व माल में बरकत दे। आप तो मुझे बाज़ार का रास्ता बता दें। चुनाँचे उन्होंने तिजारत शुरू कर दी और पहले दिन उन्हें कुछ पनीर और घी में नफ़ा मिला। चन्द दिनों के बाद उन्हें नबी करीम (ﷺ) ने देखा कि उनके कपड़ों पर (ख़ुश्बू की) ज़र्दी का निशान है तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया अ़ब्दुर्रहमान ये क्या है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ) मैंने एक अंसारी औरत से शादी कर ली है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें महर में तुमने क्या दिया? उन्होंने बताया कि एक गुठली बराबर सोना। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अब वलीमा कर ख़्वाह एक ही बकरी का हो।

(राजेअ़ : 2049)

سفْيَانُ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((قدم عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ فَآخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَهُ وَبَيْنَ سَعِيْدِ بْنِ الرَّبِيْعِ الأَنْصَارِيِّ. فَعَرَضَ عَلَيْهِ أَنْ يُنَاصِفَهُ أَهْلَهُ وَمَالَهُ. فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ، دُلَّنِي عَلَى السُّوقِ. فَرَبِحَ شَيْئًا مِنْ أَقِطٍ وَسَمْنٍ، فَرَآهُ النَّبِيُّ ﷺ بَعْدَ أَيَّامٍ وَعَلَيْهِ وَضَرٌ مِنْ صُفْرَةٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((مَهْيَمْ يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ؟)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً مِنَ الأَنْصَارِ. قَالَ: ((فَمَا سُقْتَ فِيْهَا؟)). فَقَالَ: وَزْنَ نَوَاةٍ مِنْ ذَهَبٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)).[راجع: ٢٠٤٩]

इस ह़दीष़ से अंसार का ईष़ार और मुहाजिरीन की ख़ुद्दारी रोज़े रोशन की त़रह़ ज़ाहिर है कि वो कैसे पुख़्ताकार मुसलमान थे। इस ह़दीष़ से तिजारत की भी तरग़ीब ज़ाहिर है। अल्लाह पाक उ़लमा को ख़ुसूसन तौफ़ीक़ दे कि वो इस पर ग़ौर करके अपने मुस्तक़्बिल का फ़िक्र करें। अल्लाहुम्म आमीन।

बाब : 51

٥١- بَابٌ

3938. मुझसे ह़ामिद बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने, उनसे हुमैद त़वील ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) के मदीना आने की ख़बर हुई तो वो आपसे चन्द सवाल करने के लिये आए। उन्होंने कहा कि मैं आपसे तीन चीज़ों के बारे में पूछूँगा जिन्हें नबी (ﷺ) के सिवा और कोई नहीं जानता। क़यामत की सबसे पहली निशानी क्या होगी? अहले जन्नत की ज़ियाफ़त सबसे पहले किस खाने से की जाएगी? और क्या बात है कि बच्चा कभी बाप पर जाता है और कभी माँ पर? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जवाब अभी ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) ने आकर बताया है। अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा कि ये मलाइका में यहूदियों के दुश्मन हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत

٣٩٣٨- حَدَّثَنَا حَامِدُ بْنُ عُمَرَ عَنْ بِشْرِ بْنِ الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ حَدَّثَنَا أَنَسٌ ((أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ سَلاَمٍ بَلَغَهُ مَقْدَمُ النَّبِيِّ ﷺ الْمَدِيْنَةَ، فَأَتَاهُ يَسْأَلُهُ عَنْ أَشْيَاءَ فَقَالَ: إِنِّي سَائِلُكَ عَنْ ثَلاَثٍ لاَ يَعْلَمُهُنَّ إِلاَّ نَبِيٌّ : مَا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ، وَمَا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ، وَمَا بَالُ الْوَلَدِ يَنْزِعُ إِلَى أَبِيْهِ أَوْ إِلَى أُمِّهِ؟ قَالَ: ((أَخْبَرَنِي بِهِ جِبْرِيْلُ آنِفًا)). قَالَ ابْنُ سَلاَمٍ: ذَاكَ عَدُوُّ الْيَهُودِ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ. قَالَ: ((أَمَّا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ فَنَارٌ

تَحْشُرُهُمْ مِنَ الْمَشْرِقِ إِلَى الْمَغْرِبِ. وَأَمَّا أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ فَزِيَادَةُ كَبِدِ الْحُوتِ. وَأَمَّا الْوَلَدُ فَإِذَا سَبَقَ مَاءُ الرَّجُلِ مَاءَ الْمَرْأَةِ نَزَعَ الْوَلَدَ، وَإِذَا سَبَقَ الْمَرْأَةِ مَاءَ الرَّجُلِ نَزَعَتِ الْوَلَدَ)). قَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَنَّكَ رَسُولُ اللهِ. قَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ الْيَهُودَ قَوْمٌ بُهُتٌ، فَاسْأَلْهُمْ عَنِّي قَبْلَ أَنْ يَعْلَمُوا بِإِسْلاَمِي. فَجَاءَتِ الْيَهُودُ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((أَيُّ رَجُلٍ عَبْدُ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ فِيكُمْ؟)) قَالُوا: خَيْرُنَا وَابْنُ خَيْرِنَا، وَأَفْضَلُنَا وَابْنُ أَفْضَلِنَا. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَسْلَمَ عَبْدُ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ؟)) قَالُوا: أَعَاذَهُ اللهُ مِنْ ذَلِكَ. فَأَعَادَ عَلَيْهِمْ فَقَالُوا مِثْلَ ذَلِكَ. فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ عَبْدُ اللهِ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ. قَالُوا: شَرُّنَا وَابْنُ شَرِّنَا، وَتَنَقَّصُوهُ. قَالَ: هَذَا كُنْتُ أَخَافُ يَا رَسُولَ اللهِ)).

[راجع: ٣٣٢٩]

की पहली निशानी एक आग है जो इंसानों को मश्रिक़ से मग़्रिब की तरफ़ ले जाएगी। जिस खाने से सबसे पहले अहले जन्नत की ज़ियाफ़त की जाएगी वो मछली की कलेजी का बड़ा टुकड़ा होगा (जो निहायत लज़ीज़ और ज़ोद हज़म होता है) और बच्चा बाप की सूरत पर उस वक़्त जाता है जब औरत के पानी पर मर्द का पानी ग़ालिब आ जाए और जब मर्द के पानी पर औरत का पानी ग़ालिब आ जाए तो बच्चा माँ पर जाता है। अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा और कोई मअबूद नहीं और गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं । फिर उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह(ﷺ)! यहूदी बड़े बोहतान लगाने वाले हैं, इसलिये आप इससे पहले कि मेरे इस्लाम के बारे में उन्हें कुछ मा'लूम हो, उनसे मेरे बारे में दरयाफ़्त करें। चुनाँचे चन्द यहूदी आए तो आपने उनसे फ़र्माया कि तुम्हारी क़ौम में अब्दुल्लाह बिन सलाम कौन हैं? वो कहने लगे कि हममें सबसे बेहतर और सबसे बेहतर के बेटे हैं, हममें सबसे अफ़ज़ल और सबसे अफ़ज़ल के बेटे। आपने फ़र्माया तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर वो इस्लाम लाएँ? वो कहने लगे इससे अल्लाह तआला उन्हें अपनी पनाह में रखे। हुज़ूर ने दोबारा उनसे यही सवाल किया और उन्होंने यही जवाब दिया। उसके बाद अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) बाहर आए और कहा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ये मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। अब वो कहने लगे ये तो हममें सबसे बदतरीन आदमी हैं और सबसे बदतर बाप का बेटा है। फ़ौरन बुराई शुरू कर दी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इसी का मुझे डर था। (राजेअ : 3329)

तश्रीह : कि यहूदी जब मेरे इस्लाम का हाल सुनेंगे तो पहले ही से बुरा कहेंगे तो आप (ﷺ) ने सुन लिया, उनकी बेईमानी मा'लूम हो गई पहले तो ता'रीफ़ की जब अपने मतलब के ख़िलाफ़ हुआ तो लगे बुराई करने। बेईमानों का यही शेवा है जो शख़्स उनके मशरब के ख़िलाफ़ हो वो कितना भी आलिम फ़ाज़िल साहिबे हुनर अच्छा शख़्स हो लेकिन उसकी बुराई करते हैं । अब तो हर जगह ये आफ़त फैल गई कि अगर कोई आलिम फ़ाज़िल शख़्स उलमाए सूअ (झूठे आलिमों) का एक मसले में इख़्तिलाफ़ करे तो बस उसके सारे फ़ज़ाइल और कमालात को एक तरफ़ डालकर उसके दुश्मन बन जाते हैं जो अदबार व तनज़्ज़ुल की निशानी है। अकषर फ़िक़्ही मुतअस्सिब उलमा भी इस मर्ज़ में गिरफ़्तार हैं। इल्ला माशाअल्लाह

٣٩٣٩، ٣٩٤٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ

3939,40. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया,

الله حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو سَمِعَ أَبَا الْمِنْهَالِ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنِ مُطْعِمٍ قَالَ: ((بَاعَ شَرِيْكٌ لِي دَرَاهِمَ فِي السُّوقِ نَسِيْئَةً، فَقُلْتُ: سُبْحَانَ اللهِ، أَيَصْلُحُ هَذَا؟ فَقَالَ: سُبْحَانَ اللهِ، وَاللهِ لَقَدْ بِعْتُهَا فِي السُّوقِ فَمَا عَابَهُ أَحَدٌ. فَسَأَلْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ فَقَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ نَتَبَايَعُ هَذَا الْبَيْعَ فَقَالَ: ((مَا كَانَ يَدًا بِيَدٍ فَلَيْسَ بِهِ بَأْسٌ، وَمَا كَانَ نَسِيئَةً فَلاَ يَصْلُحُ. وَالْقَ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ فَاسْأَلْهُ فَإِنَّهُ كَانَ أَعْظَمَنَا تِجَارَةً)). فَسَأَلْتُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ فَقَالَ مِثْلَهُ. وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً فَقَالَ: فَقَدِمَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِيْنَةَ وَنَحْنُ نَتَبَايَعُ، وَقَالَ: ((نَسِيْئَةً إِلَى الْمَوسِمِ أَوِ الْحَجِّ)).
[راجع: ٢٠٦٠، ٢٠٦١]

कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उन्होंने अबू मिन्हाल (अ़ब्दुर्रहमान बिन मुत़इम) से सुना, अ़ब्दुर्रहमान बिन मुत़इम ने बयान किया कि मेरे एक साझी ने बाज़ार में चन्द दिरहम उधार फ़रोख़्त किये हैं, मैंने उससे कहा सुब्हानल्लाह! क्या ये जाइज़ है? उन्होंने कहा सुब्हानल्लाह अल्लाह की क़सम कि मैंने बाज़ार में उसे बेचा तो किसी ने भी क़ाबिले ए'तिराज़ नहीं समझा। मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से इसके बारे में पूछा तो उन्होंने बयान किया नबी करीम (ﷺ) जब (हिजरत करके) तशरीफ़ लाए तो इस त़रह ख़रीद फ़रोख़्त किया करते थे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़रीद व फ़रोख़्त की इस सूरत में अगर मामला दस्त ब दस्त (नक़द) हो तो कोई मुज़ायक़ा नहीं लेकिन अगर उधार पर मामला किया तो फिर ये सूरत जाइज़ नहीं और ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म से भी मिलकर इसके बारे में पूछ लो क्योंकि वो हममे बड़े सौदागर थे। मैंने ज़ैद बिन अरक़म से पूछा तो उन्होंने भी यही कहा कि सुफ़यान ने एक मर्तबा यूँ बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब हमारे यहाँ मदीना तशरीफ़ लाए तो हम (इस त़रह की) ख़रीद व फ़रोख़्त किया करते थे और बयान किया कि उधार मौसम तक के लिये या (यूँ बयान किया कि) ह़ज्ज तक के लिये। (राजेअ़: 2060, 2061)

ये बेअ़ जाइज़ नहीं है क्योंकि बेअ़े स़र्फ़ में तक़ाबुज़ उसी मज्लिस में ज़रूरी है, जैसे कि किताबुल बुयूअ़ में गुज़र चुका है, आख़िर ह़दीष़ में रावी को शक है कि मौसम का लफ़्ज़ कहा या ह़ज्ज का मुताबक़ते बाब इससे निकलता है कि आँह़ज़रत (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए।

٥٢- بَابُ إِتْيَانِ الْيَهُودِ النَّبِيَّ ﷺ حِيْنَ قَدِمَ الْمَدِيْنَةَ

बाब 52 : जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आपके पास यहूदियों के आने का बयान

هَادُوا : صَارُوا يَهُودًا. وَأَمَّا قَوْلُهُ هُدْنَا : تُبْنَا. هَائِدٌ : تَائِبٌ

सूरह बक़रः में लफ़्ज़े ह़ादू के मा'नी हैं कि यहूदी हुए और सूरह आ़राफ़ में हुदना तुबना के मा'नी में है (हमने तौबा की) इसी से ह़ाइद के मा'नी ताईब या'नी तौबा करने वाला।

٣٩٤١- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا قُرَّةُ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ آمَنَ بِي عَشَرَةٌ مِنَ الْيَهُودِ لآمَنَ بِي الْيَهُودُ)).

3941. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे क़ुर्रा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर दस यहूदी (अह़बार व उ़लमा) मुझ पर ईमान ले आएँ तो तमाम यहूद मुसलमान हो जाते।

तशरीह : मत़लब ये है कि मेरे मदीना में आने के बाद अगर दस यहूदी भी मुसलमान हो जाते तो दूसरे तमाम यहूदी भी उनकी देखा देखी मुसलमान हो जाते। हुआ ये कि जब आप मदीना तशरीफ़ लाए तो सिर्फ़ अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम मुसलमान हुए बाक़ी दूसरे सरदार यहूद के जैसे अबू यासिर और ह़ुय्यि बिन अख़्तब और कअ़ब बिन अशरफ़, राफ़ेअ़ बिन अबी ह़क़ीक़। बनी नज़ीर में से और अ़ब्दुल्लाह बिन ह़नीफ़ और क़ह़ास और रफ़ाआ बनी क़ेनक़ाअ़ में से ज़ुबेर और कअ़ब और शुवैल बनी क़ुरैज़ा में से ये सब मुख़ालिफ़ रहे। कहते हैं अबू यासिर आपके पास आया और अपनी क़ौम के पास जाकर उनको समझाया, ये सच्चे पैग़म्बर वही पैग़म्बर हैं जिनका हम इंतिज़ार करते थे। उनका कहना मान लो लेकिन उसके भाई ने मुख़ालफ़त की और क़ौम के लोगों ने भाई की मुख़ालफ़त की वजह से अबू यासिर का कहना न सुना और मैमून बिन यामीन उन यहूदियों में से मुसलमान हो गया। उसका भी ह़ाल अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम का सा गुज़रा। पहले तो यहूदियों ने बड़ी ता'रीफ़ की जब मा'लूम हुआ कि मुसलमान हो गया तो लगे उसकी बुराई करने। (वह़ीदी)

3942. मुझसे अह़मद या मुह़म्मद बिन उ़बैदुल्लाह ग़दानी ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन उसामा ने बयान किया कि उन्हें अबू उ़मैस ने ख़बर दी, उन्हें क़ैस बिन मुस्लिम ने, उन्हें त़ारिक़ बिन शिहाब ने और उनसे मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आपने देखा कि यहूदी आ़शूरा के दिन की तअ़ज़ीम करते हैं और उस दिन रोज़ा रखते हैं आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम इस दिन रोज़ा रखने के ज़्यादा ह़क़दार हैं। चुनाँचे आपने उस दिन के रोज़े का हुक्म दिया।

(राजेअ़ : 2005)

٣٩٤٢- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ - أَوْ مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ الْغُدَانِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ أُسَامَةَ أَخْبَرَنَا أَبُو عُمَيْسٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ((دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ وَإِذَا أُنَاسٌ مِنَ الْيَهُودِ يُعَظِّمُونَ عَاشُورَاءَ وَيَصُومُونَهُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((نَحْنُ أَحَقُّ بِصَوْمِهِ)). فَأَمَرَ بِصَوْمِهِ)).[راجع:٢٠٠٥]

इस ह़दीष़ में आँह़ज़रत (ﷺ) की मदीना में तशरीफ़ आवरी का ज़िक्र है। बाब का मत़लब इसी से निकला। बाद में रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो मुसलमान आ़शूरा का रोज़ा रखे, उसे चाहिये कि यहूदियों की मुख़ालफ़त के लिये उसमें नवीं या ग्यारहवीं तारीख़ के दिन या'नी एक रोज़ा और भी रख लें। अब ये रोज़ा रखना सुन्नत है।

3943. हमसे ज़ियाद बिन अय्यूब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ुशीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू बिश्र जा'फ़र ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) ने देखा कि यहूदी आ़शूरा के दिन रोज़ा रखते हैं। उसके बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि ये वो दिन है जिसमें अल्लाह तआ़ला ने मूसा (अ़लैहि.) और बनी इस्राईल को फ़िरआ़न पर फ़तह इनायत की थी चुनाँचे उस दिन की तअ़ज़ीम में रोज़ा रखते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम मूसा (अ़लैहि.) से तुम्हारी निस्बत ज़्यादा क़रीब हैं और आप (ﷺ) ने उस दिन रोज़ा रखने का हुक्म दिया।

٣٩٤٣- حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ أَيُّوبَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ حَدَّثَنَا أَبُو بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ وَجَدَ الْيَهُودَ يَصُومُونَ عَاشُورَاءَ، فَسُئِلُوا عَنْ ذَلِكَ فَقَالُوا : هَذَا الْيَوْمُ الَّذِي أَظْفَرَ اللهُ فِيهِ مُوسَى وَبَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى فِرْعَوْنَ، وَنَحْنُ نَصُومُهُ تَعْظِيمًا لَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((نَحْنُ أَوْلَى بِمُوسَى مِنْكُمْ)). ثُمَّ أَمَرَ

(राजेअ : 2004)

بِصَوْمِهِ)). [راجع: ٢٠٠٤]

3944. हमसे अब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यूनुस ने, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा मुझको उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने ख़बर दी, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) सर के बाल को पेशानी पर लटका देते थे और मुश्रिकीन मांग निकालते थे और अहले किताब भी अपने सरों के बाल पेशानी पर लटकाए रहने देते थे। जिन उमूर में नबी करीम (ﷺ) को (वह्य के ज़रिये) कोई हुक्म नहीं होता था आप उनमें अहले किताब की मुवाफ़क़त पसन्द करते थे। फिर बाद में आँहज़रत (ﷺ) भी मांग निकालने लगे थे।

(राजेअ : 3558)

٣٩٤٤- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَسْدِلُ شَعْرَهُ، وَكَانَ الْمُشْرِكُونَ يَفْرُقُونَ رُؤُوسَهُمْ وَكَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَسْدِلُونَ رُؤُوسَهُمْ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُحِبُّ مُوَافَقَةَ أَهْلِ الْكِتَابِ فِيْمَا لَمْ يُؤْمَرْ فِيْهِ بِشَيْءٍ، ثُمَّ فَرَقَ النَّبِيُّ ﷺ رَأْسَهُ)).[راجع: ٣٥٥٨]

शायद बाद में आपको इसका हुक्म आ गया होगा। पेशानी पर बाल लटकाना आपने छोड़ दिया अब ये नसारा का तरीक़ रह गया है। मुसलमानों के लिये लाज़िम है कि सिर्फ़ अपने रसूले करीम (ﷺ) का तौर तरीक़ चाल चलन इख़्तियार करें और दूसरों की ग़लत रस्मों को हर्गिज़ इख़्तियार न करें।

3945. मुझसे ज़ियाद बिन अय्यूब ने बयान किया कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको अबू बिश्र (जाबिर बिन अबी वुहैशा) ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि वो अहले किताब ही तो हैं जिन्होंने आसमानी किताब को टुकड़े टुकड़े कर डाला, कुछ बातों पर ईमान लाए और कुछ बातों का इंकार किया।

(दीगर मक़ाम : 4705, 4706)

٣٩٤٥- حَدَّثَنِي زِيَادُ بْنُ أَيُّوبَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((هُمْ أَهْلُ الْكِتَابِ جَزَّأُوهُ أَجْزَاءً، فَآمَنُوا بِبَعْضِهِ وَكَفَرُوا بِبَعْضِهِ)).

[طرفاه في : ٤٧٠٥، ٤٧٠٦].

तश्रीह : जैसे उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) की नबव्वत का इंकार किया। इस हदीष की मुनासबत बाब से मुश्किल है। ऐनी ने कहा अगली हदीष में अहले किताब का ज़िक्र है, इस मुनासबत से हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का अषर बयान कर दिया। यहूदियों की जिस बुरी ख़सलत का यहाँ ज़िक्र हुआ, यही सब आम मुसलमानों में भी पैदा हो चुकी है कि कुछ आयतों पर अमल करते हैं और अमलन कुछ को झुठलाते हैं कुछ सुन्नतों पर अमल करते हैं कुछ की मुख़ालफ़त करते हैं। आम तौर पर मुसलमानों का यही हाल है आँहज़रत (ﷺ) ने पहले ही फ़र्मा दिया था कि मेरी उम्मत भी यहूदियों के क़दम ब क़दम चलेगी, वही हालत आज हो रही है। रहिमहुमुल्लाह अलैयना

बाब 53 : हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) का ईमान लाने का वाक़िया

٥٣- بَابُ إِسْلاَمِ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

3946. मुझसे हसन बिन शक़ीक़ ने बयान किया, कहा हमसे

٣٩٤٦- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عُمَرَ بْنِ

मुअ़तमिर ने बयान किया कि मेरे वालिद सुलैमान बिन त़रख़ान ने बयान किया (दूसरी सनद) और हमसे अबू उ़स्मान नह्दी ने बयान किया कहा मैंने सुना सलमान फ़ारसी (रज़ि.) से कि उनको कुछ ऊपर दस आदमियों ने एक मालिक से बदला, दूसरे मालिक से ख़रीदा।

شَقِيقٍ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ أَبِي ح. وَحَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ: ((عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ أَنَّهُ تَدَاوَلَهُ بِضْعَةَ عَشَرَ مِنْ رَبٍّ إِلَى رَبٍّ)).

3947. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बेकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उ़ययना ने बयान किया, उनसे औफ़ अअ़राबी ने, उनसे अबू उ़स्मान नह्दी ने बयान किया, कहा मैंने ह़ज़रत सलमान फ़ारसी से सुना, वो बयान करते थे कि मैं राम हुर्मुज़ (फ़ारस में एक मक़ाम है) का रहने वाला हूँ।

٣٩٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَوفٍ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ سَلْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: ((أَنَا مِنْ رَامَ هُرْمُزَ)).

3948. मुझसे ह़सन बिन मुदरक ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन ह़म्माद ने बयान किया, कहा हमको अबू उ़वाना ने ख़बर दी, उन्हें आ़सिम अह़वल ने, उन्हें अबू उ़स्मान नहदी ने और उनसे ह़ज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) ने बयान किया, ईसा (अ़लैहि.) और मुहम्मद (ﷺ) के दरम्यान में फ़ितरत का ज़माना (या'नी जिसमें कोई पैग़म्बर नहीं आया) छः सौ बरस का वक़्फ़ा गुज़रा है।

٣٩٤٨- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُدْرِكٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ سَلْمَانَ قَالَ: ((فَتْرَةٌ بَيْنَ عِيسَى وَمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِمَا وَسَلَّمَ سِتُّمِائَةِ سَنَةٍ)).

तश्रीह : ह़ज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) की कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह थी। उनको ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) ने आज़ाद कराया था। फ़ारस के शहर हुर्मुज़राम के रहने वाले थे, दीने ह़क़ की त़लब में उन्होंने वत़न छोड़ा और पहले ईसाई हुए। उनकी किताबों का मुत़ालआ किया फिर क़ौमे अ़रब ने उनको गिरफ़्तार करके यहूदियों के हाथों बेच डाला यहाँ तक कि ये मदीना में पहुँच गये और पहली ही सुह़बत में दौलते ईमान से मालामाल हो गये फिर उन्होंने अपने यहूदी मालिक से मुकातबत कर ली जिसकी रक़म आँह़ज़रत (ﷺ) ने अदा की। मदीना आने तक ये दस जगह ग़ुलाम बनाकर बेचे गये थे। आँह़ज़रत (ﷺ) उनसे बहुत ख़ुश थे। आपने फ़र्माया कि सलमान हमारे अहले बैत से हैं, जन्नत उनके क़दमों की मुंतज़िर है। ढ़ाई सौ साल की लम्बी उ़म्र पाई। अपने हाथ से रोज़ी कमाते और सदक़ा ख़ैरात भी करते। 35 हिजरी में शहरे मदायन में उनका इंतिक़ाल हुआ। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु (आमीन)

ह़ज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) के मज़ीद ह़ालात

आप इलाक़ा अस्फ़हान के एक देहात के एक किसान के इकलौते बेटे थे। बाप वफ़ूर मुह़ब्बत में लड़कियों की त़रह़ घर ही में बन्द रखता था। आतिशकदा (अग्नि मन्दिर) की देखभाल सुपुर्द थी। मजूसियत के बड़े पुख़्ताकार पुजारी से यकायक पुख़्ताकार ईसाई बन गये। इस त़रह़ कि एक रोज़ इत्तिफ़ाक़न खेत को गये, अस्नाए राह में ईसाइयों को नमाज़ पढ़ते देखकर उस तर्ज़े इबादत पर वालिहाना फ़रेफ़्ता हो गये। बाप ने क़ैद कर दिया मगर आप किसी त़रह़ भागकर ईसाइयों के साथ शाम के एक शख़्स की ख़िदमत में पहुँच गये जो बहुत बद अख़्लाक़ था और सदक़े का तमाम रुपया लेकर ख़ुद रख लेता था। ज़िन्दगी में तो कुछ कह न सके जब वो मरा और ईसाई उसे शान व शौकत के साथ दफ़न करने पर तैयार हुए तो आपने उसका सारा पोल खोलकर रख दिया और तस्दीक़ के त़ौर पर सात मटके सोने चाँदी से लबरेज़ दिखा दिये और सज़ा के त़ौर पर उसकी लाश सलीब पर आवेज़ाँ कर दी गई। दूसरा आ़लिम बहुत मुत्तक़ी व आ़बिद था और आपसे मुह़ब्बत करता था मगर उसे जल्द पयामे मौत आ गया। आपके इस्तिफ़्सार पर फ़र्माया कि अब तो मेरे इल्म मे कोई सच्चा ईसाई नहीं। जो थे मर चुके, दीन में बहुत कुछ तह़रीफ़ हो चुकी, अल्बत्ता मूसिल में एक शख़्स है, उसके पास चले जाओ। उसके पास पहुँचकर कुछ ही मुद्दत रहने पाए थे कि उसका भी वक़्त

आ गया और वो नसीबा में एक पादरी का पता बता गया, ये सबसे ज़्यादा आबिद व ज़ाहिद था। अमूरिया में एक शख़्स का पता देकर ये भी राही मुल्क बक़ा हुआ लेकिन जब अस्क़फ़ अमूरिया भी जल्द ही बिस्तरे मर्ग पर दराज़ हुआ तो आप परेशान हुए। इस्क़फ़ ने कहा बेटा अब तो दुनिया में मुझे कोई भी ऐसा नज़र नहीं आता कि मैं तुझे जिसके पास जाने का मश्वरा दूँ। अन्क़रीब रेगिस्ताने अरब से पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़माँ पैदा होने वाले हैं, जिनके दोनों शानों के दरम्यान मुहरे नुबुव्वत होगी और सदक़ा अपने ऊपर हराम समझेंगे। आख़िरी वसिय्यत यही है कि मुम्किन हो तो उनसे ज़रूर मिलना, एक अर्सा तक आप अमूरिया में ही रहे, बकरियाँ चराते पालते और उसी पर अपना गुज़ारा करते रहे। एक रोज़ अरब ताजिरों के एक क़ाफ़िले को उधर से गुज़रता देखकर उनसे कहा कि अगर तुम मुझे अरब पहुँचा दो तो मैं उसके सिले में अपनी सब बकरियाँ तुम्हारी नज़्र कर दूँगा। उन्होंने वादी कुरा पहुँचते ही आपको गुलाम बनाकर फ़रोख़्त कर दिया लेकिन इस गुलामी पर जो किसी के अस्ताने नाज़ुक तक रसाई का ज़रिया बन जाए तो हज़ारों आज़ादियाँ कुर्बान की जा सकती हैं । अल्ग़र्ज़ हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमते मुबारका में हाज़िर होकर मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सोलहवां पारा

ऐ अल्लाह! ख़ास तेरे ही पाक नाम की बरकत से मैं इस (बुख़ारी शरीफ़ के पारा 16) को शुरू करता हूँ तू निहायत ही बख़्शिश करने वाला मेहरबान है। पस तू अपने फ़ज़्ल से इस पारे को भी ख़ैरियत के साथ पूरा करने वाला है। या अल्लाह! ये दुआ क़ुबूल कर ले। आमीन।

64. किताबुल मग़ाज़ी

ग़ज़्वात के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1: ग़ज़्वतिल उ़शैरा या उसैरा का बयान

١ – باب غَزْوَةِ الْعُشَيْرَةِ أَوِ الْعُسَيْرَةِ.

मुहम्मद बिन इस्हाक ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) का सबसे पहला ग़ज़्वा मुक़ामे अब्वा का हुआ, फिर जबले बवात़, फिर उ़शेरा।

وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ أَوَّلُ مَا غَزَا النَّبِيُّ ﷺ الأَبْوَاءَ ثُمَّ بُوَاطَ ثُمَّ الْعُشَيْرَةَ.

तशरीह : ग़ज़्वा उस जिहाद को कहते हैं जिसमें आँहज़रत (ﷺ) अपनी ज़ात से ख़ुद तशरीफ़ ले गये हों और सरिय्या वो जिसमें आप (ﷺ) ख़ुद तशरीफ़ न ले गये। जुहैफ़ा से मदीना की जानिब एक गाँव अब्वाअ और बवात़े यम्बूअ के क़रीब एक पहाड़ी मुक़ाम का नाम है। उ़शेरा भी एक मक़ाम है या एक क़बीला का नाम है। इन तीनों जिहादों में आँहज़रत (ﷺ) बद्र की जंग से पहले तशरीफ़ ले गये थे। कहते हैं अब्वा में मुसलमानों और काफ़िरों में जंग हुई। सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने उस पर तीर चलाया। ये पहला तीर था जो अल्लाह की राह में मारा गया। ये तीनों जिहाद हिजरत से एक साल बाद किये गये। लफ़्ज़े मग़ाज़ी यहाँ पर ग़ज़ा यग़ज़ू का मस़दर है या ज़र्फ़ है। **लाकिन्न कौनुहू मस्दरन मुतअ़य्यनुन हाहुना**

(क़स्तलानी)। कुछ रावियों ने ग़ज़्वाते नबवी की ता'दाद 21 बयान की हैं जिनमें छोटे ग़ज़्वात को भी शामिल किया है।

3949. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे वहब ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने कि मैं एक वक़्त हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) के पहलू में बैठा हुआ था। उनसे पूछा गया था कि नबी करीम (ﷺ) ने कितने ग़ज़्वे किये? उन्होंने कहा उन्नीस। मैंने पूछा, आप हुज़ूर (ﷺ) के साथ कितने ग़ज़्वात में शरीक रहे? तो उन्होंने कहा कि सत्रह में। मैंने पूछा, आप (ﷺ) का सबसे पहला ग़ज़्वा कौनसा था? कहा कि उसेरा या उशेरा। फिर मैंने उसका ज़िक्र क़तादा (रज़ि.) से किया तो उन्होंने कहा कि (सहीह) उशेरा है।

शीन मअ़ जम्मा से ही ये लफ़्ज़ सहीह है। (दीगर मक़ाम : 4404, 4471)

٣٩٤٩- حدثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا وَهْبٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، كُنْتُ إِلَى جَنْبِ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ فَقِيلَ لَهُ: كَمْ غَزَا النَّبِيُّ ﷺ مِنْ غَزْوَةٍ؟ قَالَ: تِسْعَ عَشْرَةَ قُلْتُ: كَمْ غَزَوْتَ أَنْتَ مَعَهُ؟ قَالَ : سَبْعَ عَشْرَةَ قُلْتُ : فَأَيُّهُمْ كَانَتْ أَوَّلَ؟ قَالَ: الْعُسَيْرَةُ أَوِ الْعُشَيْرُ فَذَكَرْتُ لِقَتَادَةَ فَقَالَ : الْعُشَيْرَةُ.

[طرفاه في : ٤٤٠٤، ٤٤٧١].

आँहज़रत (ﷺ) कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के एक क़ाफ़िले की ख़बर सुनकर तशरीफ़ ले गये थे मगर क़ाफ़िला तो नहीं मिला हाँ जंगे बद्र उसके नतीजे में वक़ूअ़ में आई।

बाब 2 : बद्र की लड़ाई में फ़लाँ फ़लाँ मारे जाएँगे, इसके बारे में आँहज़रत (ﷺ) की पेशीनगोई का बयान

٢- باب ذِكْرِ النَّبِيِّ ﷺ مَنْ يُقْتَلُ بِبَدْرٍ

तश्रीह : इस बाब में इमाम मुस्लिम ने जो रिवायत की है वो ज़्यादा मुनासिब है कि आँहज़रत (ﷺ) ने जंग शुरू होने से पहले हज़रत उमर (रज़ि.) को बतला दिया था कि उस जगह फ़लाँ काफ़िर मारा जाएगा और उस जगह फ़लाँ। हज़रत उमर (रज़ि.) कहते हैं कि आपने जो जो मुक़ाम जिस काफ़िर के लिये बतलाए थे वो काफ़िर उन ही जगहों पर मारे गये। ये आपका खुला हुआ मुअ़जिज़ा था और बाब की हदीष़ में जो पेशीनगोई है वो जंगे बद्र से बहुत पहले की है।

3950. मुझसे अहमद बिन उ़ष्मान ने बयान किया, हमसे शुरैह बिन मस्लमा ने बयान किया, हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मुझसे अ़म्र बिन मैमून ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से सुना, वो हज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) से बयान करते थे, उन्होंने कहा कि वो उमय्या बिन ख़लफ़ के (जाहिलियत के ज़माने से) दोस्त थे और जब भी उमय्या मदीना से गुज़रता तो उनके यहाँ क़याम करता था। इसी तरह हज़रत सअ़द (रज़ि.) जब मक्का से गुज़रते तो उमय्या के यहाँ क़याम करते। जब नबी करीम (ﷺ) मदीना हिजरत करके तशरीफ़ लाए तो एक

٣٩٥٠- حدثني أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا شُرَيْحُ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مَيْمُونٍ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَ عَنْ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ أَنَّهُ قَالَ : كَانَ صَدِيقًا لأُمَيَّةَ بْنِ خَلَفٍ، وَكَانَ أُمَيَّةُ إِذَا مَرَّ بِالْمَدِينَةِ نَزَلَ عَلَى سَعْدٍ، وَكَانَ سَعْدٌ إِذَا مَرَّ بِمَكَّةَ نَزَلَ عَلَى أُمَيَّةَ، فَلَمَّا قَدِمَ رَسُولُ

اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ انْطَلَقَ سَعْدٌ مُعْتَمِرًا، فَلَمَّا نَزَلَ عَلَى أُمَيَّةَ بِمَكَّةَ فَقَالَ لأُمَيَّةَ انْظُرْ لِي سَاعَةَ خَلْوَةٍ لَعَلِّي أَنْ أَطُوفَ بِالْبَيْتِ، فَخَرَجَ بِهِ قَرِيبًا مِنْ نِصْفِ النَّهَارِ فَلَقِيَهُمَا أَبُوجَهْلٍ فَقَالَ : يَا أَبَا صَفْوَانَ مَنْ هَذَا مَعَكَ؟ فَقَالَ هَذَا سَعْدٌ فَقَالَ لَهُ أَبُو جَهْلٍ : أَلاَ أَرَاكَ تَطُوفُ بِمَكَّةَ آمِنًا وَقَدْ آوَيْتُمُ الصُّبَاةَ وَزَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ تَنْصُرُونَهُمْ وَتُعِينُونَهُمْ! أَمَا وَاللهِ لَوْ لاَ أَنَّكَ مَعَ أَبِي صَفْوَانَ مَا رَجَعْتَ إِلَى أَهْلِكَ سَالِمًا فَقَالَ لَهُ سَعْدٌ، وَرَفَعَ صَوْتَهُ عَلَيْهِ : أَمَا وَاللهِ لَئِنْ مَنَعْتَنِي هَذَا لأَمْنَعَنَّكَ مَا هُوَ أَشَدُّ عَلَيْكَ مِنْهُ، طَرِيقَكَ عَلَى الْمَدِينَةِ فَقَالَ لَهُ أُمَيَّةُ : لاَ تَرْفَعْ صَوْتَكَ يَا سَعْدُ عَلَى أَبِي الْحَكَمِ سَيِّدِ أَهْلِ الْوَادِي فَقَالَ سَعْدٌ : دَعْنَا عَنْكَ يَا أُمَيَّةُ فَوَاللهِ لَقَدْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّهُمْ قَاتِلُوكَ)) قَالَ : بِمَكَّةَ قَالَ: لاَ أَدْرِي، فَفَزِعَ لِذَلِكَ أُمَيَّةُ فَزَعًا شَدِيدًا فَلَمَّا رَجَعَ أُمَيَّةُ إِلَى أَهْلِهِ قَالَ : يَا أُمَّ صَفْوَانَ أَلَمْ تَرَيْ مَا قَالَ لِي سَعْدٌ؟ قَالَتْ وَمَا قَالَ لَكَ؟ قَالَ زَعَمَ أَنَّ مُحَمَّدًا أَخْبَرَهُمْ أَنَّهُمْ قَاتِلِيَّ فَقُلْتُ لَهُ : بِمَكَّةَ؟ قَالَ: لاَ أَدْرِي فَقَالَ أُمَيَّةُ : وَاللهِ لاَ أَخْرُجُ مِنْ مَكَّةَ، فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ بَدْرٍ اسْتَنْفَرَ أَبُو جَهْلٍ النَّاسَ قَالَ : أَدْرِكُوا عِيرَكُمْ فَكَرِهَ أُمَيَّةُ أَنْ يَخْرُجَ فَأَتَاهُ أَبُو جَهْلٍ فَقَالَ يَا أَبَا صَفْوَانَ إِنَّكَ مَتَى يَرَاكَ النَّاسُ قَدْ تَخَلَّفْتَ

मर्तबा हज़रत सअद (रज़ि.) उमरा के इरादे से मक्का गये और उमय्या के पास क़याम किया। उन्होंने उमय्या से कहा कि मेरे लिये कोई तन्हाई का वक़्त बताओ ताकि मैं बैतुल्लाह का तवाफ़ करूँ। चुनाँचे उमय्या उन्हें दोपहर के वक़्त साथ लेकर निकला। उनसे अबू जहल की मुलाक़ात हो गई। उसने पूछा, अबू सफ़्वान! ये तुम्हारे साथ कौन हैं ? उमय्या ने बताया कि ये सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) हैं। अबू जहल ने कहा, मैं तुम्हें मक्का में अमन के साथ तवाफ़ करता हुआ न देखूँ। तुम लोगों ने बेदीनों को पनाह दे रखी है और इस ख़्याल में हो कि तुम लोग उनकी मदद करोगे। अल्लाह की क़सम! अगर उस वक़्त तुम, अबू सफ़्वान! उमय्या के साथ न होते तो अपने घर सलामती से नहीं जा सकते थे। इस पर सअद (रज़ि.) ने कहा, उस वक़्त उनकी आवाज़ बुलन्द हो गई थी कि अल्लाह की क़सम अगर आज तुमने मुझे तवाफ़ से रोका तो मैं भी मदीना की तरफ़ से तुम्हारा रास्ता बन्द कर दूँगा और ये तुम्हारे लिये बहुत सी मुश्किलात का बाइस बन जाएगा। उमय्या कहने लगा, सअद! अबुल हकम (अबू जहल) के सामने बुलन्द आवाज़ से न बोलो। ये वादी का सरदार है। सअद (रज़ि.) ने कहा, उमय्या! इस तरह की बातचीत न करो। अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुन चुका हूँ कि तू उनके हाथों से मारा जाएगा। उमय्या ने पूछा, क्या मक्का में मुझे क़त्ल करेंगे? उन्होंने कहा कि उसका मुझे इल्म नहीं। उमय्या ये सुनकर बहुत घबरा गया और जब अपने घर लौटा तो (अपनी बीवी से) कहा, उम्मे सफ़्वान! देखा नही सअद (रज़ि.) मेरे बारे में क्या कह रहे हैं। उसने पूछा, क्या कह रहे हैं? उमय्या ने कहा कि वो ये बता रहे थे कि मुहम्मद (ﷺ) ने उन्हें ख़बर दी है कि किसी न किसी दिन वो मुझे क़त्ल कर देंगे। मैंने पूछा क्या मक्का में मुझे क़त्ल करेंगे? तो उन्होंने कहा कि उसकी मुझे ख़बर नहीं। उमय्या कहने लगा अल्लाह की क़सम! अब मक्का से बाहर मैं कभी नहीं जाऊँगा। फिर बद्र की लड़ाई के मौक़ा पर जब अबू जहल ने क़ुरैश से लड़ाई की तैयारी के लिये कहा और कहा कि अपने क़ाफ़िले की मदद को चलो तो उमय्या ने लड़ाई में शिर्कत पसन्द नहीं की लेकिन अबू जहल उसके पास आया और कहने लगा ऐ अबू सफ़्वान! तुम वादी के सरदार हो। जब लोग देखेंगे कि

وَأَنْتَ سَيِّدُ أَهْلِ الْوَادِي تَخَلَّفُوا مَعَكَ فَلَمْ يَزَلْ بِهِ أَبُو جَهْلٍ حَتَّى قَالَ : أَمَّا إِذْ غَلَبْتَنِي فَوَ اللهِ لأَشْتَرِيَنَّ أَجْوَدَ بَعِيرٍ بِمَكَّةَ، ثُمَّ قَالَ أُمَيَّةُ : يَا أُمَّ صَفْوَانَ جَهِّزِينِي فَقَالَتْ لَهُ : يَا أَبَا صَفْوَانَ وَقَدْ نَسِيتَ مَا قَالَ لَكَ أَخُوكَ الْيَثْرِبِيُّ! قَالَ : لاَ مَا أُرِيدُ أَنْ أَجُوزَ مَعَهُمْ إِلاَّ قَرِيبًا، فَلَمَّا خَرَجَ أُمَيَّةُ أَخَذَ لاَ يَنْزِلُ مَنْزِلاً إِلاَّ عَقَلَ بَعِيرَهُ فَلَمْ يَزَلْ بِذَلِكَ حَتَّى قَتَلَهُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ بِبَدْرٍ.

[راجع: ٣٦٣٢]

तुम ही लड़ाई में नहीं निकलते हो तो दूसरे लोग भी नहीं निकलेंगे। अबू जहल यूँ ही बराबर उसको समझाता रहा। आख़िर मजबूर होकर उमय्या ने कहा जब नहीं मानता तो अल्लाह की क़सम! (इस लड़ाई के लिये) मैं ऐसा तेज़ रफ़्तार ऊँट ख़रीदूँगा जिसका ष़ानी मक्का में न हो। फिर उमय्या ने (अपनी बीवी से) कहा, उम्मे स़फ़्वान! मेरा सामान तैयार कर दे। उसने कहा, अबू स़फ़्वान! अपने यष़्रिबी भाई की बात भूल गये? उमय्या बोला, मैं भूला नहीं हूँ। उनके साथ स़िर्फ़ थोड़ी दूर तक जाऊँगा। जब उमय्या निकला तो रास्ता में जिस मंज़िल पर भी ठहरना होता, ये अपना ऊँट (अपने पास ही) बाँधे रखता। वो बराबर ऐसा ही एहतियात़ करता रहा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने उसे क़त्ल करा दिया। (राजेअ़ : 3632)

तश्रीह : बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उमय्या के मारे जाने से पहले ही उसके क़त्ल की ख़बर दे दी थी। किरमानी ने अल्फ़ाज़ **इन्नहुम क़ातलूक** की तफ़्सीर ये की है कि अबू जहल और उसके साथी तुझको क़त्ल कराएँगे। उमय्या को इस वजह से तअ़ज्जुब हुआ कि अबू जहल तो मेरा दोस्त है वो मुझको क्यूँकर क़त्ल कराएगा। इस सूरत में क़त्ल कराने का मत़लब ये है कि वो तेरे क़त्ल का सबब बनेगा। ऐसा ही हुआ। उमय्या बद्र की लड़ाई में जाने पर राज़ी न था, लेकिन अबू जहल ज़बरदस्ती उसको पकड़ कर ले गया। उमय्या जानता था कि ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) जो बात कह दें वो होकर रहेगी। अगरचे उसने वापस भागने के लिये तेज़ रफ़्तार ऊँट साथ लिया मगर वो ऊँट कुछ काम न आया और उमय्या भी जंगे बद्र में क़त्ल कर दिया गया। ख़ुद ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) ने उसे क़त्ल किया जिसे किसी ज़माने में ये सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें दिया करता था। ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) ने अबू जहल को इससे डराया कि मक्का के लोग शाम की तिजारत के लिये बरास्ता मदीना जाया करते थे और उनकी तिजारत का दारोमदार शाम ही की तिजारत पर था। कुछ शारेह़ीन ने **इन्नहुम क़ातलूक** से मुसलमान मुराद लिये हैं और किरमानी के क़ौल को उनका वहम क़रार दिया है।

٣- باب قِصَّةِ غَزْوَةِ بَدْرٍ

बाब 3 : ग़ज़्व-ए-बद्र का बयान

मदीना से कुछ मील की दूरी पर बद्र नामी एक गाँव था जो बद्र बिन मुख़लब बिन नज़्र बिन किनाना के नाम से आबाद था या बद्र एक कुएँ का नाम था। 2 हिज्री में रमज़ान में मुसलमानों और काफ़िरों की यहाँ मशहूर जंगे बद्र हुई जिसका कुछ ज़िक्र हो रहा है। 17 रमज़ान बरोज़े जुम्आ़ जंग हुई जिसमें कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सत्तर अकाबिर मारे गये और इतने ही क़ैद हुए। इस जंग ने कुफ़्फ़ार की कमर तोड़ दी और वा'दा-ए-इलाही **इन्नल्लाह अ़ला नस्रिहिम लक़दीर** स़ह़ीह़ ष़ाबित हुआ।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّقُوا اللهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾.

﴿إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ

और अल्लाह तआ़ला का फ़र्माना, और यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी मदद की बद्र में जिस वक़्त कि तुम कमज़ोर थे। तो तुम अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ। ऐ नबी! वो वक़्त याद कीजिए, जब आप ईमान वालों से कह रहे थे, क्या ये तुम्हारे लिये काफ़ी नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारी मदद के

लिये तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार दे, क्यों नहीं, बशर्ते कि तुम सब्र करो और अल्लाह से डरते रहो और अगर वो तुम पर फ़ौरन आ पड़ें तो तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारी मदद पाँच हज़ार निशान किये हुए फ़रिश्तों से करेगा और ये तो अल्लाह ने इसलिये किया कि तुम ख़ुश हो जाओ और तुम्हें उससे इत्मीनान हासिल हो जाए। वरना फ़तह तो बस अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाले ही की तरफ़ से हुई है और ये नुसरत इस ग़र्ज़ से थी ताकि काफ़िरों के एक गिरोह को हलाक कर दे या उन्हें ऐसा मग़्लूब कर दे कि वो नाकाम होकर वापस लौट जाएँ। (आले इमरान : 123-127)

يُمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلاَثَةِ آلاَفٍ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ مُنْزَلِين. بَلَى إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُمْ مِنْ فَوْرِهِمْ هَذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلاَفٍ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ مُسَوِّمِينَ. وَمَا جَعَلَهُ اللهُ إِلاَّ بُشْرَى لَكُمْ، وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ وَمَا النَّصْرُ إِلاَّ مِنْ عِنْدِ اللهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ. لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوا خَائِبِينَ﴾ [آل عمران: ١٢٣-١٢٧].

वह्शी (रज़ि.) ने कहा हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) ने तुईमा बिन अदी बिन ख़य्यार को बद्र की लड़ाई में क़त्ल किया था और अल्लाह तआला का फ़र्मान (सूरह अन्फ़ाल में) और वो वक़्त याद करो कि जब अल्लाह तआला तुमसे वा'दा कर रहा था, दो जमाअतों में से एक के लिये कि वो तुम्हारे हाथ आ जाएगी। आख़िर तक।

وَقَالَ وَحْشِيٌّ: قَتَلَ حَمْزَةُ طُعَيْمَةَ بْنَ عَدِيِّ بْنِ الْخِيَارِ يَوْمَ بَدْرٍ. وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ﴾ [الأنفال : ٧]

तश्रीह : आयाते मज़्कूरा में जंगे बद्र की कुछ तफ़्सीलात मज़्कूर हुई हैं। इसीलिये हज़रत इमाम ने उनको यहाँ नक़ल किया है। अल्लाह तआला ने बहुत से हक़ाइक़ इन आयात में ज़िक्र किये हैं जो अहले इस्लाम के लिये हर ज़माने में मशअले राह बनते रहे हैं। उन्वान में हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर है जिन्होंने इस जंग में सहीह ये है कि अदी बिन नौफ़िल बिन अब्दे मुनाफ़ को क़त्ल किया था। कहते हैं कि जुबैर बिन मुतइम ने जो तुईमा का भतीजा था अपने गुलाम वह्शी से कहा अगर तू हम्ज़ा (रज़ि.) को मार डाले तो मैं तुझको आज़ाद कर दूँगा। उन्वान में मज़्कूर है कि हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) के हाथ से तुईमा मारा गया जिसके बदले के लिये वह्शी को मुक़र्रर किया गया। यही वो वह्शी हे जिसने जंगे उहुद में हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) को शहीद किया।

3951. मुझसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन कअब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन कअब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत कअब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जितने ग़ज़्वे किये, मैं ग़ज़्व-ए-तबूक़ के सिवा और सब में हाज़िर रहा। अल्बत्ता ग़ज़्व-ए-बद्र में शरीक न हो सका था लेकिन जो लोग इस ग़ज़्वे में शरीक न हो सके थे, उनमें से किसी पर अल्लाह ने इताब (गुस्सा) नहीं किया क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) कुरैश क़ाफ़िले को तलाश करने के लिये निकले थे। (लड़ने की नियत से नहीं गये

٣٩٥١- حدثني يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ كَعْبٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ كَعْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ يَقُولُ: لَمْ أَتَخَلَّفْ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا إِلاَّ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ غَيْرَ أَنِّي تَخَلَّفْتُ عَنْ غَزْوَةِ بَدْرٍ وَلَمْ يُعَاتَبْ أَحَدٌ تَخَلَّفَ عَنْهَا إِنَّمَا خَرَجَ رَسُولُ اللهِ

ﷺ يُرِيدُ عِيرَ قُرَيْشٍ حَتَّى جَمَعَ اللهُ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ عَدُوِّهِمْ عَلَى غَيْرِ مِيعَادٍ.
[راجع: ٢٧٥٧]

थे) मगर अल्लाह तआला ने नागहानी मुसलमानों को उनके दुश्मनों से भिड़ा दिया। (राजेअ : 2757)

हर चन्द हज़रत कअ़ब (रज़ि.) जंगे बद्र में भी शरीक नहीं हुए थे मगर चूँकि बद्र में आँहज़रत (ﷺ) का क़स्द जंग का न था इसलिये सब लोगों पर आपने निकलना वाजिब नहीं रखा बरख़िलाफ़ जंगे तबूक़ के। उसमें सब मुसलमानों के साथ जाने का हुक्म था जो लोग नहीं गये उन पर इसलिये इताब (गुस्सा) हुआ।

٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ مُرْدِفِينَ. وَمَا جَعَلَهُ اللهُ إِلاَّ بُشْرَى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ. وَمَا النَّصْرُ إِلاَّ مِنْ عِنْدِ اللهِ، إِنَّ اللهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ. إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِنْهُ. وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَكُمْ بِهِ. وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ. وَلِيَرْبِطَ عَلَى قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الأَقْدَامَ. إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلاَئِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا، سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ، فَاضْرِبُوا فَوْقَ الأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ، ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللهَ وَرَسُولَهُ، وَمَنْ يُشَاقِقِ اللهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ﴾ [الأنفال: ٩-١٢].

बाब 4 : और अल्लाह तआला का फ़र्मान

और उस वक़्त को याद करो जब तुम अपने परवरदिगार से फ़रियाद कर रहे थे, फिर उसने तुम्हारी फ़रियाद सुन ली। और फ़र्माया कि तुम्हें लगातार एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूँगा और अल्लाह ने ये बस इसलिये किया कि तुम्हें बशारत हो और ताकि तुम्हारे दिलों को इससे इत्मीनान हासिल हो जाए। वरना फ़तह तो बस अल्लाह ही के पास से है। बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है और वो वक़्त भी याद करो जब अल्लाह ने अपनी तरफ़ से चैन देने को तुम पर नींद को भेज दिया था और आसमान से तुम्हारे लिये पानी उतार रहा था कि उसके ज़रिये से तुम्हें पाक कर दे और तुमसे शैतानी वस्वसा को दूर कर दे और ताकि तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और उसके बाइ़ष तुम्हारे क़दम जमा दे, (और उस वक़्त को याद करो) जब तेरा परवरदिगार वह्य कर रहा था फ़रिश्तों की तरफ़ कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। सो ईमान लाने वालों को जमाए रखो मैं अभी काफ़िरों के दिलों में डर डाले देता हूँ, सो तुम काफ़िरों की गर्दनों पर मारो और उनके जोड़ों पर ज़र्ब लगाओ। ये इसलिये कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की है और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करता है, सो अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाला है। (अल अन्फ़ाल : -12)

٣٩٥٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ مُخَارِقٍ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ يَقُولُ : شَهِدْتُ مِنَ الْمِقْدَادِ بْنِ الأَسْوَدِ مَشْهَدًا لأَنْ أَكُونَ

3952. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, हमसे इस्राईल बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे मख़ारिक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बजली ने, उनसे तारिक़ बिन शिहाब ने, उन्हों ने हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने मिक़्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) से एक ऐसी बात सुनी कि अगर वो बात मेरी ज़ुबान से अदा हो जाती तो

मेरे लिये किसी भी चीज़ के मुक़ाबले में ज़्यादा अ़ज़ीज़ होती, वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर (ﷺ) उस वक़्त मुश्रिकीन पर बद्दुआ कर रहे थे, उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हम वो नहीं कहेंगे जो ह़ज़रत मूसा (अलैहि.) की क़ौम ने कहा था कि जाओ, तुम और तुम्हारा रब उनसे जंग करो, बल्कि हम आपके दाएँ बाएँ, आगे और पीछे जमा होकर लड़ेंगे। मैंने देखा कि नबी करीम (ﷺ) का चेहरा मुबारक चमकने लगा और आप ख़ुश हो गये।

صَاحِبَهُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا عُدِلَ بِهِ، أَتَى النَّبِيَّ ﷺ، وَهُوَ يَدْعُو عَلَى الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ: لاَ نَقُولُ كَمَا قَالَ قَوْمُ مُوسَى ﴿اذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلاَ﴾ وَلَكِنَّا نُقَاتِلُ عَنْ يَمِينِكَ وَعَنْ شِمَالِكَ وَبَيْنَ يَدَيْكَ وَخَلْفَكَ فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَشْرَقَ وَجْهُهُ وَسَرَّهُ يَعْنِي قَوْلَهُ.

तश्रीह : हुआ ये था कि बद्र के दिन आँह़ज़रत (ﷺ) क़ुरैश के एक क़ाफ़िले की ख़बर सुनकर मदीना से निकले थे। वहाँ क़ाफ़िला तो निकल गया फ़ौज से लड़ाइ ठन गई, जिसमें ख़ुद कुफ़्फ़ारे मक्का जारेह़ की हैषियत से तैयार होकर आए थे। इस नाज़ुक मरहले पर रसूले करीम (ﷺ) ने तमाम स़ह़ाबा से जंग के बारे में नज़रिया मा'लूम फ़र्माया। उस वक़्त तमाम मुहाजिरीन व अंस़ार ने आपको तसल्ली दी और अपनी आमादगी का इज़्हार किया। अंस़ार ने तो यहाँ तक कह दिया कि आप अगर बर्कुल ग़ुमाद नामी दूर–दराज़ जगह तक हमको जंग के लिये ले जाएँगे तो भी हम आपके साथ चलने और जान व दिल से लड़ने को ह़ाज़िर हैं। इस पर आप (ﷺ) बेहद ख़ुश हुए। (ﷺ)

3953. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ौशब ने बयान किया, हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे इक्रिमा ने, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बद्र की लड़ाई के मौक़े पर फ़र्माया था, ऐ अल्लाह! मैं तेरे अ़हद और वा'दे का वास्ता देता हूँ, अगर तू चाहे (कि ये क़ाफ़िर ग़ालिब हों तो मुसलमानों के ख़त्म हो जाने के बाद) तेरी इबादत न होगी। इस पर अबूबक्र (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) का हाथ थाम लिया और अ़र्ज़ किया, बस कीजिए या रसूलल्लाह! उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) अपने ख़ैमे से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक पर ये आयत थी, जल्द ही कुफ़्फ़ार की जमाअ़त को हार होगी और ये पीठ फेरकर भाग निकलेंगे। (राजेअ़ : 2925)

٣٩٥٣– حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَوْشَبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ بَدْرٍ: ((اللَّهُمَّ أَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ اللَّهُمَّ إِنْ شِئْتَ لَمْ تُعْبَدْ)) فَأَخَذَ أَبُو بَكْرٍ بِيَدِهِ فَقَالَ: حَسْبُكَ. فَخَرَجَ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ﴾.

[راجع: ٢٩٢٥]

तश्रीह : अल्लाह पाक ने जो वा'दा फ़र्माया था वो ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ स़ह़ीह़ षाबित हुआ। बद्र के दिन अल्लाह तआ़ला ने पहली बार एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद नाज़िल की। फिर बढ़ाकर तीन हज़ार कर दिये फिर पाँच हज़ार फ़रिश्तों से मदद फ़र्माई। इसीलिये आयते करीमा **अन्नी मुमिद्दुकुम बिअल्फ़िम् मिनल् मलाईकति** (अल् अन्फ़ाल : 9) सूरह आले इमरान की आयत के ख़िलाफ़ नहीं है जिसमें पाँच हज़ार का ज़िक्र है ।

बाब : 5

٥– بَابٌ

3854. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयानकिया, हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़ब्दुल करीम ने ख़बर दी, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिष़ के मौला मिक़्सम

٣٩٥٤– حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْكَرِيمِ أَنَّهُ سَمِعَ مِقْسَمًا

से सुना, वो ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से बयान करते थे। उन्होंने बयान किया कि (सूरह निसा की इस आयत से) जिहाद में शिर्कत करने वाले और उसमें शरीक न होने वाले बराबर नहीं हो सकते। वो लोग मुराद हैं जो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए और जो उसमें शरीक नहीं हुए।

مَوْلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ الْحَارِثِ يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ: ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ [النساء : ٩٥] عَنْ بَدْرٍ وَالْخَارِجُونَ إِلَى بَدْرٍ.

बाब 6 : जंगे बद्र में शरीक होने वालों का शुमार

٦- باب عِدَّةِ أَصْحَابِ بَدْرٍ

3955. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि (बद्र की लड़ाई के मौक़ा पर) मुझे और इब्ने उ़मर (रज़ि.) को नाबालिग़ क़रार दे दिया गया था।

٣٩٥٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ : اسْتُصْغِرْتُ أَنَا وَابْنُ عُمَرَ.

3956. (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह) फ़र्माते हैं और मुझसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ (रज़ि.) ने बयान किया कि बद्र की लड़ाई में मुझे और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) को नाबालिग़ क़रार दे दिया गया था और उस लड़ाई में मुहाजिरीन की ता'दाद साठ से कुछ ज़्यादा थी और अंसार दो सौ चालीस से कुछ ज़्यादा थे। (राजेअ : 3955)

٣٩٥٦- وحدثني مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا وَهْبٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ اسْتُصْغِرْتُ أَنَا وَابْنُ عُمَرَ يَوْمَ بَدْرٍ وَكَانَ الْمُهَاجِرُونَ يَوْمَ بَدْرٍ نَيِّفًا عَلَى سِتِّينَ وَالأَنْصَارُ نَيِّفًا وَأَرْبَعِينَ وَمِائَتَيْنِ. [راجع: ٣٩٥٥]

कुल मुसलमान तीन सौ दस से तीन सौ उन्नीस के बीच थे।

तश्रीह : जंग में भर्ती के लिये सिर्फ़ बालिग़ जवान लिये जाते थे। ह़ज़रत बराअ और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) कमसिनी की वजह से भर्ती में नहीं लिये गये। उनकी उ़म्र 13–14 सालों की थीं। जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार की ता'दाद एक हज़ार या सात सौ पचास थी और उनके पास हथियार भी काफ़ी थे फिर भी अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तहे मुबीन अ़ता फ़र्माई। त़ालूत इस्राईल का एक बादशाह था जिसकी फ़ौज में ह़ज़रत दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) भी शामिल थे, मुक़ाबला जालूत नामी काफ़िर से था जिसका लश्कर बड़ा था, मगर अल्लाह ने त़ालूत को फ़तह़ इनायत फ़र्माई।

3957. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमसे ज़ुहैर बिन मुआ़विया ने बयान किया, हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत बराअ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि ह़ज़रत मुहम्मद (ﷺ) के स़ह़ाबा ने जो बद्र में शरीक थे मुझसे बयान किया कि बद्र की लड़ाई में उनकी ता'दाद इतनी ही थी जितनी ह़ज़रत त़ालूत (अ़लैहिस्सलाम) के उन अस्ह़ाब की थी जिन्होंने उनके साथ नहरे फ़िलीस्तीन को पार किया था। तक़रीबन तीन सौ दस। ह़ज़रत बराअ (रज़ि.) ने कहा, नहीं अल्लाह की क़सम! ह़ज़रत त़ालूत के साथ नहरे फ़िलीस्तीन को सिर्फ़ वही लोग

٣٩٥٧- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: حَدَّثَنِي أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ ﷺ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا أَنَّهُمْ كَانُوا عِدَّةَ أَصْحَابِ طَالُوتَ الَّذِينَ جَاوَزُوا مَعَهُ النَّهْرَ بِضْعَةَ عَشَرَ وَثَلاَثَمِائَةٍ قَالَ الْبَرَاءُ: لاَ وَاللهِ مَا جَاوَزَ مَعَهُ النَّهْرَ إِلاَّ

पार कर सके थे जो मोमिन थे।

مُؤْمِن.

बेईमान बस नहर का पानी बेसब्री से पी पीकर पेट फुला फुलाकर हिम्मत हार चुके थे।

3958. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उन्होंने बराअ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम अस्हाबे मुहम्मद (ﷺ) आपस में ये बातचीत करते थे कि अस्हाबे बद्र की ता'दाद भी उतनी ही थी जितनी अस्हाबे तालूत की, जिन्होंने आपके साथ नहरे फ़िलिस्तीन पार की थी और उनके साथ नहर को पार करने वाले सिर्फ़ मोमिन ही थे या'नी तीन सौ दस पर और कई आदमी। (राजेअ : 3957)

٣٩٥٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: كُنَّا أَصْحَابَ مُحَمَّدٍ ﷺ نَتَحَدَّثُ أَنَّ أَصْحَابَ بَدْرٍ عَلَى عِدَّةِ أَصحاب طَالُوتَ الَّذِينَ جَاوَزُوا مَعَهُ النَّهْرَ وَلَمْ يُجَاوِزْ مَعَهُ إِلاَّ مُؤْمِنٌ بِضْعَةَ عَشَرَ وَثَلاَثُمِائَةٍ. [راجع: ٣٩٥٧]

3959. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) और हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, उन्हें सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि हम आपस में ये बातचीत किया करते थे कि जंगे बद्र में अस्हाबे बद्र की ता'दाद भी कुछ ऊपर तीन सौ दस थी, जितनी उन अस्हाबे तालूत की ता'दाद थी जिन्होंने उनके साथ नहरे फ़िलिस्तीन पार की थी और उसे पार करने वाले सिर्फ़ ईमानदार ही थे। (राजेअ : 3957)

٣٩٥٩- حدثني عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نَتَحَدَّثُ أَنَّ أَصْحَابَ بَدْرٍ ثَلاَثُمِائَةٍ وَبِضْعَةَ عَشَرَ بِعِدَّةِ أَصْحَابِ طَالُوتَ الَّذِينَ جَاوَزُوا مَعَهُ النَّهْرَ وَمَا جَاوَزَ مَعَهُ إِلاَّ مُؤْمِنٌ. [راجع:٣٩٥٧]

बाब 7 : कुफ़्फ़ारे कुरैश, शैबा, उत्बा, वलीद और अबू जहल बिन हिशाम के लिये नबी करीम (ﷺ) का बद् दुआ करना और उनकी हलाकत का बयान

٧- باب دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى كُفَّارِ قُرَيْشٍ : شَيْبَةَ وَعُتْبَةَ وَالْوَلِيدِ وَأَبِي جَهْلِ بْنِ هِشَامٍ وَهَلاَكِهِمْ

ये वह बदबख़्त लोग हैं जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को सताने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। एक दिन जब आप का'बा में नमाज़ पढ़ रहे थे, उन लोगों ने आप (ﷺ) की कमरे मुबारक पर ऊँट की ओझड़ी लाकर डाल दी थी। उन हालात से मजबूर होकर रसूले करीम (ﷺ) ने उनके हक़ में बद्दुआ फ़र्माई। जिसका नतीजा बद्र के दिन ज़ाहिर हो गया। सारे कुफ़्फ़ार हलाक हो गये। इससे बहालते मजबूरी दुश्मनों के लिये बद्दुआ करने का जवाज़ ष़ाबित हुआ। मोमिन बिल्लाह का ये आख़िरी हथियार है जिसे वाक़ियातन इस्ते'माल करने पर उसका वार ख़ाली नहीं जाता। इसलिये कहा गया है कि,

कोई अंदाज़ा कर सकता है उसके ज़ोरे बाज़ू का — निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़्दीरें

3960. मुझसे अ़म्र बिन ख़ालिद हुरानी ने बयान किया, उन्होंने हमसे ज़ुहैर बिन मुआ़विया से बयान किया, हमसे अबू इस्हाक़

٣٩٦٠- حدثني عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ

مَيْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: اسْتَقْبَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْكَعْبَةَ فَدَعَا عَلَى نَفَرٍ مِنْ قُرَيْشٍ عَلَى شَيْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَعُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَالْوَلِيدِ بْنِ عُتْبَةَ وَأَبِي جَهْلِ بْنِ هِشَامٍ فَأَشْهَدُ بِاللهِ لَقَدْ رَأَيْتُهُمْ صَرْعَى قَدْ غَيَّرَتْهُمُ الشَّمْسُ وَكَانَ يَوْمًا حَارًّا. [راجع: ٢٤٠]

सबीई ने बयान किया, उनसे से अ़म्र बिन मैमून ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने का'बा की त़रफ़ चेहरा करके कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के चन्द लोगों शैबा बिन रबीआ़, उ़त्बा बिन रबीआ़, वलीद बिन उ़त्बा, और अबू जहल बिन हिशाम के ह़क़ में बद् दुआ की थी, मैं उसके लिये अल्लाह को गवाह बनाता हूँ कि मैंने (बद्र के मैदान में) उनकी लाशें पड़ी हुई पाईं। सूरज ने उनकी लाशों को बदबूदार कर दिया था। उस दिन बड़ी गर्मी थी। (राजेअ़ : 240)

ये उसी दिन का वाक़िया है जिस दिन उन ज़ालिमों ने हुज़ूर (ﷺ) की कमरे मुबारक पर बह़ालते नमाज़ में ऊँट की ओझड़ी लाकर डाल दी थी और ख़ुश हो होकर हंस रहे थे। अल्लाह तआ़ला ने जल्द ही उनके ज़ुल्मों का बदला उनको दे दिया।

٨- باب قَتْلِ أَبِي جَهْلٍ

बाब 8 : (बद्र के दिन) अबू जहल का क़त्ल होना

٣٩٦١- حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ أَخْبَرَنَا قَيْسٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ أَتَى أَبَا جَهْلٍ وَبِهِ رَمَقٌ يَوْمَ بَدْرٍ فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ: هَلْ أَعْمَدُ مِنْ رَجُلٍ قَتَلْتُمُوهُ.

3961. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, हमसे अबू उसामा ने बयान किया, हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, हमको क़ैस बिन अबू ह़ाज़िम ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि बद्र की लड़ाई में वो अबू जहल के क़रीब से गुज़रे, अभी उसमें थोड़ी सी जान बाक़ी थी, उसने उनसे कहा, इससे बड़ा कोई और शख़्स है जिसको तुमने मारा है?

٣٩٦٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ح وَحَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ يَنْظُرُ مَا صَنَعَ أَبُو جَهْلٍ؟)) فَانْطَلَقَ ابْنُ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَوَجَدَهُ قَدْ ضَرَبَهُ ابْنَا عَفْرَاءَ حَتَّى بَرَدَ قَالَ: أَأَنْتَ أَبُوجَهْلٍ قَالَ: فَأَخَذَ بِلِحْيَتِهِ قَالَ: وَهَلْ فَوْقَ

3962. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। (दूसरी सनद) ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने फ़र्माया, मुझसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमसे ज़ुहैर बिन मुआ़विया ने बयान किया, उनसे सुलैमान तैमी ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई है जो मा'लूम करे कि अबू जहल का क्या ह़श्र हुआ? ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ह़क़ीक़ते हाल मा'लूम करने आए तो देखा कि उ़फ़्रा के बेटों (मुआ़ज़ और मुअ़व्वज़ रज़ि.) ने उसे क़त्ल कर दिया है और उसका जिस्म ठण्डा पड़ा है। उन्होंने पूछा, क्या तू ही अबू जहल है? ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने उसकी दाढ़ी पकड़ ली, अबू जहल ने कहा, क्या इससे भी बड़ा कोई आदमी है जिसे तुमने आज क़त्ल कर

डाला है? या (उसने ये कहा कि क्या इससे भी बड़ा कोई आदमी है जिसे उसकी क़ौम ने क़त्ल कर डाला है?) अहमद बिन यूनुस ने (अपनी रिवायत में) अन्ता अबा जहल के अल्फ़ाज़ बयान किये हैं। या'नी उन्होंने ये पूछा, क्या तू ही अबू जहल है। (दीगर मक़ाम : 3963, 4020)

رَجُلٍ قَتَلْتُمُوهُ أَوْ رَجُلٍ قَتَلَهُ قَوْمُهُ؟ قَالَ: أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ أَنْتَ أَبُوجَهْلٍ.
[طرفاه في:٣٩٦٣-٤٠٢٠].

3963. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे सुलैमान तैमी ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) बद्र की लड़ाई के दिन फ़र्माया, कौन देखकर आएगा कि अबू जहल का क्या हुआ? हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) मा'लूम करने गये तो देखा कि अफ़्रा के दोनों लड़कों ने उसे क़त्ल कर दिया था और उसका जिस्म ठण्डा पड़ा है। उन्होंने उसकी दाढ़ी पकड़कर कहा, तू ही अबू जहल है? उसने कहा, क्या उससे भी बड़ा कोई आदमी है जिसे आज उसकी क़ौम ने क़त्ल कर डाला है, या (उसने यूँ कहा कि) तुम लोगों ने उसे क़त्ल कर डाला है? (राजेअ : 3962)

٣٩٦٣- حدثني مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ: ((مَنْ يَنْظُرُ مَا فَعَلَ أَبُو جَهْلٍ؟)) فَانْطَلَقَ ابْنُ مَسْعُودٍ فَوَجَدَهُ قَدْ ضَرَبَهُ ابْنَا عَفْرَاءَ حَتَّى بَرَدَ فَأَخَذَ بِلِحْيَتِهِ فَقَالَ: أَنْتَ أَبَا جَهْلٍ؟ قَالَ: وَهَلْ فَوْقَ رَجُلٍ قَتَلَهُ قَوْمُهُ أَوْ قَالَ قَتَلْتُمُوهُ.
[راجع: ٣٩٦٢]

तश्रीह : सुलैमान तैमी की दूसरी रिवायत में यूँ है : वो कहने लगा, काश! मुझको किसानों ने न मारा होता। उनसे अंसार को मुराद लिया। उनको ज़लील समझा। एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) उसका सर काटकर लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए फ़र्माया कि इस उम्मत का फ़िरऔन मारा गया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने उस मरदूद के हाथों मक्का में सख़्त तकलीफ़ उठाई थी। एक रिवायत के मुताबिक़ जब अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने उसकी गर्दन पर पाँव रखा तो मरदूद कहने लगा। अरे ज़लील बकरियाँ चराने वाले! तू बड़े सख़्त मक़ाम पर चढ़ गया। फिर उन्होंने उसका सर काट लिया।

मुझसे इब्ने मुषन्ना ने बयान किया, हमको मुआज़ बिन मुआज़ ने ख़बर दी, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया और उन्हें हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी, इसी तरह आगे हदीष बयान की।

حدثني ابْنُ الْمُثَنَّى أَخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ أَخْبَرَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ نَحْوَهُ.

3964. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने यूसुफ़ बिन माजिशून से ये हदीष लिखी, उन्होंने सालेह बिन इब्राहीम से बयान किया, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने सालेह के दादा (अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि) से, बद्र के बारे में अफ़रा के दोनों बेटों की हदीष मुराद लेते थे।

(राजेअ : 3141)

٣٩٦٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كَتَبْتُ عَنْ يُوسُفَ بْنِ الْمَاجِشُونِ عَنْ صَالِحِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ فِي بَدْرٍ يَعْنِي حَدِيثَ ابْنَيْ عَفْرَاءَ.
[راجع: ٣١٤١]

3965. मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह रक़्क़ाशी ने बयान किया,

٣٩٦٥- حدثني مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ

हमसे मुअ़तमिर ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अबु मिज्लज़ ने, उनसे क़ैस बिन अ़ब्बाद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) ने बयान किया कि क़यामत के दिन मैं सबसे पहला शख़्स होऊँगा जो अल्लाह के दरबार में झगड़ा चुकाने के लिये दो ज़ानू होकर बैठेगा। क़ैस बिन अ़ब्बाद ने बयान किया कि उन्हीं ह़ज़रात (ह़म्ज़ा, अ़ली और उ़बैदह रज़ि.) के बारे में सूरह ह़ज की ये आयत नाज़िल हुई थी कि, ये दो फ़रीक़ हैं जिन्होंने अल्लाह के बारे में लड़ाई की, बयान किया कि ये वही हैं जो बद्र की लड़ाई में लड़ने के लिये (तंहा-तंहा) निकले थे, मुसलमानों की त़रफ़ से ह़म्ज़ा, अ़ली और उ़बैदा या अबू उ़बैदा बिन ह़ारिष़ रिज़्वानुल्लाह अ़लैहिम (और काफ़िरों की त़रफ़ से) शैबा बिन रबीअ़ा, उ़त्बा और वलीद बिन उ़त्बा थे। (दीगर मक़ाम : 3967, 4744)

الرَّقَاشِيُّ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: حَدَّثَنَا أَبُو مِجْلَزٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: أَنَا أَوَّلُ مَنْ يَجْثُوا بَيْنَ يَدَي الرَّحْمَنِ لِلْخُصُومَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَقَالَ قَيْسُ بْنُ عُبَادٍ: وَفِيهِمْ أُنْزِلَتْ: ﴿هَذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ﴾ قَالَ: هُمُ الَّذِينَ تَبَارَزُوا يَوْمَ بَدْرٍ حَمْزَةُ وَعَلِيٌّ وَعُبَيْدَةُ أَوْ أَبُوعُبَيْدَةَ بْنُ الْحَارِثِ وَشَيْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَعُتْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَالْوَلِيدُ بْنُ عُتْبَةَ.

[طرفاه في: ٣٩٦٧، ٤٧٤٤].

तश्रीह़ : हुआ ये कि बद्र के दिन काफ़िरों की त़रफ़ से ये तीन शख़्स मैदान में निकले थे और कहने लगे ऐ मुह़म्मद! हमसे लड़ने के लिये लोगों को भेजो। इधर से अंस़ार मुक़ाबला को गये तो कहने लगे कि हम तुम से लड़ना नहीं चाहते हम तो अपने बिरादरी वालों से या'नी क़ुरैश वालों से मुक़ाबला करना चाहते हैं। उस वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ ह़म्ज़ा! उठो! ऐ अ़ली! उठो, ऐ उ़बैदा! उठो, ह़ज़रत ह़म्ज़ा शैबा के मुक़ाबले पर और अ़ली वलीद के मुक़ाबले पर खड़े हुए। ह़म्ज़ा ने शैबा को, अ़ली ने वलीद को मार लिया और उ़बैदा और उ़त्बा दोनों एक दूसरे पर वार कर रहे थे कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने जाकर उ़त्बा को ख़त्म किया और उ़बैदा को उठा लाए।

3966. हमसे क़ुबैस़ा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अबू हाशिम ने, उनसे अबू मिज्लज़ ने, उनसे क़ैस बिन अ़ब्बाद ने और उनसे ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने बयान किया (सूरह ह़ज की) आयते करीमा हाज़ा ख़स्मानिख़्तस़मू फ़ी रब्बिहिम (अल ह़ज : 19) (ये दो फ़रीक़ हैं जिन्होंने अल्लाह के बारे में मुक़ाबला किया) क़ुरैश के छः शख़्सों के बारे में नाज़िल हुई थी (तीन मुसलमानों की त़रफ़ के या'नी) अ़ली, ह़म्ज़ा और उ़बैदा बिन ह़ारिष़ (रज़ि.) और (तीन कुफ़्फ़ार की त़रफ़ के या'नी) शैबा बिन रबीअ़ा, उ़त्बा बिन रबीअ़ा, और वलीद बिन उ़त्बा। (दीगर मक़ाम : 3968, 3969, 4743)

٣٩٦٦- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي هَاشِمٍ عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَزَلَتْ ﴿هَذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ﴾ فِي سِتَّةٍ مِنْ قُرَيْشٍ: عَلِيٍّ وَحَمْزَةَ وَعُبَيْدَةَ بْنِ الْحَارِثِ وَشَيْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَعُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ وَالْوَلِيدِ بْنِ عُتْبَةَ.

[أطرافه في: ٣٩٦٨، ٣٩٦٩، ٤٧٤٣].

बद्र में कुफ़्फ़ार और मुसलमानों का ये मुक़ाबला हुआ था जिसमें मुसलमान कामयाब रहे, जैसा कि पहले गुज़र चुका है।

3967. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम स़व्वाफ़ ने बयान किया, हमसे यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब ने बयान किया, उनका बनी ज़ैयआ़ के

٣٩٦٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الصَّوَّافُ حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ كَانَ

यहाँ आना जाना था और वो बनी सदूश के ग़ुलाम थे। कहा हमसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, उनसे अबू मिज्लज़ ने और उनसे कैस बिन अ़ब्बाद ने बयान किया कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा, ये आयत हमारे ही बारे में नाज़िल हुई थी हाज़ानि ख़स्मानि इख़्तसमू फी रब्बिहिम (अल हज्ज : 19)
(राजेअ़ : 3965)

يَنْزِلُ فِي بَنِي ضُبَيْعَةَ وَهُوَ مَوْلًى لِبَنِي سَدُوسٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ: فِينَا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿هَذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ﴾ [راجع: ٣٩٦٥]

तश्रीह : क़तादा ने कहा कि इस आयत से अहले किताब और अहले इस्लाम मुराद हैं। जबकि वो दोनों अपने लिये अव्वलियत के मुद्दई हुए। मुजाहिद ने कहा कि मोमिन और काफ़िर मुराद हैं । बक़ौले अ़ल्लामा इब्ने जरीर, आयत सबको शामिल है, जो भी कुफ़्र व इस्लाम का मुक़ाबले हो नतीजा यही है जो आगे आयत में मज़्कूर है **फ़ल्लज़ीन कफ़रू क़ुत्तिअ़त लहुम षियाबुम्मिन्नार** (अल हज्ज : 19)

3968. हमसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, हमको वकीअ़ ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान ने, उन्हें अबू हाशिम ने, उन्हें अबू मिज्लज़ ने, उन्हें कैस बिन अ़ब्बाद ने और उन्होंने ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से सुना, वो क़समिया बयान करते थे कि ये आयत (जो ऊपर गुज़री) उन्हीं छः आदमियों के बारे में, बद्र की लड़ाई के मौक़े पर नाज़िल हुई थी। पहली ह़दीष़ की तरह़ रावी ने उसे भी बयान किया।
(राजेअ़ : 3966)

٣٩٦٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي هَاشِمٍ عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُقْسِمُ لَنَزَلَتْ هَؤُلاَءِ الآيَاتُ فِي هَؤُلاَءِ الرَّهْطِ السِّتَّةِ يَوْمَ بَدْرٍ نَحْوَهُ. [راجع: ٣٩٦٦]

तश्रीह : इन रिवायात में ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) रावी का नाम बार बार आया है। ये मशहूर स़ह़ाबी ह़ज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) हैं जिनका नाम जुन्दब और लक़ब मसीहुल इस्लाम है। क़बीला ग़िफ़ार से हैं । ये अ़हदे जाहिलियत ही में मुवह्हिद थे। इस्लाम लाने वालों में उनका पाँचवाँ नम्बर है। आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़बर लेने के लिये उन्होंने अपने भाई को भेजा था। बाद में ख़ुद गये और बड़ी मुश्किलात के बाद दरबारे रिसालत में बारयाबी हुई। तफ़्सील से उनके ह़ालात पीछे बयान किये जा चुके हैं 31 हिज्री में बमुक़ामे रब्ज़ा उनका इंतिक़ाल हुआ, जहाँ ये तंहा रहा करते थे। जब ये क़रीबुल मर्ग हुए तो उनकी ज़ोजा मुह़्तरमा रोने लगीं और कहने लगीं कि आप एक स़ेह़रा में इस ह़ालत में सफ़रे आख़िरत कर रहे हैं कि आपके कफ़न के लिये यहाँ कोई कपड़ा भी नहीं है। फ़र्माया, रोना मौक़ूफ़ करो और सुनो! रसूले करीम (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया था कि मैं स़ेह़रा में इंतिक़ाल करूँगा। मेरी मौत के वक़्त मुसलमानों की एक जमाअ़त स़ेह़रा में मेरे पास पहुँच जाएगी। लिहाज़ा तुम रास्ते पर खड़ी होकर अब उस जमाअ़त का इंतिज़ार करो। ये ग़ैबी इमदाद ह़स्बे इर्शादे नबवी (ﷺ) ज़रूर आ रही होगी। चुनाँचे उनकी अहलिया स़ाहिबा (रज़ि.) गुज़रगाह पर खड़ी हो गईं। थोड़े ही इंतिज़ार के बाद दूर से कुछ सवार आते हुए उनको दिखाई दिये। उन्होंने इशारा किया वो ठहर गये और मा'लूम होने पर ये सब ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) की इ़यादत को गये जिनको देखकर ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) को बहुत ख़ुशी हुई और उन्होंने उनको हुज़ूर (ﷺ) की मज़्कूरा बाला पेशीनगोई सुनाई, फिर वसिय्यत की कि अगर मेरी बीवी के पास या मेरे पास कफ़न के लिये कपड़ा निकले तो उसी कपड़े में मुझको कफ़नाना और क़सम दिलाई की तुममे जो शख़्स़ हुकूमत का अदना ओ़हदेदार भी हो वो मुझको न कफ़नाए। चुनाँचे उस जमाअ़त में सिर्फ़ एक अंस़ारी नौजवान ऐसा ही निकला और वो बोला कि चचाजान! मेरे पास एक चादर है उसके अ़लावा दो कपड़े और हैं जो ख़ास़ मेरी वालिदा के हाथ के कते हुए हैं। उन्हीं में मैं आपको कफ़नाऊँगा । ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने ख़ुश होकर फ़र्माया कि हाँ तुम ही मुझको उन

ही कपड़ों में कफ़न पहनाना। इस वसिय्यत के बाद उनकी रूह पाक आलमे बाला को परवाज़ कर गई। उस जमाअते सहाबा (रज़ि.) ने उनको कफ़नाया दफ़नाया। कफन उस अंसारी नौजवान ने पहनाया और जनाज़ा की नमाज़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने पढ़ाई। फिर सबने मिलकर उस सेहरा के एक गोशा में उनको सुपुर्दे ख़ाक कर दिया। रज़ियल्लाहु अन्हुम (मुस्तदरक हाकिम जिल्द : 3 पेज नं. 346)

३٩٦٩- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا أَبُو هَاشِمٍ عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ عَنْ قَيْسٍ سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ يُقْسِمُ قَسَمًا إِنَّ هَذِهِ الآيَةَ: ﴿هَذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ﴾ نَزَلَتْ فِي الَّذِينَ بَرَزُوا يَوْمَ بَدْرٍ حَمْزَةَ وَعَلِيٍّ وَعُبَيْدَةَ بْنِ الْحَارِثِ وَعُتْبَةَ وَشَيْبَةَ ابْنَيْ رَبِيعَةَ وَالْوَلِيدِ بْنِ عُتْبَةَ. [راجع: ٣٩٦٦]

3969. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, हमसे हुशैम ने बयान किया, हमको अबू हाशिम ने ख़बर दी, उन्हें मिज्लज़ ने, उन्हें क़ैस ने, उन्होंने कहा कि मैंने हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से सुना, वो क़समिया कहते थे कि ये आयत, हाज़ानि ख़स्मानिख़् तसमू फ़ी रब्बिहिम (अल हज्ज : 19) उनके बारे में उतरी जो बद्र की लड़ाई में मुक़ाबले के लिये निकले थे या'नी हम्ज़ा, अली और उबैदा बिन हारिष़ (रज़ि.) मुसलमानों की तरफ़ से और उत्बा, शैबा रबीआ के बेटे और वलीद बिन उत्बा काफ़िरों की तरफ़ से। (राजेअ : 3966)

٣٩٧٠- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ السَّلُولِيُّ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ سَأَلَ رَجُلٌ الْبَرَاءَ وَأَنَا أَسْمَعُ قَالَ أَشَهِدَ عَلِيٌّ بَدْرًا قَالَ: بَارَزَ وَظَاهَرَ.

3970. मुझसे अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन सईद ने बयान किया, हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर सलूली ने बयान किया, हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके बाप यूसुफ़ बिन इस्हाक़ ने और उनसे उनके दादा अबू इस्हाक़ सबीई ने कि एक शख़्स ने हज़रत बरा (रज़ि.) से पूछा और मैं सुन रहा था कि क्या हज़रत अली (रज़ि.) बद्र की जंग में शरीक थे? उन्होंने कहा कि हाँ उन्होंने तो मुबारिज़त की थी और ग़ालिब रहे थे। (ऊपर तले वो दो ज़िरहें पहने हुए थे)

तश्रीह : उस शख़्स को हज़रत अली (रज़ि.) की कमसिनी की वजह से ये गुमान हुआ होगा कि शायद वो जंगे बद्र में न शरीक हुए हों। बराअ ने उनका ग़लत गुमान दूर कर दिया कि लड़ाई में निकलना क्या मुक़ातला के लिये मैदान में निकले और वलीद बिन उत्बा को क़त्ल किया। मुबारिज़त या'नी मैदाने जंग में निकलकर दुश्मनों को ललकारना। जिन लोगों ने हज़रत अली (रज़ि.) पर ख़ुरूज किया था वो उनके क़िस्म क़िस्म के ऐब तलाश करते रहते थे जिनकी कोई हक़ीक़त न थी। बराअ ने जो जवाब दिया है गोया मुख़ालिफ़ीन के चेहरे पर तमाचा है।

٣٩٧١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: حَدَّثَنِي يُوسُفُ بْنُ الْمَاجِشُونِ عَنْ صَالِحِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ ابْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ كَاتَبْتُ أُمَيَّةَ بْنَ خَلَفٍ فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ

3971. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा कि मुझसे यूसुफ़ बिन माजिशून ने बयान किया, उनसे स़ालेह बिन इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने, उनसे उनके वालिद इब्राहीम ने उनके दादा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि उमय्या बिन ख़लफ़ से (हिजरत के बाद) मेरा अहदनामा हो गया था। फिर बद्र की लड़ाई

के मौक़े पर उन्हों ने उसके और उसके बेटे (अली) के क़त्ल का ज़िक्र किया, बिलाल ने (जब उसे देख लिया तो) कहा कि अगर आज उमय्या बच निकला तो मैं आख़िरत में अ़ज़ाब से बच नहीं सकूँगा। (राजेअ़ : 2301)

بَدْرٍفَذَكَرَ قَتْلَه وَقَتْلَ ابْنِهِ فَقَالَ: بِلاَلٌ: لاَ نَجَوْتُ إِنْ نَجَا أُمَيَّةُ.

[راجع: ٢٣٠١]

तश्रीह : (अ़हदनामा ये था) कि उमय्या मक्का में अ़ब्दुर्रहमान की जायदाद महफ़ूज़ रखे। उसके बदले अ़ब्दुर्रहमान उमय्या की जायदाद की मदीना में हिफ़ाज़त करेंगे। जंगे बद्र में उमय्या को बचाने के लिये अ़ब्दुर्रहमान उनके ऊपर गिर पड़े थे मगर मुसलमानों ने तलवारों से उसे छलनी बना दिया।

3972. हमसे अ़ब्दान बिन उ़ष्मान ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें अबू इस्हाक़ ने, उन्हें अस्वद ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (एक मर्तबा मक्का में) सूरह वन् नज्म की तिलावत की और सज्दा तिलावत किया तो जितने लोग वहाँ मौजूद थे सब सज्दा में गिर गये। सिवा एक बूढ़े के कि उसने हथेली में मिट्टी लेकर अपनी पेशानी पर उसे लगा लिया और कहने लगा कि मेरे लिये बस इतना ही काफ़ी है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि फिर मैंने उसे देखा कि कुफ़्र की हालत में वो क़त्ल हुआ। (राजेअ़ : 1067)

٣٩٧٢- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَرَأَ ﴿وَالنَّجْمِ﴾ فَسَجَدَ بِهَا وَسَجَدَ مَنْ مَعَهُ غَيْرَ أَنَّ شَيْخًا أَخَذَ كَفًّا مِنْ تُرَابٍ فَرَفَعَهُ إِلَى جَبْهَتِهِ فَقَالَ: يَكْفِينِي هَذَا، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ: فَلَقَدْ رَأَيْتُهُ بَعْدُ قُتِلَ كَافِرًا.

[راجع: ١٠٦٧]

या'नी उमय्या बिन ख़लफ़ जिसे जंगे बद्र में ख़ुद हज़रत बिलाल (रज़ि.) ही ने अपने हाथों से क़त्ल किया था।

3973. मुझे इब्राहीम बिन मूसा ने ख़बर दी, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हिशाम ने, उनसे उ़र्वा ने बयान किया कि ज़ुबेर (रज़ि.) के जिस्म पर तलवार के तीन (गहरे) ज़ख़्मों के निशानात थे, एक उनके चेहरे पर था (और इतना गहरा था कि) मैं बचपन में अपनी उँगलियाँ उनमें दाख़िल कर दिया करता था। उ़र्वा ने बयाना किया कि उनमें से दो ज़ख़्म उनको बद्र की लड़ाई में आए थे और एक जंगे यरमूक मे। उ़र्वा ने बयान किया कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) को (हज्जाज ज़ालिम के हाथों से) शहीद कर दिया गया तो मुझसे अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने कहा, ऐ उ़र्वा! क्या ज़ुबैर (रज़ि.) की तलवार तुम पहचानते हो? मैंने कहा कि हाँ, पहचानता हूँ। उसने पूछा उसकी कोई निशानी बताओ? मैंने कहा कि बद्र की लड़ाई के मौक़े पर उसकी धार का एक हिस्सा टूट गया था, जो अभी तक उसमें बाक़ी है। अ़ब्दुल मलिक ने कहा कि तुमने सच कहा (फिर उसने नाबिग़ा शायर का ये मिस्रा पढ़ा) फ़ौजों के साथ लड़ते लड़ते उनकी

٣٩٧٣- أَخْبَرَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عُرْوَةَ قَالَ: كَانَ فِي الزُّبَيْرِ ثَلاَثُ ضَرَبَاتٍ بِالسَّيْفِ، إِحْدَاهُنَّ فِي عَاتِقِهِ، قَالَ: إِنْ كُنْتُ لأُدْخِلُ أَصَابِعِي فِيهَا، قَالَ: ضُرِبَ ثِنْتَيْنِ يَوْمَ بَدْرٍ وَوَاحِدَةً يَوْمَ الْيَرْمُوكِ، قَالَ عُرْوَةُ وَقَالَ لِي عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَرْوَانَ حِينَ قُتِلَ عَبْدُ اللهِ بْنُ الزُّبَيْرِ: يَا عُرْوَةُ هَلْ تَعْرِفُ سَيْفَ الزُّبَيْرِ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: فَمَا فِيهِ؟ قُلْتُ: فِيهِ فَلَّةٌ، فُلَّهَا يَوْمَ بَدْرٍ قَالَ: صَدَقْتَ (بِهِنَّ فُلُولٌ مِنْ قِرَاعِ الْكَتَائِبِ)، ثُمَّ رَدَّهُ عَلَى عُرْوَةَ.

قَالَ هِشَامٌ: فَأَقَمْنَاهُ بَيْنَنَا ثَلاَثَةَ آلاَفٍ، وَأَخَذَهُ بَعْضُنَا وَلَوَدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ أَخَذْتُهُ. [راجع: ٣٧٢١]

तलवारों की धारें कई जगह से टूट गई हैं। फिर अब्दुल मलिक ने वो तलवार उ़र्वा को वापस कर दी, हिशाम ने बयान किया कि हमारा अंदाज़ा था कि उस तलवार की क़ीमत तीन हज़ार दिरहम थी। वो तलवार हमारे एक अ़ज़ीज़ (उ़श्मान बिन उ़र्वा) ने क़ीमत देकर ले ली थी। मेरी बड़ी आरज़ू थी कि काश! वो तलवार मेरे हिस्से में आती। (राजेअ़ : 3721)

तशरीह : यरमूक मुल्के शाम में एक गाँव का नाम था। वहाँ हज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में 15 हिज्री में मुसलमानों और ईसाइयों में जंग हुई थी। मुसलमानों के सरदार अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (रज़ि.) थे और ईसाइयों का सरदार बाहान था। उस जंग में ईसाई सत्तर हज़ार मारे गये। चालीस हज़ार क़ैद हुए। मुसलमान भी चार हज़ार शहीद हुए। उस जंग में एक सौ बद्री सहाबी शरीक थे। (फ़त्हुल बारी)

٣٩٧٤- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ عَنْ عَلِيٍّ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ : كَانَ سَيْفُ الزُّبَيْرِ مُحَلًّى بِفِضَّةٍ. قَالَ هِشَامٌ: وَكَانَ سَيْفُ عُرْوَةَ مُحَلًّى بِفِضَّةٍ.

3974. हमसे फ़र्वा बिन अबी अल् मग़राअ ने बयान किया, उनसे अ़ली बिन मिस्हर ने, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद उ़र्वा ने बयान किया कि हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) की तलवार पर चाँदी का काम था। हिशाम ने कहा कि (मेरे वालिद) उ़र्वा की तलवार पर चाँदी का काम था।

शायद वही तलवार ज़ुबैर (रज़ि.) की हो।

٣٩٧٥- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالُوا لِلزُّبَيْرِ يَوْمَ الْيَرْمُوكِ: أَلاَ تَشُدُّ فَنَشُدُّ مَعَكَ؟ فَقَالَ: إِنِّي إِنْ شَدَدْتُ كَذَبْتُمْ. فَقَالُوا: لاَ نَفْعَلُ فَحَمَلَ عَلَيْهِمْ حَتَّى شَقَّ صُفُوفَهُمْ فَجَاوَزَهُمْ وَمَا مَعَهُ أَحَدٌ ثُمَّ رَجَعَ مُقْبِلاً فَأَخَذُوا بِلِجَامِهِ فَضَرَبُوهُ ضَرْبَتَيْنِ عَلَى عَاتِقِهِ بَيْنَهُمَا ضَرْبَةٌ ضُرِبَهَا يَوْمَ بَدْرٍ. قَالَ عُرْوَةُ: كُنْتُ أُدْخِلُ أَصَابِعِي فِي تِلْكَ الضَّرَبَاتِ أَلْعَبُ وَأَنَا صَغِيرٌ. قَالَ عُرْوَةُ: وَكَانَ مَعَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ الزُّبَيْرِ يَوْمَئِذٍ وَهُوَ ابْنُ عَشْرِ سِنِينَ فَحَمَلَهُ عَلَى فَرَسٍ وَكَّلَ

3975. हमसे अहमद बिन मुहम्मद ने बयान किया, हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने कि रसूले करीम (ﷺ) के सहाबा ने ज़ुबैर (रज़ि.) से यरमूक की जंग में कहा, आप हमला करते तो हम भी आपके साथ हमला करते। उन्होंने कहा कि अगर मैंने उन पर ज़ोर का हमला कर दिया तो फिर तुम लोग पीछे रह जाओगे। सब बोले कि हम ऐसा नहीं करेंगे। चुनाँचे ज़ुबैर (रज़ि.) ने दुश्मन (रूमी फ़ौज) पर हमला किया और उनकी सफ़ों को चीरते हुए आगे निकल गये। उस वक़्त उनके साथ कोई एक भी (मुसलमान) नहीं रहा। फिर (मुसलमान फ़ौज की तरफ़) आने लगे तो रोमियों ने उनके घोड़े की लगाम पकड़ ली और चेहरे पर दो कारी ज़ख़्म लगाए, जो ज़ख़्म बद्र की लड़ाई के मौक़े पर उनको लगा था वो उन दोनों ज़ख़्मों के दरम्यान में पड़ गया था। उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि जब मैं छोटा था तो उन ज़ख़्मों में अपनी उँगलियाँ डालकर खेला करता था। उ़र्वा ने बयान किया कि यरमूक की लड़ाई के मौक़े पर अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर भी उनके साथ

بِهِ رَجُلاً.
[راجع: ٣٧٢١]

गये थे, उस वक़्त उनकी उम्र कुल दस साल की थी। इसलिये उनको एक घोड़े पर सवार करके एक साहब की हिफ़ाज़त में दे दिया था। (राजेअ: 3721)

٣٩٧٦- حدثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ سَمِعَ رَوْحَ بْنَ عُبَادَةَ حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ : ذَكَرَ لَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ يَوْمَ بَدْرٍ بِأَرْبَعَةٍ وَعِشْرِينَ رَجُلاً مِنْ صَنَادِيدِ قُرَيْشٍ فَقُذِفُوا فِي طَوِيٍّ مِنْ أَطْوَاءِ بَدْرٍ خَبِيثٍ مُخْبِثٍ وَكَانَ إِذَا ظَهَرَ عَلَى قَوْمٍ أَقَامَ بِالْعَرْصَةِ ثَلاَثَ لَيَالٍ فَلَمَّا كَانَ بِبَدْرٍ الْيَوْمَ الثَّالِثَ أَمَرَ بِرَاحِلَتِهِ فَشُدَّ عَلَيْهَا رَحْلُهَا ثُمَّ مَشَى وَتَبِعَهُ أَصْحَابُهُ وَقَالُوا : مَا نَرَى يَنْطَلِقُ إِلاَّ لِبَعْضِ حَاجَتِهِ حَتَّى قَامَ شَفَةِ الرَّكِيِّ فَجَعَلَ يُنَادِيهِمْ بِأَسْمَائِهِمْ وَأَسْمَاءِ آبَائِهِمْ يَا فُلاَنُ بْنَ فُلاَنٍ وَيَافُلاَنُ بْنَ فُلاَنٍ أَيَسُرُّكُمْ أَنَّكُمْ أَطَعْتُمُ اللهَ وَرَسُولَهُ؟ فَإِنَّا قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا؟ قَالَ: فَقَالَ عُمَرُ يَا رَسُولَ اللهِ مَا تُكَلِّمُ مِنْ أَجْسَادٍ لاَ أَرْوَاحَ لَهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ مَا أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ لِمَا أَقُولُ مِنْهُمْ)). قَالَ قَتَادَةُ: أَحْيَاهُمُ اللهُ حَتَّى أَسْمَعَهُمْ قَوْلَهُ تَوْبِيخًا وَتَصْغِيرًا وَنَقِمَةً وَحَسْرَةً وَنَدَمًا.
[راجع: ٣٠٦٥]

3976. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा उन्होंने रौह़ बिन उ़बादा से सुना, कहा हमसे सईद बिन अबी अ़रूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा हमसे अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि बद्र की लड़ाई में रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से क़ुरैश के चौबीस मक़्तूल सरदार बद्र के एक बहुत ही अंधेरे और गन्दे कुँए में फेंक दिये गये। आ़दते मुबारका थी कि जब दुश्मन पर ग़ालिब होते तो मैदाने जंग में तीन दिन तक क़याम फ़र्माते। जंगे बद्र के ख़ात्मे के तीसरे दिन आपके हुक्म से आपकी सवारी पर कजावा बाँधा गया और आप रवाना हुए। आप (ﷺ) के अस्ह़ाब भी आपके साथ थे। स़ह़ाबा ने कहा, ग़ालिबन आप किसी ज़रूरत के लिये तशरीफ़ ले जा रहे हैं। आख़िर आप उस कुँए के किनारे आकर खड़े हो गये और कुफ़्फ़ार क़ुरैश के मक़्तूलीन सरदारों के नाम उनके बाप के नाम के साथ लेकर आप उन्हें आवाज़ देने लगे कि ऐ फ़लाँ बिन फ़लाँ! ऐ फ़लाँ बिन फ़लाँ! क्या आज तुम्हारे लिये ये बात बेहतर नहीं थी कि तुमने दुनिया में अल्लाह और उसके रसूल की इत़ाअ़त की होती? बेशक हमसे हमारे रब ने जो वा'दा किया था वो हमें पूरी त़रह ह़ासिल हो गया। तो क्या तुम्हारे रब का तुम्हारे बारे में जो वा'दा (अ़ज़ाब का) था वो भी तुम्हें पूरी त़रह मिल गया? अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि इस पर उ़मर (रज़ि.) बोल पड़े। या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप उन लाशों से क्यूँ ख़िताब फ़र्मा रहे हैं? जिनमें कोई जान नहीं है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, जो कुछ मैं कह रहा हूँ तुम लोग उनसे ज़्यादा उसे नहीं सुन रहे हो। क़तादा ने बयान किया कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ज़िन्दा कर दिया था (उस वक़्त) ताकि हुज़ूर (ﷺ) उन्हें अपनी बात सुना दें। उनकी तौबीख़, ज़िल्लत, नामुरादी और हसरत व नदामत के लिये। (राजेअ: 3065)

तश्रीह : जो लोग इस वाक़िया से सिमाअ़े मौता षाबित करते हैं वो सरासर ग़लती पर हैं क्योंकि ये सुनाना रसूले करीम (ﷺ) का एक मुअजिज़ा था।

दूसरी आयत में साफ़ मौजूद है **वमा अन्त बिमुस्मिइन मन फिल्कुबूर** या'नी तुम क़ब्रवालों को सुनाने से क़ासिर (असमर्थ) हो, मरने के बाद जुम्ला ता'ल्लुक़ाते दुनियावी टूटने के साथ दुनियावी ज़िन्दगी के लवाज़मात भी ख़त्म हो जाते हैं। सुनना भी उसी में शामिल है। अगर मुर्दे सुनते हों तो उन पर मुर्दगी का हुक्म लगाना ही ग़लत ठहरता है। बहरहाल अ़क़्ल व नक़ल से वही सहीह और हक़ है कि मरने के बाद इंसान के जुम्ला हवासे दुनियवी ख़त्म हो जाते हैं। नेक मुर्दों को अल्लाह तआला आलमे बरज़ख़ में कुछ सुना दे ये बिलकुल अलग चीज़ है। इससे सिमाअ़े मौता का कोई ता'ल्लुक़ नहीं है।

3977. हमसे हुमैदी ने बयान किया, हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे अ़ता ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, क़ुर्आन मजीद की आयत अल्लज़ीना बद्दलू निअ़मतल्लाहि कुफ़्रा **(इब्राहीम : 28) के बारे में आपने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! ये कुफ़्फ़ार क़ुरैश थे। अ़म्र ने कहा कि इससे मुराद क़ुरैश थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) अल्लाह की नेअ़मत थे। कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने अपनी क़ौम को जंगे बद्र के दिन दारुल बवार या'नी दोज़ख़ में झोंक दिया।** (दीगर मक़ाम : 4800)

٣٩٧٧- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عَمْرٌو عَنْ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَةَ اللهِ كُفْرًا﴾ قَالَ: هُمْ وَاللهِ كُفَّارُ قُرَيْشٍ. قَالَ عَمْرٌو: هُمْ قُرَيْشٌ، وَمُحَمَّدٌ ﷺ نِعْمَةُ اللهِ ﴿وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ﴾ قَالَ: النَّارَ يَوْمَ بَدْرٍ. [طرفه في : ٤٧٠٠].

नेअ़मत से मुराद इस्लाम और रसूले करीम (ﷺ) की ज़ाते गिरामी अक़्दस है। क़ुरैश ने उस नेअ़मत की क़द्र न की जिसका नतीजा तबाही और हलाकत की शक्ल में हुआ। मदीना वालों ने अल्लाह की इस नेअ़मत की क़द्र की। दोनों जहान की इ़ज़्ज़त व आबरू से सरफ़राज़ हुए। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वरज़ू अ़न्हु।

3978. मुझसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) के सामने किसी ने उसका ज़िक्र किया कि हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के हवाले से बयान करते हैं कि मय्यत को क़ब्र में उसके घर वालों के उस पर रोने से भी अ़ज़ाब होता है। इस पर आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) ने तो ये फ़र्माया था कि अ़ज़ाब मय्यत पर उसकी बदअ़मलियों और गुनाहों की वजह से होता है और उसके घर वाले हैं कि अब भी उसकी जुदाई में रोते रहते हैं। (राजेअ़ : 1288)

٣٩٧٨- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: ذُكِرَ عِنْدَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَفَعَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ ((إِنَّ الْمَيِّتَ يُعَذَّبُ فِي قَبْرِهِ بِبُكَاءِ أَهْلِهِ)) فَقَالَتْ: إِنَّمَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّهُ لَيُعَذَّبُ بِخَطِيئَتِهِ وَذَنْبِهِ، وَإِنَّ أَهْلَهُ لَيَبْكُونَ عَلَيْهِ الآنَ)). [راجع: ١٢٨٨]

3979. वज़ाक ने कहा कि उसकी मिषाल बिलकुल ऐसी ही है जैसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बद्र के उस कुँएँ पर खड़े होकर जिसमें मुश्रिकीन की लाशें डाल दी गईं थीं, उनके बारे में फ़र्माया था कि जो कुछ में कह रहा हूँ, ये उसे सुन रहे हैं। तो आपके फ़र्माने का मक़्सद ये था कि अब उन्हें मा'लूम हो गया होगा कि उनसे मैं जो कुछ कह रहा था वो हक़ था। फिर उन्होंने उस आयत की तिलावत

٣٩٧٩- قَالَتْ: وَذَاكَ مِثْلُ قَوْلِهِ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَامَ عَلَى الْقَلِيبِ وَفِيهِ قَتْلَى بَدْرٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ لَهُمْ مَا قَالَ: ((إِنَّهُمْ لَيَسْمَعُونَ مَا أَقُولُ إِنَّمَا قَالَ: إِنَّهُمُ الآنَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّ مَا كُنْتُ أَقُولُ لَهُمْ

حقٌّ)) ثُمَّ قَرَأَتْ ﴿إِنَّكَ لاَ تُسْمِعُ الْمَوْتَى وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِي الْقُبُورِ﴾. تَقُولُ حِينَ تَبَوَّؤُا مَقَاعِدَهُمْ مِنَ النَّارِ. [راجع: ١٣٧١]

की कि, आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और जो क़ब्रों में दफ़न हो चुके हैं उन्हें आप अपनी बात नहीं सुना सकते। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि (आप उन मुर्दों को नहीं सुना सकते) जो अपना ठिकाना जहन्नम में बना चुके हैं। (राजेअ : 1381)

٣٩٨٠، ٣٩٨١- حدثني عُثْمَانُ حَدَّثَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: وَقَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى قَلِيبِ بَدْرٍ فَقَالَ: ((هَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا؟)) ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّهُمُ الآنَ يَسْمَعُونَ مَا أَقُولُ)) فَذُكِرَ لِعَائِشَةَ فَقَالَتْ إِنَّمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّهُمُ الآنَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّ الَّذِي كُنْتُ أَقُولُ لَهُمْ هُوَ الْحَقُّ)) ثُمَّ قَرَأَتْ ﴿إِنَّكَ لاَ تُسْمِعُ الْمَوْتَى﴾ حَتَّى قَرَأَتِ الآيَةَ. [راجع: ١٣٧٠، ١٣٧١]

3980,81. मुझसे उ़ष्मान ने बयान किया, हमसे अ़ब्दह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बद्र के कुँए पर खड़े होकर फ़र्माया, क्या जो कुछ तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिये वा'दा कर रखा था, उसे तुमने सच्चा पा लिया? फिर आपने फ़र्माया, जो कुछ मैं कह रहा हूँ ये अब भी उसे सुन रहे हैं। इस हदीष़ का ज़िक्र जब हज़रत आइशा (रज़ि.) से किया गया तो उन्होंने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) ने ये फ़र्माया था कि उन्होंने अब जान लिया होगा कि जो कुछ मैंने उनसे कहा था वो हक़ था। उसके बाद उन्होंने आयत, बेशक आप उन मुर्दों को नहीं सुना सकते, पूरी पढ़ी।

(राजेअ : 1370, 1371)

तश्रीह : क़ुर्आनी आयत स़रीह़ दलील है कि आप मुर्दों को नहीं सुना सकते। यही ह़क़ है। मक़्तूलीने बद्र को सुनाना वक़्ती तौर पर ख़ुसूसियाते रिसालत में से था। इस पर दूसरे मुर्दों को क़यास नहीं किया जा सकता। हाँ, अल्लाह तआ़ला जब चाहे और जिस क़दर चाहे मुर्दों को सुना सकता है। जैसा कि क़ब्रिस्तान मे अस्सलामु अलैयकुम अहलदियार हदीष़ की मसनून दुआ़ से ज़ाहिर है। बाक़ी अहले बिदअ़त का ये ख़्याल कि वो जब भी मदफ़ून बाबाओं की क़ब्रें पूजने जाएँ वो बाबा उनकी फ़रियाद सुनते और ह़ाजतें पूरी करते हैं, सरासर बातिल और काफ़िराना व मुश्रिकाना ख़्याल है जिसकी शरअ़न कोई अस़ल नहीं है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और हज़रत आइशा (रज़ि.) दोनों के ख़्यालात पर मज़ीद तफ़्सील के लिये फ़त्हुल बारी का मुतालआ़ किया जाए।

٩- باب فَضْلِ مَنْ شَهِدَ بَدْرًا

बाब 9 : बद्र की लड़ाई में हाज़िर होने वालों की फ़ज़ीलत का बयान

٣٩٨٢- حدثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: أُصِيبَ حَارِثَةُ يَوْمَ بَدْرٍ وَهُوَ غُلاَمٌ فَجَاءَتْ أُمُّهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ عَرَفْتَ مَنْزِلَةَ حَارِثَةَ مِنِّي فَإِنْ يَكُنْ فِي

3982. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, हमसे मुआ़विया बिन अ़म्र ने बयान किया, हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे हुमैद ने बयान किया कि मैंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हारिष़ा बिन सर्राक़ा अंसारी (रज़ि.) जो अभी नौ उ़म्र लड़के थे, बद्र के दिन शहीद हो गये थे (पानी पीने के लिये हौज़ पर आए थे कि एक तीर ने शहीद कर दिया) फिर उनकी वालिदा (रबीअ़ बिन्तुन् नस़्र, अनस रज़ि. की फूफी) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपको मा'लूम है कि मुझे हारिष़ा

الْجَنَّةِ اصْبِرْ وَأَحْتَسِبْ وَإِنْ تَكُ الأُخْرَى تَرَى مَا أَصْنَعُ؟ فَقَالَ: ((وَيْحَكِ أَوَ هَبِلْتِ؟ أَوَ جَنَّةٌ وَاحِدَةٌ هِيَ؟ إِنَّهَا جِنَانٌ كَثِيرَةٌ وَإِنَّهُ لَفِي جَنَّةِ الْفِرْدَوْسِ)).
[راجع: ٢٨٠٨]

से कितना प्यार था, अगर वो अब जन्नत में है तो मैं इस पर सब्र करूँगी और अल्लाह तआला से ष़वाब की उम्मीद रखूँगी और अगर कहीं दूसरी जगह है तो आप देख रहे हैं कि मैं किस हाल में हूँ। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तुम पर रहम करे, क्या दीवानी हो रही हो, क्या वहाँ कोई एक जन्नत है? बहुत सी जन्नतें हैं और तुम्हारा बेटा जन्नतुल फ़िरदौस में है। (राजेअ़ : 2808)

ह़दीष़ से बद्र में शरीक होने वालों की फ़ज़ीलत षाबित हुई कि वो सब जन्नती हैं। ये अल्लाह का क़तई फ़ैसला है। ये हारिषा बिन सुराक़ा बिन हारिष बिन अ़दी अंसारी बिन अ़दी बिन नज्जार हैं। हारिषा के बाप सुराक़ा सहाबी (रज़ि.) जंगे हुनैन में शहीद हुए थे। (रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

٣٩٨٣- حدثني إِسْحَاقُ بنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ إِدْرِيسَ قَالَ: سَمِعْتُ حُصَيْنَ ابْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبَا مَرْثَدٍ وَالزُّبَيْرَ وَكُلُّنَا فَارِسٌ قَالَ : انْطَلِقُوا حَتَّى تَأْتُوا رَوْضَةَ خَاخٍ فَإِنَّ بِهَا امْرَأَةً مِنَ الْمُشْرِكِينَ مَعَهَا كِتَابٌ مِنْ حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى الْمُشْرِكِينَ فَأَدْرَكْنَاهَا تَسِيرُ عَلَى بَعِيرٍ لَهَا حَيْثُ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْنَا الْكِتَابَ فَقَالَتْ: مَا مَعَنَا كِتَابٌ فَأَنَخْنَاهَا فَالْتَمَسْنَا فَلَمْ نَرَ كِتَابًا فَقُلْنَا مَا كَذَبَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، لَتُخْرِجِنَّ الْكِتَابَ أَوْ لَنُجَرِّدَنَّكِ فَلَمَّا رَأَتِ الْجِدَّ أَهْوَتْ إِلَى حُجْزَتِهَا وَهِيَ مُحْتَجِزَةٌ بِكِسَاءٍ فَأَخْرَجَتْهُ فَانْطَلَقْنَا بِهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ

3983. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, हमको अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान से सुना, उन्होंने सअ़द बिन उ़बैदा से, उन्होंने अबू अ़ब्दुर्रहमान सुलमी से कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा, मुझे, अबू मर्षद (रज़ि.) और ज़ुबैर (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक मुहिम पर भेजा। हम सब शहसवार थे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया तुम लोग सीधे चले जाओ। जब रौज़-ए-ख़ाख़ पर पहुँचो तो वहाँ तुम्हें मुश्रिकीन की एक औरत मिलेगी, वे एक ख़त लिये हुए है जिसे हज़रत हातिब बिन अबी बल्तआ(रज़ि.) ने मुश्रिकीन के नाम भेजा है। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने जिस जगह का पता दिया था हमने वहीं उस औरत को एक ऊँट पर जाते हुए पा लिया। हमने उससे कहा कि ख़त ला। वो कहने लगी कि मेरे पास तो कोई ख़त नहीं है। हमने उसके ऊँट को बिठाकर उसकी तलाशी ली तो वाक़ई हमें भी कोई ख़त नहीं मिला। लेकिन हमने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) की बात कभी ग़लत नहीं हो सकती। ख़त निकाल वरना हम तुझे नंगा कर देंगे। जब उसने हमारा ये सख़्त रवय्या देखा तो इज़ार बाँधने की जगह की तरफ़ अपना हाथ ले गई। वो एक चादर में लिपटी हुई थी और उसने ख़त निकालकर हमको दे दिया। हम उसे लेकर हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि उसने (या'नी हातिब बिन अबी बल्तआ ने) अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और मुसलमानों से दग़ा की है। हुज़ूर (ﷺ) मुझे इजाज़त दें ताकि मैं इसकी गर्दन मार दूँ। लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने उनसे पूछा कि तुमने ये काम क्यूँ किया? हातिब (रज़ि.) बोले अल्लाह

की क़सम! ये वजह हर्गिज़ नहीं थी कि अल्लाह और उसके रसूल(ﷺ) पर मेरा ईमान बाक़ी नहीं रहा था। मेरा मक़सद तो सिर्फ़ इतना था कि क़ुरैश पर इस तरह मेरा एक एहसान हो जाए और उसकी वजह से वो (मक्का में बाक़ी रह जाने वाले) मेरे अहलो-अयाल की हिफ़ाज़त करें। आपके अस्हाब में जितने भी हज़रात (मुहाजिरीन) हैं, उन सबका क़बीला वहाँ मौजूद है और अल्लाह उनके ज़रिये उनके अहल व माल की हिफ़ाज़त करता है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्होंने सच्ची बात बता दी है और तुम लोगों को चाहिये कि उनके बारे में अच्छी बात ही कहो। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फिर अर्ज़ किया कि इस शख़्स ने अल्लाह, उसके रसूल और मुसलमानों से दग़ा की है। आप मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं इसकी गर्दन मार दूँ। हुज़ूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि क्या ये बद्र वालों में से नहीं है? आपने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने अहले बद्र के हालात को पहले ही से जानता था और वो ख़ुद फ़र्मा चुका है कि, तुम जो चाहो करो, तुम्हें जन्नत ज़रूर मिलेगी। (या आपने ये फ़र्माया कि) मैंने तुम्हारी मग़्फ़िरत कर दी है। ये सुनकर हज़रत उमर (रज़ि.) की आँखों में आंसू आ गये और अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है।

(राजेअ : 3007)

اللهِ ﷺ قَدْ خَانَ اللهَ وَرَسُولَهُ وَالْمُؤْمِنِينَ فَدَعْنِي فَلأَضْرِبْ عُنُقَهُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ ؟)) قَالَ حَاطِبٌ: وَاللهِ مَا بِي أَنْ لاَ أَكُونَ مُؤْمِنًا بِاللهِ وَرَسُولِهِ ﷺ أَرَدْتُ أَنْ يَكُونَ لِي عِنْدَ الْقَوْمِ يَدٌ يَدْفَعُ اللهُ بِهَا عَنْ أَهْلِي وَمَالِي وَلَيْسَ أَحَدٌ مِنْ أَصْحَابِكَ إِلاَّ لَهُ هُنَاكَ مِنْ عَشِيرَتِهِ مَنْ يَدْفَعُ اللهُ بِهِ عَنْ أَهْلِهِ وَمَالِهِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((صَدَقَ وَلاَ تَقُولُوا لَهُ إِلاَّ خَيْرًا)) فَقَالَ عُمَرُ: إِنَّهُ قَدْ خَانَ اللهَ وَرَسُولَهُ وَالْمُؤْمِنِينَ فَدَعْنِي فَلأَضْرِبْ عُنُقَهُ فَقَالَ: ((أَلَيْسَ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ؟)) فَقَالَ: لَعَلَّ اللهَ اطَّلَعَ عَلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ: ((اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ وَجَبَتْ لَكُمُ الْجَنَّةُ، أَوْ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ)) فَدَمَعَتْ عَيْنَا عُمَرَ وَقَالَ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ.

[راجع: ٣٠٠٧]

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) की राय मुल्की क़ानून और सियासत पर मब्नी थी कि जो शख़्स मुल्क व मिल्लत के साथ बेवफ़ाई करके जंगी राज़ दुश्मन को पहुँचाए वो क़ाबिले मौत मुजरिम है मगर हज़रत हातिब (रज़ि.) के बारे में आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी सहीह निय्यत जानकर और उनके बद्री होने की बिना पर हज़रत उमर (रज़ि.) की उनके बारे में राय से इत्तिफ़ाक़ नही फ़र्माया बल्कि उनकी उस लग़्ज़िश को मुआफ़ कर दिया।

3984. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जुअफ़ी ने बयान किया, हमसे अबू अहमद ज़ुबैरी ने बयान किया, हमसे अब्दुर्रहमान बिन ग़सील ने बयान किया, उनसे हम्ज़ा बिन अबी उसैद और ज़ुबैर बिन अबी उसैद ने और उनसे हज़रत अबू उसैद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जंगे बद्र के मौक़े पर हमें हिदायत की थी कि जब कुफ़्फ़ार तुम्हारे क़रीब आ जाएँ तो उन पर तीर चलाना और (जब तक वो दूर रहें) अपने तीरों को बचाए रखना।

٣٩٨٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْغَسِيلِ عَنْ حَمْزَةَ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ وَالزُّبَيْرِ بْنِ الْمُنْذِرِ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ: ((إِذَا أَكْثَبُوكُمْ فَارْمُوهُمْ وَاسْتَبْقُوا نَبْلَكُمْ)).

(राजेअ़ : 2900) [راجع: ۲۹۰۰]

तश्रीह : या'नी जल्दी जल्दी सब तीर न चला दो कि लगें या न लगें ये तीरों का ज़ाये (बर्बाद) करना होगा। लायक़ जनरल ऐसे ही होते हैं जो अपनी फ़ौज का सामाने जंग बहुत मुह्तात़ तरीक़े पर ख़र्च कराते हैं। आँहज़रत (ﷺ) इस बारे में भी बहुत बड़े फ़ौजी कमाण्डर और माहिर फ़ुनूने ह़रबिया (युद्ध विशेषज्ञ) थे (ﷺ)। अक्षबूहुम का मा'नी इस ह़दीष़ में रावी ने ये कहा है कि बहुत से आ जाएँ और हुजूम की शक्ल में आएँ। कुछ ने कहा कि कष़ब के मा'नी लुग़त में नज़दीक होने के आएँ हैं या'नी जब तक वो हमारे नज़दीक न हों अपने तीरों को मह़फ़ूज़ रखना ताकि वो वक़्त पर काम आएँ, उनको बेकार ज़ाये न करना। आज भी जंगी उसूल यही है जो सारी दुनिया में मुसल्लम (सर्वमान्य) है।

3985. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़ीम ने बयान किया, हमसे अबू अहमद ज़ुबैरी और मुंज़िर बिन अबी उसैद ने और उनसे ह़ज़रत अबू उसैद (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे बद्र में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें हिदायत की थी कि जब तुम्हारे क़रीब कुफ़्फ़ार आ जाएँ या'नी ह़मला व हुजूम करें (इतने कि तुम्हारे निशाने की ज़द में आ जाएँ) तो फिर उन पर तीर बरसाने शुरू करना और (जब तक वो तुमसे क़रीब न हों) अपने तीर को मह़फ़ूज़ रखना।

(राजेअ़ : 2900)

٣٩٨٥- حدثني مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ حَدَّثَنَا أَبُو أَحْمَدَ الزُّبَيْرِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْغَسِيلِ عَنْ حَمْزَةَ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ وَالْمُنْذِرِ بْنِ أَبِي أُسَيْدٍ عَنْ أَبِي أُسَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ ((إِذَا أَكْثَبُوكُمْ: يَعْنِي كَثَرُوكُمْ فَارْمُوهُمْ وَاسْتَبْقُوا نَبْلَكُمْ)).

[راجع: ۲۹۰۰]

3986. मुझसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, हमसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया कि मैंने बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, वो बयान कर रहे थे कि नबी करीम (ﷺ) ने उहुद की लड़ाई में तीरंदाज़ों पर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को सरदार मुक़र्रर किया था। इस लड़ाई में हमारे सत्तर आदमी शहीद हुए थे। नबी करीम (ﷺ) और आपके स़ह़ाबियों से बद्र की लड़ाई में एक सौ चालीस मुश्रिकीन को नुक़्सान पहुँचा था। सत्तर उनमें से क़त्ल कर दिये गये और सत्तर क़ैदी बनाकर लाये गये। इस पर अबू सुफ़यान ने कहा कि आज का दिन बद्र के दिन का बदला है और लड़ाई की मिष़ाल डोल की सी है।

(राजेअ़ : 3039)

٣٩٨٦- حدثني عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الرُّمَاةِ يَوْمَ أُحُدٍ عَبْدَ اللهِ بْنَ جُبَيْرٍ فَأَصَابُوا مِنَّا سَبْعِينَ وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَصْحَابُهُ أَصَابُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ يَوْمَ بَدْرٍ أَرْبَعِينَ وَمِائَةً وَسَبْعِينَ أَسِيرًا وَسَبْعِينَ قَتِيلاً. قَالَ أَبُو سُفْيَانَ : يَوْمٌ بِيَوْمِ بَدْرٍ وَالْحَرْبُ سِجَالٌ. [راجع: ۳۰۳۹]

तश्रीह : जंगे उहुद में आँहज़रत (ﷺ) ने अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को पचास तीरंदाज़ों के साथ उहुद पहाड़ के एक नाके पर इस शर्त के साथ मुक़र्रर किया कि हम हारें या जीतें हमारे हुक्म बग़ैर ये नाका हर्गिज़ न छोड़ना। शुरू में जब मुसलमानों की फ़तह़ होने लगी तो अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के साथियों ने वो नाका छोड़ दिया जिसका नतीजा जंगे उहुद की शिकस्त की सूरत में सामने आया।

3987. मुझसे मुह़म्मद बिन अलाअ ने बयान किया, हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे उनके दादा ने, उनसे अबू

٣٩٨٧- حدثني مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدٍ عَنْ جَدِّهِ عَنْ أَبِي

बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने, मैं गुमान करता हूँ कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया कि आपने फ़र्माया, ख़ैर व भलाई वो है जो अल्लाह तआला ने हमें उहुद की लड़ाई के बाद अ़ता फ़र्माई और ख़ुलूसे अ़मल का ष़वाब वो है जो अल्लाह तआला ने हमें बद्र की लड़ाई के बाद अ़ता फ़र्माया। (राजेअ़ : 3622)

بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى أُرَاهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((وَإِذَا الْخَيْرُ مَا جَاءَ اللهُ بِهِ مِنَ الْخَيْرِ بَعْدُ وَثَوَابِ الصِّدْقِ الَّذِي آتَانَا بَعْدَ يَوْمِ بَدْرٍ)). [راجع: ٣٦٢٢]

ह़ादष़-ए-उहुद के बाद भी मुसलमानों के ह़ौसलों में फ़र्क़ नहीं आया और वो दोबारा ख़ैर व भलाई के मालिक बन गये। अल्लाह ने बाद में उनको फ़ुतूह़ात से नवाज़ा और बद्र में अल्लाह ने जो फ़तह़ इनायत की वो उनके ख़ुलूस अ़मल का ष़मरा था। मुसलमान बहरह़ाल ख़ैरो बरकत का मालिक होता है और ग़ाज़ी और शहीद दोनों ख़िताब उसके लिये सद इ़ज़्ज़तों का मक़ाम रखते हैं।

3988. मुझसे यअ़क़ूब ने बयान किया, हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनके दादा से कि अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने कहा, बद्र की लड़ाई के मौक़े पर मैं स़फ़ में खड़ा हुआ था। मैंने मुड़कर देखा तो मेरी दाहिनी और बाईं त़रफ़ दो नौजवान खड़े थे। अभी मैं उनके बारे में कोई फ़ैसला भी न कर पाया था कि एक ने मुझसे चुपके से पूछा ताकि उसका साथी सुनने न पाए, चचा! मुझे अबू जहल को दिखा दो। मैं ने कहा भतीजे! तुम उसे देखकर क्या करोगे? उसने कहा, मैंने अल्लाह तआ़ला के सामने ये अ़हद किया है कि अगर मैंने उसे देख लिया तो या उसे क़त्ल करके रहूँगा या फिर ख़ुद अपनी जान दे दूँगा। दूसरे नौजवान ने भी अपने साथी से छुपाते हुए मुझसे यही बात पूछी। उन्होंने कहा कि उस वक़्त उन दोनों नौजवानों के बीच मे खड़े होकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। मैंने इशारे से उन्हें अबू जहल को दिख दिया। जिसे देखते ही वो दोनों बाज़ की त़रह उस पर झपटे और फ़ौरन ही उसे मार गिराया। ये दोनों उ़फ़रा के बेटे थे।

(राजेअ़ : 3141)

٣٩٨٨- حَدَّثَنِي يَعْقُوبُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ إِنِّي لَفِي الصَّفِّ يَوْمَ بَدْرٍ إِذِ الْتَفَتُّ فَإِذَا عَنْ يَمِينِي وَعَنْ يَسَارِي فَتَيَانِ حَدِيثَا السِّنِّ فَكَأَنِّي لَمْ آمَنْ بِمَكَانِهِمَا إِذْ قَالَ لِي أَحَدُهُمَا سِرًّا مِنْ صَاحِبِهِ يَا عَمِّ أَرِنِي أَبَا جَهْلٍ فَقُلْتُ: يَا ابْنَ أَخِي وَمَا تَصْنَعُ بِهِ؟ قَالَ: عَاهَدْتُ اللهَ إِنْ رَأَيْتُهُ أَنْ أَقْتُلَهُ أَوْ أَمُوتَ دُونَهُ، فَقَالَ لِي الآخَرُ سِرًّا مِنْ صَاحِبِهِ مِثْلَهُ، قَالَ: فَمَا سَرَّنِي أَنِّي بَيْنَ رَجُلَيْنِ مَكَانَهُمَا فَأَشَرْتُ لَهُمَا إِلَيْهِ فَشَدَّا عَلَيْهِ مِثْلَ الصَّقْرَيْنِ حَتَّى ضَرَبَاهُ وَهُمَا ابْنَا عَفْرَاءَ.

[راجع: ٣١٤١]

तश्रीह : कुछ रिवायतों में है कि ये दोनों मुआ़ज़ इब्ने उ़फ़रा और मुअ़व्वज इब्ने उ़फ़रा बिन जमूह़ थे। मुआ़ज़ और मुअ़व्वज की वालिदा का नाम उ़फ़रा था। उनके बाप का नाम ह़ारिष़ बिन रफ़ाआ़ था। उन लड़कों ने पहले ही ये अ़हद किया था कि अबू जहल हमारे रसूले करीम (ﷺ) को गालियाँ देता है हम उसको ख़त्म करके ही रहेंगे। अल्लाह ने उनका अ़ज़्म पूरा कर दिखाया। वो अबू जहल को मा'लूम करके उस पर ऐसे लपके जैसे शिकारी परिन्दे चिड़िया पर लपकता है।

3989. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उन्हे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, कहा कि मुझे उ़मर बिन उसैद बिन जारिया ष़क़फ़ी ने ख़बर दी जो बनी ज़ुहरा के हलीफ़ थे और ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के शागिर्दों में शामिल

٣٩٨٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ أَسِيدِ بْنِ جَارِيَةَ الثَّقَفِيُّ

थे कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा नबी करीम (ﷺ) ने दस जासूस भेजे और उनका अमीर आसिम बिन षाबित अंसारी (रज़ि.) को बनाया जो आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के नाना होते हैं। जब ये लोग अस्फ़ान और मक्का के दरम्यान मुक़ामे हद्दा पर पहुँचे तो बनी हुज़ैल के एक क़बीला को उनके आने की ख़बर मिल गई। इस क़बीले का नाम बनी लह्यान था। उसके सौ तीरंदाज़ उन सहाबा (रज़ि.) की तलाश में निकले और उनके निशाने क़दम के अंदाज़े पर चलने लगे। आख़िर उस जगह पहुँच गये जहाँ बैठकर उन सहाबा (रज़ि.) ने खजूर खाई थी। उन्होंने कहा कि ये यष्रिब (मदीना) की खजूर (की गुठलियाँ) हैं। अब फिर वो उनके निशाने क़दम के अंदाज़े पर चलने लगे। जब हज़रत आसिम बिन षाबित (रज़ि.) और उनके साथियों ने उनके आने को मा'लूम कर लिया तो एक (महफ़ूज़) जगह पनाह ली। क़बीला वालों ने उन्हें अपने घेरे में ले लिया और कहा कि नीचे उतर आओ और हमारी पनाह ख़ुद क़ुबूल कर लो तो तुमसे हम वा'दा करते हैं कि तुम्हारे किसी आदमी को क़त्ल नहीं करेंगे। हज़रत आसिम बिन षाबित (रज़ि.) ने कहा। मुसलमानों! मैं किसी काफ़िर की पनाह में नहीं उतर सकता। फिर उन्होंने दुआ की, ऐ अल्लाह! हमारे हालात की ख़बर अपने नबी (ﷺ) को कर दे। आख़िर क़बीले वालों ने मुसलमानो पर तीरंदाज़ी की और हज़रत आसिम (रज़ि.) को शहीद कर दिया। बाद में उनके वा'दा पर तीन सहाबा उतर आए। ये हज़रात हज़रत ख़ुबैब, ज़ैद बिन दष्ना और एक तीसरे सहाबी थे। क़बीले वालों ने जब इन तीनों सहाबियों पर क़ाबू पा लिया तो उनकी कमान से तांत निकालकर उसी से उन्हें बाँध दिया। तीसरे सहाबी ने कहा, ये तुम्हारी पहली दग़ाबाज़ी है मैं तुम्हारे साथ कभी नहीं जा सकता। मेरे लिये तो उन्हीं की ज़िन्दगी नमूना है। आपका इशारा उन सहाबा की तरफ़ था जो अभी शहीद किये जा चुके थे। कुफ़्फ़ार ने उन्हें घसीटना शुरू किया और ज़बरदस्ती की लेकिन वो किसी तरह उनके साथ जाने पर तैयार न हुए। (तो उन्होंने उनको भी शहीद कर दिया) और हज़रत ख़ुबैब (रज़ि.) और हज़रत ज़ैद बिन दष्ना (रज़ि.) को साथ ले गये और (मक्का में ले जाकर) उन्हें बेच दिया। ये बद्र की लड़ाई

حَلِيفُ بَنِي زُهْرَةَ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشَرَةً عَيْنًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ بْنَ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيَّ جَدَّ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ حَتَّى إِذَا كَانُوا بِالْهَدَّةِ بَيْنَ عَسْفَانَ وَمَكَّةَ ذُكِرُوا لِحَيٍّ مِنْ هُذَيْلٍ يُقَالُ لَهُمْ بَنُو لِحْيَانَ فَنَفَرُوا لَهُمْ بِقَرِيبٍ مِنْ مِائَةِ رَجُلٍ رَامٍ فَاقْتَصُّوا آثَارَهُمْ حَتَّى وَجَدُوا مَأْكَلَهُمُ التَّمْرَ فِي مَنْزِلٍ نَزَلُوهُ فَقَالُوا: تَمْرُ يَثْرِبَ فَاتَّبَعُوا آثَارَهُمْ فَلَمَّا حَسَّ بِهِمْ عَاصِمٌ وَأَصْحَابُهُ لَجَؤُوا إِلَى مَوْضِعٍ فَأَحَاطَ بِهِمُ الْقَوْمُ فَقَالُوا لَهُم انْزِلُوا فَأَعْطُوا بِأَيْدِيكُمْ وَلَكُمُ الْعَهْدُ وَالْمِيثَاقُ أَنْ لاَ نَقْتُلَ مِنْكُمْ أَحَدًا، فَقَالَ عَاصِمُ بْنُ ثَابِتٍ: أَيُّهَا الْقَوْمُ أَمَّا أَنَا فَلاَ أَنْزِلُ فِي ذِمَّةِ كَافِرٍ ثُمَّ قَالَ اللَّهُمَّ أَخْبِرْ عَنَّا نَبِيَّكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَمَوْهُمْ بِالنَّبْلِ فَقَتَلُوا عَاصِمًا وَنَزَلَ إِلَيْهِمْ ثَلاَثَةُ نَفَرٍ عَلَى الْعَهْدِ وَالْمِيثَاقِ مِنْهُمْ خُبَيْبٌ وَزَيْدُ بْنُ الدَّثِنَةِ وَرَجُلٌ آخَرُ فَلَمَّا اسْتَمْكَنُوا مِنْهُمْ أَطْلَقُوا أَوْتَارَ قِسِيِّهِمْ فَرَبَطُوهُمْ بِهَا قَالَ الرَّجُلُ الثَّالِثُ: هَذَا أَوَّلُ الْغَدْرِ وَاللهِ لاَ أَصْحَبُكُمْ إِنَّ لِي بِهَؤُلاَءِ أُسْوَةً يُرِيدُ الْقَتْلَى فَجَرَّرُوهُ وَعَالَجُوهُ فَأَبَى أَنْ يَصْحَبَهُمْ فَانْطُلِقَ بِخُبَيْبٍ وَزَيْدِ بْنِ الدَّثِنَةِ حَتَّى بَاعُوهُمَا بَعْدَ

وَقْعَةِ بَدْرٍ فَابْتَاعَ بَنُو الْحَارِثِ بْنِ عَامِرِ بْنِ نَوْفَلٍ خُبَيْبًا وَكَانَ خُبَيْبٌ هُوَ قَتَلَ الْحَارِثَ بْنَ عَامِرٍ يَوْمَ بَدْرٍ فَلَبِثَ خُبَيْبٌ عِنْدَهُمْ أَسِيرًا حَتَّى أَجْمَعُوا قَتْلَهُ فَاسْتَعَارَ مِنْ بَعْضِ بَنَاتِ الْحَارِثِ مُوسَى يَسْتَحِدُّ بِهَا فَأَعَارَتْهُ فَدَرَجَ بُنَيٌّ لَهَا وَهِيَ غَافِلَةٌ عَنْهُ حَتَّى أَتَاهُ فَوَجَدَتْهُ مُجْلِسَهُ عَلَى فَخِذِهِ وَالْمُوسَى بِيَدِهِ، قَالَتْ: فَفَزِعْتُ فَزْعَةً عَرَفَهَا خُبَيْبٌ فَقَالَ: أَتَخْشَيْنَ أَنْ أَقْتُلَهُ؟ مَا كُنْتُ لأَفْعَلَ ذَلِكَ؟ قَالَتْ : وَاللَّهِ مَا رَأَيْتُ أَسِيرًا قَطُّ خَيْرًا مِنْ خُبَيْبٍ، وَاللَّهِ لَقَدْ وَجَدْتُهُ يَوْمًا يَأْكُلُ قِطْفًا مِنْ عِنَبٍ فِي يَدِهِ وَإِنَّهُ لَمُوثَقٌ بِالْحَدِيدِ وَمَا بِمَكَّةَ مِنْ ثَمَرَةٍ وَكَانَتْ تَقُولُ إِنَّهُ لَرِزْقٌ رَزَقَهُ اللَّهُ خُبَيْبًا فَلَمَّا خَرَجُوا بِهِ مِنَ الْحَرَمِ لِيَقْتُلُوهُ فِي الْحِلِّ قَالَ لَهُمْ خُبَيْبٌ: دَعُونِي أُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ فَتَرَكُوهُ فَرَكَعَ رَكْعَتَيْنِ فَقَالَ: وَاللَّهِ لَوْ لاَ أَنْ تَحْسِبُوا أَنَّ مَا بِي جَزَعٌ لَزِدْتُ ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ أَحْصِهِمْ عَدَدًا، وَاقْتُلْهُمْ بَدَدًا وَلاَ تُبْقِ مِنْهُمْ أَحَدًا، ثُمَّ أَنْشَأَ يَقُولُ:

فَلَسْتُ أُبَالِي حِينَ أُقْتَلُ مُسْلِمًا
عَلَى أَيِّ جَنْبٍ كَانَ لِلَّهِ مَصْرَعِي
وَذَلِكَ فِي ذَاتِ الإِلَهِ وَإِنْ يَشَأْ
يُبَارِكْ عَلَى أَوْصَالِ شِلْوٍ مُمَزَّعِ

ثُمَّ قَامَ إِلَيْهِ أَبُو سِرْوَعَةَ عُقْبَةُ بْنُ الْحَارِثِ فَقَتَلَهُ وَكَانَ خُبَيْبٌ هُوَ سَنَّ لِكُلِّ مُسْلِمٍ قُتِلَ صَبْرًا الصَّلاَةَ وَأَخْبَرَ يَعْنِي النَّبِيَّ صَلَّى

के बाद का वाक़िया है। ह़ारिष़ बिन आ़मिर बिन नौफ़िल के लड़कों ने ह़ज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) को ख़रीद लिया। उन्होंने ही बद्र की लड़ाई में ह़ारिष़ बिन आ़मिर को क़त्ल किया था। कुछ दिनों तक तो वो उनके यहाँ कैद रहे, आख़िर उन्होंने उनके क़त्ल का इरादा किया। उन्हीं दिनों ह़ारिष़ की किसी लड़की से उन्होंने मूए ज़ेरे नाफ़ स़ाफ़ करने के लिये उस्तरा मांगा। उसने दे दिया। उस वक़्त उसका एक छोटा सा बच्चा उनके पास (खेलता हुआ) उस औ़रत की बेख़बरी में चला गया। फिर जब वो उनकी त़रफ़ आई तो देखा कि बच्चा उनकी रान पर बैठा हुआ है और उस्तरा उनके हाथ में है। उन्होंने बयान किया कि ये देखते ही वो इस दर्जा घबरा गई कि ह़ज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) ने उसकी घबराहट को देख लिया और बोले, क्या तुम्हें इसका डर है कि मैं इस बच्चे को क़त्ल कर दूँगा? यक़ीन रखो कि मैं ऐसा हर्गिज़ नहीं कर सकता। उन ख़ातून ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! मैंने कभी कोई क़ैदी ह़ज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) से बेहतर नहीं देखा। अल्लाह की क़सम! मैंने एक दिन अंगूर के एक ख़ोशा से अंगूर खाते देखा जो उनके हाथ में था ह़ालाँकि वो लोहे की ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे और मक्का में उस वक़्त कोई फल भी नहीं था। वो बयान करती थीं कि वो तो अल्लाह की त़रफ़ से भेजी हुई रोज़ी थी जो उसने ह़ज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) के लिये भेजी थी। फिर बनू ह़ारिष़ा उन्हें क़त्ल करने के लिये ह़रम से बाहर ले जाने लगे तो ख़ुबेब (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मुझे दो रकअ़त नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दे दो। उन्होंने उसकी इजाज़त दे दी तो उन्होंने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! अगर तुम्हें ये ख़याल न होने लगता कि मैं परेशानी की वजह से (देर तक नमाज़ पढ़ रहा हूँ) तो और ज़्यादा देर तक पढ़ता। फिर उन्होंने दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! उनमें से हर एक को अलग अलग हलाक कर और एक को भी बाक़ी न छोड़ और ये अश्आ़र पढ़े, जब मैं इस्लाम पर क़त्ल किया जा रहा हूँ तो मुझे कोई परवाह नहीं कि अल्लाह की राह में मुझे किस पहलू पर पछाड़ा जाएगा ये तो स़िर्फ़ अल्लाह की रज़ा ह़ासिल करने के लिये है। अगर वो चाहेगा तो मेरे जिस्म के एक एक जोड़ पर ष़वाब अ़ता करेगा। उसके बाद अबू सरूआ़ उ़क़्बा बिन ह़ारिष़ उनकी त़रफ़ बढ़ा और उन्हें शहीद

اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصْحَابَهُ يَوْمَ أُصِيبُوا خَبَرَهُمْ، وَبَعَثَ نَاسٌ مِنْ قُرَيْشٍ إِلَى عَاصِمِ بْنِ ثَابِتٍ حِينَ حُدِّثُوا أَنَّهُ قُتِلَ أَنْ يُؤْتَوا بِشَيْءٍ مِنْهُ يُعْرَفُ وَكَانَ قَتَلَ رَجُلاً عَظِيمًا مِنْ عُظَمَائِهِمْ فَبَعَثَ اللهُ لِعَاصِمٍ مِثْلَ الظُّلَّةِ مِنَ الدَّبْرِ فَحَمَتْهُ مِنْ رُسُلِهِمْ فَلَمْ يَقْدِرُوا أَنْ يَقْطَعُوا مِنْهُ شَيْئًا. وَقَالَ كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ : ذَكَرُوا مُرَارَةَ بْنَ الرَّبِيعِ الْعَمْرِيَّ وَهِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ الْوَاقِفِيَّ رَجُلَيْنِ صَالِحَيْنِ قَدْ شَهِدَا بَدْرًا.

[راجع: ٣٠٤٥]

कर दिया। हज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) ने अपने अमले हस्ना से हर उस मुसलमान के लिये जिसे क़ैद करके क़त्ल किया जाए (क़त्ल से पहले दो रकअत) नमाज़ की सुन्नत क़ायम की है। इधर जिस दिन उन सहाबा (रज़ि.) पर मुसीबत आई थी हुज़ूर (ﷺ) ने अपने सहाबा (रज़ि.) को उसी दिन उसकी ख़बर दे दी थी। कुरैश के कुछ लोगों को जब मा'लूम हुआ कि आसिम बिन षाबित (रज़ि.) शहीद कर दिये गये हैं तो उनके पास अपने आदमी भेजे ताकि उनके ज़िस्म का कोई ऐसा हिस्सा लाएँ, जिससे उन्हें पहचाना जा सके। क्योंकि उन्होंने (बद्र में) उनके एक सरदार (उक़्बा बिन अबी मुईत) को क़त्ल किया था लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी लाश पर बादल की तरह भिड़ों की एक फ़ौज भेज दी और उन्होंने आपकी लाश को कुफ़्फ़ारे कुरैश के उन आदमियों से बचा लिया और वो उनके जिस्म का कोई हिस्सा भी न काट सके और कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे सामने लोगों ने मुरारह बिन रबीअ उमरी (रज़ि.) और हिलाल बिन उमय्या वाक़फ़ी (रज़ि.) का ज़िक्र किया। (जो ग़ज़्व-ए-तबूक में नही जा सके थे) कि वो सालेह सहाबियों में से हैं और बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे। (राजेअ : 3045)

तश्रीह : इस लम्बी हदीष में जिन दस आदमियों का ज़िक्र है, उनमे सात के नाम ये हैं। मर्षद ग़नवी, ख़ालिद बिन बुकैर, ख़ुबेब बिन अदी, ज़ैद बिन दष्ना, अब्दुल्लाह बिन तारिक़, मुअतब बिन उबैद (रज़ि.) उनके अमीर आसिम बिन षाबित (रज़ि.) थे। बाक़ी तीनों के नाम मज़्कूर नहीं हैं। रास्ते में कुफ़्फ़ार बनू लह़यान उनके पीछे लग गये। आख़िर उनको पा लिया और उनमें से सरदार समेत सात मुसलमानों को उन काफ़िरों ने शहीद कर दिया और तीन मुसलमानों को गिरफ़्तार कर लिया, जिनके नाम ये हैं। ख़ुबेब बिन अदी, ज़ैद बिन दष्ना, और अब्दुल्लाह बिन तारिक़ (रज़ि.)। रास्ते में हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) को भी शहीद कर दिया और पिछले दो को मक्का में ले जाकर गुलाम बनाकर बेच दिया। ज़ैद बिन दष्ना को सफ़्वान बिन उमय्या ने ख़रीदा और ख़ुबेब (रज़ि.) को हारिष बिन आमिर के बेटों ने। ख़ुबेब (रज़ि.) ने बद्र के दिन हारिष मज़्कूर को क़त्ल किया था। अब उसके बेटों ने मुफ़्त में बदला लेने की ग़र्ज़ से हज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) को ख़रीद लिया और हुर्मत के महीने को गुज़ारकर उनको शहीद कर डालने का फ़ैसला कर लिया। उन अय्याम में हज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) के करामात को उन लोगों ने देखा कि बेमौसम के फल अल्लाह तआला ग़ैब से उनको खिला रहा है जैसे हज़रत मरयम (अलैहस्सलाम) को बेमौसम के फल मिला करते थे। आख़िरी दिनों में शहादत की तैयारी के वास्ते सफ़ाई सुथराई हासिल करने के लिये हज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) ने उनकी एक लड़की से उस्तरा मांगा मगर जबकि उनका एक दूध पीता बच्चा हज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) के पास जाकर खेलने लगा तो उस औरत को ख़तरा हुआ कि शायद ख़ुबेब (रज़ि.) उस उस्तरे से उस मा'सूम को ज़िब्ह कर डालें जिस पर हज़रत ख़ुबेब (रज़ि.) ने ख़ुद बढ़कर उस औरत को इत्मीनान दिलाया कि एक सच्चे मुसलमान से ऐसा क़त्ले नाहक़ होना नामुम्किन है। आख़िर में दो रकअत नमाज़ के बाद जब उनको क़त्लगाह मे लाया गया तो उन्होंने ये अश्आर पढ़े जिनका यहाँ ज़िक्र मौजूद है। हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने उन शे'रों का शे'अरों ही में तर्जुमा किया है :

जब मुसलमाँ हो के दुनिया से चलूँ — मुझको क्या ग़म कौनसी करवट गिरूँ
मेरा मरना है अल्लाह की ज़ात में — वो अगर चाहे न होऊँगा में ज़बूँ
तन जो टुकड़े टुकड़े अब हो जाएगा — उसके जोड़ों पर वो बरकत दे फ़ज़ूँ

बैहक़ी ने रिवायत की है कि ख़ुबेब (रज़ि.) ने मरते वक़्त दुआ की थी कि या अल्लाह! हमारे हाल की ख़बर अपने हबीब (ﷺ) को पहुँचा दे। उसी वक़्त हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आए और सारे हालात की ख़बर दे दी। रिवायत के आख़िर में दो बद्री सहाबियों का ज़िक्र है जिससे दम्याती का रद्द हुआ। जिसने उन दोनों के बद्री होने का इंकार किया है। इष्बात नफ़ी पर मुक़द्दम है। ये मज़्मून एक हदीष का टुकड़ा है जिसे हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने ग़ज़्व-ए-तबूक़ में ज़िक्र किया है।

3990. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने जुम्आ के दिन ज़िक्र किया कि हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) जो बद्री सहाबी थे, बीमार हैं। दिन चढ़ चुका था। हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) सवार होकर उनके पास तशरीफ़ ले गये। इतने में जुम्आ का वक़्त क़रीब हो गया और वो जुम्आ की नमाज़ (मजबूरन) न पढ़ सके।

٣٩٩٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَحْيَى عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ذُكِرَ لَهُ أَنَّ سَعِيدَ بْنَ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ وَكَانَ بَدْرِيًّا مَرِضَ فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ فَرَكِبَ إِلَيْهِ بَعْدَ أَنْ تَعَالَى النَّهَارُ وَاقْتَرَبَتِ الْجُمُعَةُ وَتَرَكَ الْجُمُعَةَ.

तश्रीह : इस हदीष को बयान करने से यहाँ ग़र्ज़ ये है कि सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) बद्र वालों में से थे। गो ये जंग में शरीक न थे क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उनको और तलहा (रज़ि.) को जासूसी का महकमा सुपुर्द कर दिया था। उनकी वापसी से पहले ही लड़ाई शुरू हो गई। जब ये लौटकर आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने मुजाहिदीन की तरह उनका भी हिस्सा लगाया, इस वजह से ये भी बद्री हुए। ये हज़रत उमर (रज़ि.) के उम्मे ज़ाद भाई और उनके बहनोई भी थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने उनकी अयादत ज़रूरी समझी, वो मरने के क़रीब हो रहे थे, इसी वजह से हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने जुम्आ की नमाज़ को भी मजबूरन तर्क कर दिया।

3991. और लैष बिन सअद ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने बयान किया कि उनके वालिद ने उमर बिन अब्दुल्लाह बिन अरक़म ज़ुह्री को लिखा कि तुम सबीआ बिन्ते हारिष असलमिया (रज़ि.) के पास जाओ और उनसे उनके वाक़िया के बारे में पूछो कि जब उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) से मसला पूछा था तो आपने उनको क्या जवाब दिया था? चुनाँचे उन्होंने मेरे वालिद को उसके जवाब में लिखा कि सबीआ बिन्ते हारिष (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी है कि वो सअद इब्ने ख़ौला (रज़ि.) के निकाह में थीं। उनका रिश्ता बनी आमिर बिन लूई से था और वो बद्र की जंग में शिर्कत करने वालों में थे। फिर हज्जतुल विदाअ के

٣٩٩١- وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ ابْنِ عُتْبَةَ أَنَّ أَبَاهُ كَتَبَ إِلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الأَرْقَمِ الزُّهْرِيِّ يَأْمُرُهُ أَنْ يَدْخُلَ عَلَى سُبَيْعَةَ بِنْتِ الْحَارِثِ الأَسْلَمِيَّةِ فَيَسْأَلَهَا عَنْ حَدِيثِهَا وَعَنْ مَا قَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ، حِينَ اسْتَفْتَتْهُ فَكَتَبَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ الأَرْقَمِ إِلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ يُخْبِرُهُ أَنَّ سُبَيْعَةَ بِنْتَ الْحَارِثِ

मौक़े पर उनकी वफ़ात हो गई थी और उस वक़्त वो हमल से थीं। हज़रत सअद इब्ने ख़ौला (रज़ि.) की वफ़ात के कुछ ही दिन बाद उनके यहाँ बच्चा पैदा हुआ। निफ़ास के दिन जब वो गुज़ार चुकीं तो निकाह का पैग़ाम भेजने वालों के लिये उन्होंने अच्छे कपड़े पहने। उस वक़्त बनू अब्दुद्दार के एक सहाबी अबुस्सनाबिल बिन बअकक (रज़ि.) उनके यहाँ गये और उनसे कहा, मेरा ख़याल है कि तुमने निकाह का पैग़ाम भेजने वालों के लिये ये ज़ीनत की है। क्या निकाह करने का ख़याल है? लेकिन अल्लाह की क़सम! जब तक (हज़रत सअद रज़ि. की वफ़ात पर) चार महीने और दस दिन न गुज़र जाएँ तुम निकाह के क़ाबिल नहीं हो सकतीं। सबीआ (रज़ि.) ने बयान किया कि जब अबुल सिनान ने मुझसे ये बात कही तो मैंने शाम होते ही कपड़े पहने और आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसके बारे में मैंने आपसे मसला मा'लूम किया। हुज़ूर (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि मैं बच्चा पैदा होने के बाद इद्दत से निकल चुकी हूँ और अगर मैं चाहूँ तो निकाह कर सकती हूँ। इस रिवायत की मुताबअत अस्बग़ ने इब्ने वहब से की है, उनसे यूनुस ने बयान किया और लैष ने कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, (उन्होंने बयान किया कि) हमने उनसे पूछा तो उन्होंने बयान किया कि मुझे बनू आमिर बिन लूई के ग़ुलाम मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन षौबान ने ख़बर दी कि मुहम्मद बिन अयास बिन बुकैर ने उन्हें ख़बर दी और उनके वालिद अयास बद्र की लड़ाई में शरीक थे।

(दीगर मक़ाम : 5319)

أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا كَانَتْ تَحْتَ سَعْدِ بْنِ خَوْلَةَ وَهُوَ مِنْ بَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ وَكَانَ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا فَتُوُفِّيَ عَنْهَا فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ وَهِيَ حَامِلٌ فَلَمْ تَنْشَبْ أَنْ وَضَعَتْ حَمْلَهَا بَعْدَ وَفَاتِهِ فَلَمَّا تَعَلَّتْ مِنْ نِفَاسِهَا تَجَمَّلَتْ لِلْخُطَّابِ فَدَخَلَ عَلَيْهَا أَبُو السَّنَابِلِ بْنُ بَعْكَكٍ رَجُلٌ مِنْ بَنِي عَبْدِ الدَّارِ فَقَالَ لَهَا مَا لِي أَرَاكِ تَجَمَّلْتِ لِلْخُطَّابِ تُرَجِّينَ النِّكَاحَ فَإِنَّكِ وَاللَّهِ مَا أَنْتِ بِنَاكِحٍ حَتَّى تَمُرَّ عَلَيْكِ أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ وَعَشْرٌ قَالَتْ سُبَيْعَةُ: فَلَمَّا قَالَ لِي ذَلِكَ جَمَعْتُ عَلَيَّ ثِيَابِي حِينَ أَمْسَيْتُ وَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ فَأَفْتَانِي بِأَنِّي قَدْ حَلَلْتُ حِينَ وَضَعْتُ حَمْلِي وَأَمَرَنِي بِالتَّزَوُّجِ إِنْ بَدَا لِي. تَابَعَهُ أَصْبَغُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ وَسَأَلْنَاهُ فَقَالَ: أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ ثَوْبَانَ مَوْلَى بَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ إِيَاسِ بْنِ الْبُكَيْرِ وَكَانَ أَبُوهُ شَهِدَ بَدْرًا أَخْبَرَهُ. [طرفه في: ٥٣١٩].

तश्रीह : इस हदीष़ का बाब से ता'ल्लुक़ ये है कि उसमें सअद बिन ख़ौला का बद्री होना मज़्कूर है। लैष़ बिन सअद के अष़र को इमाम बुख़ारी ने अपनी तारीख़ मे पूरे तौर पर बयान किया है। यहाँ इतनी ही सनद पर इक्तिफ़ा किया, क्योंकि यहाँ इतना ही बयान मक़्सूद है कि अयास (रज़ि.) बद्री थे। इस हदीष़ से ये भी ज़ाहिर हुआ कि हामिला औरत वज़्ओ हमल के बाद चाहे तो निकाह कर सकती है।

बाब 11 : जंगे बद्र में फ़रिश्तों का शरीक होना

١١– باب شُهُودِ الْمَلاَئِكَةِ بَدْرًا

3992. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, हमको जरीर ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन सईद अंसारी ने, उन्हें मुआज़ बिन रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ ज़रक़ी ने अपने वालिद (रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ)

٣٩٩٢– حدثني إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ

से, जो बद्र की लड़ाई में शरीक होने वालों में थे, उन्होंने बयान किया कि ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आए और आपसे पूछा कि बद्र की लड़ाई में शरीक होने वालों का आपके यहाँ दर्जा क्या है? आपने फ़र्माया कि मुसलमानों में सबसे अफ़ज़ल या हुज़ूर (ﷺ) ने इसी तरह का कोई कलिमा इर्शाद फ़र्माया। ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहि.) ने कहा कि जो फ़रिश्ते बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे उनका भी दर्जा यही है।

(दीगर मक़ाम : 3994)

مُعَاذِ بْنِ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ الزُّرَقِيِّ عَنْ أَبِيهِ وَكَانَ أَبُوهُ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ قَالَ: جَاءَ جِبْرِيلُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا تَعُدُّونَ أَهْلَ بَدْرٍ فِيكُمْ قَالَ: مِنْ أَفْضَلِ الْمُسْلِمِينَ أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا قَالَ: وَكَذَلِكَ مَنْ شَهِدَ بَدْرًا مِنَ الْمَلاَئِكَةِ)).

[طرفه في :٣٩٩٤].

तश्रीह : अगरचे फ़रिश्ते और जंगों में भी उतरते थे मगर बद्र में फ़रिश्तों ने लड़ाई की। बैहक़ी ने रिवायत की है कि फ़रिश्तों की मार पहचानी जाती थी। गर्दन पर चोट और पोरों पर आग का सा दाग़। इस्हाक़ की सनद में है जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) से कि बद्र के दिन मैंने काफ़िरों की शिकस्त से पहले आसमान से काली काली चींटियाँ उतरती देखीं। ये फ़रिश्ते थे जिनके उतरने के बाद फ़ौरन काफ़िरों को शिकस्त हुई। एक रिवायत में है कि एक मुसलमान बद्र के दिन एक काफ़िर को मारने जा रहा था इतने में आसमान से एक कोड़े की आवाज़ सुनी। कोई कह रहा था ऐ हैज़ूम! आगे बढ़, फिर वो काफ़िर मरकर गिर पड़ा।

3993. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे मुआज़ बिन रेफ़ाआ बिन राफ़ेअ ने, ह़ज़रत रेफ़ाआ (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे और (उनके वालिद) ह़ज़रत राफ़ेअ (रज़ि.) बेअ़ते अ़क़बा में शरीक हुए थे तो आप अपने बेटे (रेफ़ाआ) से कहा करते थे कि बेअ़ते अ़क़बा के बराबर बद्र की शिर्कत से मुझे ज़्यादा ख़ुशी नहीं है। बयान किया कि ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने नबी करीम (ﷺ) से इस बाब में पूछा था।

٣٩٩٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ مُعَاذِ بْنِ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ وَكَانَ رِفَاعَةُ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ وَكَانَ رَافِعٌ مِنْ أَهْلِ الْعَقَبَةِ فَكَانَ يَقُولُ لاِبْنِهِ مَا يَسُرُّنِي أَنِّي شَهِدْتُ بَدْرًا بِالْعَقَبَةِ قَالَ: سَأَلَ جِبْرِيلُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهَذَا.

3994. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, हमको यज़ीद बिन हारून ने ख़बर दी, कहा हमको यह्या बिन सईद अंसारी ने ख़बर दी और उन्होंने मुआज बिन रिफ़ाआ से सुना कि एक फ़रिश्ते ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा और यह्या बिन सईद अंसारी से रिवायत है कि यज़ीद बिन हाद ने उन्हें ख़बर दी कि जिस दिन मुआज़ बिन रेफ़ाआ ने उनसे ये ह़दीष़ बयान की थी तो वो भी उनके साथ थे। यज़ीद ने बयान किया कि मुआज़ ने कहा था कि पूछने वाले ह़ज़रत जिब्रईल (अ) थे। (राजेअ : 3992)

٣٩٩٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ أَخْبَرَنَا يَحْيَى يَزِيدُ سَمِعَ مُعَاذَ بْنَ رِفَاعَةَ أَنَّ مَلَكًا سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ وَعَنْ يَحْيَى أَنَّ يَزِيدَ بْنَ الْهَادِ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ كَانَ مَعَهُ يَوْمَ حَدَّثَهُ مُعَاذٌ هَذَا الْحَدِيثَ فَقَالَ يَزِيدُ فَقَالَ مُعَاذٌ: إِنَّ السَّائِلَ هُوَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ. [راجع: ٣٩٩٢]

तश्रीह : या'नी बद्र वालों को जैसा कि ऊपर गुज़रा है ह़ज़रत राफ़ेअ (रज़ि.) बेअ़ते अ़क़बा में शरीक होना बद्र में शरीक होने से अफ़ज़ल जानते थे। क्योंकि बेअ़ते अ़क़बा ही आँह़ज़रत (ﷺ) की कामयाबी और हिजरत का बाअ़िष बनी तो इस्लाम की बुनियाद यही ठहरी।

3995. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, हमको अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बद्र की लड़ाई में फ़र्माया था, ये हैं हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) अपने घोड़े का सर थामे हुए और हथियार लगाए हुए। (दीगर मक़ाम : 4041)

٣٩٩٥- حدثني إبراهيم بن موسى أخبرنا عبد الوهاب حدثنا خالد عن عكرمة عن ابن عباس رضي الله عنهما أن النبي ﷺ قال يوم بدر ((هذا جبريل آخذ برأس فرسه عليه أداة الحرب)).

[طرفه في: ٤٠٤١].

जिनको अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों की मदद के लिये और भी बहुत से फ़रिश्तों के साथ मैदाने जंग में भेजा है।

तश्रीह : सईद बिन मंसूर की रिवायत में है कि हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) सुर्ख़ घोड़े पर सवार थे। उसकी पेशानी के बाल गुंधे हुए थे। इब्ने इस्हाक़ ने अबू वाक़िद लैष़ी से निकाला कि मैं बद्र के दिन एक काफ़िर को मारने चला मगर मेरे पहुँचने से पहले ही उसका सर ख़ुद ब ख़ुद तन से जुदा होकर गिर पड़ा। अभी मेरी तलवार उसके क़रीब पहुँची भी न थी। बैहक़ी ने निकाला कि बद्र के दिन एक सख़्त आँधी चली। पहली आँधी हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) की आमद थी। दूसरी हज़रत मीकाईल (अ़लैहिस्सलाम) की आमद थी। अगरचे अल्लाह का एक ही फ़रिश्ता दुनिया के सारे काफ़िरों को मारने के लिये काफ़ी था मगर परवरदिगार को ये मंज़ूर हुआ कि फ़रिश्तों को बतौर सिपाहियों के भेजे और उनसे आ़दत और क़ुव्वते बशरी (इन्सानी ताक़त) के मुवाफ़िक़ काम ले।

बाब 12 :

١٢- باب

3996. मुझसे ख़लीफ़ा ने बयान किया, हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू ज़ैद (रज़ि.) वफ़ात पा गये और उन्होंने कोई औलाद नहीं छोड़ी, वो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे। (राजेअ़ : 3810)

٣٩٩٦- حدثني خليفة حدثنا محمد بن عبد الله الأنصاري حدثنا سعيد عن قتادة عن أنس رضي الله عنه قال: مات أبو زيد ولم يترك عقبا وكان بدريا.

[راجع: ٣٨١٠]

3997. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने, उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब (रज़ि.) ने कि हज़रत अबू सईद बिन मालिक ख़ुदरी (रज़ि.) सफ़र से वापस आए तो उनके घर वाले क़ुर्बानी का गोश्त उनके सामने लाए। उन्होंने कहा कि मैं उसे उस वक़्त तक नहीं खाऊँगा जब तक उसका हुक्म न मा'लूम कर लूँ। चुनाँचे वो अपनी वालिदा की तरफ़ से अपने एक भाई के पास मा'लूम करने गये। वो बद्र की लड़ाई में शरीक होने वालों में से थे या'नी हज़रत क़तादा बिन नोअ़मान (रज़ि.)। उन्होंने बताया कि

٣٩٩٧- حدثنا عبد الله بن يوسف حدثنا الليث قال: حدثني يحيى عن سعيد عن القاسم بن محمد عن ابن خباب أن أبا سعيد بن مالك الخدري رضي الله عنه قدم من سفر فقدم إليه أهله لحما من لحوم الأضحى فقال: ما أنا بآكله حتى أسأل، فانطلق إلى أخيه لأمه وكان بدريا قتادة بن النعمان فسأله

فَقَالَ : إِنَّهُ حَدَثَ بَعْدَكَ أَمْرٌ نَقْضٌ لِمَا كَانُوا يُنْهَوْنَ عَنْهُ مِنْ أَكْلِ لُحُومِ الأَضْحَى بَعْدَ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ. [طرفه في :٥٥٦٨].

बाद में वो हुक्म मंसूख़ कर दिया गया था जिसमें तीन दिन से ज़्यादा क़ुर्बानी का गोश्त खाने की मुमानअ़त की गई थी।

(दीगर मक़ाम : 5568)

रिवायत में ह़ज़रत क़तादा (रज़ि.) का ज़िक्र है जो बद्री थे। बाब और ह़दीष़ में यही मुनासबत है।

٣٩٩٨- حدثني عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حدَّثَنَا أَبُو أُسامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيه قَالَ : قَالَ الزُّبَيْرُ لَقِيتُ يَوْمَ بَدْرٍ عُبَيْدَةَ بْنَ سَعِيد بْنِ الْعَاصِ مُدَجَّجٌ لاَ يُرَى مِنْهُ إِلاَّ عَيْنَاهُ وَهُوَ يُكْنَى أَبَا ذَاتِ الْكَرِشِ فَقَالَ: أَنَا أَبُو ذَاتِ الْكَرِشِ فَحَمَلْتُ عَلَيْهِ بِالْعَنَزَةِ فَطَعَنْتُهُ فِي عَيْنِهِ فَمَاتَ قَالَ هِشَامٌ: فَأُخْبِرْتُ أَنَّ الزُّبَيْرَ قَالَ: لَقَدْ وَضَعْتُ رِجْلِي عَلَيْهِ. ثُمَّ تَمَطَّأْتُ فَكَانَ الْجَهْدُ أَنْ نَزَعْتُهَا وَقَدِ انْثَنَى طَرَفَاهَا قَالَ عُرْوَةُ: فَسَأَلَهُ إِيَّاهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْطَاهُ فَلَمَّا قُبِضَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَهَا ثُمَّ طَلَبَهَا أَبُوبَكْرٍ فَأَعْطَاهُ، فَلَمَّا قُبِضَ أَبُوبَكْرٍ سَأَلَهَا إِيَّاهُ عُمَرُ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهَا، فَلَمَّا قُبِضَ عُمَرَ أَخَذَهَا ثُمَّ طَلَبَهَا عُثْمَانُ مِنْهُ، فَأَعْطَاهُ إِيَّاهَا، فَلَمَّا قُتِلَ عُثْمَانُ وَقَعَتْ عِنْدَ آلِ عَلِيٍّ فَطَلَبَهَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الزُّبَيْرِ فَكَانَتْ عِنْدَهُ حَتَّى قُتِلَ.

3998. मुझसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि बद्र की लड़ाई में मेरी मुठभेड़ उ़बैदा बिन सईद बिन आ़स़ से हो गई, उसका सारा जिस्म लाहे में ग़र्क़ था और सिर्फ़ आँख दिखाई दे रही थी। उसकी कुन्नियत अबू ज़ातुल कर्श थी। कहने लगा कि मैं अबू ज़ातुलकर्श हूँ। मैंने छोटे बर्छे से उस पर हमला किया और उसकी आँख ही को निशाना बनाया। चुनाँचे उस ज़ख़्म से वो मर गया। हिशाम ने बयान किया कि मुझे ख़बर दी गई है कि ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा, फिर मैंने अपना पाँव उसके ऊपर रखकर पूरा ज़ोर लगाया और बड़ी दुश्वारी से वो बरछा उसकी आँख से निकाल सका। उसके दोनों किनारे मुड़ गये थे। उ़र्वा ने बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ुबैर (रज़ि.) का वो बरछा त़लब किया तो उन्होंने वो पेश कर दिया। जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की वफ़ात हो गई तो उन्होंने उसे वापस ले लिया। फिर अबूबक्र (रजि) ने त़लब किया तो उन्होंने उन्हें भी दे दिया। अबूबक्र (रजि) की वफ़ात के बाद उ़मर (रज़ि.) ने त़लब किया। उन्होंने उन्हें भी दे दिया। उ़मर (रज़ि.) की वफ़ात के बाद उन्होंने उसे ले लिया। फिर उ़ष्मान (रज़ि.) ने त़लब किया तो उन्होंने उन्हें भी दे दिया। उ़ष्मान (रज़ि.) की शहादत के बाद वो बरछा अ़ली (रज़ि.) के पास चला गया और उनके बाद उनकी औलाद के पास और उसके बाद अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने उसे ले लिया और उनके पास ही वो रहा, यहाँ तक कि वो शहीद कर दिये गये।

बाब का मत़लब उससे निकला कि ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) ने बद्र के दिन का ये वाक़िया बयान किया। मा'लूम हुआ वो बद्री थे।

٣٩٩٩- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو إِدْرِيسَ

3999. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कहा कि मुझे इदरीस आ़ईज़ुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) ने, वो बद्र

عَائِذُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، أَنَّ عُبَادَةَ بْنَ الصَّامِتِ وَكَانَ شَهِدَ بَدْرًا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((بَايِعُونِي)). [راجع: ١٨]

की लड़ाई में शरीक हुए थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि मुझसे बेअ़त करो।

(राजेअ़ : 18)

ह़दीष़ में एक बद्री स़ह़ाबी ह़ज़रत उब़ादा (रज़ि.) का ज़िक्र है। ह़दीष़ और बाब में यही मुनासबत है।

٤٠٠٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ أَبَا حُذَيْفَةَ وَكَانَ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ تَبَنَّى سَالِمًا وَأَنْكَحَهُ بِنْتَ أَخِيهِ هِنْدًا بِنْتَ الْوَلِيدِ بْنِ عُتْبَةَ وَهُوَ مَوْلًى لاِمْرَأَةٍ مِنَ الأَنْصَارِ كَمَا تَبَنَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ زَيْدًا وَكَانَ مَنْ تَبَنَّى رَجُلاً فِي الْجَاهِلِيَّةِ دَعَاهُ النَّاسُ إِلَيْهِ وَوَرِثَ مِنْ مِيرَاثِهِ حَتَّى أَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى ﴿ادْعُوهُمْ لآبَائِهِمْ﴾ فَجَاءَتْ سَهْلَةُ النَّبِيَّ ﷺ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ. [الأحزاب: ٥]. [طرفه في : ٥٠٨٨].

4000. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उन्हें इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने ख़बर दी, उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा आ़यशा (रज़ि.) ने कि अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ बद्र की लड़ाई में शरीक होने वालों में थे, मैंने सालिम (रज़ि.) को अपना मुँह बोला बेटा बनाया था और अपनी भतीजी हिन्द बिन्त वलीद बिन उ़त्बा से शादी करा दी थी। सालिम (रज़ि.) एक अंस़ारी ख़ातून के गुलाम थे, जैसे नबी करीम (ﷺ) ने ज़ैद बिन ह़ारिष़ा (रज़ि.) को अपना मुँह बोला बेटा बना लिया था। जाहिलियत में ये दस्तूर था कि अगर कोई शख़्स़ किसी को अपना मुँह बोला बेटा बना लेता तो लोग उसी की त़रफ़ उसे मन्सूब करके पुकारते और मुँह बोला बेटा उसकी मीराष़ का भी वारिष़ होता। यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की कि, उन्हें उनके बापों की त़रफ़ मन्सूब करके पुकारो तो सहला (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं। फिर तफ़्सील से रावी ने ह़दीष़ बयान की। (दीगर मक़ाम : 5088)

तशरीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने पूरी ह़दीष़ नक़ल नहीं की। अबू दाऊद में मज़ीद यूँ है कि सहला (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम तो सालिम (रज़ि.) को बेटे की त़रह़ समझते थे। उससे पर्दा न था। अब आप क्या फ़र्माते हैं? आपने फ़र्माया, ऐसा कर तू सालिम (रज़ि.) को दूध पिला दे। उसने पाँच बार दूध पिलाया, फिर सालिम (रज़ि.) उनका रज़ाई बेटा समझा गया। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) का अ़मल इस ह़दीष़ पर था। मज़्कूरा वलीद बिन उ़त्बा जंगे बद्र में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के हाथों से मारा गया था। अबू हुज़ैफ़ा स़ह़ाबी (रज़ि.) उसी के भाई थे। जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था और ये मुहाजिरीने अव्वलीन मे से हैं।

٤٠٠١- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ ذَكْوَانَ عَنِ الرُّبَيِّعِ بِنْتِ مُعَوِّذٍ قَالَتْ : دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ غَدَاةَ بُنِيَ عَلَيَّ فَجَلَسَ عَلَى فِرَاشِي كَمَجْلِسِكَ مِنِّي وَجُوَيْرِيَاتٌ

4001. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन ज़क्वान ने, उनसे रबीअ़ बिन्ते मुअ़व्वज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि जिस रात मेरी शादी हुई थी नबी करीम (ﷺ) उसकी सुबह को मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए और बिस्तर पर बैठे, जैसे अब तुम यहाँ मेरे पास बैठे हुए हो। चन्द बच्चियाँ दुफ़ बजा रही थीं और वो अश्आर पढ़ रही थीं जिनमें उनके उन ख़ानदान वालों का ज़िक्र था

يَضْرِبْنَ بِالدُّفِّ يَنْدُبْنَ مَنْ قُتِلَ مِنْ آبَائِهِنَّ يَوْمَ بَدْرٍ حَتَّى قَالَتْ جَارِيَةٌ: وَفِينَا نَبِيٌّ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَقُولِي هَكَذَا وَقُولِي مَا كُنْتِ تَقُولِينَ)).

[طرفه في: ٥١٤٧].

जो बद्र की लड़ाई में शहीद हो गये थे, उन्हीं में एक लड़की ने ये मिस्रा भी पढ़ा कि, हममें नबी (ﷺ) हैं जो कल होने वाली बात को जानते हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ये न पढ़ो, बल्कि जो पहले पढ़ रही थीं वही पढ़ो।

(दीगर मक़ाम : 5148)

तशरीह : इस शे'र से आँहज़रत (ﷺ) का आ़लिमुल ग़ैब होना ज़ाहिर हो रहा था हालाँकि आ़लिमुल ग़ैब सिर्फ़ एक अल्लाह तआ़ला ही है इसीलिये आँहज़रत (ﷺ) ने इस शे'र के गाने से मना फ़र्मा दिया जो लोग आँहज़रत (ﷺ) को आ़लिमुल ग़ैब जानते हैं वो सरासर झूठे हैं। ये मुहब्बत नहीं बल्कि आप (ﷺ) से अ़दावत रखना है कि आपकी ह़दीष़ को झुठलाया जाए। क़ुर्आन को झुठलाया जाए। ह़दीष़ में शुह्दा-ए-बद्र का ज़िक्र है। बाब और ह़दीष़ में यही मुनासबत है। ह़दीष़ से नअ़तिया अश्आ़र का सुनाना भी जाइज़ ष़ाबित हुआ बशर्ते कि उनमें मुबालग़ा न हो।

٤٠٠٢ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو طَلْحَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ صَاحِبُ الرَّسُولِ ﷺ، وَكَانَ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((لاَ تَدْخُلُ الْمَلاَئِكَةُ بَيْتًا فِيهِ كَلْبٌ وَلاَ صُورَةٌ)) يُرِيدُ التَّمَاثِيلَ الَّتِي فِيهَا الأَرْوَاحُ. [راجع: ٣٢٢٥]

4002. हमसे इब्राहीम बिन मूसा राज़ी ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर बिन राशिद ने, उन्हें ज़ुह्री ने। (दूसरी सनद) और हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अ़ब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे मुहम्मद बिन अबी अ़तीक़ ने, उनसे इब्ने शिहाब (ज़ुह्री) ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) के स़हाबी अबू त़लहा (रज़ि.) ने ख़बर दी, वो हुज़ूर (ﷺ) के साथ बद्र की लड़ाई में शरीक थे कि फ़रिश्ते उस घर में नहीं आते जिसमें तस्वीर या कुत्ता हो। उनकी मुराद जानदार की तस्वीर से थी।

(राजेअ़ : 3225)

मुराद ये कि रह़मत के फ़रिश्ते ऐसे घर में नहीं आते बल्कि वो घर इताबे इलाही का मर्कज़ बन जाता है। अबू त़लहा (रज़ि.) स़हाबी-ए-बद्र हैं जो इस ह़दीष़ के रावी हैं। बाब और ह़दीष़ में यही मुनासबत है।

٤٠٠٣ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ ح وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا عَنْبَسَةُ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ

4003. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस बिन यज़ीद ने ख़बर दी। (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी ने कहा हमको अह़मद बिन स़ालेह़ ने ख़बर दी, उनसे अम्बसा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे

यूनुस ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उन्हें अली बिन हुसैन (इमाम ज़ैनुल आबेदीन) ने ख़बर दी, उन्हें हज़रत हुसैन बिन अली (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे बद्र की ग़नीमत में से मुझे एक और ऊँटनी मिली थी और इसी जंग की ग़नीमत में से अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) का जो ख़ुमुस के तौर पर हिस्सा मुक़र्रर किया था, उसमें से भी हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे एक ऊँटनी इनायत फ़र्माई थी। फिर मेरा इरादा हुआ कि हुज़ूर (ﷺ) की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की रुख़सती करा लाऊँ। इसलिये बनी क़ेनक़ाअ के एक सुनार से बातचीत की कि वो मेरे साथ चले और हम इज़्ख़र घास लाएँ। मेरा इरादा था कि मैं उस घास को सुनारों के हाथ बेच दूँगा और उसकी क़ीमत वलीमा की दा'वत में लगाऊँगा। मैं अभी अपनी ऊँटनी के लिये पालान, टोकरे और रस्सियाँ जमा कर रहा था। ऊँटनियाँ एक अंसारी सहाबी के हुज्रे के क़रीब बैठी हुई थीं। मैं जिन इंतिज़ामात में था जब वो पूरे हो गये तो (ऊँटनियों को लेने आया) वहाँ देखा कि उनके कोहान किसी ने काट दिये हैं और पेट चीरकर अंदर से कलेजी निकाल ली है। ये हालत देखकर मैं अपने आँसुओं को न रोक सका। मैंने पूछा, ये किसने किया है? लोगों ने बताया कि हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने और वो अभी उसी हुज्रे में अंसार के साथ शराबनोशी की एक मज्लिस में मौजूद हैं। उनके पास एक गाने वाली है और उनके दोस्त अहबाब हैं। गाने वाली गाते हुए जब ये मिस्रा पढ़ा हाँ ऐ हम्ज़ा! ये उम्दा और फ़र्बा ऊँटनियाँ हैं तो हम्ज़ा ने कूद कर अपनी तलवार थामी और उन दोनों ऊँटनियों के कोहान काट डाले और उनकी कोख चीरकर अंदर से कलेजी निकाल ली। हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैं वहाँ से नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, ज़ैद बिन हारिषा भी हुज़ूर की ख़िदमत में मौजूद थे। हुज़ूर (ﷺ) ने मेरे ग़म को पहले ही जान लिया और फ़र्माया कि क्या बात पेश आई? मैं बोला, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आज जैसी तकलीफ़ की बात कभी पेश नहीं आई थी। हम्ज़ा (रज़ि.) ने मेरी दोनों ऊँटनियों को पकड़कर उनके कोहान काट डाले और उनकी कोख चीर

أخبره أن عليا قال: كانت لي شارف من نصيبي من المغنم يوم بدر وكان النبي ﷺ أعطاني مما أفاء الله عليه من الخمس يومئذ، فلما أردت أن أبتني بفاطمة عليها السلام بنت النبي ﷺ واعدت رجلا صواغا في بني قينقاع أن يرتحل معي فنأتي بإذخر فأردت أن أبيعه من الصواغين فنستعين به في وليمة عرسي، فبينا أنا أجمع لشارفي من الأقتاب والغرائر والحبال وشارفاي مناخان إلى جنب حجرة رجل من الأنصار حتى جمعت ما جمعته فإذا أنا بشارفي قد أجبت أسنمتهما وبقرت خواصرهما وأخذ من أكبادهما فلم أملك عيني حين رأيت المنظر قلت من فعل هذا؟ قالوا: فعله حمزة بن عبد المطلب وهو في هذا البيت في شرب من الأنصار عنده قينة وأصحابه فقالت في غنائها: (ألا يا حمز للشرف النواء) فوثب حمزة إلى السيف فأجب أسنمتهما وبقر خواصرهما وأخذ من أكبادهما قال علي: فانطلقت حتى أدخل على النبي ﷺ وعنده زيد بن حارثة وعرف النبي ﷺ الذي لقيت فقال: ((ما لك؟)) قلت يا رسول الله ما رأيت كاليوم عدا حمزة على ناقتي فأجب أسنمتهما وبقر خواصرهما وها هو ذا في

بیت معه شرب فدعا النبي ﷺ بردائه فارتدى ثم انطلق يمشي واتبعته انا وزيد بن حارثة حتى جاء البيت الذي فيه حمزة فاستأذن عليه فأذن له فطفق النبي ﷺ يلوم حمزة فيما فعل فإذا حمزة ثمل محمرة عيناه فنظر حمزة إلى النبي ﷺ ثم صعد النظر فنظر إلى ركبته ثم صعد النظر فنظر إلى وجهه، ثم قال حمزة: وهل أنتم إلا عبيد لأبي؟ فعرف النبي ﷺ أنه ثمل فنكص رسول الله ﷺ على عقبيه القهقرى فخرج وخرجنا معه. [راجع: ٢٠٨٩]

डाली है। वो यहीं एक घर में शराब की मज्लिस जमाए बैठे हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी चादर मुबारक मंगवाई और उसे ओढ़कर आप तशरीफ़ ले चले। मैं और हज़रत ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) भी साथ साथ हो लिये। जब उस घर के क़रीब आप तशरीफ़ ले गये और हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) ने जो कुछ किया था उस पर उन्हें तम्बीह फ़र्माई। हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) शराब के नशे में मस्त थे और उनकी आँखें सुर्ख़ थीं। उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) की तरफ़ नज़र उठाई, फिर ज़रा और ऊपर उठाई और आपके घुटनों पर देखने लगे, फिर और नज़र उठाई और आपके चेहरे पर देखने लगे। फिर कहने लगे, तुम सब मेरे बाप के ग़ुलाम हो। हुज़ूर (ﷺ) समझ गये कि वो इस वक़्त मदहोश है, इसलिये आप फ़ौरन उलटे पाँव उस घर से बाहर निकल आए, हम भी आपके साथ थे। (राजेअ : 2089)

तश्रीह : उस वक़्त तक शराब की हुर्मत नाज़िल नहीं हुई थी। हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) ने हालते मदहोशी में ये काम कर दिया और जो कुछ कहा नशे की हालत में कहा। दूसरी रिवायत में है कि हम्ज़ा (रज़ि.) का नशा उतरने के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने ऊँटनियों की क़ीमत हज़रत अली (रज़ि.) को दिलवा दी थी। रिवायत में हज़रत अली (रज़ि.) को बद्र का हिस्सा मिलने का ज़िक्र है। बाब और हदीष़ में यही वजहे मुनासबत है।

٤٠٠٤– حدثني محمد بن عباد أخبرنا ابن عيينة قال : أنفذه لنا ابن الأصبهاني سمعه من ابن معقل أن عليا رضي الله عنه كبر على سهل بن حنيف فقال : إنه شهد بدرا.

4004. मुझसे मुहम्मद बिन अब्बाद ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान बिन उययना ने ख़बर दी, कहा कि ये रिवायत हमें अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन मअक़ल से सुना कि हज़रत अली (रज़ि.) ने सहल बिन हनीफ़ (रज़ि.) के जनाज़े पर तक्बीर कही और कहा कि वो बद्र की लड़ाई में शरीक थे।

तश्रीह : तक्बीरें तो सब ही के जनाज़ों पर कही जाती हैं, मगर हज़रत अली (रज़ि.) ने उनके जनाज़े पर ज़्यादा तक्बीरें कहीं या'नी पाँच या छ : जैसा कि दूसरी रिवायतों में है। गोया हज़रत अली (रज़ि.) ने ज़्यादा तक्बीरें कहने की वजह बयान की कि वो बद्री थे। उनको ख़ास दर्जा हासिल था। अगरचे जनाज़े पर 5, 6, 7, तक तक्बीरें कही जाती हैं मगर आँहज़रत (ﷺ) का आख़िरी अमल चार तक्बीरों का है इसलिये अब उन ही पर इज्माअ़े उम्मत है।

٤٠٠٥– حدثنا أبو اليمان أخبرنا شعيب عن الزهري قال : أخبرني سالم بن عبد الله أنه سمع عبد الله بن عمر رضي الله عنهما يحدث أن عمر بن الخطاب رضي

4005. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना और उन्होंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से बयान किया कि जब हफ़्सा बिन्ते उमर (रज़ि.) के शौहर ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी

(रज़ि.) की वफ़ात हो गई, वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के अस्हाब में थे और बद्र की लड़ाई में उन्होंने शिर्कत की थी और मदीना में उनकी वफ़ात हो गई थी। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरी मुलाक़ात उ़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) से हुई तो मैंने उनसे हफ़्सा का ज़िक्र किया और कहा कि अगर आप चाहें तो उसका निकाह मैं आपसे कर दूँ। उन्होंने कहा कि मैं सोचूँगा। इसलिये मैं चन्द दिनों के लिये ठहर गया, फिर उन्होंने कहा कि मेरी राय ये हुई है कि अभी मैं निकाह न करूँ। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि फिर मेरी मुलाक़ात हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से हुई और उनसे भी मैंने यही कहा कि अगर आप चाहें तो मैं आपका निकाह हफ़्सा बिन्ते उ़मर (रज़ि.) से कर दूँ। अबूबक्र (रज़ि.) ख़ामोश हो गये और कोई जवाब नहीं दिया। उनका ये त़रीक़-ए-अ़मल उ़ष्मान (रज़ि.) से भी ज़्यादा मेरे लिये बाअ़िषे तकलीफ़ हुआ। कुछ दिनों मैंने और तवक़्क़ुफ़ किया तो नबी करीम (ﷺ) ने ख़ुद हफ़्सा (रज़ि.) का पैग़ाम भेजा और मैंने उनका निकाह हुज़ूर (ﷺ) से कर दिया। उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) की मुलाक़ात मुझसे हुई तो उन्होंने कहा, शायद आपको मेरे इस तर्ज़े अ़मल से तकलीफ़ हुई होगी कि जब आपकी मुझसे मुलाक़ात हुई और आपने हफ़्सा (रज़ि.) के बारे में मुझसे बात की तो मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने कहा कि हाँ तकलीफ़ हुई थी। उन्होंने बताया कि आपकी बात का मैंने सिर्फ़ इसलिये कोई जवाब नहीं दिया था कि आँहज़रत (ﷺ) ने (मुझसे) हफ़्सा (रज़ि.) का ज़िक्र किया था (मुझसे मश्वरा लिया था कि क्या मैं इससे निकाह कर लूँ) और मैं आँहज़रत (ﷺ) का राज़ फ़ाश नहीं कर सकता था। अगर आप हफ़्सा (रज़ि.) से निकाह का इरादा छोड़ देते तो बेशक मैं उनसे निकाह कर लेता।

(दीगर मक़ाम : 5122, 5129, 5145)

اللهُ عَنْهُ حِينَ تَأَيَّمَتْ حَفْصَةُ بِنْتُ عُمَرَ مِنْ خُنَيْسِ بْنِ حُذَافَةَ السَّهْمِيِّ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا تُوُفِّيَ بِالْمَدِينَةِ قَالَ عُمَرُ: فَلَقِيتُ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ حَفْصَةَ فَقُلْتُ: إِنْ شِئْتَ أَنْكَحْتُكَ حَفْصَةَ بِنْتَ عُمَرَ قَالَ: سَأَنْظُرُ فِي أَمْرِي فَلَبِثْتُ لَيَالِيَ فَقَالَ : قَدْ بَدَا لِي أَنْ لاَ أَتَزَوَّجَ يَوْمِي هَذَا. قَالَ عُمَرُ : فَلَقِيتُ أَبَا بَكْرٍ فَقُلْتُ إِنْ شِئْتَ أَنْكَحْتُكَ حَفْصَةَ بِنْتَ عُمَرَ؟ فَصَمَتَ أَبُوبَكْرٍ فَلَمْ يَرْجِعْ إِلَيَّ شَيْئًا فَكُنْتُ عَلَيْهِ أَوْجَدَ مِنِّي عَلَى عُثْمَانَ فَلَبِثْتُ لَيَالِيَ ثُمَّ خَطَبَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَأَنْكَحْتُهَا إِيَّاهُ فَلَقِيَنِي أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ: لَعَلَّكَ وَجَدْتَ عَلَيَّ حِينَ عَرَضْتَ عَلَيَّ حَفْصَةَ فَلَمْ أَرْجِعْ إِلَيْكَ قُلْتُ : نَعَمْ قَالَ : فَإِنَّهُ لَمْ يَمْنَعْنِي أَنْ أَرْجِعَ إِلَيْكَ مِمَّا عَرَضْتَ إِلاَّ أَنِّي قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ ذَكَرَهَا، فَلَمْ أَكُنْ لأُفْشِيَ سِرَّ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَلَوْ تَرَكَهَا لَقَبِلْتُهَا.

[أطرافه في : ٥١٢٢، ٥١٢٩، ٥١٤٥].

4006. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम क़स़्स़ाब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन अबान ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद अंस़ारी ने, उन्होंने अबू मसऊ़द बद्री (रज़ि.) उ़क़्बा बिन अ़म्र अंस़ारी से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने

٤٠٠٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيٍّ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ يَزِيدَ سَمِعَ أَبَا مَسْعُودٍ الْبَدْرِيَّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نَفَقَةُ الرَّجُلِ عَلَى أَهْلِهِ صَدَقَةٌ)).

फ़र्माया, इंसान का अपने बाल—बच्चों पर ख़र्च करना भी बाइ़षे ष़वाब है।

रिवायत में ह़ज़रत अबू मसऊ़द बद्री (रज़ि.) का ज़िक्र है। ह़दीष़ और बाब में यही मुत़ाबक़त है।

4007. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्होंने उ़र्वा बिन ज़ुबेर से सुना कि अमीरुल मोमिनीन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रज़ि.) से उन्होंने उनके अ़हदे ख़िलाफ़त में ये ह़दीष़ बयान की कि मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) जब कूफ़ा के अमीर थे, तो उन्होंने एक दिन अ़स्र की नमाज़ में देर की। इस पर ज़ैद बिन ह़सन के नाना अबू मसऊ़द उ़क़्बा बिन अ़म्र अंसारी (रज़ि.) उनके यहाँ गये। वो बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले स़ह़ाबा में से थे और कहा, आपको मा'लूम है कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) (नमाज़ का त़रीक़ा बताने के लिये) आए और आपने नमाज़ पढ़ी और हुज़ूर (ﷺ) ने उनके पीछे नमाज़ पढ़ी, पाँचों वक़्त की नमाज़ें। फिर फ़र्माया कि इसी त़रह मुझे हुक्म मिला है। बशीर बिन अबी मसऊ़द भी ये ह़दीष़ अपने वालिद से बयान करते थे। (राजेअ़ : 521)

٤٠٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ يُحَدِّثُ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ فِي إِمَارَتِهِ أَخَّرَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ الْعَصْرَ وَهُوَ أَمِيرُ الْكُوفَةِ فَدَخَلَ أَبُو مَسْعُودٍ عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو الأَنْصَارِيُّ جَدُّ زَيْدِ بْنِ حَسَنٍ شَهِدَ بَدْرًا فَقَالَ: لَقَدْ عَلِمْتَ نَزَلَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ فَصَلَّى، فَصَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ خَمْسَ صَلَوَاتٍ ثُمَّ قَالَ : هَكَذَا أُمِرْتُ. كَذَلِكَ كَانَ بَشِيرُ بْنُ أَبِي مَسْعُودٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ. [راجع: ٥٢١]

तश्रीह : अबू मसऊ़द (रज़ि.) की बेटी उम्मे बशर पहले सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ेल को मन्सूब थीं। बाद में ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) ने उनसे निकाह कर लिया और उनके बत़न से ह़ज़रत ज़ैद बिन ह़सन (रज़ि.) पैदा हुए। अबू मसऊ़द (रज़ि.) बद्री थे। यही बाब से वजहे मुत़ाबक़त है।

4008. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा बिन यस्अ़ा ने और उनसे अबू मसऊ़द बद्री (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सूरह बक़र: की दो आयतें (आमनर्रसूल से आख़िर तक) ऐसी हैं कि जो शख़्स रात में इन्हें पढ़ ले वो उसके लिये काफ़ी हो जाती हैं। अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया कि फिर मैंने अबू मसऊ़द (रज़ि.) से मुलाक़ात की, वो उस वक़्त बैतुल्लाह का त़वाफ कर रहे थे, मैंने उनसे इस ह़दीष़ के बारे में पूछा तो उन्होंने ये ह़दीष़ मुझसे बयान की।

٤٠٠٨- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْبَدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((الآيَتَانِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ مَنْ قَرَأَهُمَا فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ)) قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: فَلَقِيتُ أَبَا مَسْعُودٍ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ فَسَأَلْتُهُ فَحَدَّثَنِيهِ.

4009. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें मह़मूद बिन रबीअ़ ने ख़बर दी कि ह़ज़रत इत्बान बिन

٤٠٠٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي مَحْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ أَنَّ عِتْبَانَ بْنَ مَالِكٍ

मालिक (रज़ि.) जो नबी करीम (ﷺ) के सहाबी थे और वो बद्र में शरीक हुए थे और अंसार में से थे, नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। (दूसरी सनद) (राजेअ : 424)

وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا مِنَ الأَنْصَارِ أَنَّهُ أَتَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ. [راجع: ٤٢٤]

4010. हमसे अहमद ने बयान किया, जो सालेह के बेटे हैं, कहा हमसे अम्बसा इब्ने ख़ालिद ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया और उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि फिर मैंने हुसैन बिन मुहम्मद अंसारी से जो बनी सालिम के शरीफ़ लोगों में से थे, महमूद बिन रबीअ की हदीष के बारे में पूछा जिसकी रिवायत उन्होंने इत्बान बिन मालिक (रज़ि.) से की थी तो उन्होंने भी इसकी तस्दीक़ की। (राजेअ : 424)

٤٠١٠ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ هُوَ ابْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا عَنْبَسَةُ حَدَّثَنَا يُونُسُ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ، ثُمَّ سَأَلْتُ الْحُصَيْنَ بْنَ مُحَمَّدٍ وَهُوَ أَحَدُ بَنِي سَالِمٍ وَهُوَ مِنْ سَرَاتِهِمْ عَنْ حَدِيثِ مَحْمُودِ بْنِ الرَّبِيعِ عَنْ عِتْبَانَ بْنِ مَالِكٍ فَصَدَّقَهُ. [راجع: ٤٢٤]

पूरी रिवायत किताबुस्सलात में गुज़र चुकी है। यहाँ इसका एक टुकड़ा इमाम बुख़ारी (रह) इसलिये लाए कि इत्बान बिन मालिक (रज़ि.) का बद्री होना षाबित हो।

4011. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमें शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ (रज़ि.) ने ख़बर दी, वो क़बीला बनी अदी के सब लोगों में बड़े थे और उनके वालिद आमिर बिन रबीआ बद्र में नबी करीम (ﷺ) के साथ शरीक थे। (उन्होंने बयान किया कि) हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत क़ुदामा बिन मज़्ऊन (रज़ि.) को बहरीन का आमिल बनाया था, वो क़ुदामा (रज़ि.) भी बद्र की जंग में शरीक थे और अब्दुल्लाह बिन उमर और हफ़्सा (रज़ि.) के मामू थे।

٤٠١١ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ وَكَانَ مِنْ أَكْبَرِ بَنِي عَدِيٍّ وَكَانَ أَبُوهُ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ عُمَرَ اسْتَعْمَلَ قُدَامَةَ بْنَ مَظْعُونٍ عَلَى الْبَحْرَيْنِ وَكَانَ شَهِدَ بَدْرًا وَهُوَ خَالُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ وَحَفْصَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ.

तश्रीह : अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ गो बनी अदी में से न थे मगर उनके हलीफ़ थे इसलिये उनको बनी अदी कह दिया। कुछ नुस्ख़ों में बनी अदी के बदल बनी आमिर बिन रबीआ। जो सहाबी मशहूर हैं, उनके सब बेटों में अब्दुल्लाह बड़े थे। कहते हैं कि ये आँहज़रत (ﷺ) के अहदे मुबारक में पैदा हो चुके थे। अज्ली ने उनको षिक़ा कहा है। हदीष में बद्री बुज़ुर्गों का ज़िक्र है यही बाब से वजहे मुनासबत है।

हज़रत क़ुदामा बिन मज़्ऊन (रज़ि.) जो रिवायत में मज़्कूर हैं अहदे फ़ारूक़ी में बहरीन के हाकिम थे, मगर बाद में हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनको मअज़ूल फ़र्माकर हज़रत उष्मान बिन अबुल आस (रज़ि.) को बहरीन का आमिल बना दिया था। हज़रत क़ुदामा (रज़ि.) की ये शिकायत थी कि वो नशाआवर चीज़ इस्ते'माल करते हैं। ये जुर्म षाबित होने पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने उन पर हद क़ायम की और उनको मअज़ूल कर दिया। फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि सफ़रे हज्ज में हज़रत क़ुदामा हज़रत उमर (रज़ि.) के साथ हो गये। एक शब ये सोकर उज्लत में उठे और फ़र्माया कि फ़ौरन मेरे पास क़ुदामा को हाज़िर करो। मेरे पास ख़्वाब में अभी एक आने वाला आया और कह गया है कि मैं क़ुदामा (रज़ि.) से सुलह कर लूँ। आप और वो इस्लामी भाई भाई हैं। चुनाँचे हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनसे सुलह सफ़ाई कर ली और वो पहली ख़लिशें दिल से निकाल दी। (क़स्तलानी)

4012,13. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा हमसे जुवेरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह) ने, उनसे ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, बयान किया कि हज़रत राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (रज़ि.) ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) को ख़बर दी कि उनके दो चचाओं (ज़हीर और मज़हर राफ़ेअ़ बिन अ़दी बिन ज़ैद अंसारी के बेटों) जिन्होंने बद्र की लड़ाई में शिर्कत की थी, ने उन्हें ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़मीन को किराये पर देने से मना किया था। मैंने सालिम से कहा लेकिन आप तो किराया पर देते हो। उन्होंने कहा कि हाँ, हज़रत राफ़ेअ़ (रज़ि.) ने अपने ऊपर ज़्यादती की थी। (राजेअ़ : 2339)

٤٠١٢،٤٠١٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَنَّ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللهِ أَخْبَرَهُ قَالَ: أَخْبَرَ رَافِعُ بْنُ خَدِيجٍ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ أَنَّ عَمَّيْهِ وَكَانَا شَهِدَا بَدْرًا أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنْ كِرَاءِ الْمَزَارِعِ قُلْتُ لِسَالِمٍ: فَتُكْرِيهَا أَنْتَ؟ قَالَ: نَعَمْ. إِنَّ رَافِعًا أَكْثَرَ عَلَى نَفْسِهِ.
[راجع: ٢٣٣٩]

तश्रीह : कि उन्होंने ज़मीन को मुत्लक़ किराया पर देना मना समझा। हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने जिससे मना किया था वो ज़मीन ही की पैदावार पर किराया को देने से या'नी मख़्सूस क़ित्आ़ की बटाई से मना किया था। लेकिन नक़दी ठहराव से आपने मना नहीं किया वो दुरुस्त है। उसकी बह़्ष़ किताबुल मज़ारेअ़ में गुज़र चुकी है। ह़दीष़ में बद्री स़ह़ाबियों का ज़िक्र है।

अ़ल्लामा क़स्त़लानी (रह) लिखते हैं **व कानू यक्रूनल्अर्ज़ बिमा यम्बुतु फ़ीहा अलल्अर्बआइ व हुवन्नहरूस्सग़ीर औ शैउन लियस्तष्नीहि साहिबुल्अर्ज़ि मिनल्मज़ारइ लिअजलिही फनहा रसूलुल्लाहि (ﷺ) अन ज़ालिक लिमा फीहि मिनल्जहलि** (क़स्त़लानी) या'नी अहले अ़रब ज़मीन को इस त़ौर से किराया पर देते कि नालियों के पास वाली ज़राअ़त को या ख़ास़ ख़ास़ क़ित्आ़ते अरज़ी को अपने लिये ख़ास़ कर लेते उसको रसूल करीम (ﷺ) ने मना फ़र्माया।

4014. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे हुस़ैन बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद बिन हाद लैष़ी से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत रिफ़ाअ़ा बिन राफ़ेअ़ अंस़ारी (रज़ि.) को देखा है। वो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे।

٤٠١٤- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُصَيْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ : سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ شَدَّادِ بْنِ الْهَادِ اللَّيْثِيَّ قَالَ: رَأَيْتُ رِفَاعَةَ بْنَ رَافِعٍ الأَنْصَارِيَّ وَكَانَ شَهِدَ بَدْرًا.

ये एक ह़दीष़ का टुकड़ा है जिसको इस्माईल ने पूरा निकाला है। उसमें यूँ है कि रिफ़ाअ़ा ने नमाज़ शुरू करते वक़्त अल्लाहु अकबर कहा। दूसरे त़रीक़ में यूँ है अल्लाहु अकबर कबीरा कहा। इमाम बुख़ारी (रह) ने पूरी ह़दीष़ इसलिये बयान नहीं की कि वो इस बाब से ग़ैर मुता'ल्लिक़ है दूसरे मौक़ूफ़ है।

4015. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक मरवज़ी ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर और यूनुस दोनों ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी, उन्हें हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत अ़म्र बिन औ़फ़ (रज़ि.) जो बनी आ़मिर बिन लुअय के ह़लीफ थे और बद्र की लड़ाई में नबी करीम (ﷺ) के साथ शरीक थे।

٤٠١٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ وَ يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ عَمْرَو بْنَ عَوْفٍ وَهُوَ حَلِيفٌ لِبَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ وَكَانَ شَهِدَ

(ने बयान किया कि) हुज़ूर (ﷺ) ने अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (रज़ि.) को बहरीन, वहाँ का जिज़्या लाने के लिये भेजा। हुज़ूर (ﷺ) ने बहरीन वालों से सुलह की थी और उनपर अ़लाअ बिन ह़ज़री (रज़ि.) को अमीर बनाया था, फिर ह़ज़रत अबू उ़बैदा (रज़ि.) बहरीन से माल एक लाख दिरहम लेकर आए। जब अंस़ार को अबू उ़बैदा (रज़ि.) के आने की ख़बर हुई तो उन्होंने फ़ज्र की नमाज़ हुज़ूर (ﷺ) के साथ पढ़ी। हुज़ूर (ﷺ) जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो तमाम अंस़ार आपके सामने आए। हुज़ूर (ﷺ) उन्हें देखकर मुस्कुराए और फ़र्माया, मेरा ख़याल है कि तुम्हें ये ख़बर मिल गई है कि अबू उ़बैदा (रज़ि.) माल लेकर आए हैं। उन्होंने अ़र्ज़ किया, जी हाँ, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर तुम्हें ख़ुशख़बरी हो और जिससे तुम्हें ख़ुशी होगी उसकी उम्मीद रखो। अल्लाह की क़सम! मुझे तुम्हारे बारे में मुहताजी से डर नहीं लगता, मुझे तो इसका डर है कि दुनिया तुम पर भी उसी त़रह़ कुशादा कर दी जाएगी जिस त़रह़ तुमसे पहलों पर कुशादा कर दी गई थी, फिर पहलों की त़रह़ उसके लिये तुम आपस में रश्क करोगे और जिस त़रह़ वो हलाक हो गये थे तुम्हें भी ये चीज़ हलाक करके रहेगी।

بَدْرًا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ إِلَى الْبَحْرَيْنِ يَأْتِي بِجِزْيَتِهَا وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ صَالَحَ أَهْلَ الْبَحْرَيْنِ وَأَمَّرَ عَلَيْهِمُ الْعَلاَءَ بْنَ الْحَضْرَمِيِّ فَقَدِمَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِمَالٍ مِنَ الْبَحْرَيْنِ فَسَمِعَتِ الأَنْصَارُ بِقُدُومِ أَبِي عُبَيْدَةَ فَوَافَوْا صَلاَةَ الْفَجْرِ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمَّا انْصَرَفَ تَعَرَّضُوا لَهُ فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ رَآهُمْ ثُمَّ قَالَ: ((أَظُنُّكُمْ سَمِعْتُمْ أَنَّ أَبَا عُبَيْدَةَ قَدِمَ بِشَيْءٍ؟)) قَالُوا أَجَلْ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ : ((فَأَبْشِرُوا وَأَمِّلُوا مَا يَسُرُّكُمْ فَوَ اللهِ مَا الْفَقْرَ أَخْشَى عَلَيْكُمْ وَلَكِنِّي أَخْشَى أَنْ تُبْسَطَ عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا كَمَا بُسِطَتْ عَلَى مَنْ قَبْلَكُمْ فَتَنَافَسُوهَا كَمَا تَنَافَسُوهَا وَتُهْلِكَكُم كَمَا أَهْلَكَتْهُمْ)).

ये ह़दीष़ बाबुल जिज़्या में गुज़र चुकी है। यहाँ सिर्फ़ ये बताना है कि ह़ज़रत अ़म्र बिन औ़फ़ (रज़ि.) बद्री स़ह़ाबी थे।

4016. हमसे अबुन नोअ़मान बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) हर त़रह़ के सांप को मार डाला करते थे। (राजेअ़ : 3297)

٤٠١٦- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَ يَقْتُلُ الْحَيَّاتِ كُلَّهَا.

[راجع: ٣٢٩٧]

4017. लेकिन जब अबू लुबाबा बशीर बिन अ़ब्दुल मुंज़िर ने जो बद्र की लड़ाई में शरीक थे, उनसे बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने घर में निकलने वाले सांप के मारने से मना किया था तो उन्होंने भी उसे मारना छोड़ दिया था।

٤٠١٧- حَتَّى حَدَّثَهُ أَبُو لُبَابَةَ الْبَدْرِيُّ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنْ قَتْلِ جِنَّانِ الْبُيُوتِ فَأَمْسَكَ عَنْهَا.

घरवाले सांपों की कुछ क़िस्में बेज़रर होती हैं। फ़र्माने नबवी से वही सांप मुराद हैं। अबू लबाबा बद्री स़ह़ाबी का ज़िक्र मक़्स़ूद है।

4018. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे

٤٠١٨- حدثني إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ

मुहम्मद बिन फुलैह ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने कि हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार के चन्द लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इजाज़त चाही और अ़र्ज़ किया कि आप हमें इजाज़त अ़ता करें तो हम अपने भांजे अ़ब्बास (रज़ि.) का फ़िदया मुआफ़ कर दें लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह की क़सम! उनके फ़िदये से एक दिरहम भी न छोड़ना। (राजेअ़ : 2537)

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ : حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ رِجَالاً مِنَ الأَنْصَارِ اسْتَأْذَنُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: ائْذَنْ لَنَا فَلْنَتْرُكْ لاِبْنِ أُخْتِنَا عَبَّاسٍ فِدَاءَهُ قَالَ: ((وَاللهِ لاَ تَذَرُونَ مِنْهُ دِرْهَمًا)). [راجع: ٢٥٣٧]

तश्रीह : ह़ज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुह़तरम चचा क़ुबूले इस्लाम से पहले बद्र की लड़ाई में क़ैद होकर आए थे, वो अंसार के भांजे इस रिश्ते से हुए कि उनकी दादी या'नी ह़ज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब की वालिदा माजिदा बनू नज्जार के क़बीले में से थीं। इसी रिश्ते की बिना पर अंसार ने उनका फ़िदया मुआफ़ करना चाहा। मगर बहुत सी मस्लिहतों की बिना पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं बल्कि उनका फ़िदया पूरे तौर पर वसूल करो। आपने उनसे या'नी अ़ब्बास (रज़ि.) से ये भी फ़र्माया था कि आप न सिर्फ़ अपना बल्कि अपने दोनों भतीजों अ़क़ील और नौफ़िल और अपने ह़लीफ़ उ़त्बा बिन अ़म्र का फ़िदया भी अदा करें क्योंकि आप मालदार हैं। उन्होंने कहा कि मैं तो मुसलमान हूँ मगर मक्का के मुश्रिकीन ज़बरदस्ती मुझको पकड़ लाए हैं। आपने फ़र्माया अल्लाह बेहतर जानता है अगर ऐसा हुआ है तो अल्लाह तआ़ला आपके इस नुक़्सान की तलाफ़ी कर देगा। ज़ाहिर में तो आप उन मक्का वालों के साथ होकर मुसलमानों से लड़ने आए। कहते हैं कि ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) को कअ़ब बिन अ़म्र अंसारी (रज़ि.) ने पकड़ा और ज़ोर से मश्कें कस दीं। वो इस तकलीफ़ से हाय-हाय करते रहे। उनकी आवाज़ सुनकर आँह़ज़रत (ﷺ) को रात नींद नहीं आई। आख़िर स़ह़ाबा (रज़ि.) ने उनकी मश्कें ढीली कर दीं। तब आप आराम से सोये, सुबह़ को अंसार ने आपको मज़ीद ख़ुश करने के लिये उनका फ़िदया भी मुआफ़ करना चाहा और कहा कि हम ख़ुद अपने पास से इनका फ़िदया अदा कर देंगे लेकिन ये इंसाफ़ के ख़िलाफ़ था इसलिये आपने मंज़ूर नहीं किया। इस ह़दीष़ से बाब की मुनासबत ये है कि उसमें कई अंसारी आदमियों का जंगे बद्र में शरीक होना मज़्कूर है। उनके नाम मज़्कूर नहीं है।

4019. हमसे अबू आ़स़िम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे अ़ता बिन यजीद लैष़ी ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी ने और उनसे ह़ज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) ने। (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी ने कहा और मुझसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम बिन सअ़द ने, उनसे इब्ने शिहाब के भतीजे (मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह) ने, अपने चचा (मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन शिहाब) से बयान किया, उन्हें अ़ता बिन यज़ीद लैष़ी षुम्मुल जुन्दई ने ख़बर दी, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़दी बिन ख़य्यार ने ख़बर दी और उन्हें मिक़्दाद बिन अ़म्र कुन्दी (रज़ि.) ने, वो बनी ज़ुह्रा के ह़लीफ़ थे और बद्र की लड़ाई में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे। उन्होंने ख़बर दी कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़र्ज़ किया अगर किसी मौक़ा पर मेरी किसी काफ़िर से टक्कर हो जाए और हम दोनों एक–दूसरे को क़त्ल करने की कोशिश में लग जाएँ और वो मेरे एक हाथ पर तलवार मारकर

٤٠١٩- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَدِيٍّ عَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ الأَسْوَدِ ح حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ اللَّيْثِيُّ ثُمَّ الْجُنْدَعِيُّ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَدِيِّ بْنِ الْخِيَارِ أَخْبَرَهُ أَنَّ الْمِقْدَادَ بْنَ عَمْرٍو الْكِنْدِيَّ وَكَانَ حَلِيفًا لِبَنِي زُهْرَةَ وَكَانَ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ رَسُولِ اللهِ

उसे काट डाले, फिर वो मुझसे भागकर एक पेड़ की पनाह लेकर कहने लगे, मैं अल्लाह पर ईमान ले आया। तो क्या या रसूलल्लाह (ﷺ)! उसके इस इक़रार के बाद फिर भी मैं उसे क़त्ल कर दूँ? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तुम उसे क़त्ल नहीं करना। उन्होंने अर्ज किया या रसूलल्लाह! वो पहले मेरा एक हाथ भी काट चुका है? और ये इक़रार मेरे हाथ काटने के बाद किया है? आपने फिर भी यही फ़र्माया कि उसे क़त्ल न कर, क्यूँकि अगर तू ने उसे क़त्ल कर डाला तो उसे क़त्ल करने से पहले जो तुम्हारा मक़ाम था अब उसका वो मक़ाम होगा और तुम्हारा मक़ाम वो होगा जो उसका मक़ाम उस वक़्त था जब उसने इस कलिमा का इक़रार नहीं किया था। (दीगर मक़ाम : 6865)

ﷺ اَخْبَرَهُ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ إِنْ لَقِيتُ رَجُلاً مِنَ الْكُفَّارِ فَاقْتَتَلْنَا فَضَرَبَ إِحْدَى يَدَيَّ بِالسَّيْفِ فَقَطَعَهَا ثُمَّ لاَذَ مِنِّي بِشَجَرَةٍ. فَقَالَ: أَسْلَمْتُ للهِ أأَقْتُلُهُ يَا رَسُولَ اللهِ بَعْدَ أَنْ قَالَهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَقْتُلْهُ)) فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهُ قَطَعَ إِحْدَى يَدَيَّ ثُمَّ قَالَ ذَلِكَ بَعْدَ مَا قَطَعَهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَقْتُلْهُ فَإِنْ قَتَلْتَهُ فَإِنَّهُ بِمَنْزِلَتِكَ قَبْلَ أَنْ تَقْتُلَهُ وَإِنَّكَ بِمَنْزِلَتِهِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ كَلِمَتَهُ الَّتِي قَالَ)). [طرفه في : ٦٨٦٥].

तू उसके क़त्ल करने से पहले जैसे मुसलमान मा'सूम मरहूम था ऐसे ही इस्लाम का कलिमा पढ़ने से वो मुसलमान मा'सूम मरहूम हो गया। पहले उसका मार डालना दुरुस्त था ऐसे ही अब उसके क़िसास में तेरा मार डालना दुरुस्त हो जाएगा।

4020. मुझसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उलय्या ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, कहा हमसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बद्र की लड़ाई के दिन फ़र्माया, कौन देखकर आएगा कि अबू जहल के साथ क्या हुआ? अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) उसके लिये रवाना हुए और देखा कि अ़फ़रा के दोनों बेटों ने उसे क़त्ल कर दिया है और उसकी लाश ठण्डी होने वाली है। उन्होंने पूछा, अबू जहल तुम ही हो? इब्ने उलय्या ने बयान किया कि सुलैमान ने उसी तरह बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने पूछा था कि तू ही अबू जहल है? इस पर उसने कहा, क्या इससे भी बड़ा कोई होगा जिसे तुमने आज क़त्ल कर दिया है? सुलैमान ने बयान किया, कहा कि या उसने यूँ कहा, जिसे उसकी क़ौम ने क़त्ल कर दिया है? (क्या इससे भी बड़ा कोई होगा) कहा कि अबुल मिज्लज़ ने बयान किया कि अबू जहल ने कहा, काश! एक किसान के सिवा किसी और ने मारा होता। (राजेअ : 3962)

٤٠٢٠ - حَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ بَدْرٍ ((مَنْ يَنْظُرُ مَا صَنَعَ أَبُو جَهْلٍ)) فَانْطَلَقَ ابْنُ مَسْعُودٍ فَوَجَدَهُ قَدْ ضَرَبَهُ ابْنَا عَفْرَاءَ حَتَّى بَرَدَ فَقَالَ أَنْتَ أَبَا جَهْلٍ؟ قَالَ ابْنُ عُلَيَّةَ قَالَ سُلَيْمَانُ : هَكَذَا قَالَهَا أَنَسٌ ، قَالَ: أَنْتَ أَبَا جَهْلٍ؟ قَالَ وَهَلْ فَوْقَ رَجُلٍ قَتَلْتُمُوهُ؟ قَالَ سُلَيْمَانُ : أَوْ قَالَ قَتَلَهُ قَوْمُهُ. قَالَ : وَقَالَ أَبُو مِجْلَزٍ قَالَ أَبُو جَهْلٍ : فَلَوْ غَيْرُ أَكَّارٍ قَتَلَنِي. [راجع: ٣٩٦٢]

तश्रीह : इस मरदूद को ये रंज हुआ कि मदीना के काश्तकारों के हाथ से क्यूँ मारा गया? काश! किसी रईस के हाथ से मारा जाता। ये क़ौमी ऊँच नीच का तसव्वुर अबू जहल के दिमाग़ में आख़िर वक़्त तक समाया हुआ रहा जो मुसलमान

आज ऐसी क़ौमी ऊँच नीच के तसव्वुरात में गिरफ़्तार हैं उनको सोचना चाहिये कि वो अबू जहल की ख़ूए बद में गिरफ़्तार हैं। इस्लाम ऐसे ही ग़लत तसव्वुरात को ख़त्म करने आया सद अफ़सोस कि ख़ुद मुसलमान भी ऐसे ग़लत तसव्वुरात में गिरफ़्तार हो गये। अक्कार का तर्जुमा मौलाना वहीदुज़्ज़माँ (रह) ने लफ़्ज़े कमीने से किया है। गोया अबू जहल ने काश्तकारों को लफ़्ज़े कमीने से याद किया।

4021. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कि जब नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हो गई तो मैंने अबूबक्र (रज़ि.) से कहा आप हमें साथ लेकर हमारे अंसारी भाइयों के यहाँ चलें, फिर हमारी मुलाक़ात दो नेकतरीन अंसारी स़ह़ाबियों से हुई जिन्होंने बद्र की लड़ाई में शिर्कत की थी उ़बैदुल्लाह ने कहा, फिर मैंने इस ह़दीष़ का तज़्किरा उ़र्वा बिन ज़ुबैर से किया तो उन्होंने बताया कि वो दोनों स़ह़ाबी उ़वेम बिन साइ़दा और मअ़न बिन अ़दी (रज़ि.) थे।

(राजेअ़ : 2462)

٤٠٢١- حدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ لَمَّا تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ قُلْتُ لأَبِي بَكْرٍ انْطَلِقْ بِنَا إِلَى إِخْوَانِنَا مِنَ الأَنْصَارِ فَلَقِيَنَا مِنْهُمْ رَجُلاَنِ صَالِحَانِ شَهِدَا بَدْرًا فَحَدَّثْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ فَقَالَ : هُمَا عُوَيْمُ بْنُ سَاعِدَةَ وَمَعْنُ بْنُ عَدِيٍّ. [راجع: ٢٤٦٢]

4022. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल से सुना, उन्होंने इस्माईल इब्ने अबी ख़ालिद से, उन्होंने क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम से कि बद्री स़ह़ाबी का (सालाना) वज़ीफ़ा पाँच पाँच हज़ार था। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैं उन्हें (बद्री स़ह़ाबा को) उन स़ह़ाबियों पर फ़ज़ीलत दूँगा जो उनके बाद ईमान लाए।

٤٠٢٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ سَمِعَ مُحَمَّدَ بْنَ فُضَيْلٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ كَانَ عَطَاءُ الْبَدْرِيِّينَ خَمْسَةَ آلاَفٍ وَقَالَ عُمَرُ : لأُفَضِّلَنَّهُمْ عَلَى مَنْ بَعْدَهُمْ.

तश्रीह : मा'लूम हुआ बद्री स़ह़ाबा ग़ैर बद्री से अफ़ज़ल हैं। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने मुहाजिरीन के लिये साल में दस हज़ार और अंसार के लिये साल में आठ हज़ार और अज़्वाजे मुतह्हरा के लिये साल में 24 हज़ार मुक़र्रर किये थे। ये स़ह़ीह़ इस्लामी ख़िलाफ़ते राशिदा की बरकत थी और उनके बैतुलमाल का स़ह़ीह़ तरीन मस़रफ़ था। सद अफ़सोस कि ये बरकात उ़रूजे इस्लाम के साथ ख़ास़ होकर रह गईं। आज दौरे तनज़्ज़ुल में ये सब ख़्वाब व ख़याल की बातें मा'लूम होती हैं। कुछ इस्लामी तंज़ीमें बैतुलमाल का नाम लेकर खड़ी होती हैं। ये तंज़ीमें अगर स़ह़ीह़ तौर पर क़ायम हों बहरह़ाल अच्छी है मगर वो बात कहाँ मौलवी मदन की सी।

4023. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुबेर ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से मैंने सुना, आप मग़रिब की नमाज़ में सूरह वत्तूर की तिलावत कर रहे थे, ये पहला मौक़ा था जब मेरे दिल में ईमान ने क़रार पकड़ा। और इसी सनद से ज़ुहरी से मरवी है,

٤٠٢٣- حدثني إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ : أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِالطُّورِ وَذَلِكَ أَوَّلُ مَا وَقَرَ الإِيمَانُ فِي

उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत़इम ने और उनसे उनके वालिद (जुबेर बिन मुत़इम रजि) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बद्र के क़ैदियों के बारे में फ़र्माया था, अगर मुत़इम बिन अ़दी (रज़ि.) ज़िन्दा होते और इन पलीद क़ैदियों के लिये सिफ़ारिश करते तो मैं उन्हें उनके कहने से छोड़ देता। (राजेअ़ : 765)

قَلْبِي. وَعَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: فِي أُسَارَى بَدْرٍ: ((لَوْ كَانَ الْمُطْعِمُ بْنُ عَدِيٍّ حَيًّا ثُمَّ كَلَّمَنِي فِي هَؤُلاَءِ النَّتْنَى لَتَرَكْتُهُمْ لَهُ)). [راجع: ٧٦٥]

4024. और लैष़ ने यह्या बिन सईद अंसारी से बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि पहला फ़साद जब बरपा हुआ या'नी ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) की शहादत का तो उसने अस्ह़ाबे बद्र में से किसी को बाक़ी नहीं छोड़ा, फिर जब दूसरा फ़साद बरपा हुआ या'नी ह़र्रा का, तो उसने अस्ह़ाबे हुदेबिया में से किसी को बाक़ी नहीं छोड़ा, फिर तीसरा फ़साद बरपा हुआ तो वो उस वक़्त तक नहीं गया जब तक लोगों में कुछ भी ख़ूबी या अ़क़्ल बाक़ी थी। (राजेअ़ :3139)

٤٠٢٤- وَقَالَ اللَّيْثُ عَنْ يَحْيَى عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَقَعَتِ الْفِتْنَةُ الأُولَى يَعْنِي مَقْتَلَ عُثْمَانَ فَلَمْ تُبْقِ مِنْ أَصْحَابِ بَدْرٍ أَحَدًا ثُمَّ وَقَعَتِ الْفِتْنَةُ الثَّانِيَةُ يَعْنِي الْحَرَّةَ فَلَمْ تُبْقِ مِنْ أَصْحَابِ الْحُدَيْبِيَةِ أَحَدًا ثُمَّ وَقَعَتِ الثَّالِثَةُ، فَلَمْ تَرْتَفِعْ وَلِلنَّاسِ طَبَاخٌ. [راجع: ٣١٣٩]

तशरीह : जब ह़ज़रत जुबैर बिन मुत़इम (रज़ि.) बद्री क़ैदियों में क़ैद होकर आए और मस्जिदे नबवी के क़रीब मुक़य्यद (बन्दी) हुए तो उन्होंने मग़रिब की नमाज़ में आँह़ज़रत (ﷺ) से सूरह वत्‌तूर की क़िरात सुनी और वो बाद में उससे मुताष़्ष़िर होते हुए मुसलमान हो गये। इसी से ह़दीष़ की मुनासबत बाब से निकल आई। मुत़इम बिन अ़दी (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) पर कुछ एह़सान किया था। जब आप ताईफ़ से लौटे तो उसकी पनाह में दाख़िल हो गये थे। मुत़इम (रज़ि.) ने आप (ﷺ) की ह़िफ़ाज़त के लिये अपने चार बेटों को मुसल्लह़ (हथियारबंद) करके कअ़बे के चारो कोनों पर खड़ा कर दिया था। क़ुरैश ये मंज़र देखकर डर गये और कहने लगे कि हम मुत़इम की पनाह नहीं तोड़ सकते। कुछ ने कहा है कि मुत़इम (रज़ि.) ने वो अ़हदनामा ख़त्म कराया था, जो क़ुरैश ने बनू हाशिम और बनू अ़ब्दुल मुत्तलिब के ख़िलाफ़ किया था। ह़ज़रत उ़ष़्मान ग़नी (रज़ि.) की शहादत का वाक़िया इस्लाम में पहला फ़साद है। जो जुम्आ के दिन आठवीं ज़िलह़िज्ज को बरपा हुआ। जिसके बारे में ह़ज़रत सईद बिन मुसय्यिब का क़ौल बक़ौल अ़ल्लामा दाऊदी स़रीह़ ग़लत़ है इस फ़साद के बाद भी बहुत से बद्री स़ह़ाबा ज़िन्दा थे। कुछ ने कहा पहले फ़साद से उनकी मुराद ह़ज़रत हुसैन (रज़ि.) की शहादत है और दूसरे से ह़र्रा का फ़साद, जिसमें यज़ीद की फ़ौज ने मदीना पर ह़मला किया था। तीसरे फ़साद से अज़ारिक़ा का फ़साद मुराद है। जो इ़राक़ में हुआ था। कुछ ने यूँ जवाब दिया है कि सईद बिन मुसय्यिब का मत़लब ये है कि पहले फ़साद या'नी क़त्ले उ़ष़्मान (रज़ि.) से लेकर दूसरे फ़साद ह़र्रा तक कोई बद्री स़ह़ाबी बाक़ी नहीं रहा था। ये स़ह़ीह़ है क्यूँ कि बद्रियों के आख़िर में सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) का इंतिक़ाल हुआ है, वो भी ह़र्रा के वाक़िये से पहले ही गुज़र चुके थे। तीसरे फ़साद से कुछ लोगों ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबेर (रज़ि.) की शहादत मुराद ली है। आख़िरी इ़बारत का मत़लब ये है कि इस फ़ित्ने ने तो स़ह़ाबा का वजूद बिलकुल ख़त्म कर दिया जिसके बाद कोई स़ह़ाबी दुनिया में बाक़ी नहीं रहा।

4025. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर नुमेरी ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुहरी से सुना, कहा कि मैंने उ़र्वा बिन ज़ुबेर, सईद बिन मुसय्यिब, अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़

٤٠٢٥- حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ النُّمَيْرِيُّ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ

और उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) की तोहमत के बारे में सुना, उनमें से हर एक ने मुझसे इस वाक़िया का कोई हिस्सा बयान किया। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया था कि मैं और उम्मे मिस्तह बाहर क़ज़ाए हाजत को जा रहे थे कि उम्मे मिस्तह (रज़ि.) अपनी चादर में उलझकर फिसल पड़ीं। इस पर उनकी ज़ुबान से निकला, मिस्तह का बुरा हो। मैंने कहा, आपने अच्छी बात नहीं कही। एक ऐसे शख़्स को आप बुरा कहती हैं जो बद्र में शरीक हो चुका है। फिर उन्होंने तोहमत का वाकिया बयान किया।

(राजेअ : 93)

قَالَ: سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ وَ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةَ بْنَ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ، عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ كُلٌّ حَدَّثَنِي طَائِفَةً مِنَ الْحَدِيثِ قَالَتْ: فَأَقْبَلْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ فَعَثَرَتْ أُمُّ مِسْطَحٍ فِي مِرْطِهَا فَقَالَتْ: تَعِسَ مِسْطَحٌ، فَقُلْتُ: بِئْسَ مَا قُلْتِ تَسُبِّينَ رَجُلاً شَهِدَ بَدْرًا فَذَكَرَ حَدِيثَ الإِفْكِ. [راجع: ٩٣]

मिस्तह (रज़ि.) जंगे बद्र में शरीक थे इससे बाब का तर्जुमा निकला हज़रत आइशा (रज़ि.) पर मुनाफ़िक़ीन ने जो तोहमत लगाई थी उसकी तरफ़ इशारा है।

4026. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उक़्बा ने और उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया। ये रसूलुल्लाह (ﷺ) के ग़ज़्वात का बयान था। फिर उन्होंने बयान किया कि जब (बद्र के) कुफ़्फ़ार मक़्तूलीन कुँएँ में डाले जाने लगे तो रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुमने इस चीज़ को पा लिया जिसका तुमसे तुम्हारे रब ने वा'दा किया था? मूसा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि इस पर हुज़ूर अकरम (ﷺ) के चन्द सहाबा ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप ऐसे लोगों को आवाज़ दे रहे हैं जो मर चुके हैं? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, जो कुछ मैंने उनसे कहा है उसे ख़ुद तुमने भी उनसे ज़्यादा बेहतर तरीक़े पर नहीं सुना होगा। अबू अब्दुल्लाह (हज़रत इमाम बुख़ारी) ने कहा कि क़ुरैश (सहाबा) के जितने लोग बद्र में शरीक हुए थे और जिनका हिस्सा भी (इस ग़नीमत में) लगा था, उनकी ता'दाद इक्यासी थी। उर्वा बिन ज़ुबेर बयान करते थे कि हज़रत ज़ुबेर (रज़ि.) ने कहा, मैंने (उन मुहाजिरीन के हिस्से) तक़्सीम किये थे और उनकी ता'दाद सौ थी और ज़्यादा बेहतर इल्म अल्लाह तआला को है।

(राजेअ : 1370)

٤٠٢٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحِ بْنِ سُلَيْمَانَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: هَذِهِ مَغَازِي رَسُولِ اللهِ ﷺ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ يُلْقِيهِمْ ((هَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَكُمْ رَبُّكُمْ حَقًّا؟)). قَالَ مُوسَى قَالَ نَافِعٌ: قَالَ عَبْدُ اللهِ: قَالَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِهِ يَا رَسُولَ اللهِ تُنَادِي نَاسًا أَمْوَاتًا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ لِمَا قُلْتُ مِنْهُمْ)) قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ فَجَمِيعُ مَنْ شَهِدَ بَدْرًا مِنْ قُرَيْشٍ مِمَّنْ ضُرِبَ لَهُ بِسَهْمِهِ أَحَدٌ وَ ثَمَانُونَ رَجُلاً. وَكَانَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ يَقُولُ: قَالَ الزُّبَيْرُ قَسَمْتُ سُهْمَانَهُمْ فَكَانُوا مِائَةً وَاللهُ أَعْلَمُ. [راجع: ١٣٧٠]

तबरानी और बज़्ज़ार ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत की है कि बद्र के दिन मुहाजिरीन का शुमार 77 आदमियों का था।

4027. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत ज़ुबेर (रज़ि.) ने बयान किया कि बद्र के दिन मुहाजिरीन के सौ हिस़्से लगाए गये थे।

٤٠٢٧- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: ضُرِبَتْ يَوْمَ بَدْرٍ لِلْمُهَاجِرِينَ بِمِائَةِ سَهْمٍ.

बाब 12 : बततींब हुरूफ़े तहज्जी, उन अस्हाबे किराम के नाम जिन्होंने जंगे बद्र में शिर्कत की थी और जिन्हें अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी) अपनी इस जामेअ़ किताब मे ज़िक्र करते हैं जिसको उन्होंने मुरत्तब किया है (या'नी यही सहीह बुख़ारी)

١٣- بَابُ تَسْمِيَةِ مَنْ سُمِّيَ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ.

(1) अन् नबी मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अल् हाशमी (ﷺ) (2) अयास बिन बुकैर (रज़ि.) (3) अबूबक्र सिद्दीक़ अल कुर्शी (रज़ि.) के गुलाम बिलाल बिन रिबाह़ (रज़ि.) (4) ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब अल हाशमी (रज़ि.) (5) कुरैश के ह़लीफ़ ह़ातिब बिन अबी बल्तआ़ (रज़ि.) (6) अबू हुज़ैफ़ा बिन उ़त्बा बिन रबीआ़ अल कुर्शी (रज़ि.) (7) ह़ारिषा बिन रबीअ़ अंसारी (रज़ि.), उन्होंने बद्र की जंग में शहादत पाई थी। उनको ह़ारिषा बिन सुराक़ा भी कहते हैं। ये जंगे बद्र के मैदान में सिर्फ़ तमाशाई की हैषियत से आए थे (कम उ़म्री की वजह से, लेकिन बद्र के मैदान में ही उनको एक तीर कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से आकर लगा और उसी से उन्होंने शहादत पाई) (8) ख़ुबेब बिन अ़दी अंसारी (रज़ि.) (9) ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा अस् सहमी (रज़ि.) (10) रफ़ाआ़ बिन राफ़ेअ़ अंसारी (रज़ि.) (11) रफ़ाआ़ बिन अ़ब्दुल मुंज़िर अबू लबाबा अंसारी (रज़ि.) (12) ज़ुबेर बिन अ़वाम अल कुर्शी (रज़ि.) (13) जैद बिन सहल अबू त़लह़ा अंसारी (रज़ि.) (14) अबू ज़ैद अंसारी (रज़ि.) (15) सअ़द बिन मालिक ज़ुह्री (रज़ि.) (16) सअ़द बिन ख़ौला अल् कुरशी (रज़ि.) (17) सहल बिन ह़नीफ़ अंसारी (रज़ि.) (19) ज़ुहैर बिन राफ़ेअ़ अंसारी (रज़ि.) (20) और उनके भाई अ़ब्दुल्लाह बिन उ़ष्मान (रज़ि.) (21) अबूबक्र सिद्दीक़ अल कुरशी (रज़ि.) (22) अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द अल हुज़ली (रज़ि.) (23) उ़त्बा बिन मसऊ़द अल हुज़ली (रज़ि.) (24)

فِي الْجَامِعِ الَّذِي وَضَعَهُ أَبُو عَبْدِ اللهِ عَلَى حُرُوفِ الْمُعْجَمِ النَّبِيُّ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْهَاشِمِيُّ، إِيَاسُ بْنُ الْبُكَيْرِ، بِلاَلُ بْنُ رَبَاحٍ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ الْقُرَشِيُّ، حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ الْهَاشِمِيُّ، حَاطِبُ بْنُ أَبِي بَلْتَعَةَ حَلِيفٌ لِقُرَيْشٍ، أَبُو حُذَيْفَةَ بْنُ عُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ الْقُرَشِيُّ، حَارِثَةُ بْنُ الرَّبِيعِ الأَنْصَارِيُّ قُتِلَ يَوْمَ بَدْرٍ وَهُوَ حَارِثَةُ بْنُ سُرَاقَةَ كَانَ فِي النَّظَّارَةِ، خُبَيْبُ بْنُ عَدِيٍّ الأَنْصَارِيُّ، خُنَيْسُ بْنُ حُذَافَةَ السَّهْمِيُّ، رِفَاعَةُ بْنُ رَافِعٍ الأَنْصَارِيُّ، رِفَاعَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُنْذِرِ، أَبُو لُبَابَةَ الأَنْصَارِيُّ، الزُّبَيْرُ بْنُ الْعَوَّامِ الْقُرَشِيُّ، زَيْدُ بْنُ سَهْلٍ، أَبُو طَلْحَةَ الأَنْصَارِيُّ، أَبُو زَيْدٍ الأَنْصَارِيُّ، سَعْدُ بْنُ مَالِكٍ الزُّهْرِيُّ، سَعْدُ بْنُ خَوْلَةَ الْقُرَشِيُّ، سَعِيدُ بْنُ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ الْقُرَشِيُّ، سَهْلُ بْنُ حُنَيْفٍ الأَنْصَارِيُّ، ظُهَيْرُ بْنُ رَافِعٍ الأَنْصَارِيُّ وَأَخُوهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُثْمَانَ أَبُو بَكْرٍ الْقُرَشِيُّ، عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ الْهُذَلِيُّ، عُتْبَةُ بْنُ مَسْعُودٍ

अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ अज़्ज़ुह्री (रज़ि.) (25) उ़बैदा बिन हारिष़ अल क़ुरशी (रज़ि.) (26) उबादा बिन स़ामित अंस़ारी (रज़ि.) (27) उ़मर बिन ख़त्ताब अल अ़दवी (रज़ि.) (28) उ़ष़्मान बिन अ़फ़्फ़ान अल क़ुरशी (रज़ि.) उनको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी स़ाहबज़ादी (जो उनके घर में थीं) की तीमारदारी के लिये मदीना मुनव्वरा ही में छोड़ा था लेकिन बद्र की ग़नीमत में आपका भी ह़िस़्स़ा लगाया था। (29) अ़ली बिन अबी त़ालिब अल हाशमी (रज़ि.) (30) बनी आ़मिर बिन लूई के ह़लीफ़ अ़म्र बिन औ़फ़ (रज़ि.) (31) उ़क़्बा बिन अ़म्र अंस़ारी (रज़ि.) (32) आ़मिर बिन रबीआ़ अल क़ुरशी (रज़ि.) (33) आ़स़िम बिन ष़ाबित अंस़ारी (रज़ि.) (34) उ़वेम बिन साएदा अंस़ारी (रज़ि.) (35) इत्बान बिन मालिक अंस़ारी (रज़ि.) (36) क़ुदामा बिन मज़ऊ़न (रज़ि.) (37) क़तादा बिन नोअ़मान अंस़ारी (रज़ि.) (38) मुआ़ज़ बिन अ़म्र बिन जमूह़ (रज़ि.) (39) मुअ़व्वज़ बिन उ़फ़रा (रज़ि.) (40) और उनके भाई मुआ़ज़ (रज़ि.) (41) मालिक बिन रबीआ़ अबू उसेद अंस़ारी (रज़ि.) (42) मुरारह बिन रबीअ़ अंस़ारी (रज़ि.) (43) मअ़न बिन अ़दी अंस़ारी (रज़ि.) (44) मिस्त़ह़ बिन उष़ाष़ा बिन अ़ब्बाद बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन अ़ब्दे मुनाफ़ (रज़ि.) (45) मिक़्दाद बिन अ़म्र अल् कुन्दी (रज़ि.)। बनी ज़ुह्रा के ह़लीफ़ (46) और हिलाल बिन अबी उमय्या अंस़ारी (रज़ि.)।

الْهُذَلِيُّ، عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ الزُّهْرِيُّ، عُبَيْدَةُ بْنُ الْحَارِثِ الْقُرَشِيُّ، عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ الأَنْصَارِيُّ، عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ الْقُرَشِيُّ، خَلَّفَهُ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى ابْنَتِهِ وَضَرَبَ لَهُ بِسَهْمِهِ، عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ الْهَاشِمِيُّ، عَمْرُو بْنُ عَوْفٍ حَلِيفُ بَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ، عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو الأَنْصَارِيُّ، عَامِرُ بْنُ رَبِيعَةَ الْعَنَزِيُّ، عَاصِمُ بْنُ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيُّ، عُوَيْمُ بْنُ سَاعِدَةَ الأَنْصَارِيُّ، عِتْبَانُ بْنُ مَالِكٍ الأَنْصَارِيُّ، قُدَامَةُ بْنُ مَظْعُونٍ، قَتَادَةُ بْنُ النُّعْمَانِ الأَنْصَارِيُّ، مُعَاذُ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْجَمُوحِ، مُعَوِّذُ بْنُ عَفْرَاءَ وَأَخُوهُ، مَالِكُ بْنُ رَبِيعَةَ أَبُو أُسَيْدٍ الأَنْصَارِيُّ، مُرَارَةُ بْنُ الرَّبِيعِ الأَنْصَارِيُّ، مَعْنُ بْنُ عَدِيٍّ الأَنْصَارِيُّ، مِسْطَحُ بْنُ أُثَاثَةَ بْنِ عَبَّادِ بْنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ مَنَافٍ، مِقْدَادُ بْنُ عَمْرٍو الْكِنْدِيُّ حَلِيفُ بَنِي زُهْرَةَ، هِلاَلُ بْنُ أُمَيَّةَ الأَنْصَارِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ.

तश्रीह : इस बाब का मत़लब ये है कि ऊपर के बाब में या इस किताब में और किसी मुक़ाम पर जिन जिन स़ह़ाबा को बद्री कहा गया है उनके नामों की फ़ेहरिस्त बतर्तीबे हुरूफ़े तहज्जी इस बाब में मज़्कूर है क्योंकि बहुत से बद्री स़ह़ाबियों के नाम इस फ़ेहरिस्त में नहीं हैं न ये ग़र्ज़ है कि इस किताब में जिन जिन बद्री स़ह़ाबा से रिवायत है उनकी फ़ेहरिस्त इस बाब में

बयान की गई है क्योंहि अबू उ़बैदा इब्ने जर्राह़ (रज़ि.) बिल इत्तिफ़ाक़ बद्री हैं और इस किताब में उनसे रिवायतें भी हैं। मगर उनका नाम फ़ेहरिस्त में शरीक नहीं है क्योंकि अबू उ़बैदा (रज़ि.) की निस्बत इस किताब में कहीं ये स़राहत नहीं आई है कि वो भी बद्र की लड़ाई में शरीक थे। अब इस फ़ेहरिस्त में आँह़ज़रत (ﷺ) के नाम मुबारक के साथ ख़ुलफ़-ए-अरबआ़ के नाम भी शुरू में मज़्कूर हुए हैं ।

आँह़ज़रत (ﷺ) समेत यहाँ सब 46 आदमी मज़्कूर हैं । ह़ाफ़िज़ अबुल फ़तह़ ने कुरैश मे से 94 और ख़ज़रज क़बीले के 95 और ओस क़बीले के 74 कुल 363 आदमियों के नाम लिखे हैं । ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने तर्तीब हुरूफ़े मुअ़जम से आँह़ज़रत (ﷺ) और ख़ुलफ़-ए-राशिदीन के अस्माए गिरामी उनके शर्फ़े मरातिब के लिह़ाज़ से लिख दिये हैं बाद में हुरूफ़े हिजाअ की तर्तीब शुरू फ़र्माई है। **जज़ाहुल्लाहु ख़ैरन फ़िल्आख़िरति।** मुबारक हैं वो ईमान वाले जो इस पाकीज़ा किताब का ज़ोक़ व शौक़ के साथ मुत़ालआ़ फ़र्माते हैं। ह़ज़रत उ़त्बा बिन मसऊ़द हुज़ली का नाम बद्रियों में नहीं है और बुख़ारी शरीफ़ के अकषर दूसरे नुस्ख़ों में भी नहीं है लेकिन क़स्तलानी में है जो शायद सह्वे कातिब (लिखने वाले की भूल) है।

बाब 14 : बनू नज़ीर के यहूदियों के वाक़िये का बयान

और रसूलुल्लाह (ﷺ) का दो मुसलमानों की दियत के सिलसिले में उनके पास जाना और आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ उनका दग़ाबाज़ी करना। ज़ुह्री ने उ़र्वा से बयान किया कि ग़ज़्व-ए-बनू नज़ीर, ग़ज़्व-ए-बद्र के छः महीने बाद और ग़ज़्व-ए-उहुद से पहले हुआ था और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, अल्लाह ही वो है जिसने निकाला उन लोगों को जो काफ़िर हुए अहले किताब से उनके घरों से और ये (जज़ीर-ए-अ़रब से) उनकी पहली जलावतनी है, इब्ने इस्हाक़ की तह़क़ीक़ में ये ग़ज़्वा, ग़ज़्व-ए-बिअरे मऊ़ना और ग़ज़्व-ए-उहुद के बाद हुआ था।

١٤- باب حَدِيثُ بَنِي النَّضِيرِ

وَمَخْرَجِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِلَيْهِمْ فِي دِيَةِ الرَّجُلَيْنِ وَمَا أَرَادُوا مِنَ الْغَدْرِ بِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ. قَالَ الزُّهْرِيُّ عَنْ عُرْوَةَ كَانَتْ عَلَى رَأْسِ سِتَّةِ أَشْهُرٍ مِنْ وَقْعَةِ بَدْرٍ قَبْلَ أُحُدٍ وَقَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى ﴿هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ﴾. وَجَعَلَهُ ابْنُ إِسْحَاقَ بَعْدَ بِئْرِ مَعُونَةَ وَأُحُدٍ.

तशरीह : क़बीला बनू नज़ीर उन काफ़िरों में से थे जिनका आँह़ज़रत (ﷺ) से अ़हदो—पैमान (समझौता) था कि न ख़ुद आपसे लड़ेंगे और न आपके दुश्मनों को मदद करेंगे। ऐसा हुआ कि आ़मिर बिन तुफ़ैल ने जब क़ारियों को बिअरे मऊ़ना के क़रीब फ़रेब व दग़ा से मार डाला था तो अ़म्र बिन उ़मय्या ज़मीरी को जो मुसलमान थे अपनी माँ की मन्नत में आज़ाद कर दिया। रास्ते में उनको बनू आ़मिर के दो शख़्स मिले उन्होंने सोते में उनको मार डाला और समझे मैंने बनू आ़मिर से जिनमें का एक आ़मिर बिन तुफ़ैल था बदला लिया था। आँह़ज़रत (ﷺ) को मदीना में आकर ख़बर की। उनको ये ख़बर न थी कि आँह़ज़रत (ﷺ) और उनके मर्दों से अ़हदो—पैमान है। आपने अ़म्र से फ़र्माया, मैं उन दो शख़्सों की दियत दूँगा। बनू नज़ीर भी बनू आ़मिर के साथ अ़हद रखते थे। आप बनी नज़ीर के पास इस दियत में मदद लेने को तशरीफ़ ले गये। उन बदमाशों ने आपको और आपके अस्ह़ाब को बिठाया और ज़ाहिर में इमदाद का वा'दा किया लेकिन दरपर्दा ये स़लाह़ की कि आप दीवार के तले बैठे थे दीवार पर से एक पत्थर आप पर फेंककर आपको शहीद कर दें। अल्लाह ने जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) के ज़रिये से आपको आगाह कर दिया। आप वहाँ से एक दम उठकर मदीना रवाना हो गये और दीगर स़ह़ाबी भी। मौक़ा आने पर उन बदमाशों पर चढ़ाई करने का हुक्म दे दिया। इसी वाक़िये की कुछ तफ़्सीलात यहाँ मज़्कूर हैं ।

यहूद का पहला इख़्राज (निष्कासन) अ़रब से मुल्के शाम में हुआ, फिर अ़हदे फ़ारूक़ी में दूसरा निष्कासन ख़ैबर से शाम मुल्क को हुआ। कुछ ने कहा दूसरे इख़्राज से क़यामत का ह़श्र मुराद है। ये आयत बनी नज़ीर के यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई।

४०٢٨– حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: حَارَبَتِ النَّضِيرُ وَقُرَيْظَةُ فَأَجْلَى بَنِي النَّضِيرِ وَأَقَرَّ قُرَيْظَةَ وَمَنَّ عَلَيْهِمْ حَتَّى حَارَبَتْ قُرَيْظَةُ فَقَتَلَ رِجَالَهُمْ وَقَسَمَ نِسَاءَهُمْ وَأَوْلاَدَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ إِلاَّ بَعْضَهُمْ لَحِقُوا بِالنَّبِيِّ ﷺ فَآمَنَهُمْ وَأَسْلَمُوا وَأَجْلَى يَهُودَ الْمَدِينَةِ كُلَّهُمْ بَنِي قَيْنُقَاعَ وَهُمْ رَهْطُ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ وَيَهُودَ بَنِي حَارِثَةَ وَكُلَّ يَهُودِ الْمَدِينَةِ.

4028. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें मूसा बिन उ़क़्बा ने, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उनसे हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि बनू नज़ीर और बनू क़ुरेज़ा ने नबी करीम (ﷺ) से (मुआहदा तोड़कर) लड़ाई मोल ली। इसलिये आपने क़बीला बनू नज़ीर को जलावतन कर दिया लेकिन क़बीला बनू क़ुरेज़ा को जलावतन नहीं किया और इस तरह उन पर एहसान किया। फिर बनू क़ुरेज़ा ने भी जंग मोल ली। इसलिये आपने उनके मर्दों को क़त्ल करवा दिया और उनकी औरतों, बच्चों और माल को मुसलमानों में बांट दिया। सिर्फ़ कुछ बनी क़ुरेज़ा इससे अलग क़रार दिये गये थे क्योंकि वो हुज़ूर (ﷺ) की पनाह में आ गये थे। इसलिये आपने उन्हें पनाह दी और उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लियाथा। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मदीना में तमाम यहूदियों को जलावतन कर दिया था। बनू क़ैनक़ाअ़ को भी जो अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) का क़बीला था, यहूद बनी हारिषा को और मदीना के तमामयहूदियों को।

तश्रीह : यहूद ऐसी ग़द्दार क़ौम का नाम है जिसने ख़ुद अपने ही नबियों और रसूलों के साथ ज़्यादातर मौक़ों पर बेवफ़ाई की है। आज के यहूदी जो इस्राईली हुकूमत क़ायम करके फ़लस्तीन की ज़मीन पर ग़ासिबाना क़ब्ज़ा किये बैठे हैं अपनी फ़ितरी ग़द्दारी व बेवफ़ाई की ज़िन्दा मिषाल हैं। इसी मस्लिहत के तहत अल्लाह तआ़ला ने हिजाज की ज़मीन को इस ग़द्दार क़ौम से ख़ाली करा दिया।

४०٢٩– حدثني الْحَسَنُ بْنُ مُدْرِكٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ سُورَةُ الْحَشْرِ قَالَ: قُلْ سُورَةُ النَّضِيرِ تَابَعَهُ هُشَيْمٌ عَنْ أَبِي بِشْرٍ.
[أطرافه في: ٤٦٤٥، ٤٨٨٢، ٤٨٨٣].

4029. मुझसे हसन बिन मुदरिक ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमको अबू अ़वाना ने ख़बर दी, उन्हें अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के सामने कहा, सूरह हश्र तो उन्होंने कहा कि इसे सूरह नज़ीर कहो (क्योंकि ये सूरत बनू नज़ीर ही के बारे में नाज़िल हुई है) इस रिवायत की मुताबअ़त हुशैम ने अबू बिश्र से की है। (दीगर मक़ाम : 4645, 4882, 4883)

४٠٣٠– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: كَانَ الرَّجُلُ يَجْعَلُ لِلنَّبِيِّ ﷺ النَّخَلاَتِ حَتَّى

4030. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल् अस्वद ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अंसारी सहाबा नबी करीम (ﷺ) के लिये कुछ खजूर के पेड़ मख़्सूस रखते थे (ताकि उसका फल आपकी ख़िदमत में भेज दिया जाए)

लेकिन जब अल्लाह तआला ने बनू क़ुरेज़ा और बनू नज़ीर पर फ़तह अता फ़र्माई तो हुज़ूर (ﷺ) उनके फल वापस फ़र्मा दिया करते थे।

افْتَتَحَ قُرَيْظَةَ وَالنَّضِيرَ فَكَانَ بَعْدَ ذَلِكَ يَرُدُّ عَلَيْهِمْ.

4031. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बनी नज़ीर की खजूरों के बाग़ात जलवा दिये थे और उनके पेड़ों को कटवा दिया था। ये बाग़ात मुक़ामे बुवेरह में थे इस पर ये आयत नाज़िल हुई, जो पेड़ तुमने काट दिये हैं या जिन्हें तुमने छोड़ दिया है कि वो अपनी जड़ों पर खड़े रहे तो ये अल्लाह के हुक्म से हुआ है। (राजेअ : 2326)

٤٠٣١- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : حَرَّقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ نَخْلَ بَنِي النَّضِيرِ وَقَطَعَ وَهِيَ الْبُوَيْرَةُ فَنَزَلَ - ﴿مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللهِ﴾. [راجع: ٢٣٢٦]

4032. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको ह़ब्बान ने ख़बर दी, उन्हें जुवेरिया बिन अस्मा ने, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बनू नज़ीर के बाग़ात जलवा दिये थे। उन्होंने कहा कि ह़स्सान बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने इसी के बारे में ये शे'र कहा था।

(तर्जुमा) बनू लुई (क़ुरैश) के सरदारों ने बड़ी आसानी के साथ बर्दाश्त कर लिया। मुक़ामे बुवेरा में इस आग को जो फैल रही थी। बयान किया कि फिर उसका जवाब अबू सुफ़यान बिन ह़ारिष़ ने इन अश्आर में दिया। अल्लाह करे कि मदीना में हमेशा यूँ ही आग लगती रहे और उसके अत्राफ़ में यूँ हीं शोले उठते रहें। तुम्हें जल्द ही मा'लूम हो जाएगा कि हममें से कौन इस मुक़ामे बुवेरा से दूर है और तुम्हें मा'लूम हो जाएगा कि किसकी ज़मीन को नुक़्सान पहुँचता है।

(राजेअ : 2326)

٤٠٣٢- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا حَبَّانُ أَخْبَرَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَرَّقَ نَخْلَ بَنِي النَّضِيرِ قَالَ : وَلَهَا يَقُولُ حَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ :

وَهَانَ عَلَى سَرَاةِ بَنِي لُؤَيٍّ
حَرِيقٌ بِالْبُوَيْرَةِ مُسْتَطِيرُ

قَالَ فَأَجَابَهُ أَبُو سُفْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ :

أَدَامَ اللهُ ذَلِكَ مِنْ صَنِيعٍ
وَحَرَّقَ فِي نَوَاحِيهَا السَّعِيرُ
سَتَعْلَمُ أَيُّنَا مِنْهَا بِنُزْهٍ
وَتَعْلَمُ أَيَّ أَرْضَيْنَا تَضِيرُ

[راجع: ٢٣٢٦]

तश्रीह : बुवेरा बनी नज़ीर के बाग़ को कहते थे जो मदीना के क़रीब वाक़ेअ था। बनी लूई क़ुरैश के लोगों को कहते हैं। उनमें और बनी नज़ीर में अहदो–पैमान था। हज़रत ह़स्सान (रज़ि.) का मतलब क़ुरैश की हिज्व करना है कि उनके दोस्तों के बाग़ जलते रहे और वो क़ुरैश उनकी कुछ मदद न कर सके। जवाबी अश्आर में अबू सुफ़यान ने मुसलमानों को बद्दुआ दी या'नी अल्लाह करे तुम्हारे शहर में हमेशा चारों त़रफ़ आग जलती रहे। अबू सुफ़यान की बद्दुआ मरदूद हो गई और अल्हम्दु लिल्लाह मदीना मुनव्वरा आज भी जन्नत की फ़िज़ा रखता है। मौलाना वहीदुज़्ज़माँ ने उन अश्आर का उर्दू तर्जुमा यूँ मंज़ूम किया है। हज़रत ह़स्सान के शे'र का तर्जुमा,

बनी लूई के शरीफ़ों पे हो क्या आसान लगी हो आग बुवेरा में सब त़रफ़ यराँ

अबू सुफ़यान बिन ह़ारिष़ के अश्आर का तर्जुमा :–

अल्लाह करे कि हमेशा रहे वहाँ ये ह़ाल मदीना के चारों त़रफ़ रहे आतिश सूज़ाँ

ये जान लोगे तुम अब अ़न्क़रीब कौन हम में रहेगा बचा किसका मुल्क उठाएगा नुक़्सान

ये अबू सुफ़यान ने मुसलमानों को और उनके शहर मदीना को बद्दुआ दी थी जो मरदूद हो गई।

4033. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें मालिक बिन औस बिन ह़दष़ान नस़री ने ख़बर दी कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने उन्हें बुलाया था। (वो अभी अमीरुल मोमिनीन) की ख़िदमत में मौजूद थे कि अमीरुल मोमिनीन के चौकीदार यरफ़ाअ आए और अ़र्ज़ किया कि उ़ष़्मान बिन अ़फ़्फ़ान और अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ज़ुबैर बिन अ़व्वाम और सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) अंदर आना चाहते हैं । क्या आपकी त़रफ़ से उन्हें इजाज़त है? अमीरुल मोमिनीन ने फ़र्माया कि हाँ, उन्हें अंदर बुला लो। थोड़ी देर बाद यरफ़ा फिर आए और अ़र्ज़ किया ह़ज़रत अ़ब्बास और अ़ली (रज़ि.) भी इजाज़त चाहते हैं क्या उन्हें भी अंदर आने की इजाज़त है? आपने फ़र्माया कि हाँ, जब ये दोनों बुज़ुर्ग अंदर तशरीफ़ ले आए तो अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, अमीरुल मोमिनीन! मेरा और इन (अ़ली रज़ि.) का फ़ैस़ला कर दीजिए। वो दोनों उस जायदाद के बारे में झगड़ा कर रहे थे जो अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (ﷺ) को माले बनू नज़ीर से फ़ै के त़ौर पर दी थी। उस मौक़े पर एक–दूसरे पर तन्क़ीद की तो ह़ाज़िरीन बोले, अमीरुल मोमिनीन! आप उन दोनों बुज़ुर्गों का फ़ैस़ला कर दें ताकि दोनों में झगड़ा न रहे। उ़मर (रज़ि.) ने कहा, जल्दी न कीजिए। मैं आप लोगों से उस अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूँ जिसके हुक्म से आसमान व ज़मीन क़ायम हैं, क्या आपको मा'लूम है कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि हम अंबिया की वराष़त तक़्सीम नहीं होती जो कुछ हम छोड़ जाएँ वो स़दक़ा होता है और इससे हुज़ूर (ﷺ) की मुराद ख़ुद अपनी ज़ात से थी? ह़ाज़िरीन बोले कि जी हाँ, हुज़ूर (ﷺ) ने ये फ़र्माया

٤٠٣٣– حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي مَالِكُ بْنُ أَوْسِ بْنِ الْحَدَثَانِ النَّصْرِيُّ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ دَعَاهُ إِذْ جَاءَهُ حَاجِبُهُ يَرْفَا فَقَالَ لَهُ : هَلْ لَكَ فِي عُثْمَانَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ وَالزُّبَيْرِ وَسَعْدٍ يَسْتَأْذِنُونَ؟ فَقَالَ : نَعَمْ. فَأَدْخِلْهُمْ فَلَبِثَ قَلِيلاً ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: هَلْ لَكَ فِي عَبَّاسٍ وَعَلِيٍّ يَسْتَأْذِنَانِ؟ قَالَ : نَعَمْ. فَلَمَّا دَخَلاَ قَالَ : عَبَّاسٌ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ اقْضِ بَيْنِي وَبَيْنَ هَذَا وَهُمَا يَخْتَصِمَانِ فِي الَّذِي أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ مَالِ بَنِي النَّضِيرِ فَاسْتَبَّ عَلِيٌّ وَعَبَّاسٌ فَقَالَ الرَّهْطُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ اقْضِ بَيْنَهُمَا وَأَرِحْ أَحَدَهُمَا مِنَ الآخَرِ فَقَالَ عُمَرُ: اتَّئِدُوا أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ الَّذِي بِإِذْنِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ)) يُرِيدُ بِذَلِكَ نَفْسَهُ قَالُوا : قَدْ قَالَ ذَلِكَ. فَأَقْبَلَ عُمَرُ عَلَى عَلِيٍّ

था। फिर उमर (रज़ि.) अ़ब्बास और अ़ली (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और उनसे कहा, मैं आप दोनों से भी अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूँ। क्या आपको भी मा'लूम है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ये हदीष़ इर्शाद फ़र्माई थी? उन दोनों बुज़ुर्गों ने भी जवाब हाँ में दिया। उसके बाद उमर (रज़ि.) ने कहा, फिर मैं आप लोगों से इस मामले में बातचीत करता हूँ। अल्लाह सुब्हानहु व तआ़ला ने अपने रसूल (ﷺ) को उस माले फ़ै में से (जो बनू नजीर से मिला था) आपको ख़ास़ तौर पर अ़ता फ़र्मा दिया था। अल्लाह तआ़ला ने उसके बारे में फ़र्माया है कि बनू नज़ीर के मालों से जो अल्लाह ने अपने रसूल को दिया है तो तुमने उसके लिये घोड़े और ऊँट नहीं दौड़ाए। (या'नी जंग नहीं की) अल्लाह तआ़ला का इर्शाद क़दीर तक। तो ये माल ख़ास़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये था लेकिन अल्लाह की क़सम कि हुज़ूर (ﷺ) ने तुम्हें नज़रअंदाज़ करके अपने लिये इसे मख़्सूस़ किया था न तुम पर अपनी ज़ात को तरजीह दी थी। पहले इस माल में से तुम्हें दिया और तुममें उसकी तक़्सीम की और आख़िर उस फ़ै में से जायदाद बच गई। पस आप अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात का सालाना ख़र्च भी उसी में से निकालते थे और जो कुछ उसमें से बाक़ी बचता उसे आप अल्लाह तआ़ला के मसारिफ़ में खर्च करते थे। हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी ज़िन्दगी में ये जायदाद उन्ही मसारिफ़ में ख़र्च की। फिर जब आपकी वफ़ात हो गई तो अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि मुझे आँहज़रत (ﷺ) का ख़लीफ़ा बना दिया गया है। इसलिये उन्होंने उसे अपने क़ब्ज़े में ले लिया और उसे उन्हीं मसारिफ़ में ख़र्च करते रहे जिसमें आँहज़रत (ﷺ) ख़र्च किया करते थे और आप लोग यहीं मौजूद थे। उसके बाद उमर (रज़ि.) अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया। आप लोगों को मा'लूम है कि अबूबक्र (रजि) ने भी वही तरीक़ा इख़्तियार किया, जैसा कि आप लोगों को भी इसका इक़रार है और अल्लाह की क़सम! कि वो अपने इस तर्ज़े अमल में सच्चे, मुख़्लिस़, स़हीह रास्ते पर और हक़ की पैरवी करने वाले थे। फिर अल्लाह तआ़ला ने अबूबक्र (रज़ि.) को भी उठा लिया, इसलिये मैंने कहा कि मुझे रसूले करीम (ﷺ) और अबूबक्र

وَعَبَّاسٍ فَقَالَ : أَنْشُدُكُمَا بِاللهِ هَلْ تَعْلَمَانِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ قَالَ ذَلِكَ؟ قَالاَ: نَعَمْ. قَالَ: فَإِنِّي أُحَدِّثُكُمْ عَنْ هَذَا الأَمْرِ إِنَّ اللهَ سُبْحَانَهُ كَانَ خَصَّ رَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذَا الْفَيْءِ بِشَيْءٍ لَمْ يُعْطِهِ أَحَدًا غَيْرَهُ فَقَالَ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَمَا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلاَ رِكَابٍ﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿قَدِيرٌ﴾ فَكَانَتْ هَذِهِ خَالِصَةً لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ وَاللهِ مَا احْتَازَهَا دُونَكُمْ وَلاَ اسْتَأْثَرَهَا عَلَيْكُمْ لَقَدْ أَعْطَاكُمُوهَا وَقَسَمَهَا فِيكُمْ حَتَّى بَقِيَ هَذَا الْمَالُ مِنْهُ فَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةَ سَنَتِهِمْ مِنْ هَذَا الْمَالِ ثُمَّ يَأْخُذُ مَا بَقِيَ فَيَجْعَلُهُ مَجْعَلَ مَالِ اللهِ فَعَمِلَ ذَلِكَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَيَاتَهُ ثُمَّ تُوُفِّيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَأَنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَبَضَهُ أَبُو بَكْرٍ فَعَمِلَ فِيهِ بِمَا عَمِلَ بِهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، وَأَنْتُمْ حِينَئِذٍ فَأَقْبَلَ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ وَقَالَ : تَذْكُرَانِ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ عمل فِيهِ كَمَا تَقُولاَنِ وَاللهُ يَعْلَمُ إِنَّهُ فِيهِ لَصَادِقٌ بَارٌّ رَاشِدٌ تَابِعٌ لِلْحَقِّ، ثُمَّ تَوَفَّى اللهُ عَزَّ

(रज़ि.) का ख़लीफ़ा बनाया गया। चुनाँचे मैं उस जायदाद पर अपनी ख़िलाफ़त के दो सालों से क़ाबिज़ हूँ और उसे उन्हीं मसारिफ़ में ख़र्च करता हूँ जिसमें आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने किया था और अल्लाह तआला जानता है कि मैं भी अपने तर्ज़े अमल में सच्चा, मुख़्लिस, सहीह रास्ते पर और हक़ की पैरवी करने वाला हूँ। फिर आप दोनों मेरे पास आए हैं। आप दोनों एक ही हैं और आपका मामला भी एक है। फिर आप मेरे पास आए। आपकी मुराद अब्बास (रज़ि.) से थी, तो मैंने आप दोनों के सामने ये बात साफ़ कह दी थी कि रसूले करीम (ﷺ) फ़र्मा गये थे, हमार तर्का तक़्सीम नहीं होता। हम जो कुछ छोड़ जाएँ वो सदक़ा है। फिर जब वो जायदाद बतौरे इंतिज़ाम मैं आप दोनों को दे दूँ तो मैंने आपसे कहा कि अगर आप चाहें तो मैं ये जायदाद आपको दे सकता हूँ। लेकिन शर्त ये है कि अल्लाह तआला के सामने किये हुए अहद की तमाम ज़िम्मेदारियों को आप पूरा करें। आप लोगों को मा'लूम है कि आँहज़रत (ﷺ) और अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने और ख़ुद मैंने जबसे मैं ख़लीफ़ा बना हूँ, इस जायदाद के मामले में किस तर्ज़े अमल को इख़्तियार किया हुआ है। अगर ये शर्त आपको मंज़ूर न हो तो फिर मुझसे इसके बारे में आप लोग बात न करें। आप लोगों ने इस पर कहा कि ठीक है। आप इसी शर्त पर वो जायदाद हमारे हवाले कर दें। चुनाँचे मैंने उसे आप लोगों के हवाले कर दिया। क्या आप हज़रात उसके सिवा कोई और फ़ैसला इस सिलसिले में मुझसे करवाना चाहते हैं? उस अल्लाह की क़सम! जिसके हुक्म से आसमान व ज़मीन क़ायम हैं, क़यामत तक मैं इसके सिवा कोई और फ़ैसला नहीं कर सकता। अगर आप लोग (शर्त के मुताबिक़ उसके इंतिज़ाम से) आजिज़ हैं तो वो जायदाद मुझे वापस कर दें मैं ख़ुद उसका इंतिज़ाम करूँगा। (राजेअ : 2904)

وجَلَّ أبا بَكْرٍ، فَقُلْتُ: أنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وأبِي بَكْرٍ فَقَبَضْتُهُ سَنَتَيْنِ مِنْ إمَارَتِي أعْمَلُ فِيهِ بِمَا عَمِلَ فِيهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأبُو بَكْرٍ وَاللهُ يَعْلَمُ أنِّي فِيهِ صَادِقٌ، بَارٌّ، رَاشِدٌ، تَابِعٌ لِلْحَقِّ، ثُمَّ جِئْتُمَانِي كِلاَكُمَا وَكَلِمَتُكُمَا وَاحِدَةٌ وَأمْرُكُمَا جَمِيعٌ فَجِئْتَنِي يَعْنِي عَبَّاسًا فَقُلْتُ لَكُمَا إنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ)) فَلَمَّا بَدَا لِي أنْ أدْفَعَهُ إلَيْكُمَا قُلْتُ إنْ شِئْتُمَا دَفَعْتُهُ إلَيْكُمَا عَلَى أنَّ عَلَيْكُمَا عَهْدَ اللهِ وَمِيثَاقَهُ لَتَعْمَلاَنِّ فِيهِ بِمَا عَمِلَ فِيهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأبُو بَكْرٍ وَ عَمِلْتُ فِيهِ مُذْ وَلِيتُ وَإلاَّ فَلاَ تُكَلِّمَانِي فَقُلْتُمَا ادْفَعْهُ إلَيْنَا بِذَلِكَ فَدَفَعْتُهُ إلَيْكُمَا أفَتَلْتَمِسَانِ مِنِّي قَضَاءً غَيْرَ ذَلِكَ؟ فَوَاللهِ الَّذِي بِإذْنِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأرْضُ لاَ أقْضِي فِيهِ بِقَضَاءٍ غَيْرِ ذَلِكَ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ فَإنْ عَجَزْتُمَا عَنْهُ فَادْفَعَا إلَيَّ فَأنَا أكْفِيكُمَاهُ.

[راجع: ٢٩٠٤]

4034. ज़ुह्री ने बयान किया कि फिर मैंने इस हदीष का तज़्किरा उर्वा बिन ज़ुबैर से किया तो उन्होंने कहा मालिक बिन औस ने ये

٤٠٣٤- قَالَ فَحَدَّثْتُ هَذَا الْحَدِيثَ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ فَقَالَ صَدَقَ مَالِكُ بْنُ

रिवायत तुमसे सहीह बयान की है। मैंने नबी करीम (ﷺ) की पाक बीवी आइशा (रज़ि.) से सुना है। उन्होंने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) की अज़्वाज ने उ़ष्मान (रज़ि.) को अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास भेजा और उनसे दरख़्वास्त की कि अल्लाह तआ़ला ने जो फ़ै अपने रसूल (ﷺ) को दी थी उसमें से उनके हिस्से दिये जाएँ। लेकिन मैंने उन्हें रोका और उनसे कहा तुम अल्लाह से डरती नहीं क्या हुज़ूर (ﷺ) ने ख़ुद नहीं फ़र्माया था कि हमारा तर्का तक़्सीम नहीं होता? हम जो कुछ छोड़ जाएँ वो सदक़ा होता है। हुज़ूर (ﷺ) का इशारा इस इर्शाद में ख़ुद अपनी ज़ात की तरफ़ था। अल्बत्ता आले मुहम्मद (ﷺ) को इस जायदाद में से ता-ज़िन्दगी (उनकी ज़रूरियात के लिये) मिलता रहेगा। जब मैंने अज़्वाजे मुत़हहरात को ये ह़दीष़ सुनाई तो उन्होंने भी अपना ख़्याल बदल दिया। उ़र्वा ने कहा कि यही वो सदक़ा है जिसका इंतिज़ाम पहले अ़ली (रज़ि.) के हाथ में था। अ़ली (रज़ि.) ने अ़ब्बास (रज़ि.) को उसके इंतिज़ाम मे शरीक नहीं किया था बल्कि ख़ुद उसका इंतिज़ाम करते थे (और जिस तरह आँहुज़ूर ﷺ अबूबक्र रज़ि.) और उ़मर (रज़ि.) ने इसे खर्च किया था, उसी तरह उन्हीं मसारिफ़ में वो भी ख़र्च करते थे)। इसके बाद वो सदक़ा हसन बिन अ़ली (रज़ि.) के इंतिज़ाम में आ गया था। फिर हुसैन बिन अ़ली (रज़ि.) के इंतिज़ाम में रहा। फिर जनाबे अ़ली बिन हुसैन और हसन बिन हसन के इंतिज़ाम में आ गया था और ये ह़क़ है कि ये रसूलुल्लाह (ﷺ) का सदक़ा था।

أوْسٍ أنَا سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ تَقُولُ: أَرْسَلَ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ ﷺ عُثْمَانَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ يَسْأَلْنَهُ ثُمُنَهُنَّ مِمَّا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ فَكُنْتُ أَنَا أَرُدُّهُنَّ فَقُلْتُ لَهُنَّ : أَلاَ تَتَّقِينَ اللهَ أَلَمْ تَعْلَمْنَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَقُولُ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ)) يُرِيدُ بِذَلِكَ نَفْسَهُ إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ فِي هَذَا الْمَالِ فَانْتَهَى أَزْوَاجُ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى مَا أَخْبَرَتْهُنَّ قَالَ: فَكَانَتْ هَذِهِ الصَّدَقَةُ بِيَدِ عَلِيٍّ مَنَعَهَا عَلِيٌّ عَبَّاسًا فَغَلَبَهُ عَلَيْهَا ثُمَّ كَانَ بِيَدِ حَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ ثُمَّ بِيَدِ حُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ ثُمَّ بِيَدِ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ وَحَسَنِ بْنِ حَسَنٍ كِلاَهُمَا كَانَا يَتَدَاوَلاَنِهَا ثُمَّ بِيَدِ زَيْدِ بْنِ حَسَنٍ وَهِيَ صَدَقَةُ رَسُولِ اللهِ ﷺ حَقًّا.

तश्रीह : इस ह़दीष़ से साफ़ जाहिर है कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने वराष़ते नबवी के बारे में फ़र्माने नबवी पर पूरे तौर पर अमल किया कि उसे तक़्सीम नहीं होने दिया। जिन मसारिफ़ में आँह़ज़रत (ﷺ) ने इसे ख़र्च किया ये ह़ज़रात भी उन ही मसारिफ़ में उसे ख़र्च करते रहे। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को भी इस बारे में इख़्तिलाफ़ न था, अगर कुछ इख़्तिलाफ़ होता भी तो सिर्फ़ इस बारे में कि इस सदक़े की निगरानी कौन करे? उसका मुतवल्ली कौन हो? इस बारे में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने तफ़्सील से इन ह़ज़रात को मामला समझाकर उस तर्के को उनके ह़वाले कर दिया। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम व अरज़ा अ़न्हू।

4035. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उ़र्वा ने और उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) और ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास आए और आँह़ज़रत (ﷺ) की ज़मीन जो फ़िदक में थी और जो ख़ैबर

٤٠٣٥ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ وَالْعَبَّاسَ أَتَيَا أَبَا بَكْرٍ يَلْتَمِسَانِ

में आपको हिस्सा मिला था, उसमें से अपने वरसे का मुतालबा किया। (राजेअ : 3092)

مِيرَاثَهُمَا أَرْضَهُ مِنْ فَدَكٍ وَسَهْمَهُ مِنْ خَيْبَرَ. [راجع: ٣٠٩٢]

4036. इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि) ने कहा कि मैंने ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) से सुना है। आपने फ़र्माया था कि हमारा तर्का तक़्सीम नहीं होता। जो कुछ हम छोड़ जाएँगे वो सदक़ा है। अल्बत्ता आले मुहम्मद (ﷺ) को उस जायदाद में से ख़र्च ज़रूर मिलता रहेगा और अल्लाह की क़सम! रसूले करीम (ﷺ) के क़राबतदारों के साथ उम्दा मामला करना मुझे ख़ुद अपने क़राबतदारों के साथ हुस्न मामलात से ज़्यादा अज़ीज़ है। (राजेअ : 3093)

٤٠٣٦- فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ)) إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ فِي هَذَا الْمَالِ وَاللهِ لَقَرَابَةُ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ أَصِلَ مِنْ قَرَابَتِي. [راجع: ٣٠٩٣]

हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने एक तरफ़ फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) का एहतिराम बाक़ी रखा तो दूसरी तरफ़ हज़रात अहले बैत के बारे में साफ़ कह दिया कि उनका एहतिराम, उनकी ख़िदमत, उनकेसाथ हुस्ने बर्ताव मुझको ख़ुद अपने अज़ीज़ों के साथ हुस्ने बर्ताव से ज़्यादा अज़ीज़ है। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) की दिलजोई करना, उनका अहमतरीन मक़सद था और ता-हयात आपने उसको अमली जामा पहनाया और इस हाल में दुनिया से रुख़सत हो गये। अल्लाह तआला सबको क़यामत के दिन फ़िरदौसे बरीं में जमा करेगा और सब **व नज़अना मा फ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्ल** (अल् अअराफ़ : 43) के मिस्दाक़ होंगे।

बाब 15 : कअब बिन अशरफ़ यहूदी के क़त्ल का क़िस्सा

١٥- بَابُ قَتْلِ كَعْبِ بْنِ الأَشْرَفِ

इस पर तफ़्सीली नोट मुक़द्दमा बुख़ारी पारा 12 में गुज़र चुका है। मुख़्तसर ये कि ये बड़ा सरमायादार यहूदी था। आँहज़रत (ﷺ) और मुसलमानों की बुराई किया करता और क़ुरैश के कुफ़्फ़ार को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उभारता। इसकी शरारतों का ख़ात्मा करने के लिये मजबूरन माहे रबीउल अव्वल सन 3 हिजरी में ये क़दम उठाया गया **फ़क़ुतिअ दाबिरुल्क़ौमिल्लज़ीन ज़लमू वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन** (अल अन्आम : 45)

4037. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने कहा, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कअब बिन अशरफ़ का काम कौन तमाम करेगा? वो अल्लाह और रसूल को बहुत सता रहा है। इस पर मुहम्मद बिन मुस्लिमा अंसारी (रज़ि.) खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आप इजाज़त देंगे कि मैं उसे क़त्ल कर आऊँ? आपने फ़र्माया, हाँ मुझको ये पसन्द है। उन्होंने अर्ज़ किया, फिर आप मुझे इजाज़त इनायत फ़र्माएँ कि मैं उससे कुछ बातें कहूँ। आपने उन्हें इजाज़त दे दी। अब मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) कअब बिन अशरफ़ के पास आए और उससे कहा, ये शख़्स (इशारा हुज़ूरे अकरम ﷺ की तरफ़ था) हमसे सदक़ा मांगता रहता है और उसने

٤٠٣٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو : سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((مَنْ لِكَعْبِ بْنِ الأَشْرَفِ؟ فَإِنَّهُ قَدْ آذَى اللهَ وَرَسُولَهُ)) فَقَامَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ أَتُحِبُّ أَنْ أَقْتُلَهُ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)) قَالَ: فَأْذَنْ لِي أَنْ أَقُولَ شَيْئًا قَالَ : قُلْ فَأَتَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ فَقَالَ : إِنَّ هَذَا الرَّجُلَ قَدْ سَأَلَنَا صَدَقَةً وَإِنَّهُ قَدْ عَنَّانَا. وَإِنِّي قَدْ أَتَيْتُكَ

हमें थका मारा है। इसलिये मैं तुमसे क़र्ज़ लेने आया हूँ। इस पर कअ़ब ने कहा, अभी आगे देखना, अल्लाह की क़सम! बिलकुल उकता जाओगे। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा, चूँकि हमने भी अब उनकी इत्तिबाअ़ कर ली है। इसलिये जब तक ये न खुल जाए कि उनका अंजाम क्या होता है, उन्हें छोड़ना भी मुनासिब नहीं। मैं तुमसे एक वस्क़ या (रावी ने बयान किया कि) दो वस्क़ अनाज क़र्ज़ लेने आया हूँ। और हमसे अ़म्र बिन दीनार ने ये हदीष़ कई दफ़ा बयान की लेकिन एक वस्क़ या दो वस्क़ ग़ल्ले का कोई ज़िक्र नहीं किया। मैंने उनसे कहा कि हदीष़ में एक वस्क़ या दो वस्क़ का भी ज़िक्र है? उन्होंने कहा कि मेरा भी ख़्याल है कि हदीष़ में एक या दो वस्क़ का ज़िक्र आया है। कअ़ब बिन अशरफ़ ने कहा, हाँ! मेरे पास कुछ गिरवी रख दो। उन्होंने पूछा, गिरवी में तुम क्या चाहते हो? उसने कहा, अपनी औ़रतों को रख दो। उन्होंने कहा कि तुम अ़रब के बहुत ख़ूबसूरत मर्द हो। हम तुम्हारे पास अपनी औ़रतें किस त़रह गिरवी रख सकते हैं? उसने कहा, फिर अपने बच्चों को गिरवी रख दो। उन्होंने कहा, हम बच्चों को किस त़रह गिरवी रख सकते हैं कल उन्हें इसी पर गालियाँ दी जाएँगी कि एक या दो वस्क़ ग़ल्ले पर उसे रहन रख दिया गया था, ये तो बड़ी बेग़ैरती होगी। अल्बत्ता हम तुम्हारे पास अपने लुअमा गिरवी रख सकते हैं। सुफ़यान ने कहा कि मुराद उससे हथियार थे। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने इससे दोबारा मिलने का वा'दा किया और रात के वक़्त उसके यहाँ आए। उनके साथ अबू नायला भी मौजूद थे वो कअ़ब बिन अशरफ़ के रज़ाई भाई थे। फिर उसके क़िले के पास जाकर उन्होंने आवाज़ दी। वो बाहर आने लगा तो उसकी बीवी ने कहा कि इस वक़्त (इतनी रात गये) कहाँ बाहर जा रहे हो? उसने कहा, वो तो मुहम्मद बिन मस्लमा और मेरा भाई अबू नायला है। अ़म्र के सिवा (दूसरे रावी) ने बयान किया कि उसकी बीवी ने उससे कहा था कि मुझे तो ये आवाज़ ऐसी लगती है जैसे उससे ख़ून टपक रहा हो। कअ़ब ने जवाब दिया कि मेरे भाई मुहम्मद बिन मस्लमा और मेरे रज़ाई भाई अबू नायला हैं। शरीफ़ को अगर रात में भी नेज़ाबाज़ी के लिये बुलाया जाए तो वो निकल

أَسْتَسْلِفُكَ قَالَ: وَأَيْضًا وَاللهِ لَتَمَلُّنَّهُ قَالَ: إِنَّا قَدِ اتَّبَعْنَاهُ فَلاَ نُحِبُّ أَنْ نَدَعَهُ حَتَّى نَنْظُرَ إِلَى أَيِّ شَيْءٍ يَصِيرُ شَأْنُهُ وَقَدْ أَرَدْنَا أَنْ تُسْلِفَنَا وَسْقًا أَوْ وَسْقَيْنِ، وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو غَيْرَ مَرَّةٍ فَلَمْ يَذْكُرْ وَسْقًا أَوْ وَسْقَيْنِ فَقُلْتُ لَهُ فِيهِ وَسْقًا أَوْ وَسْقَيْنِ فَقَالَ: أَرَى فِيهِ وَسْقًا أَوْ وَسْقَيْنِ فَقَالَ: نَعَمْ. إِرْهَنُونِي قَالُوا: أَيَّ شَيْءٍ تُرِيدُ قَالَ: ارْهَنُونِي نِسَاءَكُمْ؟ قَالُوا: كَيْفَ نَرْهَنُكَ نِسَاءَنَا وَأَنْتَ أَجْمَلُ الْعَرَبِ؟ قَالَ: فَارْهَنُونِي أَبْنَاءَكُمْ؟ قَالُوا: كَيْفَ نَرْهَنُكَ أَبْنَاءَنَا فَيُسَبُّ أَحَدُهُمْ؟ فَيُقَالُ: أُرْهِنَ بِوَسْقٍ أَوْ وَسْقَيْنَ هَذَا عَارٌ عَلَيْنَا وَلَكِنَّا نَرْهَنُكَ اللأْمَةَ قَالَ سُفْيَانُ يَعْنِي السِّلاَحَ فَوَاعَدَهُ أَنْ يَأْتِيَهُ فَجَاءَهُ لَيْلاً وَمَعَهُ أَبُو نَائِلَةَ وَهُوَ أَخُو كَعْبٍ مِنَ الرَّضَاعَةِ فَدَعَاهُمْ إِلَى الْحِصْنِ فَنَزَلَ إِلَيْهِمْ فَقَالَتْ لَهُ امْرَأَتُهُ أَيْنَ تَخْرُجُ هَذِهِ السَّاعَةَ؟ فَقَالَ: إِنَّمَا هُوَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ وَأَخِي أَبُو نَائِلَةَ وَقَالَ غَيْرُ عَمْرٍو: قَالَتْ أَسْمَعُ صَوْتًا كَأَنَّهُ يَقْطُرُ مِنْهُ الدَّمُ قَالَ: إِنَّمَا هُوَ أَخِي مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ وَرَضِيعِي أَبُو نَائِلَةَ إِنَّ الْكَرِيمَ لَوْ دُعِيَ إِلَى طَعْنَةٍ بِلَيْلٍ لأَجَابَ قَالَ: وَيُدْخِلُ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ مَعَهُ رَجُلَيْنِ قِيلَ لِسُفْيَانَ: سَمَّاهُمْ عَمْرٌو قَالَ: سَمَّى بَعْضَهُمْ قَالَ عَمْرٌو: جَاءَ

مَعَهُ بِرَجُلَيْنِ وَقَالَ غَيْرُ عَمْرٍو وَأَبُو عَبْسِ بْنُ جَبْرٍ وَالْحَارِثُ بْنُ أَوْسٍ وَعَبَّادُ بْنُ بِشْرٍ قَالَ عَمْرٌو : جَاءَ مَعَهُ بِرَجُلَيْنِ فَقَالَ : إِذَا مَا جَاءَ فَإِنِّي قَائِلٌ بِشَعَرِهِ فَأَشَمُّهُ فَإِذَا رَأَيْتُمُونِي اسْتَمْكَنْتُ مِنْ رَأْسِهِ فَدُونَكُمْ فَاضْرِبُوهُ وَقَالَ مَرَّةً: ثُمَّ أُشِمُّكُمْ فَنَزَلَ إِلَيْهِمْ مُتَوَشِّحًا وَهُوَ يَنْفَحُ مِنْهُ رِيحُ الطِّيبِ فَقَالَ : مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ رِيحًا أَيْ أَطْيَبَ وَقَالَ غَيْرُ عَمْرٍو : قَالَ عِنْدِي أَعْطَرُ نِسَاءِ الْعَرَبِ وَأَكْمَلُ الْعَرَبِ، قَالَ عَمْرٌو: فَقَالَ أَتَأْذَنُ لِي أَنْ أَشَمَّ رَأْسَكَ؟ قَالَ: فَشَمَّهُ ثُمَّ أَشَمَّ أَصْحَابَهُ ثُمَّ قَالَ : أَتَأْذَنُ لِي؟ قَالَ: نَعَمْ. فَلَمَّا اسْتَمْكَنَ مِنْهُ. قَالَ: دُونَكُمْ فَقَتَلُوهُ، ثُمَّ أَتَوُا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرُوهُ.

पड़ता है। रावी ने बयान किया कि जब मुहम्मद बिन मस्लमा अंदर गये तो उनके साथ दो आदमी और थे। सुफ़यान से पूछा गया कि क्या अ़म्र बिन दीनार ने उनके नाम भी लिये थे? उन्होंने बताया कि कुछ का नाम लिया था। अ़म्र ने बयान किया कि वो आए तो उनके साथ दो आदमी और थे और अ़म्र बिन दीनार के सिवा (रावी ने) अबू अ़ब्स बिन जबर, हारिष़ बिन ओस और अ़ब्बाद बिन बिश्र नाम बताए थे। अ़म्र ने बयान किया कि वो अपने साथ दो आदमियों को लाए थे और उन्हें ये हिदायत की थी कि जब कअ़ब आए तो मैं उसके (सर के) बाल हाथ में ले लूँगा और सूँघने लगूँगा जब तुम्हे अंदाज़ा हो जाए कि मैंने उसका सर पूरी त़रह़ अपने क़ब्ज़े में ले लिया है तो फिर तुम तैयार हो जाना और उसे क़त्ल कर डालना। अ़म्र ने एक बार बयान किया कि फिर मैं उसका सर सूँघूँगा, आख़िर कअ़ब चादर लपेटे हुए बाहर आया। उसके जिस्म से ख़ुश्बू फूटी पड़ती थी। मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा, आज से ज़्यादा उ़म्दा ख़ुश्बू मैंने कभी नहीं सूँघी थी। अ़म्र के सिवा (दूसरे रावी) ने बयान किया कि कअ़ब इस पर बोला, मेरे पास अ़रब की वो औ़रत है जो हर वक़्त इत्र में बसी रहती है और हुस्न व जमाल में भी उसकी कोई नज़ीर नहीं। अ़म्र ने बयान किया कि मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने उससे कहा, क्या तुम्हारे सर को सूँघने की मुझे इजाज़त है? उसने कहा, सूँघ सकते हो। रावी ने बयान किया कि मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने उसका सर सूँघा और उनके बाद उनके साथियों ने भी सूँघा। फिर उन्होंने कहा, क्या दोबारा सूँघने की इजाज़त है? उसने इस बार भी इजाज़त दे दी। फिर जब मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने उसे पूरी त़रह़ अपने क़ाबू में कर लिया तो अपने साथियों को इशारा किया कि तैयार हो जाओ। चुनाँचे उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया और हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसकी ख़बर दी।

तश्रीह : कअ़ब बिन अशरफ़ का काम तमाम करने वाले गिरोह के सरदार ह़ज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) थे। उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से वा'दा तो कर लिया मगर कई दिन तक मुतफ़क्किर (चिन्तित) रहे। फिर अबू नायला के पास आए जो कअ़ब का रज़ाई भाई था और अ़ब्बाद बिन बिश्र और ह़ारिष़ बिन औस। अबू अ़ब्स बिन जबर को भी मश्विरा में शरीक किया और ये सब मिलकर आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आए और अ़र्ज़ किया कि हमको इजाज़त दीजिए कि हम जो मुनासिब

समझें कअ़ब से वैसी बातें करें। आपने उनको बतौरे मस्लिहृत इजाज़त मर्हमत फ़र्माई और रात के वक़्त जब ये लोग मदीना से चले तो आँहृज़रत (ﷺ) बक़ीअ़ तक उनके साथ आए। चाँदनी रात थी। आपने फ़र्माया, जाओ अल्लाह तुम्हारी मदद करे।

कअ़ब बिन अशरफ़ मदीना का बहुत बड़ा मुतअ़स्सिब यहूदी था और बड़ा मालदार आदमी था। इस्लाम से उसे सख़्त नफ़रत और अ़दावत थी। क़ुरैश को मुसलमानों के मुक़ाबले के लिये उभारता रहता था और हमेशा इस टोह में लगा रहता था कि किसी न किसी तरह धोखे से आँहृज़रत (ﷺ) को क़त्ल करा दे। फ़त्हुल बारी में एक दा'वत का ज़िक्र है जिसमें इस ज़ालिम ने इसी ग़र्ज़े फ़ासिद के तहत आँहृज़रत (ﷺ) को मदऊ (आमंत्रित) किया था मगर हृज़रत ज़िब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) ने उसकी निय्यते बद से आँहृज़रत (ﷺ) को पहले से ही आगाह कर दिया और आप बाल-बाल बच गये। उसकी इन तमाम बुरी हृरकतों को देखकर आँहृज़रत (ﷺ) ने उसको ख़त्म करने के लिये सहाबा के सामने अपना ख़्याल ज़ाहिर किया जिस पर मुहृम्मद बिन मस्लमा अंसारी (रज़ि.) ने आमादगी का इज़्हार किया। कअ़ब बिन अशरफ़ मुहृम्मद बिन मस्लमा का मामूँ भी होता था। मगर इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम का रिश्ता दुनियावी सब रिश्तों से बुलन्द व बाला था। बहरहृाल अल्लाह तआ़ला ने उस ज़ालिम को बईं तौर ख़त्म कराया जिससे फ़ित्नों का दरवाज़ा बन्द होकर अमन क़ायम हो गया और बहुत से लोग जंग की सूरत पेश आने और क़त्ल होने से बच गये। हृाफ़िज़ साहृब फ़र्माते हैं, **रवा अबू दाऊद वत्तिर्मिज़ी मिन तरीक़िज़्ज़ुहरी अन अ़ब्दिर्रहमानिब्नि अ़ब्दिल्लाहिब्नि कअ़बिब्नि मालिक अ़न अबीहि अन्न कअ़बब्नल्अशरफ़ कान शाइरन यहजू रसूलल्लाहि (ﷺ) व युहर्रिज़ु अ़लैहि कुफ़्फ़ार क़ुरैशिन व कानन्नबिय्यु (ﷺ) क़दिमल्मदीनत व अहलुहा अख़्लातुन फअराद रसूलुल्लाहि (ﷺ) इस्तिस्लाहहुम व कानल्यहूदु वल्मुश्रिकून यूज़ूनल्मुस्लिमीन अशद्दल्अज़ा फअमरल्लाहु रसूलहू वल्मुस्लिमीन बिस्सब्रि फलम्मा अबा कअ़बुन अंय्यन्ज़अ अ़न अज़ाहू अमर रसूलुल्लाहि सअ़दब्न मुआ़ज़ अंय्यब्अ़ष रहतन लियक्तुलूहु व जक़र इब्नु सअ़द अन्न क़त्लहु कान फी रबीइल्अव्वलि मिनस्सनतिष्षालिष़ति** (फ़त्हुल्बारी) ख़ुलासा ये कि कअ़ब बिन अशरफ़ शायर भी था जो शे'रों में रसूलुल्लाह (ﷺ) की हिज्व (बुराई) करता और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को आपके ऊपर हृमला करने की तरग़ीब दिलाता (उकसाता)। आँहृज़रत (ﷺ) जब मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए वहाँ के बाशिन्दे आपस में ख़लत मलत थे। आँहृज़रत (ﷺ) ने उनकी इस्लाहृ व सुधार का बीड़ा उठाया। यहूदी और मुश्रिकीन आँहृज़रत (ﷺ) को सख़्ततरीन ईज़ाएँ पहुँचाने पर आमादा रहते। पस अल्लाह ने अपने रसूल (ﷺ) और मुसलमानों को सब्र का हुक्म फ़र्माया। जब कअ़ब बिन अशरफ़ की शरारतें हृद से ज़्यादा बढ़ने लगीं और वो ईज़ारसानी से बाज़ न आया तो तब आप (ﷺ) ने हृज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) को हुक्म फ़र्माया कि एक जमाअ़त को भेजें जो उसका ख़ात्मा करे। इब्ने सअ़द ने कहा कि कअ़ब बिन अशरफ़ का क़त्ल 3 हिजरी में हुआ।

बाब 16 : अबू राफ़ेअ़ यहूदी अ़ब्दुल्लाह बिन अबिल हृक़ीक़ के क़त्ल का क़िस्सा

١٦- باب قَتْلِ أَبِي رَافِعٍ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي الْحُقَيْقِ

कहते हैं उसका नाम सलाम बिन अबिल हृक़ीक़ था। ये ख़ैबर में रहता था। कुछ ने कहा एक क़िला में हिजाज़ के मुल्क में वाक़ेअ़ था। ज़ुहरी ने कहा अबू राफ़ेअ़ कअ़ब बिन अशरफ़ के बाद क़त्ल हुआ। (रमज़ान 6 हिजरी में)

وَيُقَالُ سَلاَّمُ بْنُ أَبِي الْحُقَيْقِ كَانَ بِخَيْبَرَ وَيُقَالُ فِي حِصْنٍ لَهُ بِأَرْضِ الْحِجَازِ وَقَالَ الزُّهْرِيُّ : هُوَ بَعْدَ كَعْبِ بْنِ الأَشْرَفِ.

4038. मुझसे इस्हाक़ बिन नस़्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी ज़ायदा ने, उन्होंने अपने वालिद ज़करिया बिन अबी ज़ायदा से, उनसे इस्हाक़ सबीई ने बयान किया, उनसे बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि आँहृज़रत (ﷺ) ने चंद

٤٠٣٨- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَعَثَ

आदमियों को अबू राफ़ेअ के पास भेजा। (उन तमाम में से) अब्दुल्लाह बिन अतीक रात को उसके घर में घुसे, वो सो रहा था। उसे क़त्ल किया। (राजेअ : 3022)

رَسُولُ اللهِ ﷺ رَهْطًا إِلَى أَبِي رَافِعٍ فَدَخَلَ عَلَيْهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَتِيكٍ بَيْتَهُ لَيْلاً وَهُوَ نَائِمٌ فَقَتَلَهُ. [راجع: ٣٠٢٢]

4029. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू राफ़ेअ यहूदी (के क़त्ल) के लिये चन्द अंसारी स़हाबा को भेजा और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक (रज़ि.) को उनका अमीर बनाया। ये अबू राफ़ेअ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को ईज़ा दिया करता था और आपके दुश्मनों की मदद किया करता था। हिजाज़ में उसका एक क़िला था और वहीं वो रहा करता था। जब उसके क़िले के क़रीब ये पहुँचे तो सूरज ग़ुरूब हो चुका था। और लोग अपने मवेशी लेकर (अपने घरों को) वापस हो चुके थे। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि तुम लोग यहीं ठहरे रहो मैं (इस क़िले पर) जा रहा हूँ और दरबान पर कोई तदबीर करूँगा, ताकि मैं अंदर जाने में कामयाब हो जाऊँ। चुनाँचे वो (क़िला के पास) आए और दरवाज़े के क़रीब पहुँचकर उन्होंने ख़ुद को अपने कपड़ों में इस त़रह छुपा लिया जैसे कोई क़ज़ा-ए-ह़ाजत कर रहा हो। क़िले के तमाम आदमी अंदर दाख़िल हो चुके थे। दरबान ने आवाज़ दी, ऐ अल्लाह! के बन्दे अगर आना है तो जल्द आ जा, मैं अब दरवाज़ा बन्द कर दूँगा। (अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक रज़ि. ने कहा) चुनाँचे मैं भी अंदर चला गया और छुपकर उसकी कार्रवाई देखने लगा। जब सब लोग अंदर आ गये तो उसने दरवाज़ा बन्द किया और कुँजियों का गुच्छा एक खूँटी पर लटका दिया। उन्होंने बयान किया कि अब मैं उन कुँजियों की त़रफ़ बढ़ा और उन्हें ले लिया, फिर मैंने क़िला का दरवाज़ा खोल लिया। अबू राफ़ेअ के पास रात के वक़्त दास्तानें बयान की जा रही थीं और वो अपने ख़ास़ बालाख़ाने में था। जब दास्तान गो उसके यहाँ से उठकर चले गये तो मैं उस कमरे की त़रफ़ चढ़ने लगा। इस अ़र्से में, मैं जितने दरवाज़े उस तक पहुँचने के लिये खोलता था उन्हें अंदर से बन्द करता जाता था। मेरा मत़लब ये था कि अगर

٤٠٢٩- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ : بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَبِي رَافِعٍ الْيَهُودِيِّ رِجَالاً مِنَ الأَنْصَارِ فَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَتِيكٍ وَكَانَ أَبُو رَافِعٍ يُؤْذِي رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيُعِينُ عَلَيْهِ وَكَانَ فِي حِصْنٍ لَهُ بِأَرْضِ الْحِجَازِ فَلَمَّا دَنَوْا مِنْهُ وَقَدْ غَرَبَتِ الشَّمْسُ وَرَاحَ النَّاسُ بِسَرْحِهِمْ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ لأَصْحَابِهِ: اجْلِسُوا مَكَانَكُمْ، فَإِنِّي مُنْطَلِقٌ وَمُتَلَطِّفٌ لِلْبَوَّابِ، لَعَلِّي أَنْ أَدْخُلَ فَأَقْبَلَ حَتَّى دَنَا مِنَ الْبَابِ، ثُمَّ تَقَنَّعَ بِثَوْبِهِ كَأَنَّهُ يَقْضِي حَاجَةً، وَقَدْ دَخَلَ النَّاسُ فَهَتَفَ بِهِ الْبَوَّابُ يَا عَبْدَ اللهِ إِنْ كُنْتَ تُرِيدُ أَنْ تَدْخُلَ فَادْخُلْ فَإِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُغْلِقَ الْبَابَ، فَدَخَلْتُ فَكَمَنْتُ، فَلَمَّا دَخَلَ النَّاسُ أَغْلَقَ الْبَابَ، ثُمَّ عَلَّقَ الأَغَالِيقَ عَلَى وَتِدٍ قَالَ: فَقُمْتُ إِلَى الأَقَالِيدِ فَأَخَذْتُهَا فَفَتَحْتُ الْبَابَ، وَكَانَ أَبُو رَافِعٍ يُسْمَرُ عِنْدَهُ، وَكَانَ فِي عَلاَلِيَّ لَهُ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْهُ أَهْلُ سَمَرِهِ صَعِدْتُ إِلَيْهِ فَجَعَلْتُ كُلَّمَا فَتَحْتُ بَابًا أَغْلَقْتُ عَلَيَّ

क़िले वालों को मेरे बारे में इल्म भी हो जाए तो उस वक़्त तक ये लोग मेरे पास न पहुँच सकें जब तक मैं उसे क़त्ल न कर लूँ। आख़िर में उसके क़रीब पहुँच गया। उस वक़्त वो एक तारीक (अंधेरे) कमरे में अपने बाल बच्चों के साथ (सो रहा) था मुझे कुछ अंदाज़ा नहीं हो सका कि वो कहाँ है। इसलिये मैंने आवाज़ दी, या अबा राफ़ेअ? वो बोला कौन है? अब मैंने आवाज़ की तरफ़ बढ़कर तलवार की एक ज़रब लगाई। उस वक़्त मेरा दिल धक-धक कर रहा था। यही वजह हुई कि मैं उसका काम तमाम नही कर सका। वो चीख़ा तो मैं कमरे से बाहर निकल आया और थोड़ी देर तक बाहर ही ठहरा रहा। फिर दोबारा अंदर गया और मैंने आवाज़ बदल कर पूछा, अबू राफ़ेअ! ये आवाज़ कैसी थी? वो बोला तेरी माँ ग़ारत हो। अभी अभी मुझ पर किसी ने तलवार से हमला किया है। उन्होंने बयान किया कि फिर (आवाज़ की तरफ़ बढ़कर) मैंने तलवार की एक ज़रब और लगाई। उन्होंने बयान किया कि अगरचे मैं उसे ज़ख़्मी तो बहुत कर चुका था लेकिन वो अभी मरा नहीं था। इसलिये मैंने तलवार की नोक उसके पेट पर रखकर दबाई जो उसकी पीठ तक पहुँच गई। मुझे अब यक़ीन हो गया कि मैं उसे क़त्ल कर चुका हूँ। चुनाँचे मैंने दरवाज़े एक एक करके खोलने शुरू किया। आख़िर मैं एक ज़ीने पर पहुँचा मैं ये समझा कि ज़मीन तक पहुँच चुका हूँ (लेकिन अभी मैं पहुँचा न था) इसलिये मैंने उस पर पाँव रख दिया और नीचे गिर पड़ा। चाँदनी रात थी। इस तरह गिर पड़ने से मेरी पिण्डली टूट गई। मैंने उसे अपने अमामा से बाँध लिया और आकर दरवाज़े पर बैठ गया। मैंने ये इरादा कर लिया था कि यहाँ से उस वक़्त तक नहीं जाऊँगा जब तक ये न मा'लूम कर लूँ कि आया मैं उसे क़त्ल कर चुका हूँ या नहीं? जब मुर्ग़ ने आवाज़ दी तो उसी वक़्त क़िले की फ़सील पर एक पुकारने वाले ने खड़े होकर पुकारा कि अहले हिजाज़ के ताजिर अबू राफ़ेअ की मौत का ऐलान करता हूँ। मैं अपने साथियों के पास आया और उनसे कहा कि चलने की जल्दी करो। अल्लाह तआला ने अबू राफ़ेअ को क़त्ल करा दिया। चुनाँचे मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपको उसकी इत्तिलाअ दी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपना पाँव फैला। मैंने पाँव फैलाया तो आपने उस

مِنْ دَاخِلٍ قُلْتُ إِنِ الْقَوْمُ لَوْ نَذِرُوا بِي لَمْ يَخْلُصُوا إِلَيَّ حَتَّى أَقْتُلَهُ فَانْتَهَيْتُ إِلَيْهِ فَإِذَا هُوَ فِي بَيْتٍ مُظْلِمٍ وَسْطَ عِيَالِهِ، لاَ أَدْرِي أَيْنَ هُوَ مِنَ الْبَيْتِ؟ فَقُلْتُ : أَبَا رَافِعٍ، قَالَ: مَنْ هَذَا؟ فَأَهْوَيْتُ نَحْوَ الصَّوْتِ فَأَضْرِبُهُ ضَرْبَةً بِالسَّيْفِ وَأَنَا دَهِشٌ فَمَا أَغْنَيْتُ شَيْئًا، وَصَاحَ فَخَرَجْتُ مِنَ الْبَيْتِ فَأَمْكُثُ غَيْرَ بَعِيدٍ، ثُمَّ دَخَلْتُ إِلَيْهِ فَقُلْتُ مَا هَذَا الصَّوْتُ يَا أَبَا رَافِعٍ؟ قَالَ : لأُمِّكَ الْوَيْلُ إِنَّ رَجُلاً فِي الْبَيْتِ ضَرَبَنِي قَبْلُ بِالسَّيْفِ، قَالَ فَأَضْرِبُهُ ضَرْبَةً أَثْخَنَتْهُ وَلَمْ أَقْتُلْهُ، ثُمَّ وَضَعْتُ ظُبَةَ السَّيْفِ فِي بَطْنِهِ حَتَّى أَخَذَ فِي ظَهْرِهِ فَعَرَفْتُ أَنِّي قَتَلْتُهُ فَجَعَلْتُ أَفْتَحُ الأَبْوَابَ بَابًا بَابًا حَتَّى انْتَهَيْتُ إِلَى دَرَجَةٍ لَهُ فَوَضَعْتُ رِجْلِي وَأَنَا أُرَى أَنِّي قَدِ انْتَهَيْتُ إِلَى الأَرْضِ فَوَقَعْتُ فِي لَيْلَةٍ مُقْمِرَةٍ فَانْكَسَرَتْ سَاقِي فَعَصَبْتُهَا بِعِمَامَةٍ ثُمَّ انْطَلَقْتُ حَتَّى جَلَسْتُ عَلَى الْبَابِ، فَقُلْتُ: لاَ أَخْرُجُ اللَّيْلَةَ حَتَّى أَعْلَمَ أَقَتَلْتُهُ فَلَمَّا صَاحَ الدِّيكُ قَامَ النَّاعِي عَلَى السُّورِ، فَقَالَ : أَنْعَى أَبَا رَافِعٍ تَاجِرَ أَهْلِ الْحِجَازِ فَانْطَلَقْتُ إِلَى أَصْحَابِي فَقُلْتُ النَّجَاءَ فَقَدْ قَتَلَ اللهُ أَبَا رَافِعٍ فَانْتَهَيْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَدَّثْتُهُ فَقَالَ لِي: ((ابْسُطْ رِجْلَكَ)) فَبَسَطْتُ رِجْلِي فَمَسَحَهَا

पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और पाँव इतना अच्छा हो गया जैसे कभी उसमें मुझको कोई तकलीफ़ हुई ही न थी। (राजेअ:3022)

فَكَأَنَّهَا لَمْ أَشْتَكِهَا قَطُّ.
[راجع: ۳۰۲۲]

4040. हमसे अहमद बिन उ़श्मान बिन ह़कीम ने बयान किया, हमसे शुरैह़ इब्ने मस्लमा ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद यूसुफ़ बिन इस्ह़ाक़ ने, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने कि मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा (रज़ि.) को चन्द स़ह़ाबा के साथ अबू राफ़ेअ़ (के क़त्ल) के लिये भेजा। ये लोग रवाना हुए। जब उसके क़िले के नज़दीक पहुँचे तो अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक (रज़ि.) ने अपने साथियों से कहा कि तुम लोग यहीं ठहर जाओ पहले मैं जाता हूँ, देखूँ सूरते ह़ाल क्या है। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक (रज़ि.) ने बयान किया कि (क़िले के क़रीब पहुँचकर) मैं अंदर जाने के लिये तदबीरें करने लगा। इत्तिफ़ाक़ से क़िले का एक गधा गुम था। उन्होंने बयान किया कि उस गधे को तलाश करने के लिये क़िले वाले रोशनी लेकर बाहर निकले। बयान किया कि मैं डरा कि कहीं मुझे कोई पहचान न ले। इसलिये मैंने अपना सर ढंक लिया, जैसे कोई क़ज़ा-ए-ह़ाजत कर रहा है। उसके बाद दरबान ने आवाज़ दी कि इससे पहले मैं दरवाज़ा बन्द कर लूँ जिसे क़िले के अंदर दाख़िल होना है वो जल्दी आ जाए। मैंने (मौक़ा ग़नीमत समझा और) अंदर दाख़िल हो गया और क़िले के दरवाज़े के पास ही जहाँ गधे बाँधे जाते थे वहीं छुप गया। क़िले वालों ने अबू राफ़ेअ़ के साथ खाना खाया और फिर उसे क़िस़्से सुनाते रहे। आख़िर कुछ रात गये वो सब क़िले के अंदर ही अपने अपने घरों में वापस आ गये। अब सन्नाटा छा चुका था और कहीं कोई ह़रकत नहीं होती थी। इसलिये मैं इस त़वीला से बाहर निकला। उन्होंने बयान किया कि मैंने पहले ही देख लिया था कि दरबान ने कुँजी एक ताक़ में रखी है, मैंने कुँजी अपने क़ब्ज़े में ले ली और फिर सबसे पहले क़िले का दरवाज़ा खोला। बयान किया कि मैंने

٤٠٤٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ حَدَّثَنَا شُرَيْحٌ هُوَ ابْنُ مَسْلَمَةَ. حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ : سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَبِي رَافِعٍ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَتِيكٍ وَعَبْدَ اللهِ بْنَ عُتْبَةَ فِي نَاسٍ مَعَهُمْ فَانْطَلَقُوا حَتَّى دَنَوْا مِنَ الْحِصْنِ فَقَالَ لَهُمْ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَتِيكٍ : امْكُثُوا أَنْتُمْ حَتَّى أَنْطَلِقَ أَنَا فَأَنْظُرَ قَالَ: فَتَلَطَّفْتُ أَنْ أَدْخُلَ الْحِصْنَ فَفَقَدُوا حِمَارًا لَهُمْ، قَالَ: فَخَرَجُوا بِقَبَسٍ يَطْلُبُونَهُ قَالَ: فَخَشِيتُ أَنْ أُعْرَفَ فَغَطَّيْتُ رَأْسِي وَرِجْلِي كَأَنِّي أَقْضِي حَاجَةً ثُمَّ نَادَى صَاحِبُ الْبَابِ مَنْ أَرَادَ أَنْ يَدْخُلَ فَلْيَدْخُلْ قَبْلَ أَنْ أُغْلِقَهُ، فَدَخَلْتُ ثُمَّ اخْتَبَأْتُ فِي مَرْبِطِ حِمَارٍ عِنْدَ بَابِ الْحِصْنِ فَتَعَشَّوْا عِنْدَ أَبِي رَافِعٍ وَتَحَدَّثُوا حَتَّى ذَهَبَتْ سَاعَةٌ مِنَ اللَّيْلِ ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى بُيُوتِهِم فَلَمَّا هَدَأَتِ الأَصْوَاتُ وَلاَ أَسْمَعُ حَرَكَةً خَرَجْتُ قَالَ: وَرَأَيْتُ صَاحِبَ الْبَابِ حَيْثُ وَضَعَ مِفْتَاحَ الْحِصْنِ فِي كَوَّةٍ فَأَخَذْتُهُ فَفَتَحْتُ بِهِ بَابَ الْحِصْنِ، قَالَ: قُلْتُ إِنْ نَذِرَ بِي الْقَوْمُ

ये सोचा था कि अगर क़िले वालों को मेरा इल्म हो गया तो मैं बड़ी आसानी के साथ भाग सकूँगा। इसके बाद मैंने उनके कमरों के दरवाज़े खोलने शुरू किये और उन्हें अंदर से बन्द करता जाता था। अब मैं ज़ीनों से अबू राफ़ेअ के बालाख़ानों तक पहुँच चुका था। उसके कमरा में अँधेरा था। उसका चिराग़ गुल कर दिया गया था। मैं ये नहीं अंदाज़ा कर पाया था कि अबू राफ़ेअ कहाँ है। इसलिये मैंने आवाज़ दी, या अबा राफ़ेअ! इस पर वो बोला कि कौन है? उन्होंने बयान किया कि फिर आवाज़ की तरफ़ मैं बढ़ा और मैंने तलवार से उस पर हमला किया। वो चिल्लाने लगा लेकिन ये वार ओछा पड़ा था। उन्होंने बयान किया कि फिर दोबारा मैं उसके क़रीब पहुँचा, गोया मैं उसकी मदद को आया हूँ। मैंने आवाज़ बदलकर पूछा। अबू राफ़ेअ क्या बात पेश आई है? उसने कहा तेरी माँ ग़ारत हो, अभी कोई शख़्स मेरे कमरे में आ गया और तलवार से मुझ पर हमला किया है। उन्होंने बयान किया कि इस मर्तबा फिर मैंने उसकी आवाज़ की तरफ़ बढ़कर दोबारा हमला किया। इस हमले में भी वो क़त्ल न हो सका। फिर वो चिल्लाने लगा और उसकी बीवी भी उठ गई (और चिल्लाने लगी) उन्होंने बयान किया कि फिर मैं बज़ाहिर मददगार बनकर पहुँचा और मैंने अपनी आवाज़ बदल ली। उस वक़्त वो चित्त लेटा हुआ था। मैंने अपनी तलवार उसके पेट पर रखकर ज़ोर से उसे दबाया। आख़िर जब मैंने हड्डी टूटने की आवाज़ सुन ली तो मैं वहाँ से निकला, बहुत घबराया हुआ। अब ज़ीना पर आ चुका था। मैं उतरना चाहता था कि नीचे गिर पड़ा। जिससे मेरा पाँव टूट गया। मैंने उस पर पट्टी बाँधी और लंगड़ाते हुए अपने साथियों के पास पहुँचा। मैंने उनसे कहा कि तुम लोग जाओ और रसूलुल्लाह (ﷺ) को ख़ुशख़बरी सुनाओ। मैं तो यहाँ से उस वक़्त तक नहीं हटूँगा जब तक उसकी मौत का ऐलान न सुन लूँ, चुनान्चे सुबह के वक़्त मौत का ऐलान किया कि अबू राफ़ेअ की मौत वाक़ेअ हो गई है। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं चलने के लिये उठा, मुझे (कामयाबी की ख़ुशी में) कोई तकलीफ़ मा'लूम नहीं होती थी। इससे पहले कि मेरे साथी हुज़ूर अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचे, मैंने अपने साथियों को पा लिया। आँहज़रत

انْطَلَقْتُ عَلَى مَهْلٍ، ثُمَّ عَمَدْتُ إِلَى أَبْوَابِ بُيُوتِهِمْ فَغَلَّقْتُهَا عَلَيْهِمْ مِنْ ظَاهِرٍ، ثُمَّ صَعِدْتُ إِلَى أَبِي رَافِعٍ فِي سُلَّمٍ فَإِذَا الْبَيْتُ مُظْلِمٌ قَدْ طُفِئَ سِرَاجُهُ فَلَمْ أَدْرِ أَيْنَ الرَّجُلُ؟ فَقُلْتُ: يَا أَبَا رَافِعٍ، قَالَ: مَنْ هَذَا؟ قَالَ: فَعَمَدْتُ نَحْوَ الصَّوْتِ فَأَضْرِبُهُ وَصَاحَ فَلَمْ تُغْنِ شَيْئًا؟ قَالَ: ثُمَّ جِئْتُ كَأَنِّي أُغِيثُهُ فَقُلْتُ: مَا لَكَ يَا أَبَا رَافِعٍ؟ وَغَيَّرْتُ صَوْتِي، فَقَالَ: أَلاَ أُعْجِبُكَ لأُمِّكَ الْوَيْلُ؟ دَخَلَ عَلَيَّ رَجُلٌ فَضَرَبَنِي بِالسَّيْفِ، قَالَ: فَعَمَدْتُ لَهُ أَيْضًا فَأَضْرِبُهُ أُخْرَى فَلَمْ تُغْنِ شَيْئًا فَصَاحَ وَقَامَ أَهْلُهُ، قَالَ: ثُمَّ جِئْتُ وَغَيَّرْتُ صَوْتِي كَهَيْئَةِ الْمُغِيثِ، فَإِذَا مُسْتَلْقٍ عَلَى ظَهْرِهِ فَأَضَعُ السَّيْفَ فِي بَطْنِهِ ثُمَّ أَنْكَفِئُ عَلَيْهِ حَتَّى سَمِعْتُ صَوْتَ الْعَظْمِ، ثُمَّ خَرَجْتُ دَهِشًا حَتَّى أَتَيْتُ السُّلَّمَ أُرِيدُ أَنْ أَنْزِلَ فَأَسْقُطُ مِنْهُ فَانْخَلَعَتْ رِجْلِي فَعَصَبْتُهَا ثُمَّ أَتَيْتُ أَصْحَابِي أَحْجُلُ فَقُلْتُ لَهُمْ: انْطَلِقُوا فَبَشِّرُوا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنِّي لاَ أَبْرَحُ حَتَّى أَسْمَعَ النَّاعِيَةَ، فَلَمَّا كَانَ فِي وَجْهِ الصُّبْحِ صَعِدَ النَّاعِيَةُ فَقَالَ: أَنْعَى أَبَا رَافِعٍ، قَالَ: فَقُمْتُ أَمْشِي مَا بِي قَلَبَةٌ، فَأَدْرَكْتُ أَصْحَابِي قَبْلَ أَنْ يَأْتُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَشَّرْتُهُ.

(ﷺ) को ख़ुशख़बरी सुनाई। (राजेअ : 3022) [راجع: ٣٠٢٢]

तश्रीह : अबू राफ़ेअ यहूदी ख़ैबर में रहता था। रईसुतुज्जार (व्यापारियों का सरदार) और ताजिरुल हिजाज़ से मशहूर था। इस्लाम का सख़्ततरीन दुश्मन, हर वक़्त रसूले करीम (ﷺ) की हिज्व किया करता था। ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ के मौक़े पर अरब के मशहूर क़बीलों को मदीना पर हमला करने के लिये उसने उभारा था। आख़िर चन्द ख़ज़रजी सहाबियों की ख़्वाहिश पर आँहज़रत (ﷺ) ने अब्दुल्लाह बिन अतीक अंसारी की क़यादत में पाँच आदमियों को उसके क़त्ल पर मामूर फ़र्माया था। साथ में ताकीद फ़र्माई कि औरतों और बच्चों को हर्गिज़ क़त्ल न करना। चुनाँचे वो हुआ जो ऊपर वाली हदीष़ में तफ़्सील के साथ मौजूद है। कुछ दफ़ा क़यामे अमन के लिये ऐसे मुफ़्सिदों का क़त्ल करना दुनिया के हर क़ानून में ज़रूरी हो जाता है। ह़ाफ़िज़ स़ाहब फ़र्माते हैं, **अन अब्दिल्लाहिब्नि कअबिब्नि मालिक क़ाल कान मिम्मा सनअल्लाहु लिरसूलिही अन्नल्औस वल्ख़ज़रज काना यतस़ावलानि तस़ावल्फ़हलैन ला तस्नइल्औसु शैअन इल्ला क़ालतिल्ख़ज़्रजु वल्लाहि ला तज़्हबून बिहाज़िही फ़ज़्लन अलैना व कज़ालिकल्औसु फ़लम्मा अस़ाबतिल्औसु कअबब्न अश्रफ़ तज़ाकरतिल्ख़ज़्रजु मन रजुलुन लहू मिनल्अदावति लिरसूलिल्लाहि (ﷺ) कमा कान लिकअब फज़क़रु इब्न अबिल्हुक़ीक़ व हुव बि ख़ैबर** (फ़त्हुल्बारी) या'नी औस और ख़ज़रज का बाहमी ह़ाल ये था कि वो दोनों क़बीले आपस में इस तरह रश्क करते रहते थे जैसे दो साँड आपस में रश्क करते हैं। जब क़बीला औस के हाथों कोई अहम काम अंजाम पाता तो ख़ज़रज वाले कहते कि क़सम अल्लाह की इस काम को करके तुम फ़ज़ीलत में हमसे आगे नहीं बढ़ सकते। हम इससे भी बड़ा काम अंजाम देंगे। औस का भी यही ख़्याल रहता था। जब क़बीला औस ने कअब बिन अशरफ़ को ख़त्म किया तो ख़ज़रज ने सोचा कि हम किसी इससे बड़े दुश्मन का ख़ात्मा करेंगे जो रसूले करीम (ﷺ) की अदावत में इससे बढ़कर होगा। चुनाँचे उन्होंने इब्ने अबी अल हक़ीक़ का इंतिख़ाब किया जो ख़ैबर में रहता था और रसूले करीम (ﷺ) की अदावत में ये कअब बिन अशरफ़ से आगे बढ़ा हुआ था। चुनाँचे खज़्रज के जवानों ने इस ज़ालिम का ख़ात्मा किया। जिसकी तफ़्सील यहाँ मज़्कूर है। रिवायत में अबू राफ़ेअ की बीवी के जागने का ज़िक्र आया है। इब्ने इस्ह़ाक़ की रिवायत में है कि वो जागकर चिल्लाने लगी। अब्दुल्लाह बिन अतीक (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने उस पर तलवार उठाई लेकिन फ़ौरन मुझको फ़र्माने नबवी याद आ गया और मैंने उसे नहीं मारा। आगे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अतीक (रज़ि.) की हड्डी सरक जाने का ज़िक्र है। अगली रिवायत में पिण्डली टूट जाने का ज़िक्र है। और इसमें जोड़ खुल जाने का, दोनों बातों में इख़्तिलाफ़ नहीं है क्योंकि एह़तिमाल है कि पिण्डली की हड्डी टूट गई हो और जोड़ भी किसी जगह से खुल गया हो।

बाब 17 : ग़ज़्व-ए-उहुद का बयान

١٧- باب غَزْوَةِ أُحُدٍ

और सूरह आले इमरान में अल्लाह तआला का फ़र्मान, और वो वक़्त याद कीजिए, जब आप सुबह़ को अपने घरों के पास से निकले, मुसलमानों को लड़ाई के लिये मुनासिब ठिकानों पर ले जाते हुए और अल्लाह बड़ा सुनने वाला है, बड़ा जानने वाला है। और इसी सूरत में अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़र्मान, और हिम्मत न हारो और ग़म न करो, तुम्ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन होओगे। अगर तुम्हें कोई ज़ख़्म पहुँच जाए तो उन लोगों को भी ऐसा ही ज़ख़्म पहुँच चुका है और मैं उन दिनों की उलटफेर तो लोगों के दरम्यान करता ही रहता हूँ, ताकि अल्लाह ईमानवालों को जान ले और तुममें से कुछ को शहीद बनाए और अल्लाह तआला ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता और ताकि अल्लाह ईमान लाने वालों को मेल कुचैल से स़ाफ़ कर दे और काफ़िरों को मिटा दे।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّىءُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَلاَ تَهِنُوا وَلاَ تَحْزَنُوا وَأَنْتُمُ الأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ إِنْ يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ، فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِثْلُهُ وَتِلْكَ الأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ وَاللهُ لاَ يُحِبُّ الظَّالِمِينَ وَلِيُمَحِّصَ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ

﴿الْكَافِرِينَ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ تَحُسُّونَهُمْ﴾ ﴿بِإِذْنِهِ حَتَّى إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا أَرَاكُمْ مَا تُحِبُّونَ مِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الآخِرَةَ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ﴾ ﴿وَلاَ تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا﴾ الآيَةَ.

क्या तुम इस गुमान में हो कि जन्नत मे दाख़िल हो जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह ने तुममे से उन लोगों को नहीं जाना जिन्होंने जिहाद किया और न स़ब्र करने वालों को जाना और तुम तो मौत की तमन्ना कर रहे थे इससे पहले कि उसके सामने आओ। सो उसका अब तुमने ख़ूब खुली आँखों से देख लिया। और अल्लाह तआला का फ़र्मान, और यक़ीनन तुमसे अल्लाह ने सच कर दिखाया अपना वा'दा, जबकि तुम उन्हें उसके हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम ख़ुद ही कमज़ोर पड़ गये और आपस में झगड़ने लगे। हुक्मे रसूल के बारे में और तुमने नाफ़र्मानी की बाद उसके कि अल्लाह ने दिखा दिया था जो कुछ कि तुम चाहते थे। कुछ तुममें वे थे जो दुनिया चाहते थे और कुछ तुममें ऐसे थे जो आख़िरत चाहते थे। फिर अल्लाह ने तुमको उनमें से फेर दिया ताकि तुम्हारी पूरी आज़माइश करे और अल्लाह ने तुमसे दरगुज़र की और अल्लाह ईमान लाने वालों के ह क़ में बड़ा फ़ज़्ल वाला है। (और आयत) और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये हैं उन्हें हर्गिज़ मुर्दा मत ख़्याल करो। आख़िर आयत तक।

तश्रीह : आयाते मज़्कूरा में जंगे उहुद के कुछ मुख़्तलिफ़ कवाइफ़ पर इशारात हैं। तारीख़ 7 शव्वाल 3 हिजरी में उहुद पहाड़ के क़रीब ये जंग हुई। आँहज़रत (ﷺ) का लश्कर एक हज़ार मर्दों पर मुश्तमिल था जिसमें से तीन सौ मुनाफ़िक़ वापस लौट गये थे। मुश्रिकीन का लश्कर तीन हज़ार था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पचास सिपाहियों का एक दस्ता ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) की मातह़ती में उहुद की एक घाटी की ह़िफ़ाज़त पर मुक़र्रर किया था और ताकीद की थी कि हमारा हुक्म आए बग़ैर हर्गिज़ ये घाटी न छोड़ें। हमारी जीत हो या हार तुम लोग यहीं जमे रहो। जब शुरू में मुसलमानों को फ़तह़ होने लगी तो उन लश्करियों में से अकष़र ने फ़तह़ हो जाने के ख़्याल से दर्रा ख़ाली छोड़ दिया जिससे मुश्रिकीन ने पलटकर मुसलमानों के पीछे से उन पर ह़मला किया और मुसलमानों को वो नुक़्साने अ़ज़ीम पहुँचा जो तारीख़ में मशहूर है। अह़ादीषे ज़ेल में जंगे उहुद के बारे में कवाइफ़ बयान किये गये हैं। ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **व क़ालल्उलमाउ व कान फ़ी क़िस़्स़ति उहुद व मा उ़सीब बिहिल्मुस्लिमून मिनल्फ़वाइदि वल्हिकमिर्रब्बानिय्यति अश्याउ अ़ज़ीमतुन मिन्हा तअ़रीफ़ुल्मुस्लिमीन सुअ आक़िबतिल्मअ़सियति व शूमु इर्तिकाबिन्नहयि लिमा वक़अ़ मिन तर्किर्रूमाति मौक़िफ़ुहुमुल्लज़ीन अमरहुमुर्रसूलु अल्लायर्जू मिन्हु व मिन्हा अन्न आदतर्रसूलि अन तबत्तल व तकून लहल्आक़िबतु कमा तक़द्दम फ़ी क़िस़्स़ति हिरक़्ल मअ़ अबी सुफ़्यान वल्हिक्मतु ज़ालिक अन्नहुम लौ इन्तस़रु दाइमन दख़ल फ़िल्मूमिनीन मन लैस मिन्हुम व लम यतमय्यज़ अस्सादिक़ु मिन ग़ैरिही व लो इन्कसरू दाइमन लम यहसुलिल्मस़्दु मिनल्बिअ़ष़ति फक्त ज़तिल्हिक्मतु अल्जम्उ बैनल्अम्रैनि लितमीज़िस्सादिक़ि मिनल्काज़िब व अन्न ज़ालिक अन्न निफ़ाक़ल्मुनाफ़िक़ीन कान मख़्फ़ियन अनिल्मुस्लिमीन फलम्मा जरत हाज़िहिल्क़िस़्स़तु व अज़्हर अहलुन्निफ़ाक़ि मा अज्हरूहु मिल्फ़िअलि वल्क़ौलि आदत्तल्वीहु तस़्रीहन व अरफल्मुस्लिमून अन्न लहुम अ़दुव्वुन फी दूरिहिम फस्तअ़द्दू लहुम व तहर्रज़ू मिन्हुम** (फ़त्ह़ुल्बारी) या'नी उलमा ने कहा कि उहुद के वाक़िये में बहुत से फ़वाइद और बहुत सी ह़िकमतें हैं जो अहमियत के लिह़ाज़ से बड़ी अ़ज़्मत रखती हैं। उनमें से एक ये कि मुसलमानों को मअ़स़ियत (नाफ़र्मानी) और मन्हियात के इर्तिकाब का बुरा नतीजा दिया जाए ताकि आइन्दा वो ऐसा न करें। कुछ तीरंदाज़ों को

रसूले करीम (ﷺ) ने एक घाटी पर मुक़र्रर फ़र्माकर सख़्त ताकीद फ़माई थी कि हमारी जीत हो या हार हमारा हुक्म आए बग़ैर तुम उस घाटी से मत हटना, मगर उन्होंने नाफ़र्मानी की और मुसलमानों की अव्वल मरहले पर फ़तह देखकर वो अम्वाले ग़नीमत लूटने के ख़्याल से घाटी को छोड़कर मैदान में आ गये। इस नाफ़र्मानी का जो ख़ामियाज़ा सारे मुसलमानों को भुगतना पड़ा वो मा'लूम है। अल्लाह ने बतला दिया कि नाफ़र्मानी और मअ़सियत के इर्तिकाब का नतीजा ऐसा ही होता है और इन हिक्मतों में से एक हिक्मत ये भी है कि अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर है कि रसूलों को आज़माया जाता है और आख़िर अंजाम भी उन ही की फ़तह होती है जैसा कि हिरक़्ल और अबू सुफ़यान के क़िस्से में गुज़र चुका है। अगर हमेशा रसूलों के लिये मदद ही होती रहे तो मोमिनों में ग़ैर मोमिन भी दाख़िल हो सकते हैं और सादिक़ और काज़िब लोगों में तमीज़ उठ सकती है और अगर वो हमेशा हारते ही रहें तो बिअ़षत का मक़्सूद फ़ौत हो जाता है।

पस हिक्मते इलाही का तक़ाज़ा फ़तह व शिकस्त हर दौर के दरम्यान हुआ ताकि सादिक़ और काज़िब में फ़र्क़ होता रहे। मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ पहले मुसलमानों पर मख़्फ़ी (छुपा हुआ) था। इस इम्तिहान ने उनको ज़ाहिर कर दिया और उन्होंने अपने क़ौल और अ़मल से खुले तौर पर अपने निफ़ाक़ को ज़ाहिर कर दिया। तब मुसलमानों पर ज़ाहिर हो गया कि उनके घरों ही में उनके दुश्मन छुपे हुए हैं जिनसे परहेज़ करना लाज़िम है। आजकल भी ऐसे नामो निहाद मुसलमान मौजूद हैं जो नमाज़ व रोज़ा करते हैं मगर वक़्त आने पर इस्लाम और मुसलमानों के साथ ग़द्दारी करते रहते हैं। ऐसे लोगों से हर वक़्त चौकन्ना रहना ज़रूरी है। निफ़ाक़ बहुत ही बुरा मर्ज़ है। जिसकी मज़म्मत क़ुर्आन मजीद में कई जगह बड़े ज़ोरदार लफ़्ज़ों में हुई है और उनके लिये दोज़ख़ का सबसे नीचे वाला हिस्सा **वैल** सज़ा के लिये तज्वीज़ होना बतलाया है। हर मुसलमान को पाँचों वक़्त ये दुआ पढ़नी चाहिये **अल्लाहुम्म अऊ़ज़ुबिक मिनन्निफ़ाक़ि वश्शिक़ाक़ि व सूइल्अख़्लाक़ि**, ऐ अल्लाह! मैं निफ़ाक़ से और आपस की फूट से और बुरे अख़्लाक़ से तेरी पनाह चाहता हूँ। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

4041. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, हमको अ़ब्दुल वह्हाब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर फ़र्माया, ये हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि.) हैं, हथियारबन्द, अपने घोड़े की लगाम थामे हुए। (राजेअ़ : 3995)

٤٠٤١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ: ((هَذَا جِبْرِيلُ آخِذٌ بِرَأْسِ فَرَسِهِ عَلَيْهِ أَدَاةُ الْحَرْبِ)). [راجع: ٣٩٩٥]

4042. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमको ज़करिया बिन अ़दी ने ख़बर दी, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें हैवा ने, उन्हें यज़ीद बिन हबीब ने, उन्हें अबुल ख़ैर ने और उनसे हज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आठ साल बाद या'नी आठवीं बरस में ग़ज़्व-ए-उहुद के शुहदा पर नमाज़े जनाज़ा अदा की, जैसे आप ज़िन्दों और मुर्दों सबसे रुख़सत हो रहे हों। उसके बाद आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, मैं तुमसे आगे आगे हूँ, मैं तुम पर गवाह रहूँगा और मुझसे (क़यामत के दिन) तुम्हारी मुलाक़ात हौज़े (कौषर) पर होगी। इस वक़्त भी मैं अपनी इस जगह से हौज़ (कौषर) को देख रहा हूँ। तुम्हारे बारे में मुझे

٤٠٤٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيٍّ أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ حَيْوَةَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ: عَلَى قَتْلَى أُحُدٍ بَعْدَ ثَمَانِي سِنِينَ كَالْمُوَدِّعِ لِلأَحْيَاءِ وَالأَمْوَاتِ ثُمَّ طَلَعَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ : ((إِنِّي بَيْنَ أَيْدِيكُمْ فَرَطٌ، وَأَنَا عَلَيْكُمْ شَهِيدٌ، وَإِنَّ مَوْعِدَكُمُ الْحَوْضُ وَإِنِّي لأَنْظُرُ إِلَيْهِ مِنْ مَقَامِي هَذَا

وَإِنِّي لَسْتُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا، وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا أَنْ تَنَافَسُوهَا)). قَالَ فَكَانَتْ آخِرَ نَظْرَةٍ نَظَرْتُهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ.

[راجع: ١٣٤٤]

उसका कोई ख़तरा नहीं है कि तुम शिर्क करोगे, हाँ मैं तुम्हारे बारे में दुनिया से डरता हूँ कि तुम कहीं दुनिया के लिये आपस में मुक़ाबला न करने लगो। उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये आख़िरी दीदार था जो मुझको नसीब हुआ। (राजेअ़ : 1344)

तश्रीह : उहुद की लड़ाई 3 हिजरी शव्वाल के महीने में हुई और 11 हिजरी माहे रबीउ़ल अव्वल में आपकी वफ़ात हो गई। इसलिये रावी का ये कहना कि आठ बरस बाद सह़ीह़ नहीं हो सकता। मत़लब ये है कि आठवीं बरस जैसा कि हमने तर्जुमा में ज़ाहिर कर दिया है। ज़िन्दों का रुख़्सत करना तो ज़ाहिर है क्योंकि ये वाक़िया आपके ह़याते त़य्यिबा के आख़िरी साल का है और मुर्दों का विदाअ़ उसका मा'नी यूँ कर रहे हैं कि अब बदन के साथ उनकी ज़ियारत न हो सकेगी। जैसे दुनिया में हुआ करती थी। **ह़ाफ़िज़ स़ाहब ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) वफ़ात के बाद भी ज़िन्दा हैं लेकिन वो उख़रवी ज़िन्दगी है जो दुनियावी ज़िन्दगी से मुशाबिहत नहीं रखती।** रिवायत में हौज़े कौष़र पर शर्फ़े दीदारे नबवी (ﷺ) का ज़िक्र है। वहाँ हम सब मुसलमान आपसे शर्फ़े मुलाक़ात ह़ासिल करेंगे। मुसलमानों! कोशिश करो कि क़यामत के दिन हम अपने पैग़म्बर (ﷺ) के सामने शर्मिन्दा न हों। जहाँ तक हो सके आपके दीन की मदद करो। क़ुर्आन व ह़दीष़ फैलाओ। जो लोग ह़दीष़ शरीफ़ और ह़दीष़ वालों से दुश्मनी रखते हैं न मा'लूम वो हौज़े कौष़र पर रसूले करीम (ﷺ) को क्या मुँह दिखाएँगे। अल्लाह तआ़ला हम सबको ह़ौजे कौष़र पर हमारे रसूल (ﷺ) की मुलाक़ात नसीब फ़र्माए, आमीन।

٤٠٤٣ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لَقِينَا الْمُشْرِكِينَ يَوْمَئِذٍ وَأَجْلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَيْشًا مِنَ الرُّمَاةِ وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَبْدَ اللهِ وَقَالَ: ((لاَ تَبْرَحُوا إِنْ رَأَيْتُمُونَا ظَهَرْنَا عَلَيْهِمْ فَلاَ تَبْرَحُوا وَإِنْ رَأَيْتُمُوهُمْ ظَهَرُوا عَلَيْنَا فَلاَ تُعِينُونَا)) فَلَمَّا لَقِينَا هَرَبُوا حَتَّى رَأَيْتُ النِّسَاءَ يَشْتَدِدْنَ فِي الْجَبَلِ رَفَعْنَ عَنْ سُوقِهِنَّ قَدْ بَدَتْ خَلاَخِلُهُنَّ فَأَخَذُوا يَقُولُونَ: الْغَنِيمَةَ الْغَنِيمَةَ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ جُبَيْرٍ: عَهِدَ إِلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ لاَ تَبْرَحُوا فَأَبَوْا فَلَمَّا أَبَوْا صُرِفَ وُجُوهُهُمْ فَأُصِيبَ سَبْعُونَ قَتِيلاً

4043. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे इब्ने इस्ह़ाक़ (अ़म्र बिन उ़बैदुल्लाह सबीई) ने और उनसे बरा (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे उहुद के मौक़े पर जब मुश्रिकीन से मुक़ाबला के लिये हम पहुँचे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने तीरंदाज़ों का एक दस्ता अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) की मातहती में (पहाड़ी पर) मुक़र्रर फ़र्माया था और उन्हें ये हुक्म दिया था कि तुम अपनी जगह से न हटना, उस वक़्त भी जब तुम लोग देख लो कि हम उन पर ग़ालिब आ गये हैं, फिर भी यहाँ से न हटना और उस वक़्त भी जब तुम देख लो कि वो हम पर ग़ालिब आ गये, तुम लोग हमारी मदद के लिये न आना। फिर जब हमारी मुठभेड़ कुफ़्फ़ार से हुई तो उनमें भगदड़ मच गई। मैंने देखा कि उनकी औरतें पहाड़ियों पर बड़ी तेज़ी के साथ भागी जा रही थीं, पिण्डलियों से ऊपर कपड़े उठाए हुए, जिससे उनके पाज़ेब दिखाई दे रहे थे। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के (तीरंदाज़) साथी कहने लगे कि ग़नीमत ग़नीमत। इस पर अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मुझे नबी करीम (ﷺ) ने ताकीद की थी कि अपनी जगह से न हटना (इसलिये तुम लोग ग़नीमत का माल लूटने न जाओ)

وَأَشْرَفَ أَبُو سُفْيَانَ فَقَالَ: أَفِي الْقَوْمِ مُحَمَّدٌ؟ فَقَالَ : ((لاَ تُجِيبُوهُ))، فَقَالَ : أَفِي الْقَوْمِ ابْنُ أَبِي قُحَافَةَ؟ قَالَ : ((لاَ تُجِيبُوهُ))، فَقَالَ: أَفِي الْقَوْمِ ابْنُ الْخَطَّابِ؟ فَقَالَ: إِنَّ هَؤُلاَءِ قُتِلُوا فَلَوْ كَانُوا أَحْيَاءً لأَجَابُوا فَلَمْ يَمْلِكْ عُمَرُ نَفْسَهُ، فَقَالَ: كَذَبْتَ يَا عَدُوَّ اللهِ أَبْقَى اللهُ عَلَيْكَ مَا يُخْزِيكَ، قَالَ أَبُو سُفْيَانَ : أُعْلُ هُبَلْ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((أَجِيبُوهُ)) قَالُوا: مَا نَقُولُ؟ قَالَ: ((قُولُوا اللهُ أَعْلَى وَأَجَلُّ)) قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: لَنَا الْعُزَّى وَلاَ عُزَّى لَكُمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَجِيبُوهُ)) قَالُوا : مَا نَقُولُ : قَالَ : ((قُولُوا اللهُ مَوْلاَنَا وَلاَ مَوْلَى لَكُمْ)) قَالَ أَبُو سُفْيَانَ : يَوْمٌ بِيَوْمِ بَدْرٍ وَالْحَرْبُ سِجَالٌ وَتَجِدُونَ مُثْلَةً لَمْ آمُرْ بِهَا وَلَمْ تَسُؤْنِي.
[راجع: ٣٠٣٩]

लेकिन उनके साथियों ने उनका हुक्म मानने से इंकार कर दिया। उनकी इस हुक्म अदूली के नतीजे में मुसलमानों को हार हुई और सत्तर मुसलमान शहीद हो गये। इसके बाद अबू सुफ़यान ने पहाड़ी पर से आवाज़ दी, क्या तुम्हारे साथ मुहम्मद (ﷺ) मौजूद हैं? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई जवाब न दे, फिर उन्होंने पूछा, क्या तुम्हारे साथ इब्ने अबी क़हाफ़ा मौजूद हैं? हुज़ूर (ﷺ) ने उसके जवाब की भी मुमानअत कर दी। उन्होंने पूछा, क्या तुम्हारे साथ इब्ने ख़त्ताब मौजूद हैं? उसके बाद वो कहने लगे कि ये सब क़त्ल कर दिये गये। अगर ज़िन्दा होते तो जवाब देते। इस पर उमर (रज़ि.) बेक़ाबू हो गये और फ़र्माया, अल्लाह के दुश्मन! तू झूठा है। अल्लाह ने अभी उन्हें तुम्हें ज़लील करने के लिये बाक़ी रखा है। अबू सुफ़यान ने कहा, हुबुल (एक बुत) बुलन्द रहे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसका जवाब दो। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि हम क्या जवाब दें? आपने फ़र्माया कि कहो, अल्लाह सबसे बुलन्द और बुज़ुर्ग व बरतर है। अबू सुफ़यान ने कहा, हमारे पास उज़्ज़ा (बुत) है और तुम्हारे पास कोई उज़्ज़ा नहीं। आपने फ़र्माया, उसका जवाब दो। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, क्या जवाब दें? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि कहो, अल्लाह हमारा हामी और मददगार है और तुम्हारा कोई हामी नहीं। अबू सुफ़यान ने कहा, आज का दिन बद्र के दिन का बदला है और लड़ाई की मिषाल डोल की होती है। (कभी हमारे हाथ में और कभी तुम्हारे हाथ में) तुम अपने मक़्तूलीन में कुछ लाशों का मुषला किया हुआ पाओगे, मैंने उसका हुक्म नहीं दिया था लेकिन मुझे बुरा नहीं मा'लूम हुआ।
(राजेअ : 3039)

बाद में हज़रत अबू सुफ़यान मुसलमान हो गये थे और अपनी इस ज़िन्दगी पर नादिम थे मगर इस्लाम पहले के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है।

٤٠٤٤ - أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ جَابِرٍ قَالَ اصْطَبَحَ الْخَمْرَ يَوْمَ أُحُدٍ نَاسٌ ثُمَّ قُتِلُوا شُهَدَاءَ. [راجع: ٢٨١٥]

4044. मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने ख़बर दी, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ सहाबा ने ग़ज़्व-ए-उहुद की सुबह को शराब पी (जो अभी हराम नहीं हुई थी) और फिर शहादत की मौत नसीब हुई। (राजेअ : 2815)

बाद में शराब हराम हो गई, फिर किसी भी सहाबी ने शराब को मुँह नहीं लगाया बल्कि शराब के बर्तनों को भी तोड़ डाला था।

4045. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे उनके वालिद इब्राहीम ने कि (उनके वालिद) अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के पास खाना लाया गया। उनका रोज़ा था। उन्होंने कहा, मुस़अब बिन उ़मर (रज़ि.) (उहुद की जंग में) शहीद कर दिये गये, वो मुझसे अफ़ज़ल और बेहतर थे लेकिन उन्हें जिस चादर का कफ़न दिया गया (वो इतनी छोटी थी कि) अगर उससे उनका सर छुपाया जाता तो पैर खुल जाते और अगर पैर छुपाए जाते तो सर खुल जाता था। मेरा ख़्याल है कि उन्होंने कहा और हम्ज़ा (रज़ि.) भी (उसी जंग में) शहीद किये गये, वो मुझसे बेहतर और अफ़ज़ल थे फिर जैसा कि तुम देख रहे हो, हमारे लिये दुनिया में कुशादगी दी गई, या उन्होंने ये कहा कि फिर जैसा कि तुम देखते हो, हमें दुनिया दी गई, हमें तो इसका डर है कि कहीं यही हमारी नेकियों का बदला न हो जो इसी दुनिया में हमें दिया जा रहा है। उसके बाद आप इतना रोये कि खाना न खा सके। (राजेअ़ : 1284)

٤٠٤٥ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِيهِ إِبْرَاهِيمَ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ أُتِيَ بِطَعَامٍ وَكَانَ صَائِمًا فَقَالَ : قُتِلَ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ وَهُوَ خَيْرٌ مِنِّي كُفِّنَ فِي بُرْدَةٍ إِنْ غُطِّيَ رَأْسُهُ بَدَتْ رِجْلاَهُ وَإِنْ غُطِّيَ رِجْلاَهُ بَدَا رَأْسُهُ وَأُرَاهُ قَالَ : وَقُتِلَ حَمْزَةُ وَهُوَ خَيْرٌ مِنِّي ثُمَّ بُسِطَ لَنَا مِنَ الدُّنْيَا مَا بُسِطَ. أَوْ قَالَ أُعْطِينَا مِنَ الدُّنْيَا مَا أُعْطِينَا وَقَدْ خَشِينَا أَنْ تَكُونَ حَسَنَاتُنَا عُجِّلَتْ لَنَا ثُمَّ جَعَلَ يَبْكِي حَتَّى تَرَكَ الطَّعَامَ.
[راجع: ١٢٧٤]

अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) अ़शर–ए–मुबश्शरा में से थे फिर भी उन्होंने ह़ज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) को कसरे नफ़्सी के लिये अपने से बेहतर बताया। मुस़अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) वो क़ुरैशी नौजवान थे जो हिजरत से पहले ही मदीना में बतौरे मुबल्लिग़ काम कर रहे थे। जिनकी कोशिशों से मदीना में इस्लाम को फ़रोग़ हुआ। स़द अफ़सोस कि शेरे इस्लाम उहुद में शहीद हो गया।

4046. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उसे अ़म्र बिन दीनार ने, उन्होंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक स़हाबी ने नबी करीम (ﷺ) से ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़ा पर पूछा, या रसूलल्लाह! अगर मैं क़त्ल कर दिया गया तो मैं कहाँ जाऊँगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में। उन्होंने खजूर फेंक दी जो उनके हाथ में थी और लड़ने लगे यहाँ तक कि शहीद हो गये।

٤٠٤٦ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ أَرَأَيْتَ إِنْ قُتِلْتُ فَأَيْنَ أَنَا؟ قَالَ : ((فِي الْجَنَّةِ)) فَأَلْقَى تَمَرَاتٍ فِي يَدِهِ ثُمَّ قَاتَلَ حَتَّى قُتِلَ.

4047. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ बिन मस्लमा ने और उनसे ख़ब्बाब बिन अल् अरत (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ

٤٠٤٧ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ خَبَّابِ بْنِ الأَرَتِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ :

हिजरत की थी, हमारा मक़्सद सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा थी। इसका ष़वाब अल्लाह के ज़िम्मे था। फिर हममें से कुछ लोग तो वो थे जो गुज़र गये और कोई अज्र उन्होंने इस दुनिया में नहीं देखा, उन्हीं में से मुस़अब बिन उमैर (रज़ि.) भी थे। उहुद की लड़ाई में उन्होंने शहादत पाई थी। एक धारीदार चादर के सिवा और कोई चीज़ उनके पास नहीं थी(और वही उनका कफ़न बनी) जब हम उससे उनका सर छुपाते तो पैर खुल जाते और पैर छुपाते तो सर खुल जाता। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि सर चादर से छुपा दो और पैर पर इज़्ख़र घास डाल दो। या हुज़ूर (ﷺ) ने ये अल्फ़ाज़ फ़र्माए थे कि उल्क़ू अला रिज्लिही मिनल इज़्ख़िरि बजाय इज्अलू अला रिज्लिहिल इज़्ख़िर के और हम में कुछ वो थे जिन्हें उनके इस अमल का बदला (इसी दुनिया में) मिल रहा है और वो इससे फ़ायदा उठा रहे हैं। (राजेअ: 1276)

هاجرنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم نبتغي وجه الله فوجب أجرنا على الله ومنا من مضى أو ذهب لم يأكل من أجره شيء كان منهم مصعب بن عمير قتل يوم أحد لم يترك إلا نمرة كنا إذا غطينا بها رأسه خرجت رجلاه وإذا غطي بها رجلاه خرج رأسه فقال لنا النبي صلى الله عليه وسلم: ((غطوا بها رأسه واجعلوا على رجله الإذخر - أو قال - ألقوا على رجله من الإذخر)) ومنا من أينعت له ثمرته فهو يهدبها.

[راجع: ١٢٧٦]

4048. हमसे हस्सान बिन हस्सान ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन त़लहा ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद त़वील ने बयान किया, और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि उनके चचा (अनस बिन सक़र) बद्र की लड़ाई में शरीक न हो सके थे, फिर उन्होंने कहा कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ पहली ही लड़ाई में ग़ैर हाज़िर रहा। अगर हुज़ूर (ﷺ) के साथ अल्लाह तआला ने मुझे किसी और लड़ाई में शिर्कत का मौक़ा दिया तो अल्लाह देखेगा कि मैं कितनी बेजिगरी से लड़ता हूँ। फिर ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर जब मुसलमानों की जमाअत में अफ़रा तफ़री मच गई तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह! मुसलमानों ने आज जो कुछ किया मैं तेरे हुज़ूर में उसके लिये मअज़रत चाहता हूँ और मुश्रिकीन ने जो कुछ किया मैं तेरे हुज़ूर में उससे अपनी बेज़ारी ज़ाहिर करता हूँ। फिर वो अपनी तलवार लेकर आगे बढ़े। रास्ते में हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने उनसे कहा, सअद! कहाँ जा रहे हो? मैं तो उहुद पहाड़ी के दामन में जन्नत की ख़ुश्बू सूँघ रहा हूँ। उसके बाद वो आगे बढ़े और शहीद कर दिये गये। उनकी लाश पहचानी नहीं जा रही थी। आख़िर उनकी बहन ने एक तिल या उनकी अँगुलियों के पोरों

٤٠٤٨- أخبرنا حسان بن حسان حدثنا محمد بن طلحة حدثنا حميد عن أنس رضي الله عنه أن عمه غاب عن بدر فقال: غبت عن أول قتال النبي صلى الله عليه وسلم لئن أشهدني الله مع النبي صلى الله عليه وسلم ليرين الله ما أجد فلقي يوم أحد فهزم الناس فقال: اللهم إني أعتذر إليك صنع هؤلاء - يعني المسلمين - وأبرأ إليك مما جاء به المشركون فتقدم بسيفه فلقي سعد بن معاذ فقال: أين يا سعد إني أجد ريح الجنة دون أحد فمضى فقتل فما عرف حتى عرفته أخته بشامة أو ببنانه وبه بضع وثمانون من طعنة وضربة ورمية بسهم.

से उनकी लाश को पहचाना। उनको अस्सी (80) पर कई ज़ख़्म भाले और तलवार और तीरों के लगे थे। (राजेअ : 2805)

[راجع: ۲۸۰۵]

तश्रीह : इब्ने शक्वाल ने कहा उस शख़्स का नाम उमैर बिन हुम्माम (रज़ि.) था। मुस्लिम की रिवायत में है कि उमैर बिन हुम्माम (रज़ि.) ने जंगे उहुद के दिन कुछ खजूरें निकालीं, उनको खाने लगा फिर कहने लगा, इन खजूरों के तमाम करने तक अगर मैं जीता रहा तो ये बड़ी लम्बी ज़िन्दगी होगी और लड़ाई शुरू की मारा गया। उसुदुल ग़ाबा में है कि उमैर बद्र के दिन मारा गया और ये सब अंसार में पहला शख़्स था जो अल्लाह की राह में जंग में मारा गया। इब्ने इस्हाक़ ने रिवायत की है कि उमैर बिन हुम्माम (रज़ि.) जब काफ़िरों से जंगे बद्र में भिड़ गया तो कहने लगा कि अल्लाह के पास जाता हूँ तोशा-वोशा कुछ नहीं अल्बत्ता अल्लाह का डर और आख़िरत में काम आने वाला अमल और जिहाद पर सब्र है बेशक अल्लाह का डर निहायत मज़बूत करने वाला अम्र है। अनस बिन नज़्र अंसारी (रज़ि.) को उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मिले जो घबराये हुए चले आ रहे थे। उन्होंने कहा बड़ा ग़ज़ब हो गया। आँहज़रत (ﷺ) शहीद हो गये। अनस (रज़ि.) ने कहा फिर अब हम तुम ज़िन्दा रहकर क्या करेंगे। आँहज़रत (ﷺ) का अल्लाह तो ज़िन्दा है। इस दीन पर लड़कर मरो जिस पर तुम्हारे पैग़म्बर लड़े ये कहकर अनस बिन नज़्र (रज़ि.) काफ़िरों की सफ़ में घुस गये और लड़ते रहे यहाँ तक कि शहीद हो गये। कहते हैं उहुद की जंग में काफ़िरों का झण्डा तलहा बिन अबी तलहा ने सम्भाला, उसको हज़रत अली (रज़ि.) ने मारा। फिर उष्मान बिन अबी तलहा ने, उसको अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) ने मारा। फिर अबू सईद बिन अबी तलहा ने, उसको सअद बिन वक़्क़ास (रज़ि.) ने मारा। फिर नाफ़ेअ बिन तलहा बिन अबी तलहा ने, उसको आसिम बिन षाबित अंसारी (रज़ि.) ने मारा। फिर हारिष बिन तलहा बिन अबी तलहा ने, उसको भी आसिम ने मारा। फिर किलाब बिन अबी तलहा ने, उसको ज़ुबैर (रज़ि.) ने मारा। फिर जलास बिन तलहा ने, फिर अरतात बिन शुरहबील ने, उनको हज़रत अली (रज़ि.) ने मारा। फिर शुरैह बिन क़ारिज़ ने वो भी मारा गया। फिर सवाब एक ग़ुलाम ने उसको सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) या हज़रत अली (रज़ि.) या क़ुज़्मान (रज़ि.) ने मारा। उसके बाद काफ़िर भाग निकले। (वहीदी)

इस हदीष के ज़ेल हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम की एक और तक़रीर दर्ज की जाती है जो तवज्जह से पढ़ने के लायक़ है। फ़र्माते हैं, मुसलमानो! हमारे बाप-दादा ने ऐसी ऐसी बहादुरियाँ करके ख़ून बहाकर इस्लाम को दुनिया में फैलाया था और इतना बड़ा वसीअ मुल्क हासिल किया था जिसकी हद मग़्रिब (पश्चिम) में ट्यूनिस और उंदलुस या'नी स्पेन तक और मश्रिक़ (पूरब) में चीन-बर्मा तक और शिमाल (उत्तर) मे रूस तक और जुनूब (दक्षिण) में विलायात रूम व ईरान व तूरान व हिन्दुस्तान व अरब व शाम व मिस्र व अफ़्रीक़ा उनके ज़ेरे नगीं थीं। हमारी अय्याशी और बेदीनी ने अब ये नौबत पहुँचाई है कि ख़ास अरब के सवाहिल (समुद्र तट) और बिलाद भी काफ़िरों के क़ब्ज़े में आ रहे हैं और मुल्क तो अब जा चुके हैं अब जितना रह गया है उसको बना लो ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो तो क़ुर्आन व हदीष को मज़्बूत थामो। **व मा अलैना इल्लल्बलाग़।** (वहीदी)

4049. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन षाबित ने ख़बर दी और उन्होंने ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि जब हम क़ुर्आन मजीद को लिखने लगे तो मुझे सूरह अहज़ाब की एक आयत (लिखी हुई) नहीं मिली। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उसकी तिलावत करते बहुत बार सुना था। फिर जब हमने उसकी तलाश की तो वो आयत ख़ुज़ैमा बिन षाबित अंसारी (रज़ि.) के पास हमें मिली (आयत ये थी) मिनल् मोमिनीन रिजालुन सदक़ु मा आहदुल्लाह अलैहि फ़मिन्हुम मन् क़ज़ा नहबहु व मिन्हुम मयं यन्तज़िरु

٤٠٤٩ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّهُ سَمِعَ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: فَقَدْتُ آيَةً مِنَ الأَحْزَابِ حِينَ نَسَخْنَا الْمُصْحَفَ كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقْرَأُ بِهَا فَالْتَمَسْنَاهَا، فَوَجَدْنَاهَا مَعَ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيِّ ﴿مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ

صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ﴾ فَأَلْحَقْنَاهَا فِي سُورَتِهَا فِي الْمُصْحَفِ.

[راجع: ٢٨٠٧]

(अल् अह़ज़ाब : 23) फिर हमने इस आयत को उसकी सूरत में क़ुर्आन मजीद में मिला दिया।

(राजेअ : 2807)

तश्रीह : इस आयत का तर्जुमा ये है, मुसलमानों में कुछ मर्द तो ऐसे हैं कि उन्होंने अल्लाह से जो क़ौल व करार किया था वो सच कर दिखाया। अब उनमें कुछ तो अपना काम पूरा कर चुके, शहीद हो गये (जैसे ह़म्ज़ा और मुस़अब रज़ि.) और कुछ इंतिज़ार कर रहे हैं (जैसे उ़ष्मान और त़लह़ा रज़ि. वग़ैरह) इस रिवायत का ये मत़लब नहीं है कि ये आयत सिर्फ़ ख़ुज़ैमा (रज़ि.) के कहने पर क़ुर्आन में शरीक कर दी गई बल्कि ये आयत स़ह़ाबा को याद थी और आँह़ज़रत (ﷺ) से बारहा सुन चुके थे मगर भूले से मुस्ह़फ़ में नहीं लिखी गई थी। जब ख़ुज़ैमा (रज़ि.) के पास लिखी हुई मिली तो उसको शरीक कर दिया।

٤٠٥٠ - حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ يَزِيدَ يُحَدِّثُ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: لَمَّا خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أُحُدٍ رَجَعَ نَاسٌ مِمَّنْ خَرَجَ مَعَهُ وَكَانَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِرْقَتَيْنِ فِرْقَةٌ تَقُولُ نُقَاتِلُهُمْ، وَفِرْقَةٌ تَقُولُ: لاَ نُقَاتِلُهُمْ فَنَزَلَتْ ﴿فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوا﴾ وَقَالَ ((إِنَّهَا طَيْبَةُ تَنْفِي الذُّنُوبَ كَمَا تَنْفِي النَّارُ خَبَثَ الْفِضَّةِ)).

[راجع: ١٨٨٤]

4050. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने, मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद से सुना, वो ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) से बयान करते थे कि उन्होंने बयान किया, जब नबी करीम (ﷺ) ग़ज़्व-ए-उहुद के लिये निकले तो कुछ लोग जो आपके साथ थे (मुनाफ़िक़ीन, बहाना बनाकर) वापस लौट गये। फिर स़ह़ाबा की उन वापस होने वाले मुनाफ़िक़ीन के बारे में दो रायें हो गईं थी। एक जमाअ़त तो कहती थी हमें पहले इनसे जंग करनी चाहिये और दूसरी जमाअ़त कहती थी कि इनसे हमें जंग नहीं करनी चाहिये। इस पर आयत नाज़िल हुई, पस तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफ़िक़ीन के बारे में तुम्हारी दो जमाअ़तें हो गईं हैं, ह़ालाँकि अल्लाह तआ़ला ने उनकी बद आ़माली की वजह से उन्हें कुफ़्र की त़रफ़ लौटा दिया है। और ह़ुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मदीना त़य्यिबा है सरकशों को ये इस त़रह अपने से दूर कर देता है जैसे आग की भट्टी चाँदी के मैल कुचेल को दूर कर देती है। (राजेअ : 1884)

तश्रीह : आयते मज़्कूरा अ़ब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों के बारे में नाज़िल हुई। कुछ ने कहा ये आयत उस वक़्त उतरी जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने मिम्बर पर फ़र्माया था कि ये बदला उस शख़्स से कौन लेता है जिसने मेरी बीवी (ह़ज़रत आइशा रज़ि.) को बदनाम करके मुझे ईज़ा दी है।

١٨ - باب ﴿إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلاَ وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ﴾

बाब 18 : जब तुममें से दो जमाअ़तें ऐसा इरादा कर बैठी थीं कि हिम्मत हार दें, ह़ालाँकि अल्लाह दोनों का मददगार था और ईमानदारों को तो

अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये

ये दो जमाअतें बनू सलमा और बनू हारिषा थे जो लौटने का इरादा कर रहे थे मगर अल्लाह ने उनको षाबित क़दम रखा। आयतों में उनका बयान है।

4051. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उयैना ने बयान किया, उनसे अम्र ने, उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि ये आयत हमारे बारे में नाज़िल हुई थी। इज़्हम्मत ताइफ़तानि मिन्कुम अन् तफ़्शला **(आले इमरान : 122) या'नी बनी हारिषा और बनी सलमा के बारे में मेरी ये ख़्वाहिश नहीं है कि ये आयत नाज़िल न होती, जबकि अल्लाह आगे फ़र्मा रहा है कि और अल्लाह उन दोनों जमाअतों का मददगार था।** (दीगर मक़ाम : 4558)

٤٠٥١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرٍو عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ فِينَا ﴿إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلاَ﴾ بَنِي سَلِمَةَ وَبَنِي حَارِثَةَ وَمَا أُحِبُّ أَنَّهَا لَمْ تَنْزِلْ وَاللهُ يَقُولُ: ﴿وَاللهُ وَلِيُّهُمَا﴾.

[طرفه في : ٤٥٥٨].

तो अल्लाह की विलायत ये कितना बड़ा शर्फ़ है जो हमको हासिल हुआ। जंगे उहुद मे जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबई तीन सौ साथियों को लेकर लौट आया तो इन अंसारियों के दिल में भी वस्वसा पैदा हुआ। मगर अल्लाह ने उनको सम्भाला तो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) का साथ नहीं छोड़ा।

4052. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, कहा हमको अम्र बिन दीनार ने ख़बर दी, और उनसे हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे दरयाफ़्त फ़र्माया, जाबिर! क्या निकाह कर लिया? मैंने अ़र्ज़ किया, जी हाँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कुँवारी से या बेवा से? मैंने अ़र्ज़ किया कि बेवा से। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी कुँवारी लड़की से क्यूँ न किया? जो तुम्हारे साथ खेला करती। मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरे वालिद उहुद की लड़ाई में शहीद हो गये। नौ लड़कियाँ छोड़ीं। पस मेरी नौ बहनें मौजूद हैं। इसीलिये मैंने मुनासिब नहीं ख़्याल किया कि उन्हीं जैसी नातजुर्बेकार लड़की उनके पास लाकर बिठा दूँ, बल्कि एक ऐसी औ़रत लाऊँ जो उनकी देखभाल कर सके और उनकी सफ़ाई व सुथराई का ख़्याल रखे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुमने अच्छा किया। (राजेअ़ : 443)

٤٠٥٢ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ أَخْبَرَنَا عَمْرٌو هُوَ ابْنُ دِينَارٍ عَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَلْ نَكَحْتَ يَا جَابِرُ؟)) قُلْتُ نَعَمْ، قَالَ: ((مَاذَا أَبِكْرًا أَمْ ثَيِّبًا؟)) قُلْتُ: لاَ بَلْ ثَيِّبًا قَالَ: ((فَهَلاَّ جَارِيَةً تُلاَعِبُكَ)) قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ: إِنَّ أَبِي قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ تِسْعَ بَنَاتٍ كُنَّ لِي تِسْعَ أَخَوَاتٍ فَكَرِهْتُ أَنْ أَجْمَعَ إِلَيْهِنَّ جَارِيَةً خَرْقَاءَ مِثْلَهُنَّ وَلَكِنِ امْرَأَةً تَمْشُطُهُنَّ وَتَقُومُ عَلَيْهِنَّ قَالَ: ((أَصَبْتَ)).

[راجع: ٤٤٣]

तश्रीह : हज़रत जाबिर (रज़ि.) की कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह है। मशहूर अंसारी सहाबी हैं। जंगे बद्र और उहुद की सब जंगों में रसूले करीम (ﷺ) के साथ हाज़िर हुए। आख़िर उ़म्र में नाबीना हो गये थे। 94 साल की उ़म्र तवील पाकर 74 हिजरी में वफ़ात पाई, मदीना में सबसे आख़िरी सहाबी हैं जो फ़ौत हुए। एक बड़ी जमाअ़त ने आपसे अहादीष रिवायत की हैं।

4053. हमसे अहमद बिन अबी शुरैह ने बयान किया, कहा

٤٠٥٣ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي سُرَيْجٍ

हमको उबैदुल्लाह बिन मूसा ने ख़बर दी, उनसे शैबान ने बयान किया, उनसे फ़रास ने, उनसे शअबी ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना कि उनके वालिद (अ़ब्दुल्लाह रज़ि.) उहुद की लड़ाई में शहीद हो गये थे और क़र्ज़ छोड़ गये थे और छः लड़कियाँ भी। जब पेड़ों से खजूर उतारे जाने का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि जैसा कि हुज़ूर (ﷺ) के इल्म में है, मेरे वालिद साहब उहुद की लड़ाई में शहीद हो गये और क़र्ज़ छोड़ गये हैं, मैं चाहता था कि क़र्ज़ख़्वाह आपको देख लें (और कुछ नर्मी बरतें) हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, जाओ और हर क़िस्म की खजूर का अलग अलग ढेर लगा लो। मैंने हुक्म के मुताबिक़ अ़मल किया और फिर आपको बुलाने गया। जब क़र्ज़ख़्वाहों ने आप (ﷺ) को देखा तो जैसे उस वक़्त मुझ पर और ज़्यादा भड़क उठे। (क्योंकि वो यहूदी थे) हुज़ूर (ﷺ) ने जब उनका ये तर्ज़े अ़मल देखा तो आप (ﷺ) पहले सबसे बड़े ढेर के चारों तरफ़ तीन मर्तबा घूमे। उसके बाद उस पर बैठ गये और फ़र्माया, अपने क़र्ज़ख़्वाहों को बुला लाओ। हुज़ूर (ﷺ) बराबर उन्हें नाप के देते रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने मेरे वालिद की तरफ़ से उनकी सारी अमानत अदा कर दी। मैं इस पर ख़ुश था कि अल्लाह तआ़ला मेरे वालिद की अमानत अदा करा दे, भले ही मैं अपनी बहनों के लिये एक खजूर भी न ले जाऊँ लेकिन अल्लाह तआ़ला ने तमाम दूसरे ढेर बचा दिये बल्कि उस ढेर को भी देखा जिस पर हुज़ूर (ﷺ) बैठे हुए थे कि जैसे उसमें से एक खजूर का दाना भी कम नहीं हुआ।

(राजेअ़ : 2127)

أخبرنا عبيد الله بن موسى حدثنا شيبان عن فراس عن الشعبي قال: حدثني جابر بن عبد الله رضي الله عنهما أن أباه استشهد يوم أحد وترك عليه دينا وترك ست بنات. فلما حضر جداذ النخل قال: أتيت رسول الله ﷺ فقلت: قد علمت أن والدي قد استشهد يوم أحد وترك دينا كثيرا وإني أحب أن يراك الغرماء فقال: ((اذهب فبيدر كل تمر على ناحية)) ففعلت، ثم دعوته فلما نظروا إليه كأنهم أغروا بي تلك الساعة فلما رأى ما يصنعون أطاف حول أعظمها بيدرا ثلاث مرات ثم جلس عليه ثم قال: ادع لك أصحابك فما زال يكيل لهم حتى أدى الله عن والدي أمانته وأنا أرضى أن يؤدي الله أمانة والدي ولا أرجع إلى أخواتي بتمرة فسلم الله البيادر كلها حتى إني أنظر إلى البيدر الذي كان عليه النبي ﷺ كأنها لم ينقص تمرة واحدة. [راجع: ٢١٢٧]

तश्रीह : हज़रत जाबिर (रज़ि.) रसूले करीम (ﷺ) को इस ख़्याल से लाये थे कि आपको देखकर क़र्ज़ ख़्वाह कुछ क़र्ज़ छोड़ देंगे लेकिन नतीजा उलटा हुआ। क़र्ज़ख़्वाह ये समझे कि आँहज़रत (ﷺ) की जाबिर (रज़ि.) पर नज़रे इनायत है। अगर जाबिर (रज़ि.) के वालिद का माल काफ़ी न होगा तो बाक़ी क़र्ज़ा आँहज़रत (ﷺ) ख़ुद अपने पास से अदा कर देंगे। इसलिये उन्होंने और सख़्त तक़ाज़ा शुरू किया लेकिन अल्लाह ने अपने रसूल की दुआ क़ुबूल की और माल में काफ़ी बरकत हो गई।

4054. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके बाप ने, उनके दादा से कि सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने बयान

٤٠٥٤ - حدثنا عبد العزيز بن عبد الله حدثنا إبراهيم بن سعد عن أبيه عن جده

عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ وَمَعَهُ رَجُلاَنِ يُقَاتِلاَنِ عَنْهُ عَلَيْهِمَا ثِيَابٌ بِيضٌ كَأَشَدِّ الْقِتَالِ مَا رَأَيْتُهُمَا قَبْلُ وَلاَ بَعْدُ.

[طرفه في : ٥٨٢٦].

किया, ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर मैं ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा और आपके साथ दो और अस्हाब (या'नी जिब्राईल अलैहि. और मीकाईल अलैहि. इंसानी सूरत में) आए हुए थे। वो आपको अपनी हिफ़ाज़त मे लेकर कुफ़्फ़ार से बड़ी सख़्ती से लड़ रहे थे। उनके जिस्म पर सफ़ेद कपड़े थे। मैंने उन्हें न उससे पहले कभी देखा था और न उसके बाद कभी देखा। (दीगर मक़ाम : 5826)

٤٠٥٥- حدثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ هَاشِمٍ السَّعْدِيُّ قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يَقُولُ: سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ يَقُولُ: نَثَلَ إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ كِنَانَتَهُ يَوْمَ أُحُدٍ فَقَالَ : ((ارْمِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي)).

[راجع: ٣٧٢٥]

4055. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे मरवान बिन मुआ़विया ने बयान किया, कहा हमसे हाशिम बिन हाशिम सअ़दी ने बयान किया, कहा मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर रसूले करीम (ﷺ) ने अपने तरकश के तीर मुझे निकाल कर दिये और फ़र्माया ख़ूब तीर बरसाए जा। मेरे माँ बाप तुम पर फ़िदा हों। (राजेअ़ : 3825)

तश्रीह : सअ़द (रज़ि.) बड़े तीरंदाज़ थे। जंगे उहुद में काफ़िर चढ़े चले आ रहे थे। उन्होंने ऐसे तीर मारे कि एक काफ़िर भी आँहज़रत (ﷺ) के पास न आ सका। कहते हैं कि तीर भी ख़त्म हो गये और एक काफ़िर बिलकुल क़रीब आ पहुँचा तो एक तीर जिसमें सिर्फ़ लकड़ी थी रह गया था। आप (ﷺ) ने सअ़द (रज़ि.) से फ़र्माया यही तीर मारो। सअ़द (रज़ि.) ने मारा और वो उस काफ़िर के जिस्म में घुस गया। आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये ये दुआ फ़र्माई जो रिवायत में मज़्कूर है जिसमें इंतिहाई हिम्मत अफ़ज़ाई है। (ﷺ)

٤٠٥٦- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدًا يَقُولُ: جَمَعَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَوَيْهِ يَوْمَ أُحُدٍ.

[راجع: ٣٧٢٥]

4056. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़ा पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (मेरी हिम्मत अफ़ज़ाई के लिये) अपने वालिद और वालिदा दोनों को जमा फ़र्माया कि मेरे माँ बाप तुम पर फ़िदा हों। (राजेअ़ : 3725)

उस शख़्स की क़िस्मत का क्या ठिकाना है जिसके लिये रसूले करीम (ﷺ) ऐसे शानदार अल्फ़ाज़ फ़र्माएँ। फ़िल वाक़ेअ़ हज़रत सअ़द (रज़ि.) इस मुबारक दुआ के मुस्तह़िक़ थे।

٤٠٥٧- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَحْيَى عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّهُ قَالَ : قَالَ

4057. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यह्या बिन कष़ीर ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अल मुसय्यिब ने, उन्होंने बयान

किया कि सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़ा पर (मेरी हिम्मत बढ़ाने के लिये) अपने वालिद और वालिदा दोनों को जमा फ़र्माया, उनकी मुराद आप (ﷺ) के इस इर्शाद से थी जो आप (ﷺ) ने उस वक़्त फ़र्माया था जब वो जंग कर रहे थे कि मेरे माँ बाप तुम पर क़ुर्बान हों। (राजेअ़ : 3825)

سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، لَقَدْ جَمَعَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ أَبَوَيْهِ كِلَيْهِمَا يُرِيدُ حِينَ قَالَ: ((فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي)) وَهُوَ يُقَاتِلُ.

[راجع: ٣٧٢٥]

4058. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अ़र ने बयान किया, उनसे सअ़द ने, उनसे इब्ने शद्दाद ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) के सिवा मैंने नबी करीम (ﷺ) से नहीं सुना कि आप (ﷺ) उसके लिये दुआ में माँ बाप दोनों को बईं त़ौर पर जमा कर रहे हों। (राजेअ़ : 2905)

٤٠٥٨ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ عَنْ سَعْدٍ عَنِ ابْنِ شَدَّادٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيًّا يَقُولُ: مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَجْمَعُ أَبَوَيْهِ لأَحَدٍ غَيْرَ سَعْدٍ.

[راجع: ٢٩٠٥]

4059. हमसे युस्रा बिन स़फ़्वान ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि सअ़द इब्ने मालिक के सिवा मैंने और किसी के लिये नबी करीम (ﷺ) को अपने वालिदैन का एक साथ ज़िक्र करते नहीं। सुना, मैंने ख़ुद सुना कि उहुद के दिन आप फ़र्मा रहे थे, सअ़द! ख़ूब तीर बरसाओ। मेरे बाप और माँ तुम पर क़ुर्बान हों। (राजेअ़ : 2905)

٤٠٥٩ - حَدَّثَنَا يَسَرَةُ بْنُ صَفْوَانَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ شَدَّادٍ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : مَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ جَمَعَ أَبَوَيْهِ لأَحَدٍ إِلاَّ لِسَعْدِ بْنِ مَالِكٍ، فَإِنِّي سَمِعْتُهُ يَقُولُ يَوْمَ أُحُدٍ : ((يَا سَعْدُ ارْمِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي)).

[راجع: ٢٩٠٥]

4060,61. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे मुअ़तमिर ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि अबू उ़ष्मान बयान करते थे कि उन ग़ज़्वात में से जिनमें नबी करीम (ﷺ) ने कुफ़्फ़ार से क़िताल किया। कुछ ग़ज़्वा (उहुद) में एक मौक़े पर आपके साथ त़लह़ा और सअ़द के सिवा और कोई बाक़ी नही रह गया था। अबू उ़ष्मान ने ये बात ह़ज़रत त़लह़ा और सअ़द (रज़ि.) से रिवायत की थी। (राजेअ़ : 3722, 3723)

٤٠٦٠، ٤٠٦١ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ مُعْتَمِرٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: زَعَمَ أَبُو عُثْمَانَ أَنَّهُ لَمْ يَبْقَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي بَعْضِ تِلْكَ الأَيَّامِ الَّتِي يُقَاتِلُ فِيهِنَّ غَيْرُ طَلْحَةَ وَسَعْدٍ عَنْ حَدِيثِهِمَا.

[راجع: ٣٧٢٢، ٣٧٢٣]

4062. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उबय अल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे ह़ातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे साईब बिन यज़ीद ने कि मैं अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़, त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, मिक़्दाद बिन अस्वद और सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) की सुह़बत में रहा

٤٠٦٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يُوسُفَ قَالَ: سَمِعْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ قَالَ: صَحِبْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ،

हूँ लेकिन मैंने उन हज़रात में से किसी को नबी करीम (ﷺ) से कोई हदीष़ बयान करते नहीं सुना। स़िर्फ़ त़लहा (रज़ि.) से ग़ज़्व-ए-उहुद के बारे में हदीष़ सुनी थी। (राजेअ़ : 2824)

وطلحة بن عبيد الله، والمقداد، وسعدا رضي الله عنهم، فما سمعت أحدا منهم يحدث عن النبي ﷺ إلا أني سمعت طلحة يحدث عن يوم أحد.

[راجع: ٢٨٢٤]

तश्रीह : साइब बिन यज़ीद का बयान उनकी अपनी मुस़ाहबत तक है वरना कुतुबे अह़ादीष़ में उन हज़रात से भी बहुत सी अह़ादीष़ मरवी हैं। ये ज़रूर है कि तमाम स़ह़ाब-ए-किराम रसूले करीम (ﷺ) से अह़ादीष़ बयान करने में कमाल एह़तियात़ बरतते थे। इस डर से कि कहीं ग़लत़बयानी के मुर्तकिब होकर ज़िन्दा दोज़ख़ी न बन जाएँ क्योंकि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था, जो शख़्स़ मेरा नाम लेकर ऐसी हदीष़ बयान करे जो मैंने न कही हो, वो ज़िन्दा दोज़ख़ी है। पस इससे मुंकिरीने हदीष़ का इस्तिदलाल बात़िल है। रिवायत में ग़ज़्व-ए-उहुद का ज़िक्र है। बाब से यही वजहे मुत़ाबक़त है। क़ुर्आन मजीद के बाद स़ह़ीह़ मर्फ़ूअ़ मुस्तनद ह़दीष़ का तस्लीम करना हर मुसलमान के लिये फ़र्ज़ है जो शख़्स़ स़ह़ीह़ ह़दीष़ का इंकार करे वो क़ुर्आन ही का इंकारी है और ये किसी मुसलमान का शेवा नहीं है।

4063. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत त़लहा (रज़ि.) का वो हाथ देखा जो सुन्न हो चुका था। उस हाथ से उन्होंने गज़्व-ए-उहुद के दिन नबी करीम (ﷺ) की ह़िफ़ाज़त की थी। (राजेअ़ : 3724)

٤٠٦٣- حدثنا عبد الله بن أبي شيبة حدثنا وكيع عن إسماعيل عن قيس قال رأيت يد طلحة شلاء وقى بها النبي ﷺ يوم أحد. [راجع: ٣٧٢٤]

4064. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-उहुद में जब मुसलमान नबी करीम (ﷺ) के पास से मुंतशिर होकर पस्पा हो गये तो ह़ज़रत अबू त़लहा (रज़ि.) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की अपने चमड़े की ढाल से ह़िफ़ाज़त कर रहे थे। अबू त़लहा (रज़ि.) बड़े तीरंदाज़ थे और कमान ख़ूब खींचकर तीर चलाया करते थे। उस दिन उन्होंने दो या तीन कमानें तोड़ दी थीं। मुसलमानों में से कोई अगर तीर का तरकश लिये गुज़रता तो हुज़ूर (ﷺ) उनसे फ़र्माते ये तीर अबू त़लहा (रज़ि.) के लिये यहीं रखते जाओ। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मुश्रिकीन को देखने के लिये सर उठाकर झाँकते तो अबू त़लहा (रज़ि.) अ़र्ज़ करते, मेरे माँ–बाप आप पर फ़िदा हों, सरे मुबारक ऊपर न उठाइये कहीं ऐसा न हो कि उधर से कोई तीर हुज़ूर (ﷺ) को आकर लग जाए। मेरी गर्दन आपसे पहले है और मैंने देखा कि जंग में ह़ज़रत आइशा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) और (अनस रज़ि. की वालिदा)

٤٠٦٤- حدثنا أبو معمر حدثنا عبد الوارث حدثنا عبد العزيز عن أنس رضي الله عنه قال: لما كان يوم أحد انهزم الناس عن النبي ﷺ وأبو طلحة بين يدي النبي ﷺ مجوب عليه بحجفة له وكان أبو طلحة رجلا راميا شديد النزع، كسر يومئذ قوسين أو ثلاثا، وكان الرجل يمر معه بجعبة من النبل فيقول: ((انثرها لأبي طلحة))، قال: ويشرف النبي ﷺ ينظر إلى القوم فيقول أبو طلحة بأبي أنت وأمي لا تشرف يصيبك سهم من سهام القوم نحري دون نحرك ولقد رأيت عائشة

بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ وَأُمَّ سُلَيْمٍ وَإِنَّهُمَا لَمُشَمِّرَتَانِ يُرَى خَدَمَ سُوقِهِمَا تَنْقُزَانِ الْقِرَبَ عَلَى مُتُونِهِمَا تُفْرِغَانِهِ فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ ثُمَّ تَرْجِعَانِ فَتَمْلآنِهَا ثُمَّ تَجِيئَانِ فَتُفْرِغَانِهِ فِي أَفْوَاهِ الْقَوْمِ، وَلَقَدْ وَقَعَ السَّيْفُ مِنْ يَدَيْ أَبِي طَلْحَةَ إِمَّا مَرَّتَيْنِ وَإِمَّا ثَلاَثًا. [راجع: ٢٨٨٠]

उम्मे सुलेम (रज़ि.) अपने कपड़े उठाए हुए हैं कि उनकी पिण्डलियाँ नज़र आ रही थीं और मशकीज़े अपनी पीठों पर लिये दौड़ रही हैं और उसका पानी ज़ख़्मी मुसलमानों को पिला रही हैं फिर (जब उसका पानी ख़त्म हो जाता है) तो वापस आती हैं और मश्क भरकर फिर ले जाती हैं और मुसलमानों को पिलाती हैं। उस दिन अबू तलहा (रज़ि.) के हाथ से दो या तीन मर्तबा तलवार गिर गई थी। (राजेअ : 2880)

मैदाने जंग में ख़्वातीने इस्लाम के कारनामे भी रहती दुनिया तक याद रहेंगे। ये भी मा'लूम हुआ कि शदीद ज़रूरत के वक़्त ख़्वातीने इस्लाम का घरों से बाहर निकलकर काम करना भी जाइज़ है बशर्ते कि वो शरई पर्दा इख़्तियार किये हुए हों। इस जंग में उनकी पिण्डलियों का नज़र आना ये बदर्जा मजबूरी थी।

٤٠٦٥ - حدثني عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ هُزِمَ الْمُشْرِكُونَ فَصَرَخَ إِبْلِيسُ لَعْنَةُ اللهِ عَلَيْهِ، أَيْ عِبَادَ اللهِ أُخْرَاكُمْ. فَرَجَعَتْ أُولاَهُمْ فَاجْتَلَدَتْ هِيَ وَأُخْرَاهُمْ فَبَصُرَ حُذَيْفَةُ فَإِذَا هُوَ بِأَبِيهِ الْيَمَانِ، فَقَالَ: أَيْ عِبَادَ اللهِ أَبِي أَبِي قَالَ: قَالَتْ فَوَ اللهِ مَا احْتَجَزُوا حَتَّى قَتَلُوهُ فَقَالَ حُذَيْفَةُ : يَغْفِرُ اللهُ لَكُمْ. قَالَ عُرْوَةُ: فَوَ اللهِ مَا زَالَتْ فِي حُذَيْفَةَ بَقِيَّةُ خَيْرٍ حَتَّى لَقِيَ بِاللهِ عَزَّ وَجَلَّ. بَصُرْتُ: عَلِمْتُ مِنَ الْبَصِيرَةِ فِي الأَمْرِ، وَأَبْصَرْتُ مِنْ بَصَرِ الْعَيْنِ، وَيُقَالُ بَصُرْتُ وَأَبْصَرْتُ وَاحِدٌ. [راجع: ٣٢٩٠]

6065. मुझसे अब्दुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि शुरू जंगे उहुद में पहले मुश्रिकीन शिकस्त खा गये थे लेकिन इब्लीस, अल्लाह की उस पर ला'नत हो, धोखा देने के लिये पुकारने लगा। ऐ इबादल्लाह! (मुसलमानों!) अपने पीछे वालों से ख़बरदार हो जाओ। इस पर आगे जो मुसलमान थे वो लौट पड़े और अपने पीछे वालों से भिड़ गये। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) ने जो देखा तो उनके वालिद हज़रत यमान (रज़ि.) उन्हीं में हैं (जिन्हें मुसलमान अपना दुश्मन मुश्रिक समझकर मार रहे थे) वो कहने लगे मुसलमानों! ये तो मेरे हज़रत वालिद हैं। मेरे वालिद, उर्वा ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, पस अल्लाह की क़सम! उन्होंने उनको उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक क़त्ल न कर लिया। हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने सिर्फ़ इतना कहा कि अल्लाह मुसलमानों की ग़लती मुआफ़ करे। उर्वा ने बयान किया कि इसके बाद हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बराबर मग़्फ़िरत की दुआ करते रहे यहाँ तक कि वो अल्लाह से जा मिले। बसुर्तु या'नी मैं दिल की आँखों से काम को समझता हूँ और अब्सर्तु आँखों से देखने के लिये इस्ते'माल होता है। ये भी कहा गया है कि बसुर्तु और अब्सत के एक ही मा'नी हैं बसीरत दिल की आँखों से देखना और अब्सत ज़ाहिर की आँखों से देखना मुराद है। (राजेअ : 329)

तश्रीह : बयान की गई इन तमाम अहादीष़ में किसी न किसी तरह से जंगे उहुद के हालात बयान किये गये हैं। जंगे उहुद इस्लामी तारीख़ (इतिहास) का एक अज़ीम हादष़ा है। इनकी तफ़्सीलात के लिये दफ़्तर भी नाकाफ़ी हैं। हर हदीष़ का ग़ौर से मुतालआ करने वालों को बहुत सारे सबक़ मिल सकेंगे। अल्लाह तौफ़ीक़े मुतालआ अता करे। देखा जा रहा है कि कुर्आन व हदीष़ के हक़ीक़ी मुतालआ से तबीयतें दूर होती जा रही हैं। ऐसे पुरफ़ितन व इल्हादपरवर दौर में ये तर्जुमा और तशरीहात लिखने में बैठा हुआ हूँ कि क़द्र-दाँ उँगलियों पर गिने जा सकते हैं फिर भी पूरी किताब अगर इशाअत पज़ीर (प्रकाशन योग्य) हो गई तो ये सदाक़ते इस्लाम का एक ज़िन्दा मुअजिज़ा होगा। अल्लाहुम्मा आमीन। या अल्लाह! बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू की तक्मील करना तेरा काम है अपने महबूब बन्दों को इस ख़िदमत में शरीक होने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा। आमीन।

बाब 19 : अल्लाह तआला का फ़र्मान, बेशक तुममें से जो लोग उस दिन वापस लौट गये जिस दिन कि

दोनों जमाअतें आपस में मुक़ाबिल हुई थीं तो ये तो बस इस सबब से हुआ कि शैतान ने उन्हें उनके कुछ कामों की वजह से बहका दिया था और बेशक अल्लाह उन्हें मुआफ़ कर चुका है. यक़ीनन अल्लाह बड़ा ही मग़्फ़िरत वाला, बड़ा हिल्म वाला है

١٩- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:
﴿إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ﴾.

4066. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अबू हम्ज़ा ने ख़बर दी, उनसे उष़्मान बिन मौहिब ने बयान किया कि एक साहब बैतुल्लाह के हज के लिये आए थे। देखा कि कुछ लोग बैठे हुए हैं। पूछा कि ये बैठे हुए कौन लोग हैं? लोगों ने बताया कि ये कुरैश हैं। पूछा कि इनमें शैख़ कौन हैं? बताया कि इब्ने उमर (रज़ि.)। वो साहब इब्ने उमर (रज़ि.) के पास आए और उनसे कहा कि मैं आपसे एक बात पूछता हूँ। आप मुझसे वाक़ियात (सहीह) बयान कर दीजिए। इस घर की हुर्मत की क़सम देकर मैं आपसे पूछता हूँ। क्या आपको मा'लूम है कि उष़्मान (रज़ि.) ने ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर राहे फ़रार इख़्तियार कर ली थी? उन्होंने कहा कि हाँ सहीह है। उन्होंने पूछा आपको ये भी मा'लूम है कि उष़्मान (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में शरीक नहीं थे? कहा कि हाँ ये भी हुआ था। उन्होंने पूछा और आपको ये भी मा'लूम है कि वो बेअते रिज़्वान (सुलह हुदैबिया) में भी पीछे रह गये थे और हाज़िर न हो सके थे? उन्होने कहा कि हाँ ये भी सहीह है। इस पर उन साहब ने (मारे ख़ुशी के) अल्लाहु अकबर कहा लेकिन इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा। यहाँ आओ मैं तुम्हें बताऊँगा और जो सवालात तुमने किये हैं उनकी

٤٠٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا أَبُو حَمْزَةَ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ مَوْهَبٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ حَجَّ الْبَيْتَ فَرَأَى قَوْمًا جُلُوسًا فَقَالَ: مَنْ هَؤُلاَءِ الْقُعُودُ؟ قَالَ: هَؤُلاَءِ قُرَيْشٌ، قَالَ: مَنِ الشَّيْخُ؟ قَالُوا: ابْنُ عُمَرَ فَأَتَاهُ فَقَالَ: إِنِّي سَائِلُكَ عَنْ شَيْءٍ أَتُحَدِّثُنِي قَالَ: أَنْشُدُكَ بِحُرْمَةِ هَذَا الْبَيْتِ أَتَعْلَمُ أَنَّ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ فَرَّ يَوْمَ أُحُدٍ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ: فَتَعْلَمُهُ تَغَيَّبَ عَنْ بَدْرٍ فَلَمْ يَشْهَدْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَتَعْلَمُ أَنَّهُ تَخَلَّفَ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَلَمْ يَشْهَدْهَا؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ فَكَبَّرَ، قَالَ ابْنُ عُمَرَ: تَعَالَ لأُخْبِرَكَ وَلأُبَيِّنَ لَكَ عَمَّا سَأَلْتَنِي عَنْهُ أَمَّا فِرَارُهُ يَوْمَ أُحُدٍ فَأَشْهَدُ أَنَّ اللهَ عَفَا عَنْهُ، وَأَمَّا تَغَيُّبُهُ

عَنْ بَدْرٍ فَإِنَّهُ كَانَ تَحْتَهُ بِنْتُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَتْ مَرِيْضَةً، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّ لَكَ أَجْرَ رَجُلٍ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا وَسَهْمَهُ)). وَأَمَّا تَغَيُّبُهُ عَنْ بَيْعَةِ الرِّضْوَانِ فَإِنَّهُ لَوْ كَانَ أَحَدٌ أَعَزَّ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ لَبَعَثَهُ مَكَانَهُ، فَبَعَثَ عُثْمَانَ وَكَانَ بَيْعَةُ الرِّضْوَانِ بَعْدَ مَا ذَهَبَ عُثْمَانُ إِلَى مَكَّةَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ الْيُمْنَى: ((هَذِهِ يَدُ عُثْمَانَ)) فَضَرَبَ بِهَا عَلَى يَدِهِ فَقَالَ: ((هَذِهِ لِعُثْمَانَ)) اذْهَبْ بِهَذَا الْآنَ مَعَكَ)).

[راجع: ٣١٣٠]

मैं तुम्हारे सामने तफ़्सील बयान कर दूँगा। उहुद की लड़ाई में फ़रार के बारे में जो तुमने कहा तो मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला ने उनकी ग़लती मुआफ़ कर दी है। बद्र की लड़ाई में उनके न होने के बारे में जो तुमने कहा तो उसकी वजह ये थी कि उनके निकाह में रसूलुल्लाह (ﷺ) की स़ाहबज़ादी (रुक़य्या रज़ि.) थीं और वो बीमार थीं। आपने फ़र्माया था कि तुम्हें उस शख़्स के बराबर स़वाब मिलेगा जो बद्र की लड़ाई में शरीक होगा और उसी के बराबर माले ग़नीमत से हिस्सा भी मिलेगा। बेअ़ते रिज़्वान में उनकी अदमे शिर्कत का जहाँ तक सवाल है तो वादी-ए-मक्का में उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) से ज़्यादा कोई शख़्स हरदिल अ़ज़ीज़ होता तो हुज़ूर (ﷺ) उनके बजाय उसी को भेजते। इसलिये ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) को वहाँ भेजना पड़ा और बेअ़ते रिज़्वान उस वक़्त हुई जब वो मक्का में थे (बेअ़त लेते हुए) आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने दाहिने हाथ को उठाकर फ़र्माया कि ये उ़स्मान (रज़ि.) का हाथ है और उसे अपने (बाईं) हाथ पर मारकर फ़र्माया कि ये बेअ़त उ़स्मान (रज़ि.) की त़रफ़ से है। अब जा सकते हो। अल्बत्ता मेरी बातों को याद रखना। (राजेअ़ : 3130)

तशरीह : (ह़ज़रत सय्यदना उ़स्मान रज़ि. पर ये ए'तिराज़ात करने वाला कोई ख़ारजी था जो वाक़ियात की ज़ाहिरी सत़ह को बयान करके उनकी बुराई करना चाहता था मगर जिसे अल्लाह इ़ज़्ज़त अ़त़ा करे उसकी बुराई करने वाला ख़ुद बुरा है रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु)। ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर आम मुसलमानों में कुफ़्फ़ार के अचानक ह़मले की वजह से घबराहट फैल गई थी। हुज़ूर अकरम (ﷺ) अपनी जगह पर खड़े हुए थे और दो एक स़ह़ाबा के साथ कुफ़्फ़ार के तमाम ह़मलों का इंतिहाई पामर्दी से मुक़ाबला कर रहे थे। थोड़ी देर के बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने स़ह़ाबा को आवाज़ दी और फिर तमाम स़ह़ाबा जमा हो गये। अल्लाह तआला ने स़ह़ाबा की इस ग़लती को मुआफ़ कर दिया और अपनी मुआफ़ी का ख़ुद क़ुर्आन मजीद में ऐलान किया। अकस़र स़ह़ाबा मुंतशिर हो गये थे और उन्हीं में उ़स्मान (रज़ि.) भी थे। मुसलमानों को इस ग़ज़्वे में अगरचे नुक़्सान बहुत उठाना पड़ा लेकिन ये नहीं कहा जा सकता कि मुसलमानों ने ग़ज़्व-ए-उहुद में शिकस्त खाई। क्योंकि न मुसलमानों ने हथियार डाले और न आँह़ज़रत (ﷺ) ने मैदाने जंग छोड़ा था। फ़ौज या'नी स़ह़ाबा रिज़्वानुल्लाह अ़लैहिम अज्मईन में अगरचे थोड़ी देर के लिये इंतिशार पैदा हो गया था लेकिन फिर ये सब ह़ज़रात भी जल्दी ही मैदान में आ गये। ये भी नहीं हुआ कि स़ह़ाबा (रज़ि.) ने मैदान छोड़ दिया हो बल्कि ग़ैर मुतवक़्क़ा (अविचारणीय) सूरतेह़ाल से घबराहट और स़फ़ों में इंतिशार पैदा हो गया था। जब अल्लाह के नबी (ﷺ) ने उन्हें पुकारा तो वो फ़ौरन सम्भल गये और फिर आकर आपके चारों त़रफ़ जमा हो गये और आख़िर कुफ़्फ़ार को भागने का रास्ता इख़्तियार करना पड़ा। अ़ज़ीम नुक़्सानात के बावजूद आख़िरी फ़तह़ मुसलमानों को ही नसीब हुई। ऊपर वाली अह़ादीस़ में यही मज़ामीन बयान में आ रहे हैं। ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के बारे में सवालात करने वाला मुख़ालिफ़ीन में से था। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने उसके सवालात को तफ़्सील के साथ ह़ल फ़र्मा दिया। मगर जिन लोगों को किसी से नाह़क़ बुग़्ज़ हो जाता है वो किसी भी त़ौर पर मुतमईन नहीं हो सकते। आज तक ऐसे कज फ़हम (झूठी समझ वाले) लोग मौजूद हैं जो ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) पर तअ़न करना ही अपने लिये दलीले फ़ज़ीलत बनाए हुए हैं। स़ह़ाबा किराम

(रज़ि.) ख़ुसूसन ख़ुलफ़-ए-राशिदीन हमारे हर एहतिराम के मुस्तहिक़ हैं। उनकी इन्सानी लग़्ज़िशें सब अल्लाह के हवाले हैं। अल्लाह तआला यक़ीनन उनको मुआफ़ कर चुका है। (रजियल्लाहु अन्हुम व लअ़नल्लाहु मन आदहुमे)

बाब 20 :

٢٠ - باب

﴿إِذْ تُصْعِدُونَ وَلاَ تَلْوُونَ عَلَى أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ لِكَيْلاَ تَحْزَنُوا عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلاَ مَا أَصَابَكُمْ وَاللهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ﴾

अल्लाह तआला का फ़र्मान, वो वक़्त याद करो जब तुम चढ़े जा रहे थे और पीछे मुड़कर भी किसी को न देखते थे और रसूल तुमको पुकार रहे थे तुम्हारे पीछे से। सो अल्लाह ने तुम्हें ग़म दिया, ग़म की पादाश में, ताकि तुम रंजीदा न हो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल गई और न उस मुसीबत से जो तुम पर आ पड़ी और अल्लाह तआला तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।

٤٠٦٧ - حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الرَّجَّالَةِ يَوْمَ أُحُدٍ عَبْدَ اللهِ بْنَ جُبَيْرٍ وَأَقْبَلُوا مُنْهَزِمِينَ فَذَاكَ إِذْ يَدْعُوهُمُ الرَّسُولُ فِي أُخْرَاهُمْ.

[راجع: ٣٠٩]

4067. मुझसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर रसूले करीम (ﷺ) ने (तीरंदाज़ों के) पैदल दस्ते का अमीर अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को बनाया था लेकिन वो लोग शिकस्त खाकर आए। (आयत यदऊहुमुर्रसूलु फ़ी उख़राहुम उन ही के बारे में नाज़िल हुई थी) और ये हज़ीमत (शिकस्त) उस वक़्त पेश आई जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) उनको पीछे से पुकार रहे थे। (राजेअ : 309)

तश्रीह : कुछ मौक़े क़ौमों की तारीख़ में ऐसे आ जाते हैं कि चन्द अफ़राद की ग़लती से पूरी क़ौम तबाह हो जाती है और कुछ दफ़ा चन्द अफ़राद की मसाई (कोशिश) से पूरी क़ौम कामयाब हो जाती है। जंगे उहुद में भी ऐसा ही हुआ कि चन्द अफ़राद की ग़लती का ख़मियाज़ा सारे मुसलमानों को भुगतना पड़ा। अहले इस्लाम की आज़माइश के लिये ऐसा होना भी ज़रूरी था ताकि आइन्दा वो होशियार रहें और दोबारा ऐसी ग़लती न करें। जबले उहुद का मुतअय्यिना (निर्धारित किया हुआ) दर्रा छोड़ देना उनकी सख़्त ग़लती थी हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने सख़्त ताकीद फ़र्माई थी कि वो हमारे हुक्म बग़ैर किसी हाल में ये दर्रा न छोड़ें।

बाब 21 : अल्लाह तआला का फ़र्मान

٢١ - باب

﴿ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُعَاسًا يَغْشَى طَائِفَةً مِنْكُمْ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنْفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الأَمْرِ مِنْ

फिर उसने इस ग़म के बाद तुम्हारे ऊपर राहत या'नी ग़ुनदगी नाज़िल की कि उसका तुममें से एक जमाअत पर ग़लबा हो रहा था और एक जमाअत वो थी कि उसे अपनी जानों की पड़ी हुई थी, ये अल्लाह के बारे में ख़िलाफ़े हक़ और जाहिलियत के ख़्यालात क़ायम कर रहे थे और ये कह रहे थे कि क्या हमको भी

कुछ इख़्तियार है? आप कह दीजिए कि इख़्तियार तो सब अल्लाह का है। ये लोग दिलों में ऐसी बात छुपाए हुए हैं जो आप पर ज़ाहिर नहीं करते और कहते हैं कि कुछ भी हमारा इख़्तियार चलता तो हम यहाँ न मारे जाते। आप कह दीजिए कि अगर तुम घरों में होते तब भी वो लोग जिनके लिये क़त्ल मुक़द्दर हो चुका था, अपनी क़त्लगाहों की तरफ़ निकल ही पड़ते और ये सब इसलिये हुआ कि अल्लाह तुम्हारे दिलों की आज़माईश करे और ताकि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे साफ़ करे और अल्लाह तआला दिल की बातों को ख़ूब जानता है।

شيْءٌ قلْ: انّ الأمْر كُلّهُ لله يُخْفُون في انفُسهمْ ما لا يُبْدُون لك يقُولُون لوْ كان لنا من الأمْر شيْءٌ ما قُتلْنا ههُنا قُلْ: لوْ كنتم في بيوتكمْ لبرز الّذين كُتب عليْهمُ القتْلُ إلى مضاجعهمْ وليبْتلي الله ما في صُدُوركُمْ وليمحّص ما في قُلُوبكُمْ والله عليمٌ بذات الصُّدُور﴾.

शुह्दा-ए-उहुद पर जो ग़म मुसलमानों को हुवा उसकी तसल्ली के लिये ये आयात नाज़िल हुईं जिनमें मुसलमानों के लिये बहुत अस्बाक़ पोशिदा हैं। गहरी नज़र से मुतालआ ज़रूरी है।

4068. और मुझसे ख़लीफ़ा ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरेअ ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से सुना और उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे अबू तलहा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उन लोगों में था जिन्हें ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर ऊँघ ने आ घेरा था और उसी हालत में मेरी तलवार कई मर्तबा (हाथ से छूटकर, बेइख़्तियार) गिर पड़ी थी। मैं उसे उठा लेता, फिर गिर जाती और मैं उसे फिर उठा लेता। (दीगर मक़ाम : 4562)

٤٠٦٨- وقال لي خليفةُ حدّثنا يزيدُ بْنُ زُريْعٍ حدّثنا سعيدٌ عنْ قتادة عنْ أنسٍ عنْ أبي طلْحة رضي الله عنْهما قال: كُنْتُ فيمنْ تغشّاهُ النُّعاسُ يوْم أُحُدٍ حتّى سقط سيْفي منْ يدي مرارًا يسْقُطُ وآخُذُهُ ويسْقُطُ وآخُذُهُ. [طرفه في: ٤٥٦٢].

बाब 22 : अल्लाह तआला का फ़र्मान, आपको उस अम्र में कोई इख़्तियार नहीं। अल्लाह ख़्वाह उनकी तौबा क़ुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे, पस बेशक वो ज़ालिम हैं।

٢٢- باب
﴿ليْس لك من الأمْر شيْءٌ أوْ يتُوب عليْهمْ أوْ يُعذّبهمْ فإنّهُمْ ظالمُون﴾

हुमैद और षाबित बिनानी ने हज़रत अनस (रज़ि.) से बयान किया कि ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) के सरे मुबारक में ज़ख़्म आ गये थे तो आपने फ़र्माया कि वो क़ौम कैसे फ़लाह पाएगी जिसने अपने नबी को ज़ख़्मी कर दिया। इस पर (आयत) (लयसा लका मिनल अम्रि शैआ) नाज़िल हुई।

قال حُميْدٌ وثابتٌ عنْ أنسٍ شُجّ النّبيّ ﷺ يوْم أُحُدٍ فقال: ((كيْف يُفْلحُ قوْمٌ شجُّوا نبيّهُمْ)) فنزلتْ ﴿ليْس لك من الأمْر شيْءٌ﴾. [آل عمران: ١٢٨]

4069. हमसे यह्या बिन अब्दुल्लाह असलमी ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सालिम ने, अपने वालिद अब्दुल्लाह बिन

٤٠٦٩- حدّثنا يحْيى بْنُ عبْد الله السُّلميُّ أخْبرنا عبْدُ الله أخْبرنا معْمرٌ عن الزُّهْريّ حدّثني سالمٌ عنْ أبيه أنّهُ سمع

उमर (रज़ि.) से कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, जब आँहज़रत (ﷺ) फ़ज्र की आख़िरी रकअ़त के रुकूअ़ से सरे मुबारक उठाते तो ये दुआ़ करते, ऐ अल्लाह! फ़लाँ, फ़लाँ और फ़लाँ (या'नी स़फ़्वान बिन उमय्या, सुहैल बिन अ़म्र और हारिष़ बिन हिशाम) को अपनी रह़मत से दूर कर दे। ये दुआ़ आप (समिअ़ल्लाहुलिमन ह़मिदह, रब्बना वलकल ह़म्द) के बाद करते थे। इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयत लयस लक मिनल अम्रि शैउन से फ़इन्नहुम ज़ालिमून (आले इमरान : 128) तक नाज़िल की। (दीगर मक़ाम : 4070, 4559, 7346)

رَسُولَ اللهِ ﷺ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ مِنَ الرَّكْعَةِ الأَخِيرَةِ مِنَ الْفَجْرِ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلاَنًا وَفُلاَنًا وَ فُلاَنًا)) بَعْدَمَا يَقُولُ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ)) فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾.

[أطرافه في: ٤٠٧٠، ٤٥٥٩، ٧٣٤٦].

4070. और हंज़ला बिन अबी सुफ़यान से रिवायत है, उन्होंने बयान किया कि मैंने सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) स़फ़्वान बिन उमय्या, सुहैल बिन अ़म्र बिन हारिष़ बिन हिशाम के लिये बद् दुआ़ करते थे, इस पर ये आयत (लयसा लक मिनल् अम्रि शैइन) से (फ़इन्नहुम ज़ालिमून) तक नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 4069)

٤٠٧٠- وَعَنْ حَنْظَلَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ قَالَ: سَمِعْتُ سَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدْعُو عَلَى صَفْوَانَ بْنِ أُمَيَّةَ وَسُهَيْلِ بْنِ عَمْرٍو وَالْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ فَنَزَلَتْ ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾.[راجع: ٤٠٦٩]

तश्रीह : ये तीनों शख़्स उस वक़्त काफ़िर थे। बाद में अल्लाह तआ़ला ने उनको इस्लाम की तौफ़ीक़ दी और शायद यही हिक्मत थी जो अल्लाह तआ़ला ने अपने पैग़म्बर (ﷺ) को उनके लिये बददुआ़ करने से मना किया। कहते हैं जंगे उहुद में उत्बा बिन अबी वक़्क़ास़ ने आपका नीचे का दांत तोड़ा और नीचे का होंठ ज़ख़्मी किया और अ़ब्दुल्लाह बिन शिहाब ने आपका चेहरा ज़ख़्मी किया और अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुमय्या ने पत्थर मारकर आपका रुख़सार ज़ख़्मी किया। ज़िरह के दो छल्ले आपके मुबारक रुख़सार में घुस गये। आपने फ़र्माया अल्लाह तुझको ज़लील व ख़्वार करेगा। ऐसा ही हुआ। एक पहाड़ी बकरी ने सींग मारकर हलाक कर दिया। कुछ ने कहा ये आयत क़ारियों के क़िस्से में उतरी जब आप रअ़ल और ज़कवान और उस़य वग़ैरह क़बाईल पर ला'नत करते थे लेकिन अकष़र का यही क़ौल है कि ये आयत उहुद के बाब में उतरी है। (वह़ीदी)

बाब 23 : ह़ज़रत उम्मे सलीत़ (रज़ि.) का तज़्किरा

٢٣- باب ذِكْرِ أُمِّ سَلِيطٍ

उम्मे सलीत़ का ख़ाविन्द अबू सलीत़ हिजरत के पहले ही इंतिक़ाल कर गया था। फिर उनसे मालिक बिन सुफ़यान ख़ुदरी ने निकाह कर लिया और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) मशहूर स़ह़ाबी पैदा हुए। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन।

4071. हमसे यह्या बिन बुकेर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि ष़अ़लबा बिन अबी मालिक ने बयान किया कि ह़ज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने मदीना की ख़्वातीन में चादरें तक़्सीम करवाईं। एक उम्दा क़िस्म की चादर बाक़ी बच गई तो एक स़ाह़ब ने जो वहीं मौजूद थे, अ़र्ज़ किया, या अमीरल

٤٠٧١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ. وَقَالَ ثَعْلَبَةُ بْنُ أَبِي مَالِكٍ: إِنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَسَمَ مُرُوطًا بَيْنَ نِسَاءٍ مِنْ نِسَاءِ أَهْلِ الْمَدِينَةِ فَبَقِيَ مِنْهَا مِرْطٌ جَيِّدٌ

मोमिनीन! ये चादर रसूलुल्लाह (ﷺ) की नवासी को दे दीजिए जो आपके निकाह में हैं। उनका इशारा ह़ज़रत उम्मे कुल्सुम बिन्ते अ़ली (रज़ि.) की त़रफ़ था। लेकिन ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) बोले कि ह़ज़रत उम्मे सलीत़ (रज़ि.) उनसे ज़्यादा मुस्तह़िक़ हैं। ह़ज़रत उम्मे सलीत़ (रज़ि.) का ता'ल्लुक़ अंसार क़बीले से था और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि ग़ज़्व-ए-उहुद में वो हमारे लिये पानी की मश्क भर भरकर लाती थी। (राजेअ़ : 2881)

فقال له بعض من عنده : يا أمير المؤمنين أعط هذا بنت رسول الله ﷺ التي عندك، يريدون أم كلثوم بنت علي فقال عمر : أم سليط أحق به منها وأم سليط من نساء الأنصار ممن بايع رسول الله ﷺ. قال عمر: وإنها كانت تزفر لنا القرب يوم أحد. [راجع: ٢٨٨١]

उनके उसी मुबारक अ़मल को उनके लिये वजहे फ़ज़ीलत क़रार दिया गया और चादर उन ही को दी गई। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जिस नज़रे बस़ीरत का यहाँ षुबूत दिया उसकी जितनी भी ता'रीफ़ की जाए कम है। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु

बाब 24 : ह़ज़रत ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) की शहादत का बयान

٢٤- باب قتل حمزة رضي الله عنه

4072. मुझसे अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे हुजेन बिन मुषन्ना ने बयानकिया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सलमा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन फ़ुज़ेल ने, उनसे सुलैमान बिन यसार ने, उनसे जा'फ़र बिन अ़म्र बिन उमय्या ज़म्री (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उबैदुल्लाह बिन अ़दी बिन ख़ैयार (रज़ि.) के साथ रवाना हुआ। जब ह़िम्स़ पहुँचे तो मुझसे उ़बैदुल्लाह (रज़ि.) ने कहा, आपको वह़्शी (इब्ने ह़रब ह़ब्शी जिसने ग़ज़्व-ए-उह़ुद में ह़म्ज़ा रज़ि.) को क़त्ल किया और हिन्दा ज़ोजा अबू सुफ़यान ने उनकी लाश का मुष़्ला किया था) से तआ़रुफ़ है। हम चल के उनसे ह़म्ज़ा (रज़ि.) की शहादत के बारे में मा'लूम करते हैं। मैंने कहा कि ठीक है ज़रूर चलो। वह़्शी ह़िम्स़ में मौजूद था। चुनाँचे हमने लोगों से उनके बारे में मा'लूम किया तो हमें बताया गया कि वो अपने मकान के साये में बैठे हुए हैं, जैसे कोई बड़ा सा कुप्पा हो। उन्होंने बयान किया कि फिर हम उनके पास आए और थोड़ी देर उनके पास खड़े रहे, फिर सलाम किया तो उन्होंने सलाम का जवाब दिया। बयान किया कि उ़बैदुल्लाह ने अपने अ़मामा को जिस्म पर इस त़रह लपेट रखा था कि वह़्शी स़िर्फ़ उनकी आँखें और पैर देख सकते थे।

٤٠٧٢- حدثني أبو جعفر محمد بن عبد الله حدثنا حجين بن المثنى حدثنا عبد العزيز بن عبد الله بن أبي سلمة عن عبد الله بن الفضل عن سليمان بن يسار عن جعفر ابن عمرو بن أمية الضمري قال: خرجت مع عبيد الله بن عدي بن الخيار فلما قدمنا حمص قال لي عبيد الله بن عدي هل لك في وحشي نسأله عن قتل حمزة؟ قلت: نعم. وكان وحشي يسكن حمص فسألنا عنه فقيل لنا هو ذاك في ظل قصره. كأنه حميت قال: فجئنا حتى وقفنا عليه بيسير. فسلمنا فرد السلام قال وعبيد الله معتجر بعمامته. ما يرى وحشي إلا عينيه ورجليه؟ فقال عبيد الله يا وحشي أتعرفني؟ قال: فنظر إليه

ثُمَّ قَالَ : لاَ وَاللَّهِ إِلاَّ أَنِّي أَعْلَمُ أَنَّ عَدِيَّ بْنَ الْخِيَارِ تَزَوَّجَ امْرَأَةً يُقَالُ لَهَا أُمُّ قِتَالٍ بِنْتُ أَبِي الْعِيصِ، فَوَلَدَتْ لَهُ غُلاَمًا بِمَكَّةَ فَكُنْتُ أَسْتَرْضِعُ لَهُ فَحَمَلْتُ ذَلِكَ الْغُلاَمَ مَعَ أُمِّهِ فَنَاوَلْتُهَا إِيَّاهُ فَلَكَأَنِّي نَظَرْتُ إِلَى قَدَمَيْكَ. قَالَ : فَكَشَفَ عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ وَجْهِهِ، ثُمَّ قَالَ أَلاَ تُخْبِرُنَا بِقَتْلِ حَمْزَةَ؟ قَالَ : نَعَمْ. إِنَّ حَمْزَةَ قَتَلَ طُعَيْمَةَ بْنَ عَدِيِّ بْنِ الْخِيَارِ بِبَدْرٍ. فَقَالَ لِي مَوْلاَيَ جُبَيْرُ بْنُ مُطْعِمٍ : إِنْ قَتَلْتَ حَمْزَةَ بِعَمِّي فَأَنْتَ حُرٌّ. قَالَ فَلَمَّا أَنْ خَرَجَ النَّاسُ عَامَ عَيْنَيْنِ وَعَيْنَيْنِ جَبَلٌ بِحِيَالِ أُحُدٍ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ وَادٍ خَرَجْتُ مَعَ النَّاسِ إِلَى الْقِتَالِ فَلَمَّا أَنِ اصْطَفُّوا لِلْقِتَالِ خَرَجَ سِبَاعٌ، فَقَالَ: هَلْ مِنْ مُبَارِزٍ؟ قَالَ : فَخَرَجَ إِلَيْهِ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَقَالَ: يَا سِبَاعُ يَا ابْنَ أُمِّ أَنْمَارٍ مُقَطِّعَةِ الْبُظُورِ أَتُحَادُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ : ثُمَّ شَدَّ عَلَيْهِ فَكَانَ كَأَمْسِ الذَّاهِبِ، قَالَ: وَكَمَنْتُ لِحَمْزَةَ تَحْتَ صَخْرَةٍ فَلَمَّا دَنَا مِنِّي رَمَيْتُهُ بِحَرْبَتِي فَأَضَعُهَا فِي ثُنَّتِهِ حَتَّى خَرَجَتْ مِنْ بَيْنِ وَرِكَيْهِ قَالَ : فَكَانَ ذَاكَ الْعَهْدَ بِهِ، فَلَمَّا رَجَعَ النَّاسُ رَجَعْتُ مَعَهُمْ فَأَقَمْتُ بِمَكَّةَ حَتَّى فَشَا فِيهَا الإِسْلاَمُ ثُمَّ خَرَجْتُ إِلَى الطَّائِفِ فَأَرْسَلُوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

उबैदुल्लाह (रज़ि.) ने पूछा, ऐ वहशी! क्या तुमने मुझे पहचाना? रावी ने बयान किया कि फिर उसने उबैदुल्लाह को देखा और कहा कि नहीं, अल्लाह की क़सम! अल्बत्ता मैं इतना जानता हूँ कि अदी बिन ख़ैयार ने एक औरत से निकाह किया था, उसे उम्मे क़िताल बिन्ते अबिल ईस़ कहा जाता था फिर मक्का में उसके यहाँ एक बच्चा पैदा हुआ और मैं उसके लिये किसी अना की तलाश के लिये गया था। फिर मैं उस बच्चे को उसकी (रज़ाई) माँ के पास ले गया और उसकी वालिदा भी साथ थी। ग़ालिबन मैंने तुम्हारे पैर देखे थे। बयान किया कि इस पर उबैदुल्लाह बिन अदी (रज़ि.) ने अपने चेहरे से कपड़ा हटा लिया और कहा, हमें तुम हम्ज़ा (रज़ि.) की शहादत के वाक़ियात बता सकते हो? उन्होंने कहा कि हाँ, बात ये हुई कि बद्र की लड़ाई में हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) ने तुऐमा बिन अदी बिन ख़ैयार को क़त्ल किया था। मेरे आक़ा जुबैर बिन मुतइम ने मुझसे कहा कि अगर तुमने हम्ज़ा (रज़ि.) को मेरे चचा (तुऐमा) के बदले क़त्ल कर दिया तो तुम आज़ाद हो जाओगे। उन्होंने बताया कि फिर जब क़ुरैश अयनैन की जंग के लिये निकले। अयनैन उहुद की एक पहाड़ी है और उसके और उहुद के दरम्यान एक वादी हाईल है। तो मैं भी उनके साथ जंग के इरादे से हो लिया। जब (दोनों फ़ौजें आमने सामने) सबाअ बिन अब्दुल उज़्ज़ा निकला और उसने आवाज़ दी, है कोई लड़ने वाला? बयान किया कि (उसकी उस दा'वते मुबारिज़त पर) अमीर हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) निकलकर आए और फ़र्माया, ऐ सबाअ! ऐ उम्मे अन्मार के बेटे! जो औरतों के ख़त्ने किया करती थी, तू अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने आया है? बयान किया कि फिर हम्ज़ा (रज़ि.) ने उस पर हमला किया (और उसे क़त्ल कर दिया) अब वो वाक़िया गुज़रे हुए दिन की तरह हो चुका था। वहशी ने बयान किया कि इधर मैं एक चट्टान के नीचे हम्ज़ा (रज़ि.) की ताक में था और ज्यों ही वो मुझसे क़रीब हुए, मैंने उन पर अपना छोटा नेज़ा फेंककर मारा, नेज़ा उनकी नाफ़ के नीचे जाकर लगा और उनकी सुरीन के पार हो गया। बयान किया कि यही उनकी शहादत का सबब बना, फिर जब क़ुरैश वापस हुए तो मैं भी उनके साथ वापस आ गया और मक्का में मुक़ीम रहा। लेकिन

وَسَلَّمَ رَسُولاً فَقِيلَ لِي إِنَّهُ لاَ يَهِيجُ الرُّسُلَ. قَالَ : فَخَرَجْتُ مَعَهُمْ حَتَّى قَدِمْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَمَّا رَآنِي قَالَ: ((أَنْتَ وَحْشِيٌّ))؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((أَنْتَ قَتَلْتَ حَمْزَةَ))؟ قُلْتُ: قَدْ كَانَ مِنَ الأَمْرِ مَا قَدْ بَلَغَكَ. قَالَ : ((فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تُغَيِّبَ وَجْهَكَ عَنِّي))؟ قَالَ: فَخَرَجْتُ فَلَمَّا قُبِضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَرَجَ مُسَيْلِمَةُ الْكَذَّابُ قُلْتُ لأَخْرُجَنَّ إِلَى مُسَيْلِمَةَ لَعَلِّي أَقْتُلُهُ فَأُكَافِيءَ بِهِ حَمْزَةَ قَالَ : فَخَرَجْتُ مَعَ النَّاسِ فَكَانَ مِنْ أَمْرِهِ مَا كَانَ فَإِذَا رَجُلٌ قَائِمٌ فِي ثَلْمَةِ جِدَارٍ كَأَنَّهُ جَمَلٌ أَوْرَقُ ثَائِرُ الرَّأْسِ قَالَ: فَرَمَيْتُهُ بِحَرْبَتِي فَأَضَعُهَا بَيْنَ ثَدْيَيْهِ حَتَّى خَرَجَتْ مِنْ بَيْنِ كَتِفَيْهِ. قَالَ: وَوَثَبَ إِلَيْهِ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَضَرَبَهُ بِالسَّيْفِ عَلَى هَامَتِهِ. قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الْفَضْلِ فَأَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ يَسَارٍ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عُمَرَ يَقُولُ: فَقَالَتْ جَارِيَةٌ عَلَى ظَهْرِ بَيْتٍ وَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ قَتَلَهُ الْعَبْدُ الأَسْوَدُ.

जब मक्का भी इस्लामी सल्तनत के तहत आ गया तो मैं त़ाइफ़ चला गया। त़ाइफ़ वालों ने भी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक क़ासिद भेजा तो मुझसे वहाँ के लोगों ने कहा कि अंबिया किसी पर ज़्यादती नहीं करते (इसलिये तुम मुसलमान हो जाओ इस्लाम क़ुबूल करने के बाद तुम्हारी पिछली तमाम ग़ल्तियाँ मुआफ़ हो जाएँगी) चुनाँचे मैं भी उनके साथ रवाना हुआ। जब आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचा और आप (रज़ि.) ने मुझे देखा तो दरयाफ़्त किया, क्या तुम्हारा ही नाम वहशी है? मैंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुम्हीं ने हम्ज़ा (रज़ि.) को क़त्ल किया था? मैंने अ़र्ज़ किया, जो आँहज़रत (ﷺ) को इस मामले में मा'लूम है वही स़हीह़ है। हुज़ूर (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, क्या तुम ऐसा कर सकते हो कि अपनी सूरत मुझे कभी न दिखाओ? उन्होंने बयान किया कि फिर मैं वहाँ से निकल गया। फिर हुज़ूर (ﷺ) की जब वफ़ात हुई तो मुसैलमा कज़्ज़ाब ने ख़ुरूज किया। अब मैंने सोचा कि मुझे मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जंग में ज़रूर शिर्कत करनी चाहिये। मुम्किन है मैं उसे क़त्ल कर दूँ और इस तरह ह़ज़रत ह़म्ज़ा (रज़ि.) के क़त्ल का कुछ बदल हो सके। उन्होंने बयान किया कि फिर मैं भी उसके ख़िलाफ़ जंग के लिये मुसलमानों के साथ निकला। उससे जंग के वाक़ियात सबको मा'लूम हैं। बयान किया कि (मैदाने जंग में) मैंने देखा कि एक शख़्स़ (मुसैलमा) एक दीवार की दराज़ से लगा खड़ा है। जैसे गुन्दमी रंग का कोई ऊँट हो। सर के बाल परेशान थे। बयान किया कि मैंने उस पर भी अपना छोटा नेज़ा फेंककर मारा। नेज़ा उसके सीने पर लगा और शानों को पार कर गया। बयान किया कि इतने में एक स़ह़ाबी अंस़ारी झपटे और तलवार से उसकी खोपड़ी पर मारा। (अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने) बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन फ़ज़्ल ने बयान किया कि फिर मुझे सुलैमान बिन यसार ने ख़बर दी और उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, वो बयान कर रहे थे कि (मुसैलमा के क़त्ल के बाद) एक लड़की ने छत पर खड़ी होकर ऐलान किया कि अमीरुल मोमिनीन को एक काले ग़ुलाम (या'नी ह़ज़रत वहशी) ने क़त्ल कर दिया।

तश्रीह : अरब में मर्दों की तरह औरतों का भी ख़त्ना होता था और जिस तरह मर्दों के ख़त्ने मर्द किया करते थे, औरतों के ख़त्ने औरतें किया करती थीं। ये तरीक़ा जाहिलियत में भी राइज (प्रचलित) था और इस्लाम ने इसे बाक़ी रखा क्योंकि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की जो कुछ सुन्नतें अरबों में बाक़ी रह गई थीं उनमें से एक ये भी थी। चूँकि सबाअ बिन अब्दुल उज़्ज़ा की माँ, औरतों के ख़त्ने किया करती थीं, इसलिये हम्ज़ा (रज़ि.) ने उसे उसकी माँ के पेशे की आर दिलाई। वहशी मुसलमान हो गया और इस्लाम लाने के बाद उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये गये। लेकिन उन्होंने आप (ﷺ) के मुहतरम चचा हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) को क़त्ल किया था, इतनी बेदर्दी से कि जब वो शहीद हो गये तो उनका सीना चाक करके अंदर से दिल निकाला और लाश को बिगाड़ दिया। इसलिये ये एक कुदरती बात थी कि उन्हें देखकर हम्ज़ा (रज़ि.) की ग़मअंगेज़ शहादत आँहज़रत (ﷺ) को याद आ जाती। इसलिये आपने उसको अपने से दूर रहने के लिये फ़र्माया। आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) को सय्यदुश्शुहदा क़रार दिया। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **क़ाल खरज रसूलुल्लाहि (ﷺ) यल्तमिसु हम्ज़त फवजदह बिबत्निल्वादी क़द मुषिल बिही फ़क़ाल लौ ला अन तहज़न सफ़्या बिन्तु अब्दिल्मुत्तलिब व तकूनु सुन्नतन बअदी लतरक्तुहू हत्ता यहशुर मिन बुतूनिस्सबाइ व तवासलुत्तैरू ज़ाद इब्नु हिशाम क़ाल व क़ाल लन असाब बिमिष्लिक अबदन व नज़ल जिब्रइलु फ़क़ाल अन्न हम्ज़त मक्तूबुन फिस्समाइ असदुल्लाहि व असदु रसूलिही व रवल्बज़्ज़ार वत्तब्रानी बिस्नादिन फीहि जुअफुन अन अबी हुरैरत अन्नन्नबिय्य (ﷺ) लम्मा राअ हम्ज़त क़द मुषिल बिही क़ाल रहिमहुल्लाहि अलैक लक़द कुन्तु वसूलन लिर्रहमि फुऊलनलिल्खैरि व लौ ला हज़न मिम्बअदिक लसर्रनी अन अदउकहत्ता तहशुर मिन अज्वाफ़िन शत्ता षुम्म हलफ व हुव मिमकानिही लअम्षलन्न बिसब्ईन मिन्हुम फ़नज़लल्क़ुर्आनु व इन आक़िब्तुम फआक़िबू बिमिष्लि मा उक़िब्तुम** (फ़त्हुल्बारी) या'नी उहुद के मौक़े पर रसूले करीम (ﷺ) हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) की लाश तलाश करने निकले तो उसको एक वादी में पाया जिसका मुषला कर दिया गया था। आपको उसे देखकर इतना ग़म हुआ कि आपने फ़र्माया, अगर ये ख़्याल न होता कि सफ़िया बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब को अपने भाई की लाश का ये हाल देखकर किस क़दर सदमा होगा और ये ख़्याल न होता कि लोग मेरे बाद हर शहीद की लाश के साथ ऐसा ही करना सुन्नत समझ लेंगे तो मैं उस लाश का उसी हालत में छोड़ देता। उसे दरिन्दे और परिन्दे खा जाते और ये क़यामत के दिन उनके पेटों में से निकलकर मैदाने हश्र में हाज़िर होते। इब्ने हिशाम ने ये ज़्यादा किया कि आपने फ़र्माया, ऐ हम्ज़ा! ऐसा बर्ताव जैसा तुम्हारे साथ इन काफ़िरों ने किया है किसी के साथ कभी न हुआ होगा। उसी दरम्यान में हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) नाज़िल हुए और फ़र्माया कि हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) का आसमानों में ये नाम लिख दिया गया है कि ये असदुल्लाह और उसके रसूल के शेर हैं और बज़्ज़ार और तबरानी में है कि आँहज़रत (ﷺ) ने जब अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) की लाश को देखा तो फ़र्माया, ऐ हम्ज़ा! अल्लाह पाक तुम पर रहम करे। तुम बहुत ही सिलारहमी करने वाले, बहुत ही नेक काम करने वाले थे और अगर तुम्हारे बाद ये ग़म बाक़ी रहने का डर न होता तो मेरी ख़ुशी थी कि तुम्हारी लाश इसी हाल में छोड़ देता और तुमको मुख़्तलिफ़ जानवर खा जाते और तुम उनके पेटों से निकलकर मैदान महशर में हाज़िरी देते। फिर आपने उसी जगह क़सम खाई कि मैं कुफ़्फ़ार के सत्तर आदमियों के साथ यही मामला करूँगा। उस मौक़े पर क़ुर्आन मजीद की ये आयत नाज़िल हुई और अगर तुम दुश्मनों को तकलीफ़ देना चाहो तो उसी क़द्र दे सकते हो जितनी तुमको उनकी तरफ़ से दी गई है और अगर सब्र करो और कोई बदला न लो तो सब्र करने वालों के लिये यही बेहतर है। इस आयत के नाज़िल होने पर रसूल करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि या अल्लाह! मैं अब बिलकुल बदला न लूँगा बल्कि सब्र ही करूँगा।

बाब 28 : ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) को जो ज़ख़्म पहुँचे थे उनका बयान

٢٥- باب ما أصاب النبي ﷺ من الجراح يوم أحد

4073. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला का ग़ज़ब उस क़ौम

٤٠٧٣- حدثنا إسحاق بن نصر حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام سمع أبا هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول

पर इंतिहाई सख़्त हुआ जिसने उसके नबी के साथ ये किया। आपका इशारा आगे के दंदाने मुबारक (के टूट जाने) की तरफ़ था। अल्लाह तआला का ग़ज़ब उस शख़्स (उबई बिन ख़लफ़) पर इंतिहाई सख़्त हुआ। जिसे उसके नबी (ﷺ) ने अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किया।

الله ﷺ: ((اشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى قَوْمٍ فَعَلُوا بِنَبِيِّهِ- يُشِيرُ إِلَى رَبَاعِيَتِهِ - اشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى رَجُلٍ يَقْتُلُهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي سَبِيلِ اللهِ)).

4074. मुझसे मुख़ल्लद बिन मालिक ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद उमवी ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआला का उस शख़्स पर इंतिहाई ग़ज़ब नाज़िल हुआ जिसे अल्लाह के नबी (ﷺ) ने क़त्ल किया था। अल्लाह तआला का इंतिहाई ग़ज़ब उस क़ौम पर नाज़िल हुआ जिन्हों ने अल्लाह के नबी (ﷺ) के चेहरा मुबारक को (ग़ज़्वा के मौक़े पर) ख़ून आलूद कर दिया था। (दीगर मक़ाम : 4076)

٤٠٧٤ - حَدَّثَنِي مَخْلَدُ بْنُ مَالِكٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الأُمَوِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: اشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى مَنْ قَتَلَهُ النَّبِيُّ ﷺ فِي سَبِيلِ اللهِ اشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى قَوْمٍ دَمَّوْا وَجْهَ نَبِيِّ اللهِ ﷺ. [طرفه في: ٤٠٧٦].

बाब

باب

4075. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उन्हों ने सहल बिन सअ़द (रज़ि.) से सुना, उनसे नबी करीम (ﷺ) के (ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर होने वाले) ज़ख़्मों के बारे में पूछा गया। तो उन्होने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! मुझे अच्छी तरह याद है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़ख़्मों को किसने धोया था और कौन उन पर पानी डाल रहा था और किस दवा से आपका इलाज किया गया। उन्होंने बयान किया कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की साहबज़ादी ख़ून को धो रही थीं। हज़रत अली (रज़ि.) ढाल से पानी डाल रहे थे। जब हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने देखा कि पानी डालने से ख़ून और ज़्यादा निकला आ रहा है तो उन्होंने चटाई का एक टुकड़ा लेकर जलाया और फिर उसे ज़ख़्म पर चिपका दिया जिससे ख़ून बन्द हो गया। उसी दिन आँहज़रत (ﷺ) के आगे के दंदाने मुबारक शहीद हुए थे। हुज़ूर (ﷺ) का चेहरा मुबारक भी ज़ख़्मी हो गया था और ख़ूद (जंगी टोप या हेलमेट) सरे मुबारक पर टूट गई थी। (राजेअ़ : 243)

٤٠٧٥ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ، أَنَّهُ سَمِعَ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ وَهُوَ يُسْأَلُ عَنْ جُرْحِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: وَاللهِ إِنِّي لأَعْرِفُ مَنْ كَانَ يَغْسِلُ جُرْحَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَمَنْ كَانَ يَسْكُبُ الْمَاءَ، وَبِمَا دُووِيَ. قَالَ: كَانَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ بِنْتُ رَسُولِ اللهِ ﷺ تَغْسِلُهُ وَعَلِيٌّ يَسْكُبُ الْمَاءَ بِالْمِجَنِّ فَلَمَّا رَأَتْ فَاطِمَةُ أَنَّ الْمَاءَ لاَ يَزِيدُ الدَّمَ إِلاَّ كَثْرَةً أَخَذَتْ قِطْعَةً مِنْ حَصِيرٍ فَأَحْرَقَتْهَا وَأَلْصَقَتْهَا فَاسْتَمْسَكَ الدَّمُ وَكُسِرَتْ رَبَاعِيَتُهُ يَوْمَئِذٍ وَجُرِحَ وَجْهُهُ وَكُسِرَتِ الْبَيْضَةُ عَلَى رَأْسِهِ. [راجع: ٢٤٣]

4076. मुझसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे अबू आ़सिम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआ़ला का इंतिहाई ग़ज़ब उस शख़्स पर नाज़िल हुआ जिसे अल्लाह के नबी (ﷺ) ने क़त्ल किया था। अल्लाह तआ़ला का इंतिहाई ग़ज़ब उस शख़्स पर नाज़िल हुआ जिसने (या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुमय्या ला'नतुल्लाह अ़लैहि ने) रसूलुल्लाह (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक को लहूलुहान किया था। (राजेअ़ : 4074)

٤٠٧٦- حدثني عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: اشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى مَنْ قَتَلَهُ نَبِيٌّ وَاشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ عَلَى مَنْ دَمَّى اللهِ وَجْهَ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [راجع: ٤٠٧٤]

तश्रीह : इन तमाम अहादीष़ में जंगे उहुद का इंतिहाई ख़तरनाक पहलू दिखलाया गया है। वो ये कि रसूले करीम (ﷺ) का चेहर-ए-मुबारक ज़ख़्मी हुआ। आपके चार दांत शहीद हुए जिससे आपको इंतिहाई तकलीफ़ हुई। ये हरकत करने वाला एक काफ़िर अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुमय्या था जिस पर क़यामत तक अल्लाह की ला'नत नाज़िल होती रहे। उस जंग में दूसरा हादष़ा ये हुआ कि ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) के दस्ते मुबारक से उबई बिन ख़लफ़ मक्का का मशहूर काफ़िर मारा गया। हालाँकि आप अपने दस्ते मुबारक से किसी को मारना नहीं चाहते थे मगर ये उबई बिन ख़लफ़ की इंतिहाई बदबख़्ती की दलील है कि वो ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) के हाथ से जहन्नम-रसीद हुआ।

बाब 26 : वो लोग जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ को अ़मलन क़ुबूल किया (या'नी इर्शादे नबवी ﷺ की ता'मील के लिये फ़ौरन तैयार हो गये)

٢٦- باب ﴿الَّذِينَ اسْتَجَابُوا للهِ وَالرَّسُولِ﴾

4077. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू मुआ़विया ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि (आयत) वो लोग जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहा। उन्होंने उ़र्वा से इस आयत के बारे में कहा, मेरे भांजे! तुम्हारे वालिद ज़ुबैर (रज़ि.) और (नाना) अबूबक्र (रज़ि.) भी उन्हीं में से थे। उहुद की लड़ाई में रसूलुल्लाह (ﷺ) को जो कुछ तकलीफ़ पहुँचनी थी जब वो पहुँची और मुश्रिकीन वापस जाने लगे तो आँहज़रत (ﷺ) को इसका ख़तरा हुआ कि कहीं वो फिर लौटकर हमला न करें। इसलिये आपने फ़र्माया कि उनका पीछा करने कौन कौन जाएँगे। उसी वक़्त सत्तर सहाबा (रज़ि.) तैयार हो गये। रावी ने बयान किया कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) और हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) भी उन्हीं में से थे।

٤٠٧٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ﴿الَّذِينَ اسْتَجَابُوا للهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ﴾ قَالَتْ لِعُرْوَةَ: يَا ابْنَ أُخْتِي كَانَ أَبُوكَ مِنْهُمُ الزُّبَيْرُ وَأَبُو بَكْرٍ لَمَّا أَصَابَ رَسُولَ اللهِ ﷺ مَا أَصَابَ يَوْمَ أُحُدٍ وَانْصَرَفَ الْمُشْرِكُونَ خَافَ أَنْ يَرْجِعُوا. قَالَ: ((مَنْ يَذْهَبُ فِي إِثْرِهِمْ)) فَانْتَدَبَ مِنْهُمْ سَبْعُونَ رَجُلاً قَالَ: كَانَ فِيهِمْ أَبُو بَكْرٍ وَالزُّبَيْرُ.

तश्रीह : ये तआ़क़ुब जंगे उहुद के ख़ात्मे पर इसलिये किया गया कि मुश्रिकीन ये न समझें कि उहुद के नुक़्सान ने मुसलमानों

को निढाल कर दिया है और अगर उन पर दोबारा ह़मला किया गया तो वो कामयाब हो जाएँगे। मुसलमानों ने षाबित कर दिखाया कि वो उहुद के अ़ज़ीम नुक़्सानात के बाद भी कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में हर वक़्त तैयार हैं। मुसलमानों की तारीख़ के हर दौर में यही शान रही है कि ह़ादषों से मायूस होकर मैदान से नहीं हटे बल्कि ह़ालात का इस्तिक़्लाल से मुक़ाबला किया और आख़िर कामयाबी उन ही को मिली। आज भी दुनिय-ए-इस्लाम का यही ह़ाल है मगर मायूसी कुफ़्र है।

बाब 27 : जिन मुसलमानों ने ग़ज़्व-ए-उहुद में शहादत पाई उनका बयान

٢٧- باب مَنْ قُتِلَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ يَوْمَ أُحُدٍ.

उन ही में ह़ज़रत ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब, अबू ह़ुज़ैफ़ा अल यमान, अनस बिन नज़्र और मुस़अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) भी थे।

مِنْهُمْ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ وَالْيَمَانُ وَأَنَسُ بْنُ النَّضْرِ وَمُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ

4078. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे मुआ़ज़ बिन हिशाम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया कि अरब के तमाम क़बीलों में कोई क़बीला अंस़ार के मुक़ाबले में इस इ़ज़्ज़त को ह़ासिल नहीं कर सका कि उसके सबसे ज़्यादा आदमी शहीद हुए और वो क़बीला क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा इ़ज़्ज़त के साथ उठेगा। ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने हमसे बयान किया कि ग़ज़्व-ए-उहुद में क़बील-ए-अंस़ार के सत्तर आदमी शहीद हुए। बीरे मऊ़ना के ह़ादषे में उसके सत्तर आदमी शहीद हुए और यमामा की लड़ाई में उसके सत्तर आदमी शहीद हुए। रावी ने बयान किया कि बीरे मऊ़ना का वाक़िया रसूलल्लाह (ﷺ) के वक़्त मे पेश आया था और यमामा की जंग अबूबक्र (रज़ि.) के अ़हदे ख़िलाफ़त में हुई थी जो मुसैलमा कज़्ज़ाब से लड़ी गई थी।

٤٠٧٨- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ: مَا نَعْلَمُ حَيًّا مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ أَكْثَرَ شَهِيدًا أَعَزَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الأَنْصَارِ. قَالَ قَتَادَةُ : وَحَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّهُ قُتِلَ مِنْهُمْ يَوْمَ أُحُدٍ سَبْعُونَ وَيَوْمَ بِئْرِ مَعُونَةَ سَبْعُونَ وَيَوْمَ الْيَمَامَةِ سَبْعُونَ قَالَ: وَكَانَ بِئْرُ مَعُونَةَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَ يَوْمُ الْيَمَامَةِ عَلَى عَهْدِ أَبِي بَكْرٍ يَوْمَ مُسَيْلِمَةَ الْكَذَّابِ.

तश्रीह : बीरे मऊ़ना में सत्तर आदमी वो शहीद हुए जो सब अंस़ारी थी और क़ुर्आन मजीद के क़ारी थे। जो मह़ज़ तब्लीग़ी ख़िदमात के लिये निकले थे मगर धोख़े से कुफ़्फ़ार ने उनको शहीद कर डाला था। आगे ह़दीष में उनकी तफ़्सील आ रही है और आगे वाली अह़ादीष़ में भी कुछ उनके कवाइफ़ मज़्कूर हैं ।

4079. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन कअ़ब बिन मालिक ने और उन्हें ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उहुद के शहीदों को एक ही कपड़े में दो-दो को कफ़न दिया और आप दरयाफ़्त करते कि उनमें क़ुर्आन का आ़लिम सबसे ज़्यादा कौन है? जब किसी एक की त़रफ़ इशारा करके आपको बताया जाता तो क़ब्र में आप उन्हीं को आगे फ़र्माते। आपने फ़र्माया कि क़यामत के दिन मैं इन

٤٠٧٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَجْمَعُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ مِنْ قَتْلَى أُحُدٍ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ ثُمَّ يَقُولُ: ((أَيُّهُمْ

أَكْثَرُ أَخْذًا لِلْقُرْآنِ))؟ فَإِذَا أُشِيرَ لَهُ إِلَى أَحَدٍ قَدَّمَهُ فِي اللَّحْدِ، وَقَالَ: أَنَا شَهِيدٌ عَلَى هَؤُلاَءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَمَرَ بِدَفْنِهِمْ بِدِمَائِهِمْ وَلَمْ يُصَلِّ عَلَيْهِمْ وَلَمْ يُغَسَّلُوا. [راجع: ١٣٤٣]

सब पर गवाह रहूँगा। फिर आपने तमाम शुह्दा को ख़ून समेत दफ़न करने का हुक्म फ़र्मा दिया और उनकी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी और न उन्हें ग़ुस्ल दिया गया।

(राजेअ़ : 1343)

٤٠٨٠ - وَقَالَ أَبُو الْوَلِيدِ : عَنْ شُعْبَةَ عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرًا، قَالَ: لَمَّا قُتِلَ أَبِي جَعَلْتُ أَبْكِي وَأَكْشِفُ الثَّوْبَ عَنْ وَجْهِهِ فَجَعَلَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ يَنْهَوْنِي وَالنَّبِيُّ ﷺ لَمْ يَنْهَ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَبْكِيهِ - أَوْ مَا تَبْكِيهِ - مَا زَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ تُظِلُّهُ بِأَجْنِحَتِهَا)) حَتَّى رُفِعَ. [راجع: ١٢٤٤]

4080. और अबुल वलीद ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे इब्नुल मुंकदिर ने, उन्होंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मेरे वालिद हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) शहीद कर दिये गये तो मैं रोने लगा और बार-बार उनके चेहरे से कपड़ा हटाता। सहाबा मुझे रोकते थे लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नहीं रोका। (फ़ातिमा बिन्ते अ़मर रज़ि. हज़रत अ़ब्दुल्लाह की बहन भी रोने लगीं) आँहुज़ूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि रोओ मत। (आँहुज़ूर ﷺ ने ला तब्कीही फ़र्माया, या मा तब्कीही, रावी को शक है) फ़रिश्ते बराबर उनकी लाश पर अपने परों का साया किये हुए थे। यहाँ तक कि उनको उठा लिया गया। (राजेअ़ : 1244)

तश्रीह : जंगे उहुद के शहीदों के फ़ज़ाइल व मनाक़िब का क्या कहना है। ये इस्लाम के वो नामवर फ़र्ज़न्द हैं जिन्होंने अपने ख़ून से शजरे इस्लाम को परवान चढ़ाया। इस्लामी तारीख़ क़यामत तक उन पर नाज़ाँ रहेगी। उनमें से दो दो को मिलाकर एक एक क़ब्र में दफ़न किया गया।

हाजत नहीं है तेरे शहीदों को ग़ुस्ल की।

उनको बग़ैर ग़ुस्ल के कफ़न दफ़न किया गया ताकि क़यामत के दिन ये मुहब्बते इलाही के कश्तगान उसी हालत में अ़दालते आ़लिया में हाज़िर हों। सच है

बनाकर दंद ख़ुश रस्मे बख़ाक व ख़ून ग़लतीदन, अल्लाह रहमत कन्द ईं आशिक़ाना पाक तीनत रा।

मैं इंतिहाई ख़ुशी महसूस करता हूँ कि मुझको उ़म्रे अ़ज़ीज़ में तीन बार इन शुह्दा के गंज शहीदाँ पर दुआ-ए-मसनूना पढ़ने के लिये हाज़िरी का मौक़ा मिला। हर हाज़िरी पर वाक़ियाते माज़ी (गुज़रे हुए दौर के क़िस्से) याद करके दिल भर आया और आज भी जबकि ये लाइनें लिख रहा हूँ आँखों से आँसुओं का सैलाब रवाँ है। अल्लाह पाक क़यामत के दिन उन क़तरों को गुनाहों की नारे-दोज़ख़ बुझाने के लिये दरिया का दर्जा अ़ता फ़र्माए। **वमा ज़ालिक अ़लल्लाह बि अ़ज़ीज़।**

٤٠٨١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ جَدِّهِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أُرَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ

4081. हमसे मुहम्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने, उनसे उनके दादा अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने ख़्वाब में देखा कि मैंने तलवार को हिलाया और उससे उसकी धार टूट गई। उसकी

((رَأَيْتُ فِي رُؤْيَايَ أَنِّي هَزَزْتُ سَيْفًا فَانْقَطَعَ صَدْرُهُ، فَإِذَا هُوَ مَا أُصِيبَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ أُحُدٍ، ثُمَّ هَزَزْتُهُ أُخْرَى فَعَادَ أَحْسَنَ مَا كَانَ، فَإِذَا هُوَ مَا جَاءَ بِهِ اللهُ عَنِ الْفَتْحِ، وَاجْتِمَاعِ الْمُؤْمِنِينَ وَرَأَيْتُ فِيهَا بَقَرًا وَاللهُ خَيْرٌ فَإِذَا هُمُ الْمُؤْمِنُونَ يَوْمَ أُحُدٍ)). [راجع: ٣٦٢٢]

ता'बीर मुसलमानों की उस नुक़्सान की शक्ल में ज़ाहिर हुई जो ग़ज़्व-ए-उहुद में उठाना पड़ा था। फिर मैंने दोबारा उस तलवार को हिलाया, तो फिर वो उससे भी ज़्यादा उम्दह हो गई जैसी पहले थी, उसकी ता'बीर अल्लाह तआला ने फ़तह और मुसलमानों के फिर नये सिरे से इज्तिमाअ की सूरत में ज़ाहिर की। मैंने उसी ख़्वाब में एक गाय देखी थी (जो ज़िब्ह हो रही थी) और अल्लाह तआला के तमाम काम ख़ैरो-बरकत लिये हुए होते हैं। उसकी ता'बीर वो मुसलमान थे (जो) उहुद की लड़ाई में (शहीद हुए)। (राजेअ : 3622)

बज़ाहिर जंगे उहुद का हादषा बहुत संगीन था मगर बफ़ज़्लिही तआला बाद में मुसलमान जल्द ही सम्भल गये और इस्लामी ताक़त फिर मुज्तमअ (संगठित) हो गई। गोया उहुद का हादषा मुसलमानों की आइन्दा ज़िन्दगी के लिये नफ़ा बख़्श षाबित हुआ। उहुद के अलमबरदार हज़रात ख़ालिद और हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) जैसे हज़रात दाख़िले इस्लाम हो गये। सच है **वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल्काफ़िरून.** (अस् सफ़्फ़ : 8)

٤٠٨٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ خَبَّابٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : هَاجَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَنَحْنُ نَبْتَغِي وَجْهَ اللهِ فَوَجَبَ أَجْرُنَا عَلَى اللهِ فَمِنَّا مَنْ مَضَى أَوْ ذَهَبَ لَمْ يَأْكُلْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا كَانَ مِنْهُمْ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ وَلَمْ يَتْرُكْ إِلاَّ نَمِرَةً كُنَّا إِذَا غَطَّيْنَا بِهَا رَأْسَهُ خَرَجَتْ رِجْلاَهُ وَإِذَا غُطِّيَ بِهَا رِجْلَيْهِ خَرَجَ رَأْسُهُ، فَقَالَ لَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((غَطُّوا بِهَا رَأْسَهُ وَاجْعَلُوا عَلَى رِجْلَيْهِ الإِذْخِرَ - أَوْ قَالَ - الْقُوا عَلَى رِجْلَيْهِ مِنَ الإِذْخِرِ)) وَمِنَّا مَنْ أَيْنَعَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ فَهُوَ يَهْدِبُهَا.

[راجع: ١٢٧٦]

4082. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ ने और उनसे ख़ब्बाब (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने नबी करीम (ﷺ) के साथ हिजरत की और हमारा मक़्सद उससे सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ामन्दी हासिल करना था। ज़रूरी था कि अल्लाह तआला हमे उस पर षवाब देता। अब कुछ लोग तो वो थे जो अल्लाह से जा मिले और (दुनिया में) उन्होंने अपना कोई षवाब नहीं देखा। मुस़अब बिन उमैर (रज़ि.) भी उन्हीं में से थे। ग़ज़्व-ए-उहुद में उन्होंने शहादत पाई और एक चादर के सिवा और कोई चीज़ उन्होंने नहीं छोड़ी। उस चादर से (कफ़न देते वक़्त) जब हम उनका सर छुपाते तो पैर खुल जाते और पैर छुपाते तो सर खुल जाता था। आपने हमसे फ़र्माया कि चादर से सर छुपा दो और पैर पर इज़्ख़र घास डाल दो। या आपने यूँ फ़र्माया कि (अल्क़ौ अला रिज्लैहि मिनल इज़्ख़िर) (या'नी उनके पैरों पर इज़्ख़र घास डाल दो। दोनों जुम्लों का मतलब एक ही है) और हममें कुछ वो हैं जिन्हें उनके इस अमल का फल (इसी दुनिया में) दे दिया गया और वो उससे ख़ूब फ़ायदा उठा रहे हैं।

(राजेअ : 1276)

तश्रीह : फ़ायदा उठाने वाले वो सहाबा किराम (रज़ि.) जो बाद में अक़्तारे-अर्ज़ (सत्ता) के वारिष होकर वहाँ के ताज व तख़्त के मालिक हुए और अल्लाह ने उनको दुनिया में भी ख़ूब दिया और आख़िरत में भी अज्रे अज़ीम के हक़दार

हुए और जो लोग पहले ही शहीद हो गये, उनका सारा ष़वाब आख़िरत के लिये जमा हुआ। दुनिया में उन्होंने इस्लामी तरक़्क़ी का दौर नहीं देखा। उन ही में ह़ज़रत मुस्अ़ब बिन उमैर (रज़ि.) जैसे नौजवान इस्लाम के सच्चे फ़िदाई भी थे जिनका ज़िक्र यहाँ किया गया है। ये क़ुरैशी नौजवान इस्लाम के अव्वलीन मुबल्लिग़ थे जो हिजरते नबवी से पहले ही मदीना आकर इशाअ़ते इस्लाम का अज्रे अ़ज़ीम ह़ासिल कर रहे थे। उनके तफ़्सीली ह़ालात बार-बार मुत़ालआ़ के क़ाबिल हैं जो किसी दूसरी जगह तफ़्सील से लिखे गये हैं।

बाब 28 : इर्शादे नबवी (ﷺ) कि उहुद पहाड़ हमसे मुहब्बत रखता है

٢٨- باب أُحُدٌ يُحِبُّنَا

क़ाल अ़ब्बास बिन सहल ने रावी अबू हुमैद से नबी करीम (ﷺ) का ये इर्शाद रिवायत किया है।

قَالَ عَبَّاسُ بْنُ سَهْلٍ : عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

4083. हमसे नस्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें क़ुर्रह बिन ख़ालिद ने, उन्हे क़तादा ने, और उन्होंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उहुद पहाड़ हमसे मुहब्बत रखता है और हम उससे मुहब्बत रखते हैं।

٤٠٨٣- حدثني نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ قُرَّةَ بْنِ خَالِدٍ، عَنْ قَتَادَةَ سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ.

4084. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें मुत्तलिब के ग़ुलाम अ़म्र बिन अबी अ़म्र ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को (ख़ैबर से वापस होते हुए) उहुद पहाड़ दिखाई दियातो आपने फ़र्माया, ये पहाड़ हमसे मुहब्बत रखता है और हम इससे मुहब्बत रखते हैं। ऐ अल्लाह! इब्राहीम (अ) ने मक्का को हुर्मत वाला शहर क़रार दिया था और मैं उन दो पथरीले मैदानों के दरम्यान इलाक़े (मदीना मुनव्वरा) को हुर्मत वाला शहर क़रार देता हूँ। (राजेअ़ : 381)

٤٠٨٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَمْرٍو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ طَلَعَ لَهُ أُحُدٌ فَقَالَ: ((هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ، اللَّهُمَّ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَرَّمَ مَكَّةَ، وَإِنِّي حَرَّمْتُ الْمَدِينَةَ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا)). [راجع: ٣٧١]

रसूले करीम (ﷺ) ने हिजरत के बाद मदीना मुनव्वरा का अपना ऐसा वत़न क़रार दे लिया था कि उसकी मुहब्बत आपके रग-रग में समा गई थी। वहाँ की हर चीज़ से मुहब्बत का होना आपका फ़ित़री तक़ाज़ा बन गया था। इसी बिना पर पहाड़ उहुद से भी आपको मुहब्बत थी जिसका यहाँ इज़्हार फ़र्माया। वरषा में मदीना मुनव्वरा से उल्फ़त व मुहब्बत हर मुसलमान को मिली है। ह़दीष़ से मदीना मुनव्वरा का मक्का के समान ह़रम होना भी षाबित हुआ। **मगर कुछ लोग हुर्मते मदीना के क़ाइल नहीं हैं और वो ऐसी अह़ादीष़ की मुख़्तलिफ़ तावील करते हैं, जो स़ह़ीह़ नहीं। मदीना भी अब हर मुसलमान के लिये मक्का के समान ह़रमे मुह़तरम है।** अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को बार बार इस मुक़द्दस शहर में ह़ाज़िरी की सआ़दत अ़त़ा फ़र्माए, आमीन!

4085. मुझसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने, उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे ह़ज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने कि

٤٠٨٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ يَوْمًا

नबी करीम (ﷺ) एक दिन बाहर तशरीफ़ लाए और शुह्दा-ए-उहुद पर नमाज़े जनाज़ा अदा की, जैसे मुर्दों पर अदा की जाती है। फिर आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि मैं तुम्हारे आगे जाऊँगा, मैं तुम्हारे ह़क़ में गवाह रहूँगा, मैं अब भी अपने हौज़ (कौष़र) को देख रहा हूँ। मुझे दुनिया के ख़ज़ानों की कुँजी अ़ता फ़र्माई गई है या (आपने यूँ फ़र्माया) मफ़ातीहुल अर्ज़ या'नी ज़मीन की चाबियाँ दी गई हैं। (दोनों जुम्लों का मतलब एक ही है) अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे बारे में उससे नहीं डरता कि तुम मेरे बाद शिर्क करने लगोगे बल्कि मुझे इसका डर है कि तुम दुनिया के लिये हिर्स़ करने लगोगे। (राजेअ़ : 381)

فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أُحُدٍ صَلاَتَهُ عَلَى الْمَيِّتِ ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: ((إِنِّي فَرَطٌ لَكُمْ وَأَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ، وَإِنِّي لأَنْظُرُ إِلَى حَوْضِي الآنَ، وَإِنِّي أُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ خَزَائِنِ الأَرْضِ – أَوْ مَفَاتِيحَ الأَرْضِ – وَإِنِّي وَاللهِ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا بَعْدِي، وَلَكِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنَافَسُوا فِيهَا)). [راجع: ١٣٧١]

रिवायात में किसी न किसी त़रह़ से उहुद पहाड़ का ज़िक्र है। बाब से यही वजहे मुत़ाबक़त है। रसूले करीम (ﷺ) ने मक्का से आने के बाद मदीना मुनव्वरा को अपना दाइमी वत़न क़रार दे लिया था और इस शहर से आपको इस क़द्र मुह़ब्बत हो गई थी कि यहाँ का ज़र्रा ज़र्रा आपको मह़बूब था। इसी मुह़ब्बत से उहुद पहाड़ से भी मुह़ब्बत एक फ़ित़री चीज़ थी। आज भी शहर हर मुसलमान के लिये जितना प्यारा है वो हर मुसलमान जानता है। ह़दीष़ से क़ब्रिस्तान में जाकर दोबारा नमाज़े जनाज़ा पढ़ना भी ष़ाबित हुआ। कुछ लोगों ने उसे आपके साथ मख़्सूस क़रार दिया है। कुछ लोग कहते हैं कि नमाज़ से यहाँ दुआ-ए-मग़्फ़िरत मुराद है। मगर ज़ाहिर ह़दीष़ के अल्फ़ाज़ उन तावीलात के ख़िलाफ़ हैं, वल्लाहु आलम।

बाब 29 : ग़ज़्व-ए-रजीअ़ का बयान

٢٩- باب غَزْوَةِ الرَّجِيعِ،

और रअ़ल व ज़क्वान और बीरे मऊ़ना के ग़ज़वा का बयान और अ़ज़ल और क़ारा का क़िस्सा और आ़सिम बिन ष़ाबित और ख़ुबैब और उनके साथियों का क़िस्सा। इब्ने इस्ह़ाक़ ने बयान किया कि हमसे आ़सिम बिन उ़मर ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-रजीअ़ ग़ज़्व-ए-उहुद के बाद पेश आया।

وَرِعْلٍ، وَذَكْوَانَ، وَبِئْرِ مَعُونَةَ، وَحَدِيثِ عَضَلٍ، وَالْقَارَةِ، وَعَاصِمِ بْنِ ثَابِتٍ، وَخُبَيْبٍ وَأَصْحَابِهِ قَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ : حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عُمَرَ أَنَّهَا بَعْدَ أُحُدٍ.

रजीअ़ एक मक़ाम का नाम है। हुज़ैल की बस्तियों में से ये ग़ज़्वा स़फ़र 4 हिजरी में जंगे उहुद के बाद हुआ था। बीरे मऊ़ना और अ़स्फ़ान के दरम्यान एक मुक़ाम है। वहाँ क़ारी स़ह़ाबा को रअ़ल और ज़क्वान क़बीलों ने धोखे से शहीद कर दिया था। अ़ज़्ल और क़ारा भी अ़रब के दो क़बीलों के नाम हैं। उनका क़िस्सा ग़ज़्व-ए-रजीअ़ में हुआ।

4086. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर बिन राशिद ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अ़म्र बिन अबी सुफ़यान ष़क़फ़ी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जासूसी के लिये एक जमाअ़त (मक्का, क़ुरैश की ख़बर लाने के लिये) भेजी और उसका अमीर आ़सिम बिन ष़ाबित (रज़ि.) को बनाया, जो आ़सिम बिन उ़मर बिन ख़त्ताब के नाना हैं। ये जमाअ़त रवाना हुई और जब अ़स्फ़ान और मक्का के दरम्यान पहुँची तो क़बीला हुज़ैल

٤٠٨٦- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي سُفْيَانَ الثَّقَفِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَرِيَّةً عَيْنًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَاصِمَ بْنَ ثَابِتٍ وَهُوَ جَدُّ عَاصِمِ بْنِ عُمَرَ بْنِ

لخطّاب فانْطلقوا حتّى إذا كان بيْن غسفان ومكّة ذكِرُوا لِحيٍّ مِنْ هُذَيْلٍ يقال لهمْ بنو لحيان فتبعوهمْ بقريبٍ منْ مائة رام فاقْتصُّوا آثارَهُمْ، حتّى أتَوْا منزلا نزلوهُ فوجدوا فِيهِ نوى تمْرٍ تزوّدوهُ من المدينة. فقالُوا: هذا تمْرُ يثْرِبَ فتبعُوا آثارَهُمْ حتّى لحِقُوهُمْ فلمّا انْتهى عاصِمٌ وأصْحابُهُ لجَؤُوا إلى فدْفد، وجاء القوْمُ فأحاطُوا بِهِمْ، فقالُوا: لكُمُ العهْدُ والمِيثاقُ: إنْ نزلْتُمْ إليْنا أنْ لا نقْتُلَ مِنْكُمْ رَجُلاً. فقالَ عاصِمٌ: أمّا أنا فلا أنْزِلُ فِي ذِمّةِ كافِرٍ. اللّهُمّ أخْبِرْ عنّا نبِيّكَ، فقاتلُوهُمْ حتّى قتلُوا عاصِما فِي سبْعةِ نفرٍ بالنّبْلِ، وبقِيَ خُبيْبٌ وزيْدٌ ورَجُلٌ آخرُ، فأعْطوْهُمُ العهْدَ والمِيثاقَ، فلمّا أعْطوْهُمُ العهْدَ والمِيثاقَ، نزَلُوا إليْهِمْ فلمّا اسْتمْكنُوا مِنْهُمْ حلُّوا أوْتارَ قسِيِّهِم فرَبطُوهُمْ بِها، فقالَ الرّجُلُ الثّالِثُ الّذِي معهُما: هذا أوّلُ الغدْرِ فأبَى أنْ يصْحبَهُمْ فجرّرُوهُ وعالجُوهُ على أنْ يصْحبَهُمْ فلمْ يفْعلْ فقتلُوهُ وانْطلقُوا بِخُبيْبٍ وزيْدٍ حتّى باعُوهُما بِمكّة فاشْترى خُبيْبًا بنُو الحارِثِ بْنِ عامِرِ بْنِ نوْفلٍ وكانَ خُبيْبٌ هُوَ قتلَ الحارِثَ يوْمَ بدْرٍ فمكثَ عِنْدهُمْ أسِيرًا حتّى إذا أجْمعُوا قتْلهُ اسْتعارَ مُوسى مِنْ

के एक क़बीले को जिसे बनू लह्यान कहा जाता था, उनका इल्म हो गया और क़बीला के तक़रीबन सौ तीरंदाज़ों ने उनका पीछा किया और उनके निशानाते क़दम को तलाश करते हुए चले। आख़िर एक ऐसी जगह पहुँचने में कामयाब हो गये जहाँ स़हाबा की उस जमाअ़त ने पड़ाव किया था। वहाँ उन खजूरों की गुठलियाँ मिलीं जो स़हाबा मदीना से लाए थे। क़बीला वालों ने कहा कि ये तो यस़्रिब की खजूर (की गुठली है) अब उन्होंने फिर तलाश शुरू की और स़हाबा को पा लिया। आ़स़िम (रज़ि.) और उनके साथियों ने जब ये सूरतेहाल देखी तो स़हाबा की उस जमाअ़त ने एक टीले पर चढ़कर पनाह ली। क़बीले वालों ने वहाँ पहुँचकर टीला को अपने घेरे में ले लिया और स़हाबा से कहा कि हम तुम्हें यक़ीन दिलाते हैं और अ़हद करते हैं कि अगर तुमने हथियार डाल दिये तो हम तुम में से किसी को भी क़त्ल नहीं करेंगे। उस पर आ़स़िम (रज़ि.) बोले कि मैं तो किसी काफ़िर की ह़िफ़ाज़त व अमन में अपने को किसी सूरत में भी नहीं दे सकता। ऐ अल्लाह! हमारे साथ पेश आने वाले ह़ालात की ख़बर अपने नबी को पहुँचा दे। चुनाँचे उन स़हाबा ने उनसे क़िताल किया और आ़स़िम अपने छ: साथियों के साथ उनके तीरों से शहीद हो गये। ख़ुबैब, ज़ैद और एक और स़हाबी उनके हमलों से अभी महफ़ूज़ थे। क़बीले वालों ने फ़िर ह़िफ़ाज़त व अमान का यक़ीन दिलाया। ये ह़ज़रात उनकी यक़ीन देहानी पर उतर आए। फिर जब क़बीला वालों ने उन्हें पूरी त़रह अपने क़ब्ज़े में ले लिया तो उनकी कमान की तांत उतारकर उन स़हाबा को उन्हीं से बाँध दिया। तीसरे स़हाबी जो ख़ुबैब और ज़ैद (रज़ि.) के साथ थे, उन्होंने कहा कि ये तुम्हारी पहली ग़द्दारी है। उन्होंने उनके साथ जाने से इंकार कर दिया। पहले तो क़बीले वालों ने उन्हें घसीटा और अपने साथ ले जाने के लिये ज़ोर लगाते रहे लेकिन जब वो किसी त़रह तैयार न हुए तो उन्हें वहीं क़त्ल कर दिया और ख़ुबैब और ज़ैद को साथ लेकर रवाना हुए, फिर उन्हें मक्का में लाकर बेच दिया। ख़ुबैब (रज़ि.) को तो हारिस़ बिन आ़मिर बिन नौफ़िल के बेटों ने ख़रीद लिया क्योंकि ख़ुबैब (रज़ि.) ने बद्र की जंग में हारिस़ को क़त्ल किया था। वो उनके यहाँ

بعض بنَات الْحَارِث لِيَسْتَحِدَّ بهَا فأعارته قَالَتْ : فغفلت عَنْ صَبِيٍّ لي فدرج إليه حتى أتاهُ فوضعه على فخذه فلمّا رأيته فزعت فزعة عرف ذاك مني وفي يده الموسى، فقال: أتخشين أن أقتله؟ ما كنتُ لأفعل ذلك إن شاء الله تعالى. وكانت تقول: ما رأيت أسيرا قط خيرا من خبيب، لقد رأيته يأكل من قطف عنب وما بمكة يومئذ ثمرة، وإنه لموثق في الحديد وما كان إلا رزق رزقه الله. فخرجوا به من الحرم ليقتلوه فقال: دعوني أصلي ركعتين، ثم انصرف إليهم فقال : لو لا أن تروا أن ما بي جزع من الموت لزدت فكان أول من سن الركعتين عند القتل هو، ثم قال: اللهم أحصهم عددا ثم قال :

ما أبالي حين أقتل مسلما
على أي شق كان لله مصرعي
وذلك في ذات الإله وإن يشأ
يبارك على أوصال شلو ممزع

ثم قام إليه عقبة بن الحارث فقتله، وبعثت قريش إلى عاصم ليؤتوا بشيء من جسده يعرفونه وكان عاصم قتل عظيما من عظمائهم يوم بدر فبعث الله عليه مثل الظلة من الدبر، فحمته من رسلهم فلم يقدروا منه على شيء.

[راجع: ٣٠٤٥]

कुछ दिनों तक क़ैदी की हैषियत से रहे। जिस वक़्त उन सबका ख़ुबैब (रज़ि.) के क़त्ल पर इत्तिफ़ाक़ हो चुका तो इत्तिफ़ाक़ से उन्हीं दिनों हारिष़ की एक लड़की (ज़ैनब) से उन्होंने मूए ज़ेरे नाफ़ साफ़ करने के लिये उस्तरा मांगा और उन्होंने उनको उस्तरा भी दे दिया था। उनका बयान था कि मेरा लड़का मेरी ग़फ़लत में ख़ुबैब (रज़ि.) के पास चला गया। उन्होंने उसे अपनी रान पर बिठा लिया। मैंने जो उसे इस हालत में देखा तो बहुत घबराई। उन्होंने मेरी घबराहट को जान लिया, उस्तरा उनके हाथ में था। उन्होंने मुझसे कहा, क्या तुम्हें इसका ख़तरा है कि मैं इस बच्चे को क़त्ल कर दूँगा? इंशाअल्लाह! मैं हर्गिज़ ऐसा नहीं कर सकता। उनका बयान था कि ख़ुबैब (रज़ि.) से बेहतर क़ैदी मैंने कभी नहीं देखा था। मैंने उन्हें अंगूर का ख़ोशा खाते हुए देखा हालाँकि उस वक़्त मक्का में किसी तरह का फल मौजूद नहीं था जबकि वो जंजीरों में जकड़े हुए भी थे, तो वो अल्लाह की भेजी हुई रोज़ी थी। फिर हारिष़ के बेटे क़त्ल करने के लिये उन्हें लेकर हरम के हुदूद से बाहर गये। ख़ुबैब (रज़ि.) ने उनसे फ़र्माया मुझे दो रकअत नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दो (उन्होंने इजाज़त दे दी और) जब वो नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो उनसे फ़र्माया कि अगर तुम ये ख़्याल न करने लगते कि मैं मौत से घबरा गया हूँ तो और ज़्यादा नमाज़ पढ़ता। ख़ुबैब (रज़ि.) ही पहले वो शख़्स हैं जिनसे क़त्ल से पहले दो रकअत नमाज़ का तरीक़ा चला है। उसके बाद उन्होंने उनके लिये बद्दुआ की, ऐ अल्लाह! इन्हें एक एक करके हलाक कर दे और ये अश्आर पढ़े, जबकि मैं मुसलमान होने की हालत में क़त्ल किया जा रहा हूँ तो मुझे इसकी कोई परवाह नहीं कि किस पहलू पर अल्लाह की राह में मुझे क़त्ल किया जाएगा। ये सब कुछ अल्लाह की राह में है और अगर वो चाहेगा तो जिस्म को एक एक कटे हुए टुकड़े में बरकत देगा। फिर उक़्बा बिन हारिष़ ने खड़े होकर उन्हें शहीद कर दिया और क़ुरैश ने आ़सिम (रज़ि.) की लाश के लिये आदमी भेजे ताकि उनके जिस्म का कोई भी हिस्सा लाएँ जिससे उन्हें पहचाना जा सके। आ़सिम (रज़ि.) ने क़ुरैश के एक बहुत बड़े सरदार को बद्र की लड़ाई में क़त्ल किया था लेकिन अल्लाह तआ़ला ने भिड़ों

की एक फौज को बादल की त़रह उनके ऊपर भेजा और उन भिड़ों ने उनकी लाश को क़ुरैश के आदमियों से मह़फ़ूज़ रखा और क़ुरैश के भेजे हुए ये लोग (उनके पास न फटक सके) कुछ न कर सके।

(राजेअ : 3045)

٤٠٨٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو سَمِعَ جَابِرًا يَقُولُ : الَّذِي قَتَلَ خُبَيْبًا هُوَ أَبُو سَرْوَعَةَ.

4087. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़मर बिन दीनार ने, उन्होंने जाबिर से सुना कि ख़ुबैब (रज़ि.) को अबू सरूअ़ा (उ़क़्बा बिन ह़ारिष़) ने क़त्ल किया था।

٤٠٨٨- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبْعِينَ رَجُلاً لِحَاجَةٍ يُقَالُ لَهُمْ: الْقُرَّاءُ، فَعَرَضَ لَهُمْ حَيَّانِ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ رِعْلٌ وَذَكْوَانُ عِنْدَ بِئْرٍ يُقَالُ لَهَا: بِئْرُ مَعُونَةَ فَقَالَ الْقَوْمُ: وَاللهِ مَا إِيَّاكُمْ أَرَدْنَا إِنَّمَا نَحْنُ مُجْتَازُونَ فِي حَاجَةٍ لِلنَّبِيِّ ﷺ، فَقَتَلُوهُمْ فَدَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ شَهْرًا فِي صَلاَةِ الْغَدَاةِ وَذَلِكَ بَدْءُ الْقُنُوتِ، وَمَا كُنَّا نَقْنُتُ. قَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ: وَسَأَلَ رَجُلٌ أَنَسًا عَنِ الْقُنُوتِ أَبَعْدَ الرُّكُوعِ أَوْ عِنْدَ فَرَاغٍ مِنَ الْقِرَاءَةِ؟ قَالَ: لاَ بَلْ عِنْدَ فَرَاغٍ مِنَ الْقِرَاءَةِ.

[راجع: ١٠٠١]

4088. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सत्तर स़ह़ाबा की एक जमाअ़त तब्लीग़े इस्लाम के लिये भेजी थी। उन्हें क़ारी कहा जाता था। रास्ते में बनू सुलैम के दो क़बीले रअ़ल और ज़क्वान ने एक कुँएँ के क़रीब उनके साथ मुज़ाहमत की। ये कुँआ बीरे मऊ़ना के नाम से मशहूर था। स़ह़ाबा ने उनसे कहा कि अल्लाह की क़सम! हम तुम्हारे ख़िलाफ़ यहाँ लड़ने नहीं आए हैं बल्कि हमें तो रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ से एक ज़रूरत पर मामूर किया गया है लेकिन कुफ़्फ़ार के उन क़बीलों ने तमाम स़ह़ाबा को शहीद कर दिया। इस वाक़िये के बाद ह़ुज़ूर (ﷺ) सुबह़ की नमाज़ में उनके लिये एक महीना तक बद्दुआ करते रहे। उसी दिन से दुआ़-ए-क़ुनूत की इब्तिदा हुई, वरना इससे पहले हम दुआ़-ए-क़ुनूत नहीं पढ़ा करते थे और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन स़ुहैब ने बयान किया कि एक स़ाह़ब (आ़स़िम अह़वल) ने अनस (रज़ि.) से दुआ़-ए-क़ुनूत के बारे में पूछा कि ये दुआ़ रुकूअ़ के बाद पढ़ी जाएगी या क़िराते क़ुर्आन से फ़ारिग़ होने के बाद? (रुकूअ़ से पहले) अनस (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नहीं बल्कि क़िरअते क़ुर्आन से फ़ारिग़ होने के बाद। (रुकूअ़ से पहले)। (राजेअ : 1001)

तश्रीह़ : आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन सत्तार क़ारियों को इसलिये भेजा था कि क़बाईले रअ़ल और ज़क्वान और उ़स़ैया और बनू लह़यान के लोगों ने आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आकर कहा था कि हम मुसलमान हो गये हैं, हमारी मदद के लिये कुछ मुसलमान भेजिए। ये भी मरवी है कि अबू बराअ आ़मिर बिन मालिक नामी एक शख़्स आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आया और कहने लगा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप चन्द मुसलमानों को नज्द की त़रफ़ भेज दें तो मुझे उम्मीद है कि नज्द

वाले मुसलमान हो जाएँगे। आपने फ़र्माया मैं डरता हूँ नज्द वाले उनको हलाक न कर दें। वो शख़्स कहने लगा कि मैं उन लोगों को अपनी पनाह में रखूँगा। उस वक़्त आपने ये सत्तर सहाबी रवाना किये। सिर्फ़ एक सहाबी कअ़ब बिन ज़ैद (रज़ि.) ज़ख़्मी होकर बच निकले थे। जिन्होंने मदीना आकर ख़बर दी थी।

4089. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रुकूअ़ के बाद एक महीना तक क़ुनूत पढ़ी जिसमे आप अ़रब के चन्द क़बाईल (रअ़ल और ज़क्वान वग़ैरह) के लिये बद्दुआ़ करते थे। (राजेअ़ : 1001)

٤٠٨٩- حدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ، قَالَ: قَنَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ شَهْرًا بَعْدَ الرُّكُوعِ يَدْعُو عَلَى أَحْيَاءٍ مِنَ الْعَرَبِ. [راجع: ١٠٠١]

फ़ुक़हा की इस्तिलाह में इस क़िस्म की क़ुनूत को क़ुनूते नाज़ला कहा गया है और ऐसे मौक़ों पर क़ुनूते नाज़ला आज भी पढ़ना मस्नून है। मगर सद अफ़सोस कि मुसलमान बहुत सी परेशानियों के बावजूद क़ुनूते नाज़ला से ग़ाफ़िल हैं।

4090. मुझसे अ़ब्दुल आ़ला बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी उ़रूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रअ़ल, ज़क्वान, उ़सैया और बनू लह्यान ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपने दुश्मनों के मुक़ाबिल मदद चाही, आँहज़रत (ﷺ) ने सत्तर अंसारी सहाबा को उनकी कुमुक के लिये रवाना किया। हम उन हज़रात को क़ारी कहा करते थे। अपनी ज़िन्दगी में मआश के लिए दिन में लकड़ियाँ जमा करते थे और रात में नमाज़ पढ़ा करते थे। जब ये हज़रात बीरे मऊ़ना पर पहुँचे तो उन क़बीले वालों ने उन्हें धोखा दिया और उन्हें शहीद कर दिया। जब हुज़ूर (ﷺ) को उसकी ख़बर मिली तो आपने सुबह की नमाज़ में एक महीने तक बद्दुआ़ की। अ़रब के उन्हीं चन्द क़बीले रअ़ल, ज़क्वान, उ़सैया और बनू लह्यान के लिये। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उन सहाबा के बारे में क़ुर्आन में (आयत नाज़िल हुई और) हम उसकी तिलावत करते थे। फिर वो आयत मन्सूख़ हो गई (आयत का तर्जुमा) हमारी तरफ़ से हमारी क़ौम (मुसलमानों) को ख़बर पहुँचा दो कि हम अपने रब के पास आ गये हैं। हमारा रब हमसे राज़ी है और हमें भी (अपनी नेअ़मतों से) उसने ख़ुश रखा है, और क़तादा से रिवायत है उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक महीने तक सुबह की नमाज़ में, अ़रब के चन्द क़बाईल रअ़ल, ज़क्वान, उ़सैया और बनू लह्यान के लिये बद्दुआ़ की थी। ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात (इमाम बुख़ारी के शैख़ ने) ये इज़ाफ़ा किया कि हमसे

٤٠٩٠- حدَّثَنِي عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رِعْلاً، ذَكْوَانَ، وعُصَيَّةَ، وَبَنِي لِحْيَانَ، اسْتَمَدُّوا رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى عَدُوٍّ فَأَمَدَّهُمْ بِسَبْعِينَ مِنَ الأَنْصَارِ كُنَّا نُسَمِّيهِمُ الْقُرَّاءَ فِي زَمَانِهِمْ كَانُوا يَحْتَطِبُونَ بِالنَّهَارِ، وَيُصَلُّونَ بِاللَّيْلِ، حَتَّى كَانُوا بِبِئْرِ مَعُونَةَ قَتَلُوهُمْ وَغَدَرُوا بِهِمْ، فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ ذَلِكَ فَقَنَتَ شَهْرًا يَدْعُو فِي الصُّبْحِ عَلَى أَحْيَاءٍ مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ عَلَى رِعْلٍ، وَذَكْوَانَ، وعُصَيَّةَ، وَبَنِي لِحْيَانَ، قَالَ أَنَسٌ : فَقَرَأْنَا فِيهِمْ قُرْآنًا ثُمَّ إِنَّ ذَلِكَ رُفِعَ بَلِّغُوا عَنَّا قَوْمَنَا أَنَّا لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا. وَعَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ حَدَّثَهُ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ قَنَتَ شَهْرًا فِي صَلاَةِ الصُّبْحِ يَدْعُو عَلَى أَحْيَاءٍ مِنْ أَحْيَاءِ الْعَرَبِ عَلَى رِعْلٍ، وَذَكْوَانَ، وَعُصَيَّةَ، وَبَنِي

यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अरूबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने कि हमसे अनस (रज़ि.) ने ये सत्तर सहाबा क़बीला अन्सार से थे और उन्हें बीरे मऊना के पास शहीद कर दिया गया था।

(राजेअ : 1001)

لِحْيَانَ. زَادَ خَلِيفَةُ حَدَّثَنَا ابْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسٌ أَنَّ أُولَئِكَ السَّبْعِينَ مِنَ الأَنْصَارِ قُتِلُوا بِبِئْرِ مَعُونَةَ قُرْآنًا كِتَابًا نَحْوَهُ.

[راجع : ١٠٠١]

इस हदीष़ में नस्ख़े-क़रअना से मुराद किताबुल्लाह है, जैसा कि अब्दुल आला की रिवायत में है। (उन क़ारियों की एक ख़ास़ सिफ़त ये बयान की गई कि ये हज़रात दिन में रिज़्क़े हलाल के लिये लकड़ियाँ बेचा करते थे। आज के क़ारियों जैसे न थे जो फ़न्ने क़िरात को पेट भरने का ज़रिया बनाए हुए हैं और जगह जगह क़िरात पढ़ पढ़कर माँगने के लिये हाथ फैलाते रहते हैं। इल्ला माशाअल्लाह

4091. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उनके मामू, उम्मे सुलैम (अनस की वालिदा) के भाई को भी उन सत्तर सवारों के साथ भेजा था। उसकी वजह ये हुई थी कि मुश्रिकों के सरदार आमिर बिन तुफ़ैल ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सामने (शरारत और तकब्बुर की राह से) तीन सूरतें रखी थीं। उसने कहा कि या तो ये कीजिए कि देहाती आबादी पर आपकी हुकूमत हो और शहरी आबादी पर मेरी हो या फिर मुझे आपका जानशीन मुक़र्रर किया जाए वरना फिर मैं हज़ारों ग़त्फ़ानियों को लेकर आप पर चढ़ाई करूँगा। (इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने उसके लिये बद्दुआ की) और उम्मे फ़लाँ के घर में वो मर्ज़े ताऊन (प्लेग) में गिरफ़्तार हुआ। कहने लगा कि इस फ़लाँ की औरत के घर के जवान ऊँट की तरह मुझे भी ग़दूद निकल आया है। मेरा घोड़ा लाओ। चुनाँचे वो अपने घोड़े की पीठ पर ही मर गया। बहरहाल उम्मे सुलैम के भाई हराम बिन मिल्हान एक और सहाबी जो लंगड़े थे और तीसरे सहाबी जिनका ता'ल्लुक़ बनी फ़लाँ से था, आगे बढ़े। हराम ने (अपने दोनों साथियों से बनू आमिर तक पहुँचकर पहले ही) कह दिया कि तुम दोनों मेरे क़रीब ही कहीं रहना। मैं उनके पास पहले जाता हूँ अगर उन्होंने मुझे अमन दे दिया तो तुम लोग क़रीब ही हो और अगर मुझे उन्होंने क़त्ल कर दिया तो आप हज़रात अपने साथियों के पास चले जाएँ। चुनाँचे क़बीला में पहुँचकर उन्होंने उनसे कहा, क्या तुम मुझे अमान देते हो कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) का पैग़ाम तुम्हे पहुँचा दूँ? फिर वो हुज़ूर

٤٠٩١- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، قَالَ : حَدَّثَنِي أَنَسٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ خَالَهُ أَخٌ لأُمِّ سُلَيْمٍ فِي سَبْعِينَ رَاكِبًا، وَكَانَ رَئِيسَ الْمُشْرِكِينَ عَامِرُ بْنُ الطُّفَيْلِ خَيَّرَ بَيْنَ ثَلاَثِ خِصَالٍ، فَقَالَ: يَكُونُ لَكَ أَهْلُ السَّهْلِ وَلِي أَهْلُ الْمَدَرِ، أَوْ أَكُونُ خَلِيفَتَكَ أَوْ أَغْزُوكَ بِأَهْلِ غَطَفَانَ بِأَلْفٍ وَأَلْفٍ فَطُعِنَ عَامِرٌ فِي بَيْتِ أُمِّ فُلاَنٍ فَقَالَ : غُدَّةٌ كَغُدَّةِ الْبَكْرِ فِي بَيْتِ امْرَأَةٍ مِنْ آلِ فُلاَنٍ، ائْتُونِي بِفَرَسِي فَمَاتَ عَلَى ظَهْرِ فَرَسِهِ فَانْطَلَقَ حَرَامٌ أَخُو أُمِّ سُلَيْمٍ وَهْوَ رَجُلٌ أَعْرَجُ، وَرَجُلٌ مِنْ بَنِي فُلاَنٍ قَالَ : كُونَا قَرِيبًا حَتَّى آتِيَهُمْ فَإِنْ آمَنُونِي كُنْتُمْ قَرِيبًا، وَإِنْ قَتَلُونِي أَتَيْتُمْ أَصْحَابَكُمْ. فَقَالَ: أَتُؤْمِنُونِي أُبَلِّغْ رِسَالَةَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَجَعَلَ يُحَدِّثُهُمْ وَأَوْمَؤُوا إِلَى رَجُلٍ فَأَتَاهُ مِنْ خَلْفِهِ فَطَعَنَهُ. قَالَ

(ﷺ) का पैग़ाम उन्हें पहुँचाने लगे तो क़बीला वालों ने एक शख़्स को इशारा किया और उसने पीछे से आकर उन पर नेज़ा से वार किया। हम्माम ने बयान किया, मेरा ख़्याल है कि नेज़ा आर–पार हो गया था। हराम की ज़ुबान से उस वक़्त निकला, अल्लाहु अकबर, कअ़बा के रब की क़सम! मैंने तो अपनी मुराद हासिल कर ली। उसके बाद उनमें से एक सहाबी को भी मुश्रिकीन ने पकड़ लिया (जो हराम रज़ि. के साथ थे और उन्हें भी शहीद कर दिया) फिर इस मुहिम के तमाम सहाबा को शहीद कर दिया। सिर्फ़ एक लंगड़े सहाबी बच निकलने में कामयाब हो गये वो पहाड़ की चोटी पर चढ़ गये थे। उन शुह्दा की शान में अल्लाह तआ़ला ने आयत नाज़िल फ़र्माई, बाद में वो आयत मन्सूख़ हो गई (आयत ये थी) अना क़द लक़ीना रब्बना फ़रज़िया अ़न्ना व अरज़ाना आँहज़रत (ﷺ) ने उन क़बाईल रअ़ल, ज़क्वान, उसैया और बनू लहयान के लिये जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की थी तीस दिन तक सुबह की नमाज़ में बद्दुआ की। (राजेअ़ : 1001)

هَمَّامٌ : أَحْسِبُهُ حَتَّى أَنْفَذَهُ بِالرُّمْحِ، قَالَ: اللهُ أَكْبَرُ فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ، فَلُحِقَ الرَّجُلُ فَقُتِلُوا كُلُّهُمْ غَيْرَ الأَعْرَجِ، كَانَ فِي رَأْسِ جَبَلٍ، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْنَا ثُمَّ كَانَ مِنَ الْمَنْسُوخِ إِنَّا قَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَأَرْضَانَا فَدَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ ثَلاَثِينَ صَبَاحًا عَلَى رِعْلٍ، وَذَكْوَانَ، وَبَنِي لِحْيَانَ، وَعُصَيَّةَ الَّذِينَ عَصَوُا اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ .

[راجع: ١٠٠١]

उन क़बाईल का जुर्म इतना संगीन था कि उनके लिये बद्दुआ करना ज़रूरी था। अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल की बद्दुआ क़ुबूल की और ये क़बीले तबाह हो गये। इल्ला माशाअल्लाह

4092. मुझसे हब्बान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उनको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे षुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अनस (रज़ि.) ने बयान किया और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना वो बयान करते थे कि जब हराम बिन मिल्हान को जो उनके मामू थे बीरे मऊना के मौक़े पर ज़ख़्मी किया गया तो ज़ख़्म को हाथ में लेकर उन्होंने यूँ अपने चेहरा और सर पर लगा लिया और कहा, का'बा के रब की क़सम! मेरी मुराद हासिल हो गई।

(राजेअ़ : 1001)

٤٠٩٢- حَدَّثَنِي حِبَّانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ قَالَ : حَدَّثَنِي ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَنَسٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: لَمَّا طُعِنَ حَرَامُ بْنُ مِلْحَانَ وَكَانَ خَالَهُ يَوْمَ بِئْرِ مَعُونَةَ قَالَ: بِالدَّمِ هَكَذَا، فَنَضَحَهُ عَلَى وَجْهِهِ وَرَأْسِهِ ثُمَّ قَالَ: فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ.

[راجع: ١٠٠١]

तश्रीह : एक हक़ीक़ी मोमिन की दिली मुराद यही होती है कि वो अल्लाह के रास्ते में अपनी जान क़ुर्बान कर सके। अगर ये जज़्बा नहीं तो ईमान की ख़ैर मनानी चाहिये। हज़रत हराम बिन मिल्हान (रज़ि.) ने शहादत के वक़्त इस हक़ीक़त का इज़्हार फ़र्माया। इर्शादे बारी है **इन्नल्लाहश्तरा मिनल् मोमिनीन अन्फ़ुसहुम व अम्वालहुम बि अन्न लहुमुल जन्ना** (अत् तौबा : 111) बेशक अल्लाह तआ़ला ईमानवालों से उनकी जानों और मालों के बदले जन्नत का सौदा कर चुका है।

4093. हमसे उबैदुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मक्का में मुश्रिक लोग अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को सख़्त तकलीफ़ देने लगे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) से अबूबक्र (रज़ि.) ने भी इजाज़त चाही। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अभी यहीं ठहरे रहो। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आप भी (अल्लाह तआला से) अपने लिये हिजरत की इजाज़त के उम्मीदवार हैं? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ मुझे उसकी उम्मीद है। आइशा (रज़ि.) कहती हैं कि फिर अबूबक्र (रजि) इंतिज़ार करने लगे। आख़िर हुज़ूर (ﷺ) एक दिन ज़ुहर के वक़्त (हमारे घर) तशरीफ़ लाए और अबूबक्र (रज़ि.) को पुकारा और फ़र्माया कि तख़्लिया कर लो। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि सिर्फ़ मेरी दोनों लड़कियाँ यहाँ मौजूद हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया तुमको मा'लूम है मुझे भी हिजरत की इजाज़त दे दी गई है। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मुझे भी साथ चलने की सआदत हासिल होगी? आपने फ़र्माया कि हाँ तुम भी मेरे साथ चलोगे। अबूबक्र (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे पास दो ऊँटनियाँ हैं और मैंने उन्हें हिजरत ही की निय्यत से तैयार कर रखा है। चुनाँचे उन्होंने एक ऊँटनी जिसका नाम अल्जदआ था हुज़ूर (ﷺ) को दे दी। दोनों बुज़ुर्ग सवार होकर रवाना हुए और ये ग़ारे ष़ौर पहाड़ी का था उसमें जाकर दोनों पोशीदा हो गये। आमिर बिन फ़ुहेरा जो अब्दुल्लाह बिन तुफ़ैल बिन सख़बरा, आइशा (रज़ि.) के वालिदा की तरफ़ से भाई थे, अबूबक्र (रज़ि.) की एक दूध देने वाली ऊँटनी थी तो आमिर बिन फ़ुहैरा सुबह व शाम (आम मवेशियों के साथ) उसे चराने ले जाते और रात के आख़िरी हिस्से में हुज़ूर (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) के पास आते थे। (ग़ारे ष़ोर मे उन हज़रात की ख़ुराक उसी का दूध थी) और फिर उसे चराने के लिये लेकर रवाना हो जाते। इस तरह कोई चरवाहा उस पर आगाह न हो सका। फिर जब हुज़ूर (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) ग़ार से निकलकर रवाना हुए तो पीछे पीछे आमिर बिन फ़ुहैरा भी पहुँचे थे आख़िर दोनों हज़रात मदीना पहुँच गये। बीरे मऊना के हादषा में

٤٠٩٣- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: اسْتَأْذَنَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ فِي الْخُرُوجِ حِينَ اشْتَدَّ عَلَيْهِ الأَذَى فَقَالَ لَهُ: أَقِمْ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَتَطْمَعُ أَنْ يُؤْذَنَ لَكَ؟ فَكَانَ يَقُولُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((إِنِّي لأَرْجُو ذَلِكَ)) قَالَتْ: فَانْتَظَرَهُ أَبُو بَكْرٍ فَأَتَاهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ ظُهْرًا فَنَادَاهُ فَقَالَ: ((أَخْرِجْ مَنْ عِنْدَكَ)) فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّمَا هُمَا ابْنَتَايَ فَقَالَ: ((أَشَعَرْتَ أَنَّهُ قَدْ أُذِنَ لِي فِي الْخُرُوجِ؟)) فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ الصُّحْبَةَ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((الصُّحْبَةَ)) قَالَ يَا رَسُولَ اللهِ عِنْدِي نَاقَتَانِ قَدْ كُنْتُ أَعْدَدْتُهُمَا لِلْخُرُوجِ فَأَعْطَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِحْدَاهُمَا وَهِيَ الْجَدْعَاءُ فَرَكِبَا فَانْطَلَقَا حَتَّى أَتَيَا الْغَارَ وَهُوَ بِثَوْرٍ فَتَوَارَيَا فِيهِ فَكَانَ عَامِرُ بْنُ فُهَيْرَةَ غُلاَمًا لِعَبْدِ اللهِ بْنِ الطُّفَيْلِ بْنِ سَخْبَرَةَ أَخُو عَائِشَةَ لأُمِّهَا وَكَانَتْ لأَبِي بَكْرٍ مِنْحَةٌ، فَكَانَ يَرُوحُ بِهَا وَيَغْدُو عَلَيْهِمْ وَيُصْبِحُ فَيَدَّلِجُ إِلَيْهِمَا، ثُمَّ يَسْرَحُ فَلاَ يَفْطُنُ بِهِ أَحَدٌ مِنَ الرِّعَاءِ. فَلَمَّا

خرج خرج معهما يعقبانه حتى قدما المدينة فقتل عامر بن فهيرة يوم بئر معونة. وعن أبي أسامة قال: قال لي هشام بن عروة فأخبرني أبي قال: لما قتل الذين ببئر معونة وأسر عمرو بن أمية الضمري قال له عامر بن الطفيل: من هذا؟ فأشار إلى قتيل، فقال له عمرو بن أمية: هذا عامر بن فهيرة فقال: لقد رأيته بعد ما قتل رفع إلى السماء حتى إني لأنظر إلى السماء بينه وبين الأرض، ثم وضع فأتى النبي صلى الله عليه وسلم خبرهم فنعاهم فقال: ((إن أصحابكم قد أصيبوا وإنهم قد سألوا ربهم. فقالوا: ربنا أخبر عنا إخواننا بما رضينا عنك ورضيت عنا فأخبرهم عنهم)). وأصيب يومئذ فيهم عروة بن أسماء بن الصلت، فسمي عروة به ومنذر به عمرو سمي به منذرا.

[راجع: ٤٧٦]

आमिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) भी शहीद हो गये थे। अबू उसामा से रिवायत है, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि जब बीरे मऊना के हादषे में क़ारी सहाबा शहीद किये गये और अम्र बिन उमय्या ज़मीरी (रज़ि.) कैद किये गये तो आमिर बिन तुफ़ैल ने उनसे पूछा कि ये कौन है? उन्हों ने एक लाश की तरफ़ इशारा किया। अम्र बिन उमय्या (रज़ि.) ने उन्हें बताया कि ये आमिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) हैं। इस पर आमिर बिन तुफ़ैल (रज़ि.) ने कहा कि मैंने देखा कि शहीद हो जाने के बाद उनकी लाश आसमान की तरफ़ उठा ली गई। मैंने ऊपर नज़र उठाई तो लाश आसमान ज़मीन के दरम्यान लटक रही थी। फिर वो ज़मीन पर रख दी गई। उन शुहदा के बारे में नबी करीम (ﷺ) को हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने अल्लाह के हुक्म से बता दिया था। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी शहादत की ख़बर सहाबा को दी और फ़र्माया कि ये तुम्हारे साथी शहीद कर दिये गये हैं और शहादत के बाद उन्होंने अपने रब के हुज़ूर में अर्ज़ की कि ऐ हमारे रब! हमारे (मुसलमान) भाइयों को उसकी ख़बर दे दे कि हम तेरे पास पहुँचकर किस तरह ख़ुश हैं और तू भी हमसे राज़ी है। चुनाँचे अल्लाह तआला ने (क़ुर्आन मजीद के ज़रिये) मुसलमानों को उसकी ख़बर दे दी। इसी हादषे में उर्वा इब्ने अस्मा बिन सुल्त (रज़ि.) भी शहीद हुए थे (फिर ज़ुबैर रज़ि. के दूसरे साहबज़ादे का नाम) मुंज़िर उन्हीं के नाम पर रखा गया था।

(राजेअ : 476)

तश्रीह : इस हदीष में हिजरते नबवी का बयान है। शुरू में आपका ग़ारे षौर में क़याम करना मस्लिहते इलाही के तहत था। अल्लाह तआला ने आपकी वहाँ भी कामिल हिफ़ाज़त फ़र्माई और वहाँ रिज़्क़ भी पहुँचाया। उस मौक़े पर हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) ने दोनों बुज़ुर्गों की अहम ख़िदमात अंजाम दीं कि ग़ार में ऊँटनी के ताज़ा-ताज़ा दूध से दोनों बुज़ुर्गों को सैराब रखा। हक़ीक़ी जानिषारी इसी का नाम है। यही आमिर बिन फ़ुहैरा (रज़ि.) हैं जो सत्तर क़ारियों के क़ाफ़िले में शहीद किये गये। अल्लाह तआला ने उनकी लाश का ये इकराम किया कि वो आसमान की तरफ़ उठा ली गई फिर ज़मीन पर रख दी गई। शुहदाए किराम के ये मर्तबे हैं जो हक़ीक़ी शुह्दा को मिलते हैं। सच है **व ला तक़ूलु लिमंय्युक्तलु फी सबीलिल्लाहि अम्वातुन बल अहयाउन व ला किल्ला तश्उरून** (अल बक़र : 154)

4094. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको सुलैमान तैमी ने ख़बर दी, उन्हें अबू मिज्लज़ (लाहक़ बिन हुमैद) ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक महीने तक रुकूअ़ के बाद दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ी। इस दुआ-ए-क़ुनूत में आपने रअ़ल और ज़क्वान नामी क़बीलों के लिये बद्दुआ की। आप फ़र्माते थे कि क़बील-ए-उ़सय्या ने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़र्मानी की।

(राजेअ़ : 1001)

٤٠٩٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَنَتَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ الرُّكُوعِ شَهْرًا، يَدْعُو عَلَى رِعْلٍ، وَذَكْوَانَ وَيَقُولُ ((عُصَيَّةُ عَصَتِ اللهَ وَرَسُولَهُ)).

[راجع: ١٠٠١]

4095. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उन लोगों के लिये जिन्होंने आपके मुअ़ज़्ज़ अस्हाब (क़ारियों) को बीरे मऊना में शहीद कर दिया था, तीस दिन तक सुबह की नमाज़ में बद्दुआ की थी। आप क़बाईले रअ़ल, बनू लहयान, और उ़सय्या के लिये उन नमाज़ों में बद्दुआ करते थे, जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की नाफ़र्मानी की थी। हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (ﷺ) पर उन्हीं अस्हाब के बारे में जो बीरे मऊना में शहीद कर दिये गये थे, क़ुर्आन मजीद की आयत नाज़िल की। हम उस आयत की तिलावत किया करते थे लेकिन बाद में वो आयत मन्सूख़ हो गई (इस आयत का तर्जुमा ये है) हमारी क़ौम को ख़बर पहुँचा दो कि हम अपने रब से आ मिले हैं। हमारा रब हमसे राज़ी है और हम भी इससे राज़ी हैं।

(राजेअ़ : 1001)

٤٠٩٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ دَعَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الَّذِينَ قَتَلُوا يَعْنِي أَصْحَابَهُ بِبِئْرِ مَعُونَةَ ثَلاَثِينَ صَبَاحًا حِينَ يَدْعُو عَلَى رِعْلٍ وَلِحْيَانَ، وَعُصَيَّةَ عَصَتِ اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَنَسٌ: فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى لِنَبِيِّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الَّذِينَ قُتِلُوا أَصْحَابِ بِئْرِ مَعُونَةَ قُرْآنًا قَرَأْنَاهُ حَتَّى نُسِخَ بَلِّغُوا قَوْمَنَا فَقَدْ لَقِينَا رَبَّنَا فَرَضِيَ عَنَّا وَرَضِينَا عَنْهُ.

[راجع: ١٠٠١]

4096. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे आ़सिम बिन अह्वल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से नमाज़ में क़ुनूत के बारे में पूछा कि क़ुनूत रुकूअ़ से पहले है या रुकूअ़ के बाद? उन्होंने कहा कि रुकूअ़ से पहले। मैंने अ़र्ज़ किया कि फ़लाँ स़ाहब ने आप ही का नाम लेकर मुझे बताया कि क़ुनूत रुकूअ़ के बाद है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने

٤٠٩٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ الأَحْوَلُ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ الْقُنُوتِ فِي الصَّلاَةِ، فَقَالَ: نَعَمْ. فَقُلْتُ: كَانَ قَبْلَ الرُّكُوعِ أَوْ بَعْدَهُ؟ قَالَ: قَبْلَهُ، قُلْتُ: فَإِنَّ فُلاَنًا أَخْبَرَنِي عَنْكَ أَنَّكَ

कहा कि उन्होंने ग़लत कहा। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रुकूअ के बाद सिर्फ़ एक महीने तक क़ुनूत पढ़ी। आपने सहाबा (रज़ि.) की एक जमाअत को जो क़ारियों के नाम से मशहूर थी और जो सत्तर की ता'दाद में थे, मुश्रिकीन के कुछ क़बीलों के यहाँ भेजा था। मुश्रिकीन के उन क़बीलों ने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को उन सहाबा के बारे में पहले हिफ़्ज़ व अमान का यक़ीन दिलाया था लेकिन बाद में ये लोग सहाबा (रज़ि.) की उस जमाअत पर ग़ालिब आ गये (और ग़द्दारी की और उन्हें शहीद कर दिया) रसूले करीम (ﷺ) ने उसी मौक़े पर रुकूअ के बाद एक महीने तक क़ुनूत पढ़ी थी और उसमें उन मुश्रिकीन के लिये बद्दुआ की थी।

(राजेअ : 1001)

قُلْتَ بَعْدَهُ؟. قَالَ: كَذَبَ إِنَّمَا قَنَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَعْدَ الرُّكُوعِ شَهْرًا، أَنَّهُ كَانَ بَعَثَ نَاسًا يُقَالُ لَهُمُ الْقُرَّاءُ، وَهُمْ سَبْعُونَ رَجُلاً إِلَى نَاسٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَبَيْنَهُمْ وَبَيْنَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَهْدٌ قِبَلَهُمْ فَظَهَرَ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ كَانَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَهْدٌ فَقَنَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَعْدَ الرُّكُوعِ شَهْرًا يَدْعُو عَلَيْهِمْ.

[راجع: ١٠٠١]

तश्रीह : इस हादषे में एक शख़्स आमिर बिन तुफ़ैल का बड़ा हाथ था। पहले उसने बनू आमिर क़बीले को मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काया। उन्होंने उन मुसलमानों से लड़ना मंज़ूर न किया, फिर उस मर्दूद ने रअल और उसय्या और ज़क्वान को बनू सुलैम के क़बीले में से था, बहकाया हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) से और बनू सुलैम से अहद था मगर आमिर के कहने से उन लोगों ने अहदशिकनी की और क़ारियों को नाहक़ मार डाला। कुछ ने कहा आँहज़रत (ﷺ) और बनू आमिर से अहद था। जब आमिर बिन तुफ़ैल ने बनू आमिर को उन मुसलमानों से लड़ने के लिये बुलाया तो उन्होंने अहद शिकनी मंज़ूर न की। आख़िर उसने रअल और उसय्या और ज़क्वान के क़बीलों को भड़काया जिनसे अहद न था उन्होंने आमिर के बहकाने से उनको क़त्ल किया।

बाब 30 : ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ का बयान जिसका दूसरा नाम ग़ज़्व-ए-अहज़ाब है। मूसा बिन उक़्बा ने कहा कि ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ शव्वाल 4 हिजरी में हुआ था

٣٠- باب غَزْوَةِ الْخَنْدَقِ وَهِيَ الأَحْزَابُ

قَالَ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ : كَانَتْ فِي شَوَّالٍ سَنَةَ أَرْبَعٍ.

तश्रीह : अहज़ाब हिज़्ब की जमा है। हिज़्ब गिरोह को कहते हैं। इस जंग में अबू सुफ़यान अरब के बहुत से गिरोहों को बहकाकर मुसलमानों पर चढ़ा लाया था इसलिये उसका नाम जंगे अहज़ाब हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ने सलमान फ़ारसी (रज़ि.) की राय से मदीना के चारों ओर ख़ंदक़ खुदवाई। उसके खोदने में आप बज़ाते ख़ास भी शरीक रहे। काफ़िरों का लश्कर दस हज़ार का था और मुसलमान कुल तीन हज़ार थे। बीस दिन तक काफ़िर मुसलमानों को घेरे रहे। आख़िर अल्लाह तआला ने उन पर आँधी भेजी, वो भाग खड़े हुए। अबू सुफ़यान को नदामत हुई। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अब से काफ़िर हम पर चढ़ाई नहीं करेंगे बल्कि हम ही उन पर चढ़ाई करेंगे। फ़त्हुल बारी में है कि जंगे ख़ंदक़ 5 हिजरी में हुई। 4 हिजरी एक और हिसाब से है जिनकी तफ़्सील फ़त्हुल बारी में देखी जा सकती है।

4097. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह उमरी ने, कहा कि मुझे नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के सामने अपने आपको उन्होंने ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर पेश किया, (ताकि लड़ने वालों में उन्हें भी भर्ती कर

٤٠٩٧- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

لیا जाए) उस वक़्त वो चौदह साल के थे तो हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त नहीं दी। लेकिन ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर जब उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) के सामने अपने को पेश किया तो हुज़ूर (ﷺ) ने उनको मंज़ूर फ़र्मा लिया। उस वक़्त वो पन्द्रह साल की उम्र में थे।

(राजेअ : 1264)

عَرَضَهُ يَوْمَ أُحُدٍ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعَ عَشْرَةَ سَنَةً فَلَمْ يُجِزْهُ وَعَرَضَهُ يَوْمَ الْخَنْدَقِ، وَهُوَ ابْنُ خَمْسَ عَشْرَةَ سَنَةً فَأَجَازَهُ.

[راجع: ١٢٦٤]

मा'लूम हुआ कि पन्द्रह साल की उम्र में मर्द बालिग़ तसव्वुर किया जाता है और उस पर शरई अहकाम पूरे तौर पर लागू हो जाते हैं।

4098. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ख़ंदक़ में थे। स़हाबा (रज़ि.) ख़ंदक़ खोद रहे थे और मिट्टी हम अपने काँधों पर उठा उठाकर डाल रहे थे। उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने दुआ की, ऐ अल्लाह! आख़िरत की ज़िन्दगी ही बस आराम की ज़िन्दगी है। पस तू अंस़ार और मुहाजिरीन की मग़फ़िरत फ़र्मा।

٤٠٩٨ - حَدَّثَنِي قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي الْخَنْدَقِ وَهُمْ يَحْفِرُونَ وَنَحْنُ نَنْقُلُ التُّرَابَ عَلَى أَكْتَادِنَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ:

اللَّهُمَّ لاَ عَيْشَ إِلاَّ عَيْشُ الآخِرَةْ

فَاغْفِرْ لِلْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ

आपने अंस़ार और मुहाजिरीन की मौजूदा तकलीफ़ों को देखा तो उनकी तसल्ली के लिये फ़र्माया कि अस़ल आराम आख़िरत है। दुनिया की तकालीफ़ पर स़ब्र करना मोमिन के लिये ज़रूरी है। जंगे ख़ंदक़ सख़्त तकलीफ़ के ज़माने में सामने आई थी।

4099. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे मुआ़विया बिन अ़म्र ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ फ़ुज़ारी ने बयान किया, उनसे हुमैद त़वील ने, उन्हों ने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ंदक़ की त़रफ़ तशरीफ़ ले गये। आपने मुलाह़िज़ा फ़र्माया कि मुहाजिरीन और अंस़ार सर्दी में सुबह सवेरे ही ख़ंदक़ खोद रहे हैं। उनके पास गुलाम नहीं थे कि उनके बजाय वो उस काम को अंजाम देते। जब हुज़ूर (ﷺ) ने उनकी इस मशक़्क़त और भूख को देखा तो दुआ़ की।

ऐ अल्लाह! ज़िन्दगी तो बस आख़िरत ही की ज़िन्दगी है। पस अंस़ार और मुहाजिरीन की मग़फ़िरत फ़र्मा।

स़हाबा (रज़ि.) ने उसके जवाब में कहा।

हम ही हैं जिन्होंने मुहम्मद (ﷺ) से जिहाद करने के लिये बेअ़त की है। जब तक हमारी जान में जान है।

٤٠٩٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو. حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ حُمَيْدٍ سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى الْخَنْدَقِ فَإِذَا الْمُهَاجِرُونَ وَالأَنْصَارُ يَحْفِرُونَ فِي غَدَاةٍ بَارِدَةٍ فَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ عَبِيدٌ يَعْمَلُونَ ذَلِكَ لَهُمْ. فَلَمَّا رَأَى مَا بِهِمْ مِنَ النَّصَبِ وَالْجُوعِ قَالَ:

اللَّهُمَّ إِنَّ الْعَيْشَ عَيْشُ الآخِرَةْ

فَاغْفِرْ لِلأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةْ

فَقَالُوا : مُجِيبِينَ لَهُ :

نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدَا

عَلَى الْجِهَادِ مَا بَقِينَا أَبَدَا

(राजेअ : 2834)

[راجع: ٢٨٣٤]

4100. हमसे अबू मअ़मर अ़ब्दुल्लाह बिन उमर अ़क़्दी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना के गिर्द मुहाजिरीन व अंसार ख़ंदक़ खोदने में मस़रूफ़ हो गये और मिट्टी अपनी पीठ पर उठाने लगे। उस वक़्त वो ये शे'र पढ़ रहे थे।

हमने ही मुह़म्मद (ﷺ) से इस्लाम पर बेअ़त की है जब तक हमारी जान में जान है।

उन्होंने बयान किया कि इस पर नबी करीम (ﷺ) ने दुआ़ की।

ऐ अल्लाह! ख़ैर तो सिर्फ़ आख़िरत ही की ख़ैर है। पस अंसार और मुहाजिरीन को तू बरकत अ़ता फ़र्मा।

अनस ने बयान किया कि एक मुट्ठी जौ आता और उन स़ह़ाबा के लिये ऐसे रोग़न (तेल) में जिसका मज़ा भी बिगड़ चुका होता मिलाकर पका दिया जाता। यही खाना उन स़ह़ाबा के सामने रख दिया जाता। स़ह़ाबा भूखे होते। ये उनके ह़लक़ में चिपकता और उसमें बदबू होती। गोया उस वक़्त उनकी ख़ूराक का भी ये ह़ाल था। (राजेअ़ : 2834)

٤١٠٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَعَلَ الْمُهَاجِرُونَ وَالأَنْصَارُ يَحْفِرُونَ الْخَنْدَقَ حَوْلَ الْمَدِينَةِ وَيَنْقُلُونَ التُّرَابَ عَلَى مُتُونِهِمْ وَهُمْ يَقُولُونَ:

نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدَا
عَلَى الإِسْلاَمِ مَا بَقِينَا أَبَدَا

قَالَ: يَقُولُ النَّبِيُّ ﷺ: وَهُوَ يُجِيبُهُمْ:

اللَّهُمَّ إِنَّهُ لاَ خَيْرَ إِلاَّ خَيْرُ الآخِرَهْ
فَبَارِكْ فِي الأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَهْ

قَالَ: يُؤْتَوْنَ بِمِلْءِ كَفِّي مِنَ الشَّعِيرِ فَيُصْنَعُ لَهُمْ بِإِهَالَةٍ سَنِخَةٍ تُوضَعُ بَيْنَ يَدَيِ الْقَوْمِ وَالْقَوْمُ جِيَاعٌ، وَهِيَ بَشِعَةٌ فِي الْحَلْقِ وَلَهَا رِيحٌ مُنْتِنٌ. [راجع: ٢٨٣٤]

4101. हमसे ख़ल्लाद बिन यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद बिन ऐमन ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ऐमन ह़ब्शी ने बयान किया कि मैं जाबिर (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो उन्होंने बयान किया कि हम ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर ख़ंदक़ खोद रहे थे कि एक बहुत सख़्त क़िस्म की चट्टान निकली (जिस पर कुदाल और फावड़े का कोई अष़र नहीं होता था, इसलिये ख़ंदक़ की खुदाई में रुकावट पैदा हो गई) स़ह़ाबा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि एक चट्टान ज़ाहिर हो गई है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं अंदर उतरता हूँ। चुनाँचे आप खड़े हुए। उस वक़्त (भूख की शिद्दत की वजह से) आपका पेट पत्थर से बँधा हुआ था। तीन दिन से हमें एक दाना खाने के लिये नहीं मिला था। चट्टान (एक ही ज़र्ब में) बालू के ढेर की त़रह बह गई। मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह!

٤١٠١- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَيْتُ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَقَالَ: إِنَّا يَوْمَ الْخَنْدَقِ نَحْفِرُ فَعَرَضَتْ كُدْيَةٌ شَدِيدَةٌ فَجَاؤُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: هَذِهِ كُدْيَةٌ عَرَضَتْ فِي الْخَنْدَقِ، فَقَالَ: ((أَنَا نَازِلٌ)) ثُمَّ قَامَ وَبَطْنُهُ مَعْصُوبٌ بِحَجَرٍ، وَلَبِثْنَا ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ لاَ نَذُوقُ ذَوَاقًا، فَأَخَذَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمِعْوَلَ، فَضَرَبَ فَعَادَ كَثِيبًا أَهْيَلَ أَوْ أَهْيَمَ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ ائْذَنْ لِي إِلَى الْبَيْتِ؟ فَقُلْتُ لاِمْرَأَتِي

मुझे घर जाने की इजाज़त दीजिए। (घर आकर) मैंने अपनी बीवी से कहा कि आज मैंने हुज़ूर अकरम (ﷺ) को (फ़ाक़ों की वजह से) इस हालत में देखा कि सब्र न हो सका। क्या तुम्हारे पास (खाने की) कोई चीज़ है? उन्होंने बताया कि हाँ कुछ जौ हैं और एक बकरी का बच्चा। मैंने बकरी के बच्चे को ज़िब्ह किया और मेरी बीवी ने जौ पीसे। फिर गोश्त को हमने चूल्हे पर हाँडी में रखा और मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आटा गूँधा जा चुका था और गोश्त चूल्हे पर पकने के क़रीब था। आँहज़रत (ﷺ) से मैंने अ़र्ज़ किया, घर खाने के लिये मुख़्तसर खाना तैयार है। या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप अपने साथ एक दो आदमियों को लेकर तशरीफ़ ले चलें। हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा कि कितना है? मैंने आपको सब कुछ बता दिया। आपने फ़र्माया कि ये तो बहुत है और निहायत उ़म्दा व त़य्यब है। फिर आपने फ़र्माया कि अपनी बीवी से कह दो कि चूल्हे से हाँडी न उतारें और न तन्नूर से रोटी निकालें, मैं अभी आ रहा हूँ। फिर स़हाबा से फ़र्माया कि सब लोग चलें। चुनाँचे तमाम अंस़ार और मुहाजिरीन तैयार हो गये। जब जाबिर (रज़ि.) घर पहुँचे तो अपनी बीवी से उन्होंने कहा, अब क्या होगा? रसूलुल्लाह (ﷺ) तो तमाम मुहाजिरीन व अंस़ार को साथ लेकर तशरीफ़ ला रहे हैं। उन्होंने पूछा, हुज़ूर (ﷺ) ने आपसे कुछ पूछा भी था? जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि हाँ। हुज़ूर (ﷺ) ने स़हाबा से फ़र्माया कि अंदर दाख़िल हो जाओ लेकिन इज़्दहाम (भीड़) न होने पाए। उसके बाद आँहुज़ूर (ﷺ) रोटी का चूरा करने लगे और गोश्त उस पर डालने लगे। हाँडी और तन्नूर दोनों ढंके हुए थे। आँहुज़ूर (ﷺ) ने उसे लिया और स़हाबा के क़रीब कर दिया। फिर आपने गोश्त और रोटी निकाली। इस त़रह आप बराबर रोटी चूरा करते जाते और गोश्त उसमें डालते जाते। यहाँ तक कि तमाम स़हाबा का पेट भर गया और खाना बच भी गया। आख़िर में आपने (जाबिर रज़ि. की बीवी से) फ़र्माया कि अब ये खाना तुम ख़ुद खाओ और लोगों के यहाँ हदिया में भेजो, क्योंकि लोग आजकल फ़ाक़ा में मुब्तला हैं। (राजेअ़ : 3070)

رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا، مَا كَانَ فِي ذَلِكَ صَبْرٌ فَعِنْدَكِ شَيْءٌ؟ قَالَتْ: عِنْدِي شَعِيرٌ وَعَنَاقٌ فَذَبَحْتُ الْعَنَاقَ وَطَحَنَتِ الشَّعِيرَ حَتَّى جَعَلْنَا اللَّحْمَ فِي الْبُرْمَةِ ثُمَّ جِئْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْعَجِينُ قَدْ انْكَسَرَ وَالْبُرْمَةُ بَيْنَ الأَثَافِيِّ قَدْ كَادَتْ أَنْ تَنْضَجَ فَقُلْتُ: طُعَيِّمٌ لِي فَقُمْ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ وَرَجُلٌ أَوْ رَجُلاَنِ قَالَ ((كَمْ هُوَ؟)) فَذَكَرْتُ لَهُ قَالَ: ((كَثِيرٌ طَيِّبٌ)) قَالَ: ((قُلْ لَهَا لاَ تَنْزِعِ الْبُرْمَةَ وَلاَ الْخُبْزَ مِنَ التَّنُّورِ حَتَّى آتِيَ. فَقَالَ: ((قُومُوا)) فَقَامَ الْمُهَاجِرُونَ وَالأَنْصَارُ فَلَمَّا دَخَلَ عَلَى امْرَأَتِهِ قَالَ: وَيْحَكِ جَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ وَمَنْ مَعَهُمْ. قَالَتْ: هَلْ سَأَلَكَ؟ فَقُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ: ((ادْخُلُوا وَلاَ تَضَاغَطُوا)) فَجَعَلَ يَكْسِرُ الْخُبْزَ وَيَجْعَلُ عَلَيْهِ اللَّحْمَ وَيُخَمِّرُ الْبُرْمَةَ وَالتَّنُّورَ إِذَا أَخَذَ مِنْهُ وَيُقَرِّبُ إِلَى أَصْحَابِهِ ثُمَّ يَنْزِعُ فَلَمْ يَزَلْ يَكْسِرُ الْخُبْزَ وَيَغْرِفُ حَتَّى شَبِعُوا وَبَقِيَ بَقِيَّةٌ، قَالَ: ((كُلِي هَذَا وَأَهْدِي فَإِنَّ النَّاسَ أَصَابَتْهُمْ مَجَاعَةٌ)).

[راجع: ٣٠٧٠]

तश्रीह : रिवायत में ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ में ख़ंदक़ खोदने का ज़िक्र है मगर और भी बहुत से उमूर बयान में आ गये हैं। आँहज़रत (ﷺ) के भूख की शिद्दत से पेट पर पत्थर बाँधने का भी साफ़ लफ़्ज़ों मे ज़िक्र है। कुछ लोगों ने पत्थर बाँधने की तावील की है। खाने में बरकत का होना रसूले करीम (ﷺ) का मुअजिज़ा था जिनका तो आपसे बारहा ज़ुहूर हुआ है। (ﷺ) यही हज़रत जाबिर (रज़ि.) हैं जो अपने वालिद की शहादत के बाद क़र्ज़ख़्वाहों का क़र्ज़ चुकाने के लिये रसूले करीम (ﷺ) से दुआओं के तालिब हुए थे। इस सिलसिले मे जब आप घर तशरीफ़ लाए और वापस जाने लगे तो जाबिर (ﷺ) के मना करने के बावजूद उनकी बीवी ने दरख़्वास्त की थी कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे लिये और मेरे शौहर के लिये दुआ-ए ख़ैर कर जाइये। आपने दोनों के लिये दुआ की थी और उस औरत ने कहा था कि आप हमारे घर में तशरीफ़ लाएँ और और ये क्यूँकर मुम्किन है कि हम आपसे दुआ के तालिब भी न हों। (फ़त्हु)

4102. मुझसे अम्र बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम ज़िह्हाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमको हंज़ला बिन अबी सुफ़यान ने ख़बर दी, कहा हमको सईद बिन मीना ने ख़बर दी, कहा मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (ﷺ) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब ख़ंदक़ खोदी जा रही थी तो मैंने मा'लूम किया कि नबी करीम (ﷺ) इंतिहाई भूख में मुब्तला हैं। मैं फ़ौरन अपनी बीवी के पास आया और कहा, क्या तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है? मेरा ख़याल है कि हुज़ूर अकरम (ﷺ) इंतिहाई भूखे हैं । मेरी बीवी एक थैला निकाल कर लाई जिसमें एक साअ जौ थे। घर में हमारा एक बकरी का बच्चा भी बँधा हुआ था। मैंने बकरी के बच्चे को ज़िब्ह किया और मेरी बीवी ने पहले ही तम्बीह कर दी थी कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) और आपके सहाबा के सामने मुझे शर्मिन्दा न करना। चुनाँचे मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपके कान में ये अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमने एक छोटा सा बच्चा ज़िब्ह कर लिया है और एक साअ जौ पीस लिये हैं जो हमारे पास थे। इसलिये आप दो एक सहाबा को साथ लेकर तशरीफ़ ले चलें। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने बहुत बुलन्द आवाज़ से फ़र्माया, ऐ अहले ख़ंदक़! जाबिर (रज़ि.) ने तुम्हारे लिये खाना तैयार करवाया है। बस अब सारा काम छोड़ दो और जल्दी चले चलो। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तक मैं आ न जाऊँ हाँडी चूल्हे पर से न उतारना और न आटे की रोटी पकानी शुरू करना। मैं अपने घर आया। इधर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) भी सहाबा को साथ लेकर रवाना हुए। मैं अपनी बीवी के पास आया तो वो मुझे बराबर बुरा—भला कहने लगीं। मैंने

٤١٠٢- حدَّثني عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا أبُو عَاصِمٍ أخْبَرَنَا حَنْظَلَةُ بْنُ أبِي سُفْيَانَ، أخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ مِينَاءَ، قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا حُفِرَ الْخَنْدَقُ رَأَيْتُ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَمَصًا شَدِيدًا فَانْكَفَأْتُ إِلَى امْرَأَتِي فَقُلْتُ: هَلْ عِنْدَكِ شَيْءٌ فَإِنِّي رَأَيْتُ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَمَصًا شَدِيدًا. فَأَخْرَجَتْ إِلَيَّ جِرَابًا فِيهِ صَاعٌ مِنْ شَعِيرٍ وَلَنَا بُهَيْمَةٌ دَاجِنٌ فَذَبَحْتُهَا وَطَحَنَتِ الشَّعِيرَ فَفَرَغَتْ إِلَى فَرَاغِي وَقَطَّعْتُهَا فِي بُرْمَتِهَا ثُمَّ وَلَّيْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: لاَ تَفْضَحْنِي بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْ مَعَهُ. فَجِئْتُهُ فَسَارَرْتُهُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ ذَبَحْنَا بُهَيْمَةً لَنَا وَطَحَنَّا صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ كَانَ عِنْدَنَا فَتَعَالَ أَنْتَ وَنَفَرٌ مَعَكَ فَصَاحَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((يَا أَهْلَ الْخَنْدَقِ إِنَّ جَابِرًا قَدْ صَنَعَ سُورًا فَحَيَّ هَلاً بِكُمْ)) فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

((لاَ تُنْزِلُنَّ بُرْمَتَكُمْ وَلاَ تَخْبِزُنَّ عَجِينَكُمْ حَتَّى أَجِيءَ)) فَجِئْتُ وَجَاءَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْدُمُ النَّاسَ حَتَّى جِئْتُ امْرَأَتِي فَقَالَتْ: بِكَ وَبِكَ فَقُلْتُ قَدْ فَعَلْتُ الَّذِي قُلْتِ فَأَخْرَجَتْ لَهُ عَجِينًا فَبَصَقَ فِيهِ وَبَارَكَ ثُمَّ عَمَدَ إِلَى بُرْمَتِنَا فَبَصَقَ وَبَارَكَ ثُمَّ قَالَ: ((ادْعُ خَابِزَةً فَلْتَخْبِزْ مَعِي وَاقْدَحِي مِنْ بُرْمَتِكُمْ وَلاَ تُنْزِلُوهَا)) وَهُمْ أَلْفٌ فَأُقْسِمُ بِاللهِ لَقَدْ أَكَلُوا حَتَّى تَرَكُوهُ وَانْحَرَفُوا وَإِنَّ بُرْمَتَنَا لَتَغِطُّ كَمَا هِيَ وَإِنَّ عَجِينَنَا لَيُخْبَزُ كَمَا هُوَ.

[راجع: ٣٠٧٠]

कहा कि तुमने जो कुछ मुझसे कहा था मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सामने अर्ज़ कर दिया था। आख़िर मेरी बीवी ने गुँधा हुआ आटा निकाला और हुज़ूर (ﷺ) ने उसमें अपने लुआबे दहन की आमेज़िश कर दी और बरकत की दुआ की। हाँडी में भी आपने लुआब की आमेज़िश कर दी और बरकत की दुआ की। उसके बाद आपने फ़र्माया कि अब रोटी पकाने वाली को बुलाओ। वो मेरे सामने रोटी पकाए और गोश्त हाँडी से निकाले लेकिन चूल्हे से हाँडी न उतारना। सहाबा की ता'दाद हज़ार के क़रीब थी। मैं अल्लाह तआला की क़सम खाता हूँ कि इतने ही खाने को सबने (पेट भर कर) खाया और खाना बच भी गया जब तमाम लोग वापस हो गये तो हमारी हाँडी उसी तरह उबल रही थी, जिस तरह शुरू में थी और आटे की रोटियाँ बराबर पकाई जा रही थीं।

(राजेअ : 3070)

٤١٠٣- حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ﴿إِذْ جَاؤُوكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ﴾ قَالَتْ: كَانَ ذَاكَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ.

4103. मुझसे उ़म्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि (आयत) जब मुश्रिकीन तुम्हारे बालाई इलाक़े से और तुम्हारे नशीबी इलाक़े से तुम पर चढ़ आए थे और जब मारे डर के आँखें चकाचौंध हो गई थीं और दिल ह़लक़ तक आ गये थे। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ये आयत ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के बारे में नाज़िल हुई थी।

तश्रीह : उस जंग के मौक़े पर मुसलमानों के पास न काफ़ी राशन था न सामाने जंग और सख़्त सर्दी का ज़माना भी था। ख़ुद मदीना में यहूदी घात में लगे हुएथे। कुफ़्फ़ारे अरब एक मुत्तह़िदा मह़ाज़ (संयुक्त मोर्चे) की शक्ल में बड़ी ता'दाद में चढ़कर आए हुए थे मगर उस मौक़े पर शहर के अन्दर से मुदाफ़िअ़त (सुरक्षा) की गई और शहर को ख़ंदक़ खोदकर मह़फ़ूज़ किया गया। चुनाँचे अल्लाह का फ़ज़्ल हुआ और कुफ़्फ़ार अपने नापाक इरादों मे कामयाब न हो सके और नाकाम वापस लौट गये और मुस्तक़्बिल के लिये उनके नापाक अ़ज़ाइम ख़ाक में मिल गये। इस जंग में ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) बतौरे जासूस कुफ़्फ़ार की ख़बर लेने गये थे। उन्होंने आकर बतलाया कि आँधी ने कुफ़्फ़ार के सारे ख़ैमे उलट दिये और उनकी हाँडियाँ भी औंधे मुँह डाल दी हैं और वो सब भाग गये हैं।

٤١٠٤- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا

4014. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे

शुअबा बिन हज्जाज ने, उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ में (ख़ंदक़ की खुदाई के वक़्त) रसूलुल्लाह (ﷺ) मिट्टी उठाकर ला रहे थे। यहाँ तक कि आपका बत्न मुबारक ग़ुबार से अट गया था। हुज़ूर (ﷺ) की ज़ुबान पर ये कलिमात जारी थे।

अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह न होता तो हमें सीधा रास्ता न मिलता। न हम सदक़ा कर सकते, न नमाज़ पढ़ते, पस तू हमारे दिलों पर सकीनत व तमानियत नाज़िल फ़र्मा और अगर हमारी कुफ़्फ़ार से मुठभेड़ हो जाए तो हमें साबित क़दमी इनायत फ़र्मा। जो लोग हमारे ख़िलाफ़ चढ़ आए हैं जब ये कोई फ़ित्ना चाहते हैं तो हम उनकी नहीं मानते।

अबयना अबयना (हम उनकी नहीं मानते। हम उनकी नहीं मानते) पर आपकी आवाज़ बुलन्द हो जाती।

(राजेअ : 2836)

شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَنْقُلُ التُّرَابَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ حَتَّى أَغْمَرَ بَطْنَهُ أَوْ أَغْبَرَّ بَطْنُهُ يَقُولُ:

وَاللهِ لَوْ لاَ اللهُ مَا اهْتَدَيْنَا
وَلاَ تَصَدَّقْنَا وَلاَ صَلَّيْنَا
فَأَنْزِلَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا
وَثَبِّتِ الأَقْدَامَ إِنْ لاَقَيْنَا
إِنَّ الأُلَى قَدْ بَغَوا عَلَيْنَا
إِذَا أَرَادُوا فِتْنَةً أَبَيْنَا

وَرَفَعَ بِهَا صَوْتَهُ : ((أَبَيْنَا أَبَيْنَا)).

[راجع: ٢٨٣٦]

4105. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, कहा मुझसे हुकम बिन उतैबा ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, पुर्वा हवा के ज़रिये मेरी मदद की गई और क़ौमे आद पछुवा हवा से हलाक कर दी गई थी। (राजेअ : 1035)

٤١٠٥ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ شُعْبَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي الْحَكَمُ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نُصِرْتُ بِالصَّبَا وَأُهْلِكَتْ عَادٌ بِالدَّبُورِ)). [راجع: ١٠٣٥]

4106. मुझसे अहमद बिन उष्मान ने बयान किया, कहा हमसे शुरैह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने कि मैंने बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ग़ज़्व-ए-अहज़ाब के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) को मैंने देखा कि ख़ंदक़ खोदते हुए उसके अंदर से आप भी मिट्टी उठा उठाकर ला रहे हैं। आपके बत्ने मुबारक की खाल मिट्टी से अट गई थी। आपके (सीने से पेट तक) घने बालों (की एक लकीर) थी। मैंने ख़ुद सुना कि हुज़ूर (ﷺ) इब्ने रवाहा (रज़ि.) के रजज़ ये अश्आर मिट्टी उठाते हुए पढ़ रहे थे।

٤١٠٦ - حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ حَدَّثَنَا شُرَيْحُ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ : حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ : سَمِعْتُ الْبَرَاءَ يُحَدِّثُ، قَالَ : لَمَّا كَانَ يَوْمُ الأَحْزَابِ، وَخَنْدَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَأَيْتُهُ يَنْقُلُ مِنْ تُرَابِ الْخَنْدَقِ حَتَّى وَارَى عَنِّي التُّرَابُ جِلْدَةَ بَطْنِهِ وَكَانَ كَثِيرَ الشَّعْرِ، فَسَمِعْتُهُ يَرْتَجِزُ بِكَلِمَاتِ ابْنِ رَوَاحَةَ وَهُوَ يَنْقُلُ مِنَ التُّرَابِ يَقُولُ:

ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हमें सीधा रास्ता न मिलता, न हम सदक़ा करते न नमाज़ पढ़ते, पस हम पर तू अपनी तरफ़ से सकीनत नाज़िल फ़र्मा और अगर हमारा आमना सामना हो जाए तू हमें षाबित क़दमी अता फ़र्मा। ये लोग हमारे ऊपर ज़ुल्म से चढ़ आए हैं। जब ये हमसे कोई फ़ित्ना चाहते हैं तो हम उनकी नहीं सुनते। रावी ने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) आख़िरी कलिमात को खींचकर पढ़ते थे।

اللهُمَّ لَوْ لاَ أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا
وَلاَ تَصَدَّقْنَا وَلاَ صَلَّيْنَا
فَأَنْزِلَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا
وَثَبِّتِ الأَقْدَامَ إِنْ لاَقَيْنَا
إِنَّ الأُلَى قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا
وَإِنْ أَرَادُوا فِتْنَةً أَبَيْنَا
قَالَ: ثُمَّ يَمُدُّ صَوْتَهُ بِآخِرِهَا.

तश्रीह : हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने उन अश्आर का मंज़ूम तर्जुमा (काव्यात्मक अनुवाद) किया है,

तू हिदायत गर न करता तो कहाँ मिलती नजात
कैसे पढ़ते हम नमाज़ें कैसे देते हम ज़कात
अब उतार हम पर तसल्ली ए शहे आली सिफ़ात!
पाँव जमवा दे हमारे, दे लड़ाई में ष़बात
बेसबब हम पर ये दुश्मन ज़ुल्म से चढ़ आए हैं
जब वो बहकाएँ हमें सुनते नहीं हम उनकी बात

4107. मुझसे अब्दह बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुस्समद बिन अब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि सबसे पहला ग़ज़्वा जिसमें मैंने शिर्कत की वो ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ है।

٤١٠٧- حَدَّثَنِي عَبْدَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ هُوَ ابْنُ عَبْدِ اللهِ ابْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَوَّلُ يَوْمٍ شَهِدْتُهُ يَوْمُ الْخَنْدَقِ.

4108. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर बिन राशिद ने, उनहें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया और मअ़मर बिन राशिद ने बयान किया कि मुझे अब्दुल्लाह बिन ताऊस ने ख़बर दी, उनसे इक्रिमा बिन ख़ालिद ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं हफ़्सा (रज़ि.) के यहाँ गया तो उनके सर के बालों से पानी के क़तरे टपक रहे थे। मैंने उनसे कहा कि तुम देखती हो लोगों ने क्या किया और मुझे तो कुछ भी हुकूमत नहीं मिली। हफ़्सा (रज़ि.) ने कहा कि मुसलमानों के मज्मओ़ में जाओ, लोग तुम्हारा इंतिज़ार कर रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा मौक़े पर न पहुँचना मज़ीद फूट का सबब बन जाए।

٤١٠٨- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ.
قَالَ: وَأَخْبَرَنِي ابْنُ طَاوُسٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ بْنِ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى حَفْصَةَ وَنَسْوَاتُهَا تَنْطُفُ قُلْتُ: قَدْ كَانَ مِنْ أَمْرِ النَّاسِ مَا تَرَيْنَ فَلَمْ يُجْعَلْ لِي مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ فَقَالَتْ: الْحَقْ فَإِنَّهُمْ يَنْتَظِرُونَكَ وَأَخْشَى أَنْ يَكُونَ فِي

اخْتِبَاسِكَ عَنْهُمْ فُرْقَةٌ، فَلَمْ تَدَعْهُ حَتَّى ذَهَبَ فَلَمَّا تَفَرَّقَ النَّاسُ خَطَبَ مُعَاوِيَةُ قَالَ: مَنْ كَانَ يُرِيدُ أَنْ يَتَكَلَّمَ فِي هَذَا الأَمْرِ فَلْيُطْلِعْ لَنَا قَرْنَهُ فَلَنَحْنُ أَحَقُّ بِهِ مِنْهُ، وَمِنْ أَبِيهِ قَالَ حَبِيبُ بْنُ مَسْلَمَةَ : فَهَلاَّ أَجَبْتَهُ؟ قَالَ عَبْدُ اللهِ : فَحَلَلْتُ حُبْوَتِي وَهَمَمْتُ أَنْ أَقُولَ أَحَقُّ بِهَذَا الأَمْرِ مِنْكَ مَنْ قَاتَلَكَ وَأَبَاكَ عَلَى الإِسْلاَمِ فَخَشِيتُ أَنْ أَقُولَ كَلِمَةً تُفَرِّقُ بَيْنَ الْجَمْعِ وَتَسْفِكُ الدَّمَ وَيُحْمَلُ عَنِّي غَيْرُ ذَلِكَ، فَذَكَرْتُ مَا أَعَدَّ اللهُ فِي الْجِنَانِ قَالَ حَبِيبٌ : حُفِظْتَ وَعُصِمْتَ. قَالَ مَحْمُودٌ: عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ وَنَوْسَاتُهَا.

आख़िर हफ़्सा (रज़ि.) के इसरार पर अब्दुल्लाह (रज़ि.) गये। फिर जब लोग वहाँ से चले गये तो मुआविया (रज़ि.) ने ख़ुत्बा दिया और कहा कि ख़िलाफ़त के मसले पर जिसे बातचीत करनी हो वो ज़रा अपना सर तो उठाए। यक़ीनन हम इससे (इशारा इब्ने उमर रज़ि. की तरफ़ था) ज़्यादा ख़िलाफ़त के हक़दार हैं और उसके बाप से भी ज़्यादा। हबीब बिन मस्लमा (रज़ि.) ने इब्ने उमर (रज़ि.) से इस पर कहा कि आपने वहीं इसका जवाब क्यूँ नहीं दिया? अब्दुल्लाह बिन आमिर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उसी वक़्त अपनी लुंगी खोली (जवाब देने को तैयार हुआ) और इरादा कर चुका था कि उनसे कहूँ कि तुमसे ज़्यादा खिलाफ़त का हक़दार वो है जिसने तुमसे और तुम्हारे बाप से इस्लाम के लिये जंग की थी। लेकिन फिर मैं डरा कि कहीं मेरी इस बात से मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ बढ़ न जाए और ख़ूँरेज़ी न हो जाए और मेरी बात का मतलब मेरी मंशा के ख़िलाफ़ न लिया जाने लगे। उसके बजाय मुझे जन्नत की वो नेअमतें याद आ गईं जो अल्लाह तआला ने (सब्र करने वालों के लिये) जन्नत में तैयार कर रखी हैं। हबीब इब्ने अबी मुस्लिम ने कहा कि अच्छा हुआ आप महफ़ूज़ रहे और बचा लिये गये, आफ़त में नहीं पड़े। महमूद ने अब्दुर्रज़्ज़ाक़ से (नस्वातुहा के बजाय लफ़्ज़) नवसातुहा बयान किया। (जिसके चोटी के मा'नी हैं जो औरतें सर पर बाल गूँधते वक़्त निकालती हैं)

तश्रीह : हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **मुरादुहू बिज़ालिक मा वक़अ बैन अलिय्यिन व मुआवियत मिनल्क़ितालि फ़ी सिफ्फ़ीन यौम इज्तिमाइन्नासि अलल्हुकूमति बैनहुम फीमा इख्तलफ़ू फीहि फरासलू बक़ायस्सहाबति मिनल्हर्मैनि व गैरहुमा व तवाअदू अलल्इज्तिमाइ यन्जुरू फ़ी ज़ालिक फशावर इब्नु उमर उख्तहू फ़िल्तवज्जहि इलैहिम औ अदमिही फअशारत अलैहि बिल्लिहाक़ बिहिम ख़श्यतन अंय्यशामिन गैबतिही इख़्तिलाफ़ुन इला इस्तिम्रारिल्फ़ित्नति फलम्मा तफ़र्रकन्नासु अय बअद अन इख्तलफल्हकमानि व हुव अबू मूसा अश्अरी व कान मिन क़िबलि अलिय्यिन व अम्रुब्नु आसिन व कान मिन क़िबलि मुआवियत** (फ़त्ह)

या'नी मुराद वो हुकूमत का झगड़ा है जो सिफ़्फ़ीन के मुक़ाम पर हज़रत अली (रज़ि.) और हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बीच वाक़ेअ हुआ। इसके लिये हरमैन के बक़ाया सहाबा (रज़ि.) ने बाहमी मुरासिलत करके उस क़ज़िये ना मरज़िया (अप्रिय झगड़े) को ख़त्म करने में कोशिश करने के लिये एक मज्लिसे शूरा को बुलाया जिसमे शिर्कत के लिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपनी बहन से मश्विरा किया। बहन का मश्विरा यही हुआ कि तुमको भी इस मज्लिस में ज़रूर शरीक होना चाहिये वरना ख़तरा है कि तुम्हारी तरफ़ से लोगों में ख़्वाह मख़्वाह बदगुमानियाँ पैदा हो जाएँगी जिनका नतीजा मौजूदा फ़ित्ने के हमेशा ज़ारी रहने की सूरत में ज़ाहिर हो तो ये अच्छा न होगा। जब मज्लिसे शूरा ख़त्म हुई तो मामला दोनों तरफ़ से एक एक पंच के इंतिख़ाब पर ख़त्म हुआ। चुनाँचे हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) हज़रत अली (रज़ि.) की तरफ़ से और हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि.) हज़रत मुआविया (रज़ि.) की तरफ़ से पंच क़रार पाये। बाद में वो हुआ जो मशहूर व मअरूफ़ है।

4109. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने, उनसे सुलैमान बिन सुरद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-अहज़ाब के मौक़े पर (जब कुफ़्फ़ार का लश्कर नाकाम वापस हो गया) फ़र्माया कि अब हम उनसे लड़ेंगे। आइन्दा वो हम पर चढ़कर कभी न आ सकेंगे।

٤١٠٩- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ صُرَدٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ وَإِنْ أَرَادُوا فِتْنَةَ أَبَيْنَا يَوْمَ الأَحْزَابِ: ((نَغْزُوهُمْ وَلاَ يَغْزُونَنَا)).

बुख़ारी में सुलैमान बिन सुरद (रज़ि.) से सिर्फ़ एक यही हदीष मरवी है। ये उन लोगों सबसे ज़्यादा बूढ़े थे, जो हज़रत हुसैन (रज़ि.) के ख़ून का बदला लेने कूफ़ा से निकले थे। मगर ऐनुल वरदा के मुक़ाम पर ये अपने साथियों समेत मारे गये। ये 65 हिजरी का वाक़िया है। (फ़तह)

4110. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने अबू इस्हाक़ से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने सुलैमान बिन सुरद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, जब अरब के क़बीले (जो ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर मदीना चढ़कर आए थे) नाकाम वापस हो गये तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब हम उनसे जंग करेंगे, वो हम पर चढ़कर न आ सकेंगे बल्कि हम ही उन पर फ़ौजकशी किया करेंगे।

(राजेअ : 4109)

٤١١٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ يَقُولُ: سَمِعْتُ سُلَيْمَانَ بْنَ صُرَدٍ يَقُولُ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ حِينَ أَجْلَى الأَحْزَابُ عَنْهُ: ((الآنَ نَغْزُوهُمْ وَلاَ يَغْزُونَنَا نَحْنُ نَسِيرُ إِلَيْهِمْ)).

[راجع: ٤١٠٩]

जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था, वैसा ही हुआ। उसके दूसरे साल सुलहे हुदैबिया हुई जिसमें कुरैश ने आपसे मुआहिदा किया फिर ख़ुद ही उसे तोड़ डाला जिसके नतीजे में फ़तहे मक्का का वाक़िया वजूद में आया। (फ़तह)

4111. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे रौह बिन उबादा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन हस्सान ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, उनसे उबैदा सलमानी ने और उनसे अली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर फ़र्माया। जिस तरह उन कुफ़्फ़ार ने हमें स़लाते वुस्ता (नमाज़े अ़स्र) नहीं पढ़ने दी और सूरज गुरूब हो गया, अल्लाह तआला भी उनकी क़ब्रों और घरों को आग से भर दे। (राजेअ : 2931)

٤١١١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا رَوْحٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ عَبِيدَةَ عَنْ عَلِيٍّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ: ((مَلأَ اللهُ عَلَيْهِمْ بُيُوتَهُمْ وَقُبُورَهُمْ نَارًا كَمَا شَغَلُونَا عَنِ الصَّلاَةِ الْوُسْطَى)) حَتَّى غَابَتِ الشَّمْسُ.[راجع: ٢٩٣١]

4112. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे

٤١١٢- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ

हिशाम बिन हस्सान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कषीर ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर सूरज ग़ुरूब होने के बाद (लड़कर) वापस हुए। वो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को बुरा भला कह रहे थे। उन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! सूरज ग़ुरूब होने को है और मैं अ़स्र की नमाज़ अब तक नहीं पढ़ सका। इस पर आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! नमाज़ तो मैं भी न पढ़ सका। आख़िर हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ वादी-ए-बत्हान में उतरे। आँहुज़ूर (ﷺ) ने नमाज़ के लिये वुज़ू किया। हमने भी वुज़ू किया, फिर अ़स्र की नमाज़ सूरज ग़ुरूब होने के बाद पढ़ी और उसके बाद मग़्रिब की नमाज़ पढ़ी। (राजेअ़ : 596)

حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ جَاءَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ بَعْدَ مَا غَرَبَتِ الشَّمْسُ جَعَلَ يَسُبُّ كُفَّارَ قُرَيْشٍ وَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ مَا كِدْتُ أَنْ أُصَلِّيَ حَتَّى كَادَتِ الشَّمْسُ أَنْ تَغْرُبَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَاللهِ مَا صَلَّيْتُهَا)) فَنَزَلْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بُطْحَانَ فَتَوَضَّأَ لِلصَّلاَةِ وَتَوَضَّأْنَا لَهَا فَصَلَّى الْعَصْرَ بَعْدَ مَا غَرَبَتِ الشَّمْسُ ثُمَّ صَلَّى بَعْدَهَا الْمَغْرِبَ.

[راجع: ٥٩٦]

4113. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ग़ज़्व-ए-अहज़ाब के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कुफ़्फ़ार के लश्कर की ख़बरें कौन लाएगा? ज़ुबैर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि मैं तैयार हूँ। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा, कुफ़्फ़ार के लश्कर की ख़बरें कौन लाएगा? इस मर्तबा भी ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा कि मैं। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने तीसरी मर्तबा पूछा कि कुफ़्फ़ार के लश्कर की ख़बरें कौन लाएगा? ज़ुबैर (रज़ि.) ने इस बार भी अपने आपको पेश किया। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर नबी के हवारी होते हैं और मेरे हवारी ज़ुबैर (रज़ि.) हैं। (राजेअ़ : 2847)

٤١١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرًا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ الأَحْزَابِ: ((مَنْ يَأْتِينَا بِخَبَرِ الْقَوْمِ؟)) فَقَالَ الزُّبَيْرُ أَنَا ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ يَأْتِينَا بِخَبَرِ الْقَوْمِ؟)) فَقَالَ الزُّبَيْرُ: أَنَا ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ يَأْتِينَا بِخَبَرِ الْقَوْمِ؟)) قَالَ الزُّبَيْرُ : أَنَا. ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَإِنَّ حَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ)). [راجع: ٢٨٤٧]

4114. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) फ़र्माया करते थे, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं , वो अकेला है जिसने अपने लश्कर को फ़तह दी। अपने बन्दे की मदद की (या'नी हुज़ूरे अकरम ﷺ की) और अहज़ाब (या'नी अफ़्वाजे कुफ़्फ़ार) को तंहा भगा दिया। पस उसके बाद कोई चीज़ उसके मद्दे मुक़ाबिल नहीं हो सकती।

٤١١٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُولُ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ أَعَزَّ جُنْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَغَلَبَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ، فَلاَ شَيْءَ بَعْدَهُ)).

तश्रीह : ये वो मुबारक अल्फ़ाज़ हैं जो जंगे अह्ज़ाब के ख़ात्मे पर बतौरे शुक्र ज़ुबाने रिसालत मआब (ﷺ) से अदा हुए इस बार कुफ़्फ़ारे अरब मुत्तहिदा महाज़ बनाकर मदीना पर हमलावर हुए थे मगर अल्लाह तआला ने उनके नापाक इरादों को ख़ाक में मिला दिया और मुसलमानों को उनसे बाल बाल बचा लिया। अब बतौर यादगार उन अल्फ़ाज़ को पढ़ना और याद करना मोजिबे सद ख़ैरो–बरकत है। ख़ास तौर पर हज्ज के मक़ामात पर उनको ज़ुबान से अदा करना हर हाजी को बहुत अज़्रो–षवाब है। अल्लाह तआला हर मुसलमान को दुनिया में शर से महफ़ूज़ रखे आमीन।

4115. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको फ़ुज़ारी और अब्दह ने ख़बर दी, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अह्ज़ाब (अफ़्वाजे कुफ़्फ़ार) के लिये (ग़ज़्व–ए–ख़ंदक़ के मौक़े पर) बद्दुआ की कि ऐ अल्लाह! किताब के नाज़िल करने वाले! जल्दी हिसाब लेने वाले! कुफ़्फ़ार के लश्कर को शिकस्त दे ऐ अल्लाह! उन्हें शिकस्त दे। या अल्लाह! उनकी ताक़त को मुतज़लज़ल कर दे। (राजेअ : 2933)

٤١١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا الْفَزَارِيُّ وَعَبْدَةُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، قَالَ : سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: دَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الأَحْزَابِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ، سَرِيعَ الْحِسَابِ، اهْزِمِ الأَحْزَابَ، اللَّهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ)).[راجع: ٢٩٣٣]

4116. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर और नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब ग़ज़्वे, हज्ज या उमरे से वापस आते तो सबसे पहले तीन मर्तबा अल्लाहु अकबर कहते। फिर यूँ फ़र्माते। अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, बादशाहत उसी की है, हम्द उसी के लिये है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। (या अल्लाह!) हम वापस हो रहे हैं तौबा करते हुए और अपने रब की हम्द बयान करते हुए। अल्लाह ने अपना वा'दा सच कर दिखाया। अपने बन्दे की मदद की और कुफ़्फ़ार की फ़ौजों को उस अकेले ने शिकस्त दे दी।

(राजेअ : 1797)

٤١١٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ وَنَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا قَفَلَ مِنَ الْغَزْوِ أَوِ الْحَجِّ أَوِ الْعُمْرَةِ يَبْدَأُ فَيُكَبِّرُ ثَلاَثَ مِرَارٍ ثُمَّ يَقُولُ : ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. آيِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ سَاجِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ، صَدَقَ اللهُ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ)). [راجع: ١٧٩٧]

तश्रीह : सच है,

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़ंद ज़न
फ़ूँकों से ये चिराग़ बुझाया न जाएगा।

बाब 31 : ग़ज़्व-ए-अह्ज़ाब से नबी करीम (ﷺ) का वापस लौटना और बनू क़ुरैज़ा पर चढ़ाई करना और उनका मुहासरा करना

٣١- بَابُ مَرْجِعِ النَّبِيِّ ﷺ مِنَ الأَحْزَابِ وَمَخْرَجِهِ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ وَمُحَاصَرَتِهِ إِيَّاهُمْ

4117. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन नुमेर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ज्यों ही नबी करीम (ﷺ) जंगे ख़ंदक़ से मदीना वापस हुए और हथियार उतारकर गुस्ल किया तो जिब्रईल (अ़लैहि.) आपके पास आए और कहा, आपने अभी हथियार उतार दिये? अल्लाह की क़सम! हमने तो अभी हथियार नहीं उतारे हैं। चलिये उन पर ह़मला कीजिए। ह़ुज़ूर (ﷺ) ने पूछा किन पर? जिब्रईल (अ़लैहि.) ने कहा कि उन पर और उन्होंने (यहूद के क़बीले) बनू क़ुरैज़ा की त़रफ़ इशारा किया। चुनाँचे ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने बनू क़ुरैज़ा पर चढ़ाई की। (राजेअ़ : 463)

٤١١٧- حدثني عَبْدُ اللهِ بْنُ أبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا قَالَتْ : لَمَّا رَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الْخَنْدَقِ وَوَضَعَ السِّلاَحَ وَاغْتَسَلَ أَتَاهُ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ فَقَالَ : قَدْ وَضَعْتَ السِّلاَحَ وَاللهِ مَا وَضَعْنَاهُ فَاخْرُجْ إِلَيْهِمْ. قَالَ : ((فَإِلَى أَيْنَ؟)) قَالَ: هَهُنَا وَأَشَارَ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ. فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْهِمْ [راجع: ٤٦٣]

जंगे ख़ंदक़ के दिनों में इस क़बीले ने शहर के अन्दर बदअम्नी (अशान्ति) फैलाई थी और ग़द्दारी का षुबूत दिया था। इसलिये उन पर ह़मला करना ज़रूरी हुआ।

4118. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे ह़ुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जैसे अब भी वो गर्द व गुबार में देख रहा हूँ जो जिब्रईल (अ़लैहि.) के साथ सवार फ़रिश्तों की वजह से क़बील-ए-बनू ग़नम की गली में उठा था जब रसूलुल्लाह (ﷺ) बनू क़ुरैज़ा के ख़िलाफ़ चढ़कर गये थे।

٤١١٨- حدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى الْغُبَارِ سَاطِعًا فِي زُقَاقِ بَنِي غَنْمٍ مَوْكِبَ جِبْرِيلَ حِينَ سَارَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ.

4119. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-अह़ज़ाब (से फ़ारिग़ होकर) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि तमाम मुसलमान अ़स्र की नमाज़ बनू क़ुरैज़ा तक पहुँचने के बाद ही अदा करें। कुछ ह़ज़रात की अ़स्र की नमाज़ का वक़्त रास्ते ही में हो गया। उनमें से कुछ स़ह़ाबा (रज़ि.) ने तो कहा कि हम रास्ते में नमाज़ नहीं पढ़ेंगे। (क्योंकि ह़ुज़ूर ﷺ ने बनू क़ुरैज़ा में नमाज़े अ़स्र पढ़ने के लिये फ़र्माया है) और कुछ स़ाह़ब (रज़ि.) ने कहा कि ह़ुज़ूर (ﷺ) के इर्शाद का मंशा ये नहीं था। बाद में ह़ुज़ूर (ﷺ) के सामने इसका तज़्किरा हुआ तो आपने किसी पर ख़फ़गी (नाराज़गी) नहीं फ़र्माई। (राजेअ़ : 946)

٤١١٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ بْنُ أَسْمَاءَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ الأَحْزَابِ: ((لاَ يُصَلِّيَنَّ أَحَدٌ الْعَصْرَ إِلاَّ فِي بَنِي قُرَيْظَةَ)) فَأَدْرَكَ بَعْضَهُمُ الْعَصْرُ فِي الطَّرِيقِ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لاَ نُصَلِّي حَتَّى نَأْتِيَهَا وَقَالَ بَعْضُهُمْ: بَلْ نُصَلِّي لَمْ يُرَدْ مِنَّا ذَلِكَ فَذُكِرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يُعَنِّفْ وَاحِدًا مِنْهُمْ.

[راجع: ٩٤٦]

तश्रीह : जब रसूले करीम (ﷺ) ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ से कामयाबी के साथ वापस हुए तो ज़ुहर के वक़्त जिब्रईल (अ़लैहि.) तशरीफ़ लाकर कहने लगे कि अल्लाह तआ़ला का हुक्म आपके लिये ये है कि आप फ़ौरन बनू क़ुरैज़ा की त़रफ़ चलें। आपने ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) को पुकारने के लिये हुक्म फ़र्माया कि, मन काना सामिअ़न मुत़ीअ़न फ़ला युस़ल्लियन्नल्

अ़स्र इल्ला फ़ी बनी क़ुरैज़ा या'नी जो भी सुनने वाला फ़र्मांबरदार मुसलमान है उसके लिये ज़रूरी है कि अ़स्र की नमाज़ बनी क़ुरैज़ा में पहुँचकर पढ़े। **व क़ाल इब्नुल्क़य्यिम फ़िल्हुदा मा हस्सलहू कुल्लूम्मिनल्फ़रीक़ैनि माजूरुन बिक़सदिही इल्ला अन्न मन हाज़ल्फ़ज़ीलतैनि इम्तिष़ालल्अम्रि फ़िल्इस्राइ व इम्तिष़ालल्अम्रि फ़िल्मुहाफ़ज़ति अलल्वक़्ति व ला सय्यिमा मा फ़ी हाज़िहिस्सलाति बिऐनिहा मिनल्हष़्षि अलल्मुहाफ़ज़ति अलैहा व इन्न मन फ़ातहू हबित अमलुहू व इन्नमा लम यअनफ़िल्लज़ीन अख़्ख़रूहा लिक़ियामि उज़्रिहिम फ़ित्तमस्सुकि बिज़ाहिरिल्अम्रि इज्तहदु फ़अख़्ख़रु लिइम्तिष़ालिहिमिल्अम्र लाकिन्नहुम लम यस़िलु इला अंय्यकून इज्तिहादुहुम अस्वबु मिन इज्तिहादित्ताइफ़तिल्उख़्रा (अल्ख़) व क़द इस्तदल्ला बिहिल्जुम्हूरू अला अदमि ताष़ीमि मनिज्तहद लिअन्नहू (ﷺ) लम यअनिक अहदम्मिनत्ताइफ़तैनि फ़लौ कान हुनाक इष़्मुन लअनफ़ मिन इष़्मिन** (फ़त्हुल्बारी)

मन कान सामिअन मुत़ीअन फ़ला युसल्लियन्नल्अस्र इल्ला फ़ी बनी क़ुरैज़त ख़ुलास़ा ये कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ऐलान कराया कि जो भी मुसलमान सुनने वाला और फ़र्मांबरदारी करने वाला है उसका फ़र्ज़ है कि नमाज़े अ़स्र बनू क़ुरैज़ा ही में पहुँचकर अदा करे। अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह) ने ज़ादुल मआ़द में कहा है कि दोनों फ़रीक़ अज्रो-ष़वाब के ह़क़दार हुए। मगर जिसने वक़्त होने पर रास्ते ही में नमाज़ अदा कर ली उसने दोनों फ़ज़ीलतों को ह़ासिल कर लिया। पहली फ़ज़ीलत नमाज़े अ़स्र की, उसके अव्वल वक़्त में अदा करने की क्योंकि इस नमाज़ को अपने वक़्त पर अदा करने की ख़ास़ ताकीद है और यहाँ तक है कि जिसकी नमाज़े अ़स्र फ़ौत हो गई, उसका अ़मल ज़ाये हो गया। इस त़रह़ इस फ़रीक़ को अव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ने और फिर बनू क़ुरैज़ा पहुँच जाने का ष़वाब ह़ासिल हुआ और दूसरा फ़रीक़ जिसने नमाज़े अ़स्र में ताख़ीर की और जाहिर फ़र्माने रसूल पर अ़मल किया उन पर कोई नुक्ताचीनी नहीं की गई क्योंकि उन्होंने अपने इज्तिहाद से फ़र्माने रिसालत पर अ़मल करने के लिये नमाज़ को ताख़ीर से बनू क़ुरैज़ा ही में जाकर अदा किया। उनका इज्तिहाद पहले जमाअ़त से ज़्यादा स़वाब के क़रीब रहा। इसी से जुम्हूर ने इस्तिदलाल किया है कि इज्तिहाद करने वाला गुनाहगार नहीं है। (अगर वो इज्तिहाद में ग़लत़ी भी कर जाए।) इसलिये कि नबी करीम (ﷺ) ने दोनों क़िस्म के लोगों में से किसी पर भी नुक्ताचीनी नहीं की। अगर उनमें कोई गुनाहगार क़रार पाता तो आँह़ज़रत (ﷺ) ज़रूर उसको तम्बीह फ़र्माते। राक़िमुल ह़ुरूफ़ (लेखक) कहता है कि इस बिना पर ये उस़ूल क़रार पाया कि **(अल् मुज्तहिद क़द युख़्त़ी व युस़ीबु)** मुज्तहिद से ख़त़ा और ष़वाब दोनों हो सकते हैं और ख़त़ा पर भी गुनाहगार क़रार नहीं दिया जा सकता मगर जब उसको क़ुर्आन व ह़दीष़ से अपनी इज्तिहाद ग़लत़ी की ख़बर हो जाए तो उसको इज्तिहाद का तर्क करना और किताब व सुन्नत पर अ़मल करना वाजिब हो जाता है। इसीलिये मुज्तहिदीने उम्मत अइम्मा अर्बआ रहिमहुल्लाह ने वाज़ेह लफ़्ज़ों में वस़िय्यत कर दी है कि हमारे इज्तिहादी फ़तावा अगर किताब व सुन्नत से किसी जगह टकराएँ तो किताब व सुन्नत को मुक़द्दम रखो और हमारे इज्तिहादी ग़लत़ फ़तावों को छोड़ दो। मगर सद अफ़सोस है कि उनके पैरोकारों ने उनकी उसी क़ीमती वस़िय्यत को पसे पुश्त डालकर उनकी तक़्लीद पर ऐसा जमूद इख़्तियार किया कि आज चारों मज़ाहिब एक अलग अलग दीन अलग अलग उम्मत नज़र आते हैं। इसलिये कहा गया है कि,

दीने ह़क़ रा चार मज़हब साख़्तन्द   **रख़्ना दर दीन नबी अंदाख़्तन्द**

मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि इन फ़र्ज़ी गिरोहबन्दियों को ख़त्म करके कलिम-ए-तौह़ीद और क़ुर्आन और क़िब्ला पर इत्तिह़ादे उम्मत क़ायम करें वरना ह़ालात इस क़दर नाज़ुक हैं कि इस इफ़्तिराक़ व इश्तिक़ाक़ के नतीजे बद में मुसलमान और भी ज़्यादा हलाक व बर्बाद हो जाएँगे। **वमा अ़लैयना इल्लल बलाग़ुल मुबीन वल ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।**

4120. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल् अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, (दूसरी सनद इमाम बुख़ारी रह फ़र्माते हैं) और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़ियात़ ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना और उनसे अनस (रज़ि.) ने

٤١٢٠– حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الأَسْوَدِ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ وحَدَّثَنِي خَلِيفَةُ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ سَمِعْتُ أَبِي عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ الرَّجُلُ يَجْعَلُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى

बयान किया कि बतौरे हदिया सहाबा (रज़ि.) अपने बाग़ में से नबी करीम (ﷺ) के लिये चन्द खजूर के पेड़ मुक़र्रर कर देते थे यहाँ तक कि बनू कुरैज़ा और बनू नज़ीर के क़बीले फ़तह हो गये (तो आँहुज़ूर (ﷺ) ने उन तोहफ़ों को वापस कर दिया)। मेरे घर वालों ने भी मुझे उस खजूर को, तमाम की तमाम या उसका कुछ हिस्सा लेने के लिये हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा। हुज़ूर (ﷺ) ने वो खजूर उम्मे ऐमन (रज़ि.) को दे दी थी। इतने में वो भी आ गईं और कपड़ा मेरी गर्दन में डालकर कहने लगीं, क़त्अन नहीं। उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं ये फल तुम्हें नहीं मिलेंगे ये हुज़ूर (ﷺ) मुझे इनायत फ़र्मा चुके हैं। या इसी तरह के अल्फ़ाज़ उन्होंने बयान किये। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम मुझसे इसके बदले में इतने ले लो। (और उनका माल उन्हें वापस कर दो) लेकिन वो अब भी यही कहे जा रही थीं कि क़त्अन नहीं, अल्लाह की क़सम! यहाँ तक कि हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें, मेरा ख़्याल है कि अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उसका दस गुना देने का वा'दा किया, (फिर उन्होंने मुझे छोड़ा) या इसी तरह के अल्फ़ाज़ अनस (रज़ि.) ने बयान किये। (राजेअ : 2630)

اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّخَلاَتِ حَتَّى افْتَتَحَ قُرَيْظَةَ وَالنَّضِيرَ وَإِنَّ أَهْلِي أَمَرُونِي أَنْ آتِيَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَسْأَلَهُ الَّذِي كَانُوا أَعْطَوْهُ أَوْ بَعْضَهُ وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ أَعْطَاهُ أُمَّ أَيْمَنَ فَجَاءَتْ. أُمُّ أَيْمَنَ فَجَعَلَتِ الثَّوْبَ فِي عُنُقِي تَقُولُ: كَلاَّ وَالَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ لاَ يُعْطِيْكَهُمْ وَقَدْ أَعْطَانِيهَا أَوْ كَمَا قَالَتْ : وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((لَكِ كَذَا)) وَتَقُولُ: كَلاَّ وَاللهِ حَتَّى أَعْطَاهَا حَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ: عَشْرَةَ أَمْثَالِهِ أَوْ كَمَا قَالَ.

[راجع: ٢٦٣٠]

4121. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने, उनसे शुअबा ने, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उन्होंने अबू उमामा से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि बनू कुरैज़ा ने सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) को ष़ालिष़ मानकर हथियार डाल दिये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें बुलाने के लिये आदमी भेजा। वो गधे पर सवार होकर आए। जब उस जगह के क़रीब आए जिसे हुज़ूर (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ने के लिये मुंतख़ब किया था तो हुज़ूर (ﷺ) ने अंसार से फ़र्माया कि अपने सरदार के लेने के लिये खड़े हो जाओ या (हुज़ूर ﷺ) ने यूँ फ़र्माया) अपने से बेहतर लीडर के लिये खड़े हो जाओ। उसके बाद आपने उनसे फ़र्माया कि बनू कुरैज़ा ने तुमको ष़ालिष़ मानकर हथियार डाल दिये हैं। चुनाँचे सअद (रज़ि.) ने ये फ़ैसला किया कि जितने लोग उनमें जंग के क़ाबिल हैं उन्हें क़त्ल कर दिया जाए और उनके बच्चों और औरतों को क़ैदी बना लिया जाए। हुज़ूर (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि तुमने अल्लाह के फ़ैसले के मुताबिक़

٤١٢١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدٍ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا أُمَامَةَ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: نَزَلَ أَهْلُ قُرَيْظَةَ عَلَى حُكْمِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ، فَأَرْسَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى سَعْدٍ، فَأَتَى عَلَى حِمَارٍ فَلَمَّا دَنَا مِنَ الْمَسْجِدِ، قَالَ لِلأَنْصَارِ: ((قُومُوا إِلَى سَيِّدِكُمْ أَوْ خَيْرِكُمْ)) فَقَالَ: ((هَؤُلاَءِ نَزَلُوا عَلَى حُكْمِكَ)) فَقَالَ: تَقْتُلُ مُقَاتِلَتَهُمْ وَتَسْبِي ذَرَارِيَّهُمْ قَالَ: ((قَضَيْتَ بِحُكْمِ اللهِ وَرُبَّمَا قَالَ : بِحُكْمِ الْمَلِكِ)).

फ़ैसला किया या ये फ़र्माया कि जैसे बादशाह (या'नी अल्लाह) का हुक्म था। (राजेअ : 4043)

[راجع: ٤٠٤٣]

4122. हमसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन नुमेर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर सअ़द (रज़ि.) ज़ख़्मी हो गये थे। क़ुरैश के एक काफ़िर शख़्स, हस्सान बिन उ़र्क़ा नामी ने उन पर तीर चलाया था और वो उनके बाज़ू की रग में आकर लगा था। नबी करीम (ﷺ) ने उनके लिये मस्जिद में एक डेरा लगा दिया था ताकि क़रीब से उनकी अ़यादत करते रहें। फिर जब आप ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ से वापस लौटे और हथियार रखकर ग़ुस्ल किया तो जिब्रईल (अ़लैहि.) आपके पास आए। वो अपने सर से ग़ुबार झाड़ रहे थे। उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) से कहा आपने हथियार रख दिये। अल्लाह की क़सम! अभी मैंने हथियार नहीं उतारे हैं। आपको उन पर फ़ौजकशी करनी है। हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा कि किन पर? तो उन्होंने बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ इशारा किया। आँहुज़ूर (ﷺ) बनू क़ुरैज़ा तक पहुँचे (और उन्होंने इस्लामी लश्कर के पन्द्रह दिन के सख़्त घेराव के बाद) सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) को षालिष मानकर हथियार डाल दिये। आँहुज़ूर (ﷺ) ने सअ़द (रज़ि.) को फ़ैसला का इख़्तियार दे दिया। सअ़द (रज़ि.) ने कहा कि मैं उनके बारे में फ़ैसला करता हूँ कि जितने लोग उनके जंग करने के क़ाबिल हैं वो क़त्ल कर दिये जाएँ, उनकी औरतें और बच्चे क़ैद कर लिये जाएँ और उनका माल तक़्सीम कर लिया जाए। हिशाम ने बयान किया कि फिर मुझे मेरे वालिद ने आ़इशा (रज़ि.) से ख़बर दी कि सअ़द (रज़ि.) ने ये दुआ़ की थी, ऐ अल्लाह! तू ख़ूब जानता है कि इससे ज़्यादा मुझे कोई चीज़ अ़ज़ीज़ नहीं कि मैं तेरे रास्ते में उस क़ौम से जिहाद करूँ जिसने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया और उन्हें उनके वतन से निकाला लेकिन अब ऐसा मा'लूम होता है कि तूने हमारी और उनकी लड़ाई अब ख़त्म कर दी है। लेकिन अगर क़ुरैश से हमारी लड़ाई का कोई भी सिलसिला अभी बाक़ी हो तो मुझे उसके लिये ज़िन्दा रखिये। यहाँ तक कि मैं तेरे रास्ते में उनसे जिहाद करूँ और अगर लड़ाई के सिलसिले को तूने ख़त्म ही कर दिया है तो मेरे ज़ख़्मों को फिर से ताज़ा कर दे और उसी में मेरी मौत वाक़ेअ़ कर दे। इस दुआ़ के बाद सीने पर उनका ज़ख़्म फिर से ताज़ा हो

٤١٢٢- حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، قَالَتْ: أُصِيبَ سَعْدٌ يَوْمَ الْخَنْدَقِ رَمَاهُ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ يُقَالُ لَهُ حِبَّانُ ابْنُ الْعَرِقَةِ : رَمَاهُ فِي الأَكْحَلِ فَضَرَبَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْمَةً فِي الْمَسْجِدِ لِيَعُودَهُ مِنْ قَرِيبٍ فَلَمَّا رَجَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنَ الْخَنْدَقِ، وَضَعَ السِّلاَحَ وَاغْتَسَلَ فَأَتَاهُ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ وَهُوَ يَنْفُضُ رَأْسَهُ مِنَ الْغُبَارِ فَقَالَ: قَدْ وَضَعْتَ السِّلاَحَ، وَاللهِ مَا وَضَعْتُهُ اخْرُجْ إِلَيْهِمْ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَأَيْنَ؟)) فَأَشَارَ إِلَى بَنِي قُرَيْظَةَ فَأَتَاهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَنَزَلُوا عَلَى حُكْمِهِ فَرَدَّ الْحُكْمَ إِلَى سَعْدٍ قَالَ: فَإِنِّي أَحْكُمُ فِيهِمْ أَنْ تُقْتَلَ الْمُقَاتِلَةُ وَأَنْ تُسْبَى النِّسَاءُ وَالذُّرِّيَّةُ وَأَنْ تُقْسَمَ أَمْوَالُهُمْ. قَالَ هِشَامٌ فَأَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ سَعْدًا قَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ أُجَاهِدَهُمْ فِيكَ، مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا رَسُولَكَ ﷺ وَأَخْرَجُوهُ اللَّهُمَّ فَإِنِّي أَظُنُّ أَنَّكَ قَدْ وَضَعْتَ الْحَرْبَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ، فَإِنْ كَانَ بَقِيَ مِنْ حَرْبِ قُرَيْشٍ شَيْءٌ فَأَبْقِنِي لَهُ، حَتَّى أُجَاهِدَهُمْ فِيكَ وَإِنْ كُنْتَ وَضَعْتَ الْحَرْبَ فَافْجُرْهَا وَاجْعَلْ مَوْتِي

गया। मस्जिद में क़बीला बनू ग़िफ़ार के कुछ सहाबा का भी एक डेरा था। ख़ून उनकी तरफ़ बहकर आया तो वो घबराए और उन्होंने कहा, ऐ डेरे वालों! तुम्हारी तरफ़ से ये ख़ून हमारी तरफ़ क्यूँ बहकर आ रहा है? देखा तो सअद (रज़ि.) के ज़ख़्म से ख़ून बह रहा था, उनकी वफ़ात उसी में हुई।

فِيها فَانْفَجَرَتْ مِنْ لَبَّتِهِ فَلَمْ يَرُعْهُمْ الْمَسْجِدِ خَيْمَةٌ مِنْ بَنِي غِفَارٍ إِلاَّ الدَّمُ يَسِيلُ إِلَيْهِمْ. فَقَالُوا : يَا أَهْلَ الْخَيْمَةِ مَا هَذَا الَّذِي يَأْتِينَا وَفِي مِنْ قِبَلِكُمْ فَإِذَا سَعْدٌ يَغْذُو جُرْحُهُ دَمًا فَمَاتَ مِنْهَا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ.

[راجع: ٤٦٣]

तशरीह : हिजरत के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने यहूदियों के मुख़्तलिफ़ क़बीलों और आसपास के दूसरे मुश्तरक अरब क़बीलों से सुलह कर ली थी। लेकिन यहूदी बराबर इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशों मे लगे रहते थे। दरपर्दा तो उनकी तरफ़ से मुआहिदा की ख़िलाफ़वर्ज़ी बराबर ही होती रहती थी लेकिन ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर जो इंतिहाई फ़ैसलाकुन ग़ज़्वा था, उसमें ख़ास तौर से बनू क़ुरैज़ा ने बहुत खुलकर क़ुरैश का साथ दिया और मुआहिदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी की थी। इसलिये ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के फ़ौरन बाद अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि मदीना को उनसे पाक करना ही ज़रूरी है। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। क़ुर्आन पाक की सूरह हश्र इसी वाक़िये के बारे में नाज़िल हुई। एक रिवायत में है कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) लेटे हुए थे। इत्तिफ़ाक़ से एक बकरी आई और उसने सीना पर अपना खुर रख दिया जिससे उनका ज़ख़्म फिर से ताज़ा हो गया। जो उनकी वफ़ात का सबब हुआ। (रज़ि.)

4123. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अदी बिन षाबित ने ख़बर दी, उन्होंने बरा बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हस्सान बिन षाबित (रज़ि.) से फ़र्माया कि मुश्रिकीन की हिज्व कर या (आँहुज़ूर ﷺ ने उसके बजाय) हाजिहिम फ़र्माया जिब्रईल (अ) तुम्हारे साथ हैं। (राजेअ : 3213)

٤١٢٣ - حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيٌّ أَنَّهُ سَمِعَ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِحَسَّانَ يَوْمَ قُرَيْظَةَ ((اهْجُهُمْ - أَوْ هَاجِهِمْ - وَجِبْرِيلُ مَعَكَ)).[راجع: ٣٢١٣]

4124. और इब्राहीम बिन तहमान ने शैबानी से ये ज़्यादा किया है कि उनसे अदी बिन षाबित ने बयान किया और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-बनू क़ुरैज़ा के मौक़ा पर हस्सान बिन षाबित (रज़ि.) से फ़र्माया था कि मुश्रिकीन की हिज्व करो जिब्रईल (अलैहि.) तुम्हारी मदद पर हैं। (राजेअ : 3213)

٤١٢٤ - وَزَادَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ قُرَيْظَةَ لِحَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ ((اهْجُ الْمُشْرِكِينَ فَإِنَّ جِبْرِيلَ مَعَكَ)).[راجع: ٣٢١٣]

तशरीह : तमाम अहादीषे मज़्कूरा बाला में किसी न किसी तरह से यहूदियाने बनू क़ुरैज़ा से लड़ाई का ज़िक्र है। इसीलिये उनको इस बाब के ज़ेल लाया गया। यहूद अपनी फ़ितरत के मुताबिक़ हर वक़्त मुसलमानों की हार के लिये सोचते रहते थे। इसीलिये मदीना को उनसे साफ़ करना ज़रूरी हुआ और ये जंग लड़ी गई जिसमें अल्लाह ने मदीना को उन शरीरुल फ़ितरत यहूदियों से पाक कर दिया।

बाब 32 : ग़ज़्व-ए-ज़ातुर्रिक़ाअ का बयान

٣٢ - باب غَزْوَةِ ذَاتِ الرِّقَاعِ

ये जंग मुहारिब क़बीले से हुई थी जो ख़स्फ़ा की औलाद थे और ये ख़स्फ़ा बनू षअलबा की औलाद में से था। जो ग़त्फ़ान क़बीला की एक शाख़ है। नबी करीम (ﷺ) ने इस ग़ज़्वा में मुक़ामे नख़्ल पर पड़ाव किया था। ये ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के बाद वाक़ेअ हुआ क्योंकि अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के बाद हब्श से मदीना आए थे (और ग़ज़्व-ए-ज़ातुर्रिक़ाअ में उनकी शिर्कत रिवायतों से षाबित है)

وَهْيَ غَزْوَةُ مُحَارِبِ خَصَفَةَ مِنْ بَنِي ثَعْلَبَةَ مِنْ غَطَفَانَ. فَنَزَلَ نَخلاً وَهْيَ بَعْدَ خَيْبَرَ لأَنَّ أَبَا مُوسَى جَاءَ بَعْدَ خَيْبَرَ

4125. और अब्दुल्लाह बिन रजाअ ने कहा, उन्हें इमरान क़त्तान ने ख़बर दी, उन्हे यह्या बिन कषीर ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने अस्हाब के साथ नमाज़े ख़ौफ़ सातवें (साल या सातवीं ग़ज़्वा) में पढ़ी थी। या'नी ग़ज़्वा ज़ातुर्रिक़ाअ में। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़े ख़ौफ़ ज़ी क़र्द में पढ़ी थी।

(दीगर मक़ाम : 4126, 4127, 4130, 4138)

٤١٢٥- وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ، أَخْبَرَنَا عِمْرَانُ الْقَطَّانُ عَنْ يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى بِأَصْحَابِهِ فِي الْخَوْفِ فِي غَزْوَةِ السَّابِعَةِ غزوة ذَاتِ الرِّقَاعِ. قَالَ ابنُ عَبَّاسٍ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ يَعْنِي صَلاَةَ الْخَوْفِ بِذِي قَرَدٍ.

[أطرافه في: ٤١٢٦، ٤١٢٧، ٤١٣٠، ٤١٣٧].

4126. और बक्र बिन सवा'दा ने बयान किया, उनसे ज़ियाद बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उनसे अबू मूसा ने और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-मुहारिब और बनी षअलबा में अपने साथियों को नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ाई थी। (राजेअ : 4125)

٤١٢٦- وَقَالَ بَكْرُ بْنُ سَوَادَةَ: حَدَّثَنِي زِيَادُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ أَبِي مُوسَى، أَنَّ جَابِرًا حَدَّثَهُمْ قَالَ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ بِهِمْ يَوْمَ مُحَارِبٍ وَثَعْلَبَةَ. [راجع: ٤١٢٥]

4127. और इब्ने इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने वहब बिन कैसान से सुना, उन्होंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ग़ज़्व-ए-ज़ातुर्रिक़ाअ के लिये मक़ामे नख़्ल से रवाना हुए थे। वहाँ आपका क़बीला ग़त्फ़ान की एक जमाअत से सामना हुआ लेकिन कोई जंग नहीं हुई और चूँकि मुसलमानों पर कुफ़्फ़ार के (अचानक हमले का) ख़तरा था, इसलिये हुज़ूर (ﷺ) ने दो रकअत नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ाई। और यज़ीद ने सलमा बिन अल अकूअ (रज़ि.) से बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-ज़ुल क़र्द में शरीक था। (राजेअ : 4125)

٤١٢٧- وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ : سَمِعْتُ وَهْبَ بْنَ كَيْسَانَ، سَمِعْتُ جَابِرًا خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى ذَاتِ الرِّقَاعِ مِنْ نَخْلٍ فَلَقِيَ جَمْعًا مِنْ غَطَفَانَ فَلَمْ يَكُنْ قِتَالٌ وَأَخَافَ النَّاسُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا، فَصَلَّى النَّبِيُّ ﷺ رَكْعَتِي الْخَوْفِ. وَقَالَ يَزِيدُ عَنْ سَلَمَةَ غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ الْقَرَدِ.

[راجع: ٤١٢٥]

4128. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उमामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक ग़ज़्वा के लिये निकले। हम छः साथी थे और हम सबके लिये सिर्फ़ एक ऊँट था, जिस पर बारी बारी हम सवार होते थे। (पैदल तवील और पुर मशक़्क़त सफ़र की वजह से) हमारे पाँव फट गये। मेरे भी पाँव फट गये थे। नाख़ून भी झड़ गये थे। चुनाँचे हम क़दमों पर कपड़े की पट्टी बाँध बाँधकर चल रहे थे। इसीलिये उसका नाम ग़ज़्व-ए-ज़ातुर्रिक़ाअ पड़ा, क्योंकि हमने क़दमों को पट्टियों से बाँधा था। अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने ये हदीष तो बयान कर दी, लेकिन फिर उनको उसका इज़्हार अच्छा नहीं मा'लूम हुआ। फ़र्माने लगे कि मुझे ये हदीष बयान न करनी चाहिये थी। उनको अपना नेक अमल ज़ाहिर करना बुरा मा'लूम हुआ।

٤١٢٨ – حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَزَاةٍ وَنَحْنُ سِتَّةُ نَفَرٍ بَيْنَنَا بَعِيرٌ نَعْتَقِبُهُ فَنَقِبَتْ أَقْدَامُنَا وَنَقِبَتْ قَدَمَايَ وَسَقَطَتْ أَظْفَارِي فَكُنَّا نَلُفُّ عَلَى أَرْجُلِنَا الْخِرَقَ فَسُمِّيَتْ غَزْوَةَ ذَاتِ الرِّقَاعِ لِمَا كُنَّا نَعْصِبُ مِنَ الْخِرَقِ عَلَى أَرْجُلِنَا. وَحَدَّثَ أَبُو مُوسَى بِهَذَا الْحَدِيثِ ثُمَّ كَرِهَ ذَلِكَ قَالَ: مَا كُنْتُ أَصْنَعُ بِأَنْ أَذْكُرَهُ كَأَنَّهُ كَرِهَ أَنْ يَكُونَ شَيْءٌ مِنْ عَمَلِهِ أَفْشَاهُ.

चूँकि उस जंग में पैदल चलने की तकलीफ़ से क़दमों पर चिथड़े लपेटने की नौबत आ गई थी। इसीलिये उसे ग़ज़्व-ए-जातुर्रिक़ाअ के नाम से मौसूम किया गया।

4129. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयानकिया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे यज़ीद बिन रूमान ने, उनसे स़ालेह बिन ख़व्वात ने, एक ऐसे स़हाबी से बयान किया जो नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-ज़ातुर्रिक़ाअ में शरीक थे कि नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ी थी। उसकी स़ूरत ये हुईथी कि पहले एक जमाअत ने आपकी इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी। उस वक़्त दूसरी जमाअत (मुसलमानों की) दुश्मन के मुक़ाबले पर खड़ी थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उस जमाअत को जो आपके पीछे स़फ़ में खड़ी थी, एक रकअत नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ाई और उसके बाद आप खड़े रहे। उस जमाअत ने इस अ़र्से में अपनी नमाज़ पूरी कर ली और वापस आकर दुश्मन के मुक़ाबले में खड़े हो गये। उसके बाद दूसरी जमाअत आई तो हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें नमाज़ की दूसरी रकअत पढ़ाई जो बाक़ी रह गई थी और (रुकूअ व सज्दा के बाद) आप क़ायदा में बैठे रहे। फिर उन लोगों ने जब अपनी नमाज़ (जो बाक़ी रह गई थी) पूरी कर ली तो आपने उनके साथ सलाम फेरा।

٤١٢٩ – حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَزِيدَ بْنِ رُومَانَ، عَنْ صَالِحِ بْنِ خَوَّاتٍ، عَمَّنْ شَهِدَ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ ذَاتِ الرِّقَاعِ صَلَّى صَلاَةَ الْخَوْفِ، أَنَّ طَائِفَةً صَفَّتْ مَعَهُ وَطَائِفَةٌ وِجَاهَ الْعَدُوِّ، فَصَلَّى بِالَّتِي مَعَهُ رَكْعَةً ثُمَّ ثَبَتَ قَائِمًا وَأَتَمُّوا لأَنْفُسِهِمْ ثُمَّ انْصَرَفُوا فَصَفُّوا وِجَاهَ الْعَدُوِّ، وَجَاءَتِ الطَّائِفَةُ الأُخْرَى فَصَلَّى بِهِمُ الرَّكْعَةَ الَّتِي بَقِيَتْ مِنْ صَلاَتِهِ، ثُمَّ ثَبَتَ جَالِسًا وَأَتَمُّوا لأَنْفُسِهِمْ ثُمَّ سَلَّمَ بِهِمْ.

4130. और मुआज़ ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे अबू ज़ुबैर ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मुक़ामे नख़्ला में थे। फिर उन्होंने नमाज़े ख़ौफ़ का ज़िक्र किया। इमाम मालिक ने बयान किया कि नमाज़े ख़ौफ़ के सिलसिले में जितनी रिवायात मैंने सुनी हैं ये रिवायत उन सब में ज़्यादा बेहतर है। मुआज़ बिन हिशाम के साथ इस ह़दीष़ को लैष़ बिन सअ़द ने भी हिशाम बिन सअ़द मदनी से, उन्होंने ज़ैद बिन असलम से रिवायत किया और उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-बनी अन्मार में (नमाज़े ख़ौफ़) पढ़ी थी। (राजेअ : 4125)

٤١٣٠- وَقَالَ مُعَاذٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِنَخْلٍ فَذَكَرَ صَلاَةَ الْخَوْفِ قَالَ مَالِكٌ : وَذَلِكَ أَحْسَنُ مَا سَمِعْتُ فِي صَلاَةِ الْخَوْفِ. تَابَعَهُ اللَّيْثُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ أَنَّ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ حَدَّثَهُ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ فِي غَزْوَةِ بَنِي أَنْمَارٍ.
[راجع: ٤١٢٥]

4131. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने, उनसे स़ालेह़ बिन ख़व्वात ने, उनसे सहल बिन अबी ह़ष़्मा ने बयान किया कि (नमाज़े ख़ौफ़ में) इमाम क़िब्ला रू होकर खड़ा होगा और मुसलमानों की एक जमाअ़त उसके साथ नमाज़ में शरीक होगी। उस अ़र्से में मुसलमानों की दूसरी जमाअ़त दुश्मन के मुक़ाबले पर होगी। उन्हीं की त़रफ़ मुँह किये हुए। इमाम अपने साथ वाली जमाअ़त को पहले एक रकअ़त नमाज़ पढ़ाएगा (एक रकअ़त के बाद फिर) ये जमाअ़त खड़ी हो जाएगी और ख़ुद (इमाम के बग़ैर) उसी जगह एक रुकूअ़ और दो सज्दे करके दुश्मन के मुक़ाबले पर जाकर खड़ी हो जाएगी। जहाँ दूसरी जमाअ़त को एक रकअ़त नमाज़ पढ़ाएगा। इस त़रह इमाम की दो रकअ़त पूरी हो जाएँगी और ये दूसरी जमाअ़त एक रुकूअ़ और दो सज्दा ख़ुद करेगी।

٤١٣١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقَطَّانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ الأَنْصَارِيِّ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ خَوَّاتٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ، قَالَ : يَقُومُ الإِمَامُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ وَطَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَهُ، وَطَائِفَةٌ مِنْ قِبَلِ الْعَدُوِّ وُجُوهُهُمْ إِلَى الْعَدُوِّ، فَيُصَلِّي بِالَّذِينَ مَعَهُ رَكْعَةً ثُمَّ يَقُومُونَ فَيَرْكَعُونَ لأَنْفُسِهِمْ رَكْعَةً وَيَسْجُدُونَ سَجْدَتَيْنِ فِي مَكَانِهِمْ ثُمَّ يَذْهَبُ هَؤُلاَءِ إِلَى مَقَامِ أُولَئِكَ، فَيَجِيءُ أُولَئِكَ فَيَرْكَعُ بِهِمْ رَكْعَةً، فَلَهُ ثِنْتَانِ ثُمَّ يَرْكَعُونَ وَيَسْجُدُونَ سَجْدَتَيْنِ.

हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, उनसे शुअ़बा ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद क़ासिम बिन मुहम्मद ने, उनसे स़ालेह़ बिन ख़व्वात ने और उनसे सहल बिन अबी ह़ष़्मा (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है।

.....- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ صَالِحِ بْنِ خَوَّاتٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

.....- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدُ اللهِ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ يَحْيَى

मुझसे मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने हातिम ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उन्होंने क़ासिम से सुना, उन्हें सालेह बिन ख़व्वात ने ख़बर दी, उन्होंने सहल बिन अबी हस्मा (रज़ि.) से उनका क़ौल बयान किया।

سَمِعَ الْقَاسِمَ أَخْبَرَنِي صَالِحُ بْنُ خَوَّاتٍ عَنْ سَهْلٍ حَدَّثَهُ قَوْلَهُ.

4132. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे सालिम ने ख़बर दी और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अत्राफ़े नज्द में नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्वा के लिये गया था वहाँ हम दुश्मन के आमने सामने हुए और उनके मुक़ाबले में सफ़बन्दी की।

(राजेअ : 942)

٤١٣٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ قِبَلَ نَجْدٍ فَوَازَيْنَا الْعَدُوَّ فَصَافَفْنَا لَهُمْ.

[راجع: ٩٤٢]

4133. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे मअमर ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने और उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक जमाअत के साथ नमाज़े (ख़ौफ़) पढ़ी और दूसरी जमाअत इस अर्से में दुश्मन के मुक़ाबले पर खड़ी थी। फिर ये जमाअत जब अपने दूसरे साथियों की जगह (नमाज़ पढ़कर) चली गई तो दूसरी जमाअत आई और हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें भी एक रकअत नमाज़ पढ़ाई। उसके बाद आपने उस जमाअत के साथ सलाम फेरा। आख़िर उस जमाअत ने खड़े होकर अपनी एक रकअत पूरी की और पहली जमाअत ने भी खड़े होकर अपनी एक रकअत पूरी की।

(राजेअ : 942)

٤١٣٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى بِإِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ، وَالطَّائِفَةُ الأُخْرَى مُوَاجِهَةُ الْعَدُوِّ ثُمَّ انْصَرَفُوا فِي مَقَامِ أَصْحَابِهِمْ فَجَاءَ أُولَئِكَ فَصَلَّى بِهِمْ رَكْعَةً، ثُمَّ سَلَّمَ عَلَيْهِمْ، ثُمَّ قَامَ هَؤُلاَءِ فَقَضَوْا رَكْعَتَهُمْ، وَقَامَ هَؤُلاَءِ فَقَضَوْا رَكْعَتَهُمْ.

[راجع: ٩٤٢]

4134. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे सिनान और अबू सलमा ने बयान किया और उन्हें जाबिर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ अत्राफ़े नज्द में लड़ाई के लिये गये थे। (राजेअ : 2910)

٤١٣٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنِي شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : حَدَّثَنِي سِنَانٌ وَأَبُو سَلَمَةَ أَنَّ جَابِرًا أَخْبَرَ أَنَّهُ غَزَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ قِبَلَ نَجْدٍ.[راجع: ٢٩١٠]

4135. हमसे इस्माईल बिन अबी उवेस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे मुहम्मद बिन अबी अतीक़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सिनान बिन सिनान दौली ने, उन्हें जाबिर (रज़ि.) ने

٤١٣٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سِنَانِ بْنِ أَبِي سِنَانٍ

ख़बर दी कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ अत्राफ़े नज्द में ग़ज़्वा के लिये गये थे। फिर जब आँहज़रत (ﷺ) वापस हुए तो वो भी वापस हुए। क़ैलूला का वक़्त एक वादी में आया, जहाँ बबूल के पेड़ बहुत थे। चुनाँचे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) वहीं उतर गये और सहाबा (रज़ि.) पेड़ों के साये केलिये पूरी वादी में फैल गये। हुज़ूर (ﷺ) ने भी एक बबूल के पेड़ के नीचे क़याम किया और अपनी तलवार उस पेड़ पर लटका दी। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि अभी थोड़ी देर हमें सोये हुए हुई थी कि आँहज़रत (ﷺ) ने हमें पुकारा। हम जब ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपके पास एक बद्दू बैठा हुआ था। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस शख़्स ने मेरी तलवार (मुझ पर) खींच ली थी, मैं उस वक़्त सोया हुआ था, मेरी आँख खुली तो मेरी नंगी तलवार उसके हाथ में थी। इसने मुझसे कहा, तुम्हें मेरे हाथ से आज कौन बचाएगा? मैंने कहा कि अल्लाह! अब देखो ये बैठा हुआ है। हुज़ूर अकरम (ﷺ) ने उसे फिर कोई सज़ा नहीं दी। (दूसरी सनद) (राजेअ : 2910)

الدُّؤَلِيِّ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّهُ غَزَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ قِبَلَ نَجْدٍ فَلَمَّا قَفَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَفَلَ معهُ فَأَدْرَكَتْهُمُ الْقَائِلَةُ فِي وَادٍ كَثِيرِ الْعِضَاهِ، فَنَزَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَتَفَرَّقَ النَّاسُ فِي الْعِضَاهِ يَسْتَظِلُّونَ بِالشَّجَرِ، وَنَزَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ تَحْتَ سَمُرَةٍ، فَعَلَّقَ بِهَا سَيْفَهُ قَالَ جَابِرٌ، فَنِمْنَا نَوْمَةً ثُمَّ إِذَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدْعُونَا فَجِئْنَاهُ، فَإِذَا عِنْدَهُ أَعْرَابِيٌّ جَالِسٌ ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ هَذَا اخْتَرَطَ سَيْفِي وَأَنَا نَائِمٌ فَاسْتَيْقَظْتُ وَهُوَ فِي يَدِهِ صَلْتًا فَقَالَ لِي : مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟ قُلْتُ: اللهُ)) فَهَا هُوَ ذَا جَالِسٌ ثُمَّ لَمْ يُعَاقِبْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ.

[راجع: ٢٩١٠]

4136. और अबान ने कहा कि हमसे यह्या बिन अबी कषीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ ज़ातुर्रिक़ाअ में थे। फिर हम एक ऐसी जगह आए जहाँ बहुत घने साया का पेड़ था। वो पेड़ हमने आँहज़रत (ﷺ) के लिये मख़सूस कर दिया कि आप वहाँ आराम फ़र्माएँ। बाद में मुश्रिकीन में से एक शख़्स आया, हुज़ूर (ﷺ) की तलवार पेड़ से लटक रही थी। उसने वो तलवार हुज़ूर (ﷺ) पर खींच ली और पूछा, तुम मुझसे डरते हो? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। इस पर उसने पूछा, आज मेरे हाथ से तुम्हें कौन बचाएगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह! फिर सहाबा (रज़ि.) ने उसे डांटा धमकाया और नमाज़ की तक्बीर कही गई। तो हुज़ूर (ﷺ) ने पहले एक जमाअत को दो रकअत नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ाई जब वो जमाअत (आँहुज़ूर ﷺ के पीछे से) हट गई तो आपने दूसरी जमाअत को भी दो रकअत नमाज़ पढ़ाई। इस तरह नबी करीम (ﷺ) की चार रकअत नमाज़ हुई। लेकिन मुक़्तदियों की सिर्फ़ दो

٤١٣٦- وقَالَ أَبَانُ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرٍ قَالَ : كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذَاتِ الرِّقَاعِ فَإِذَا أَتَيْنَا عَلَى شَجَرَةٍ ظَلِيلَةٍ تَرَكْنَاهَا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَسَيْفُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُعَلَّقٌ بِالشَّجَرَةِ فَاخْتَرَطَهُ قَالَ لَهُ: تَخَافُنِي. فَقَالَ: ((لاَ)) قَالَ: ((فَمَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟)) قَالَ: اللهُ فَتَهَدَّدَهُ أَصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وسلم وأُقِيمَتِ الصَّلاَةُ فَصَلَّى بِطَائِفَةٍ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ تَأَخَّرُوا وصَلَّى بِالطَّائِفَةِ

दो रकअ़त और मुसद्दद ने बयान किया, उनसे अबू अ़वाना ने, उनसे अबू बसर ने कि उस शख़्स का नाम (जिसने आप पर तलवार खींची थी) ग़ोरष़ बिन हारिष़ था और आँहज़रत (ﷺ) ने उस ग़ज़्वा में क़बील-ए-मुहारिब ख़स्फ़ा से जंग की थी।

(राजेअ़ : 2910)

الأُخْرَى رَكْعَتَيْنِ وَكَانَ لِلنَّبِيِّ ﷺ أَرْبَعٌ وَلِلْقَوْمِ رَكْعَتَيْنِ. وَقَالَ مُسَدَّدٌ عَنْ أَبِي عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ اسْمُ الرَّجُلِ غَوْرَثُ بْنُ الْحَارِثِ، وَقَاتَلَ فِيهَا مُحَارِبَ خَصَفَةَ.

[راجع: ٢٩١٠]

4137. और अबुज़् ज़ुबैर ने जाबिर (रज़ि.) से बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ मुक़ामे नख़्ला में थे तो आपने नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ाई और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ नमाज़े ख़ौफ़ ग़ज़्व-ए-नज्द में पढ़ी थी। ये याद रहे कि अबू हुरैरह (रज़ि.) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में (सबसे पहले) ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर हाज़िर हुए थे।

(राजेअ़ : 4125)

٤١٣٧- وَقَالَ أَبُو الزُّبَيْرِ عَنْ جَابِرٍ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ بِنَخْلٍ فَصَلَّى الْخَوْفَ، وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ غَزْوَةَ نَجْدٍ صَلاَةَ الْخَوْفِ وَإِنَّمَا جَاءَ أَبُو هُرَيْرَةَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ أَيَّامَ خَيْبَرَ.

[راجع: ٤١٢٥]

तश्रीह : इस हदीष़ की शरह में हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़र्माते हैं **व कज़ालिक अख़रजहा इब्राहीमुल्हर्बी फी किताबि गरीबिल्हदीष़ि अन जाबिरिन क़ाल गज़ा रसूलुल्लाहि मुहारिब ख़फ़्सत बिनख़्लिन फराऊमिनल्मुस्लिमीन गज़्ज़तन फजाअ रजुलुम्मिन्हुम युक़ालु लहू गौरष बिन अल्हारिष़ हत्ता काम अला रसूलिल्लाहि (ﷺ) बिस्सैफ़ि फज़करहू व फीहि फ़क़ालल्आराबी गैर अन्नी उआहिदुक अल्ला उक़ातिलक व ला अकूनु मअ क़ौमिन युक़ातिलूनक फखल्ला सबीलहू फजाअ इला अस्हाबिही फक़ाल जिअतुकुम मिन इन्दि ख़ैरिन्नासि व क़द जक़रल्वाक़िदी फ़ी नहवि हाज़िहिल्क़िस्सति अन्नहू अस्लम व रजअ इला क़ौमिही फहतदा बिही ख़ल्कुन कष़ीर** (फत्हुल्बारी)। ख़ुलासा ये कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक खजूरों के इलाक़ा में ह़फ़्सा नामी क़बीले पर जिहाद किया और वापसी में मुसलमान एक जगह दोपहर में आराम लेने के लिए मुतफ़र्रिक़ होकर जगह जगह पेड़ों के नीचे सो गये। उस वक़्त उस क़बीला का एक आदमी ग़ौरष़ बिन हारिष़ नामी नंगी तलवार लेकर रसूले करीम (ﷺ) के सिरहाने खड़ा हो गया। पस ये सारा माजरा हुआ और उसमें ये भी है बाद में जब वो देहाती नाकाम हो गया तो उसने कहा कि मैं आपसे तर्के जंग का मुआहिदा करता हूँ और इस बात का भी कि मैं आपसे लड़ने वाली क़ौम का साथ नहीं दूँगा। आँहज़रत (ﷺ) ने उसका रास्ता छोड़ दिया और वो अपने साथियों के पास आया और उनसे कहा कि ऐसे बुज़ुर्ग शख़्स के पास से आया हूँ कि जो बेहतरीन क़िस्म का आदमी है। वाक़दी ने ऐसे ही क़िस्सा में ये भी ज़िक्र किया है कि बाद में वो शख़्स मुसलमान हो गया और अपनी क़ौम में वापस आया और उसके ज़रिये बहुत सी मख़्लूक़ ने हिदायत हासिल की।

बाब 33 : ग़ज़्व-ए-बनी मुस्तलिक़ का बयान जो क़बीला बनू ख़ुज़ाअ से हुआ था उसका दूसरा नाम ग़ज़्व-ए-मरयसीअ़ है

٣٣- باب غَزْوَةِ بَنِي الْمُصْطَلِقِ مِنْ خُزَاعَةَ وَهْيَ غَزْوَةُ الْمُرَيْسِيعِ

इब्ने इस्हाक़ ने बयान किया कि ये ग़ज़्वा 6 हिजरी में हुआ था और मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया कि 4 हिजरी में और नोअ़मान बिन राशिद ने ज़ुहरी से बयान किया कि वाक़िया इफ़्क ग़ज़्व-ए-मरयसीअ़ में पेश आया था।

قَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ : وَذَلِكَ سَنَةَ سِتٍّ، وَقَالَ مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، سَنَةَ أَرْبَعٍ. وَقَالَ النُّعْمَانُ بْنُ رَاشِدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ : كَانَ حَدِيثُ الإِفْكِ فِي غَزْوَةِ الْمُرَيْسِيعِ.

इसीलिये उसके बारे में ह़दीष़ इफ़्क का बयान हो रहा है। ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब की तह़क़ीक़ ये है कि ये ग़ज़्वा 5 हिजरी में हुआ। **व क़ाल मूसा बिन उक़्बत सनत अर्बइन कज़ा ज़करहुल बुख़ारी व कअन्नहू सबक फलम्मा अराद अंय्यक्तुब सनत खम्सिन फ कतब सनत अर्बइन** (फ़त्हुल बारी)

4138. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें रबीआ बिन अबी अ़ब्दुर्रह़मान ने, उन्हें मुहम्मद बिन यह़्या बिन ह़ब्बान ने और उनसे अबू मुहैरिज़ ने बयान किया कि मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) अंदर मौजूद थे। मैं उनके पास बैठ गया और अ़ज़्ल के बारे में उनसे सवाल किया। उन्होंने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़्वा बनी अल् मुस्तलिक़ के लिये निकले। इस ग़ज़्वे में हमें कुछ अ़रब के क़ैदी मिले (जिनमें औरतें भी थीं) फिर उस सफ़र में हमें औरतों की ख़्वाहिश हुई और औरत के बिना रहना हम पर मुश्किल हो गया। दूसरी त़रफ़ हम अ़ज़्ल करना चाहते थे (इस डर से कि बच्चा पैदा न हो) हमारा इरादा यही था कि अ़ज़्ल कर लें लेकिन फिर हमने सोचा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मौजूद हैं। आपसे पूछे बग़ैर अ़ज़्ल करना मुनासिब न होगा। चुनाँचे हमने आपसे इसके बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि अगर तुम अ़ज़्ल न करो फिर भी कोई ह़र्ज नहीं क्योंकि क़यामत तक जो जान पैदा होने वाली है वो ज़रूर पैदा होकर रहेगी। (राजेअ : 2229)

٤١٣٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ عَنِ ابْنِ مُحَيْرِيزٍ أَنَّهُ قَالَ: دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ فَرَأَيْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ فَجَلَسْتُ إِلَيْهِ فَسَأَلْتُهُ عَنِ الْعَزْلِ قَالَ أَبُو سَعِيدٍ خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ بَنِي الْمُصْطَلِقِ فَأَصَبْنَا سَبْيًا مِنْ سَبْيِ الْعَرَبِ فَاشْتَهَيْنَا النِّسَاءَ وَاشْتَدَّتْ عَلَيْنَا الْعُزْبَةُ وَأَحْبَبْنَا الْعَزْلَ فَأَرَدْنَا أَنْ نَعْزِلَ، وَقُلْنَا نَعْزِلُ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَ أَظْهُرِنَا قَبْلَ أَنْ نَسْأَلَهُ فَسَأَلْنَاهُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ : ((مَا عَلَيْكُمْ أَنْ لاَ تَفْعَلُوا مَا مِنْ نَسَمَةٍ كَائِنَةٍ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِلاَّ وَهِيَ كَائِنَةٌ)).

[راجع: ٢٢٢٩]

अ़ज़्ल का मफ़्हूम ये है कि मर्द अपनी बीवी के साथ हमबिस्तरी करे और जब इंज़ाल का वक़्त क़रीब हो तो आल-ए-तनासुल को निकाल ले ताकि बच्चा पैदा न हो। क़त्अ़े नस्ल की ये भी एक सूरत थी जिसे आँह़ज़रत (ﷺ) ने पसन्द नहीं फ़र्माया आज त़रह़ तरह़ से क़त्अ़े नस्ल की दुनिया के बेशतर मुमालिक में कोशिश जारी है जो इस्लाम की रू से क़त्अ़न नाजाइज़ है। **व क़द ज़कर हाज़िहिल्क़िस्सत इब्नु सअ़द नहव मा ज़कर इब्नु इस्हाक़ व अन्नल्हारिष़ कान जमअ़ जुमूअ़न व अर्सल ऐनन तातीहि बिखब्रिल्मुस्लिमीन फ़ज़फ़रू बिही फ़क़तलूहु फलम्मा बलगहू ज़ालिक बलग व तफर्रक़ल्जम्उ वन्तहन्नबिय्यु (ﷺ) इलल्माइ व हुवल्मुरैसीअ फसफ़्फ़ अस्हाबुल्क़िताल व रमूहुम बिन्नब्लि षुम्म इन्सानुन बल क़ुतिल मिन्हुम अशरतुन व उर्सिरल्बाक़ून रिजालन व निसाअन** (फ़त्हुल्बारी) ख़ुलास़ा ये कि ग़ज़्व-ए-बनू मुस्तलिक़ में मुसलमानों ने दस आदमियों को क़त्ल किया और बाक़ी को क़ैद कर लिया।

4139. हमसे मह़मूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सलमा ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ नज्द की त़रफ़ ग़ज़्वा के लिये गये। दोपहर का वक़्त हुआ तो आप एक जंगल में पहुँचे जहाँ बबूल के पेड़ बहुत थे। आपने घने पेड़ के नीचे साया

٤١٣٩- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَزْوَةَ نَجْدٍ فَلَمَّا أَدْرَكَتْهُ الْقَائِلَةُ

के लिये क़याम किया और पेड़ से अपनी तलवार लटका दी। सहाबा (रज़ि.) भी पेड़ों के नीचे साया हासिल करने के लिये फैल गये। अभी हम उसी कैफ़ियत में थे कि हुज़ूर (ﷺ) ने हमें पुकारा। हम हाज़िर हुए तो एक बदवी आपके सामने बैठा हुआ था। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये शख़्स मेरे पास आया तो मैं सो रहा था। इतने में उसने मेरी तलवार खींच ली और मैं भी बेदार हो गया। ये मेरी नंगी तलवार खींचे हुए मेरे सर पर खड़ा था। मुझसे कहने लगा कि आज मुझसे तुम्हें कौन बचाएगा? मैंने कहा कि अल्लाह! (वो शख़्स सिर्फ़ एक लफ़्ज़ से इतना डर गया कि) तलवार को नियाम में रखकर बैठ गया और देख लो। ये बैठा हुआ है। हुज़ूर (ﷺ) ने उसे कोई सज़ा नहीं दी।

وَهُوَ فِي وَادٍ كَثِيرِ الْعِضَاهِ فَنَزَلَ تَحْتَ شَجَرَةٍ وَاسْتَظَلَّ بِهَا وَعَلَّقَ سَيْفَهُ فَتَفَرَّقَ النَّاسُ فِي الشَّجَرِ يَسْتَظِلُّونَ وَبَيْنَا نَحْنُ كَذَلِكَ إِذْ دَعَانَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجِئْنَا فَإِذَا أَعْرَابِيٌّ قَاعِدٌ بَيْنَ يَدَيْهِ فَقَالَ: ((إِنَّ هَذَا أَتَانِي وَأَنَا نَائِمٌ فَاخْتَرَطَ سَيْفِي فَاسْتَيْقَظْتُ وَهُوَ قَائِمٌ عَلَى رَأْسِي مُخْتَرِطٌ سَيْفِي صَلْتًا قَالَ: مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّي؟ قُلْتُ اللهُ، فَشَامَهُ ثُمَّ قَعَدَ فَهُوَ هَذَا)). قَالَ: وَلَمْ يُعَاقِبْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ.

बाब 34 : ग़ज़्व-ए-अन्मार का बयान

٣٤- باب غَزْوَةِ أَنْمَارٍ

4140. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे उ़स्मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सराक़ा ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को ग़ज़्वा अन्मार में देखा कि नफ़्ल नमाज़ आप अपनी सवारी पर मश्रिक़ की तरफ़ मुँह किये हुए पढ़ रहे थे। (राजेअ़ : 400)

٤١٤٠- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ سُرَاقَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي غَزْوَةِ أَنْمَارٍ يُصَلِّي عَلَى رَاحِلَتِهِ مُتَوَجِّهًا قِبَلَ الْمَشْرِقِ مُتَطَوِّعًا.

[راجع: ٤٠٠]

तश्रीह : इब्ने अबी इस्हाक़ ने ज़िक्र किया है कि ये ग़ज़्वा माहे सफ़र में हुआ और इब्ने सअ़द का बयान है कि एक आदमी हलब से आया और उसने ख़बर दी कि बनू अन्मार और बनू षअ़लबा मुसलमानों से जंग के लिये जमा हो रहे हैं तो आप सफ़र की 10 तारीख़ को निकले और उनकी जगह में ज़ातुर्रिक़ाअ़ के मौक़े पर आए। ये भी कहा गया है कि ग़ज़्व-ए-अन्मार ग़ज़्व-ए-बनी मुस्तलिक़ के आख़िर में 27 सफ़र में वाक़ेअ़ हुआ। इसलिये कि अबुज़्ज़ुबैर ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत किया है कि आप ग़ज़्व-ए-बनी मुस्तलिक़ के लिये जा रहे थे। मैं हाज़िरे ख़िदमत हुआ और मैंने देखा कि आप ऊँट के ऊपर नमाज़ पढ़ रहे थे। लैष़ की रिवायत से भी इसकी ताईद होती है जिसमें ज़िक्र है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-बनी अन्मार में सलातुल ख़ौफ़ को अदा किया। ये भी एहतिमाल है कि मुतअ़द्दिद वाक़ियात हों। (फ़त्हुल बारी)

बाब 35 : वाक़िय-ए-इफ़्क का बयान

٣٥- باب حَدِيثِ الإِفْكِ

लफ़्ज़ इफ़्क। नज्सि और नजस की तरह है। बोलते हैं इफ़्कुहुम (सूरह अह्क़ाफ़ में) आया है व ज़ालिका इफ़्कुहुम वो बकसर-ए-हम्ज़ा है और ये बफ़त्हे हम्ज़ा बसकूने फ़ाअ और इफ़्कुहुम ये ब फ़त्हा हम्ज़ा व फ़ाअ भी है व काफ़ पढ़ा है तो तर्जुमा यूँ होगा उसने

وَالإِفْكُ بِمَنْزِلَةِ النِّجْسِ، وَالنَّجَسِ يُقَالُ: إِفْكُهُمْ: صَرْفُهُمْ عَنِ الإِيمَانِ وَكَذِبُهُمْ، كَمَا قَالَ ﴿يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أُفِكَ﴾ يُصْرَفُ

उनको ईमान से फेर दिया और छोटा बनाया जैसे सूरह वज़् ज़ारियात मे (यूफ़कू अन्हु मन उफ़िका) है या'नी क़ुर्आन से वही मुन्हरिफ़ होता है जो अल्लाह के इल्म में मुन्हरिफ़ क़रार पा चुका है।

غثًا بن منزل.

इस बाब में उस झूठे इल्ज़ाम का तफ़्सीली बयान है जो मुनाफ़िक़ीन ने ह़ज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) के ऊपर लगाया था जिसकी बराअत के लिये अल्लाह तआला ने सूरह नूर में तफ़्सील के साथ आयात का नुज़ूल किया।

4141. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे सालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर, सईद बिन मुसय्यिब, अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़ और उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊद ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि जब अहले इफ़्क या'नी तोह्मत लगाने वालों ने उनके बारे में वो सब कुछ कहा जो उन्हें कहना था (इब्ने शिहाब ने बयान किया कि) तमाम ह़ज़रात ने (जिन चार ह़ज़रात के नाम उन्होंने रिवायत के सिलसिले में लिये हैं) मुझसे आइशा (रज़ि.) की ह़दीष़ का एक एक टुकड़ा बयान किया। ये भी था कि उनमें से कुछ को ये क़िस्सा ज़्यादा बेहतर त़रीक़ा पर याद था और उ़म्दगी से ये क़िस्सा बयान करता था और मैंने उनमें से हर एक की रिवायत याद रखी जो उसने आइशा (रज़ि.) से याद रखी थी। अगरचे कुछ लोगों को दूसरे लोगों के मुक़ाबले में रिवायत ज़्यादा बेहतर त़रीक़े पर याद थी। फिर भी उनमें बाहम एक की रिवायत दूसरे की रिवायत की तस्दीक़ करती है। उन लोगों ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब सफ़र का इरादा करते तो अज़्वाजे मुत़ह्हरात (रज़ि.) के दरम्यान क़ुर्आ डाला करते थे और जिसका नाम आता तो हुज़ूर (ﷺ) उन्हें अपने साथ सफ़र में ले जाते। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक ग़ज़्वा के मौक़े पर जब आपने क़ुर्आ डाला तो मेरा नाम निकला और मैं हुज़ूर (ﷺ) के साथ सफ़र में रवाना हुई। ये वाक़िया पर्दे के हुक्म के नाज़िल होने के बाद का है। चुनाँचे मुझे होदज समेत उठाकर सवार कर दिया जाता और उसी के साथ उतारा जाता। इस त़रह़ हम रवाना हुए। फिर जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने उस ग़ज़्वे से फ़ारिग़ हो गये तो वापस हुए। वापसी में अब हम मदीना के क़रीब थे (और एक

٤١٤١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَسَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةُ بْنُ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا وَكُلُّهُمْ حَدَّثَنِي طَائِفَةً مِنْ حَدِيثِهَا، وَبَعْضُهُمْ كَانَ أَوْعَى لِحَدِيثِهَا مِنْ بَعْضٍ وَأَثْبَتَ لَهُ اقْتِصَاصًا، وَقَدْ وَعَيْتُ عَنْ كُلِّ رَجُلٍ مِنْهُمُ الْحَدِيثَ الَّذِي حَدَّثَنِي عَنْ عَائِشَةَ وَبَعْضُ حَدِيثِهِمْ يُصَدِّقُ بَعْضًا وَإِنْ كَانَ بَعْضُهُمْ أَوْعَى لَهُ مِنْ بَعْضٍ قَالُوا: قَالَتْ عَائِشَةُ كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَرَادَ سَفَرًا أَقْرَعَ بَيْنَ أَزْوَاجِهِ فَأَيُّهُنَّ خَرَجَ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَهُ قَالَتْ عَائِشَةُ : فَأَقْرَعَ بَيْنَنَا فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا فَخَرَجَ فِيهَا سَهْمِي فَخَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ مَا أُنْزِلَ الْحِجَابُ فَكُنْتُ أُحْمَلُ فِي

هَوْدَجِي وَأُنْزَلُ فِيهِ فَسِرْنَا حَتَّى إِذَا فَرَغَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ غَزْوَتِهِ تِلْكَ وَقَفَلَ دَنَوْنَا مِنَ الْمَدِينَةِ قَافِلِينَ، آذَنَ لَيْلَةً بِالرَّحِيلِ فَقُمْتُ حِينَ آذَنُوا بِالرَّحِيلِ فَمَشَيْتُ حَتَّى جَاوَزْتُ الْجَيْشَ، فَلَمَّا قَضَيْتُ شَأْنِي أَقْبَلْتُ إِلَى رَحْلِي فَلَمَسْتُ صَدْرِي فَإِذَا عِقْدٌ لِي مِنْ جَزْعِ ظِفَارِ قَدِ انْقَطَعَ فَرَجَعْتُ فَالْتَمَسْتُ عِقْدِي فَحَبَسَنِي ابْتِغَاؤُهُ قَالَتْ: وَأَقْبَلَ الرَّهْطُ الَّذِينَ كَانُوا يُرَحِّلُونِي فَاحْتَمَلُوا هَوْدَجِي فَرَحَلُوهُ عَلَى بَعِيرِي الَّذِي كُنْتُ أَرْكَبُ عَلَيْهِ وَهُمْ يَحْسِبُونَ أَنِّي فِيهِ وَكَانَ النِّسَاءُ إِذْ ذَاكَ خِفَافًا لَمْ يَهْبُلْنَ وَلَمْ يَغْشَهُنَّ اللَّحْمُ إِنَّمَا يَأْكُلْنَ الْعُلْقَةَ مِنَ الطَّعَامِ فَلَمْ يَسْتَنْكِرِ الْقَوْمُ خِفَّةَ الْهَوْدَجِ حِينَ رَفَعُوهُ وَحَمَلُوهُ وَكُنْتُ جَارِيَةً حَدِيثَةَ السِّنِّ فَبَعَثُوا الْجَمَلَ فَسَارُوا وَوَجَدْتُ عِقْدِي، بَعْدَمَا اسْتَمَرَّ الْجَيْشُ فَجِئْتُ مَنَازِلَهُمْ وَلَيْسَ بِهَا مِنْهُمْ دَاعٍ وَلاَ مُجِيبٌ فَتَيَمَّمْتُ مَنْزِلِي الَّذِي كُنْتُ بِهِ وَظَنَنْتُ أَنَّهُمْ سَيَفْقِدُونِي فَيَرْجِعُونَ إِلَيَّ فَبَيْنَا أَنَا جَالِسَةٌ فِي مَنْزِلِي غَلَبَتْنِي عَيْنِي فَنِمْتُ وَكَانَ صَفْوَانُ بْنُ الْمُعَطَّلِ السُّلَمِيُّ، ثُمَّ الذَّكْوَانِيُّ مِنْ وَرَاءِ الْجَيْشِ فَأَصْبَحَ عِنْدَ مَنْزِلِي فَرَأَى سَوَادَ إِنْسَانٍ نَائِمٍ

मक़ाम पर पड़ाव था) जहाँ से हुज़ूर (ﷺ) ने कूच का रात में ऐलान किया। कूच का ऐलान हो चुका था तो मैं खड़ी हुई और थोड़ी दूर चलकर लश्कर के हुदूद से आगे निकल गई। फिर क़ज़ा-ए-हाजत से फ़ारिग़ होकर मैं अपनी सवारी के पास पहुँची। वहाँ पहुँचकर जो मैंने अपना सीना टटोला तो ज़फ़ार (यमन का एक शहर) के मुह्रा का बना हुआ मेरा हार ग़ायब था। अब मैं फिर वापस हुई और अपना हार तलाश करने लगी। इस तलाश में देर हो गई। उन्होंने बयान किया कि जो लोग मुझे सवार किया करते थे वो आए और मेरे होदज को उठाकर उन्होंने मेरे ऊँट पर रख दिया। जिस पर मैं सवार हुआ करती थी।उन्होंने समझा कि मैं होदज के अंदर ही मौजूद हूँ। उन दिनों औरतें बहुत हल्की फुल्की हुआ करती थीं। उनके जिस्म में ज़्यादा गोश्त नहीं हुआ करता था क्योंकि बहुत मा'मूली ख़ूराक उन्हें मिलती थी। इसलिये उठाने वालों ने जब उठाया तो होदज के हल्केपन में उन्हें कोई फ़र्क़ मा'लूम नहीं हुआ। यूँ भी उस वक़्त मैं एक कम उम्र लड़की थी। ग़र्ज़ ऊँट को उठाकर वो भी रवाना हो गये। जब लश्कर गुज़र गया तो मुझे भी अपना हार मिल गया। मैं डेरे पर आई तो वहाँ कोई भी न था। न पुकारने वाला न जवाब देने वाला। इसलिये मैं वहाँ आई जहाँ मेरा अस्ल डेरा था। मुझे यक़ीन था कि जल्दी ही मेरे न होने का उन्हें इल्म हो जाएगा और मुझे लेने के लिये वो वापस लौट आएँगे। अपनी जगह पर बैठे बैठे मेरी आँख लग गई और मैं सो गई। सफ़्वान बिन मुअत्तल सुल्मी षुम्मज़् ज़क्वानी (रज़ि.) लश्कर के पीछे पीछे आ रहे थे। (ताकि लश्कर की कोई चीज़ गुम हो गई हो तो वो उठा लें) उन्होंने एक सोये इंसान का साया देखा और जब (क़रीब आकर) मुझे देखा तो पहचान गये। पर्दे से पहले वो मुझे देख चुके थे। मुझे जब वो पहचान गये तो इन्नालिल्लाह पढ़ना शुरू कर दिया और उनकी आवाज़ से मैं जाग उठी और फ़ौरन अपनी चादर से मैंने अपना चेहरा ढाँक लिया। अल्लाह की क़सम! मैंने उनसे एक लफ़्ज़ भी नहीं कहा और न सिवा इन्नालिल्लाह के मैंने उनकी ज़ुबान से कोई लफ़्ज़ सुना। वो सवारी से उतर गये और उसे उन्होंने बिठाकर उसकी अगली टाँग को मोड़ दिया (ताकि बग़ैर किसी मदद के उम्मुल मोमिनीन उस पर सवार हो सकें) मैं उठी और उस पर सवार हो गई। अब वो सवारी को आगे से पकड़े हुए लेकर चले। जब हम

लश्कर के क़रीब पहुँचे तो ठीक दोपहर का वक़्त था। लश्कर पड़ाव किये हुए था। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर जिसे हलाक होना था वो हलाक हुआ। अस़्ल में तोहमत का बेड़ा अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल (मुनाफ़िक़) ने उठा रखा था। उ़र्वा ने बयान किया कि मुझे मा'लूम हुआ है कि वो इस तोह्मत का चर्चा करता और उसकी मज्लिसों में इसका तज़्किरा हुआ करता। वो इसकी तस्दीक़ करता, ख़ूब ग़ौर और तवज्जह से सुनता और फैलाने के लिये ख़ूब खोद कुरेद करता। उ़र्वा ने पहली सनद के ह़वाले से ये भी कहा कि ह़स्सान बिन स़ाबित, मिस्तह बिन अ़स़ास़ा और ह़म्ना बिन्ते जह़श के सिवा तोहमत लगाने में शरीक किसी का भी नाम नहीं लिया कि मुझे उनका इल्म होता अगरचे उसमें शरीक होने वाले बहुत से थे। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़र्माया, (कि जिन लोगों ने तोह्मत लगाई है वो बहुत से हैं) लेकिन इस मामले में सबसे बढ़ चढ़कर हिस़्सा लेने वाला अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल था। उ़र्वा ने बयान किया कि आ़इशा (रज़ि.) उस पर बड़ी ख़फ़गी का इज़्हार करती थीं। अगर उनके सामने ह़स्सान बिन स़ाबित (रज़ि.) को बुरा भला कहा जाता, आप फ़र्माती कि ये शे'र ह़स्सान ही ने कहा है कि मेरे वालिद और मेरे वालिद के वालिद और मेरी इ़ज़्ज़त, मुह़म्मद (ﷺ) की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त के लिये तुम्हारे सामने ढाल बनी रहेंगी। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हम मदीना पहुँच गये और वहाँ पहुँचते ही मैं जो बीमार हुई तो एक महीने तक बीमार ही रही। इस अ़र्से में लोगों में तोह्मत लगाने वालों की अफ़वाहों का बड़ा चर्चा रहा लेकिन मैं एक बात भी नहीं समझ रही थी अल्बत्ता अपने मर्ज़ के दौरान एक चीज़ से मुझे बड़ा शुब्हा होता कि रसूले करीम (ﷺ) की वो मुह़ब्बत व इनायत मैं नहीं महसूस करती थी जिसको पहले जब भी बीमार होती थी देख चुकी थी। आप मेरे पास तशरीफ़ लाते, सलाम करते और पूछते कैसी त़बीअ़त है? सिर्फ़ इतना पूछकर वापस तशरीफ़ ले जाते। हुज़ूर (ﷺ) के इस तर्ज़े अ़मल से मुझे शुब्हा होता था लेकिन शर (जो फैल चुका था) उसका मुझे कोई एहसास नहीं था। मर्ज़ से जब आराम हुआ तो मैं उम्मे मिस्तह के साथ मनास़ेह़ की त़रफ़ गई। मनास़ेह़ (मदीना की आबादी से

فَعَرَفَنِي حِينَ رَآنِي وَكَانَ رَآنِي قَبْلَ الْحِجَابِ فَاسْتَيْقَظْتُ بِاسْتِرْجَاعِهِ حِينَ عَرَفَنِي فَخَمَّرْتُ وَجْهِي بِجِلْبَابِي، وَوَاللَّهِ مَا تَكَلَّمْنَا وَلاَ سَمِعْتُ مِنْهُ كَلِمَةً غَيْرَ اسْتِرْجَاعِهِ وَهَوَى حَتَّى أَنَاخَ رَاحِلَتَهُ فَوَطِيءَ عَلَى يَدِهَا فَقُمْتُ إِلَيْهَا فَرَكِبْتُهَا فَانْطَلَقَ يَقُودُ بِي الرَّاحِلَةَ حَتَّى أَتَيْنَا الْجَيْشَ مُوغِرِينَ فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ، وَهُمْ نُزُولٌ قَالَتْ: فَهَلَكَ مَنْ هَلَكَ وَكَانَ الَّذِي تَوَلَّى كِبْرَ الإِفْكِ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ. قَالَ عُرْوَةُ: أُخْبِرْتُ أَنَّهُ كَانَ يُشَاعُ وَيُتَحَدَّثُ بِهِ عِنْدَهُ فَيُقِرُّهُ وَيَسْتَمِعُهُ وَيَسْتَوْشِيهِ وَقَالَ عُرْوَةُ أَيْضًا : لَمْ يُسَمَّ مِنْ أَهْلِ الإِفْكِ أَيْضًا إِلاَّ حَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ، وَمِسْطَحُ بْنُ أُثَاثَةَ، وَحَمْنَةُ بِنْتُ جَحْشٍ، فِي نَاسٍ آخَرِينَ لاَ عِلْمَ لِي بِهِمْ غَيْرَ أَنَّهُمْ عُصْبَةٌ، كَمَا قَالَ اللَّهُ تَعَالَى وَإِنَّ كِبْرَ ذَلِكَ يُقَالُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ قَالَ عُرْوَةُ : كَانَتْ عَائِشَةُ تَكْرَهُ أَنْ يُسَبَّ عِنْدَهَا حَسَّانُ وَتَقُولُ إِنَّهُ الَّذِي قَالَ:

فَإِنَّ أَبِي وَوَالِدَهُ وَعِرْضِي
لِعِرْضِ مُحَمَّدٍ مِنْكُمْ وِقَاءُ

قَالَتْ عَائِشَةُ : فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ فَاشْتَكَيْتُ حِينَ قَدِمْتُ شَهْرًا وَالنَّاسُ يُفِيضُونَ فِي قَوْلِ أَصْحَابِ الإِفْكِ، لاَ

اشْعُرُ بِشَيْءٍ مِنْ ذَلِكَ وَهُوَ يَرِيبُنِي فِي وَجَعِي أَنِّي لاَ أَعْرِفُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ اللُّطْفَ الَّذِي كُنْتُ أَرَى مِنْهُ حِينَ أَشْتَكِي إِنَّمَا يَدْخُلُ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَيُسَلِّمُ، ثُمَّ يَقُولُ: كَيْفَ تِيكُمْ؟ ثُمَّ يَنْصَرِفُ فَذَلِكَ يُرِيبُنِي وَلاَ أَشْعُرُ بِالشَّرِّ حَتَّى خَرَجْتُ حِينَ نَقَهْتُ فَخَرَجْتُ مَعَ أُمِّ مِسْطَحٍ قِبَلَ الْمَنَاصِعِ، وَكَانَ مُتَبَرَّزَنَا وَكُنَّا لاَ نَخْرُجُ إِلاَّ لَيْلاً إِلَى لَيْلٍ وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ نَتَّخِذَ الْكُنُفَ قَرِيبًا مِنْ بُيُوتِنَا قَالَتْ: وَأَمْرُنَا أَمْرُ الْعَرَبِ الأُوَلِ فِي الْبَرِّيَّةِ قِبَلَ الْغَائِطِ كُنَّا نَتَأَذَّى بِالْكُنُفِ أَنْ نَتَّخِذَهَا عِنْدَ بُيُوتِنَا قَالَتْ: فَانْطَلَقْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ وَهِيَ ابْنَةُ أَبِي رُهْمِ بْنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ مَنَافٍ وَأُمُّهَا بِنْتُ صَخْرِ بْنِ عَامِرٍ خَالَةُ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ وَابْنُهَا مِسْطَحُ بْنُ أُثَاثَةَ بْنِ عَبَّادِ بْنِ الْمُطَّلِبِ فَأَقْبَلْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ قِبَلَ بَيْتِي حِينَ فَرَغْنَا مِنْ شَأْنِنَا، فَعَثَرَتْ أُمُّ مِسْطَحٍ فِي مِرْطِهَا، فَقَالَتْ: تَعِسَ مِسْطَحٌ فَقُلْتُ لَهَا، بِئْسَ مَا قُلْتِ، أَتَسُبِّينَ رَجُلاً شَهِدَ بَدْرًا، فَقَالَتْ أَيْ هَنْتَاهْ وَلَمْ تَسْمَعِي مَا قَالَ؟ قَالَتْ: وَقُلْتُ مَا قَالَ؟ فَأَخْبَرَتْنِي بِقَوْلِ أَهْلِ الإِفْكِ قَالَتْ: فَازْدَدْتُ مَرَضًا عَلَى مَرَضِي فَلَمَّا رَجَعْتُ إِلَى بَيْتِي دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلَّمَ، ثُمَّ قَالَ: كَيْفَ تِيكُمْ؟ فَقُلْتُ: لَهُ أَتَأْذَنُ لِي أَنْ آتِيَ أَبَوَيَّ؟ قَالَتْ: وَأُرِيدُ أَنْ أَسْتَيْقِنَ الْخَبَرَ مِنْ قِبَلِهِمَا،

बाहर) हमारे रफ़ेअ़ हाजत की जगह थी। हम यहाँ सिर्फ़ रात के वक़्त जाते थे। ये उससे पहले की बात है, जब बैतुल ख़ला हमारे घरों से क़रीब बन गये थे। उम्मुल मोमिनीन ने बयान किया कि अभी हम अरब क़दीम के तरीक़े पर अमल करते और मैदान में रफ़ेअ़ हाजत के लिये जाया करते थे और हमें इससे तकलीफ़ होती थी कि बैतुल ख़ला हमारे घरों के क़रीब बनाए जाएँ। उन्होंने बयान किया कि अल ग़र्ज़ मैं और उम्मे मिस्तह (रफ़ेअ़ हाजत के लिये) गये। उम्मे मिस्तह सख़र बिन आमिर की बेटी हैं और वो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ख़ाला होती हैं। उन्हीं के बेटे मिस्तह बिन अषाषा बिन अब्बाद बिन मुत्तलिब (रज़ि.) हैं। फिर मैं और उम्मे मिस्तह अपनी चादर में उलझ गईं और उनकी ज़ुबान से निकला कि मिस्तह ज़लील हो। मैंने कहा, आपने बुरी बात ज़ुबान से निकाली, एक ऐसे शख़्स को आप बुरा कह रही हैं जो बद्र की लड़ाई में शरीक हो चुका है। उन्होंने उस पर कहा क्यूँ मिस्तह की बातें तुमने नहीं सुनीं? उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने पूछा कि उन्होंने क्या कहा है? बयान किया, फिर उन्होंने तोहमत लगाने वालों की बातें सुनाईं। बयान किया कि इन बातों को सुनकर मेरा मर्ज़ और बढ़ गया। जब मैं अपने घर वापस आई तो हुज़ूर अकरम (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए और सलाम के बाद पूछा कि कैसी तबीअ़त है? मैं ने हुज़ूर (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि क्या मुझे अपने वालिदैन के घर जाने की इजाज़त मर्हमत फ़र्माएँगे? उम्मुल मोमिनीन ने बयान किया कि मेरा इरादा ये था कि उनसे इस ख़बर की तस्दीक़ करूँगी। उन्होंने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे इजाज़त दे दी। मैंने अपनी वालिदा से (घर जाकर) पूछा कि आख़िर लोगों में किस तरह की अफ़वाहें फैल रही हैं? उन्होंने फ़र्माया कि बेटी! फ़िक्र न कर, अल्लाह की क़सम! ऐसा शायद ही कहीं हुआ हो कि एक ख़ूबसूरत औरत किसी ऐसे शौहर के साथ हो जो उससे मुहब्बत भी रखता हो और उसकी सौकनें भी हों और फिर उस पर तोहमतें न लगाई गई हों। उसकी ऐबजोई न की गई हो। उम्मुल मोमिनीन ने बयान किया कि मैंने उस पर कहा कि सुब्हानल्लाह (मेरी सौकनों से इसका क्या ता'ल्लुक़) उसका तो आम लोगों में चर्चा है। उन्होंने बयान किया कि इधर फिर जो मैंने रोना शुरू किया तो रात भर रोती रही इसी तरह सुबह हो गई और

मेरे आंसू किसी तरह न थमते थे और न नींद ही आती थी। बयान किया कि इधर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को अ़लैहदा करने के बारे में मश्वरा करने के लिये बुलाया क्योंकि इस सिलसिले में अब तक आप पर कोई वह्य नाज़िल नहीं हुई थी। बयान किया कि उसामा (रज़ि.) ने तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को उसी के मुताबिक़ मश्वरा दिया जो वो हुज़ूर (ﷺ) की बीवी (मुराद ख़ुद अपनी ज़ात से है) की पाकीज़गी और हुज़ूर (ﷺ) की उनसे मुहब्बत के बारे में जानते थे। चुनाँचे उन्होंने कहा कि आपकी बीवी में मुझे ख़ैरो-भलाई के सिवा और कुछ मा'लूम नहीं है लेकिन अ़ली (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने आप पर कोई तंगी नहीं रखी है और औ़रतें भी उनके अ़लावा बहुत हैं। आप उनकी बांदी (बरीरह (रज़ि.) से भी पूछ लें वो ह़क़ीक़ते ह़ाल बयान करे देंगी। बयान किया कि फ़िर हुज़ूर (ﷺ) ने बरीरह (रज़ि.) को बुलाया और उनसे पूछा फ़र्माया कि क्या तुमने कोई ऐसी बात देखी है जिससे तुम्हें (आ़इशा पर) शुब्हा हुआ हो। ह़ज़रत बरीरह (रज़ि.) ने कहा, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको ह़क़ के साथ मबऊ़ष किया। मैंने उनके अंदर कोई ऐसी चीज़ नहीं देखी जो बुरी हो। इतनी बात ज़रूर है कि वो एक नौउ़म्र लड़की हैं, आटा गूधकर सो जाती हैं और बकरी आकर उसे खा जाती है। उन्होंने बयान किया कि उस दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने स़ह़ाबा (रज़ि.) को ख़ित़ाब किया और मिम्बर पर खड़े होकर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक़) का मामला रखा। आपने फ़र्माया। ऐ गिरोहे मुस्लिमीन! उस शख़्स़ के बारे में मेरी कौन मदद करेगा जिसकी अज़िय्यतें अब मेरी बीवी के मामले तक पहुँच गई हैं। अल्लाह की क़सम! कि मैंने अपनी बीवी में ख़ैर के सिवा और कोई चीज़ नहीं देखी और नाम भी इन लोगों ने एक ऐसे शख़्स़ (स़फ़्वान बिन मुअ़त्तल रज़ि. जो उम्मुल मोमिनीन रज़ि. को अपने ऊँट पर लाए थे) का लिया है जिसके बारे में भी मैं ख़ैर के सिवा और कुछ नहीं जानता। वो जब भी मेरे घर आए तो मेरे साथ ही आए। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया कि इस पर सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) क़बीला बनी अस्हल के हम रिश्ता खड़े हुए और अ़र्ज़ किया मैं या रसूलल्लाह! आपकी मदद करूँगा। अगर वो शख़्स़ क़बीला बनू औस का हुआ

قَالَتْ : فَأَذِنَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَقُلْتُ لأُمِّي يَا أُمَّتَاهُ مَاذَا يَتَحَدَّثُ النَّاسُ؟ قَالَتْ يَا بُنَيَّةُ : هَوِّنِي عَلَيْكِ فَوَ اللهِ لَقَلَّمَا كَانَتِ امْرَأَةٌ قَطُّ وَضِيئَةً عِنْدَ رَجُلٍ يُحِبُّهَا لَهَا ضَرَائِرُ إِلاَّ كَثَّرْنَ عَلَيْهَا، قَالَتْ : فَقُلْتُ سُبْحَانَ اللهِ أَوْ لَقَدْ تَحَدَّثَ النَّاسُ بِهَذَا، قَالَتْ : فَبَكَيْتُ تِلْكَ اللَّيْلَةَ حَتَّى أَصْبَحْتُ لاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ وَلاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ ثُمَّ أَصْبَحْتُ أَبْكِي، قَالَتْ: وَدَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ حِينَ اسْتَلْبَثَ الْوَحْيُ يَسْأَلُهُمَا وَيَسْتَشِيرُهُمَا فِي فِرَاقِ أَهْلِهِ قَالَتْ: فَأَمَّا أُسَامَةُ فَأَشَارَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ بِالَّذِي يَعْلَمُ مِنْ بَرَاءَةِ أَهْلِهِ وَبِالَّذِي يَعْلَمُ لَهُمْ فِي نَفْسِهِ، فَقَالَ أُسَامَةُ: أَهْلُكَ وَلاَ نَعْلَمُ إِلاَّ خَيْرًا، وَأَمَّا عَلِيٌّ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ لَمْ يُضَيِّقِ اللهُ عَلَيْكَ وَالنِّسَاءُ سِوَاهَا كَثِيرٌ، وَسَلِ الْجَارِيَةَ تَصْدُقْكَ قَالَتْ: فَدَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ بَرِيرَةَ فَقَالَ: ((أَيْ بَرِيرَةُ هَلْ رَأَيْتِ مِنْ شَيْءٍ يَرِيبُكِ؟)) قَالَتْ لَهُ بَرِيرَةُ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا رَأَيْتُ عَلَيْهَا أَمْرًا قَطُّ أَغْمِصُهُ غَيْرَ أَنَّهَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ تَنَامُ عَنْ عَجِينِ أَهْلِهَا فَتَأْتِي الدَّاجِنُ فَتَأْكُلُهُ، قَالَتْ: فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ يَوْمِهِ فَاسْتَعْذَرَ مِنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ أُبَيٍّ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ : ((يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ مَنْ يَعْذِرُنِي مِنْ رَجُلٍ قَدْ بَلَغَنِي

तो मैं उसकी गर्दन मार दूँगा और अगर वो हमारे क़बीले का हुआ तो आपका उसके बारे में जो हुक्म होगा हम बजा लाएँगे। उम्मुल मोमिनीन ने बयान किया कि उस पर क़बीला ख़ज़रज के एक सहाबी खड़े हुए। हस्सान की वालिदा उनकी चचाज़ाद बहन थीं या'नी सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) वो क़बीला ख़ज़रज के सरदार थे और उससे पहले बड़े सालेह और मुख़्लिसीन में थे लेकिन आज क़बीले की हमिय्यत उन पर ग़ालिब आ गई। उन्होंने सअ़द (रज़ि.) को मुख़ातब करके कहा अल्लाह की क़सम! तुम झूठे हो, तुम उसे क़त्ल नहीं कर सकते और न तुम्हारे अंदर इतनी ताक़त है। अगर वो तुम्हारे क़बीले का होता तो तुम उसके क़त्ल का नाम न लेते। उसके बाद उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) जो सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) के चचेरे भाई थे, खड़े हुए और सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) को मुख़ातब करके कहा, अल्लाह की क़सम! तुम झूठे हो, हम उसे ज़रूर क़त्ल करेंगे। अब उसमें शुब्हा नहीं रहा कि तुम भी मुनाफ़िक़ हो, तुम मुनाफ़िक़ों की तरफ़ से मुदाफ़िअ़त करते हो। इतने में औस व ख़ज़रज अंसार के दोनों क़बीले भड़क उठे और ऐसा मा'लूम होता था कि आपस ही में लड़ पड़ेंगे। उस वक़्त तक रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर ही तशरीफ़ रखते थे। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हुज़ूर (ﷺ) सबको ख़ामोश करने कराने लगे। सब हज़रात चुप हो गये और आँहुज़ूर (ﷺ) भी ख़ामोश हो गये। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उस रोज़ पूरे दिन रोती रही। न मेरा आंसू थमता था और न आँख लगती थी। बयान किया कि सुबह के वक़्त मेरे वालिदैन मेरे पास आए। दो रातें और एक दिन मेरा रोते हुए गुज़र गया था। इस पूरे अ़र्से में न मेरा आंसू रुका और न नींद आई। ऐसा मा'लूम होता था कि रोते रोते मेरा कलेजा फट जाएगा। अभी मेरे वालिदैन मेरे पास ही बैठे हुए थे और मैं रोये जा रही थी कि क़बीला अंसार की एक ख़ातून ने अंदर आने की इजाज़त चाही। मैंने उन्हें इजाज़त दे दी और वो भी मेरे साथ बैठकर रोने लगीं। बयान किया कि हम अभी उसी हालत में थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। आपने सलाम किया और बैठ गये। बयान किया कि जबसे मुझ पर तोहमत लगाई गई थी, आँहुज़ूर (ﷺ) मेरे पास नहीं बैठे थे। एक महीना गुज़र गया था और मेरे बारे में आपको वह्य

عَنْهُ أَذَاهُ فِي أَهْلِي وَاللهِ مَا عَلِمْتُ عَلَى أَهْلِي إِلاَّ خَيْرًا وَلَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلاً مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا وَمَا يَدْخُلُ عَلَى أَهْلِي إِلاَّ مَعِي)) فَقَامَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ أَخُو بَنِي عَبْدِ الأَشْهَلِ فَقَالَ: أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ أَعْذِرُكَ فَإِنْ كَانَ مِنَ الأَوْسِ ضَرَبْتُ عُنُقَهُ، وَإِنْ كَانَ مِنْ إِخْوَانِنَا مِنَ الْخَزْرَجِ أَمَرْتَنَا فَفَعَلْنَا أَمْرَكَ قَالَتْ : فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْخَزْرَجِ وَكَانَتْ أُمُّ حَسَّانَ بِنْتَ عَمِّهِ مِنْ فَخِذِهِ، وَهُوَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَهُوَ سَيِّدُ الْخَزْرَجِ، قَالَتْ: وَكَانَ قَبْلَ ذَلِكَ رَجُلاً صَالِحًا وَلَكِنِ احْتَمَلَتْهُ الْحَمِيَّةُ، فَقَالَ: لِسَعْدٍ: كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللهِ لاَ تَقْتُلُهُ، وَلاَ تَقْدِرُ عَلَى قَتْلِهِ، وَلَوْ كَانَ مِنْ رَهْطِكَ مَا أَحْبَبْتَ أَنْ يُقْتَلَ، فَقَامَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ وَهُوَ ابْنُ عَمِّ سَعْدٍ، فَقَالَ لِسَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ: كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللهِ لَنَقْتُلَنَّهُ فَإِنَّكَ مُنَافِقٌ تُجَادِلُ عَنِ الْمُنَافِقِينَ: فَثَارَ الْحَيَّانِ الأَوْسُ وَالْخَزْرَجُ حَتَّى هَمُّوا أَنْ يَقْتَتِلُوا وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَائِمٌ عَلَى الْمِنْبَرِ، قَالَتْ: فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُخَفِّضُهُمْ حَتَّى سَكَتُوا وَسَكَتَ قَالَتْ: فَبَكَيْتُ يَوْمِي ذَلِكَ كُلَّهُ لاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ وَلاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ، قَالَتْ: وَأَصْبَحَ أَبَوَايَ عِنْدِي وَقَدْ بَكَيْتُ لَيْلَتَيْنِ وَيَوْمًا لاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ وَلاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ حَتَّى إِنِّي لأَظُنُّ أَنَّ الْبُكَاءَ فَالِقٌ كَبِدِي فَبَيْنَا

के ज़रिये कोई ख़बर नहीं दी गई थी। बयान किया कि बैठने के बाद हुज़ूर (ﷺ) ने कलिम-ए-शहादत पढ़ा फिर फ़र्माया, अम्मा बअ़द! ऐ आइशा (रज़ि.)! मुझे तुम्हारे बारे में इस इस तरह की ख़बरें मिली हैं, अगर तुम वाक़ई इस मामले में पाक व साफ़ हो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी पाकी ख़ुद बयान कर देगा लेकिन अगर तुमने किसी गुनाह का क़स्द किया था तो अल्लाह की मग़्फ़िरत चाहो और उसके हुज़ूर में तौबा करो क्योंकि बन्दा जब (अपने गुनाहों का) ए'तिराफ़ कर लेता है और फिर अल्लाह की बारगाह में तौबा करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा क़ुबूल कर लेता है। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हुज़ूर अकरम (ﷺ) अपना कलाम पूरा कर चुके तो मेरे आंसू इस तरह ख़ुश्क हो गये कि एक क़तरा भी महसूस नहीं होता था। मैंने पहले अपने वालिद से कहा कि मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह (ﷺ) को आपके कलाम का जवाब दें। वालिद ने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! मैं कुछ नहीं जानता कि हुज़ूर (ﷺ) से मुझे क्या कहना चाहिये। फिर मैंने अपनी वालिदा से कहा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने जो कुछ फ़र्माया है वो उसका जवाब दें। वालिदा ने भी यही कहा अल्लाह की क़सम! मुझे कुछ नहीं मा'लूम कि आँहुज़ूर (ﷺ) से मुझे क्या कहना चाहिये। इसलिये मैंने ख़ुद ही अ़र्ज़ किया। हालाँकि मैं बहुत कम उम्र लड़की थी और क़ुर्आन मजीद भी मैंने ज़्यादा नहीं पढ़ा था कि अल्लाह की क़सम! मुझे भी मा'लूम हुआ है कि आप लोगों ने इस तरह की अफ़वाहों पर कान धरा और बात आप लोगों के दिलों में उतर गई और आप लोगों ने उसकी तस्दीक़ की अब अगर मैं ये कहूँ कि मैं उस तोहमत से बरी हूँ तो आप लोग मेरी तस्दीक़ नहीं करेंगे और अगर इस गुनाह का इक़रार कर लूँ और अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानता है कि मैं इससे बरी हूँ तो आप लोग इसकी तस्दीक़ करने लग जाएँगे। पस अल्लाह की क़सम! मेरी और आप लोगों की मिषाल हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के वालिद जैसी है। जब उन्होंने कहा था। फ़सब्रुन जमीलुन वल्लाहुल मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून (यूसुफ़ : 18) (पस सब्रे जमील बेहतर है और अल्लाह ही की मदद दरकार है इस बारे में जो कुछ तुम कह रहे हो) फिर मैंने अपना रुख़ दूसरी तरफ़ कर लिया और अपने बिस्तर पर लेट गई। अल्लाह ख़ूब जानता था कि मैं इस मामले में

أَبَوَايَ جَالِسَانِ عِنْدِي وَأَنَا أَبْكِي فَاسْتَأْذَنَتْ عَلَيَّ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَأَذِنْتُ لَهَا فَجَلَسَتْ تَبْكِي مَعِي قَالَتْ : فَبَيْنَا نَحْنُ عَلَى ذَلِكَ دَخَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلَّمَ، ثُمَّ جَلَسَ قَالَتْ: وَلَمْ يَجْلِسْ عِنْدِي مُنْذُ قِيلَ مَا قِيلَ قَبْلَهَا وَقَدْ لَبِثَ شَهْرًا لاَ يُوحَى إِلَيْهِ فِي شَأْنِي بِشَيْءٍ قَالَتْ: فَتَشَهَّدَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ جَلَسَ ثُمَّ قَالَ : ((أَمَّا بَعْدُ يَا عَائِشَةُ إِنَّهُ بَلَغَنِي عَنْكِ كَذَا وَكَذَا فَإِنْ كُنْتِ بَرِيئَةً فَسَيُبَرِّئُكِ اللهُ وَإِنْ كُنْتِ أَلْمَمْتِ بِذَنْبٍ فَاسْتَغْفِرِي اللهَ وَتُوبِي إِلَيْهِ فَإِنَّ الْعَبْدَ إِذَا اعْتَرَفَ ثُمَّ تَابَ تَابَ اللهُ عَلَيْهِ)) قَالَتْ: فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَالَتَهُ قَلَصَ دَمْعِي حَتَّى مَا أُحِسُّ مِنْهُ قَطْرَةً، فَقُلْتُ لأَبِي : أَجِبْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِّي فِيمَا قَالَ: فَقَالَ أَبِي وَاللهِ مَا أَدْرِي مَا أَقُولُ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ لأُمِّي: أَجِيبِي رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا قَالَ: قَالَتْ أُمِّي وَاللهِ مَا أَدْرِي مَا أَقُولُ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ وَأَنَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ لاَ أَقْرَأُ مِنَ الْقُرْآنِ كَثِيرًا أَنِّي وَاللهِ لَقَدْ عَلِمْتُ لَقَدْ سَمِعْتُمْ هَذَا الْحَدِيثَ حَتَّى اسْتَقَرَّ فِي أَنْفُسِكُمْ وَصَدَّقْتُمْ بِهِ فَلَئِنْ قُلْتُ لَكُمْ إِنِّي بَرِيئَةٌ لاَ تُصَدِّقُونِي وَلَئِنِ اعْتَرَفْتُ لَكُمْ بِأَمْرٍ

क़त्अन बरी थी और वो ख़ुद मेरी बराअत ज़ाहिर करेगा क्योंकि मैं वाक़ई बरी थी लेकिन अल्लाह की क़सम! मुझे इसका कोई वहम व गुमान भी न था कि अल्लाह तआला वह्य के ज़रिये क़ुर्आन मजीद में मेरे मामले की सफ़ाई उतारेगा क्योंकि मैं अपने को इससे बहुत कमतर समझती थी कि अल्लाह तआला मेरे मामले में ख़ुद कोई कलाम फ़र्माए, मुझे तो सिर्फ़ इतनी उम्मीद थी कि हुज़ूर (ﷺ) कोई ख़्वाब देखेंगे जिसके ज़रिये अल्लाह तआला मेरी बराअत कर देगा लेकिन अल्लाह की क़सम! अभी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) इस मज्लिस से उठे भी नहीं थे और न और कोई घर का आदमी वहाँ से उठा था कि हुज़ूर (ﷺ) पर वह्य नाज़िल होनी शुरू हुई और आप पर वो कैफ़ियत त़ारी हुई जो वह्य की शिद्दत में त़ारी होती थी। मोतियों की त़रह पसीने के क़त़रे आपके चेहरे से गिरने लगे। हालाँकि सर्दी का मौसम था। ये इस वह्य की वजह से था जो आप पर नाज़िल हो रही थी। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आपकी वो कैफ़ियत ख़त्म हुई तो आप तबस्सुम फ़र्मा रहे थे। सबसे पहला कलिमा जो आपकी ज़ुबाने मुबारक से निकला वो ये था। आपने फ़र्माया ऐ आइशा (रज़ि.)! अल्लाह ने तुम्हारी बराअत नाज़िल कर दी है। उन्होंने बयान किया कि इस पर मेरी वालिदा ने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) के सामने खड़ी हो जाओ। मैंने कहा, नहीं अल्लाह की क़सम! मैं आपके सामने नहीं खड़ी होऊँगी। मैं अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के सिवा और किसी की हम्दो-सना नहीं करूँगी (कि उसी ने मेरी बराअत नाज़िल की है) बयान किया कि अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़र्माया, इन्नल्लज़ीन जाऊ बिल इफ़्कि (जो लोग तोह्मत तराशी में शरीक हुए हैं) दस आयतें इस सिलसिले में नाज़िल फ़र्माईं। जब अल्लाह तआला ने (सूरह नूर में) ये आयतें मेरी बराअत के लिये नाज़िल फ़र्माईं तो अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) (जो मिस्त़ह बिन अषाषा के ख़र्चे, उनसे क़राबत और मुहताजी की वजह से ख़ुद उठाते थे) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मिस्त़ह (रज़ि.) ने जब आइशा (रज़ि.) के बारे में इस त़रह की तोह्मत तराशी में हिस्सा लिया तो मैं इस पर अब कभी कुछ ख़र्च नहीं करूँगा। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की। वला यातलि ऊलुल फ़ज़्लि मिन्कुम या'नी अहले फ़ज़्ल और अहले हिम्मत क़सम न खाएँ) से ग़फ़ूरुर्रहीम तक (क्योंकि मिस्त़ह

وَاللهُ يَعْلَمُ أَنِّي مِنْهُ بَرِيئَةٌ لَتُصَدِّقُنِّي فَوَاللهِ لاَ أَجِدُ لِي وَلَكُمْ مَثَلاً إِلاَّ أَبَا يُوسُفَ حِينَ قَالَ: ﴿فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ﴾ ثُمَّ تَحَوَّلْتُ وَاضْطَجَعْتُ عَلَى فِرَاشِي وَاللهُ يَعْلَمُ أَنِّي حِينَئِذٍ بَرِيئَةٌ، وَأَنَّ اللهَ مُبَرِّئِي بِبَرَاءَتِي وَلَكِنْ وَاللهِ مَا كُنْتُ أَظُنُّ أَنَّ اللهَ تَعَالَى مُنْزِلٌ فِي شَأْنِي وَحْيًا يُتْلَى لَشَأْنِي فِي نَفْسِي كَانَ أَحْقَرَ مِنْ أَنْ يَتَكَلَّمَ اللهُ فِيَّ بِأَمْرٍ، وَلَكِنْ كُنْتُ أَرْجُو أَنْ يَرَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي النَّوْمِ رُؤْيَا يُبَرِّئُنِي اللهُ بِهَا فَوَاللهِ مَا رَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَجْلِسَهُ وَلاَ خَرَجَ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ حَتَّى أُنْزِلَ عَلَيْهِ فَأَخَذَهُ مَا كَانَ يَأْخُذُهُ مِنَ الْبُرَحَاءِ حَتَّى إِنَّهُ لَيَتَحَدَّرُ مِنْهُ الْعَرَقُ مِثْلُ الْجُمَانِ وَهُوَ فِي يَوْمٍ شَاتٍ مِنْ ثِقَلِ الْقَوْلِ الَّذِي أُنْزِلَ عَلَيْهِ، قَالَتْ: فَسُرِّيَ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَضْحَكُ فَكَانَتْ أَوَّلَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا أَنْ قَالَ: ((يَا عَائِشَةُ فَقَدْ بَرَّأَكِ)) قَالَتْ: فَقَالَتْ لِي أُمِّي قُومِي إِلَيْهِ فَقُلْتُ: لاَ وَاللهِ لاَ أَقُومُ إِلَيْهِ فَإِنِّي لاَ أَحْمَدُ إِلاَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ قَالَتْ وَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الَّذِينَ جَاؤُوا بِالإِفْكِ﴾ الْعَشْرَ الآيَاتِ ثُمَّ أَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى هَذَا فِي بَرَاءَتِي قَالَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ: وَكَانَ يُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحِ بْنِ أُثَاثَةَ لِقَرَابَتِهِ مِنْهُ وَفَقْرِهِ وَاللهِ لاَ أُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحٍ شَيْئًا

(रज़ि.) या दूसरे मोमिनीन की उसमें शिर्कत महज़ ग़लतफ़हमी की बिना पर थी) चुनाँचे अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मेरी तमन्ना है कि अल्लाह तआला मुझे इस कहने पर मुआफ़ कर दे और मिस्तह को जो कुछ वो दिया करते थे, उसे फिर देने लगे और कहा कि अल्लाह की क़सम! अब इस वज़ीफ़े को मैं कभी बन्द नहीं करूँगा। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे मामले में हुज़ूर (ﷺ) ने उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) से भी मश्वरा किया था। आपने उनसे पूछा कि आइशा (रज़ि.) के बारे में क्या मा'लूमात हैं तुम्हें या उनमें तुमने क्या चीज़ देखी है? उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं अपनी आँखों और कानों को महफ़ूज़ रखती हूँ (कि उनकी तरफ़ ख़िलाफ़े वाक़िया निस्बत करूँ) अल्लाह की क़सम! मैं उनके बारे में ख़ैर के सिवा और कुछ नहीं जानती। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़ैनब ही तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात में मेरे मुक़ाबिल की थीं लेकिन अल्लाह तआला ने उनके तक़्वा और पाकबाज़ी की वजह से उन्हें महफ़ूज़ रखा। बयान किया कि अल्बत्ता उनकी बहन हम्ना ने ग़लत रास्ता इख़्तियार किया और हलाक होने वालों के साथ वो भी हलाक हुई थीं। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि यही थी वो तफ़्सील इस हदीष की जो उन अकाबिर की तरफ़ से पहुँची थी। फिर उर्वा ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! जिन सहाबी के साथ ये तोहमत लगाई गई थी वो (अपने पर इस तोहमत को सुनकर) कहते, सुब्हानल्लाह, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, मैंने आज तक किसी औरत का पर्दा नहीं खोला। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर इस वाक़िये के बाद वो अल्लाह के रास्ते में शहीद हो गये थे। (राजेअ : 2593)

أَبَدًا بَعْدَ الَّذِي قَالَ لِعَائِشَةَ مَا قَالَ : فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَلاَ يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ - إِلَى قَوْلِهِ - غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ قَالَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ: بَلَى وَاللهِ إِنِّي لأُحِبُّ أَنْ يَغْفِرَ اللهُ لِي، فَرَجَعَ إِلَى مِسْطَحٍ النَّفَقَةَ الَّتِي كَانَ يُنْفِقُ عَلَيْهِ وَقَالَ: وَاللهِ لاَ أَنْزِعُهَا مِنْهُ أَبَدًا. قَالَتْ عَائِشَةُ: وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ سَأَلَ زَيْنَبَ بِنْتَ جَحْشٍ عَنْ أَمْرِي فَقَالَ لِزَيْنَبَ : ((مَاذَا عَلِمْتِ - أَوْ رَأَيْتِ -؟)) فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللهِ أَحْمِي سَمْعِي وَبَصَرِي وَاللهِ مَا عَلِمْتُ إِلاَّ خَيْرًا قَالَتْ عَائِشَةُ : وَهِيَ الَّتِي كَانَتْ تُسَامِينِي مِنْ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ فَعَصَمَهَا اللهُ بِالْوَرَعِ قَالَتْ: وَطَفِقَتْ أُخْتُهَا حَمْنَةُ تُحَارِبُ لَهَا فَهَلَكَتْ فِيمَنْ هَلَكَ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ فَهَذَا الَّذِي بَلَغَنِي مِنْ حَدِيثِ هَؤُلاَءِ الرَّهْطِ ثُمَّ قَالَ عُرْوَةُ: قَالَتْ عَائِشَةُ: وَاللهِ إِنَّ الرَّجُلَ الَّذِي قِيلَ لَهُ مَا قِيلَ، لَيَقُولُ سُبْحَانَ اللهِ فَوَ الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا كَشَفْتُ مِنْ كَنَفِ أُنْثَى قَطُّ، قَالَتْ: ثُمَّ قُتِلَ بَعْدَ ذَلِكَ فِي سَبِيلِ اللهِ.[راجع: ٢٥٩٣]

4142. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा कि हिशाम बिन यूसुफ़ ने अपनी याद से मुझे हदीष लिखवाई। उन्होंने बयान किया कि हमें मअमर ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझसे ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक ने पूछा, क्या तुमको मा'लूम है कि हज़रत अली (रज़ि.) भी आइशा (रज़ि.) पर तोहमत लगाने वालों में थे? मैंने कहा कि नहीं, अल्बत्ता तुम्हारी क़ौम (क़ुरैश) के दो आदमियों अबू सलमा

٤١٤٢- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ أَمْلَى عَلَيَّ هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ مِنْ حِفْظِهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : قَالَ لِي الْوَلِيدُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ أَبَلَغَكَ أَنَّ عَلِيًّا كَانَ فِيمَنْ قَذَفَ عَائِشَةَ، قُلْتُ : لاَ وَلَكِنْ قَدْ أَخْبَرَنِي رَجُلاَنِ مِنْ قَوْمِكَ أَبُو سَلَمَةَ

बिन अ़ब्दुर्रहमान और अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन हारिष़ ने मुझे ख़बर दी कि आइशा (रज़ि.) ने उनसे कहा कि अली (रज़ि.) उनके मामले में ख़ामोश थे। फिर लोगों ने हिशाम बिन यूसुफ़ (या ज़ुहरी) से दोबारा पूछा। उन्होंने यही कहा मसल्लमा इसमें शक न किया मसीआ इसका लफ़्ज़ नहीं कहा और अ़लैहि का लफ़्ज़ ज़्यादा किया (या'नी ज़ुहरी ने वलीद को और कुछ जवाब नहीं दिया और पुराने नुस्ख़ा में मुसल्लमन का लफ़्ज़ था)।

بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَأَبُو بَكْرِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ، أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ لَهُمَا : كَانَ عَلِيٌّ مُسَلِّمًا فِي شَأْنِهَا فَرَاجَعُوهُ فَلَمْ يَرْجِعْ، وَقَالَ مُسَلِّمًا : بِلاَ شَكٍّ فِيهِ وَعَلَيْهِ كَانَ فِي أَصْلِ الْعَتِيقِ كَذَلِكَ.

4143. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उनसे अबू वाईल शक़ीक़ बिन सलमा ने बयान किया, उनसे मसरूक़ बिन अज्दअ़ा ने बयान किया, कहा कि मुझसे उम्मे रूमान (रज़ि.) ने बयान किया, वो आइशा (रज़ि.) की वालिदा हैं। उन्होंने बयान किया कि मैं और आइशा (रज़ि.) बैठी हुई थीं कि एक अंसारी ख़ातून आई और कहने लगीं कि अल्लाह फ़लाँ फ़लाँ को तबाह करे। उम्मे रूमान ने पूछा कि क्या बात है? उन्होंने कहा कि मेरा लड़का भी उन लोगों के साथ शरीक हो गया है, जिन्होंने इस तरह की बात की है। उम्मे रूमान (रज़ि.) ने पूछा कि आख़िर बात क्या है? इस पर उन्होंने तोहमत लगाने वालों की बातें नक़ल कर दीं। आइशा (रज़ि.) ने पूछा, क्या रसूलल्लाह (ﷺ) ने भी ये बातें सुनीं हैं? उन्होंने बयान किया कि हाँ। उन्होंने पूछा और अबूबक्र (रज़ि) ने भी? उन्होंने कहा कि हाँ, उन्होंने भी। ये सुनते ही वो ग़श खाकर गिर पड़ीं और जब होश आया तो जाड़े के साथ बुख़ार चढ़ा हुआ था। मैंने उन पर उनके कपड़े डाल दिये और अच्छी तरह ढंक दिया। उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए और पूछा कि इन्हें क्या हुआ है? मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जाड़े के साथ बुख़ार चढ़ गया है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ग़ालिबन उसने इस तूफ़ान की बात सुन पाई है। उम्मे रूमान (रज़ि.) ने कहा कि जी हाँ। फिर आइशा (रज़ि.) ने बैठकर कहा कि अल्लाह की क़सम! अगर मैं क़सम खाऊँ कि मैं बेगुनाह हूँ तो आप लोग मेरी तस्दीक़ नहीं करेंगे और अगर कुछ कहूँ तब भी मेरा उ़ज़्र नहीं सुनेंगे। मेरी और आप लोगों की यअ़क़ूब (अ़लैहिस्सलाम) और उनकी बेटों जैसी कहावत है कि उन्होंने कहा था, वल्लाहुल मुस्तआन अ़ला मा तसिफ़ून या'नी अल्लाह उन

٤١٤٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ حَدَّثَنِي مَسْرُوقُ بْنُ الأَجْدَعِ قَالَ : حَدَّثَتْنِي أُمُّ رُومَانَ وَهْيَ أُمُّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : بَيْنَا أَنَا قَاعِدَةٌ أَنَا وَعَائِشَةُ إِذْ وَلَجَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَتْ: فَعَلَ اللهُ بِفُلاَنٍ وَفَعَلَ بِفُلاَنٍ فَقَالَتْ: أُمُّ رُومَانَ وَمَا ذَاكِ؟ قَالَتْ : ابْنِي فِيمَنْ حَدَّثَ الْحَدِيثَ؟ قَالَتْ : وَمَا ذَاكِ؟ قَالَتْ : كَذَا وَكَذَا، قَالَتْ عَائِشَةُ : سَمِعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ : نَعَمْ، قَالَتْ: وَأَبُو بَكْرٍ؟ قَالَتْ: نَعَمْ فَخَرَّتْ مَغْشِيًّا عَلَيْهَا فَمَا أَفَاقَتْ إِلاَّ وَعَلَيْهَا حُمَّى بِنَافِضٍ فَطَرَحْتُ عَلَيْهَا ثِيَابَهَا فَغَطَّيْتُهَا فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ ((مَا شَأْنُ هَذِهِ؟)) قُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ أَخَذَتْهَا الْحُمَّى بِنَافِضٍ، قَالَ : ((فَلَعَلَّ فِي حَدِيثٍ تُحُدِّثَ)) قَالَتْ : نَعَمْ، فَقَعَدَتْ عَائِشَةُ فَقَالَتْ : وَاللهِ لَئِنْ حَلَفْتُ لاَ تُصَدِّقُونِي وَلَئِنْ قُلْتُ لاَ تَعْذِرُونِي مَثَلِي وَمَثَلُكُمْ كَيَعْقُوبَ وَبَنِيهِ ﴿وَاللهُ الْمُسْتَعَانُ

बातों पर जो तुम बनाते हो, मेरी मदद करने वाला है। उम्मे रूमान (रज़ि.) ने कहा आँहज़रत (ﷺ) आइशा (रज़ि.) की ये तक़रीर सुनकर लौट गये, कुछ जवाब नहीं दिया। चुनाँचे अल्लाह तआला ने ख़ुद उनकी तलाफ़ी नाज़िल की। वो आँहज़रत (ﷺ) से कहने लगी बस मैं अल्लाह ही का शुक्र अ दा करती हूँ न तुम्हारा न किसी और का। (राजेअ : 3388)

عَلَى مَا تَصِفُونَ﴾ قَالَتْ : وَانْصَرَفَ وَلَمْ يَقُلْ شَيْئًا فَأَنْزَلَ اللهُ عُذْرَهَا قَالَتْ : بِحَمْدِ اللهِ لاَ بِحَمْدِ أَحَدٍ وَلاَ بِحَمْدِكَ.

[راجع: ٣٣٨٨]

4144. मुझसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ बिन उमर ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि आइशा (रज़ि.) (सूरह नूर की आयत) क़िरात, तल्क़ूनहू बिअल सिनतिकुम, करती थीं और (उसकी तफ़्सीर में) फ़र्माती थीं कि अल् वल्कु झूठ के मा'नी में है। इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) इन आयतों को औरों से ज़्यादा जानती थीं क्योंकि वो ख़ास उन ही के बाब में उतरी थीं। (दीगर मक़ाम : 4752)

٤١٤٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ نَافِعِ بْنِ عُمَرَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا كَانَتْ تَقْرَأُ ﴿إِذْ تَلِقُونَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ﴾ وَتَقُولُ الْوَلْقُ: الْكَذِبُ. قَالَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ وَكَانَتْ أَعْلَمَ مِنْ غَيْرِهَا بِذَلِكَ لأَنَّهُ نَزَلَ فِيهَا.

[طرفه في : ٤٧٥٢].

4145. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं आइशा (रज़ि.) के सामने हस्सान बिन ष़ाबित (रज़ि.) को बुरा कहने लगा तो उन्होंने कहा कि उन्हें बुरा न कहो, क्योंकि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से कुफ़्फ़ार को जवाब देते थे और हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से मुश्रिकीने कुरैश की हिज्व कहने की इजाज़त चाही तो आपने फ़र्माया कि फिर मेरे नसब का क्या होगा? हस्सान (रज़ि.) ने कहा कि मैं आपको उनसे इस तरह अलग कर लूँगा जैसे बाल गुँधे हुए आटे से खींच लिया जाता है। और मुहम्मद बिन उ़क़्बा (इमाम बुख़ारी के शैख़) ने बयान किया, हमसे उ़ष्मान बिन फ़र्क़द ने बयान किया, कहा मैंने हिशाम से सुना, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने बयान किया कि मैंने हस्सान बिन ष़ाबित (रज़ि.) को बुरा भला कहा क्योंकि उन्होंने भी हज़रत आइशा (रज़ि.) पर तोहमत लगाने में बहुत हिस्सा लिया था। (राजेअ : 3531)

٤١٤٥- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَتْ : ذَهَبْتُ أَسُبُّ حَسَّانَ عِنْدَ عَائِشَةَ فَقَالَتْ : لاَ تَسُبَّهُ فَإِنَّهُ كَانَ يُنَافِحُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَقَالَتْ عَائِشَةُ : اسْتَأْذَنَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هِجَاءِ الْمُشْرِكِينَ قَالَ : قَالَ كَيْفَ بِنَسَبِي؟ لأَسُلَّنَّكَ مِنْهُمْ كَمَا تُسَلُّ الشَّعْرَةُ مِنَ الْعَجِينِ. وَقَالَ مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ فَرْقَدٍ سَمِعْتُ هِشَامًا عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَبَبْتُ حَسَّانَ وَكَانَ مِمَّنْ كَثَّرَ عَلَيْهَا.

[راجع: ٣٥٣١]

4146. मुझसे हज़रत बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, हमको

٤١٤٦- حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ أَخْبَرَنَا

مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ : دَخَلْنَا عَلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا وَعِنْدَهَا حَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ يُنْشِدُهَا شِعْرًا يُشَبِّبُ بِأَبْيَاتٍ لَهُ وَقَالَ :

حَصَانٌ رَزَانٌ مَا تُزَنُّ بِرِيبَةٍ
وَتُصْبِحُ غَرْثَى مِنْ لُحُومِ الْغَوَافِلِ

فَقَالَتْ لَهُ عَائِشَةُ : لَكِنَّكَ لَسْتَ كَذَلِكَ قَالَ مَسْرُوقٌ : فَقُلْتُ لَهَا : لِمَ تَأْذَنِي لَهُ أَنْ يَدْخُلَ عَلَيْكِ؟ وَقَدْ قَالَ اللَّهُ ﴿وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾ فَقَالَتْ : وَأَيُّ عَذَابٍ أَشَدُّ مِنَ الْعَمَى؟ قَالَتْ لَهُ: إِنَّهُ كَانَ يُنَافِحُ أَوْ يُهَاجِي عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.

[طرفاه في: ٤٧٥٥، ٤٧٥٦].

मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें सुलैमान ने, उन्हें अबुज़्ज़ुहा ने और उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि हम आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उनके यहाँ हस्सान बिन षाबित (रज़ि.) मौजूद थे और उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) को अपने अश्आर सुना रहे थे। एक शे'र था जिसका तर्जुमा ये है। वो संजीदा और पाकदामन हैं जिस पर कभी तोह्मत नहीं लगाई गई, वो हर सुबह भूखी होकर नादान बहनों का गोश्त नहीं खाती। इस पर आइशा (रज़ि.) ने कहा लेकिन तुम तो ऐसे नहीं षाबित हुए। मसरूक़ ने बयान किया कि फिर मैंने आइशा (रज़ि.) से अर्ज़ किया, आप उन्हें अपने यहाँ आने की इजाज़त क्यूँ देती हैं। जबकि अल्लाहअ तआला उनके बारे में फ़र्मा चुका है कि, और उनमें वो शख़्स जो तोह्मत लगाने मे सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदार है उसके लिये बड़ा अज़ाब होगा, इस पर उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने फ़र्माया कि नाबीना हो जाने से सख़्त और क्या अज़ाब होगा (हस्सान रज़ि. की बसारत आख़िर उम्र में चली गई थी) आइशा (रज़ि.) ने उनसे कहा कि हस्सान (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की हिमायत किया करते थे। (दीगर मक़ाम : 4755, 4756)

तश्रीह : ये आयत अब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में नाज़िल हुई थी जैसा कि मा'लूम है। हज़रत आइशा (रज़ि.) हस्सान (रज़ि.) की शान में किसी बुरे कलिमे को गवारा नहीं करती थीं। हस्सान (रज़ि.) से तोह्मत में तोह्मत की ग़लती ज़रूर हुई थी लेकिन जिन सहाबा (रज़ि.) ने भी उसमें ग़लती से शिर्कत की थी, वो सब ताइब हो गये थे और उनकी तौबा क़ुबूल हो गई थी। और बहरहाल हज़रत आइशा (रज़ि.) का दिल ग़लती से शरीक होने वाले सहाबा (रज़ि.) की तरफ़ से साफ़ हो गया था लेकिन जब इस तरह का ज़िक्र आ जाता तो दिल का रंजीदा हो जाना एक कुदरती बात थी। यहाँ भी हज़रत आइशा (रज़ि.) ने दो एक चुभते हुए जुम्ले ग़ालिबन इसी अषर में हज़रत हस्सान (रज़ि.) के बारे में कह दिये हैं। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **व फ़ी तर्जुमतिज़्ज़ुहरी अनहिल्यति अबी नुऐम मिन तरीक़िब्नि उयैनत अनिज़्ज़ुहरी कुन्तु इन्दल्वलीद इब्नि अब्दिल्मलिक फतला हाज़िहिल्आयत वल्लज़ी तवल्ला किब्रहू मिन्हुम लहू अज़ाबुन अज़ीम फ़क़ाल नज़लत फी अलिय्यिब्नि अबी तालिबिन कालज़्ज़ुहरी अस्लहल्लाहुल्अमीर लैसल्अम्रू कज़ालिक अख़्बरनी उर्वतु अन आयशत क़ाल व कैफ़ उख़्बिरूक कुल्तु अख़्बरनी उर्वतु अन आयशत अन्नहा नज़लत फी अब्दिल्लाहि ब्नि उबय निक सलूल व कान बअज़ु मन ला खैर फीहि मिनन्नासिबति तक़र्रब इला बनी उमैय्यत बिहाज़िहिल्कज़िबति फहर्रूफू कौल आयशत इला गैरि वज्हिही लिइल्मिहिम बिल्हर्रा फहुम अन अलिय्यिन फ़ज़न्नू सिहत्तहा हत्ता बय्यनज़्ज़ुहरी लिल्वलीद अन्नल्हक़्क़ ख़िलाफ़ु ज़ालिक फजज़ाहुल्लाहु तआला ख़ैरन व क़द जाअ अनिज़्ज़ुहरी अन्न हिशामब्न अब्दिल्मलिक कान यअतकिदु ज़ालिक अयज़न फअख़रज यअक़ुबुब्नु शैबत फी मुस्नदिही अनिल्हसनि ब्नि अलिय्यिल्हल्वानी अनिश्शाफ़िइ क़ाल हद्दषना अम्मी क़ाल दखल सुलैमानु ब्नु यसार अला हिशामि ब्नि अब्दिल्मलिक फकाल लहू या सुलैमाल्लज़ी तवल्ला किब्रहू मन हुव क़ाल अब्दुल्लाहिब्नि उबय क़ाल कज़िब्त बल हुव अली क़ाल अमीरुल्मूमिनीन आलमु बिमा यक़ूलु फदखलज़्ज़ुहरी फकाल या इब्न शिहाब** मनिल्लज़ी तवल्ला किब्रहू क़ाल इब्नु उबय क़ाल कज़िब्त हुव अली काल अना माज़िब ला उबालुक वल्लाहि

लौ नादा मुनादिम्मिनस्समाइ अन्नल्लाह अहल्लल्कज़िब मा कज़िब्तु कालल्किर्मानी वअलम अन्न बरात आयशत कतइय्यतुन बिनस्सिल्कुर्आनि व लौ शक्क फ़ीहा अहदुनस्सार काफ़िरन इन्तिहा व ज़ाद फि खैरिल्जारी व हुव मज़्हबुश्शिअतिल्इमामिय्यति मअ बुग़ज़िहिम बिहा इन्तिहा (फ़त्हुल्बारी)

ख़ुलासा ये है कि आयत **वल्लज़ी तवल्ला किबरहू** से मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन उबय है, हज़रत अ़ली (रज़ि.) नहीं।

बाब 36 : ग़ज़्वा हुदैबिया का बयान

٣٦- باب غَزْوَةِ الْحُدَيْبِيَةِ

हुदैबिया मक्का के क़रीब एक कुआँ था। आँहज़रत (ﷺ) 6 हिजरी में माहे ज़िलहिज्ज में वहाँ जाकर उतरे थे, वहीं एक कीकर के पेड़ के नीचे बेअ़तुर्रिज़्वान हुई थी। ये वाक़िया सुलह़ हुदैबिया से मशहूर है।

और अल्लाह तआ़ला का (सूरह फ़त्ह में) इर्शाद कि,

बेशक अल्लाह तआ़ला मोमिनीन से राज़ी हो गया जब उन्होंने आपसे पेड़ के नीचे बेअ़त की।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿لَقَدْ رَضِيَ اللهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ﴾ الآيَةَ.

4147. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा कि मुझसे सालेह़ बिन कैसान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने बयान किया कि हुदैबिया के साल हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ निकले तो एक दिन, रात में बारिश हुई। हुज़ूर (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ पढ़ाने के बाद हमसे ख़िताब किया और दरयाफ़्त फ़र्माया, मा'लूम है तुम्हारे रब ने क्या कहा? हमने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इ़ल्म है। आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है, सुबह हुई तो मेरे कुछ बन्दों ने इस हालत में सुबह की कि उनका ईमान मुझ पर था और कुछ ने इस हालत में सुबह की कि वो मेरा इंकार किये हुए थे, तो जिसने कहा कि हम पर ये बारिश अल्लाह के रिज़्क़, अल्लाह की रहमत और अल्लाह के फ़ज़्ल से हुई है तो वो मुझ पर ईमान लाने वाला है और सितारों का इंकार करने वाला है और जो शख़्स ये कहता है कि ये बारिश फ़लाँ सितारे की ताष़ीर से हुई है तो वो सितारों पर ईमान लाने वाला और मेरे साथ कुफ़्र करने वाला है। (राजेअ़ : 846)

٤١٤٧- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ قَالَ : حَدَّثَنِي صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَامَ الْحُدَيْبِيَةِ فَأَصَابَنَا مَطَرٌ ذَاتَ لَيْلَةٍ فَصَلَّى لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ الصُّبْحَ، ثُمَّ أَقْبَلَ عَلَيْنَا فَقَالَ: ((أَتَدْرُونَ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟)) قُلْنَا اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ فَقَالَ: ((قَالَ اللهُ أَصْبَحَ مِنْ عِبَادِي مُؤْمِنٌ بِي وَكَافِرٌ بِي، فَأَمَّا مَنْ قَالَ: مُطِرْنَا بِرَحْمَةِ اللهِ وَبِرِزْقِ اللهِ وَبِفَضْلِ اللهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ بِي كَافِرٌ بِالْكَوْكَبِ، وَأَمَّا مَنْ قَالَ : مُطِرْنَا بِنَجْمِ كَذَا فَهُوَ مُؤْمِنٌ بِالْكَوْكَبِ كَافِرٌ بِي)). [راجع: ٨٤٦]

4148. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चार उ़मरे किये और सिवा इस उ़मरे के जो आपने हज्ज के साथ किया, तमाम उ़मरे ज़ीक़अ़दा के महीने में किये। हुदैबिया का उ़मरह भी आप ज़ीक़अ़दा के महीने में करने तशरीफ़ ले गये फिर

٤١٤٨- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ قَالَ: اعْتَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَرْبَعَ عُمَرٍ كُلُّهُنَّ فِي ذِي الْقَعْدَةِ إِلاَّ الَّتِي كَانَتْ مَعَ حَجَّتِهِ، عُمْرَةً مِنَ الْحُدَيْبِيَةِ فِي ذِي

दूसरे साल (उसकी क़ज़ा में) आपने ज़ी क़अदा में उमरह किया और एक उमरह जिअराना से आपने किया था, जहाँ ग़ज़्व-ए-हुनैन की ग़नीमत आपने तक़्सीम की थी। ये भी ज़ीक़अदा में किया था और एक उमरह हज्ज के साथ किया (जो ज़िल्हिज्ज में किया था) (राजेअ: 1779)

الْقَعْدَةِ وَعُمْرَةً مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ فِي ذِي الْقَعْدَةِ، وَعُمْرَةً مِنَ الْجِعِرَّانَةِ حَيْثُ قَسَمَ غَنَائِمَ حُنَيْنٍ فِي ذِي الْقَعْدَةِ، وَعُمْرَةً مَعَ حَجَّتِهِ. [راجع: ١٧٧٩]

4149. हमसे सईद बिन रबीअ ने बयान किया, कहा हमसे अली बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कषीर ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ सुलह हुदैबिया के साल रवाना हुए, तमाम सहाबा (रज़ि.) ने एहराम बाँध लिया था लेकिन मैंने अभी एहराम नहीं बाँधा था। (राजेअ: 1821)

٤١٤٩ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ، قَالَ: انْطَلَقْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَامَ الْحُدَيْبِيَةِ فَأَحْرَمَ أَصْحَابُهُ وَلَمْ أُحْرِمْ. [راجع: ١٨٢١]

4150. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने कि उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने कहा, तुम लोग, सूरह इन्ना फ़तहना में, फ़तह से मुराद मक्का की फ़तह कहते हो। फ़तहे मक्का तो बहरहाल फ़तह थी ही लेकिन हम ग़ज़्व-ए-हुदैबिया की बेअते रिज़्वान को हक़ीक़ी फ़तह समझते हैं। उस दिन हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चौदह सौ आदमी थे। हुदैबिया नामी एक कुआँ वहाँ पर था, हमने उसमें से इतना पानी खींचा कि उसके अंदर एक क़तरा भी पानी के नाम पर न रहा। हुज़ूर (ﷺ) को जब ये ख़बर हुई (कि पानी ख़त्म हो गया है) तो आप कुएँ पर तशरीफ़ लाए और उसके किनारे पर बैठकर किसी एक बर्तन में पानी तलब फ़र्माया। उससे आपने वुज़ू किया और मज़्मज़ा (कुल्ली) की और दुआ फ़र्माई। फिर सारा पानी उस कुँए में डाल दिया। थोड़ी देर के लिये हमने कुएँ को यूँ ही रहने दिया और उसके बाद जितना हमने चाहा उसमें से पानी पिया और अपनी सवारियों को पिलाया। (राजेअ: 3577)

٤١٥٠ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: تَعُدُّونَ أَنْتُمُ الْفَتْحَ فَتْحَ مَكَّةَ وَقَدْ كَانَ فَتْحُ مَكَّةَ فَتْحًا وَنَحْنُ نَعُدُّ الْفَتْحَ بَيْعَةَ الرِّضْوَانِ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ، كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْبَعَ عَشْرَةَ مِائَةً وَالْحُدَيْبِيَةُ بِئْرٌ فَنَزَحْنَاهَا فَلَمْ نَتْرُكْ فِيهَا قَطْرَةً فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَاهَا فَجَلَسَ عَلَى شَفِيرِهَا ثُمَّ دَعَا بِإِنَاءٍ مِنْ مَاءٍ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ مَضْمَضَ وَدَعَا ثُمَّ صَبَّهُ فِيهَا فَتَرَكْنَاهَا غَيْرَ بَعِيدٍ ثُمَّ إِنَّهَا أَصْدَرَتْنَا مَا شِئْنَا نَحْنُ وَرِكَابُنَا.

[راجع: ٣٥٧٧]

4151. मुझसे फ़ज़ल बिन यअक़ूब ने बयान किया, कहा हमसे हसन बिन आयन अबू अलय्य हरानी ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ यस्ई ने बयान किया कि हमें बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो लोग ग़ज़्वा हुदैबिया के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक हज़ार चार सौ की ता'दाद में थे या इससे भी ज़्यादा। एक कुँए

٤١٥١ - حَدَّثَنِي فَضْلُ بْنُ يَعْقُوبَ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَعْيَنَ أَبُو عَلِيٍّ الْحَرَّانِيُّ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ : أَنْبَأَنَا الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُمْ كَانُوا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ

पर पड़ाव हुआ लश्कर ने उसका (सारा) पानी खींच लिया और नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर (ﷺ) कुएँ के पास तशरीफ़ लाए और उसकी मुँडेर पर बैठ गये। फिर फ़र्माया कि एक डोल में इसी कुएँ का पानी लाओ। पानी लाया गया तो आपने उसमें कुल्ली की और दुआ फ़र्माई। फिर फ़र्माया कि कुएँ को यूँ ही थोड़ी देर के लिये रहने दो। उसके बाद सारा लश्कर ख़ुद भी सैराब होता रहा और अपनी सवारियों को भी पिलाता रहा। यहाँ तक कि वहाँ से उन्होंने कूच किया। (राजेअ : 3577)

يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ أَلْفًا وَأَرْبَعَمِائَةٍ أَوْ أَكْثَرَ فَنَزَلُوا عَلَى بِئْرٍ فَنَزَحُوهَا فَأَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ فَأَتَى الْبِئْرَ وَقَعَدَ عَلَى شَفِيرِهَا ثُمَّ قَالَ : ((ائْتُونِي بِدَلْوٍ مِنْ مَائِهَا)) فَأُتِيَ بِهِ فَبَصَقَ فَدَعَا ثُمَّ قَالَ : ((دَعُوهَا سَاعَةً)) فَأَرْوَوْا أَنْفُسَهُمْ وَرِكَابَهُمْ حَتَّى ارْتَحَلُوا.
[راجع: ٣٥٧٧]

4152. हमसे यूसुफ़ बिन ईसा ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने, कहा हमसे हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उनसे सालिम बिन अबी अल जअ़दि ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्वा हुदैबिया के मौक़े पर सारा ही लश्कर प्यासा हो चुका था। रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने एक छागल था, उसके पानी से आपने वुज़ू किया। फिर सहाबा आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने दरयाफ़्त किया कि क्या बात है? सहाबा बोले कि या रसूलल्लाह! हमारे पास अब पानी नहीं रहा, न वुज़ू करने के लिये और न पीने के लिये। सिवा उस पानी के जो आपके बर्तन में मौजूद है। बयान किया कि फिर हुज़ूर (ﷺ) ने अपना हाथ उस बर्तन पर रखा और पानी आपकी उँगलियों के दरम्यान से चश्मे की तरह फूट फूटकर उबलने लगा। रावी ने बयान किया कि फिर हमने पानी पिया भी और वुज़ू भी किया। (सालिम कहते हैं कि) मैंने जाबिर (रज़ि.) से पूछा कि आप लोग कितनी ता'दाद में थे? उन्होंने बतलाया कि अगर हम एक लाख भी होते तो भी वो पानी काफ़ी हो जाता। वैसे उस वक़्त हमारी ता'दाद पन्द्रह सौ थी।
(राजेअ : 3576)

٤١٥٢ - حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ سَالِمٍ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ : عَطِشَ النَّاسُ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَ يَدَيْهِ رَكْوَةٌ فَتَوَضَّأَ مِنْهَا ثُمَّ أَقْبَلَ النَّاسُ نَحْوَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا لَكُمْ؟)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ لَيْسَ عِنْدَنَا مَاءٌ نَتَوَضَّأُ بِهِ وَلاَ نَشْرَبُ إِلاَّ مَا فِي رَكْوَتِكَ قَالَ فَوَضَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَهُ فِي الرَّكْوَةِ فَجَعَلَ الْمَاءُ يَفُورُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ كَأَمْثَالِ الْعُيُونِ قَالَ: فَشَرِبْنَا وَتَوَضَّأْنَا فَقُلْتُ لِجَابِرٍ: كَمْ كُنْتُمْ يَوْمَئِذٍ؟ قَالَ : لَوْ كُنَّا مِائَةَ أَلْفٍ لَكَفَانَا كُنَّا خَمْسَ عَشْرَةَ مِائَةً.
[راجع: ٣٥٧٦]

4153. हमसे सल्त बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी अ़रूबा ने, उनसे क़तादा ने कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से पूछा, मुझे मा'लूम हुआ है कि जाबिर (रज़ि.) कहा करते थे कि (हुदैबिया की सुलह के मौक़े पर) सहाबा की ता'दाद चौदह सौ थी। इस पर हज़रत सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि मुझसे जाबिर

٤١٥٣ - حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ قُلْتُ لِسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ: بَلَغَنِي أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ كَانَ يَقُولُ: كَانُوا أَرْبَعَ عَشْرَةَ مِائَةً فَقَالَ لِي سَعِيدٌ: حَدَّثَنِي جَابِرٌ

كَانُوا خَمْسَ عَشْرَةَ مِائَةً الَّذِينَ بَايَعُوا النَّبِيَّ ﷺ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ، قَالَ أَبُو دَاوُدَ: حَدَّثَنَا قُرَّةُ عَنْ قَتَادَةَ. تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ. [راجع: ٣٥٧٦]

(रज़ि.) ने कहा था कि इस मौक़े पर पन्द्रह सौ स़हाबा (रज़ि.) मौजूद थे। जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) से हुदैबिया में बेअ़त की थी। अबू दाऊद त़ियालिसी ने बयान किया, हमसे क़ुर्रह बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और मुहम्मद बिन बश्शार ने भी अबू दाऊद त़ियालिसी के साथ इसको रिवायत किया है। (राजेअ़ : 3576)

٤١٥٤- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو : سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ: ((أَنْتُمْ خَيْرُ أَهْلِ الأَرْضِ)) وَكُنَّا أَلْفًا وَأَرْبَعَمِائَةٍ وَلَوْ كُنْتُ أُبْصِرُ الْيَوْمَ لأَرَيْتُكُمْ مَكَانَ الشَّجَرَةِ. تَابَعَهُ الأَعْمَشُ سَمِعَ سَالِمًا سَمِعَ جَابِرًا أَلْفًا وَأَرْبَعَمِائَةٍ. [راجع: ٣٥٧٦]

4154. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-हुदैबिया के मौक़ा पर फ़र्माया था कि तुम लोग तमाम ज़मीन वालों में सबसे बेहतर हो। हमारी ता'दाद उस मौक़े पर चौदह सौ थी। अगर आज मेरी आँखों में बीनाई होती तो मैं उस पेड़ का मुक़ाम बताता। इस रिवायत की मुताबअ़त आ'मश ने की। उनसे सालिम ने सुना और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना कि चौदह सौ स़हाबा ग़ज़्व-ए-हुदैबिया में थे। (राजेअ़ :3576)

٤١٥٥- وَقَالَ عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَ أَصْحَابُ الشَّجَرَةِ أَلْفًا وَثَلَثمِائَةٍ وَكَانَتْ أَسْلَمُ ثُمُنَ الْمُهَاجِرِينَ. تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا أَبُو دَاوُدَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ.

4155. और उ़बैदुल्लाह बिन मुआ़ज़ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि पेड़ वालों (बेअ़ते रिज़्वान करने वालों) की ता'दाद तेरह सौ थी। क़बीला असलम मुहाजिरीन का आठवाँ ह़िस्सा थे।

इस रिवायत की मुताबअ़त मुहम्मद बिन बश्शार ने की, उनसे अबू दाऊद त़यालिसी ने बयान किया और उनसे शुअ़बा ने।

٤١٥٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عِيسَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ، أَنَّهُ سَمِعَ مِرْدَاسًا الأَسْلَمِيَّ يَقُولُ: وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ يُقْبَضُ الصَّالِحُونَ الأَوَّلُ فَالأَوَّلُ وَتَبْقَى حُفَالَةٌ كَحُفَالَةِ التَّمْرِ وَالشَّعِيرِ لاَ يَعْبَأُ اللهُ بِهِمْ شَيْئًا. [طرفه في : ٦٤٣٤].

4156. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उन्हें क़ैस बिन अबी हाज़िम ने और उन्होंने मिरदास असलमी (रज़ि.) से सुना, वो अस्हाबे शजरह (ग़ज़्व-ए-हुदैबिया में शरीक होने वालों) में से थे, वो बयान करते थे कि पहले स़ालेहीन क़ब्ज़ किये जाएँगे। जो ज़्यादा स़ालेह होगा उसकी रूह सबसे पहले और जो उसके बाद के दर्जे का होगा उसकी उसके बाद फिर रद्दी और बेकार खजूर और जौ की त़रह बेकार लोग बाक़ी रह जाएँगे जिनकी अल्लाह के नज़दीक कोई क़द्र नहीं होगी। (दीगर मक़ाम : 6434)

४१५८،४१५७– حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ مَرْوَانَ وَالْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ قَالاَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ عَامَ الْحُدَيْبِيَةِ فِي بِضْعَ عَشْرَةَ مِائَةً مِنْ أَصْحَابِهِ فَلَمَّا كَانَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ قَلَّدَ الْهَدْيَ وَأَشْعَرَهُ وَأَحْرَمَ مِنْهَا لاَ أُحْصِي كَمْ سَمِعْتُهُ مِنْ سُفْيَانَ، حَتَّى سَمِعْتُهُ يَقُولُ: لاَ أَحْفَظُ مِنَ الزُّهْرِيِّ الإِشْعَارَ وَالتَّقْلِيدَ، فَلاَ أَدْرِي يَعْنِي مَوْضِعَ الإِشْعَارِ وَالتَّقْلِيدِ أَوِ الْحَدِيثَ كُلَّهُ.

[راجع: ١٦٩٤، ١٦٩٥]

4157,58. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे उ़र्वा ने, उनसे ख़लीफ़ा मरवान और मिस्वर बिन मख़रमा ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर तक़रीबन एक हज़ार सहाबा (रज़ि.) को साथ लेकर रवाना हुए। जब आप ज़ुल हुलैफ़ा पहुँचे तो आपने क़ुर्बानी के जानवर को हार पहनाया और उन पर निशान लगाया और उ़मरह का एहराम बाँधा। मैं नहीं शुमार कर सकता कि मैंने ये ह़दीष़ सुफ़यान बिन यसार से कितनी दफ़ा सुनी और एक बार ये भी सुना कि वो बयान कर रहे थे कि मुझे ज़ुहरी से निशान लगाने और क़लादा पहनाने के बारे में याद नहीं रहा। इसलिये मैं नहीं जानता, उससे उनकी मुराद सिर्फ़ निशान लगाने और क़लादा पहनने से थी या पूरी ह़दीष़ से थी।

(राजेअ़ : 1694, 1695)

इस ह़दीष़ में सुलहे हुदैबिया का ज़िक्र है। ह़दीष़ और बाब में यही मुत़ाबक़त है।

४१५९– حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ خَلَفٍ حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ وَرْقَاءَ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي لَيْلَى عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَآهُ وَقَمْلُهُ يَسْقُطُ عَلَى وَجْهِهِ فَقَالَ: ((أَيُؤْذِيكَ هَوَامُّكَ؟)) قَالَ: نَعَمْ. فَأَمَرَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يَحْلِقَ وَهُوَ بِالْحُدَيْبِيَةِ وَلَمْ يُبَيِّنْ لَهُمْ أَنَّهُمْ يَحِلُّونَ بِهَا وَهُمْ عَلَى طَمَعٍ أَنْ يَدْخُلُوا مَكَّةَ فَأَنْزَلَ اللهُ الْفِدْيَةَ، فَأَمَرَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يُطْعِمَ فَرَقًا بَيْنَ سِتَّةِ مَسَاكِينَ أَوْ يُهْدِيَ شَاةً أَوْ يَصُومَ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ.

[راجع: ١٨١٤]

4159. हमसे ह़सन बिन ख़लफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे इस्ह़ाक़ बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र वरक़ाअ बिन उ़मर ने, उनसे इब्ने अबी नुजैह ने, उनसे मुजाहिद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला ने बयान किया और उनसे कअ़ब बिन उ़ज्रह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने उन्हें देखा कि जूएँ उनके चेहरे पर गिर रही हैं तो आपने दरयाफ़्त किया कि क्या इससे तुम्हें तकलीफ़ होती है? वो बोले कि जी हाँ। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें सर मुँडवाने का हुक्म दिया। आप उस वक़्त हुदैबिया में थे (उ़मरह के लिये एहराम बाँधे हुए) और उनको ये मा'लूम नहीं हुआ था कि वो उ़मरह से रोके जाएँगे। हुदैबिया ही में उनको एहराम खोल देना पड़ेगा। बल्कि उनकी तो ये आरज़ू थी कि मक्का में किसी तरह दाख़िल हो जाए। फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़िदया का हुक्म नाज़िल फ़र्माया (या'नी एहराम की हालत में) सर मुँडवाने वग़ैरह पर, उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने कअ़ब को हुक्म दिया कि एक फ़िर्क़ अनाज छः मिस्कीनों को खिला दें या एक बकरी क़ुर्बानी करें या तीन दिन रोज़े रखें।

(राजेअ़ : 1814)

4161,62. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह) ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के साथ बाज़ार गया। हज़रत उ़मर (रज़ि.) से एक नौजवान औ़रत ने मुलाक़ात की और अ़र्ज़ की कि या अमीरल मोमिनीन! मेरे शौहर की वफ़ात हो गई है और चन्द छोटी-छोटी बच्चियाँ छोड़ गये हैं। अल्लाह की क़सम! कि अब न उनके पास बकरी के पाये हैं कि उनको पका लें, न खेती है, न दूध के जानवर हैं। मुझे डर है कि वो फ़क्र व फ़ाक़ा से हलाक न हो जाएँ। मैं ख़ुफ़ाफ़ बिन ऐमाअ ग़िफ़ारी की बेटी हूँ। मेरे वालिद आँहज़रत (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-हुदैबिया में शरीक थे। ये सुनकर हज़रत उ़मर (रज़ि.) उनके पास थोड़ी देर के लिये खड़े हो गये, आगे नहीं बढ़े। फिर फ़र्माया, मरहबा, तुम्हारा ख़ानदानी ता'ल्लुक़ तो बहुत क़रीबी है। फिर आप एक बहुत क़वी ऊँट की त़रफ़ मुड़े जो घर में बँधा हुआ था और उस पर दो बोरे ग़ल्ले से भरे हुए रख दिये। उन दोनों बोरों के दरम्यान रुपया और दूसरी ज़रूरत की चीज़ें और कपड़े रख दिये और उसकी मकेल उनके हाथ में थमाकर फ़र्माया कि उसे ले जा, ये ख़त्म न होगा इससे पहले ही अल्लाह तआ़ला तुम्हें फिर इससे बेहतर देगा। एक स़ाहब ने उस पर कहा, या अमीरल मोमिनीन! आपने उसे बहुत दे दिया। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा, तेरी माँ तुझे रोये, अल्लाह की क़सम! इस औ़रत के वालिद और इसके भाई जैसे अब भी मेरी नज़रों के सामने हैं कि एक मुद्दत तक एक क़िले के मुहास़िरे में वो शरीक रहे, आख़िर उसे फ़तह कर लिया। फिर हम सुबह को उन दोनों का हिस़्सा माले ग़नीमत से वसूल कर रहे थे।

٤١٦٠، ٤١٦١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ إِلَى السُّوقِ فَلَحِقَتْ عُمَرَ امْرَأَةٌ شَابَّةٌ فَقَالَتْ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ هَلَكَ زَوْجِي وَتَرَكَ صِبْيَةً صِغَارًا وَاللهِ مَا يُنْضِجُونَ كُرَاعًا، وَلاَ لَهُمْ زَرْعٌ وَلاَ ضَرْعٌ، وَخَشِيتُ أَنْ تَأْكُلَهُمُ الضَّبُعُ، وَأَنَا بِنْتُ خُفَافِ بْنِ إِيمَاءَ الْغِفَارِيِّ وَقَدْ شَهِدَ أَبِي الْحُدَيْبِيَةَ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَقَفَ مَعَهَا عُمَرُ وَلَمْ يَمْضِ، ثُمَّ قَالَ: مَرْحَبًا بِنَسَبٍ قَرِيبٍ، ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى بَعِيرٍ ظَهِيرٍ كَانَ مَرْبُوطًا فِي الدَّارِ فَحَمَلَ عَلَيْهِ غِرَارَتَيْنِ مَلأَهُمَا طَعَامًا وَحَمَلَ بَيْنَهُمَا نَفَقَةً وَثِيَابًا، ثُمَّ نَاوَلَهَا بِخِطَامِهِ. ثُمَّ قَالَ: اقْتَادِيهِ فَلَنْ يَفْنَى حَتَّى يَأْتِيَكُمُ اللهُ بِخَيْرٍ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَكْثَرْتَ لَهَا، قَالَ عُمَرُ: ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ وَاللهِ إِنِّي لأَرَى أَبَا هَذِهِ وَأَخَاهَا قَدْ حَاصَرَا حِصْنًا زَمَانًا فَافْتَتَحَاهُ ثُمَّ أَصْبَحْنَا نَسْتَفِيءُ سُهْمَانَهُمَا فِيهِ.

4162. मुझसे मुहम्मद बिन राफ़ेअ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़म्र शबाबा बिन सवार फ़ज़ारी ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने, और उनसे उनके वालिद (मुसय्यिब ने हज़्न रज़ि.) से बयान किया कि मैंने वो पेड़ देखा था लेकिन फिर बाद में जब आया तो मैं उसे नहीं पहचान सका। महमूद ने बयान किया कि फिर

٤١٦٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ بْنُ سَوَّارٍ أَبُو عَمْرٍو الْفَزَارِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: لَقَدْ رَأَيْتُ الشَّجَرَةَ ثُمَّ أَتَيْتُهَا بَعْدُ فَلَمْ أَعْرِفْهَا قَالَ مَحْمُودٌ : ثُمَّ

बाद में वो पेड़ मुझे याद न रहा।

(दीगर मक़ाम : 4163, 4164, 4165)

[illegible] بَعْدُ.

[أطرافه في : ٤١٦٣، ٤١٦٤، ٤١٦٥].

4163. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे तारिक़ बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि हज्ज के इरादे से जाते हुए मैं कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जो नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने पूछा कि ये कौनसी मस्जिद है? उन्होंने बताया कि ये वही पेड़ है जहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बेअतुर्रिज़्वान ली थी। फिर मैं सईद बिन मुसय्यिब के पास आया और उन्हें उसकी ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझसे मेरे वालिद मुसय्यिब बिन हज़्न ने बयान किया, वो उन लोगों में थे जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से इस पेड़ के तले बेअत की थी। कहते थे जब मैं दूसरे साल वहाँ गया तो उस पेड़ की जगह को भूल गया। सईद ने कहा आँहज़रत (ﷺ) के अस्हाब तो उस पेड़ को पहचान न सके। तुम लोगों ने कैसे पहचान लिया (उसके तले मस्जिद बना ली) तुम उनसे ज़्यादा इल्म वाले ठहरे। (राजेअ : 4162)

٤١٦٣- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ طَارِقِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، قَالَ: انْطَلَقْتُ حَاجًّا فَمَرَرْتُ بِقَوْمٍ يُصَلُّونَ، قُلْتُ : مَا هَذَا الْمَسْجِدُ؟ قَالُوا: هَذِهِ الشَّجَرَةُ حَيْثُ بَايَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْعَةَ الرِّضْوَانِ، فَأَتَيْتُ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ سَعِيدٌ: حَدَّثَنِي أَبِي أَنَّهُ كَانَ فِيمَنْ بَايَعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ تَحْتَ الشَّجَرَةِ، قَالَ : فَلَمَّا خَرَجْنَا مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ نَسِينَاهَا فَلَمْ نَقْدِرْ عَلَيْهَا فَقَالَ سَعِيدٌ: إِنَّ أَصْحَابَ مُحَمَّدٍ ﷺ لَمْ يَعْلَمُوهَا وَعَلِمْتُمُوهَا أَنْتُمْ فَأَنْتُمْ أَعْلَمُ.

[راجع: ٤١٦٢].

4164. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने, कहा हमसे तारिक़ बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे उनके वालिद ने कि उन्होंने भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से उस पेड़ के तले बेअत की थी। कहते थे कि जब हम दूसरे साल उधर गये तो हमें पता ही नहीं चला कि वो कौनसा पेड़ था। (राजेअ : 4162)

٤١٦٤- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا طَارِقٌ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ كَانَ مِمَّنْ بَايَعَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَرَجَعْنَا إِلَيْهَا الْعَامَ الْمُقْبِلَ فَعَمِيَتْ عَلَيْنَا.

[راجع: ٤١٦٢]

बहरहाल बाद में हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस पेड़ को कटवा दिया ताकि वो परस्तिशगाह (पूजाघर) न बन जाए।

4165. हमसे क़ुबैसा बिन उक़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान सौरी ने बयान किया, उनसे तारिक़ बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि सईद बिन मुसय्यिब की मज्लिस में अश्शजर का ज़िक्र हुआ तो वो हंसे और कहा कि मेरे वालिद ने मुझे बताया कि वो भी उस पेड़ के तले बेअत में शरीक थे। (राजेअ : 4162)

٤١٦٥- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ طَارِقٍ قَالَ: ذُكِرَتْ عِنْدَ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ الشَّجَرَةُ فَضَحِكَ فَقَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي وَكَانَ شَهِدَهَا.[راجع: ٤١٦٢]

4166. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा

٤١٦٦- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ،

हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अम्र बिन मुर्रह ने, उन्होंने कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, वो बेअते रिज़्वान में शरीक थे। उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में जब कोई सदक़ा लेकर हाज़िर होता तो आप दुआ करते कि ऐ अल्लाह! इस पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा। चुनाँचे मेरे वालिद भी अपना सदक़ा लेकर हाज़िर हुए तो हुज़ूर (ﷺ) ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! आले अबी औफ़ा (रज़ि.) पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्मा। (राजेअ : 1497)

حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَتَاهُ قَوْمٌ بِصَدَقَةٍ، قَالَ: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِمْ، فَأَتَاهُ أَبِي بِصَدَقَتِهِ فَقَالَ: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى آلِ أَبِي أَوْفَى. [راجع: ١٤٩٧]

4167. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उनसे उनके भाई अब्दुल हमीद ने, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे अम्र बिन यह्या ने और उनसे अब्बाद बिन तमीम ने बयान किया कि हर्रा की लड़ाई में लोग अब्दुल्लाह बिन हंज़ला (रज़ि.) के हाथ पर (यज़ीद के ख़िलाफ़) बेअत कर रहे थे। अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने पूछा कि इब्ने हंज़ला से किस बात पर बेअत की जा रही है? तो लोगों ने बताया कि मौत पर। इब्ने ज़ैद ने कहा कि रसूल करीम (ﷺ) के बाद अब मैं किसी से भी मौत पर बेअत नहीं करूँगा। वो हुज़ूर अकरम (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-हुदबिया में शरीक थे। (राजेअ : 2959)

٤١٦٧ - حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ أَخِيهِ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى عَنْ عَبَّادِ بْنِ تَمِيمٍ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ الْحَرَّةِ وَالنَّاسُ يُبَايِعُونَ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ حَنْظَلَةَ فَقَالَ ابْنُ زَيْدٍ: عَلَى مَا يُبَايِعُ ابْنُ حَنْظَلَةَ النَّاسَ؟ قِيلَ لَهُ: عَلَى الْمَوْتِ، قَالَ: لاَ أُبَايِعُ عَلَى ذَلِكَ أَحَدًا بَعْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَكَانَ شَهِدَ مَعَهُ الْحُدَيْبِيَةَ. [راجع: ٢٩٥٩]

जहाँ आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) से मौत पर बेअत ली थी।

4168. हमसे यह्या बिन यअला मुहारिबी ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे अयास बिन सलमा बिन अक्वा ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, वो अस्हाबे शजरह में से थे, उन्होंने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ जुम्आ की नमाज़ पढ़कर वापस हुए तो दीवारों का साया अभी इतना नहीं हुआ था कि हम उसमें आराम कर सकें।

٤١٦٨ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَعْلَى الْمُحَارِبِيُّ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا إِيَاسُ بْنُ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي، قَالَ: وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ، قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ الْجُمُعَةَ ثُمَّ نَنْصَرِفُ وَلَيْسَ لِلْحِيطَانِ ظِلٌّ نَسْتَظِلُّ فِيهِ.

4169. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया कि हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने बयान किया कि मैंने सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) से पूछा कि सुलह हुदैबिया के मौक़े पर आप लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से किस चीज़ पर बेअत की थी? उन्होंने बतलाया कि मौत पर। (राजेअ : 2960)

٤١٦٩ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ: قُلْتُ لِسَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ عَلَى أَيِّ شَيْءٍ بَايَعْتُمْ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ؟ قَالَ: عَلَى الْمَوْتِ. [راجع: ٢٩٦٠]

4170. मुझसे अहमद बिन इश्काब ने बयान किया, कहा हमसे

٤١٧٠ - حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ إِشْكَابٍ

मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे अ़ला बिन मुसय्यिब ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया, मुबारक हो! आपको नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत नसीब हुई और हुज़ूर (ﷺ) से आपने शजर (पेड़) के नीचे बेअ़त की। उन्होंने कहा बेटे! तुम्हें मा'लूम नहीं कि हमने हुज़ूर (ﷺ) के बाद क्या क्या काम किये हैं।

حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنِ الْعَلاَءِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ : لَقِيتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فَقُلْتُ. طُوبَى لَكَ صَحِبْتَ النَّبِيَّ ﷺ وَبَايَعْتَهُ تَحْتَ الشَّجَرَةِ، فَقَالَ: يَا ابْنَ أَخِي إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثْنَا بَعْدَهُ.

4171. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे मुआ़विया ने बयान किया, वो सलाम के बेटे हैं, उनसे यह्या ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उन्हें ष़ाबित बिन ज़ह्हाक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से पेड़ के नीचे बेअ़त की थी। (राजेअ़ : 1363)

٤١٧١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ هُوَ ابْنُ سَلاَّمٍ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ أَنَّ ثَابِتَ الضَّحَّاكِ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ بَايَعَ النَّبِيَّ ﷺ تَحْتَ الشَّجَرَةِ.
[راجع: ١٣٦٣]

4172. मुझसे अह़मद बिन इस्हाक ने बयान किया, कहा हमसे उ़ष्मान बिन उमर ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि (आयत) बेशक हमने तुम्हें खुली हुई फ़तह़ दी, ये फ़तह़ सुलह़े हुदैबिया थी। स़ह़ाबा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया हुज़ूर (ﷺ) के लिये तो मरह़ला आसान है (कि आपकी तमाम अगली और पिछली लग़्ज़िशें मुआ़फ़ हो चुकी हैं) लेकिन हमारा क्या होगा? इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई, इसलिये कि मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें जन्नत में दाख़िल की जाएँगी जिसके नीचे नहरें जारी होंगी। शुअ़बा ने बयान किया कि फिर मैं कूफ़ा आया और क़तादा से पूरा वाक़िया बयान किया, फिर मैं दोबारा क़तादा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनके सामने उसका ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा कि, बेशक मैंने तुम्हें खुली फ़तह़ दी है, की तफ़्सीर तो अनस (रज़ि.) से रिवायत है लेकिन उसके बाद हनीअम मरीआ (या'नी हुज़ूर ﷺ के लिये तो हर मरह़ले आसान है) ये तफ़्सीर इक्रिमा से मन्क़ूल है। (दीगर मक़ाम : 4834)

٤١٧٢- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا﴾ قَالَ الْحُدَيْبِيَةُ: قَالَ أَصْحَابُهُ : هَنِيئًا مَرِيئًا فَمَا لَنَا فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الأَنْهَارُ﴾ قَالَ شُعْبَةُ : فَقَدِمْتُ الْكُوفَةَ فَحَدَّثْتُ بِهَذَا كُلِّهِ عَنْ قَتَادَةَ ثُمَّ رَجَعْتُ فَذَكَرْتُ لَهُ فَقَالَ : أَمَّا ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ﴾ فَعَنْ أَنَسٍ : وَأَمَّا هَنِيئًا مَرِيئًا فَعَنْ عِكْرِمَةَ.
[طرفه في: ٤٨٣٤].

4173. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अबू आ़मिर अ़क़्दी ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे मिजज़ा बिन ज़ाहिर

٤١٧٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ مَجْزَأَةَ بْنِ زَاهِرٍ الأَسْلَمِيِّ عَنْ أَبِيهِ، وَكَانَ

असलमी ने और उनसे उनके वालिद ज़ाहिर इब्ने अस्वद (रज़ि.) ने बयान किया, वो बेअ़ते रिज़्वान में शरीक थे। उन्होंने बयान किया कि हाँडी में मैं गधे का गोश्त उबाल रहा था कि एक मुनादी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ से ऐलान किया कि आँहज़रत (ﷺ) तुम्हें गधे के गोश्त के खाने से मना फ़र्माते हैं।

مِمَّنْ شَهِدَ الشَّجَرَةَ قَالَ: إِنِّي لأُوقِدُ تَحْتَ الْقِدْرِ بِلُحُومِ الْحُمُرِ إِذْ نَادَى مُنَادِي رَسُولِ اللهِ ﷺ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَنْهَاكُمْ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ.

4174. और मिज्ज़ात ने अपने ही क़बीले के एक सहाबी के बारे में जो बेअ़ते रिज़्वान में शरीक थे और जिनका नाम अहबान बिन औस (रज़ि.) था, नक़ल किया कि उनके एक घुटने में तकलीफ़ थी, इसलिये जब वो सज्दा करते तो उस घुटने के नीचे कोई नरम तकिया रख लेते थे।

٤١٧٤ - وَعَنْ مَجْزَأَةَ عَنْ رَجُلٍ مِنْهُمْ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ اسْمُهُ أُهْبَانُ بْنُ أَوْسٍ، وَكَانَ اشْتَكَى رُكْبَتَهُ وَكَانَ إِذَا سَجَدَ جَعَلَ تَحْتَ رُكْبَتِهِ وِسَادَةً.

हज़रत ज़ाहिर बिन अस्वद (रज़ि.) बेअ़ते रिज़्वान वालों में से हैं। कूफ़ा में सुकूनत पज़ीर (निवासी) हो गये थे। इसलिये उनको कूफ़ियों में गिना गया है। उनसे बुख़ारी में यही एक हदीष़ मरवी है।

4175. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अ़दी ने, उनसे शुअ़बा ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे बशीर बिन यसार ने और उनसे सुवेद बिन नोअ़मान (रज़ि.) ने बयान किया, वो बेअ़ते रिज़्वान में शरीक थे कि गोया अब भी वो मंज़र मेरी आँखों के सामने है जब रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके सहाबा (रज़ि.) के सामने सत्तू लाया गया, जिसे उन हज़रात ने पिया। इस रिवायत की मुताबअ़त मुआ़ज़ ने शुअ़बा से की है। (राजेअ़ : 209)

٤١٧٥ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سُوَيْدِ بْنِ النُّعْمَانِ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ، كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَصْحَابُهُ أُتُوا بِسَوِيقٍ فَلاَكُوهُ. تَابَعَهُ مُعَاذٌ عَنْ شُعْبَةَ.

[راجع: ٢٠٩]

4176. हमसे मुहम्मद बिन हातिम बिन बज़ीअ़ ने बयान किया, कहा हमसे शाज़ान (अस्वद बिन आमिर) ने, उनसे शुअ़बा ने, उनसे अबू हम्ज़ा ने बयान किया कि उन्होंने आइज़ बिन अ़म्र (रज़ि.) से पूछा, वो नबी करीम (ﷺ) के सहाबी थे और बेअ़ते रिज़्वान में शरीक थे कि क्या वित्र की नमाज़ (एक रकअ़त और पढ़कर) तोड़ी जा सकती है? उन्होंने कहा कि अगर शुरू रात में तू ने वित्र पढ़ लिया हो तो आख़िर रात में न पढ़ो।

٤١٧٦ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ بْنِ بَزِيعٍ حَدَّثَنَا شَاذَانُ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِذَ بْنَ عَمْرٍو، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ هَلْ يُنْقَضُ الْوِتْرُ؟ قَالَ : إِذَا أَوْتَرْتَ مِنْ أَوَّلِهِ فَلاَ تُوتِرْ مِنْ آخِرِهِ.

तशरीह : हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, इज़ा औतरल्मर्उ षुम्म नाम अराद अंय्यततव्वअ़ सल्ला युसल्ली रक्अ़तन लियुसीरल्वित्रू शफ़्अ़न षुम्म यततव्वअ़ मा शाअ षुम्म यूतिर मुहाफ़ज़तन अ़ला क़ौलिही इज्अ़लू आख़िर सलातिकुम बिल्लैलि वित्रन व युसल्ली ततव्वुअ़न मा शाअ व ला यन्कुज़ वित्रहू व यक्तफ़ी बिल्लज़ी तक़द्दम फअ़ज़ाब बिइख़्तियारिस्सिफ़तिष्षानियति फक़ाल इज़ा औतर्त मिन औव्वलिही फ़ला यूतिर मिन आख़िरिही व हाज़िहिल्मस्अलतु फ़ीहा अस्सलफ़ु फकान इब्नु उमर यरा नक्ज़ल्वित्रि वस्सहीह इन्दश्शाफ़िइ अन्नहू ला यन्कुज़ु कमा फ़ी हदीषिल्बाबि व हुव क़ौलुल्मलिकिय्य (फ़त्ह) या'नी मतलब ये कि जब आदमी सोने

से पहले वित्र पढ़ ले और फिर रात को उठकर नफ़्ल पढ़ना चाहे तो क्या वो एक रकअ़त पढ़कर पहले वित्र को शुफ़अ़ (जोड़ा) बना सकता है फिर उसके बाद जिस क़दर चाहे नफ़्ल पढ़े और आख़िर में फिर वित्र पढ़ ले। इस ह़दीष़ की ता'मील के लिये जिसमें इर्शाद है कि रात की आख़िरी नमाज़े वित्र होनी चाहिये या दूसरी सूरत ये कि वित्र कोशुफ़अ़ बनाकर न तोड़े बल्कि जिस क़दर चाहे रात को उठकर नफ़्ल नमाज़ पढ़ ले और वित्र के लिये पहले ही पढ़ी हुई रकअ़त को काफ़ी समझे पस दूसरी सूरत के इख़्तियार करने का जवाब दिया है और कहा कि जब तुम पहले वित्र पढ़ चुके तो अब दोबारा ज़रूरत नहीं है। इस मसले में सलफ़ का इख़्तिलाफ़ है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) वित्र को दोबारा तोड़कर पढ़ने के क़ाइल थे और शाफ़िइया का क़ौल स़ह़ीह़ यही है कि इसे न तोड़ा जाए जैसा कि ह़दीषे़ बाब में है। मालिकिया का भी यही क़ौल है। वल्लाहु आ़लम।

ह़ज़रत आइज़ बिन अ़म्र मदनी (रज़ि.) बेअ़ते रिज़्वान वालों मे से हैं। आख़िर में बस़रा में सकूनत कर ली थी। उनसे रिवायत करने वाले ज़्यादा बस़री हैं।

4177. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने और उन्हें उनके वालिद असलम ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी सफ़र या'नी (सफ़रे हुदैबिया) में थे, रात का वक़्त था और उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (रज़ि.) आपके साथ साथ थे। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने आपसे कुछ पूछा लेकिन (उस वक़्त आप वह़्य में मशग़ूल थे, ह़ज़रत उ़मर रज़ि. को ख़बर न थी) आपने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने फिर पूछा, आपने फिर कोई जवाब नहीं दिया, उन्होंने फिर पूछा, आपने उस मर्तबा भी कोई जवाब नहीं दिया। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने (अपने दिल में) कहा, उ़मर! तेरी माँ तुझ पर रोये, रसूलुल्लाह (ﷺ) से तुमने तीन बार सवाल किया, हुज़ूर (ﷺ) ने तुम्हें एक बार भी जवाब नहीं दिया। उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने अपने ऊँट को ऐड़ लगाई और मुसलमानों से आगे निकल गया। मुझे डर था कि कहीं मेरे बारे में कोई वह़्य न नाज़िल हो जाए। अभी थोड़ी देर हुई थी कि मैंने सुना, एक शख़्स़ मुझे आवाज़ दे रहा था। उन्होंने बयान किया कि मैंने सोचा कि मैं तो पहले ही डर रहा था कि मेरे बारे में कहीं कोई वह़्य नाज़िल न हो जाए, फिर मैं हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और आपको सलाम किया। आपने फ़र्माया कि रात मुझ पर एक सूरत नाज़िल हुई है और वो मुझे तमाम कायनात से ज़्यादा अ़ज़ीज़ है जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है, फिर आपने सूरह, इन्ना फ़तह़ना लका फ़त्ह़म् मुबीना, (बेशक मैंने आपको खुली हुई फ़तह दी है) की तिलावत फ़र्माई।

(दीगर मक़ाम : 4833, 5012)

٤١٧٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَسِيرُ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ وَكَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَسِيرُ مَعَهُ لَيْلاً فَسَأَلَهُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عَنْ شَيْءٍ فَلَمْ يُجِبْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَلَمْ يُجِبْهُ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَلَمْ يُجِبْهُ، وَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ يَا عُمَرُ نَزَرْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، كُلُّ ذَلِكَ لاَ يُجِيبُكَ قَالَ عُمَرُ : فَحَرَّكْتُ بَعِيرِي ثُمَّ تَقَدَّمْتُ أَمَامَ الْمُسْلِمِينَ وَخَشِيتُ أَنْ يَنْزِلَ فِيَّ قُرْآنٌ فَمَا نَشِبْتُ أَنْ سَمِعْتُ صَارِخًا يَصْرُخُ بِي قَالَ: فَقُلْتُ لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ يَكُونَ نَزَلَ فِيَّ قُرْآنٌ وَجِئْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ : ((لَقَدْ أُنْزِلَتْ عَلَيَّ اللَّيْلَةَ سُورَةٌ لَهِيَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ)) ثُمَّ قَرَأَ : ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا﴾)).

[أطرافه في : ٤٨٣٣، ٥٠١٢].

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) पर सूरह इन्ना फ़तह्ना का नुज़ूल हो रहा था। हज़रत उमर (रज़ि.) को ये मा'लूम न हुआ, इसलिये वो बार बार पूछते रहे मगर आँहज़रत (ﷺ) खामोश रहे जिसको हज़रत उमर (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) की नाराज़गी पर महमूल किया। बाद में हक़ीक़ते हाल के खुलने पर सहीह कैफ़ियत मा'लूम हुई। सूरह इन्ना फ़तह्ना का उस मौक़े पर नुज़ूल इशाअते इस्लाम के लिये बड़ी बशारत थी इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने इस सूरत को सारी कायनात से अज़ीज़तरीन बतलाया।

4178,79. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा कि जब ज़ुह्री ने ये हदीष़ बयान की (जो आगे मज़्कूर हुई है) तो उसमें से कुछ मैंने याद रखी और मअमर ने उसको अच्छी तरह याद दिलाया। उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने, उनसे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) और मरवान बिन हकम ने बयान किया, उनमें से हर एक दूसरे से कुछ बढ़ाता है। उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) सुलह हुदैबिया के मौक़े पर तक़रीबन एक हज़ार सहाबा को साथ लेकर रवाना हुए। फिर जब ज़ुल हुलैफ़ा पहुँचे तो आपने क़ुर्बानी के जानवर को क़लादा पहनाया और उस पर निशान लगाया और वहीं से उमरह का एहराम बाँधा। फिर आपने क़बीला ख़ुज़ाआ के एक सहाबी को जासूसी के लिये भेजा और ख़ुद भी सफ़र जारी रखा। जब आप ग़दीरुल अश्तात पर पहुँचे तो आपके जासूस भी ख़बरें लेकर आ गये, जिन्होंने बताया कि क़ुरैश ने आपके मुक़ाबले के लिये बहुत बड़ा लश्कर तैयार कर रखा है और बहुत से क़बाईल को बुलाया है। वो आपसे जंग करने पर तुले हुए हैं और आपको बैतुल्लाह से रोकेंगे। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा से फ़र्माया, मुझे मश्वरा दो क्या तुम्हारे ख़्याल में ये मुनासिब होगा कि मैं उन कुफ़्फ़ार की औरतों और बच्चों पर हमला कर दूँ जो हमारे बैतुल्लाह तक पहुँचने में रुकावट बनना चाहते हैं? अगर उन्होंने हमारा मुक़ाबला किया तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने मुश्रिकीन से हमारे जासूस को महफ़ूज़ रखा है और अगर वो हमारे मुक़ाबले पर नहीं आते तो हम उन्हें एक हारी हुई क़ौम जानकर छोड़ देंगे। हज़रत अबूबक्र (रजि) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप तो सिर्फ़ बैतुल्लाह के उमरे के लिये निकले हैं न आपका इरादा किसी को क़त्ल करने का है और न किसी से लड़ाई का। इसलिये आप बैतुल्लाह तशरीफ़ ले चलें। अगर हमें फिर भी कोई बैतुल्लाह से

٤١٧٨، ٤١٧٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ حِينَ حَدَّثَ هَذَا الْحَدِيثَ حَفِظْتُ بَعْضَهُ وَثَبَّتَنِي مَعْمَرٌ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ وَمَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ يَزِيدُ أَحَدُهُمَا عَلَى صَاحِبِهِ قَالاَ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ الْحُدَيْبِيَةِ فِي بِضْعَ عَشْرَةَ مِائَةً مِنْ أَصْحَابِهِ فَلَمَّا أَتَى ذَا الْحُلَيْفَةِ قَلَّدَ الْهَدْيَ وَأَشْعَرَهُ وَأَحْرَمَ مِنْهَا بِعُمْرَةٍ وَبَعَثَ عَيْنًا لَهُ مِنْ خُزَاعَةَ وَسَارَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى كَانَ بِغَدِيرِ الأَشْطَاطِ أَتَاهُ عَيْنُهُ قَالَ: إِنَّ قُرَيْشًا جَمَعُوا لَكَ جُمُوعًا وَقَدْ جَمَعُوا لَكَ الأَحَابِيشَ، وَهُمْ مُقَاتِلُوكَ وَصَادُّوكَ عَنِ الْبَيْتِ وَمَانِعُوكَ. فَقَالَ: ((أَشِيرُوا أَيُّهَا النَّاسُ عَلَيَّ أَتَرَوْنَ أَنْ أَمِيلَ إِلَى عِيَالِهِمْ وَذَرَارِيِّ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَصُدُّونَا عَنِ الْبَيْتِ؟ فَإِنْ يَأْتُونَا كَانَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ قَدْ قَطَعَ عَيْنًا مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَإِلاَّ تَرَكْنَاهُمْ مَحْرُوبِينَ)) قَالَ أَبُوبَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللهِ خَرَجْتَ عَامِدًا لِهَذَا الْبَيْتِ لاَ تُرِيدُ قَتْلَ أَحَدٍ وَلاَ حَرْبَ أَحَدٍ فَتَوَجَّهْ لَهُ فَمَنْ صَدَّنَا عَنْهُ قَاتَلْنَاهُ قَالَ: امْضُوا عَلَى

रोकेगा तो हम उससे जंग करेंगे। आपने फ़र्माया कि फिर अल्लाह का नाम लेकर सफ़र जारी रखो। (राजेअ़ : 1694, 1695)

اسْمِ اللهِ.

[راجع: ١٦٩٤، ١٦٩٥]

4180,81. मुझसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे मेरे भतीजे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उनके चचा मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन शिहाब ने कहा कि मुझको उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हों ने मरवान बिन हकम और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) से सुना, दोनों रावियों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उ़मरह हुदैबिया के बारे में बयान किया तो उ़र्वा ने मुझे उसमें जो कुछ ख़बर दी थी, उसमें ये भी था कि जब हुज़ूर अकरम (ﷺ) और (क़ुरैश का नुमाइन्दा) सुहैल बिन अ़म्र हुदैबिया में एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिये सुलह की दस्तावेज़ लिख रहे थे और उसमें सुहैल ने ये शर्त भी रखी थी कि हमारा अगर कोई आदमी आपके यहाँ पनाह ले ख़्वाह वो आपके दीन पर ही क्यूँ न हो जाए तो आपको उसे हमारे हवाले करना ही होगा ताकि हम उसके साथ जो चाहें करें। सुहैल इस शर्त पर अड़ गया और कहने लगा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) इस शर्त को क़ुबूल कर लें और मुसलमान इस शर्त पर किसी तरह राज़ी न थे, मजबूरन उन्होंने इस पर बातचीत की (कहा ये क्यूँ कर हो सकता है कि मुसलमान काफ़िर के सुपुर्द कर दें) सुहैल ने कहा कि ये नहीं हो सकता तो सुलह भी नहीं हो सकती। आँहज़रत (ﷺ) ने ये शर्त भी तस्लीम कर ली और अबू जन्दल बिन सुहैल (रज़ि.) को उनके वालिद सुहैल बिन अ़म्र के सुपुर्द कर दिया (जो उसी वक़्त मक्का से फ़रार होकर बेड़ी को घसीटते हुए मुसलमानों के पास पहुँचे थे) (शर्त के मुताबिक़ मुद्दते सुलह में मक्का से फ़रार होकर) जो भी आता हुज़ूर (ﷺ) उसे वापस कर देते, ख़्वाह वो मुसलमान ही क्यूँ न होता। इस मुद्दत में कुछ मोमिन औरतें भी हिजरत करके मक्का से आईं, उम्मे कुल्सुम बिन्ते उ़क़्बा इब्ने मुईत भी उनमें से हैं जो इस मुद्दत में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पास आई थीं, वो उस वक़्त नौजवान थीं, उनके घरवाले हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मुतालबा किया कि इन्हें वापस कर दें। इस पर अल्लाह तआ़ला ने मोमिन औरतों के बारे में वो आयत नाज़िल की

٤١٨٠، ٤١٨١- حدَّثني إسْحَقُ أخْبَرَنَا يَعْقُوبُ حَدَّثَنِي ابْنُ أخِي ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ أخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أنَّهُ سَمِعَ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ وَالْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ يُخْبِرَانِ خَبَرًا مِنْ خَبَرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي عُمْرَةِ الْحُدَيْبِيَةِ فَكَانَ فِيمَا أخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْهُمَا أنَّهُ لَمَّا كَاتَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ سُهَيْلَ بْنَ عَمْرٍو يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ عَلَى قَضِيَّةِ الْمُدَّةِ وَكَانَ فِيمَا اشْتَرَطَ سُهَيْلُ بْنُ عَمْرٍو أنَّهُ قَالَ: لاَ يَأْتِيكَ مِنَّا أحَدٌ وَإنْ كَانَ عَلَى دِينِكَ إلاَّ رَدَدْتَهُ إلَيْنَا وَخَلَّيْتَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُ وَأبَى سُهَيْلٌ أنْ يُقَاضِيَ رَسُولَ اللهِ ﷺ إلاَّ عَلَى ذَلِكَ فَكَرِهَ الْمُؤْمِنُونَ ذَلِكَ وَامْتَعَضُوا فَتَكَلَّمُوا فِيهِ فَلَمَّا أبَى سُهَيْلٌ أنْ يُقَاضِيَ رَسُولَ اللهِ ﷺ إلاَّ عَلَى ذَلِكَ كَاتَبَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَرَدَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ أبَا جَنْدَلِ بْنِ سُهَيْلٍ يَوْمَئِذٍ إلَى أبِيهِ سُهَيْلِ بْنِ عَمْرٍو وَلَمْ يَأْتِ رَسُولَ اللهِ ﷺ أحَدٌ مِنَ الرِّجَالِ إلاَّ رَدَّهُ فِي تِلْكَ الْمُدَّةِ وَإنْ كَانَ مُسْلِمًا وَجَاءَتِ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَكَانَتْ أمُّ كُلْثُومٍ بِنْتُ عُقْبَةَ بْنِ أبِي مُعَيْطٍ مِمَّنْ خَرَجَ إلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهْيَ عَاتِقٌ فَجَاءَ أهْلُهَا يَسْألُونَ رَسُولَ اللهِ ﷺ أنْ يَرْجِعَهَا إلَيْهِمْ حَتَّى أنْزَلَ اللهُ تَعَالَى فِي الْمُؤْمِنَاتِ مَا أنْزَلَ.

जो शर्त के मुनासिब थी। (राजेअ : 1694, 1695)

[راجع: ١٦٩٤، ١٦٩٥]

4182. इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे उर्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत, या अय्युहन् नबिय्यु इज़ा जाअकल् मुअमिनात, के नाज़िल होने के बाद आँहुज़ूर (ﷺ) हिजरत करके आने वाली औरतों को पहले आज़माते थे और उनके चचा से रिवायत है कि हमें वो हदीष़ भी मा'लूम है जब आँहज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया था कि जो मुसलमान औरतें हिजरत करके चली आती हैं उनके शौहरों को वो सब कुछ वापस कर दिया जाए जो अपनी बीवियों को वो दे चुके हैं और हमें ये भी मा'लूम हुआ है कि अबू बसीर, फिर उन्होंने तफ़्सील के साथ हदीष़ बयान की। (राजेअ : 2713)

٤١٨٢ - قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَمْتَحِنُ مَنْ هَاجَرَ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ بِهَذِهِ الآيَةِ : ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ﴾ وَعَنْ عَمِّهِ. قَالَ : بَلَغَنَا حِينَ أَمَرَ اللهُ رَسُولَهُ ﷺ أَنْ يَرُدَّ إِلَى الْمُشْرِكِينَ مَا أَنْفَقُوا مَنْ هَاجَرَ مِنْ أَزْوَاجِهِمْ وَبَلَغَنَا أَنَّ أَبَا بَصِيرٍ فَذَكَرَهُ بِطُولِهِ.

[راجع: ٢٧١٣]

चूँकि मुआहिदा की शर्त में औरतों का कोई ज़िक्र न था, इसलिये जब औरतों का मसला सामने आया तो ख़ुद क़ुर्आन मजीद में हुक्म नाज़िल हुआ कि औरतों को मुश्रिकीन के ह़वाले न किया जाए कि इससे मुआहिदा की ख़िलाफ़वर्ज़ी लाज़िम नहीं आती बशर्ते कि तुमको यक़ीन हो जाए कि वो औरतें महज़ ईमान व इस्लाम की ख़ातिर पूरे ईमान के साथ घर छोड़कर आई हैं।

4183. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक (रह) ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) फ़ित्ने के ज़माने में उ़मरह के इरादे से निकले। फिर उन्होंने कहा कि अगर बैतुल्लाह जाने से मुझे रोक दिया गया तो मैं वही काम करूँगा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था। चुनाँचे आपने स़िर्फ़ उ़मरह का एहराम बाँधा क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने भी सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर स़िर्फ़ उ़मरह का एहराम बाँधा था। (राजेअ :1639)

٤١٨٣ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ عَنْ مَالِكٍ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا خَرَجَ مُعْتَمِرًا فِي الْفِتْنَةِ فَقَالَ : إِنْ صُدِدْتُ عَنِ الْبَيْتِ صَنَعْنَا كَمَا صَنَعْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَأَهَلَّ بِعُمْرَةٍ مِنْ أَجْلِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ عَامَ الْحُدَيْبِيَةِ.

[راجع: ١٦٣٩]

4184. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने एहराम बाँधा और कहा कि अगर मुझे बैतुल्लाह जाने से रोका गया तो मैं भी वही काम करूँगा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था। जब आपको कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने बैतुल्लाह जाने से रोका तो इस आयत की तिलावत की कि, यक़ीनन तुम लोगों के लिये रसूले करीम (ﷺ) की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है।

٤١٨٤ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ أَهَلَّ وَقَالَ : إِنْ حِيلَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ لَفَعَلْتُ كَمَا فَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ حِينَ حَالَتْ كُفَّارُ قُرَيْشٍ بَيْنَهُ وَتَلاَ: ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾.

(राजेअ : 1639)

[راجع: ١٦٣٩]

4185. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ ने, उनको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह और सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी कि उन दोनों ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से बातचीत की (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे जुवैरिया ने बयान किया और उनसे नाफ़ेअ ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के किसी लड़के ने उनसे कहा, अगर इस साल आप (उ़मरह करने) न जाते तो बेहतर था, क्योंकि मुझे डर है कि आप बैतुल्लाह तक नहीं पहुँच सकेंगे। इस पर उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ निकले थे तो कुफ़्फ़ारे कुरैश ने बैतुल्लाह पहुँचने से रोक दिया था। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी कुर्बानी वहीं (हुदैबिया में) ज़िब्ह कर दी और सर के बाल मुँडवा दिये। सहाबा (रज़ि.) ने भी बाल छोटे करवा लिये, हुज़ूर (ﷺ) ने उसके बाद फ़र्माया कि मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने ऊपर एक उ़मरह वाजिब कर लिया है (और इसी त़रह तमाम सहाबा रज़ि. पर भी वो वाजिब हो गया) इसलिये अगर आज मुझे बैतुल्लाह तक जाने दिया गया तो मैं भी त़वाफ़ कर लूँगा और अगर मुझे भी रोक दिया गया तो मैं भी वही करूँगा जो हुज़ूर (ﷺ) ने किया था। फिर थोड़ी दूर चले और कहा कि मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने ऊपर उ़मरह के साथ हज्ज को भी ज़रूरी क़रार दे लिया है और कहा मेरी नज़र में तो हज्ज और उ़मरह दोनों एक ही जैसे हैं, फिर उन्होंने एक त़वाफ किया और एक सई की (जिस दिन मक्का पहुँचे) और आख़िर दोनों ही को पूरा किया।
(राजेअ : 1639)

٤١٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ نَافِعٍ، أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ ابْنَ عَبْدِ اللهِ وَسَالِمَ بْنَ عَبْدِ اللهِ أَخْبَرَاهُ أَنَّهُمَا كَلَّمَا عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ ح. وحَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ بَعْضَ بَنِي عَبْدِ اللهِ قَالَ لَهُ : لَوْ أَقَمْتَ الْعَامَ فَإِنِّي أَخَافُ أَنْ لاَ تَصِلَ إِلَى الْبَيْتِ قَالَ : خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَالَ كُفَّارُ قُرَيْشٍ دُونَ الْبَيْتِ فَنَحَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَدَايَاهُ وَحَلَقَ وَقَصَّرَ أَصْحَابُهُ وَقَالَ: أُشْهِدُكُمْ أَنِّي أَوْجَبْتُ عُمْرَةً. فَإِنْ خُلِّيَ بَيْنِي وَبَيْنَ الْبَيْتِ طُفْتُ وَإِنْ حِيلَ بَيْنِي وَبَيْنَ الْبَيْتِ صَنَعْتُ كَمَا صَنَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَسَارَ سَاعَةً ثُمَّ قَالَ: مَا أَرَى شَأْنَهُمَا إِلاَّ وَاحِدًا أُشْهِدُكُمْ أَنِّي قَدْ أَوْجَبْتُ حَجَّةً مَعَ عُمْرَتِي فَطَافَ طَوَافًا وَاحِدًا وَسَعْيًا وَاحِدًا حَتَّى حَلَّ مِنْهُمَا جَمِيعًا.

[راجع: ١٦٣٩]

4186. मुझसे शुजाअ बिन वलीद ने बयान किया, उन्होंने नज़र बिन मुहम्मद से सुना, कहा हमसे सख़र बिन जुवैरिया ने बयान किया और उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया कि लोग कहते हैं कि अ़ब्दुल्लाह हज़रत उ़मर (रज़ि.) से पहले इस्लाम में दाख़िल हुए थे, हालाँकि ये ग़लत है। अल्बत्ता उ़मर (रज़ि.) ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) को अपना एक घोड़ा लाने के लिये भेजा था, जो एक अंसारी सहाबी के पास था ताकि उसी पर सवार होकर जंग

٤١٨٦- حَدَّثَنِي شُجَاعُ بْنُ الْوَلِيدِ سَمِعَ النَّضْرَ بْنَ مُحَمَّدٍ ، حَدَّثَنَا صَخْرٌ عَنْ نَافِعٍ قَالَ : إِنَّ النَّاسَ يَتَحَدَّثُونَ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ أَسْلَمَ قَبْلَ عُمَرَ وَلَيْسَ كَذَلِكَ وَلَكِنْ عُمَرَ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ أَرْسَلَ عَبْدَ اللهِ إِلَى فَرَسٍ لَهُ عِنْدَ رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ يَأْتِي بِهِ لِيُقَاتِلَ عَلَيْهِ

وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يُبَايِعُ عِنْدَ الشَّجَرَةِ، وَعُمَرُ لاَ يَدْرِي بِذَلِكَ فَبَايَعَهُ عَبْدُ اللهِ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَى الْفَرَسِ فَجَاءَ بِهِ إِلَى عُمَرَ، وَعُمَرُ يَسْتَلْئِمُ لِلْقِتَالِ فَأَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ يُبَايِعُ تَحْتَ الشَّجَرَةِ، قَالَ: فَانْطَلَقَ فَذَهَبَ مَعَهُ حَتَّى بَايَعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَهِيَ الَّتِي يَتَحَدَّثُ النَّاسُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ أَسْلَمَ قَبْلَ عُمَرَ. [راجع: ٣٩١٦]

में शरीक हों। उसी दौरान रसूलुल्लाह (ﷺ) पेड़ के नीचे बैठकर बेअ़त ले रहे थे। उ़मर (रज़ि.) को अभी इसकी ख़बर नहीं हुई थी। अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने पहले बेअ़त की फिर घोड़ा लेने गये। जिस वक़्त वो उसे लेकर उ़मर (रज़ि.) के पास आए तो वो जंग के लिये अपनी ज़िरह पहन रहे थे। उन्हों ने उस वक़्त ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को बताया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पेड़ के नीचे बेअ़त ले रहे हैं। बयान किया कि फिर आप अपने लड़के को साथ लेकर गये और बेअ़त की। इतनी सी बात थी जिस पर लोग अब कहते हैं कि उ़मर (रज़ि.) से पहले इब्ने उ़मर (रज़ि.) इस्लाम लाए थे। (राजेअ़ : 3916)

٤١٨٧- وَقَالَ هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ: حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْعُمَرِيُّ، أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، أَنَّ النَّاسَ كَانُوا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ، تَفَرَّقُوا فِي ظِلاَلِ الشَّجَرِ فَإِذَا النَّاسُ مُحْدِقُونَ بِالنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ يَا عَبْدَ اللهِ انْظُرْ مَا شَأْنُ النَّاسِ قَدْ أَحْدَقُوا بِرَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَوَجَدَهُمْ يُبَايِعُونَ فَبَايَعَ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى عُمَرَ فَخَرَجَ فَبَايَعَ. [راجع: ٣٩١٦]

4187. और हिशाम बिन अ़म्मार ने बयान किया, उनसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे उ़मर बिन मुहम्मद उ़मरी ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ़ ने ख़बर दी और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि सुलह हुदैबिया के मौक़ा पर स़ह़ाबा (रज़ि.) जो हुज़ूर अकरम (ﷺ) के साथ थे, मुख़्तलिफ़ पेड़ों के साये में फैल गये थे। फिर अचानक बहुत से स़ह़ाबा आपके चारों त़रफ़ जमा हो गये। उ़मर (रज़ि.) ने कहा बेटा अ़ब्दुल्लाह! देखो तो सही लोग आँह़ज़रत (ﷺ) के पास जमा क्यूँ हो गये हैं? उन्होंने देखा तो स़ह़ाबा बेअ़त कर रहे थे। चुनाँचे पहले उन्होंने ख़ुद बेअ़त कर ली। फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को आकर ख़बर दी फिर वो भी गये और बेअ़त की। (राजेअ़ : 3916)

यहाँ बेअ़त करने में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से पहले बेअ़त की जो ख़ास़ वजह से थी।

٤١٨٨- حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ حِينَ اعْتَمَرَ فَطَافَ فَطُفْنَا مَعَهُ وَصَلَّى وَصَلَّيْنَا مَعَهُ وَسَعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، فَكُنَّا نَسْتُرُهُ مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ لاَ يُصِيبُهُ أَحَدٌ بِشَيْءٍ. [راجع: ١٦٠٠]

4188. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन नुमेर ने बयान किया, कहा हमसे यअ़ला बिन उ़बैद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, आपने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने उ़मरह (क़ज़ा) किया तो हम भी आपके साथ थे, आँहुज़ूर (ﷺ) ने त़वाफ़ किया तो हमने भी त़वाफ़ किया। हुज़ूर (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी तो हमने भी नमाज़ पढ़ी और हुज़ूर (ﷺ) ने स़फ़ा व मरवा की सई की तो हमने भी की, हम आपकी अहले मक्का से हिफ़ाज़त करते रहते थे ताकि कोई तकलीफ़ की बात न पेश आ जाए। (राजेअ़ : 1600)

4189. हमसे हसन बिन इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन साबिक़ ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग़्वल ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू हुसैन से सुना, उनसे अबू वाईल ने बयान किया कि सहल बिन हनीफ़ (रज़ि.) जब जंगे सिफ़्फ़ीन (जो हज़रत अली रज़ि. और हज़रत मुआविया रज़ि. में हुई थी) से वापस आए तो हम उनकी ख़िदमत में हालात मा'लूम करने के लिये हाज़िर हुए। उन्होंने कहा कि इस जंग के बारे में तुम लोग अपनी राय और फ़िक्र पर नाज़ाँ मत हो, मैं यौमे अबू जन्दल (सुलहे हुदैबिया) में भी मौजूद था। अगर मेरे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म को मानने से इंकार मुम्किन होता तो मैं इस दिन ज़रूर हुक्म अदूली करता। अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ख़ूब जानते हैं कि जब हमने किसी मुश्किल काम के लिये अपनी तलवारों को अपने काँधों पर रखा तो सूरतेहाल आसान हो गई और हमने मुश्किल हल कर ली। लेकिन इस जंग का कुछ अजीब हाल है, इसमें हम (फ़ित्ने के) एक कोने को बन्द करते हैं तो दूसरा कोना खुल जाता है। हम नहीं जानते कि हमको क्या तदबीर करनी चाहिये। (राजेअ : 3181)

٤١٨٩- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ، حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا حَصِينٍ قَالَ: قَالَ أَبُو وَائِلٍ لَمَّا قَدِمَ سَهْلُ بْنُ حُنَيْفٍ مِنْ صِفِّينَ أَتَيْنَاهُ نَسْتَخْبِرُهُ فَقَالَ: اتَّهِمُوا الرَّأْيَ فَلَقَدْ رَأَيْتُنِي يَوْمَ أَبِي جَنْدَلٍ وَلَوْ أَسْتَطِيعُ أَنْ أَرُدَّ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمْرَهُ لَرَدَدْتُ وَاللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، وَمَا وَضَعْنَا أَسْيَافَنَا عَلَى عَوَاتِقِنَا لأَمْرٍ يُفْظِعُنَا إِلاَّ أَسْهَلْنَ بِنَا إِلَى أَمْرٍ نَعْرِفُهُ قَبْلَ هَذَا الأَمْرِ مَا نَسُدُّ مِنْهَا خُصْمًا إِلاَّ انْفَجَرَ عَلَيْنَا خُصْمٌ مَا نَدْرِي كَيْفَ نَأْتِي لَهُ.

[راجع: ٣١٨١]

अल्लामा इब्ने हजर (रह) हसन बिन इस्हाक़ उस्ताद इमाम बुख़ारी (रह) के बारे में फ़र्माते हैं, **कान मिन अस्हाबि इब्निल्मुबारक व मात सनत इहदव्व अर्बईन व मालहू फिल्बुख़ारी सिवा हाज़ल्हदीषि** (फत्ह)। या'नी ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक के शागिर्दों मे से हैं। उनका इंतिक़ाल 141 हिजरी में हुआ। सहीह बुख़ारी में उनसे सिर्फ़ यही एक हदीष मरवी है।

4190. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे इब्ने अबी लैला ने, उनसे कअब बिन उज्रह (रज़ि.) ने बयान किया कि वो उमरह हुदैबिया के मौक़े पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो जूएँ उनके चेहरे पर गिर रही थी। हुज़ूर (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया कि ये जूएँ जो तुम्हारे सर से गिर रही हैं, तकलीफ़ दे रही हैं? उन्होंने अर्ज़ किया कि जी हाँ! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर सर मुँडवा लो और तीन दिन रोज़ा रखो या मिस्कीनों को खाना खिला दो या फिर कोई क़ुर्बानी कर डालो। (सर मुँडवाने का फ़िदया होगा) अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया कि मुझे मा'लूम नहीं कि इन तीनों उमूर में से पहले हुज़ूर (ﷺ) ने कौनसी बात इर्शाद फ़र्माई थी।

٤١٩٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى عَلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَمَنَ الْحُدَيْبِيَةِ، وَالْقَمْلُ يَتَنَاثَرُ عَلَى وَجْهِي فَقَالَ: ((أَيُؤْذِيكَ هَوَامُّ رَأْسِكَ؟)) قُلْتُ : نَعَمْ. قَالَ: ((فَاحْلِقْ وَصُمْ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ أَوْ أَطْعِمْ سِتَّةَ مَسَاكِينَ أَوِ انْسُكْ نَسِيكَةً)). قَالَ أَيُّوبُ لاَ أَدْرِي بِأَيِّ هَذَا بَدَأَ.

(राजेअ : 1814)

[راجع: ١٨١٤]

4191. मुझसे अबू अब्दुल्लाह बिन हिशाम ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने और उनसे कअब बिन उज्रह (रज़ि.) ने बयान किया कि सुलहे हुदैबिया के मौक़े पर हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे और एहराम बाँधे हुए थे। उधर मुश्रिकीन हमें बैतुल्लाह तक जाने नहीं देना चाहते थे। उन्होंने बयान किया कि मेरे सर पर बाल बड़े बड़े थे जिनसे जूएँ मेरे चेहरे पर गिरने लगीं। हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे देखकर दरयाफ़्त किया, क्या ये जूएँ तकलीफ़ दे रही हैं? मैंने कहा जी हाँ। उन्होंने बयान किया कि फिर ये आयत नाज़िल हुई, पस अगर तुममें कोई मरीज़ हो या उसके सर में कोई तकलीफ़ देने वाली चीज़ हो तो उसे (बाल मुँडवा लेने चाहिये और) तीन दिन के रोज़े या सदक़ा या क़ुर्बानी का फ़िदया देना चाहिये। (राजेअ : 1814)

٤١٩١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ هِشَامٍ أَبُو عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ بِالْحُدَيْبِيَةِ وَنَحْنُ مُحْرِمُونَ، وَقَدْ حَصَرَنَا الْمُشْرِكُونَ، قَالَ: وَكَانَتْ لِي وَفْرَةٌ فَجَعَلَتِ الْهَوَامُّ تَسَاقَطُ عَلَى وَجْهِي فَمَرَّ بِي النَّبِيُّ ﷺ. فَقَالَ: ((أَيُؤْذِيكَ هَوَامُّ رَأْسِكَ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ : ((وَأُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةُ ﴿فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ﴾)). [راجع: ١٨١٤]

इन तमाम रिवायतों में किसी न किसी तरह से वाक़िय-ए-हुदैबिया के बारे में कुछ न कुछ ज़िक्र है। यही अहादीष और बाब में वजहे मुताबक़त है। हालते एहराम में ऐसी बीमारी से सर मुँडवा देना जाइज़ है। मगर उसके फ़िदये में ये कफ़्फ़ारा अदा करना होगा।

बाब 37 : क़बाइले उक्ल और उरैयना का बयान

٣٧- باب قِصَّةِ عُكْلٍ وَعُرَيْنَةَ

4192. मुझसे अब्दुल आला बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बाइल उक्ल व उरैयना के कुछ लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मदीना आए और इस्लाम में दाख़िल हो गये, फिर उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! हम लोग मवेशी रखते थे, खेत वग़ैरह हमारे पास नहीं थे, (इसलिये हम सिर्फ़ दूध पर बसरे औक़ात किया करते थे) और उन्हें मदीना की आबोहवा नामुवाफ़िक़ आई तो आँहज़रत (ﷺ) ने कुछ ऊँट और एक चरवाहा उनके साथ कर दिया और फ़र्माया कि इन्हें ऊँटों का दूध और पेशाब पियो (तो तुम्हें सेहत हासिल हो जाएगी) वो लोग (चरागाह की तरफ़) गये, लेकिन मुक़ामे हर्रा के किनारे पहुँचते ही वो इस्लाम से फिर गये और हुज़ूर अकरम (ﷺ) के चरवाहे को क़त्ल कर दिया और ऊँटों को लेकर भागने लगे। उसकी ख़बर जब

٤١٩٢- حَدَّثَنِي عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَهُمْ أَنَّ نَاسًا مِنْ عُكْلٍ وَعُرَيْنَةَ قَدِمُوا الْمَدِينَةَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَكَلَّمُوا بِالإِسْلاَمِ فَقَالُوا: يَا نَبِيَّ اللهِ إِنَّا كُنَّا أَهْلَ ضَرْعٍ وَلَمْ نَكُنْ أَهْلَ رِيفٍ وَاسْتَوْخَمُوا الْمَدِينَةَ فَأَمَرَهُمْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذَوْدٍ وَرَاعٍ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَخْرُجُوا فِيهِ فَيَشْرَبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا فَانْطَلَقُوا حَتَّى إِذَا كَانُوا نَاحِيَةَ الْحَرَّةِ

كَفَرُوا بَعْدَ إِسْلاَمِهِمْ وَقَتَلُوا رَاعِيَ النَّبِيِّ ﷺ وَاسْتَاقُوا الذَّوْدَ فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ، فَبَعَثَ الطَّلَبَ فِي آثَارِهِمْ فَأَمَرَ بِهِمْ فَسَمَرُوا أَعْيُنَهُمْ وَقَطَعُوا أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ وَتُرِكُوا فِي نَاحِيَةِ الْحَرَّةِ حَتَّى مَاتُوا عَلَى حَالِهِمْ، قَالَ قَتَادَةُ بَلَغَنَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعْدَ ذَلِكَ كَانَ يَحُثُّ عَلَى الصَّدَقَةِ وَيَنْهَى عَنِ الْمُثْلَةِ. وَقَالَ شُعْبَةُ وَأَبَانُ وَحَمَّادٌ عَنْ قَتَادَةَ مِنْ عُرَيْنَةَ وَقَالَ يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ وَأَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسٍ : قَدِمَ نَفَرٌ مِنْ عُكْلٍ. [راجع: ٢٣٣]

हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को मिली तो आपने चन्द स़हाबा को उनके पीछे दौड़ाया। (वो पकड़कर मदीना लाए गये) तो हुज़ूर (ﷺ) के हुक्म से उनकी आँखों में गर्म सलाइयाँ फेर दी गईं (क्योंकि उन्होंने भी ऐसा ही किया था) और उन्हें हर्रा के किनारे छोड़ दिया गया। आख़िर वो इसी हालत में मर गये। क़तादा ने बयान किया कि हमे ये रिवायत पहुँची है कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उसके बाद स़हाबा को स़दक़ा का हुक्म दिया और मुष़्ला (मक़्तूल की लाश बिगाड़ना या ईज़ा देकर उसे क़त्ल करना) से मना फ़र्माया और शुअ़बा, अबान और हम्माद ने क़तादा से बयान किया कि (ये लोग) उ़रैयना के क़बीले के थे (उ़क्ल का नाम नहीं लिया) और यह्या बिन अबी कष़ीर और अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि क़बीला उ़क्ल के कुछ लोग आए। (राजेअ़ : 233)

तश्रीह : चरवाहे का नाम यसारून्नूबी (रज़ि.) था, जब क़बीले वाले मुर्तद होकर ऊँट लेकर भागने लगे तो उस चरवाहे ने मुज़ाहमत की। इस पर उन्होंने उसके हाथ–पैर काट दिये और उसकी ज़ुबान और आँख में काँटे गाड़ दिये जिससे उन्होंने शहादत पाई। (रज़ि.) इसी क़िस़ास़ में उन डाकुओं के साथ वो किया गया जो रिवायत में मज़्कूर है। ये डाकू दोनों क़बाइले उ़क्ल और उ़रैयना से ता'ल्लुक़ रखते थे। हर्रा वो पथरीला मैदान है जो मदीना से बाहर है। वो डाकू मर्ज़े इस्तिस्क़ा के मरीज़ थे इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनके वास्ते ये नुस्ख़ा तजवीज़ फ़र्माया।

٤١٩٣ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ أَبُو عُمَرَ الْحَوْضِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ. وَالْحَجَّاجُ الصَّوَّافُ. قَالاَ حَدَّثَنِي أَبُو رَجَاءٍ مَوْلَى أَبِي قِلاَبَةَ وَكَانَ مَعَهُ بِالشَّأْمِ أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ اسْتَشَارَ النَّاسَ يَوْمًا قَالَ : مَا تَقُولُونَ فِي هَذِهِ الْقَسَامَةِ؟ فَقَالُوا: حَقٌّ قَضَى بِهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ. وَقَضَتْ بِهَا الْخُلَفَاءُ قَبْلَكَ. قَالَ وَأَبُو قِلاَبَةَ خَلْفَ سَرِيرِهِ. فَقَالَ عَنْبَسَةُ بْنُ سَعِيدٍ: فَأَيْنَ حَدِيثُ أَنَسٍ فِي الْعُرَنِيِّينَ؟

4193. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमसे अबू उ़मर ह़फ़्स़ बिन उ़मर अल् ह़ौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब और ह़ज्जाज स़व्वाफ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबू क़िलाबा के मौला अबू रजाअ ने बयान किया, वो अबू क़िलाबा के साथ शाम में थे कि ख़लीफ़ा उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने एक दिन लोगो से मश्विरा किया कि इस क़सामा के बारे में तुम्हारी क्या राय है? लोगों ने कहा कि ये ह़क़ है। उसका फ़ैस़ला रसूलुल्लाह (ﷺ) और फिर ख़ुल्फ़-ए-राशिदीन आपसे पहले करते रहे हैं। अबू रजाअ ने बयान किया कि उस वक़्त अबू क़िलाबा, उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह) के तख़्त के पीछे थे। इतने में अ़म्बसा बिन सईद ने कहा कि फिर क़बीला उ़रैयना के लोगों के बारे में ह़ज़रत अनस (रज़ि.) की ह़दीष़ कहाँ गई? इस पर अबू क़िलाबा ने कहा कि अनस(रज़ि.) ने ख़ुद मुझसे ये बयान किया। अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन सुहैब ने (अपनी रिवायत में) अनस (रज़ि.) के हवाले से सिर्फ़

क़ाल: अबू क़िलाबा : إِيَّايَ حَدَّثَهُ أَنَسُ بْنُ

قَالَ: أَبُو قِلَابَةَ : إِيَّايَ حَدَّثَهُ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ قَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسٍ مِنْ عُرَيْنَةَ، وَقَالَ أَبُو قِلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ مِنْ عُكْلٍ : ذَكَرَ الْقِصَّةَ. [راجع: ٢٣٣]

ड़रैयना का नाम लिया और अबू क़िलाबा ने अपनी रिवायत में अनस (रज़ि.) के हवाले से सिर्फ़ ड़क्ल का नाम लिया है फिर यही क़िस्सा बयान किया। (राजेअ : 233)

तश्रीह : जब क़त्ल के गवाह न हों और लाश किसी मुहल्ला या गाँव में मिले, उन लोगों पर क़त्ल का शुब्हा हो तो उनमें से पचास आदमी चुनकर उनसे हलफ़ लिया जाता है, उसको क़सामा कहते हैं। अम्बसा का ख़्याल ये था कि आपने उन लोगों के लिये क़सामा का हुक्म नहीं दिया था बल्कि उनसे क़िसास लिया। अम्बसा का ये ए'तिराज़ सहीह न था क्योंकि ड़रैयना वालो पर ख़ून षाबित हो चुका था और क़सामत वहाँ होती है जहाँ षुबूत न हो, सिर्फ़ इश्तिबाह हो। हदीष में क़बीला ड़रैयना का ज़िक्र है बाब और हदीष में यही मुताबक़त है।

रिवायत में हज़रत ड़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ि.) का नाम नामी ज़िक्र हुआ है जो ख़लीफ़-ए-आदिल के नाम से मशहूर हैं। आपकी इमामत व इज्तिहाद मअरिफ़ते अहादीष व आषार पर उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है बल्कि आपको अपने वक़्त का मुजद्दिदे इस्लाम तस्लीम किया गया है। आपके इस्लामी कारनामों में बड़ा अहमतरीन कारनामा ये है कि आपको तदवीने हदीष और किताबते हदीष की मुनज़्ज़म कोशिश का एहसास हुआ। चुनाँचे आपने अपने नाइब वाली मदीना अबूबक्र हज़मी को फ़र्मान भेजा कि रसूले अकरम (ﷺ) की अहादीषे सहीहा को मुदव्वन करो क्योंकि मुझे इल्म और अहले इल्म के ज़ाये होने का अंदेशा है। लिहाज़ा अहादीष की मुस्तनद किताबें जमा करके मुझको भेजो। अबूबक्र हज़मी ने आपके फ़र्मान की तक्मील में अहादीष के कई ज़ख़ीरे जमा कराये, मगर वो उनको हज़रत ड़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ की हयात में उन तक न पहुँचा सके, हाँ ख़लीफ़ा आदिल ने हज़रत इब्ने शिहाब जुहरी को भी इस ख़िदमत पर मामूर फ़र्माया था और उनको जम्अ़े हदीष का हुक्म दिया था। चुनाँचे उन्होंने दफ़्तर के दफ़्तर जमा किये और उनको ख़लीफ़-ए-वक़्त तक पहुँचाया। आपने उनकी मुतअद्दिद नक़्लें अपनी क़लम रू में मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर भिजवाईं। हज़रत ड़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह) को ख़िलाफ़ते राशिदा का ख़लीफ़-ए-ख़ामिस क़रार दिया गया है, **रहिमहुल्लाहु रहमतन वासिआ।**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सतरहवाँ पारा

बाब 38 : ज़ाते क़र्द की लड़ाई का बयान

ये वही ग़ज़्वा है जिसमें मुश्रिकीन ग़त्फ़ान ग़ज़्व-ए-ख़ैबर से तीन दिन पहले नबी अकरम (ﷺ) की

٣٨- باب غَزْوَةِ ذَاتِ الْقَرَدِ
وَهِيَ الْغَزْوَةُ الَّتِي اغَارُوا عَلَى لِقَاحِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَ خَيْبَرَ بِثَلاَثٍ.

20 दूधेल ऊँटनियों को भगाकर ले जा रहे थे। ये ख़ैबर की लड़ाई से तीन रात पहले का वाक़िया है। ज़ातुल क़र्द या ज़ीक़र्द एक चश्मा का नाम है जो ग़त्फ़ान क़बीले के क़रीब है।

4194. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने बयान किया, कहा मैंने सलमा बिन अल अक़्वा (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि फ़ज्र की अज़ान से पहले मैं (मदीना से बाहर ग़ाबा की तरफ़ निकला) रसूलुल्लाह (ﷺ) की दूध देने वाली ऊँटनियाँ ज़ातुल क़र्द में चरा करती थीं। उन्होंने बयान किया कि रास्ते में मुझे अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) के ग़ुलाम मिले और कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ऊँटनियाँ पकड़ ली गई हैं। मैंने पूछा कि किसने पकड़ा है? उन्होंने बताया कि क़बीला ग़त्फ़ान वालों ने। उन्होंने बयान किया कि फिर मैंने तीन बार बड़ी ज़ोर-ज़ोर से पुकारा, या सबाहाह! उन्होंने बयान किया कि अपनी आवाज़ मैंने मदीना के दोनों किनारों तक पहुँचा दी और उसके बाद मैं सीधा तेज़ी के साथ दौड़ता हुआ आगे बढ़ा और आख़िर उन्हें जा लिया। उस वक़्त वो जानवरों को पानी पिलाने के लिये उतरे थे। मैंने उन पर तीर बरसाने शुरू कर दिये। मैं तीरंदाज़ी में माहिर था और ये शे'र कहता जाता था, मैं इब्नुल अक़्वा हूँ, आज ज़लीलों की बर्बादी का दिन है, मैं यही रजज़ पढ़ता रहा और आख़िर ऊँटनियाँ उनसे छुड़ा लीं बल्कि तीस चादरें उनकी मेरे क़ब्ज़े में आ गईं। सलमा ने बयान किया कि उसके बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ)

٤١٩٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَلَمَةَ بْنَ الأَكْوَعِ يَقُولُ: خَرَجْتُ قَبْلَ أَنْ يُؤَذَّنَ بِالأُولَى وَكَانَتْ لِقَاحُ رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ تَرْعَى بِذِي قَرَدٍ قَالَ: فَلَقِيَنِي غُلاَمٌ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ فَقَالَ: أُخِذَتْ لِقَاحُ رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ، قُلْتُ: مَنْ أَخَذَهَا؟ قَالَ: غَطَفَانُ. قَالَ: فَصَرَخْتُ ثَلاَثَ صَرَخَاتٍ يَا صَبَاحَاهُ. قَالَ : فَأَسْمَعْتُ مَا بَيْنَ لاَبَتَيِ الْمَدِينَةِ ثُمَّ انْدَفَعْتُ عَلَى وَجْهِي حَتَّى أَدْرَكْتُهُمْ وَقَدْ أَخَذُوا يَسْتَقُونَ مِنَ الْمَاءِ فَجَعَلْتُ أَرْمِيهِمْ بِنَبْلِي وَكُنْتُ رَامِيًا وَأَقُولُ
أَنَا ابْنُ الأَكْوَعِ

الْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّعْ وَأَرْتَجِزُ حَتَّى اسْتَنْقَذْتُ اللِّقَاحَ مِنْهُمْ وَاسْتَلَبْتُ مِنْهُمْ ثَلاَثِينَ بُرْدَةً قَالَ: وَجَاءَ النَّبِيُّ ﷺ وَالنَّاسُ، فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ قَدْ حَمَيْتُ الْقَوْمَ الْمَاءَ وَهُمْ عِطَاشٌ فَابْعَثْ إِلَيْهِمُ السَّاعَةَ، فَقَالَ: ((يَا ابْنَ الأَكْوَعِ مَلَكْتَ فَأَسْجِحْ)) قَالَ: ثُمَّ رَجَعْنَا وَيُرْدِفُنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى نَاقَتِهِ حَتَّى دَخَلْنَا الْمَدِينَةَ. [راجع: ٣٠٤١]

भी सहाबा (रज़ि.) को साथ लेकर आ गये। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने तीर मार मारकर उनको पानी नहीं पीने दिया और वो अभी प्यासे हैं। आप फ़ौरन उनके तआक़ुब के लिये फ़ौज भेज दीजिए। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ इब्नुल अक्वा! जब तूने किसी पर क़ाबू पा लिया तो फिर नर्मी इख़्तियार किया कर। सलमा (रज़ि.) ने बयान किया, फिर हम वापस आ गये और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मुझे अपनी ऊँटनी पर पीछे बिठाकर लाए यहाँ तक कि हम मदीना वापस आ गये। (राजेअ : 3041)

तश्रीह : मुसलमानों का ये डाकुओं से मुक़ाबला था जो बीस अदद दूध देने वाली ऊँटनियाँ अहले इस्लाम की पकड़कर ले जा रहे थे। हज़रत सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) की बहादुरी ने उसमें मुसलमानों को कामयाबी बख़्शी और जानवर डाकुओं से हासिल कर लिये गये। एक रिवायत में उनको फ़ुज़ारह के लोग बतलाया गया है। ये भी ग़त्फ़ान क़बीले की शाख़ है। सलमा (रज़ि.) का बयान एक रिवायत में यूँ है कि मैं सल्आ पहाड़ी पर चढ़ गया और मैंने ऐसे मुवक़्क़े का लफ़्ज़ या सबाहाह इस ज़ोर से निकाला कि पूरे शहरे मदीना में इसकी ख़बर हो गई। चार शम्बा का दिन था, आवाज़ पर नबी करीम (ﷺ) पाँच सात सौ आदमियों समेत निकलकर बाहर आ गये। इस मौक़े पर हज़रत सलमा (रज़ि.) ने कहा हुज़ूर अकरम (ﷺ) सौ जवान मेरे साथ कर दें तो जिस क़दर भी उनके पास जानवर हैं सबको छीनकर उनको गिरफ़्तार करके ले आता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने इस मौक़े पर क्या ज़र्री इर्शाद फ़र्माया कि दुश्मन क़ाबू में आ जाए तब इस पर नर्मी ही करना मुनासिब है।

बाब 39 : ग़ज़्व-ए-ख़ैबर का बयान

٣٩- بَابُ غَزْوَةِ خَيْبَرَ

ख़ैबर एक बस्ती का नाम है, मदीना से आठ बरीद पर शाम की तरफ़। ये लड़ाई सन 7 हिजरी में हुई। वहाँ पर यहूद आबाद थे। उनके क़िले बने हुए थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनका मुहासरा किया, आख़िर मुसलमानों की फ़तह हुई।

٤١٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ أَنَّ سُوَيْدَ بْنَ النُّعْمَانِ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ خَيْبَرَ حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالصَّهْبَاءِ وَهْيَ مِنْ أَدْنَى خَيْبَرَ صَلَّى الْعَصْرَ ثُمَّ دَعَا بِالأَزْوَادِ فَلَمْ يُؤْتَ إِلاَّ بِالسَّوِيقِ فَأَمَرَ بِهِ فَثُرِّيَ فَأَكَلَ وَأَكَلْنَا ثُمَّ قَامَ إِلَى الْمَغْرِبِ فَمَضْمَضَ وَمَضْمَضْنَا ثُمَّ صَلَّى

4195. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह) ने, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे बशीर बिन यसार ने और उन्हें सुवैद बिन नोअमान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के लिये वो भी रसूले करीम (ﷺ) के साथ निकले थे, (बयान किया) जब हम मुक़ामे सहबा में पहुँचे जो ख़ैबर के नशीब में वाक़ेअ है तो आँहज़रत (ﷺ) ने अस्र की नमाज़ पढ़ी फिर आपने तौश-ए-सफ़र मंगवाया। सत्तू के सिवा और कोई चीज़ आपकी ख़िदमत में नहीं लाई गई। वो सत्तू आपके हुक्म से भिगोया गया और वही आपने भी खाया और हमने भी खाया, उसके बाद मग़्रिब की नमाज़ के लिये आप खड़े हुए (चूँकि वुज़ू पहले से मौजूद था) इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने भी सिर्फ़ कुल्ली

की और हमने भी, फिर नमाज़ पढ़ी और इस नमाज़ के लिये नये सिरे से वुज़ू नहीं किया। (राजेअ : 209)

ولَمْ يَتَوَضَّأْ.

[راجع: ٢٠٩]

4196. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने और उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ ख़ैबर की तरफ़ निकले। रात के वक़्त हमारा सफ़र जारी था कि एक साहब (उसैद बिन हुज़ैर) ने आमिर से कहा, आमिर! अपने कुछ शे'र सुनाओ, आमिर शायर था। इस फ़र्माइश पर वो सवारी से उतरकर हुदी ख़्वानी करने लगे। कहा, ऐ अल्लाह! अगर तू न होता तो हमें सीधा रास्ता न मिलता, न हम सदक़ा कर सकते और न हम नमाज़ पढ़ सकते। पस हमारी जल्दी मग़फ़िरत कर, जब तक हम ज़िन्दा हैं हमारी जानें तेरे रास्ते में फ़िदा हैं और अगर हमारी मुठभेड़ हो जाए तो हमें साबित रख हम पर सकीनत नाज़िल फ़र्मा, हमें जब (बातिल की तरफ़) बुलाया जाता है तो हम इंकार कर देते हैं, आज चला-चलाकर वो हमारे ख़िलाफ़ मैदान में आए हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह उस पर अपनी रहमत नाज़िल फ़र्माए। सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आपने तो उन्हें शहादत का मुस्तहिक़ क़रार दे दिया, काश! अभी और हमें उनसे फ़ायदा उठाने देते। फिर हम ख़ैबर आए और क़िले का मुहासरा किया। उसके दौरान हमें सख़्त तकलीफ़ों और फ़ाक़ों से गुज़रना पड़ा। आख़िर अल्लाह तआला ने हमें फ़तह अता फ़र्माई, जिस दिन क़िला फ़तह होना था, उसकी रात जब हुई तो लश्कर में जगह जगह आग जल रही थी। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा ये आग कैसी है, किस चीज़ के लिये उसे जगह जगह जला रखा है? सहाबा (रज़ि.) बोले कि गोश्त पकाने के लिये, आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कि किस जानवर का गोश्त है? सहाबा (रज़ि.) ने बताया कि पालतू गधों का। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तमाम गोश्त फेंक दो और हाँडियों को तोड़ दो। एक सहाबी (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! ऐसा क्यूँ न कर लें कि गोश्त तो फेंक दें और हाँडियों को धो लें? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ ही कर लो फिर (दिन में जब सहाबा रज़ि. ने जंग के लिये) सफ़ बन्दी की तो चूँकि हज़रत आमिर (रज़ि.) की तलवार छोटी थी, इसलिये उन्होंने जब एक यहूदी की पिण्डली पर (झुककर) वार

٤١٩٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ إِلَى خَيْبَرَ فَسِرْنَا لَيْلاً فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ لِعَامِرٍ: يَا عَامِرُ أَلاَ تُسْمِعُنَا مِنْ هُنَيْهَاتِكَ؟ وَكَانَ عَامِرٌ رَجُلاً شَاعِرًا فَنَزَلَ يَحْدُو بِالْقَوْمِ يَقُولُ :

اللَّهُمَّ لَوْ لاَ أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا
وَلاَ تَصَدَّقْنَا وَلاَ صَلَّيْنَا
فَاغْفِرْ فِدَاءً لَكَ مَا أَبْقَيْنَا
وَثَبِّتِ الأَقْدَامَ إِنْ لاَقَيْنَا
وَأَلْقِيَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا
وَبِالصِّيَاحِ عَوَّلُوا عَلَيْنَا
إِنَّا إِذَا صِيحَ بِنَا أَبَيْنَا

فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ هَذَا السَّائِقُ؟)) قَالُوا : عَامِرُ بْنُ الأَكْوَعِ قَالَ: ((يَرْحَمُهُ اللهُ)) قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: وَجَبَتْ يَا نَبِيَّ اللهِ لَوْ لاَ أَمْتَعْتَنَا بِهِ فَأَتَيْنَا خَيْبَرَ فَحَاصَرْنَاهُمْ حَتَّى أَصَابَتْنَا مَخْمَصَةٌ شَدِيدَةٌ، ثُمَّ إِنَّ اللهَ تَعَالَى فَتَحَهَا عَلَيْهِمْ فَلَمَّا أَمْسَى النَّاسُ مَسَاءَ الْيَوْمِ الَّذِي فُتِحَتْ عَلَيْهِمْ أَوْقَدُوا نِيرَانًا كَثِيرَةً فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا هَذِهِ النِّيرَانُ؟ عَلَى أَيِّ شَيْءٍ تُوقِدُونَ؟)) قَالُوا: عَلَى لَحْمٍ. قَالَ :

करना चाहा तो ख़ुद उन्हीं की तलवार की धार से उनके घुटने का ऊपर का हिस्सा ज़ख़्मी हो गया और उनकी शहादत उसी में हो गई। बयान किया कि फिर जब लश्कर वापस हो रहा था तो सलमा बिन अल अक्वा (रज़ि.) का बयान है कि मुझे हुज़ूर (ﷺ) ने देखा और मेरा हाथ पकड़कर फ़र्माया, क्या बात है? मैंने अ़र्ज़ किया, मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हों, कुछ लोगों का ख़्याल है कि आ़मिर (रज़ि.) का सारा अ़मल इकारत होगया (क्योंकि ख़ुद अपनी ही तलवार से उनकी वफ़ात हुई) हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया झूठा है वो शख़्स जो इस तरह की बातें करता है, उन्हें तो दोहरा अज्र मिलेगा फिर आपने अपनी दोनों उँगलियों को एक साथ मिलाया, उन्होंने तकलीफ़ और मशक़्क़त भी उठाई और अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी किया, शायद ही कोई अ़रबी हो, जिसने उन जैसी मिषाल क़ायम की हो, हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उनसे हातिम ने (बजाय मशाबिहा के) नशाबिहा नक़ल किया या'नी कोई अ़रब मदीना में आ़मिर (रज़ि.) जैसा पैदा नहीं हुआ।

(राजेअ़ : 2477)

((عَلَى أَيِّ لَحْمٍ؟)) قَالُوا: لَحْمِ حُمُرِ الإِنْسِيَّةِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَهْرِيقُوهَا وَاكْسِرُوهَا)) فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ أَوْ نُهْرِيقُهَا وَنَغْسِلُهَا قَالَ: ((أَوْ ذَاكَ)) فَلَمَّا تَصَافَّ الْقَوْمُ كَانَ سَيْفُ عَامِرٍ قَصِيرًا فَتَنَاوَلَ بِهِ سَاقَ يَهُودِيٍّ لِيَضْرِبَهُ وَيَرْجِعُ ذُبَابُ سَيْفِهِ فَأَصَابَ عَيْنَ رُكْبَةِ عَامِرٍ فَمَاتَ مِنْهُ قَالَ: فَلَمَّا قَفَلُوا قَالَ سَلَمَةُ: رَآنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِي قَالَ ((مَا لَكَ؟)) قُلْتُ لَهُ: فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي زَعَمُوا أَنَّ عَامِرًا حَبِطَ عَمَلُهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((كَذَبَ مَنْ قَالَهُ إِنَّ لَهُ لأَجْرَيْنِ - وَجَمَعَ بَيْنَ إِصْبَعَيْهِ - إِنَّهُ لَجَاهِدٌ مُجَاهِدٌ قَلَّ عَرَبِيٌّ مَشَى بِهَا مِثْلَهُ)). حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا حَاتِمٌ قَالَ: نَشَأَ بِهَا. [راجع: ٢٤٧٧]

तश्रीह : ह़दीष़ में जंगे ख़ैबर के कुछ नाज़िरीन बयान हुए हैं यही बाब से वजहे मुताबक़त है। आ़मिर (रज़ि.) शहीद जिनका ज़िक्र हुआ है। रईसे ख़ैबर मर्हब नामी के मुक़ाबले के लिये निकले थे। उनकी तलवार ख़ुद उन्हीं के हाथ उनके घुटने में लगी और वो शहीद हो गये। कुछ लोगों को उनके बारे में ख़ुदकुशी का शुब्हा हुआ, जिसकी इस्लाह़ के लिये रसूले करीम (ﷺ) को आ़मिर (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का इज़्हार ज़रूरी हुआ।

4197. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक (रह) ने ख़बर दी, उन्हें हुमैद तवील ने और उन्हें अनस (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ैबर रात के वक़्त पहुँचे। आप (ﷺ) का क़ायदा था कि जब किसी क़ौम पर ह़मला करने के लिये रात के वक़्त मौक़े पर पहुँचते तो फ़ौरन ही ह़मला नहीं करते बल्कि सुबह हो जाती जब करते। चुनाँचे सुबह के वक़्त यहूदी अपने कुल्हाड़े और टोकरे लेकर बाहर निकले लेकिन जब उन्होंने हुज़ूर (ﷺ) को देखा तो शोर करने लगे कि मुहम्मद, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद लश्कर लेकर आ गया। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़ैबर बर्बाद हुआ, हम जब किसी क़ौम के मैदान में उतर जाते हैं तो डराए हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है।

٤١٩٧ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ حُمَيْدٍ الطَّوِيلِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَتَى خَيْبَرَ لَيْلاً وَكَانَ إِذَا أَتَى قَوْمًا بِلَيْلٍ لَمْ يُغِرْ بِهِمْ حَتَّى يُصْبِحَ فَلَمَّا أَصْبَحَ خَرَجَتِ الْيَهُودُ بِمَسَاحِيهِمْ وَمَكَاتِلِهِمْ، فَلَمَّا رَأَوْهُ قَالُوا: مُحَمَّدٌ وَاللهِ مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خَرِبَتْ خَيْبَرُ إِنَّا إِذَا

(राजेअ : 371)

نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ)). [راجع: ٣٧١]

तश्रीह : वाक़दी ने नक़ल किया है कि ख़ैबर वालों को पहले ही मुसलमानों के हमले की ख़बर मिली थी। वो हर रात मुसल्लह (हथियारबंद) होकर निकला करते थे। मगर इस रात को ऐसे ग़ाफ़िल हुए कि उनका न कोई जानवर हरकत में आया न मुर्ग़ा ने बांग दी, यहाँ तक कि वो सुबह के वक़्त खेती के आलात (कृषि यंत्र) लेकर निकले और अचानक इस्लामी फ़ौज पर उनकी नज़र पड़ी जिससे वो घबरा गये। अल्लाह के रसूल (ﷺ) इससे नेक फ़ाली लेते हुए ख़रिबत ख़ैबरु के अल्फ़ाज़ इस्ते'माल फ़र्माए जो हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह षाबित हुए। सदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)

4198. हमें सदक़ा बिन फ़ज़ल ने ख़बर दी, कहा हमको इब्ने उयैना ने ख़बर दी, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हम ख़ैबर सुबह के वक़्त पहुँचे, यहूदी अपने फावड़े वग़ैरह लेकर बाहर आए लेकिन जब उन्होंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को देखा तो चिल्लाने लगे मुहम्मद! अल्लाह की क़सम मुहम्मद (ﷺ) लश्कर लेकर आ गये। आपने फ़र्माया कि अल्लाह की ज़ात सबसे बुलन्द व बरतर है। यक़ीनन जब हम किसी क़ौम के मैदान में उतर जाएँ तो फिर डराये हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है। फिर हमें वहाँ गधे का गोश्त मिला लेकिन हुज़ूर (ﷺ) की तरफ़ से ऐलान करने वाले ने ऐलान किया कि अल्लाह और उसके रसूल तुम्हें गधे का गोश्त खाने से मना करते हैं कि ये नापाक है।

٤١٩٨ - أَخْبَرَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: صَبَّحْنَا خَيْبَرَ بُكْرَةً فَخَرَجَ أَهْلُهَا بِالْمَسَاحِي فَلَمَّا بَصُرُوا بِالنَّبِيِّ ﷺ قَالُوا: مُحَمَّدٌ وَاللهِ مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللهُ أَكْبَرُ خَرِبَتْ خَيْبَرُ إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ)) فَأَصَبْنَا مِنْ لُحُومِ الْحُمُرِ فَنَادَى مُنَادِي النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ وَرَسُولَهُ يَنْهَيَانِكُمْ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ فَإِنَّهَا رِجْسٌ)).

अभी इससे पहले की रिवायत में है कि रात के वक़्त इस्लामी लश्कर ख़ैबर पहुँचा था, मुम्किन है रात के वक़्त ही लश्कर वहाँ पहुँचा हो, लेकिन रात मौक़े से कुछ दूरी पर गुज़ारी हो फिर जब सुबह हुई तो लश्कर मैदान में आया हो और इस रिवायत में सुबह के वक़्त पहुँचने का ज़िक्र ग़ालिबन इसी वजह से है।

4199. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक आने वाले ने हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया कि गधे का गोश्त खाया जा रहा है। इस पर आप (ﷺ) ने ख़ामोशी इख़्तियार की फिर दोबारा वो हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि गधे का गोश्त खाया जा रहा है। आँहज़रत (ﷺ) इस बार भी ख़ामोश रहे, फिर वो तीसरी बार आए और अ़र्ज़ किया कि गधे ख़त्म हो गये। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने एक मुनादी से ऐलान कराया कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) तुम्हें पालतू

٤١٩٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ جَاءَهُ جَاءٍ فَقَالَ أُكِلَتِ الْحُمُرُ؟ فَسَكَتَ. ثُمَّ أَتَاهُ الثَّانِيَةَ فَقَالَ: أُكِلَتِ الْحُمُرُ؟ فَسَكَتَ، ثُمَّ أَتَاهُ الثَّالِثَةَ فَقَالَ أُفْنِيَتِ الْحُمُرُ؟ فَأَمَرَ مُنَادِيًا فَنَادَى فِي النَّاسِ: ((إِنَّ اللهَ وَرَسُولَهُ

गधों के गोश्त के खाने से मना करते हैं । चुनाँचे तमाम हाँडियाँ उलट दी गईं हालाँकि वो गोश्त के साथ जोश मार रही थीं।
(राजेअ : 371)

يَنْهَيَانِكُمْ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ)) فَأُكْفِئَتِ الْقُدُورُ وَإِنَّهَا لَتَفُورُ بِاللَّحْمِ.
[راجع: ٣٧١]

4200. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने सुबह की नमाज़ ख़ैबर के क़रीब पहुँचकर अदा की, अभी अंधेरा था फिर फ़र्माया, अल्लाह की ज़ात सबसे बुलन्द व बरतर है, ख़ैबर बर्बाद हुआ, यक़ीनन जब हम किसी क़ौम के मैदान में उतर जाते हैं तो डराये हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है। फिर यहूदी गलियों में डरते हुए निकले। आख़िर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनके जंग करने वाले लोगों को क़त्ल करा दिया और औरतों और बच्चों को क़ैद कर लिया। क़ैदियों में उम्मुल मोमिनीन हज़रत स़फ़िया (रज़ि.) भी थीं जो दह़िया कल्बी (रज़ि.) के हिस्से में आई थीं। फिर वो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में आ गईं। चुनाँचे आपने उनसे निकाह कर लिया और उनके महर में उन्हें आज़ाद कर दिया। अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने ष़ाबित से पूछा अबू मुहम्मद! क्या तुमने ये पूछा था कि हुज़ूर (ﷺ) ने स़फ़िया (रज़ि.) को मेहर में क्या दिया था? षाबित (रज़ि.) ने इ़ष्बात में सर हिलाया। (राजेअ: 371)

٤٢٠٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ الصُّبْحَ قَرِيبًا مِنْ خَيْبَرَ بِغَلَسٍ ثُمَّ قَالَ: ((اللهُ أَكْبَرُ خَرِبَتْ خَيْبَرُ إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ)) فَخَرَجُوا يَسْعَوْنَ فِي السِّكَكِ فَقَتَلَ النَّبِيُّ ﷺ الْمُقَاتِلَةَ، وَسَبَى الذُّرِّيَّةَ. وَكَانَ فِي السَّبْيِ صَفِيَّةُ فَصَارَتْ إِلَى دِحْيَةَ الْكَلْبِيِّ، ثُمَّ صَارَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَجَعَلَ عِتْقَهَا صَدَاقَهَا، فَقَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ لِثَابِتٍ : يَا أَبَا مُحَمَّدٍ آنْتَ قُلْتَ لأَنَسٍ مَا أَصْدَقَهَا؟ فَحَرَّكَ ثَابِتٌ رَأْسَهُ تَصْدِيقًا لَهُ.
[راجع: ٣٧١]

4201. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन हज्जाज ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयन किया कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया स़फ़िया (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़ैदियों में थीं लेकिन आपने उन्हें आज़ाद करके उनसे निकाह कर लिया था। ष़ाबित (रज़ि.) ने अनस (रज़ि.) से पूछा हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें महर क्या दिया था? उन्होंने कहा कि ख़ुद उन्हीं को उनके महर में दिया था या'नी उन्हें आज़ाद कर दिया था। (राजेअ़ : 371)

٤٢٠١- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَبَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَفِيَّةَ فَأَعْتَقَهَا وَتَزَوَّجَهَا، فَقَالَ ثَابِتٌ لأَنَسٍ: مَا أَصْدَقَهَا؟ قَالَ : أَصْدَقَهَا نَفْسَهَا فَأَعْتَقَهَا
[راجع: ٣٧١]

तश्रीह : हज़रत स़फ़िया (रज़ि.) ख़ैबर के यहूदियों मे बड़ी ख़ानदानी ख़ातून थीं। उन्होंने जंग से पहले ही ख़्वाब देखा था कि एक चाँद उनकी गोद में आ गया है। जंग में सुलह के बाद उनके ख़ानदानी वक़ार और बहुत सी ख़ानदानी मस़ालेह़ के पेशेनज़र आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको आज़ाद करके ख़ुद अपने ह़रम में ले लिया। इस त़रह़ उनका ख़्वाब पूरा हुआ और उनका एह़तिराम भी बाक़ी रहा। तफ़्सीली ह़ालात पीछे बयान हो चुके हैं ।

4202. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (अपने लश्कर के साथ) मुश्रिकीन (या'नी) यहूदे ख़ैबर का मुक़ाबला किया, दोनों तरफ़ से लोगों ने जंग की, फिर जब आप (ﷺ) अपने ख़ैमे की तरफ़ वापस हुए और यहूदी भी अपने ख़ैमों में वापस चले गये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) के एक सहाबी के बारे में किसी ने ज़िक्र किया कि यहूदियों का कोई भी आदमी अगर उन्हें मिल जाए तो वो उसका पीछा करके उसे क़त्ल किये बग़ैर नहीं रहते। कहा गया कि आज फ़लाँ शख़्स हमारी तरफ़ से जितनी बहादुरी और हिम्मत से लड़ा है है शायद उतनी बहादुरी से कोई भी नहीं लड़ा होगा लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने उनके बारे में फ़र्माया कि वो अहले दोज़ख़ में से है। एक सहाबी (रज़ि.) ने उस पर कहा कि फिर मैं उनके साथ साथ रहूँगा, बयान किया कि फिर वो उनके पीछे हो लिये जहाँ वो ठहर जाते वो भी ठहर जाते और जहाँ वो दौड़कर चलते ये भी दौड़ने लगते। बयान किया कि फिर वो साहब ज़ख़्मी हो गये, इंतिहाई शदीद तौर पर और चाहा कि जल्दी मौत आ जाए। इसलिये उन्होंने अपनी तलवार ज़मीन में गाड़ दी और उसकी नोक सीना के मुक़ाबिल करके उस पर गिर पड़े और इस तरह ख़ुदकुशी कर ली। अब दूसरे सहाबी (जो उनकी जुस्तजू में लगे हुए थे) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं। पूछा क्या बात है? उन सहाबी (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि जिनके बारे में अभी हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि वो अहले दोज़ख़ में से हैं तो लोगों पर आपका ये फ़र्माना बड़ा शाक़ गुज़रा था, मैंने उनसे कहा कि मैं तुम्हारे लिये उनके पीछे-पीछे जाता हूँ। चुनाँचे मैं उनके साथ-साथ रहा। एक मौक़े पर जब वो शदीद ज़ख़्मी हो गये तो इस ख़्वाहिश में कि मौत जल्दी आ जाए अपनी तलवार उन्होंने ज़मीन में गाड़ दी और उसकी नोक को अपने सीने के सामने करके उस पर गिर पड़े और इस तरह उन्होंने ख़ुद अपनी जान को हलाक कर दिया। इसी मौक़े पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इंसान ज़िन्दगी भर जन्नत वालों के

٤٢٠٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ الْتَقَى هُوَ وَالْمُشْرِكُونَ فَاقْتَتَلُوا، فَلَمَّا مَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى عَسْكَرِهِ، وَمَالَ الآخَرُونَ إِلَى عَسْكَرِهِمْ وَفِي أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ رَجُلٌ لاَ يَدَعُ لَهُمْ شَاذَّةً وَلاَ فَاذَّةً إِلاَّ اتَّبَعَهَا يَضْرِبُهَا بِسَيْفِهِ، فَقِيلَ مَا أَجْزَأَ فُلاَنٌ مِنَّا الْيَوْمَ أَحَدٌ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَمَا إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ)) فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ : أَنَا صَاحِبُهُ، قَالَ: فَخَرَجَ مَعَهُ كُلَّمَا وَقَفَ وَقَفَ مَعَهُ وَإِذَا أَسْرَعَ أَسْرَعَ مَعَهُ، قَالَ : فَجُرِحَ الرَّجُلُ جُرْحًا شَدِيدًا فَاسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ فوضع سَيْفَهُ بالارض فَوَضَعَ سَيْفَهُ بِالأَرْضِ وَذُبَابَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَى سَيْفِهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَخَرَجَ الرَّجُلُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ قَالَ: ((وَمَا ذَاكَ؟)) قَالَ: الرَّجُلُ الَّذِي ذَكَرْتَ آنِفًا أَنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، فَأَعْظَمَ النَّاسُ ذَلِكَ فَقُلْتُ أَنَا لَكُمْ بِهِ، فَخَرَجْتُ فِي طَلَبِهِ ثُمَّ جُرِحَ جُرْحًا شَدِيدًا فَاسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ فَوَضَعَ نَصْلَ سَيْفِهِ فِي الأَرْضِ وَذُبَابَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ، ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَيْهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عِنْدَ ذَلِكَ: ((إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ الْجَنَّةِ فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ

अमल करता है, हालाँकि वो अहले दोज़ख़ में से होता है। इसी तरह दूसरा शख़्स ज़िन्दगी भर अहले दोज़ख़ के अमल करता है, हालाँकि वो जन्नती होता है। (राजेअ : 2992)

وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ النَّارِ فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ)).
[راجع: ٢٩٩٢]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) को बज़रिये वह्य उस शख़्स का अंजाम मा'लूम हो चुका था। जैसा आपने फ़र्माया वैसा ही हुआ कि वो शख़्स ख़ुदकुशी करके हराम मौत मर गया और दोज़ख़ में दाख़िल हुआ। इसीलिये अंजाम का फ़िक्र ज़रूरी है कि फ़ैसला अंजाम ही के मुताबिक़ होता है। अल्लाह तआला ख़ात्मा बिल ख़ैर नसीब करे, आमीन। इस हदीष में जंगे ख़ैबर का ज़िक्र है, यही बाब से मुताबक़त है।

4203. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम ख़ैबर की जंग में शरीक थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक साहब के बारे में जो आपके साथ थे और ख़ुद को मुसलमान कहते थे फ़र्माया कि ये शख़्स अहले दोज़ख़ में से है। फिर जब लड़ाई शुरू हुई तो वो साहब बड़ी पा-मर्दी से लड़े और बहुत ज़्यादा ज़ख़्मी हो गये। मुम्किन था कि कुछ लोग शुब्हा में पड़ जाते लेकिन उन साहब के लिये ज़ख़्मों की तकलीफ़ नाक़ाबिले बर्दाश्त थी। चुनाँचे उन्होंने अपने तरकश में से तीर निकाला और अपने सीने में चुभो दिया। ये मंज़र देखकर मुसलमान दौड़ते हुए हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला ने आपका फ़र्मान सच कर दिखाया। उस शख़्स ने ख़ुद अपने सीने में तीर चुभोकर ख़ुदकुशी कर ली है। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ फ़लाँ! जा और ऐलान कर दे कि जन्नत में सिर्फ़ मोमिन ही दाख़िल होंगे। यूँ अल्लाह तआला अपने दीन की मदद फ़ाजिर शख़्स से भी ले लेता है। इस रिवायत की मुताबअत मअमर ने ज़ुह्री से की। (राजेअ : 2898)

٤٢٠٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ شَهِدْنَا خَيْبَرَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِرَجُلٍ مِمَّنْ مَعَهُ يَدَّعِي الإِسْلاَمَ: ((هَذَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ)) فَلَمَّا حَضَرَ الْقِتَالُ قَاتَلَ الرَّجُلُ أَشَدَّ الْقِتَالِ حَتَّى كَثُرَتْ بِهِ الْجِرَاحَةُ فَكَادَ بَعْضُ النَّاسِ يَرْتَابُ فَوَجَدَ الرَّجُلُ أَلَمَ الْجِرَاحَةِ فَأَهْوَى بِيَدِهِ إِلَى كِنَانَتِهِ فَاسْتَخْرَجَ مِنْهَا أَسْهُمًا فَنَحَرَ بِهَا نَفْسَهُ فَاشْتَدَّ رِجَالٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ صَدَّقَ اللهُ حَدِيثَكَ انْتَحَرَ فُلاَنٌ فَقَتَلَ نَفْسَهُ، فَقَالَ: ((قُمْ يَا فُلاَنُ فَأَذِّنْ أَنَّهُ لاَ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلاَّ مُؤْمِنٌ، إِنَّ اللهَ يُؤَيِّدُ الدِّينَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ)). تَابَعَهُ مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ. [راجع: ٢٨٩٨]

4204. और शबीब ने यूनुस से बयान किया, उन्होंने इब्ने शिहाब ज़ुह्री से, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब और अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन कअब ने ख़बर दी, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में मौजूद थे और इब्नुल मुबारक ने बयान किया, उनसे यूनुस ने,

٤٢٠٤- وَقَالَ شَبِيبٌ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي ابْنُ الْمُسَيَّبِ، وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ ابْنُ عَبْدِ اللهِ بْنُ كَعْبٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ : شَهِدْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ خَيْبَرَ

وَقَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. تَابَعَهُ صَالِحٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ. وَقَالَ الزُّبَيْدِيُّ أَخْبَرَنِي الزُّهْرِيُّ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ كَعْبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنُ كَعْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْ شَهِدَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ خَيْبَرَ قَالَ الزُّهْرِيُّ وَأَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ وَسَعِيدٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٣٠٦٢]

उनसे ज़ुह्री ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने। इस रिवायत की मुताबअ़त सालेह ने ज़ुह्री से की और ज़ुबैदी ने बयान किया, उन्हें ज़ुह्री ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुर्रहमान बिन कअ़ब ने ख़बर दी और उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन कअ़ब ने ख़बर दी कि मुझे उन सहाबी ने ख़बर दी जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में मौजूद थे। ज़ुह्री ने बयान किया और मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह और सईद बिन मुसय्यिब (रज़ि.) ने ख़बर दी रसूलुल्लाह (ﷺ) से।

(राजेअ़ : 3062)

तश्रीह : त़बरानी की रिवायत में है कि जब आपने उसको दोज़ख़ी फ़र्माया, लोगों को बहुत गराँ गुज़रा। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! जब ऐसी मेहनत और कोशिश करने वाला दोज़ख़ी है तो फिर हमारा ह़ाल क्या होना है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये शख़्स दोज़ख़ी है, अपना निफ़ाक़ छुपाता है। **मा'लूम हुआ कि ज़ाहिरी आ'माल पर हुक्म नहीं लगाया जा सकता, जब तक अंदरूनी ह़ालात की दुरुस्तगी न हो।** अल्लाह सबको निफ़ाक़ से बचाए। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का क़ौल जो शबीब अ़न यूनुस से रिवायत किया गया है, अस़ल ये है कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) के पास उस वक़्त आए थे जब जंगे ख़ैबर ख़त्म हो चुकी थी। इसलिये शबीब और मअ़मर की रिवायत में जो ख़ैबर का लफ़्ज़ है उसमें शुब्हा रहता है तो इमाम बुख़ारी (रह) ने शबीब और इब्ने मुबारक की रिवायतों से ये षाबित किया कि उनमें बजाय ख़ैबर के हुनैन का लफ़्ज़ मज़्कूर है। स़ह़ीह़ बुख़ारी के कुछ नुस्ख़ों में यहाँ ख़ैबर का लफ़्ज़ मज़्कूर है, कुछ ने कहा वही स़ह़ीह़ है।

٤٢٠٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ: لَمَّا غَزَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْبَرَ أَوْ قَالَ لَمَّا تَوَجَّهَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَشْرَفَ النَّاسُ عَلَى وَادٍ فَرَفَعُوا أَصْوَاتَهُمْ بِالتَّكْبِيرِ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ارْبَعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ إِنَّكُمْ لاَ تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلاَ غَائِبًا، إِنَّكُمْ تَدْعُونَ سَمِيعًا قَرِيبًا، وَهُوَ مَعَكُمْ)). وَأَنَا خَلْفَ دَابَّةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَسَمِعَنِي وَأَنَا أَقُولُ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ فَقَالَ

4205. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद ने बयान किया, उनसे आ़सिम ने, उनसे अबू उ़ष्मान ने और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ैबर पर लश्कर कशी की या यूँ बयान किया जब रसूलुल्लाह (ﷺ) (ख़ैबर की त़रफ़) रवाना हुए तो (रास्ते में) लोग एक वादी में पहुँचे और बुलन्द आवाज़ के साथ तक्बीर कहने लगे अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाह (अल्लाह ही बड़ा है, अल्लाह ही बड़ा है, नहीं है कोई मा'बूद सिवाय अल्लाह के)। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अपनी जानों पर रहम करो, तुम किसी बहरे को या ऐसे शख़्स को नहीं पुकार रहे हो, जो तुमसे दूर हो, जिसे तुम पुकार रहे हो वो सबसे ज़्यादा सुनने वाला और तुम्हारे बहुत नज़दीक है बल्कि वो तुम्हारे साथ है। मैं हुज़ूर अकरम (ﷺ) की सवारी के पीछे था। मैंने जब ला ह़ौल वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह कहा तो हुज़ूर (ﷺ) ने सुन लिया, आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस! मैंने कहा लब्बैक या रसूलल्लाह! आपने फ़र्माया, क्या मैं तुम्हें एक ऐसा

कलिमा न बता दूँ जो जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है? मैंने अ़र्ज़ किया ज़रूर बताइए, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे माँ बाप आप (ﷺ) पर क़ुर्बान हों । हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो कलिमा यही है। ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह या'नी गुनाहों से बचना और नेकी करना ये उसी वक़्त मुम्किन है, जब अल्लाह की मदद शामिले हाल हो।

لِي : ((يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ)) قُلْتُ لَبَّيْكَ رَسُولَ اللهِ قَالَ : ((أَلاَ أَدُلُّكَ عَلَى كَلِمَةٍ مِنْ كَنْزٍ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ؟)) قُلتُ : بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي قَالَ: ((لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ)).

जंगे ख़ैबर के लिये इस्लामी फ़ौज की रवानगी का एक मंज़र इस रिवायत में पेश किया गया है और बाब और ह़दीष़ में यही मुत़ाबक़त है। ये भी ष़ाबित हुआ कि ज़िक्रे इलाही के लिये चीख़ने की ज़रूरत नहीं है। नामोनिहाद सूफ़ियों में ज़िक्र बिल जबर का एक वज़ीफ़ा मुरव्वज (बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करना) है, ज़ोर ज़ोर से कलिमा की ज़ब लगाते हैं। इस क़दर चीख़कर कि सुनने वालों के कान खड़े हो जाते हैं। इस ह़दीष़ से उनकी भी मज़म्मत ष़ाबित हुई। जिस जगह शारेअ़ (अ़लैहिस्सलाम) ने जहर की इजाज़त दी है, वहाँ जहर ही अफ़ज़ल है जैसे अज़ान पंजवक़्ता जहर ही के साथ मत़लूब है या जहरी नमाज़ों मे सूरह फ़ातिह़ा के बाद मुक़्तदी और इमाम दोनों के लिये आमीन बिल जहर कहना। ये रसूले करीम (ﷺ) की सुन्नत है ग़र्ज़ हर जगह ता'लीमात मुहम्मदी को मद्देनज़र रखना ज़रूरी है।

4206. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अबी उ़बैद ने बयान किया, कहा कि मैंने सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) की पिण्डली में एक ज़ख़्म का निशान देखकर उनसे पूछा ऐ अबू मुस्लिम! ये ज़ख़्म क्या है उन्होंने बताया कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में मुझे ये ज़ख़्म लगा था, लोग कहने लगे कि सलमा ज़ख़्मी हो गया। चुनाँचे मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और आप (ﷺ) ने तीन मर्तबा उस पर दम किया, उसकी बरकत से आज तक मुझे उस ज़ख़्म से कोई तकलीफ़ नहीं हुई।

٤٢٠٦- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ: رَأَيْتُ أَثَرَ ضَرْبَةٍ فِي سَاقِ سَلَمَةَ فَقُلْتُ يَا أَبَا مُسْلِمٍ مَا هَذِهِ الضَّرْبَةُ؟ قَالَ: هَذِهِ ضَرْبَةٌ أَصَابَتْنِي يَوْمَ خَيْبَرَ، فَقَالَ النَّاسُ: أُصِيبَ سَلَمَةُ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَنَفَثَ فِيهِ ثَلاَثَ نَفَثَاتٍ فَمَا اشْتَكَيْتُهَا حَتَّى السَّاعَةِ.

4207. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ह़ाज़िम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक ग़ज़्वा (ख़ैबर) में नबी करीम (ﷺ) और मुश्रिकीन का मुक़ाबला हुआ और ख़ूब जमकर जंग हुई आख़िर दोनों लश्कर अपने अपने ख़ैमों की त़रफ़ वापस हुए और मुसलमानों में एक आदमी था जिन्हें मुश्रिकीन की त़रफ़ का कोई शख़्स कहीं मिल जाता तो उसका पीछा करके क़त्ल किये बग़ैर न रहते। कहा गया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! जितनी बहादुरी से आज फ़लाँ शख़्स लड़ा है, इतनी बहादुरी से तो कोई न लड़ा होगा। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो अहले दोज़ख़ में

٤٢٠٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلٍ قَالَ: الْتَقَى النَّبِيُّ ﷺ وَالْمُشْرِكُونَ فِي بَعْضِ مَغَازِيهِ فَاقْتَتَلُوا فَمَالَ كُلُّ قَوْمٍ إِلَى عَسْكَرِهِمْ وَفِي الْمُسْلِمِينَ رَجُلٌ لاَ يَدَعُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ شَاذَّةً وَلاَ فَاذَّةً إِلاَّ اتَّبَعَهَا فَضَرَبَهَا بِسَيْفِهِ فَقِيلَ : يَا رَسُولَ اللهِ مَا أَجْزَأَ أَحَدٌ مَا أَجْزَأَ فُلاَنٌ فَقَالَ : ((إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ)) فَقَالُوا: أَيُّنَا مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ إِنْ

से है। सहाबा (रज़ि.) ने कहा, अगर ये भी दोज़ख़ी है तो फिर हम जैसे लोग किस तरह जन्नत वाले हो सकते हैं? इस पर एक सहाबी बोले कि मैं उनके पीछे पीछे रहूँगा। चुनाँचे जब वो दौड़ते या आहिस्ता चलते तो मैंउनके साथ होता। आख़िर वो ज़ख़्मी हुए और चाहा कि मौत जल्दी आ जाए। इसलिये वो तलवार का क़ब्ज़ा ज़मीन में गाड़कर उसकी नोक सीने के मुक़ाबिल करके उस पर गिर पड़े। इस तरह से उसने ख़ुदकुशी कर ली। अब वो सहाबी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। आपने पूछा कि क्या बात है? उन्होंने तफ़्सील बताई तो आपने फ़र्माया कि एक शख़्स बज़ाहिर जन्नतियों जैसे अमल करता रहता है हालाँकि वो अहले दोज़ख़ में से होता है। इसी तरह एक दूसरा शख़्स बज़ाहिर दोज़ख़ियों के से अमल करता रहता है हालाँकि वो जन्नती होता है। (राजेअ: 2898)

كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ. فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ : لأَتْبَعَنَّهُ فَإِذَا أَسْرَعَ وَأَبْطَأَ كُنْتُ مَعَهُ حَتَّى جُرِحَ فَاسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ فَوَضَعَ نِصَابَ سَيْفِهِ بِالأَرْضِ وَذُبَابَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَيْهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَجَاءَ الرَّجُلُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((وَمَا ذَاكَ؟)) فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ: ((إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ، وَإِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ)). [راجع: ٢٨٩٨]

तश्रीह: इसलिये तो फ़र्माया कि असल ए'तिबार ख़ात्मा का है। जन्नती लोगों का ख़ात्मा जन्नत के आ'माल पर और जहन्नमियों का ख़ात्मा जहन्नम के आ'माल पर होता है। ख़ुदकुशी करना शरीअत में सख़्त जुर्म क़रार दिया गया है। ये हराम मौत मरना है। रिवायत में जंगे ख़ैबर का ज़िक्र है। यही रिवायत और बाब में मुताबक़त है। ये नोट आज शाबान सन 1392 हिजरी को मस्जिद अहले हदीष़ हिन्दूपुर में लिख रहा हूँ। अल्लाह तआला इस मस्जिद को क़ायम व दायम रखे, आमीन।

4208. हमसे मुहम्मद बिन सईद ख़ुज़ाई ने बयान किया, कहा हमसे ज़ियाद बिन रबीअ ने बयान किया, उनसे अबू इमरान ने बयान किया कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने (बसरा की मस्जिद में) जुम्अे के दिन लोगों को देखा कि (उनके सिरों पर) चादरें हैं जिन पर फूल कढ़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि ये लोग इस वक़्त ख़ैबर के यहूदियों की तरह मा'लूम होते हैं।

٤٢٠٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيدٍ الْخُزَاعِيُّ حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ الرَّبِيعِ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ قَالَ: نَظَرَ أَنَسٌ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَرَأَى طَيَالِسَةً فَقَالَ: كَأَنَّهُمُ السَّاعَةَ يَهُودُ خَيْبَرَ.

तश्रीह: हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़र्माते हैं कि ये लोग अकष़र चादरें ओढ़ते होंगे और दूसरे लोग जिनको हज़रत अनस (रज़ि.) ने देखा था वो इस क़दर कष़रत से चादरें न ओढ़ते होंगे। इसलिये उनको यहूदियों से मुशाबिहत दी। उससे चादर ओढ़ने की कराहियत नहीं निकलती। कुछ ने कहा अनस (रज़ि.) ने दो रंग की चादरों के ओढ़ने पर इंकार किया मगर तबरानी ने उम्मे सलमा (रज़ि.) से निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) अकष़र अपनी चादर और इज़ार को ज़ा'फ़रान या विर्स से रंगते। कुछ ने कहा ये लोग चादरें इस तरह ओढ़ते थे जैसे यहूदी ओढ़ते हैं कि पीठ और मूँढ़ें पर डालकर दोनों किनारे लटके रहने देते हैं, उलटते नहीं। अनस (रज़ि.) ने इस पर इंकार किया। एक दूसरी हदीष़ में है कि यहूद की मुख़ालफ़त करो।

4209. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे

٤٢٠٩ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ

हातिम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने और उनसे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि अली (रज़ि.) ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ न जा सके थे क्यों कि आशूबे चश्म (आँख दुखने की बीमारी) में मुब्तला थे। (जब आँहुज़ूर ﷺ जा चुके) तो उन्होंने सोचा, अब मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ ग़ज़्वा में भी शरीक न होऊँगा? चुनाँचे वो भी आ गये। जिस दिन ख़ैबर फ़तह होना था, जब उसकी रात आई तो आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि कल मैं (इस्लामी) अलम (झण्डा) उस शख़्स को दूँगा या फ़र्माया कि अलम वो शख़्स लेगा जिसे अल्लाह और उसके रसूल अज़ीज़ रखते हैं और जिसके हाथ पर फ़त्ह हासिल होगी। हम सब ही इस सआदत के उम्मीदवार थे लेकिन कहा गया कि ये हैं अली (रज़ि.) और हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हीं को झण्डा दिया और उन्हीं के हाथ पर ख़ैबर फ़त्ह हुआ। (राजेअ : 2976)

4210. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे यअ़क़ूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि कल मैं झण्डा उसको दूँगा जिसके हाथों पर अल्लाह तआला फ़तह अता करेगा और जो अल्लाह और उसके रसूल से ज़्यादा मुहब्बत रखता है और अल्लाह और उसके रसूल भी उसको अज़ीज़ रखते हैं। रावी ने बयान किया कि वो रात सबकी इस फ़िक्र में गुज़र गई कि देखें, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अलम किसे अता करते हैं। सुबह हुई तो सब ख़िदमते नबवी (ﷺ) में हाज़िर हुए और इस उम्मीद के साथ कि अलम उन्हीं को मिलेगा लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया, अली बिन अबी तालिब कहाँ है? अर्ज़ किया गया कि या रसूलुल्लाह (ﷺ)! वो तो आँखों की तकलीफ़ में मुब्तला हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें बुला लाओ। जब वो लाए गये तो हुज़ूर (ﷺ) ने अपना थूक उनकी आँखों में लगा दिया और उनके लिये दुआ की। इस दुआ की बरकत से उनकी आँखें इतनी अच्छी हो गई जैसे पहले कोई बीमारी ही नहीं थी। हज़रत अली (रज़ि.) ने अलम सम्भालकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं उनसे उस वक़्त तक जंग करूँगा जब तक वो हमारे ही जैसे न हो जाएँ। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, यूँ ही चले जाओ, उनके

حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ تَخَلَّفَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي خَيْبَرَ وَكَانَ رَمِدًا فَقَالَ: أَنَا أَتَخَلَّفُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فَلَحِقَ بِهِ فَلَمَّا بِتْنَا اللَّيْلَةَ الَّتِي فُتِحَتْ قَالَ: ((لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ غَدًا - أَوْ لَيَأْخُذَنَّ الرَّايَةَ غَدًا - رَجُلٌ يُحِبُّهُ اللهُ وَرَسُولُهُ، يُفْتَحُ عَلَيْهِ)) فَنَحْنُ نَرْجُوهَا فَقِيلَ: هَذَا عَلِيٌّ فَأَعْطَاهُ فَفُتِحَ عَلَيْهِ.

[راجع: ٢٩٧٦]

٤٢١٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ يَوْمَ خَيْبَرَ: ((لأُعْطِيَنَّ هَذِهِ الرَّايَةَ غَدًا رَجُلاً يَفْتَحُ اللهُ عَلَى يَدَيْهِ، يُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ، وَيُحِبُّهُ اللهُ وَرَسُولُهُ)) قَالَ: فَبَاتَ النَّاسُ يَدُوكُونَ لَيْلَتَهُمْ أَيُّهُمْ يُعْطَاهَا فَلَمَّا أَصْبَحَ النَّاسُ غَدَوْا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ كُلُّهُمْ يَرْجُو أَنْ يُعْطَاهَا فَقَالَ: ((أَيْنَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ؟)) فَقِيلَ: هُوَ يَا رَسُولَ اللهِ يَشْتَكِي عَيْنَيْهِ قَالَ: ((فَأَرْسِلُوا إِلَيْهِ)) فَأُتِيَ بِهِ فَبَصَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي عَيْنَيْهِ وَدَعَا لَهُ فَبَرَأَ حَتَّى كَأَنْ لَمْ يَكُنْ بِهِ وَجَعٌ فَأَعْطَاهُ الرَّايَةَ فَقَالَ عَلِيٌّ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ أُقَاتِلُهُمْ حَتَّى يَكُونُوا مِثْلَنَا. فَقَالَ عَلَيْهِ الصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ: ((انْفُذْ عَلَى رِسْلِكَ حَتَّى تَنْزِلَ

मैदान में उतरकर पहले उन्हें इस्लाम की दा'वत देना और बताओ कि अल्लाह का उन पर क्या हक़ है। अल्लाह की क़सम! अगर तुम्हारे ज़रिये एक शख़्स को भी हिदायत मिल जाए तो ये तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊँटों से बेहतर है।

(राजेअ : 2942)

بِسَاحَتِهِمْ ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الإِسْلاَمِ وَأَخْبِرْهُمْ بِمَا يَجِبُ عَلَيْهِمْ مِنْ حَقِّ اللهِ فِيهِ فَوَ اللهِ لأَنْ يَهْدِيَ اللهُ بِكَ رَجُلاً وَاحِدًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَكَ حُمْرُ النَّعَمِ)). [راجع: ٢٩٤٢]

मा'लूम हुआ कि जंग इस्लाम का मक़्सूदे अव्वल नहीं है। इस्लाम का मक़्सूद हक़ीक़ी इशाअते इस्लाम है जो अगर तब्लीग़े इस्लाम से हो जाए तो लड़ने की हर्गिज़ इजाज़त नहीं है। अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद में साफ़ फ़र्माया है कि अल्लाह पाक फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता, वो तो अदल व इंसाफ़ और सुलह व अमन व अमान का चाहने वाला है। हज़रत अली (रज़ि.) को फ़ातेहे-ख़ैबर इसलियेकहा जाता है कि उन्होंने आख़िर में झण्डा सम्भाला और अल्लाह ने उनके हाथ पर ख़ैबर फ़तह करवाया। लाल ऊँट अरब के मुल्क में बहुत क़ीमती होते हैं।

4211. हमसे अब्दुल ग़फ़्फ़ार बिन दाऊद ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, (दूसरी सनद) और मुझसे अहमद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान ज़ुहरी ने ख़बर दी, उन्हें मुत्तलिब के मौला अम्र ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हम ख़ैबर आए फिर जब अल्लाह तआला ने आँहुज़ूर (ﷺ) को ख़ैबर की फ़तह इनायत फ़र्माई तो आपके सामने सफ़िया बिन्ते हुय्यि बिन अख़्तब (रज़ि.) की ख़ूबसूरती का किसी ने ज़िक्र किया, उनके शौहर क़त्ल हो गये थे और उनकी शादी अभी नई हुई थी। इसलिये हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें अपने लिये ले लिया और उन्हें साथ लेकर हुज़ूर (ﷺ) रवाना हुए। आख़िर जब हम मुक़ामे सद्दस सह्बाअ में पहुँचे तो उम्मुल मोमिनीन सफ़िया (रज़ि.) हैज़ से पाक हुई और हुज़ूर (ﷺ) ने उनके साथ ख़ल्वत फ़र्माई। फिर आपने हैस बनवाया। (जो खजूर के साथ घी और पनीर वग़ैरह मिलाकर बनाया जाता है) और उसे छोटे से एक दस्तरख़्वान पर रखकर मुझको हुक्म फ़र्माया कि जो लोग तुम्हारे क़रीब हैं उन्हें बुला लो। उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया (रज़ि.) का आँहज़रत (ﷺ) की तरफ़ से यही वलीमा था। फिर हम मदीना के लिये रवाना हुए तो मैंने देखा कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत सफ़िया (रज़ि.) के लिये अबा ऊँट की कोहान

٤٢١١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْغَفَّارِ بْنُ دَاوُدَ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ح وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ أَخْبَرَنِي يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الزُّهْرِيُّ عَنْ عَمْرٍو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ : قَدِمْنَا خَيْبَرَ فَلَمَّا فَتَحَ اللهُ عَلَيْهِ الْحِصْنَ ذُكِرَ لَهُ جَمَالُ صَفِيَّةَ بِنْتِ حُيَيِّ بْنِ أَخْطَبَ وَقَدْ قُتِلَ زَوْجُهَا وَكَانَتْ عَرُوسًا فَاصْطَفَاهَا النَّبِيُّ ﷺ لِنَفْسِهِ فَخَرَجَ بِهَا حَتَّى بَلَغْنَا سَدَّ الصَّهْبَاءِ حَلَّتْ فَبَنَى بِهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ صَنَعَ حَيْسًا فِي نِطَعٍ صَغِيرٍ ثُمَّ قَالَ لِي : ((آذِنْ مَنْ حَوْلَكَ)) فَكَانَتْ تِلْكَ وَلِيمَتَهُ عَلَى صَفِيَّةَ ثُمَّ خَرَجْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يُحَوِّي لَهَا وَرَاءَهُ بِعَبَاءَةٍ ثُمَّ يَجْلِسُ عِنْدَ بَعِيرِهِ فَيَضَعُ رُكْبَتَهُ وَتَضَعُ صَفِيَّةُ رِجْلَهَا عَلَى رُكْبَتِهِ حَتَّى تَرْكَبَ. [راجع: ٣٧١]

में बाँध दी ताकि पीछे से वो उसे पकड़े रहें और अपने ऊँट के पास बैठकर अपना घुटना उस पर रखा और स़फ़िया (रज़ि.) अपना पैर आँहुज़ूर (ﷺ) के घुटने पर रखकर सवार हुईं। (राजेअ : 371)

4212. हमसे इस्माईल बिन अबू उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे यह़्या बिन सईद अंस़ारी ने, उनसे ह़ुमैद त़वील ने और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने स़फ़िया बिन्ते ह़ुय्यि (रज़ि.) के लिये ख़ैबर के रास्ते में तीन दिन तक क़याम फ़र्माया और आख़िरी दिन उनसे ख़ल्वत फ़र्माई और वो भी उम्महातुल मोमिनीन में शामिल हो गईं। (राजेअ : 371)

٤٢١٢ - حدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ يَحْيَى عَنْ حُمَيْدٍ الطَّوِيلِ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَقَامَ عَلَى صَفِيَّةَ بِنْتِ حُيَيٍّ بِطَرِيقِ خَيْبَرَ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ حَتَّى أَعْرَسَ بِهَا وَكَانَتْ فِيمَنْ ضُرِبَ عَلَيْهَا الْحِجَابُ.

[راجع: ٣٧١]

4213. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको मुह़म्मद बिन जा'फ़र बिन अबी कषीर ने ख़बर दी, कहा कि मुझे ह़ुमैद ने ख़बर दी और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने मदीना और ख़ैबर के दरम्यान (मक़ामे सद्दस स़हबा में) तीन दिन तक क़याम फ़र्माया और वहीं स़फ़िया (रज़ि.) से ख़ल्वत की थी फिर मैंने ह़ुज़ूर (ﷺ) की त़रफ़ से मुसलमानों को वलीमा की दा'वत दी। आपके वलीमे में न रोटी थी, न गोश्त था स़िर्फ़ इतना हुआ कि आपने बिलाल (रज़ि.) को दस्तरख़्वान बिछाने का ह़ुक्म दिया और वो बिछा दिया गया, फिर उस पर खजूर, पनीर और घी (का मलीदा) रख दिया। मुसलमानों ने कहा कि स़फ़िया (रज़ि.) उम्महातुल मोमिनीन में से हैं या बांदी हैं? कुछ लोगों ने कहा कि अगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें पर्दे में रखा तो वो उम्महातुल मोमिनीन में से होंगी लेकिन अगर आप (ﷺ) ने उन्हें पर्दे में नहीं रखा तो फिर ये उसकी अ़लामत होगी कि वो बांदी हैं। आख़िर जब कूच का वक़्त हुआ तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये अपनी सवारी पर पीछे बैठने की जगह बनाई और उनके लिये पर्दा किया। (राजेअ : 371)

٤٢١٣ - حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرِ بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ أَخْبَرَنِي حُمَيْدٌ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: أَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ خَيْبَرَ وَالْمَدِينَةِ ثَلاَثَ لَيَالٍ يُبْنَى عَلَيْهِ بِصَفِيَّةَ، فَدَعَوْتُ الْمُسْلِمِينَ إِلَى وَلِيمَتِهِ، وَمَا كَانَ فِيهَا مِنْ خُبْزٍ وَلاَ لَحْمٍ وَمَا كَانَ فِيهَا إِلاَّ أَنْ أَمَرَ بِلاَلاً بِالأَنْطَاعِ فَبُسِطَتْ فَأَلْقَى عَلَيْهَا التَّمْرَ وَالأَقِطَ وَالسَّمْنَ فَقَالَ الْمُسْلِمُونَ : إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ أَوْ مَا مَلَكَتْ يَمِينُهُ قَالُوا : إِنْ حَجَبَهَا فَهِيَ إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ، وَإِنْ لَمْ يَحْجُبْهَا فَهِيَ مِمَّا مَلَكَتْ يَمِينُهُ، فَلَمَّا ارْتَحَلَ وَطَّأَ لَهَا خَلْفَهُ وَمَدَّ الْحِجَابَ.[راجع: ٣٧١]

4214. हमसे अबुल वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने बयान किया, (दूसरी सनद) और मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयन किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़ुमैद बिन हिलाल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल

٤٢١٤ - حدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ ح وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا وَهْبٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

قَالَ: كُنَّا مُحَاصِرِي خَيْبَرَ فَرَمَى إِنْسَانٌ بِجِرَابٍ فِيهِ شَحْمٌ فَنَزَوْتُ لآخُذَهُ فَالْتَفَتُّ فَإِذَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَحْيَيْتُ.

(रज़ि.) ने बयान किया कि हम ख़ैबर का मुहासरा किये हुए थे कि किसी शख़्स ने चमड़े की एक कुप्पी फेंकी जिसमें चर्बी थी, मैं उसे उठाने के लिये दौड़ा लेकिन मैंने जो मुड़कर देखा तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मौजूद थे, मैं शर्म से पानी-पानी हो गया।

٤٢١٥- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ عَنْ أَبِي أُسَامَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ وَسَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ أَكْلِ الثُّومِ وَعَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ. نَهَى عَنْ أَكْلِ الثُّومِ. هُوَ عَنْ نَافِعٍ وَحْدَهُ وَلُحُومِ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ عَنْ سَالِمٍ. [راجع: ٨٥٣]

4215. मुझसे उबैदुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे उबैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ और सालिम ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़ा पर नबी करीम (ﷺ) ने लहसुन और पालतू गधों के खाने से मना किया था। लहसुन खाने की मुमानअत का ज़िक्र सिर्फ़ नाफ़ेअ से मन्क़ूल है और पालतू गधों के खाने की मुमानअत सिर्फ़ सालिम से मन्क़ूल है। (राजेअ: 853)

٤٢١٦- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ وَالْحَسَنِ ابْنَيْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ أَبِيهِمَا عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنْ مُتْعَةِ النِّسَاءِ يَوْمَ خَيْبَرَ وَعَنْ أَكْلِ الْحُمُرِ الإِنْسِيَّةِ.

[أطرافه في: ٥١١٥، ٥٥٢٣، ٦٩٦١].

4216. मुझसे यह्या बिन क़ज़अ़ा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन हसन ने जो दोनों मुहम्मद बिन अली के साहबज़ादे हैं, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़ा पर औरतों से मुतआ़ की मुमानअ़त की थी और पालतू गधों के खाने की भी।

(दीगर मक़ाम: 5115, 5523, 6961)

तश्रीह: इससे पहले मुतआ़ करना जाइज़ था, मगर उस दिन से मुतआ़ क़यामत तक के लिये हराम क़रार दिया गया। रवाफ़िज़ मुतआ़ के क़ाइल हैं जो सरासर बातिल ख़्याल है। इस्लाम जैसे बाउसूल मज़हब में मुतआ़ जैसे नाजाइज़ फ़ेअ़ल की कोई गुंजाइश क़त्अ़न नहीं है। कुछ रिवायतों के मुताबिक़ हज्जतुल विदाअ़ में मुतआ़ हराम हुआ और क़यामत तक इसकी हुर्मत क़ायम रही। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बरसरे मिम्बर इसकी हुर्मत बयान की और दूसरे सहाबा (रज़ि.) ने सुकूत (चुप्पी इख़्तियार) किया तो इसकी हुर्मत पर इज्माअ़ साबित हो गया।

٤٢١٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ.

[راجع: ٨٥٣]

4217. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उनसे उबैदुल्लाह बिन उमर ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर गधे का गोश्त खाने की मुमानअ़त की थी।

(राजेअ: 853)

4218. मुझसे इस्हाक़ बिन नस़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन उ़बैद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ और सालिम ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने पालतू गधों के गोश्त की मुमानअ़त की थी। (राजेअ़ : 853)

٤٢١٨- حدَّثنا إسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ وَسَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ أَكْلِ لُحُومِ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ. [راجع: ٨٥٣]

4219. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अ़म्र ने, उनसे मुह़म्मद बिन अ़ली ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर गधे के गोश्त खाने की मुमानअ़त की थी और घोड़ों के गोश्त को खाने की इजाज़त दी थी। (दीगर मक़ाम : 5520, 5524)

٤٢١٩- حدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَمْرٍو عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ نَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ وَرَخَّصَ فِي الْخَيْلِ. [طرفاه في : ٥٥٢٠، ٥٥٢٤].

इमाम शाफ़िई (रह) ने भी इस ह़दीष़ की बिना पर घोड़े को ह़लाल क़रार दिया है।

4220. हमसे सईद बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्बाद ने बयान किया, उनसे शैबानी ने बयान किया और उन्होंने इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर मे एक मौक़े पर हम बहुत भूखे थे, इधर हाँडियों में उबाल आ रहा था (गधे का गोश्त पकाया जा रहा था) और कुछ पक भी गई थीं कि नबी करीम (ﷺ) के मुनादी ने ऐलान किया कि गधे के गोश्त का एक ज़रा भी न खाओ और उसे फेंक दो। इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर कुछ लोगों ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने इसकी मुमानअ़त इसलिये की है कि अभी इसमें से ख़ुमुस नहीं निकाला गया था और कुछ लोगों का ख़्याल था कि आपने इसकी वाक़ई मुमानअ़त (हमेशा के लिये) कर दी है, क्योंकि ये गंदगी खाता है। (राजेअ़ : 3155)

٤٢٢٠- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا عَبَّادٌ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ، قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، أَصَابَنَا مَجَاعَةٌ يَوْمَ خَيْبَرَ فَإِنَّ الْقُدُورَ لَتَغْلِي، قَالَ وَبَعْضُهَا نَضِجَتْ فَجَاءَ مُنَادِي النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَأْكُلُوا مِنْ لُحُومِ الْحُمُرِ شَيْئًا وَأَهْرِيقُوهَا)). قَالَ ابْنُ أَبِي أَوْفَى فَتَحَدَّثْنَا أَنَّهُ إِنَّمَا نَهَى عَنْهَا لأَنَّهَا لَمْ تُخَمَّسْ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: نَهَى عَنْهَا الْبَتَّةَ لأَنَّهَا كَانَتْ تَأْكُلُ الْعَذِرَةَ. [راجع: ٣١٥٥]

4221,22. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा मुझको अ़दी बिन ष़ाबित ने ख़बर दी और उन्हे बराअ और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने कि वो लोग नबी करीम (ﷺ) के साथ थे, फिर उन्हें गधे मिले तो उन्होंने उनका गोश्त पकाया लेकिन हुज़ूर (ﷺ) के मुनादी

٤٢٢١، ٤٢٢٢- حدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ أَخْبَرَنِي عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ عَنِ الْبَرَاءِ وَعَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى أَنَّهُمْ كَانُوا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَأَصَابُوا حُمُرًا فَطَبَخُوهَا فَنَادَى مُنَادِي النَّبِيِّ ﷺ:

ने ऐलान किया कि हाँडियाँ उण्डेल दो।
(दीगर मक़ाम : 4223, 4225, 4226, 5525)

((أَكْفِئُوا الْقُدُورَ)). [أطرافه في : ٤٢٢٣، ٤٢٢٥، ٤٢٢٦، ٥٥٢٥].

4223, 24. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुस्समद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने बयान किया, उन्होंने बराअ बिन आ़ज़िब और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना। ये हज़रात नबी करीम (ﷺ) से बयान करते थे कि हुज़ूर (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर फ़र्माया था कि हाँडियो का गोश्त फेंक दो, उस वक़्त हाँडियाँ चूल्हे पर रखी जा चुकी थीं। (राजेअ़ : 3153, 4221)

٤٢٢٣، ٤٢٢٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ وَابْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ يُحَدِّثَانِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ يَوْمَ خَيْبَرَ وَقَدْ نَصَبُوا الْقُدُورَ ((أَكْفِئُوا الْقُدُورَ)).
[راجع: ٣١٥٣، ٤٢٢١]

4225. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी बिन ष़ाबित ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्वा में शरीक थे फिर पहली ह़दीष़ की त़रह रिवायत नक़ल की। (राजेअ़ : 4221)

٤٢٢٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَهُ.
[راجع: ٤٢٢١]

4226. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको इब्ने अबी ज़ाइदा ने ख़बर दी, कहा हमको आ़सिम ने ख़बर दी, उन्हें आ़मिर ने और उनसे बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया कि पालतू गधों का गोश्त हम फेंक दें, कच्चा भी और पका हुआ भी, फिर हमें उसके खाने का कभी आपने हुक्म नहीं दिया। (राजेअ़ : 4221)

٤٢٢٦- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ أَخْبَرَنَا عَاصِمٌ عَنْ عَامِرٍ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ فِي غَزْوَةِ خَيْبَرَ أَنْ نُلْقِيَ الْحُمُرَ الأَهْلِيَّةَ نِيئَةً وَنَضِيجَةً، ثُمَّ لَمْ يَأْمُرْنَا بِأَكْلِهِ بَعْدُ. [راجع: ٤٢٢١]

4227. मुझसे मुहम्मद बिन अबी अल हुसैन ने बयान किया, कहा हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने, उनसे अबू आ़सिम ने बयान किया, उनसे आ़मिर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे मा'लूम नहीं कि आया आँहज़रत (ﷺ) ने गधे का गोश्त खाने से इसलिये मना किया था कि इससे बोझ ढोने का काम लिया जाता है और आपने पसन्द नहीं फ़र्माया कि बोझ ढोने वाले जानवर ख़त्म हो जाएँ, या आपने सिर्फ़ ग़ज़्व-ए-ख़ैबर के मौक़े पर पालतू गधों का गोश्त खाने से मना किया था।

٤٢٢٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي الْحُسَيْنِ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ عَاصِمٍ عَنْ عَامِرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لاَ أَدْرِي أَنَهَى عَنْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ كَانَ حَمُولَةَ النَّاسِ فَكَرِهَ أَنْ تَذْهَبَ حَمُولَتُهُمْ، أَوْ حَرَّمَهُ فِي يَوْمِ خَيْبَرَ لَحْمَ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ.

4228. हमसे हसन बिन इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन साबिक़ ने बयान किया, कहा हमसे ज़ाइदा ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन उमर ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में (माले ग़नीमत से) सवारों को दो हिस्से दिये थे और पैदल फ़ौजियों को एक हिस्सा, इसकी तफ़्सीर नाफ़ेअ ने इस तरह की है कि अगर किसी शख़्स के साथ घोड़ा होता तो उसे तीन हिस्से मिलते थे और अगर घोड़ा न होता तो सिर्फ़ एक हिस्सा मिलता था। (राजेअ : 2863)

٤٢٢٨- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَسَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَ خَيْبَرَ لِلْفَرَسِ سَهْمَيْنِ وَلِلرَّاجِلِ سَهْمًا. فَسَّرَهُ نَافِعٌ فَقَالَ: إِذَا كَانَ مَعَ الرَّجُلِ فَرَسٌ فَلَهُ ثَلاَثَةُ أَسْهُمٍ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ فَرَسٌ فَلَهُ سَهْمٌ. [راجع: ٢٨٦٣]

4229. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) ने ख़बर दी कि मैं और उ़ष्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हमने अर्ज़ किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने बनू मुत्तलिब को तो ख़ैबर के ख़ुमुस में से इनायत फ़र्माया है और हमें नज़रअंदाज़ कर दिया है हालाँकि आपसे क़राबत में हम और वो बराबर थे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया यक़ीनन बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब एक हैं। जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) ने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने बनू अब्दे शम्स और बनू नौफ़िल को (ख़ुमुस में से) कुछ नहीं दिया था। (राजेअ : 3140)

٤٢٢٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ جُبَيْرَ بْنَ مُطْعِمٍ أَخْبَرَهُ قَالَ : مَشَيْتُ أَنَا وَعُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقُلْنَا أَعْطَيْتَ بَنِي الْمُطَّلِبِ مِنْ خُمُسِ خَيْبَرَ، وَتَرَكْتَنَا وَنَحْنُ بِمَنْزِلَةٍ وَاحِدَةٍ مِنْكَ، فَقَالَ: ((إِنَّمَا بَنُو هَاشِمٍ وَبَنُو الْمُطَّلِبِ شَيْءٌ وَاحِدٌ)) قَالَ جُبَيْرٌ : وَلَمْ يَقْسِمِ النَّبِيُّ ﷺ لِبَنِي عَبْدِ شَمْسٍ وَبَنِي نَوْفَلٍ شَيْئًا. [راجع: ٣١٤٠]

तश्रीह : क्योंकि अ़ब्दे मुनाफ़ के चार बेटे थे, हाशिम, मुत्तलिब, अ़ब्दे शम्स और नौफ़िल। हाशिम की औलाद में आँहज़रत (ﷺ) थे और नौफ़िल की औलाद में जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.), अ़ब्दे शम्स की औलाद में हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.)।

4230. मुझसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हमें नबी करीम (ﷺ) की हिजरत के बारे में ख़बर मिली तो हम यमन में थे। इसलिये हम भी आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हिजरत की निय्यत से निकल पड़े। मैं और मेरे दो भाई, मैं दोनों से छोटा था। मेरे एक भाई का नाम अबू बुर्दा (रज़ि.) था और दूसरे का अबू रहम। उन्होंने कहा कि कुछ

٤٢٣٠- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَلَغَنَا مَخْرَجُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ بِالْيَمَنِ فَخَرَجْنَا مُهَاجِرِينَ إِلَيْهِ أَنَا وَأَخَوَانِ لِي أَنَا أَصْغَرُهُمْ أَحَدُهُمَا أَبُو بُرْدَةَ وَالآخَرُ أَبُو رُهْمٍ إِمَّا قَالَ: بِضْعٌ،

ऊपर पचास या उन्होंने यूँ बयान किया कि 53 या 52 मेरी क़ौम के लोग साथ थे। हम कश्ती पर सवार हुए लेकिन हमारी कश्ती ने हमें नज्जाशी के मुल्क हब्शा में ला डाला। वहाँ हमारी मुलाक़ात जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) से हो गई, जो पहले ही मक्का से हिजरत करके वहाँ पहुँच चुके थे। हमने वहाँ उन्हीं के साथ क़याम किया, फिर हम सब मदीना साथ रवाना हुए। यहाँ हम हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में उस वक़्त पहुँचे जब आप (ﷺ) ख़ैबर फ़तह कर चुके थे। कुछ लोग हमसे या'नी कश्तीवालों से कहने लगे कि हमने तुमसे पहले हिजरत की है और अस्मा बिन्ते उमैस (रज़ि.) जो हमारे साथ मदीना आई थीं, उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं, उनसे मुलाक़ात के लिये वो भी नज्जाशी के मुल्क में हिजरत करने वालों के साथ हिजरत करके चली गई थीं। उमर (रज़ि.) भी हफ़्सा (रज़ि.) के घर पहुँचे उस वक़्त अस्मा बिन्ते उमैस (रज़ि.) वहीं थीं। जब उमर (रज़ि.) ने उन्हें देखा तो पूछा कि ये कौन हैं? उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बताया कि अस्मा बिन्ते उमैस (रज़ि.)। उमर (रज़ि.) ने इस पर कहा अच्छा वही जो हब्शा से बहरी (समन्दरी) सफ़र करके आई हैं। अस्मा (रज़ि.) ने कहा कि जी हाँ! उमर (रज़ि.) ने उनसे कहा कि हम तुम लोगों से हिजरत में आगे हैं। इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) से हम तुम्हारे मुक़ाबले मे ज़्यादा क़रीब हैं। अस्मा (रज़ि.) इस पर बहुत गुस्सा हो गईं और कहा हर्गिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम! तुम लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रहे हो, तुम में जो भूखे होते थे उसे आँहुज़ूर (ﷺ) खाना खिलाते थे और जो नावाक़िफ़ होते उसे आँहुज़ूर (ﷺ) नसीहत व मवइज़त किया करते थे। लेकिन हम बहुत दूर हब्शा में ग़ैरों और दुश्मनों के मुल्क मे रहते थे, ये सब कुछ हमने अल्लाह और उसके रसूल के रास्ते ही में तो किया और अल्लाह की क़सम! मैं उस वक़्त तक न खाना खाऊँगी और न पानी पियूँगी जब तक तुम्हारी बात रसूलुल्लाह (ﷺ) से न कह लूँ। हमें अज़िय्यत दी जाती थी, धमकाया जाता था, मैं आँहुज़ूर (ﷺ) से इसका ज़िक्र करूँगी और आपसे इसके बारे में पूछूँगी। अल्लाह की क़सम कि न झूठ बोलूँगी, न कजरवी इख़्तियार करूँगी और न

وَإِمَّا قَالَ : فِي ثَلاَثَةٍ وَخَمْسِينَ أَوِ اثْنَيْنِ وَخَمْسِينَ رَجُلاً مِنْ قَوْمِي فَرَكِبْنَا سَفِينَةً فَأَلْقَتْنَا سَفِينَتُنَا إِلَى النَّجَاشِيِّ بِالْحَبَشَةِ، فَوَافَقْنَا جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ فَأَقَمْنَا مَعَهُ حَتَّى قَدِمْنَا جَمِيعًا فَوَافَقْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ افْتَتَحَ خَيْبَرَ وَكَانَ أُنَاسٌ مِنَ النَّاسِ يَقُولُونَ لَنَا يَعْنِي لأَهْلِ السَّفِينَةِ سَبَقْنَاكُمْ بِالْهِجْرَةِ، وَدَخَلَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسٍ وَهْيَ مِمَّنْ قَدِمَ مَعَنَا عَلَى حَفْصَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، زَائِرَةً وَقَدْ كَانَتْ هَاجَرَتْ إِلَى النَّجَاشِيِّ فِيمَنْ هَاجَرَ فَدَخَلَ عُمَرُ عَلَى حَفْصَةَ وَأَسْمَاءُ عِنْدَهَا فَقَالَ عُمَرُ حِينَ رَأَى أَسْمَاءَ: مَنْ هَذِهِ؟ قَالَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسٍ، قَالَ عُمَرُ: الْحَبَشِيَّةُ هَذِهِ، الْبَحْرِيَّةُ هَذِهِ، قَالَتْ أَسْمَاءُ نَعَمْ. قَالَ: سَبَقْنَاكُمْ بِالْهِجْرَةِ فَنَحْنُ أَحَقُّ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْكُمْ، فَغَضِبَتْ وَقَالَتْ: كَلاَّ وَاللهِ كُنْتُمْ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُطْعِمُ جَائِعَكُمْ وَيَعِظُ جَاهِلَكُمْ، وَكُنَّا فِي دَارِ أَوْ فِي أَرْضِ الْبُعَدَاءِ الْبُغَضَاءِ بِالْحَبَشَةِ وَذَلِكَ فِي اللهِ وَفِي رَسُولِهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَايْمُ اللهِ لاَ أَطْعَمُ طَعَامًا وَلاَ أَشْرَبُ شَرَابًا حَتَّى أَذْكُرَ مَا قُلْتَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ، وَنَحْنُ كُنَّا نُؤْذَى وَنُخَافُ وَسَأَذْكُرُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَسْأَلُهُ وَاللهِ لاَ أَكْذِبُ وَلاَ

किसी (ख़िलाफ़े वाक़िया बात का) इज़ाफ़ा करूँगी। (राजेअ़: 3136)

ازِيغُ وَلاَ أَزِيدُ عَلَيْهِ.

[راجع: ٣١٣٦]

4231. चुनाँचे जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो उन्होंने अ़र्ज़ किया या नबीयल्लाह! उमर इस तरह की बातें करते हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा कि फिर तुमने उन्हें क्या जवाब दिया? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैंने उन्हें ये जवाब दिया था। आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि वो तुमसे ज़्यादा मुझसे क़रीब नहीं हैं। उन्हें और उनके साथियों को सिर्फ़ एक हिजरत हासिल हुई और तुम कश्तीवालों ने दो हिजरतों का शर्फ़ हासिल किया। उन्होंने बयान किया कि इस वाक़िया के बाद अबू मूसा (रज़ि.) और तमाम कश्तीवाले मेरे पास गिरोह दर गिरोह आने लगे और मुझसे इस हदीष़ के बारे में पूछने लगे। उनके लिये दुनिया में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के उनके बारे में इस इर्शाद से ज़्यादा ख़ुशकुन और बाइ़षे फ़ख़्र और कोई चीज़ नहीं थी।

٤٢٣١ - فَلَمَّا جَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: يَا نَبِيَّ اللهِ إِنَّ عُمَرَ قَالَ: كَذَا وَكَذَا، قَالَ: ((فَمَا قُلْتِ لَهُ؟)) قَالَتْ: قُلْتُ لَهُ كَذَا وَكَذَا. قَالَ: ((لَيْسَ بِأَحَقَّ بِي مِنْكُمْ وَلَهُ وَلأَصْحَابِهِ هِجْرَةٌ وَاحِدَةٌ، وَلَكُمْ أَنْتُمْ أَهْلَ السَّفِينَةِ هِجْرَتَانِ)) قَالَتْ: فَلَقَدْ رَأَيْتُ أَبَا مُوسَى وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ يَأْتُونِي أَرْسَالاً يَسْأَلُونِي عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ مَا مِنَ الدُّنْيَا شَيْءٌ هُمْ أَفْرَحُ وَلاَ أَعْظَمُ فِي أَنْفُسِهِمْ، مِمَّا قَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

4232. अबू बुर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि अस्मा (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू मूसा (रज़ि.) मुझसे इस हदीष़ को बार-बार सुनते थे। अबू बुर्दा ने बयान किया कि और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जब मेरे अशअ़री अहबाब रात में आते हैं तो मैं उनकी क़ुर्आन की तिलावत की आवाज़ पहचान जाता हूँ। अगरचे दिन में, मैंने उनकी इक़ामतगाहों को न देखा हो लेकिन जब रात में वो क़ुर्आन पढ़ते हैं तो उनकी आवाज़ से मैं उनकी इक़ामतगाहों को पहचान लेता हूँ। मेरे उन ही अशअ़री अहबाब में एक मर्द दाना भी है कि जब कहीं उसकी सवारों से मुठभेड़ हो जाती है, या आपने फ़र्माया कि दुश्मन से, तो उनसे कहता है कि मेरे दोस्तों ने कहा कि तुम थोड़ी देर के लिए उनका इंतिज़ार कर लो।

٤٢٣٢ - قَالَ أَبُو بُرْدَةَ قَالَتْ أَسْمَاءُ: فَلَقَدْ رَأَيْتُ أَبَا مُوسَى وَإِنَّهُ لَيَسْتَعِيدُ هَذَا الْحَدِيثَ مِنِّي، قَالَ أَبُو بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي لأَعْرِفُ أَصْوَاتَ رُفْقَةِ الأَشْعَرِيِّينَ بِالْقُرْآنِ حِينَ يَدْخُلُونَ بِاللَّيْلِ، وَأَعْرِفُ مَنَازِلَهُمْ مِنْ أَصْوَاتِهِمْ بِالْقُرْآنِ بِاللَّيْلِ، وَإِنْ كُنْتُ لَمْ أَرَ مَنَازِلَهُمْ حِينَ نَزَلُوا بِالنَّهَارِ، وَمِنْهُمْ حَكِيمٌ إِذَا لَقِيَ الْخَيْلَ - أَوْ قَالَ الْعَدُوَّ - قَالَ لَهُمْ: إِنَّ أَصْحَابِي يَأْمُرُونَكُمْ أَنْ تَنْظُرُوهُمْ)).

तशरीह: रिवायत के आख़िर में एक अशअ़री हकीम का ज़िक्र है, हकीम उसका नाम है या वो हिक्मत जानने वाला है। रिवायत के आख़िर में उस हकीम के क़ौल का मतलब ये है कि हमारे साथ लड़ने को तैयार हैं। मतलब ये है कि ये हकीम बड़ा बहादुर है, दुश्मनों के मुक़ाबले से भागता नहीं है बल्कि ये कहता है कि ज़रा सब्र करो हम तुमसे लड़ने के लिये

हाज़िर हैं या ये मतलब है कि वो बड़ी हिक्मत और दानाई वाला है। दुश्मनों को इस तरह डराकर अपने तईं उनसे बचा लेता है। वो ये समझते हैं कि ये अकेला नहीं है, उसके साथी और आ रहे हैं। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है जब वो मुसलमान सवारों से मिलता है तो कहता है ज़रा ठहरिये या'नी हमारे साथियों को जो पैदल हैं आ जाने दो, हम तुम सब मिलकर काफ़िरों से लड़ेंगे।

4233. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमने ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ से सुना, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि ख़ैबर की फ़तह के बाद हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचे लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने (माले ग़नीमत में) हमारा भी हिस्सा लगाया। आपने हमारे सिवा किसी भी ऐसे शख़्स का हिस्सा माले ग़नीमत में नहीं लगाया जो फ़तह के वक़्त (इस्लामी लश्कर के साथ) मौजूद न रहा हो। (राजेअ़ : 3136)

٤٢٣٣- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ سَمِعَ حَفْصَ بْنَ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَدِمْنَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ أَنِ افْتَتَحَ خَيْبَرَ فَقَسَمَ لَنَا وَلَمْ يَقْسِمْ لأَحَدٍ لَمْ يَشْهَدِ الْفَتْحَ غَيْرَنَا.
[راجع: ٣١٣٦]

4234. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे मुआविया बिन अ़म्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू इस्हाक ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक बिन अनस ने बयान किया, उनसे ष़ौर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने मुत़ीअ़ के मौला सालिम ने बयान किया और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब ख़ैबर फ़तह हुआ तो माले ग़नीमत में सोना और चाँदी नहीं मिला था बल्कि गाय, ऊँट, सामान और बाग़ात मिले थे फिर हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ वादीयुल क़ुरा की तरफ़ लौटे। आँहज़रत (ﷺ) के साथ एक मिदअ़म नामी ग़ुलाम था जो बनी ज़िबाब के एक स़हाबी ने आपको हदिये में दिया था। वो आँहज़रत (ﷺ) का कजावा उतार रहा था कि किसी नामा'लूम सिम्त से एक तीर आकर उनके लगा। लोगों ने कहा मुबारक हो, शहादत! लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया हर्गिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है जो चादर उसने ख़ैबर में तक़्सीम से पहले माले ग़नीमत में से चुराई थी वो इस पर आग का शोला बनकर भड़क रही है। ये सुनकर एक दूसरे स़हाबी एक या दो तस्मे लेकर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया

٤٢٣٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ قَالَ : حَدَّثَنِي ثَوْرٌ قَالَ : حَدَّثَنِي سَالِمٌ مَوْلَى ابْنِ مُطِيعٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ افْتَتَحْنَا خَيْبَرَ وَلَمْ نَغْنَمْ ذَهَبًا وَلاَ فِضَّةً إِنَّمَا غَنِمْنَا الْبَقَرَ وَالإِبِلَ، وَالْمَتَاعَ، وَالْحَوَائِطَ، ثُمَّ انْصَرَفْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى وَادِي الْقُرَى، وَمَعَهُ عَبْدٌ لَهُ يُقَالُ لَهُ مِدْعَمٌ أَهْدَاهُ لَهُ أَحَدُ بَنِي الضِّبَابِ فَبَيْنَمَا هُوَ يَحُطُّ رَحْلَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِذْ جَاءَهُ سَهْمٌ عَائِرٌ حَتَّى أَصَابَ ذَلِكَ الْعَبْدَ. فَقَالَ النَّاسُ هَنِيئًا لَهُ الشَّهَادَةُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَلَى، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّ الشَّمْلَةَ الَّتِي أَصَابَهَا يَوْمَ خَيْبَرَ مِنَ الْمَغَانِمِ لَمْ تُصِبْهَا الْمَقَاسِمُ، لَتَشْتَعِلُ عَلَيْهِ نَارًا)) فَجَاءَ رَجُلٌ حِينَ سَمِعَ ذَلِكَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ

कि ये मैंने उठा लिये थे, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये भी जहन्नम का तस्मा बनता। (दीगर मक़ाम : 6707)

بِشِرَاكٍ أَوْ بِشِرَاكَيْنِ فَقَالَ: هَذَا شَيْءٌ كُنْتُ أَصَبْتُهُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((شِرَاكٌ أَوْ شِرَاكَانِ مِنْ نَارٍ)).

[طرفه في: ٦٧٠٧].

रिवायत में फ़तहे ख़ैबर का ज़िक्र है, इसीलिये उसे यहाँ दर्ज किया गया इससे अमानत में ख़यानत की भी इंतिहाई मुज़म्मत षाबित हुई।

4235. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, कहा कि मुझे ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उन्होंने उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा हाँ उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है अगर उसका ख़तरा न होता कि बाद की नस्लें बे जायदाद रह जाएँगी और उनके पास कुछ न होगा तो जो भी बस्ती मेरे ज़माने ख़िलाफ़त में फ़तह होती, मैं उसे इस तरह तक़्सीम कर देता जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर की तक़्सीम की थी। मैं उन मफ़्तूहा अराज़ी को बाद में आने वाले मुसलमानों के लिये महफ़ूज़ छोड़ जा रहा हूँ ताकि वो उसे तक़्सीम करते रहें । (राजेअ : 2234)

٤٢٣٥- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي زَيْدٌ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ سَمِعَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: أَمَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَوْ لاَ أَنْ أَتْرُكَ آخِرَ النَّاسِ بَبَّانًا لَيْسَ لَهُمْ شَيْءٌ مَا فُتِحَتْ عَلَيَّ قَرْيَةٌ إِلاَّ قَسَمْتُهَا كَمَا قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْبَرَ، وَلَكِنِّي أَتْرُكُهَا خِزَانَةً لَهُمْ يَقْتَسِمُونَهَا.

[راجع: ٢٣٣٤]

हज़रत उमर (रज़ि.) ने जो फ़र्माया था वही हुआ बाद के ज़मानों में मुसलमान बहुत बढ़े और अतराफ़े आलम में फैले। चुनाँचे जीती हुई ज़मीनको उन्होंने क़वाइदे शरइया के तहत इसी तरह तक़्सीम किया और हज़रत उमर (रज़ि.) का फ़र्माना सहीह षाबित हुआ। हदीष में बब्बान का लफ़्ज़ आया है दो बाए मुवहिहदा से दूसरी बाअ मुशद्दद है। अबू उबैदह (रज़ि.) कहते हैं मैं समझता हूँ ये लफ़्ज़ अरबी ज़ुबान का नहीं है। ज़ुहरी कहते हैं ये यमन की ज़ुबान का एक लफ़्ज़ है जो अरबों में मशहूर नहीं हुआ। बब्बान के मआनी यक्साँ एक तरीक़ और एक रविश पर और कुछ ने कहा नादार मुहताज के मा'नी में है। (वहीदी)

4236. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने महदी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक बिन अनस (रज़ि.) ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा अगर बाद में आने वाले मुसलमानों का ख़्याल न होता तो जो बस्ती भी मेरे दौर में फ़तह होती, मैं उसे उसी तरह तक़्सीम कर देता जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर की तक़्सीम कर दी थी। (राजेअ : 2334)

٤٢٣٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا ابْنُ مَهْدِيٍّ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَوْ لاَ آخِرُ الْمُسْلِمِينَ مَا فُتِحَتْ عَلَيْهِمْ قَرْيَةٌ إِلاَّ قَسَمْتُهَا كَمَا قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ خَيْبَرَ. [راجع: ٢٣٣٤]

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) के क़ौल का मतलब ये है कि अगर मुझको उन लोगों का ख़्याल न होता जो आइन्दा मुसलमान होंगे और वो महज़ मुफ़्लिस होंगे तो मैं जिस क़दर मुल्क फ़तह होता जाता वो सबका सब मुसलमानों को जागीरों के तौर पर बांट देता और ख़ालिस़ कुछ न रखता जिसका रुपया बैतुलमाल में जमा होता है मगर मुझको उन

लोगों का ख़्याल है जो आइन्दा मुसलमान होंगे और अगर नादार हुए तो उनकी गुज़र औक़ात के लिये कुछ न रहेगा। इसलिये ख़ज़ान में मुल्क की तफ़्सील जमा रखता हूँ कि आइन्दा ऐसे मुसलमानों के काम आए।

4237. मुझसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुह्री से सुना और उनसे इस्माईल बिन उमय्या ने सवाल किया था तो उन्होंने बयान किया कि मुझे अम्बसा बिन सईद ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपसे (ख़ैबर की ग़नीमत में से) हिस्सा मांगा। सईद बिन आस़ के एक लड़के (अबान बिन सईद रज़ि.) ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इन्हें न दीजिए। इस पर अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि ये शख़्स़ तो इब्ने क़ौक़ल का क़ातिल है। अबान (रज़ि.) इस पर बोले हैरत है इस वब्र (बिल्ली से छोटा एक जानवर) पर जो क़ुदूमुल ज़ान पहाड़ी से उतर आया है। (राजेअ़ : 2827)

٤٢٣٧- حدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ وَسَأَلَهُ إِسْمَاعِيلُ بْنُ أُمَيَّةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَنْبَسَةُ بْنُ سَعِيدٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَسَأَلَهُ، قَالَ لَهُ بَعْضُ بَنِي سَعِيدِ بْنِ الْعَاصِ : لاَ تُعْطِهِ يَا رَسُولَ اللهِ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: هَذَا قَاتِلُ ابْنِ قَوْقَلٍ، فَقَالَ: وَاعَجَبَاهُ لِوَبْرٍ تَدَلَّى مِنْ قَدُومِ الضَّأْنِ.

[راجع: ٢٨٢٧]

4238. और ज़ुबैदी से रिवायत है कि उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें अम्बसा बिन सईद ने ख़बर दी, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, वो सईद बिन आस़ (रज़ि.) को ख़बर दे रहे थे कि अबान (रज़ि.) को हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने किसी सरिय्या पर मदीना से नजद की तरफ़ भेजा था। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर अबान (रज़ि.) और उनके साथी आँहुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, ख़ैबर फ़तह हो चुका था। उन लोगों के घोड़े तंग छाल ही के थे, (या'नी उन्होंने मुहिम में कोई कामयाबी हासिल नहीं की थी) अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ग़नीमत में इनका हिस्सा न लगाईए। इस पर अबान (रज़ि.) बोले ऐ वब्र! तेरी हैषियत तो सिर्फ़ ये है कि क़ुदूमुल ज़ान की चोटी से उतर आया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अबान! बैठ जा! आँहज़रत (ﷺ) ने उन लोगों का हिस्सा नहीं लगाया।

(राजेअ़ : 2827)

٤٢٣٨- وَيُذْكَرُ عَنِ الزُّبَيْدِيِّ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَنْبَسَةُ بْنُ سَعِيدٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ يُخْبِرُ سَعِيدَ بْنَ الْعَاصِ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَبَانَ عَلَى سَرِيَّةٍ مِنَ الْمَدِينَةِ قِبَلَ نَجْدٍ، قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَقَدِمَ أَبَانُ وَأَصْحَابُهُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِخَيْبَرَ بَعْدَ مَا افْتَتَحَهَا وَإِنَّ حُزُمَ خَيْلِهِمْ لَلِيفٌ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ لاَ تَقْسِمْ لَهُمْ قَالَ أَبَانُ : وَأَنْتَ بِهَذَا يَا وَبْرُ تَحَدَّرَ مِنْ رَأْسِ ضَأْنٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَبَانُ اجْلِسْ)) فَلَمْ يَقْسِمْ لَهُمْ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : الضَّالُ السِّدْرُ.

[راجع: ٢٨٢٧]

तशरीह : इब्ने क़ौक़ल (रज़ि.) सहाबी हैं अबान बिन सईद (रज़ि.) अभी इस्लाम नहीं लाए थे और उसी हालत में उन्होंने इब्ने क़ौक़ल (रज़ि.) को शहीद किया था। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का इशारा उस वाक़िये की तरफ़ था मगर अबान बिन सईद (रज़ि.) को उनकी ये बात पसन्द नहीं आई और उनकी ज़ात पर ये नुक्ताचीनी की। (ग़फ़रल्लाह लहुम अज्मईन)

वब्र एक जानवर बिल्ली के बराबर होता है। ज़ान उस पहाड़ का नाम है जो हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के मुल्क दौस में था। कुछ नुस्ख़ों में लफ़्ज़ **फ़लम युक़्सिम लहुम** के आगे ये अल्फ़ाज़ और हैं, **क़ाल अबू अब्दुल्लाह अल ज़ाल अस्सदर**

या'नी इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा ज़ाल जंगली बेरी को कहते हैं। ये तफ़्सीर उसी नुस्ख़े की बिना पर है, जिनमें बजाय रास ज़ान के रासे ज़ाल है।

4239. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे दादा ने ख़बर दी और उन्हें अबान बिन सईद (रज़ि.) ने कि वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और सलाम किया। अबू हुरैरह (रज़ि.) बोले कि या रसूलल्लाह! ये तो इब्ने क़ौक़ल का क़ातिल है और अबान (रज़ि.) ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से कहा हैरत है उस वब्र पर जो क़ुदूमुल ज़ान से अभी उतरा है और मुझ पर ऐब लगाता है एक ऐसे शख़्स पर कि जिसके हाथ से अल्लाह तआ़ला ने उन्हें (इब्ने क़ौक़ल रज़ि. को) इ़ज़्ज़त दी और ऐसा न होने दिया कि उनके हाथ से मुझे ज़लील करता। (राजेअ़ : 2827)

٤٢٣٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ أَخْبَرَنِي جَدِّي أَنَّ أَبَانَ بْنَ سَعِيدٍ أَقْبَلَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا قَاتِلُ ابْنِ قَوْقَلٍ وَقَالَ أَبَانُ لأَبِي هُرَيْرَةَ : وَاعَجَبًا لَكَ وَبْرٌ تَدَأْدَأَ مِنْ قَدُومِ ضَأْنٍ يَنْعَى عَلَيَّ إِمْرًا أَكْرَمَهُ اللهُ بِيَدِي وَمَنَعَهُ أَنْ يُهِينَنِي بِيَدِهِ.
[راجع: ٢٨٢٧]

तश्रीह़ : ह़ज़रत अबान बिन सईद (रज़ि.) के कहने का मत़लब ये था कि मैंने इब्ने क़ौक़ल (रज़ि.) को शहीद किया तो वो मेरे कुफ़्र का ज़माना था और शहादत से अल्लाह की बारगाह में इ़ज़्ज़त ह़ासिल होती है जो मेरे हाथों उन्हें ह़ासिल हुई। दूसरी त़रफ़ अल्लाह तआ़ला का ये भी फ़ज़्ल हुआ कि कुफ़्र की ह़ालत में उनके हाथ से मुझे क़त्ल नहीं करवाया जो मेरी उख़रवी ज़िल्लत का सबब बनता और अब मैं मुसलमान हूँ और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखता हूँ। लिहाज़ा अब ऐसी बातों का ज़िक्र न करना बेहतर है। आँह़ज़रत (ﷺ) ह़ज़रत अबान (रज़ि.) के उस बयान को सुनकर ख़ामोश हो गये।

4240,41. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की स़ाह़बज़ादी फ़ात़िमा (रज़ि.) ने अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास किसी को भेजा और अपनी मीराष का मुत़ालबा किया आँहुज़ूर (ﷺ) के उस माल से जो आपको अल्लाह तआ़ला ने मदीना और फ़िदक में इनायत फ़र्माया था और ख़ैबर का जो पाँचवाँ ह़िस्सा रह गया था। अबूबक्र (रज़ि.) ने ये जवाब दिया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ुद ही इर्शाद फ़र्माया था कि हम पैग़म्बरों का कोई वारिष नहीं होता, हम जो कुछ छोड़ जाएँ वो सब स़दक़ा होता है, अल्बत्ता आले मुह़म्मद (ﷺ) इसी माल से खाती रहेगी और मैं अल्लाह की क़सम! जो स़दक़ा ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) छोड़ गये हैं उसमें किसी क़िस्म का तग़य्युर नहीं करूँगा, जिस ह़ाल में वो आँहुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में था अब भी इसी त़रह रहेगा और उसमें (उसकी तक़्सीम वग़ैरह) में, मैं भी वही तर्ज़े अमल इख़्तियार

٤٢٤٠، ٤٢٤١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ، أَنَّ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ بِنْتَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْسَلَتْ إِلَى أَبِي بَكْرٍ تَسْأَلُهُ مِيرَاثَهَا مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِمَّا أَفَاءَ اللهُ عَلَيْهِ بِالْمَدِينَةِ وَفَدَكٍ وَمَا بَقِيَ مِنْ خُمُسِ خَيْبَرَ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ))، إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذَا الْمَالِ وَإِنِّي وَاللهِ لاَ أُغَيِّرُ شَيْئًا مِنْ صَدَقَةِ

करूँगा जो आँहुज़ूर (ﷺ) का अपनी ज़िन्दगी में था। ग़र्ज़ अबूबक्र ने फ़ातिमा (रज़ि.) को कुछ भी देना मंज़ूर न किया। इस पर फ़ातिमा (रज़ि.) अबूबक्र (रज़ि.) की तरफ़ से ख़फ़ा हो गईं और उनसे तर्के मुलाक़ात कर लिया और उसके बाद वफ़ात तक उनसे कोई बातचीत नहीं की। फ़ातिमा (रज़ि.) आँहुज़ूर (ﷺ) के बाद छ: महीने तक ज़िन्दा रहीं जब उनकी वफ़ात हुई तो उनके शौहर अ़ली (रज़ि.) ने उन्हें रात में दफ़न कर दिया और अबूबक्र (रजि) को इसकी ख़बर नहीं दी और ख़ुद उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ ली। फ़ातिमा (रज़ि.) जब तक ज़िन्दा रहीं, अ़ली (रज़ि.) पर लोग बहुत तवज्जह रखते रहे लेकिन उनकी वफ़ात के बाद उन्होंने देखा कि अब लोगों के मुँह उनकी तरफ़ से फिरे हुए हैं। उस वक़्त उन्होंने अबूबक्र (रज़ि.) से सुलह कर लेना और उनसे बेअ़त कर लेना चाहा। इससे पहले छ: माह तक उन्होंने अबूबक्र (रज़ि.) से बेअ़त नहीं की थी फिर उन्होंने अबूबक्र (रज़ि.) को बुला भेजा और कहला भेजा कि आप सिर्फ़ तन्हा आएँ और किसी को अपने साथ न लाएँ उनको ये मंज़ूर न था कि उ़मर (रज़ि.) उनके साथ आएं। उ़मर (रज़ि.) ने अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि अल्लाह की क़सम! आप तन्हा उनके पास न जाना। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा क्यूँ वो मेरे साथ क्या करेंगे मैं तो अल्लाह की क़सम ज़रूर उनके पास जाऊँगा। आख़िर आप अ़ली (रज़ि.) के यहाँ गये। अ़ली (रज़ि.) ने अल्लाह को गवाह किया, उसके बाद फ़र्माया, हमें आपके फ़ज़्ल व कमाल और जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने आपको बख़्शा है, सबका हमें इक़रार है जो ख़ैर व इम्तियाज़ आपको अल्लाह तआ़ला ने दिया था हमने उसमें कोई रेस भी नहीं की लेकिन आपने हमारे साथ ज़्यादती की (कि ख़िलाफ़त के मामले में हमसे कोई मश्वरा नहीं लिया) हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ अपनी क़राबत की वजह से अपना हक़ समझते थे (कि आप हमसे मश्वरा करते) अबूबक्र (रज़ि.) पर उन बातों से गिरया तारी हो गया और जब बात करने के क़ाबिल हुए तो फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है रसूलुल्लाह (ﷺ) की क़राबत के साथ सिलारहमी मुझे अपनी क़राबत से ज़्यादा अ़ज़ीज़ है। लेकिन मेरे और आप लोगों के बीच उन अम्वाल के सिलसिले में जो इख़्तिलाफ़ हुआ है, तो मैं उसमें हक़ और ख़ैर से नहीं हटा हूँ और

رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ حَالِهَا الَّتِي كَانَ عَلَيْهَا فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلأَعْمَلَنَّ فِيهَا بِمَا عَمِلَ بِهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَبَى أَبُوبَكْرٍ أَنْ يَدْفَعَ إِلَى فَاطِمَةَ مِنْهَا شَيْئًا فَوَجَدَتْ فَاطِمَةُ عَلَى أَبِي بَكْرٍ فِي ذَلِكَ فَهَجَرَتْهُ فَلَمْ تُكَلِّمْهُ حَتَّى تُوُفِّيَتْ وَعَاشَتْ بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سِتَّةَ أَشْهُرٍ، فَلَمَّا تُوُفِّيَتْ دَفَنَهَا زَوْجُهَا عَلِيٌّ لَيْلاً وَلَمْ يُؤْذِنْ بِهَا أَبَا بَكْرٍ وَصَلَّى عَلَيْهَا، وَكَانَ لِعَلِيٍّ مِنَ النَّاسِ وَجْهٌ حَيَاةَ فَاطِمَةَ، فَلَمَّا تُوُفِّيَتْ اسْتَنْكَرَ عَلِيٌّ وُجُوهَ النَّاسِ فَالْتَمَسَ مُصَالَحَةَ أَبِي بَكْرٍ وَمُبَايَعَتَهُ، وَلَمْ يَكُنْ يُبَايِعُ تِلْكَ الأَشْهُرَ، فَأَرْسَلَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ أَنِ ائْتِنَا وَلاَ يَأْتِنَا أَحَدٌ مَعَكَ كَرَاهِيَةً لِمَحْضَرِ عُمَرَ فَقَالَ عُمَرُ : لاَ وَاللهِ لاَ تَدْخُلُ عَلَيْهِمْ وَحْدَكَ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ : وَمَا عَسَيْتَهُمْ أَنْ يَفْعَلُوا بِي وَاللهِ لآتِيَنَّهُمْ، فَدَخَلَ عَلَيْهِمْ أَبُو بَكْرٍ فَتَشَهَّدَ عَلِيٌّ فَقَالَ : إِنَّا قَدْ عَرَفْنَا فَضْلَكَ وَمَا أَعْطَاكَ اللهُ وَلَمْ نَنْفَسْ عَلَيْكَ خَيْرًا سَاقَهُ اللهُ إِلَيْكَ وَلَكِنَّكَ اسْتَبْدَدْتَ عَلَيْنَا بِالأَمْرِ وَكُنَّا نَرَى لِقَرَابَتِنَا مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَصِيبًا حَتَّى فَاضَتْ عَيْنَا أَبِي بَكْرٍ، فَلَمَّا تَكَلَّمَ أَبُوبَكْرٍ قَالَ : وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَقَرَابَةُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ

اصِلَ مِنْ قَرَابَتِي وَأَمَّا الَّذِي شَجَرَ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ مِنْ هَذِهِ الأَمْوَالِ فَلَمْ آلُ فِيهَا عَنِ الْخَيْرِ وَلَمْ أَتْرُكْ أَمْرًا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصْنَعُهُ فِيهَا إِلاَّ صَنَعْتُهُ فَقَالَ عَلِيٌّ لأَبِي بَكْرٍ: مَوْعِدُكَ الْعَشِيَّةَ لِلْبَيْعَةِ فَلَمَّا صَلَّى أَبُو بَكْرٍ الظُّهْرَ رَقِيَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَتَشَهَّدَ وَذَكَرَ شَأْنَ عَلِيٍّ وَتَخَلُّفَهُ عَنِ الْبَيْعَةِ وَعُذْرَهُ بِالَّذِي اعْتَذَرَ إِلَيْهِ ثُمَّ اسْتَغْفَرَ وَتَشَهَّدَ عَلِيٌّ فَعَظَّمَ حَقَّ أَبِي بَكْرٍ وَحَدَّثَ أَنَّهُ لَمْ يَحْمِلْهُ عَلَى الَّذِي صَنَعَ نَفَاسَةً عَلَى أَبِي بَكْرٍ، وَلاَ إِنْكَارًا لِلَّذِي فَضَّلَهُ اللهُ بِهِ وَلَكِنَّا نَرَى لَنَا فِي هَذَا الأَمْرِ نَصِيبًا فَاسْتَبَدَّ عَلَيْنَا فَوَجَدْنَا فِي أَنْفُسِنَا فَسُرَّ بِذَلِكَ الْمُسْلِمُونَ وَقَالُوا أَصَبْتَ وَكَانَ الْمُسْلِمُونَ إِلَى عَلِيٍّ قَرِيبًا حِينَ رَاجَعَ الأَمْرَ بِالْمَعْرُوفِ.

[راجع: ٣٠٩٢، ٣٠٩٣]

इस सिलसिले में जो रास्ता मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का देखा ख़ुद मैंने भी उसी को इख़्तियार किया। अ़ली (रज़ि.) ने उसके बाद अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि दोपहर के बाद मैं आपसे बेअ़त करूँगा। चुनाँचे ज़ुह्र की नमाज़ से फ़ारिग होकर अबूबक्र (रज़ि.) मिम्बर पर आए और ख़ुत्बा के बाद अ़ली (रज़ि.) के मामले का और उनके अब तक बेअ़त न करने का ज़िक्र किया और वो उ़ज़्र भी बयान किया जो अ़ली (रज़ि.) ने पेश किया था फिर अ़ली (रज़ि.) ने इस्तिग़फ़ार और शहादत के बाद अबूबक्र (रज़ि.) का ह़क़ और उनकी बुज़ुर्गी बयान की और फ़र्माया कि जो कुछ उन्होंने किया है उसका बाइ़ष अबूबक्र (रज़ि.) से ह़सद नहीं था और न उनके इस अफ़ज़ल व कमाल का इंकार मक़्सूद था जो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इनायत किया ये बात ज़रूर थी कि हम इस मुआमल-ए-ख़िलाफ़त में अपना ह़क़ समझते थे (कि हमसे मश्वरा लिया जाता) हमारे साथ यही ज़्यादती हुई थी जिससे हमें रंज पहुँचा। मुसलमान इस वाक़िये पर बहुत ख़ुश हुए और कहा कि आपने दुरुस्त फ़र्माया। जब अ़ली (रज़ि.) ने इस मामले में ये मुनासिब रास्ता इख़्तियार कर लिया तो मुसलमान उनसे ख़ुश हो गये और अ़ली (रज़ि.) से और ज़्यादा मुहब्बत करने लगे जब देखा कि उन्होंने अच्छी बात इख़्तियार कर ली है। (राजेअ़: 3092, 3093)

तश्रीह : मुस्लिम की रिवायत में है कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) अपने ख़ुत्बे के बाद उठे और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के हाथ पर बेअ़त कर ली। उनके बेअ़त करते ही सब बनू हाशिम ने बेअ़त कर ली और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िलाफ़त पर तमाम स़ह़ाबा (रज़ि.) का इज्माअ़ हो गया। अब जो उनकी ख़िलाफ़त को स़ह़ीह़ न समझे वो तमाम स़ह़ाबा (रज़ि.) का मुख़ालिफ़ है और वो इस आयत की वईदे शदीद में दाख़िल है। **वयत्तबिअ़ ग़ैरा सबीलिल मुमिनीना नुवल्लिही मा तवल्ला** (निसा : 115) इब्ने ह़ब्बान ने अबू सईद से रिवायत किया है कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के हाथ पर शुरू ही में बेअ़त कर ली थी। बैहक़ी ने इसी रिवायत को स़ह़ीह़ कहा है तो अब मुकर्रर बेअ़त ताकीद के लिये होगी।

٤٢٤٢ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا حَرَمِيٌّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنِي عُمَارَةُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ قُلْنَا الآنَ نَشْبَعُ مِنَ التَّمْرِ.

4242. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़रमी ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़म्मारा ने ख़बर दी, उन्हें इक्रिमा ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ख़ैबर फ़तह हो चुका तो हमने कहा कि अब खजूरों से हमारा जी भर जाएगा।

खजूरों की पैदावार के लिये ख़ैबर मशहूर था। इसीलिये ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) को ख़ुशी हुई कि फ़तह़े ख़ैबर की वजह से मदीना में खजूरें बकष़रत आने लगेंगी।

4243. हमसे हसन ने बयान किया, कहा हमसे क़ुर्रह बिन हबीब ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह इब्ने दीनार ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब तक ख़ैबर फ़तह नहीं हुआ था हम तंगी में थे।

٤٢٤٣- حدَّثَنَا الْحَسَنُ حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ حُبَيْبٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنُ دِينَارٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُما قَالَ : مَا شَبِعْنَا حَتَّى فَتَحْنَا خَيْبَرَ.

फ़तहे ख़ैबर के बाद मुसलमानों को कुशादगी नसीब हुई वहाँ से बकषरत खजूरें आने लगीं। ख़ैबर की ज़मीन खज़ूरों की पैदावार के लिये मशहूर थी।

बाब 40 : नबी करीम (ﷺ) का ख़ैबर वालों पर तहसीलदार मुक़र्रर फ़र्माना

٤٠- بَابُ اسْتِعْمَالِ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى أَهْلِ خَيْبَرَ

4244,45. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अब्दुल मजीद बिन सुहैल ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक सहाबी (सवाद बिन ग़ज़िया रज़ि.) को ख़ैबर का आमिल मुक़र्रर किया। वो वहाँ से उम्दा क़िस्म की खजूरें लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा कि क्या ख़ैबर की तमाम खजूरें ऐसी हैं? उन्होंने अर्ज़ किया नहीं अल्लाह की क़सम या रसूलल्लाह! हम इस तरह की एक साअ खजूर (उससे ख़राब) दो या तीन साअ खजूर के बदले में उनसे लेते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस तरह न किया करो, बल्कि (अगर अच्छी खजूर लानी हो तो) सारी खजूर पहले दिरहम के बदले बेच डाला करो, फिर उन दिरहम से अच्छी खजूर ख़रीद लिया करो। (राजेअ : 2201, 2202)

٤٢٤٤، ٤٢٤٥- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ بْنِ سُهَيْلٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ وَأَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ اسْتَعْمَلَ رَجُلاً عَلَى خَيْبَرَ فَجَاءَهُ بِتَمْرٍ جَنِيبٍ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كُلُّ تَمْرِ خَيْبَرَ هَكَذَا؟)) فَقَالَ لاَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا لَنَأْخُذُ الصَّاعَ مِنْ هَذَا بِالصَّاعَيْنِ بِالثَّلاَثَةِ فَقَالَ ﷺ: ((لاَ تَفْعَلْ بِعِ الْجَمْعَ بِالدَّرَاهِمِ ثُمَّ ابْتَعْ بِالدَّرَاهِمِ جَنِيبًا)). [راجع: ٢٢٠١، ٢٢٠٢]

4246,47. और अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे अब्दुल मजीद ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया और उनसे अबू सईद और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार के ख़ानदान बनी अदी के भाई को ख़ैबर भेजा और उन्हें वहाँ का आमिल मुक़र्रर किया और अब्दुल मजीद से रिवायत है कि उनसे अबू सालेह सिमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) और अबू सईद (रज़ि.) ने इसी तरह नक़ल किया है। (राजेअ : 2201, 2202)

٤٢٤٦، ٤٢٤٧- وَقَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ عَنْ سَعِيدٍ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ وَأَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَاهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ أَخَا بَنِي عَدِيٍّ مِنَ الأَنْصَارِ إِلَى خَيْبَرَ فَأَمَّرَهُ عَلَيْهَا وَعَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَأَبِي سَعِيدٍ مِثْلَهُ. [راجع: ٢٢٠١، ٢٢٠٢]

ख़ैबर के पहले आमिल हज़रत सवाद बिन ग़ज़िया नामी अंसारी (रज़ि.) मुक़र्रर किये गये थे। यही वहाँ की खजूरें बतौरे तोहफ़ा

लाए थे जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने उनको ऊपर बयान की गई हिदायत फ़र्माई।

बाब 41 : ख़ैबर वालों के साथ नबी करीम (ﷺ) का मामला तै करना

٤١- باب مُعَامَلَةِ النَّبِيِّ ﷺ أَهْلَ خَيْبَرَ

4248. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर (की ज़मीन व बाग़ात वहाँ के) यहूदियों के पास ही रहने दिये थे कि वो उनमें काम करें और बोएं जोतें और उन्हें उनकी पैदावार का आधा हिस्सा मिलेगा। (राजेअ : 2285)

٤٢٤٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ أَعْطَى النَّبِيُّ ﷺ خَيْبَرَ الْيَهُودَ أَنْ يَعْمَلُوهَا وَيَزْرَعُوهَا وَلَهُمْ شَطْرُ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا.[راجع: ٢٢٨٥]

आधे-आधे (फ़िफ़्टी-फ़िफ़्टी) पर मामला करना इस हदीष से दुरुस्त क़रार पाया।

बाब 42 : एक बकरी का गोश्त जिसमें नबी करीम (ﷺ) को ख़ैबर में ज़हर दिया गया था। उसको उर्वा ने आइशा (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है

٤٢- باب الشَّاةِ الَّتِي سُمَّتْ لِلنَّبِيِّ ﷺ بِخَيْبَرَ رَوَاهُ عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

4249. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि ख़ैबर की फ़तह के बाद नबी करीम (ﷺ) को (एक यहूदी औरत की तरफ़ से) बकरी के गोश्त का हदिया पेश किया गया जिसमें ज़हर मिला हुआ था। (राजेअ : 3169)

٤٢٤٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنِي سَعِيدٌ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ أُهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ شَاةٌ فِيهَا سَمٌّ. [راجع: ٣١٦٩]

तशरीह : ज़हर भेजने वाली ज़ैनब बिन्ते हारिष सलाम बिन मुश्कम यहूदी की औरत थी। उसने ये मा'लूम कर लिया था कि आँहज़रत (ﷺ) को दस्त का गोश्त बहुत पसन्द है। उसने उसी में ख़ूब ज़हर मिलाया। आपने एक निवाला चखकर थूक दिया। बिश्र बिन बराअ (रज़ि.) खा गये वो मर गये, दूसरे सहाबा (रज़ि.) को आपने मना किया और बतला दिया कि उसमें ज़हर मिला हुआ है। बैहक़ी की रिवायत में है कि आपने उस औरत को बुलाकर पूछा। वो कहने लगी मैंने ये इसलिये किया कि अगर आप सच्चे रसूल हैं तो अल्लाह आपको ख़बर कर देगा अगर आप झूठे हैं तो आपका मरना बेहतर है। इब्ने सअद की रिवायत में है जब बिश्र बिन बराअ (रज़ि.) ज़हर के अषर से मर गये तो आपने उस औरत को बिश्र (रज़ि.) के वारिषों के हवाले कर दिया और उन्होंने उसको क़त्ल कर दिया (इस हदीष से ये भी निकला कि ज़हर देकर मार डालना भी इरादतन क़त्ल है और उसमें क़िसास लाज़िम आता है और हन्फ़िया का रद्द हुआ जो उसे क़त्ल बिस्सबब कहते हैं और क़िसास को उसमें साक़ित करते हैं। (वहीदी)

बाब 43 : ग़ज़्व-ए-ज़ैद बिन हारिषा का बयान

٤٣- باب غَزْوَةِ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ

तशरीह : हज़रत ज़ैद बिन हारिष (रज़ि.) को आप (ﷺ) ने कई लड़ाइयों में सरदार बनाकर भेजा। सलमा ने कहा कि हमने सात लड़ाइयाँ उनके साथ कीं। पहले नजद की तरफ़, फिर बनू सुलैम की तरफ़, फिर क़ुरैश के क़ाफ़िलों की तरफ़ जिसमें अबुल आस बिन रबीअ (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के दामाद क़ैद होकर आए थे। फिर बनू षअलबा की तरफ़, फिर

हस्मी की तरफ़, फिर वादी अल क़ुरा की तरफ़, फिर बनी फ़ुज़ारा की तरफ़। हाफ़िज़ ने कहा इमाम बुख़ारी (रह) की मुराद यहाँ यही आख़िरी ग़ज़्वा है। इसमें बड़े बड़े मुहाजिरीन और अंसार शरीक थे। जैसे हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, अबू उबैदह, सअद, सईद और क़तादा वग़ैरह वग़ैरह रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन।

4250. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि एक जमाअ़त का अमीर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को बनाया। उनकी इमारत पर कुछ लोगों को ए'तिराज़ हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि आज तुमको इसकी इमारत पर ए'तिराज़ है तुम ही कुछ दिन पहले इसके बाप की इमारत पर ए'तिराज़ कर चुके हो। हालाँकि अल्लाह की क़सम वो इमारत के मुस्तहिक़ और अहल थे इसके अलावा वो मुझे सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ थे जिस तरह ये उसामा (रज़ि.) उनके बाद मुझे सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ हैं। (राजेअ : 373)

٤٢٥٠ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ ابْنُ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَمَّرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أُسَامَةَ عَلَى قَوْمٍ فَطَعَنُوا فِي إِمَارَتِهِ فَقَالَ: ((إِنْ تَطْعَنُوا فِي إِمَارَتِهِ فَقَدْ طَعَنْتُمْ فِي إِمَارَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلِهِ، وَايْمُ اللهِ لَقَدْ كَانَ خَلِيقًا لِلإِمَارَةِ وَإِنْ كَانَ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ وَإِنَّ هَذَا لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ بَعْدَهُ)).

[راجع: ٣٧٣]

तश्रीह : इन ता'ना करने वालों का सरदार अयाश बिन अबी रबीआ़ था वो कहने लगा कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक लड़के को मुहाजिरीन का अफ़सर बना दिया है। इस पर दूसरे लोग भी बातचीत करने लगे। ये ख़बर हज़रत उमर (रज़ि.) को पहुँची। उन्होंने उन लोगों का रद्द किया और आँहज़रत (ﷺ) को ख़बर दी। आप बहुत नाराज़ हुए और ये बयान किया गया ख़ुत्बा सुनाया। उसी को जैशे उसामा कहते हैं। मर्ज़ुल वफ़ात में आपने वसिय्यत की कि उसामा का लश्कर रवाना कर देना। उसामा (रज़ि.) के सरदार मुक़र्रर करने में ये मस्लिहत थी कि उनके वालिद उन काफ़िरों के हाथों से मारे गये थे। उसामा की दिलजोई के अलावा ये भी ख़्याल था कि वो अपने वालिद की शहादत याद करके उन काफ़िरों से दिल खोलकर लड़ेंगे। (इस हदीष़ से ये भी निकलता है कि अफ़ज़ल के होते हुए मफ़ज़ूल की सरदारी जाइज़ है क्योंकि अबूबक्र और उमर (रज़ि.) यक़ीनन उसामा (रज़ि.) से अफ़ज़ल थे।

बाब 44 : उमरह-ए-क़ज़ा का बयान

٤٤ - باب عُمْرَةِ الْقَضَاءِ

तश्रीह : इसको उमरह-ए-क़ज़ा इसलिये कहते हैं कि ये उमरह उस क़ज़ा या'नी फ़ैसले के मुताबिक़ किया गया था जो आपने क़ुरैश के कुफ़्फ़ारों के साथ किया था। उसका ये मा'नी नहीं है कि अगले उमरे की क़ज़ा का उमरह था क्योंकि अगला उमरह भी आपका पूरा हो गया था गो काफ़िरों की मुज़ाहमत की वजह से उसके अरकान बजा नहीं ला सके थे। हज़रत अनस (रज़ि.) वाली रिवायत को अ़ब्दुर्रज़ाक़ और इब्ने हब्बान ने वस्ल किया है। इस उमरह में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के सामने शे'र पढ़ते जाते थे। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा अ़ब्दुल्लाह तुम आँहज़रत (ﷺ) के सामने शे'र पढ़ते हो? आपने फ़र्माया उमर उसको शे'र पढ़ने दो ये काफ़िरों पर तीरों से भी ज़्यादा सख़्त हैं। वो अश्आ़र ये थे,

ख़ल्लो बनिल्कुफ़्फ़ारि अन सबीलिही — क़द अन्ज़लर्रहमानु फ़ी तन्ज़ीलिही
बिअन्न ख़ैरल्क़त्लि फ़ी सबीलिही — नहनु क़तल्नाकुम अ़ला तावीलिही
कमा क़तल्नाकुम अ़ला तन्ज़ीलिही — व तज्हलुल्ख़लीलु मिन ख़लीलिही

या रब्बि इन्नी मूमिनुन बिक़ौलिही

तर्जुमा : ऐ काफ़िरों की औलाद! आँहज़रत (ﷺ) का रास्ता छोड़ दो। अल्लाह ने उन पर अपना पाक कलाम उतारा है और हम तुमको उस पाक कलाम के मुवाफ़िक़ क़त्ल करते हैं। ये क़त्ल अल्लाह की राह में बहुत ही उम्दह क़त्ल है। अब उस क़त्ल की वजह से एक दोस्त अपने दोस्त से जुदा हो जाएगा। या अल्लाह! मैं नबी करीम (ﷺ) के फ़रमूदा पर ईमान लाया हूँ।

अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से उसका ज़िक्र किया है

4251. मुझसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ज़ीक़अदा में उमरह का एहराम बाँधा। मक्का वाले आपके मक्का में दाख़िल होने से मानेअ आए। आख़िर मुआहिदा इस पर हुआ कि (आइन्दा साल) मक्का में तीन दिन आप क़याम कर सकते हैं, मुआहिदा यूँ लिखा जाने लगा, ये वो मुआहिदा है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया, कुफ़्फ़ारे क़ुरैश कहने लगे कि हम ये तस्लीम नहीं करते। अगर हम आपको अल्लाह का रसूल मानते तो रोकते ही क्यों, आप तो बस मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हैं। हज़रत ने फ़र्माया कि मैं अल्लाह का रसूल भी हूँ और मै मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह भी हूँ, फिर अली (रज़ि.) से फ़र्माया कि (रसूलुल्लाह का लफ़्ज़ मिटा दो) उन्होंने कहा कि हर्गिज़ नहीं अल्लाह की क़सम! मैं ये लफ़्ज़ नहीं मिटा सकता। आँहज़रत (ﷺ) ने वो तहरीर अपने हाथ में ले ली। आप लिखना नहीं जानते थे लेकिन आपने उसके अल्फ़ाज़ इस तरह कर दिये, ये वो मुआहिदा है जो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने किया कि वो हथियार लेकर मक्का में नही आएँगे। अल्बत्ता ऐसी तलवार जो नियाम में हो साथ ला सकते हैं और ये कि अगर मक्का वालों में से कोई उनके साथ जाना चाहेगा तो वो उसे अपने साथ नहीं ले जाएँगे। लेकिन अगर उनके साथियों में से कोई मक्का में रहना चाहेगा तो वो उसे न रोकेंगे, फिर जब (आइन्दा साल) आप इस मुआहिदे के मुताबिक़ मक्का में दाख़िल हुए (और तीन दिन की) मुद्दत पूरी हो गई तो मक्का वाले अली (रज़ि.) के पास आए और कहा कि अपने साथी से कहो कि अब यहाँ से चले जाएँ, क्योंकि मुद्दत पूरी हो गई है। जब आँहज़रत (ﷺ) मक्का से निकले तो आपके

٤٢٥١- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ فِي ذِي الْقَعْدَةِ فَأَبَى أَهْلُ مَكَّةَ أَنْ يَدَعُوهُ يَدْخُلُ مَكَّةَ حَتَّى قَاضَاهُمْ عَلَى أَنْ يُقِيمَ بِهَا ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ، فَلَمَّا كَتَبُوا الْكِتَابَ كَتَبُوا هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ قَالُوا: لاَ نُقِرُّ بِهَذَا لَوْ نَعْلَمُ أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ مَا مَنَعْنَاكَ شَيْئًا وَلَكِنْ أَنْتَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ فَقَالَ: ((أَنَا رَسُولُ اللهِ، وَأَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ))، ثُمَّ قَالَ لِعَلِيٍّ ((امْحُ رَسُولَ اللهِ)) قَالَ عَلِيٌّ: لاَ وَاللهِ لاَ أَمْحُوكَ أَبَدًا فَأَخَذَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْكِتَابَ وَلَيْسَ يُحْسِنُ يَكْتُبُ فَكَتَبَ ((هَذَا مَا قَاضَى مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ لاَ يَدْخُلُ مَكَّةَ السِّلاَحَ إِلاَّ السَّيْفَ فِي الْقِرَابِ، وَأَنْ لاَ يَخْرُجَ مِنْ أَهْلِهَا بِأَحَدٍ إِنْ أَرَادَ أَنْ يَتْبَعَهُ وَأَنْ لاَ يَمْنَعَ مِنْ أَصْحَابِهِ أَحَدًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُقِيمَ بِهَا))، فَلَمَّا دَخَلَهَا وَمَضَى الأَجَلُ أَتَوْا عَلِيًّا فَقَالُوا: قُلْ لِصَاحِبِكَ اخْرُجْ عَنَّا

पीछे ह़म्ज़ा (रज़ि.) की बेटी चचा चचा कहती हुई आई। अ़ली (रज़ि.) ने उन्हें ले लिया और हाथ पकड़कर फ़ातिमा (रज़ि.) के पास लाए और कहा कि अपने चचा की बेटी को ले लो मैं उसे लेता आया हूँ। अ़ली, ज़ैद, जा'फ़र का इख़्तिलाफ़ हुआ। अ़ली (रज़ि.) ने कहा कि मैं उसे अपने साथ लाया हूँ और ये मेरे चचा की लड़की है। जा'फ़र (रज़ि.) ने कहा कि ये मेरे चचा की लड़की है और इसकी ख़ाला मेरे निकाह़ में हैं। ज़ैद (रज़ि.) ने कहा ये मेरे भाई की लड़की है। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी ख़ाला के ह़क़ में फ़ैसला किया (जो जा'फ़र रज़ि. के निकाह़ में थीं) और फ़र्माया ख़ाला माँ के दर्जे में होती है और अ़ली (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ, जा'फ़र (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम सूरत व शक्ल और आ़दात व अख़्लाक़ दोनों में मुझसे मुशाबेह हो और ज़ैद (रज़ि.) से फ़र्माया कि तुम हमारे भाई और हमारे मौला हो। अ़ली (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि ह़म्ज़ा (रज़ि.) की साहबज़ादी को आप अपने निकाह़ में ले लें लेकिन आपने फ़र्माया कि वो मेरे रज़ाई भाई की लड़की है। (राजेअ़ : 1781)

فَقَدْ مَضَى الأَجَلُ فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَتَبِعَتْهُ ابْنَةُ حَمْزَةَ تُنَادِي يَا عَمِّ يَا عَمِّ فَتَنَاوَلَهَا عَلِيٌّ فَأَخَذَ بِيَدِهَا وَقَالَ لِفَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ : دُونَكِ ابْنَةَ عَمِّكِ، حَمَلَتْهَا فَاخْتَصَمَ فِيهَا عَلِيٌّ وَزَيْدٌ وَجَعْفَرٌ قَالَ عَلِيٌّ: أَنَا أَخَذْتُهَا وَهِيَ بِنْتُ عَمِّي وَقَالَ جَعْفَرٌ: هِيَ ابْنَةُ عَمِّي وَخَالَتُهَا تَحْتِي وَقَالَ زَيْدٌ ابْنَةُ أَخِي فَقَضَى بِهَا النَّبِيُّ ﷺ لِخَالَتِهَا وَقَالَ: ((الْخَالَةُ بِمَنْزِلَةِ الأُمِّ)) وَقَالَ لِعَلِيٍّ ((أَنْتَ مِنِّي وَأَنَا مِنْكَ)) وَقَالَ لِجَعْفَرٍ: ((أَشْبَهْتَ خَلْقِي وَخُلُقِي)) وَقَالَ لِزَيْدٍ: ((أَنْتَ أَخُونَا وَمَوْلاَنَا)) وَقَالَ عَلِيٌّ أَلاَ تَتَزَوَّجُ بِنْتَ حَمْزَةَ قَالَ : ((إِنَّهَا ابْنَةُ أَخِي مِنَ الرَّضَاعَةِ)). [راجع: ۱۷۸۱]

तश्रीह : ह़म्ज़ा (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) के रज़ाई भाई और ह़क़ीक़ी चचा था, इसलिये वो आपके लिये ह़लाल न थी। रिवायत में उ़मरह क़ज़ा का ज़िक्र है बाब से यही वजहे मुताबक़त है।

इमाम अबुल वलीद बाजी ने इस ह़दीष़ का मतलब यही बयान किया है कि गो आप लिखना नहीं जानते थे मगर आपने मुअ़जिज़ा के तौर पर उस वक़्त लिख दिया। क़स्तलानी (रह) ने कहा कि ह़दीष़ का तर्जुमा यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके हाथ से काग़ज़ ले लिया और आप अच्छी तरह़ लिखना नहीं जानते थे। आपने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से फ़र्माया रसूलल्लाह का लफ़्ज़ कहाँ है? उन्होंने बतला दिया। आपने अपने हाथ से उसे मिटा दिया फिर वो काग़ज़ ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को दे दिया, उन्होंने फिर पूरा सुलह़नामा लिखा इस तक़रीर पर कोई इश्काल बाक़ी न रहेगा। ह़ाफ़िज़ ने कहा इस ह़दीष़ से ह़ज़रत जा'फ़र (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत निकली। ख़स़ाइल और सीरत में आप रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुशाबिहते ताम्मा रखते थे। ये लड़की ह़ज़रत जा'फ़र (रज़ि.) की ज़िन्दगी तक उनके पास रही, जब वो शहीद हुए तो उनकी वस़िय्यत के मुताबिक़ ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के पास रही और उन्हीं के पास जवान हुई। उस वक़्त ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से निकाह़ के लिये कहा तो आपने ये फ़र्माया जो रिवायत में मौजूद है।

4252. मुझसे मुह़म्मद बिन राफ़ेअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुरैज ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलैह़ ने बयान किया। (दूसरी सनद) और मुझसे मुह़म्मद बिन हुसैन बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर

٤٢٥٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ رَافِعٍ حَدَّثَنَا سُرَيْجٌ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ

(रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उमरह के इरादे से निकले, लेकिन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने बैतुल्लाह पहुँचने से आपको रोका। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने अपना क़ुर्बानी का जानवर हुदैबिया में ही ज़िब्ह कर दिया और वहीं सर भी मुँडवाया और उनसे मुआहिदा किया कि आप आइन्दा साल उमरह कर सकते हैं लेकिन (नियाम में तलवारों के सिवा और) कोई हथियार साथ नहीं ला सकते और जितने दिनों मक्का वाले चाहेंगे, उससे ज़्यादा आप वहाँ ठहर नहीं सकेंगे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने आइन्दा साल उमरह किया और मुआहिदे के मुताबिक़ मक्का में दाख़िल हुए। तीन दिन वहाँ मुक़ीम रहे। फिर क़ुरैश ने आपसे जाने के लिये कहा और आप मक्का से चले आए।

عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ خَرَجَ مُعْتَمِرًا فَحَالَ كُفَّارُ قُرَيْشٍ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْبَيْتِ فَنَحَرَ هَدْيَهُ وَحَلَقَ رَأْسَهُ بِالْحُدَيْبِيَةِ وَقَاضَاهُمْ عَلَى أَنْ يَعْتَمِرَ الْعَامَ الْمُقْبِلَ، وَلاَ يَحْمِلَ سِلاَحًا عَلَيْهِمْ إِلاَّ سُيُوفًا وَلاَ يُقِيمَ بِهَا إِلاَّ مَا أَحَبُّوا فَاعْتَمَرَ مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ فَدَخَلَهَا كَمَا كَانَ صَالَحَهُمْ، فَلَمَّا أَنْ أَقَامَ بِهَا ثَلاَثًا أَمَرُوهُ أَنْ يَخْرُجَ فَخَرَجَ.

तश्रीह: ईफ़ा-ए-अहद (वादा निभाने) का तक़ाज़ा भी यही था जो आँहज़रत (ﷺ) ने पूरे तौर पर अदा फ़र्माया और आप सिर्फ़ तीन दिन क़याम फ़र्माकर अपने प्यारे अक़्दस शहर मक्का को छोड़कर वापस आ गये। काश! आज भी मुसलमान अपने वा'दों की ऐसी ही पाबन्दी करें तो दुनिया में उनकी क़द्रो-मंज़िलत बहुत बढ़ सकती है।

4253. मुझसे उ़म्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल हमीद ने बयान किया, कहा उनसे मंसूर इब्ने मुअतमिर ने, उनसे मुजाहिद ने बयान किया कि मैं और उ़र्वा बिन ज़ुबैर दोनों मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए तो हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज्रे के नज़दीक बैठे हुए थे। उ़र्वा ने सवाल किया कि नबी करीम (ﷺ) ने कुल कितने उ़मरे किये थे? हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि चार। और एक उनमें से रजब में किया था। (राजेअ़: 1775)

٤٢٥٣- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: دَخَلْتُ أَنَا وَعُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ الْمَسْجِدَ فَإِذَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا جَالِسٌ إِلَى حُجْرَةِ عَائِشَةَ ثُمَّ قَالَ: كَمِ اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ؟ قَالَ أَرْبَعًا إِحْدَاهُنَّ فِي رَجَبٍ. [راجع: ١٧٧٥]

4254. फिर हमने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) के (अपने घर में) मिस्वाक करने की आवाज़ सुनी तो उ़र्वा ने उनसे पूछा, ऐ ईमान वालों की माँ! आपने सुना है या नहीं, अबू अ़ब्दुर्रहमान (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि.) कहते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने चार उ़मरे किये थे? उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने जब भी उ़मरह किया तो अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) आपके साथ थे लेकिन आपने रजब में कोई उ़मरह नहीं किया। (राजेअ़: 1776)

٤٢٥٤- ثُمَّ سَمِعْنَا اسْتِنَانَ عَائِشَةَ قَالَ عُرْوَةُ : يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ أَلاَ تَسْمَعِينَ مَا يَقُولُ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ اعْتَمَرَ أَرْبَعَ عُمَرٍ إِحْدَاهُنَّ فِي رَجَبٍ؟ فَقَالَتْ مَا اعْتَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ عُمْرَةً إِلاَّ وَهُوَ شَاهِدٌ وَمَا اعْتَمَرَ فِي رَجَبٍ قَطُّ.

[راجع: ١٧٧٦]

तश्रीह: हज़रत आइशा (रज़ि.) की ये बात सुनकर हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ख़ामोश हो गये। इससे हज़रत आइशा (रज़ि.) की बात का सहीह होना षाबित हुआ। (क़स्तलानी)

4255. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयय्ना ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उमरह किया तो हम आप पर आड़ किये हुए मुश्रिकीन के लड़कों और मुश्रिकीन से आपकी हिफ़ाज़त करते रहते थे ताकि वो आपको कोई ईज़ा न दे सकें। (राजेअ: 1600)

٤٢٥٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ سَمِعَ ابْنَ أَبِي أَوْفَى يَقُولُ : لَمَّا اعْتَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ سَتَرْنَاهُ مِنْ غِلْمَانِ الْمُشْرِكِينَ وَمِنْهُمْ أَنْ يُؤْذُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ. [راجع: ١٦٠٠]

सुलहे हुदैबिया के बाद ये उमरह दूसरे साल किया गया था, कुफ़्फ़ारे मक्का के क़ुलूब (दिल) इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम की तरफ़ से साफ़ नहीं थे, मुसलमानों को ख़तरात बराबर लाहक़ थे। ख़ास तौर पर हुज़ूर (ﷺ) की हिफ़ाज़त मुसलमानों के लिये ज़रूरी थी। रिवायत में इसी तरफ़ इशारा है। ये हदीष ग़ज़्व-ए-हुदैबिया में भी गुज़र चुकी है।

4256. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि जब नबी करीम (ﷺ) सहाबा के साथ (उमरह के लिये मक्का) तशरीफ़ लाये तो मुश्रिकीन ने कहा कि तुम्हारे यहाँ वो लोग आ रहे हैं जिन्हें यष्रिब (मदीना) के बुख़ार ने कमज़ोर कर दिया है। इसलिये हुज़ूर (ﷺ) ने हुक्म दिया कि तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में अकड़कर चला जाए और रुक्ने यमानी और हज्रे अस्वद के बीच हस्बे मा'मूल चलें। तमाम चक्करों में अकड़कर चलने का हुक्म आपने इसलिये नहीं दिया कि कहीं ये (उम्मत पर) दुश्वार न हो जाए और हम्माद बिन सलमा ने अय्यूब से इस हदीष को रिवायत करके ये इज़ाफ़ा किया है। उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आँहज़रत (ﷺ) उस साल उमरह करने आए जिसमें मुश्रिकीन ने आपको अमन दिया था तो आपने फ़र्माया कि अकड़कर चलो ताकि मुश्रिकीन तुम्हारी क़ुव्वत देखें। मुश्रिकीन जबले क़ुअकुआन की तरफ़ खड़े देख रहे थे। (राजेअ: 1602)

٤٢٥٦- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ ابْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَصْحَابُهُ فَقَالَ الْمُشْرِكُونَ: إِنَّهُ يَقْدَمُ عَلَيْكُمْ وَقَدْ وَهَنَتْهُمْ حُمَّى يَثْرِبَ وَأَمَرَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَرْمُلُوا الأَشْوَاطَ الثَّلاَثَةَ، وَأَنْ يَمْشُوا مَابَيْنَ الرُّكْنَيْنِ وَلَمْ يَمْنَعْهُ أَنْ يَأْمُرَهُمْ أَنْ يَرْمُلُوا الأَشْوَاطَ كُلَّهَا، إِلاَّ الإِبْقَاءُ عَلَيْهِمْ. وَزَادَ ابْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ لِعَامِهِ الَّذِي اسْتَأْمَنَ قَالَ: ((ارْمُلُوا)) لِيَرَى الْمُشْرِكِينَ قُوَّتَهُمْ، وَالْمُشْرِكُونَ مِنْ قِبَلِ قُعَيْقِعَانَ. [راجع: ١٦٠٢]

क़ुऐक़ेआन एक पहाड़ है वहाँ से शामी दोनों रुक्न उक़्बा के नज़र पड़ते हैं यमानी रुक्न नज़र नहीं आते।

4257. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उनसे

٤٢٥٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ

सुफ़यान बिन ड़ययना ने, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अ़ता इब्ने अबी रिबाह ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने बैतुल्लाह के त़वाफ़ में रमल और स़फ़ा और मरवा के बीच दौड़, मुश्रिकीन के सामने अपनी त़ाक़त दिखाने के लिये की थी।

عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عَطَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّمَا سَعَى النَّبِيُّ ﷺ بِالْبَيْتِ وَبَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ لِيُرِيَ الْمُشْرِكِينَ قُوَّتَهُ.[راجع: ١٤٤٩]

मूँढे हिलाते हुए अकड़कर चलना इसको रमल कहते हैं जो अब भी मस्नून है।

4258. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इ़क्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने उम्मुल मोमिनीन मैमूना (रज़ि.) से निकाह़ किया तो आप मुहरिम थे और जब उनसे ख़ल्वत की तो आप एह़राम खोल चुके थे। मैमूना (रज़ि.) का इंतिक़ाल भी इसी मक़ामे स़रिफ़ में हुआ। (राजेअ़ : 1837)

٤٢٥٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ قَالَ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُما قَالَ: تَزَوَّجَ النَّبِيُّ ﷺ مَيْمُونَةَ وَهُوَ مُحْرِمٌ وَبَنَى بِهَا وَهُوَ حَلاَلٌ وَمَاتَتْ بِسَرِفَ.

[راجع: ١٨٣٧]

4259. इमाम बुख़ारी (रह) ने और इब्ने इस्ह़ाक़ ने अपनी रिवायत में ये इज़ाफ़ा किया है कि मुझसे इब्ने अबी नुजैह़ .... और अबान बिन स़ालेह़ ने बयान किया, उनसे अ़ता और मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) से उ़मरह क़ज़ा में निकाह़ किया था।

٤٢٥٩- وَزَادَ ابْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي نَجِيحٍ، وَأَبَانُ بْنُ صَالِحٍ عَنْ عَطَاءٍ وَمُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: تَزَوَّجَ النَّبِيُّ ﷺ مَيْمُونَةَ فِي عُمْرَةِ الْقَضَاءِ.

[راجع: ١٨٣٧]

तशरीह : ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ख़ाला थीं जिनकी बहन उम्मुल फ़ज़ल ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) की बीवी थीं। ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने ही मैमूना (रज़ि.) का निकाह़ आँह़ज़रत (ﷺ) से किया। सरिफ़ मक्का से दस मील की दूरी पर एक मौज़अ़ है। सन 51 हिजरी में ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) ने उसी जगह इंतिक़ाल किया। ऊपर बयान की गई अह़ादीष़ में किसी न किसी पहलू से उ़मरह क़ज़ा का ज़िक्र हुआ है। बाब से यही वजहे मुत़ाबक़त है। रमल वग़ैरह वक़्ती आ'माल थे मगर बाद में उनको बत़ौरे सुन्नत बरक़रार रखा गया ताकि उस (वक़्त के ह़ालात मुसलमानों के ज़हन में ताज़ा रहें और इस्लाम के ग़ालिब आने पर वो अल्लाह का शुक्र अदा करते रहें । उ़मरह क़ज़ा का बयान पीछे मुफ़स्स़ल गुज़र चुका है।

बाब 45 : ग़ज़्व-ए-मूता का बयान जो सरज़मीने शाम में सन 8 हिजरी में हुआ था

٤٥- باب غَزْوَةِ مُوتَةَ مِنْ أَرْضِ الشَّأْمِ

मौता बैतुल मक़्दिस से दो मंज़िल के फ़ासले पर बल्क़ाअ के क़रीब एक जगह का नाम था। यहाँ शाम में शुरह़बील इब्ने अ़म्र ग़स्सानी क़ैसर के ह़ाकिम ने रसूले करीम (ﷺ) के एक क़ासिद ह़रत बिन उ़मैर (रज़ि.) नामी को क़त्ल कर दिया था। ये सन 8 हिजरी माह जमादिल अव्वल का वाक़िया है कि रसूले करीम (ﷺ) ने उस पर चढ़ाई के लिये फ़ौज रवाना की जो तीन हज़ार मुसलमानों पर मुश्तमिल (आधारित) थी। (फ़त्ह़ुल बारी)

4260. हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे

٤٢٦٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ

अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन हारिष़ अंसारी ने, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने बयान किया और कहा कि मुझको नाफ़ेअ़ ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि इस ग़ज़्व-ए-मूता में ह़ज़रत जा'फ़र त़य्यार (रज़ि.) की लाश पर खड़े होकर मैंने शुमार किया तो नेज़ों और तलवारों के पचास ज़ख़्म उनके जिस्म पर थे लेकिन पीछे या'नी पीठ पर एक ज़ख़्म भी नहीं था। (दीगर मक़ाम : 4261)

عَنْ عَمْرٍو، عَنِ ابْنِ أَبِي هِلاَلٍ قَالَ: وَأَخْبَرَنِي نَافِعٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ وَقَفَ عَلَى جَعْفَرٍ يَوْمَئِذٍ، وَهُوَ قَتِيلٌ فَعَدَدْتُ بِهِ خَمْسِينَ بَيْنَ طَعْنَةٍ وَضَرْبَةٍ لَيْسَ مِنْهَا شَيْءٌ فِي دُبُرِهِ يَعْنِي فِي ظَهْرِهِ.

[طرفه في: ٤٢٦١].

तश्रीह़ : ह़ज़रत जा'फ़र त़य्यार (रज़ि.) इस्लाम के उन बहादुरों में से हैं जिन पर उम्मते मुस्लिमा हमेशा नाज़ा रहेगी। पुश्त पर किसी ज़ख़्म का न होना इसका मत़लब ये कि जंग में वो आख़िर तक सीना सिपर रहे, भागकर पीठ दिखलाने का दिल में ख़्याल तक भी नहीं आया। आप अबू त़ालिब के बेटे हैं, शहादत के बाद अल्लाह ने उनको जन्नत में दो बाज़ू अ़त़ा किये जिनसे ये जन्नत में आज़ादी के साथ उड़ते फिरते हैं, इसलिये उनका लक़ब त़य्यार हुआ। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु। मूता मुल्के शाम में एक जगह का नाम था।

4261. हमें अह़मद बिन अबीबक्र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-मूता के लश्कर का अमीर ज़ैद बिन ह़ारिष़ा (रज़ि.) को बनाया था। हुज़ूर (ﷺ) ने ये भी फ़र्मा दिया था कि अगर ज़ैद (रज़ि.) शहीद हो जाएँ तो जा'फ़र (रज़ि.) अमीर हों और अगर जा'फ़र (रज़ि.) शहीद हो जाएँ तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (रज़ि.) अमीर हों। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि इस ग़ज़्वे में मैं भी शरीक था। बाद में जब हमने जा'फ़र को तलाश किया तो उनकी लाश हमें शुह्दा म मिली और उनके जिस्म पर कुछ ऊपर नब्बे ज़ख़्म नेज़ों और तीरों के थे।

(राजेअ़ : 4260)

٤٢٦١- أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، حَدَّثَنَا مُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُما قَالَ: أَمَّرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ مُوتَةَ زَيْدَ بْنَ حَارِثَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنْ قُتِلَ زَيْدٌ فَجَعْفَرٌ، وَإِنْ قُتِلَ جَعْفَرٌ فَعَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ)) قَالَ عَبْدُ اللهِ : كُنْتُ فِيهِمْ فِي تِلْكَ الْغَزْوَةِ فَالْتَمَسْنَا جَعْفَرَ بْنَ أَبِي طَالِبٍ فَوَجَدْنَاهُ فِي الْقَتْلَى وَوَجَدْنَا مَا فِي جَسَدِهِ بِضْعًا وَتِسْعِينَ مِنْ طَعْنَةٍ وَرَمْيَةٍ.

[راجع: ٤٢٦٠]

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ से स़ाफ़ ज़ाहिर हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) अगर ग़ैबदाँ होते तो हर्गिज़ ये नुक़्सान न होने देते और पहले ही शुह्दा-ए-किराम को अमीर बनने से रोक देते मगर ग़ैबदाँ सिर्फ़ अल्लाह ही है।

4262. हमसे अह़मद बिन वाक़िद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ैद, जा'फ़र और

٤٢٦٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ وَاقِدٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ

ﷺ نَعَى زَيْدًا وَجَعْفَرًا وَابْنَ رَوَاحَةَ لِلنَّاسِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَهُمْ خَبَرُهُمْ فَقَالَ: أَخَذَ الرَّايَةَ زَيْدٌ، فَأُصِيبَ ثُمَّ أَخَذَ جَعْفَرٌ فَأُصِيبَ، ثُمَّ أَخَذَ ابْنُ رَوَاحَةَ فَأُصِيبَ، وَعَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ حَتَّى أَخَذَ الرَّايَةَ سَيْفٌ مِنْ سُيُوفِ اللهِ حَتَّى فَتَحَ اللهُ عَلَيْهِمْ.

[راجع: ١٢٤٦]

अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) की शहादत की ख़बर उस वक़्त सहाबा (रज़ि.) को दे दी थी जब अभी उनके बारे में कोई ख़बर नहीं आई थी। आप फ़र्माते जा रहे थे कि अब ज़ैद (रज़ि.) झण्डा उठाए हुए हैं, अब वो शहीद कर दिये गये, अब जा'फ़र (रज़ि.) ने झण्डा उठा लिया, वो भी शहीद कर दिये गये। अब इब्ने रवाहा (रज़ि.) ने झण्डा उठा लिया, वो भी शहीद कर दिये गये। आँहज़रत (ﷺ) की आँखों से आंसू जारी थे। आख़िर अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने झण्डा अपने हाथ में ले लिया और अल्लाह ने उनके हाथ पर फ़तह इनायत फ़र्माई। (राजेअ : 1246)

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) इस ग़ज़्वे में शरीक न थे। आप ये सब ख़बरें मदीना में बैठकर सहाबा (रज़ि.) को दे रहे थे और आपको बज़रिये वह्य ये सारे हालात मा'लूम हो गये थे। आप ग़ैबदाँ नहीं थे। वाक़िया की तफ़्सील ये है कि हज़रत जा'फ़र (ﷺ) उस जंग में दाएँ हाथ में झण्डा थामे हुए थे। दुश्मनों ने वो हाथ काट डाला तो उन्होंने बाएँ हाथ में झण्डा ले लिया, दुश्मनों ने उसको भी काटा डाला, वो शहीद हो गये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने उनको जन्नत में दो बाज़ू परिन्दे की तरह के बख़्श दिये हैं, वो उनसे जन्नत में जहाँ चाहें उड़ते फिरते हैं। लफ़्ज़ तय्यार के मा'नी उड़ने वाले के हैं। इसी से आपको जा'फ़र तय्यार (रज़ि.) के नाम से पुकारा गया, रज़ियल्लाहु व अरज़ाहु। हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) के दो बेटे अब्दुल्लाह व मुहम्मद नामी थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उन पर बड़ी शफ़क़त फ़र्माई। मूसा बिन उक़्बा ने मग़ाज़ी में ज़िक्र किया है कि यअ़ला बिन उमय्या अहले मूता की ख़बर लेकर ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि अगर तुम चाहो तो मूता वालों का हाल मुझको सुनाओ वरना में ख़ुद ही तुमको उनका पूरा हाल सुना देता हूँ। (जो अल्लाह ने तुम्हारे आने से पहले मुझको वह्य के ज़रिये बतला दिया है)। चुनाँचे ख़ुद आपने उनका पूरा हाल बयान फर्मा दिया जिसे सुनकर यअ़ला बिन उमय्या कहने लगे कि क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको नबी बनाकर भेजा है कि आपने अहले मूता के हालात सुनाने में एक हर्फ़ की भी कमी नहीं छोड़ी है। आपका बयान हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह है। (क़स्तलानी)

٤٢٦٣ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَتْنِي عَمْرَةُ قَالَتْ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا تَقُولُ: لَمَّا جَاءَ قَتْلُ ابْنُ حَارِثَةَ وَجَعْفَرِ بْنِ أَبِي طَالِبٍ وَعَبْدِ اللهِ بْنِ رَوَاحَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ جَلَسَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُعْرَفُ فِيهِ الْحُزْنُ قَالَتْ عَائِشَةُ: وَأَنَا أَطَّلِعُ مِنْ صَائِرِ الْبَابِ تَعْنِي مِنْ شَقِّ الْبَابِ فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: أَيْ رَسُولَ اللهِ إِنَّ نِسَاءَ

4263. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ब्दुल मजीद ने बयान किया, कहा कि मैंने यह्या बिन सईद से सुना, कहा कि मुझे अ़म्रा बिन्ते अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया ज़ैद बिन हारिषा, जअ़फ़र बिन अबी तालिब और अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) की शहादत की ख़बर आई थी, आँहज़रत (ﷺ) बैठे हुए थे और आपके चेहरे से ग़म ज़ाहिर हो रहा था। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं दरवाज़े की दरार से झांककर देख रही थी। इतने में एक आदमी ने आकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! जा'फ़र (रज़ि.) के घर की औरतें चिल्ला कर रो रही हैं। आँहुज़ूर (ﷺ) ने हुक्म दिया कि उन्हें रोक दो। बयान

جَعْفَرٍ قَالَ: وَذَكَرَ بُكَاءَهُنَّ فَأَمَرَهُ أَنْ يَنْهَاهُنَّ قَالَ: فَذَهَبَ الرَّجُلُ ثُمَّ أَتَى فَقَالَ: قَدْ نَهَيْتُهُنَّ وَذَكَرَ أَنَّهُ لَمْ يُطِعْنَهُ قَالَ: فَأَمَرَ أَيْضًا فَذَهَبَ ثُمَّ أَتَى فَقَالَ: وَاللَّهِ لَقَدْ غَلَبْنَنَا فَزَعَمَتْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((فَاحْثُ فِي أَفْوَاهِهِنَّ مِنَ التُّرَابِ)) قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ أَرْغَمَ اللَّهُ أَنْفَكَ فَوَاللَّهِ مَا أَنْتَ تَفْعَلُ وَمَا تَرَكْتَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مِنَ الْعَنَاءِ. [راجع: ١٢٩٩]

किया कि वो साहब गये और फिर वापस आकर कहा कि मैंने उन्हें रोका और ये भी कह दिया कि उन्होंने उसकी बात नहीं मानी, फिर उसने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने फिर मना करने के लिये फ़र्माया। वो साहब फिर जाकर वापस आए और क़सम अल्लाह की वो तो हम पर ग़ालिब आ गई हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) बयान करती थीं कि हुज़ूर (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि फिर उनके चेहरे में मिट्टी झोंक दो। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बयान किया, मैंने कहा, अल्लाह तेरी नाक ग़ुबार आलूद करे न तो तू औरतों को रोक सका न तूने रसूलुल्लाह (ﷺ) को तकलीफ़ देना ही छोड़ा। (नौहा करने की इंतिहाई बुराई इस हदीष़ से ष़ाबित हुई)।

(राजेअ : 1299)

٤٢٦٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ عَامِرٍ قَالَ : كَانَ ابْنُ عُمَرَ إِذَا حَيَّا ابْنَ جَعْفَرٍ قَالَ : السَّلاَمُ عَلَيْكَ يَا ابْنَ ذِي الْجَنَاحَيْنِ. [راجع: ٣٧٠٩]

4264. मुझसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे उमर बिन अली ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उनसे आमिर शअबी ने बयान किया कि हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) जब जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) के बेटे के लिये सलाम भेजते तो अस्सलामुअलैका या इब्ने ज़िल जनाहैन कहते। (राजेअ : 3809)

ऐ दो परों वाले के बेटे! तुम पर सलाम हो जियो, हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) के बेटे का नाम अब्दुल्लाह था।

तश्रीह : हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़र्माते हैं, फ़ल्मुरादु बिल्जनाहैनि सिफ़तुन मलकिय्यतुन व क़ुव्वतुन रूहानिय्यतुन उअतीहा जा'फ़र या'नी सुहैली ने कहा कि जनाहैन से मुराद वो सिफ़ाते मल्की व क़ुव्वते रूहानी है जो हज़रत जा'फ़र (रज़ि.) को दी गई। मगर व इज़ा लम यष्बुत ख़बरुन फी बयानि कैफियतिहा फ़नूमिनु बिहा मिन ग़ैरि बहष़िन अन हक़ीक़तिहा (फ़त्हुल्बारी) या'नी जब उन परों की कैफ़ियत के बारे में कोई ख़बर ष़ाबित नहीं तो हम उनकी हक़ीक़त की बहष़ में नहीं पड़ते बल्कि जैसा हदीष़ में वारिद हुआ, उस पर ईमान लाते हैं।

٤٢٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ يَقُولُ: لَقَدِ انْقَطَعَتْ فِي يَدِي يَوْمَ مُوتَةَ تِسْعَةُ أَسْيَافٍ فَمَا بَقِيَ فِي يَدِي إِلاَّ صَفِيحَةٌ يَمَانِيَةٌ.

[طرفه في : ٤٢٦٦].

4265. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया कि मैंने ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-मूता में मेरे हाथ से नौ तलवारें टूटी थीं। सिर्फ़ एक यमन का बना हुआ चौड़े फल का तैग़ा बाक़ी रह गया था। (दीगर मक़ाम : 4266)

٤٢٦٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ قَالَ: حَدَّثَنِي قَيْسٌ،

4266. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी

ख़ालिद ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, कहा कि मैं ने ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ग़ज़्व-ए-मूता में मेरे हाथ से नौ तलवारें टूटी थीं, सिर्फ़ एक यमनी तैग़ा मेरे हाथ में बाक़ी रह गया था। (राजेअ : 4265)

قَالَ: سَمِعْتُ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ يَقُولُ : لَقَدْ دُقَّ فِي يَدِي يَوْمَ مُوتَةَ تِسْعَةُ أَسْيَافٍ وَصَبَرَتْ فِي يَدِي صَفِيحَةٌ لِي يَمَانِيَةٌ. [راجع: ٤٢٦٥]

ये हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) की कमाले बहादुरी दिलेरी और जुर्अत की दलील है।

4267. मुझसे इमरान बिन मैसरह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे आमिर शअबी ने और उनसे नोअमान बिन बशीर ने कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) पर (एक मर्तबा किसी मर्ज़ में) बेहोशी तारी हुई तो उनकी बहन अम्रा वालिदा नोअमान बिन बशीर ये समझकर कि कोई हादषा पेश आ गया, अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) के लिये पुकारकर रोने लगीं। हाय मेरे भाई हाय, मेरे ऐसे और वैसे। उनके महासिन इस तरह एक एक करके गिनाने लगीं लेकिन जब अब्दुल्लाह (रज़ि.) को होश आया तो उन्होंने कहा कि तुम जब मेरी किसी ख़ूबी का बयान करती थीं तो मुझसे पूछा जाता था कि क्या तुम वाक़ई ऐसे ही थे। (दीगर मक़ाम : 4268)

٤٢٦٧- حَدَّثَنِي عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ عَامِرٍ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أُغْمِيَ عَلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ رَوَاحَةَ، فَجَعَلَتْ أُخْتُهُ عَمْرَةُ تَبْكِي وَاجَبَلاَهُ وَا كَذَا وَا كَذَا، تُعَدِّدُ عَلَيْهِ فَقَالَ حِينَ أَفَاقَ: مَا قُلْتِ شَيْئًا إِلاَّ قِيلَ لِي آنْتَ كَذَلِكَ. [طرفه في :٤٢٦٨].

एक रिवायत में है कि फ़रिश्ते लोहे का गुर्ज़ उठाते और अब्दुल्लाह (रज़ि.) से पूछते क्या तू ऐसा ही है। मा'लूम हुआ कि कुछ बीमारियों में मरने से पहले ही फ़रिश्ते नज़र पड़ जाया करते हैं गो आदमी न मरे। चुनाँचे अब्दुल्लाह (रज़ि.) उस बीमारी से अच्छे हो गये थे यही अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) हैं जो ग़ज़्व-ए-मूता में शहीद हुए। इस मुनासबत से इस हदीष को इस बाब के ज़ेल में लाया गया है। मज़ीद तफ़्सीलात हदीषे ज़ेल में आ रही है।

4268. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे अब्षर बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे हुसैन ने, उनसे शअबी ने और उनसे नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) ने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) को बेहोशी हो गई थी, फिर ऊपर की हदीष की तरह बयान किया। चुनाँचे जब (ग़ज़्व-ए-मूता) में वो शहीद हुए तो उनकी बहन उन पर नहीं रोईं। (राजेअ : 4267)

٤٢٦٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْثَرٌ عَنْ حُصَيْنٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: أُغْمِيَ عَلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ رَوَاحَةَ بِهَذَا فَلَمَّا مَاتَ لَمْ تَبْكِ عَلَيْهِ. [راجع: ٤٢٦٧]

उनको मा'लूम हो गया था कि मय्यत पर नौहा करना ख़ुद मय्यत के लिये बाइषे अज़ाब है। इसलिये उन्होंने इस हरकत से परहेज़ इख़्तियार किया, ख़ाली आंसू अगर जारी हों तो ये मना नहीं है, चिल्लाकर रोना और मय्यत के औसाफ़ बयान करना मना है।

बाब 46 : नबी करीम (ﷺ) का उसामा बिन ज़ैद

٤٦- باب بَعْثِ النَّبِيِّ ﷺ أُسَامَةَ بْنَ

(रज़ि.) को हुरक़ात के मुक़ाबला पर भेजना

زَيْدٍ إِلَى الْحُرَقَاتِ مِنْ جُهَيْنَةَ

लफ़्ज़ हुरक़ात हरक़ति की तरफ़ मन्सूब है। उसका नाम जुहैश बिन आमिर बिन ष़अलबा बिन मौदआ बिन जुहैना था, उसने एक लड़ाई में एक क़ौम को आग में जला दिया था। इसलिये हुरक़ा नाम से मौसूम हुआ।

4269. मुझसे अम्र बिन मुहम्मद बग़दादी ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उन्हें हुसैन ने ख़बर दी, उन्हें अबू ज़िब्यान हुसैन बिन जुन्दब ने, कहा कि मैंने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़बीला हरक़ा की तरफ़ भेजा। हमने सुबह के वक़्त उन पर हमला किया और उन्हें शिकस्त दे दी, फिर मैं और एक और अंसारी सहाबी उस क़बीला के एक शख़्स (मिरदास बिन अम्र नामी) से भिड़ गये। जब हमने उस पर ग़लबा पा लिया तो वो ला इलाहा इल्लल्लाहु कहने लगा। अंसारी तो फ़ौरन ही रुक गया लेकिन मैंने उसे अपने बरछे से क़त्ल कर दिया। जब हम लौटे तो आँहज़रत (ﷺ) को भी इसकी ख़बर हुई। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त किया। उसामा (रज़ि.)! क्या उसके ला इलाहा इल्लल्लाह कहने के बावजूद तुमने उसे क़त्ल कर दिया? मैंने अर्ज किया कि वो क़त्ल से बचना चाहते थे (उसने कलिमा दिल से नहीं पढ़ा था) आप बार बार यही फ़र्माते रहे (क्या तुमने उसके ला इलाहा इल्लल्लाह कहने पर भी उसे क़त्ल कर दिया) कि मेरे दिल में ये आरज़ू पैदा हुई कि काश मैं आज से पहले इस्लाम न लाता। (दीगर मक़ाम : 6872)

٤٢٦٩ - حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا حُصَيْنٌ أَخْبَرَنَا أَبُو ظَبْيَانَ قَالَ: سَمِعْتُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى الْحُرَقَةِ فَصَبَّحْنَا الْقَوْمَ فَهَزَمْنَاهُمْ، وَلَحِقْتُ أَنَا وَرَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ رَجُلاً مِنْهُمْ، فَلَمَّا غَشِينَاهُ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ فَكَفَّ الأَنْصَارِيُّ، فَطَعَنْتُهُ بِرُمْحِي حَتَّى قَتَلْتُهُ، فَلَمَّا قَدِمْنَا بَلَغَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((يَا أُسَامَةُ أَقَتَلْتَهُ بَعْدَ مَا قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ؟)) قُلْتُ كَانَ مُتَعَوِّذًا فَمَا زَالَ يُكَرِّرُهَا حَتَّى تَمَنَّيْتُ أَنِّي لَمْ أَكُنْ أَسْلَمْتُ قَبْلَ ذَلِكَ الْيَوْمِ.

[طرفه في : ٦٨٧٢].

तश्रीह : कलिमा पढ़ने के बावजूद उसे क़त्ल करना हज़रत उसामा (रज़ि.) का काम था जिस पर आँहज़रत (ﷺ) को इंतिहाई रंज हुआ और आपने बार बार ये कलाम दोहराकर ख़फ़्गी का इज़्हार फ़र्माया। उसामा (रज़ि.) के दिल में तमन्ना पैदा हुई कि काश मैं आज से पहले मुसलमान न होता और मुझसे ये ग़लती सरज़द न होती और आज जब इस्लाम लाता तो मेरे पिछले सारे गुनाह मुआफ़ हो चुके होते क्योंकि इस्लाम कुफ़्र की ज़िन्दगी के तमाम गुनाहों को मुआफ़ करा देता है। इसीलिये किसी कलिमा-गो की तक्फ़ीर करना वो बदतरीन हरकत है जिसने मुसलमानों की मिल्ली ताक़त को पाश पाश करके रख दिया है। मज़ीद अफ़सोस उन उलमा पर है जो ज़रा ज़रा सी बातों पर तीरे तक्फ़ीर चलाते रहते हैं। ऐसे उलमा को भी सोचना चाहिये कि वो कलिमा पढ़ने वालों को काफ़िर बना बनाकर अल्लाह को क्या चेहरा दिखलाएँगे। हाँ अगर कोई कलिमा गो अफ़आले कुफ़्र का इर्तिकाब करे और तौबा न करे तो उन अफ़आले कुफ़्रिया में उसकी तरफ़ लफ़्ज़े कुफ़्र की निस्बत की जा सकती है। जो कुफ़्र दूना कुफ़्र के तहत है। बहरहाला इफ़रात तफ़रीत से बचना लाज़िम है। **ला नुकफ़्फ़िरू अहलल् क़िब्लति** तमाम मसालिके अहले सुन्नत का मुत्तफ़क़ा उसूल है।

4270. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने बयान किया और उन्होंने सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) से

٤٢٧٠ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَلَمَةَ بْنَ الأَكْوَعِ يَقُولُ: غَزَوْتُ

सुना, वो बयान करते थे कि मैं नबी करीम (ﷺ) के हमराह सात ग़ज़्वों में शरीक रहा हूँ और नौ ऐसे लश्करों में शरीक हुआ हूँ जो आपने रवाना किये थे। (मगर आप ख़ुद उनमें नहीं गये) कभी हम पर अबूबक्र (रजि) अमीर हुए और किसी फ़ौज के अमीर उसामा (रज़ि.) हुए। (दीगर मक़ाम : 4271, 4272, 4273)

مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سَبْعَ غَزَوَاتٍ وَخَرَجْتُ فِيمَا يَبْعَثُ مِنَ الْبُعُوثِ تِسْعَ غَزَوَاتٍ مَرَّةً عَلَيْنَا أَبُو بَكْرٍ وَمَرَّةً عَلَيْنَا أُسَامَةُ.

[أطرافه في: ٤٢٧١، ٤٢٧٢، ٤٢٧٣].

4271. और उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने (जो इमाम बुख़ारी (रह) के शैख़ हैं) बयान किया कहा कि हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उ़बैद ने बयान किया और उन्होंने सलमा बिन अक़्वा (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ सात ग़ज़्वों में शरीक रहा हूँ और नौ ऐसी लड़ाइयों में गया हूँ जिनको ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने भेजा था। कभी हमारे अमीर अबूबक्र होते और कभी उसामा (रज़ि.) होते। (राजेअ़ : 4270)

٤٢٧١ - وَقَالَ عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَلَمَةَ يَقُولُ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ سَبْعَ غَزَوَاتٍ، وَخَرَجْتُ فِيمَا يَبْعَثُ مِنَ الْبَعْثِ تِسْعَ غَزَوَاتٍ مَرَّةً عَلَيْنَا أَبُوبَكْرٍ وَمَرَّةً أُسَامَةُ. [راجع: ٤٢٧٠]

तश्रीह: रावी का मक़्सद ये है कि तमाम ग़ज़्वात में रसूले करीम (ﷺ) ने कभी अमीरे लश्कर ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) जैसे अकाबिर को बनाया और कभी उसामा (रज़ि.) जैसे नौजवानों को, मगर हम लोगों ने कभी इस बारे में अमीर लश्कर के बड़े छोटे होने का ख़्याल नहीं किया बल्कि फ़र्माने रिसालत के सामने सरे तस्लीम ख़म कर दिया। आपने बार बार फ़र्मा दिया था कि अगर कोई ह़ब्शी गुलाम भी तुम पर अमीर बना दिया जाए तो उसकी इताअ़त तुम्हारा फ़र्ज़ है।

4272. हमसे अबू आ़सिम अज़् ज़िह़ाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अबी उ़बैद ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अक़्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ सात ग़ज़्वों में शरीक रहा हूँ और मैंने इब्ने ह़ारिष़ा (या'नी उसामा रजि) के साथ भी गज़्वा किया है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उन्हें हम पर अमीर बनाया था। (राजेअ़ : 4270)

٤٢٧٢ - حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ تِسْعَ غَزَوَاتٍ، وَغَزَوْتُ مَعَ ابْنِ حَارِثَةَ اسْتَعْمَلَهُ عَلَيْنَا.

[راجع: ٤٢٧٠]

तश्रीह: ये इस रिवायत के खिलाफ़ नहीं जिसमें आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ नौ जिहाद मज़्कूर हैं । शायद सलमा ने वादी अल कुरा और उ़मरह क़ज़ा का सफ़र भी जिहाद समझ लिया इस तरह नौ हो गये। क़स्तलानी ने कहा ये ह़दीष़ इमाम बुख़ारी (रह) की पन्द्रहवीं ष़लाष़ी ह़दीष़ है। ह़ारिष़ा ह़ज़रत उसामा के दादा का नाम है। (वह़ीदी)

4273. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन मुसअ़दह ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उ़बैद ने और उनसे सलमा बिन अक़्वा (रज़ि.) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के साथ सात ग़ज़्वे किये । इस सिलसिले में उन्होंने ग़ज़्व-ए-ख़ैबर, हुदैबिया, ग़ज़्व-ए-हुनैन और ग़ज़्व-ए-ज़ातुल क़र्द का ज़िक्र किया। यज़ीद ने कहा कि बाक़ी ग़ज़्वों

٤٢٧٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ مَسْعَدَةَ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ، قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ تِسْعَ غَزَوَاتٍ، فَذَكَرَ خَيْبَرَ وَالْحُدَيْبِيَةَ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ وَيَوْمَ الْقَرَدِ،

के नाम मैं भूल गया।

قَالَ يَزِيدُ: وَنَسِيتُ بَقِيَّتَهُمْ.

(राजेअ : 4270)

[راجع: ٤٢٧٠]

इन तमाम ग़ज़्वात का बयान इसी पारे में जगह जगह मज़्कूर हुआ है। ज़ातुल क़र्द का वाक़िया पारे के शुरू में मुलाहिज़ा किया जाए। ये उन डाकुओं के ख़िलाफ़ ग़ज़्वा था जो आँहज़रत (ﷺ) की बीस अदद दूध देने वाली ऊँटनियों को भगाकर ले जा रहे थे। जंगे ख़ैबर से चन्द रोज़ बेशतर ये ह़ादसा पेश आया था। मज़ीद जिन ग़ज़्वात के नाम भूल गये, उनसे मुराद ग़ज़्व-ए-फ़तहे मक्का, ग़ज़्व-ए-ताइफ़ और ग़ज़्व-ए-तबूक़ हैं। (फ़त्ह)

बाब 47 : ग़ज़्व-ए-फ़तहे मक्का का बयान

٤٧- باب غَزْوَةِ الْفَتْحِ

इसका सबब ये हुआ कि सुलहे हुदैबिया की एक शर्त ये थी कि फ़रीक़ेन के हलीफ़ क़बीले भी आपस में जंग न करेंगे। बनू बक्र कुरैश के हलीफ़ थे और बनू ख़ुज़ाआ रसूले करीम (ﷺ) के मगर बनू बक्र ने अचानक बनू ख़ुज़ाआ पर हमला कर दिया और कुरैश ने अपने हलीफ़ बनू बक्र का साथ दिया। इस पर बनू ख़ुज़ाआ ने दरबारे रिसालत में जाकर फ़रियाद की। उसके नतीजे में ग़ज़्व-ए-फ़तहे मक्का वजूद में आया। **कान सबबु ज़ालिक अन्नकुरैशन नक़ज़ुल्अहदल्लज़ी व क़अ बिल्हुदैबियति फफहिम ज़ालिकन्नबिय्यु (ﷺ) फ़ग़ज़ाहुम.** (फ़त्ह)

और जो ख़त्त हातिब बिन अबी बल्तआ ने अहले मक्का को नबी करीम (ﷺ) के ग़ज़्वा के इरादे से आगाह करने के लिये भेजा था उसका भी बयान।

وَمَا بَعَثَ بِهِ حَاطِبُ بْنُ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى أَهْلِ مَكَّةَ يُخْبِرُهُمْ بِغَزْوِ النَّبِيِّ ﷺ

4273. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, उन्हें हसन बिन मुहम्मद बिन अ़ली ने ख़बर दी और उन्होंने उ़बैदुल्लाह बिन राफ़ेअ से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मुझे और ज़ुबैर और मिक़्दाद (रज़ि.) को रसूले करीम (ﷺ) ने रवाना किया और हिदायत की कि (मक्का के रास्ते पर) चले जाना जब तुम मक़ामे रौज़-ए-ख़ाख़ पर पहुँचो तो वहाँ तुम्हें हौदज में सवार एक औरत मिलेगी। वो एक ख़त्त लिये हुए है, तुम उससे वो ले लेना। उन्होंने कहा कि हम रवाना हुए। हमारे घोड़े हमें तेज़ी के साथ लिये जा रहे थे। जब हम रौज़-ए-ख़ाख़ पर पहुँचे तो वाक़ई वहाँ हमें एक औरत होदज में सवार मिली (जिसका नाम सारा या कनूद है) हमने उससे कहा कि ख़त्त निकाल। वो कहने लगी कि मेरे पास कोई ख़त्त नहीं है लेकिन जब हमने उससे ये कहा कि अगर तू ने ख़ुद से ख़त्त निकालकर हमें नहीं दिया तो हम तेरा कपड़ा उतारकर (तलाशी लेंगे) तब उसने अपनी चोटी में से वो ख़त्त निकाला। हम वो ख़त्त लेकर नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में वापस हुए। उसमें ये लिखा था कि हातिब बिन अबी बल्तआ (रज़ि.) की तरफ़ से चन्द

٤٢٧٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَنَّهُ سَمِعَ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ أَبِي رَافِعٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَا وَالزُّبَيْرَ وَالْمِقْدَادَ فَقَالَ: انْطَلِقُوا حَتَّى تَأْتُوا رَوْضَةَ خَاخٍ، فَإِنَّ بِهَا ظَعِينَةً مَعَهَا كِتَابٌ فَخُذُوا مِنْهَا، قَالَ: فَانْطَلَقْنَا تَعَادَى بِنَا خَيْلُنَا حَتَّى أَتَيْنَا الرَّوْضَةَ فَإِذَا نَحْنُ بِالظَّعِينَةِ قُلْنَا لَهَا أَخْرِجِي الْكِتَابَ قَالَتْ : مَا مَعِي كِتَابٌ فَقُلْنَا لَتُخْرِجِنَّ الْكِتَابَ أَوْ لَنُلْقِيَنَّ الثِّيَابَ، قَالَ: فَأَخْرَجَتْهُ مِنْ عِقَاصِهَا، فَأَتَيْنَا بِهِ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، فَإِذَا فِيهِ مِنْ حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى نَاسٍ

بِمَكَّةَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ يُخْبِرُهُمْ بِبَعْضِ أَمْرِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((يَا حَاطِبُ مَا هَذَا؟)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لاَ تَعْجَلْ عَلَيَّ إِنِّي كُنْتُ امْرَأً مُلْصَقًا فِي قُرَيْشٍ يَقُولُ : كُنْتُ حَلِيفًا وَلَمْ أَكُنْ مِنْ أَنْفُسِهَا، وَكَانَ مَنْ مَعَكَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ مَنْ لَهُمْ قَرَابَاتٌ يَحْمُونَ أَهْلِيهِمْ وَأَمْوَالَهُمْ، فَأَحْبَبْتُ إِذْ فَاتَنِي ذَلِكَ مِنَ النَّسَبِ فِيهِمْ أَنْ أَتَّخِذَ عِنْدَهُمْ يَدًا يَحْمُونَ قَرَابَتِي وَلَمْ أَفْعَلْهُ ارْتِدَادًا عَنْ دِينِي وَلاَ رِضًا بِالْكُفْرِ بَعْدَ الإِسْلاَمِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ:أَمَا ((إِنَّهُ قَدْ صَدَقَكُمْ)) فَقَالَ عُمَرُ : يَا رَسُولَ اللهِ دَعْنِي أَضْرِبْ عُنُقَ هَذَا الْمُنَافِقِ فَقَالَ : ((إِنَّهُ قَدْ شَهِدَ بَدْرًا، وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ اللهَ اطَّلَعَ عَلَى مَنْ شَهِدَ بَدْرًا؟ قَالَ : اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ، فَأَنْزَلَ اللهُ السُّورَةَ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ - إِلَى قوله - فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ﴾)).

[راجع: ٣٠٠٧]

मुश्रिकीन मक्का के नाम (सफ़्वान बिन उमय्या और सुहैल बिन अम्र और इक्रिमा बिन अबू जहल) फिर उन्होंने उसमें मुश्रिकीन को हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के कुछ भेदों की ख़बर दी थी। (आप फ़ौज लेकर आना चाहते हैं) हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा, ऐ हातिब! तूने ये क्या किया? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे बारे में फ़ैसला करने में आप जल्दी न फ़र्माएँ, मैं उसकी वजह अर्ज़ करता हूँ। बात ये है कि मैं दूसरे मुहाजिरीन की तरह क़ुरैश के ख़ानदान से नहीं हूँ, सिर्फ़ उनका हलीफ़ बनकर उनसे जुड़ गया हूँ और दूसरे मुहाजिरीन के वहाँ अज़ीज़ व अक़रबा हैं जो उनके घर बार माल अस्बाब की निगरानी करते हैं। मैंने चाहा कि ख़ैर जब मैं ख़ानदान की रू से उनका शरीक नहीं हूँ तो कुछ एहसान ही उन पर ऐसा कर दूँ जिसके ख़याल से वो मेरे कुम्बे वालों को न सताएँ। मैंने ये काम अपने दीन से फिरकर नहीं किया और न इस्लाम लाने के बाद मेरे दिल में कुफ़्र की हिमायत का जज़्बा है। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि वाक़ई इन्होंने तुम्हारे सामने सच्ची बात कह दी है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इजाज़त हो तो मैं इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये ग़ज़्व-ए-बद्र में शरीक रहे हैं और तुम्हें क्या मा'लूम अल्लाह तआला जो ग़ज़्व-ए-बद्र में शरीक होने वालों के काम से वाक़िफ़ है।... सूरह मुम्तहिना में उसने उनके बारे में ख़ुद फ़र्मा दिया है कि, जो चाहो करो मैं तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर दिये। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की, ऐ वो लोगों जो ईमान ला चुके हो! मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ कि उनसे तुम अपनी मुहब्बत का इज़्हार करते रहो। आयत फ़क़द ज़ल्ला सवाअस्सबील तक।

(राजेअ : 3007)

तश्रीह : हज़रत हातिब बिन अबी बल्तआ (रज़ि.) ने मुश्रिकीने मक्का को लिखा था कि रसूले करीम (ﷺ) मक्का पर फ़ौज लेकर आना चाहते हैं, तुम अपना इंतिज़ाम कर लो। हज़रत उमर (रज़ि.) ने जो कुछ कहा वो ज़ाहिरी क़ानूनी सियासत के मुताबिक़ था। मगर आँहज़रत (ﷺ) को उनकी सच्चाई वह्य से मा'लूम हो गई। लिहाज़ा आपने उनकी ग़लती से दरगुज़र फ़र्मा दिया। मा'लूम हुआ कि कुछ उमूर में महज़ ज़ाहिरी वजूह की बिना पर फ़त्वा ठोक देना दुरुस्त नहीं है। मुफ़्ती को लाज़िम है कि ज़ाहिर व बातिन के तमाम उमूर व हालात पर ख़ूब ग़ौरो- ख़ोज़ करके फ़त्वा नवेसी करे। रिवायत में ग़ज़्व-ए-

फ़तहे मक्का के अ़ज़्म का ज़िक्र है, यही बाब से वजहे मुताबक़त है।

फ़त्हुल बारी में ह़ज़रत हातिब (रज़ि.) के ख़त के ये अल्फ़ाज़ मन्क़ूल हुए हैं, **या मअशर क़ुरैशिन फइन्न रसूलल्लाहि (ﷺ) जाअ कम बि जैशिन कल्लैलि यसीरू कस्सैल फवल्लाहि लो जाअकुम वहदहू लनसरहुल्लाहु व अन्जज़ लहू वअ़दहू फन्ज़ुरु व इल्ला नफ़्सकुम वस्सलाम** वाक़दी ने ये लफ़्ज़ नक़ल किये हैं । **इन्न हातिब कतब इला सुहैलिब्नि अम्रिन व सफ़्वानिब्नि असद व अक्रमा अन्न रसूलल्लाहि अज़्ज़न फिन्नासि बिल्गज़्वि व ला इरादुहू युरीदु गैरकुम व क़द अहबब्तु अंय्यकून ली इन्दकुम यदुन** उनका ख़ुलासा ये है कि रसूले करीम (ﷺ) एक लश्करे जर्रार लेकर तुम्हारे ऊपर चढ़ाई करने वाले हैं तुम लोग होशियार हो जाओ। मैंने तुम्हारे साथ एहसान करने के लिये ऐसा लिखा है।

बाब 48 : ग़ज़्व-ए-फ़तहे मक्का का बयान जो रमज़ान सन 8 हिजरी में हुआ था

٤٨- باب غَزْوَةِ الْفَتْحِ فِي رَمَضَانَ

4275. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन मसऊ़द ने, कहा कि मुझसे अ़क़ील बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-फ़तहे मक्का रमज़ान में किया था। ज़ुहरी ने इब्ने सअ़द से बयान किया कि मैंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना कि वो भी उसी तरह बयान करते थे। ज़ुहरी ने उ़बैदुल्लाह से रिवायत किया, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि (ग़ज़्व-ए-फ़तह के सफ़र में जाते हुए) रसूलुल्लाह (ﷺ) रोज़े से थे लेकिन जब आप मक़ामे कदीद पर पहुँचे, जो कदीद और अ़स्फ़ान के दरम्यान एक चश्मा है तो आपने रोज़ा तोड़ दिया। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने रोज़ा नहीं रखा यहाँ तक कि रमज़ान का महीना ख़त्म हो गया। (राजेअ़ : 1944)

٤٢٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ غَزَا غَزْوَةَ الْفَتْحِ فِي رَمَضَانَ. قَالَ: وَسَمِعْتُ ابْنَ الْمُسَيَّبِ يَقُولُ: مِثْلَ ذَلِكَ. وَعَنْ عُبَيْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: صَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى إِذَا بَلَغَ الْكَدِيدَ الْمَاءَ الَّذِي بَيْنَ قُدَيْدٍ وَعُسْفَانَ أَفْطَرَ فَلَمْ يَزَلْ مُفْطِرًا حَتَّى انْسَلَخَ الشَّهْرُ. [راجع: ١٩٤٤]

तश्रीह : रोज़े से इंसान कमज़ोर हो जाता है। जो ख़ास तौर से जिहाद के लिये नुक़सान देता है। यही वजह थी कि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद भी रोज़े नहीं रखे और न ही सहाबा (रज़ि.) ने और आम सफ़र के लिये भी यही हुक्म क़रार पाया है जैसा कि क़ुर्आन मजीद में है, **फमन कान मिन्कुम मरीज़न औ अ़ला सफ़रिन फइद्दतुम्मिन अय्यामिन उख़र** या'नी जो मरीज़ हो वो सेहत के बाद और जो मुसाफ़िर हो वो वापसी के बाद रोज़ा रख ले।

4276. मुझे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, कहा मुझे ज़ुहरी ने ख़बर दी, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) (फ़तहे मक्का के लिये) मदीना से रवाना हुए। आपके साथ (दस या बारह हज़ार का) लश्कर था। उस वक़्त आपको मदीना में तशरीफ़ लाकर साढ़े आठ साल पूरे होने वाले थे। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ)

٤٢٧٦- حَدَّثَنِي مَحْمُودٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، أَخْبَرَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ: خَرَجَ فِي رَمَضَانَ مِنَ الْمَدِينَةِ، وَمَعَهُ عَشَرَةُ آلافٍ وَذَلِكَ عَلَى

رَأْسِ ثَمَانِ سِنِينَ وَنِصْفٍ مِنْ مَقْدَمِهِ الْمَدِينَةَ فَسَارَ هُوَ وَمَنْ مَعَهُ مِنَ الْمُسْلِمِينَ إِلَى مَكَّةَ، يَصُومُ وَيَصُومُونَ حَتَّى بَلَغَ الْكَدِيدَ وَهُوَ مَاءٌ بَيْنَ عُسْفَانَ وَقُدَيْدٍ أَفْطَرَ وَأَفْطَرُوا. قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَإِنَّمَا يُؤْخَذُ مِنْ أَمْرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ الآخِرُ فَالآخِرُ.

[راجع: ١٩٤٤]

और आपके साथ जो मुसलमान थे मक्का के लिये रवाना हुए। हुज़ूर (ﷺ) भी रोज़े से थे और तमाम मुसलमान भी, लेकिन जब आप मुक़ामे क़दीद पर पहुँचे जो क़दीद और अस्फ़ान के बीच एक चश्मा है तो आपने रोज़ा तोड़ दिया और आपके साथ मुसलमानों ने भी रोज़ा तोड़ दिया। ज़ुह्री ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के सबसे आख़िरी अमल पर ही अमल किया जाएगा।

क़ुर्आन मजीद में भी मुसाफिर के लिये ख़ास इजाज़त है कि मुसाफ़िर न चाहे तो रोज़ा सफ़र में न रखे या सफ़र पूरा करके छूटे हुए रोज़ों को पूरा कर ले।

٤٢٧٧- حَدَّثَنِي عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فِي رَمَضَانَ إِلَى حُنَيْنٍ وَالنَّاسُ مُخْتَلِفُونَ فَصَائِمٌ وَمُفْطِرٌ، فَلَمَّا اسْتَوَى عَلَى رَاحِلَتِهِ دَعَا بِإِنَاءٍ مِنْ لَبَنٍ أَوْ مَاءٍ فَوَضَعَهُ عَلَى رَاحَتِهِ أو على راحِلَتِهِ ثُمَّ نَظَرَ إِلَى النَّاسِ فَقَالَ الْمُفْطِرُونَ لِلصُّوَّامِ: أَفْطِرُوا.

[راجع: ١٩٤٤]

4277. मुझसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) रमज़ान में हुनैन की तरफ़ तशरीफ़ ले गये। मुसलमानों में कुछ हज़रात तो रोज़े से थे और कुछ ने रोज़ा नहीं रखा था लेकिन जब हुज़ूर (ﷺ) अपनी सवारी पर पूरी तरह बैठ गये तो आपने बर्तन में दूध या पानी तलब फ़र्माया और उसे अपनी ऊँटनी पर या अपनी हथेली पर रखा (और फिर पी लिया) फिर आपने लोगों को देखा जिन लोगों ने पहले से रोज़ा नहीं रखा था, उन्होंने रोज़ादारों से कहा कि अब रोज़ा तोड़ लो।
(राजेअ: 1944)

٤٢٧٨- وَقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُما خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ. وَقَالَ حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ: عَنْ أَيُّوبَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ١٩٤٤]

4278. और अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने, उन्हें इक्रिमा ने और उन्हें हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया। और हम्माद बिन ज़ैद ने अय्यूब से रिवायत किया, उन्होंने इक्रिमा से, उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया।
(राजेअ: 1944)

तश्रीह: मशहूर रिवायतों मे है कि आँहज़रत (ﷺ) ग़ज़्व-ए-हुनैन के लिये शव्वाल में फ़तहे मक्का के बाद तशरीफ़ ले गये थे। इस रिवायत में है कि आँहज़रत (ﷺ) ने रमज़ान ही में ग़ज़्व-ए-हुनैन का सफ़र किया था। लिहाज़ा तत्बीक़ ये है कि सफ़र रमज़ान में शुरू हुआ। शव्वाल में इसकी तक्मील हुई। ग़ज़्व-ए-हुनैन का वक़ूअ शव्वाल ही में सहीह है। (क़स्तलानी)

4279. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे ताऊस ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रमज़ान में (फ़तहे-मक्का का) सफ़र शुरू किया। आप रोज़े से थे लेकिन जब मुक़ामे उस्फ़ान पर पहुँचे तो पानी तलब किया। दिन का वक़्त था और आपने वो पानी पिया ताकि लोगों को दिखला सकें फिर आपने रोज़ा नहीं रखा और मक्का में दाख़िल हुए। बयान किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) कहा करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने सफ़र में बाज़ औक़ात रोज़ा भी रखा था और कुछ औक़ात रोज़ा नहीं भी रखा। इसलिये (सफ़र में) जिसका जी चाहे रोज़ा रखे और जिसका जी चाहे न रखे। मुसाफ़िर के लिये रोज़ा न रखने की इजाज़त है। (रिवायत में फ़तहे-मक्का के लिये सफ़र करने का ज़िक्र है। यही बाब से मुताबक़त है।) (राजेअ : 1944)

٤٢٧٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَافَرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي رَمَضَانَ فَصَامَ حَتَّى بَلَغَ عُسْفَانَ، ثُمَّ دَعَا بِإِنَاءٍ مِنْ مَاءٍ فَشَرِبَ نَهَارًا لِيُرِيَهُ النَّاسَ فَأَفْطَرَ حَتَّى قَدِمَ مَكَّةَ. قَالَ: وَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَقُولُ: صَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي السَّفَرِ، وَأَفْطَرَ فَمَنْ شَاءَ صَامَ وَمَنْ شَاءَ أَفْطَرَ. [راجع: ١٩٤٤]

तश्रीह : क़ुरैश की बदअहदी पर (वादा तोड़ने के कारण) मजबूरन मुसलमानों को सन् 8 हिजरी में बमाहे रमज़ान मक्का शरीफ़ पर लश्कर कशी करनी पड़ी। क़ुरैश ने सन् 6 हिजरी के मुआहदा को तोड़कर बनू ख़ुज़ाअ पर हमला कर दिया जो आँहज़रत (ﷺ) के हलीफ़ (साथी) थे और जिन पर हमला न करने का अहद व पैमान था मगर क़ुरैश ने इस अहद को इस बुरी तरह तोड़ा कि सारे बनी ख़ुज़ाआ का सफ़ाया कर दिया। उन बेचारों ने भागकर का'बा शरीफ़ में पनाह मांगी और **अलह्क अलह्क** कहकर पनाह मांगते थे कि अपने अल्लाह के वास्ते हमको क़त्ल न करो। मुश्रिकीन उनको जवाब देते **ला इलाहल् यौम** आज अल्लाह कोई चीज़ नहीं। उन मज़्लूमों के बचे हुए चालीस आदमियों ने दरबारे रिसालत में जाकर अपनी बर्बादी की सारी दास्तान सुनाई। आँहज़रत (ﷺ) मुआहिदे की पाबन्दी, फ़रीक़े मज़्लूम की दादरसी, दोस्त क़बीलों की आइन्दा हिफ़ाज़त की ग़र्ज़ से दस हज़ार की जमीअत के साथ बजानिब मक्का आज़िमे सफ़र हुए। दो मंज़िला सफ़र हुआ था कि रास्ते में अबू सुफ़यान बिन हारिष बिन अब्दुल मुत्तलिब और अब्दुल्लाह बिन उमय्या मुलाक़ी हुए और इस्लाम क़ुबूल किया। उस मौक़े पर अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने अजब जोश व निशात के साथ नीचे लिखे अश्आर पढ़े।

लिउम्रिक इन्नी हीन अहमिलु रायहू
लितगलिब खैलुल्लाति खैलु मुहम्मदिन
लकल्मुदलजुल्हिरानु अज़्लमु लैलतिन
फ़हाज़ा अवानी हीन हदा फहतदा
हदानी हादिन गैर नफ़्सि व दल्लनी
इलल्लाहि मन तरत्तुहू कुल्ल मुतरिदिन

तर्जुमा : क़सम है कि मैं जिन दिनों लड़ाई का झण्डा इस नापाक ख़्याल से उठाया करता था कि लात बुत के पूजने वालों की फ़ौज हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की फ़ौज पर ग़ालिब आ जाए। उन दिनों में उस ख़ारे पुश्त जैसा था जो अंधेरी रात में टुकड़े खाता हो। अब वक़्त आ गया है कि मैं हिदायत पाऊँ और सीधे रास्ते (इस्लाम पर) गामज़न हो जाऊँ। मुझे सच्चे हादी-ए-बरहक़ ने हिदायत फ़र्मा दी है (न कि मेरे नफ़्स ने) और अल्लाह का रास्ता मुझे उस हादी-ए-बरहक़ ने दिखला दिया है जिसे मैंने (अपनी ग़लती से) हमेशा धुत्कार रखा था।

आख़िर 20 रमज़ान सन् 8 हिजरी को आप मक्का में फ़ातिहाना दाख़िल हुए और तमाम दुश्मनाने इस्लाम को आम

मुआफ़ी का ऐलान करा दिया गया। इस मौक़े पर आपने ये ख़ुत्बा पेश फ़र्माया।

या मअशर क़ुरैशिन इन्नल्लाह क़द अज़हब मिन्कुम नुख़ुव्वतल्जाहिलिय्यति व तअज़्ज़ुमिहा बिल्आबाइ अन्नासु मिन आदम व आदमु ख़लक़ मिन तुराब सुम्म तला रसूलुल्लाहि या अय्युहन्नासु इन्ना ख़लक्नाकुम मिन ज़करिंव्वं उन्सा व जअल्नाकुम शुऊबंव्वं क़बाइल लितआरफ़ु इन्न अक्रमकुम इन्दल्लाहि अत्क़ाकुम इज़्हबू अन्तुमुत्तुलक़ाउ ला तस्रीब अलैकुमुल्यौम (तब्री)

(तर्जुमा) : ऐ ख़ानदाने क़ुरैश! अल्लाह ने तुम्हें जाहिलाना नुख़ुव्वत और बाप दादों पर इतराने का ग़ुरूर आज ख़त्म कर दिया। सुन लो! सब लोग आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से पैदा हुए फिर आपने इस आयत को पढ़ा, **ऐ लोगों! मैंने तुमको एक ही मर्द औरत से पैदा किया है और कुम्बे और क़बीले सब तुम्हारी आपस की पहचान के लिये बना दिये हैं और अल्लाह के यहाँ तो सिर्फ़ तक़्वा वाले की इ़ज़्ज़त है।** फिर फ़र्माया, ऐ क़ुरैशियों! जाओ आज तुम सब आज़ाद हो तुम पर आज कोई मुवाख़ज़ा नहीं है। इस जंग के जस्ता-जस्ता ह़ालात ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने नीचे दर्ज किये गये अब्वाब में बयान किये हैं।

बाब 49 : फ़तहे-मक्का के दिन नबी करीम (ﷺ) ने झण्डा कहाँ गाड़ा था?

٤٩- باب أَيْنَ رَكَزَ النَّبِيُّ ﷺ الرَّايَةَ يَوْمَ الْفَتْحِ؟

4280. हमसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे-मक्का के लिये रवाना हुए तो क़ुरैश को उसकी ख़बर मिल गई थी। चुनाँचे अबू सुफ़यान बिन ह़र्ब, ह़कीम बिन ह़िज़ाम और बुदैल बिन वरक़ाअ नबी करीम (ﷺ) के बारे में मा'लूमात के लिये मक्का से निकले। ये लोग चलते चलते मुक़ामे मर्रज़ ज़ह्रान पर जब पहुँचे तो उन्हें जगह जगह आग जलती हुई दिखाई दी। ऐसा मा'लूम होता था कि मक़ामे अ़रफ़ात की आग है। अबू सुफ़यान ने कहा कि ये आग कैसी है? ये तो अ़रफ़ात की आग की त़रह दिखाई देती है। उस पर बुदैल बिन वरक़ाअ ने कहा कि ये बनी अ़म्र (या'नी क़ुबा के क़बीले) की आग है। अबू सुफ़्यान ने कहा कि बनी अ़म्र की ता'दाद इससे बहुत कम है। इतने में हुज़ूर (ﷺ) के मुह़ाफ़िज़ दस्ते ने उन्हें देख लिया और उनको पकड़कर आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में लाए, फिर अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने इस्लाम क़ुबूल किया। उसके बाद जब आँह़ज़रत (ﷺ) आगे (मक्का की त़रफ़) बढ़े तो अ़ब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया कि अबू सुफ़यान (रज़ि.) को ऐसी जगह पर रोके रखो जहाँ घोड़ों का जाते वक़्त हुजूम हो ताकि

٤٢٨٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: لَمَّا سَارَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ فَبَلَغَ ذَلِكَ قُرَيْشًا، خَرَجَ أَبُو سُفْيَانَ بْنُ حَرْبٍ، وَحَكِيمُ بْنُ حِزَامٍ، وَبُدَيْلُ بْنُ وَرْقَاءَ، يَلْتَمِسُونَ الْخَبَرَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَقْبَلُوا يَسِيرُونَ حَتَّى أَتَوْا مَرَّ الظَّهْرَانِ فَإِذَا هُمْ بِنِيرَانٍ كَأَنَّهَا نِيرَانُ عَرَفَةَ. فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: مَا هَذِهِ؟ لَكَأَنَّهَا نِيرَانُ عَرَفَةَ؟ فَقَالَ بُدَيْلُ بْنُ وَرْقَاءَ: نِيرَانُ بَنِي عَمْرٍو، فَقَالَ: أَبُو سُفْيَانَ: عَمْرٌو أَقَلُّ مِنْ ذَلِكَ، فَرَآهُمْ نَاسٌ مِنْ حَرَسِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَدْرَكُوهُمْ فَأَخَذُوهُمْ فَأَتَوْا بِهِمْ رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَأَسْلَمَ أَبُو سُفْيَانَ، فَلَمَّا سَارَ قَالَ لِلْعَبَّاسِ: ((احْبِسْ أَبَا سُفْيَانَ عِنْدَ

خَطْمِ الْخَيْلِ حَتَّى يَنْظُرَ إِلَى الْمُسْلِمِينَ)) فَحَبَسَهُ الْعَبَّاسُ فَجَعَلَتِ الْقَبَائِلُ تَمُرُّ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ تَمُرُّ كَتِيبَةً كَتِيبَةً، عَلَى أَبِي سُفْيَانَ فَمَرَّتْ كَتِيبَةٌ قَالَ: يَا عَبَّاسُ مَنْ هَذِهِ؟ قَالَ: هَذِهِ غِفَارُ قَالَ: مَا لِي وَلِغِفَارَ؟ ثُمَّ مَرَّتْ جُهَيْنَةُ، قَالَ مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ مَرَّتْ سَعْدُ بْنُ هُذَيْمٍ فَقَالَ مِثْلَ ذَلِكَ، وَمَرَّتْ سُلَيْمٌ فَقَالَ مِثْلَ ذَلِكَ، حَتَّى أَقْبَلَتْ كَتِيبَةٌ لَمْ يَرَ مِثْلَهَا قَالَ مَنْ هَذِهِ؟ قَالَ : هَؤُلَاءِ الأَنْصَارُ عَلَيْهِمْ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ مَعَهُ الرَّايَةُ، فَقَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ : يَا أَبَا سُفْيَانَ الْيَوْمُ يَوْمُ الْمَلْحَمَةِ الْيَوْمَ تُسْتَحَلُّ الْكَعْبَةُ، فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: يَا عَبَّاسُ حَبَّذَا يَوْمُ الذِّمَارِ ثُمَّ جَاءَتْ كَتِيبَةٌ وَهِيَ أَقَلُّ الْكَتَائِبِ فِيهِمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَصْحَابُهُ وَرَايَةُ النَّبِيِّ ﷺ مَعَ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ، فَلَمَّا مَرَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِأَبِي سُفْيَانَ قَالَ: أَلَمْ تَعْلَمْ مَا قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ؟ قَالَ : ((مَا قَالَ؟)) قَالَ: قَالَ: كَذَا وَكَذَا، فَقَالَ: ((كَذَبَ سَعْدٌ وَلَكِنْ هَذَا يَوْمٌ يُعَظِّمُ اللهُ فِيهِ الْكَعْبَةَ وَيَوْمٌ تُكْسَى فِيهِ الْكَعْبَةُ)) قَالَ: وَأَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ تُرْكَزَ رَايَتُهُ بِالْحَجُونِ. قَالَ عُرْوَةُ: وَأَخْبَرَنِي نَافِعُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ الْعَبَّاسَ يَقُولُ لِلزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ: يَا أَبَا عَبْدِ اللهِ هَهُنَا أَمَرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ تَرْكُزَ الرَّايَةَ، قَالَ: وَأَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمَئِذٍ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ أَنْ يَدْخُلَ

वो मुसलमानों की फ़ौजी क़ुव्वत को देख लें। चुनाँचे अ़ब्बास (रज़ि.) उन्हें ऐसे ही मुक़ाम पर रोककर खड़े हो गये और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ क़बाइल के दस्ते एक एक करके अबू सुफ़यान (रज़ि.) के सामने से गुज़रने लगे। एक दस्ता गुज़रा तो उन्होंने पूछा, अ़ब्बास! ये कौन हैं? उन्होंने बताया कि ये क़बीला ग़िफ़ार है। अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने कहा कि मुझे ग़िफ़ार से क्या सरोकार, फिर क़बीला जुहैना गुज़रा तो उनके बारे में भी उन्होंने यही कहा, क़बीला सुलैम गुज़रा तो उनके बारे में भी यही कहा। आख़िर एक दस्ता सामने आया। उस जैसा फ़ौजी दस्ता नहीं देखा गया। अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने पूछा ये कौन लोग हैं? अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ये अंसार का दस्ता है। सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) उसके अमीर हैं और उन्हीं के हाथ में (अंसार का झण्डा है)। सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) ने कहा अबू सुफ़यान! आज का दिन क़त्ले-आ़म का है। आज का'बा में भी लड़ना दुरुस्त कर दिया गया है। अबू सुफ़यान (रज़ि.) इस पर बोले, ऐ अ़ब्बास! (क़ुरैश की हलाकत व बर्बादी का दिन अच्छा आ लगा है। फिर एक और दस्ता आया ये सबसे छोटा दस्ता था। उसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके सहाबा (रज़ि.) थे। आँहज़रत (ﷺ) का अ़लम ज़ुबैर बिन अ़वाम (रज़ि.) उठाए हुए थे। जब हुज़ूर (ﷺ) अबू सुफ़यान (रज़ि.) के क़रीब से गुज़रे तो उन्होंने कहा आपको मा'लूम नहीं, सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) क्या कह गये हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा कि उन्होंने क्या कहा है? तो अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने बताया कि ये-ये कह गये हैं कि आप क़ुरैश का काम तमाम कर देंगे (सबको क़त्ल कर डालेंगे)। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि सअ़द (रज़ि.) ने ग़लत कहा है बल्कि आज का दिन वो है जिसमें अल्लाह का'बा की अ़ज़्मत और ज़्यादा कर देगा। आज का'बा को ग़िलाफ़ पहनाया जाएगा। उ़र्वा ने बयान किया फिर हुज़ूर (ﷺ) ने हुक्म दिया कि आपका अ़लम (झण्डा) मुक़ामे जहून में गाड़ दिया जाए। उ़र्वा ने बयान किया और मुझे नाफ़ेअ़ बिन जुबैर बिन मुतइम ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने ज़ुबैर बिन अ़वाम (रज़ि.) से कहा, (फ़तहे-मक्का के बाद) कि हुज़ूर (ﷺ) ने उनको यहीं झण्डा गाड़ने के लिये हुक्म फ़र्माया था। रावी ने बयान किया कि उस दिन हुज़ूर (ﷺ) ने ख़ालिद बिन वलीद

(रज़ि.) को हुक्म दिया था कि मक्का के बालाई इलाक़े कदा की तरफ़ से दाख़िल हों और ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) कदा के (नशीबी इलाक़े) की तरफ़ से दाख़िल हुए। उस दिन ख़ालिद (रज़ि.) के दस्ता के दो सहाबी, हुबैश बिन अश्अर और कुर्ज़ बिन जाबिर फ़िह्री (रज़ि.) शहीद हुए थे।

مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ مِنْ كَدَاءٍ وَدَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ كُدًى فَقُتِلَ مِنْ خَيْلِ خَالِدٍ يَوْمَئِذٍ رَجُلاَنِ حُبَيْشُ بْنُ الأَشْعَرِ وَكُرْزُ بْنُ جَابِرٍ الْفِهْرِيُّ.

तश्रीह : रिवायत में मर्रज़ ज़हरान एक मक़ाम का नाम है मक्का से एक मंज़िल पर। अब उसको वादी-ए-फ़ातिमा कहते हैं। अरफ़ात में हाजियों की आदत थी कि हर एक आग सुलगाता। कहते हैं आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) को अलग अलग आग जलाने का हुक्म दिया। चुनाँचे हज़ारों जगह आग रोशन की गई। रिवायत के आख़िर में लफ़्ज़ **हब्बज़ा यौमुज़् ज़िमार** का तर्जुमा कुछ ने यूँ किया है। वो दिन अच्छा है जब तुमको मुझे बचाना चाहिये। कहते हैं आँहज़रत (ﷺ) सामने से गुज़रे तो अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने आपको क़सम देकर पूछा क्या आपने अपनी क़ौम के क़त्ल करने का हुक्म दिया है? आपने फ़र्माया नहीं । अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) का कहना बयान किया। आपने फ़र्माया नहीं आज तो रहमत और करम का दिन है। आज अल्लाह क़ुरैश को इ़ज़्ज़त देगा और सअ़द (रज़ि.) से झण्डा लेकर उनकी बजाय क़ैस को दिया। फ़तहे-मक्का के दिन अ़लमे नबवी मुक़ामे जहून में गाड़ा गया था। कुद आ बिल मद और कुदाअ बिल क़स्र दोनों मुक़ामों के नाम हैं। पहला मुक़ाम मक्का के बालाई जानिब में है और दूसरा नशीबी जानिब में। जब ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) फ़ौज के साथ मक्का में दाख़िल हुए तो सफ़्वान बिन उमय्या और सुहैल बिन अ़म्र ने कुछ आदमियों के साथ मुसलमानों का मुक़ाबला किया। काफ़िर 12—13 मारे गये और मुसलमान दो शहीद हुए।

रिवायत में मज़्कूरशुदा हज़रत अबू सुफ़्यान बिन हारिष बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) हैं जो रसूले करीम (ﷺ) के चचेरे भाई होते हैं। ये शायर भी थे और एक दफ़ा आँहज़रत (ﷺ) की हिज्व में उन्होंने एक क़सीदा कहा था। जिसका जवाब हस्सान (रज़ि.) ने बड़े शानदार शे'रों में दिया था। फ़तह के दिन इस्लाम लाने का इरादा कर रहे थे मगर पिछले हालात याद करके शर्म के मारे सर नहीं उठा रहे थे। आख़िर हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा कि आप आँहज़रत (ﷺ) के चेहरे मुबारक की तरफ़ चेहरे करके वो अल्फ़ाज़ कह दीजिए जो हज़रत यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के सामने उनके ख़ताकार भाइयों ने कहे थे। **तल्लाहि लक़द आषरकल्लाहु अ़लैना व इन कुन्ना लख़ातिईन** (यूसुफ़ : 91) या'नी अल्लाह की क़सम! आपको अल्लाह ने हमारे ऊपर बड़ी फ़ज़ीलत बख़्शी और हम बिला शक ख़ताकार हैं । आप ये अल्फ़ाज़ कहेंगे तो रसूले करीम (ﷺ) के अल्फ़ाज़ भी जवाब में वही होंगे जो हज़रत यूसुफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के थे, **ला तष्रीब अ़लैकुमुल्यौम यग़फ़िरल्लाहु लकुम व हुव अर्हमुर्राहिमीन** (यूसुफ़ : 92) ऐ भाइयों ! आज के दिन तुम पर कोई मलामत नहीं है। अल्लाह तुमको बख़्शे वो बहुत बड़ा रहम करने वाला है। वे आख़िर मुसलमान हुए और अच्छा पुरख़ुलूस इस्लाम लाए। आख़िर उम्र में हज्ज कर रहे थे जब हुज्जाज ने सर मूँडा तो सर में एक रसौली (गाँठ) थी उसे भी काट दिया, यही उनकी मौत की वजह का सबब बना। सन् 20 हिजरी में वफ़ात पाई।

4281. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुआ़विया बिन क़ुर्रह ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे-मक्का के मौक़े पर अपने ऊँट पर सवार हैं और ख़ुश इल्हानी के साथ सूरह फ़तह की तिलावत फ़र्मा रहे हैं । मुआ़विया बिन क़ुर्रह (रज़ि.) ने कहा कि अगर उसका ख़तरा न होता कि लोग मुझे घेर लेंगे तो मैं भी उसी तरह तिलावत करके दिखाता जैसे अ़ब्दुल्लाह बिन

٤٢٨١- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ، قَالَ : سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ مُغَفَّلٍ يَقُولُ : رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ عَلَى نَاقَتِهِ وَهُوَ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفَتْحِ يُرَجِّعُ، وَقَالَ: لَوْ لاَ أَنْ يَجْتَمِعَ النَّاسُ حَوْلِي لَرَجَّعْتُ كَمَا رَجَّعَ.

मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) ने पढ़कर सुनाया था।

(दीगर मक़ाम : 4835, 5034, 5047, 7540)

[أطرافه في: ٤٨٣٥، ٥٠٣٤، ٥٠٤٧، ٧٥٤٠].

4282. हमसे सुलैमान बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा हमसे सअ़दान बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अबी ह़फ़्सा ने बयान किया, कहा उनसे ज़ुह्री ने, उनसे ज़ैनुल आ़बिदीन अ़ली बिन हुसैन ने, उनसे अ़म्र बिन उ़ष्मान ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़तहे-मक्का के सफ़र में उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा या रसूलल्लाह! कल (मक्का में) आप कहाँ क़याम करेंगे? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हमारे लिये अ़क़ील ने कोई घर ही कहाँ छोड़ा है।

(राजेअ़ : 1588)

٤٢٨٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا سَعْدَانُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي حَفْصَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ أَنَّهُ قَالَ زَمَنَ الْفَتْحِ : يَا رَسُولَ اللهِ أَيْنَ تَنْزِلُ غَدًا؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((وَهَلْ تَرَكَ لَنَا عَقِيلٌ مِنْ مَنْزِلٍ؟)).

[راجع: ١٥٨٨]

4283. फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मोमिन, काफ़िर का वारिष़ नहीं हो सकता और न काफ़िर मोमिन का वारिष़ हो सकता है। ज़ुह्री से पूछा गया कि फिर अबू त़ालिब की विराष़त किसे मिली थी? उन्होंने बताया कि उनके वारिष़ अ़क़ील और त़ालिब हुए थे। मअ़मर ने ज़ुह्री से (उसामा रज़ि. का सवाल यूँ नक़ल किया है कि) आप अपने हज्ज के दौरान कहाँ क़याम करेंगे? और यूनुस ने (अपनी रिवायत में) न हज्ज का ज़िक्र किया है और न फ़तहे-मक्का का।

٤٢٨٣- ثُمَّ قَالَ : ((لاَ يَرِثُ الْمُؤْمِنُ الْكَافِرَ، وَلاَيَرِثُ الْكَافِرُ الْمُؤْمِنَ)). قِيلَ لِلزُّهْرِيِّ وَمَنْ وَرِثَ أَبَا طَالِبٍ؟ قَالَ: وَرِثَهُ عَقِيلٌ، وَطَالِبٌ. قَالَ مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ : أَيْنَ تَنْزِلُ غَدًا فِي حَجَّتِهِ؟ وَلَمْ يَقُلْ يُونُسُ حَجَّتِهِ وَلاَ زَمَنَ الْفَتْحِ.

अ़क़ील और त़ालिब उस वक़्त तक मुसलमान न हुए थे। इसलिये अबू त़ालिब के वो वारिष़ हुए और अ़ली और जा'फ़र (रज़ि.) को कुछ तर्का नहीं मिला क्योंकि ये दोनों मुसलमान हो गये थे।

4284. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुऐ़ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया इंशाअल्लाह हमारी क़यामगाह अगर अल्लाह तआ़ला ने फ़तह इनायत की तो ख़ैफ़े बनी किनाना में होगी। जहाँ क़ुरैश ने कुफ़्र की हिमायत के लिये क़सम खाई थी। (राजेअ़ : 1589)

٤٢٨٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْزِلُنَا إِنْ شَاءَ اللهُ إِذَا فَتَحَ اللهُ الْخَيْفَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ)). [راجع: ١٥٨٩]

तश्रीह : ख़ैफ़ उस जगह को कहते हैं जो मा'मूली ज़मीन से ऊँची और पहाड़ से कुछ नीची हो। मस्जिदे ख़ैफ़ उसी जगह वाक़ेअ़ है। किसी वक़्त कुफ़्फ़ारे मक्का ने इस्लाम दुश्मनी पर यहीं क़सम खाई थी। अल्लाह ने उनका ग़ुरूर ख़ाक में मिला दिया और इस्लाम को अ़ज़्मत अ़ता फ़र्माई। क़ुरैश ने क़समें खाई थीं कि वो रसूले करीम (ﷺ) को आपके पूरे ख़ानदान बनू हाशिम और बनू मुत़्त़लिब को मक्का से निकालकर ही दम लेंगे आख़िर वो दिन आया कि वो ख़ुद ही नेस्त व नाबूद हो गये

और इस्लाम का झण्डा मक्का पर लहराया। सच है, **जाअल्हक़्क़ु व ज़हक़ल्बातिलु इन्नल्बातिल कान ज़हुका** (बनी इस्राईल : 81) मुसलमान अगर आज भी सच्चे मुसलमान बन जाएँ तो अल्लाह की मदद उनके लिये ज़रूरी है।

4285. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब हुनैन का इरादा किया तो फ़र्माया, इंशाअल्लाह कल हमारा क़याम ख़ैफ़े बनी किनाना होगा जहाँ कुरैश ने कुफ़्र के लिये क़सम खाई थी।

(राजेअ : 1589)

٤٢٨٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أَرَادَ حُنَيْنًا : ((مَنْزِلُنَا غَدًا إِنْ شَاءَ اللهُ بِخَيْفِ بَنِي كِنَانَةَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ)).

[راجع: ١٥٨٩]

तश्रीह : यहाँ आप इसलिये उतरे कि अल्लाह का एहसान ज़ाहिर हो कि एक दिन तो वो था कि बनू हाशिम कुरैश के काफ़िरों से ऐसे मग़लूब और मरऊब थे या एक दिन अल्लाह ने वो दिन दिखलाया कि सारे कुरैश के काफ़िर मग़लूब हो गये और अल्लाह ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया। इससे अहमतरीन तारीख़ी मक़ामात को याद रखना भी षाबित हुआ।

4286. हमसे यह्या बिन क़ज़अ़ा ने बयान किया, कहा हमसे मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़तहे-मक्का के मौक़े पर जब नबी करीम (ﷺ) मक्का में दाख़िल हुए तो सरे मुबारक पर मिग़फ़र थी। आपने उसे उतारा ही था कि एक स़हाबी ने आकर अ़र्ज़ किया कि इब्ने ख़तल का'बा के पर्दे से चिमटा हुआ है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे (वहीं) क़त्ल कर दो। इमाम (रह.) ने कहा जैसा कि हम समझते हैं आगे अल्लाह जाने, नबी करीम (ﷺ) उस दिन एहराम बाँधे हुए नहीं थे।

(राजेअ़ : 1846)

٤٢٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ مَكَّةَ يَوْمَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ، فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: ابْنُ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ: ((اقْتُلْهُ)) قَالَ مَالِكٌ : وَلَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ فِيمَا نُرَى وَاللهُ أَعْلَمُ يَوْمَئِذٍ مُحْرِمًا. [راجع: ١٨٤٦]

तश्रीह : इब्ने ख़तल इस्लाम से फिरकर मुर्तद हो गया था। एक आदमी का क़ातिल भी था और रसूले करीम (ﷺ) की हिज्व के गीत गाया करता था। चुनाँचे उस मौक़े पर वो का'बा के पर्दों से बाहर निकाला गया और ज़मज़म और मुक़ामे इब्राहीम के बीच उसकी गर्दन मारी गई। आँहज़रत (ﷺ) ने आइन्दा के लिये इस तरह करने से मना कर दिया कि अब कुरैश का आदमी इस तरह बेबस करके न मारा जाए। मिग़फ़र लोहे का कनटोप जिसे जंग में सर की हिफ़ाज़त के लिये ओढ़ लिया जाता था।

4287. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको सुलैमान बिन उ़यैना ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी नुजैह ने, उन्हें मुजाहिद ने, उन्हें अबू मअ़मर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़तहे-मक्का के दिन जब नबी करीम (ﷺ) मक्का में दाख़िल हुए तो बैतुल्लाह के चारों तरफ़

٤٢٨٧- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ يَوْمَ الْفَتْحِ، وَحَوْلَ الْبَيْتِ

सِتُّونَ وَثَلاَثُمِائَةِ نُصُبٍ، فَجَعَلَ يَطْعُنُهَا بِعُودٍ فِي يَدِهِ وَيَقُولُ : ((جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ، جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِىءُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ)). [راجع: ٢٤٧٨]

तीन सौ साठ बुत थे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) एक छड़ी से जो दस्ते मुबारक में थी, मारते जाते थे और इस आयत की तिलावत करते जाते कि, हक़ क़ायम हो गया और बातिल मग़लूब हो गया, हक़ क़ायम हो गया और बातिल से न शुरू में कुछ हो सका है न आइन्दा कुछ हो सकता है। (राजेअ : 2478)

तश्रीह : पहली आयत सूरह बनी इस्राईल में और दूसरी आयत सूरह सबा में है। हक़ से मुराद दीने इस्लाम और बातिल से बुत और शैतान मुराद है। बातिल का आग़ाज़ और अंजाम सब ख़राब ही ख़राब है।

٤٢٨٨- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنِي أَبِي حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا قَدِمَ مَكَّةَ أَبَى أَنْ يَدْخُلَ الْبَيْتَ، وَفِيهِ الآلِهَةُ، فَأَمَرَ بِهَا فَأُخْرِجَتْ فَأُخْرِجَ صُورَةُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ فِي أَيْدِيهِمَا مِنَ الأَزْلاَمِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((قَاتَلَهُمُ اللهُ، لَقَدْ عَلِمُوا مَا اسْتَقْسَمَا بِهَا قَطُّ)) ثُمَّ دَخَلَ الْبَيْتَ فَكَبَّرَ فِي نَوَاحِي الْبَيْتِ وَخَرَجَ وَلَمْ يُصَلِّ فِيهِ. تَابَعَهُ مَعْمَرٌ عَنْ أَيُّوبَ وَقَالَ وُهَيْبٌ: حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.
[راجع: ٣٩٨]

4288. मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुस्‌समद ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब मक्का आए तो आप बैतुल्लाह में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं हुए जब तक उसमें बुत मौजूद रहे बल्कि आपने हुक्म दिया और बुतों को बाहर निकाल दिया गया। उन्हीं में एक तस्वीर हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अलैहिमस्सलाम) की भी थी और उनके हाथों मे (पांसे) के तीर थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह इन मुश्रिकीन का नास करे, उन्हें ख़ूब मा'लूम था कि उन बुज़ुर्गों ने कभी पांसा नहीं फेंका। फिर आप बैतुल्लाह में दाख़िल हुए और अंदर चारों तरफ़ तक्बीर कही फिर बाहर तशरीफ़ लाए, आपने अंदर नमाज़ नहीं पढ़ी थी। अ़ब्दुस्‌समद के साथ इस हदीष़ को मअ़मर ने भी अय्यूब से रिवायत किया और वुहैब बिन ख़ालिद ने यूँ कहा, हमसे अय्यूब ने बयान किया, उन्होंने इक्रिमा से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से। (राजेअ :398)

٥٠- باب دُخُولِ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ

बाब 50 : नबी करीम (ﷺ) का शहर के बालाई जानिब से मक्का में दाख़िल होना

٤٢٨٩- وَقَالَ اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي يُونُسُ أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَقْبَلَ يَوْمَ الْفَتْحِ مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ عَلَى رَاحِلَتِهِ مُرْدِفًا أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ، وَمَعَهُ بِلاَلٌ وَمَعَهُ عُثْمَانُ

4289. और लैष़ ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, कहा किमुझे नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी सवारी पर फ़तहे-मक्का के दिन मक्का के बालाई इलाक़ा की तरफ़ से शहर में दाख़िल हुए। उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) आप (ﷺ) की सवारी पर आपके पीछे

بْنُ طَلْحَةَ مِنَ الْحَجَبَةِ حَتّٰى أَنَاخَ فِي الْمَسْجِدِ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَأْتِيَ بِمِفْتَاحِ الْبَيْتِ، فَدَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ وَبِلاَلٌ وَعُثْمَانُ بْنُ طَلْحَةَ، فَمَكَثَ فِيهِ نَهَارًا طَوِيلاً ثُمَّ خَرَجَ فَاسْتَبَقَ النَّاسُ فَكَانَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ أَوَّلَ مَنْ دَخَلَ، فَوَجَدَ بِلاَلاً وَرَاءَ الْبَابِ قَائِمًا، فَسَأَلَهُ أَيْنَ صَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ؟ فَأَشَارَ لَهُ إِلَى الْمَكَانِ الَّذِي صَلَّى فِيهِ، قَالَ عَبْدُ اللهِ : فَنَسِيتُ أَنْ أَسْأَلَهُ كَمْ صَلَّى مِنْ سَجْدَةٍ.
[راجع: ٣٩٧]

बैठे हुए थे। आपके साथ बिलाल (रज़ि.) और का'बा के हाजिब उ़ष्मान बिन त़लहा (रज़ि.) भी थे। आख़िर अपने ऊँट को आपने मस्जिद (के क़रीब बाहर) बिठाया और बैतुल्लाह की चाबी लाने का हुक्म दिया फिर आप बैतुल्लाह के अंदर तशरीफ़ ले गये। आपके साथ उसामा बिन ज़ैद, बिलाल और उ़ष्मान बिन त़लहा (रज़ि.) भी थे। आप अंदर काफ़ी देर तक ठहरे, जब बाहर तशरीफ़ लाए तो लोग जल्दी से आगे बढ़े। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) सबसे पहले अंदर जाने वालों में थे। उन्होंने बैतुल्लाह के दरवाज़े के पीछे ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) को खड़े हुए देखा और उनसे पूछा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने कहाँ नमाज़ पढ़ी थी। उन्होंने वो जगह बतलाई जहाँ आपने नमाज़ पढ़ी थी। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि ये पूछना भूल गया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने नमाज़ में कितनी रकअ़तें पढ़ी थीं। (राजेअ़ : 397)

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत में है कि आपने का'बा के अंदर नमाज़ नहीं पढ़ी लेकिन बिलाल (रज़ि.) की रिवायत में नमाज़ पढ़ने का ज़िक्र है और यही स़ह़ीह़ है कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बाहर हों उनको आपके नमाज़ पढ़ने का इ़ल्म न हुआ हो, आपने फ़राग़त के बाद का'बा की चाबी फिर उ़ष्मान (रज़ि.) के ह़वाले कर दी और फ़र्माया कि ये हमेशा तेरे ही ख़ानदान में रहेगी। ये मैंने तुझको नहीं दी बल्कि अल्लाह तआ़ला ने दी है और जो कोई ज़ालिम होगा वो ये कुँजी तुझसे छीनेगा। आज तक ये चाबी उसी ख़ानदाने शैबी के अंदर मह़फ़ूज़ है और का'बा शरीफ़ जब भी खोला जाता है, वही लोग आकर खोलते हैं। स़दक़ रसूलुल्लाह (ﷺ)। सन् 1952 के ह़ज्ज में मैं का'बा शरीफ़ में दाख़िल हुआ था और दरवाज़ा पर शैबी ख़ानदान के बुज़ुर्ग को मैंने देखा था जो बहुत ही सफ़ेद रीश बुज़ुर्ग थे, ग़फ़रल्लाहु लहू।

٤٢٩٠- حَدَّثَنَا الْهَيْثَمُ بْنُ خَارِجَةَ حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَامَ الْفَتْحِ مِنْ كَدَاءٍ الَّتِي بِأَعْلَى مَكَّةَ. تَابَعَهُ أَبُو أُسَامَةَ وَ وُهَيْبٌ فِي كَدَاءٍ. [راجع: ١٥٧٧]

4290. हमसे हैष़म बिन ख़ारिजा ने बयान किया, कहा हमसे ह़फ़्स़ बिन मैसरह ने बयान किया, उनसे हिशाम इब्ने उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) फ़तहे-मक्का के दिन मक्का के बालाई इलाक़े कदा से शहर में दाख़िल हुए थे। इस रिवायत की मुताबअ़त अबू उसामा और वुहैब ने कदा के ज़िक्र के साथ की है।

(राजेअ़ : 1577)

तश्रीह : कदा बिल मद और कुदा बिल क़स्र दोनों मुक़ामों के नाम हैं। पहला मुक़ाम मक्का के बालाई जानिब में है और दूसरा नशीबी जानिब में और ये रिवायत उन स़ह़ीह़ रिवायतों के ख़िलाफ़ है जिनमें है कि आँह़ज़रत (ﷺ) कदा या'नी बालाई जानिब से दाख़िल हुए और ख़ालिद (रज़ि.) को कुदा या'नी नशीबी जानिब से दाख़िल होने का हुक्म दिया। जब ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) सिपाहगिरी लिये हुए मक्का में दाख़िल हुए तो मुश्रिकों ने ज़रा सा मुक़ाबला किया। कुफ़्फ़ार को स़फ़्वान बिन उ़मय्या और सुहैल बिन अ़म्र ने इकट्ठा किया था। मुसलमानों में से दो शख़्स़ शहीद हुए और काफ़िर बारह तेरह मारे गये, बाक़ी सब भाग निकले, ये पहले भी मज़्कूर हो चुका है।

4291. हमसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने और उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) फ़तहे-मक्का के दिन मक्का के बालाई इलाक़ा कदा की तरफ़ से दाख़िल हुए थे। (राजेअ़ : 1577)

٤٢٩١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ مِنْ أَعْلَى مَكَّةَ مِنْ كَدَاءٍ. [راجع: ١٥٧٧]

बाब 51 : फ़तहे-मक्का के दिन क़ियामे नबवी का बयान

٥١- باب مَنْزِلِ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ الْفَتْحِ

4292. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे इब्ने अबी लैला ने कि उम्मे हानी (रज़ि.) के सिवा हमें किसी ने ये ख़बर नहीं दी कि नबी करीम (ﷺ) ने चाश्त की नमाज़ पढ़ी, उन्हीं ने कहा कि जब मक्का फ़तह हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनके घर गुस्ल किया और आठ रकअ़त नमाज़ पढ़ी। उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) को मैंने इतनी हल्की नमाज़ पढ़ते कभी नहीं देखा था। फिर भी उसमें आप रुकूअ़ और सज्दा पूरी तरह करते थे। (राजेअ़ : 1103)

٤٢٩٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرٍو عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، قَالَ: مَا أَخْبَرَنَا أَحَدٌ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ يُصَلِّي الضُّحَى غَيْرُ أُمِّ هَانِىءٍ فَإِنَّهَا ذَكَرَتْ أَنَّهُ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ اغْتَسَلَ فِي بَيْتِهَا، ثُمَّ صَلَّى ثَمَانِيَ رَكَعَاتٍ، قَالَتْ: لَمْ أَرَهُ صَلَّى صَلاَةً أَخَفَّ مِنْهَا غَيْرَ أَنَّهُ يُتِمُّ الرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ. [راجع: ١١٠٣]

तश्रीह : हल्की पढ़ने का मतलब ये है कि उस नमाज़ में आपने क़िरात बहुत मुख़्तसर की थी ह़दीष़ से मक़्सद यहाँ ये ष़ाबित करना है कि फ़तहे-मक्का के दिन आँहज़रत (ﷺ) का क़याम उम्मे हानी (रज़ि.) के घर में था।

ह़ज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) के यहाँ आपने जो नमाज़ अदा की उस बाबत ह़ाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह) अपनी मशहूर किताब ज़ादुल मआ़द में लिखते हैं, **ष़ुम्म दख़ल रसूलुल्लाहि (ﷺ) दार उम्मि हानी बिन्तु अबी ता़लिब फ़ग़्तसल व सल्ला ष़मान रक्आ़तिन फ़ी बैतिहा व कान ज़ुहन फज़न्नहा मन ज़न्नहा सलातुज़्ज़ुहा व इन्नमा हाज़िही स़लातुल्फत्हि व कान उम्राउल्इस्लामि इज़ा फतहू ह़स्रनन औ बलदन स़ल्लू अक़ीबल्फत्हि हाज़िहिस्सलातु इक़्तिदाउम्बिरसूलिल्लाहि (ﷺ) व फिल्क़िस्सति मा यदुल्लु अ़ला अन्नहा बिसबबिल्फत्हि शकरल्लाहु अ़लैहि फ़इन्न उम्म हानी कालत मा रायतुहू स़ल्लाहा क़ब्लहा व ला बअ़दहा** (ज़ादुल्मआ़द) या'नी फिर रसूले करीम (ﷺ) उम्मे हानी (रज़ि.) के घर में दाख़िल हुए और आपने वहाँ गुस्ल फ़र्माकर आठ रकआ़त नमाज़ उनके घर में अदा की और ये ज़ुह़ा का वक़्त था। पस जिसने गुमान किया उसने कहा कि ये ज़ुह़ा की नमाज़ थी ह़ालाँकि ये फ़तह़ के शुक्राने की नमाज़ थी। बाद में इस्लामी अमीरों का भी यही क़ायदा रहा कि सुन्नते नबवी पर अ़मल करते हुए जब भी कोई शहर या क़िला फ़तह़ करते इस नमाज़ को अदा करते थे और क़िस्से में ऐसी दलील भी मौजूद है जो उसे नमाज़े शुक्राना ही ष़ाबित करती है। वो ह़ज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) का ये क़ौल है कि मैंने नहीं देखा कि आपने कभी पहले या पीछे इस नमाज़ को पढ़ा हो। इससे भी ष़ाबित हुआ ये फ़तह़ की ख़ुशी में शुक्राना की नमाज़ थी।

बाब 52 :

٥٢- باب

4293. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे

٤٢٩٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي

मंसूर ने, उनसे अबुज़्ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अपने रुकूअ और सज्दा में ये दुआ पढ़ते थे (दुआ ये है)

सुब्हान कल्लाहुम्म रब्बना व बिह़म्दिका अल्लाहुम्मग़्फ़िरली

(राजेअ : 794)

الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ فِي رُكُوعِهِ وَسُجُودِهِ: ((سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي)).

[راجع: ٧٩٤]

तश्रीह : या'नी तू पाक है ऐ अल्लाह! हमारे मालिक तेरी ता'रीफ़ करते हैं हम, या अल्लाह मुझको बख़्श दे। ह़दीष़ से ये निकला कि रुकूअ या सज्दे में दुआ करना मना नहीं है। इस ह़दीष़ का ता'ल्लुक़ बाब से यूँ है कि इस ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ में यूँ मज़्कूर है कि जब आप पर सूरह **इज़ा जाआ नस्रुल्लाहि वल फ़त्ह़** नाज़िल हुई या'नी फ़तहे-मक्का के बाद तो आप हर नमाज़ में रुकूअ और सज्दे में यूँ ही फ़र्माने लगे। इस सूरत मे अल्लाह ने ये हुक्म दिया **फसब्बिह बिहम्दि रब्बिक वस्तग़फ़िर्हु** (अन नस्र : 3) पस **सुब्हानक अल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दिक अल्लाहुम्मग़फ़िर्ली** इसी की ता'लीम है। आँह़ज़रत (ﷺ) का आख़िरी अमल यही था कि आप रुकूअ और सज्दे मे बकष़रत उसको पढ़ा करते थे। लिहाज़ा और दुआओं पर इसको फ़ौक़ियत ह़ासिल है। ज़िम्नी तौर पर उसमें भी फ़त्हे मक्का का ज़िक्र है और ह़दीष़ और बाब में यही मुत़ाबक़त है।

4294. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उ़मर (रज़ि.) मुझे अपनी मज्लिस में उस वक़्त भी बुला लेते जब वहाँ बद्र की जंग में शरीक होने वाले बुज़ुर्ग स़ह़ाबा (रज़ि.) बैठे होते। उस पर कुछ लोग कहने लगे कि उस जवान को आप हमारी मज्लिस में क्यूँ बुलाते हैं? इसके जैसे तो हमारे बच्चे भी हैं। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने कहा वो तो उन लोगों में से हैं जिनका इल्म व फ़ज़्ल तुम जानते हो। उन्होंने बयान किया कि फिर उन बुज़ुर्ग स़ह़ाबियों को एक दिन उ़मर (रज़ि.) ने बुलाया और मुझे भी बुलाया। बयान किया कि मैं समझता था कि मुझे उस दिन आपने इसलिये बुलाया था ताकि आप मेरा इल्म बता सकें। फिर आपने दरयाफ़्त किया इज़ा जाआ नस्रुल्लाहि वल फ़त्ह़ व रअयतन्नासा यद्‌ख़ुलूना, ख़त्म सूरत तक, के बारे में तुम लोगों का क्या ख़्याल है? किसी ने कहा कि हमें इस आयत में हुक्म दिया गया है कि हम अल्लाह की ह़म्दो—ष़ना बयान करें और इससे इस्तिग़्फ़ार करें कि उसने हमारी मदद की और हमें फ़तह इनायत की। कुछ ने कहा कि हमें उसके बारे में कुछ मा'लूम नहीं है और कुछ ने कोई जवाब नहीं दिया फिर उन्होंने मुझसे दरयाफ़्त किया, इब्ने अ़ब्बास! क्या तुम्हारा भी यही ख़्याल है? मैंने जवाब दिया कि नहीं, पूछा, फिर तुम क्या कहते हो? मैंने कहा कि इसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात की त़रफ़ इशारा है कि जब

٤٢٩٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ عُمَرُ يُدْخِلُنِي مَعَ أَشْيَاخِ بَدْرٍ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ، لِمَ تُدْخِلُ هَذَا الْفَتَى مَعَنَا وَلَنَا أَبْنَاءٌ مِثْلُهُ؟ فَقَالَ إِنَّهُ مِمَّنْ قَدْ عَلِمْتُمْ، قَالَ: فَدَعَاهُمْ ذَاتَ يَوْمٍ وَدَعَانِي مَعَهُمْ قَالَ: وَمَا أُرِيتُهُ دَعَانِي يَوْمَئِذٍ إِلاَّ لِيُرِيَهُمْ مِنِّي، فَقَالَ مَا تَقُولُونَ: فِي ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ﴾ حَتَّى خَتَمَ السُّورَةَ فَقَالَ بَعْضُهُمْ : أُمِرْنَا أَنْ نَحْمَدَ اللهَ وَنَسْتَغْفِرَهُ، إِذَا نُصِرْنَا وَفُتِحَ عَلَيْنَا وَقَالَ بَعْضُهُمْ: لاَ نَدْرِي وَلَمْ يَقُلْ بَعْضُهُمْ شَيْئًا فَقَالَ لِي: يَا ابْنَ عَبَّاسٍ أَكَذَاكَ تَقُولُ؟ قُلْتُ: لاَ، فَمَا تَقُولُ؟ قُلْتُ: هُوَ أَجَلُ رَسُولِ اللهِ

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْلَمَهُ اللهُ لَهُ ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ فَتْحُ مَكَّةَ فَذَاكَ عَلاَمَةُ أَجَلِكَ ﴿فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ، وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا﴾ قَالَ عُمَرُ : مَا أَعْلَمُ مِنْهَا إِلاَّ مَا تَعْلَمُ.

[راجع: ٣٦٢٧]

अल्लाह तआला की मदद और फ़तह हासिल हो गई या'नी फ़तहे-मक्का तो आपकी वफ़ात की निशानी है। इसलिये आप अपने रब की हम्दो-षना और तस्बीह करें और उसकी मग़्फ़िरत तलब करें कि वो तौबा क़ुबूल करने वाला है। उमर (रज़ि.) ने कहा कि जो कुछ तुमने कहा वही मैं भी समझता हूँ।

(राजेअ़ : 3627)

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) ने दीन की एक बात पूछकर इब्ने अब्बास (रज़ि.) की फ़ज़ीलत बूढ़ों पर ज़ाहिर कर दी जैसे अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) को इल्म देकर बड़ी-बड़ी उम्र वाले फ़रिश्तों पर उनकी फ़ज़ीलत षाबित कर दी और उन फ़रिश्तों से फ़र्माया कि आदम को सज्दा करो। हदीष में वफ़ाते नबवी पर इशारा है। उसका यहाँ दर्ज करने का यही मक़्सद है। सूरह शरीफ़ा में इशारा था कि **हर कमाले रा ज़वाले। हर ज़वाले रा कमाले।** इस हदीष के ज़ैल मौलाना वहीदुज़्ज़माँ की तक़रीर दिल को छूने वाली ये है कि उमर (रज़ि.) का अमल उस पर था **बुज़ुर्गी बअक़्ल अस्त न ब साल।** इब्ने अब्बास (रज़ि.) उस वक़्त के बड़े आलिम थे और आलिम चाहे जवान हो मगर इल्म की फ़ज़ीलत से वो बूढ़ों के बराबर बल्कि उनसे भी अफ़ज़ल समझा जाता है। हमारे पेशवा ख़ुलफ़-ए-राशिदीन और दूसरे शाहाने इस्लाम ने इल्म की ऐसी क़द्रदानी की है जब मुसलमान इल्म हासिल करने में कोशिश करते थे। मगर अफ़सोस कि हमारे ज़माने के मुसलमान बादशाह ऐसे नालायक़ हैं जिनके एक भी आलिम, फ़ाज़िल या हकीम, दार्शनिक नहीं होता न उनको दीनी उलूम की क़द्र है न दुनियावी उलूम की बल्कि सच पूछा तो इल्म व लियाक़त के दुश्मन हैं। उनके मुल्क में कोई शाज़ो नादिर दीन का आलिम पैदा हो गया तो उसको सताने, बेइज़्ज़त करने और निकालने के फ़िक्र में रहते हैं। **ला हौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहि** अगर यही लैल व नहार (रात व दिन) रहे तो ऐसे बादशाहों की हुकूमत को भी चिराग़े सेहरी समझना चाहिये। (वहीदी) **ये पुरानी बातें हैं अब तो दौरे सरमायादारी गया। दिखाकर तमाशा मदारी गया।**

٤٢٩٥ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ شُرَحْبِيلٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي شُرَيْحٍ الْعَدَوِيِّ أَنَّهُ قَالَ لِعَمْرِو بْنِ سَعِيدٍ وَهُوَ يَبْعَثُ الْبُعُوثَ إِلَى مَكَّةَ: ائْذَنْ لِي أَيُّهَا الأَمِيرُ أُحَدِّثْكَ قَوْلاً قَامَ بِهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْغَدَ مِنْ يَوْمِ الْفَتْحِ مَكَّةَ سَمِعَتْهُ أُذُنَايَ وَوَعَاهُ قَلْبِي وَأَبْصَرَتْهُ عَيْنَايَ حِينَ تَكَلَّمَ بِهِ، إِنَّهُ حَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ مَكَّةَ حَرَّمَهَا اللهُ وَلَمْ يُحَرِّمْهَا النَّاسُ، لاَ يَحِلُّ لاِمْرِىءٍ يُؤْمِنُ

4295. हमसे सईद बिन शुरहबील ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे मक़्बरी ने कि अबू शुरैह अदवी (रज़ि.) ने (मदीना के अमीर) अम्र बिन सईद से कहा जबकि अम्र बिन सईद (अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि. के ख़िलाफ़) मक्का की तरफ़ लश्कर भेज रहे थे कि ऐ अमीर! मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं आपसे एक हदीष बयान करूँ जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तहे-मक्का के दूसरे दिन इर्शाद फ़र्माई थी। उस हदीष को मेरे दोनों कानों ने सुना, मेरे क़ल्ब ने उसको याद रखा और जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) इर्शाद फ़र्मा रहे थे तो मैं अपनी आँखों से आप (ﷺ) को देख रहा था। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने पहले अल्लाह की हम्दो-षना बयान की और फिर फ़र्माया, बिला शुब्हा मक्का को अल्लाह तआला ने हुर्मत वाला शहर क़रार दिया है, किसी इंसान ने उसे

بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ أَنْ يَسْفِكَ دَمًا، وَلاَ يَعْضِدَ بِهَا شَجَرًا، فَإِنْ أَحَدٌ تَرَخَّصَ لِقِتَالِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهَا، فَقُولُوا لَهُ: إِنَّ اللهَ أَذِنَ لِرَسُولِهِ وَلَمْ يَأْذَنْ لَكُمْ، وَإِنَّمَا أَذِنَ لِي فِيهَا سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ، وَقَدْ عَادَتْ حُرْمَتُهَا الْيَوْمَ كَحُرْمَتِهَا بِالأَمْسِ، وَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ)) فَقِيلَ لأَبِي شُرَيْحٍ مَاذَا قَالَ لَكَ عَمْرٌو؟ قَالَ: قَالَ أَنَا أَعْلَمُ بِذَلِكَ مِنْكَ يَا أَبَا شُرَيْحٍ إِنَّ الْحَرَمَ لاَ يُعِيذُ عَاصِيًا وَلاَ فَارًّا بِدَمٍ وَلاَ فَارًّا بِخَرْبَةٍ.

[راجع: ١٠٤]

अपनी तरफ़ से हुर्मत वाला क़रार नहीं दिया। इसलिये किसी शख़्स के लिये भी जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, जाइज़ नहीं कि इसमें किसी का ख़ून बहाये और न कोई इस सरज़मीन का कोई पेड़ काटे और अगर कोई शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) के (फ़तहे-मक्का के मौक़े पर) जंग से अपने लिये भी रुख़सत निकाले तो तुम उससे कह देना कि अल्लाह तआला ने सिर्फ़ अपने रसूल को (थोड़ी देर के लिये) उसकी इजाज़त दी थी। तुम्हारे लिये बिल्कुल इजाज़त नहीं है और मुझे भी इसकी इजाज़त दिन के थोड़े से हिस्से के लिये मिली थी और आज फिर इसकी हुर्मत उसी तरह लौट आई है जिस तरह कल ये शहर हुर्मत वाला था। पस जो लोग यहाँ मौजूद हैं वो (इनको मेरा कलाम) पहुँचा दें जो मौजूद नहीं। अबू शुरैह से पूछा गया कि अम्र बिन सईद ने आपको फिर जवाब किया दिया था? तो उन्होंने बताया कि उसने कहा कि मैं ये मसाइल तुमसे ज़्यादा जानता हूँ, हरम किसी गुनाहगार को पनाह नहीं देता, न किसी का ख़ून कर के भागने वाले को पनाह देता है, मुफ़्सिद को भी पनाह नहीं देता। (राजेअ : 104)

तश्रीह : हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने यज़ीद की बेअत नहीं की थी। इसलिये यज़ीद ने उनको ज़ेर (अपने अधीन) करने के लिये गवर्नर अम्र बिन सईद को मामूर किया जिस पर अबू शुरैह ने उनको ये हदीष सुनाई और मक्का पर हमलावर होने से रोका मगर अम्र बिन सईद ताक़त के नशे में चूर था। उसने हदीषे नबवी को नहीं सुना और मक्का पर चढ़ाई कर दी और साथ ही ये बहाने बनाए जो यहाँ मज़्कूर हैं। इस तरह तारीख़ में हमेशा के लिये बदनामी को इख़्तियार किया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) के ख़ूने नाहक़ का बोझ अपनी गर्दन पर रखा और हदीष में फ़तहे-मक्का व हुर्मते मक्का पर इशारा है, यही मक़्सूद बाब है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) असदी क़ुरैशी हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के नवासे हैं। मदीना में मुहाजिरीन में ये पहले बच्चे हैं जो सन् 1 हिजरी में पैदा हुए। मुहतरम नाना हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उनके कानों में अज़ान कही, उनकी वालिदा हज़रत अस्मा बिन्ते अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) हैं। मुक़ामे क़ुबा में उनको जनाब आँहज़रत (ﷺ) ने छुहारा चबाकर अपने लुआबे दहन के साथ उनके मुँह में डाला और बरकत की दुआ की। बहुत ही बारुअब साफ़ चेहरे वाले मोटे ताज़े बड़े क़वी बहादुर थे। उनकी दादी हज़रत सफ़िया (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की फूफी थीं। उनकी ख़ाला हज़रत आइशा (रज़ि.) थीं। आठ साल की उम्र में हुज़ूर (ﷺ) से बेअत की और उन्होंने आठ हज्ज किये और हज्जाज बिन यूसुफ़ ने उनको मक्का में मंगल के दिन 17 जमादिष्षानी सन् 73 हिजरी को शहीद कर डाला। ऐसी ही ज़ालिमाना हरकतों से अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार होकर हज्जाज बिन यूसुफ़ बड़ी ज़िल्लत की मौत मरा। उसने जिस बुज़ुर्ग को आख़िर में ज़ुल्म से क़त्ल किया, वो हज़रत सईद बिन ज़ुबैर (रज़ि.) हैं। जब भी हज्जाज बिन यूसुफ़ सोता, हज़रत सईद ख़्वाब में आकर उसका पाँव पकड़कर हिला देते और अपने ख़ूने नाहक़ की याद दिलाते। **इन्न फ़ी ज़ालिक ल इब्रतल् लि ऊलिल् अब्सार** (आले इमरान : 13)

٤٢٩٦ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ

4296. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान

किया, उनसे यज़ीद बिन अबी ह़बीब ने, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़तहे-मक्का के मौक़े पर मक्का मुकर्रमा में फ़र्माया था कि अल्लाह और उसके रसूल ने शराब की ख़रीद व फ़रोख़्त मुत्लक़ ह़राम क़रार दे दी है। (राजेअ़ : 2236)

يَزِيدَ بْنَ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ عَامَ الْفَتْحِ وَهُوَ بِمَكَّةَ : ((إِنَّ اللهَ وَرَسُولَهُ حَرَّمَ بَيْعَ الْخَمْرِ)). [راجع: ٢٢٣٦]

तश्रीह : या'नी अल्लाह ने जैसे शराब पीना ह़राम किया है वैसे ही शराब की तिजारत भी ह़राम कर दी है। जो लोग मुसलमान कहलाने के बावजूद ये धंधा करते हैं वो इन्दल्लाह सख़्ततरीन मुज्रिम हैं।

बाब 53 : फ़तहे-मक्का के ज़माने में नबी करीम (ﷺ) का मक्का में क़याम करना

٥٣- باب مَقَامِ النَّبِيِّ ﷺ بِمَكَّةَ زَمَنَ الْفَتْحِ

4297. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया (दूसरी सनद) और हमसे क़ुबैसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे यह़्या बिन अबी इस्ह़ाक़ ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के साथ (मक्का में) दस दिन ठहरे थे और उस मुद्दत में हम नमाज़ क़स्र करते थे। (राजेअ़ : 1081)

٤٢٩٧- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ ح.
٠٠٠٠- وَحَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : أَقَمْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَشْرًا نَقْصُرُ الصَّلاَةَ.[راجع: ١٠٨١]

यहाँ रावी ने सिर्फ़ क़यामे मक्का के दिन शुमार किये वरना स़ह़ीह़ यही है कि आपने 19 दिन क़याम किया था और मिना व अ़रफ़ात के दिन छोड़ दिये हैं।

4298. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको आ़सिम ने ख़बर दी, उन्हें इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मक्का में उन्नीस दिन क़याम फ़र्माया था और उस मुद्दत में सिर्फ़ नमाज़ दो रकअ़तें (क़स्र) पढ़ते थे। (राजेअ़ : 1080)

٤٢٩٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ : أَخْبَرَنَا عَاصِمٌ عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُما قَالَ: أَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ بِمَكَّةَ تِسْعَةَ عَشَرَ يَوْمًا يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ. [راجع: ١٠٨٠]

तश्रीह : रिवायत में साफ़ मज़्कूर है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने बह़ालते सफ़र उन्नीस दिन के क़याम में नमाज़े क़स्र अदा की थी, अहले ह़दीष़ का यही मसलक है। फ़तहे-मक्का की तफ़्सीलात लिखते हुए अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह.) फ़र्माते हैं कि फ़तहे-मक्का के बाद रसूले करीम (ﷺ) ने अमने-आ़म का ऐलान फ़र्मा दिया मगर नौ आदमी ऐसे थे जिनके क़त्ल का हुक्म स़ादिर फ़र्माया। अगरचे वो का'बा के पर्दों में छुपे हुए पाए जाएँ। वो ये थे, अ़ब्दुल्लाह बिन सअ़द बिन अबी सुरह़, इक्रिमा बिन अबी जहल, अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन ख़त़ल, ह़ारिष़ बिन नुफ़ैल, मुक़ैस बिन स़ाबा, हिबार बिन अस्वद और इब्ने ख़त़ल की दो लौण्डियाँ जो रसूले करीम (ﷺ) की हिज्व के गीत गाया करती थीं और सारा नामी एक (कुछ के नज़दीक) बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब की लौण्डी। क़यामे अमन के लिये उन फ़सादियों का ख़ात्मा ज़रूरी थी। जब उन लोगों ने ख़बर सुनी तो इक्रिमा बिन अबी जहल सुनते ही फ़रार हो गया मगर उसकी औरत ने उसके लिये अमन त़लब किया और आप (ﷺ) ने अमन दे दिया, वो मुसलमान हो गया, बाद में उनका इस्लाम बहुत बेहतर ष़ाबित हुआ। जंगे यरमूक में सन 13 हिजरी में बउ़म्र 62 साल शहीद

हुए। बाक़ी उनमें सिर्फ़ इब्ने ख़तल, हारिष़, मुक़ैस और हारिष़ की वो दो लौण्डियाँ क़त्ल की गईं, बाक़ी इस्लाम क़ुबूल करके बच गये। उन ही अय्याम फ़तहे-मक्का में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने उ़ज़्ज़ा बुत का ख़ात्मा किया था जिसमें एक औ़रत (चुड़ैल क़िस्म की) निकली और उसे भी क़त्ल किया। उ़ज़्ज़ा क़ुरैश और बनू किनाना का सबसे बड़ा बुत था। हज़रत अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने सुवाअ़ नामी बुत को ख़त्म किया और सअ़द बिन ज़ैद अश्हली (रज़ि.) के हाथों मनात बुत को ख़त्म कराया गया। उसमें से भी एक चुड़ैल निकली थी जो क़त्ल कर दी गई। (मुख़्तसर ज़ादुल मआ़द)

4299. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे अबू शिहाब ने बयान किया, उनसे आ़सिम ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ सफ़र में (फ़तहे-मक्का के बाद) उन्नीस दिन तक मुक़ीम रहे और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि हम (सफ़र में) उन्नीस दिन तक तो नमाज़े क़स्र पढ़ते थे, लेकिन जब उससे ज़्यादा मुद्दत गुज़र जाती तो फिर पूरी नमाज़ पढ़ते थे। (राजेअ़ : 1080)

٤٢٩٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : أَقَمْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ تِسْعَ عَشْرَةَ، نَقْصُرُ الصَّلاَةَ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : وَنَحْنُ نَقْصُرُ مَا بَيْنَنَا وَبَيْنَ تِسْعَ عَشْرَةَ فَإِذَا زِدْنَا أَتْمَمْنَا.

[راجع: ١٠٨٠]

तश्रीह : इसी ह़दीष़ की बिना पर सफ़र में नमाज़ उन्नीस दिन तक क़स्र की जा सकती है, ये आख़िरी मुद्दत है। इससे ज़्यादा क़याम का इरादा हो तो पूरी नमाज़ पढ़नी चाहिये। जमाअ़ते अहले ह़दीष़ का अ़मल यही है।

बाब 54 :

٥٤- باب

4300. और लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझको अ़ब्दुल्लाह बिन ष़अलबा बिन सुऐ़द (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़तहे-मक्का के दिन उनके चेहरे पर (शफ़क़त की राह से) हाथ फेरा था। (दीगर मक़ाम : 6256)

٤٣٠٠- وَقَالَ اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ ثَعْلَبَةَ بْنِ صُعَيْرٍ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ قَدْ مَسَحَ وَجْهَهُ عَامَ الْفَتْحِ. [طرفه في :٦٢٥٦].

इमाम बुख़ारी (रह) ने इख़्तिसार के लिये अस़ल ह़दीष़ बयान नहीं की। सिर्फ़ इसी जुम्ला (बात) पर इक्तिफ़ा की कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़तहे-मक्का के साल उनके चेहरे पर हाथ फेरा था।

4301. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने और उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सुफ़यान ने, उन्हें अबू जमीला ने, ज़ुह्री ने बयान किया कि जब हमसे अबू जमीला (रज़ि.) ने ह़दीष़ बयान की तो हम सईद बिन मुसय्यिब के साथ थे। बयान किया कि अबू जमीला (रज़ि.) ने कहा कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) की सुह़्बत पाई और वो आपके साथ ग़ज़्व-ए-फ़तहे-मक्का के लिये निकले थे।

٤٣٠١- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سُنَيْنٍ أَبِي جَمِيلَةَ قَالَ: أَخْبَرَنَا وَنَحْنُ مَعَ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، قَالَ، وَزَعَمَ أَبُو جَمِيلَةَ أَنَّهُ أَدْرَكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَخَرَجَ مَعَهُ عَامَ الْفَتْحِ.

इब्ने मन्दह और अबू नुऐ़म और इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने भी उन अबू जमीला (रज़ि.) को स़ह़ाबा में ज़िक्र किया है और ये कहा है कि ह़ज्जतुल विदाअ़ में ये जनाब नबी करीम (ﷺ) के साथ थे।

४٣٠٢ - حدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ سَلَمَةَ قَالَ : قَالَ لِي أَبُو قِلاَبَةَ أَلاَ تَلْقَاهُ فَتَسْأَلَهُ، قَالَ: فَلَقِيتُهُ فَسَأَلْتُهُ، فَقَالَ: كُنَّا بِمَاءٍ مَمَرَّ النَّاسِ وَكَانَ يَمُرُّ بِنَا الرُّكْبَانُ فَنَسْأَلُهُمْ مَا لِلنَّاسِ، مَا لِلنَّاسِ مَا هَذَا الرَّجُلُ؟ فَيَقُولُونَ : يَزْعُمُ أَنَّ اللهَ أَرْسَلَهُ أَوْحَى إِلَيْهِ أَوْ أَوْحَى اللهُ بِكَذَا، فَكُنْتُ أَحْفَظُ ذَلِكَ الْكَلاَمَ، وَكَأَنَّمَا يُغْرَى فِي صَدْرِي وَكَانَتِ الْعَرَبُ تَلَوَّمُ بِإِسْلاَمِهِمُ الْفَتْحَ، فَيَقُولُونَ : اتْرُكُوهُ وَقَوْمَهُ فَإِنَّهُ إِنْ ظَهَرَ عَلَيْهِمْ فَهُوَ نَبِيٌّ صَادِقٌ فَلَمَّا كَانَتْ وَقْعَةُ أَهْلِ الْفَتْحِ بَادَرَ كُلُّ قَوْمٍ بِإِسْلاَمِهِمْ وَبَدَرَ أَبِي قَوْمِي بِإِسْلاَمِهِمْ، فَلَمَّا قَدِمَ قَالَ: جِئْتُكُمْ وَاللهِ مِنْ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَقًّا فَقَالَ: ((صَلُّوا صَلاَةَ كَذَا، فِي حِينَ كَذَا وَصَلُّوا كَذَا فِي حِينِ كَذَا فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَلْيُؤَذِّنْ أَحَدُكُمْ وَلْيَؤُمَّكُمْ أَكْثَرُكُمْ قُرْآنًا)) فَنَظَرُوا فَلَمْ يَكُنْ أَحَدٌ أَكْثَرَ قُرْآنًا مِنِّي لِمَا كُنْتُ أَتَلَقَّى مِنَ الرُّكْبَانِ، فَقَدَّمُونِي بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَأَنَا ابْنُ سِتٍّ أَوْ سَبْعِ سِنِينَ وَكَانَتْ عَلَيَّ بُرْدَةٌ كُنْتُ إِذَا سَجَدْتُ تَقَلَّصَتْ عَنِّي فَقَالَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الْحَيِّ : أَلاَ تُغَطُّوا عَنَّا اسْتَ قَارِئِكُمْ؟ فَاشْتَرَوْا فَقَطَعُوا لِي قَمِيصًا فَمَا فَرِحْتُ بِشَيْءٍ فَرَحِي بِذَلِكَ الْقَمِيصِ.

4302. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने और उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अ़म्र बिन सलमा (रज़ि.) ने, अय्यूब ने कहा कि मुझसे अबू क़िलाबा ने कहा, अ़म्र बिन सलमा (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर ये क़िस्सा क्यूँ नहीं पूछते? अबू क़िलाबा ने कहा कि फिर मैं उनकी ख़िदमत में गया और उनसे सवाल किया, उन्होंने कहा कि जाहिलियत में हमारा क़याम एक चश्मा पर था जहाँ आ़म रास्ता था। सवार हमारे क़रीब से गुज़रते तो हम उनसे पूछते, लोगों का क्या ख़्याल है, उस शख़्स का क्या मामला है? (ये इशारा नबी करीम (ﷺ) की त़रफ़ होता था।) लोग बताते कि वो कहते हैं कि अल्लाह ने उन्हें अपना रसूल बनाकर भेजा है और अल्लाह उन पर वह्य नाज़िल करता है, या अल्लाह ने उन पर वह्य नाज़िल की है (वो क़ुर्आन की कोई आयत सुनाते) मैं वो फ़ौरन याद कर लेता, उसकी बातें मेरे दिल को लगती थीं। इधर सारे अ़रब वाले फ़तहे-मक्का पर अपने इस्लाम को मौक़ूफ़ किये हुए थे। उनका कहना ये था कि इस नबी को और उसकी क़ौम (क़ुरैश) को निमटने दो, अगर वो उन पर ग़ालिब आ गये तो फिर वाक़ई वो सच्चे नबी हैं । चुनाँचे जब मक्का फ़तह हो गया तो हर क़ौम ने इस्लाम लाने में पहल की और मेरे वालिद ने भी मेरी क़ौम के इस्लाम में जल्दी की। फिर जब वो (मदीना) से वापस आए तो कहा कि मैं अल्लाह की क़सम एक सच्चे नबी के पास से आ रहा हूँ। उन्होंने फ़र्माया कि फ़लाँ नमाज़ इस त़रह फ़लाँ वक़्त पढ़ा करो और जब नमाज़ का वक़्त हो जाए तो तुममें से कोई एक शख़्स अज़ान दे और इमामत वो करे जिसे क़ुर्आन सबसे ज़्यादा याद हो लोगों ने अंदाज़ा किया कि किसे क़ुर्आन सबसे ज़्यादा याद है तो कोई शख़्स (उनके क़बीले में) मुझसे ज़्यदा क़ुर्आन याद करने वाला नहीं मिला। क्योंकि मैं आने जाने वाले सवारों से सुनकर क़ुर्आन मजीद याद कर लिया करता था। इसलिये मुझे लोगों ने इमाम बनाया। ह़ालाँकि उस वक़्त मेरी उ़म्र छ: या सात साल की थी और मेरे पास एक ही चादर थी, जब मैं (उसे लपेटकर) सज्दा करता तो ऊपर हो जाती (और पीछे की जगह) खुल जाती। उस क़बीले की एक औ़रत ने कहा, तुम अपने क़ारी का कूल्हा तो पहले छुपा दो।

आख़िर उन्होंने कपड़ा ख़रीदा और मेरे लिये एक क़मीस़ बनाई, मैं जितना ख़ुश उस क़मीस़ से हुआ उतना किसी और चीज़ से नहीं हुआ था।

तश्रीह : इससे अहले ह़दीष़ और शाफ़िइया का मज़हब षाबित होता है कि नाबालिग़ लड़के की इमामत दुरुस्त है और जब वो तमीज़दार हो फ़राइज़ और नवाफ़िल सब में और उसमें ह़न्फ़िया ने ख़िलाफ़ किया है। फ़राइज़ में इमामत जाइज़ नहीं रखी (वह़ीदी)। रिवायत में लफ़्ज़, **फ़कुन्तु अह़फ़ज़ु ज़ालिकल्कलाम व कअन्नमा युग़री फ़ी स़दरी**। पस मैं उस कलामे कुर्आन को याद कर लेता जैसे कोई मेरे सीने में उतार देता। कुछ लोग तर्जुमा यूँ करते हैं जैसे कोई मेरे सीने में चिपका देता या कूट कर भर देता। ये कई तर्जुमे इस बिना पर हैं कि कुछ नुस्ख़ों में **युग़री फ़ी स़दरी** है कुछ में **युक़र्रू फ़ी स़दरी** है, कुछ में **युक़रउ फ़ी स़दरी** है। अ़रबों की क़मीस़ साथ ही तहबन्द का काम भी दे देती है। इसीलिये कि रिवायत में सिर्फ़ क़मीस़ बनाने का ज़िक्र है। या'नी वो टख़नों तक लम्बी होती है जिसके बाद तहबन्द न हो तब भी जिस्म छुप जाता है।

4303. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया, नबी करीम (ﷺ) से (दूसरी सनद) और लैष़ बिन सअ़द ने कहा मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उ़त्बा बिन अबी वक़्क़ास़ ने (मरते वक़्त ज़मान-ए-जाहिलियत में) अपने भाई (सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि.) को वस़िय्यत की थी कि वो ज़म्आ बिन लैसी की बांदी से पैदा होने वाले बच्चे को अपने क़ब्ज़े में ले लें। उ़त्बा ने कहा कि वो मेरा लड़का होगा। चुनाँचे जब फ़तहे-मक्का के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में दाख़िल हुए तो सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) उस बच्चे को लेकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उनके साथ अ़ब्द बिन ज़म्आ भी आए। सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) ने तो ये कहा ये मेरे भाई का लड़का है। भाई ने वस़िय्यत की थी कि उसी का लड़का है। लेकिन अ़ब्द बिन ज़म्आ ने कहा कि या रसूलल्लाह! ये मेरा भाई है (मेरे वालिद) ज़म्आ का बेटा है क्योंकि उन्हीं के बिस्तर पर पैदा हुआ है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ज़म्आ की बांदी के लड़के को देखा तो वो वाक़ई (सअ़द का भाई) उ़त्बा बिन अबी वक़्क़ास़ की शक्ल पर था लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने (क़ानूने शरीअ़त के मुत़ाबिक़) फ़ैस़ला ये किया कि ऐ अ़ब्द बिन ज़म्आ! तुम्हीं इस बच्चे को रखो, ये तुम्हारा भाई है, क्योंकि ये तुम्हारे वालिद के फ़राश पर (उसकी बांदी के बत़न से पैदा हुआ है। लेकिन दूसरी त़रफ़ उम्मुल मोमिनीन सौदा (रज़ि.) से जो

٤٣٠٣- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ : أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ : كَانَ عُتْبَةُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ عَهِدَ إِلَى أَخِيهِ سَعْدٍ أَنْ يَقْبِضَ ابْنَ وَلِيدَةِ زَمْعَةَ، وَقَالَ عُتْبَةُ : إِنَّهُ ابْنِي، فَلَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَكَّةَ فِي الْفَتْحِ أَخَذَ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ ابْنَ وَلِيدَةِ زَمْعَةَ، فَأَقْبَلَ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَأَقْبَلَ مَعَهُ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ، فَقَالَ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ: هَذَا ابْنُ أَخِي عَهِدَ إِلَيَّ أَنَّهُ ابْنُهُ. قَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ : يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا أَخِي هَذَا ابْنُ زَمْعَةَ وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ فَنَظَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى ابْنِ وَلِيدَةِ زَمْعَةَ فَإِذَا أَشْبَهُ النَّاسِ بِعُتْبَةَ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هُوَ لَكَ هُوَ أَخُوكَ يَا عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ)) مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ

ज़म्आ की बेटी थीं फ़र्माया सौदा! उस लड़के से पर्दा किया करना क्योंकि आपने उस लड़के में उत्बा बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) की शबाहत पाई थी। इब्ने शिहाब ने कहा उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था, लड़का उसका होता है जिसकी बीवी या लौण्डी के पेट से पैदा हुआ हो और ज़िना करने वाले के हिस्से में पत्थर ही हैं। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) इस हदीष़ को पुकार पुकारकर बयान किया करते थे।

(राजेअ़ : 2053)

وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((احْتَجِبِي مِنْهُ يَا سَوْدَةُ)) لِمَا رَأَى مِنْ شَبَهِ عُتْبَةَ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: قَالَتْ عَائِشَةُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ)). وَقَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يَصِيحُ بِذَلِكَ.

[راجع: ٢٠٥٣]

तश्रीह : हदीष़ में एक मौक़े पर रसूले करीम (ﷺ) के फ़तहे मक्का में मक्का में दाख़िले का ज़िक्र है। बाब से मुताबक़त यही है कि हदीष़ से एक इस्लामी क़ानून का भी इष़्बात हुआ कि बच्चा जिस बिस्तर पर पैदा हो बिस्तर वाले का माना जाएगा, ज़ानी के लिये संगसारी है और बच्चा बिस्तर वाले का है। इस क़ानून की वुस्अत पर ग़ौर करने से मा'लूम होगा कि इससे कितनी बुराइयों का सद्दे-बाब (निराकरण) हो गया है। बिस्तर का मतलब ये भी है कि जिसकी बीवी या लौण्डी के बतन से वो बच्चा पैदा हुआ है वो उसका माना जाएगा। हज़रत सौदा नामी ख़ातून बिन्ते ज़म्आ उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) हैं । ये अपने चचा के बेटे सकरान बिन उमर (रज़ि.) के निकाह में थीं। उनके इंतिक़ाल पर आँहज़रत (ﷺ) के हरम में दाख़िल हुईं। आपका निकाह हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की वफ़ात के बाद हज़रत आइशा (रज़ि.) के निकाह से पहले हुआ। माहे शव्वाल सन् 54 हिजरी में मदीना में उनका इंतिक़ाल हुआ। रज़ियल्लाहु अन्हा।

4304. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा कि मुझे उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी कि ग़ज़्व-ए- फ़तहे (मक्का) के मौक़े पर एक औरत ने नबी करीम (ﷺ) के अहद में चोरी कर ली थी। उस औरत की क़ौम घबराई हुई उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) के पास आई ताकि वो हुज़ूर (ﷺ) से इसकी सिफ़ारिश कर दें (कि उसका हाथ चोरी के जुर्म में न काटा जाए) उर्वा ने बयान किया कि जब उसामा (रज़ि.) ने उसके बारे में आँहुज़ूर (ﷺ) से बातचीत की तो आप (ﷺ) के चेहरे मुबारक का रंग बदल गया और आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम मुझसे अल्लाह की क़ायम की हुई एक हद के बारे में सिफ़ारिश करने आए हो। उसामा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, मेरे लिये दुआ-ए-मग़्फ़िरत कीजिए, या रसूलल्लाह! फिर दोपहर बाद आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) को ख़िताब किया, अल्लाह तआ़ला की उसके शान के मुताबिक़ ता'रीफ़ करने के बाद फ़र्माया, अम्मा बअ़द! तुममें से पहले लोग इसलिये हलाक हो गये कि अगर उनमें से कोई

٤٣٠٤ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ امْرَأَةً سَرَقَتْ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ الْفَتْحِ، فَفَزِعَ قَوْمُهَا إِلَى أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ يَسْتَشْفِعُونَهُ قَالَ عُرْوَةُ: فَلَمَّا كَلَّمَهُ أُسَامَةُ فِيهَا تَلَوَّنَ وَجْهُ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَتُكَلِّمُنِي فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ؟)) قَالَ أُسَامَةُ : اسْتَغْفِرْ لِي يَا رَسُولَ اللهِ فَلَمَّا كَانَ الْعَشِيُّ قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ خَطِيبًا فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّمَا أَهْلَكَ النَّاسَ قَبْلَكُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا

मुअज़्ज़ज़ शख़्स चोरी करता तो उसे छोड़ देते लेकिन अगर कोई कमज़ोर चोरी कर लेता तो उस पर हद क़ायम करते और उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है अगर फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (रज़ि.) भी चोरी कर ले तो मैं उसका हाथ काटूँगा। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने उस औरत के लिये हुक्म दिया और उनका हाथ काट दिया गया। फिर उस औरत ने सिद्क़ (सच्चे) दिल से तौबा कर ली और शादी भी कर ली। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बाद में वो मेरे यहाँ आती थीं। उनको और कोई ज़रूरत होती तो मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने पेश कर देती। (राजेअ़ : 2648)

سرق فِيهِمُ الضَّعِيفُ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ، وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ، لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعْتُ يَدَهَا)) ثُمَّ أَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِتِلْكَ الْمَرْأَةِ فَقُطِعَتْ يَدُهَا فَحَسُنَتْ تَوْبَتُهَا بَعْدَ ذَلِكَ، وَتَزَوَّجَتْ قَالَتْ عَائِشَةُ ؓ فَكَانَتْ تَأْتِينِي بَعْدَ ذَلِكَ فَأَرْفَعُ حَاجَتَهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ. [راجع: ٢٦٤٨]

तश्रीह : इमाम अहमद की रिवायत में है कि उस औरत ने ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया था कि हुज़ूर (ﷺ) क्या मेरी तौबा क़ुबूल हो सकती है? आपने फ़र्माया आज तो तू ऐसी है जैसे उस दिन थी जिस दिन माँ के पेट से पैदा हुई थी। हुदूदे इस्लामी का पसेमंज़र ही ये है उनके क़ायम होने के बाद मुजरिम गुनाह से बिलकुल पाक साफ़ होकर मक़्बूले इलाही हो जाता है और हुदूद के क़ायम होने से जराइम का सद्दे-बाब भी हो जाता है। जैसा कि मम्लकते सऊदिया अय्यदल्लाहु बि नस्रिही में मौजूद है, जहाँ हुदूदे शरई क़ायम होते हैं। इसलिये जराइम (अपराध) बहुत कम पाए जाते हैं। आयते शरीफ़ा **फ़िल्क़िसासि हयातुय्याउलिल्अल्बाब** (अल बक़र : 179) में इसी तरफ़ इशारा है। रिवायत में जिस औरत का मुक़द्दमा मज़्कूर है उसका नाम फ़ातिमा मख़ज़ूमिया था, बाद में बनू सुलैम के एक शख़्स से उसने शादी भी कर ली थी।

4305, 4306. हमसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने बयान किया, कहा हमसे आसिम बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू उष्मान नहदी ने बयान किया और उनसे मुजाशेअ़ बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़तहे-मक्का के बाद मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अपने भाई (मुजालिद) को लेकर हाज़िर हुआ और अर्ज़ की कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं उसे इसलिये लेकर हाज़िर हुआ हूँ ताकि आप हिजरत पर उससे बेअ़त ले लें। हु ज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया हिजरत करने वाले उसकी फ़ज़ीलत व ष़वाब को हासिल कर चुके (या'नी अब हिजरत करने का ज़माना तो गुज़र चुका) मैंने अर्ज़ किया, फिर आप उससे किस चीज़ पर बेअ़त लेंगे? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ईमान, इस्लाम और जिहाद पर। अबी उष्मान नहदी ने कहा कि फिर मैं (मुजाशेअ़ के भाई) अबू सईद मुजालिद से मिला वो दोनों भाईयों से बड़े थे, मैंने उनसे भी इस हदीष़ के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मुजाशेअ़ ने हदीष़ ठीक तरह बयान की है। (राजेअ़ : 2962, 2963)

٤٣٠٥، ٤٣٠٦- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ حَدَّثَنِي مُجَاشِعٌ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَخِي بَعْدَ الْفَتْحِ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ جِئْتُكَ بِأَخِي لِتُبَايِعَهُ عَلَى الْهِجْرَةِ قَالَ: ((ذَهَبَ أَهْلُ الْهِجْرَةِ بِمَا فِيهَا)) فَقُلْتُ عَلَى أَيِّ شَيْءٍ تُبَايِعُهُ؟ قَالَ: ((أُبَايِعُهُ عَلَى الإِسْلاَمِ، وَالإِيمَانِ وَالْجِهَادِ)) فَلَقِيتُ أَبَا مَعْبَدٍ بَعْدُ وَكَانَ أَكْبَرَهُمَا فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ: صَدَقَ مُجَاشِعٌ. [راجع: ٢٩٦٢، ٢٩٦٣]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि सहाबा व ताबेईन के पाक ज़मानों में अहादीषे नबवी के मुज़ाकरात मुसलमानों में जारी रहा करते थे और वो अपने अकाबिर से अहादीष की तस्दीक़ कराया भी करते थे। इस तरह से अहादीषे नबवी का ज़ख़ीरा सहीह हालत में क़यामत तक के वास्ते महफ़ूज़ हो गया जिस तरह क़ुर्आन मजीद महफ़ूज़ है और ये सदाक़ते मुहम्मदी का एक बड़ा षुबूत है। जो लोग अहादीषे सहीहा का इंकार करते हैं, दरहक़ीक़त इस्लाम के नादान दोस्त हैं और वो इस तरह पैग़म्बरे इस्लाम (ﷺ) के पाकीज़ा हालाते ज़िन्दगी को मिटा देना चाहते हैं मगर उनकी ये नापाक कोशिश कभी कामयाब न होगी। इस्लाम और क़ुर्आन के साथ अहादीषे मुहम्मदी का पाक ज़ख़ीरा भी हमेशा महफ़ूज़ रहेगा। इसी तरह बुख़ारी शरीफ़ के साथ ख़ादिम का ये आम फ़हम तर्जुमा भी कितने पाक नुफ़ूस (पवित्र लोगों) के लिये ज़रिय-ए-हिदायत बनता रहेगा। इंशाअल्लाहुल् अज़ीज़।

٤٣٠٨،٤٣٠٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ عَنْ مُجَاشِعِ بْنِ مَسْعُودٍ انْطَلَقْتُ بِأَبِي مَعْبَدٍ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ لِيُبَايِعَهُ عَلَى الْهِجْرَةِ قَالَ: ((مَضَتِ الْهِجْرَةُ لأَهْلِهَا أُبَايِعُهُ عَلَى الإِسْلاَمِ، وَالْجِهَادِ)) فَلَقِيتُ أَبَا مَعْبَدٍ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ : صَدَقَ مُجَاشِعٌ. وَقَالَ خَالِدٌ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ مُجَاشِعٍ : إِنَّهُ جَاءَ بِأَخِيهِ مُجَالِدٍ.

[راجع: ٢٩٦٢، ٢٩٦٣]

4307,4308. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे आसिम बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू उष्मान नह्दी ने और उनसे मुजाशेअ बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि मैं अपने भाई (अबू मअबद रज़ि.) को नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आपसे हिजरत पर बेअत कराने के लिये ले गया। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हिजरत का षवाब तो हिजरत करने वालों के साथ ख़त्म हो चुका। अल्बत्ता मैं उससे इस्लाम और जिहाद पर बेअत लेता हूँ। अबू उष्मान ने कहा कि फिर मैंने अबू सईद (रज़ि.) से मिलकर उनसे इसके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मुजाशेअ (रज़ि.) ने ठीक बयान किया और ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने भी अबू उष्मान से बयान किया, उनसे मुजाशेअ (रज़ि.) ने कि वो अपने भाई मुजालिद (रज़ि.) को लेकर आए थे, (फिर हदीष को आख़िर तक बयान किया। उसको इस्माईल ने वस्ल किया है)

(राजेअ : 2962, 2963)

٤٣٠٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قُلْتُ لاِبْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُهَاجِرَ إِلَى الشَّامِ، قَالَ: لاَ هِجْرَةَ، وَلَكِنْ جِهَادٌ، فَانْطَلِقْ فَاعْرِضْ نَفْسَكَ فَإِنْ وَجَدْتَ شَيْئًا وَإِلاَّ رَجَعْتَ.

[راجع: ٣٨٩٩]

4309. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने और उनसे मुजाहिद ने कि मैंने इब्ने उमर (रज़ि.) से अर्ज़ किया कि मेरा इरादा है कि मुल्के शाम को हिजरत कर जाऊँ। फ़र्माया, अब हिजरत बाक़ी नहीं रही, जिहाद ही बाक़ी रह गया है। इसलिये जाओ और ख़ुद को पेश करो। अगर तुमने कुछ पा लिया तो बेहतर वरना वापस आ जाना।

(राजेअ : 3899)

٤٣١٠- وَقَالَ النَّضْرُ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ، قَالَ : سَمِعْتُ مُجَاهِدًا،

4310. नज़्र ने बयान किया कि हमें शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें अबू बिश्र ने ख़बर दी, उन्होंने मुजाहिद से सुना कि जब मैंने अब्दुल्लाह

बिन उमर (रज़ि.) से अर्ज़ किया तो उन्होंने कहा कि अब हिजरत बाक़ी नहीं रही या (फ़र्माया कि) रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद फिर हिजरत कहाँ रही। (अगली रिवायत की तरह बयान किया) (राजेअ: 3899)

قُلْتُ لاِبْنِ عُمَرَ: فَقَالَ: لاَ هِجْرَةَ الْيَوْمَ أَوْ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِثْلَهُ. [راجع: ٣٨٩٩]

4311. मुझसे इस्हाक़ बिन यज़ीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन हम्ज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू अम्र औज़ाई ने बयान किया, उनसे अब्दह बिन अबी लुबाबा ने, उनसे मुजाहिद बिन जबर मक्की ने कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) कहा करते थे कि फ़तहे-मक्का के बाद हिजरत बाक़ी नहीं रही। (राजेअ: 3899)

٤٣١١- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو عَمْرٍو الأَوْزَاعِيُّ عَنْ عَبْدَةَ بْنِ أَبِي لُبَابَةَ عَنْ مُجَاهِدِ بْنِ جَبْرٍ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَ يَقُولُ : لاَ هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَتْحِ. [راجع: ٣٨٩٩]

तश्रीह : ये हुक्मे मदनी हिजरत की बाबत है। अगर अहले इस्लाम के लिये किसी भी इलाक़े में मक्का में जैसे हालात पैदा हो जाएँ तो दारुल अमन की तरफ़ वो अब भी हिजरत कर सकते हैं। जिससे उनको यक़ीनन हिजरत का षवाब मिल सकता है। मगर **इन्नमल आ'मालु बिन्नियात** को सामने रखना ज़रूरी है।

4312. हमसे इस्हाक़ बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, उनसे अता बिन अबी रिबाह ने बयान किया कि मैं उबैद बिन उमैर के साथ हज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उबैद ने उनसे हिजरत का मसला पूछा तो उन्होंने कहा कि अब हिजरत बाक़ी नहीं रही, पहले मुसलमान अपना दीन बचाने के लिये अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ पनाह लेने के लिये आते थे, इस डर से कि कहीं दीन की वजह से फ़ित्ना में न पड़ जाएँ। इसलिये अब जबकि अल्लाह तआला ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया तो मुसलमान जहाँ भी चाहे अपने रब की इबादत कर सकता है। अब तो सिर्फ़ जिहाद और जिहाद की निय्यत का षवाब बाक़ी है। (राजेअ: 3080)

٤٣١٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ حَدَّثَنِي الأَوْزَاعِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي رَبَاحٍ، قَالَ: زُرْتُ عَائِشَةَ مَعَ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ فَسَأَلَهَا عَنِ الْهِجْرَةِ، فَقَالَتْ : لاَ هِجْرَةَ الْيَوْمَ، كَانَ الْمُؤْمِنُ يَفِرُّ أَحَدُهُمْ بِدِينِهِ إِلَى اللهِ وَإِلَى رَسُولِهِ ﷺ مَخَافَةَ أَنْ يُفْتَنَ عَلَيْهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَقَدْ أَظْهَرَ اللهُ الإِسْلاَمَ فَالْمُؤْمِنُ يَعْبُدُ رَبَّهُ حَيْثُ شَاءَ وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ. [راجع: ٣٠٨٠]

ये सवाल फ़तहे-मक्का के बाद मदीना शरीफ़ ही की तरफ़ हिजरत करने के बारे में था जिसका जवाब वो दिया गया जो रिवायत में मज़्कूर है, बाक़ी आम हैषियत से हालात के तहत दारुल कुफ़्र से दारुल इस्लाम की तरफ़ हिजरत करना बवक़्ते ज़रूरत अब भी जाइज़ है। बशर्ते कि ऐसे हालात पाए जो उसके लिये ज़रूरी हैं। ऊपर बयान की गई रिवायात में किसी न किसी पहलू से फ़तहे-मक्का का ज़िक्र हुआ है, इसीलिये उनको इस बाब के तहत लाया गया है।

4313. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम नबील ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया,

٤٣١٣- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي حَسَنُ بْنُ

مُسْلِمٍ عَنْ مُجَاهِدٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ يَوْمَ الْفَتْحِ فَقَالَ: ((إِنَّ اللهَ حَرَّمَ مَكَّةَ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ، فَهِيَ حَرَامٌ بِحَرَامِ اللهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، لَمْ تَحِلَّ لأَحَدٍ قَبْلِي وَلاَ تَحِلُّ لأَحَدٍ بَعْدِي، وَلَمْ تَحْلِلْ لِي إِلاَّ سَاعَةً مِنَ الدَّهْرِ، لاَ يُنَفَّرُ صَيْدُهَا، وَلاَ يُعْضَدُ شَوْكُهَا، وَلاَ يُخْتَلَى خَلاَهَا، وَلاَ تَحِلُّ لُقَطَتُهَا إِلاَّ لِمُنْشِدٍ)) فَقَالَ الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ: إِلاَّ الإِذْخِرَ يَا رَسُولَ اللهِ فَإِنَّهُ لاَ بُدَّ مِنْهُ لِلْقَيْنِ وَالْبُيُوتِ، فَسَكَتَ ثُمَّ قَالَ: ((إِلاَّ الإِذْخِرَ فَإِنَّهُ حَلاَلٌ)). وَعَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْكَرِيمِ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، بِمِثْلِ هَذَا أَوْ نَحْوِ هَذَا. رَوَاهُ أَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[راجع: ١٣٤٩]

कहा मुझको हसन बिन मुस्लिम ने ख़बर दी और उन्हें मुजाहिद ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़तहे-मक्का के दिन ख़ुत्बा सुनाने खड़े हुए और फ़र्माया जिस दिन अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया था, उसी दिन उसने मक्का को हुर्मत वाला शहर क़रार दे दिया था। पस ये शहर अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ क़यामत तक के लिये हुर्मत वाला रहेगा। जो मुझसे पहले कभी किसी के लिये हलाल नहीं हुआ और न मेरे बाद किसी के लिये हलाल होगा और मेरे लिये भी सिर्फ़ एक घड़ी के लिये हलाल हुआ था। यहाँ हुदूदे हरम में शिकार के क़ाबिल जानवर न छेड़े जाएँ। यहाँ के कांटेदार पेड़ न काटे जाएँ न यहाँ की घास उखाड़ी जाए और यहाँ पर गिरी पड़ी चीज़ उस शख़्स के सिवा जो ऐलान करने का इरादा रखता हो और किसी के लिये उठानी जाइज़ नहीं। इस पर हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! इज़्ख़र (घास) की इजाज़त दीजिए क्योंकि सुनारों के लिये और मकानात (की ता'मीर वग़ैरह) के लिये ये ज़रूरी है। आप ख़ामोश हो गये फिर फ़र्माया इज़्ख़र इस हुक्म से अलग है। उसका (कांटा) हलाल है। दूसरी रिवायत इब्ने जुरैज से (इसी सनद से) ऐसी ही है। उन्होंने अब्दुल करीम बिन मालिक से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने भी आँहज़रत (ﷺ) से ऐसी ही रिवायत की है। (राजेअ : 1349)

तश्रीह : मुजाहिद ताबेई हैं तो ये हदीष़ मुर्सल हुई मगर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने उसको किताबुल हुदूद किताबुल जिहाद में वस्ल किया है। मुजाहिद से, उन्होंने ताउस से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से। सदाक़ते मुहम्मदी इससे ज़ाहिर है कि मक्कतुल मुकर्रमा आज तक भी हरम है और क़यामत तक हुर्मत वाला रहेगा। आज तक किसी ग़ैर मुस्लिम हुकूमत का वहाँ क़याम नहीं हुआ और न क़यामत तक हो सकेगा। हुकूमते सऊदिया ने भी उस मुक़द्दस शहर की हुर्मत व इज़्ज़त का बहुत कुछ तहफ़्फ़ुज़ किया है। अल्लाह तआला उस हुकूमत को क़ायम दायम रखे। आमीन।

हज़रत अल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह) ने फ़तहे-मक्का को फ़तहे आज़म से ता'बीर करते हुए लिखा है, **फ़सल फ़िल्फ़त्हिल्आज़मिअल्लज़ी अअज़्ज़ल्लाहु बिही दीनहू व रसूलहू व जुन्दहू व हरमहुल्अमीन वस्तंक़ज़ बिही बलदहू व बैतहू अल्लज़ी जअलहू हुदल्लिल्आलमीन मिन अयदिल्कुफ़्फ़ारि वल्मुश्रिकीन व हुवल्फत्हुल्लज़ी इस्तब्शर बिही अहलुस्समाइ व ज़ुरिबत इत्नाबु इज़्ज़तिन अला मनाकिबिल्जौज़ार व दखलन्नासु बिही फी दीनिल्लाहि अफ़्वाज व अश्रक़ बिही वज्हुल्अर्ज़ि ज़ियाअन व इब्तिहाजन** (ज़ादुल्मआद) या'नी अल्लाह तबारक व तआला ने फ़तहे-मक्का से अपने दीन को अपने रसूल को अपनी फ़ौज को अपने अमन वाले शहर को बहुत बहुत इज़्ज़त अता फ़र्माई और शहर मक्का और ख़ाना का'बा को जो सारे जहानों के लिये ज़रिया हिदायत है उसको कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन के हाथों से आज़ादी नसीब की। ये वो फ़तह है जिसकी ख़ुशी आसमानी मख़्लूक़ ने मनाई और जिसकी इज़्ज़त के झण्डे जोज़ा सितारे पर लहराये और लोग जूक़ दर जूक़ जिसकी वजह से अल्लाह के दीन में दाख़िल हो गये जिसकी बरकत से सारी ज़मीन मुनव्वर होकर रोशनी

और मसर्रत से भरपूर हो गई। ग़ज़्व-ए-मक्का का ज़िक्र मज़ीद तफ़्सील के साथ यूँ है। ग़ज़्वाते नबवी के सिलसिले में फ़तहे-मक्का का कारनामा (गो सहीह मा'नी में ग़ज़्वा वो भी नहीं) कहना चाहिये कि सबसे बड़ा कारनामा है और लड़ाइयाँ छोटी बड़ी जितनी भी हुई सबका मर्कज़ी नुक़्ता यही था। सुलह हुदैबिया का ज़माना फ़तहे-मक्का से कोई दो साल पहले का है। क़ुर्आन मजीद ने पेशख़बरी उसी वक़्त तअय्युन के साथ कर दी थी, **इन्ना फतहना लक फत्हम्मुबीना** (अल् फ़तह : 1) बेशक मैंने ऐ पैग़म्बर! आपको एक फ़तह दे दी खुली हुई, फ़तह आयत में गो इशार-ए-क़रीब सुलह हुदैबिया की जानिब है लेकिन सब जानते हैं कि इशार-ए-बईद फ़तहे-मक्का की जानिब है। अरब अब जूक़ दर जूक़ ईमान ला रहे थे और क़बीले पर क़बीले इस्लाम में दाख़िल होते जा रहे थे। फ़तहे-मक्का चीज़ ही ऐसी थी। क़ुर्आन मजीद ने उसकी अपनी ज़ुबाने बलीग़ में यूँ नक़्शा-कशी की है, **इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि वल्फत्हु व राअयतन्नास यदखुलून फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा** (अन् नस्र : 1–2) जब आ गई अल्लाह की मदद और फ़तहे-मक्का और आपने लोगों को देख लिया कि फ़ौज की फ़ौज अल्लाह की दीन में दाख़िल हो रहे हैं और ख़ैर ये सूरत तो फ़तहे-मक्का के बाद वाक़ेअ हुई ख़ुद फ़तह इस तरह हासिल हुई कि गो आँहुज़ूर (ﷺ) के साथ दस हज़ार सहाबियों का लश्कर था और अरब के बड़े बड़े पुर क़ुव्वत क़बीले अपने अलग अलग जैश बनाते हुए और अपने अपने परचम उड़ाते हुए जुलूस में थे लेकिन ख़ूँरेंज़ी दुश्मन के उस शहर बल्कि दारुल हुकूमत मे बराय नाम ही होने पाई और शहर पर क़ब्ज़ा बग़ैर ख़ून की नदियाँ बहे गोया चुपचाप हो गया। **हुवल्लज़ी कफ़्फ़ अयदीहिम अन्कुम व अयदीकुम अन्हुम बिबत्नि मक्कत मिम्बअदि अन अज़्फरकुम अलैहिम** (अल फ़त्ह : 24) वो अल्लाह वही है जिसने रोक दिये उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे शहरे मक्का में बाद उसके कि तुमको उसने उन पर फ़तह मन्द कर दिया था। इस आयत में इशारा जहाँ बक़ौले शारेहीन के हुदैबिया की तरफ़ है वहीं ये क़ौल कुछ दूसरे शारेहीन के ग़ैर ख़ून पर फ़तहे-मक्का की जानिब है। फ़तहे-मक्का का ये अज़ीमुश्शान और दुनिया की तारीख़ के लिये नादिर और यादगार वाक़िया रमज़ान सन् 8 हिजरी मुताबिक़ जनवरी सन् 630 ईस्वी में पेश आया। (क़ुर्आनी सीरते नबवी)

बाब 55 : जंगे हुनैन का बयान

٥٥– باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

सूरह तौबा मे है कि याद करो तुमको अपनी कष़रते ता'दाद पर घमण्ड हो गया था फिर वो कष़रत तुम्हारे कुछ काम न आईऔर तुम पर ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के तंग होने लगी, फिर तुम पीठ देकर भाग खड़े हुए, उसके बाद अल्लाह ने तुम पर अपनी तरफ़ से तसल्ली नाज़िल की ग़फ़ूरुर्रहीम तक।

﴿وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ، فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ، ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ثُمَّ أَنْزَلَ اللهُ سَكِينَتَهُ﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾

तश्रीह : हुनैन एक वादी का नाम है जो मक्का और ताइफ़ के बीच में वाक़ेअ है, वहाँ आप फ़तह के बाद छठी शव्वाल को तशरीफ़ ले गये थे। आपको ये ख़बर पहुँची थी कि मालिक बिन औफ़ ने कई क़बीले के लोग मुसलमानों से लड़ने के लिये जमा किये हैं जैसे हवाज़िन और ष़क़ीफ़ वग़ैरह। उस जंग में मुसलमानों की ता'दाद बारह हज़ार और काफ़िरों की चार हज़ार थी। मुसलमानों को अपनी कष़रते ता'दाद पर कुछ गुरूर हो गया था। अल्लाह तआला ने उस गुरूर को तोड़ने के लिये पहले मुसलमानों के अंदर काफ़िरों का डर व हिरास पैदा कर दिया बाद में आख़िरी फ़तह मुसलमानों को ही नसीब हुई।

4314. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) के हाथ में ज़ख़्म का निशान देखा फिर उन्होंने बतलाया कि मुझे ये ज़ख़्म उस वक़्त आया था जब मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-हुनैन में

٤٣١٤– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ رَأَيْتُ بِيَدِ ابْنِ أَبِي أَوْفَى ضَرْبَةً قَالَ: ضُرِبْتُهَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ حُنَيْنٍ، قُلْتُ : شَهِدْتَ حُنَيْنًا؟

शरीक था। मैंने कहा कि आप हुनैन में शरीक थे? उन्होंने कहा कि उससे भी पहले मैं कई ग़ज़्वे में शरीक हो चुका हूँ।

قَالَ: ذَلِكَ.

4315. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमसे सुफियान ष़ारी ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, कहा कि मैंने बराअ (रज़ि.) से सुना, उनके यहाँ एक शख़्स आया और उनसे कहने लगा कि ऐ अबू अम्मारा! क्या तुमने हुनैन की लड़ाई में पीठ फेर ली थी? उन्होंने कहा, मैं इसकी गवाही देता हूँ कि नबी करीम (ﷺ) अपनी जगह से नहीं हटे थे। अल्बत्ता जो लोग क़ौम में जल्दबाज़ थे, उन्होंने अपनी जल्दबाज़ी का ष़ुबूत दिया था, पस क़बीला हवाज़िन वालों ने उन पर तीर बरसाए। अबू सुफ़यान बिन हारिष़ (रज़ि.) हुज़ूर (ﷺ) के सफ़ेद ख़च्चर की लगाम थामे हुए थे और हुज़ूर (ﷺ) फ़र्मा रहे थे, मैं नबी हूँ इसमें बिलकुल झूठ नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ।

(राजेअ : 2864)

٤٣١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ وَجَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا أَبَا عُمَارَةَ أَتَوَلَّيْتَ يَوْمَ حُنَيْنٍ؟ فَقَالَ: أَمَّا أَنَا فَأَشْهَدُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ لَمْ يُوَلِّ وَلَكِنْ عَجِلَ سَرَعَانُ الْقَوْمِ فَرَشَقَتْهُمْ هَوَازِنُ. وَأَبُو سُفْيَانَ بْنُ الْحَارِثِ آخِذٌ بِرَأْسِ بَغْلَتِهِ الْبَيْضَاءِ يَقُولُ :

أَنَا النَّبِيُّ لاَ كَذِبْ

أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ

[راجع: ٢٨٦٤]

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **व अबू सुफ़्यान ब्निहारिष़ इब्नि अब्दिल्मुत्तलिब बिन हाशिम व हुव इब्नु अम्मिन्नबिय्यि (ﷺ) व कान इस्लामुहू क़ब्ल फत्हि मक्कत लिअन्नहू ख़रज इलन्नबिय्यि (ﷺ) फलक़ियहू फित्तरीक़ि व हुव साइरू इला फत्हि मक्कत फअस्लम व ह़सुन इस्लामुहू व ख़रज इला गज़्वति हुनैन फ़कान फ़ीमन षबत** (फ़त्ह़) या'नी ह़ज़रत अबू सुफ़यान बिन ह़ारिष़ बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के चचा के बेटे थे। ये मक्का फ़तह होने से पहले ही से निकल कर रास्ते में आँह़ज़रत (ﷺ) से जाकर मिले और इस्लाम क़ुबूल कर लिया और ये ग़ज़्व-ए-हुनैन में ष़ाबित क़दम रहे थे।

4316. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने कि बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से पूछा गया, मैं सुन रहा था कि तुम लोगों ने नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-हुनैन में पीठ फेर ली थी? उन्होंने कहा जहाँ तक हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का ता'ल्लुक़ है तो आपने पीठ नहीं फेरी थी। हुआ ये था कि हवाज़िन वाले बड़े तीरंदाज़ थे हुज़ूर (ﷺ) ने उस मौक़े पर फ़र्माया था मैं नबी हूँ, इसमें झूठ नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूँ। (राजेअ : 2864)

٤٣١٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قِيلَ لِلْبَرَاءِ وَأَنَا أَسْمَعُ أَوَلَّيْتُمْ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ يَوْمَ حُنَيْنٍ؟ فَقَالَ: أَمَّا النَّبِيُّ ﷺ فَلاَ، كَانُوا رُمَاةً فَقَالَ:

أَنَا النَّبِيُّ لاَ كَذِبْ

أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ

[راجع: ٢٨٦٤]

तश्रीह : आपने उस नाज़ुक मौक़े पर दुआ फ़र्माई या अल्लाह! अपनी मदद उतार। मुस्लिम की रिवायत में है कि काफ़िरों ने आपको घेर लिया आप ख़च्चर पर से उतर पड़े फिर ख़ाक की एक मुट्ठी ली और काफ़िरों के चेहरे पर मारी फ़र्माया शाहतिल वुजूह कोई काफ़िर बाक़ी न रहा, जिसकी आँख में मिट्टी न घुसी हो। आख़िर शिकस्त पाकर सब भाग निकले।

शाहतिल वुजूह का मा'नी उनके चेहरे बुरे हुए। क़स्तलानी (रह) ने कहा ये आपका एक बड़ा मोअजज़ा है। चार हज़ार काफ़िरों की आँखों पर एक मुट्ठी ख़ाक का ऐसा अषर पड़ना बिलकुल आदत के ख़िलाफ़ है (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ)। मुतर्जिम कहता है आँहज़रत (ﷺ) की शुजाअत और बहादुरी को इस मा'नी से दरयाफ़्त कर लेना चाहिये कि सारे साथी भाग निकले, तीरों की बौछार हो रही है और आप ख़च्चर पर मैदान में जमे हुए हैं। ऐसे मौक़ों पर बड़े बड़े बहादुरों के पाँव उखड़ जाते हैं। अगर आपका हम कोई मुअजज़ा न देखें सिर्फ़ आपके सिफ़ाते हसना और अख़्लाक़े हमीदा पर ग़ौर कर लें तब भी आपकी पैग़म्बरी में कोई शक नहीं रहता। शुजाअत ऐसी, सख़ावत ऐसी कि किसी साइल को महरूम न करते। लाख रुपया आया तो सबका सब उसी वक़्त बांट दिया। एक रुपया भी अपने लिये नहीं रखा। एक दफ़ा घर में ज़रा सा सोना रह गया था तो नमाज़ का सलाम फेरते ही तशरीफ़ ले गये उसको बांट दिया फिर सुन्नतें पढ़ीं। कुव्वत और ताक़त ऐसी कि नौ बीवियों से एक ही रात में सुहबत कर आए। सब्र और तहम्मुल इतना कि एक गंवार ने तलवार खींचकर मार डालना चाहा मगर आपने उस पर क़ाबू पाकर उसे मुआफ़ कर दिया। एक यहूदी औरत ने ज़हर दे दिया मगर उसको सज़ा न दी, इफ़्फ़त और पाकदामनी ऐसी कि किसी ग़ैर औरत पर आँख तक न उठाई। क्या ये सिफ़ात किसी ऐसे शख़्स में जमा हो सकती हैं जो मुअय्यिद मिनल्लाह और पैग़म्बर और वली न हो और बड़ा बेवक़ूफ़ है वो शख़्स जो आँहज़रत (ﷺ) की सीरते तय्यिबा को पढ़कर फिर आपकी नुबुव्वत में शक करे। मा'लूम हुआ कि उसको अक़्ल से कोई वास्ता नहीं है। एक जाहिल ग़ैर तर्बियतयाफ़्ता (असभ्य) क़ौम में ऐसे जामेअ कमालात और मुहज़्ज़ब और साहिबे इल्म व मअरिफ़त का वजूद बग़ैर ताइद इलाही और ता'लीमे खुदावन्दी के नामुमकिन है फिर क्या वजह है कि हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत दाऊद (अलैहिमुस्सलाम) तो पैग़म्बर हों और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पैग़म्बर न हों। अल्लाह तआला अहले किताब को इंसाफ़ और समझ दे। (वहीदी)

4317. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उन्होंने बराअ (रज़ि.) से सुना और उनसे क़बीला क़ैस के एक आदमी ने पूछा कि क्या तुम लोग नबी करीम (ﷺ) को ग़ज़्व-ए-हुनैन मे छोड़कर भाग निकले थे? उन्होंने कहा लेकिन हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपनी जगह से नहीं हटे थे। क़बीला हवाज़िन के लोग तीरंदाज़ थे, जब उन पर हमने हमला किया तो वो पस्पा हो गये फिर हम लोग माले ग़नीमत में लग गये। आख़िर हमें उनके तीरों का सामना करना पड़ा। मैंने ख़ुद देखा था कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे और हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) उसकी लगाम थामे हुए थे। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्मा रहे थे, मैं नबी हूँ, इसमें झूठ नहीं। इस्राईल और ज़ुहैर ने बयान किया कि बाद में हुज़ूर (ﷺ) अपने ख़च्चर से उतर गये।

٤٣١٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ سَمِعَ الْبَرَاءَ وَسَأَلَهُ رَجُلٌ مِنْ قَيْسٍ أَفَرَرْتُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ يَوْمَ حُنَيْنٍ؟ فَقَالَ: لَكِنْ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَمْ يَفِرَّ. كَانَتْ هَوَازِنُ رُمَاةً وَإِنَّا لَمَّا حَمَلْنَا عَلَيْهِمْ انْكَشَفُوا، فَأَكْبَبْنَا عَلَى الْغَنَائِمِ فَاسْتُقْبِلْنَا بِالسِّهَامِ، وَلَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى بَغْلَتِهِ الْبَيْضَاءِ، وَإِنَّ أَبَا سُفْيَانَ آخِذٌ بِزِمَامِهَا وَهُوَ يَقُولُ: أَنَا النَّبِيُّ لاَ كَذِبْ. قَالَ إِسْرَائِيلُ وَزُهَيْرٌ : نَزَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ بَغْلَتِهِ.

[راجع: ٢٨٦٤]

तश्रीह : मैदाने जंग में आँहज़रत (ﷺ) षाबित क़दम रहे और चार आदमी आपके साथ जमे रहे। तीन बनू हाशिम के एक हज़रत अब्बास (रज़ि.) आपके सामने थे और अबू सुफ़यान (रज़ि.) आपके ख़च्चर की बाग थामे हुए थे, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) आपके दूसरी तरफ़ थे। तिर्मिज़ी की रिवायत में है कि सौ आदमी भी आपके साथ न रहे और इमाम अहमद और हाकिम की रिवायत में है, इब्ने मसऊद (रज़ि.) से कि सब लोग भाग निकले सिर्फ़ 80 आदमी मुहाजिरीन

और अंसार में से आपके साथ रह गये। मुस्लिम की रिवायत में है कि काफ़िरों ने आपको घेर लिया आप ख़च्चर से उतर पड़े फिर ख़ाक की एक मुट्ठी ली और काफ़िरों के चेहरे पर मारी, कोई काफ़िर बाक़ी न रहा जिसकी आँख में मिट्टी न घुसी हो। आख़िर में काफ़िर हारकर सब भाग गये। आपने फ़र्माया शाहतिल वुजूह या'नी उनके चेहरे काले हों। ये भी आँहज़रत (ﷺ) के बड़े मुअजज़ात में से है।

४٣١٨،٤٣١٩- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ حَدَّثَنِي لَيْثٌ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ ح وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ : حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ شِهَابٍ : وَزَعَمَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ مَرْوَانَ وَالْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ حِينَ جَاءَهُ وَفْدُ هَوَازِنَ مُسْلِمِينَ، فَسَأَلُوهُ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَسَبْيَهُمْ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَعِي مَنْ تَرَوْنَ وَأَحَبُّ الْحَدِيثِ إِلَيَّ أَصْدَقُهُ فَاخْتَارُوا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ إِمَّا السَّبْيَ وَإِمَّا الْمَالَ، وَقَدْ كُنْتُ اسْتَأْنَيْتُ بِكُمْ))، وَكَانَ أَنْظَرَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِضْعَ عَشْرَةَ لَيْلَةً حِينَ قَفَلَ مِنَ الطَّائِفِ، فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَيْرُ رَادٍّ إِلَيْهِمْ إِلاَّ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ قَالُوا: فَإِنَّا نَخْتَارُ سَبْيَنَا فَقَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمُسْلِمِينَ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ : ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّ إِخْوَانَكُمْ قَدْ جَاؤُونَا تَائِبِينَ، وَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ أَنْ أَرُدَّ إِلَيْهِمْ سَبْيَهُمْ، فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطَيِّبَ ذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ، وَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ

4318, 4319. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष बिन सअद ने बयान किया, कहा मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने (दूसरी सनद) और मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब के भतीजे (मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन शिहाब ने) बयान किया कि मुहम्मद बिन शिहाब ने कहा कि उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि उन्हें मरवान बिन हकम और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब क़बीला हवाज़िन का वफ़्द मुसलमान होकर हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) रुख़्सत देने खड़े हुए, उन्होंने आपसे ये दरख़्वास्त की कि उनका माल और उनके (क़बीले के क़ैदी) उन्हें वापस कर दिये जाएँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जैसा कि तुम लोग देख रहे हो, मेरे साथ कितने और लोग भी हैं और देखो सच्ची बात मुझे सबसे ज़्यादा पसन्द है। इसलिये तुम लोग एक ही चीज़ पसन्द कर लो या तो अपने क़ैदी ले लो या माल ले लो। मैंने तुम ही लोगों के ख़्याल से (क़ैदियों की तक़्सीम में) देरी की थी। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ताइफ़ से वापस होकर तक़रीबन दस दिन उनका इंतिज़ार किया था। आख़िर जब उन पर वाज़ेह हो गया कि आँहज़रत (ﷺ) उन्हें सिर्फ़ एक ही चीज़ वापस करेंगे तो उन्होंने कहा कि फिर हम अपने (क़बीले के) क़ैदियों की वापसी चाहते हैं। चुनाँचे आप (ﷺ) ने मुसलमानों को ख़िताब किया, अल्लाह तआला की उसकी शान के मुताबिक़ ष़ना करने के बाद फ़र्माया, अम्मा बअद! तुम्हारे भाई (क़बीला हवाज़िन के लोग) तौबा करके हमारे पास आए हैं, मुसलमान होकर और मेरी राय ये है कि उनके क़ैदी उन्हें वापस कर दिये जाएँ। इसलिये जो शख़्स (बिला किसी दुनियावी सिलह के) अपनी ख़ुशी से वापस करना चाहे वो वापस कर दे ये बेहतर है और जो लोग अपना हिस्सा न छोड़ना चाहते हों, उनका हक़ क़ायम रहेगा। वो यूँ कर लें कि उसके बाद जो सबसे पहले ग़नीमत अल्लाह तआला हमें इनायत करेगा उसमें से हम उन्हें उसके बदले में दे देंगे तो वो उनके क़ैदी

عَلَى حَظِّهِ حَتَّى نُعْطِيَهُ إِيَّاهُ مِنْ أَوَّلِ مَا يُفِيءُ اللهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ)). فَقَالَ النَّاسُ : قَدْ طَيَّبْنَا ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّا لاَ نَدْرِي مَنْ أَذِنَ مِنْكُمْ فِي ذَلِكَ، مِمَّنْ لَمْ يَأْذَنْ فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا عُرَفَاؤُكُمْ أَمْرَكُمْ)). فَرَجَعَ النَّاسُ فَكَلَّمَهُمْ عُرَفَاؤُهُمْ ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّهُمْ قَدْ طَيَّبُوا وَأَذِنُوا. هَذَا الَّذِي بَلَغَنِي عَنْ سَبْيِ هَوَازِنَ.

[راجع: ٢٣٠٧، ٢٣٠٨]

वापस कर दें। तमाम सहाबा (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह! हम ख़ुशी से (बिला किसी बदले के) वापस करना चाहते हैं लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया इस तरह हमें इसका इल्म नहीं हुआ कि किसने अपनी ख़ुशी से वापस किया है और किसने नहीं, इसलिये सब लोग जाएँ और तुम्हारे चौधरी लोग तुम्हारा फ़ैसला हमारे पास लाएँ। चुनाँचे सब वापस आ गये और उनके चौधरियों ने उनसे बातचीत की फिर वो हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि सबने ख़ुशी और फ़राख़दिली के साथ इजाज़त दे दी है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा यही है वो हदीष जो मुझे क़बील-ए-हवाज़िन के क़ैदियों के बारे में पहुँची है।

(राजेअ : 2307, 2308)

तश्रीह : हवाज़िन के वफ़्द में 24 आदमी आए थे जिनमें अबू बरक़ान सअदी भी था, उसने कहा या रसूलल्लाह! उन क़ैदियों में आपके दूध के रिश्ते से आपकी कई माएँ और ख़ाला हैं और दूध की बहनें भी हैं। आप हम पर करम फ़र्माएँ और उन सबको आज़ाद फ़र्मा दें। आप पर अल्लाह बहुत करम करेगा। आपने जो जवाब दिया वो रिवायत में यहाँ तफ़्सील से बयान हुआ है। आपने सारे क़ैदियों को आज़ाद फ़र्मा दिया।

٤٣٢٠- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ، أَنَّ عُمَرَ قَالَ يَا رَسُولَ اللهِ ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا قَفَلْنَا مِنْ حُنَيْنٍ سَأَلَ عُمَرُ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ نَذْرٍ كَانَ نَذَرَهُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ اعْتِكَافًا فَأَمَرَهُ النَّبِيُّ ﷺ بِوَفَائِهِ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ، وَرَوَاهُ جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ وَ حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

4320. हमसे अबुन नोअमान मुहम्मद बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद इब्ने मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब ने, उन्हें नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम ग़ज़्व-ए-हुनैन से वापस हो रहे तो उमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अपनी एक नज़्र के बारे में पूछा जो उन्होंने ज़मान-ए-जाहिलियत में ए'तिकाफ़ की मानी थी और आँहुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें उसे पूरी करने का हुक्म दिया और कुछ (अहमद बिन अब्दह ज़बी) ने हम्माद से बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने। और इस रिवायत को जरीर बिन हाज़िम और हम्माद बिन सलमा ने अय्यूब से बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने, नबी करीम (ﷺ) से।

तश्रीह : हज़रत नाफ़ेअ बिन समर जलीस हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के आज़ाद कर्दा हैं। हदीष के फ़न में सनद और हुज्जत हैं। इमाम मालिक फ़र्माते हैं कि जब भी नाफ़ेअ से इब्ने उमर (रज़ि.) की हदीष सुन लेता हूँ तो फिर किसी और रावी से सुनने की ज़रूरत नहीं रहती। सन् 117 हिजरी में वफ़ात पाई।

4321. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक (रह) ने ख़बर दी, उन्हे यह्या बिन सईद ने, उन्हें अम्र बिन कषीर बिन अफ़्लह ने, उन्हें क़तादा के मौला अबू मुहम्मद ने और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-हुनैन के लिये हम नबी करीम (ﷺ) के साथ निकले। जब जंग हुई तो मुसलमान जरा डगमगा गये (या'नी आगे पीछे हो गये) मैंने देखा कि एक मुश्रिक एक मुसलमान के ऊपर ग़ालिब हो रहा है, मैंने पीछे से उनकी गर्दन पर तलवार मारी और उसकी ज़िरह काट डाली। अब वो मुझ पर पलट पड़ा और मुझे इतनी ज़ोर से भींचा कि मौत की तस्वीर मेरी आँखों में फिर गई, आख़िर वो मर गया और मुझे छोड़ दिया। फिर मेरी मुलाक़ात उमर (रज़ि.) से हुई। मैंने पूछा लोगों को क्या हो गया है? उन्होंने फ़र्माया, यही अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का हुक्म है फिर मुसलमान पलटे और (जंग ख़त्म होने के बाद) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तशरीफ़ फ़र्मा हुए और फ़र्माया जिसने किसी को क़त्ल किया हो और उसके लिये कोई गवाह भी रखता हो तो उसका तमाम सामान व हथियार उसे ही मिलेगा। मैंने अपने दिल में कहा कि मेरे लिये कौन गवाही देगा? फिर मैं बैठ गया। बयान किया कि फिर आपने दोबारा यही फ़र्माया। इस बार फिर मैंने दिल में कहा कि मेरे लिये कौन गवाही देगा? और फिर बैठ गया। हुज़ूर (ﷺ) ने फिर अपना फ़र्मान दोहराया तो मैं इस बार खड़ा हो गया। हुज़ूर (ﷺ) ने इस बार फ़र्माया क्या बात है ऐ अबू क़तादा! मैंने आपको बताया तो एक साहब (अस्वद बिन ख़ुज़ाई असलमी) ने कहा कि ये सच कहते हैं और उनके मक़्तूल का सामान मेरे पास है। आप मेरे हक़ में उन्हें राज़ी कर दें (कि सामान मुझसे न लें) इस पर अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया नहीं अल्लाह की क़सम! अल्लाह के शेरों में से एक शेर, जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ से लड़ता है फिर हुज़ूर (ﷺ) उसका हक़ तुम्हें हर्गिज़ नहीं दे सकते। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि सच कहा, तुम सामान

٤٣٢١ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ كَثِيرِ بْنِ أَفْلَحَ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ عَامَ حُنَيْنٍ، فَلَمَّا الْتَقَيْنَا كَانَتْ لِلْمُسْلِمِينَ جَوْلَةٌ فَرَأَيْتُ رَجُلاً مِنَ الْمُشْرِكِينَ قَدْ عَلاَ رَجُلاً مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَضَرَبْتُهُ مِنْ وَرَائِهِ عَلَى حَبْلِ عَاتِقِهِ بِالسَّيْفِ فَقَطَعْتُ الدِّرْعَ وَأَقْبَلَ عَلَيَّ فَضَمَّنِي ضَمَّةً وَجَدْتُ مِنْهَا رِيحَ الْمَوْتِ، ثُمَّ أَدْرَكَهُ الْمَوْتُ، فَأَرْسَلَنِي فَلَحِقْتُ عُمَرَ فَقُلْتُ: مَا بَالُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَمْرُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ ثُمَّ رَجَعُوا وَجَلَسَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَنْ قَتَلَ قَتِيلاً لَهُ عَلَيْهِ بَيِّنَةٌ فَلَهُ سَلَبُهُ))، فَقُلْتُ مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ ثُمَّ جَلَسْتُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: مِثْلَهُ قَالَ : ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : مِثْلَهُ فَقُمْتُ فَقُلْتُ : مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ ثُمَّ جَلَسْتُ، قَالَ: ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ مِثْلَهُ، فَقُمْتُ فَقَالَ: ((مَا لَكَ يَا أَبَا قَتَادَةَ؟)) فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ رَجُلٌ: صَدَقَ وَسَلَبُهُ عِنْدِي فَأَرْضِهِ مِنِّي فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ : لاَهَا اللهِ إِذًا لاَ يَعْمِدُ إِلَى أَسَدٍ مِنْ أُسْدِ اللهِ، يُقَاتِلُ عَنِ اللهِ وَرَسُولِهِ ﷺ فَيُعْطِيكَ سَلَبَهُ فَقَالَ

अबू क़तादा (रज़ि.) को दे दो। उन्होंने सामान मुझे दे दिया। मैंने उस सामान से क़बीला सलमा के मुहल्ले में एक बाग़ ख़रीदा। इस्लाम के बाद ये मेरा पहला माल था। जिसे मैंने हासिल किया था। (राजेअ़ : 2100)

النَّبِيُّ ﷺ: ((صَدَقَ فَأَعْطِهِ)) فَأَعْطَانِيهِ فَابْتَعْتُ بِهِ مَخْرَفًا فِي بَنِي سَلِمَةَ، فَإِنَّهُ لأَوَّلُ مَالٍ تَأَثَّلْتُهُ فِي الإِسْلاَمِ.

[راجع: ٢١٠٠]

4322. और लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, मुझसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया था कि उनसे उ़मर बिन कष़ीर बिन अफ़्लह ने, उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) के मौला अबू मुहम्मद ने कि अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया, ग़ज़्व-ए-हुनैन के दिन मैंने एक मुसलमान को देखा कि एक मुश्रिक से लड़ रहा था और एक दूसरा मुश्रिक पीछे से मुसलमान को क़त्ल करने की घात में था, पहले तो मैं उसी की तरफ़ बढ़ा, उसने अपना हाथ मुझे मारने के लिये उठाया तो मैंने उसके हाथ पर वार करके काट दिया। उसके बाद वो मुझसे चिमट गया और इतनी ज़ोर से मुझे भींचा कि मैं डर गया। आख़िर उसने मुझे छोड़ दिया और ढीला पड़ गया। मैंने उसे धक्का देकर क़त्ल कर दिया और मुसलमान भाग निकले और मैं भी उनके साथ भाग पड़ा। लोगों में उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) नज़र आए तो मैंने उनसे पूछा, लोग भाग क्यूँ रहे हैं? उन्होंने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला का यही हुक्म है, फिर लोग आँहुज़ूर (ﷺ) के पास आकर जमा हो गये। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स इस पर गवाह क़ायम कर देगा कि किसी मक़्तूल को उसी ने क़त्ल किया है तो उसका सारा सामान उसे मिलेगा। मैं अपने मक़्तूल पर गवाह के लिये उठा लेकिन मुझे कोई गवाह नहीं दिखाई दिया। आख़िर मैं बैठ गया फिर मेरे सामने एक सूरत आई। मैंने अपने मामले की ख़बर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को दी। आपके पास बैठे हुए एक साहब (अस्वद बिन खुज़ाई असलमी रज़ि.) ने कहा कि उनके मक़्तूल का हथियार मेरे पास है, आप मेरे हक़ में इन्हें राज़ी कर दें। इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा हर्गिज़ नहीं, अल्लाह के शेरों मे से एक शेर को छोड़कर जो अल्लाह और उसके रसूल के लिये जंग करता है, उसका हक़ क़ुरैश के एक बुज़दिल को आँहज़रत (ﷺ) नहीं दे सकते। अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया चुनाँचे हुज़ूर

٤٣٢٢- وَقَالَ اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ كَثِيرِ بْنِ أَفْلَحَ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ أَنَّ أَبَا قَتَادَةَ قَالَ : لَمَّا كَانَ يَوْمَ حُنَيْنٍ نَظَرْتُ إِلَى رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ يُقَاتِلُ رَجُلاً مِنَ الْمُشْرِكِينَ، وَآخَرُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ، يَخْتِلُهُ مِنْ وَرَائِهِ لِيَقْتُلَهُ فَأَسْرَعْتُ إِلَى الَّذِي يَخْتِلُهُ فَرَفَعَ يَدَهُ لِيَضْرِبَنِي وَأَضْرِبُ يَدَهُ فَقَطَعْتُهَا، ثُمَّ أَخَذَنِي فَضَمَّنِي ضَمًّا شَدِيدًا حَتَّى تَخَوَّفْتُ ثُمَّ تَرَكَ فَتَحَلَّلَ وَدَفَعْتُهُ، ثُمَّ قَتَلْتُهُ، وَانْهَزَمَ الْمُسْلِمُونَ وَانْهَزَمْتُ مَعَهُمْ، فَإِذَا بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فِي النَّاسِ، فَقُلْتُ لَهُ: مَا شَأْنُ النَّاسِ، قَالَ : أَمْرُ اللهِ ثُمَّ تَرَاجَعَ النَّاسُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ أَقَامَ بَيِّنَةً عَلَى قَتِيلٍ قَتَلَهُ، فَلَهُ سَلَبُهُ))، فَقُمْتُ لأَلْتَمِسَ بَيِّنَةً عَلَى قَتِيلِي فَلَمْ أَرَ أَحَدًا يَشْهَدُ لِي، فَجَلَسْتُ ثُمَّ بَدَا لِي فَذَكَرْتُ أَمْرَهُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ جُلَسَائِهِ: سِلاَحُ هَذَا الْقَتِيلِ الَّذِي يَذْكُرُ عِنْدِي، فَأَرْضِهِ مِنْهُ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: كَلاَّ، لاَ يُعْطِهِ أُصَيْبِغَ مِنْ قُرَيْشٍ وَيَدَعَ أَسَدًا مِنْ أُسْدِ اللهِ يُقَاتِلُ عَنِ اللهِ وَرَسُولِهِ ﷺ، قَالَ: فَقَامَ رَسُولُ

(ﷺ) खड़े हुए और मुझे वो सामान अ़ता फ़र्माया। मैंने उससे एक बाग़ ख़रीदा और ये सबसे पहला माल था जिसे मैंने इस्लाम लाने के बाद हासिल किया था। (राजेअ़ : 2100)

اللہ ﷺ فَأَدَّاهُ إِلَيَّ فَاشْتَرَيْتُ مِنْهُ خِرَافًا، فَكَانَ أَوَّلَ مَالٍ تَأَثَّلْتُهُ فِي الإِسْلاَمِ. [راجع: ٢١٠٠]

तशरीह : ग़ज़्व-ए-हुनैन के बारे में मज़ीद मा'लूमात नीचे दर्ज की गई हैं। ग़ज़्व-ए-बद्र के बाद दूसरा ग़ज़्वा जिसका तज़्किरा इशारा नहीं बल्कि नाम की सराहत के साथ क़ुर्आन मजीद में आया है वो ग़ज़्व-ए-हुनैन है। हुनैन एक वादी का नाम है जो शहरे ताइफ़ से 30–40 मील उत्तर और पूर्व में जबले औतास में वाक़ेअ़ है। ये अरब के मशहूर जंगजू व जंगबाज़ क़बीला हवाज़िन का मस्कन (ठिकाना) था और इस क़बीला के मल्क–ए–तीरंदाज़ी की शुह्रत दूर दूर थी। उन्होंने फ़तहे–मक्का की ख़बर पाकर दिल में कहा कि जब क़ुरैश मुक़ाबला में न ठहर सके तो अब हमारी भी ख़ैर नहीं और ख़ुद ही जंग व क़िताल का सामान शुरू कर दिया और चाहा कि मुसलमानों पर जो अभी मक्का ही में यकजा था, अचानक आ पड़ और इसी मंसूबे में एक दूसरा पुर कुव्वत और जंगजू क़बीला बनी ष़क़ीफ़ भी उनका शरीक हो गया और हवाज़िन और ष़क़ीफ़ के इत्तिहाद ने दुश्मन की जंगी कुव्वत को बहुत ही बढ़ा दिया। हुज़ूर (ﷺ) को जब उसकी मो'तबर ख़बर मिल गई तो एक अच्छे जनरल की तरह आप ख़ुद ही पेशक़दमी करके बाहर निकल आए और मुक़ामे हुनैन पर ग़नीम के सामने सफ़ अराई कर ली। आपके लश्कर की ता'दाद बारह हज़ार थी। उनमें दस हज़ार तो वही फ़िदाई जो मदीना से हम-रकाब आए थे। दो हज़ार आदमी मक्का के भी शामिल हो गये मगर उनमें सब मुसलमान न थे कुछ तो अभी बदस्तूर मुश्रिकीन ही थे और कुछ नौ मुस्लिम की बजाय, नाम के मुस्लिम थे। बहरहाल मुजाहिदीन की इस जमइयते कष़ीर पर मुसलमानों को नाज़ हो चला कि जब हम ता'दादे क़लील में रहकर बराबर फ़तह पाते आए तो अब की तो ता'दाद इतनी बड़ी है, अब फ़तह में क्या शक हो सकता है। लेकिन जब जंग शुरू हुई तो उसके कुछ दौर इस्लामी लश्कर पर बहुत ही सख़्त गुज़रे और मुसलमानों का अपनी कष़रत ता'दाद पर फ़ख़्र करना ज़रा भी उनके काम न आया। एक मौक़े ऐसा भी पेश आया कि इस्लामी फ़ौज को एक तंग नशीबी वादी में उतरना पड़ा और दुश्मन ने कमीनगाह (घात की जगह) से अचानक उन पर तीरों की बारिश शुरू कर दी। ख़ैर फिर ग़ैबी इम्दाद का नुज़ूल हुआ और आख़िरी फ़तह मुसलमानों ही के हिस्से में रही। क़ुर्आन मजीद ने इस सारे नशीब व फ़राज़ की नक़्शाकशी अपने अल्फ़ाज़ में कर दी है, **लक़द नसरकुमुल्लाहु फ़ी मवातिन कष़ीरतिन व यौम हुनैनिन इज़ आजबत्कुम कष्रतुकुम फ़लम तुग़नि अन्कुम शैअंव्व ज़ाकत अलैकुमुल्अर्ज़ु बिमा रहुबत षुम्म वल्लैतुम मुदबिरीन षुम्म अन्जलल्लाहु सकीनतहू अला रसूलिही व अलल्मूमिनीन व अन्जल जुनूदल्लम तरौहा व अज़्ज़बल्लज़ीन कफ़रु व ज़ालिक जज़ाउल्काफ़िरीन** (अत् तौबा : 25) अल्लाह ने यक़ीनन बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी मदद की है और हुनैन के दिन भी जबकि तुमको अपनी कष़रते ता'दाद पर ग़ुरूर हो गया था तो वो तुम्हारे कुछ काम न आई और तुम पर ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के तंग करने लगी फिर तुम पीठ देकर भाग खड़े हुए। उसके बाद अल्लाह ने अपनी तरफ़ से अपने रसूल और मोमिनीन पर तसल्ली नाज़िल फ़र्माई और उसने ऐसे लश्कर उतारे जिन्हें तुम देख न सके और अल्लाह ने काफ़िरों को अज़ाब में पकड़ा। यही बदला है काफ़िरों के लिये। ग़ज़्व-ए-हुनैन का ज़माना शव्वाल सन् 8 हिजरी मुताबिक़ जनवरी सन् 663 ईस्वी का है। (क़ुर्आनी सीरते नबवी) हदीषे हाज़ा के ज़ेल अल्लामा क़स्तलानी (रह) लिखते हैं, **क़ालल्हाफ़िज़ अबू अब्दिल्लाहि अल्हुमैदी अल्उन्दुलुसी समिअतु बअ़ज़ अलिलइल्मि यक़ूलु बअ़द ज़िक्रि हाज़ल्हदीषि लौ लम यकुन मिन फ़ज़ीलतिस्सिद्दीक़ि (रज़ि.) इल्ला हाज़ा फइन्नहू बिष़ाक़िबि अ़मलिही व शिद्दति तौफ़ीक़िही व सिदक़ि तहक़ीक़िही बादर इलल्क़ौलिल्हक़्क़ि फज़जर व अफ़्ता व हकम व अम्ज़ा व अख़्बरनी अश्शरीअत अन्हू (ﷺ) बिहज़्रतिही व बैन यदैहि बिमा सद्दक़त फ़ीहि व अज्राहू अला क़ुव्वतिही व हाज़ा मिन ख़साइस्सिहिल्कुब्रा इला मा ला युहसा मिन फ़ज़ाइलिहिल्उख़रा** (क़स्तलानी) या'नी हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह उन्दलसी ने कहा कि मैंने इस हदीष के ज़िक्र में कुछ अहले इल्म से सुना कि अगर हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के फ़ज़ाइल में और कोई हदीष न होती सिर्फ़ यही एक होती तो भी उनके फ़ज़ाइल के लिये यही काफ़ी थी जिससे उनका इल्म उनकी पुख़्तगी कुव्वते इंसाफ़ और उम्दह तौफ़ीक़ और तहक़ीक़े हक़ वग़ैरह औसफ़ हमीदा ज़ाहिर हैं। उन्होंने हक़ बात कहने में किस क़दर दिलेरी से काम लिया और फ़त्वा देने के साथ ग़लत कहने वाले को डांटा और सबसे बड़ी ख़ूबी ये कि आँहज़रत (ﷺ) के दरबारे आ़ली में आवाज़े हक़ को बुलन्द किया, जिसकी आँहज़रत (ﷺ) ने भी तस्दीक़ की और हूबहू उसे जारी फ़र्मा दिया। ये

उमूर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के ख़साइस में बड़ी अहमियत रखते हैं। अल्लाह तआला हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की रूह पर बेशुमार सलाम और रहमत नाज़िल फ़र्माए। आमीन (राज़)

बाब 56 : गज़्व-ए-औतास का बयान

٥٦- باب غَزَاةِ أَوْطَاسٍ

तश्रीह : औतास क़बीला हवाज़िन के मुल्क में एक वादी का नाम है। ये जंगे हुनैन के बाद हुई क्योंकि हवाज़िन के कुछ लोग भागकर औतास की तरफ़ तो औतास पर आपने अबू आमिर अश्अरी (रज़ि.) को सरदार बना करके लश्कर भेजा और ताइफ़ की तरफ़ बज़ाते ख़ास तशरीफ़ ले गये। औतास में दुरैद बिन स़िम्मा सरदारे औतास को रबीआ बिन रफ़ीअ या ज़ुबैर बिन अवाम (रज़ि.) ने क़त्ल किया था।

4323. हमसे मुहम्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ग़ज़्व-ए-हुनैन से फ़ारिग़ हो गये तो आपने एक दस्ते के साथ अबू आ़मिर (रज़ि.) को वादिये औतास की तरफ़ भेजा। इस मअ़रका में दुरैद इब्नुल स़िम्मा से मुक़ाबला हुआ। दुरैद क़त्ल कर दिया गया और अल्लाह तआला ने उसके लश्कर को शिकस्त दे दी। अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू आ़मिर (रज़ि.) के साथ आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे भी भेजा था। अबू आ़मिर (रज़ि.) के घुटने में तीर आकर लगा। बनी जश्म के एक शख़्स ने उन पर तीर मारा था और उनके घुटने में उतार दिया था। मैं उनके पास पहुँचा और कहा चचा! ये तीर आप पर किसने फेंका है? उन्होंने अबू मूसा (रज़ि.) को इशारे से बताया कि वो जश्मी मेरा क़ातिल है जिसने मुझे निशाना बनाया है। मैं उसकी तरफ़ लपका और उसके क़रीब पहुँच गया लेकिन जब उसने मुझे देखा तो वो भाग पड़ा मैंने उसका पीछा किया और मैं ये कहता जाता था, तुझे शर्म नहीं आती, तुझसे मुक़ाबला नहीं किया जाता। आख़िर वो रुक गया और हमने एक—दूसरे पर तलवार से वार किया। मैंने उसे क़त्ल कर दिया और अबू आ़मिर (रज़ि.) से जाकर कहा कि अल्लाह ने आपके क़ातिल को क़त्ल करवा दिया। उन्होंने फ़र्माया कि मेरे (घुटने में से) तीर निकाल ले, मैंने निकाल दिया तो उससे पानी जारी हो गया फिर उन्होंने फ़र्माया भतीजे! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को मेरा सलाम पहुँचाना और अ़र्ज़ करना कि मेरे लिये मग़्फ़िरत की दुआ फ़र्माएँ। अबू आ़मिर (रज़ि.) ने लोगों पर मुझे अपना नाइब बना दिया। उसके बाद वो थोड़ी देर और ज़िन्दा रहे और शहादत पाई। मैं वापस हुआ और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचा। आप अपने घर में बान की एक चारपाई पर तशरीफ़ रखते

٤٣٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا فَرَغَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ حُنَيْنٍ بَعَثَ أَبَا عَامِرٍ عَلَى جَيْشٍ إِلَى أَوْطَاسٍ، فَلَقِيَ دُرَيْدَ بْنَ الصِّمَّةِ فَقُتِلَ دُرَيْدٌ وَهَزَمَ اللهُ أَصْحَابَهُ، قَالَ أَبُو مُوسَى: وَبَعَثَنِي مَعَ أَبِي عَامِرٍ فَرُمِيَ أَبُو عَامِرٍ فِي رُكْبَتِهِ، رَمَاهُ جُشَمِيٌّ بِسَهْمٍ فَأَثْبَتَهُ فِي رُكْبَتِهِ فَانْتَهَيْتُ إِلَيْهِ فَقُلْتُ: يَا عَمِّ مَنْ رَمَاكَ؟ فَأَشَارَ إِلَى أَبِي مُوسَى، فَقَالَ: ذَاكَ قَاتِلِي الَّذِي رَمَانِي، فَقَصَدْتُ لَهُ فَلَحِقْتُهُ، فَلَمَّا رَآنِي وَلَّى فَاتَّبَعْتُهُ وَجَعَلْتُ أَقُولُ لَهُ أَلاَ تَسْتَحِي أَلاَ تَثْبُتُ فَكَفَّ فَاخْتَلَفْنَا ضَرْبَتَيْنِ بِالسَّيْفِ فَقَتَلْتُهُ، ثُمَّ قُلْتُ لأَبِي عَامِرٍ: قَتَلَ اللهُ صَاحِبَكَ، قَالَ فَانْزِعْ هَذَا السَّهْمَ، فَنَزَعْتُهُ فَنَزَا مِنْهُ الْمَاءُ، قَالَ: يَا ابْنَ أَخِي أَقْرِئِ النَّبِيَّ السَّلاَمَ وَقُلْ لَهُ اسْتَغْفِرْ لِي، وَاسْتَخْلَفَنِي أَبُو عَامِرٍ عَلَى النَّاسِ فَمَكَثَ يَسِيرًا ثُمَّ مَاتَ فَرَجَعْتُ فَدَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

थे। इस पर कोई बिस्तर बिछा हुआ नहीं था और बान के निशानात आपकी पीठ और पहलू पर पड़ गये थे। मैंने आपसे अपने और अबू आमिर (रज़ि.) के वाक़ियात बयान किये और ये कि उन्होंने दुआ-ए-क़ुनूत मग़्फ़िरत के लिये दरख़्वास्त की है, आँहज़रत (ﷺ) ने पानी तलब फ़र्माया और वुज़ू किया फिर हाथ उठाकर दुआ की, ऐ अल्लाह! उबैद अबू आमिर (रज़ि.) की मग़्फ़िरत फ़र्मा। मैंने आपकी बग़ल में सफ़ेदी (जब आप दुआ कर रहे थे) देखी फिर हुज़ूर (ﷺ) ने दुआ की, ऐ अल्लाह! क़यामत के दिन अबू आमिर (रज़ि.) को अपनी बहुत सी मख़लूक़ से बुलन्दतर दर्जा अता फ़र्माइयो। मैंने अर्ज़ किया और मेरे लिये भी अल्लाह से मग़्फ़िरत की दुआ फ़र्मा दीजिए। हुज़ूर (ﷺ) ने दुआ की ऐ अल्लाह! अब्दुल्लाह इब्ने क़ैस अबू मूसा के गुनाहों को भी मुआफ़ कर और क़यामत के दिन अच्छा मुक़ाम अता फ़र्माइयो। अबू बुर्दा ने बयान किया कि एक दुआ अबू आमिर (रज़ि.) के लिये थी और दूसरी अबू मूसा (रज़ि.) के लिये। (राजेअ़: 2884)

فِي بَيْتِهِ عَلَى سَرِيرٍ مُرْمَلٍ وَعَلَيْهِ فِرَاشٌ قَدْ أَثَّرَ رِمَالُ السَّرِيرِ فِي ظَهْرِهِ وَجَنْبَيْهِ، فَأَخْبَرْتُهُ بِخَبَرِنَا وَخَبَرِ أَبِي عَامِرٍ وَقَالَ: قُلْ لَهُ اسْتَغْفِرْ لِي فَدَعَا بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعُبَيْدٍ أَبِي عَامِرٍ)) وَرَأَيْتُ بَيَاضَ إِبْطَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَوْقَ كَثِيرٍ مِنْ خَلْقِكَ مِنَ النَّاسِ)) فَقُلْتُ وَلِي فَاسْتَغْفِرْ: فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ ذَنْبَهُ، وَأَدْخِلْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مُدْخَلاً كَرِيمًا)). قَالَ أَبُو بُرْدَةَ: إِحْدَاهُمَا لأَبِي عَامِرٍ وَالأُخْرَى لأَبِي مُوسَى.

[راجع: ٢٨٨٤]

तश्रीह : हदीष़ में एक जगह लफ़्ज़ व अलैहि फ़ुरूश आया है। यहाँ (मा) नाफ़िया रावी की भूल से रह गया है। इसीलिये तर्जुमा ये किया गया है कि जिस चारपाई पर आप बैठे हुए थे। इस पर कोई बिस्तर बिछा हुआ नहीं था। इस हदीष़ में दुआ करने के लिये रसूले करीम (ﷺ) के हाथ उठाने का ज़िक्र है जिसमें उन लोगों के क़ौल की तर्दीद है जो दुआ में हाथ उठाना सिर्फ़ दुआ-ए-इस्तिस्क़ा के साथ ख़ास करते हैं। (क़स्तलानी)

बाब 57 : ग़ज़्व-ए-ताइफ़ का बयान जो शव्वाल सन 8 हिजरी में हुआ. ये मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया

٥٧- باب غَزْوَةِ الطَّائِفِ فِي شَوَّالٍ سَنَةَ ثَمَانٍ قَالَهُ: مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ:

तश्रीह : ताइफ़ मक्का से तीस मील के फ़ासले पर एक बस्ती का नाम है। उसको ताइफ़ इसलिये कहते हैं कि ये तूफ़ान नूह में पानी के ऊपर तैरती रही थी या हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) ने उसे मुल्के शाम से लाकर का'बा के गिर्द तवाफ़ कराया। कुछ ने कहा उसके गिर्द एक दीवार बनाई गई थी इसलिये उसका नाम ताइफ़ हुआ। ये दीवार क़बीला सदफ़ के एक शख़्स ने बनवाई थी जो हज़रे मौत से ख़ून करके यहाँ चला आया था। बड़ी ज़रख़ेज़ जगह है यहाँ की ज़मीन में तमाम अक़्साम के मेवे फल, ग़ल्ले पैदा होते हैं। मौसम बहुत खुशगवार मुअतदिल रहता है। गर्मा में रूस-ए-मक्का बेशतर ताइफ़ चले जाते हैं।

4324. हमसे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमने सुफ़यान बिन उयय्ना से सुना, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी

٤٣٢٤- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ سَمِعَ سُفْيَانَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي

سَلَمَةَ عَنْ أُمِّهَا أُمِّ سَلَمَةَ، دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعِنْدِي مُخَنَّثٌ فَسَمِعَهُ يَقُولُ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ أُمَيَّةَ: يَا عَبْدَ اللهِ أَرَأَيْتَ إِنْ فَتَحَ اللهُ عَلَيْكُمُ الطَّائِفَ غَدًا، فَعَلَيْكَ بِابْنَةِ غَيْلاَنَ فَإِنَّهَا تُقْبِلُ بِأَرْبَعٍ وَتُدْبِرُ بِثَمَانٍ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لاَ يَدْخُلَنَّ هَؤُلاَءِ عَلَيْكُنَّ)) قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ الْمُخَنَّثُ هِيتٌ.

[طرفاه في :٥٢٣٥، ٥٨٨٧].

.... – حدثنا محمود حدثنا أبو أسامة عَنْ هِشَامٍ بِهَذَا وزاد وَهُوَ محاصر الطائف يومئذٍ.

सलमा ने और उनसे उनकी वालिदा उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए तो मेरे पास एक मुख़न्नष़ (हिजड़ा) बैठा हुआ था फिर आँहज़रत (ﷺ) ने सुना कि वो अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या से कह रहा था कि ऐ अ़ब्दुल्लाह! देखो अगर कल अल्लाह तआ़ला ने त़ाइफ़ की फ़तह़ तुम्हें इनायत की तो ग़ीलान बिन सलमा की बेटी (बादिया नामी) को ले लेना वो जब सामने आती है तो पेट पर चार बल और पीठ मोड़कर जाती है तो आठ बल दिखाई देते हैं (या'नी बहुत मोटी ताज़ी औरत है) इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये शख़्स अब तुम्हारे घर में न आया करे। इब्ने उ़ययना ने बयान किया कि इब्ने जुरैज ने कहा, उस मुख़न्नष़ का नाम हीत था। हमसे मह़मूद ने कहा, उनसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने इसी त़रह़ बयान किया और ये इज़ाफ़ा किया है कि ह़ुज़ूर (ﷺ) उस वक़्त त़ाइफ़ का मुह़ास़रा किये हुए थे। (राजेअ़ : 5235, 5778)

٤٣٢٥ – حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ الشَّاعِرِ الأَعْمَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: لَمَّا حَاصَرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الطَّائِفَ فَلَمْ يَنَلْ مِنْهُمْ شَيْئًا قَالَ: ((إِنَّا قَافِلُونَ إِنْ شَاءَ اللهُ)) فَثَقُلَ عَلَيْهِمْ وَقَالُوا: نَذْهَبُ وَلاَ نَفْتَحُهُ، وَقَالَ مَرَّةً نَقْفُلُ فَقَالَ: ((اغْدُوا عَلَى الْقِتَالِ)) فَغَدَوْا فَأَصَابَهُمْ جِرَاحٌ فَقَالَ: ((إِنَّا قَافِلُونَ غَدًا إِنْ شَاءَ اللهُ)) فَأَعْجَبَهُمْ فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً: فَتَبَسَّمَ قَالَ: قَالَ الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الْخَبَرَ كُلَّهُ.

[طرفاه في :٦٠٨٦، ٧٤٨٠].

4325. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अबुल अ़ब्बास नाबीना शायर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने, उन्होंने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने त़ाइफ़ का मुह़ास़रा किया तो दुश्मन का कुछ भी नुक़्स़ान नहीं किया। आख़िर आपने फ़र्माया कि अब इंशाअल्लाह! हम वापस हो जाएँगे। मुसलमानों के लिये नाकाम लौटना बड़ा शाक़ गुज़रा। उन्होंने कहा कि वाह, बग़ैर फ़तह़ के हम वापस चले जाएँ (रावी ने) एक बार (नज़्हबु) के बजाय (नक़्फ़ुलु) का लफ़्ज़ इस्ते'माल किया या'नी हम लौट जाएँ और त़ाइफ़ को फ़तह़ न करें (ये क्यूँकर हो सकता है) इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर सुबह़ सवेरे मैदान में जंग के लिये आ जाओ। स़ह़ाबा सुबह़ सवेरे ही आ गये लेकिन उनकी बड़ी ता'दाद ज़ख़्मी हो गई। अब फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इंशाअल्लाह हम कल वापस चलेंगे। स़ह़ाबा ने उसे बहुत पसन्द किया। आँह़ुज़ूर (ﷺ) इस पर हंस पड़े। और सुफ़यान (रज़ि.) ने एक बार बयान किया कि आँह़ुज़ूर (ﷺ) मुस्कुरा दिये। बयान किया कि ह़ुमैदी ने कहा कि हमसे सुफ़यान ने ये पूरी ख़बर बयान की। (दीगर मक़ाम : 6076, 7480)

तश्रीह : उस जंग में उलटा मुसलमानों ही का नुक़्सान हुआ क्योंकि ताइफ़ वाले क़िले के अंदर थे और एक बरस का ज़ख़ीरा उन्होंने उसके अंदर रख लिया था। आँहज़रत (ﷺ) अठारह दिन या पच्चीस दिन या और कम व बेश उसका मुहासरा (घेराव) किये रहे। काफ़िर क़िला के अंदर से मुसलमानों पर तीर बरसाते रहे, लोहे के टुकड़े गर्म कर करके फेंकते जिससे कई मुसलमान शहीद हो गये। आपने नौफ़िल बिन मुआविया (रज़ि.) से मश्वरा किया, उन्होंने कहा ये लोग लोमड़ी की तरह हैं जो अपने बिल में घुस गये हैं। अगर आप यहाँ ठहरे रहेंगे तो लोमड़ी पकड़ पाएँगे अगर छोड़ देंगे तो लोमड़ी आपका कुछ नुक़्सान नहीं कर सकती। (वहीदी)

٤٣٢٧،٤٣٢٦- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَاصِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا عُثْمَانَ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدًا وَهُوَ أَوَّلُ مَنْ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ اللهِ وَأَبَا بَكْرَةَ، وَكَانَ تَسَوَّرَ حِصْنَ الطَّائِفِ فِي أُنَاسٍ فَجَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالاَ: سَمِعْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((مَنِ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ وَهُوَ يَعْلَمُ، فَالْجَنَّةُ عَلَيْهِ حَرَامٌ)). وَقَالَ هِشَامٌ : وَأَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، أَوْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدًا وَأَبَا بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ عَاصِمٌ: قُلْتُ لَقَدْ شَهِدَ عِنْدَكَ رَجُلاَنِ حَسْبُكَ بِهِمَا قَالَ: أَجَلْ أَمَّا أَحَدُهُمَا فَأَوَّلُ مَنْ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ اللهِ وَأَمَّا الآخَرُ فَنَزَلَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَالِثَ ثَلاَثَةٍ وَعِشْرِينَ مِنَ الطَّائِفِ.

[طرفه في: ٦٧٦٧].

4326,4327. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर (मुहम्मद बिन जा'फ़र) ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे आ़सिम बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने अबू उ़स्मान नह्दी से सुना, कहा मैंने सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) से सुना, जिन्होंने सबसे पहले अल्लाह के रास्ते में तीर चलाया था और अबूबक्रा (रज़ि.) से जो ताइफ़ के क़िले पर चन्द मुसलमानों के साथ चढ़े थे और इस तरह नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे। उन दोनों सहाबियों ने बयान किया कि हमने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि जो शख़्स जानते हुए अपने बाप के सिवा किसी दूसरे की तरफ़ अपने आपको मन्सूब करे तो उस पर जन्नत हराम है। और हिशाम ने बयान किया और उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें आ़सिम ने, उन्हें अबुल आ़लिया या अबू उ़स्मान नह्दी ने, कहा कि मैंने सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) और अबूबक्रा (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आ़सिम ने बयान किया कि मैंने (अबुल आ़लिया या अबू उ़स्मान नह्दी रज़ि.) से कहा आपसे ये रिवायत ऐसे दो अस्हाब (सअ़द और अबूबक्रा रज़ि.) ने बयान की है कि यक़ीन के लिये उनक नाम काफ़ी हैं। उन्होंने कहा यक़ीनन उनमें से एक (सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि. तो वो हैं जिन्होंने अल्लाह के रास्ते में सबसे पहले तीर चलाया था और दूसरे (अबूबक्रा (रज़ि.) वो हैं जो तीसवें आदमी थे उन लोगों में जो ताइफ़ के क़िले से उतरकर आँहज़रत (ﷺ) के पास आए थे।

(दीगर मक़ाम : 6767)

तश्रीह : हाफ़िज़ ने कहा ये हिशाम की तअ़लीक़ मुझे मौसूलन नहीं मिली और इस सनद के बयान करने से इमाम बुख़ारी (रह) की ग़र्ज़ ये है कि अगली रिवायत की तफ़्सील हो जाए, उसमें मुज्मलन ये मज़्कूर था कि कई आदमियों के साथ क़िले पर चढ़े थे, इसमें बयान है कि वो तीस आदमी थे।

٤٣٢٨- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ حَدَّثَنَا

4328. हमसे मुहम्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, कहा हमसे

अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे अबू बुर्दा ने, और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के क़रीब ही था जब आप जिअ़राना से, जो मक्का और मदीना के बीच में एक मुक़ाम है उतर रहे थे। आपके साथ बिलाल (रज़ि.) थे। उसी अ़र्से में आँहज़रत (ﷺ) के पास एक बदवी आया और कहने लगा कि आपने जो मुझसे वा'दा किया है उसे पूरा क्यूँ नहीं करते? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें बशारत हो। इस पर वो बदवी बोला बशारत तो आप मुझे बहुत दे चुके फिर हुज़ूर (ﷺ) ने चेहर-ए-मुबारक अबू मूसा और बिलाल की तरफ़ फेरा, फिर आप बहुत ग़ुस्से में मा'लूम हो रहे थे। आपने फ़र्माया कि इसने बशारत वापस कर दी अब तुम दोनों इसे क़ुबूल कर लो। उन दोनों ह़ज़रात ने अ़र्ज़ किया, हमने क़ुबूल किया। फिर आपने पानी का एक प्याला तलब फ़र्माया और अपने दोनों हाथों और चेहरे को उसमें धोया और उसी में कुल्ली की और (अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) और बिलाल (रज़ि.) दोनों से) फ़र्माया कि इसका पानी पी लो और अपने चेहरों और सीनों पर उसे डाल लो और बशारत ह़ासिल करो। उन दोनों ने प्याला ले लिया और हिदायत के मुताबिक़ अ़मल किया। पर्दे के पीछे से उम्मे सलमा (रज़ि.) ने भी कहा कि अपनी माँ के लिये भी कुछ छोड़ देना। चुनाँचे उन दोनों ने उनके लिये एक ह़िस्सा छोड़ दिया।

(राजेअ़ : 188)

أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ. قَالَ كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ نَازِلٌ بِالْجِعْرَانَةِ بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ، وَمَعَهُ بِلاَلٌ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: أَلاَ تُنْجِزُ لِي مَا وَعَدْتَنِي فَقَالَ لَهُ: ((أَبْشِرْ)). فَقَالَ : قَدْ أَكْثَرْتَ عَلَيَّ مِنْ أَبْشِرْ. فَأَقْبَلَ عَلَى أَبِي مُوسَى وَبِلاَلٍ كَهَيْئَةِ الْغَضْبَانِ فَقَالَ: ((رَدَّ الْبُشْرَى فَاقْبَلاَ أَنْتُمَا)). قَالاَ: قَبِلْنَا ثُمَّ دَعَا بِقَدَحٍ فِيهِ مَاءٌ، فَغَسَلَ يَدَيْهِ وَوَجْهَهُ فِيهِ، وَمَجَّ فِيهِ ثُمَّ قَالَ: ((اشْرَبَا مِنْهُ وَأَفْرِغَا عَلَى وُجُوهِكُمَا وَنُحُورِكُمَا وَأَبْشِرَا)) فَأَخَذَا الْقَدَحَ فَفَعَلاَ فَنَادَتْ أُمُّ سَلَمَةَ مِنْ وَرَاءِ السِّتْرِ أَنْ أَفْضِلاَ لِأُمِّكُمَا فَأَفْضَلاَ لَهَا مِنْهُ طَائِفَةً.

[راجع: ١٨٨]

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ की बाब से मुनासबत इस फ़िक़रे से निकलती है कि आप जिअ़राना में उतरे हुए थे क्योंकि जिअ़राना में आप ग़ज़्व-ए-ताइफ़ में ठहरे थे।

बदवी को आँह़ज़रत (ﷺ) ने शायद कुछ रुपये पैसे या माले ग़नीमत देने का वा'दा किया होगा जब वो तक़ाज़ा करने आया तो आपने फ़र्माया माल की क्या ह़क़ीक़त है जन्नत तुझको मुबारक हो लेकिन बदक़िस्मती से वो बेअदब गंवार उस बशारत पर ख़ुश न हुआ। आपने उसकी तरफ़ से चेहरे को फेर लिया और अबू मूसा (रज़ि.) और बिलाल (रज़ि.) को ये नेअ़मत सरफ़राज़ फ़र्माई सच है।

तही दस्ताने क़िस्मत रा चे अज़ रहबरे कामिल कि ख़िज्र अज़ आबे हैवान तश्ना मी आरद सिकन्दर रा

जिअ़राना को मक्का और मदीना के बीच कहना रावी की भूल है। जिअ़राना मक्का और ताइफ़ के बीच वाक़ेअ़ है। सन् 70 ईस्वी के ह़ज्ज में जिअ़राना जाने और उस तारीख़ी जगह को देखने का शर्फ़ मुझको भी ह़ासिल है। (राज़)

4329. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम बिन उ़लय्या ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा मुझको अ़ता बिन अबी रिबाह ने ख़बर

٤٣٢٩- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ

दी, उन्हें सफ़्वान बिन यअला बिन उमय्या ने ख़बर दी कि यअला ने कहा काश! मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस वक़्त देख सकता जब आप पर वह्य नाज़िल होती है। बयान किया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) जिअराना में ठहरे हुए थे। आपके लिये एक कपड़े से साया कर दिया गया था और उसमें चन्द सहाबा (रज़ि.) भी आपके साथ मौजूद थे। इतने में एक अअराबी आए वो एक जुब्बा पहने हुए थे, ख़ुश्बू में बसा हुआ। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! एक ऐसे शख़्स के बारे में आपका क्या हुक्म है जो अपने जुब्बा में ख़ुश्बू लगाने के बाद उमरह का एहराम बाँधे? फ़ौरन ही उमर (रज़ि.) ने यअला (रज़ि.) को आने के लिये हाथ से इशारा किया। यअला (रज़ि.) हाज़िर हो गये और अपना सर (आँहज़रत ﷺ को देखने के लिये) अंदर किया (नुज़ूले वह्य की कैफ़ियत से) आँहुज़ूर (ﷺ) का चेहर-ए-मुबारक सुर्ख़ हो रहा था और ज़ोर ज़ोर से सांस चल रही थी। थोड़ी देर तक यही कैफ़ियत रही फिर ख़त्म हो गई तो आपने पूछा कि अभी उमरह के बारे में जिसने सवाल किया था वो कहाँ है? उन्हें तलाश करके लाया गया तो आपने फ़र्माया कि जो ख़ुश्बू तुमने लगा रखी है उसे तीन मर्तबा धो लो और जुब्बा उतार दो और फिर उमरह में वही काम करो जो हज्ज में करते हो।

(राजेअ: 1536)

أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ، أَنَّ صَفْوَانَ بْنَ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ يَعْلَى كَانَ يَقُولُ : لَيْتَنِي أَرَى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ، حِينَ يُنْزَلُ عَلَيْهِ قَالَ فَبَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ بِالْجِعْرَانَةِ وَعَلَيْهِ ثَوْبٌ قَدْ أُظِلَّ بِهِ مَعَهُ فِيهِ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِهِ إِذْ جَاءَهُ أَعْرَابِيٌّ عَلَيْهِ جُبَّةٌ مُتَضَمِّخٌ بِطِيبٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ تَرَى فِي رَجُلٍ أَحْرَمَ بِعُمْرَةٍ فِي جُبَّةٍ بَعْدَمَا تَضَمَّخَ بِالطِّيبِ؟ فَأَشَارَ عُمَرُ إِلَى يَعْلَى بِيَدِهِ أَنْ تَعَالَ فَجَاءَ يَعْلَى فَأَدْخَلَ رَأْسَهُ فَإِذَا النَّبِيُّ ﷺ مُحْمَرُّ الْوَجْهِ يَغِطُّ كَذَلِكَ سَاعَةً، ثُمَّ سُرِّيَ عَنْهُ فَقَالَ : ((أَيْنَ الَّذِي يَسْأَلُنِي عَنِ الْعُمْرَةِ آنِفًا))؟ فَالْتُمِسَ الرَّجُلُ فَأُتِيَ بِهِ، فَقَالَ : ((أَمَّا الطِّيبُ الَّذِي بِكَ فَاغْسِلْهُ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، وَأَمَّا الْجُبَّةُ فَانْزِعْهَا ثُمَّ اصْنَعْ فِي عُمْرَتِكَ كَمَا تَصْنَعُ فِي حَجِّكَ)).

[راجع: ١٥٣٦]

तश्रीह : इस हदीष़ की बह्ष़ किताबुल हज्ज में गुज़र चुकी है। क़स्तलानी (रह) ने कहा हज्जतुल विदाअ की हदीष़ इसकी नासिख़ है और ये हदीष़ मन्सूख़ है। हज्जतुल विदाअ की हदीष़ में मज़्कूर है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने एहराम बाँधते वक़्त आँहज़रत (ﷺ) के ख़ुश्बू लगाई थी। लिहाज़ा ख़ुश्बू का इस्ते'माल जाइज़ है।

4330. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अम्र बिन यह्या ने, उनसे अब्बाद बिन तमीम ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-हुनैन के मौक़े पर अल्लाह तआला ने अपने रसूल को जो ग़नीमत दी थी आपने उसकी तक़्सीम कमज़ोर ईमान के लोगों में (जो फ़तहे-मक्का के बाद ईमान लाए थे) कर दी और अंसार को उसमें से कुछ नहीं दिया। उसका उन्हें कुछ मलाल हुआ कि वो माल जो आँहज़रत (ﷺ) ने दूसरों को दिया उन्हें क्यूँ नहीं दिया। आपने उसके बाद

٤٣٣٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى عَنْ عَبَّادِ بْنِ تَمِيمٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَاصِمٍ، قَالَ: لَمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ حُنَيْنٍ قَسَمَ فِي النَّاسِ فِي الْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ، وَلَمْ يُعْطِ الأَنْصَارَ شَيْئًا

فَكَأَنَّهُمْ وَجَدُوا إِذْ لَمْ يُصِبْهُمْ مَا أَصَابَ النَّاسَ فَخَطَبَهُمْ، فَقَالَ : ((يَا مَعْشَرَ الأَنْصَارِ أَلَمْ أَجِدْكُمْ ضُلاَّلاً فَهَدَاكُمُ اللهُ بِي، وَكُنْتُمْ مُتَفَرِّقِينَ فَأَلَّفَكُمُ اللهُ بِي، وَعَالَةً فَأَغْنَاكُمُ اللهُ بِي)) كُلَّمَا قَالَ شَيْئًا قَالُوا : اللهُ وَرَسُولُهُ أَمَنُّ قَالَ: ((مَا يَمْنَعُكُمْ أَنْ تُجِيبُوا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟)) قَالَ: كُلَّمَا قَالَ شَيْئًا قَالُوا: اللهُ وَرَسُولُهُ أَمَنُّ قَالَ: ((لَوْ شِئْتُمْ قُلْتُمْ جِئْتَنَا كَذَا وَكَذَا أَلاَ تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالشَّاةِ وَالْبَعِيرِ، وَتَذْهَبُونَ بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى رِحَالِكُمْ؟ لَوْ لاَ الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الأَنْصَارِ، وَلَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا وَشِعْبًا، لَسَلَكْتُ وَادِيَ الأَنْصَارِ وَشِعْبَهَا، الأَنْصَارُ شِعَارٌ، وَالنَّاسُ دِثَارٌ، إِنَّكُمْ سَتَلْقَوْنَ بَعْدِي أُثْرَةً فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الْحَوْضِ)).

[طرفه في :٧٢٤٥].

उन्हें ख़िताब किया और फ़र्माया ऐ अंसारियों! क्या मैंने तुम्हें गुमराह नहीं पाया था फिर तुमको मेरे ज़रिये अल्लाह तआला ने हिदायत नसीब की और तुम में आपस में दुश्मनी और ना इत्तिफ़ाक़ी थी तो अल्लाह तआला ने मेरे ज़रिये तुममें बाहम उल्फ़त पैदा की और तुम मुहताज थे अल्लाह तआला ने मेरे ज़रिये ग़नी किया। आपके एक एक जुम्ले पर अंसार कहते जाते थे कि अल्लाह और रसूल के हम सबसे ज़्यादा एहसानमद हैं । हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी बातों का जवाब देने से तुम्हें किया चीज़ मानेअ रही? बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) के हर इशारा पर अंसार अर्ज़ करते जाते कि अल्लाह और उसके रसूल के हम सबसे ज़्यादा एहसानमद हैं फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तुम चाहते तो मुझसे इस इस तरह भी कह सकते थे (कि आप आए तो लोग आपको झुठला रहे थे, लेकिन हमने आपकी तस्दीक़ की वग़ैरह) क्या तुम उस पर ख़ुश नहीं हो कि जब लोग ऊँट और बकरियाँ ले जा रहे होंगे तो तुम अपने घरों की तरफ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) को साथ लिये जा रहे होगे? अगर हिजरत की फ़ज़ीलत न होती तो मैं भी अंसार का एक आदमी बन जाता। लोग ख़्वाह किसी घाटी या वादी में चलें, मैं तो अंसार की वादी और घाटी में चलूँगा। अंसार उस कपड़े की तरह हैं या'नी अस्तर जो हमेशा जिस्म से लगा रहता है और दूसरे लोग ऊपर के कपड़े की तरह हैं या'नी अब्रह। तुम लोग (अंसार) देखोगे कि मेरे बाद तुम पर दूसरों को तरजीह दी जाएगी। तुम ऐसे वक़्त में सब्र करना यहाँ तक कि मुझे हौज़े कौषर पर आ मिलो।

(दीगर मक़ाम : 7245)

तश्रीह : इस हदीष की सनद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आसिम ज़मानी का ज़िक्र है जो मशहूर सहाबी हैं । कहते हैं मुसैलमा कज़्ज़ाब को उन्होंने ही मारा था। हर्रा सन् 63 हिजरी में यज़ीद की फ़ौज के हाथ से शहीद हुए। रिवायत में आँहज़रत (ﷺ) के माल तक़्सीम करने का ज़िक्र है। आपने ये माल क़ुरैश के उन लोगो को दिया था जो नौ मुस्लिम थे, अभी उनका इस्लाम मज़्बूत नहीं हुआ था, जैसे अबू सुफ़यान, सुहैल, हुवैतिब, हकीम बिन हिज़ाम, अबुस्सनाबिल, सफ़्वान बिन उमय्या, अब्दुर्रहमान बिन यरबूअ वग़ैरह। शिआर से मुराद या अस्तर में से नीचे का कपड़ा और दिषार से अब्रह या'नी ऊपर का कपड़ा मुराद है। अंसार के लिये आपने ये शर्फ़ अता किया कि उनको हर वक़्त अपने जिस्मे मुबारक से लगा हुआ कपड़ा की मिषाल क़रार दिया। फ़िल वाक़ेअ क़यामत तक के लिये ये शर्फ़ अंसारे मदीना को हासिल है कि आप उनके शहर में आराम फ़र्मा रहे हैं। (ﷺ)

4331. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी, बयान किया कि जब क़बीला हवाज़िन के माल में से अल्लाह तआ़ला अपने रसूल को जो देना था वो दिया तो अंसार के कुछ लोगों को रंज हुआ क्योंकि आँहुज़ूर (ﷺ) ने कुछ लोगों को सौ सौ ऊँट दे दिये थे कुछ लोगों ने कहा कि अल्लाह अपने रसूल (ﷺ) की मग़्फ़िरत करे, क़ुरैश को तो आप इनायत कर रहे हैं और हमको छोड़ दिया है हालाँकि अभी हमारी तलवारों से उनका ख़ून टपक रहा है। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि अंसार की ये बात हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के कान में आई तो आपने उन्हें बुला भेजा और चमड़े के एक ख़ैमे में उन्हें जमा किया, उनके साथ उनके अ़लावा किसी को भी आपने नहीं बुलाया था, जब सब लोग जमा होगये तो आप (ﷺ) खड़े हुए और फ़र्माया तुम्हारी जो बात मुझे मा'लूम हुई है क्या वो सहीह है? अंसार के जो समझदार लोग थे, उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! जो लोग हमारे मुअ़ज़्ज़ज़ और सरदार हैं, उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं कही है। अल्बत्ता हमारे कुछ लोग जो अभी नौ उ़म्र हैं, उन्होंने कहा है कि अल्लाह रसूलुल्लाह (ﷺ) की मग़्फ़िरत करे, क़ुरैश को आप दे रहे हैं और हमें छोड़ दिया है हालाँकि अभी हमारी तलवारों से उनका ख़ून टपक रहा है। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि मैं ऐसे लोगों को देता हूँ। जो अभी नए-नए इस्लाम में दाख़िल हुए हैं, इस तरह मैं उनकी दिलजोई करता हूँ। क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि दूसरे लोग तो माल व दौलत साथ ले जाएँ और तुम नबी (ﷺ) को अपने साथ अपने घर ले जाओ। अल्लाह की क़सम! कि जो चीज़ तुम अपने साथ ले जाओगे वो उससे बेहतर है जो वो ले जा रहे हैं। अंसार ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम इस पर राज़ी हैं। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे बाद तुम देखोगे कि तुम पर दूसरों को तरजीह दी जाएगी। उस वक़्त सब्र करना, यहाँ तक कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से आ मिलो। मैं हौज़े कौसर पर मिलूँगा। अनस (रज़ि.) ने कहा लेकिन अंसार ने नहीं किया। (राजेअ़ : 3146)

٤٣٣١- حدَّثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ نَاسٌ مِنَ الأَنْصَارِ حِينَ أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ مَا أَفَاءَ مِنْ أَمْوَالِ هَوَازِنَ، فَطَفِقَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْطِي رِجَالاً الْمِائَةَ مِنَ الإِبِلِ. فَقَالُوا: يَغْفِرُ اللهُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَتْرُكُنَا، وَسُيُوفُنَا تَقْطُرُ مِنْ دِمَائِهِمْ، قَالَ أَنَسٌ: فَحُدِّثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِمَقَالَتِهِمْ فَأَرْسَلَ إِلَى الأَنْصَارِ فَجَمَعَهُمْ فِي قُبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ وَلَمْ يَدْعُ مَعَهُمْ غَيْرَهُمْ فَلَمَّا اجْتَمَعُوا قَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَا حَدِيثٌ بَلَغَنِي عَنْكُمْ؟)) فَقَالَ فُقَهَاءُ الأَنْصَارِ: أَمَّا رُؤَسَاؤُنَا يَا رَسُولَ اللهِ فَلَمْ يَقُولُوا شَيْئًا، وَأَمَّا نَاسٌ مِنَّا حَدِيثَةٌ أَسْنَانُهُمْ فَقَالُوا: يَغْفِرُ اللهُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ يُعْطِي قُرَيْشًا وَيَتْرُكُنَا وَسُيُوفُنَا تَقْطُرُ مِنْ دِمَائِهِمْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَإِنِّي أُعْطِي رِجَالاً حَدِيثِي عَهْدٍ بِكُفْرٍ، أَتَأَلَّفُهُمْ أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالأَمْوَالِ وَتَذْهَبُونَ بِالنَّبِيِّ ﷺ إِلَى رِحَالِكُمْ؟ فَوَ اللهِ لَمَا تَنْقَلِبُونَ بِهِ خَيْرٌ مِمَّا يَنْقَلِبُونَ بِهِ)) قَالُوا : يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ رَضِينَا، فَقَالَ لَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ: ((سَتَجِدُونَ أُثْرَةً شَدِيدَةً فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوُا اللهَ وَرَسُولَهُ فَإِنِّي عَلَى الْحَوْضِ)). قَالَ أَنَسٌ : فَلَمْ يَصْبِرُوا.

[راجع: ٣١٤٦]

हज़रत अनस (रज़ि.) का इशारा ग़ालिबन सरदारे अंसार हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) की तरफ़ था, जिन्होने वफ़ाते नबवी के बाद **मिन्ना अमीर व मिन्कुम अमीर** की आवाज़ उठाई थी, मगर जुम्हूरे अंसार ने उससे मुवाफ़क़त नहीं की और ख़ुलफ़-ए-क़ुरैश को तस्लीम कर लिया। रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्हु।

तश्रीह : सनद में हज़रत हिशाम बिन उर्वा का नाम आया है। ये मदीना के मशहूर ताबेईन में से हैं जिनका शुमार अकाबिर उलमा में होता है। सन् 61 हिजरी में पैदा हुए और सन् 146हिजरी में बमुक़ामे बग़दाद इंतिक़ाल हुआ। इमाम ज़ुह्री भी मदीना के मशहूर जलीलुल क़द्र ताबेई हैं। ज़ुहरा बिन किलाब की तरफ़ मन्सूब हैं कुन्नियत अबूबक्र नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन शिहाब है, वक़्त के बहुत बड़े आलिम बिल्लाह थे। माहे रमज़ान सन् 124 हिजरी में वफ़ात पाई।

4332. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबुत् तियाह ने और उनसे अनस बिन मालिक (रजि) ने बयान किया कि फ़तहे-मक्का के ज़माने में आँहज़रत (ﷺ) ने क़ुरैश में (हुनैन की) ग़नीमत की तक़्सीम कर दी। अंसार (रज़ि.) इससे और रंजीदा हुए। आपने फ़र्माया क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि दूसरे लोग दुनिया अपने साथ ले जाएँ और तुम अपने साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) को ले जाओ। अंसार ने अर्ज़ किया कि हम इस पर ख़ुश हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि लोग दूसरे किसी वादी या घाटी में चलें तो मैं अंसार की वादी या घाटी में चलूँगा। (राजेअ : 3146)

٤٣٣٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ عَنْ أَنَسٍ قَالَ : لَمَّا كَانَ يَوْمُ فَتْحِ مَكَّةَ قَسَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ غَنَائِمَ بَيْنَ قُرَيْشٍ فَغَضِبَتِ الأَنْصَارُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالدُّنْيَا وَتَذْهَبُونَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ؟)) قَالُوا بَلَى قَالَ ((لَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا أَوْ شِعْبًا لَسَلَكْتُ وَادِيَ الأَنْصَارِ أَوْ شِعْبَهُمْ)).

[راجع: ٣١٤٦]

तश्रीह : हज़रत सुलैमान बिन हर्ब बसरी मक्का के क़ाज़ी हैं। तक़रीबन दस हज़ार अहादीष़ उनसे मरवी हैं। बग़दाद में उनकी मज्लिसे दर्स में शुरका-ए-दरस की ता'दाद चालीस हज़ार होती थी। सन् 140 हिजरी में पैदा हुए और सन् 158 हिजरी तक तलबे हदीष़ में सरगर्दां रहे। उन्नीस साल हम्माद बिन ज़ैद नामी उस्ताद की ख़िदमत में गुज़ारे। सन् 224 हिजरी में इनका इंतिक़ाल हुआ। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) के बुज़ुर्गतरीन उस्ताज़ हैं, रहिमहमुल्लाह अज्मईन

4333. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे अज़्हर बिन सअद सिमान ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह इब्ने औन ने, उन्हें हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस ने ख़बर दी और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-हुनैन में जब क़बीला हवाज़िन से जंग शुरू हुई तो नबी करीम (ﷺ) के साथ दस हज़ार फ़ौज थी। क़ुरैश के वो लोग भी साथ थे जिन्हें फ़तहे-मक्का के बाद आँहुज़ूर (ﷺ) ने छोड़ दिया था फिर सबने पीठ फेर ली। हुज़ूर (ﷺ) ने पुकारा, ऐ अंसारियों! उन्होंने जवाब दिया कि हम हाज़िर हैं, या रसूलल्लाह! आपके हर हुक्म की ता'मील के लिये हम हाज़िर हैं। हम आपके सामने हैं। फिर हुज़ूर (ﷺ) अपनी सवारी से उतर गये और फ़र्माया कि मैं अल्लाह का बन्दा और उसका

٤٣٣٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَزْهَرُ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ أَنْبَأَنَا هِشَامُ بْنُ زَيْدِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ حُنَيْنٍ الْتَقَى هَوَازِنُ وَمَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشَرَةُ آلاَفٍ وَالطُّلَقَاءُ فَأَدْبَرُوا قَالَ: ((يَا مَعْشَرَ الأَنْصَارِ؟)) قَالُوا: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ وَسَعْدَيْكَ لَبَّيْكَ نَحْنُ بَيْنَ يَدَيْكَ فَنَزَلَ

रसूल हूँ फिर मुश्रिकीन को हार हो गई। जिन लोगों को हुज़ूर (ﷺ) ने फ़तहे-मक्का के बाद छोड़ दिया था और मुहाजिरीन को आँहज़रत (ﷺ) ने दिया लेकिन अंसार को कुछ नहीं दिया। इस पर अंसार (रज़ि.) ने अपने ग़म का इज़्हार किया तो आपने उन्हें बुलाया और एक ख़ैमा में जमा किया फिर फ़र्माया कि तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि दूसरे लोग बकरी और ऊँट अपने साथ ले जाएँ और तुम अपने साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) को ले जाओ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर लोग किसी वादी या घाटी में चलें और अंसार दूसरी घाटी में चलें तो मैं अंसार की घाटी में चलना पसन्द करूँगा।

(राजेअ : 3146)

النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((أَنَا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ)) فَانْهَزَمَ الْمُشْرِكُونَ فَأَعْطَى الطُّلَقَاءَ وَالْمُهَاجِرِينَ وَلَمْ يُعْطِ الأَنْصَارَ شَيْئًا فَقَالُوا: فَدَعَاهُمْ فَأَدْخَلَهُمْ فِي قُبَّةٍ فَقَالَ: ((أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالشَّاةِ وَالْبَعِيرِ وَتَذْهَبُونَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ؟)) فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا، وَسَلَكَتِ الأَنْصَارُ شِعْبًا، لاَخْتَرْتُ شِعْبَ الأَنْصَارِ)).

[راجع: ٣١٤٦]

रिवायत में तुलक़ा से मुराद वो लोग हैं जिनको आपने फ़तहे-मक्का के दिन छोड़ दिया (एह्सानन) उनके पहले जराइम (अपराधों) पर उनसे कोई गिरफ़्त नहीं की जैसे अबू सुफ़यान, उनके बेटे मुआविया बिन हिज़ाम (रज़ि.) वग़ैरह। उन लोगों को आम मुआफ़ी दे दी गई और उनको बहुत नवाज़ा भी गया। बाद में ये हज़रात इस्लाम के सच्चे जानिषार मददगार ष़ाबित हुए और कअन्नहु वलिय्युन् हमीम का नमूना बन गये। अंसार के लिये आपने जो शर्फ़अता फ़र्माया दुनिया का माल व दौलत उसके मुक़ाबले पर एक बाल बराबर भी वज़न नहीं रखता था। चुनाँचे अंसार ने भी उसको समझा और उस शर्फ़ की क़द्र की और अव्वल से आख़िर तक आपके साथ पूरी वफ़ादारी से बर्ताव किया, रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्ह। उसी का नतीजा था कि वफ़ाते नबवी के बाद तमाम अंसार ने बख़ुशी व रग़बत ख़ुलफ़-ए-क़ुरैश की इताअत को क़ुबूल किया और अपने लिये कोई मन्सब नहीं चाहा। सदक़ू मा आहदुल्लाह अलैहि, जंगे हुनैन में हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की सवारी की लगाम थामे हुए थे।

4334. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने क़तादा से सुना और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार के कुछ लोगों को जमा किया और फ़र्माया कि क़ुरैश के कुफ़्र का और उनकी बर्बादियों का ज़माना क़रीब का है। मेरा मक़्सद सिर्फ़ उनकी दिलजोई और तालीफ़े क़ल्ब था क्या तुम इस पर राज़ी और ख़ुश नहीं हो कि लोग दुनिया लेकर अपने साथ जाएँ और तुम अल्लाह के रसूल (ﷺ) को अपने घर ले जाओ। सब अंसारी बोले, क्यों नहीं (हम इसी पर राज़ी हैं) हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अगर दूसरे लोग किसी वादी में चलें और अंसार किसी और घाटी में चलें तो मैं अंसार की वादी या घाटी में चलूँगा।

٤٣٣٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَمَعَ النَّبِيُّ ﷺ نَاسًا مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ: ((إِنَّ قُرَيْشًا حَدِيثُ عَهْدٍ بِجَاهِلِيَّةٍ وَمُصِيبَةٍ وَإِنِّي أَرَدْتُ أَنْ أَجْبُرَهُمْ وَأَتَأَلَّفَهُمْ، أَمَا تَرْضَوْنَ أَنْ يَرْجِعَ النَّاسُ بِالدُّنْيَا، وَتَرْجِعُونَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى بُيُوتِكُمْ؟)) قَالُوا: بَلَى، قَالَ: ((لَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا وَسَلَكَتِ الأَنْصَارُ شِعْبًا، لَسَلَكْتُ وَادِيَ الأَنْصَارِ - أَوْ شِعْبَ الأَنْصَارِ)).

(राजेअ : 3146)

[راجع: ٣١٤٦]

4335. हमसे क़ुबैसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द(रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) हुनैन के माले ग़नीमत की तक़्सीम कर रहे थे, तो अंसार के एक शख़्स ने (जो मुनाफ़िक़ था) कहा कि इस तक़्सीम में अल्लाह की ख़ुशनुदी का कोई ख़्याल नहीं रखा गया है। मैंने रसूले अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको इस बद गो की ख़बर दी तो आपके चेहरा मुबारक का रंग बदल गया फिर आपने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला मूसा (अलैहिस्सलाम) पर रहम फ़र्माए उन्हें इससे भी ज़्यादा दुख़ पहुँचाया गया था, पस उन्होंने स़ब्र किया। (राजेअ़ : 3150)

٤٣٣٥- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: لَمَّا قَسَمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قِسْمَةَ حُنَيْنٍ قَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ: مَا أَرَادَ بِهَا وَجْهَ اللهِ؟ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ فَتَغَيَّرَ وَجْهُهُ ثُمَّ قَالَ: ((رَحْمَةُ اللهِ عَلَى مُوسَى لَقَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ)).

[راجع: ٣١٥٠]

तश्रीह : ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के मिज़ाज में शर्म और ह़या बहुत थी। वो छुपकर तंहाई में नहाया करते थे। बनी इस्राईल को ये शगूफ़ा हाथ आया। किसी ने कहा कि उनके ख़ुसिये बढ़ गये हैं। किसी ने कहा, उनको बरस़ हो गया है। इस क़िस्म के बोह्तान लगाने शुरू किये। आख़िर अल्लाह तआ़ला ने उनकी पाकी और बेऐबी ज़ाहिर कर दी। ये क़िस्सा क़ुर्आन शरीफ़ मे मज़्कूर है **या अय्युहल्लज़ीन आमनू ला तकूनू कल्लज़ीन आज़ौ मूसा** (अल अह़ज़ाब : 69) आख़िर तक। रिवायत में जिस मुनाफ़िक़ का ज़िक्र मज़्कूर है। इस कमबख़्त ने इतना ग़ौर नहीं किया कि दुनिया का माल व दौलत अस्बाब सब परवरदिगार की मिल्क हैं जिस पैग़म्बर को अल्लाह तआ़ला ने अपना रसूल बनाकर दुनिया में भेज दिया उसको पूरा इख़्तियार है कि जैसी मस्लिहत हो उसी तरह़ दुनिया का माल तक़्सीम करे। अल्लाह की रज़ामन्दी का ख़याल जितना उसके पैग़म्बर को होगा, इसका अ़श्रे अशीर भी ओरों को नहीं हो सकता। बद बातिन क़िस्म के लोगों का शेवा ही ये रहा है कि ख़ाह मख़ाह दूसरों पर इल्ज़ाम बाज़ी करते रहते हैं और अपने उ़यूब पर कभी उनकी नज़र नहीं जाती। सनद में ह़ज़रत सुफ़ियान ष़ौरी का नाम आया है। ये कूफ़ी हैं अपने ज़माना में फ़िक़्ह और इज्तिहाद के जामेअ़ थे। ख़ुसूसन इल्मे ह़दीष़ में मर्जअ़ थे। उनका ष़िक़्ह और ज़ाहिद आबिद होना मुसल्लम है। उनको इस्लाम का क़ुतुब कहा गया है। अइम्म-ए-मुज्तहिदीन में उनका शुमार है। सन् 99 हिजरी में पैदा हुए और सन् 161 हिजरी में बस़रा में वफ़ात पाई, **हशरनल्लाहु मअ़हुम आमीन**

4336. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि ग़ज़्व-ए-हुनैन के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चन्द लोगों को बहुत बहुत जानवर दिये। चुनाँचे अक़रआ़ बिन हाबिस को जिनका दिल बहलाना मंज़ूर था, सौ ऊँट दिये। उ़ययना बिन ह़स्न फ़ुज़ारी को भी इतने ही दिये और इसी तरह़ दूसरे अशराफ़े अ़रब को दिया। इस पर एक शख़्स ने कहा कि इस तक़्सीम में अल्लाह की रज़ा का कोई ख़्याल नहीं किया गया। (इब्ने मसऊ़द रज़ि. ने बयान किया कि) मैंने कहा कि मैं इसकी ख़बर रसूलुल्लाह (ﷺ) को करूँगा। जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये कलिमा

٤٣٣٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : لَمَّا كَانَ يَوْمُ حُنَيْنٍ آثَرَ النَّبِيُّ ﷺ نَاسًا أَعْطَى الأَقْرَعَ مِائَةً مِنَ الإِبِلِ وَأَعْطَى عُيَيْنَةَ مِثْلَ ذَلِكَ، وَأَعْطَى نَاسًا فَقَالَ رَجُلٌ: مَا أُرِيدَ بِهَذِهِ الْقِسْمَةِ وَجْهُ اللهِ. فَقُلْتُ لأُخْبِرَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((رَحِمَ اللهُ مُوسَى قَدْ أُوذِيَ

सुना तो फ़र्माया अल्लाह मूसा पर रहम फ़र्माए कि उन्हे इससे भी ज़्यादा दुख दिया गया था लेकिन उन्होंने सब्र किया। (राजेअ : 3150)

بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ)).

[راجع: ٣١٥٠]

सब्र अजीब नेअ़मत है पैग़म्बरों की ख़सलत है। जिसने सब्र किया वो कामयाब हुआ, आख़िर में उसका दुश्मन ज़लील व ख़्वार हुआ। अल्लाह का लाख बार शुक्र है कि मुझ नाचीज़ को भी अपनी ज़िन्दगी में बहुत से ख़बीषुन् नफ़्स दुश्मनों से पाला पड़ा। मगर सब्र से काम लिया, आख़िर वो दुश्मन ही ज़लील व ख़्वार हुए। ख़िदमते बुख़ारी के दौरान भी बहुत से हासिदीन की हफ़्वात पर सब्र किया। आख़िर अल्लाह का लाखों लाख शुक्र जिसने इस ख़िदमत के लिये मुझको हिम्मत अ़ता फ़र्माई, वल हम्दुलिल्लाहि अला ज़ालिक।

4337. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुआज़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने, उनसे हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस बिन मालिक ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हुनैन का दिन हुआ तो क़बीला हवाज़िन और ग़त्फ़ान अपने मवेशी और बाल–बच्चों को साथ लेकर जंग के लिये निकले। उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) के साथ दस हज़ार का लश्कर था। उनमें कुछ लोग वो भी थे, जिन्हें आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़तहे-मक्का के बाद एहसान रखकर छोड़ दिया था, फिर उन सबने पीठ फेर ली और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तन्हा रह गये। उस दिन हुज़ूर (ﷺ) ने दो बार पुकारा दोनों पुकार एक–दूसरे से अलग अलग थीं, आपने दाएँ तरफ़ मुतवज्जह होकर पुकारा, ऐ अंसारियो! उन्होंने जवाब दिया हम हाज़िर हैं या रसूलल्लाह! आपको बशारत हो, हम आपके साथ हैं, लड़ने को तैयार हैं। फिर आप बाएँ तरफ़ मुतवज्जह हुए और आवाज़ दी ऐ अंसारियों! उन्होंने उधर से जवाब दिया कि हम हाज़िर हैं या रसूलल्लाह! बशारत हो, हम आपके साथ हैं। हुज़ूर (ﷺ) उस वक़्त एक सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे फिर आप उतर गये और फ़र्माया मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ। अंजाम कार काफ़िरों को हार हुई और इस लड़ाई में बहुत ज़्यादा ग़नीमत हासिल हुई। हुज़ूर (ﷺ) ने उसे मुहाजिरीन में और क़ुरैशियों में तक़्सीम कर दिया (जिन्हें फ़तहे-मक्का के मौक़े पर एहसान रखकर छोड़ दिया था) अंसार को उसमें से कुछ अ़ता नहीं किया। अंसार (के कुछ नौजवानों) ने कहा कि जब सख़्त वक़्त आता है तो हमें बुलाया जाता है और ग़नीमत दूसरों को बांट दी जाती है। ये बात हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तक पहुँची तो आपने अंसार को एक ख़ैमे में जमा किया और फ़र्माया ऐ अंसारियों! क्या वो बात सहीह है जो

٤٣٣٧– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدِ بْنِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : لَمَّا كَانَ يَوْمُ حُنَيْنٍ أَقْبَلَتْ هَوَازِنُ وَغَطَفَانُ وَغَيْرُهُمْ بِنَعَمِهِمْ وَذَرَارِيِّهِمْ وَمَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشَرَةُ آلاَفٍ وَمِنَ الطُّلَقَاءِ فَأَدْبَرُوا عَنْهُ حَتَّى بَقِيَ وَحْدَهُ فَنَادَى يَوْمَئِذٍ نِدَاءَيْنِ لَمْ يَخْلِطْ بَيْنَهُمَا الْتَفَتَ عَنْ يَمِينِهِ فَقَالَ: ((يَا مَعْشَرَ الأَنْصَارِ)) قَالُوا : لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ أَبْشِرْ نَحْنُ مَعَكَ، ثُمَّ الْتَفَتَ عَنْ يَسَارِهِ فَقَالَ: ((يَا مَعْشَرَ الأَنْصَارِ)). قَالُوا: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ أَبْشِرْ نَحْنُ مَعَكَ وَهُوَ عَلَى بَغْلَةٍ بَيْضَاءَ فَنَزَلَ فَقَالَ: ((أَنَا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ)) فَانْهَزَمَ الْمُشْرِكُونَ فَأَصَابَ يَوْمَئِذٍ غَنَائِمَ كَثِيرَةً فَقَسَمَ فِي الْمُهَاجِرِينَ وَالطُّلَقَاءِ وَلَمْ يُعْطِ الأَنْصَارَ شَيْئًا فَقَالَتِ الأَنْصَارُ: إِذَا كَانَتْ شَدِيدَةٌ فَنَحْنُ نُدْعَى وَيُعْطَى الْغَنِيمَةَ غَيْرُنَا فَبَلَغَهُ ذَلِكَ فَجَمَعَهُمْ فِي قُبَّةٍ فَقَالَ: ((يَا مَعْشَرَ الأَنْصَارِ مَا حَدِيثٌ بَلَغَنِي عَنْكُمْ؟)) فَسَكَتُوا فَقَالَ:

((يَا مَعْشَرَ الأَنْصَارِ أَلاَ تَرْضَوْنَ أَنْ يَذْهَبَ النَّاسُ بِالدُّنْيَا وَتَذْهَبُونَ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَحُوزُونَهُ إِلَى بُيُوتِكُمْ؟)) قَالُوا: بَلَى، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((لَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا وَسَلَكَتِ الأَنْصَارُ شِعْبًا لأَخَذْتُ شِعْبَ الأَنْصَارِ)) فَقَالَ هِشَامٌ: يَا أَبَا حَمْزَةَ وَأَنْتَ شَاهِدٌ ذَاكَ قَالَ : وَأَيْنَ أَغِيبُ عَنْهُ؟

[راجع: ٣١٤٦]

तुम्हारे बारे में मुझे मा'लूम हुई है? इस पर वो ख़ामोश हो गये फिर आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अंसारियो! क्या तुम इस पर ख़ुश नहीं हो कि लोग दुनिया अपने साथ ले जाएँगे और तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) को अपने घर ले जाओगे। अंसारियों ने अर्ज़ किया हम इसी पर ख़ुश हैं। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर लोग किसी वादी में चलें और अंसार किसी घाटी में चलें तो मैं अंसार ही की घाटी में चलना पसन्द करूँगा । इस पर हिशाम ने पूछा, ऐ अबू हम्ज़ा! क्या आप वहाँ मौजूद थे? उन्होंने कहा कि मैं हुज़ूर (ﷺ) से ग़ायब ही कब होता था। (राजेअ : 3146)

तश्रीह : मुस्लिम की रिवायत में है आपने हज़रत अब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया शज्रे रिज़्वान वालों को आवाज़ दो। उनकी आवाज़ बुलन्द थी। उन्होंने पुकारा ऐ शज्र-ए-रिज़्वान वालों! तुम कहाँ चले गये हो, उनकी पुकार सुनते ही ये लोग ऐसे लपके जैसे गाएँ शफ़क़त से अपने बच्चों की तरफ़ दौड़ती हैं। सब कहने लगे हम हाज़िर हैं, हम हाज़िर हैं।

٥٨- باب السَّرِيَّةِ الَّتِي قِبَلَ نَجْدٍ.

बाब 58 : नज्द की तरफ़ जो लश्कर आँहज़रत (ﷺ) ने रवाना किया था, उसका बयान

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी ने इसको जंगे ताइफ़ के बाद ज़िक्र किया है लेकिन अहले मग़ाज़ी ने कहा है कि ये लश्कर फ़तहे-मक्का को जाने से पहले आपने रवाना किया था। इब्ने सअद ने कहा कि ये आठवीं सन् हिजरी के माहे शाबान का वाक़िया है। कुछ ने कहा माहे रमज़ान में ये लश्कर रवाना किया था। इसके सरदार अबू क़तादा (रज़ि.) थे। इसमें सिर्फ़ 25 आदमी थे, जिन्होंने ग़त्फ़ान से मुक़ाबला में दो सौ ऊँट और दो हज़ार बकरियाँ हासिल कीं।

٤٣٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ سَرِيَّةً قِبَلَ نَجْدٍ فَكُنْتُ فِيهَا فَبَلَغَتْ سِهَامُنَا اثْنَيْ عَشَرَ بَعِيرًا وَنُفِّلْنَا بَعِيرًا بَعِيرًا فَرَجَعْنَا بِثَلاَثَةَ عَشَرَ بَعِيرًا.[راجع: ٣١٣٤]

4338. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने नजद की तरफ़ एक लश्कर रवाना किया था, मैं भी उसमें शरीक था। उसमें हमारा हिस्सा (माले ग़नीमत में) बारह बारह ऊँट पड़े और एक एक ऊँट हमें और फ़ालतू दिया गया। इस तरह हम तेरह तेरह ऊँट साथ लेकर वापस आए। (राजेअ : 3134)

٥٩- باب بَعْثِ النَّبِيِّ ﷺ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ إِلَى بَنِي جَذِيمَةَ

बाब 59 : नबी करीम (ﷺ) का ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को बनी जज़ीमा क़बीले की तरफ़ भेजना

तश्रीह : ये बाद फ़तहे-मक्का के था बइत्तिफ़ाक़ मग़ाज़ी आपने ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को तीन सौ 50 आदमी साथ देकर इसलिये रवाना किया था कि बनू जज़ीमा को इस्लाम की दा'वत दें। लड़ाई के लिये नहीं भेजा था।

4339. मुझसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी।

٤٣٣٩- حَدَّثَنِي مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ ح.

(दूसरी सनद) और मुझसे नईम बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने और उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को बनी जज़ीमा की तरफ़ भेजा। ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने उन्हें इस्लाम की दा'वत दी लेकिन उन्हें अस्लम्ना (हम इस्लाम लाए) कहना नहीं आता था, उसके बजाय वो सबाना सबाना (हम बेदीन हो गये या'नी अपने आबाई दीन से हट गये) कहने लगे। ख़ालिद (रज़ि.) ने उन्हें क़त्ल करना और क़ैद करना शुरू कर दिया और फिर हममें से हर शख़्स को इसका क़ैदी हिफ़ाज़त के लिये दे दिया फिर जब एक दिन ख़ालिद (रज़ि.) ने हम सबको हुक्म दिया कि हम अपने क़ैदियों को क़त्ल कर दें। मैंने कहा अल्लाह की क़सम मैं अपने क़ैदी को क़त्ल नहीं करूँगा और न मेरे साथियों में कोई अपने क़ैदी क़त्ल करेगा आख़िर जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपसे सूरते हाल का बयान किया तो आपने हाथ उठाकर दुआ की। ऐ अल्लाह! मैं इस काम से बेज़ारी का ऐलान करता हूँ, जो ख़ालिद ने किया, दो मर्तबा आपने यही फ़र्माया।
(दीगर मक़ाम : 7189)

٠٠٠٠- وَحَدَّثَنِي نُعَيْمٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ إِلَى بَنِي جَذِيمَةَ فَدَعَاهُمْ إِلَى الإِسْلاَمِ فَلَمْ يُحْسِنُوا أَنْ يَقُولُوا: أَسْلَمْنَا فَجَعَلُوا يَقُولُونَ: صَبَأْنَا صَبَأْنَا، فَجَعَلَ خَالِدٌ يَقْتُلُ مِنْهُمْ وَيَأْسِرُ وَدَفَعَ إِلَى كُلِّ رَجُلٍ مِنَّا أَسِيرَهُ حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمٌ أَمَرَ خَالِدٌ أَنْ يَقْتُلَ كُلُّ رَجُلٍ مِنَّا أَسِيرَهُ، فَقُلْتُ: وَاللهِ لاَ أَقْتُلُ أَسِيرِي، وَلاَ يَقْتُلُ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِي أَسِيرَهُ، حَتَّى قَدِمْنَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَذَكَرْنَاهُ فَرَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَهُ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ خَالِدٌ)). مَرَّتَيْنِ. [طرفه في : ٧١٨٩].

तश्रीह : ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) फ़ौज के सरदार थे मगर अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने इस हुक्म में उनकी इताअ़त नहीं की क्योंकि उनका ये हुक्म शरअ़ के ख़िलाफ़ था। जब बनी जज़ीमा के लोगों ने लफ़्ज़ सबाना से मुसलमान होना मुराद लिया तो हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) को उनके क़त्ल करने से रुक जाना ज़रूरी था और यही वजह कि आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ालिद (रज़ि.) के काम से अपनी बराअत ज़ाहिर फ़र्माई। उनकी ख़ता इज्तिहादी थी। वो सबाना का मा'नी अस्लमना न समझे और उन्होंने ज़ाहिर हुक्म पर अ़मल किया कि जब तक वो इस्लाम न लाएँ, उनसे लड़ो। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) बिन वलीद क़ुरैशी के बेटे हैं जो मख़्ज़ूमी हैं। उनकी वालिदा लुबाबतुस्सुग़रा नामी उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना (रज़ि.) की बहन हैं। ये अशराफ़े क़ुरैश से थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको सैफ़ुल्लाह का ख़िताब दिया था। सन् 21 हिजरी में वफ़ात पाई, रज़ियल्लाहु अ़न्हु

इस सरिय्या के कुछ हालात अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह) के लफ़्ज़ों मे ये हैं, क़ाल इब्नु सअ़द व मिम्मा ख़ालिदब्नुल्वलीद मन हदमल्उ़ज़्ज़ा व रसूलुल्लाहि (ﷺ) मुक़ीमुन बिमक्कत बअ़सहू इला बनी जुज़ैमा दाइयन इलल्इस्लाम व लम यब्अ़स्हु मुक़ातिलन फख़रज फ़ी सलासि मिअतिव्वं ख़म्सीन रजुलम्मिनल्मुहाजिरीन वल्अन्सारि व बनी सुलैम फन्तहा इलैहिम फक़ाल मा अन्तुम क़ालू मुस्लिमून कद सल्लैना व सद्दक़्ना बिमुहम्मदिन व बनैनल्मसाजिद फी साहतिना व अज़्ज़न्ना फीहा क़ाल फमा बालुस्सलाहि अ़लैकुम क़ालू अन्न बैनना व बैन क़ौमिम्मिनल्अ़रबि अ़दावतुन फख़िफ़्ना अन तकूनू हुम व कद क़ील अन्नहुम कालू सबाना व लम युहसिनू अंय्यकूलू अस्लम्ना क़ाल फज़िउस्सलाह फवज़ऊहू फकाल लहुम इस्तासिरू फस्तासरल्क़ौमु फअमर

फक़तफ बअ़ज़न व फ़र्रक़हुम फ़ी अस्हाबिही फलम्मा कान फिस्सिहरि नाद ख़ालिद बिन वलीद कान मअ़हुम असीरून फल्यज़्रिब उनुक़हू फअम्मा बनू सुलैम फक़तलू मन कान फ़ी अयदीहिम व अम्मल्मुहाजिरून वल्अन्सारू फअर्सलु उसाराहुम फबलगन्नबिय्य (ﷺ) मा सनअ ख़ालिद फक़ाल अल्लाहुम्म इन्नी अब्रउ मिम्मा सनअ ख़ालिद व बअ़स़ अलिय्यन युअद्दी क़तलाहुम मा ज़हब मिन्हुम (ज़ादुल्मआद) या'नी जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) उ़ज़्ज़ा को ख़त्म करके लौटे उस वक़्त रसूले करीम (ﷺ) मक्का ही में मौजूद थे। आपने उनको बनी जज़ीमा की तरफ़ तब्लीग़ की ग़र्ज़ से भेजा और लड़ाई के लिये नहीं भेजा था। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) साढ़े तीन सौ मुहाजिर और अंसार सहाबियों के साथ निकले। कुछ बनू सुलैम के लोग भी उनके साथ थे। जब वो बनू जज़ीमा के यहाँ पहुँचे तो उन्होंने उनसे पूछा कि तुम कौन लोग हो? वो बोले हम मुसलमान हैं, नमाज़ी हैं, हमने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) का कलिमा पढ़ा हुआ है और हमने अपने दालानों में मसाजिद भी बना रखी हैं और हम वहाँ अज़ान भी देते हैं, वो सब हथियारबंद थे। हज़रत ख़ालिद ने पूछा कि तुम्हारे जिस्मों पर ये हथियार क्यों हैं? वो बोले कि एक अरब क़ौम के और हमारे दरम्यान अदावत चल रही है। हमारा गुमान हुआ कि शायद तुम वही लोग हो। ये भी मन्क़ूल है कि उन लोगों ने बजाये अस्लम्ना के सबाना सबाना कहा कि हम अपने पुराने दीन से हट गये हैं । हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने उनको हुक्म दिया कि हथियार उतार दो। उन्होंने हथियार उतार दिये और ख़ालिद (रज़ि.) ने उनकी गिरफ़्तारी का हुक्म दे दिया। पस हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) के साथियों ने उन सबको क़ैद कर लिया और उनके हाथ बाँध दिये। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने उनको अपने साथियों में हिफ़ाज़त के लिये तक़्सीम कर दिया। सुबह के वक़्त उन्होंने पुकारा कि जिनके पास जिस क़द्र भी क़ैदी हों वो उनको क़त्ल कर दें। बनू सुलैम ने तो अपने क़ैदी क़त्ल कर दिये मगर अंसार और मुहाजिरीन ने हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) के इस हुक्म को नहीं माना और उन क़ैदियों को आज़ाद कर दिया। जब इस वाक़िये की ख़बर रसूले करीम (ﷺ) को हुई तो आपने हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) के इस काम से इज़्हारे बेज़ारी फ़र्माया और हज़रत अली (रज़ि.) को वहाँ भेजा ताकि जो लोग क़त्ल हुए हैं उनका फ़िदया अदा किया जाए और उनके नुक़्सान की तलाफ़ी की जाए।

बाब 60 : अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी (रज़ि.) और अ़ल्क़मा बिन मुजज़्ज़िज़ मुदलिजी (रज़ि.) की एक लश्कर में रवानगी जिसे अंसार का लश्कर कहा जाता था

٦٠- باب سَرِيَّةِ عَبْدِ اللهِ بْنُ حُذَافَةَ السَّهْمِيِّ وَعَلْقَمَةَ بْنِ مُجَزِّزٍ الْمُدْلَجِيِّ وَيُقَالُ : إِنَّهَا سَرِيَّةُ الأَنْصَارِ

4340. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे अअ़मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे सअ़द बिन उ़बैदह ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान असलमी ने और उनसे हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक मुख़्तसर लश्कर रवाना किया और उसका अमीर एक अंसारी सहाबी (अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सह्मी रज़ि.) को बनाया और लश्करियों को हुक्म दिया कि सब अपने अमीर की इताअ़त करें फिर अमीर किसी वजह से ग़ुस्सा हो गये और अपने फ़ौजियों से पूछा कि क्या तुम्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरी इताअ़त करने का हुक्म नहीं फ़र्माया है?

٤٣٤٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنِي قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَرِيَّةً فَاسْتَعْمَلَ عَلَيْهَا رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يُطِيعُوهُ فَغَضِبَ فَقَالَ: أَلَيْسَ أَمَرَكُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تُطِيعُونِي؟ قَالُوا: بَلَى قَالَ : فَاجْمَعُوا لِي حَطَبًا فَجَمَعُوا فَقَالَ: أَوْقِدُوا

सबने कहा कि हाँ फ़र्माया है। उन्होंने कहा फिर तुम सब लकड़ियाँ जमा करो। उन्होंने लकड़ियाँ जमा कीं तो अमीर ने हुक्म दिया कि उसमें आग लगाओ और उन्होंने आग लगा दी। अब उन्होंने हुक्म दिया कि सब उसमें कूद जाओ। फ़ौजी कूद जाना ही चाहते थे कि उन्हीं में कुछ ने कुछ को रोका और कहा कि हम तो इस आग ही के डर से रसूलुल्लाह (ﷺ) की तरफ़ आए हैं! इन बातों में वक़्त गुज़र गया और आग भी बुझ गई। उसके बाद अमीर का ग़ुस्सा भी ठण्डा हो गया। जब इसकी ख़बर रसूलुल्लाह (ﷺ) को पहुँची तो आपने फ़र्माया कि अगर ये लोग उसमें कूद जाते तो फिर क़यामत तक उसमें से न निकलते। इताअत का हुक्म सिर्फ़ नेक कामों के लिये है। (दीगर मक़ाम : 7145, 7257)

نَارًا فَأَوْقَدُوهَا فَقَالَ: ادْخُلُوهَا فَهَمُّوا وَجَعَلَ بَعْضُهُمْ يُمْسِكُ بَعْضًا وَيَقُولُونَ فَرَرْنَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ النَّارِ، فَمَا زَالُوا حَتَّى خَمَدَتِ النَّارُ فَسَكَنَ غَضَبُهُ فَبَلَغَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لَوْ دَخَلُوهَا مَا خَرَجُوا مِنْهَا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوفِ)).

[طرفاه في : ٧١٤٥، ٧٢٥٧].

तश्रीह : इमाम, ख़लीफ़ा, पीर, मुर्शिद की इताअत सिर्फ़ क़ुर्आन व हदीष़ के मुताबिक़ अहकाम के अंदर है। अगर वो ख़िलाफ़ बात कहें तो फिर उनकी इताअत करना जाइज़ नहीं है। इसीलिये हमारे इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने फ़र्माया कि **इज़ा सह्हल्हदीषु फहुव मज़बही** जब सहीह हदीष़ मिल जाए तो वही मेरा मज़हब है। ऐसे मौक़ा पर मेरे फ़त्वा को छोड़कर सहीह हदीष़ पर अमल करना। हज़रत इमाम की वसिय्यत के बावजूद कितने लोग हैं जो क़ौले इमाम के आगे सहीह अहादीष़ को ठुकरा देते हैं। अल्लाह तआला उनको समझ अता करे। बक़ौल हज़रत शाह वलीउल्लाह (रह.) मरहूम ऐसे लोग क़यामत के दिन अल्लाह की अदालत में किया जवाब दे सकेंगे। मुरव्वजा तक़्लीदे शख़्सी के ख़िलाफ़ ये हदीष़ एक मश्अले हिदायत है। बशर्ते कि आँख खोलकर उससे रोशनी हासिल की जाए। अइम्म-ए-किराम का हर्गिज़ ये मंशा न था कि उनके नामों पर अलग अलग मज़ाहिब बनाए जाएँ कि वो इस्लामी वह्दत को पारा पारा करके रख दें। **सदक़ल्लाहु इन्नल्लज़ीन फर्रक़ू दीनहुम व कानू शियअन लस्त मिन्हुम फ़ी शैइन व अमरहुम इलल्लाहि**

बाब 61 : हज्जतुल विदाअ से पहले आँहज़रत (ﷺ) का हज़रत अबू मूसा अशअरी और हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन भेजना

٦١ - باب بَعْث أَبِي مُوسَى وَمُعَاذٍ إِلَى الْيَمَنِ قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ

4341,42. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक बिन उमैर ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू मूसा अशअरी और मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन का हाकिम बनाकर भेजा। रावी ने बयान किया कि दोनों सहाबियों को उसके एक एक सूबे में भेजा। रावी ने बयान किया कि यमन के दो सूबे थे फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया देखो लोगों के लिये आसानियाँ पैदा करना, दुश्वारियाँ न पैदा करना, उन्हें खुश करने की कोशिश करना, दीन से नफ़रत न दिलाना। ये दोनों बुज़ुर्ग अपने अपने कामों पर रवाना हो गये। दोनों

٤٣٤١، ٤٣٤٢- حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَبَا مُوسَى وَمُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ إِلَى الْيَمَنِ قَالَ : وَبَعَثَ كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا عَلَى مِخْلاَفٍ، قَالَ: وَالْيَمَنُ مِخْلاَفَانِ ثُمَّ قَالَ: ((يَسِّرَا وَلاَ تُعَسِّرَا، وَبَشِّرَا وَلاَ تُنَفِّرَا))، فَانْطَلَقَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا إِلَى عَمَلِهِ، وَكَانَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا إِذَا سَارَ

فِي أَرْضِهِ وَكَانَ قَرِيبًا مِنْ صَاحِبِهِ أَحْدَثَ بِهِ عَهْدًا فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَسَارَ مُعَاذٌ فِي أَرْضِهِ قَرِيبًا مِنْ صَاحِبِهِ أَبِي مُوسَى، فَجَاءَ يَسِيرُ عَلَى بَغْلَتِهِ حَتَّى انْتَهَى إِلَيْهِ وَإِذَا هُوَ جَالِسٌ وَقَدِ اجْتَمَعَ إِلَيْهِ النَّاسُ وَإِذَا رَجُلٌ عِنْدَهُ قَدْ جُمِعَتْ يَدَاهُ إِلَى عُنُقِهِ، فَقَالَ لَهُ مُعَاذٌ : يَا عَبْدَ اللهِ بْنُ قَيْسٍ أَيُّمَ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا رَجُلٌ كَفَرَ بَعْدَ إِسْلاَمِهِ؟ قَالَ: لاَ أَنْزِلُ حَتَّى يُقْتَلَ، قَالَ : إِنَّمَا جِيءَ بِهِ لِذَلِكَ، فَانْزِلْ، قَالَ: مَا أَنْزِلُ حَتَّى يُقْتَلَ، فَأَمَرَ بِهِ فَقُتِلَ ثُمَّ نَزَلَ فَقَالَ: يَا عَبْدَ اللهِ كَيْفَ تَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَالَ: أَتَفَوَّقُهُ تَفَوُّقًا، قَالَ: فَكَيْفَ تَقْرَأُ أَنْتَ يَا مُعَاذُ قَالَ: أَنَامُ أَوَّلَ اللَّيْلِ، فَأَقُومُ وَقَدْ قَضَيْتُ جُزْئِي مِنَ النَّوْمِ فَأَقْرَأُ مَا كَتَبَ اللهُ لِي فَأَحْتَسِبُ نَوْمَتِي كَمَا أَحْتَسِبُ قَوْمَتِي.

[طرفه في : ٤٣٤٥].

में से जब कोई अपने इलाक़े का दौरा करते करते अपने दूसरे साथी के क़रीब पहुँच जाता तो उनसे ताज़ी (मुलाक़ात) के लिये आता और सलाम करता। एक मर्तबा ह़ज़रत मुआ़ज़ (रज़ि.) अपने इलाक़े में अपने स़ाह़िब अबू मूसा (रज़ि.) के क़रीब पहुँच गये और अपने ख़च्चर पर उनसे मुलाक़ात के लिये चले। जब उनके क़रीब पहुँचे तो देखा कि वो बैठे हुए हैं और उनके पास कुछ लोग जमा हैं और एक शख़्स़ उनके सामने है जिसकी मश्कें कसी हुई हैं। मुआ़ज़ (रज़ि.) ने उनसे पूछा ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस! ये क्या वाक़िया है? अबू मूसा (रज़ि.) ने बतलाया कि ये शख़्स़ इस्लाम लाने के बाद मुर्तद हो गया है। उन्होंने कहा कि फिर जब तक उसे क़त्ल न कर दिया जाए मैं अपनी सवारी से नहीं उतरूँगा। अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा कि क़त्ल करने ही के लिये उसे यहाँ लाया गया है। आप उतर जाएँ लेकिन उन्होंने अब भी यही कहा कि जब तक उसे क़त्ल न किया जाएगा मैं न उतरूँगा। आख़िर मूसा (रज़ि.) ने हुक्म दिया और उसे क़त्ल कर दिया गया। तब वो अपनी सवारी से उतरे और पूछा, अ़ब्दुल्लाह! आप क़ुर्आन किस त़रह पढ़ते हैं? उन्होंने कहा मैं तो थोड़ा थोड़ा हर वक़्त पढ़ता रहता हूँ फिर उन्होंने मुआ़ज़ (रज़ि.) से पूछा कि मुआ़ज़! आप क़ुर्आन मजीद किस त़रह पढ़ते हैं? मुआ़ज़ (रज़ि.) ने कहा मैं तो रात के शुरू में सोता हूँ फिर अपनी नींद का एक ह़िस़्स़ा पूरा करके मैं उठ बैठता हूँ और जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिये मुक़द्दर कर रखा है उसमें क़ुर्आन मजीद पढ़ता हूँ। इस त़रह़ बेदारी में जिस स़वाब की उम्मीद अल्लाह तआ़ला से रखता हूँ सोने की ह़ालत के स़वाब का भी उससे इसी त़रह़ उम्मीदवार रहता हूँ। (दीगर मक़ाम : 4345)

तश्रीह़ : ह़ज़रत मुआ़ज़ (रज़ि.) का ये कमाले जोशे ईमान था कि मुर्तद को देखकर फ़ौरन उनको वो ह़दीष़ याद आ गई जिसमें आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है कि जो कोई इस्लाम से फिर जाए उसको क़त्ल कर दो। ह़ज़रत मुआ़ज़ (रज़ि.) ने जब तक शरीअ़त की ह़द जारी न हुई, उस वक़्त अबू मूसा (रज़ि.) के पास उतरना और ठहरना भी मुनासिब न समझा। यमन के बुलन्द ह़िस़्स़े पर मुआ़ज़ (रज़ि.) को ह़ाकिम बनाया गया था और नशीबी इलाक़ा अबू मूसा (रज़ि.) को दिया गया था। रसूले करीम (ﷺ) ने मुल्के यमन की बहुत ता'रीफ़ फ़र्माई। जिसकी बरकत है कि वहाँ बड़े बड़े आ़लिम फ़ाज़िल मुह़द्दिष़ पैदा हुए। ह़ज़रत अ़ल्लामा शौकानी यमनी मशहूर अहले ह़दीष़ आ़लिम यमनी हैं जिनकी ह़दीष़ की शरह़ की किताब नैलुल औत़ार मशहूर है। या अल्लाह! मैं उन बुज़ुर्गों से ख़ास़ अ़क़ीदत मुह़ब्बत रखता हूँ, उनके साथ मुझको जमा फ़र्माईयो, आमीन। या रब्बल आ़लमीन। (राज़)

4343. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने, उनसे शैबानी ने, उनसे सईद बिन अबी बुर्दा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें यमन भेजा। अबू मूसा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से उन शरबतों का मसला पूछा जो यमन मे बनाये जाते थे। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि वो क्या हैं? अबू मूसा (रज़ि.) ने बताया कि अत् बित्अ और अल मिज़्र (सईद बिन अबी बुर्दा ने कहा कि) मैंने अबू बुर्दा (अपने वालिद) से पूछा अल बित्अ क्या चीज़ है? उन्होंने बताया कि शहद से तैयार की हुई शराब और अल मिज़्र जौ से तैयार की हुई शराब है। आँहज़रत (ﷺ) ने जवाब में फ़र्माया कि हर नशाआवर पीना हराम है। इसकी रिवायत जरीर और अ़ब्दुल वाहिद ने शैबानी से की है और उन्होंने अबू बुर्दा से की है। (राजेअ़ : 2261)

٤٣٤٣ – حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَهُ إِلَى الْيَمَنِ فَسَأَلَهُ عَنْ أَشْرِبَةٍ تُصْنَعُ بِهَا فَقَالَ : ((وَمَا هِيَ؟)) قَالَ الْبِتْعُ وَالْمِزْرُ فَقُلْتُ لأَبِي بُرْدَةَ : مَا الْبِتْعُ؟ قَالَ نَبِيذُ الْعَسَلِ، وَالْمِزْرُ نَبِيذُ الشَّعِيرِ، فَقَالَ ((كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ)) رَوَاهُ جَرِيرٌ وَعَبْدُ الْوَاحِدِ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ.
[راجع: ٢٢٦١]

जो चीज़ें खाने की हों या पीने की नशाआवर हों उनका इस्ते'माल हराम है। अफ़्यून मुदक चन्डू शराब वग़ैरह ये सब इसी में दाख़िल हैं।

4344, 45. हमसे मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी बुर्दा ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उनके दादा हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) और मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन का हाकिम बनाकर भेजा और फ़र्माया कि लोगों के लिये आसानी पैदा करना, उनको दुश्वारियों में न डालना। लोगों को ख़ुशख़बरियाँ देना, दीन से नफ़रत न दिलाना और तुम दोनों आपस मे मुवाफ़क़त रखना। इस पर अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! हमारे मुल्क में जौ से एक शराब तैयार होती है। जिसका नाम अल मिज़्र है और शहद से एक शराब तैयार होती है जिसका नाम अल् बित्अ कहलाती है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर नशा लाने वाली चीज़ हराम है। फिर दोनों बुज़ुर्ग रवाना हुए। मुआ़ज़ (रज़ि.) ने अबू मूसा (रज़ि.) से पूछा आप क़ुर्आन किस त़रह पढ़ते हैं? उन्होंने बताया कि खड़े होकर भी, बैठकर भी और अपनी सवारी पर भी और मैं थोड़े थोड़े अ़र्से के बाद पढ़ता ही रहता हूँ। मुआ़ज़ (रज़ि.) ने कहा लेकिन मेरा मा'मूल ये है कि शुरू रात में, मैं सो जाता हूँ और फिर बेदार हो जाता हूँ। इस त़रह मैं अपनी नींद पर भी स़वाब का उम्मीदवार हूँ जिस त़रह बेदार होकर (इबादत करने पर) स़वाब की मुझे उम्मीद

٤٣٤٤، ٤٣٤٥ – حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَدَّهُ أَبَا مُوسَى وَمُعَاذًا، إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ: ((يَسِّرَا وَلاَ تُعَسِّرَا، وَبَشِّرَا وَلاَ تُنَفِّرَا، وَتَطَاوَعَا)) فَقَالَ أَبُو مُوسَى : يَا نَبِيَّ اللهِ إِنَّ أَرْضَنَا بِهَا شَرَابٌ مِنَ الشَّعِيرِ الْمِزْرُ وَشَرَابٌ مِنَ الْعَسَلِ الْبِتْعُ فَقَالَ : ((كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ)) فَانْطَلَقَا فَقَالَ مُعَاذٌ لأَبِي مُوسَى: كَيْفَ تَقْرَأُ الْقُرْآنَ؟ قَالَ : قَائِمًا وَقَاعِدًا، وَعَلَى رَاحِلَتِهِ وَأَتَفَوَّقُهُ تَفَوُّقًا، قَالَ أَمَّا أَنَا فَأَنَامُ وَأَقُومُ فَأَحْتَسِبُ نَوْمَتِي كَمَا أَحْتَسِبُ قَوْمَتِي، وَضَرَبَ فُسْطَاطًا فَجَعَلاَ يَتَزَاوَرَانِ فَزَارَ مُعَاذٌ أَبَا مُوسَى فَإِذَا رَجُلٌ مُوثَقٌ فَقَالَ: مَا هَذَا؟ أَبُو مُوسَى: يَهُودِيٌّ

اسْلَمَ ثُمَّ ارْتَدَّ، فَقَالَ مُعَاذٌ: لأَضْرِبَنَّ عُنُقَهُ. تَابَعَهُ الْعَقَدِيُّ وَوَهْبٌ عَنْ شُعْبَةَ وَقَالَ : وَكِيعٌ وَالنَّضْرُ وَأَبُو دَاوُدَ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَوَاهُ جَرِيرُ بْنُ عَبْدِ الْحَمِيدِ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ.

[راجع: ٢٢٦١، ٤٣٤٢]

है और उन्होंने एक ख़ैमा लगा लिया और एक दूसरे से मुलाक़ात बराबर होती रहती। एक बार मुआज़ (रज़ि.) अबू मूसा (रज़ि.) से मिलने के लिये आए, देखा एक शख़्स बँधा हुआ है। पूछा ये क्या बात है? अबू मूसा (रज़ि.) ने बतलाया कि ये एक यहूदी है, पहले ख़ुद इस्लाम लाया और अब ये मुर्तद हो गया है। मुआज़ (रज़ि.) ने कहा कि मैं इसे क़त्ल किये बग़ैर हर्गिज़ न रहूँगा। मुस्लिम बिन इब्राहीम के साथ इस हदीष़ को अ़ब्दुल मलिक बिन अ़म्र अ़क़्दी और वहब बिन जरीर ने शुअ़बा से रिवायत किया है और वक़ीअ़ और नज़्र और अबू दाऊद ने उसको शुअ़बा से, उन्होंने अपने बाप बुर्दा से, उन्होंने सईद के दादा अबू मूसा (रज़ि.) से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से रिवायत किया और जरीर बिन अ़ब्दुल हमीद ने उसको शैबानी से रिवायत किया, उन्होंने अबू बुर्दा से।
(राजेअ़ : 2261, 4342)

तश्रीह : अ़क़्दी की रिवायत को इमाम बुख़ारी (रह.) ने अह्काम में और वहब की रिवायत को इस्हाक़ बिन राहवै ने वस्ल किया है। वक़ीअ़ की रिवायत को इमाम बुख़ारी (रह) ने जिहाद में और अबू दाऊद तियालिसी की रिवायत को इमाम निसाई ने और नज़्र की रिवायत को इमाम बुख़ारी (रह.) ने अदब में वस्ल किया है। मतलब इमाम बुख़ारी (रह.) का ये है कि वक़ीअ़ और नज़्र और अबू दाऊद ने इस हदीष़ को शुअ़बा से मौसूलन रिवायत किया और मुस्लिम बिन इब्राहीम और अ़क़्दी और वहब बिन जरीर ने मुरसलन रिवायत किया। उसमें मुबल्लिग़ीन के लिये ख़ास़ हिदायात हैं कि लोगों को नफ़रत न दिलाएँ, दुश्वार बातें उनके सामने न रखें, आपस में मिल जुलकर काम करें। अल्लाह यही तौफ़ीक़ दे, आमीन या रब्बल आ़लमीन। मगर आजकल ऐसे मुबल्लिग़ीन बहुत कम हैं। इल्ला माशाअल्लाह।

٤٣٤٦- حَدَّثَنِي عَبَّاسُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ عَنْ أَيُّوبَ بْنِ عَائِذٍ، حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ مُسْلِمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ طَارِقَ بْنَ شِهَابٍ يَقُولُ: حَدَّثَنِي أَبُو مُوسَى الأَشْعَرِيُّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَرْضِ قَوْمِي فَجِئْتُ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ مُنِيخٌ بِالأَبْطَحِ فَقَالَ: ((أَحَجَجْتَ يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ)) قُلْتُ: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ :

4346. मुझसे अ़ब्बास बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे अय्यूब बिन आ़इज़ ने, उनसे क़ैस बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा मैंने त़ारिक़ बिन शिहाब से सुना, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कहा कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरी क़ौम के वत़न (यमन) में भेजा। फिर मैं आया तो आँहज़रत (ﷺ) (मक्का की) वादी अब्त़ह में पड़ाव किये हुए थे। आपने पूछा, अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस! तुमने हज्ज का एहराम बाँध लिया? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ या रसूलल्लाह! आपने पूछा कलिमाते एहराम किस त़रह कहे? बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया (कि यूँ कलिमात अदा किये हैं), ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ, और जिस त़रह आप (ﷺ) ने एहराम बाँधा

है, मैंने भी उसी तरह बाँधा है। फ़र्माया तुम अपने साथ कुर्बानी का जानवर भी लाए हो? मैंने कहा कि कोई जानवर तो मैं अपने साथ नहीं लाया। फ़र्माया तुम फिर पहले बैतुल्लाह का तवाफ़ और सफ़ा और मरवा की सई कर लो। उन रुक्नों की अदायगी के बाद हलाल हो जाना। मैंने इसी तरह किया और बनू क़ैस की ख़ातून ने मेरे सर में कँघा किया और इसी क़ायदे पर हम उस वक़्त तक चलते रहे जब तक हज़रत उमर (रज़ि.) ख़लीफ़ा हुए। (इसी को हज्जे तमत्तोअ कहते हैं और ये भी सुन्नत है)

(राजेअ: 1559)

((كيف قُلْتَ؟)) قَالَ قُلْتُ لَبَّيْكَ إِهْلاَلاً كَإِهْلاَلِكَ، قَالَ : ((فَهَلْ سُقْتَ مَعَكَ هَدْيًا؟)) قُلْتُ: لَمْ اسُقْ، قَالَ: ((فَطُفْ بِالْبَيْتِ وَاسْعَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، ثُمَّ حِلَّ)) فَفَعَلْتُ حَتَّى مَشَطَتْ لِي امْرَأَةٌ مِنْ نِسَاءِ بَنِي قَيْسٍ وَكُنَّا بِذَلِكَ حَتَّى اسْتُخْلِفَ عُمَرُ.

[راجع: ١٥٥٩]

4347. मुझसे हब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें ज़करिया बिन इस्हाक़ ने, उन्हें यह्या बिन अब्दुल्लाह बिन सैफ़ी ने, उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) के ग़ुलाम अबू मअबद नाफ़िज़ ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन का (हाकिम बनाकर भेजते वक़्त उन्हें) हिदायत फ़र्माई थी कि तुम एक ऐसी क़ौम की तरफ़ भेजे जा रहे हो-जो अहले किताब यहूदी नसरानी वग़ैरह में से हैं, इसलिये जब तुम वहाँ पहुँचा तो पहले उन्हें इसकी दा'वत दो कि वो गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। अगर उसमें वो तुम्हारी बात मान लें तो फिर उन्हें बताओ कि अल्लाह तआला ने रोज़ाना उन पर पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं, जब ये भी मान लें तो उन्हे बताओ कि अल्लाह तआला ने उन पर ज़कात को भी फ़र्ज़ किया है, जो उनके मालदार लोगों से ली जाएगी और उन्हीं के ग़रीबों में बांट दी जाएगी। जब ये भी मान जाएँ तो (फिर ज़कात वसूल करते वक़्त) उनका सबसे उम्दह माल लेने से परहेज़ करना और मज़्लूम की आह से हर वक़्त डरत रहना कि उसक और अल्लाह के बीच कोई रुकावट नहीं होती है। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि सूरह माइदह में जो तव्वअत का लफ़्ज़ आया है उसका वही मा'नी है जो ताअत और इताअत का है। जैसे कहते हैं तिअत व तुअत व अतअतु सबका मा'नी एक ही है। (राजेअ: 1359)

٤٣٤٧- حَدَّثَنِي حِبَّانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ إِسْحَاقَ عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ صَيْفِيٍّ، عَنْ أَبِي مَعْبَدٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِمُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ حِينَ بَعَثَهُ إِلَى الْيَمَنِ : ((إِنَّكَ سَتَأْتِي قَوْمًا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ، فَإِذَا جِئْتَهُمْ فَادْعُهُمْ إِلَى أَنْ يَشْهَدُوا أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، فَإِنْ هُمْ طَاعُوا لَكَ بِذَلِكَ فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ اللهَ قَدْ فَرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسَ صَلَوَاتٍ فِي كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ، فَإِنْ هُمْ طَاعُوا لَكَ بِذَلِكَ فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ اللهَ قَدْ فَرَضَ عَلَيْهِمْ صَدَقَةً تُؤْخَذُ مِنْ أَغْنِيَائِهِمْ، فَتُرَدُّ عَلَى فُقَرَائِهِمْ، فَإِنْ هُمْ طَاعُوا لَكَ بِذَلِكَ فَإِيَّاكَ وَكَرَائِمَ أَمْوَالِهِمْ، وَاتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ فَإِنَّهُ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ اللهِ حِجَابٌ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: طَوَّعَتْ طَاعَتْ وَأَطَاعَتْ لُغَةٌ، طِعْتُ وَطُعْتُ وَأَطَعْتُ. [راجع: ١٣٥٩]

तश्रीह : हदीष़ में अत़ाऊ या त़ाऊ का लफ़्ज़ आया था। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने अपनी आदत के मुत़ाबिक़ क़ुर्आन के लफ़्ज़ त़व्वअत की तफ़्सीर कर दी क्यों कि दोनों का माद्दा एक ही है और ग़र्ज़ ये है कि उसमें तीन लुग़ात आए हैं त़व्वअ ताअ अत़ाअ मा'नी एक ही हैं या'नी राज़ी हुआ, मान लिया। मज़्लूम की बद्दुआ से बचना इसका मत़लब ये कि किसी को न सताओ कि वो मज़्लूम बनकर बद्दुआ कर बैठे।

٤٣٤٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ أَنَّ مُعَاذًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لَمَّا قَدِمَ الْيَمَنَ صَلَّى بِهِمُ الصُّبْحَ فَقَرَأَ: ﴿وَاتَّخَذَ اللهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلاً﴾ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: لَقَدْ قَرَّتْ عَيْنُ أُمِّ إِبْرَاهِيمَ، زَادَ مُعَاذٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ حَبِيبٍ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ عَمْرٍو أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ مُعَاذًا إِلَى الْيَمَنِ، فَقَرَأَ مُعَاذٌ فِي صَلاَةِ الصُّبْحِ سُورَةَ النِّسَاءِ، فَلَمَّا قَالَ: ﴿وَاتَّخَذَ اللهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلاً﴾ [النساء: ١٢٥] قَالَ رَجُلٌ خَلْفَهُ قَرَّتْ عَيْنُ أُمِّ إِبْرَاهِيمَ.

4348. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हबीब बिन अबी ष़ाबित ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया, उनसे अम्र बिन मैमून ने और उनसे मुआज़ (रज़ि.) ने बयान किया कि जब वो यमन पहुँचे तो यमन वालों को सुबह की नमाज़ पढ़ाई और नमाज़ में आयत (वत्तख़ज़ल्लाह इब्राहीमा ख़लीला) की क़िरात की तो उनमें से एक स़ाहब (नमाज़ ही में) बोले कि इब्राहीम की वालिदा की आँख ठण्डी हो गई होगी। मुआज़ बिन मुआज़ बग़वी ने शुअबा से, उन्होंने हबीब से, उन्होंने सईद से, उन्होंने अम्र बिन मैमून से इस हदीष़ में सिर्फ़ इतना बढ़ाया है कि नबी करीम (ﷺ) ने मुआज़ (रज़ि.) को यमन भेजा वहाँ उन्होंने सुबह की नमाज़ में सूरह निसा पढ़ी जब इस आयत पर पहुँचे (वत्तख़ज़ल्लाहु इब्राहीमा ख़लीला) तो एक स़ाहब जो उनमें खड़े हुए थे कहा कि इब्राहीम की वालिदा की आँख ठण्डी हो गई होगी।

या'नी उनको तो बड़ी ख़ुशी और मुबारकबादी है कि उनका बेटा अल्लाह का ख़लील हुआ। उस शख़्स़ ने मसला न जानकर नमाज़ में बात कर ली ऐसी नादानी की ह़ालत में नमाज़ फ़ासिद नहीं होती।

٦٢- باب بَعْثَ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، وَخَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا إِلَى الْيَمَنِ قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ

बाब 62 : हज्जतुल विदाअ से पहले अ़ली बिन अबी त़ालिब और ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को यमन भेजना

٤٣٤٩- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا شُرَيْحُ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، بَعَثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ مَعَ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ إِلَى الْيَمَنِ، قَالَ:

4349. मुझसे अहमद बिन उ़ष़्मान बिन हकीम ने बयान किया, कहा हमसे शुरैह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ बिन इस्हाक़ बिन अबी इस्हाक़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने कहा कि मैंने बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) के साथ यमन भेजा, बयान किया कि फिर उसके बाद उनकी जगह अ़ली (रज़ि.) को भेजा और आपने उन्हें हिदायत की कि ख़ालिद (रज़ि.) के साथियों से कहो

कि जो उनमें से तुम्हारे साथ यमन में रहना चाहे वो तुम्हारे साथ फिर यमन को लौट जाए और जो वहाँ से वापस आना चाहे वो चला आए। बरा (रज़ि.) कहते हैं कि मैं उन लोगों मे से था जो यमन को लौट गये। उन्होंने बयान किया कि मुझे ग़नीमत में कई औक़िया चाँदी के मिले थे।

ثُمَّ بَعَثَ عَلِيًّا بَعْدَ ذَلِكَ مَكَانَهُ فَقَالَ : مُرْ أَصْحَابَ خَالِدٍ مَنْ شَاءَ مِنْهُمْ أَنْ يُعَقِّبَ مَعَكَ فَلْيُعَقِّبْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُقْبِلْ، فَكُنْتُ فِيمَنْ عَقَّبَ مَعَهُ، قَالَ: فَغَنِمْتُ أَوَاقٍ ذَوَاتِ عَدَدٍ.

तश्रीह : इस्माईल की रिवायत में है कि जब हम हज़रत अली (रज़ि.) के साथ फिर यमन को लौट गये तो काफ़िरो की एक क़ौम हम्दान से मुक़ाबला हुआ। हज़रत अली (रज़ि.) ने उनको आँहज़रत (ﷺ) का ख़त सुनाया। वो सब मुसलमान हो गये। हज़रत अली (रज़ि.) ने ये हाल आँहज़रत (ﷺ) को लिखा। आपने सज्द-ए-शुक्र अदा किया और फ़र्माया हम्दान सलामत रहे।

4350. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे रौह बिन उबादा ने बयान किया, कहा हमसे अली बिन सुवैद बिन मन्जूफ़ ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने और उनसे उनके वालिद (बुरैदह बिन हुसीब) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) की जगह हज़रत अली (रज़ि.) को (यमन) भेजा ताकि ग़नीमत के ख़ुमुस (पाँचवाँ हिस्सा) को उनसे ले आएँ। मुझे हज़रत अली (रज़ि.) से बहुत बुग़्ज़ था और मैंने उन्हें ग़ुस्ल करते देखा था। मैंने हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) से कहा तुम देखते हो अली (रज़ि.) ने क्या किया (और एक लौण्डी से सुहबत की) फिर जब हम आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो मैंने आपसे भी इसका ज़िक्र किया। आपने दरयाफ़्त फ़र्माया (बुरैदह) क्या तुम्हें अली (रज़ि.) की तरफ़ से बुग़्ज़ है? मैंने अर्ज़ किया कि जी हाँ, फ़र्माया अली (रज़ि.) से दुश्मनी न रखना क्योंकि ख़ुमुस (ग़नीमत के पाँचवें हिस्से) में इसका इससे भी ज़्यादा हक़ है।

٤٣٥٠- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ سُوَيْدِ بْنِ مَنْجُوفٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيًّا إِلَى خَالِدٍ لِيَقْبِضَ الْخُمُسَ ، وَكُنْتُ أُبْغِضُ عَلِيًّا وَقَدِ اغْتَسَلَ، فَقُلْتُ لِخَالِدٍ : أَلاَ تَرَى إِلَى هَذَا؟ فَلَمَّا قَدِمْنَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ : ((يَا بُرَيْدَةُ أَتُبْغِضُ عَلِيًّا؟)) قُلْتُ : نَعَمْ. قَالَ : ((لاَ تُبْغِضْهُ فَإِنَّ لَهُ فِي الْخُمُسِ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ)).

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि बुरैदा (रज़ि.) ने कहा तो मैं हज़रत अली (रज़ि.) से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करने लगा। इमाम अहमद की रिवायत में है आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अली (रज़ि.) से दुश्मनी मत रख, वो मेरा है मैं उसका हूँ और मेरे बाद वही तुम्हारा वली है। एक रिवायत में है कि जब मैंने शिकायत की तो आपका चेहरा लाल हो गया। फ़र्माया कि मैं जिसका वली हूँ अली भी उसका वली है, रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु। अस़ल मामला ये था कि हज़रत अली (रज़ि.) ने ख़ुमुस में से एक लौण्डी ले ली जो सब क़ैदियों में उम्दह थी और उससे सुहबत की। बुरैदह (रज़ि.) को ये गुमान हुआ कि हज़रत अली (रज़ि.) ने माले ग़नीमत में ख़यानत की है। इस वजह से उनको बुरा समझा। हालाँकि ये ख़यानत न थी क्योंकि ख़ुमुस अल्लाह और रसूल का हिस्सा था और हज़रत अली (रज़ि.) उसके बड़े हक़दार थे और शायद आँहज़रत (ﷺ) ने उनको तक़्सीम के लिये इख़्तियार भी दिया होगा। अब इस्तिबरा से पहले लौण्डी से जिमाअ करना तो वो इस वजह से होगा कि वो लौण्डी कुआँरी होगी और कुआँरी के लिये कुछ के नज़दीक इस्तिब्रा लाज़िम नहीं है। ये भी मुम्किन है कि वो उस दिन हैज़ से पाक हो

गई हो (वहीदी)। बहरहाल हज़रत अली (रज़ि.) से बुग़्ज़ रखना अहले ईमान की शान नहीं है, **अल्लाहुम्म इन्नी उहिब्बु अ़लिय्यन कमा अमर रसूलुल्लाहि (ﷺ)**

4351. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे अ़म्मारा बिन क़अक़ाअ बिन शुबरमा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन नईम ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़बू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना वो कहते थे कि यमन से अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बेरी के पत्तों से दबाग़त दिये हुए चमड़े के एक थैले में सोने के चन्द डल्ले भेजे। उनसे (कान की) मिट्टी भी अभी साफ़ नहीं की गई थी। रावी ने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने वो सोना चार आदमियों में बांट दिया। उ़यय्ना बिन बद्र, अक़्रअ बिन हाबिस, जैद बिन ख़ैल और चौथे अल्क़मा (रज़ि.) थे या आ़मिर बिन तुफ़ैल (रज़ि.)। आपके अस्हाब में से एक साहब ने उस पर कहा कि उन लोगों से ज़्यादा हम उस सोने के मुस्तहिक़ थे। रावी ने बयान किया कि जब आँहज़रत (ﷺ) को मा'लूम हुआ तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम मुझ पर ए'तिबार नहीं करते हालाँकि उस अल्लाह ने मुझ पर ए'तिबार किया जो आसमान पर है और उसकी जो आसमान पर है वह्य मेरे पास सुबह व शाम आती है। रावीने बयान किया कि फिर एक शख़्स जिसकी आँखे धंसी हुई थीं, दोनों रुख़सार फूले हुए थे, पेशानी भी उभरी हुई थी, घनी दाढ़ी और सर मुण्डा हुआ, तहबन्द उठाए हुए था, खड़ा हुआ और कहने लगा या रसूलल्लाह अल्लाह से डरिये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! तुझ पर क्या मैं इस रूए ज़मीन पर अल्लाह से डरने का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ नहीं हूँ। रावी ने बयान किया फिर वो शख़्स चला गया। ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं क्यूँ न उस शख़्स की गर्दन मार दूँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया नहीं शायद वो नमाज़ पढ़ता हो। इस पर ख़ालिद (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि बहुत से नमाज़ पढ़ने वाले ऐसे हैं जो ज़ुबान से इस्लाम का दा'वा करते हैं और उनके दिल में वो नहीं होता। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसका हुक्म नहीं हुआ है कि लोगों के दिलों की खोज लगाऊँ और न इसका हुक्म हुआ है कि उनके पेट चाक करूँ। रावी ने कहा फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उस (मुनाफ़िक़) की तरफ़ देखा तो वो पीठ फेरकर जा रहा था। आपने फ़र्माया कि उसकी नस्ल से एक ऐसी क़ौम निकलेगी जो

٤٣٥١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ بْنِ شُبْرُمَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي نُعْمٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ يَقُولُ: بَعَثَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْيَمَنِ بِذُهَيْبَةٍ فِي أَدِيمٍ مَقْرُوظٍ لَمْ تُحَصَّلْ مِنْ تُرَابِهَا، قَالَ : فَقَسَمَهَا بَيْنَ أَرْبَعَةِ نَفَرٍ بَيْنَ عُيَيْنَةَ بْنِ بَدْرٍ وَأَقْرَعَ بْنِ حَابِسٍ وَزَيْدِ الْخَيْلِ، وَالرَّابِعُ إِمَّا عَلْقَمَةُ وَإِمَّا عَامِرُ بْنُ الطُّفَيْلِ، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ: كُنَّا نَحْنُ أَحَقَّ بِهَذَا مِنْ هَؤُلاَءِ قَالَ : فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((أَلاَ تَأْمَنُونِي، وَأَنَا أَمِينُ مَنْ فِي السَّمَاءِ، يَأْتِينِي خَبَرُ السَّمَاءِ صَبَاحًا وَمَسَاءً)) قَالَ: فَقَامَ رَجُلٌ غَائِرُ الْعَيْنَيْنِ مُشْرِفُ الْوَجْنَتَيْنِ نَاشِزُ الْجَبْهَةِ كَثُّ اللِّحْيَةِ مَحْلُوقُ الرَّأْسِ مُشَمَّرُ الإِزَارِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ اتَّقِ اللهَ قَالَ: ((وَيْلَكَ أَوَلَسْتُ أَحَقَّ أَهْلِ الأَرْضِ أَنْ يَتَّقِيَ اللهَ)) قَالَ: ثُمَّ وَلَّى الرَّجُلُ قَالَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ: يَا رَسُولَ اللهِ أَلاَ أَضْرِبُ عُنُقَهُ؟ قَالَ : ((لاَ لَعَلَّهُ أَنْ يَكُونَ يُصَلِّي)) فَقَالَ خَالِدٌ : وَكَمْ مِنْ مُصَلٍّ يَقُولُ بِلِسَانِهِ مَا لَيْسَ فِي قَلْبِهِ؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنِّي

किताबुल्लाह की तिलावत बड़ी बेहतरीन आवाज़ के साथ करेगी लेकिन वो उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। दीन से वो लोग इस तरह निकल चुके होंगे जैसे तीर जानवर के पार निकल जाता है और मेरा ख़्याल है कि आप (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया, अगर मैं उनके दौर में हुआ तो षमूद की क़ौम की तरह उनको बिलकुल क़त्ल कर डालूँगा।

(राजेअ : 3344)

لَمْ أُوْمَرْ أَنْ أَنْقُبَ قُلُوبَ النَّاسِ، وَلاَ أَشُقَّ بُطُونَهُمْ)) قَالَ: ثُمَّ نَظَرَ إِلَيْهِ وَهُوَ مُقَفٍّ فَقَالَ: ((إِنَّهُ يَخْرُجُ مِنْ ضِئْضِيءِ هَذَا قَوْمٌ يَتْلُونَ كِتَابَ اللهِ رَطْبًا لاَ يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ - وَأَظُنُّهُ قَالَ - لَئِنْ أَدْرَكْتُهُمْ لأَقْتُلَنَّهُمْ قَتْلَ ثَمُودَ)).

[راجع: ٣٣٤٤]

तश्रीह : एक रिवायत में इतना ज़्यादा है कि ये लोग मुसलमानों को क़त्ल करेंगे और बुतपरस्तों को छोड़ देंगे। ये पेशगोई आपकी पूरी हुई। ख़ारजी जिनके यही तेवर थे, हज़रत अली (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में ज़ाहिर हुए। आपने उनको ख़ूब क़त्ल किया। हमारे ज़माने में भी उन ख़ारजियों के पीर मौजूद हैं। सरमुँडे, दाढ़ी नीची, इज़ार ऊँची, ज़ाहिर में बड़े मुत्तक़ी परहेज़गार ग़रीब मुसलमानों ख़ुसूसन अहले हदीष को ला मज़हब और वहाबी क़रार देकर उन पर हमले करते हैं और यहूद व नसारा और मुश्रिकों से बराबर का मेलजोल रखते हैं। उनसे कुछ मुतअर्रिज़ नहीं होते। हाय अफ़सोस मुसलमानों को क्या ख़ब्त हो गया है अपने भाइयों में हज़रत मुहम्मद (ﷺ) का कलिमा पढ़ने वालों को तो एक एक मसले पर सताएँ और ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती रखें। ऐसे मुसलमान क़यामत के दिन नबी करीम (ﷺ) को मुँह क्या दिखलाएँगे। हदीष के आख़िरी लफ़्ज़ों का मतलब ये कि उनके दिलों पर कुर्आन का ज़र्रा बराबर भी अषर न होगा। हमारे ज़माने में यही हाल है। कुर्आन पढ़ने को तो सैंकड़ों आदमी पढ़ते हैं लेकिन उसके मा'नी और मतलब में ग़ौर करने वाले बहुत थोड़े हैं और कुछ शयातीन का तो ये हाल है कि वो कुर्आनो हदीष का तर्जुमा पढ़ने पढ़ाने ही से मना करते हैं। **उलाइकल्लज़ीन लअनहुमुल्लाहु फअसम्महुम व आमा अब्सारहुम** (मुहम्मद : 23)

4352. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने कि अता बिन अबी रिबाह ने बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) से (जब वो यमन से मक्का आए) फ़र्माया था कि वो अपने एहराम पर बाक़ी रहें। मुहम्मद बिन बक्र ने इब्ने जुरैज से इतना बढ़ाया कि उनसे अता ने बयान किया कि हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कहा हज़रत अली (रज़ि.) अपनी विलायत (यमन) से आए तो आप (ﷺ) ने उनसे दरयाफ़्त किया, अली! तुमने एहराम किस तरह बाँधा है? अर्ज़ किया कि जिस तरह एहराम आप (ﷺ) ने बाँधा हो। फ़र्माया फिर कुर्बानी का जानवर भेज दो और जिस तरह एहराम बाँधा है, उसी के मुताबिक़ अमल करो। बयान किया कि हज़रत अली (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के लिये कुर्बानी के जानवर लाए थे। (राजेअ : 1557)

٤٣٥٢- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ عَطَاءٌ : قَالَ جَابِرٌ أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ عَلِيًّا أَنْ يُقِيمَ عَلَى إِحْرَامِهِ، زَادَ مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ عَطَاءٌ : قَالَ جَابِرٌ فَقَدِمَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بِسِعَايَتِهِ، قَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((بِمَ أَهْلَلْتَ يَا عَلِيُّ؟)) قَالَ: بِمَا أَهَلَّ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((فَأَهْدِ وَامْكُثْ حَرَامًا كَمَا أَنْتَ)). قَالَ: وَأَهْدَى لَهُ عَلِيٌّ هَدْيًا. [راجع: ١٥٥٧]

4353,54. हमसे मुसद्दद बिन मुसरहिद ने बयान किया, कहा

٤٣٥٣، ٤٣٥٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ:

حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، عَنْ حُمَيْدٍ الطَّوِيلِ، حَدَّثَنَا بَكْرٌ أَنَّهُ ذَكَرَ لاِبْنِ عُمَرَ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ وَحَجَّةٍ، فَقَالَ: أَهَلَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْحَجِّ، وَأَهْلَلْنَا بِهِ مَعَهُ فَلَمَّا قَدِمْنَا مَكَّةَ قَالَ : ((مَنْ لَمْ يَكُنْ مَعَهُ هَدْيٌ فَلْيَجْعَلْهَا عُمْرَةً)) وَكَانَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَدْيٌ فَقَدِمَ عَلَيْنَا عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ مِنَ الْيَمَنِ حَاجًّا، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((بِمَ أَهْلَلْتَ فَإِنَّ مَعَنَا أَهْلَكَ؟)) قَالَ: أَهْلَلْتُ بِمَا أَهَلَّ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((فَأَمْسِكْ فَإِنَّ مَعَنَا هَدْيًا)).

हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, उनसे हुमैद त़वील ने, कहा हमसे बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से ज़िक्र किया था कि अनस (रज़ि.) ने उनसे बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उ़मरह और ह़ज्ज दोनों का एह़राम बाँधा था और हमने भी आपके साथ ह़ज्ज ही का एह़राम बाँधा था और हमने भी आपके साथ ह़ज्ज ही का एह़राम बाँधा था फिर हम जब मक्का आए तो आपने फ़र्माया कि जिसके साथ क़ुर्बानी का जानवर न हो वो अपने ह़ज्ज के एह़राम को उ़मरह का कर ले (और त़वाफ़ और सई करके एह़राम खोल दे) और नबी करीम (ﷺ) के साथ क़ुर्बानी का जानवर था, फिर अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) यमन से लौटकर ह़ज्ज का एह़राम बाँधकर आए आपने उनसे दरयाफ़्त फ़र्माया कि किस त़रह़ एह़राम बाँधा है? हमारे साथ तुम्हारी ज़ोजा फ़ात़िमा (रज़ि.) भी हैं। उन्होने अ़र्ज़ किया कि मैंने इस त़रह़ एह़राम बाँधा है जिस त़रह़ आप (ﷺ) ने बाँधा हो। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर अपने एह़राम पर क़ायम रहो, क्योंकि हमारे साथ क़ुर्बानी का जानवर है।

इन तमाम अह़ादीष़ में किसी न किसी पहलू से ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) का यमन जाना मज़्कूर है। बाब से यही वजहे मुत़ाबक़त है और इसीलिये उन रिवायात को यहाँ लाया गया है। बाक़ी ह़ज्ज के दीगर मसाइल भी उनसे ष़ाबित होते हैं जैसा कि किताबुल ह़ज्ज में गुज़र चुका है।

٦٣- باب غَزْوَةِ ذِي الْخَلَصَةِ

बाब 63 : ग़ज़्व-ए-ज़िल ख़लस़ा का बयान

तश्रीह : ये एक बुतख़ाना था जो यमन में मुश्रिकों ने तैयार किया था। उसको का'बा यमानिया भी कहते हैं और का'बा शामिया भी कि उसका दरवाज़ा मुल्के शाम के मुक़ाबिल में बनाया गया था।

٤٣٥٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ، حَدَّثَنَا بَيَانٌ عَنْ قَيْسٍ، عَنْ جَرِيرٍ قَالَ: كَانَ بَيْتٌ فِي الْجَاهِلِيَّةِ يُقَالُ لَهُ ذُو الْخَلَصَةِ، وَالْكَعْبَةُ الْيَمَانِيَةُ، وَالْكَعْبَةُ الشَّامِيَّةُ، فَقَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((أَلاَ تُرِيحُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟)) فَنَفَرْتُ فِي مِائَةٍ وَخَمْسِينَ رَاكِبًا فَكَسَرْنَاهُ وَقَتَلْنَا مَنْ وَجَدْنَا عِنْدَهُ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَدَعَا لَنَا وَلأَحْمَسَ. [راجع: ٣٠٢٠]

4355. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह त़िहान ने बयान किया, उनसे बयान बिन बिश्र ने बयान किया, उनसे क़ैस ने और उनसे जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने बयान किया कि जाहिलियत में एक बुतख़ाना ज़ुल ख़लस़ा नामी था। उसे का'बा यमानिया और का'बा शामिया भी कहा जाता था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया ज़ुल ख़लस़ा की तकलीफ़ से मुझे क्यूँ नही नजात दिलाते? चुनाँचे मैंने डेढ़ सौ सवारों के साथ सफ़र किया, फिर हमने उसको मिस्मार कर दिया और उसमें हमने जिसको भी पाया क़त्ल कर दिया फिर मैं आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और आपको उसकी ख़बर दी तो आपने हमारे और क़बीला अह़मस के लिये बहुत दुआ की। (राजेअ: 3020)

तश्रीह : एक रिवायत में यूँ है कि रसूले करीम (ﷺ) ने हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) के सर पर हाथ रखा और मुँह और सीने पर ज़ेरे नाफ़ तक फेर दिया फिर सर पर हाथ रखा और पीठ पर सुरीन तक फेरा या सीने पर ख़ास तौर से हाथ फेरा। उन पाकीज़ा दुआओं का ये अषर हुआ कि हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) एक बेहतरीन शहसवार बनकर उस मुहिम पर रवाना हुए और कामयाबी से वापस आए। आपने उस बुतख़ाने के बारे में जो फ़र्माया उसकी वजह ये थी कि वहाँ कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें करते, रसूले करीम (ﷺ) की ईज़ारसानी की तदबीरें सोचते और मुक़द्दस का'बा की तन्क़ीस़ करते और हर तरह से इस्लाम दुश्मनी का मुज़ाहिरा करते, लिहाज़ा क़यामे अमन के लिये उसका ख़त्म करना ज़रूरी हुआ। हालते अमन में किसी क़ौम व मज़हब की इबादतगाह को इस्लाम ने मिस्मार करने का हुक्म न दिया है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने अहदे ख़िलाफ़त में ज़िम्मी यहूद और अंसार के गिरजाओं को महफ़ूज़ रखा और हिन्दुस्तान में मुसलमान बादशाहों ने इस मुल्क की इबादतगाहों की हिफ़ाज़त की और उनके लिये जागीरें वक़्फ़ की हैं जैसा कि इतिहास गवाह है।

4356. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, कहा मुझसे जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया तुम मुझे ज़ुल ख़लसा से क्यूँ नहीं बेफ़िक्र करते? ये क़बीला ख़ष्अम का एक बुतख़ाना था। उसे का'बा यमानिया भी कहते थे। चुनाँचे मैं डेढ़ सौ क़बीला अहमस के सवारों को साथ लेकर रवाना हुआ। ये सब अच्छे सवार थे। मगर मैं घोड़े की सवारी अच्छी तरह नही कर पाता था। आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे सीने पर हाथ मारा यहाँ तक कि मैंने आपकी उँगलियों का अषर अपने सीने में पाया, फिर आपने दुआ की कि ऐ अल्लाह! इसे घोड़े का अच्छा सवार बना दे और उसे रास्ता बतलाने वाला और ख़ुद रास्ता पाया हुआ बना दे, फिर वो उस बुत ख़ाने की तरफ़ रवाना हुए और उसे ढा कर उसमें आग लगा दी फिर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ख़बर भेजी। जरीर के ऐलची ने आकर अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मब्ऊष किया, मैं उस वक़्त तक आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये नहीं चला जब तक वो ख़ारिश ज़दा ऊँट की तरह जलकर (स्याह) नहीं हो गया। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने क़बीला अहमस के घोड़ों और लोगों के लिये पाँच मर्तबा बरकत की दुआ की।

(राजेअ : 3020)

٤٣٥٦- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا قَيْسٌ، قَالَ : قَالَ لِي جَرِيرٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلاَ تُرِيحُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟)) وَكَانَ بَيْتًا فِي خَثْعَمٍ يُسَمَّى الْكَعْبَةَ الْيَمَانِيَةَ، فَانْطَلَقْتُ فِي خَمْسِينَ وَمِائَةِ فَارِسٍ مِنْ أَحْمَسَ وَكَانُوا أَصْحَابَ خَيْلٍ، وَكُنْتُ لاَ أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ فَضَرَبَ فِي صَدْرِي حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ أَصَابِعِهِ فِي صَدْرِي وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا)) فَانْطَلَقَ إِلَيْهَا فَكَسَرَهَا وَحَرَّقَهَا ثُمَّ بَعَثَ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ جَرِيرٍ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا جِئْتُكَ حَتَّى تَرَكْتُهَا كَأَنَّهَا جَمَلٌ أَجْرَبُ قَالَ: ((فَبَارَكَ فِي خَيْلِ أَحْمَسَ وَرِجَالِهَا)) خَمْسَ مَرَّاتٍ.

[راجع: ٣٠٢٠]

ख़ारिशज़दा (खुजली वाले) ऊँट पर डामर वग़ैरह मलते हैं तो उस पर काले काले धब्बे पड़ जाते हैं; जल भुनकर, बिलकुल यही हाल ज़िल ख़लसा का हो गया। ज़िल ख़लसा वाले इस्लाम के हरीफ़ बनकर हर वक़्त मुख़ालिफ़ाना साज़िशें करते रहते थे।

4357. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको ख़बर दी अबू उसामा ने, उन्हें इस्माईल बिन ख़ालिद ने, उन्हें क़ैस बिन अबी हाज़िम ने और उनसे जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़ुल ख़लसा से मुझे क्यों नहीं बेफ़िक्री दिलाते! मैंने अ़र्ज़ किया मैं हुक्म की ता'मील करूँगा। चुनाँचे क़बीला अहमस के डेढ़ सौ सवारों को साथ लेकर मैं रवाना हुआ। ये सब अच्छे सवार थे, लेकिन मैं सवारी अच्छी तरह नहीं कर पाता था। मैंने इसके बारे में आँहज़रत (ﷺ) से ज़िक्र किया तो आपने अपना हाथ मेरे सीने पर मारा जिसका अष़र मैंने अपने सीने में देखा और आँहज़रत (ﷺ) ने दुआ की ऐ अल्लाह! इसे अच्छा सवार बना दे और इसे हिदायत करने वाला और ख़ुद हिदायत पाया बना दे। रावी ने बयान किया कि फिर उसके बाद मैं कभी किसी घोड़े से नहीं गिरा। रावी ने बयान किया कि ज़ुल ख़ल्सा एक (बुतख़ाना) था, यमन में क़बीला ख़ष़अम और बजीला का, उसमें बुत थे, जिनकी पूजा की जाती थी और उसे का'बा भी कहते थे। बयान किया कि फिर जरीर वहाँ पहुँचे और उसे आग लगा दी और मुन्हदिम कर दिया। बयान किया कि जब जरीर (रज़ि.) यमन पहुँचे तो वहाँ एक शख़्स था जो तीरों से फ़ाल निकाला करता था। उससे किसी ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ऐलची यहाँ आ गये हैं। अगर उन्होंने तुम्हें पा लिया तो तुम्हारी गर्दन मार देंगे। बयान किया कि अभी वो फ़ाल निकाल ही रहे थे कि हज़रत जरीर (रज़ि.) वहाँ पहुँच गये। आपने उससे फ़र्माया कि अभी ये फ़ाल के पतर तोड़कर कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ ले वरना मैं तेरी गर्दन मार दूँगा। रावी ने बयान किया कि उस शख़्स ने तीर वग़ैरह तोड़ डाले और कलिमा ईमान की गवाही दी। उसके बाद जरीर (रज़ि.) ने क़बीला अहमस के एक सहाबी अबू अरतात (रज़ि.) नामी को आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आपको ख़ुशख़बरी सुनाने के लिये भेजा। जब वो ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुआ तो अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको हक़ के साथ मब्ऊ़ष़ किया है। मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये उस वक़्त तक नहीं चला जब तक वो बुतकदा

٤٣٥٧- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ قَيْسٍ عَنْ جَرِيرٍ قَالَ : قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلاَ تُرِيحُنِي مِنْ ذِي الْخَلَصَةِ؟)) فَقُلْتُ : بَلَى، فَانْطَلَقْتُ فِي خَمْسِينَ وَمِائَةِ فَارِسٍ مِنْ أَحْمَسَ وَكَانُوا أَصْحَابَ خَيْلٍ، وَكُنْتُ لاَ أَثْبُتُ عَلَى الْخَيْلِ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ فَضَرَبَ يَدَهُ عَلَى صَدْرِي حَتَّى رَأَيْتُ أَثَرَ يَدِهِ فِي صَدْرِي فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ وَاجْعَلْهُ هَادِيًا مَهْدِيًّا)) قَال: فَمَا وَقَعْتُ عَنْ فَرَسٍ بَعْدُ، قَالَ وَكَانَ ذُو الْخَلَصَةِ بَيْتًا بِالْيَمَنِ لِخَثْعَمٍ وَبَجِيلَةَ، فِيهِ نُصُبٌ يُعْبَدُ يُقَالُ لَهُ: الْكَعْبَةُ، قَالَ : فَأَتَاهَا فَحَرَّقَهَا بِالنَّارِ وَكَسَرَهَا، قَالَ وَلَمَّا قَدِمَ جَرِيرٌ الْيَمَنَ كَانَ بِهَا رَجُلٌ يَسْتَقْسِمُ بِالأَزْلاَمِ فَقِيلَ لَهُ إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَهُنَا فَإِنْ قَدَرَ عَلَيْكَ ضَرَبَ عُنُقَكَ قَالَ: فَبَيْنَمَا هُوَ يَضْرِبُ بِهَا إِذْ وَقَفَ عَلَيْهِ جَرِيرٌ، فَقَالَ : لَتَكْسِرَنَّهَا وَلَتَشْهَدَنَّ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ أَوْ لأَضْرِبَنَّ عُنُقَكَ، قَالَ: فَكَسَرَهَا وَشَهِدَ ثُمَّ بَعَثَ جَرِيرٌ رَجُلاً مِنْ أَحْمَسَ يُكْنَى أَبَا أَرْطَاةَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُبَشِّرُهُ بِذَلِكَ فَلَمَّا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا جِئْتُ حَتَّى تَرَكْتُهَا كَأَنَّهَا جَمَلٌ أَجْرَبُ

فقَالَ : فَبَرَّكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى خَيْلِ أَحْمَسَ وَرِجَالِهَا خَمْسَ مَرَّاتٍ. [راجع: ٣٠٢٠]

को ख़ारिश ज़दा ऊँट की तरह जलाकर स्याह नहीं कर दिया। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने क़बीला अहमस के घोड़ों और सवारों के लिये पाँच मर्तबा बरकत की दुआ की। (राजेअ: 3020)

तश्रीह : हाफ़िज़ इब्ने हजर फ़र्माते हैं **व फ़िल्हदीषि मश्रूइय्यतु इज़ालतिम्मा युफ़त्तिनु बिहिन्नासु मिम्बनाइन व ग़ैरूहू सवाअन कान इन्सानन औ हैवानन औ जिमादन व फ़ीहि इस्तिअमालतु नफ़ूसिल्क़ौमि बितामीरम्मिन हुव मिन्हुम बल्इस्तिजाबतु बिद्दुआइ वष्षनाइ वल्बशारति फिल्फ़ुतूहि व फ़ज़्लु रूकूबिल्ख़ैलि फ़िल्हर्बि व क़ुबूल ख़बिल्वाहिदि वल्मुबालगतु फी निकायतिल्अदुव्वि व मनाक़िबु लिजरीरिन व लिक़ौमिही व बर्कतु यदिन्नबिय्यि (ﷺ) व दुआउहू व अन्नहू कान यदऊ वित्रन व क़द युजाज़िुष्षलाष** (अल्ख फ़त्हुल्बारी) या'नी हदीषे हाज़ा से षाबित हुआ कि जो चीज़ें लोगों की गुमराही का सबब बनें वो मकान हों या कोई इंसान हो या हैवान हो या कोई जमादात से हो, शरई तौर पर उनका ज़ाइल कर देना जाइज़ है। और ये भी षाबित हुआ कि किसी क़ौम की दिलजोई के लिये अमीरे क़ौम ख़ुद उन ही में से बनाना बेहतर है और फ़ुतूहात के नतीजे में दुआ करना, बशारत देना और मुजाहिदीन की ता'रीफ़ करना भी जाइज़ है और जंग में घोड़े की सवारी की फ़ज़ीलत भी षाबित हुई और ख़बरे वाहिद का क़ुबूल करना भी षाबित हुआ और दुश्मन को सज़ा देने में मुबालग़ा भी षाबित हुआ और हज़रत जरीर (रज़ि.) और उनकी क़ौमी फ़ज़ीलत भी षाबित हुई और रसूले करीम (ﷺ) के दस्ते मुबारक और आपकी दुआओं की बरकत भी षाबित हुई और ये भी कि आप दुआओं में भी वित्र का ख़्याल रखते और कभी तीन से ज़्यादा बार भी दुआ फ़र्माया करते थे।

٦٤- باب غَزْوَةِ ذَاتِ السَّلاَسِلِ

बाब 64 : ग़ज़्वा ज़ातुस्सलासिल का बयान

وَهِيَ غَزْوَةُ لَخْمٍ وَجُذَامَ قَالَهُ : إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَالِدٍ، وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ، عَنْ يَزِيدَ عَنْ عُرْوَةَ هِيَ بِلاَدُ بَلِيٍّ، وَعُذْرَةَ، وَبَنِي الْقَيْنِ.

ये वो ग़ज़्वा है जो क़बाइले लख़्म और जुज़ाम के साथ पेश आया था। इब्ने इस्हाक़ ने यज़ीद से, और उन्होंने उर्वा से कि जातुस सलासिल, क़बाइले बल्ली, उज़्र और बनी अल क़ैन को कहते हैं।

तश्रीह : ये ग़ज़्वा सन 8 हिजरी में बमाहे जमादिल आख़िर बमुक़ाम वादी क़ुरा मे हुआ था ये जगह मदीना से पूरे दस दिन की राह पर है।उसको ज़ातुस्सलासिल इसलिये कहते हैं कि काफ़िरों ने उसमें जमकर लड़ने के लिये अपने जिस्मों को ज़ंजीरों से बाँध लिया था। कुछ ने कहा कि सिलसिला वहाँ पानी का एक चश्मा था। लख़्म और जुज़ाम दोनों क़बीलों के नाम हैं ये भी उस जंग मे शरीक थे।

٤٣٥٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ عَمْرَو بْنَ الْعَاصِ عَلَى جَيْشِ ذَاتِ السَّلاَسِلِ قَالَ: فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ : أَيُّ النَّاسِ أَحَبُّ إِلَيْكَ؟ قَالَ ((عَائِشَةُ)) قُلْتُ مِنَ الرِّجَالِ؟ قَالَ: ((أَبُوهَا)) قُلْتُ ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ : ((عُمَرُ))، فَعَدَّ رِجَالاً فَسَكَتُّ مَخَافَةَ أَنْ يَجْعَلَنِي فِي آخِرِهِمْ.

4358. हमसे इस्हाक़ बिन शाहीन ने बयान किया, कहा हमको ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद हज़्ज़ा ने, उन्हें अबू उष्मान नह्दी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अम्र बिन आस़ (रज़ि.) को ग़ज़्वा ज़ातस सलासिल के लिये अमीर लश्कर बनाकर भेजा। अम्र बिन आस़ (रज़ि.) ने बयान किया कि (ग़ज़्वा से वापस आकर) मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपसे पूछा कि आपको सबसे ज़्यादा अज़ीज़ कौन शख़्स है? फ़र्माया कि आइशा (रज़ि.), मैंने पूछा मर्दों में? फ़र्माया कि उसके वालिद, मैंने पूछा, उसके बाद कौन हैं? फ़र्माया कि उमर (रज़ि.)। इस तरह आपने कई आदमियों के नाम लिये बस मैं ख़ामोश हो गया

कि कहीं आप मुझे सबसे बाद में न कर दें। (राजेअ : 3662) [راجع: ٣٦٦٢]

तश्रीह : इस लड़ाई में तीन सौ मुहाजिरीन और अंसार मअतीस घोड़े आपने भेजे थे। अम्र बिन आस (रज़ि.) को उनका सरदार बनाया था। जब अम्र (रज़ि.) दुश्मन के मुल्क के क़रीब पहुँचे तो उन्होंने और मज़ीद फ़ौज तलब की। आप (ﷺ) ने अबू उबैदह बिन जर्राह (रज़ि.) को सरदार मुक़र्रर करके दो सौ आदमी और भेजे। उनमे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) और उमर (रज़ि.) भी थे। अबू उबैदह (रज़ि.) जब अम्र (रज़ि.) से मिले तो उन्होंने इमाम बनना चाहा लेकिन अम्र बिन आस (रज़ि.) ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने आपको मेरी मदद के लिये भेजा है, सरदार तो मैं ही रहूँगा। अबू उबैदह (रज़ि.) ने इस मा'कूल बात को मान लिया और अम्र बिन आस (रज़ि.) इमामत करते रहे। हाकिम की रिवायत में है कि अम्र बिन आस (रज़ि.) ने लश्कर में अंगार रोशन करने से मना किया। हज़रत उमर (रज़ि.) ने उस पर इंकार किया तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कहा चुप रहो, आँहज़रत (ﷺ) ने जो अम्र (रज़ि.) को सरदार मुक़र्रर किया है तो इस वजह से कि वो लड़ाई के फ़न से ख़ूब वाक़िफ़े कार है। बैहक़ी की रिवायत में है कि अम्र बिन आस (रज़ि.) जब लौटकर आए तो अपने दिल मे ये समझे कि मैं हज़रत अबूबक्र व हज़रत उमर (रज़ि.) से ज़्यादा दर्जा रखता हूँ। इसीलिये उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से सवाल किया, जिसका रिवायत में तज़्किरा है। जिसको सुनकर उनको हक़ीक़ते हाल का इल्म हो गया। इस हदीष़ से ये भी निकला कि मफ़ज़ूल की इमामत भी अफ़ज़ल के लिये जाइज़ है क्योंकि हज़रात शैख़ेन और अबू उबैदह (रज़ि.) हज़रत अम्र (रज़ि.) से अफ़ज़ल थे।

बाब 65 : हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) का यमन की तरफ़ जाना

٦٥- باب ذَهَاب جَرِيرٍ إِلَى الْيَمَنِ

4359. मुझसे अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा अब्सी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन इदरीस ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने और उनसे जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने बयान किया कि (यमन से वापसी पर मदीना आने के लिये) मैं दरिया के रास्ते से सफ़र कर रहा था। उस वक़्त यमन के दो आदमियों ज़ू कलाअ और ज़ू अम्र से मेरी मुलाक़ात हुई मैं उनसे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की बातें करने लगा उस पर ज़ू अम्र ने कहा अगर तुम्हारे स़ाहब (या'नी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) वही हैं जिनका ज़िक्र तुम कर रहे हो तो उनकी वफ़ात को भी तीन दिन गुज़र चुके। ये दोनों मेरे साथ ही (मदीना) की तरफ़ चल रहे थे। रास्ते में हमें मदीना की तरफ़ से आते हुए कुछ सवार दिखाई दिये, हमने उनसे पूछा तो उन्होंने इसकी तस्दीक़ की कि आँहज़रत (ﷺ) वफ़ात पा गये हैं। आपके ख़लीफ़ा अबूबक्र (रज़ि.) मुंतख़ब हुए हैं और लोग अब भी सब ख़ैरियत से हैं। उन दोनों ने मुझसे कहा कि अपने स़ाहब (अबूबक्र रज़ि.) से कहना कि हम आए थे और इंशाअल्लाह फिर मदीना आएँगे ये कहकर दोनों यमन की तरफ़ वापस चले गये। फिर मैंने अबूबक्र (रज़ि.) को उनकी बातों की खबर दी तो आपने फ़र्माया कि फिर उन्हें अपने

٤٣٥٩- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ الْعَبْسِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيسَ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ قَيْسٍ عَنْ جَرِيرٍ، قَالَ : كُنْتُ بِالْبَحْرِ فَلَقِيتُ رَجُلَيْنِ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ ذَا كِلاَعٍ، وَذَا عَمْرٍو، فَجَعَلْتُ أُحَدِّثُهُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُ ذُو عَمْرٍو: لَئِنْ كَانَ الَّذِي تَذْكُرُ مِنْ صَاحِبِكَ لَقَدْ مَرَّ عَلَى أَجَلِهِ مُنْذُ ثَلاَثٍ، وَأَقْبَلاَ مَعِي حَتَّى إِذَا كُنَّا فِي بَعْضِ الطَّرِيقِ رُفِعَ لَنَا رَكْبٌ مِنْ قِبَلِ الْمَدِينَةِ فَسَأَلْنَاهُمْ، فَقَالُوا : قُبِضَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتُخْلِفَ أَبُوبَكْرٍ وَالنَّاسُ صَالِحُونَ، فَقَالاَ : أَخْبِرْ صَاحِبَكَ أَنَّا قَدْ جِئْنَا وَلَعَلَّنَا سَنَعُودُ إِنْ شَاءَ اللهُ، وَرَجَعَا إِلَى الْيَمَنِ فَأَخْبَرْتُ أَبَا بَكْرٍ بِحَدِيثِهِمْ قَالَ : أَفَلاَ جِئْتَ بِهِمْ؟ فَلَمَّا

كَانَ بَعْدُ قَالَ لِي ذُو عَمْرٍو : يَا جَرِيرُ إِنَّ بِكَ عَلَيَّ كَرَامَةً وَإِنِّي مُخْبِرُكَ خَبَرًا إِنَّكُمْ مَعْشَرَ الْعَرَبِ لَنْ تَزَالُوا بِخَيْرٍ مَا كُنْتُمْ إِذَا هَلَكَ أَمِيرٌ تَأَمَّرْتُمْ فِي آخَرَ فَإِذَا كَانَتْ بِالسَّيْفِ كَانُوا مُلُوكًا يَغْضَبُونَ غَضَبَ الْمُلُوكِ وَيَرْضَوْنَ رِضَا الْمُلُوكِ.

साथ लाए क्यूँ नहीं? बहुत दिनों बाद ख़िलाफ़ते उमरी में ज़ू अम्र ने एक मर्तबा मुझसे कहा कि जरीर! तुम्हारा मुझ पर एहसान है और तुम्हें मैं एक बात बताऊँगा कि तुम अहले अरब उस वक़्त तक ख़ैरो-भलाई के साथ रहोगे जब तक तुम्हारा तर्ज़े अमल ये होगा कि जब तुम्हारा कोई अमीर वफ़ात पा जाएगा तो तुम अपना कोई दूसरा अमीर मुंतख़ब कर लिया करोगे। लेकिन जब (इमारत के लिये) तलवार तक बात पहुँच जाए तो तुम्हारे अमीर बादशाह बन जाएँगे। बादशाहों की तरह गुस्सा हुआ करेंगे और उन्हीं की तरह ख़ुश हुआ करेंगे।

तश्रीह : हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) का ये सफ़र यमन में दा'वत इस्लाम के लिये था। ज़ुल ख़लसा के ढाने का सफ़र दूसरा है। रास्ता में ज़ू अम्र आपको मिला और उसने वफ़ाते नबवी की ख़बर सुनाई जिस पर तीन दिन गुज़र चुके थे। ज़ू अम्र को ये ख़बर किसी ज़रिये से मिल चुकी होगी।

देवबन्दी तर्जुमा बुख़ारी में यहाँ वफ़ाते नबवी पर तीन साल गुज़रने का ज़िक्र लिखा गया है। जो अक़्लन भी बिलकुल ग़लत है। इसलिये कि तीन साल तो ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी की मुद्दत भी नहीं है। हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने तीन दिन का तर्जुमा किया है, वही हमने नक़ल किया है और यही सहीह है।

ज़ूअम्र की आख़िरी नसीहत जो यहाँ मज़्कूर है वो बिलकुल ठीक षाबित हुई। खुलफ़-ए-राशिदीन के ज़माने तक ख़िलाफ़त मुसलमानों के मश्वरे और सलाह से होती रही। उस दौर के बाद किसरा और क़ैसर की तरह लोग ताक़त के बल पर बादशाह बनने लगे और मुसलमानों का शीराज़ा मुंतशिर हो गया। हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) ने जब ख़िलाफ़ते यज़ीद का ऐलान किया तो कई बा-बसीरत (समझ-बूझ वाले) मुसलमानों ने साफ़ कह दिया था कि आप सुन्नते रसूल (ﷺ) को छोड़कर अब किसरा और क़ैसर की सुन्नत को ज़िन्दा कर रहे हैं। बहरहाल इस्लामी ख़िलाफ़त की बुनियाद **अम्रूहुम शूरा बैनहुम** पर है जिसको तरक़्क़ी देकर आज की जुम्हूरियत लाई गई है। अगरचे उसमें बहुत सी ख़राबियाँ हैं, ताहम शूरा की एक अदना झलक है।

٦٦- باب غَزْوَةِ سِيفِ الْبَحْرِ

बाब 66 : ग़ज़्व-ए-सैफुल बह्र का बयान

وَهُمْ يَتَلَقَّوْنَ عِيرًا لِقُرَيْشٍ وَأَمِيرُهُمْ أَبُو عُبَيْدَةَ

ये दस्ता क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िले की घात में था. उसके सरदार हज़रत अबू उबैदह बिन जर्राह (रज़ि.) थे.

तश्रीह : उसमे ये शुब्हा होता है कि ये वाक़िया रजब सन् 8 हिजरी का है मगर उन दिनों क़ुरैश से सुलह थी। इसलिये कुछ ने कहा कि ये ग़ज़्वा जुहैना की क़ौम से हुआ था जो समुन्दर के पास रहती थी। यही सहीह मा'लूम होता है।

٤٣٦٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْثًا

4360. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे वहब बिन कैसान ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने साहिले समुन्दर की तरफ़ एक लश्कर भेजा और उसका अमीर अबू उबैदह बिन जर्राह

قِبَلَ السَّاحِلِ وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ وَهُمْ ثَلَثُمَائَةٍ فَخَرَجْنَا وَكُنَّا بِبَعْضِ الطَّرِيقِ فَنِيَ الزَّادُ فَأَمَرَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِأَزْوَادِ الْجَيْشِ فَجُمِعَ فَكَانَ مِزْوَدَيْ تَمْرٍ فَكَانَ يَقُوتُنَا كُلَّ يَوْمٍ قَلِيلٌ قَلِيلٌ، حَتَّى فَنِيَ فَلَمْ يَكُنْ يُصِيبُنَا إِلاَّ تَمْرَةٌ تَمْرَةٌ، فَقُلْتُ مَا تُغْنِي عَنْكُم تَمْرَةٌ، فَقَالَ: لَقَدْ وَجَدْنَا فَقْدَهَا حِينَ فَنِيَتْ ثُمَّ انْتَهَيْنَا إِلَى الْبَحْرِ فَإِذَا حُوتٌ مِثْلُ الظَّرِبِ فَأَكَلَ مِنْهَا الْقَوْمُ ثَمَانَ عَشْرَةَ لَيْلَةً ثُمَّ أَمَرَ أَبُو عُبَيْدَةَ بِضِلَعَيْنِ مِنْ أَضْلاَعِهِ فَنُصِبَا ثُمَّ أَمَرَ بِرَاحِلَةٍ فَرُحِلَتْ، ثُمَّ مَرَّتْ تَحْتَهُمَا فَلَمْ تُصِبْهُمَا.

[راجع: ٢٤٨٣]

(रज़ि.) को बनाया। उसमें तीन सौ आदमी शरीक थे। ख़ैर हम मदीना से रवाना हुए और अभी रास्ते ही में थे कि राशन ख़त्म हो गया, जो कुछ बच रहा था वो अबू उ़बैदह (रज़ि.) के हुक्म से जमा किया गया तो दो थैले खजूरों के जमा हो गये। अब अबू उ़बैदह (रज़ि.) हमें रोज़ाना थोड़ा थोड़ा उसी में से खाने को देते रहे। आख़िर जब ये भी ख़त्म के क़रीब पर पहुँच गया तो हमारे हिस़्से में स़िर्फ़ एक-एक खजूर आती थी। वहब ने कहा मैंने जाबिर (रज़ि.) से पूछा कि एक खजूर से क्या होता रहा होगा? जाबिर (रज़ि.) ने कहा वो एक खजूर ही ग़नीमत थी। जब वो भी न रही तो हमको उसकी क़द्र मा'लूम हुई थी, आख़िर हम समुन्दर के किनारे पहुँच गये। वहाँ क्या देखते हैं बड़े टीले की त़रह एक मछली निकल कर पड़ी है। उस मछली को सारा लश्कर अठारह दिन तक खाता रहा। बाद में अबू उ़बैदह (रज़ि.) के हुक्म से उसकी पसली की दो हड्डियाँ खड़ी की गईं वो इतनी ऊँची थीं कि ऊँट पर कजावा कसा गया वो उनके तले से निकल गया और हड्डियों को बिलकुल नहीं लगा। (राजेअ़ : 2473)

अल्लाह ने इस त़रह अपने प्यारे मुजाहिदीन बन्दों के रिज़्क़ का सामान मुहय्या फ़र्माया। सच है व यर्ज़ुक़ुहू मिन हैषु ला यहतसिब

٤٣٦١ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: الَّذِي حَفِظْنَاهُ مِنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَثَمَائَةِ رَاكِبٍ، أَمِيرُنَا أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ نَرْصُدُ عِيرَ قُرَيْشٍ فَأَقَمْنَا بِالسَّاحِلِ نِصْفَ شَهْرٍ فَأَصَابَنَا جُوعٌ شَدِيدٌ حَتَّى أَكَلْنَا الْخَبَطَ فَسُمِّيَ ذَلِكَ الْجَيْشُ جَيْشَ الْخَبَطِ فَأَلْقَى لَنَا الْبَحْرُ دَابَّةً يُقَالُ لَهَا: الْعَنْبَرُ، فَأَكَلْنَا مِنْهُ نِصْفَ شَهْرٍ، وَادَّهَنَّا مِنْ وَدَكِهِ حَتَّى ثَابَتْ إِلَيْنَا أَجْسَامُنَا فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ ضِلَعًا مِنْ أَضْلاَعِهِ، فَنَصَبَهُ فَعَمَدَ إِلَى أَطْوَلِ رَجُلٍ مَعَهُ قَالَ سُفْيَانُ

4361. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि हमने अ़म्र बिन दीनार से जो याद किया वो ये है कि उन्होंने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तीन सौ सवारों के साथ भेजा और हमारा अमीर अबू उ़बैदह इब्नुल जर्राह (रज़ि.) को बनाया। ताकि हम क़ुरैश के क़ाफ़िल-ए-तिजारत की तलाश में रहें। साहिले समुन्दर पर हम पन्द्रह दिन तक पड़ाव डाले रहे। हमें (उस सफ़र में) बड़ी सख़्त भूख और फ़ाक़े का सामना करना पड़ा, यहाँ तक नौबत पहुँची कि हमने बबूल के पत्ते खाकर वक़्त गुज़ारा। इसीलिये इस फ़ौज का लक़ब पत्तों की फ़ौज हो गया। फिर इत्तिफ़ाक़ से समुन्दर ने हमारे लिये एक मछली जैसा जानवर साहिल पर फेंक दिया, उसका नाम अ़म्बर था, हमने उसको पन्द्रह दिन तक खाया और उसकी चर्बी को तैल के त़ौर पर (अपने जिस्मों पर) मला। इससे हमारे बदन की त़ाक़त व क़ुव्वत फिर लौट आई। बाद में अबू उ़बैदह (रज़ि.) ने उसकी एक पसली

مَرَّةً : ضِلَعًا مِنْ أَضْلاَعِهِ فَنَصَبَهُ وَأَخَذَ رَحْلاً وَبَعِيرًا فَمَرَّ تَحْتَهُ، قَالَ جَابِرٌ: وَكَانَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ نَحَرَ ثَلاَثَ جَزَائِرَ ثُمَّ نَحَرَ ثَلاَثَ جَزَائِرَ، ثُمَّ نَحَرَ ثَلاَثَ جَزَائِرَ ثُمَّ إِنَّ أَبَا عُبَيْدَةَ نَهَاهُ. وَكَانَ عَمْرٌو يَقُولُ: أَخْبَرَنَا أَبُو صَالِحٍ أَنَّ قَيْسَ بْنَ سَعْدٍ قَالَ لأَبِيهِ: كُنْتُ فِي الْجَيْشِ فَجَاعُوا، قَالَ: انْحَرْ قَالَ نَحَرْتُ قَالَ : ثُمَّ جَاعُوا قَالَ: انْحَرْ قَالَ: نَحَرْتُ، قَالَ : ثُمَّ جَاعُوا، قَالَ: انْحَرْ، قَالَ نَحَرْتُ ثُمَّ جَاعُوا قَالَ انْحَرْ قَالَ نُهِيتُ.

[راجع: ٢٤٨٣]

निकालकर खड़ी करवाई और जो लश्कर में सबसे लम्बे आदमी थे। उन्हें उसके नीचे से गुज़ारा। सुफ़यान बिन उ़ययना ने एक बार इस त़रह़ बयान किया कि एक पसली निकालकर खड़ी की और एक शख़्स को ऊँट पर सवार कराया वो उसके नीचे से निकल गया। जाबिर (रज़ि.) ने बयान कियाकि लश्कर के एक आदमी ने पहले तीन ऊँट ज़िब्ह़ किये, फिर तीन ऊँट ज़िब्ह़ किये और जब तीसरी बार तीन ऊँट ज़िब्ह़ किये तो अबू उ़बैदह (रज़ि.) ने उन्हें रोक दिया क्योंकि सब ऊँट ज़िब्ह़ कर दिये जाते तो सफ़र कैसे होता और अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया कि हमको अबूसालेह ज़क्वान ने ख़बर दी कि क़ैस बिन सअ़द (रज़ि.) ने (वापस आकर) अपने वालिद (सअ़द बिन उ़बादा रजि) से कहा कि मैं भी लश्कर में था जब लोगों को भूख लगी तो अबू उ़बैदह (रज़ि.) ने कहा कि ऊँट ज़िब्ह़ करो, क़ैस बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने ज़िब्ह़ कर दिया कहा कि फिर भूखे हुए तो उन्होंने कहा कि ऊँट ज़िब्ह़ करो, मैंने ज़िब्ह़ किया, बयान किया कि जब फिर भूखे हुए तो कहा कि ऊँट ज़िब्ह़ करो, मैंने ज़िब्ह़ किया, फिर भूखे हुए तो कहा कि ऊँट ज़िब्ह़ करो, फिर कैस (रज़ि.) ने बयान किया कि इस मर्तबा मुझे अमीरे लश्कर की त़रफ़ से मना कर दिया गया। (राजेअ़ :2473)

बाद में ये सोचा गया कि अगर ऊँट सारे इस त़रह़ ज़िबह़ कर दिये गये तो फिर सफ़र कैसे होगा। लिहाज़ा ऊँटों का ज़िबह़ बन्द कर दिया गया मगर अल्लाह ने मछली के ज़रिये लश्कर की ख़ूराक का इंतिज़ाम कर दिया। **ज़ालिक फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय्यशाउ वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्अ़ज़ीम**

٤٣٦٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ : أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: غَزَوْنَا جَيْشَ الْخَبَطِ، وَأُمِّرَ أَبُو عُبَيْدَةَ فَجُعْنَا جُوعًا شَدِيدًا فَأَلْقَى الْبَحْرُ حُوتًا مَيِّتًا لَمْ نَرَ مِثْلَهُ، يُقَالُ لَهُ : الْعَنْبَرُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ نِصْفَ شَهْرٍ، فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ عَظْمًا مِنْ عِظَامِهِ، فَمَرَّ الرَّاكِبُ تَحْتَهُ فَأَخْبَرَنِي أَبُو الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا يَقُولُ: قَالَ أَبُو عُبَيْدَةَ كُلُوا فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ ذَكَرْنَا ذَلِكَ

4362. हमसे मुसद्दद बिन मुसरहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उन्हें अ़म्र बिन दीनार ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम पत्तों की फ़ौज में शरीक थे। अबू उ़बैदह (रज़ि.) हमारे अमीर थे। फिर हमें शिद्दत से भूख लगी, आख़िर समुन्दर ने एक ऐसी मुर्दा मछली बाहर फेंकी कि हमने वैसी मछली पहले कभी नहीं देखी थी उसे अ़म्बर कहते थे। वो मछली हमने पन्द्रह दिन तक खाई। फिर अबू उ़बैदह (रज़ि.) ने उसकी हड्डी खड़ी करवा दी तो ऊँट का सवार उसके नीचे से गुज़र गया। (इब्ने जुरैज ने बयान किया कि) फिर मुझे अबुज़्ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबू उ़बैदह (रज़ि.) ने कहा उस मछली को खाओ, फिर जब हम मदीना लौटकर आए तो हमने उसका

لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((كُلُوا رِزْقًا أَخْرَجَهُ اللهُ أَطْعِمُونَا إِنْ كَانَ مَعَكُمْ)) فَأَتَاهُ بَعْضُهُمْ فَأَكَلَهُ.
[راجع: ٢٤٨٣]

ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया, आपने फ़र्माया कि वो रोज़ी खाओ जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये भेजी है। अगर तुम्हारे पास उसमें से कुछ बची हो तो मुझे भी खिलाओ। चुनाँचे एक आदमी ने उसका गोश्त लाकर आपकी ख़िदमत में पेश किया और आपने भी उसे तनावुल फ़र्माया। (राजेअ़ : 2473)

तश्रीह : इस ह़दीष़ से ये निकला कि समुन्दर की मुर्दा मछली का खाना दुरुस्त है और ह़न्फ़िया ने जो तावील की है कि लश्कर वाले मुज़्तर थे उनके लिये दुरुस्त थी वो तावील इस रिवायत से ग़लत़ ठहरती है चूँकि यहाँ उस मछली का गोश्त आँह़ज़रत (ﷺ) का भी खाना मज़्कूर है जो यक़ीनन मुज़्तर नहीं थे।

٦٧- باب حَجِّ أَبِي بَكْرٍ بِالنَّاسِ فِي سَنَةِ تِسْعٍ

बाब 67 : ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का लोगों के साथ सन 9 हिजरी में ह़ज्ज करना

٤٣٦٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ أَبُو الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بَعَثَهُ فِي الْحَجَّةِ الَّتِي أَمَّرَهُ النَّبِيُّ ﷺ قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ يَوْمَ النَّحْرِ فِي رَهْطٍ يُؤَذِّنُ فِي النَّاسِ ((لاَ يَحُجُّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ، وَلاَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ)).
[أطرافه في : ٤٦٠٥، ٤٦٥٤، ٦٧٤٤].

4363. हमसे सुलैमान बिन दाऊद अबु अर् रबीअ़ ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया कि उनसे ज़ुह्री ने, उनसे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को ह़ज्जतुल विदाअ़ से पहले जिस ह़ज्ज का अमीर बनाकर भेजा था, उसमें ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझे कई आदमियों के साथ क़ुर्बानी के दिन (मिना) में ये ऐलान करने के लिये भेजा था कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक (बैतुल्लाह) का ह़ज्ज करने न आए और न कोई शख़्स बैतुल्लाह का त़वाफ़ नंगे होकर करे।
(दीगर मक़ाम : 4605, 4645, 6744)

तश्रीह : ये वाक़िया सन् 9 हिजरी का है। सन 10 हिजरी में ह़ज्जतुल विदाअ़ हुआ। ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) माहे ज़ी क़अ़दा सन् 9 हिजरी में मदीना से निकले थे। उनके साथ तीन सौ अस्ह़ाब थे और आँह़ज़रत (ﷺ) ने बीस ऊँट उनके साथ भेजे थे। उस ह़ज्ज में ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने ये सरकारी ऐलान किया जो रिवायत में मज़्कूर है कि आइन्दा साल से का'बा मुश्रिकीन से बिलकुल पाक हो गया और नंग धड़ंग होकर ह़ज्ज करने की बात़िल रस्म भी ख़त्म हो गई, जो अ़र्सा से जारी थी।

٤٣٦٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: آخِرُ سُورَةٍ نَزَلَتْ كَامِلَةً بَرَاءَةُ وَآخِرُ سُورَةٍ نَزَلَتْ

4364. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि सबसे आख़िरी सूरह जो पूरी उतरी वो सूरह बरात (तौबा) थी और

आख़िरी आयत जो उतरी वो सूरह निसा की ये आयत है। व यस्तफ़्तूनका क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम फ़िल कलालति.

خَاتِمَةُ سُورَةِ النِّسَاءِ ﴿يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلاَلَةِ﴾ [النساء : ١٧٦].

मसाइले मीराष़ के बारे में आख़िरी आयत मुराद है वरना हुज़ूर (ﷺ) की वफ़ात से चन्द दिन पहले आख़िरी आयत नाज़िल हुई वो आयत, **वत्तक़ू यौम तुरजऊन फ़ीहि इलल्लाह** (अल् बक़र: 281) वाली है।

बाब 68 : बनी तमीम के वफ़्द का बयान

٦٨- باب وَفْد بَنِي تَمِيمٍ

तश्रीह : ये सन 8 हिजरी के आख़िर में आए थे। जब आँहज़रत (ﷺ) जिअ़राना से वापस लौटकर आए थे। उन ऐलचियों में अ़तारद, अक़्रअ़, ज़बरक़ान, अ़म्र, ख़ब्बाब, नईम, क़ैस और उ़ययना बिन ह़सन थे।

4365. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू स़ख़रह ने, उनसे स़फ़्वान इब्ने मुहरिज माज़िनी ने और उनसे इमरान बिन हुस़ैन ने बयान किया कि बनू तमीम के चन्द लोगों का (एक वफ़्द) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया ऐ बनू तमीम! बशारत क़ुबूल करो। वो कहने लगे कि बशारत तो आप हमें दे चुके, कुछ माल भी दीजिए। उनके इस जवाब पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर नागवारी का अष़र देखा गया, फिर यमन के चन्द लोगों का एक (वफ़्द) आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि बनू तमीम ने बशारत नहीं क़ुबूल की, तुम क़ुबूल कर लो। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमको बशारत क़ुबूल है। (राजेअ़ : 3190)

٤٣٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي صَخْرَةَ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُحْرِزٍ الْمَازِنِيِّ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَتَى نَفَرٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((اقْبَلُوا الْبُشْرَى يَا بَنِي تَمِيمٍ)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ بَشَّرْتَنَا فَأَعْطِنَا فَرُئِيَ ذَلِكَ فِي وَجْهِهِ فَجَاءَ نَفَرٌ مِنَ الْيَمَنِ فَقَالَ: ((اقْبَلُوا الْبُشْرَى إِذْ لَمْ يَقْبَلْهَا بَنُو تَمِيمٍ)) قَالُوا: قَدْ قَبِلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ. [راجع: ٣١٩٠]

आँहज़रत (ﷺ) की नाराज़गी की वजह ये थी कि उन्होंने जन्नत की दाइमी नेअ़मतों की बशारत को क़ुबूल न किया और दुनियाए फ़ानी के त़ालिब हुए। हालाँकि वो अगर बशारते नबवी को क़ुबूल कर लेते तो कुछ न कुछ दुनिया भी मिल ही जाती **ख़सिरद्दुनिया वल्आख़िरति** के मिस्दाक़ हुए, यमन की ख़ुशक़िस्मती है कि वहाँ वालों ने बशारते नबवी को क़ुबूल कर लिया। उससे यमन की फ़ज़ीलत भी ष़ाबित हुई, मगर आजकल की ख़ानाजंगी (गृहयुद्ध) ने यमन को दाग़दार कर दिया है। **अल्लाहुम्म अल्लिफ़ बैन क़ुलूबिल्मुस्लिमीन**, आमीन। बनू तमीम सारे ही ऐसे न थे ये चन्द लोग थे जिनसे ये ग़लती हुई बाक़ी बनू तमीम के फ़ज़ाइल भी हैं जैसा कि आगे ज़िक्र आ रहा है।

बाब 69 : मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि उ़ययना बिन ह़सन बिन हुज़ैफ़ा बिन बद्र को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी तमीम की शाख़ बनू अ़म्बर की त़रफ़ भेजा था, उसने उनको लूटा और कई आदमियों को क़त्ल किया और उनकी कई औ़रतों को क़ैद किया

٦٩- باب قَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ غَزْوَةِ عُيَيْنَةَ بْنِ حِصْنِ بْنِ حُذَيْفَةَ بْنِ بَدْرٍ بَنِي الْعَنْبَرِ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ بَعَثَهُ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْهِمْ فَأَغَارَ وَأَصَابَ مِنْهُمْ نَاسًا وَسَبَى مِنْهُمْ نِسَاءً.

तश्रीह : इस लड़ाई का सबब ये था कि बनी अम्बर ने ख़ुज़ाआ की क़ौम पर ज़्यादती की। आप (ﷺ) ने उ़यय्ना को पचास आदमियों के साथ उन पर भेजा। कोई अंसारी या मुहाजिर उस लड़ाई में शरीक न था। कहते हैं उ़यय्ना ने उस थोड़ी सी फ़ौज से बनी अम्बर की ग्यारह औरतों को और ग्यारह मर्दों को और तीस बच्चों को क़ैदी बना लिया।

4366. मुझसे ज़ुहैर बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे अ़म्मारा इब्ने क़अ़क़ाअ़ ने, उनसे अबू ज़रआ़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उस वक़्त से हमेशा बनू तमीम से मुह़ब्बत रखता हूँ जबसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ुबानी उनकी तीन ख़ूबियाँ मैंने सुनी हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके बारे में फ़र्माया था कि बनू तमीम दज्जाल के ह़क़ में मेरी उम्मत के सबसे ज़्यादा सख़्त लोग षाबित होंगे और बनू तमीम की एक क़ैदी ख़ातून आइशा (रज़ि.) के पास थीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे आज़ाद कर दो क्योंकि ये इस्माईल (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद में से है और उनके यहाँ से ज़कात वसूल होकर आई तो आपने फ़र्माया कि ये एक क़ौम की या (ये फ़र्माया कि) ये मेरी क़ौम की ज़कात है।

(राजेअ़ :2543)

٤٣٦٦- حَدَّثَنِي زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : لاَ أَزَالُ أُحِبُّ بَنِي تَمِيمٍ بَعْدَ ثَلاَثٍ، سَمِعْتُهُنَّ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُهَا فِيهِمْ ((هُمْ أَشَدُّ أُمَّتِي عَلَى الدَّجَّالِ)) وَكَانَتْ فِيهِمْ سَبِيَّةٌ عِنْدَ عَائِشَةَ فَقَالَ: ((اعْتِقِيهَا فَإِنَّهَا مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ)) وَجَاءَتْ صَدَقَاتُهُمْ فَقَالَ : ((هَذِهِ صَدَقَاتُ قَوْمٍ أَوْ قَوْمِي)).

[راجع: ٢٥٤٣]

क्योंकि बनू तमीम इल्यास बिन मुज़र में जाकर आँह़ज़रत (ﷺ) से मिल जाते हैं।

4367. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि बनू तमीम के चन्द सवार नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि आप हमारा कोई अमीर मुंतख़ब कर दीजिए। अबूबक्र (रजि) ने कहा कि क़अ़क़ाअ़ बिन मअ़बद बिन ज़ुरारह (रज़ि.) को अमीर मुंतख़ब कर दीजिए। उ़मर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! बल्कि आप अक़्रअ़ बिन ह़ाबिस (रज़ि.) को उनका अमीर मुंतख़ब फ़र्मा दीजिए। इस पर अबूबक्र (रज़ि.) ने उ़मर (रज़ि.) से कहा कि तुम्हारा मक़्सद सिर्फ़ मुझसे इख़्तिलाफ़ करना है। उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि नहीं मेरी ग़र्ज़ मुख़ालफ़त नहीं है। दोनों इतना झगड़े कि आवाज़ बुलन्द हो गई। इसी पर सूरह हुजरात की ये आयत नाज़िल हुई। या अय्युहल् लज़ीना आमनू ला तुक़द्दिमू, आख़िर आयत तक।

٤٣٦٧- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ الزُّبَيْرِ أَخْبَرَهُمْ أَنَّهُ قَدِمَ رَكْبٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَمِّرِ الْقَعْقَاعَ بْنَ مَعْبَدِ بْنِ زُرَارَةَ، قَالَ عُمَرُ: بَلْ أَمِّرِ الأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ : مَا أَرَدْتَ إِلاَّ خِلاَفِي قَالَ عُمَرُ: مَا أَرَدْتُ خِلاَفَكَ فَتَمَارَيَا حَتَّى ارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا فَنَزَلَتْ ذَلِكَ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللهِ وَرَسُولِهِ﴾ [الحجرات : ١]. حَتَّى انْقَضَتْ.

(दीगर मक़ाम : 4745, 4847, 7302)

[أطرافه في : ٤٧٤٥، ٤٨٤٧، ٧٣٠٢].

तश्रीह : एक ख़तरनाक ग़लती : हज़रत उमर (रज़ि.) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के जवाब में कहा, मा अरत्तु ख़िलाफ़क मेरा इरादा आपकी मुख़ालफ़त करना नहीं है सिर्फ़ बतौरे राय व मस्लिहत ये मैंने अ़र्ज़ किया है। इसका तर्जुमा, साहिब तफ़्हीमुल बुख़ारी ने यूँ किया है उमर (रज़ि.) ने कहा कि ठीक है मेरा मक़्सद सिर्फ़ तुम्हारी राय से इख़्तिलाफ़ करना ही है। ये ऐसा ख़तरनाक तर्जुमा है कि हज़रात शैख़ेन की शाने अक़्दस में इससे बड़ा धब्बा लगता है जबकि हज़रात शैख़ेन में बाहमी तौर पर बहुत ही ख़ुलूस था। अगर कभी कोई मौक़ा बाहमी इख़्तिलाफ़ात का आ भी गया तो वो उसको फ़ौरन दूर कर लिया करते थे। ख़ास तौर पर हज़रत उमर (रज़ि.) हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) का बहुत ज़्यादा एहतिराम करते थे और हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) का भी यही हाल था।

बाब 70 : वफ़्दे अ़ब्दुल क़ैस का बयान

٧٠- باب وَفْدِ عَبْدِ الْقَيْسِ

अ़ब्दुल क़ैस एक मशहूर क़बीला था जो बहरीन में रहता था। सबसे पहले मदीना मुनव्वरा के बाद एक गाँव में वहीं जुम्आ की नमाज़ क़ायम की गई जिस गाँव का नाम जवाषी था। मज़ीद तफ़्सील आगे मुलाहिज़ा हो।

4368. मुझसे इस्हाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा कि हमको अबू आमिर अ़क़्दी ने ख़बर दी, कहा हमसे कुर्रह इब्ने ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अबू जम्रह ने कि मैं ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा कि मेरे पास एक घड़ा है जिसमें मेरे लिये नबीज़ या'नी खजूर का शर्बत बनाया जाता है। मैं वो मीठे रहने तक पिया करता हूँ। कुछ वक़्त बहुत पी लेता हूँऔर लोगों के पास देर तक बैठा रहता हूँ तो डरता हूँ कि कहीं फ़ज़ीहत न हो। (लोग कहने लगे कि ये नशाबाज़ है) इस पर इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि क़बीला अ़ब्दुल क़ैस का वफ़्द नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने फ़र्माया अच्छे आए, न ज़लील हुए न शर्मिन्दा (ख़ुशी से मुसलमान हो गये न होते तो ज़िल्लत और शर्मिन्दगी हासिल होती।) उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमारे और आपके दरम्यान में मुश्रिकीन के क़बीले पड़ते हैं। इसलिये हम आपकी ख़िदमत में सिर्फ़ हुर्मत वाले महीनों में ही हाज़िर हो सकते हैं। आप (ﷺ) हमें वो अहकाम व हिदायात सुना दें कि अगर हम उन पर अ़मल करते रहें तो जन्नत में दाख़िल हों और जो लोग हमारे साथ नहीं आ सके हैं उन्हें भी वो हिदायात पहुँचा दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें चार चीज़ों का हुक्म देता हूँ और चार चीज़ों से रोकता हूँ। मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ अल्लाह पर ईमान लाने का, तुम्हें मा'लूम है अल्लाह पर ईमान लाना किसे कहते हैं? उसकी गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, नमाज़ क़ायम

٤٣٦٨- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ، حَدَّثَنَا قُرَّةُ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ، قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ: إِنَّ لِي جَرَّةً يُنْتَبَذُ لِي فِيهَا نَبِيذًا فَأَشْرَبُهُ حُلْوًا فِي جَرٍّ إِنْ أَكْثَرْتُ مِنْهُ فَجَالَسْتُ الْقَوْمَ فَأَطَلْتُ الْجُلُوسَ خَشِيتُ أَنْ أَفْتَضِحَ فَقَالَ: قَدِمَ وَفْدُ عَبْدِ الْقَيْسِ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَرْحَبًا بِالْقَوْمِ غَيْرَ خَزَايَا وَلاَ النَّدَامَى)) فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ الْمُشْرِكِينَ مِنْ مُضَرَ وَإِنَّا لاَ نَصِلُ إِلَيْكَ إِلاَّ فِي أَشْهُرِ الْحُرُمِ، حَدِّثْنَا بِجُمَلٍ مِنَ الأَمْرِ إِنْ عَمِلْنَا بِهِ دَخَلْنَا الْجَنَّةَ وَنَدْعُو بِهِ مَنْ وَرَاءَنَا، قَالَ: ((آمُرُكُمْ بِأَرْبَعٍ، وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: الإِيمَانِ بِاللهِ هَلْ تَدْرُونَ مَا الإِيمَانُ بِاللهِ؟ شَهَادَةُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَإِقَامُ الصَّلاَةِ، وَإِيتَاءُ الزَّكَاةِ، وَصَوْمُ رَمَضَانَ، وَأَنْ تُعْطُوا مِنَ الْمَغَانِمِ الْخُمُسَ، وَأَنْهَاكُمْ

करने का, ज़कात देने का, रमज़ान के रोज़े रखने और माले ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा (बैतुलमाल को) अदा करने का हुक्म देता हूँ और मैं तुम्हें चार चीज़ों से रोकता हूँ या'नी कद्दू के तूम्बे में और कुरैदी हुई लकड़ी के बर्तन में और सब्ज़ लाखी बर्तन मे और रोग़नी बर्तन में नबीज़ भिगोने से मना करता हूँ। (राजेअ : 53)

عَنْ أَرْبَعٍ : مَا انْتُبِذَ فِي الدُّبَّاءِ، وَالنَّقِيرِ، وَالْحَنْتَمِ، او الْمُزَفَّتِ)).

[راجع: ٥٣]

तश्रीह : ये ऐलची दो बार आए थे। पहली बार बारह तेरह आदमी थे और दूसरी बार में चालीस थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनके पहुँचने से पहले सहाबा (रज़ि.) को उनके आने की ख़ुशख़बरी बज़रिये वह्य सुना दी थी। उन बर्तनों से इसलिये मना किया कि उनमें नबीज़ को डाला जाता और वो जल्द सड़कर शराब बन जाया करती थी। इससे शराब की इंतिहाई बुराई षाबित हुई कि उसके बर्तन भी घरों में न रखे जाएँ। अफ़सोस उन मुसलमानों पर जो शराब पीते बल्कि उसका धंधा करते हैं। अल्लाह उनको तौबा करने की तौफ़ीक़ दे। (आमीन)

4369. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबू जम्रह ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना कि वो बयान करते थे कि जब क़बीला अ़ब्दुल क़ैस का वफ़्द हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम क़बीला रबीआ़ की एक शाख़ हैं और हमारे और आपके दरम्यान कुफ़्फ़ारे मुज़र के क़बाइल पड़ते हैं। हम हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में सिर्फ़ हुर्मत वाले महीनों में ही हाज़िर हो सकते हैं। इसलिये आप (ﷺ) चन्द ऐसी बातें बतला दीजिए कि हम भी उन पर अमल करें और जो लोग हमारे साथ नहीं आ सके हैं, उन्हें भी उसकी दा'वत दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें चार चीज़ों से रोकता हूँ(मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ) अल्लाह पर ईमान लाने का या'नी उसकी गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, फिर आप (ﷺ) ने (अपनी उँगली से) एक इशारा किया, और नमाज़ क़ायम करने का, ज़कात देने का और उसका कि माले ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा (बैतुलमाल को) अदा करते रहना और मैं तुम्हें दुब्बाअ, नक़ीर, मुज़फ़्फ़त और हन्तुम के बर्तनों के इस्ते'माल से रोकता हूँ। (राजेअ : 53)

٤٣٦٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ، قَالَ سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ: قَدِمَ وَفْدُ عَبْدِ الْقَيْسِ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا هَذَا الْحَيَّ مِنْ رَبِيعَةَ، وَقَدْ حَالَتْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ كُفَّارُ مُضَرَ فَلَسْنَا نَخْلُصُ إِلَيْكَ إِلاَّ فِي شَهْرٍ حَرَامٍ، فَمُرْنَا بِأَشْيَاءَ نَأْخُذُ بِهَا وَنَدْعُو إِلَيْهَا مَنْ وَرَاءَنَا قَالَ: ((آمُرُكُمْ بِأَرْبَعٍ، وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ: الإِيمَانِ بِاللهِ، شَهَادَةِ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَعَقَدَ وَاحِدَةً، وَإِقَامِ الصَّلاَةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَأَنْ تُؤَدُّوا للهِ خُمُسَ مَا غَنِمْتُمْ، وَأَنْهَاكُمْ عَنِ الدُّبَّاءِ، وَالنَّقِيرِ، وَالْحَنْتَمِ، وَالْمُزَفَّتِ)).

[راجع: ٥٣]

4370. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने, कहा मुझको अ़म्र बिन हारिष ने ख़बर दी

٤٣٧٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، وَقَالَ

और बक्र बिन मुज़र ने यूँ बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने अ़म्र बिन हारिष़ से रिवायत किया, उनसे बुकैर ने और उनसे कुरैब, (इब्ने अ़ब्बास रज़ि. के ग़ुलाम) ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.), अ़ब्दुर्रहमान बिन अज़्हर और मिस्वर बिन मख़रमा ने उन्हें आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में भेजा और कहा कि उम्मुल मोमिनीन से हमारा सबका सलाम कहना और अ़स्र के बाद दो रकअ़तों के बारे में उनसे पूछना और ये कि हमें मा'लूम हुआ है कि आप उन्हें पढ़ती हैं और हमे ये भी मा'लूम हुआ है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें पढ़ने से रोका था। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मैं उन दो रकअ़तों के पढ़ने पर उ़मर (रज़ि.) के साथ (उनके दौरे ख़िलाफ़त में) लोगों को मारा करता था। कुरैब ने बयान किया कि फिर मैं उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनका पैग़ाम पहुँचाया। आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि इसके बारे में उम्मे सलमा (रज़ि.) से पूछो, मैंने उन हज़रात को आकर उसकी ख़बर दी तो उन्होंने मुझको उम्मे सलमा (रज़ि.) की ख़िदमत में भेजा, वो बातें पूछने के लिये जो आइशा (रज़ि.) से उन्होंने पुछवाई थीं। उम्मे सलमा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने ख़ुद भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि आप अ़स्र के बाद दो रकअ़तों से मना करते थे लेकिन एक बार आप (ﷺ) ने अ़स्र की नमाज़ पढ़ी फिर मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए, मेरे पास उस वक़्त क़बीला बनू हराम की कुछ औरतें बैठी हुई थीं और आपने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी। ये देखकर मैंने ख़ादिमा को आपकी ख़िदमत में भेजा और उसे हिदायत कर दी कि हुज़ूर (ﷺ) के पहलू में खड़ी हो जाना और अ़र्ज़ करना कि उम्मे सलमा (रज़ि.) ने पूछा है या रसूलल्लाह! मैंने तो आपसे ही सुना था और आपने अ़स्र के बाद उन रकअ़तों के पढ़ने से मना किया था लेकिन आज मैं ख़ुद आपको दो रकअ़त पढ़ते देख रही हूँ। अगर आँहज़रत (ﷺ) हाथ से इशारा करें तो फिर पीछे हट जाना। ख़ादिमा ने मेरी हिदायत के मुताबिक़ किया और हुज़ूर (ﷺ) ने हाथ से इशारा किया तो वो पीछे हट गई। फिर जब फ़ारिग़ हुए तो फ़र्माया, ऐ अबू उमय्या की बेटी! अ़स्र के बाद की दो रकअ़तों के बारे में तुमने सवाल किया है, वजह ये हुई थी कि

بَكْرُ ابْنُ مُضَرَ: عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ عَنْ بُكَيْرٍ أَنَّ كُرَيْبًا مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ حَدَّثَهُ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ وَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَزْهَرَ وَالْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَرْسَلُوا إِلَى عَائِشَةَ فَقَالُوا : اقْرَأْ عَلَيْهَا السَّلاَمَ مِنَّا جَمِيعًا وَسَلْهَا عَنِ الرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعَصْرِ، وَإِنَّا أُخْبِرْنَا أَنَّكِ تُصَلِّيهَا وَقَدْ بَلَغَنَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْهُمَا قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَكُنْتُ أَضْرِبُ مَعَ عُمَرَ النَّاسَ عَنْهُمَا، قَالَ كُرَيْبٌ: فَدَخَلْتُ عَلَيْهَا وَبَلَّغْتُهَا مَا أَرْسَلُونِي فَقَالَتْ: سَلْ أُمَّ سَلَمَةَ، فَأَخْبَرْتُهُمْ فَرَدُّونِي إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ بِمِثْلِ مَا أَرْسَلُونِي إِلَى عَائِشَةَ، فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى عَنْهُمَا وَإِنَّهُ صَلَّى الْعَصْرَ ثُمَّ دَخَلَ عَلَيَّ وَعِنْدِي نِسْوَةٌ مِنْ بَنِي حَرَامٍ مِنَ الأَنْصَارِ فَصَلاَّهُمَا فَأَرْسَلْتُ إِلَيْهِ الْخَادِمَ فَقُلْتُ قُومِي إِلَى جَنْبِهِ فَقُولِي تَقُولُ أُمُّ سَلَمَةَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَلَمْ أَسْمَعْكَ تَنْهَى عَنْ هَاتَيْنِ الرَّكْعَتَيْنِ فَأَرَاكَ تُصَلِّيهِمَا فَإِنْ أَشَارَ بِيَدِهِ فَاسْتَأْخِرِي فَفَعَلَتِ الْجَارِيَةُ فَأَشَارَ بِيَدِهِ فَاسْتَأْخَرَتْ عَنْهُ، فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: ((يَا بِنْتَ أَبِي أُمَيَّةَ سَأَلْتِ عَنِ الرَّكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعَصْرِ؟ إِنَّهُ أَتَانِي أُنَاسٌ مِنْ عَبْدِ الْقَيْسِ بِالإِسْلاَمِ مِنْ قَوْمِهِمْ فَشَغَلُونِي عَنِ الرَّكْعَتَيْنِ اللَّتَيْنِ بَعْدَ الظُّهْرِ فَهُمَا هَاتَانِ)).

क़बीला अ़ब्दुल क़ैस के कुछ लोग मेरे यहाँ अपनी क़ौम का इस्लाम लेकर आए थे और उनकी वजह से ज़ुह्र के बाद की दो रकअ़तें मैं नहीं पढ़ सका था ये वही दो रकअ़तें हैं। (राजेअ़ : 1233)

[راجع: ١٢٣٣]

तश्रीह : बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि आख़िर ह़दीष़ में वफ़्द अ़ब्दुल क़ैस के आने का ज़िक्र है जिस दोगाना का ज़िक्र है ये अ़स्र का दोगाना न था बल्कि ज़ुह्र का दोगाना था। त़ह़ावी की रिवायत में यही है कि मेरे पास ज़कात के ऊँट आए थे, मैं उनको देखने में ये दोगाना पढ़ना भूल गया था। फिर मुझे याद आया तो घर आकर हमारे पास उनको पढ़ लिया। अबू उमय्या उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के वालिद थे।

4371. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अल जुअ़फ़ी ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आ़मिर अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, (ये त़ह्मान के बेटे हैं) उनसे अबू जम्रह ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की मस्जिद या'नी मस्जिदे नबवी के बाद सबसे पहला जुम्आ़ जवाष़ी की मस्जिद अ़ब्दुल क़ैस में क़ायम हुआ। जवाष़ी बह़रीन का एक गाँव था। (राजेअ़ : 892)

٤٣٧١- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ عَبْدُ الْمَلِكِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ هُوَ ابْنُ طَهْمَانَ، عَنْ أَبِي جَمْرَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَوَّلُ جُمُعَةٍ جُمِّعَتْ بَعْدَ جُمُعَةٍ جُمِّعَتْ فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فِي مَسْجِدِ عَبْدِ الْقَيْسِ بِجُوَاثَى يَعْنِي قَرْيَةً مِنَ الْبَحْرَيْنِ. [راجع: ٨٩٢]

तश्रीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) इस ह़दीष़ को यहाँ सिर्फ़ वफ़्दे अ़ब्दुल क़ैस के तआ़रुफ़ के सिलसिले में लाए हैं और बतलाया है कि यही वो लोग हैं जिन्होंने अपने गाँव जवाष़ी नामी में जुम्आ़ क़ायम किया था। ये दूसरा जुम्आ़ है जो मस्जिदे नबवी के बाद दुनिय-ए-इस्लाम में क़ायम किया गया। इससे स़ाफ़ ज़ाहिर है कि गाँव में भी क़यामे जमाअ़त के साथ क़यामे जुम्आ़ भी जाइज़ है। मगर स़द अफ़सोस कि ग़ाली उ़लम-ए-अह़नाफ़ ने इक़ामते जुम्आ़ फ़िल् क़ुरा की शदीद मुख़ालफ़त की है। मेरे सामने तजल्ली बाबत अप्रैल सन् 1957 ईस्वी का पर्चा रखा हुआ है जिसके पेज नं. पर ह़ज़रत मौलाना सैफ़ुल्लाह स़ाह़ब मुबल्लिग़ देवबन्द का ज़िक्रे ख़ैर लिखा है कि उन्होंने फ़र्माया कि देहात में जो जुम्आ़ पढ़ते हैं मुझसे लिखा लो वो दोज़ख़ी हैं। ये ह़ज़रत मौलाना सैफ़ुल्लाह स़ाह़ब ही का ख़्याल नहीं बल्कि बेशतर अकाबिर देवबन्द ऐसा ही कहते चले आ रहे हैं। इस मसले के बारे में हम किताबुल जुम्आ़ में काफ़ी लिख चुके हैं। मज़ीद ज़रूरत नहीं है। हाँ एक बड़े ज़बरदस्त ह़नफ़ी आ़लिम मुतर्जिम व शारेह़ बुख़ारी शरीफ़ की तक़रीर यहाँ नक़ल कर देते हैं जिससे मा'लूम होगा कि अह़नाफ़ की आ़इदकर्दा शराइते जुम्आ़ का वज़न क्या है और गाँव में जुम्आ़ जाइज़ है या नाजाइज़। इंसाफ़ के लिये ये तक़रीरें दिल पज़ीर काफ़ी है।

एक मुअ़तबर ह़नफ़ी आ़लिम की तक़रीर : जवाष़ी बह़रीन के मुता'ल्लिक़ात से एक गांव है। नमाज़े जुम्आ़ मिष़्ल और नमाज़ों फ़रीज़ा के है जो शुरूत़ और नमाज़ों के वास्ते मिष़्ल त़हारत बदन और जामा और सिवाए उसके मुक़र्रर हैं वही उसके वास्ते हैं, सिवाय मशरूइयत दो ख़ुत्बा के और कोई दलील क़ाबिले इस्तिदलाल ऐसी ष़ाबित नहीं हुई जिससे और नमाज़ों से इसकी मुख़ालफ़त पाई जाए। पस इससे मा'लूम हुआ कि इस नमाज़ के वास्ते शुरूत़ ष़ाबित करने के वास्ते मिष़्ले इमामे आ'ज़म और मिस्र जामेअ़ और अ़ददे मख़्सूस की सनद स़ह़ीह़ पाई नहीं जाती बल्कि उनसे ष़ाबित भी नहीं होता अगर दो शख़्स नमाज़े जुम्आ़ की भी पढ़ लें तो उनके जिम्मा साकित हो जाएगी और अकेले आदमी का जुम्आ़ पढ़ना अबू दाऊद की इस रिवायत के ख़िलाफ़ है। **अल्जुम्अ़ति ह़क़्क़ुन वाजिबुन अ़ला कुल्लि मुस्लिमिन फ़ी जमाअ़तिन** और न आँह़ज़रत (ﷺ) ने सिवाय जमाअ़त के जुम्आ़ पढ़ा है और अ़ददे मख़्सूस की बाबत शौकानी ने नैलुल औत़ार में लिखा है जैसा कि एक शख़्स अकेला

नमाज़ पढ़ने के वास्ते कोई दलील नहीं पाई है। ऐसा ही 80 या 30 या 20 या 9 या 7 आदमियों के वास्ते भी कोई दलील नहीं पाई गई और जिसने कम आदमियों की शर्त क़रार दी है दलील उसकी ये है, इज्माअ और हदीष़ से वुजूब का अदद ष़ाबित है और अदमे षुबूत दलील का वास्ते इश्तिरात़ अददे मख़्सूस़ के और स़िहत नमाज़ दो आदमियों के बाक़ी नमाज़ों में और अदम फ़र्क़ दरम्यान जुम्आ और जमाअत के शैख़ अब्दुल हक़्क़ ने फ़र्माया है। अदद जुम्आ की बाबत कोई दलील ष़ाबित नहीं और ऐसा ही सियूती ने कहा है और जो रिवायतें जिनसे अदद मख़्सूस़ ष़ाबित होता है वो सबकी ज़ईफ़ क़ाबिले इस्तिदलाल के उनसे कोई नहीं और शर्त इमामे आज़म या'नी सुल्तान की जो फ़क़त हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह) से मरवी है दलील उनकी ये है, **अर्बअतुन इलस्सुल्तान व फ़ी रिवायतिन इलल्अइम्मति अल्जुमुअतु वल्हुदूदु वज़्ज़कातु वल्फ़ैउ अख़रजहू इब्नु अबी शैबत** लेकिन ये रिवायत आँहज़रत (ﷺ) से ष़ाबित नहीं है बल्कि ये चन्द ताबइयों का क़ौल है उनमें से हसन बस़री हैं और अब्दुल्लाह बिन महरीज़ और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ और अता और मुस्लिम बिन यसार, पस इससे हुज्जते ख़स़म ष़ाबित नहीं हो सकती और ये रिवायत जो बज़्ज़ार ने जाबिर (रज़ि.) से, तिबरानी ने अबू सईद (रज़ि.) से और बैहक़ी ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से इन लफ़्ज़ों से **इन्नल्लाह इफ़्तरज़ अलैकुममुल्जुमुअत फी शहरिकुम हाज़ा फ़मन तरक़हा व लहू इमामुन आदिलुन औ जाबिरून** निकाली है अज़्अफ़ है बल्कि मौज़ूअ और इब्ने माजा से जो रिवायत में **व लहू इमामुन आदिलुन** का लफ़्ज़ नहीं और यही लफ़्ज़े महल हुज्जत के है। बज़्ज़ार की रिवायत में अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद सहमी है, वक़ीअ ने कहा है कि वो वज़्ज़ाअ है और बुख़ारी ने कहा है कि वो मुंकिरुल हदीष़ है और इब्ने हब्बान ने कहा है इससे हुज्जत पकड़नी दुरुस्त नहीं और बैहक़ी की रिवायत ज़करिया से है उसको स़ालेह और इब्ने अदी और मुग़नी ने किज़्ब और वज़अ से मुत्तहम किया है। (फ़ज़्लुल बारी तर्जुमा स़हीह बुख़ारी तर्जुमा मौलाना फ़ज़्ले अहमद शाये कर्दा शर्फुद्दीन व फ़ख़रुद्दीन हनफ़ी अल मज़हब लाहौर दर सन् 1886 ईस्वी पारा नम्बर 3, पेज नं. 301)

बाब 71 : वफ़्द बनू हनीफ़ा और षुमामा बिन उष़ाल के वाक़ियात का बयान

٧١ - باب وَفْدِ بَنِي حَنِيفَةَ وَحَدِيثِ ثُمَامَةَ بْنِ أُثَالٍ

तशरीह : बनू हनीफ़ा यमामा का एक मशहूर क़बीला है ये वफ़्द सन् 9 हिजरी में आया था। जिसमें ब रिवायत वाक़्दी सत्रह आदमी थे और उनमें मुसैलमा कज़्ज़ाब भी था। षुमामा बिन उष़ाल (रज़ि.) फ़ाज़िल स़हाबा में से हैं, उनका क़िस़्सा बनी हनीफ़ा के क़ासिदों के आने से पहले का है।

4372. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन अबी सईद ने बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने नजद की तरफ़ कुछ सवार भेजे वो क़बीला बनू हनीफ़ा के (सरदारों में से) एक शख़्स षुमामा बिन उष़ाल नामी को पकड़कर लाए और मस्जिदे नबवी के एक सुतून से बाँध दिया। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और पूछा षुमामा तू क्या समझता है? (मैं तेरे साथ क्या करूँगा?) उन्होंने कहा मुहम्मद! मेरे पास ख़ैर है (उसके बावजूद) अगर आप मुझे क़त्ल कर दें तो आप एक शख़्स को क़त्ल करेंगे जो ख़ूनी है, उसने जंग में मुसलमानों को मारा है और अगर आप मुझ पर एहसान करेंगे तो एक ऐसे शख़्स पर एहसान करेंगे जो (एहसान करने वाले

٤٣٧٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْلاً قِبَلَ نَجْدٍ فَجَاءَتْ بِرَجُلٍ مِنْ بَنِي حَنِيفَةَ يُقَالُ لَهُ : ثُمَامَةُ بْنُ أُثَالٍ فَرَبَطُوهُ بِسَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ، فَخَرَجَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا عِنْدَكَ يَا ثُمَامَةُ؟)) فَقَالَ: عِنْدِي خَيْرٌ يَا مُحَمَّدُ إِنْ تَقْتُلْنِي تَقْتُلْ ذَا دَمٍ وَإِنْ تُنْعِمْ

का) शुक्र अदा करता है लेकिन अगर आपको माल मत्लूब है तो जितना चाहें मुझसे माल तलब कर सकते हैं। हुज़ूर अकरम (ﷺ) वहाँ से चले आए, दूसरे दिन आपने फिर पूछा षुमामा अब तू क्या समझता है? उन्होंने कहा, वही जो मैं पहले कह चुका हूँ, कि अगर आपने एहसान किया तो एक ऐसे शख़्स पर एहसान करेंगे जो शुक्र अदा करता है। आँहज़रत (ﷺ) फिर चले गये, तीसरे दिन फिर आपने उनसे पूछा अब तू क्या समझता है षुमामा? उन्होंने कहा कि वही जो मैं आपसे पहले कह चुका हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) से फ़र्माया कि षुमामा को छोड़ दो (रस्सी खोल दी गई) तो वो मस्जिदे नबवी से क़रीब एक बाग़ में गये और ग़ुस्ल करके मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए और पढ़ा, अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह और कहा ऐ मुहम्मद! अल्लाह की क़सम! रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आपके चेहरे से ज़्यादा मेरे लिये बुरा नहीं था लेकिन आज आपके चेहरे से ज़्यादा मुझे कोई चेहरा महबूब नहीं। अल्लाह की क़सम कोई दीन आपके दीन से ज़्यादा मुझे बुरा नहीं लगता था लेकिन आज आपका दीन मुझे सबसे ज़्यादा पसन्दीदा और अज़ीज़ है। अल्लाह की क़सम! कोई शहर आपके शहर से ज़्यादा मुझे बुरा नहीं लगता था लेकिन आज आपका शहर मेरा सबसे ज़्यादा महबूब शहर है। आपके सवारों ने मुझे पकड़ा तो मैं उमरह का इरादा कर चुका था। अब आपका क्या हुक्म है? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें बशारत दी और उमरह अदा करने का हुक्म दिया। जब वो मक्का पहुँचे तो किसी ने कहा कि वो बेदीन हो गये हैं। उन्होंने जवाब दिया कि नहीं बल्कि मैं मुहम्मद (ﷺ) के साथ ईमान ले आया हूँ और अल्लाह की क़सम! अब तुम्हारे यहाँ यमामा से गेहूँ का एक दाना भी उस वक़्त तक नहीं आएगा जब तक नबी करीम (ﷺ) इजाज़त न दे दें। (रज़ि.)

(राजेअ : 462)

تُنْعِمْ عَلَى شَاكِرٍ، وَإِنْ كُنْتَ تُرِيدُ الْمَالَ فَسَلْ مِنْهُ مَا شِئْتَ حَتَّى كَانَ الْغَدُ ثُمَّ قَالَ لَهُ: ((مَا عِنْدَكَ يَا ثُمَامَةُ؟)) فَقَالَ: مَا قُلْتُ لَكَ إِن تُنْعِمْ تُنْعِمْ عَلَى شَاكِرٍ فَتَرَكَهُ، حَتَّى كَانَ بَعْدَ الْغَدِ فَقَالَ: ((مَا عِنْدَكَ يَا ثُمَامَةُ؟)) قَالَ: عِنْدِي مَا قُلْتُ لَكَ: فَقَالَ: ((أَطْلِقُوا ثُمَامَةَ)) فَانْطَلَقَ إِلَى نَخْلٍ قَرِيبٍ مِنَ الْمَسْجِدِ فَاغْتَسَلَ ثُمَّ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، يَا مُحَمَّدُ وَاللهِ مَا كَانَ عَلَى الأَرْضِ وَجْهٌ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ وَجْهِكَ، فَقَدْ أَصْبَحَ وَجْهُكَ أَحَبَّ الْوُجُوهِ إِلَيَّ وَاللهِ مَا كَانَ مِنْ دِينٍ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ دِينِكَ، فَأَصْبَحَ دِينُكَ أَحَبَّ الدِّينِ إِلَيَّ وَاللهِ مَاكَانَ مِنْ بَلَدٍ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ بَلَدِكَ فَأَصْبَحَ بَلَدُكَ أَحَبَّ الْبِلاَدِ إِلَيَّ وَإِنَّ خَيْلَكَ أَخَذَتْنِي وَأَنَا أُرِيدُ الْعُمْرَةَ، فَمَاذَا تَرَى؟ فَبَشَّرَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَرَهُ أَنْ يَعْتَمِرَ فَلَمَّا قَدِمَ مَكَّةَ قَالَ قَائِلٌ : صَبَوْتَ قَالَ: لاَ وَلَكِنْ، أَسْلَمْتُ مَعَ مُحَمَّدٍ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلاَ، وَاللهِ لاَ يَأْتِيكُمْ مِنَ الْيَمَامَةِ حَبَّةُ حِنْطَةٍ حَتَّى يَأْذَنَ بِهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[راجع: ٤٦٢]

तश्रीह : मक्का के काफ़िरों ने षुमामा से पूछा तूने अपना दीन बदल दिया? तो षुमामा ने ये जवाब दिया, मैंने नहीं बदला बल्कि अल्लाह का ताबेदार बन गया हूँ। कहते हैं षुमामा ने यमामा जाकर ये हुक्म दिया कि मक्का के काफ़िरों को अनाज न भेजा जाए। आख़िर मक्का वालों ने मजबूर होकर आँहज़रत (ﷺ) को लिख भेजा कि आप अक़रबा की परवरिश करते हैं, सिलारहमी का हुक्म देते हैं, षुमामा ने हमारा अनाज क्यूँ रोक दिया है। उसी वक़्त आपने षुमामा को इजाज़त दी कि मक्का

अनाज भेजना हो तो ज़रूर भेजो। **व इन तक़्तुल तक़्तुल ज़ा दमिन** का कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है अगर आप मुझको मार डालें तो एक ऐसे शख़्स को मारेंगे जिसका ख़ून बेकार न जाएगा या'नी मेरी क़ौम वाले मेरा बदला ले लेंगे।

हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं **व फ़ी क़िस्सति षुमामत मिनल फ़वाइदि रब्तुल काफ़िर फ़िल मस्जिद वल्मन्नि अलल असीरिल काफ़िर व तअ़ज़ीमि अम्रिल अफ़्वि अनिल मसीइ लिअन्न षुमामत अक़्सम अन्न बुग़्ज़हू इन्क़लब हुब्बन फ़ी साअ़तिन वाहिदतिन लिमा अस्वाहुन्नबिय्यु (ﷺ) इलैहि मिनल अफ़्वि वल्मन्नि बिग़ैरि मुक़ाबिलिन व फ़ीहिल इग्तिसालु इन्दल इस्लामि व अन्नल इहसान युज़ीलुबुग़्ज़ व युष्बितुल हुब्ब व अन्नल काफ़िर इज़ा अराद अ़मल ख़ैरिन षुम्म अस्लम शरअ लहू अंय्यसतमिर्र फ़ी अ़मलि ज़ालिकलख़ैरि व फ़ीहिल मुलातफ़त बिमन यर्जा अ़ला इस्लामिहिल अ़ददल कषीर मिन क़ौमिही व फ़ीहि बअ़षस्सराया इला बिलादिल कुफ़्फ़ारि व असर्र मन वजद मिन्हुम वत्तख़ईर बअ़द ज़ालिक फ़ी क़त्लिही अविल इब्क़ाइ अलैहि** (फ़त्हुल बारी) या'नी षुमामा के क़िस्से में बहुत से फ़वाइद हैं। इससे काफ़िर का मस्जिद में क़ैद करना भी षाबित हुआ (ताकि वो मुसलमानों की नमाज़ वग़ैरह देखकर इस्लाम की रग़बत कर सके) और काफ़िर क़ैदी पर एह्सान करना भी षाबित हुआ और बुराई करने वाले के साथ भलाई करना एक बड़ी नेकी के तौर पर षाबित हुआ। इसलिये कि षुमामा ने नबी करीम (ﷺ) के एह्सान व क़रम को देखकर कहा था कि एक ही घड़ी में उसके दिल का बुग़्ज़ जो आँहज़रत (ﷺ) की तरफ़ से उसके दिल में था, वो मुहब्बत से बदल गया। इससे ये भी षाबित हुआ कि इस्लाम क़ुबूल करते वक़्त ग़ुस्ल करना चाहिये और ये भी कि एह्सान बुग़्ज़ को ज़ाइल (नष्ट) कर देता और मुहब्बत को क़ायम करता है और ये भी षाबित हुआ कि काफ़िर अगर कोई नेक काम करता हुआ मुसलमान हो जाए तो इस्लाम क़ुबूल करने के बाद भी उसे वो नेक अ़मल जारी रखना चाहिये और उससे ये भी षाबित हुआ कि जिस क़ैदी से इस्लाम लाने की उम्मीद हो उसके साथ हर मुम्किन नर्मी बरतना मुनासिब है। ख़ास तौर पर ऐसा आदमी जिसके इस्लाम से उसकी क़ौम के बहुत से लोगों के मुसलमान होने की उम्मीद हो, उसके साथ हर मुम्किन नर्मी बरतना ज़रूरी है। जैसा षुमामा (रज़ि.) के साथ किया गया और उससे कुफ़्फ़ार के इलाक़ों की तरफ़ ब-वक़्ते ज़रूरत लश्कर भेजना भी षाबित हुआ और ये भी कि जो उनमे पाए जाएँ वो क़ैद कर लिये जाएँ बाद में हस्बे मस्लिहत उनके साथ मामला किया जाए।

४٣٧٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ، حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ مُسَيْلِمَةُ الْكَذَّابُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَجَعَلَ يَقُولُ : إِنْ جَعَلَ لِي مُحَمَّدٌ مِنْ بَعْدِهِ تَبِعْتُهُ وَقَدِمَهَا فِي بَشَرٍ كَثِيرٍ مِنْ قَوْمِهِ فَأَقْبَلَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ ثَابِتُ بْنُ قَيْسِ بْنِ شَمَّاسٍ وَفِي يَدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قِطْعَةُ جَرِيدٍ حَتَّى وَقَفَ عَلَى مُسَيْلِمَةَ فِي أَصْحَابِهِ فَقَالَ: لَوْ سَأَلْتَنِي هَذِهِ الْقِطْعَةَ مَا أَعْطَيْتُكَهَا وَلَنْ تَعْدُوَ أَمْرَ اللهِ فِيكَ، وَلَئِنْ أَدْبَرْتَ لَيَعْقِرَنَّكَ اللهُ، وَإِنِّي لأَرَاكَ

4373. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबी हुसैन ने, कहा हमको नाफ़ेअ़ बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के अ़हद में मुसैलमा कज़्ज़ाब आया, इस दावे के साथ कि अगर मुहम्मद (ﷺ) मुझे अपने बाद (अपना नाइब व ख़लीफ़ा) बना दें तो मैं उनकी इत्तिबाअ़ कर लूँ। उसके साथ उसकी क़ौम (बनू हनीफ़ा) का बहुत बड़ा लश्कर था। हुज़ूर (ﷺ) उसकी तरफ़ तब्लीग़ के लिये तशरीफ़ ले गये। आप (ﷺ) के साथ षाबित बिन क़ैस बिन शम्मास (रज़ि.) भी थे। आपके हाथ में खजूर की एक टहनी थी। जहाँ मुसैलमा अपनी फ़ौज के साथ पड़ाव किये हुए था, आप वहीं जाकर ठहर गये और आपने उससे फ़र्माया अगर तू मुझसे ये टहनी मांगेगा तो मैं तुझे ये भी नहीं दूँगा और तू अल्लाह के फ़ैसले से आगे नहीं बढ़ सकता जो तेरे बारे में पहले ही हो चुका है। तूने अगर मेरी इताअ़त से रूगर्दानी की तो अल्लाह तआ़ला तुझे हलाक कर देगा। मेरा तो ख़याल है कि तू वही है जो मुझे ख़्वाब मे दिखाया गया था। अब तेरी बातों का जवाब

मेरी तरफ़ से ष़ाबित बिन क़ैस (रज़ि.) देंगे, फिर आप (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए। (राजेअ़ : 593)

الَّذِي أُرِيتُ فِيهِ مَا رَأَيْتُ، وَهَذَا ثَابِتٌ يُجِيبُكَ عَنِّي ثُمَّ انْصَرَفَ عَنْهُ.

[راجع: ٣٦٢٠]

4374. इब्ने अब्बास (रज़ि.)ने बयान किया कि फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के उस इर्शाद के बारे में पूछा कि, मेरा ख़्याल तो ये है कि तू वही है जो मुझे ख़्वाब में दिखाया गया था, तो अबू हुरैरह (रज़ि.)ने मुझे बताया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं सोया हुआ था कि मैंने अपने हाथों में सोने के दो कंगन देखे, मुझे उन्हें देखकर बड़ा दुख हुआ फिर ख़्वाब ही में मुझ पर वह्य की गई कि मैं उनमें फूँक मार दूँ। चुनाँचे मैंने उनमें फूँका तो वो उड़ गए। मैंने उसकी ता'बीर दो झूठों से ली जो मेरे बाद निकलेंगे। एक अस्वद अ़नसी था और दूसरा मुसैलमा कज़्ज़ाब, जिन दोनों को अल्लाह ने फूँक की तरह ख़त्म कर दिया।

(राजेअ़ : 3621)

٤٣٧٤- قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَسَأَلْتُ عَنْ قَوْلِ رَسُولِ اللهِ ﷺ: ((إِنَّكَ أَرَى الَّذِي أُرِيتُ فِيهِ مَا رَأَيْتُ)) فَأَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ فِي يَدَيَّ سِوَارَيْنِ مِنْ ذَهَبٍ، فَأَهَمَّنِي شَأْنُهُمَا فَأُوحِيَ إِلَيَّ فِي الْمَنَامِ أَنِ انْفُخْهُمَا فَنَفَخْتُهُمَا فَطَارَا، فَأَوَّلْتُهُمَا كَذَّابَيْنِ يَخْرُجَانِ بَعْدِي أَحَدُهُمَا الْعَنْسِيُّ وَالآخَرُ مُسَيْلِمَةُ)). [راجع: ٣٦٢١]

तश्रीह : अस्वद अ़नसी तो आँहज़रत (ﷺ) ही के ज़माने में मारा गया और मुसैलमा कज़्ज़ाब हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में ख़त्म हुआ। सच आख़िर सच होता है और झूठ चन्द रोज़ चलता है फिर मिट जाता है। आज अस्वद और मुसैलमा का एक मानने वाला बाक़ी नहीं और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के ताबेदार क़यामत तक बाक़ी रहेंगे। ईसाई मिशनरियाँ किस क़दर जाँफ़िशानी (जी-तोड़ कोशिश) से काम कर रही हैं फिर वो नाकाम हैं इस्लाम अपनी बरकतों के नतीजे में ख़ुद ब ख़ुद फैलता ही जा रहा है। सच है

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़न्दा ज़न — फूँकों से ये चिराग़ बुझाया न जाएगा

4375. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़्वाब में मेरे पास ज़मीन के ख़ज़ाने लाए गये और मेरे हाथों में सोने के दो कंगन रख दिये गये। ये मुझ पर बड़ा शाक़ गुज़रा। इसके बाद मुझे वह्य की गई कि मैं उनमें फूँक मार दूँ। मैंने फूँका तो वो उड़ गये। मैंने उसकी ता'बीर दो झूठों से ली जिनके दरम्यान में, मैं हूँ। (उन दो झूठों से मुराद हैं) स़ाहिबे स़न्आ (अस्वद अ़नसी) और स़ाहिबे यमामा (मुसैलमा कज़्ज़ाब)

(राजेअ़ : 3621)

٤٣٧٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِخَزَائِنِ الأَرْضِ فَوُضِعَ فِي كَفَّيَّ سِوَارَانِ مِنْ ذَهَبٍ، فَكَبُرَا عَلَيَّ فَأُوحِيَ إِلَيَّ أَنِ انْفُخْهُمَا فَنَفَخْتُهُمَا فَذَهَبَا فَأَوَّلْتُهُمَا الْكَذَّابَيْنِ الَّذَيْنِ أَنَا بَيْنَهُمَا صَاحِبَ صَنْعَاءَ وَصَاحِبَ الْيَمَامَةِ)). [راجع: ٣٦٢١]

4376. हमसे सल्त बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मह्दी बिन मैमून से सुना कि मैंने अबू रजाअ अतारदी (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे हम पहले पत्थर की पूजा करते थे और अगर कोई पत्थर हमें इससे अच्छा मिल जाता तो उसे फेंक देते और उस दूसरे की पूजा शुरू कर देते। अगर हमें पत्थर न मिलता तो मिट्टी का एक टीला बना लेते और बकरी लाकर उस पर दूहते और उसके गिर्द तवाफ़ करते। जब रजब का महीना आ जाता तो हम कहते कि ये महीने नेज़ों को दूर रखने का है। चुनाँचे हमारे पास लोहे से बने हुए जितने भी नेज़े या तीर होते हम रजब के महीने में उन्हें अपने से दूर रखते और उन्हें किसी तरफ़ फेंक देते।

٤٣٧٦- حدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: سَمِعْتُ مَهْدِيَّ بْنَ مَيْمُونٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا رِجَاءٍ الْعُطَارِدِيَّ، يَقُولُ: كُنَّا نَعْبُدُ الْحَجَرَ فَإِذَا وَجَدْنَا حَجَرًا هُوَ أَخْيَرُ مِنْهُ أَلْقَيْنَاهُ وَأَخَذْنَا الآخَرَ، فَإِذَا لَمْ نَجِدْ حَجَرًا جَمَعْنَا جُثْوَةً مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ جِئْنَا بِالشَّاةِ، فَحَلَبْنَاهُ عَلَيْهِ ثُمَّ طُفْنَا بِهِ فَإِذَا دَخَلَ شَهْرُ رَجَبٍ، قُلْنَا مُنَصِّلُ الأَسِنَّةِ فَلاَ نَدَعُ رُمْحًا فِيهِ حَدِيدَةٌ وَلاَ سَهْمًا فِيهِ حَدِيدَةٌ إِلاَّ نَزَعْنَاهُ وَأَلْقَيْنَاهُ شَهْرَ رَجَبٍ.

4377. और मैंने अबू रजाअ से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मब्ऊ़ष हुए तो मैं अभी कम उ़म्र था और अपने घर के ऊँट चराया करता था फिर जब हमने आपकी फ़तहे (मक्का की ख़बर सुनी) तो हम आपको छोड़कर दोज़ख़ में चले गये, या'नी मुसैलमा कज़्ज़ाब के ताबेदार बन गये।

٤٣٧٧- وَسَمِعْتُ أَبَا رَجَاءٍ يَقُولُ: كُنْتُ يَوْمَ بُعِثَ النَّبِيُّ ﷺ، غُلاَمًا أَرْعَى الإِبِلَ عَلَى أَهْلِي فَلَمَّا سَمِعْنَا بِخُرُوجِهِ فَرَرْنَا إِلَى النَّارِ إِلَى مُسَيْلِمَةَ الْكَذَّابِ.

हज़रत अबू रजाअ पहले मुसैलमा कज़्ज़ाब के ताबेदार बन गये थे फिर अल्लाह ने उनको इस्लाम की तौफ़ीक़ दी, मगर उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को नहीं देखा।

बाब 72 : अस्वद अनसी का क़िस्सा

٧٢- باب قِصَّةِ الأَسْوَدِ الْعَنْسِيِّ

4378. हमसे सईद बिन मुहम्मद जर्मी ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा मुझसे उनके वालिद इब्राहीम बिन सअ़द ने, उनसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने उ़बैदा ने, दूसरे मौक़े पर (इब्ने उ़बैदह रज़ि.) के नाम की तसरीह है या'नी अ़ब्दुल्लाह और उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने बयान किया कि हमें मा'लूम है कि जब मुसैलमा कज़्ज़ाब मदीना आया तो बिन्ते हारिष़ के घर उसने क़याम किया, क्योंकि बिन्ते हारिष़ बिन कुरैज़ उसकी बीवी थी। यही अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन आमिर की भी माँ है, फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसके यहाँ तशरीफ़ लाए (तब्लीग़ के लिये) आपके साथ ष़ाबित बिन क़ैस बिन शम्मास (रज़ि.) भी थे। ष़ाबित (रज़ि.) वही हैं जो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के ख़तीब के नाम से मशहूर थे। हुज़ूर अकरम (ﷺ) के हाथ मे एक छड़ी थी। हुज़ूर (ﷺ) उसके पास आकर ठहर गये

٤٣٧٨- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجَرْمِيُّ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ عُبَيْدَةَ بْنِ نَشِيطٍ، وَكَانَ فِي مَوْضِعٍ آخَرَ اسْمُهُ عَبْدُ اللهِ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ قَالَ: بَلَغَنَا أَنَّ مُسَيْلِمَةَ الْكَذَّابَ قَدِمَ الْمَدِينَةَ، فَنَزَلَ فِي دَارِ بِنْتِ الْحَارِثِ وَكَانَ تَحْتَهُ بِنْتُ الْحَارِثِ بْنِ كُرَيْزٍ، وَهْيَ أُمُّ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَامِرٍ، فَأَتَاهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَعَهُ ثَابِتُ بْنُ قَيْسِ بْنِ شَمَّاسٍ، وَهُوَ

الَّذِي يُقَالُ لَهُ خَطِيبُ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَفِي يَدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَضِيبٌ، فَوَقَفَ عَلَيْهِ فَكَلَّمَهُ فَقَالَ لَهُ مُسَيْلِمَةُ : إِنْ شِئْتَ خَلَّيْتَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الأَمْرِ ثُمَّ جَعَلْتَهُ لَنَا بَعْدَكَ .فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ سَأَلْتَنِي هَذَا الْقَضِيبَ مَا أَعْطَيْتُكَهُ وَإِنِّي لأَرَاكَ الَّذِي أُرِيتُ فِيهِ مَا أُرِيتُ وَهَذَا ثَابِتُ بْنُ قَيْسٍ وَسَيُجِيبُكَ عَنِّي)) فَانْصَرَفَ النَّبِيُّ ﷺ.

[راجع: ٣٦٢٠]

और उससे बातचीत की, इस्लाम की दा'वत दी। मुसैलमा ने कहा कि मैं इस शर्त पर मुसलमान होता हूँ कि आपके बाद मुझको हुकूमत मिले। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तुम मुझसे ये छड़ी मांगोगे तो मैं तुम्हें ये भी नहीं दे सकता और मैं समझता हूँ कि तुम वही हो जो मुझे ख़्वाब में दिखाए गये थे। ये ष़ाबित बिन क़ैस (रज़ि.) हैं और मेरी तरफ़ से तुम्हारी बातों का यही जवाब देंगे, फिर हुज़ूर (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए।

(राजेअ : 3620)

٤٣٧٩- قَالَ عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ: سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ عَنْ رُؤْيَا رَسُولَ اللهِ ﷺ الَّتِي ذَكَرَ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ذُكِرَ لِي أَنَّ رَسُولَ اللهِ . قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُرِيتُ أَنَّهُ وُضِعَ فِي يَدَيَّ سِوَارَانِ مِنْ ذَهَبٍ فَفَظِعْتُهُمَا وَكَرِهْتُهُمَا، فَأُذِنَ لِي فَنَفَخْتُهُمَا فَطَارَا فَأَوَّلْتُهُمَا كَذَّابَيْنِ يَخْرُجَانِ)) فَقَالَ عُبَيْدُ اللهِ: أَحَدُهُمَا الْعَنْسِيُّ الَّذِي قَتَلَهُ فَيْرُوزُ بِالْيَمَنِ، وَالآخَرُ مُسَيْلِمَةُ الْكَذَّابُ. [راجع: ٣٦٢١]

4379. उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से हुज़ूर अकरम (ﷺ) के उस ख़्वाब के बारे में पूछा जिसका ज़िक्र आप (ﷺ) ने फ़र्माया था तो उन्होंने बताया कि मुझे मा'लूम हुआ है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था, मुझे ख़्वाब मे दिखाया गया था कि मेरे हाथों पर सोने के दो कंगन रख दिये गये हैं। मैं उससे बहुत घबराया और उन कंगनों से मुझे तश्वीश (फ़िक्र) हुई, फिर मुझे हुक्म हुआ और मैंने उन्हें फूँक मारी तो दोनों कंगन उड़ गये। मैंने उसकी ता'बीर दो झूठों से ली जो ख़ुरूज करने वाले हैं। उ़बैदुल्लाह ने बयान किया कि उनमें से एक अस्वद अ़नसी था, जिसे फ़ैरूज़ ने यमन में क़त्ल किया और दूसरा मुसैलमा कज़्ज़ाब था। (राजेअ : 3621)

तश्रीह : मुसैलमा कज़्ज़ाब की बीवी का नाम कीसा बिन्ते ह़ारिष़ बिन कुरैज़ था। मुसैलमा के क़त्ल के बाद अ़ब्दुल्लाह बिन आमिर ने उनसे निकाह़ कर लिया था। उसके पेट से अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर पैदा हुए। रावी ने ग़लती से एक अ़ब्दुल्लाह का लफ़्ज़ छोड़ दिया लेकिन हमने तर्जुमा में बढ़ा दिया। कुछ नुस्ख़ों मे यूँ है कि वो अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर की औलाद की माँ थी। मुसैलमा कज़्ज़ाब को वह़्शी (रज़ि.) ने क़त्ल किया और अस्वद अ़नसी को यमन में फ़ैरूज़ ने मार डाला। अस्वद के क़त्ल की ख़बर वह्य से आँह़ज़रत (ﷺ) को वफ़ात से एक दिन पहले हो गई थी जो आप (ﷺ) ने अपने स़ह़ाबा (रज़ि.) को सुना दी थी। बाद में उसके आदमियों के ज़रिये से ये ख़बर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िलाफ़त के ज़माने में आई। ये अस्वद स़न्आअ (यमन) में ज़ाहिर हुआ था और नुबुव्वत का दा'वा करके आँह़ज़रत (ﷺ) के आमिल मुहाजिर बिन उमय्या पर ग़ालिब आ गया था। कुछ ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) की तरफ़ से बाज़ान वहाँ का आमिल था तो अस्वद ने उसकी बीवी मरज़बाना से निकाह़ कर लिया और यमन का ह़ाकिम बन बैठा। आख़िर फ़ैरूज़ एक रोज़ रात में नक़ब लगाकर उसके घर मे घुस गये। दरवाज़े पर एक ह़ज़ार चौकीदारों का पहरा था इसलिये नक़ब लगाया गया। आख़िर फ़ैरूज़ ने उसका सर काट लिया और बाज़ान की औरत को माल व अस्बाब समेत निकाल लाए। इसी रात को बाज़ान की औ़रत ने उसको ख़ूब

शराब पिलाई थी और वो नशे में मदहोश था। अल्लाह ने इस तरह से अस्वद अनसी के फ़ित्ने को ख़त्म कराया, **फ़क़ुतिआ दाबिरुल क़ौमिल्लज़ीन ज़लमू वल हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन** (अल् अन्आम : 45) ये षाबित बिन कैस अंसारी (रज़ि.) ख़ज़रजी हैं। ग़ज़्व-ए-उहुद और बाद के सब ग़ज़्वात में शरीक हुए। अंसार के बड़े उलमा में से थे। रसूले करीम (ﷺ) के ख़तीब थे। आपने उनको जन्नत की बशारत दी। सन् 12 हिजरी में यमामा की जंग में शहीद हुए।

बाब 73 : नजरान के नसारा का क़िस्सा

٧٣- باب قِصَّةِ أَهْلِ نَجْرَانَ

नजरान एक बड़ा शहर था मक्का से सात मंज़िल वहाँ नसारा आबाद थे।

4380. मुझसे अब्बास बिन हुसैन ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे सिला बिन ज़फ़र ने और उनसे हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नजरान के दो सरदार आक़िब और सय्यद, रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुबाहला करने के लिये आए थे लेकिन एक ने अपने दूसरे साथी से कहा कि ऐसा न करो क्योंकि अल्लाह की क़सम! अगर ये नबी हुए और फिर भी हमने उनसे मुबाहला किया तो हम पनप नहीं सकते और न हमारे बाद हमारी नस्लें रह सकेंगी, फिर उन दोनों ने आँहुज़ूर (ﷺ) से कहा कि जो कुछ आप मांगें हम जिज़्या देने के लिये तैयार हैं। आप हमारे साथ कोई अमीन भेज दीजिए, जो भी आदमी हमारे साथ भेजें वो अमीन होना ज़रूरी है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारे साथ एक ऐसा आदमी भेजूँगा जो अमानतदार हो बल्कि पूरा पूरा अमानतदार होगा। सहाबा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के मुंतज़िर थे, आप (ﷺ) ने फ़र्माया अबू उबैदह बिन अल जर्राह! उठो, जब वो खड़े हुए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये इस उम्मत के अमीन हैं। (राजेअ : 3745)

٤٣٨٠- حَدَّثَنِي عَبَّاسُ بْنُ الْحُسَيْنِ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ صِلَةَ بْنِ زُفَرَ، عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: جَاءَ الْعَاقِبُ وَالسَّيِّدُ صَاحِبَا نَجْرَانَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ يُرِيدَانِ أَنْ يُلاَعِنَاهُ قَالَ: فَقَالَ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ لاَ تَفْعَلْ، فَوَ اللهِ لَئِنْ كَانَ نَبِيًّا فَلاَعَنَّا لاَ نُفْلِحُ نَحْنُ وَلاَ عَقِبُنَا مِنْ بَعْدِنَا، قَالاَ : إِنَّا نُعْطِيكَ مَا سَأَلْتَنَا وَابْعَثْ مَعَنَا رَجُلاً أَمِينًا، وَلاَ تَبْعَثْ مَعَنَا إِلاَّ أَمِينًا، فَقَالَ: ((لأَبْعَثَنَّ مَعَكُمْ رَجُلاً أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ)) فَاسْتَشْرَفَ لَهُ أَصْحَابُ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((قُمْ يَا أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ)) فَلَمَّا قَامَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَذَا أَمِينُ هَذِهِ الأُمَّةِ)).

[راجع: ٣٧٤٥]

तश्रीह : हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) फ़र्माते हैं, व फ़ी क़िस्सति अहलि नजरान मिनल फ़वाइदि अन्न इक़रारल काफ़िरि बिन्नुबुव्वति फ़ला यदख़ुलु फ़िलइस्लामि हत्ता यल्तज़ि अहकामल इस्लाम व फ़ीहा जवाज़ुन मुजादलतु अहलिल किताबि व क़द तजिबु इज़ा तअय्यनत मस्लहतुन व फ़ीहा मश्रूइय्यतु मुबाहलतिल मुख़ालिफ़ि इज़ा असर्र बअद ज़ुहूरिल हुज्जति व क़द दआ इब्नु अब्बास इला ज़ालिक षुम्मल औज़ाई व वक़अ ज़ालिक लिजमाअतिम्मिनल उला औ मिम्मा उरिफ़ बित्तज्रिबति अन्न मन बाहल व कान मुब्तिलन रहुन तम्ज़ी अलैहि सुन्नतुन मिन यौमिल मुबाहलति व वक़अ ली ज़ालिक मअ शख़्सिन लिबअज़िल मुलाहदति फ़लम यक़ुम बअदहा ग़ैर शहरैनि व फ़ीहा मुसालहतुन अहलिज़्ज़िम्मति अला मा यराहुल इमामु मिन असनाफ़िल मालि व फ़ीहा बअषुल इमामि अर्रजुलल आलिमल अमीन इला अहलिज़्ज़िम्मति फ़ी मस्लहतिल इस्लामि व फ़ीहा मन्क़बतुन ज़ाहिरतुन लिअबी उबैदतब्नल जर्राह क़िस्सतु अबी उबैदत लिअन्न अब उबैदत तवज्जह मअहुम फकबज़ मालस्सुल्हि व रजअ व अलिय्युन

अर्सलहुन्नबिय्यु (ﷺ) बअ़द ज़ालिक यब्ख़िजु मिन्हुम मस्तहक़्क़ अ़लैहिम मिनल जिज़्यति व याख़ुज़ु मिम्मन अस्लम मिन्हुम मा वजब अ़लैहि मिनस्सदक़ति वल्लाहु आलमु (फ़त्हुल बारी) ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़ज़र (रह) फ़र्माते हैं कि अहले नजरान के क़िस्से में बहुत से फ़वाइद हैं। जिनमें ये कि काफ़िर अगर नुबुव्वत का इक़रार करे तो ये इसको इस्लाम में दाख़िल नहीं करेगा जब तक तमाम अह़कामे इस्लाम का इल्तिज़ाम न करे और ये कि अहले किताब से मज़हबी उमूर में मुनाज़रा करना जाइज़ है बल्कि कुछ दफ़ा वाजिब, जब उसमें कोई मस्लिहत मद्देनज़र हो और ये कि मुख़ालिफ़ से मुबाहिला करना भी मश्रूअ़ है जब वो दलाइल के ज़ुहूर के बाद भी मुबाहिला का क़स्द करे। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने भी एक ह़रीफ़ को मुबाहला की दा'वत दी थी और इमाम औज़ाई को भी एक जमाअ़ते उ़लमा के साथ मुबाहिला का मौक़ा पेश आया था और ये तजुर्बा किया गया है कि मुबाहिला करने वाला बातिल फ़रीक़ एक साल के अंदर अंदर अ़ज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हो जाता है और मेरे (अ़ल्लामा इब्ने ह़जर के) साथ भी एक मुल्ह़िद ने मुबाहिला किया वो दो माह के अंदर ही हलाक हो गया और ये कि उससे इमाम के लिये मस्लिह़तन इख़्तियार ष़ाबित हुआ, वो ज़िम्मी लोगों के ऊपर माल की क़िस्मों में से ह़स्बे मस्लिह़त जिज़्या लगाए और ये कि इमाम ज़िम्मियों के पास जिस आदमी को बतौर तह़सीलदार मुक़र्रर करे वो आ़लिम और अमानतदार हो और उसमें ह़ज़रत अबू उ़बैदह इब्ने जर्राह़ (रज़ि.) की मनक़बत भी है और इब्ने इस्ह़ाक़ ने ज़िक्र किया है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नजरान वालों के यहाँ तह़सीले ज़कात और अम्वाले जिज़्या के लिये ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को भेजा था। ये मौक़ा दूसरा है। ह़ज़रत अबू उ़बैदह (रज़ि.) को उनके साथ सिर्फ़ सुलह़नामा के वक़्त तै शुदा रक़म की वसूली के लिये भेजा था, बाद में अ़ली (रज़ि.) को उनसे मुक़र्ररा जिज़्या सालाना वसूल करने और जो मुसलमान हो गये थे, उनसे अम्वाले ज़कात ह़ासिल करने के लिये भेजा था।

यही नजरानी थे जिनके लिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने मस्जिदे नबवी का आधा ह़िस्सा उनकी अपने मज़हब के मुताबिक़ इबादत के लिये ख़ाली फ़र्मा दिया था। रसूले करीम (ﷺ) की अहले मज़ाहिब के साथ ये रवादारी हमेशा सुनहरी ह़र्फ़ों से लिखी जाती रहेगी। सद अफ़सोस कि आज ख़ुद इस्लामी फ़िर्क़ों में ये रवादारी मफ़्क़ूद है। एक सुन्नी शिया मस्जिद में अजनबी निगाहों से देखा जाता है। एक वहाबी को देखकर एक बरेलवी की आँखें लाल हो जाती हैं। फ़लब्बैक अ़लल इस्लामि मन काना।

4381. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू इस्ह़ाक़ से सुना, उन्होंने सिला बिन ज़फ़र से और उनसे अबू ह़ुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने बयान किया कि अहले नज्रान नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि हमारे साथ कोई अमानतदार आदमी भेजिए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारे साथ ऐसा आदमी भेजूँगा जो हर ह़ैष़ियत से अमानतदार होगा। स़ह़ाबा (रज़ि.) मुंतज़िर थे, आख़िर ह़ुज़ूर (ﷺ) ने अबू उ़बैदह इब्नुल जर्राह़ (रज़ि.) को भेजा। (राजेअ़ : 3745)

٤٣٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ عَنْ صِلَةَ بْنِ زُفَرَ، عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ أَهْلُ نَجْرَانَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالُوا: ابْعَثْ لَنَا رَجُلاً أَمِينًا فَقَالَ: ((لأَبْعَثَنَّ إِلَيْكُمْ رَجُلاً أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ)) فَاسْتَشْرَفَ لَهُ النَّاسُ فَبَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ.
[راجع: ٣٧٤٥]

तश्रीह : ह़ज़रत अबू उ़बैदा आमिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जर्राह़ (रज़ि.) फ़ह्री क़ुरैशी हैं। अ़शर-ए-मुबश्शरा में से हैं और इस उम्मत के अमीन कहलाते हैं। ह़ज़रत उ़ष्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) के साथ इस्लाम लाए। ह़ब्शा की त़रफ़ दूसरी बार हिजरत की। तमाम ग़ज़्वात में ह़ाज़िर रहे। जंगे उहुद में उन्होंने ख़ुद की उन दो कड़ियों को जो आँह़ज़रत (ﷺ) के चेहरे मुबारक में घुस गई थीं खींचा था जिनकी वजह से आपके आगे के दांत शहीद हो गये थे। ये लम्बे क़द वाले ख़ूबसूरत चेहरे वाले, हल्की दाढ़ी वाले थे। त़ाऊ़ने अ़म्वास में 18 हिजरी में बमुक़ामे उर्दुन (जॉर्डन) इंतिक़ाल हुआ और बैसान में दफ़न हुए। उ़म्र 58 साल की थी। उनका नसबनामा रसूले करीम (ﷺ) से फ़ह्र बिन मालिक पर मिल जाता है। (रज़ि.)

4382. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर उम्मत में अमीन (अमानतदार) होते हैं और इस उम्मत के अमीन अबू उबैदह इब्नुल जर्राह (रज़ि.) हैं। (राजेअ : 6744)

٤٣٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينٌ، وَأَمِينُ هَذِهِ الأُمَّةِ، أَبُو عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ)). [راجع: ٦٧٤٤]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ने उनको इस्लाम की दा'वत दी, सुनाया फिर उन्होंने नहीं माना आख़िर आपने फ़र्माया कि आओ हम तुम मुबाहिला कर लें या'नी दोनों फ़रीक़ मिलकर अल्लाह से दुआ करें कि या अल्लाह! जो हममें नाहक़ पर हो उस पर अपना अज़ाब नाज़िल कर। वो मुबाहिला के लिये भी तैयार नहीं हुए बल्कि इस शर्त पर सुलह कर ली कि वो हज़ार जोड़े कपड़े रजब मे और हज़ार जोड़े सफ़र में दिया करेंगे और हर जोड़े के साथ एक औक़िया चाँदी भी देंगे। क़ुर्आन की आयत इन ही के बारे में नाज़िल हुई थी।

बाब 74 : ओमान और बहरीन का क़िस्सा

٧٤- باب قِصَّةِ عُمَانَ وَالْبَحْرَيْنِ

ओमान और बहरीन दो शहरों के नाम हैं।

4383. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया कि उन्होंने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि जब मेरे पास बहरीन से रुपया आएगा तो मैं तुम्हें इतना इतना तीन लप भरकर रुपया दूँगा, लेकिन बहरीन से जिस वक़्त रुपया आया तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की वफ़ात हो चुकी थी। इसलिये वो रुपया अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास आया और उन्होंने ऐलान करवा दिया कि अगर किसी का हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर क़र्ज़ या किसी से हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का कोई वा'दा हो तो वो मेरे पास आए। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उनके यहाँ आ गया और उन्हें बताया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि अगर बहरीन से मेरे पास रुपया आया तो मैं तुम्हें इतना-इतना तीन लप भरकर दूँगा। जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने उनसे मुलाक़ात की और उनसे उसके बारे में कहा लेकिन उन्होंने इस बार मुझे नहीं दिया। मैं फिर उनके यहाँ आ गया इस बार भी उन्होंने नहीं दिया। मैं तीसरी बार गया, इस बार भी उन्होंने नहीं दिया। इसलिये मैंने उनसे कहा कि मैं आपके यहाँ एक बार आया। आपने नहीं दिया, फिर आया और आपने नहीं दिया। फिर तीसरी बार आया हूँ और आप इस बार भी नहीं दे रहे हैं। अगर आपको

٤٣٨٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ سَمِعَ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ قَدْ جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ لَقَدْ أَعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا ثَلاَثًا)). فَلَمْ يَقْدَمْ مَالُ الْبَحْرَيْنِ حَتَّى قُبِضَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَلَمَّا قَدِمَ عَلَى أَبِي بَكْرٍ أَمَرَ مُنَادِيًا فَنَادَى مَنْ كَانَ لَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ دَيْنٌ أَوْ عِدَةٌ فَلْيَأْتِنِي قَالَ جَابِرٌ: فَجِئْتُ أَبَا بَكْرٍ فَأَخْبَرْتُهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ جَاءَ مَالُ الْبَحْرَيْنِ أَعْطَيْتُكَ هَكَذَا وَهَكَذَا ثَلاَثًا)) قَالَ: فَأَعْطَانِي قَالَ جَابِرٌ : فَلَقِيتُ أَبَا بَكْرٍ بَعْدَ ذَلِكَ فَسَأَلْتُهُ، فَلَمْ يُعْطِنِي ثُمَّ أَتَيْتُهُ فَلَمْ يُعْطِنِي، ثُمَّ أَتَيْتُهُ الثَّالِثَةَ، فَلَمْ يُعْطِنِي فَقُلْتُ لَهُ قَدْ أَتَيْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، ثُمَّ أَتَيْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، ثُمَّ أَتَيْتُكَ فَلَمْ تُعْطِنِي، فَإِمَّا أَنْ تُعْطِيَنِي وَإِمَّا

انْ تَبْخَلَ عَنِّي، فَقَالَ: أَقُلْتَ تَبْخَلُ عَنِّي وَأَيُّ دَاءٍ أَدْوَأُ مِنَ الْبُخْلِ قَالَهَا ثَلاَثًا، مَا مَنَعْتُكَ مِنْ مَرَّةٍ إِلاَّ وَأَنَا أُرِيدُ انْ أُعْطِيَكَ. وَعَنْ عَمْرٍو عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: جِئْتُهُ فَقَالَ لِي أَبُوبَكْرٍ عُدَّهَا فَعَدَدْتُهَا فَوَجَدْتُهَا خَمْسَمِائَةٍ فَقَالَ: خُذْ مِثْلَهَا مَرَّتَيْنِ. [راجع: ٢٢٩٦]

मुझे देना है तो दे दीजिए वरना साफ़ कह दीजिए कि मेरा दिल देने को नहीं चाहता, मैं बख़ील हूँ। इस पर अबूबक्र (रजि) ने फ़र्माया तुमने कहा है कि मेरे मामले में बुख़्ल कर लो, भला बुख़्ल से बढ़कर और क्या ऐब हो सकता है। तीन बार उन्होंने ये बात दोहराई और कहा मैंने तुम्हें जब भी टाला तो मेरा इरादा यही था कि बहरहाल तुम्हें देना है। और इसी सनद से अम्र बिन दीनार से रिवायत है, उनसे मुहम्मद बिन अली बाक़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं हाज़िर हुआ तो अबूबक्र (रजि) ने मुझे एक लप भरकर रुपया दिया और कहा कि इसे गिन लो। मैंने गिना तो 500 था। फ़र्माया कि दो बार इतना ही और ले लो। (राजेअ : 2296)

हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) के फ़र्माने का ये मतलब था कि मैं अपने हिस्से या'नी ख़ुमुस में से देना चाहता हूँ। ख़ुमुस ख़ास ख़लीफ़-ए-इस्लाम को मिलता है फिर वो मुख़्तार हैं जिसे चाहें दें।

٧٥- باب قُدُومِ الأَشْعَرِيِّينَ وَأَهْلِ الْيَمَنِ

बाब 75 : क़बीला अश्अर और अहले यमन की आमद का बयान

وَقَالَ أَبُو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((هُمْ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُمْ)).

(ये लोग वफ़्द की सूरत में 7 हिजरी में ख़ैबर के फ़तह होने पर हाज़िरे ख़िदमत हुए थे) और अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया कि अशअरी लोग मुझसे हैं और मैं उनमें से हूँ

٤٣٨٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ قَالاَ : حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ : قَدِمْتُ أَنَا وَأَخِي مِنَ الْيَمَنِ فَمَكَثْنَا حِينًا مَا نُرَى ابْنَ مَسْعُودٍ وَأُمَّهُ إِلاَّ مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ مِنْ كَثْرَةِ دُخُولِهِمْ وَلُزُومِهِمْ لَهُ. [راجع: ٣٧٦٣]

4384. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद और इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन ज़करिया बिन अबी ज़ायदा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू इस्हाक़ अम्र बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने कि मैं और मेरे भाई अबू रहम या अबू बुर्दा यमन से आए तो हम (इब्तिदा में) बहुत दिनों तक ये समझते रहे कि इब्ने मसऊद (रज़ि.) और उनकी वालिदा उम्मे अब्दुल्लाह (रज़ि.) दोनों आँहज़रत (ﷺ) के अहले बैत में से हैं क्योंकि ये आँहज़रत (ﷺ) के घर में रात दिन बहुत आया जाया करते थे और हर वक़्त हुज़ूर (ﷺ) के साथ रहा करते थे। (राजेअ : 3763)

हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) दूसरे यमन वालों के साथ पहले हब्श पहुँच गये थे। वहाँ से जा'फ़र बिन अबी तालिब (रज़ि.) के साथ होकर ख़िदमते नबवी में तशरीफ़ लाए।

4385. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुस्सलाम बिन हर्ब ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे ज़हदम ने कि जब अबू मूसा (रज़ि.) (कूफ़ा के अमीर बनकर उ़स्मान रज़ि. के अहदे ख़िलाफ़त में) आए तो उस क़बील-ए-जरम का उन्होंने बहुत ऐज़ाज़ किया। ज़हदम कहते हैं हम आपकी ख़िदमत में बैठे हुए थे और वो मुर्ग़ का नाश्ता कर रहे थे। हाज़िरीन में एक और साहब भी बैठे हुए थे। अबू मूसा (रज़ि.) ने उन्हें भी खाने पर बुलाया तो उन साहब ने कहा कि जबसे मैंने मुर्ग़ियों को कुछ (गंदी) चीज़ें खाते देखा है, उसी वक़्त से मुझे इसके गोश्त से घिन आने लगी है। अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा कि आओ भई मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इसका गोश्त खाते देखा है। उन साहब ने कहा लेकिन मैंने इसका गोश्त न खाने की क़सम खा रखी है। उन्होंने कहा तुम आ तो जाओ मैं तुम्हें तुम्हारी क़सम के बारे में भी इलाज बता दूँगा। हम क़बीला अशअ़र के चन्द लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपने (ग़ज़्व-ए-तबूक़ के लिये) जानवर मांगे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि सवारी नहीं है। हमने फिर आपसे मांगा तो आपने इस बार क़सम खाई कि आप हमको सवारी नहीं देंगे लेकिन अभी कुछ ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि ग़नीमत में कुछ ऊँट आए और आँहुज़ूर (ﷺ) ने उनमें से पाँच ऊँट हमको दिलाए। जब हमने उन्हें ले लिया तो फिर हमने कहा कि ये तो हमने आँहज़रत (ﷺ) को धोखा दिया। आपको ग़फ़लत में रखा, क़सम याद नहीं दिलाई। ऐसी हालत में हमारी भलाई कभी नहीं होगी। आख़िर मैं आपके पास आया और मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने तो क़सम खा ली थी कि आप हमको सवारी नहीं देंगे फिर आपने सवारी दे दी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ठीक है लेकिन जब भी मैं कोई क़सम खाता हूँ और फिर उसके सिवा दूसरी सूरत मुझे इससे बेहतर नज़र आती है तो मैं वही करता हूँ जो बेहतर होता है (और क़सम का कफ़्फ़ारा दे देता हूँ)। (राजेअ : 3133)

٤٣٨٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلاَمِ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ زَهْدَمٍ قَالَ : لَمَّا قَدِمَ أَبُو مُوسَى أَكْرَمَ هَذَا الْحَيَّ مِنْ جَرْمٍ وَإِنَّا لَجُلُوسٌ عِنْدَهُ، وَهُوَ يَتَغَدَّى دَجَاجًا وَفِي الْقَوْمِ رَجُلٌ جَالِسٌ فَدَعَاهُ إِلَى الْغَدَاءِ، فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُهُ يَأْكُلُ شَيْئًا فَقَذِرْتُهُ، فَقَالَ: هَلُمَّ فَإِنِّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَأْكُلُهُ فَقَالَ: إِنِّي حَلَفْتُ لاَ آكُلُهُ، فَقَالَ : هَلُمَّ أُخْبِرْكَ عَنْ يَمِينِكَ، إِنَّا أَتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ نَفَرٌ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ فَاسْتَحْمَلْنَاهُ فَأَبَى أَنْ يَحْمِلَنَا فَاسْتَحْمَلْنَاهُ فَحَلَفَ أَنْ لاَ يَحْمِلَنَا ثُمَّ لَمْ يَلْبَثِ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ أُتِيَ بِنَهْبِ إِبِلٍ فَأَمَرَ لَنَا بِخَمْسِ ذَوْدٍ فَلَمَّا قَبَضْنَاهَا قُلْنَا تَغَفَّلْنَا النَّبِيَّ ﷺ يَمِينَهُ لاَ نُفْلِحُ بَعْدَهَا فَأَتَيْتُهُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّكَ حَلَفْتَ أَنْ لاَ تَحْمِلَنَا وَقَدْ حَمَلْتَنَا فَقَالَ: ((أَجَلْ وَلَكِنْ لاَ أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلاَّ أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ مِنْهَا)). [راجع: ٣١٣٣]

4386. मुझे अम्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू आ़सिम नबील ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरीने बयान किया, कहा हमसे अबू स़ख़्रह जामेअ़ बिन शद्दाद ने बयान किया, हमसे स़फ़्वान बिन मुह़रिज़ माज़िनी ने बयान किया, कहा हमसे इमरान बिन हु़सैन (रज़ि.) ने बयान किया कि बनू तमीम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आपने फ़र्माया ऐ बनू तमीम! बशारत क़ुबूल करो। उन्होंने कहा कि जब आपने हमें बशारत दी है तो कुछ रुपये भी इनायत कर दीजिए। इस पर हुज़ूर (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल गया, फिर यमन के कुछ अशअ़री लोग आए, आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि बनू तमीम ने बशारत क़ुबूल नहीं की, यमन वालों! तुम क़ुबूल कर लो। वो बोले कि हमने क़ुबूल की या रसूलल्लाह! (राजेअ़ : 3190)

٤٣٨٦- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَخْرَةَ جَامِعُ بْنُ شَدَّادٍ، حَدَّثَنَا صَفْوَانُ بْنُ مُحْرِزٍ الْمَازِنِيُّ: حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ، قَالَ: جَاءَتْ بَنُو تَمِيمٍ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَبْشِرُوا يَا بَنِي تَمِيمٍ)) فَقَالُوا: أَمَّا إِذَا بَشَّرْتَنَا فَأَعْطِنَا، فَتَغَيَّرَ وَجْهُ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَجَاءَ نَاسٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اقْبَلُوا الْبُشْرَى إِذْ لَمْ يَقْبَلْهَا بَنُو تَمِيمٍ)) قَالُوا : قَدْ قَبِلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ. [راجع: ٣١٩٠]

ये ह़दीष़ ऊपर गुज़र चुकी है। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर कहते हैं कि उसमें ये इश्काल पैदा होता हैं कि बनू तमीम के लोग तो 9 हिजरी में आए थे और अशअ़री इससे पहले 7 हिजरी में, इसका जवाब यूँ दिया है कि कुछ अशअ़री लोग बनू तमीम के बाद भी आए होंगे।

4387. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद जुअ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने और उनसे अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ईमान तो इधर है और आपने अपने हाथ से यमन की त़रफ़ इशारा किया और बेरह़मी और सख़्त दिली ऊँट की दुम के पीछे-पीछे चलने वालों में है, जिधर से शैत़ान के दोनों सींग निकलते हैं (या'नी मश्रिक़) क़बीला रबीआ़ और मुज़र के लोगों में। (राजेअ़ : 4302)

٤٣٨٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنَ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((الإِيـمَانُ هَهُنَا - وَأَشَارَ بِيَدِهِ إِلَى الْيَمَنِ - وَالْجَفَاءُ وَغِلَظُ الْقُلُوبِ فِي الْفَدَّادِينَ عِنْدَ أُصُولِ أَذْنَابِ الإِبِلِ مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنَا الشَّيْطَانِ، رَبِيعَةَ، وَمُضَرَ)). [راجع: ٤٣٠٢]

तुलूए शम्स के वक़्त सूरज की किरणें दाएँ बाएँ फैल जाती हैं, मुश्रिकीन उस वक़्त सूरज की पूजा करते हैं जो शैत़ानी काम है, ह़दीष़ में इशारा उसी त़रफ़ है।

4388. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे सुलैमान ने, उनसे ज़क्वान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारे यहाँ अहले यमन आ गये हैं, उनके दिल के पर्दे बारीक, दिल नरम होते हैं, ईमान यमन वालों का है और ह़िक्मत भी यमन की अच्छी है। और फ़ख़्र तकब्बुर ऊँट

٤٣٨٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ ذَكْوَانَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَتَاكُمْ أَهْلُ الْيَمَنِ هُمْ أَرَقُّ أَفْئِدَةً وَأَلْيَنُ قُلُوبًا، الإِيـمَانُ

वालों में होता है और इत्मीनान और सहूलत बकरी वालों में। और गुन्दर ने बयान किया इस ह़दीष़ को शुअ़बा से, उनसे सुलैमान ने, उन्होंने ज़क्वान से सुना, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से औरउन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ़ : 3301)

يَمَانِيَةٌ، وَالْفَخْرُ وَالْخُيَلاَءُ فِي أَصْحَابِ الإِبِلِ، وَالسَّكِينَةُ وَالْوَقَارُ فِي أَهْلِ الْغَنَمِ)). وَقَالَ غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ سَمِعْتُ ذَكْوَانَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٣٣٠١]

गुन्दर की रिवायत को इमाम अह़मद ने वस्ल किया है, इस सनद के बयान करने से ग़र्ज़ ये है कि आ'मश का सिमाअ़ ज़क्वान से बस़राह़त मा'लूम हो जाए।

4389. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे इब्ने बिलाल ने, उनसे ष़ौर बिन ज़ैद ने, उनसे अबुल ग़ैष़ (सालिम) ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ईमान यमन का है और फ़ित्ना (दीन की ख़राबी) उधर से है और उधर ही से शैत़ान के सर का नमूदार होगा।

(राजेअ़ : 3301)

٤٣٨٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي أَخِي، عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((الإِيمَانُ يَمَانٍ، وَالْفِتْنَةُ هَهُنَا هَهُنَا يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ)).

[راجع: ٣٣٠١]

4390. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हारे यहाँ अहले यमन आए हैं जो नरम दिल रफ़ीक़ुल क़ल्ब हैं, दीन की समझ यमन वालों है में और ह़िक्मत भी यमन की है। (राजेअ़ : 3301)

٤٣٩٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَتَاكُمْ أَهْلُ الْيَمَنِ أَضْعَفُ قُلُوبًا، وَأَرَقُّ أَفْئِدَةً، الْفِقْهُ يَمَانٍ، وَالْحِكْمَةُ يَمَانِيَةٌ)).[راجع: ٣٣٠١]

तश्रीह : इस ह़दीष़ से यमनवालों की बड़ी फ़ज़ीलत निकलती है। इल्मे ह़दीष़ का जैसा यमन में रिवाज है वैसा दूसरे मुल्कों में नहीं है और यमन में तक़्लीदे शख़्सी का तअ़स्सुब नहीं है, दिल का पर्दा नरम और बारीक होने का मत़लब ये है कि वो ह़क़ बात को जल्द क़ुबूल कर लेते हैं जो ईमान की अ़लामत है।

4391. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा मुह़म्मद बिन मैमून ने, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने और अ़ल्क़मा ने बयान किया कि हम अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के पास बैठे हुए थे। इतने में ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) मशहूर स़ह़ाबी तशरीफ़ लाए और कहा, अबू अ़ब्दुर्रह़मान! क्या ये नौजवान लोग (जो तुम्हारे शागिर्द हैं) इसी त़रह़ क़ुर्आन पढ़ सकते हैं जैसे आप पढ़ते हैं? इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि अगर आप चाहें तो मैं किसी से तिलावत के लिये कहूँ? उन्होंने फ़र्माया कि ज़रूर। इस पर इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा, अ़ल्क़मा! तुम पढ़ो,

٤٣٩١- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا مَعَ ابْنِ مَسْعُودٍ فَجَاءَ خَبَّابٌ فَقَالَ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَيَسْتَطِيعُ هَؤُلاَءِ الشَّبَابُ أَنْ يَقْرَؤُوا كَمَا تَقْرَأُ؟ قَالَ : أَمَا إِنَّكَ لَوْ شِئْتَ أَمَرْتُ بَعْضَهُمْ يَقْرَأُ عَلَيْكَ؟ قَالَ : أَجَلْ. قَالَ:

ज़ैद बिन हुदैर, ज़ियाद बिन हुदैर के भाई, बोले आप अ़ल्क़मा से तिलावते क़ुर्आन के लिये फ़र्माते हैं हालाँकि वो हम सबसे अच्छे क़ारी नहीं हैं। इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने कहा अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें वो ह़दीष़ सुना दूँ जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तुम्हारी क़ौम के ह़क़ में फ़र्माई थी। ख़ैर अ़ल्क़मा कहते हैं कि मैंने सूरह मरयम की पचास आयतें पढ़कर सुनाईं। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने ख़ब्बाब (रज़ि.) से पूछा कहो कैसा पढ़ता है? ख़ब्बाब (रज़ि.) ने कहा बहुत ख़ूब पढ़ा। अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि जो आयत भी मैं जिस त़रह पढ़ता हूँ अ़ल्क़मा भी उसी त़रह पढ़ता है, फिर उन्होंने ख़ब्बाब (रज़ि.) को देखा, उनके हाथ में सोने की अंगूठी थी, तो कहा क्या अभी वक़्त नही आया कि ये अंगूठी फेंक दी जाए। ख़ब्बाब (रज़ि.) ने कहा आज के बाद आप ये अंगूठी मेरे हाथ में नहीं देखेंगे। चुनाँचे उन्होंने अंगूठी उतार दी। इसी ह़दीष़ को ग़ुन्दर ने शुअ़बा से रिवायत किया है।

اقْرَأْ يَا عَلْقَمَةُ فَقَالَ زَيْدُ بْنُ حُدَيْرٍ أَخُو زِيَادِ بْنِ حُدَيْرٍ: أَتَأْمُرُ عَلْقَمَةَ أَنْ يَقْرَأَ وَلَيْسَ بِأَقْرَئِنَا؟ قَالَ: أَمَا إِنَّكَ إِنْ شِئْتَ أَخْبَرْتُكَ بِمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ فِي قَوْمِكَ وَقَوْمِهِ فَقَرَأْتُ خَمْسِينَ آيَةً مِنْ سُورَةِ مَرْيَمَ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ : كَيْفَ تَرَى؟ قَالَ : قَدْ أَحْسَنَ، قَالَ عَبْدُ اللهِ مَا أَقْرَأُ شَيْئًا إِلاَّ وَهُوَ يَقْرَؤُهُ، ثُمَّ الْتَفَتَ إِلَى خَبَّابٍ وَعَلَيْهِ خَاتَمٌ مِنْ ذَهَبٍ فَقَالَ : أَلَمْ يَأْنِ لِهَذَا الْخَاتَمِ أَنْ يُلْقَى؟ قَالَ أَمَا إِنَّكَ لَنْ تَرَاهُ عَلَيَّ بَعْدَ الْيَوْمِ فَأَلْقَاهُ. رَوَاهُ غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ.

ज़ैद बिन हुदैर बनू असद में से थे, आँहज़रत (ﷺ) ने जुहैना को बनू असद और ग़त़्फ़ान से बतलाया और अ़ल्क़मा नख़ुअ़ क़बीले के थे। इमाम अह़मद और बज़्ज़ार ने इब्ने मसऊद (रज़ि.) से निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) नख़ुअ़ क़बीले के लिये दुआ फ़र्माया करते थे, उसकी ता'रीफ़ करते यहाँ तक कि मैंने तमन्ना की कि काश! मैं भी उस क़बीले से होता। ग़ुन्दर की रिवायत को अबू नुऐ़म ने मुस्तख़रज में वस्ल किया है। शायद ख़ब्बाब सोना पहनने को मकरूहे तंज़ीही समझते हों। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की तम्बीह पर कि सोना ह़राम है, उन्होंने उस अंगूठी को निकाल फेंका।

बाब 76 : क़बीला दौस और तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी (रज़ि.) का बयान

٧٦- باب قِصَّةِ دَوْسٍ وَالطُّفَيْلِ بْنِ عَمْرٍو الدَّوْسِيِّ

तश्रीह: दौस यमन में एक क़ौम है। तुफ़ैल बिन अ़म्र इसी क़ौम से थे। उनको ज़ुन्नूर भी कहते थे। वो आकर मुसलमान हो गये तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनको उनकी क़ौम की त़रफ़ मुबल्लिग़ बनाकर भेजा। उनका बाप मुसलमान हो गया लेकिन माँ मुसलमान नहीं हुई और क़ौम वालों ने भी उनका कहना न माना, सिर्फ़ ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने इस्लाम क़ुबूल किया। आँहज़रत (ﷺ) ने तुफ़ैल (रज़ि.) की दरख़्वास्त पर दौस की हिदायत के लिये दुआ की, वो मुसलमान हो गये। कहते हैं तुफ़ैल बिन अ़म्र (रज़ि.)ने आँहज़रत (ﷺ) से कुछ निशानी चाही। आप (ﷺ) ने दुआ की या अल्लाह! तुफ़ैल को नूर दे, उनकी दोनों आँखों के बीच में से नूर निकलता जो रात को रोशन हो जाता। इब्ने कल्बी ने कहा ह़बीब बिन अ़म्र दौस का ह़ाकिम था, उसकी उ़म्र तीन सौ बरस की थी, वो 75 आदमियों के साथ आँहज़रत (ﷺ) के पास आया और मुसलमान हो गया। इसके साथी भी सब मुसलमान हो गये।

4392. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़क्वान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.)

٤٣٩٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ ذَكْوَانَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ

ने बयान किया कि तुफ़ैल बिन अ़म्र (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि क़बीला दौस तो तबाह हुआ। नाफ़र्मानी और इंकार किया (इस्लाम क़ुबूल नहीं किया) आप अल्लाह से उनके लिये दुआ कीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अल्लाह! क़बीला दौस को हिदायत दे और उन्हें मेरे यहाँ ले आ। (राजेअ़ : 2937)

الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : جَاءَ الطُّفَيْلُ بْنُ عَمْرٍو إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: إِنَّ دَوْسًا قَدْ هَلَكَتْ عَصَتْ، وَأَبَتْ فَادْعُ اللهَ عَلَيْهِمْ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ اهْدِ دَوْسًا وَائْتِ بِهِمْ)). [راجع: ٢٩٣٧]

4393. मुझसे मुहम्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उनसे क़ैस ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि कि जब मैं अपने वतन से नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये चला तो रास्ते में, मैंने ये शे'र पढ़ा (तर्जुमा) कैसी है तकलीफ़ की लम्बी ये रात, ख़ैर उसने कुफ़्र से दी है नजात। और ग़ुलाम रास्ते में भाग गया था फिर मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप (ﷺ) से बेअ़त की। अभी आप (ﷺ) के पास में बैठा ही हुआ था कि वो ग़ुलाम दिखाई दिया। आपने मुझसे फ़र्माया अबू हुरैरह! ये है तुम्हारा ग़ुलाम! मैंने कहा अल्लाह के लिये मैंने इसको अब आज़ाद कर दिया। (राजेअ़ : 253)

٤٣٩٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ عَنْ قَيْسٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: لَمَّا قَدِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ قُلْتُ فِي الطَّرِيقِ

يَا لَيْلَةً مِنْ طُولِهَا وَعَنَائِهَا

عَلَى أَنَّهَا مِنْ دَارَةِ الْكُفْرِ نَجَّتِ

وَأَبَقَ غُلاَمٌ لِي فِي الطَّرِيقِ فَلَمَّا قَدِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَبَايَعْتُهُ فَبَيْنَا أَنَا عِنْدَهُ إِذْ طَلَعَ الْغُلاَمُ فَقَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَبَا هُرَيْرَةَ هَذَا غُلاَمُكَ؟)) فَقُلْتُ: هُوَ لِوَجْهِ اللهِ فَأَعْتَقْتُهُ. [راجع: ٢٥٣٠]

तश्रीह : हज़रत तुफ़ैल बिन अ़म्र (रज़ि.) की तब्लीग़ से हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) मुसलमान हुए। बाद में अल्लाह ने उनको ऐसा फ़िदाए रसूल (ﷺ) बनाया कि ये हज़ारों अहादीष़ के हाफ़िज़ क़रार पाए। आज कुतुबे अहादीष़ में जगह जगह ज़्यादातर इन ही की रिवायात पाई जाती हैं। ता-हयात एक दिन के लिये भी आँहज़रत (ﷺ) के दारुल उ़लूम से ग़ैर हाज़िरी नहीं की। भूखे-प्यासे चौबीस घण्टे ख़िदमते नबवी में मौजूद रहे, रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु।

बाब 77 : क़बीला तै के वफ़्द और अ़दी बिन हातिम (रज़ि.) का क़िस्सा

٧٧- باب قِصَّةِ وَفْدِ طَيِّءٍ وَحَدِيثِ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ

बनी तै एक क़बीला है उसका नाम तै इसलिये हुआ कि सबसे पहले गोल कुँआ उसी ने बनवाया था।

4394. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक इब्ने उ़मैर ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन हुरैष़ ने और उनसे अ़दी बिन हातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि हम हज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में (उनके दौरे ख़िलाफ़त में) एक वफ़्द की शक्ल में

٤٣٩٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ، قَالَ : أَتَيْنَا عُمَرَ فِي وَفْدٍ فَجَعَلَ يَدْعُو رَجُلاً رَجُلاً وَيُسَمِّيهِمْ فَقُلْتُ: أَمَا تَعْرِفُنِي

يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ؟ قَالَ: بَلَى، أَسْلَمْتَ إِذْ كَفَرُوا وَأَقْبَلْتَ إِذْ أَدْبَرُوا، وَوَفَيْتَ إِذْ غَدَرُوا، وَعَرَفْتَ إِذْ أَنْكَرُوا، فَقَالَ عَدِيٌّ: فَلاَ أُبَالِي إِذًا.

आए। वो एक एक शख़्स को नाम ले लेकर बुलाते जाते थे) मैंने उनसे कहा क्या आप मुझे पहचानते नहीं? या अमीरल मोमिनीन! फ़र्माया क्या तुम्हें भी नहीं पहचानूँगा, तुम उस वक़्त इस्लाम लाए जब ये सब कुफ़्र पर क़ायम थे। तुमने उस वक़्त तवज्जह की जब ये सब मुँह मोड़ रहे थे। तुमने उस वक़्त वफ़ा की जब ये सब बेवफ़ाई कर रहे थे और उस वक़्त पहचाना जब उन सबने इंकार किया था। अदी (रज़ि.) ने कहा बस अब मुझे कोई परवाह नहीं।

तशरीह : अदी बिन हातिम (रज़ि.) क़बीले तै में से थे। उनके बाप वही हातिम ताई हैं जिनका नाम सख़ावत में दुनिया में मशहूर है। हज़रत उमर (रज़ि.) से अदी (रज़ि.) ने अपना तआरुफ़ कराया जिसका जवाब हज़रत उमर (रज़ि.) ने वो दिया जो रिवायत में मज़्कूर है। इस पर अदी (रज़ि.) ने कहा कि जब आप मेरा हाल जानते हैं और मेरी क़द्र पहचानते हैं तो अब मुझको उसका कोई रंज नहीं है कि पहले और लोगों को बुलाया मुझको नहीं बुलाया। अदी बिन हातिम (रज़ि.) पहले नसरानी थे, उनकी बहन को आँहज़रत (ﷺ) के सवार पकड़ लाए। आपने उनको ख़ानदानी एज़ाज़ की बिना पर मुफ़्त आज़ाद कर दिया। उसके बाद बहन के कहने पर अदी बिन हातिम (रज़ि.) ख़िदमते नबवी (ﷺ) में हाज़िर हुए और मुसलमान हो गये।

हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर (रज़ि.) ने अदी बिन हातिम (रज़ि.) का नसबनामा सबा तक पहुँचाया है जो किसी ज़माने में यमन की मल्का थी। आगे हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं। **अख़रज मिन वज्हिन आख़र अन अदी बिन हातिम क़ाल अतैतु उमर फ़क़ाल इन्न अव्वल सदक़तिन बय्यज़त वज्हु रसूलिल्लाहि (ﷺ) व वुजूहु अस्हाबिहि सदक़तु तै जिअतु बिहा इलन्नबिय्यि (ﷺ) व ज़ाद अहमद फ़ी अव्वलिही अतैतु उमर फ़ी उनासिन मिन क़ौमी फजअल युअरिज़ु अन्नी फ़स्तक्बल्तुहू फ़ कुल्तु अ तअरिफ़ुनी फ़ज़कर मा औरदहुल बुख़ारी व नहव मा औरदहू मुस्लिम जमीअन** (फ़त्ह) या'नी हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि सबसे पहला सदक़ा जिसे देखकर आँहज़रत (ﷺ) और सहाबा किराम (रज़ि.) का चेहरा ख़ुशी से चमकने लग गया वो क़बीला तै का पेश कर्दा सदक़ा था जिसे मैं ख़ुद लेकर ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुआ था। इमाम अहमद ने उसके अव्वल में ये ज़्यादा किया है कि मैं अपनी क़ौम में हज़रत उमर (रज़ि.) के पास आया तो आपने मुझसे मुँह फेर लिया फिर मैं आपके सामने हो गया और मैंने वो कहा जो रिवायत में मज़्कूर है। जिसे बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने वारिद किया है। हज़रत उमर (रज़ि.) का मुँह फेरना सिर्फ़ इसलिये था कि ये हज़रत तो मेरे जाने पहचाने हैं। उस वक़्त नौ वारिदों की तरफ़ तवज्जह ज़रूरी है। इससे हज़रत अदी बिन हातिम (रज़ि.) की हज़रत उमर (रज़ि.) की निगाहों में बड़ी वक़अत षाबित हुई। (रजियल्लाहु अन्हुम अज्मईन) हज़रत अदी बिन हातिम शाबान 7 हिजरी में ख़िदमते नबवी में आए और बाद मे कूफ़ा में सकूनत इख़्तियार की। जंगे जमल में हज़रत अली (रज़ि.) के साथ थे। 67 हिजरी में कूफ़ा में बउम्र एक सौ बीस साल इंतिक़ाल फ़र्माया। उनका बाप हातिम ताई सख़ावत के लिये मशहूरे ज़माना गुज़रा है। लफ़्ज़े ताई क़बीला तै की निस्बत है।

ख़ात्मा : बिऔनिही तआला पिछले साल श्रीनगर में 25-8-1972 को इस पारे की तस्वीद के लिये क़लम हाथ में ली थी साल भर सफ़र हज़र में इस ख़िदमत को अंजाम दिया गया और आज ग़रीबख़ाने पर क़याम की हालत में उसकी तस्वीद का काम मुकम्मल कर रहा हूँ। बिला मुबालग़ा तर्जुमा व मतन व तशरीहात को बड़े ग़ौरो-फ़िक्र के बाद क़ैदे किताबत में लाया गया है और बाद में बार-बार उन पर नज़र डाली गई है फिर भी सह्व और लग़्ज़िश का इम्कान है। जिसके लिये मैं उलमा माहिरीने फ़न की तरफ़ से इस्लाह के लिये बसद शुक्रिया मुंतज़िर रहूँगा। क़ारिईन किराम व हमदर्दाने इज़ाम से अदब के साथ गुज़ारिश है कि वो बवक़्ते मुतालआ मुझ नाचीज़ को अपनी दुआओं में याद रखें ताकि ये ख़िदमत मुकम्मल हो सके जो मेरी ज़िन्दगी का मक़सदे वाहिद है। जिसे मैंने अपना ओढ़ना बिछौना बना रखा है। जिन हज़रात की हमदर्दियाँ और दुआएँ मेरे शामिल हाल हैं, उन सबका बहुत बहुत मशकूर हूँ और उन सबके लिये दुआ करता हूँ कि अल्लाह पाक अपने हबीब (ﷺ) के पाकीज़ा कलाम की बरकत से हम सबको दोनों जहानों की बरकतों से नवाज़े। ख़ास तौर पर इस दुनिया से जाने के बाद इसे सदक़-ए-जारिया को हम सबके लिये बाइष नजात बनाए और क़यामत के दिन आँहज़रत (ﷺ) की शिफ़ाअते कुबरा हम सबको नसीब करे।

या अल्लाह! जिस तरह यहाँ तक तूने मुझको पहुँचाया है। उसी तरह से आख़िर तक तू हमको इस ख़िदमत की तक्मील की तौफ़ीक़ दीजियो और क़लम को लग़्ज़िश से बचाइयो कि सब कुछ तेरे ही इख़्तियार में है।

वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम व सल्लल्लाहु अला खैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदंव्व अला आलिही अस्हाबिही अज्मईन बि रहमतिका या अरहमर्राहिमीन।

ख़ादिम हदीषे नबवी

मुहम्मद दाऊद राज़ वल्द अब्दुल्लाह अस्सलफ़ी

मौज़अ रहपुआ डाकख़ाना पुंगवाँ ज़िला गुड़गाँव (हरियाणा)

30-12-1973

अ़र्ज़े-मुतर्जिम

(अनुवादक की गुज़ारिशात)

क़ारेईने किराम! अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त के फ़ज़्ल व एहसानो-करम से स़ह़ीह़ बुख़ारी (शरह मुहम्मद दाऊद राज़ रह.) की तीसरी जिल्द आपके हाथों में सौंपी जा रही है। पहली व दूसरी जिल्द से यक़ीनन आपने फ़ैज़ ह़ासिल किया होगा। इस तीसरी जिल्द में आप बहुत सारे ऐसे अनछुए मसाइल के बारे में जानकारी हास़िल करेंगे, जिनकी हमारी ज़िन्दगी में बड़ी अहमियत है। पहली जिल्द के पेज नं. 23-24 पर इसी कॉलम में काफ़ी-कुछ वज़ाहत की जा चुकी है चन्द अहम व ज़रूरी बातें इसलिये दोहराई जा रही है ताकि शुरूआती दो जिल्द पढ़ चुके क़ारेईन व मुअतरिज़ीन के सवालात के तसल्लीबख़्श जवाब मिल सके।

01. **बेहद सावधानी के साथ इसकी तस्ह़ीह व नज़रे-षानी की गई है ताकि ग़लती की कम से कम गुंजाइश रहे, इसके लिये अ़रबी के माहिर अ़ालिम मौलाना जमशेद अ़ालम सलफ़ी की ख़िदमात बेहद सराहनीय रही है। कुछ हज़रात ने अ़रबी हर्फ़ (ث) के लिये हिन्दी अक्षर 'ष' इस्ते'माल पर ए'तिराज़ जताया है, स़ह़ीह़ बुख़ारी की आठों जिल्दों के कवर पेज पर ह़दीष़ 'इन्नमल अअ़मालु बिन्नियात' छपी है जिसका मा'नी है, 'अ़मल का दारोमदार निय्यत पर है।' हमारी निय्यत यह है कि अ़रबी-उर्दू का हर हर्फ़ अलग नज़र आए। रहा सवाल उच्चारण का तो उसके लिये हमारी गुज़ारिश है कि नीचे लिखी इबारत का ग़ौर से मुतालआ करें।**
02. **इस किताब की हिन्दी को उर्दू के मुवाफ़िक़ बनाने की भरपूर कोशिश की गई है इसके लिये उर्दू के कुछ ख़ास़ हर्फ़ों को अलग तरह से लिखा गया ह** मिष़ाल के तौर पर :- (ا) के लिये अ, (ع) के लिये अ़; (ث) के लिये ष, (س) के लिये स, (ش) के लिये श, (ص) के लिये स़; (ح) के लिये ह़, (ه) के लिये ह, (خ) के लिये ख़, (غ) के लिये ग़, (ف) के लिये फ़, (ك) के लिये क, (ق) के लिये क़ लिखा गया है। (ج) के लिये ज का इस्तेमाल किया गया है लेकिन ज़ाल (ذ) ज़े (ز) ज़ाद (ض) ज़ोय (ظ) के लिये मजबूरी में एक ही हुरूफ़ ज़ का इस्तेमाल किया गया है क्योंकि इन हर्फ़ों के लिये स़ह़ीह़ विकल्प हमें नज़र नहीं आया। आपको यह बता देना मुनासिब होगा कि उर्दू ज़बान के कुछ हुरूफ़ ऐसे हैं कि अगर उनकी जगह कोई दूसरा हुरूफ़ लिख दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे एक लफ़्ज़ उर्दू में पाँच तरह से लिखा जाता है; **असीर,** अलिफ़ (ا)-सीन (س) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है **क़ैदी**। **अष़ीर,** अलिफ़ (ا) षे (ث) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है **ख़ालिस़**। **अ़सीर** अ़ेन (ع) सीन (س) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **मुश्किल**। **अ़स़ीर** अ़ेन (ع) स़ाद (ص) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **अंगूर की चाशनी (शीरा)**। **अ़ष़ीर** अ़ेन (ع) षे (ث) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **धूल**। कहने का मतलब ये है कि इस किताब में स़ह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) के लिये हद-दर्जा कोशिश की गई है।
03. **मैं एक बार फिर ये दोहराना मुनासिब समझता हूँ कि यह किताब अ़ल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) की शरह का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें न कुछ घटाया गया है, न बढ़ाया गया है और न ही अनुवादक द्वारा किसी मैटर की एडीटिंग की गई है। लिहाज़ा हर तशरीह (व्याख्या) से अनुवादक सहमत हो, ये ज़रूरी नहीं है।**

इस किताब की कम्पोज़िंग, तस्ह़ीह़ (त्रुटि संशोधन) और कवर डिज़ाइनिंग में मेरे जिन साथियों की मेहनत जुड़ी हैं, उन सब पर अल्लाह की रहमतें, बरकतें व सलामती नाज़िल हों। **ऐ अल्लाह! मेरे वालिद-वालदा को अपने अ़र्श के साये तले, अपनी रहमत की पनाह नस़ीब फ़र्मा जिनकी दुआओं के बदले तूने मुझे दीने-इस्लाम का फ़हम अ़ता किया। ऐ अल्लाह! हमारी ख़त़ाओं और कोताहियों से दरगुज़र फ़र्माते हुए तू हमसे राज़ी हो जा और हमें रोज़े आख़िरत वो नेअ़मतें अ़त़ा फ़र्मा, जिनका तूने अपने बन्दों से वा'दा फ़र्माया है।** आमीन! तक़ब्बल या रब्बल आ़लमीन!!

व स़ल्लल्लाहु तआला अ़ला नबिय्यिना व अ़ला आलिही व अस़्ह़ाबिही व अत्बाइहि व बारिक व सल्लिम.

सलीम ख़िलजी.

मुनाजात (दुआएं)

हकीम मुहम्मद सिद्दीक़ ग़ौरी

रब्बे-आज़म अर्शे-आज़म पर है तेरा इस्तवा,
तू है आली, तू है आला, तू ही है रब्बुलउला।

हम्द, पाकी किबरियाई मेरे सुब्हानो-हमीद
सिर्फ़ है तेरे लिये जितनी तू चाहे किबरिया।

लामकां, बेख़ानमां, तू है नही हरगिज़ रफ़ीअ
अर्श पर है तू यक़ीनन, है पता मुझको तेरा।

अर्श पर होकर भी तू मेरी रगे-जां से क़रीब
इतना मेरे पास है मै कह नही सकता ज़रा।

अर्श पर है ज़ात तेरी, इल्मो-कुदरत से क़रीब
तू हमारे पास है ऐ हाज़िरो-नाज़िर ख़ुदा।

अर्श पर है तू यक़ीनन और वह 'मकतूब' भी
'तेरी रहमत है फ़ज़ू तेरे ग़ज़ब से ऐ ख़ुदा।

अरबो खरबो रहमते हो, बरकते लाखो सलाम,
उन पर उनकी आल पर जो है मुहम्मद मुस्तफ़ा।

क़ाबिले-तारीफ़ तू है मेरे रब्बुल आलमीन
तू है रहमानो-रहीमो-मालिके-यौमे-जज़ा।।

हम तुझी को पूजते है तू ही इक माबूद है
हम मदद चाहते नही, हरगिज़ कभी तेरे सिवा।

तू है ज़ाहिर, तू है बातिन, अव्वलो-आख़िर है तू
फ़क़र भी तू दूर कर दे क़र्ज़ भी या रब मेरा।

मै ज़मीनो-आसमां पर डालता हू जब नज़र
कोई भी पाता नही हू मै 'ख़ुदा' तेरे सिवा।

चाँद-तारे दे रहे है अपने सानेअ की ख़बर
तेरी कुदरत से अयां है बिलयक़ीन होना तेरा।

मै तुझे कुछ जानता हूं, तेरे कुछ औसाफ़ भी
तू क़यामत मे भी होगा जाना-पहचाना मेरा।

तू मेरा ज़ाकिर रहे मै भी रहू ज़ाकिर तेरा
हो ज़मी पर ज़िक्र तेरा आसमां मे हो मेरा।

क़ल्बे-मुज़्तर को सुकू मिल जाए तेरी याद से
और तेरे ज़िक्रसे हो मुत्मइन ये दिल मेरा।

रोज़ो-शब, सुब्ह मसा, आठो पहर, चौसठ घड़ी
तू ही तू दिल मे रहे कोई न हो तेरे सिवा।

मै हमेशा याद रक्खू अपनी मजलिस मे तुझे
तू भी मुझको याद रक्खे अपनी मजलिस मे सदा।

बन्द तेरी याद से मेरी ज़ुबां या रब न हो
मरते दम तक, मरते दम भी ज़िक्र हो लब पर तेरा।

ज़िन्दगी दुश्वार हो तेरी मुहब्बत के बग़ैर
माही-ए-बेआब हो बेज़िक्रये बन्दा तेरा।

मै दुआ के वक़्त तुझ से इतना हो जाऊ क़रीब
गोया तहतुलअर्श मे हू तेरे क़दमो मे पड़ा।

हालते सद-यास मे भी ऐ ख़ुदा तेरी क़सम
जी न हारू और मै करता रहू तुझसे दुआ।

बह रही हो मेरी आँखे मेरी गर्दन हो झुकी
नाक रगड़े, पस्त होकर, तुझसे मै मांगू दुआ।

तेरे आगे आजिज़ाना, दस्त बस्ता, सर नगूं
मै रहूं या रब खड़ा भी तेरे क़दमो मे पड़ा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो तेरी नेअमत की क़सम
जैसे कोई तीर हो अपने निशाने पे लगा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो जिस से टल जाएं पहाड़
ग़ार वालो से भी बढ़कर तेरी रहमत से ख़ुदा।

हर मेरी तौबा हो ऐसी जो अगर तक़सीम हो
तेरे बन्दो पर तो बख़्शे जाएं लाखो बे-सज़ा।

नेकियो मे तू बदल दे और उनको बख़्श दे
उम्र भर के अगले पिछले सब गुनाहो को ख़ुदा।

हज मेरे मबरूर हो सब कोशिशे मशकूर हो
दे तिजारत तू भी वह जिसमे न हो घाटा ज़रा।

तेरी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हो मेरी कुल ज़िन्दगी
खाना पीना, चलना फिरना, बैठना उठना मेरा।

जो क़सम खाई या खाऊं तुझ पे करके ऐतमाद
मअ फ़लाहे दोजहां के साथ पूरी हो ख़ुदा।